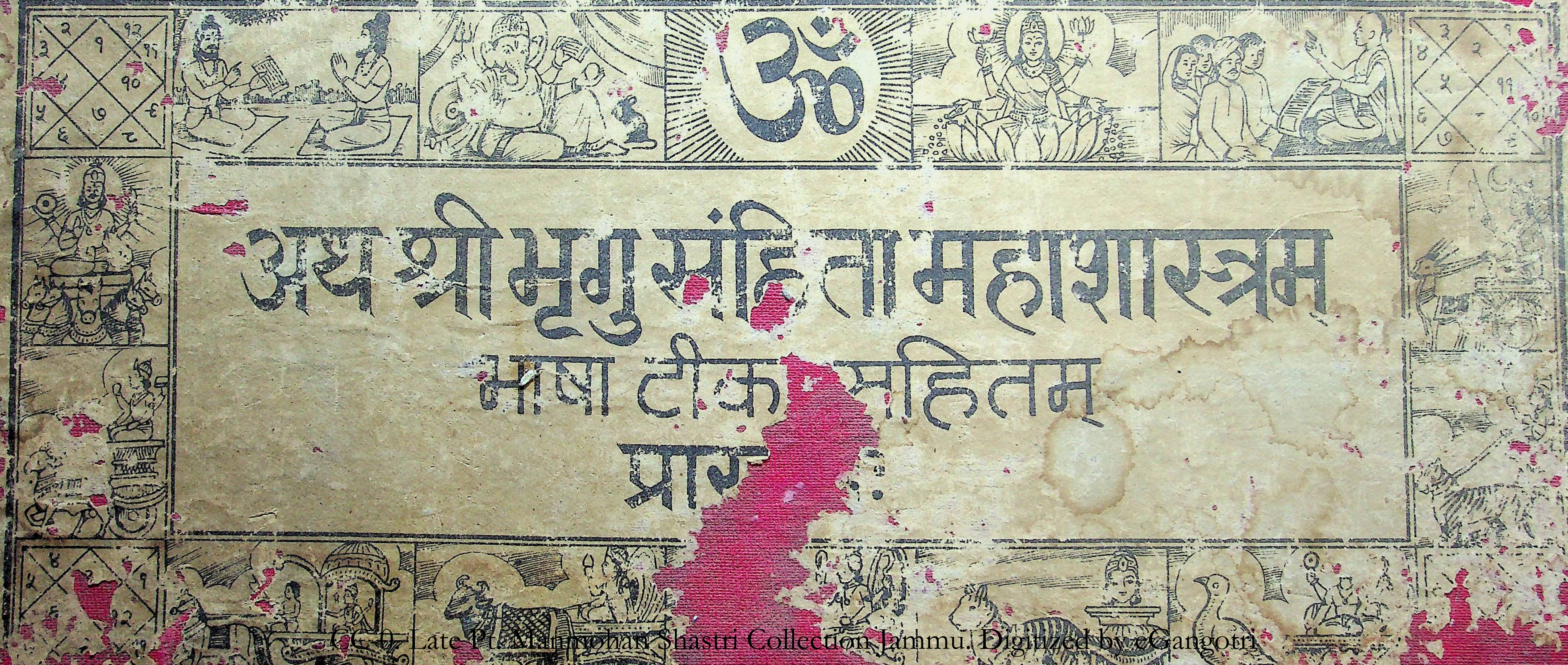


अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

भाषा टीका सहितम्

प्राग...:


ॐ
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
प्रथम खण्डः भाषा टीका सहितम्
प्रकीर्ण विषयाध्यायः



अथ श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम्

[विविध विषय समन्वित भाषा-टीका सहितम्]

प्रथम खण्डः प्रारम्भः

-•-

प्रकाशक:



देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाज़ार, देहली-110006, टेलीफ़ोन-261030



प्रकाशक :
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली ६

सम्पादक :
पं॰ राजेश दीक्षित

न्यौछावर :
स्वदेश में : २५१) दौ सौ इक्यावन रूपये
विदेश में : £40 (चालीस पौंड) या $80 (अस्सी डालर)

मुद्रक :





भा॰
टी॰

अथ विषयानुक्रमणिका

भा० टी०

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क

क्रमाङ्कः		पृष्ठाङ्कः

षष्ठ खण्डः

(स्त्री जातकम्)

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क
२३	नारी-चक्रम्	३२९
२४	वैधव्य भङ्गोपाय:	३२९
२५	विशिष्ट फलम्	३२०
२६	कारक विचार:	३२१
२७	नारी चक्रम्	३३०
२८	राजभार्या योगा:	३३०
२९	सप्तमभावे ग्रह फलम्	३३३
३०	विविध योगा:	३३५
३१	अष्टमभावस्थ ग्रहाणां फलम्	३३८
३२	पुत्रभाव विचार:	३३८
३३	विवाहप्रा योग विचार:	३३९
३४	निषेकाध्याय:	३४०
३५	स्त्री शुभाशुभ लक्षणम्	३४७
३६	पादतल लक्षणम्	३४८
३७	पादाङ्गुष्ठादि लक्षणम्	३४८
३८	गुल्फादि लक्षणम्	३५०

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क
३९	योनि लक्षणम्	३५१
४०	वस्तिनाभ्युदर लक्षणम्	३५२
४१	वक्ष एवं स्तन लक्षणम्	३५४
४२	स्कन्ध बाहु करतलादि लक्षणम्	३५५
४३	प्रथम रजोदर्शन फलम्	३५६
४४	गर्भाधान विचार	३५६
	सप्तम खण्ड: (अरिष्ट, आयुर्दाय विचाराध्याय)	
१	अरिष्ट विचार	३५८
२	चन्द्रकृत अरिष्ट भङ्ग योगा:	३६७
३	सकलारिष्ट भङ्ग योगा:	३६९
४	अन्यच्च: अरिष्ट एवं अरिष्ट भङ्ग योगा:	३७३
५	आयुर्दाय विचार:	३८१
	अष्टम खण्ड: (प्रश्न विचाराध्याय:)	
१	प्रश्न विचारम्	३८५
२	शुभाशुभ विचारम्	३८६

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क
35 अन्यच्च: शुभाशुभज्ञानमाह	449

नवम खण्ड:
(नष्ट जातकाध्याय:)

दशम खण्ड
(कुण्डली खण्डम्)

क्रमाङ्क	पृष्ठाङ्क

एकादश खण्ड
(जन्मकुण्डली फलादेशाध्याय:)

द्वादश खण्ड
(पाराशरमते आयुर्दाय एवं मारकाध्याय:)

क्रमाङ्क		पृष्ठाङ्क

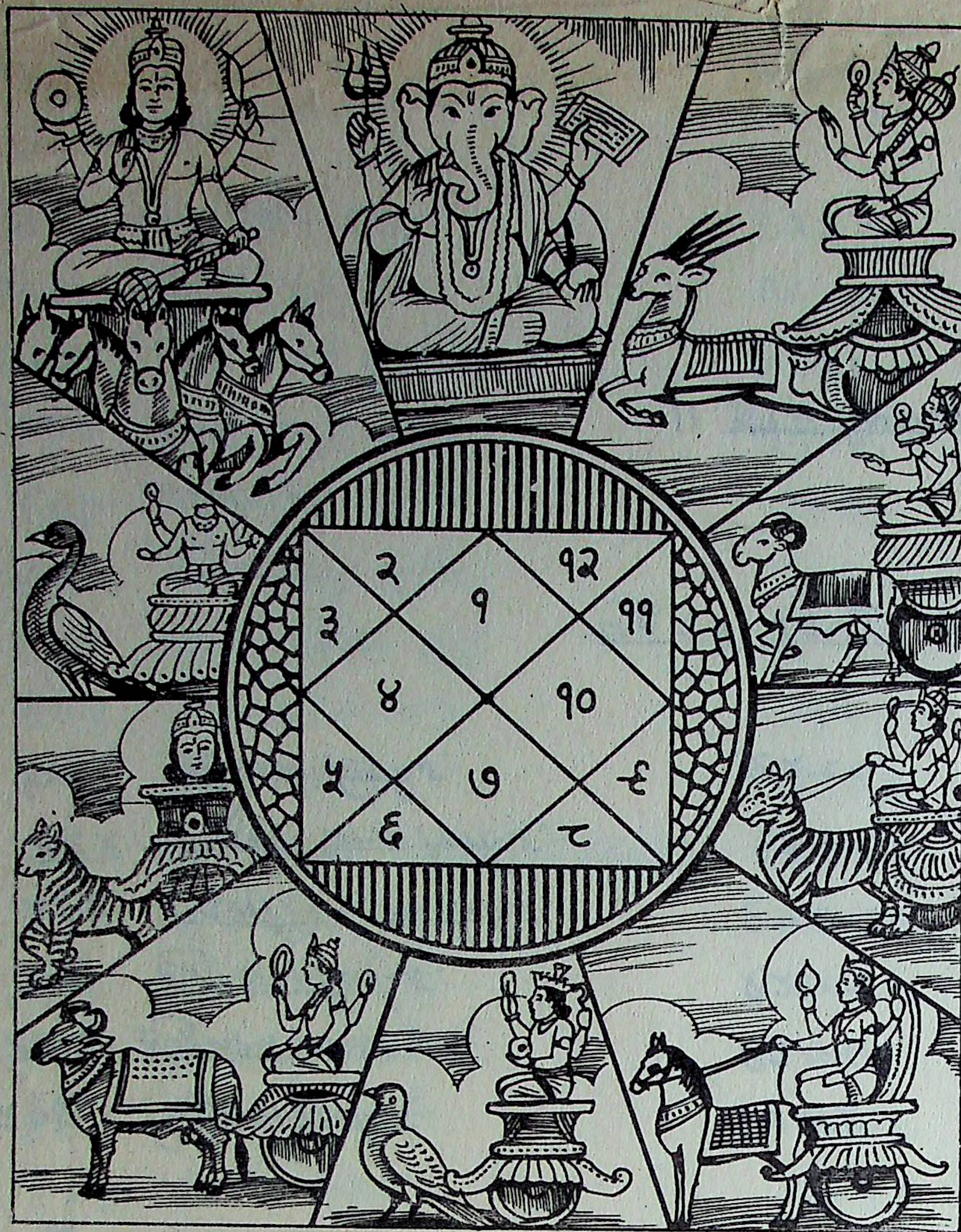
त्रयोदश खण्ड!
(नरपतिजयचर्या स्वरोदय:)

क्रमाङ्कः		पृष्ठाङ्कः
५१	द्वितीय पद्म चक्रम्	११०७
५२	खेचर-भूचर चक्रम्	११०८
५३	पञ्चाङ्गुलम्	११०९
५४	नाड़ी चक्रम्	१११०
५५	अहिबलय चक्रम्	११११
५६	लाङ्गूल-चक्रम्	१११३
५७	बीजोप्ति-चक्रम्	१११४
५८	वृषभ चक्रम्	१११४
५९	सप्तनाडी-चक्रम्	१११५
६०	समुद्र-चक्रम्	१११७
६१	स्त्री-पुंनक्षत्राणि	१११७
६२	रविचन्द्र योग चक्रम्	१११७
६३	वृष्टि योगाः	१११८
६४	शुक्रोदयास्तफलम्	१११९
६५	मेघद्वाराणि	१११९
६६	वृष्टि लक्षणम्	११२०

क्रमाङ्कः		पृष्ठाङ्कः
६७	कालदंष्ट्रा चक्रम्	११२१
६८	सूर्यफणि-चक्रम्	११२१
६९	चन्द्र फणि-चक्रम्	११२२
७०	कलि चक्रम्	११२३
७१	खल चक्रम्	११२३
७२	समचतुरस्रादि कोट-चक्राणि	११२४
७३	चातुरङ्ग सैन्य विवरणम्	११३०
७४	गज चक्रम्	११३६
७५	अश्व चक्रम्	११३६
७६	शुद्ध मुहूर्त विषये अश्व-चक्रम्	११३७
७७	रथ-चक्रम्	११३८
७८	व्यूह-चक्रम्	११३८
७९	कुंत चक्रम्	११३९
८०	खड्ग चक्रम्	११३९
८१	छुरिका-चक्रम्	११३९
८२	चाप-चक्रम्	११४०

भा० टी०

॥ इति विषयानुक्रमणिकास्समाप्त: ॥



अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

पूर्वारम्भः

कथा प्रसङ्ग:— सहस्रों वर्ष पूर्व की घटना है। एक समय सचराचर जगत् के स्वामी, त्रैलोक्याधिपति, भगवान् श्री विष्णु क्षीर-सागर में शेषनाग की शय्या पर शयन कर रहे थे तथा भगवती, महामाया, जगदम्बा श्रीलक्ष्मी जी उनके चरणकमलों को दबा रही थीं, उसी समय परमतेजस्वी महर्षि भृगु उनके दर्शनार्थ वैकुण्ठलोक के सिंहद्वार पर पधारे। भगवान् विष्णु के जय-विजय नामक द्वारपालों ने महर्षि को देखकर सर्वप्रथम तो उन्हें प्रणाम किया तत्पश्चात् यह निवेदन किया कि इस समय श्रीविष्णु शयन कर रहे हैं, अत: ऐसी स्थिति में महर्षि को उनके दर्शनार्थ जाने देना उनके लिए संभव नहीं होगा।

इस निवेदन के साथ जब जय-विजय ने



महर्षि को वैकुण्ठलोक में प्रविष्ट होने से रोकने का प्रयत्न किया तो महर्षि अत्यन्त रुष्ट हुए और उन्होंने जय-विजय को शाप देते हुए यह कहा कि तुमने मुझ जैसे तपस्वी ब्राह्मण की जो अवज्ञा की है, उसके कारण तुम्हें तीन बार राक्षस योनि में जन्म लेकर पृथ्वी पर रहना पड़ेगा।

महर्षि भृगु द्वारा प्रदत्त इस शाप को सुन कर जय-विजय हतप्रभ, मौन तथा नत-मस्तक हो कर, जहाँ के तहाँ खड़े रह गए। तब भृगु ऋषि सिंह द्वार के भीतर प्रविष्ट होकर, उस स्थान पर जा पहुँचे, जहाँ श्री विष्णु शेष शय्या पर शयन कर रहे थे तथा भगवती लक्ष्मी उनके चरणों को दबा रही थीं।

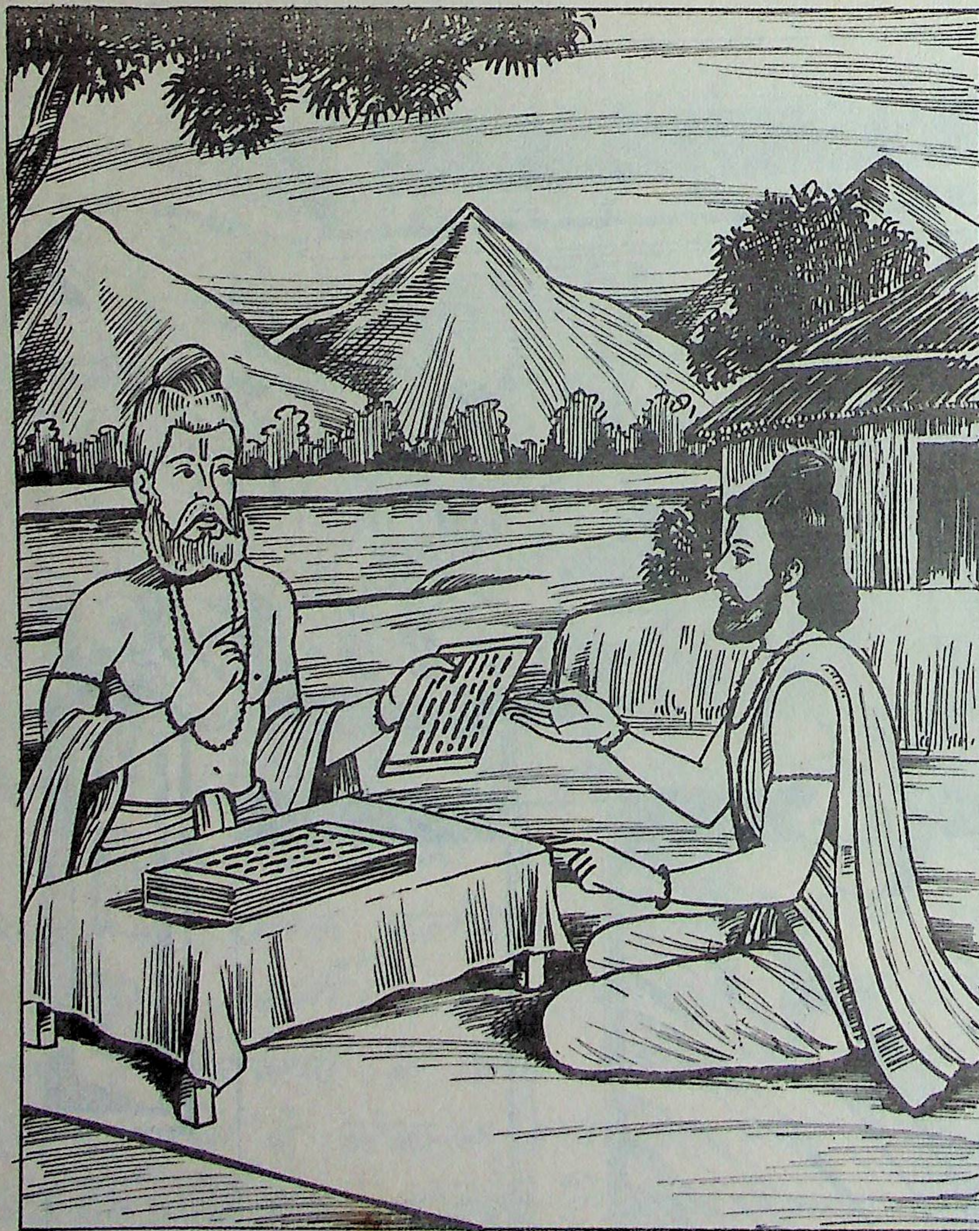
भगवान् विष्णु को शयन करते हुए देखकर भृगु ऋषि के क्रोध का पारावार न रहा। उन्होंने यह समझा कि श्री विष्णु ने उन्हें आते हुए देखकर, जान-बूझ कर अपनी आँखें बन्द करली हैं और इस प्रकार वे भी उनकी अवज्ञा करने पर तुले हुए हैं।

क्रोधोन्मत्त भृगु ऋषि ने उसी समय श्री विष्णु



के वक्षःस्थल पर अपने दाँये पाँव का प्रहार किया। पद-प्रहार के लगते ही श्री विष्णु की आँखें खुल गईं तथा अपने सम्मुख भृगु ऋषि को खड़े हुए देखकर, वे हाथ जोड़ कर उनकी अभ्यर्थना करते हुए यह कहने लगे कि हे महर्षि ! मेरी छाती तो वज्र की भाँति कठोर है, परन्तु आपके चरण कमल सरीखे कोमल हैं; अस्तु मेरे वक्षःस्थल पर पद-प्रहार करने के कारण आपको जो चोट लगी होगी, उसके लिए मैं आपसे क्षमाप्रार्थी हूँ।

श्री विष्णु नारायण के इन कोमल-वचनों को सुन कर महर्षि भृगु का क्रोध शान्त हुआ तथा उन्हें अपनी भूल एवं क्रोध पर ग्लानि तथा पश्चात्ताप का अनुभव होने लगा। तब वे शोकाकुल होकर श्री विष्णु से क्षमा-याचना करते हुए उनकी स्तुति करने लगे; परन्तु महर्षि को श्री नारायण के वक्षःस्थल पर चरण प्रहार करते हुए देखकर भगवती लक्ष्मी अत्यन्त क्रुद्ध हुईं और उन्होंने उसी आवेश में श्री भृगु ऋषि को सम्बोधित करते हुए इस प्रकार कहा- 'हे ब्राह्मण! तुमने लक्ष्मीपति



का निरादर किया है, अतः मैं तुम्हें और तुम्हारे सभी सजातीयों को यह शाप देती हूँ कि उनके घर में मेरा अर्थात् लक्ष्मी का वास न होगा और वे दरिद्र बनकर इधर-उधर भिक्षाटन करते फिरेंगे।'

भगवती लक्ष्मी के मुख से निकले हुए इन शब्दों को सुनकर भृगुजी बोले - 'हे लक्ष्मी! मैंने क्रोधावेश में जो अपराध किया, उसकी क्षमा भी मैंने श्रीविष्णु से माँग ली है, तथापि तुमने संयम न रखते हुए मेरे साथ ही समस्त ब्राह्मणों के लिए जो शाप दिया है, वह तुम्हारे सम्मान एवं पद के योग्य नहीं है। जो कुछ होना था, वह तो हो गया। तुम्हारा शाप अपनी जगह स्थिर रहेगा, परन्तु मैं अपने सजातीय ब्राह्मणों की प्रतिष्ठा एवं आजीविका के हेतु अब एक ऐसे ज्योतिषग्रंथ का निर्माण करूँगा, जिसके आधार पर वे समस्त प्राणियों के भूत, भविष्य एवं वर्तमान का हस्तामलकवत् ज्ञान प्राप्त करके, उनसे दक्षिणा के रूप में यथेच्छ धनोपार्जन किया करेंगे। इस प्रकार मेरे ग्रंथ के ज्ञाता किसी भी ब्राह्मण के घर में लक्ष्मी (धन)



की कमी कोई कमी नहीं रहेगी और तुम्हें (लक्ष्मी अर्थात् धन सम्पत्ति को) उनके घर विवश होकर निवास करना पड़ेगा।

भगवती लक्ष्मी से यह कह कर, महर्षि भृगु श्री विष्णु से विदा लेकर अपने आश्रम को लौट गए। तत्पश्चात् उन्होंने 'भृगु संहिता' नामक ज्योतिर्विज्ञान विषयक एक महाग्रंथ की रचना की, जिसमें समस्त प्राणियों के जीवन में घटने वाली भूत, भविष्य एवं वर्तमान सम्बन्धी सभी घटनाओं की जानकारी का उल्लेख उनकी जन्म कुण्डली के आधार पर किया गया।

महर्षि भृगु ने इस ग्रंथ को सर्वप्रथम अपने पुत्र तथा शिष्य शुक्र को पढ़ाया। उनके द्वारा समस्त ब्राह्मण वर्ग में तथा अखिल विश्व में यह ग्रंथ प्रचारित हुआ। इस ग्रंथ के आधार पर ज्योतिषी ब्राह्मणों ने अपने यजमानों की जन्म कुण्डलियां देख कर, उनका त्रिजन्मकालीन तथा भूत, भविष्यत् एवं वर्तमान कालीन फलादेश कहना आरंभ कर, पर्याप्त धनोपार्जन किया। भृगु संहिता के जन्म की यही कहानी है।

पृ० सं० २३

महर्षि भृगु द्वारा प्रणीत भृगुसंहिता वर्तमान काल में कहीं भी उपलब्ध नहीं है। अलबत्ता, 'भृगु संहिता' के नाम से कुछ ग्रंथ यत्र-तत्र अवश्य उपलब्ध होते हैं, परन्तु वे स्वयं में पूर्ण नहीं हैं। सम्पूर्ण भृगुसंहिता में करोड़ों कुण्डलियों का उल्लेख एवं फलादेश होना आवश्यक है, जो एक प्रकार से असम्भव ही प्रतीत होता है। एक मान्यता यह भी है कि भृगुसंहिता किसी एक व्यक्ति विशेष की रचना नहीं है। इस नाम से समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने ग्रंथ-प्रणयन के जो प्रयास किए हैं, उन्हीं के कुछ खण्ड यत्र-तत्र उपलब्ध हैं और उन्हीं के आधार पर कुछ दैवज्ञ अपना काम चला रहे हैं। भृगुसंहिता के नाम से जो ग्रंथ अब तक प्रकाशित हुए हैं, उन पर भी पूर्वोक्त नियम ही लागू होता है।

हमने वर्षों की खोज तथा प्रचुर धन व्यय करके 'भृगु संहिता' नामक ग्रंथ के कुछ प्राचीन हस्तलिखित खण्ड अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में प्राप्त किए थे, जिन्हें सुसम्पादित रूप में, अन्य ज्ञातव्य तथा आवश्यक ज्योतिषीय विषयों के साथ इस ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। उपलब्ध प्राचीन ग्रंथों की सैकड़ों जन्म कुण्डलियाँ तथा उनके फलादेश इसमें संकलित हैं। जिन लोगों की जन्म कुण्डलियाँ उनमें मिल जाँय, वे उनका फलादेश सरलतापूर्वक जान सकते हैं; परन्तु जिन लोगों की कुण्डलियां इस ग्रंथ में उपलब्ध न हों, उनके फलादेश की जानकारी भी इस ग्रंथ के विभिन्न खण्डों में वर्णित ज्योतिष-सिद्धान्तानुसार प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार यह ग्रंथ प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुण्डली के फलादेश का ज्ञान कराने वाला है तथा ज्योतिषियों के लिए इस कारण अत्यधिक उपयोगी है कि जिन विषयों की जानकारी के लिए उन्हें अनेकानेक ग्रंथों के संकलन तथा अध्ययन की आवश्यकता होती है, वे सब इस एक ही ग्रंथ के विभिन्न खण्डों में संकलित कर दिए गए हैं। सरल भाषा-टीका सहित होने के कारण यह ग्रंथ उन लोगों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा, जो संस्कृत से अनभिज्ञ हैं।

इस भृगु संहिता महाशास्त्र के १४ खण्ड हैं। जिनमें क्रमशः (१) प्रकीर्ण विषय, (२) जातक प्रकरण, (३) ग्रहफल, (४) ग्रहदृष्टि फल, (५) विविध योग, (६) स्त्री जातक, (७) अरिष्ट एवं आयुनिर्णय, (८) प्रश्न विचार, (९) नष्ट जातक, (१०) जन्मकुण्डली, (११) जन्मकुण्डली फलादेश, (१२) आयुर्दाय एवं मारक, (१३) नरपति जयचर्या स्वरोदय तथा (१४) सन्तानोपाय एवं ग्रह पीड़ा निवारण - इन चौदह अध्यायों का समावेश है। किस खण्ड में कौन सा विषय उल्लिखित है, इसे विषयानुक्रमणिका में देखलें।

इस प्रथम खण्ड में उन प्रकीर्ण विषयों का उल्लेख किया जारहा है, जिनके द्वारा ज्योतिषीगण यजमानों को चमत्कृत कर सकते हैं। जन्म कुण्डली देख कर जातक के जन्म-समय की परिस्थितियों तथा अन्य विषयों का कथन इनके आधार पर सरलता पूर्वक किया जासकता है। अतः प्रत्येक ज्योतिषी को इन विषयोंका समुचित अध्ययन एवं ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है।

अथ कालपुरुषस्य अङ्गविभागम्॥ कालाङ्गानि वराङ्गमाननमुरो हृत्क्रोडवासो भृतो। वस्तिर्व्यञ्जनमूरुजानुयुगले जङ्घे ततोऽङ्घ्रिद्वयम्। मेषाश्विप्रथमा नवर्क्षचरणाश्चक्रस्थिता राशयो। राशिक्षेत्रगृहर्क्षभानि भवनं चैकार्थसम्प्रत्ययाः॥ टीका॥ यह चराचर विश्व परब्रह्म परमात्मा का व्यक्त स्वरूप है। कालपुरुष के विभिन्न अङ्गों में विभिन्न राशियों का निवास माना गया है। काल-पुरुष के जिस अङ्ग में जिस राशि का निवास कहा गया है, प्राणियों के विभिन्न अङ्गों में भी उसी क्रम से राशियों का निवास समझना चाहिए। यथा- मेष मस्तक, वृष मुख, मिथुन छाती, कर्क हृदय, सिंह पेट, कन्या कटि, तुला वस्ति, वृश्चिक शिश्न, धनु जाँघ, मकर टेहुना, कुंभ पिंडली (पावा) तथा मीन पाँव हैं। जातक के जन्म समय की जन्म कुण्डली में, जिस अंग की राशि में शुभग्रह हो, वह अंग पुष्ट होता है तथा जिस राशि में पापग्रह हो, उस अङ्ग में विकलता (दुर्बलता, रोग, व्रण आदि) होती है॥

अथ राशीनां स्वरूप विज्ञानं ॥ मत्स्यौ घटी नृमिथुनं सगदं सवीणं चापी नरोऽश्वजघनो मकरो मृगास्यः। तौली ससस्य दहना प्लवगा च कन्या शेषाः स्वनामसदृशाः स्वचराश्च सर्वे ॥ टीका ॥ मीनराशि का स्वरूप परस्पर मुख-पुच्छ मिलित दो मछलियों जैसा है। कुम्भ राशि कंधे पर घड़ा लिए हुए पुरुष के समान है। मिथुन राशि का स्वरूप वीणा युक्त स्त्री तथा गदा युक्त पुरुष की जोड़ी के समान है। धनुराशि हाथ में धनुष लिए धड़ तक मनुष्य एवं जाँघों से नीचे घोड़े के समान स्वरूप वाली है। मकर राशि हरिण जैसे मुख वाले मगर की भाँति है। कन्या राशि हाथ में अन्न तथा अग्नि लेकर नौका पर बैठी हुई कन्या के समान है। शेष राशियां अपने नाम सदृश आकार वाली हैं अर्थात् मेष मेढ़ा के समान, वृष बैल के समान, कर्क केकड़ा के समान, सिंह सिंह के समान, तुला तराजू के समान एवं वृश्चिक बिच्छू के समान स्वरूप वाली हैं॥ तात्पर्य यह है कि मेष तथा वृष ये दोनों राशियां दिन में वन में तथा रात्रि में ग्राम में रहती हैं। मिथुन ग्राम में, कर्क जल में, सिंह वन में, कन्या नौका पर स्थित जल में, तुला बाजार में, वृश्चिक बिल में, धनु ग्राम में, मकर का पूर्वार्द्ध वन में तथा उत्तरार्द्ध जल में, कुम्भ ग्राम में एवं मीन जल में रहती है। प्रश्नादि की लग्न के द्वारा नष्ट-द्रव्यादि के स्थान तथा प्रसवादि के स्थान का स्वरूप जानने में इनका प्रयोग किया जाता है। देश, दिशा, काल आदि का ज्ञान इन राशियों के द्वारा ही होता है॥

अथ वियोनि जन्म ज्ञानम् ॥ क्रूरग्रहैः सुबलिभिर्विबलैश्च सौम्यैः क्लीबे चतुष्टयगते तदवेक्षणाद्वा। चन्द्रोपगद्विरसभाग समानरूपं सत्वं वदेद्यदि भवेत्स वियोनिसंज्ञः॥ टीका ॥ जितने पापग्रह बली हों तथा शुभग्रह निर्बल हों एवं बुध शनि केन्द्र में हों तो ऐसे योग में जिस प्रकार के द्वादशांश में चन्द्रमा हो, उसी प्रकार के प्राणियों का स्वरूप कहना चाहिए। यदि वह (द्वादशांश) वियोनि संज्ञक अर्थात् द्विपद से अलग राशि का हो तो वियोनि का जन्म कहना चाहिए। यदि पापग्रह बली और शुभग्रह निर्बल हों तथा बुध

अथवा शनि से दृष्ट लग्न हो तो भी वियोनि का जन्म कहना चाहिए। यदि चन्द्रमा वियोनि संज्ञक द्वादशांश में हो हो अर्थात् द्विपद द्वादशांश में हो तो द्विपद का जन्म समझना चाहिए। [यदि चन्द्रमा मेष के द्वादशांश में हो तो छाग-मेढ़ा आदि, वृष के में हो तो गाय-भैंस आदि, कर्क के में हो तो केकड़ा-कच्छप आदि, सिंह के में हो तो सिंह बाघ-बिलाव आदि, वृश्चिक के में हो तो बिच्छू-सर्प आदि, धनु के उत्तरार्द्ध में हो तो घोड़ा-गदहा आदि, मकर के पूर्वार्द्ध में हो तो हरिण आदि तथा उत्तरार्द्ध में हो तो गोह-जलजन्तु आदि एवं मीन के द्वादशां-श में हो तो मछली आदि का जन्म समझना चाहिए, परन्तु यदि मिथुन, कन्या आदि द्विपदराशि के द्वादशांश में चन्द्रमा हो तो मनुष्य का जन्म ही समझना चाहिए॥ पापा बलिनः स्वभागगाः पारक्ये विबलाश्च शोभनाः लग्नं च वियोनि संज्ञकं दृष्ट्वात्रापि वियोनिमादिशेत् ॥ २॥ टीका॥ यदि पाप ग्रह बली होकर अपने नवांश में हो एवं शुभ ग्रह निर्बल होकर दूसरे के नवांश में हो तथा वियोनि (द्विपद से भिन्न) राशि का लग्न हो तो ऐसे योग में चन्द्रमा जिस राशि के नवमांश हो, उसके समान वियोनि का जन्म समझना चाहिए॥२॥

अथ पितुः परोक्ष जन्म ज्ञानम्॥ पितुर्जातः परोक्षस्य लग्नमिन्दावपश्यति। विदेशस्थस्य चरभे मध्याद् भ्रष्टे दिवाकरे॥१॥ उदयस्थे ऽपि वा मन्दे कुजे वास्तं समागते। स्थिते वान्तः क्षपानाथे शशाङ्क सुत शुक्रयोः॥२॥ टीका॥ यदि लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तो पिता के परोक्ष में जन्म कहना चाहिए। इस योग में यदि सूर्य दशम स्थान से आगे हटा हुआ तथा चर राशि में हो तो विदेश स्थित पिता के परोक्ष में जातक का जन्म कहना चाहिए। यदि शनि लग्न में, मंगल सप्तम भाव में अथवा चन्द्रमा बुध-शुक्र के मध्य में हो तो जातक का जन्म पिता के परोक्ष में कहना चाहिए॥१-२॥

अथ सर्पवेष्टितादि जन्म ज्ञानम्॥ शशाङ्के पापलग्ने वा वृश्चिकेश त्रिभागगे। शुभैः स्वायस्थितैर्जातः सर्पस्तद्वेष्टितोऽपि वा॥१॥ चतुष्पादगते भानौ शेषैर्वीर्यसमन्वितैः। द्वितनुस्थैश्च

यमलौ भवतः कोश वेष्टितौ ॥ २॥ छागे सिंहे वृषे लग्ने तत्स्थे सौरेऽथवा कुजे। राश्यंशसदृशे गात्रे जायते नाल वेष्टितः ॥ ३॥ टीका॥ यदि चन्द्रमा मंगल के द्रेष्काण में हो अथवा पापग्रह से युक्त लग्न मंगल के द्रेष्काण में हो तो इन योगों में शुभग्रह यदि द्वितीय-एकादश स्थान में हो तो सर्प का अथवा सर्पवेष्टित मनुष्य का जन्म कहना चाहिए॥ १॥ यदि सूर्य चतुष्पद राशि में हो तथा अन्य ग्रह बलवान् होकर द्विस्वभावराशि में हो तो एक जरायु में वेष्टित दो सन्तानों (यमल) का जन्म होता है॥ २॥ यदि मेष, सिंह अथवा वृष लग्न हो और उसमें शनि अथवा मंगल हो तो लग्न में जिस राशि का नवांश हो और उस राशि का जो अङ्ग हो, उस अङ्ग में नाल-वेष्टित शिशु (जातक) का जन्म होता है॥ ३॥

अथ जार जातं ज्ञानम्॥ न लग्नमिन्दुं च गुरुर्निरीक्षते न वा शशाङ्कं रविणा समागतम्। सपापकोऽर्केण युतोऽथवा शशी परेण जातं प्रवदन्ति निश्चयात्॥ १॥ गुरुक्षेत्रगते चन्द्रे तद्युक्ते वाऽन्यराशिगे। तद्द्रेष्काणे तदंशे वा न परैर्जात इष्यते॥ २॥ टीका॥ यदि गुरु की लग्न तथा चन्द्रमा पर दृष्टि न हो, अथवा चन्द्रमा सूर्य से युक्त हो और उस पर गुरु की दृष्टि न हो अथवा चन्द्रमा शनि अथवा मंगल के साथ ही सूर्य से भी युक्त हो तो इन तीनों योगों में उत्पन्न जातक को परजात अर्थात् पर-पुरुष से उत्पन्न (जार-पुत्र) समझना चाहिए॥ १॥ यदि बृहस्पति की राशि - धनु और मीन - में चन्द्रमा हो अथवा चन्द्रमा बृहस्पति के साथ हो अथवा द्रेष्काण या नवांश में चन्द्रमा बृहस्पति की राशि (धनु मीन) में हो तो जातक जारपुत्र नहीं होता॥ २॥

अथ जातस्य पितृबन्धन योग ज्ञानम्॥ क्रूरर्क्षगतावशोभनौ सूर्याद्द्यूननवात्मजस्थितौ। बद्धस्तु पिता विदेशगः स्वे वा राशिवशादथो पथि॥ १॥ टीका॥ यदि दो पापग्रह पापग्रह की राशि में स्थित होकर सूर्य से सप्तम, नवम अथवा पंचम स्थान में हों तो जन्म के समय जातक का पिता बन्धन में था। यदि सूर्य चर राशि में हो तो विदेश में, स्थिर राशि हो तो स्वदेश में तथा द्विस्वभाव राशि हो तो जन्म के समय

जातक का पिता मार्ग में वा वन में था -- यह समझना चाहिए ॥ ९ ॥

अथ प्रसव देशादि ज्ञानम् ॥ पूर्णेन्दौ प्राविलि स्वराशिगे सौम्ये लग्नगते शुभे सुखे । लग्ने जलजे ऽस्तगेऽपि वा चन्द्रे पोतगता प्रसूयते ॥ १ ॥ आप्योदयमाप्यगः शशी सम्पूर्णः समवेक्षते ऽथवा । मेषूरणबन्धुलग्नगः स्यात्सूतिः सलिले न संशयः ॥ २ ॥ उदयोडुपयोर्व्ययस्थिते गुप्त्यां पापनिरीक्षिते यमे । अलिकर्किपुते विलग्नगे सौरे शीतकरेक्षिते ऽवटे ॥ ३ ॥ मन्देऽब्जगते विलग्नगे बुधसूर्येन्दुनिरीक्षिते क्रमात् । क्रीडाभवने सुरालये सोषरभूमिषु च प्रसूयते ॥ ४ ॥ नृलग्नगं प्रेक्ष्य कुजः श्मशाने रम्ये सितेन्दू गुरुरग्निहोत्रे । रविर्नरेन्द्रामरगोकुलेषु शिल्पालये ज्ञः प्रसवं करोति ॥ ५ ॥ राश्यंश समानगोचरे मार्गे जन्म चरे स्थिरे गृहे । स्वर्क्षांशगते स्वमन्दिरे बलयोगात्फलमंशकर्क्षयोः ॥ ६ ॥

टीका ॥ यदि पूर्ण चन्द्रमा कर्क में, बुध लग्न में तथा शुभग्रह चतुर्थ भाव में हो तो जातक का जन्म (प्रसव) नौका (जलयान) पर हुआ समझना चाहिए। यदि लग्न में जलचर राशि हो तथा चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो भी यही फल समझना चाहिए ॥ १ ॥ यदि पूर्णचन्द्र जलचर राशि में हो तथा जलचर राशि लग्न को देखती हो तो भी जल में प्रसव होता है। यदि जलचर राशि में स्थित चन्द्रमा दशम, चतुर्थ अथवा लग्न भाव में हो तो भी यही फल कहना चाहिए ॥ २ ॥ यदि चन्द्रमा लग्न में हो तथा द्वादश भाव में स्थित शनिपर पापग्रह की दृष्टि हो तो जातक का जन्म कारागृह में हुआ कहना चाहिए। यदि वृश्चिक अथवा कर्क राशि में स्थित शनि लग्न में बैठा हो और उसपर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो गर्त (गड्ढे) में जन्म हुआ समझना चाहिए ॥ ३ ॥ यदि जलचर राशि स्थित शनि लग्न में बैठा हो और उस पर बुध की दृष्टि हो तो जातक का जन्म क्रीड़ास्थल में, यदि सूर्य की दृष्टि हो तो देवालय में और यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो ऊसर भूमि में हुआ कहना चाहिए ॥ ४ ॥ यदि द्विपदराशि लग्न में हो और उसमें शनि बैठा हो तथा उस पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक का जन्म श्मशान भूमि में, यदि शुक्र और चन्द्रमा -- इन दोनों की दृष्टि हो तो किसी रमणीय

स्थान में, यदि गुरु की दृष्टि हो तो अग्निशाला में, यदि सूर्य की दृष्टि हो तो राजगृह, देवालय अथवा गोशाला में और यदि बुध की दृष्टि हो तो चित्रालय में हुआ समझना चाहिए ॥५॥ लग्न की राशि अथवा नवांश तुल्य प्रदेश में ही जातक का जन्म कहना चाहिए। यदि लग्न अथवा नवांश चर हो तो मार्ग में एवं स्थिर हो तो घर में जन्म कहना चाहिए। यदि लग्न अपने ही नवांश में हो तो अपने ही घर में जन्म कहे। लग्न तथा नवांश की राशियों में जो भी बली हो, उसी के सदृश स्थान में ही प्रसव (जातक का जन्म) हुआ कहना चाहिए॥६॥

अथ माता त्याग एवं मातृसुख विचारम्॥ आरार्कजयोस्त्रिकोणगे चन्द्रे ऽस्ते च विसृज्यतेऽम्बया। दृष्टे ऽमरराजमन्त्रिणा दीर्घायुः सुखभाक्च स स्मृतः ॥१॥ पापेक्षिते तुहिनगावुदये कुजे ऽस्ते त्यक्तो विनश्यति कुजार्कजयोस्तथाये। सौम्ये ऽपि पश्यति तथाविधहस्तमेति सौम्येतरेषु परहस्तगतो ऽप्यनायुः ॥२॥ टीका॥ यदि मंगल और शनि- दोनों एक ही राशि में हों, उससे त्रिकोण (९।५) अथवा सप्तम भाव में चन्द्रमा हो तो जन्म देने के बाद माता उस बालक को त्याग देती है, परन्तु यदि चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो वह त्यागा हुआ बालक दीर्घायु एवं सुखी होता है ॥१॥ यदि पापग्रह (शनि-सूर्य) से दृष्ट चन्द्रमा लग्न में हो तथा उससे सप्तम भाव में मंगल हो तो माता द्वारा परित्यक्त बालक की मृत्यु हो जाती है। यदि पापदृष्ट चन्द्रमा एकराशिगत शनि-मंगल से ग्यारहवें भाव में हो तो भी माता द्वारा परित्यक्त बालक मर जाता है। यदि शुभ ग्रह की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो वह शुभग्रह जिस वर्ण का स्वामी हो, उसी वर्ण के पुरुष अथवा स्त्री के हाथ में वह (माता द्वारा परित्यक्त बालक) जाता है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट हो और उस पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो अन्य के हाथ में जाने पर भी उस बालक की मृत्यु हो जाती है ॥२॥

अथ प्रसवगृह ज्ञानम्॥ पितृमातृगृहेषु तद्बलात्तरुशालादिषु नीचगैः शुभैः। यदि नैकगतैस्तु वीक्षितौ लग्नेन्दू विजने प्रसूयते ... लग्ने ... ... मन्ददृष्टे ऽब्जगे वा। तद्युक्ते वा तमसि

शयनं नीचसंस्थैश्च भूमौ ॥ यद्वद्राशिर्व्रजति हरिजं गर्भमोक्षस्तु तद्वत् । पापैश्चन्द्रस्मरसुखगतैः क्लेशमाहुर्जनन्याः ॥ २॥ टीका ॥ जो ग्रह बली हो, उसी के अनुसार पिता अथवा मातादि के घर में बालक का जन्म हुआ कहना चाहिए। यदि सभी शुभ ग्रह नीचस्थ हों तो तरुशाला (वन-वाटिका आदि) में जातक का जन्म कहना चाहिए। यदि सभी शुभ ग्रह किसी एक स्थान में रह कर लग्न तथा चन्द्रमा को न देखते हों तो निर्जन-स्थान में जन्म कहना चाहिए ॥ १॥ यदि चन्द्रमा शनि की राशि (मकर या कुम्भ) के नवांश में हो अथवा चतुर्थ स्थान में हो, शनि से दृष्ट अथवा युक्त हो तो अंधेरे स्थान में प्रसूता का शयन (बालक का जन्म) कहना चाहिए। यदि तीन से अधिक ग्रह नीच राशि में हों तो प्रसूता का शयन भूमि में समझना चाहिए। जिस प्रकार की लग्नराशि क्षितिज में उदित हो, गर्भस्थ बालक का जन्म उसी के अनुरूप कहना चाहिए। यदि चन्द्रमा से सप्तम और चतुर्थ स्थान में पापग्रह हो तो प्रसव के समय माता को कष्ट होता है ॥ २॥

सौरांशकरस्थे शशिनि प्रलग्ने जले जलारव्यांशकमाश्रिते वा । स्वांशस्थिते केन्द्रगतेऽर्कजे वा जातस्तमिस्रे यदि नार्कदृष्टः ॥ इति यवनाचार्यः ॥ टीका ॥ यवनाचार्य का मत है कि यदि अंधकार के प्रसव योग में शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो अंधकार में प्रसव होना नहीं कहना चाहिए।

अथ सूतिकागृहे, दीप, द्वारादि विचारम् ॥ स्नेहः शशाङ्काद् उदयाच्च वर्तिर्दीपोऽर्कयुक्तार्क्षवशा-च्चराद्यः । द्वारं च तद्वास्तुनि केन्द्रसंस्थैर्ज्ञेयं ग्रहैर्वीर्यसमन्वितैर्वा ॥ १॥ जीर्णं संस्कृतमर्कजे क्षितिसुते दग्धं नवं शीतगौ काष्ठाढ्यं न दृढं रवौ शशिसुते तन्नैकशिल्पयुद्भवम् । रम्यं चित्रयुतं नवं च भृगुजे जीवे दृढं मन्दिरं चक्रस्थैश्च यथोपदेशरचनां सामन्तपूर्वां वदेत् ॥ २॥ टीका ॥ चन्द्रमा के अंशानुसार दीपक में तैल का प्रमाण (अथवा रोशनी की न्यूनाधिकता) समझना चाहिए। अर्थात् यदि चन्द्रमा राशि के प्रारंभिक अंश में हो तो दीपक में तैल भरा हुआ समझें और यदि अन्तिम अंश में हो तो दीपक में तैल का

अभाव समझना चाहिए। बीच में जितने भी अंश हों, उसी अनुपात से दीपक में तैल का प्रमाण समझना
चाहिए। इसी प्रकार लग्न के अंश से बत्ती का प्रमाण समझना चाहिए। सूर्य जिस राशि में हो, उसी के अनुसार
दीपक को भी चलायमान (चर), स्थिर तथा द्विस्वभाव राशि के पूर्वार्द्ध में स्थिर तथा उत्तरार्द्ध में चलायमान
समझना चाहिए। जिस दिशा की सूर्य राशि हो, उसी दिशा में सूतिका गृह में दीपक की स्थिति समझनी
चाहिए। केन्द्र स्थित ग्रहों से सूतिकागृह के द्वार को निश्चित करना चाहिए। यदि केन्द्र में अनेक ग्रह हों तो
उनमें जो सबसे बली हो, उसकी दिशा में ही सूतिकागृह का द्वार समझना चाहिए। यदि केन्द्र में कोई ग्रह
न हो तो लग्न राशि की दिशा में सूतिका गृह का द्वार निश्चित करें [विशेष: इष्टकाल से दिन अथवा रात्रि का
जन्म समझ कर ही दीपक के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए तथा देश, काल की स्थिति पर भी ध्यान देना चाहिए
जैसे - जहाँ बिजली के बल्ब लगे हों, वहाँ दीपक को चलायमान न कह कर, स्थिर ही कहना चाहिए] ॥१॥ यदि
जन्म काल में सब ग्रहों की अपेक्षा शनि अधिक बली हो तो सूतिका-गृह पुराना, परन्तु मरम्मत किया हुआ है
यह समझना चाहिए। यदि मंगल बली हो तो सूतिका-गृह जला हुआ, चन्द्रमा बली हो तो नवीन, सूर्य बली
हो तो अनेक काष्ठों से युक्त तथा कमजोर, बुध बली हो तो अनेक कारीगरों द्वारा निर्मित, गुरु बली हो तो
अत्यन्त सुदृढ़ तथा शुक्र बली हो तो सुन्दर चित्रों से सुसज्जित एवं नवीन सूतिका-गृह होगा - यह कहना
चाहिए। जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों के अनुसार ही, सूतिका-गृह के चारों ओर आस-पास वाले मका-
-नों का स्वरूप निश्चित करना चाहिए ॥२॥

अथ सूतिका निवास स्थानम् ॥ मेषकुलीर तुलालिघटैः प्रागुत्तरतो गुरु सौम्यगृहेषु।
पश्चिमतश्च वृषेण निवासो दक्षिण भागकरौ मृग सिंहौ ॥ टीका ॥ मेष, कर्क, तुला, वृश्चिक और कुम्भ
लग्न हो तो घर के पूर्व भाग में सूतिका का निवास समझना चाहिए। यदि धनु, मीन, कन्या अथवा

पृ० सं० ३४

भा० टी०

अथ सुख-प्रसव ज्ञानम् ॥ चतुर्थकर्मगाः सौम्याः सुखेन प्रसवंकराः । त्रिकोणस्तगताः पापाः कष्टतः प्रसवं कराः ॥ यदि जन्म लग्न से चतुर्थ अथवा दशम भाव में शुभग्रह हों तो सुख पूर्वक प्रसव हुआ होगा और यदि त्रिकोण (नवम, पंचम अथवा सप्तम) में पापग्रह हों तो कष्ट पूर्वक प्रसव हुआ होगा - यह समझना चाहिए ॥

अथ शिर-पाद प्रसव ज्ञानम् ॥ शीर्षोदये विलग्ने मूर्द्धा प्रसवोऽन्यथोदये चरणौ । उभयोदये च हस्तौ शुभदृष्टिः शोभनोऽन्यथा कष्टम् ॥ टीका ॥ यदि शीर्षोदय राशि अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, धनु, कुम्भ और मीन जन्म लग्न हो तो बालक सिर से पैदा हुआ है- यह समझना चाहिए । अन्य पृष्ठोदय राशियों में जन्म हो तो पाँव से उत्पन्न होता है । यदि उभयोदय राशि अर्थात् मीन जन्मलग्न हो तो हाथ से पैदा होता है । लग्न को शुभग्रह देखते हों तो सुख पूर्वक अन्यथा कष्ट पूर्वक प्रसव हुआ कहना चाहिए ॥

अथ सूतिका गृह की ऊँचाई का ज्ञान ॥ गुरुरुच्चो दशमस्थो द्वित्रिचतुर्भूमिकं करोति गृहम् । धनुषि सबले त्रिशालं द्विशाल मन्येषु यमलेषु ॥ टीका ॥ यदि गुरु लग्न से दशम भाव में अपनी उच्च राशि में बैठा हो तो प्रसूति-गृह अनेक मंज़िलों (खण्डों) वाला होगा। यदि धनु राशि में गुरु बलवान् हो तो तीन खण्डों वाला एवं द्विस्वभाव राशियों में हो तो दो खण्डों वाला होगा- यह समझना चाहिए ॥

अथ जातस्य स्वरूपादि ज्ञानम् ॥ लग्न नवांशपतुल्यतनुः स्याद्वीर्ययुतग्रहतुल्यतनुर्वा। चन्द्र समेत नवांश वर्णः कादि विलग्न विभक्तभगात्रः ॥ १ ॥ कन्दृक्श्रोत्रनसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादयस्तो कण्ठांसक बाहुपार्श्व हृदय क्रोडानि नाभिस्ततः । बस्तिः शिश्न गुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी ।

जह्याङ्घ्रीयुग्मयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काण भागैस्त्रिधा ॥ २॥ तस्मिन्पापयुते व्रणं शुभयुते दृष्टे च लक्ष्मादिशेत् स्वर्क्षांशे स्थिर संयुतेषु सहजः स्यादन्यथागन्तुकः । मन्दे श्मानिलजो ऽग्नि शस्त्रविषजो भौमे बुधे भूभवः सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ शृङ्ग्यब्जजो ऽन्यैः शुभम् ॥ ३॥ समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा ग्रहा भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभेषु वा । व्रणकृदशुभः षष्ठे देहे तनोर्भसमाश्रिते । तिलकमशकृद् दृष्टः सौम्यै र्युतश्च स लक्ष्मवान् ॥ ४॥ टीका ॥ लग्न जिस ग्रह के नवांश में हो, उसी ग्रह के समान जातक का ह्रस्व, दीर्घ अथवा मध्यम आकार समझना चाहिए। यदि नवांशपति निर्बल हो तो जो ग्रह सर्वाधिक बली हो, उसी के समान आकार समझें। चन्द्रमा जिस ग्रह के नवांश में हो उसी ग्रह के वर्ण के समान जातक का वर्ण कहें तथा मस्तकादि अङ्गों में लग्नादि राशियों के अनुरूप जातक के अवयवों के विषय में समझना चाहिए ॥ १॥ लग्नगत द्रेष्काण से, लग्नादि द्वादशभावों से मस्तक आदि अङ्ग-विभाग तीन प्रकार के होते हैं । उनमें उदित भावों से वाम अङ्ग तथा अनुदित भावों से दक्षिण अङ्ग के विषय में समझना चाहिए ॥ २॥ अङ्ग विभागस्थ राशियों में, जिनमें केवल पाप ग्रह (पाप ग्रह से युक्त बुध, क्षीण चन्द्रमा, सूर्य, मंगल तथा शनि) हों, जातक के उस अङ्ग में व्रण होता है । यदि पापग्रह शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो उस अङ्ग में मस्सा, तिल आदि का चिह्न कहना चाहिए । यदि पापग्रह अपनी राशि नवांश अथवा स्थिरराशि नवांश में हो तो जातक के जन्म के साथ ही उस स्थान में व्रण अथवा चिह्न होता है । यदि अन्यराशि राशि नवांश में हो तो उस ग्रह की दशा-अन्तर्दशा काल में व्रण आदि होने का भावी-फल कहना चाहिए। जिस अंग में शनि हो, वहाँ पत्थर की चोट अथवा वातरोग के कारण व्रण होता है । जिस में मंगल हो, वहाँ अग्नि, शस्त्र अथवा विष से; जहाँ पापग्रह से युक्त बुध हो, वहाँ पृथ्वी पर गिरने आदि से; जहाँ सूर्य हो, वहाँ लकड़ी अथवा पशुओं के आघात से; जहाँ क्षीण चन्द्रमा हो, वहाँ सींगवाले जन्तु

अथवा जल-जन्तु के आघात से व्रण होना कहना चाहिए। जहाँ शुभग्रह हो, उस अङ्ग में पुष्टता-मनोहरता का शुभ-फल होता है ॥ ३ ॥ बुध सहित तीन अन्य ग्रह जिस अङ्ग-विभाग में पड़े हों, वहाँ पापग्रह अथवा शुभ ग्रह कोई भी क्यों न हों, उस अङ्ग में व्रण अथवा चिह्न अवश्य होता है। यदि लग्न से षष्ठभाव में पापग्रह हो, तो वह राशि जिस अंग की हो, उस अङ्ग में भी व्रण अवश्य होता है। यदि षष्ठ भावस्थ पापग्रह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो उस अङ्ग में तिल अथवा मस्सा होता है। यदि वह शुभ ग्रह से युक्त हो तो केवल चिह्न ही कहना चाहिए ॥ ४ ॥

मस्तके च मुखे सूर्यो गले वक्षसि चन्द्रमा। पृष्ठे तथोदरे भौमः करयोः पदयोर्बुधः ॥ १ ॥ कट्यां च जघने जीवः शुक्रश्च गुद लिङ्गयोः। जानूरुदेशयोर्मन्दः प्रयच्छति शुभाशुभम् ॥ २ ॥ सूर्यस्यास्थि विधो रक्तं मज्जा भौमस्य त्वग् विदः। गुरोर्वसा भृगोः शुक्रं शनेः स्नायुः प्रकीर्तितः ॥ ३ ॥ आत्मा सूर्यो मनश्चन्द्रः कुजः सत्त्वं बुधश्च वाक्। गुरुर्ज्ञानं मदः शुक्रः जन्तोर्दुःखं शनिस्तमः ॥ ४ ॥ टीका ॥ मनुष्य के मस्तक और मुख में सूर्य, छाती तथा गर्दन में चन्द्रमा, पेट तथा पीठ में मंगल, हाथ तथा पाँव में बुध, कमर तथा जाँघ में गुरु, गुदा तथा लिङ्ग में शुक्र एवं जाँघ तथा घुटनों में शनि अपना शुभ अथवा अशुभ फल देते हैं ॥ १-२ ॥ प्राणियों के शरीर में अस्थि पर सूर्य का, रक्त पर चन्द्रमा का, मज्जा पर मङ्गल का, त्वचा पर बुध का, वसा पर गुरु का, वीर्य पर शुक्र का एवं स्नायुओं पर शनि का आधिपत्य माना गया है ॥ ३ ॥ प्राणियों में सूर्य आत्मा, चन्द्रमा मन, मङ्गल सत्त्व (बल), बुध वाणी, गुरु ज्ञान, शुक्र मद तथा शनि एवं राहु-केतु दुःख हैं ॥ ४ ॥

अथ मातृ पितृ बन्धु नाश योगाः ॥ अग्रजातं रविर्हन्ति पृष्ठजातं शनैश्चरः। जातज्जातं कुजो हन्ति सहजस्थो भवेद्यदि ॥ १ ॥ टीका ॥ यदि जातक के जन्म लग्न से तृतीय भाव में सूर्य हो तो उसके बड़े भाई की मृत्यु हो जाती है। यदि तृतीय स्थान में शनि हो तो बाद के छोटे भाई की मृत्यु होती है। यदि

तृतीय भाव में मंगल हो तो सभी भाइयों की मृत्यु होजाती है ॥१॥ दशमस्थो यदा भौमः शत्रुक्षेत्रस्थितो यदि। म्रियते तस्य बालस्य पिता शीघ्रं न संशयः ॥२॥ टीका ॥ यदि लग्न से दशम स्थान में मंगल अपने शत्रु ग्रह की राशि में बैठा हो तो जातक के पिता की शीघ्र मृत्यु हो जाती है ॥२॥ लग्नस्थो यदा सौरिः षष्ठे भव-ति चन्द्रमाः। कुजस्तु सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति ॥३॥ टीका ॥ यदि जन्म लग्न में शनि तथा छठे स्थान में चन्द्रमा और सातवें स्थान में मंगल हो तो बालक का पिता जीवित नहीं रहता ॥३॥ लग्ने जीवो धने मन्दो रविर्भौमस्तथा बुधः। विवाह समये तस्य बालस्य म्रियते पिता ॥४॥ टीका ॥ यदि लग्न में गुरु, एवं द्वितीय स्थान में शनि, सूर्य, मंगल और बुध हों तो जातक के विवाह के समय उसके पिता की मृत्यु हो जाती है ॥४॥ षष्ठे च द्वादशे स्थाने यदा पापग्रहो भवेत्। तदा मातृभयं विद्याच्चतुर्थे दशमे पितुः ॥५॥ टीका ॥ यदि जन्म लग्न से छठे तथा बारहवें भाव में पापग्रह हों तो जातक की माता को कष्ट होता है। यदि चतुर्थ स्थान में पापग्रह हो तो माता को और दशम स्थान में पापग्रह हों तो पिता को अरिष्ट करते हैं ॥५॥

अन्य योगाश्च ॥ सहजस्थो यदा शुक्रः सिंहे मेषे बृहस्पतिः। दशमे रवि भौमौ च मूको भवति बालकः ॥१॥ अर्कसूनुः कुजो राहु पञ्चमस्थः प्रसूयते। लशुनं वामकुक्षौ च गर्गाचार्येण भाषितम् ॥२॥ दशमे बुध जीवौ च सूर्यभौमौ च कण्टके। तृतीयैकादशे पापो बालकः स्यात्षडङ्गुलिः ॥३॥ टीका ॥ यदि जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में हो; गुरु सिंह अथवा मेष राशि में हो तथा दशम स्थान में सूर्य-मङ्गल हो तो बालक गूँगा होता है ॥१॥ यदि जन्म लग्न से पंचम भाव में शनि, मंगल, राहु हों तो जातक की बाँई कोख में लहसुन का चिह्न होता है ॥२॥ यदि जन्म लग्न से दशम स्थान में बुध और गुरु हों; सूर्य तथा मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हों तथा तीसरे अथवा ग्यारहवें स्थान में पापग्रह हों तो जातक की छः

अँगुलियाँ होती हैं ॥३॥

अथ अङ्गविभाग ज्ञानम् ॥ कं दृक्श्रोत्र नसाकपोलहनवो वक्त्रं च होरादय स्ते कण्ठांसक बाहु पार्श्व हृदय क्रोडानि नाभिस्ततः । वस्तिः शिश्नगुदे ततश्च वृषणावूरू ततो जानुनी जङ्घेऽङ्घ्रीत्युभयत्र वाममुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥१॥ टीका॥ प्रत्येक लग्न में दस-दस अंश के तीन द्रेष्काण होते हैं । लग्न से सप्तम भाव तक अनुदित एवं अष्टम से द्वादशभाव तक उदित भाग कहलाता है। तीनों द्रेष्काणों में तीन प्रकार के अङ्ग-विभाग की कल्पना करनी चाहिए अर्थात् पहला द्रेष्काण लग्न हो तो लग्न सिर, द्वितीय तथा द्वादश नेत्र अर्थात् दूसरा दाँया तथा बारहवाँ बाँया नेत्र; तीसरा दायाँ कान तथा ग्यारहवाँ बायाँ कान, चौथा दाँया नासिका-भाग एवं दसवाँ बाँया नासिका-भाग; पाँचवाँ दाँया कपोल तथा नवाँ बायाँ कपोल; छठा दाँया ठोड़ी का भाग तथा आठवाँ बायाँ ठोड़ी का भाग; एवं सातवाँ मुख समझना चाहिए। यदि लग्न में दूसरा द्रेष्काण हो तो लग्न को कण्ठ, दूसरे तथा बारहवें को क्रमशः दाँया-बाँया कंधा; तीसरे और ग्यारहवें को क्रमशः दाँया-बाँया बाहु; चौथे और दसवें को क्रमशः दाँया-बाँया पार्श्व; पाँचवें और नवें को हृदय, छठे तथा आठवें को पेट एवं सातवें को नाभि समझना चाहिए। यदि तीसरा द्रेष्काण हो तो लग्न को पेडू, दूसरे और बारहवें को शिश्न (पुरुष अथवा स्त्री की जननेन्द्रिय) एवं गुदा; तीसरे और ग्यारहवें को अण्डकोष; चौथे और दसवें को उरू, पाँचवें औ नवें को दोनों जाँघें, छठे और आठवें को दोनों घुटने तथा सातवें को दोनों पाँव समझना चाहिए। इनमें अनुदित राशियाँ दायें अङ्ग-विभाग की तथा उदित राशियाँ वाम भाग में कल्पित करनी चाहिए ॥१॥

अथ ग्रहों के देवता तथा प्रत्यधि देवता ॥ सूर्यादितः शिव शिवा गुह विष्णु केन्द्र कालाः क्रमेण पतयः कथिता ग्रहाणाम् । वह्न्यम्बु भूमि हरि शक्र शची विरिञ्चास्तेषां पुनर्मुनिवरैः प्रतिदेवताश्च ॥ टीका ॥ सूर्य के शिव, चन्द्रमा के पार्वती, मङ्गल के कार्तिकेय, बुध के विष्णु, गुरु के ब्रह्मा, शुक्र के इन्द्र तथा

शनि के काल— ये देवता हैं तथा क्रमशः अग्नि, जल, भूमि, विष्णु, इन्द्र, इन्द्राणी और ब्रह्मा - ये प्रत्यधिदेवता हैं राहोरधिपतिः कालः प्रत्यधीशो भुजङ्गमः। चित्रगुप्तस्तथा केतोः स्वयम्भूः क्रमशः स्मृतः॥ टीका॥ राहु के अधिदेवता काल तथा प्रत्यधिदेवता शेषनाग हैं। केतु के अधिदेवता चित्रगुप्त तथा प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं॥

ग्रहों के राशि भोग काल॥ मासं सूर्यो बुधः शुक्रः सार्धं मासं च मङ्गलः। गुरुर्वर्षं शनिः सार्धवर्षयुग्मं तथा शशी॥ दिनद्वयं सपादं च राशौ राशौ च तिष्ठति। आकाशे स्व-स्वकक्षायां मध्यगत्या भ्रमन्ग्रह॥ टीका॥ सभी ग्रह अपनी-अपनी कक्षा में मध्यगति से भ्रमण करते हैं। सूर्य, बुध और शुक्र एक-एक मास, मङ्गल डेढ़ मास, गुरु एक वर्ष, शनि ढाई वर्ष तथा चन्द्रमा सवा दो दिन तक एक-एक राशि पर रहते हैं॥

ग्रहों के फल देने का समय॥ राश्यादिगौ रविकुजौ फलदौ सितेज्यौ। मध्ये सदा शशिसुतश्चरमेऽब्ज मन्दौ॥ अन्नवान्नवह्निभय सन्मति वस्त्र सौख्य दुःखानि मासि जनने रविवासरादौ॥ १॥ भौमादीनां ग्रहाणां हि पञ्चानामपि नित्यशः। अतीचारे च वक्रे च पूर्वराशिफलं वदेत्॥ अतीचारी गुरुस्त्वग्रराशिजं गोचरोद्भवम्। फलं लुप्ताब्दजं दुष्टं पूर्वराशौ प्रयच्छति॥ २॥ नीचराशिगतो यश्च शत्रुक्षेत्रगतोऽपि वा। शुभाशुभफलं नैव ददात्यस्तंगतोऽपि वा॥ शुभेक्षित युतः पापः शुभः पापयुतेक्षितः। नैव स्वं स्वं फलं दातुं क्षमो भवति खेचरः॥ ३॥ टीका॥ सूर्य तथा मङ्गल राशि के आदि भाग में, गुरु तथा शुक्र मध्यभाग में, बुध सम्पूर्ण राशि भोग-काल में तथा शनि और चन्द्रमा राशि के अन्तिम भाग में विशेष रूप से अपना शुभ अथवा अशुभ फल देते हैं॥ १॥ मङ्गल आदि पाँच ग्रह यदि अतिचार से अग्रिम राशि में अथवा वक्रगति से पृष्ठ राशि में भी चले जाँय, तोभी पूर्व राशि का ही फल देते हैं। गुरु में यह विशेषता है कि यदि वह अतिचार से अग्रिम राशि में जाय तो गोचर फल उसी राशि का देता है; परन्तु लुप्त वर्ष जन्य दोष पूर्वराशि सम्बन्धी संवत्सर में ही देता है, क्योंकि पूर्व राशि सम्बन्धी संवत्सर ही लुप्त होता है॥ २॥ जो ग्रह

नीच अथवा शत्रु क्षेत्र में हों अथवा सूर्य के सान्निध्य से अस्त हों, वे अपना शुभ अथवा अशुभ फल नहीं देते। यदि शुभग्रह पापग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो वह शुभ-फल नहीं देता। यदि पापग्रह शुभ ग्रह से युत अथवा दृष्ट हो तो वह पाप-फल नहीं देता ॥३॥

अन्यच्च।सूर्यः पंचदिनं शशी त्रिघटिका भौमोष्ट वै वासरान्। सप्ताहं ह्युशना बुधः त्रयदिनं मास द्वयं वै गुरुः ॥१॥ षण्मासं रविजस्तथैव सततं स्वर्भानुमास द्वयम्। केतोश्चैव तथा फलं परिमितं ज्ञेयं ग्रहाणां फलम् ॥२॥ राशि प्रवेशे सूर्यारौ मध्ये शुक्र बृहस्पती। राहुश्चन्द्रः शनिश्चान्ते सौम्यश्चैव सदा शुभः ॥३॥ टीका॥ सूर्य एक राशि को एक महीने तक भोगता है अर्थात् एक राशि पर एक महीने तक रहता है और आदि में पाँच दिन फल देता है। चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन तक रहता है तथा अन्त की तीन घड़ी में फल देता है। मंगल एक राशि पर डेढ़ महीने तक रहता है और प्रारंभ के आठ दिन विशेष फल देता है, बुध एक महीने एक राशि पर रहता है तथा अन्त की तीन घड़ी में फल देता है। बृहस्पति एक राशि पर तेरह महीने एक राशि पर रहता है तथा मध्य के दो महीने विशेष फल देता है। शुक्र एक महीने एक राशि पर रहता है तथा मध्यभाग में सात दिन तक विशेष फल देता है। शनि तीस महीने तक एक राशि पर रहता है तथा अन्त के छैः महीने तक विशेष फल देता है। राहु-केतु एक-एक राशि पर अठारह-अठारह महीनों तक रहते हैं तथा अन्त के दो-दो महीने में विशेष फल देते हैं ॥१-३॥

शनि-गुरु विशेषत्वं ॥ शनि क्षेत्रगतो जीवो जीवक्षेत्रगतः शनिः। स्थान हानिकरो जीवः स्थानवृद्धिकरः शनिः ॥१॥ सूर्ये केन्द्रे राजसेवी वैश्य वृत्तिर्निशाकरे। शास्त्रवृत्तिः कुजेक्रूरो बुधे चा-ध्यापको भवेत् ॥२॥ स्वानुष्ठानरतो नित्यं दिव्यबुद्धिर्नरो गुरौ। शुक्रे विद्यार्थ सम्पन्नो नीचसेवी शनै-श्चरे ॥३॥ टीका॥ यदि शनि की राशि पर गुरु और गुरु की राशि पर शनि हो तो गुरु उस स्थान

(शनि की राशि वाले भाव) की हानि करता है तथा शनि उस स्थान (गुरु की राशि वाले भाव) की वृद्धि करता है॥१॥
यदि सूर्य केन्द्र में हो तो जातक राजा की नौकरी करता है अर्थात् राज्यकर्मचारी होता है। चन्द्रमा हो तो वैश्यवृत्ति
(व्यवसाय), मंगल हो तो सेना में नौकरी (सैनिक, पुलिस कर्मचारी आदि), बुध हो तो अध्यापनवृत्ति
(अध्यापक), गुरु हो तो ब्राह्मणवृत्ति (पण्डिताई आदि से आजीविकोपार्जन करने वाला) अत्यन्त बुद्धिमान,
शुक्र हो तो विद्या द्वारा धनोपार्जन करने वाला एवं शनि केन्द्रस्थ हो तो नीच अथवा शूद्रों से धन
तथा आजीविका कमाने वाला होता है॥ २-३॥

केवल कुण्डली द्वारा मासादि का ज्ञान॥ वैशाखे स्थाप्यते मेषो यावद् भानुश्च गण्यते।
तावन्मासे भवेज्जन्म गर्गस्य वचनं यथा॥१॥ सूर्याच्च लग्नं यदि षड्गृहान्तरे भवेत्तदा जन्म दिवा वदेद्
बुधः। स्यात्सप्तमे यस्य च तस्य सायं तदन्यथा चेज्जननं निशायाम्॥२॥ यत्र राशौ भवेत्सूर्यस्तस्मा-
त्सप्त गृहान्तरे। चन्द्रे शुक्लो भवेत् पक्षश्चान्यथा कृष्णपक्षकः॥३॥ यत्र भानुः स्थितस्तत्र सार्द्धं द्वे तिथिरुच्यते
चन्द्रो यावत् समाख्यातं तिथिज्ञानं मनीषिभिः॥४॥ यस्मिन् राशौ भवेत् सौरिस्तस्मात्सार्द्धं च द्वे समाः।
शनियंविद् वेदद्वर्ष तयोऽन्याश्रित राशितः॥५॥ कार्तिकाद् द्विगुणा मासा गताश्च तिथि संयुताः। सप्तविंशतिभि
र्नून्ना विनता एक संयुताः॥६॥ टीका॥ यदि मेष का सूर्य हो तो वैशाख, वृष का हो तो ज्येष्ठ, मिथुन
से आषाढ़, कर्क से श्रावण, सिंह से भाद्रपद, कन्या से आश्विन (क्वार), तुला से कार्तिक, वृश्चिक
से मार्गशीर्ष (अगहन), धनु से पौष, मकर से माघ, कुंभ से फाल्गुन तथा मीन राशि का सूर्य हो
तो जातक का जन्म चैत्र मास में हुआ है - यह समझना चाहिए॥१॥ यदि सूर्य से ६ घर के भीतर
लग्न हो अर्थात् जन्म कुण्डली में सूर्य जिस भाव में बैठा हो, वहाँ से ६ भावों के भीतर जन्म लग्न आता
हो तो जातक का जन्म दिन में हुआ समझें और सातवें घर से सायं काल तथा आठवें से बारहवें घर तक

लग्न हो तो रात्रि का जन्म कहना चाहिए ॥ २॥ जिस राशि पर सूर्य हो, उससे सात राशि के भीतर यदि चन्द्रमा हो तो शुक्ल पक्ष का और यदि इससे आगे हो तो कृष्णपक्ष का जन्म कहना चाहिए॥ ३॥ जन्म कुण्डली के जिस भाव में सूर्य स्थित हो, उस से चन्द्रमा तक गिन कर ढाई गुना करें, जो गुणनफल आवे, उसी को जातक की जन्म तिथि समझना चाहिए ॥ ४॥ जन्म कुण्डली में जिस राशि का शनि हो, उससे वर्त-मान कालीन शनि की राशि तक गिन कर ढाई से गुणा करने पर जो वर्ष लब्ध हों, उन्हें गतवर्ष समझना चाहिए। उन्हें वर्तमान सम्वत्सर अथवा शकाब्द में से घटा देने पर जातक के जन्म का सम्वत् अथवा शकाब्द ज्ञात हो जाएगा॥ ५॥ जिस दिन का चन्द्रमा देखना हो, कार्तिक के महीने से उस महीने तक गिनें। जिस महीने में चन्द्रमा देखना हो, उस महीने तक जितने महीने बीते हों, उन्हें दुगुना करके तथा प्रतिपदा से गिन कर, उस दिन की तिथि को जोड़ें, जिस दिन का कि चन्द्रमा देखना हो। प्रत्येक मास की एक तिथि जोड़ कर सत्ताईस का भाग देने से जो अंक शेष बचे, उसमें एक और मिलाकर, अश्विनी से गिनें। गिनती के जो अङ्क आवें, उन्हें नक्षत्र समझें तथा उसी नक्षत्र से चन्द्रमा को निश्चित कर लें ॥ ६॥

अथ ग्रहाणां स्वरूप, आकार, प्रकृति ज्ञानम् ॥ रक्तवर्णः कुजः प्रोक्तो धिषणः कनकद्युतिः। शुकपिच्छ समः सौम्यो गौरकान्तिरथोष्णगुः॥ १॥ मन्दारार्कस्य पुष्पेण समद्युतिरनुष्णगुः। कविरत्यन्त धवलः फणी कृष्णः शनिस्तथा॥ २॥ स्थूल इन्दुः सितः षण्ढ चतुरस्रौ कुजोष्णगू। वर्तुलो सौम्य धिषणौ दीर्घौ शनि भुजङ्गमौ॥ ३॥ पित्तं प्रभाकर क्ष्माजौ श्लेष्मा भार्गव शीतगू। ज्ञगुरू समधातुं च पवनो राहु मन्दगौ॥ ४॥ टीका॥ अब ग्रहों के स्वरूप, आकार तथा प्रकृति के विषय में बताते हैं॥ मंगल का वर्ण रक्त (लाल) गुरु का वर्ण स्वर्ण के समान, बुध का वर्ण शुक (तोता) पक्षी के पंखों के समान नीला, सूर्य का वर्ण

कान्तियुक्त गौर, चन्द्रमा का वर्ण पारिजात अथवा आक के पुष्प के समान, शुक्र का वर्ण अत्यन्त गौर एवं राहु तथा शनि का वर्ण कृष्ण (काला) है। [केतु का धूम्रवर्ण माना गया है]। इन ग्रहों में जो ग्रह बली होकर लग्न को देखता हो अथवा लग्न में बैठा हो, उस के समान ही जातक के शरीर का वर्ण भी कहना चाहिए [यदि अनेक ग्रह बली होकर लग्न में बैठे हों अथवा लग्न को देखते हों तो उसका मिश्र-फल समझना चाहिए]॥१-२॥ चन्द्रमा मोटे शरीर का, शुक्र काष्ठ (निर्वीर्य अर्थात् पतले शरीर का), मङ्गल तथा सूर्य सम शरीर वाले, बुध और गुरु वर्तुल (गोलाकार) शरीर वाले तथा शनि, राहु और केतु दीर्घ (लम्बे) आकार के हैं। इनमें जो ग्रह सर्वाधिक बली होकर लग्न में बैठा हो अथवा लग्न को देखता हो, उसी के आकार के अनुरूप जातक के शरीर का आकार भी समझना चाहिए॥३॥ सूर्य और मंगल पित्त प्रकृति के, शुक्र और चन्द्रमा कफ प्रकृति के, बुध और गुरु सम धातु वाले अर्थात् सम वात-पित्त-कफ प्रकृति के एवं राहु, केतु तथा शनि वात प्रकृति वाले हैं॥४॥ इनमें जो ग्रह बलवान् होकर लग्न में बैठा हो अथवा लग्न को देखता हो, उसी के अनुरूप जातक की प्रकृति भी समझनी चाहिए [टिप्पणी- जो ग्रह अरिष्टप्रद होता है, उसकी दशा अन्तर्दशा में जातक को उस ग्रह की प्रकृतिजन्य बीमारी का ही शिकार होना पड़ता है; यथा सूर्य शरीर के हृदय भाग, मस्तक अथवा मुख के समीप का भाग, रक्त-प्रवाह, नेत्र एवं दृष्टि विकार व जीवनी शक्ति को प्रभावित करता है तथा हृदयरोग, ज्वर, पित्त, मूर्छा, पीठ अथवा पाँवों में दर्द, भंग, उष्णवात आदि विकारों को उत्पन्न करता है। चन्द्रमा उदर-विकार, वक्षःस्थल के विकार, जलोदर, शीतज्वर, स्त्री-रोग - प्रदर, आर्तव कष्ट आदि, अपस्मार, मृगी आदि रोग उत्पन्न करता है। मंगल रक्त स्राव, चेचक, खुजली, शोथ, प्लेग, ज्वर, गुह्यरोग, नासारोग एवं चीर-फाड़, घाव आदि की बीमारियाँ देता है। बुध मेदा सम्बन्धी विकार, गर्दन अथवा कण्ठ के रोग, कण्ठमाला, मज्जा तन्तु की अव्यवस्था, वाणी

दोष, सिर में चक्कर आना एवं मानसिक-कष्ट आदि व्याधियां देता है। गुरु यकृत एवं प्लीहा के रोग, शरीर में रक्त-संचय, पक्षाघात, दन्तरोग, फोड़ा-फुन्सी एवं प्रतिबन्धक रोगों को देता है। शुक्र मधुमेह तथा वीर्य-रोगों को देने वाला है। शनि खांसी, सन्धिवात, अर्धाङ्ग वायु, शीतरोग, क्षय रोग, दमा, दाद, अपच, वातविकार, बद्धकोष्ठता तथा दीर्घकालीन रोगों को देता है। राहु तथा केतु शनि के समान ही न्यूनाधिक कष्ट देते हैं॥

अथ अन्य अनिष्ट योगाः॥ पापालोकितयोः सिताङ्गिजयोरस्तस्थयोर्वाध्यरुक्। चन्द्रे कर्कटवृश्चिकांशकगते पापैर्युते गुह्यरुक्॥ श्वित्री रिःफधनस्थयोरशुभयोश्चन्द्रोदये ऽस्ते रवौ। चन्द्रे खे ऽवनिजे ऽस्तगे च विकलो यम्यर्कजो वेशिगः॥१॥ अन्तः शशिन्यशुभयोर्मृगगे पतङ्गे प्रवासक्षय प्लीहकविद्रधिगुल्मभाजः। शोषी परस्पर गृहांशगयो रवीन्द्वोः क्षेत्रे ऽथवा युगपदेकगयोः कृशो वा॥२॥ चन्द्रे ऽशिवमध्यमकवकर्कि मृगाजभाजे कुष्ठीसमन्दरुधिरे तदवेक्षिते वा। यातैस्त्रिकोणमलिकर्कि वृषैर्मृगे च कुष्ठी च पापसहितैरवलोकितैर्वा॥३॥ निधनारिधनव्ययस्थिता रविचन्द्रारयमा यथा तथा। बलवद्ग्रहदोषकारणैर्मनुजानां जनयन्त्यनेत्रताम्॥४॥ नवमायतृतीयधीयुता न च सौम्यैरशुभा निरीक्षिताः। नियमाच्छ्रवणोपघातदा रदवैकृत्यकराश्च सप्तमे॥५॥ उदयत्युडुपे ऽसुरास्यगे सपिशाचो ऽशुभयोस्त्रिकोणयोः। सोपप्लवमण्डले रवावुदयस्थे नयनापवर्जितः॥६॥ संसृष्टः पवनेन मन्दगयुते द्यूने विलग्ने गुरौ सोन्मादो ऽवनिजे स्थिते ऽस्तभवने जीवे विलग्नाश्रिते। तद्वत्सूर्यसुतोदये ऽवनिसुते धर्मात्मजद्यूनगे जातो वा ससहस्ररश्मितनये क्षीणे व्यये शीतगौ॥७॥ राश्यंशपौष्णकरशीतकरामरेज्यैर्नीचाधिपांशकगतैररिभागगैर्वा। एभ्यो ऽल्पमध्य बहुभिः क्रमशः प्रसूताज्ञेयाः स्युरभ्युपगमक्रयगर्भदासाः॥८॥ विकृतदशनः पापैर्दृष्टे वृषाजहयोदये खलतिरशुभक्षेत्रे लग्ने हये वृषभे ऽपि वा। नवमसुतगे पापैर्दृष्टे रवावदृढेक्षणो दिनकरसुते नैकव्याधिः कुजे विकलः पुमान्॥९॥ व्ययसुतधः

नधर्मगैरसौम्यैर्भवित समान निबन्धनं विकल्यम् । भुजगनिगडपाशभृद् दृकाणे बलिवद सौम्यनिरीक्षितैश्च तद्वत् ॥
पुरुष वचनेनोऽपस्मारार्तः क्षयी च निशापतौ स रवितनये वक्रालोकं गते परिवेषगे । रवियमकुजैः सौम्यादृष्टैर्नभस्स्थल
माश्रितैर्भृतकमनुजः पूर्वोद्दिष्टैर्वराधममध्यमाः ॥११॥

टीका ॥ यदि सप्तम भावस्थ शुक्र और मंगल पापग्रहों से दृष्ट हों तो जातक प्रत्यक्षरोग से युक्त रोगी होता है। यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त होकर कर्क अथवा वृश्चिक के नवांश में हो तो जातक गुप्त रोग से ग्रस्त होता है। यदि द्वादश एवं द्वितीय भाव में पापग्रह हो, चन्द्रमा लग्न में हो तथा सूर्य सप्तम भाव में हो तो जातक को श्वेतकुष्ठ होता है। यदि चन्द्रमा दशम भाव में, मंगल सप्तम भाव में तथा सूर्य से द्वितीय स्थान में शनि हो तो जातक विकलाङ्ग (अङ्गहीन) होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच हो तथा सूर्य मकर राशि में हो तो जातक श्वास, क्षय, प्लीहा, विद्रधि, गुल्म आदि रोग से पीड़ित होता है। यदि सूर्य कर्क में तथा चन्द्रमा सिंह राशि में हो अथवा सूर्य कर्क के नवांश में और चन्द्रमा सिंह के नवांश में हो अथवा दोनों — चन्द्रमा और सूर्य एकसाथ कर्क अथवा सिंह राशि में हों तो जातक शोषरोगी अथवा दुर्बल शरीर वाला होता है ॥२॥ यदि चन्द्रमा धनु राशि के मध्य अर्थात् पंचम नवांश में हो अथवा किसी भी राशि में मीन, कर्क, मेष अथवा मकर के नवांश में हो और शनि मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक कुष्ठ रोगी होता है। यदि वृश्चिक, कर्क, वृष अथवा मकर राशि में पापग्रह से दृष्ट अथवा युत होकर लग्न से नवम, पंचम भाव में हो तो भी जातक कुष्ठी होता है ॥३॥ यदि सूर्य, चन्द्र, मंगल और शनि — ये चारों किसी भी प्रकार से अष्टम, षष्ठ, द्वितीय तथा द्वादश भावों में हों तो इन चारों में जो बली हो, उसके दोष से जातक को नेत्र-कष्ट होता है ॥४॥ यदि अशुभ ग्रह नवम, एकादश, तृतीय अथवा पंचम भाव में हों और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो जातक को निश्चित रूप से कर्ण-रोग होता है। यदि पापग्र-

-ह सप्तम भाव में शुभग्रह से अदृष्ट हो तो जातक के दाँतों में विकार उत्पन्न होता है॥ ५॥ यदि लग्न में राहु से ग्रस्त चन्द्रमा हो और उससे नवम-पञ्चम भाव में पापग्रह (शनि या मंगल) हो तो जातक को पिशाचबाधा होती है। यदि राहुग्रस्त सूर्य लग्न में हो तथा उससे त्रिकोण (नवम-पंचम) में शनि और मंगल हो तो जातक अन्धा होता है॥ ६॥ यदि सप्तम में शनि और लग्न में गुरु हो तो जातक वात-व्याधि युक्त होता है। यदि मंगल सप्तम भाव में तथा गुरु लग्न में हो तो जातक उन्माद ग्रस्त (पागल) होता है। यदि शनि लग्न में तथा मंगल नवम, पंचम अथवा सप्तम भाव में हो तो भी जातक उन्मादी होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा के साथ शनि द्वादश भाव में हो तो भी जातक उन्मादरोगी होता है॥ ७॥ यदि जन्मराशि के नवांशपति सूर्य, चन्द्रमा तथा गुरु-इनमें से कोई भी एक नीच अथवा शत्रु के नवांश में हो तो जातक स्वयं किसी के यहाँ जाकर नौकरी करता है। यदि दो ग्रह नीच अथवा शत्रुराशि के नवांश में हों तो जातक क्रीतदास (जीवन भर के लिए खरीदा हुआ गुलाम) होता है। यदि तीन अथवा चारों ग्रह नीच अथवा शत्रु राशि के नवांश में हों तो जातक गर्भ से ही किसी का दास होता है॥ ८॥ यदि वृष, मेष अथवा धनु लग्न पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक विरूप दाँतों वाला होता है॥ यदि पापराशि (मेष, वृश्चिक, सिंह, मकर और कुम्भ), धनु अथवा वृष लग्न हो तो जातक खल्वाट (गंजे सिर वाला) होता है। यदि नवम अथवा पंचम भाव में स्थित सूर्य पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक अल्प दृष्टि वाला होता है। यदि नवम अथवा पंचम भाव में स्थित मंगल पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक अनेक प्रकार के रोगों से युक्त होता है। यदि नवम अथवा पंचम भाव में स्थित शनि पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक अङ्गहीन होता है॥ ९॥ यदि लग्न से द्वादश, पंचम, द्वितीय और नवम भाव में पापग्रह हो तो इन भावों में से जिसमें बलवान् पापग्रह हो, उस राशि के समान ही जातक का बंधन समझना चाहिए। यदि लग्न में सर्पयुक्त, निगडयुक्त द्रेष्काण हो और उस

पर बलवान् पापग्रह की दृष्टि हो तो जातक को उसी प्रकार का (जिस राशि का द्रेष्काण हो और उस राशि का जीव जिस प्रकार के बन्धन से बाँधा जाता हो) बन्धन होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि चतुष्पद द्रेष्काण हो तो रस्सी से, द्विपद राशि का हो तो बेड़ी से, जलचर राशि का हो तो बिना निबन्ध के और यदि वृश्चिक राशि का द्रेष्काण हो तो कन्दरा आदि का बन्धन होता है ॥ १०॥ यदि चन्द्रमा शनि से युक्त हो, मंगल से दृष्ट अथवा युक्त हो तो जातक कठोरभाषी, अपस्मार-रोगी तथा क्षय रोग से पीड़ित होता है। यदि सूर्य, शनि तथा मंगल — इनमें से कोई एक दशमभाव में हो तो जातक उत्तम श्रेणी की नौकरी करने वाला (उच्च पदाधिकारी), यदि दो ग्रह दशम भाव में हों तो मध्यम श्रेणी की नौकरी करने वाला और यदि ये तीनों ही ग्रह दशम भाव में हों तो निम्न श्रेणी की नौकरी करने वाला होता है [टिप्पणी यदि चन्द्रमा शनि से युक्त, मंगल से दृष्ट और परिवेश सहित हो — तो इन तीनों में से यदि कोई एक योग हो तो जातक कटुभाषी; दो योग हों तो अपस्मार (मृगी) रोगी तथा तीनों योग हों तो क्षयरोगी होता है ॥ ११॥

अथ सहोदरादि मृत्यु योगाः ॥ द्वितीयस्थानगे भौमे सौरिणा सह संयुते। सहजे सिंहिकासूनौ सहोदरमृतिं वदेत् ॥ १॥ वैरिवेश्मनि भौमश्चेत्सप्तमे सिंहिकासुतः। निधने सदने सौरिर्भार्यामरणमादिशेत् ॥ २॥ घटे सौरिः स्त्रियां शुक्रः सिंहे क्ष्मानन्दनोऽपि चेत्। मिथुने सिंहिकासूनुर्मातुर्मरणमादिशेत् ॥ ३॥ सुखे कर्मणि रिःफे च दुष्टखेटा यदा तदा। मातरं पितरं हन्ति पश्चाद्देशान्तरं व्रजेत् ॥ ४॥ टीका ॥ यदि द्वितीय स्थान में शनि से युक्त मंगल हो तथा तृतीय स्थान में राहु हो तो जातक के सहोदर भाई की मृत्यु होती है ॥ १॥ यदि षष्ठ स्थान में मंगल, सप्तम स्थान में राहु तथा अष्टम स्थान में शनि हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु होती है ॥ २॥ यदि तुला में शनि, कन्या में शुक्र, सिंह में मंगल तथा मिथुन में राहु हो तो जातक की माता की मृत्यु होती है ॥ ३॥ यदि चतुर्थ, दशम एवं द्वादश भाव में पापग्रह हों तो जातक के माता-पिता का नाश होता है और वह स्वयं दूसरे देश में जाकर रहता है ॥ ४॥

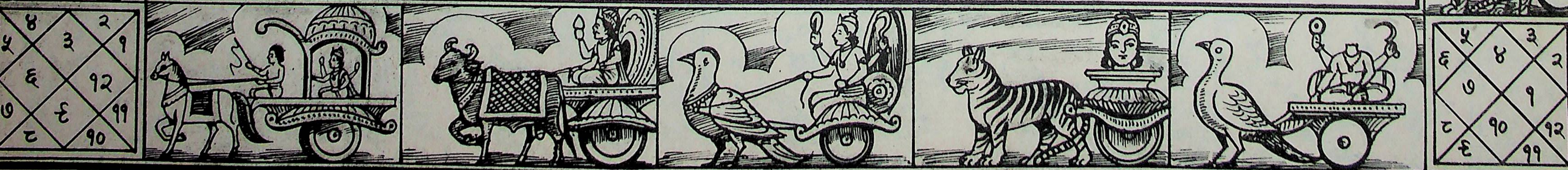
काले रंग का लोहा तथा बकरा- इन्हें दान करना चाहिए ॥४॥ ग्रहों की शान्ति के लिए शौचादि से निवृत्त हो, पवित्रता पूर्वक, पवित्र स्थान में ग्रहों के मन्त्रों का जप तथा पाठ करना चाहिए। घर में जप करने से एक गुना, नदी-तट पर जप करने से दुगुना, गोशाला में करने से दस गुना, अग्निशाला में करने से सौगुना, काशी-प्रयाग आदि तीर्थस्थानों में करने से सहस्रगुना तथा शालिग्राम शिला के समीप करने से जप का असंख्य गुना फल प्राप्त होता है ॥५-६॥

विभिन्न ग्रहों के जप मन्त्र तथा जप संख्या निम्नानुसार है-

सूर्य का मन्त्र- ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ॐ घृणिः सूर्याय नमः। जप संख्या ७०००॥ चन्द्रमा का मन्त्र- ॐ इमं देवाऽअसपत्न ँ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणाना ँ राजा। ॐ सों सोमाय नमः। जप संख्या ११०००॥ मङ्गल का मन्त्र- ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽअयम्। अपा ँ रेता ँ सि जिन्वति। ॐ अं अङ्गारकाय नमः। जप संख्या ११०००॥ बुध का मन्त्र- ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते स ँ सृजेथामयञ्च। अस्मिन्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। ॐ बुं बुधाय नमः। जप संख्या ९०००॥ गुरु का मन्त्र- ॐ बृहस्पते ऽअति यदर्यो ऽअर्हाद्द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। ॐ बृं बृहस्पतये नमः। जप संख्या १९०००॥ शुक्र का मन्त्र- ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्धस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतं मधु। ॐ शुं शुक्राय नमः। जप संख्या १६०००॥ शनि का मन्त्र- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शं शनैश्चराय नमः। जप संख्या २३०००॥ राहु का मन्त्र- ॐ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। ॐ रां राहवे नमः। जप संख्या १८०००॥ केतु का मन्त्र- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। ॐ कें केतवे नमः। जप संख्या १७०००॥ इति प्रथम खण्डः

इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

प्रथम खण्डः समाप्तः



अथ श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम्

द्वितीय खण्डः भाषा टीका सहितम्

जातक प्रकरणाध्यायः

अथश्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम् द्वितीय खण्डः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समः प्रभा। अविघ्नं कुरुमे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥१॥ शिवतनय वरिष्ठं सर्वकल्याणमूर्तिः। परशु कमल हस्तं शोभितं मोदकेन ॥ अरुण कुसुम माला व्याल यज्ञोपवीतं। मम हृदय निवासं श्रीगणेशं नमामिः ॥२॥ श्रीदं सदाऽहं हृदयारविन्दे पादारविन्दं वरदस्य वन्दे। मन्दोऽपि यस्य स्मरणेन सद्यो गीर्वाणवन्द्योपमतां समेति ॥३॥ मूर्तित्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मना मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्तामरज्योतिषाम्। लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौः वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्य दीपो रविः ॥४॥ महः सेतुं हेतुं सकल जगतामंकुरतया सदा शंभोरंभो भवभवभयत्राण जनकम्। अहं वन्दे तस्यासुरसुर मनोमोद निकरं चिदानन्दं पादामल कमललावण्यमधिकम् ॥५॥

नानादान विधान यज्ञनिकरैरुग्रैस्तपोभिश्चिरात्। प्राप्ते कल्पतरौ प्रकल्पितफलावाप्तिः कथंचिद्भवेत् ॥ तूर्णं यच्चरणाम्बुजस्मरणतः सम्पूर्णकामः पुमान्। सोऽयं वोऽभिमतं ददातु सततं हेरम्बकल्पद्रुमः ॥१॥ सन्मानसावास विलासहंसी कर्णावतंसीकृतपद्मकोशा। तोषादशेषाभिमतं विशेषाद्देवापि भाषा भवतां ददातु ॥२॥ सानन्दमानन्द वने वसन्तमानन्द कन्दं हतपापवृन्दम् वाराणसी नाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ॥३॥ शुण्डामण्डल संप्रसारकरणैर्मौलिस्थलान्दोलनैर्नेत्रोन्मीलन मीलनैरविरलश्रीकर्णतालक्रमैः ॥ दानालिध्वनितैर्विलासचरितैरुद्ध्वानिनोद्गर्जितैर्जातानन्दभरः करीन्द्रवदनो वः श्रेयसे कल्पताम् ॥४॥ नमस्तस्मै भगवते बोधरूपाय सर्वदा परमानन्द कन्दाय गुरुवेऽज्ञानध्वंसिने ॥५॥

भृगुसंहिता महाशास्त्र के इस द्वितीय खण्ड में उन प्रकीर्ण विषयों को उद्धृत किया गया है, जिन्हें जानना प्रत्येक ज्योतिषी के लिए आवश्यक है। यह सङ्कलन ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न ग्रंथों का सार रूप है, अतः इसे हृदयङ्गम कर लें॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ भृगु उवाच ॥ अथ तात प्रवक्ष्यामि प्रकीर्ण विषया: त्वया । याभ्यां विना न दैवज्ञो जातकं फलमुच्यते ॥ टीका ॥ भृगुजी बोले - हे तात ! अब मैं सर्व प्रथम उन प्रकीर्ण विषयों को कहता हूँ, जिनके बिना ज्योतिषी लोग जातक का फलादेश नहीं कर पाते ॥

अथ सम्वत्सर नामानि ॥ प्रभवो विभव: शुक्ल: प्रमोदोऽथ प्रजापति: । अङ्गिरा: श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च । ईश्वरो बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृष: । चित्रभानु: सुभानुश्च तारण: पार्थिवो व्यय: ॥ सर्वजित् सर्वधारी च विरोधी विकृति: खर: । नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथ दुर्मुखौ ॥ हेमलम्बो विलम्बश्च विकारी शार्वरी प्लव: । शुभकृच्छोभन: क्रोधी विश्वावसु पराभवौ ॥ प्लवङ्ग: कीलक: सौम्य: साधारणो विरोधकृत् । परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नल: ॥ पिङ्गल: कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्र दुर्मती । दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्ष: क्रोधन: क्षय: ॥ टीका ॥ सम्वत्सरों की कुल संख्या ६० है । उनके नाम क्रमश: इस प्रकार हैं - (१) प्रभव, (२) विभव, (३) शुक्ल, (४) प्रमोद, (५) प्रजापति, (६) अङ्गिरा, (७) श्रीमुख, (८) भाव, (९) युवा, (१०) धाता, (११) ईश्वर, (१२) बहुधान्य, (१३) प्रमाथी, (१४) विक्रम, (१५) वृष, (१६) चित्रभानु, (१७) सुभानु, (१८) तारण, (१९) पार्थिव, (२०) व्यय, (२१) सर्वजित्, (२२) सर्वधारी, (२३) विरोधी (२४) विकृति, (२५) खर, (२६) नन्दन, (२७) विजय, (२८) जय, (२९) मन्मथ, (३०) दुर्मुख, (३१) हेमलम्ब, (३२) विलम्ब, (३३) विकारी, (३४) शार्वरी, (३५) प्लव, (३६) शुभकृत्, (३७) शोभन, (३८) क्रोधी, (३९) विश्वावसु, (४०) पराभव, (४१) प्लवङ्ग, (४२) कीलक, (४३) सौम्य, (४४) साधारण, (४५) विरोधकृत्, (४६) परिधावी, (४७) प्रमादी, (४८) आनन्द (४९) राक्षस, (५०) नल, (५१) पिङ्गल, (५२) कालयुक्त, (५३) सिद्धार्थी, (५४) रौद्र, (५५) दुर्मति, (५६) दुन्दुभी, (५७) रुधिरोद्गारी, (५८) रक्ताक्ष, (५९) क्रोधन और (६०) क्षय। इन संवत्सरों में पहले २० ब्रह्मविंशतिका, दूसरे बीस अर्थात् २१ से ४० तक की संख्यावाले विष्णुविंशतिका एवं अन्तिम बीस, अर्थात् ४१ से ६० तक की संख्या वाले रुद्रविंशतिका के अन्तर्गत माने जाते हैं । इनका अलग-अलग फल आगे लिखे अनुसार कहा गया है —

अथ प्रभव संवत्सर फलम् ॥ प्रभूतं सर्ववस्तूनां पुत्रसंपत्तिरेव च। दीर्घायुर्भोग संपन्नः प्रभवे जायते नरः॥ टीका॥ जो मनुष्य प्रभव नामक संवत्सर में जन्म लेता है, वह समस्त वस्तुओं को अधिकता से पाने वाला, पुत्रवान्, सम्पत्तिवान्, दीर्घायु तथा विविध प्रकार के भोगों से युक्त होता है॥ १॥ अथ विभव संवत्सर फलम् ॥ उत्पन्न भोगभोगी स्यात्कृष्णश्चारुण लोचनः। पंडितो राजपूज्यश्च विभवेब्दे नरो भवेत् ॥ टीका॥ विभव नामक संवत्सर में जन्म लेनेवाला मनुष्य विभिन्न प्रकार के भोगों का भोगी, लालिमा युक्त काले नेत्रों वाला, विद्वान् तथा राजा द्वारा पूजित होता है॥ २॥ अथ शुक्ल संवत्सर फलम् ॥ सुभगः शान्तिमान्भोगी पुत्रदार समन्वितः। विद्वान्सर्वगुणोपेतः शुक्ल संवत्सरे भवेत् ॥ टीका॥ शुक्ल नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर, शान्त-स्वभाव, भोगी, पुत्र-स्त्री से युक्त, विद्वान् तथा सर्वगुणसम्पन्न होता है ॥३॥ अथ प्रमोद संवत्सर फलम् ॥ सदानंदयिता सत्यवादी वै पण्डितो नरः। स्वर्णकांतिः सुखी मानी प्रमोदे जायते नरः॥ टीका॥ प्रमोद नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सदैव आनन्दित रहने वाला, सत्यवादी, पण्डित, स्वर्ण जैसी शारीरिक-कान्ति वाला, सुखी और मानी होता है॥ ४॥ अथ प्रजापति संवत्सर फलम् ॥ प्रजानां पालको धर्मी कृपासत्य समन्वितः। गुणवान्देवभक्तश्च प्रजापति समुद्भवः॥ टीका॥ प्रजापति नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य प्रजा-पालक, धर्मात्मा, कृपालु, सत्यवादी, गुणवान् तथा देवभक्त होता है॥ ५॥ अथ अङ्गिरा संवत्सर फलम् ॥ कामी सुखी च मानी च भोगवान् प्रियवल्लभः। दीर्घायुर्बहु पुत्रश्च अङ्गिरोवत्सरे भवेत् ॥ टीका॥ अङ्गिरा नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य कामी, सुखी, मानी, भोगी, मित्रों को प्रिय, दीर्घायु एवं अनेक पुत्रों वाला होता है॥ ६॥ अथ श्रीमुख संवत्सर फलम्॥ श्रीमांश्च सुमतिः शांतः सोपरागः शुभप्रियः। दीर्घायुर्बहु पुत्रश्च श्रीमुखेब्दे भवेन्नरः॥ टीका॥ श्रीमुख नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य श्रीमान्, श्रेष्ठबुद्धिवाला, शान्त स्वभाव वाला, प्रीतियुक्त, शुभ कर्मों से प्रेम करने वाला, दीर्घायु तथा अनेक पुत्रों वाला होता है॥ ७॥ अथ भाव संवत्सर फलम्॥ यशस्वी दाननिरतः

सर्वलक्षण संयुतः। भव संवत्सरे जातो नरोभवति सौख्यभाक्॥ टीका॥ भवनामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य यश-स्वी, दान करने वाला, समस्त लक्षणों से युक्त तथा अत्यन्त सुख भोगने वाला होता है॥ ८॥ अथ युवा संवत्सरफलम्॥ कीर्ति सर्व गुणोपेतो दीर्घायुर्दानतत्परः। शान्तः शुभमतिः शौची युवाब्दे पुरुषो भवेत्॥ टीका॥ युवा नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य समस्त गुणों से युक्त कीर्तिवाला, दीर्घायु, दान देने में तत्पर, शान्त स्वभाव वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला तथा पवित्रतायुक्त होता है॥ ९॥ अथ धाता संवत्सर फलम्॥ दीर्घायुः शुभगो दक्षो वेदाध्ययनतत्परः। सुरूपो जायते मर्त्यो धातृसंवत्सरे यदि॥ टीका॥ धाता नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घायु, शुभ, चतुर, वेदाध्ययन में तत्पर एवं सुन्दर स्वरूप वाला होता है॥ १०॥ अथ ईश्वर संवत्सर फलम्॥ सर्वज्ञः सर्वकार्येषु गुरुभक्तोऽतिसुन्दरः। ईश्वरे जायते मर्त्यः सदा क्रोधपरो भवेत्॥ टीका॥ ईश्वर नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनु-ष्य सर्वज्ञ, सब कामों का जानकार, गुरुभक्त, अत्यन्त सुन्दर तथा सदैव क्रोधयुक्त बना रहने वाला होता है॥ ११॥ अथ बहुधान्य संवत्सर फलम्॥ वापीकूप तड़ागादि क्रतु धर्म समन्वितः। दाता धन समृद्धश्च बहुधान्ये प्रजायते॥ टीका॥ बहुधान्य नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य बावड़ी, कुँआ, तालाब आदि बनवाने वाला, यज्ञादि शुभ धर्म-कर्म करने वाला, दानी एवं धन की वृद्धि करने वाला होता है॥ १२॥ अथ प्रमाथी संवत्सर फलम्॥ सेनानीर्नृपमंत्री च वरलब्ध पिनाकधृक्। शास्त्रज्ञः संग्रहीचैव प्रमाथिवत्सरे भवेत्॥ टीका॥ प्रमाथी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सेनापति, राजा का मन्त्री, शिवजी से वर पानेवाला, शास्त्रज्ञ तथा धन का संग्रह करने वाला होता है॥ १३॥ अथ विक्रम संवत्सर फलम्॥ उग्रप्रतापशीलश्च परराज विमर्शकः। पापकर्मरतः शूरो विक्रमाब्दे भवेन्नरः॥ टीका॥ विक्रम नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य उग्र प्रतापी, पराये कामों में सलाह देने वाला, पाप-कर्मों में रत तथा शूर-वीर होता है॥ १४॥ अथ वृष संवत्सर फलम्॥ मंदोलसो महामूर्खो भारवाही च केवलम्। पापकर्मरतो जातो वृषाब्दे जायते नरः॥

॥टीका॥ वृष नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य मन्दबुद्धि, आलसी, महामूर्ख, केवल बोझ ढोनेवाला, पाप-कर्म में निरन्तर रत रहने वाला होता है ॥ १५॥ अथ चित्रभानु संवत्सर फलम् ॥ चित्रभानु समुद्भूतो नरो विद्यानिधिर्भवेत्। नीतिमान्धृतिमान् श्रीमान्स्वामिभक्तः प्रियंवदः॥ टीका॥ चित्रभानु नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य परम विद्वान्, नीतिमान्, बुद्धिमान्, श्रीमान्, स्वामिभक्त तथा प्रिय बोलने वाला होता है ॥ १६॥ अथ सुभानु संवत्सर फलम् पिंगदृक् पिंग केशश्च गौरवर्णो विभुर्नयी। सुभानु वत्सरे जातः कांतिमानति दुर्जनः॥ टीका॥ सुभानु नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य पिंगल वर्ण नेत्र तथा पिंगलवर्ण केशों वाला, गौरवर्ण शरीर वाला, स्वामी, न्यायकर्त्ता, कान्तिमान् तथा अत्यन्त दुष्ट स्वभाव का होता है ॥ १७॥ अथ तारण संवत्सर फलम् ॥ चंचलश्चपलो धृष्टस्तारणाब्दे नरो भवेत्। धूर्त्तः पापरतः शूरो दरिद्रो निष्ठुरः सदा॥ टीका॥ तारण नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य चंचल, चपल, धृष्ट, धूर्त्त, पाप-रत, शूर, दरिद्री तथा निष्ठुर स्वभाव वाला होता है॥१८॥ अथ पार्थिव संवत्सर फलम् ॥ मृदुभाषी राजमान्यो राजसः शुभलक्षणः। प्रांशुर्धनसमृद्धश्च पार्थिवे वत्सरे नरः॥ टीका॥ पार्थिव नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य मृदुभाषी, राजमान्य, रजोगुणी स्वभाव वाला, शुभ लक्षण सम्पन्न, कान्तिमान् तथा धन की वृद्धि करने वाला होता है ॥ १९॥ अथ व्यय संवत्सर फलम् ॥ द्यूत मद्यरतस्स्त्रीणां व्यसनैर्धन वर्जितः। व्यय संवत्सरे जातश्चौरः पापमतिर्भवेत् ॥ टीका॥ व्यय नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य जुआरी, मद्यपी, पर-स्त्रियों के व्यसन में धन को नष्ट करने वाला, चोर तथा पाप-बुद्धि होता है ॥ २०॥ इति ब्रह्मविंशतिका संवत्सराणि फलं समाप्तम् ॥

अथ सर्वजित् संवत्सर फलम् ॥ स्वकर्म निरतः शास्त्रपाठी रोग विचक्षणः। ह्रस्वः स्थूलतनुः श्यामः सर्वजिदुद्भवो भवेत्॥ टीका॥ सर्वजित् नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य अपना काम करने में लगनशील, शास्त्रपाठी, रोगों की जानकारी में कुशल, छोटे तथा स्थूल शरीर वाला एवं श्यामवर्ण

का होता है ॥२१॥ अथ सर्वधारी संवत्सर फलम् ॥ बहुभृत्यो धनी कामी भोगी मिष्ठान्न भुक् प्रभु:। सर्वधारिणिजात: सर्वधार परो भवेत् ॥ टीका॥ सर्वधारी नामक नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक सेवकों से युक्त, धनी, कामी, मिष्ठान्न भोजी, स्वामी तथा सबका आश्रय होता है ॥२२॥ अथ विरोधी संवत्सर फलम् ॥ कुटुंब कलहकर्त्ता परदाररत: सदा। सर्वलोक विरोधी च विरोधि वर्ष संभव: ॥ टीका॥ विरोधी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य कुटुम्बीजनों से कलह करने वाला, सदैव पर-स्त्रियों में रत रहने वाला तथा सब लोगों का विरोधी होता है ॥२३॥ अथ विकृति संवत्सर फलम् ॥ कृष्ण वर्णतनु: श्याम: कलालोलस्तु निर्गुण:। विकृष्ट पर्वा रूक्षश्च नरो विकृति वर्षज: ॥ टीका॥ विकृति नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य कृष्णवर्ण शरीर का, काला, कलाभ्यास में चंचल, गुणहीन तथा रुक्ष देह वाला होता है ॥२४॥ अथ खर संवत्सर फलम् ॥ धूलि धूसर सर्वाङ्गो दीर्घायु: परसत्यकृत्। कामेश्वरश्च निर्लज्ज: खर संवत्सरे नर: ॥ टीका॥ खर नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य धूलिधूसरित से अङ्गों वाला, दीर्घायु, पराये सत्य को सिद्ध करने वाला, अत्यधिक कामी तथा निर्लज्ज होता है ॥२५॥ अथ नन्दन संवत्सर फलम् ॥ सदानंदेन संतुष्ट: प्रपा-कूपतड़ागकृत्। अभिन्नदीन शीलश्च नरो नंदन वर्षज: ॥ टीका॥ नन्दन नामक संवत्सर में जन्म लेनेवाला मनुष्य सदैव आनन्दित तथा संतुष्ट रहने वाला; बावड़ी, कूप तालाब आदि को बनवाने वाला, दरिद्रों का परमहितैषी तथा शीलवान् होता है ॥२६॥ अथ विजय संवत्सर फलम् ॥ शूर: समर दुर्धर्ष: ख्यात: कीर्ति यशोन्वित:। पृथ्वीपतिर्जयी भोगी विजयाब्दे नरो भवेत् ॥ टीका॥ विजय नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य शूर-वीर, युद्धक्षेत्र में तेजस्वी, यशस्वी, कीर्तिवान्, पृथ्वीपति, विजयी तथा भोगी होता है ॥२७॥ अथ जय संवत्सर फलम् ॥ विद्वान्मानी लोकमानी सर्वशास्त्र विशारद:। प्रजां प्राप्नोति सर्वत्र जय वर्षे प्रजायते ॥ टीका॥ जय नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य

विद्वान्, मानी, लोक यशस्वी, सब शास्त्रों का ज्ञाता, सर्वत्र प्रजा अर्थात् अपने अनुयाइयों को शापा करने वाला तथा विजयी होता है ॥ २८ ॥ अथ मन्मथ संवत्सर फलम् ॥ उत्पन्न भोग भोक्ता च कामी च प्रियवादिनः सुखाभरण शोभाढ्यो मन्मथे वत्सरो भवेत् ॥ टीका ॥ मन्मथ नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य प्राप्त होने वाले भोगों का भोक्ता, कामी, प्रियवादी, सुख के आभूषणों से सुशोभित होता है ॥ २९ ॥ अथ दुर्मुख संवत्सर फलम् ॥ शठः क्रूर मतिर्दुष्टो हिंस्रोग्रो वृषलीपतिः । वक्रास्यबाहुचरणो दुर्मुखाब्दे भवेन्नरः ॥ टीका ॥ दुर्मुख नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य शठ, क्रूर-बुद्धि, दुष्ट, हिंसक, उग्र स्वभाव का, वृषली-पति, टेढ़े मुख तथा टेढ़े हाथ-पाँवों वाला होता है ॥ ३० ॥ अथ हेमलम्ब संवत्सर फलम् ॥ सुवर्ण धनधान्यादि पशुवस्त्र समृद्धिमान् । कांतापत्य सुखाढ्यश्च हेमलम्ब समुद्भवः ॥ टीका ॥ हेमलम्ब नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य स्वर्ण, धन, धान्य, पशु, वस्त्र आदि से समृद्धियुक्त एवं स्त्री-पुत्रादि के सुख से परिपूर्ण होता है ॥ ३१ ॥ अथ विलम्ब संवत्सर फलम् ॥ मंदो लुब्धोलसो दुःखी श्लेष्मलश्चापि वंचकः । स्वकार्याभिरतः पापी विलम्बे वत्सरे शिशुः ॥ टीका ॥ विलम्ब नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला बालक मंदभागी, लोभी, आलसी, दुःखी, कफरोग वाला, ठग, अपने काम में जुटा रहने वाला तथा पापी होता है ॥ ३२ ॥ अथ विकारी संवत्सर फलम् ॥ अविवेकी महागर्वी विवादकुशलः खलः । विकारि वत्सरे जातः प्राणी भवति वंचकः ॥ टीका ॥ विकारी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य अविवेकी, महाघमण्डी, विवाद-कुशल, खल तथा दूसरों को ठगने वाला होता है ॥ ३३ ॥ अथ शार्वरी संवत्सर फलम् ॥ वणिक् शूरः सुहृद्द्वेषी दीर्घः कृशतनुस्तथा । निद्राघूर्णित नेत्रश्च शार्वर्यब्द समुद्भवः ॥ टीका ॥ शार्वरी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य व्यापार-कुशल, मित्र-द्वेषी, लम्बे और पतले शरीर वाला तथा नींद के कारण झुके हुए से नेत्रों वाला होता है ॥ ३४ ॥ अथ प्लव संवत्सर फलम् ॥ चंचलश्चपलः कामी परसेवारतः सदा । हलत्राता दुस्वतनुर्जातो वर्षे प्लवाभिधे ॥ टीका ॥ प्लव नामक

संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य चंचल, चपल, कामी, पराई सेवा करने वाला, सदैव हल-चलाने वाला अर्थात् कृषि-कर्म करने वाला एवं छोटे क़द वाला होता है ॥ ३५ ॥ अथ शुभकृत् संवत्सर फलम् ॥ शुभगः शुभकर्मी च विद्या धर्म परायणः । दीर्घायुर्धनपुत्राढ्यः शुभकृद्वर्ष संभवः ॥ टीका ॥ शुभकृत् नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर, शुभ कर्म करने वाला, विद्या-धर्म-परायण, दीर्घायु तथा धन-पुत्रादि से सम्पन्न होता है ॥ ३६ ॥ अथ शोभन संवत्सर फलम् ॥ सर्वत्र विजयी कामी चारुरूपो गुणान्वितः । कृपालुः शोभकृद्वर्षे जातो भवति मानवः ॥ टीका ॥ शोभन नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वत्र विजयी, कामी, सुन्दर रूप वाला, गुणवान् तथा दयालु स्वभाव का होता है ॥ ३७ ॥ अथ क्रोधी संवत्सर फलम् ॥ पिंगाक्षो राजकोपश्च मंदः कामी स्त्रीलोलुपः । परकार्यनिहंता च क्रोधिसंवत्सरे नरः ॥ टीका ॥ क्रोधी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य पिंगल वर्ण नेत्रों वाला, राज-कोप पाने वाला, मंदमति, कामी, स्त्री-लोलुप, पराये कामों को बिगाड़ने वाला होता है ॥ ३८ ॥ अथ विभावसु संवत्सर फलम् ॥ शान्तः सर्वगुणोपेतो दातामिष्टान्नभुक् शुचिः । विश्वावसु समुद्भूतः प्रजावांश्च सुखी भवेत् ॥ टीका ॥ विभावसु संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक शान्त स्वभाव वाला, समस्त गुणों से युक्त, दानी, मिष्ठान्न भोजी, पवित्रात्मा तथा सन्तान युक्त एवं सुखी होता है ॥ ३९ ॥ अथ पराभव संवत्सर फलम् ॥ परदाररतश्चैव शठः स्वापरबांधवः । पराभवे समुद्भूतो धन धान्य विवर्जितः ॥ टीका ॥ पराभव नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य पर-स्त्री-गामी, शठ, अपनों से शत्रुता तथा परायों से मित्रता रखने वाला एवं धन-धान्य से रहित होता है ॥ ४० ॥ इति विष्णु विंशतिका संवत्सराणि फलं समाप्तम् ॥

अथ प्लवङ्ग संवत्सर फलम् ॥ खलः पापरतो दुष्टः स्वाचारहतको शुचिः । प्लवङ्ग वत्सरे जातो नरो भवति किल्विषी ॥ टीका ॥ प्लवङ्ग नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य खल, पापी,

भृ० सं० ३५

दुष्ट, अपने आचार को नष्ट करदेने वाला, अपवित्र तथा पापी होता है ॥ ४१॥ अथ कीलक नामक संवत्सर फलम्॥ मध्यरूपधरः कामी क्षुत्पिपासार्द्दितो नरः । कीलके जनितो वर्षे स्थूल हृत्कूर मन्मथः ॥ टीका ॥ कीलक नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य मध्यम रूपवाला, कामी, क्षुधा-पिपासा से पीड़ित, स्थूल हृदय वाला एवं गुप्त-कामी होता है ॥ ४२॥ अथ सौम्य संवत्सर फलम्॥ पंडितो धन भोक्ता च द्विदेवातिथि पूजकः । तापसः कृशाङ्गदेहो नरः सौम्ये प्रजायते ॥ टीका ॥ सौम्य नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य विद्वान्, धन का भोग करने वाला; ब्राह्मण, देवता तथा अतिथियों का सेवक, तपस्वी, शरीर को कृश करने वाला एवं सौम्य स्वभाव का होता है ॥ ४३॥ अथ साधारण संवत्सर फलम्॥ नीचवृत्तिः शुचिः कामरहितः परदेशगः । देवावलोकने क्रोधी साधारण समुद्भवः ॥ टीका ॥ साधारण नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य नीच वृत्ति करने वाला, पवित्र, काम-रहित, परदेशवासी तथा देव-दर्शन में क्रोध करने वाला होता है ॥ ४४॥ अथ विरोधकृत संवत्सर फलम्॥ विरोधी सर्वलोकानां पितृभक्ति विवर्जितः । विरोधकृज्जात नरो जाति सेवा करो भवेत् ॥ टीका ॥ विरोधकृत नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य समस्त लोकों से विरोध करने वाला, पितृ-भक्ति-रहित एवं सजातीयों की सेवा करने वाला होता है ॥ ४५॥ अथ परिधावी संवत्सर फलम्॥ विद्वान्सर्वकलाभिज्ञो व्यापार कुशलः सुधीः । राजमानी दान शीलः परिधाविसमुद्भवः ॥ टीका ॥ परिधावी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य विद्वान्, समस्त कलाओं का ज्ञाता, व्यापार-कुशल, बुद्धिमान्, राज्य से सम्मान पाने वाला तथा दानी स्वभाव का होता है ॥ ४६॥ अथ प्रमादी संवत्सर फलम्॥ कुटुम्ब घातको लुब्धः परकर्मरतः सदा। प्रमादि वत्सरे जातो नरो बंधुविरोधकृत् ॥ टीका ॥ प्रमादी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य कुटुम्बघाती, लोभी, पराया काम करने वाला तथा बन्धु विरोधी एवं दुष्ट होता है ॥ ४७॥ अथ आनन्द संवत्सर फलम्॥ बहुत्पर्येति

भा० टी०

चतुरः सर्वानंदकरः क्षमी। आनंदवत्सरे जातः पुत्रमित्र समन्वितः॥ टीका॥ आनंद नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक अनेक स्त्रियों वाला, अत्यन्त चतुर, समस्त आनन्दों का उपभोग करने वाला, क्षमाशील एवं पुत्र तथा मित्रों से युक्त होता है॥ ४८॥ अथ राक्षस संवत्सर फलम्॥ सर्वभक्षी कृतघ्नश्च धर्माधर्म विवर्जितः। हिंस्रकः परसंतापी राक्षसेऽब्दे भवेन्नरः॥ टीका॥ राक्षस नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वभक्षी, कृतघ्न, धर्माधर्म से रहित, हिंसक एवं दूसरों को कष्ट देने वाला होता है॥ ४९॥ अथ नल संवत्सर फलम्॥ वैश्यवृत्तिर्धनी चैव कुटुंब वहुलः शुचिः। जलाशयकरो जातो नलसंवत्सरे नरः॥ टीका॥ नल नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य वैश्यवृत्ति वाला, धनी, बड़े कुटुम्ब वाला, पवित्र तथा जलाशयों का निर्माण कराने वाला होता है॥ ५०॥ अथ पिङ्गल संवत्सर फलम्॥ केकदृक्कृशरोमांचो महोद्यमपरो भवेत्। फल काल फलत्यागी पिंगलेऽब्दे भवेन्नरः॥ टीका॥ पिङ्गल नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य टेढ़ी दृष्टि वाला, अल्परोमोंवा-ला, बड़ा उद्यमी तथा कार्य-सिद्धि के कर्म-फल का त्याग करने वाला होता है॥ ५१॥ अथ कालयुक्त संवत्सर फलम्॥ लोकोपकारकः काले भक्ष्याभक्ष्यं न संत्यजेत्। कालयुक्त समुद्भूतो नरो भवति रोगकृत्॥ टीका॥ कालयुक्त संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य लोगों का उपकार करने वाला, भक्ष्याभक्ष्य का विचार न कर-ने वाला तथा रोगी होता है॥ ५२॥ अथ सिद्धार्थी संवत्सर फलम्॥ ऋद्धि सिद्धि युतो नित्यं भोगी गीतविशारद मंत्री कीर्त्तिपरो दासी सिद्धार्थिवर्ष संभवः॥ टीका॥ सिद्धार्थी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य ऋ-द्धि-सिद्धि युक्त, नित्य भोग करने वाला, सङ्गीत-विशारद, मन्त्री, यशस्वी तथा उदासीन वृत्ति का होता है॥ ५३॥ अथ रौद्र संवत्सर फलम्॥ भयंकर वधूः पापी पिशुनो घातकृद् भवेत्। रौद्र संवत्सरे जातो नरः स्वल्पायुषो भवेत्॥ टीका॥ रौद्र नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य भयानक स्त्री वाला, पापी, चुगलखोर, घात करने वाला तथा अल्पायु होता है॥ ५४॥ अथ दुर्मति संवत्सर फलम्॥ मूर्खः क्रूरयुतः

कामी स्वकीय वचनप्रियः । अदाताधनवांश्चैव दुर्मतौ वत्सरे भवेत् ।। टीका ।। दुर्मति नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य मूर्ख, क्रूरतायुक्त, कामी, अपने वचन का प्रिय, दान न करने वाला तथा धनवान् होता है ।। ५५ ।। अथ दुन्दुभी संवत्सर फलम् ।। नित्योत्साही क्षितिपतिर्गजाश्ववहुधान्यकः । वादित्र धन सौख्याढ्यो दुंदुभि वर्ष संभवः ।। टीका ।। दुन्दुभी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सदैव उत्साहित बना रहने वाला, पृथ्वी पति, हाथी-घोड़ें तथा धन-धान्य से युक्त, वाद्य, धन तथा सुख से सम्पन्न होता है ।। ५६ ।। अथ रुधिरोद्गारी संवत्सर फलम् ।। काम लोभी महादोषी शस्त्र पीड़ा विपीड़ितः । दुष्कर्मा कुनखी जातो रुधिरोद्गारि वत्सरे ।। टीका ।। रुधिरोद्गारी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक कामी, लोभी, महादोषी, शस्त्र-पीड़ा से पीड़ित दुष्कर्म करने वाला तथा बुरे नखों वाला होता है ।। ५७ ।। अथ रक्ताक्षी संवत्सर फलम् ।। नेत्ररोगी सदा मंददृष्टिर्मदपरः सदा । दुर्जनः काम वहुलो रक्ताक्षि वर्ष जो नरः ।। टीका ।। रक्ताक्षी नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य सदैव नेत्र-रोगी, मंद-दृष्टि, घमण्डी, दुर्जन तथा अत्यधिक कामी होता है ।। ५८ ।। अथ क्रोधन संवत्सर फलम् ।। तापसो निर्गुणः क्रूरो धातुवादी भयंकरः । क्रोधनाब्दे नरो जातो वंचकः पापबुद्धिमान् ।। टीका ।। क्रोधन नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला मनुष्य तपस्वी, निर्गुण, धातुवादी, भयंकर रूप वाला, ठग तथा पाप-बुद्धि होता है ।। ५९ ।। अथ क्षय संवत्सर फलम् ।। उत्पन्न रोग रूपश्च परसेवारतः खलः । क्षय संवत्सरे जा-तो नरो धर्म विवर्जितः ।। टीका ।। क्षय नामक संवत्सर में जन्म लेने वाला जातक जन्म से ही रोगी, पर-सेवा करने वाला, दुष्ट तथा धर्म-रहित होता है ।। ६० ।। इति रुद्रविंशतिका संवत्सराणि फलं समाप्तम् ।।

अथ अयन फलम् ।। प्रियायुतः सौख्य गुणान्वितश्च दीर्घायुराचार मतिः प्रवीणः । देवद्विजा-चार्य पदानुरक्तः सौम्यायने जात नरो यशस्वी ।। टीका ।। सौम्यायन अर्थात् उत्तरायण में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री युक्त, सुखी, गुणी, दीर्घायु, आचारवान्, बुद्धि कुशल; देवता, ब्राह्मण तथा आचार्य के

चरणों में भक्ति रखने वाला तथा यशस्वी होता है ॥ १॥ क्रूरः शठो रोगयुतश्चदेहः पापात्मकश्चौर्यरतः कृशाश्च । पैं-श्चल्यकृत्क्रूरमतिः शिशुश्चस्याद्दक्षिणाख्यायनजोतिनिद्रः ॥ टीका ॥ दक्षिणायन में जन्म लेने वाला मनुष्य क्रूर, शठ, रोगी- शरीर वाला, पापी, चोरी करने वाला, कृश- शरीरवाला, पर-स्त्री में आसक्त, क्रूरबुद्धि तथा अधिक सोने वाला होता है ॥ २॥ इति अयन फलम् ॥

अथ ऋतु फलम् ॥ तत्रादौ शिशिर ऋतु फलम् ॥ शिशिरे जायते मर्त्यो बल सौख्य चिरायुषः । मिष्ठान्नाशी शुभाचारो दंतरोगी प्रजायते ॥ टीका ॥ शिशिर ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य बलवान्, सुखी, दीर्घायु, मिष्ठान्नभोजी, शुभ आचरण वाला तथा दन्त-रोगी होता है ॥ १॥ वसन्त ऋतु फलम् ॥ सुखी भोगी गुणी कांतः सत्यव्यसन कृद्भवेत् । वसंतर्तौ नरो जातो दान कीर्ति परो भवेत् ॥ टीका ॥ वसन्त ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य सुखी, भोगी, गुणी, श्रेष्ठ स्वामी, सत्य-व्यसनी, सत्यवक्ता, दानी तथा यशस्वी होता है ॥ २॥ ग्रीष्म ऋतु फलम् ॥ वापी कूप तड़ागादि देवतालय कृद्भवेत् । शास्त्रविद् ज्ञान दाता च ग्रीष्मर्तौ जायते नरः ॥ टीका ॥ ग्रीष्म ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य बावड़ी, कुआँ, तालाब तथा देवालय बनवाने वाला, शास्त्र वेत्ता, एवं ज्ञान का उपदेश करने वाला होता है ॥ ३॥ वर्षा ऋतु फलम् ॥ देशग्राम पुराध्यक्षः कृषिकर्ता भवेत्सदा । शास्त्र संग्रहणे दक्षो वर्षा जातो नरो भवेत् ॥ टीका ॥ वर्षा ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य देश, ग्राम तथा पुर का अध्यक्ष, कृषि -कर्म करनेवाला एवं शास्त्र का संग्रह करने में चतुर होता है ॥ ४॥ शरद ऋतु फलम् ॥ व्यापार कुशलो मंत्री ज्वररोग विवर्जितः । पण्डितो गुणवान्धीरः शरदीह नरो भवेत् ॥ टीका ॥ शरद ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य व्यवसाय-कुशल, मन्त्री, ज्वर-रोग से रहित, पण्डित, गुणी, तथा धैर्यवान् होता है ॥ ५॥ हेमन्त ऋतु फलम् ॥ सौधागार निवासी च धार्मिष्ठः सत्यवाक् शुचिः । भुंजते मिष्टमाहारं नरो हेमंत संभवः ॥ टीका ॥ हेमन्त ऋतु में जन्म लेने वाला मनुष्य महलों में निवास करने

वाला, धर्मात्मा, सत्यवादी, पवित्र तथा मिष्ठान्न भोजी होताहै ॥५॥ इति ऋतु फलम् ॥

अथ मास फलम् ॥ तत्रादौ चैत्रमास मास फलम् ॥ ब्रह्मचर्य रतो नित्यं वेदाध्ययन तत्पर:। गुरुदेवद्विजातीनां भक्तश्चैत्र समुद्भव:॥ टीका॥ चैत्र मास में जन्म लेने वाला मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला, नित्य वेदाध्ययन में तत्पर तथा गुरु, देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होताहै॥१॥ वैशाख मास फलम्॥ सर्वलक्षण संयुक्तो दीर्घदर्शी कलानिधि:। सात्विकश्चिरजीवी च वैशाखे जायते नर:॥ टीका॥ वैशाख मास में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वलक्षण युक्त, दीर्घदर्शी, कलाओं का ज्ञाता, सात्विक स्वभाव का तथा चिरजीवी होता है॥२॥ ज्येष्ठ मास फलम्॥ निपुण: सर्वकार्येषु मतिमांश्च परीक्षक:। क्रयविक्रयकृन्नित्यं भवेज्ज्येष्ठे च मानव:॥ टीका॥ ज्येष्ठ मास में जन्म लेने वाला मनुष्य सब कामों में चतुर, बुद्धिमान्, परीक्षा करने वाला तथा प्रतिदिन क्रय-विक्रय करने वाला होता है॥३॥ आषाढ़मास फलम्॥ निर्धनो बहुभुक्कुष्ठी हलकर्मरत: सदा। व्याधितो मूर्ख बुद्धिश्च भवेदाषाढजो नर:॥टीका॥ आषाढ़ मास में जन्म लेने वाला मनुष्य निर्धन, अधिक भोजन करने वाला, कुष्ठरोगी, हल-कर्म में लगा रहने वाला, व्याधियुक्त तथा मूर्ख बुद्धि वाला होता है॥४॥ श्रावण मास फलम्॥ श्रावणे जायते मर्त्यो वेदकर्म सुकौशल:। पुत्र दार धनैर्युक्त: सर्वलोके प्रपूजक:॥ टीका॥ श्रावण मास में जन्म लेने वाला मनुष्य वेदकर्म में चतुर, पुत्र-स्त्री एवं धन युक्त तथा समस्त लोकों में पूज्य होता है॥५॥ भाद्रपदमास फलम्॥ भोगी दाता कृशो दीर्घो गौर: कामी बहुस्त्रिक:। पुत्रबान्धववान् श्रीमान्नरो भाद्रपदे भवेत्॥ टीका॥ भाद्रपद मास में जन्म लेने वाला मनुष्य भोगी, दाता, कृश एवं दीर्घ शरीर वाला, गौरवर्ण, कामी, अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, पुत्रवान्, बन्धु-बान्धव युक्त तथा श्रीमान् होता है॥६॥ आश्विन मास फलम्॥ आश्विने च नरो जातो विभुर्भूपप्रियो भवेत्। बहु भृत्य: स्त्रिया युक्तो बह्वपत्योल्पजीवित:॥ टीका॥ आश्विन (क्वार) मास में जन्म लेने वाला मनुष्य ऐश्वर्यशाली, राजा को प्रिय, अनेक भृत्य (सेवक) तथा स्त्रियों वाला, अनेक पुत्रों वाला तथा अल्पजीवी होता है॥७॥ कार्तिक मास फलम्॥ वाचालो वक्रबुद्धिश्च कुंचिताग्रकचोलस:। कार्तिके जायते नित्यं ब्रह्मचर्य रतो भवेत्॥टीका॥

मृ० सं० ४३

भा० टी०

कार्तिक मास में जन्म लेने वाला मनुष्य वाचाल, वक्रबुद्धि, कुंचित केशों वाला, आलसी तथा ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होता है॥ ८॥ मार्गशीर्ष मास फलम्॥ तीर्थयात्रापरो नित्यं मंत्रदीक्षापरायण:। मार्गमासे भवेन्मर्त्य: सदा शास्त्रार्थ संचक:॥ टीका॥ मार्गशीर्ष (अगहन) मास में जन्म लेने वाला मनुष्य नित्य तीर्थयात्रा करने वाला, मन्त्रदीक्षा में तत्पर तथा सदैव शास्त्रार्थ का संचय करने वाला होता है॥ ९॥ पौष मास फलम्॥ पौष मासे समुत्पन्नो नरो दुःखप्रदो भवेत्। सर्वरोगयुतो नित्यं पाप मार्गरत: सदा॥ टीका॥ पौष मास में जन्म लेने वाला मनुष्य दुःख देने वाला, सब प्रकार के रोगों से युक्त तथा सदैव पाप-मार्ग पर चलने वाला होता है॥ १०॥ माघ मास फलम्॥ योगीश्वरस्तपोनिष्ठो वेदवेदांग पारग:। शान्तो दयान्वितो दक्षो नरो माघे प्रजायते॥ टीका॥ माघ मास में जन्म लेने वाला मनुष्य योगीश्वर, तपोनिष्ठ, वेद-वेदाङ्ग का ज्ञाता, शान्त, दयालु स्वभाव का तथा चतुर होता है॥ ११॥ फाल्गुन मास फलम्॥ सुकुमार: सदाभोगी कामी स्त्रीवल्लभ: सुखी। फाल्गुने जायते बालो गजाश्ववरभूषण:॥ टीका॥ फाल्गुन मास में जन्म लेने वाला मनुष्य सुकुमार शरीर वाला, सदैव भोगी, कामी, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा हाथी, घोड़ा एवं श्रेष्ठ आभूषणों से युक्त होता है॥ १२॥ इति मासफलम्॥

अथ पक्ष फलम्॥ तत्रादौ शुक्लपक्ष फलम्॥ शुक्लपक्ष नरो जातो दीर्घायु: पुत्रवान्भवेत्। बहूनां पालको दाता सुहृन्मानी स्त्रियाजित:॥ टीका॥ शुक्लपक्ष में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घायु, पुत्रवान्, अनेक लोगों का पालन करने वाला, दानी, मित्रों का सम्मान करने वाला तथा स्त्री के वशीभूत रहने वाला होता है॥ १॥ कृष्णपक्ष फलम्॥ अलसो मलिनो द्वेषी निन्दक: ग्राम्य भाषण:। कृष्णपक्षे भवेन्मर्त्य स्सर्वधर्म बहिष्कृत:॥ टीका॥ कृष्णपक्ष में जन्म लेने वाला मनुष्य आलसी, मलिन, द्वेषी, निन्दक, गँवारू भाषा बोलने वाला और सभी धर्मों से बहिष्कृत होता है॥ २॥ इति पक्षफलम्॥

अथ तिथि फलम्॥ तत्रादौ प्रतिपदा फलम्॥ प्रतिपद्दिवसे जातस्त्रिदिनं चत्रिमासकम्। जीवित: सन्महातेजा वर्षाशीति चिरायुष:॥ टीका॥ प्रतिपदा को जन्म लेने वाला मनुष्य यदि तीन दिन अथवा तीन

मास तक जीवित रह जाय तो फिर वह बड़ा तेजस्वी तथा अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करने वाला होता है ॥ १ ॥
अथ द्वितीया तिथि फलम् ॥ द्वितीया दिवसे जातो नरः सत्यवचो भवेत्। जनानंदकरः श्लाघ्यः स्वकर्मनिरतः सदा ॥ टीका ॥
द्वितीया तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य सत्यवादी, लोगों को आनन्द देने वाला, स्तुति के योग्य तथा अपने कर्म में
रत रहने वाला होता है ॥ २ ॥ अथ तृतीया तिथि फलम् ॥ तृतीयायां नरो जातः स्त्रीलोलः कृपणश्चलः। व्रतोपवासनिरतो
मूर्खो वादी बलान्वितः ॥ टीका ॥ तृतीया तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री-लम्पट, कृपण, चंचल चित्त वाला, व्रत-
उपवास करने वाला, मूर्ख, विवादी तथा बलवान् होता है ॥ ३ ॥ अथ चतुर्थी तिथि फलम् ॥ चतुर्थ्यां तु नरो जातो लुब्धः
पिशुन वाग्भवेत्। चण्डः साहसिकः शूरश्चलचित्तः सुखान्वितः ॥ टीका ॥ चतुर्थी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य
लोभी, चुगलखोर, प्रचण्ड, साहसी, शूर-वीर, चंचल-चित्त वाला तथा सुखी होता है ॥ ४ ॥ अथ पंचमी तिथि फलम् ॥
पंचम्यां च नरो जातो मानी दीर्घायुषो भवेत्। महामतिः स्थिरः शूरः सत्यवादी जितेन्द्रियः ॥ टीका ॥ पंचमी तिथि
को जन्म लेनेवाला मनुष्य दीर्घायु, महामति, स्थिर-स्वभाव वाला, शूरवीर, सत्यवादी तथा जितेन्द्रिय होता है ॥ ५ ॥
अथ षष्ठी तिथि फलम् ॥ षष्ठम्यां च नरो जातो व्रणांकित तनुः स्थिरः। स्त्रीलोलुपोति सुभगो विद्या कीर्ति
परो भवेत् ॥ टीका ॥ षष्ठी तिथि को जन्म लेने वाला मनुष्य शरीर में व्रण-चिह्न युक्त, स्थिर स्वभाव वाला,
स्त्री-लोलुप, सुन्दर एवं विद्या तथा कीर्ति प्राप्त करने वाला होता है ॥ ६ ॥ अथ सप्तमी तिथि फलम् ॥ सप्त-
म्यां जायेत मर्त्यो धनवान्गुणवान्भवेत्। गुरुदेवार्चनपरः सदाचार दृढव्रतः ॥ टीका ॥ सप्तमी तिथि में जन्म लेने
वाला मनुष्य धनवान्, गुणवान्, गुरु तथा देवताओं की भक्ति करने वाला, सदाचारी एवं दृढ़व्रती होता
है ॥ ७ ॥ अथ अष्टमी तिथि फलम् ॥ अष्टम्यां तु नरो जातः स्वदारनिरतो भवेत्। बहुभाषीति चपलश्चलचि-
त्तोतिनिष्ठुरः ॥ टीका ॥ अष्टमी तिथि को जन्म लेने वाला मनुष्य अपनी ही स्त्री में आसक्त रहने वाला, बहु
भाषी, अत्यन्त चपल, चंचल चित्तवाला तथा निष्ठुर स्वभाव वाला होता है ॥ ८ ॥ अथ नवमी तिथि फलम् ॥

काम लुब्धो महाशूरो गीतनृत्यरतस्तथा। शत्रुघ्नश्च महाक्रोधी नवम्यां जायते नरः ॥ टीका ॥ नवमी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य काम-लोलुप, महा बलवान्, गीत-नृत्यादि में रुचि रखने वाला, शत्रु हन्ता तथा महाक्रोधी होता है ॥ ९ ॥ अथ दशमी तिथि फलम् ॥ दशम्यां तु नरो जातः स्त्रीजितोस्त्रव्रणांकितः। शुचि रत्यंत सुभगश्चलचित्तो महामतिः ॥ टीका ॥ दशमी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री-जित, शरीरपर शस्त्र अथवा व्रण के चिह्न वाला, पवित्र, अत्यन्त सुन्दर, चंचल-चित्त वाला तथा महान् बुद्धिमान् होता है। १०॥ अथ एकादशी तिथि फलम् ॥ एकादश्यांच जनितो लोक व्यापार कोविदः। कलाशास्त्रेषु कुशलः सत्य वादी दृढ़व्रतः ॥ टीका ॥ एकादशी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य लोक-व्यवहार में कुशल, कला-शास्त्र विद, सत्यवादी तथा दृढ़व्रती होता है ॥ ११ ॥ अथ द्वादशी तिथि फलम् ॥ द्वादश्यां तु नरो जातः सदाचारो ति दुःसहः। सुभगो रति लोलश्च वस्त्र भोजन तत्परः ॥ टीका ॥ द्वादशी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य सदाचारी, अत्यन्त क्रोधी, रति-लोलुप, सुन्दर तथा वस्त्र-भोजन अर्जित करने में तत्पर रहता है ॥ १२॥ अथ त्रयोदशी तिथि फलम् ॥ त्रयोदश्यां नरो जातः स्त्रीजितो ज्ञानवान्भवेत्। व्रतोपवास निरतो मतिमान् गुणवान् तथा ॥ टीका ॥ त्रयोदशी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री-जित, ज्ञानी, व्रत-उपवास में निरत, बुद्धिमान् तथा गुणवान् होता है ॥ १३ ॥ अथ चतुर्दशी तिथि फलम् ॥ चतुर्दश्यां नरो जातः समृद्धः सर्व कर्मसु। बुद्धिमान् व्याधि निर्मुक्तः सदाबंधुरतो भवेत् ॥ टीका ॥ चतुर्दशी तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य सबकर्मों में श्रुद्ध, बुद्धिमान्, व्याधि-रहित तथा सदैव बन्धु-बान्धवों से युक्त बना रहता है ॥ १४॥ अथ पूर्णिमा तिथि फलम् ॥ पूर्णिमायां नरो जातः पूर्णाङ्गः सुस्थिरो भवेत्। सदा हृष्टमनाः कामी सुभगोतिरणो भवेत् ॥ टीका ॥ पूर्णिमा तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य सदैव प्रसन्न बना रहने वाला, कामी, पूर्णअङ्गों वाला, सुस्थिर चित्त वाला सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥ १५॥ अथ अमावास्या तिथि फलम् ॥ अमायां तु

नरो जातः इन्द्रियार्त्तिगतो दुःखी । दुर्भगो बलहीनश्च चित्ते बहुसमाकुलः ॥ टीका ॥ अमावास्या तिथि में जन्म लेने वाला मनुष्य इन्द्रियों के दुःख से दुःखी, सुखहीन, बलहीन तथा चित्त में अत्यधिक व्याकुलता वाला होता है ॥१६॥ इति तिथि फलम् ॥

अथ वार फलम् ॥ तत्रादौ रविवार फलम् ॥ स्थिरः प्रचंडः शूरस्तु रक्तश्यामतनुः शुचिः । पित्ताधिकोऽति चतुरो जायते सूर्यवासरे ॥ टीका ॥ रविवार को जन्म लेने वाला मनुष्य स्थिर स्वभाव वाला, प्रचण्ड, शूर-वीर, रक्त-श्याम वर्ण के शरीर वाला, पवित्र, पित्त की अधिकता वाला एवं अत्यन्त चतुर होता है ॥१॥ अथ चन्द्रवार फलम् ॥ चन्द्रवारे नरो जातः सात्विकः क्षयवृद्धिमान् । ह्रस्व कायोऽति गौरोश्च पृथुवक्षाः सुबुद्धिमान् ॥ टीका ॥ सोमवार को जन्म लेने वाला मनुष्य सात्विक स्वभाव का, क्षय-वृद्धि सम्पन्न, छोटे क़द का, गौरवर्ण, बड़ी छाती वाला तथा श्रेष्ठ बुद्धिमान् होता है ॥२॥ अथ भौमवार फलम् ॥ क्षात्रवृत्ति समायुक्तो जनयेद् भौमवासरे । रक्तायत लोचनश्च जायते मधुरो क्षमी ॥ टीका ॥ मंगलवार को जन्म लेने वाला मनुष्य क्षात्र वृत्ति करने वाला, लाल रंग की आँखों वाला, कम बोलने वाला, मीठे स्वभाव का तथा क्षमाशील होता है ॥३॥ अथ बुधवार फलम् ॥ निपुणोऽति वृत्त शिरः पादश्चैव तथा कविः । रूपवान्मति चापल्यो जनितो बुधवासरे ॥ टीका ॥ बुधवार को जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त चतुर, गोल सिर तथा गोल पाँवों वाला, कवि, रूपवान् एवं चपलबुद्धि वाला होता है ॥४॥ अथ गुरुवार फलम् ॥ सुधीः सद्बहुलोकज्ञः कालशास्त्रविदः शुचिः । प्रगल्भः कुशलो धीरः संभवेद् गुरुवासरे ॥ टीका ॥ बृहस्पतिवार को जन्म लेने वाला मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धि वाला, अनेक लोगों में प्रसिद्ध, कला-शास्त्रविद्, पवित्र, प्रगल्भ, कुशल तथा धीर-स्वभाव का होता है ॥५॥ अथ शुक्रवार फलम् ॥ प्रच्छन्न कार्यः सुमतिर्जातः शुक्रस्यवासरे । सुधीः सद्वक्त्र लोकज्ञः कलाशास्त्रविदः शुचिः ॥ टीका ॥ शुक्रवार को जन्म लेने वाला मनुष्य गुप्त-कार्य करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, विद्वान्, सुन्दर मुख वाला,

लोक-प्रसिद्ध, कला-शास्त्रज्ञ तथा पवित्र होता है ॥ ६ ॥ अथ शनिवार फलम् ॥ रूक्षो दुर्बल देहश्च मलिनो
ति-चल: खल: । रौद्र: क्रोधपरोनित्यं जनित: शनिवासरे ॥ टीका ॥ शनिवार को जन्म लेने वाला मनुष्य रूखे
और दुर्बल शरीर वाला, मलिन, अत्यन्त चंचल चित्त वाला, दुष्ट, भयानक एवं सदैव क्रोध में उन्मत्त रहने वाला
होता है ॥ ७ ॥ इति वार फलम् ॥

अथ तिथिक्षय एवं तिथि मल फलम् ॥ तिथि क्षये मले वापि येषां जन्म भवेन्नृणाम् । गुणधर्म विहीनास्ते
कुटिला परवञ्चका: ॥ टीका ॥ तिथि क्षय अथवा तिथि मल में जन्म लेने वाला मनुष्य गुणहीन, धनहीन, कुटिल,
तथा पर-वञ्चक होता है ॥ (टिप्पणी- जिस तिथि में सूर्योदय नहीं होता उसे 'तिथि क्षय' कहते हैं तथा जिस
तिथि में दो बार सूर्योदय होता है, उसमें अग्रिम उदयवाली तिथि को 'तिथि मल' कहा जाता है)।

अथ नन्दादि तिथि फलम् ॥ तत्रादौ नन्दा फलम् ॥ नन्दा तिथौ नरो जातो महामानी च कोविद: ॥ देवता
भक्ति निष्ठश्च ज्ञानी च प्रियवत्सल: ॥ टीका ॥ नन्दा तिथि (१।६।११) में जन्म लेने वाला मनुष्य महामानी,
विद्वान्, देवताओं की भक्ति करने वाला, ज्ञानी तथा प्रिय-वत्सल होता है ॥ १ ॥ भद्रा फलम् ॥ भद्रा तिथौ
बन्धुमान्यो राजसेवी धनान्वित: । संसार भयभीतश्च परमार्थमतिर्नर: ॥ टीका ॥ भद्रा तिथि (२।७।१२) में
जन्म लेने वाला मनुष्य बन्धु-बान्धवों में सम्मानित, राज-सेवक, धनी, सांसारिक-बन्धनों से डरने वाला तथा
परमार्थसेवी अर्थात् परोपकारी होता है ॥ २ ॥ जया फलम् ॥ जया तिथौ राजपूज्य: पुत्रपौत्रादि संयुत: । शूर:
शान्तश्च दीर्घायुर्मनोविज्ञश्च जायते ॥ टीका ॥ जया तिथि (३।८।१३) में जन्म लेने वाला मनुष्य राज्य द्वारा
सम्मानित, पुत्र-पौत्रादि से युक्त, शूर-वीर, शान्त स्वभाव वाला, दीर्घायु तथा मनस्वी होता है ॥ ३ ॥ रिक्ता
फलम् ॥ रिक्ता तिथौ वितर्कज्ञ: प्रमादी गुरुनिन्दक: । शास्त्रहो मदहन्ता च कामुकश्च नरो भवेत् ॥ टीका ॥
रिक्ता तिथि (४।९।१४) में जन्म लेने वाला मनुष्य कुतर्की, प्रमादी, गुरु-निन्दक, शास्त्रज्ञ, दूसरों का

घमण्ड नष्ट करनेवाला तथा कामी होता है ॥४॥ पूर्णा फलम् ॥ पूर्णातिथौ धनैः पूर्णो वेदशास्त्रार्थ तत्त्ववित् । सत्यवादी शुद्धचेता त्रिहो भवति मानवः ॥ टीका ॥ पूर्णा तिथि (५।१०।१५) में जन्म लेने वाला मनुष्य धन से परिपूर्ण, वेदशास्त्रों के तत्त्वार्थ को जानने वाला, सत्यवादी, शुद्धचित्त वाला तथा अनेक विषयों का ज्ञाता होता है ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ दिवा-रात्रि फलम् ॥ तत्रादौ दिवा फलम् ॥ सद्धर्म युक्तो बहुपुत्र भोगी प्रियान्वितः कामनिपीड़िताङ्गः । वस्त्रानुयुक्तो मतिमान्सुरूपो भवेन्मनुष्यश्च दिवाप्रसूतः ॥ टीका ॥ दिन में जन्म लेने वाला मनुष्य सद्धर्मयुक्त, अनेक पुत्रों वाला, भोगी, अधिक मित्रों वाला, कामातुर, वस्त्रादि से परिपूर्ण, बुद्धिमान् तथा सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥१॥ अथ रात्रि फलम् ॥ मन्दवाग् बहुकामार्तः क्षयरोगी मलीमसः । क्रूरात्मा छन्नपापश्च निशि जातो भवेन्नरः ॥ टीका ॥ रात्रि में जन्म लेने वाला मनुष्य कम बोलने वाला, अधिक कामी, क्षयरोगी, मलिन, क्रूरात्मा तथा गुप्त-पाप करने वाला होता है ॥ इति ॥

अथ जन्म नक्षत्र फलम् ॥ तत्रादौ अश्विनी नक्षत्र फलम् ॥ सुरूपः सुभगो दक्षः स्थूल कायो महाधनी । अश्विनी सम्भवो लोके जायते जनवल्लभः ॥ टीका ॥ अश्विनी नक्षत्र में जन्म लेनेवाला मनुष्य स्वरूपवान्, सुन्दर भाग्यशाली, चतुर, स्थूल काय, महाधनी तथा लोकप्रिय होता है ॥१॥ अथ भरणीनक्षत्र फलम् ॥ अरोगः सत्यवादी च सत्प्रणश्च दृढव्रतः । भरण्यां जायते लोकः सुसुखी धनवानपि ॥ टीका ॥ भरणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सत्यप्रतिज्ञ, दृढ़व्रती, सुखी तथा धनी होता है ॥ २ ॥ अथ कृत्तिका नक्षत्र फलम् ॥ कृपणः पाप कर्मा च क्षुधालुर्नित्यपीडितः । अकर्म कुरुते नित्यं कृत्तिका सम्भवो नरः ॥ टीका ॥ कृत्तिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कृपण, पाप-कर्म करने वाला, क्षुधापीड़ित, नित्य दुःखी तथा प्रतिदिन अकर्म करने वाला होता है ॥ ३ ॥ अथ रोहिणी नक्षत्र फलम् ॥ धनी कृतज्ञो मेधावी नृपमान्यः प्रियंवदः । सत्यवादी सुरूपश्च रोहिण्यां जायते नरः ॥ टीका ॥ रोहिणी नक्षत्र

में जन्म लेने वाला मनुष्य धनी, कृतज्ञ, मेधावी, राजमान्य, प्रियभाषी, सत्यवादी तथा सुन्दर रूपवान् होता है ॥४॥ अथ मृगशिरा नक्षत्र फलम् ॥ चपलश्चतुरो धीरः कूटकर्म स्वकर्मकृत् । अहङ्कारी परद्वेषी मृगे भवति मानवः ॥ टीका ॥ मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य चपल, चतुर, धैर्यवान्, नकली-वस्तुऐं बनानेवाला, स्वार्थी, अहङ्कारी तथा परद्वेषी होता है ॥५॥ अथ आर्द्रा नक्षत्र फलम् ॥ कृतघ्नः गर्वितो हीनो नरः पापरतः शठ आर्द्रा नक्षत्र सम्भूतो धनधान्यविवर्जितः ॥ टीका ॥ आर्द्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कृतघ्न, घमण्डी, हीन स्वभाव का, पापी, शठ तथा धन-धान्य हीन होता है ॥६॥ अथ पुनर्वसु नक्षत्र फलम् ॥ शान्तः सुखी च सम्भो-गी सुभगो जनवल्लभः । पुत्रमित्रादिभिर्युक्तो जायते च पुनर्वसौ ॥ टीका ॥ पुनर्वसु नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य शान्त स्वभाव का, सुखी, सम्भोग-प्रिय, सुन्दर, लोक-प्रिय तथा पुत्र-मित्रादि से युक्त होता है ॥७॥ अथ पुष्य नक्षत्र फलम् ॥ देवधर्मधनैर्युक्तः पुत्रयुक्तो विचक्षणः । पुष्ये च जायते लोकः शान्तात्मा सुभगः सुखी ॥ टीका ॥ पुष्य नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य देवता तथा धर्म का उपासक, धनवान्, पुत्रवान्, पण्डित, शान्त स्वभाव वाला, सुन्दर तथा सुखी होता है ॥८॥ अथ आश्लेषा नक्षत्र फलम् ॥ सर्वभक्षी कृतान्तश्च कृतघ्नो वञ्चकः खलः । आश्लेषायां नरो जातः कृतकर्मा हि जायते ॥ टीका ॥ आश्लेषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनु-ष्य सर्वभक्षी, क्रूर स्वभाव वाला, कृतघ्न, धूर्त, दुष्ट तथा केवल अपने ही काम से मतलब रखने वाला होता है ॥९॥ अथ मघा नक्षत्र फलम् ॥ बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी । चमूनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः ॥ टीका ॥ मघा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक सेवकों वाला, धनी, भोगी, पितृभक्त, महान् उद्यमी, सेनापति तथा राजसेवक होता है ॥१०॥ अथ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र फलम् ॥ विद्या गोधन संयुक्तो गम्भीरः प्रमदाप्रियः । पूर्वाफाल्गुनिकाजातः सुखी पण्डित पूजितः ॥ टीका ॥ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य विद्या, गौ तथा धन से युक्त, गंभीर स्वभाव वाला, स्त्रियों को प्रिय, सुखी तथा

विद्वानों से पूजित होता है॥ ११॥ अथ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र फलम्॥ दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थपण्डितः। उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः॥ टीका॥ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य जितेन्द्रिय, शूर-वीर, मृदुभाषी, शस्त्र-विद्या में निपुण, महान् योद्धा तथा लोकप्रिय होता है॥ १२॥ अथ हस्त नक्षत्र फलम्॥ असत्यवचनो धृष्टः सुरापी बन्धुवर्जितः। हस्ते जातो नरश्चौरो जायेत परदारिकः॥ टीका॥ हस्त नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य असत्यवादी, ढीठ, सुरापायी, बन्धु-विहीन, चोर तथा पर-स्त्री-गामी होता है॥ १३॥ अथ चित्रा नक्षत्र फलम्॥ पुत्रदारयुतस्तुष्टो धनधान्यसमन्वितः। देवब्राह्मणभक्तश्च चित्रायां जायते नरः॥ टीका॥ चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य पुत्र-स्त्री से युक्त, सन्तोषी, धन-धान्य सम्पन्न एवं देव-ब्राह्मणों का भक्त होता है॥ १४॥ अथ स्वाति नक्षत्र फलम्॥ विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः। सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः॥ टीका॥ स्वाती नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य चतुर, धर्मात्मा, कृपण, लोकप्रिय, सुशील तथा देव-भक्त होता है॥ १५॥ अथ विशाखा नक्षत्र फलम्॥ अतिलुब्धोऽतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः। विशाखायां नरो जातो वेश्याजनरतो भवेत्॥ टीका॥ विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त लोभी, अत्यन्त अभिमानी, निष्ठुर, कलह-प्रिय तथा वेश्यागामी होता है॥ १६॥ अथ अनुराधा नक्षत्र फलम्॥ पुरुषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यमी। अनुराधाभवो लोकः सदा हृष्टस्च जायते॥ टीका॥ अनुराधा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य पुरुषार्थी, प्रवासी, बन्धु-बान्धवों का कार्य करने के लिए सदैव तत्पर तथा निरन्तर प्रसन्न रहने वाला होता है॥ १७॥ अथ ज्येष्ठा नक्षत्र फलम्॥ बहुमित्रः प्रधानश्च कविर्दानी विचक्षणः। ज्येष्ठा जातो धर्मरतो जायते शूद्रपूजितः॥ टीका॥ ज्येष्ठा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य बहुत मित्रों वाला, प्रधान, कवि, दानी, विचक्षण बुद्धि वाला, धर्मात्मा तथा शूद्रजनों से पूजित होता है॥ १८॥ अथ मूल नक्षत्र फलम्॥ धनवान् सुखी धनवाहनाढ्यो हिंस्रो बलाढ्यः स्थिरकर्म

कर्ता। प्रतापितारातिजनो मनुष्यो मूले कृती स्यान्जनन प्रपन्नः ।। टीका ।। मूलनक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य सुखी, धन-वाहन-सम्पन्न, हिंसक, बलवान्, स्थिर कार्य करने वाला, प्रतापी, शत्रुओं पर विजय पाने वाला तथा विद्वान् होता है।। १९।। अथ पूर्वाषाढ़ नक्षत्र फलम्।। दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः। पूर्वाषाढभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।। टीका।। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य शरणागत का उपकार करनेवाला, भाग्यवान्, लोकप्रिय तथा सभी कामों में चतुर होता है।।२०।। अथ उत्तराषाढ नक्षत्र फलम्।। बहुमित्री महाकायो जायेत विजयी सुखी। उत्तराषाढ सम्भूतः शूरश्च विनयी भवेत्।। टीका।। उत्तराषाढ नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक मित्रों से युक्त, बड़े शरीरवाला, विजयी, सुखी, शूर तथा विनयी होता है।। २१।। अथ अभिजित् नक्षत्र फलम्।। अतिसुललित कान्तिः सम्मतः सज्जनानां ननु भवति विनीतश्चारुकीर्तिः सुरूपः। द्विजवर सुर भक्तिर्व्यक्त वाङ् मानवः स्यादभिजिति यदि सूतिर्भूपतिः स्ववंशे।। टीका।। अभिजित् नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर कान्तिमान्, सज्जनों को प्रिय, विनयी, यशस्वी, स्वरूपवान्, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, स्पष्टवादी तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है।।२२।। अथ श्रवण नक्षत्र फलम्।। कृतज्ञः सुभगो दाता गुणैः सर्वैश्च संयुतः। श्रीमान् बहुल सन्तानः श्रवणे जायेत नरः।। टीका ।। श्रवणनक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कृतज्ञ, सुन्दर, दानदेने वाला, गुणी, समस्त शुभ लक्षणों से युक्त, धनी एवंअधिक सन्तानों वाला होता है।। २३।। अथ धनिष्ठा नक्षत्र फलम्।। गीतप्रियो बन्धुमान्यो हेमरत्नैरलङ्कृतः। जातो नरो धनिष्ठायां शतैकस्य पतिर्भवेत्।। टीका।। धनिष्ठानक्षत्र में जन्म लेनेवाला मनुष्य सङ्गीत-प्रिय, बन्धुओं से मान्य, स्वर्ण एवं रत्नों से अलंकृत तथा सैकड़ों लोगों का पालन करनेवाला होता है।। २४।। अथ शतभिषा नक्षत्र फलम्।। कृपणो धनपूर्णः स्यात्परदारोप सेवकः। जातः शतभिषायां च विदेशे कामुको भवेत्।। टीका।। शतभिषा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य कृपण, धनी, पर-स्त्री-सेवक, विदेश में रहने वाला तथा कामुक होता है।। २५।। अथ पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र फलम्।। वक्ता सुखी प्रजायुक्तो बहुनिद्रो

निरर्थक: । पूर्वाभाद्रपदायां च जातो भवति मानव: ॥ टीका ॥ पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य सुवक्ता, सुखी, सन्ततिवान्, अधिक सोने वाला एवं व्यर्थ समय बिताने वाला होता है ॥ २६॥ अथ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रफलम् गौर: ससत्त्वो धर्मज्ञ: शत्रुघाती परामर: । उत्तराभाद्र सम्भूतो नर: साहसिको भवेत् ॥ टीका ॥ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य गौर वर्ण, सत्ववान्, धर्मात्मा, शत्रुजयी तथा देवताओं जैसा साहसी होता है ॥२७॥ अथ रेवती नक्षत्र फलम् ॥ सम्पूर्णाङ्ग: शुचिर्दक्ष: साधु: शूरो विचक्षण: । रेवती सम्भवो लोके धनधान्यैरलङ्कृत: ॥ टीका ॥ रेवती नक्षत्र में जन्म लेने वाला मनुष्य सब अङ्गों से पूर्ण, सज्जन, शूर, विचक्षण तथा लोक में धन-धान्य से अलंकृत होता है ॥ २८॥ इति नक्षत्र फलम् ॥

अथ नक्षत्रचरण फलम् ॥ अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर: । द्वितीये चाल्पकर्मा च तृतीये सुभगो भवेत् ॥१॥ पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायुर्जायते नर: । त्यागी याम्याद्यपादे स्याद् द्वितीये धनवान्सुखी ॥२॥ तृतीये क्रूरकर्मा च चतुर्थेंऽशे दरिद्रभाक् । वह्न्यर्क्ष प्रभवो बालस्तेजस्वी प्रथमांशके ॥ ३॥ द्वितीये शास्त्रविद्वान्तृतीये सौख्यभाग्भवेत् । दीर्घायुर्बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत् ॥४॥ सौभाग्यं च तथा पीड़ा भीरुत्वं सत्यवादनम् । रोहिणी संभवस्यैवं फलं पाद चतुष्टये ॥५॥ नृपतिस्तस्करो भोगी धनधान्य समन्वित: । क्रमेण मृगशीर्षस्य फलं पाद चतुष्टये ॥६॥ रौद्रर्क्षप्रभवो बालो भवेत्पाद चतुष्टये । व्ययी दरिद्री स्वल्पायुस्तस्करस्तु यथाक्रमम् ॥७॥ पुनर्वसु भवो बाल: सुखी विद्वान् रुजान्वित: । मृदुभाषी भवेन्नित्यं क्रमात्पाद चतुष्टये ॥ ८॥ दीर्घायुस्तस्करो भोगी बुद्धिमान् जायते नर: । क्रमात्पाद चतुर्णां तु पुष्यभस्य प्रकीर्त्तितम् ॥ ९॥ अप्रज्ञ: परकार्यश्च रोगी च सुभगो भवेत् । सार्पर्क्षांघ्रि चतुर्जातो गंडान्ते स्वल्पजीवन: ॥१०॥ मघापाद चतुर्जातश्चापुत्र: पुत्रवान्भवेत् । तीव्ररोगी पण्डितश्च जायते नात्र संशय: ॥ ११॥ समर्थो धार्मिको राजा रोगी क्रूरोऽल्प जीवित: । पूर्वा फाल्गुणि जातस्य फलं पाद चतुष्टये ॥ १२॥ उत्तराफाल्गुणी पाद चतुर्णां तद्भवस्य च । पण्डित: पृथिवीपालो विजयी धार्मिको भवेत् ॥१३॥

हस्ते जातो यदा बाल: शूरोवादी च रोगवान् । धन धान्य युत: श्रीमान्फलंस्यात्प्रथमांघ्रित: ॥१४॥ चित्रायां प्रथमं पादात्फल जातस्य कथ्यते । चोरश्चित्रकर: सस्स्यात्परदारी च पंडित: ॥ १५॥ स्वात्याद्य पादत: पुत्र संभवस्य फलं क्रमात् । तस्करोल्पायुषो धर्मी नृपति: स्यान्न संशय: ॥१६॥ विशाखाजात पुत्रस्य फलं पाद चतुष्टये । नीतिज्ञ: शास्त्रवेत्ता च वादी दीर्घायुषो भवेत् ॥१७॥ तीव्रो धर्मपरो दीर्घजीवी पुंश्चल्य संयुत: । अनुराधादि पादादि जातस्य चक्रमादिदम् ॥ १८॥ क्रूरो भोगी च विद्वांश्च पुत्रवान् जायते नर: । ज्येष्ठा पादचतुष्टस्य जातस्य च फलं क्रमात् ॥ १९॥ मूलपादादि जातस्य नरस्य च फलं क्रमात् । भोगीत्यागी सुमित्रश्च नृपतिर्जायते नर: ॥ २०॥ पूर्वाषाढाद्य पादादि जातस्य च यथाक्रमम् । श्रेष्ठो राजप्रियो वादी धनी भवति निश्चितम् ॥ २१॥ वैश्वपादादि जातस्य फलं ज्ञेयं चतुष्टये । नृपो मित्र विरोधी च मानी धर्मरतो भवेत् ॥ २२॥ शुभमानी शुभगुणो विद्वांश्च धार्मिको भवेत् । श्रवणस्य चतु: पाद जातस्य फलं क्रमात् ॥ २३॥ दीर्घायु: पीड़ितो भीरुर्महानारीवरो भवेत् । धनिष्ठा प्रथमात्पादा दुत्पन्नस्य यथाक्रमम् ॥ २४॥ शतभिषक् प्रथमांघ्री वाग्मी श्रीमान् द्वितीयके । सुखी तृतीयके पादे चतुर्थे पुत्रवान्भवेत् ॥ २५॥ शूरश्चौरो महाबुद्धि: चौरो भोगी भवेन्नर: । पूर्वाभाद्रपदापाद चतुष्के क्रमश: फलम् ॥ २६॥ अहिर्बुध्न्ये क्रमात्पाद चतुष्के संभवात्फलम् । राजा च तस्करश्चैव पुत्रवांश्च सुखी भवेत् ॥२७॥ ज्ञानी च तस्करो युद्धे क्षयी च क्लेशवान्भवेत् । क्रमात्पाद चतुष्कस्य रेवत्यां जायते फलम् ॥ २८॥

॥टीका॥ अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य चोर होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला थोड़े कर्म करने वाला होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ भाग्य वाला होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला दीर्घायु होता है ॥१॥ भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य त्यागी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला धनवान् और सुखी होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला क्रूरकर्म करने वाला होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला दरिद्री होता है ॥ २॥ कृत्तिका नक्षत्र के पहले चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य तेजस्वी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला शास्त्रज्ञ होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला ऐश्वर्यशाली होता है।

चौथे चरण में जन्म लेने वाला दीर्घायु तथा बहुत पुत्रों वाला होता है ॥ ३ ॥ रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेनेवाला मनुष्य सौभाग्यशाली होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला पीड़ायुक्त होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला डरपोक होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला सत्यवादी होता है ॥ ४ ॥ मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला राजा होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला चोर होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला भोगी होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला धन-धान्य-सम्पन्न होता है ॥ ५ ॥ आर्द्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेनेवाला मनुष्य अधिक खर्चीला होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला दरिद्री होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला अल्पायु होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला चोर होता है ॥ ६ ॥ पुनर्वसु नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य सुखी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला विद्यावान् होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला रोगी होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला मृदुभाषी होता है ॥ ७ ॥ पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य बड़ी आयु वाला होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला चोर होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला भोगी होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला बुद्धिमान् होता है ॥ ८ ॥ आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य संतान-रहित होता है। द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला पराया काम करने वाला होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला रोगी होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला सौभाग्यशाली होता है ॥ ९ ॥ आश्लेषा नक्षत्र के गण्डान्तों में जन्म लेनेवाला मनुष्य अल्पायु होता है ॥ १० ॥ मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य सन्तान-हीन होता है। दूसेर चरण में जन्म लेने वाला पुत्रवान् होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला कठिन रोग वाला होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला विद्वान् होता है ॥ ११ ॥ पूर्वफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य सामर्थ्यवान् होता है। दूसेर चरण में जन्म लेने वाला धर्मात्मा होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला राजा होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला क्रूर तथा अल्पायु होता है ॥ १२ ॥ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य

पण्डित होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला राजा होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला विजयी होता है। चौथे
चरण में जन्म लेने वाला धर्मात्मा होता है ॥ १३॥ हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य शूर-वीर
होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला विवादी होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला धन-धान्य सम्पन्न होता है।
चौथे चरण में जन्म लेने वाला श्रीमान् होता है॥ १४॥ चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य
चोर होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला चित्रकार होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला पर-स्त्री-गामी
होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला पण्डित होता है ॥ १५॥ स्वाती नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला
मनुष्य चोर होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला अल्पायु होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला धर्मात्मा होता
है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला राजा होता है॥ १६॥ विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य
नीतिज्ञ होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला शास्त्रज्ञ होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला विवादी होता है।
चौथे चरण में जन्म लेनेवाला दीर्घायु होता है॥ १७॥ अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य
बड़ा तेजस्वी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला धर्मात्मा होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला दीर्घायु होता
है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला व्यभिचारी होता है ॥ १८॥ ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनु-
ष्य क्रूर स्वभाव का होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला भोगी होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला विद्वान्
होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला पुत्रवान् होता है॥ १९॥ मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य
भोगी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला त्यागी होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ मित्रों वाला होता
है। चौथे चरणमें जन्म लेने वाला राजा होता है॥ २०॥ पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य
श्रेष्ठ पुरुष होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला राजा का प्रिय होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला विवादी
होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला धनी होता है॥ २१॥ उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने

वाला मनुष्य राजा होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला मित्र-विरोधी होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला
मानी होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला धर्मात्मा होता है ॥२२॥ श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने
वाला मनुष्य श्रेष्ठमानी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ गुणों वाला होता है। तीसरे चरण में जन्म
लेने वाला विद्वान् होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला धर्मात्मा होता है ॥२३॥ धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम
चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य बड़ी आयु वाला होता है। दूसरे चरण में जन्म लेनेवाला पीड़ायुक्त होता है। तीसरे
चरण में जन्म लेने वाला डरपोक होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ स्त्री वाला होता है ॥२४॥ शत
भिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर वाणी बोलने वाला होता है। दूसरे चरण में जन्म
लेने वाला लक्ष्मीवान् होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला सुखी होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला
पुत्रवान् होता है ॥२५॥ पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य शूर-वीर होता है। दूसरे
चरण में जन्म लेने वाला चोर होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ बुद्धि वाला होता है। चौथे चरण में
जन्म लेने वाला पुर का स्वामी तथा भोगी होता है ॥२६॥ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला
मनुष्य राजा होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला चोर होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला पुत्रवान् होता
है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला सुखी होता है ॥२७॥ रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला मनुष्य
ज्ञानी होता है। दूसरे चरण में जन्म लेने वाला चोर होता है। तीसरे चरण में जन्म लेने वाला युद्ध में क्षय होने वा
होता है। चौथे चरण में जन्म लेने वाला क्लेश युक्त होता है ॥२८॥ इति नक्षत्र चरण फलम् ॥

टिप्पणी - नक्षत्र तथा नक्षत्र चरणों का फल जातक पर तभी घटित होता है, जबकि नक्षत्र ग्रहण,
युद्ध, भूकम्प आदि दोषों से रहित हों तथा चन्द्रमा बलवान् हो।

अथ नक्षत्रांश फलम् ॥ विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी जितेन्द्रियः। विद्याव्यसन शीलश्च जायते

प्रथमांशके ॥१॥ टीका ॥ जो मनुष्य नक्षत्र के पहले अंश (चरण) में जन्म लेता है, वह चतुर, धर्मात्मा, सत्य वादी, इन्द्रियजित् तथा विद्वान् होता है ॥१॥ उत्पन्न विभवो भोक्ता संग्रामेष्वपराजितः। नीतिज्ञः प्रमदासक्तो द्वितीये जायतेंऽशके ॥२॥ टीका॥ जो मनुष्य नक्षत्र के दूसरे अंश में जन्म लेता है, वह धनवान, भोगी, युद्धजयी, नीतिज्ञ तथा स्त्री में आसक्ति रखने वाला होता है ॥२॥ उत्पन्न भोगभोक्ता स्याच्छास्त्र विद्या विशारदः। स्वधर्म प्रमदासक्तः तृतीये जायतेंऽशके ॥३॥ टीका ॥ जो मनुष्य नक्षत्र के तीसरे अंश में जन्म लेता है, वह उत्पन्न भोग को भोगने वाला, शास्त्रज्ञ, स्वधर्म का पालन करने वाला तथा अपनी स्त्री में आसक्त होता है ॥३॥ स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायासक्तो नपुंसकः। वीरविद्या विचारज्ञश्च तुर्ये जायतेंऽशके ॥४॥ टीका ॥ जो मनुष्य नक्षत्र के चौथे अंश में जन्म लेता है, वह स्त्री-जित् सन्तान-विहीन, माया में लिप्त, नपुंसक तथा वीर विद्या का जानकार होता है ॥४॥ इति नक्षत्रांश फलम् ॥

अथ सप्तविंशति योग फलम् ॥ तत्रादौ विष्कुम्भ योग फलम् ॥ कान्ता बन्धुरतस्स्त्रीषु गृहदाररतस्तथा। दक्षश्च सर्वकार्येषु विष्कुम्भे जायते नरः ॥ टीका ॥ विष्कुम्भ योग में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री के भाई से प्रेम करने वाला, अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य स्त्रियों से भी प्रीति रखने वाला तथा सब कामों में चतुर होता है ॥१॥ अथ प्रीति योग फलम् ॥ प्रीतियोगोऽपि संजातो योषितां वल्लभः सदा। महोत्साहः कुतूहलश्च परार्थैकमतिः सदा ॥ टीका ॥ प्रीति योग में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्रियों का प्रिय, अत्यधिक उत्साही, कुतूहल तथा परमार्थ-बुद्धि वाला होता है ॥२॥ अथ आयुष्य योग फलम् ॥ नीतिज्ञः स्थिरचित्तश्च बहुदः कृत्यतत्परः। आयुष्ये जनिते बालः सर्व भोग समन्वितः ॥ टीका ॥ आयुष्य योग में जन्म लेने वाला मनुष्य नीतिज्ञ, स्थिर चित्त वाला, बहुत दान करने वाला, सब कामों में तत्पर तथा सब भोगों से युक्त होता है ॥३॥ अथ सौभाग्य योग फलम् ॥ बहुवाक्यः शुभधनो निर्गुणः शुभवाक् सुधीः। गंध

प्रियोपि सुभग: सौभाग्ये जनितो नर: ॥ टीका ॥ सौभाग्य योग में जन्म लेने वाला मनुष्य अधिक बोलने वाला, शुभगुण-सम्पन्न, धनी, निर्गुण, प्रियवादी, बुद्धिमान्, सुगन्ध-प्रिय, सुन्दर तथा भाग्यशाली होता है ॥ ४॥ अथ शोभन योग फलम् ॥ मतिमांश्च गुणाढ्यश्च शोकयुक्त: स्वतो भवेत् । शोभने च नरो जातो धौतचित्त: सुनिर्मल: ॥ टीका॥ शोभन योग में जन्म लेने वाला मनुष्य बुद्धिमान्, गुणवान्, अकस्मात् शोकाकुल हो जाने वाला, सुन्दर, स्वच्छ हृदय का एवं निर्मल स्वभाव वाला होता है ॥ ५॥ अथ अतिगण्ड योग फलम् ॥ परापवादी शूरश्च सत्ययुक्तश्च धर्मवित् । परदार रत: कामी चातिगण्डे च जायते ॥ टीका ॥ अतिगण्ड योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दूसरों पर दोषारोपण करने वाला, शूर-वीर, सत्यवादी, धर्मज्ञ, पर-स्त्री-गामी तथा कामी होता है ॥ ६॥ अथ सुकर्म योग फलम् ॥ दक्षश्च सर्वकार्येषु धन धान्य गुणान्वित: । व्यापार कुशलो नित्यं सुकर्मणि नरो भवेत् ॥ टीका ॥ सुकर्म योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सब कामों में दक्ष, धन-धान्य तथा गुण-सम्पन्न तथा व्यवसाय-कुशल होता है ॥ ७॥ अथ धृति योग फलम् ॥ गंधप्रियो धनाढ्यश्च परवाद रतोलस: । परदार रतो नित्यं धृति योगे च जायते ॥ टीका ॥ धृति योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सुगन्ध प्रिय, धनी, विवाद-रत, आलसी तथा नित्य पर-स्त्री में रत रहने वाला होता है ॥ ८॥ अथ शूलयोग फलम् ॥ सत्वयुक्तश्च सत्कर्मा गुणवान्भाग्यतोपिहि । शूलयोगे नरोजात: शूलवाञ्जायते ध्रुवम् ॥ टीका ॥ शूल योग मे जन्म लेने वाला मनुष्य पराक्रमी, सत्कर्म करने वाला, गुणवान्, भाग्यवान् तथा निश्चित रूप से 'शूल-रोग' वाला होता है ॥ ९॥ अथ गण्ड योग फलम् ॥ वाचालोपि महासत्वोगंभीरो गर्वितोभवेत् । श्रेष्ठ: सुशुभवान् गण्डे नरो जात: समाहित: ॥ टीका ॥ गण्डयोग में जन्म लेने वाला मनुष्य वाचाल, महापराक्रमी, गंभीर, गर्वीला, श्रेष्ठ तथा शुभलक्षणों वाला होता है ॥ १०॥ अथ वृद्धि योग फलम् ॥ महामति: स्थिर: शूर: सत्यवादी जितेन्द्रिय: । वृद्धियोगे नरो जातो दृढवाक्यो महायश: ॥ टीका ॥ वृद्धियोग

मू० सं० ०२

भा० टी०

में जन्म लेने वाला मनुष्य महाबुद्धिमान्, स्थिर स्वभाव वाला, शूर-वीर, सत्यवादी, जितेन्द्रिय, अपने वचन का पालन करनेवाला तथा परमयशस्वी होता है ॥ ११॥ अथ ध्रुव योग फलम् ॥ स्थिरकर्मा दृढशक्ति दीर्घायुः प्रियदर्शनः । ध्रुव योगे च यो जातः सर्वदा कर्म तत्परः ॥ टीका ॥ ध्रुव योग में जन्म लेने वाला मनुष्य स्थिर कर्म करने वाला, दृढ़शक्ति सम्पन्न, दीर्घायु, प्रियदर्शी तथा सदैव काम में जुटा रहने वाला होता है ॥१२॥ अथ व्याघात योग फलम् ॥ मूर्खश्च मलिनश्चित्र कर्मणाभिरतः सदा । निष्ठुरोथ महागर्वी व्याघाते जायेत नरः ॥ टीका ॥ व्याघात योग में जन्म लेने वाला मनुष्य मूर्ख, मलिन, चित्रकारी का काम करने वाला, निष्ठुर तथा अत्यन्त घमण्डी होता है ॥ १३॥ अथ हर्षण योग फलम् ॥ कुटिलः सौख्य सम्पन्नोमृतवाचो महाबलः । कृषि कर्त्ता भवेन्नित्यं हर्षणे जायेत नरः ॥ टीका ॥ हर्षण योग में जन्म लेने वाला मनुष्य कुटिल, सुख-सम्पन्न, मीठा बोलने वाला, महाबली तथा कृषि-कर्म करने वाला होता है ॥ १४॥ अथ वज्रयोग फलम् ॥ अदाता च धनाढ्यश्च कृपणो ग्राम्य भाषणः । क्रूरश्चैवानपत्यश्च वज्र योगे भवेन्नरः ॥ टीका ॥ वज्र योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दान न करने वाला, धनवान्, कृपण, गँवारू भाषा बोलने वाला, क्रूर तथा सन्तान-हीन होता है ॥ १५॥ अथ सिद्ध योग फलम् ॥ भोक्ता च धनवांश्चैव जायते स्वल्पवाक् सुखी । सुसिद्धः सत्य रक्तश्च सिद्धयोगे प्रजन्मतः ॥ टीका ॥ सिद्ध योग में जन्म लेने वाला मनुष्य भोगी, धनवान्, कम बोलने वाला, सुखी, सिद्धकर्मा तथा सत्यवक्ता होता है ॥ १६॥ अथ व्यतीपात योग फलम् ॥ अस्थिरः सः परहितो मन्त्री याचन तत्परः । कलाहीनोपि मूर्खश्च जनितो व्यतिपातके ॥ टीका ॥ व्यतीपात योग में जन्म लेने वाला मनुष्य अस्थिर स्वभाव वाला, सहृद-रहित, कुमन्त्री, भोजनादि पचाने में तत्पर अर्थात् खूब खाने वाला, कलाहीन तथा मूर्ख होता है ॥ १७॥ अथ वरीयान् योग फलम् ॥ बहुपूज्यो धनाढ्यश्च स्वकर्म निरतो भवेत् । जनानन्द करः श्लाघी वारीयसि नरः स्मृतः ॥ टीका ॥ वरीयान् योग में जन्म लेने

वाला मनुष्य बहुत लोगों द्वारा पूजनीय, धनी, अपने कर्म को करने वाला, लोगों को आनन्द देने वाला तथा प्रशंसनीय होता है ॥ १८ ॥ अथ परिघ योग फलम् ॥ दानवृत्तिर्दुराचार: सुलुब्ध: साहसश्चल: । परिघाख्ये नरोजात: स्वकुले मति कारक: ॥ टीका ॥ परिघ योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दान करने वाला, दुराचारी, लोभी, साहसी, हठी तथा अपने कुल में बुद्धिमान् होता है ॥ १९ ॥ अथ शिव योग फलम् ॥ तीर्थ यात्रा रतो नित्यं पुत्रवान् धनवान्भवेत् । ब्रह्मचर्य रतो नित्यं शिवयोगे प्रजन्मत: ॥ टीका ॥ शिव योग में जन्म लेने वाला मनुष्य नित्यप्रति तीर्थयात्रा करने वाला, पुत्रवान्, धनवान् तथा ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला होता है ॥ २० ॥ अथ सिद्धि योग फलम् ॥ विबुधश्छन्न मन्त्री च सर्वव्यापार कोविद: । सुचित्तो नीतिमांश्चैव सिद्धि योगे प्रजायते ॥ टीका ॥ सिद्धियोग में जन्म लेने वाला मनुष्य पण्डित, गुप्त मन्त्री, सब प्रकार के व्यवसायों का जानकार, श्रेष्ठ चित्त वाला तथा नीतिमान् होता है ॥ २१ ॥ अथ साध्य योग फलम् ॥ विविधव्यवसायी च स्वामिभक्तो महामति: । गंधप्रियो महोदारस्सुसाध्यस्साध्य जन्मत: ॥ टीका ॥ साध्य योग में जन्म लेने वाला मनुष्य विभिन्न प्रकार के व्यवसाय करने वाला, स्वामिभक्त, बड़ा बुद्धिमान्, सुगन्ध-प्रिय, बड़ा उदार तथा सुसाध्य होता है ॥ २२ ॥ अथ शुभयोग फलम् ॥ सत्यवाक् शुभगो धर्मी क्रोधहीन: सुनिर्मल: । प्रणत: प्रियकारी च शुभयोगे प्रजन्मत: ॥ टीका ॥ शुभ योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सत्यवादी, शुभ कर्म करने वाला, क्रोध-रहित, निर्मल चित्त वाला एवं शरणागत का प्रिय करने वाला होता है ॥ २३ ॥ अथ शुक्ल योग फलम् ॥ सत्यवाक् सुमति: कान्त: ख्यातिमान्श्रुति पारग: । कलाशास्त्रेषु कुशल: शुक्लयोगेप्रजन्मत: ॥ टीका ॥ शुक्ल योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सत्यवादी, सुन्दर, यशस्वी, वेदज्ञ, एवं कला-शास्त्र में प्रवीण होता है ॥ २४ ॥ अथ ब्रह्मयोग फलम् ॥ प्रियवाक्यो महासत्वो ब्रह्मण्यो ब्राह्मणप्रिय: । प्रगल्भो निर्मलो धीरो ब्रह्मयोगे प्रजन्मत: ॥ टीका ॥ ब्रह्म योग में जन्म लेने वाला मनुष्य प्रियवादी, महापराक्रमी, ब्रह्मण्य, ब्राह्मणों

को प्रिय, प्रगल्भ, निर्मल तथा धीर स्वभाव वाला होता है ॥ २५॥ अथ ऐन्द्र योग फलम् ॥ ऐन्द्रयोगे नरो जातो विजयी धावको भवेत् । प्रभूत: सर्वकार्येषु धनीख्यात: प्रियंवद: ॥ टीका ॥ ऐन्द्र योग में जन्म लेने वाला मनुष्य विजयी, दौड़ने वाला, सब कामों में कुशल, धनी, विख्यात तथा प्रियवादी होता है ॥ २६॥ अथ वैधृति योग फलम् ॥ लुब्ध: पिशुनचित्तश्च बहुभाषण तत्पर: । प्रथमे चलचित्तश्च योगे वैधृति जन्मत: टीका ॥ वैधृति योग में जन्म लेने वाला मनुष्य लोभी, चुगलखोर, बहुत बोलने वाला तथा प्रथमावस्था में चंचल चित्त वाला होता है ॥ २७॥ इति योग फलम् ॥

अथएकादशकरण फलम् ॥ तत्रादौ बव करण फलम् ॥ मदतीव्र उदाराढ्य: सुखवान्धन वर्जित: । बवाख्ये करणे जात: सेनापालो भवेन्नर: ॥ टीका ॥ 'बव' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त घमण्डी, उदार, सुखी, धनहीन तथा सेनापति होता है ॥ १॥ अथ बालव करण फलम् ॥ सुधीर: सुभगस्त्यागी बाललीलारत: सुखी । बालवे यदि जननं बालकर्म रत: सदा ॥ टीका ॥ 'बालव' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य धैर्यवान्, सुन्दर, त्यागी वृत्ति का, बालक्रीड़ाओं से प्रसन्न, सुखी तथा सदैव बालकों जैसे कर्म करने वाला होता है ॥ २॥ अथ कौलव करण फलम् ॥ प्रसूत: कौ-लवेयस्तु कौतुकानंद वर्द्धन: । पापकर्म रत: सौख्य: प्रच्छन्न: कौलवेयक: ॥ टीका ॥ 'कौलव' करण में जन्म लेने वाला मनुष्य कौतुकों द्वारा आनन्द की वृद्धि करने वाला, पापकर्म में रत, सुखी तथा प्रच्छ-न्नरूप से कौलवों के धर्म का पालन करने वाला होता है ॥ ३॥ अथ तैतिल करण फलम् ॥ साधक: सत्य सम्पन्न: स्थिरश्चण्ड प्रतापवान् । तामसो मलिनस्तुष्टो जातस्तैतिलके नर: ॥ टीका ॥ 'तैतिल' करण में जन्म लेने वाला मनुष्य साधक, सत्यसम्पन्न, स्थिर स्वभाव वाला, महाप्रतापी, तामसी वृत्ति का, मलिन तथा स्वयं में सन्तुष्ट बना रहने वाला होता है ॥ ४॥ अथ गर करण फलम् ॥ मन्त्रवि-

नीतिमान्दक्षो दुर्बलो बहुभाषण: । चपलो विग्रहरतो गराख्ये जायते नर:॥ टीका॥ 'गर' नामक करण में जन्म लेने वाला जातक मन्त्रज्ञ, नीतिमान्, चतुर, दुर्बल, अधिक बोलने वाला, चपल तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है॥ ५॥ अथ वणिज करण फलम्॥ वणिजाख्ये नरो जातो वणिग्वृत्ति सदा भवेत्। नाना पण्यविशेषज्ञो वणिक्कर्माभिजीवक:॥ टीका॥ 'वणिज' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य सदैव वैश्य-वृत्ति का आचरण करने वाला, अनेक प्रकार के पण्य-व्यवहारों का ज्ञाता एवं वणिक् वृत्ति से ही जीविकोपार्जन करने वाला होता है॥ ६॥ अथ भद्रा करण फलम्॥ क्रूर: साहसिकश्चण्ड: पापकर्मरतश्चल: प्रभूत: सर्वकार्येषु विष्ट्याख्ये च प्रजन्मत:॥ टीका॥ 'भद्रा' अर्थात् 'विष्टि' करण में जन्म लेने वाला मनुष्य क्रूर, साहसी, प्रचण्ड, पापकर्म करने वाला, चंचल स्वभाव का तथा सब कामों का जानकार होता है॥ ७॥ अथ शकुनि करण फलम्॥ सद्योद्योगकर: शान्त: सदाभ्रामी महामति:। शकुन्याख्ये जात नर: शकुनज्ञो विशेषत:॥ टीका॥ 'शकुनि' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य निरन्तर उद्योग करने वाला, शान्त स्वभाव वाला, सदैव भ्रमण करने वाला, परम बुद्धिमान् तथा शकुन-विद्या का विशेष जानकार होता है॥ ८॥ अथ चतुष्पद करण फलम्॥ कृषिवाणिज्यकारी च सोद्योगी विगतक्लम:। निरालस: सत्वयुतो जातश्चैव चतुष्पदे॥ टीका॥ 'चतुष्पद' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य कृषि एवं व्यवसाय कर्म करने वाला, उद्योगी, आलस्यहीन, खेद-रहित तथा पराक्रमी होता है॥ ९॥ अथ नागकरण फलम्॥ धन धातु विशेषज्ञ: स्वकर्म गुणवान्भवेत्। नागाख्ये करणे जातो नागानां पालको भवेत्॥ टीका॥ 'नाग' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य धन तथा धातुओं का विशेषज्ञ, अपने कर्मों से ही गुणवान् बनने वाला तथा नागों (हाथियों) को पालने वाला होता है॥ १०॥ अथ किंस्तुघ्न करण फलम्॥ किंचिद्धर्मरतो नित्यं किंचित्पापरतो भवेत्। किंचिद्रोगार्दितो देहे किंस्तुघ्ने जायते नर:॥ टीका॥

'किंस्तुघ्न' नामक करण में जन्म लेने वाला मनुष्य कुछ धर्म और कुछ पाप कर्म करने वाला तथा किंचित् रोग के कारण शरीर-पीड़ा पाने वाला होता है।। इति करण फलम्।।

अथ गण फलम्।। तत्रादौ गण ज्ञानम्।। अश्विनी मृगरेवत्यो हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः। अनुराधा श्रुतिः स्वातिः कथ्यते देवता गणः।। १।। तिस्रः पूर्वाश्चोत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी। भरणी च मनुष्याख्यो गणश्च कथितो बुधैः।।२।। कृत्तिका च मघा ऽऽश्लेषा विशाखा शततारकाः। चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः।। ३।। टीका।। अश्विनी, मृगशिरा, रेवती, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण और स्वाती- ये ९ नक्षत्र 'देवता गण' के हैं। तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, आर्द्रा, रोहिणी और भरणी - ये नौ नक्षत्र 'मनुष्यगण' के हैं। कृत्तिका, मघा, आश्लेषा, विशाखा, शतभिषा, चित्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा और मूल - ये नौ नक्षत्र 'राक्षस गण' के हैं। अथ देवगण फलम्।। गुरु देव द्विजातीनां भक्तः शास्त्र विमर्शकः। देवता सदृशो मूर्त्तौ जातो देवगणे नरः।। टीका।। 'देवता गण' में जन्म लेने वाला मनुष्य गुरु, देवता तथा ब्राह्मणों का भक्त, शास्त्र-चिन्तन करने वाला तथा देवता जैसा स्वरूपवान् होता है।। अथ मनुष्यगण फलम्।। अन्नदाता धनाढ्यश्च प्रजावान्देवपूजकः। मनुष्यर्क्षे नरो जातो वर स्त्री सुख भोगकः।। टीका।। 'मनुष्य गण' में जन्म लेने वाला मनुष्य अन्न का दान करने वाला, धनी, सन्ततिवान्, देव-पूजक तथा श्रेष्ठ स्त्री का सुख भोगने वाला होता है।। अथ राक्षस गण फलम्।। तामसः पापकृत्क्रोधी गर्विष्ठः कलहप्रियः। निष्ठुरश्छिन्न पापश्च गणेस्याद्राक्षसे नरः।। टीका।। 'राक्षस गण' में जन्म लेने वाला मनुष्य तामसी-स्वभाव वाला, पापी, क्रोधी, घमण्डी, कलह-प्रिय, निष्ठुर तथा गुप्त-पापी होता है।। इति गण फलम्।।

अथ योनि फलम्।। तत्रादौ योनि ज्ञानम्।। अश्विनी वारुणश्चाश्वो रेवती भरणी गजः। पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः।। आर्द्रा मूलमपि श्वा च मूषको भगभं मघा। मार्जारोऽ

दितिश्लेषाऽहिर्बुध्न्यार्यम्णे च गौः स्मृता ॥ महिषौ स्वाति हस्तौ च मृगो ज्येष्ठाऽनुराधिका । व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च जलं धोतश्च मर्कटौ ॥ सिंहो व स्वजपाद्भ्च वैश्वं च नकुलोऽभिजित् । योनयः कथिता भानां तत्र वैरं मिथस्त्यजेत् ॥ टीका ॥ अश्विनी और शतभिषा नक्षत्र की 'अश्व' योनि है। रेवती और भरणी नक्षत्र की 'गज' योनि है। पुष्य और कृत्तिका नक्षत्र की 'छाग' योनि है। रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र की 'सर्प' योनि है। आर्द्रा और मूल नक्षत्र की श्वान' योनि है। मघा और पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र की 'मूषक' योनि है। पुनर्वसु और आश्लेषा नक्षत्र की 'मार्जार' योनि है। उत्तरा भाद्रपदा और उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र की 'गौ' योनि है। स्वाती और हस्त नक्षत्र की 'महिष' योनि है। ज्येष्ठा और अनुराधा नक्षत्र की 'मृग' योनि है। चित्रा और विशाखा नक्षत्र की 'व्याघ्र' योनि है। पूर्वाषाढ़ा और श्रवण नक्षत्र की वानर' योनि है। धनिष्ठा और पूर्वा भाद्रपदा नक्षत्र की 'सिंह' योनि है। उत्तराषाढ़ा एवं अभिजित् नक्षत्र की 'नकुल' योनि है। इनमें परस्पर शत्रुता वाली योनियों को सम्बन्ध स्थापित करते समय त्याग देना चाहिए ॥ अथ अश्व योनि फलम् ॥ चपलश्चंचलदृशः शीघ्रगामी रणप्रियः । अश्व योनौ तु संजातो बलवान्स्वामि वल्लभः ॥ टीका ॥ 'अश्व' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य चपल, चंचल दृष्टि वाला, शीघ्रगामी, युद्धप्रिय, बलवान् तथा अपने स्वामी का प्यारा होता है ॥ १ ॥ अथ गज योनि फलम् ॥ मंदगामी बलाढ्यश्च बव्हाशी राजवल्लभः । सत्यवाग्ज्ञानवांश्चैव गज योनौ भवेन्नरः ॥ टीका ॥ 'गज' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य मन्दगामी, बलवान्, बहुत भोजन करने वाला, राजा को प्रिय, सत्यवादी तथा ज्ञानवान् होता है ॥ २ ॥ अथ छाग योनि फलम् ॥ दुर्घटं दुर्लभं स्थानं भेद यत्य विशंकितः । अजायोनि समुजातो सौ बहु बुद्धिप्रदो भवेत् ॥ टीका ॥ 'छाग' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य दुर्घट, दुर्लभ, कठिन स्थानों को भेदने वाला, मन में शङ्का न करने वाला तथा बहुत बुद्धि वाला होता है ॥ ३ ॥ अथ सर्प योनि फलम् ॥ दशनै भीतिदं

नित्यं घराटोपेन वर्तनम् । परवेश्मापहारी च सर्प योनौ प्रजायते ।। टीका ।। 'सर्प' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य अपने दर्शन से दूसरों के हृदय में भय उत्पन्न करने वाला, प्रपंची तथा पराये घर का हरण करने वाला होता है ।।४।। अथ श्वान योनि फलम् ।। सर्वभक्षी वृथावादी दूतः स्वामि हिते रतः । अरण्ये दुःसहो वीरः श्वान योनौ भवेन्नर ।। टीका ।। 'श्वान' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वभक्षी, बकवादी, दूत कर्म करने वाला, अपने स्वामी के हित-साधन में तत्पर, वन में कष्ट न पाने वाला तथा शूर-वीर होता है ।। ५ ।। अथ मार्जार योनि फलम् ।। पिंगाक्षी सर्वभक्षी च चपलो द्वेष कारकः । मार्जार योनि संजातो वृथा कोपी भयान्वितः ।। टीका ।। 'मार्जार' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य पिंगलवर्ण नेत्रों वाला, सर्वभक्षी, चपल, द्वेषकर्त्ता, व्यर्थ ही क्रोध करने वाला तथा डरपोक-स्वभाव का होता है ।। ६ ।। अथ मूषक योनि फलम् ।। धूर्त्तः स्वकार्य निरतः परकार्य विनाशकः । शत्रूणां मूलविच्छेत्ता नरो मूषक योनिजः ।। टीका ।। 'मूषक' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य धूर्त्त, अपने काम में लगा रहने वाला, दूसरों के काम को बिगाड़ने वाला तथा शत्रुओं का मूलोच्छेदन कर देने वाला होता है ।। ७ ।। अथ गौ योनि फलम् ।। गोधनैर्बहुभिर्युक्तः क्षीराहारो ति सुन्दरः । परोपकार कर्त्ता च गवा योनौ भवेन्नरः ।। टीका ।। 'गौ' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य बहुत सी गायों वाला, दूध-दही का भोजन करने वाला, अत्यन्त सुन्दर तथा परोपकार करने वाला होता है ।। ८ ।। अथ महिष योनि फलम् ।। मन्दगामी स्थूलतनुर्वव्हाशी बलवान्धनी । बहुक्षीराज्य भोजी च महिषी योनि संभवः ।। टीका ।। महिष योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य मन्दगामी, स्थूल शरीर वाला, बलवान्, धनी व अधिक दूध एवं घृत का आहार करने वाला होता है ।। ९ ।। अथ व्याघ्र योनि फलम् ।। कृतान्तः सर्वभक्षी च विद्यावान्कुशलो नरः । व्याघ्र योनौ भवेन्नित्यं दर्शनाद्भयदो महान् ।। टीका ।। 'व्याघ्र' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य हिंसक स्वभाव का, सर्वभक्षी, विद्यावान, कुशल तथा देखते ही दूसरों को महाभय

देने वाला होता है ॥१०॥ अथ मृग योनि फलम् ॥ गीतवाद्य प्रियो नित्यं सुन्दरश्चारुदर्शनः। धर्मात्मा रणभीरुश्च मृगयोनौ भवेन्नरः॥ टीका ॥ 'मृग' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य गीत-वाद्य प्रिय, सुन्दर, सुदर्शन, धर्मात्मा तथा युद्धभीरु होता है ॥११॥ अथ वानर योनि फलम् ॥ पिंगाक्षश्चपलोरण्यगामी फलभुजो भवेत्। न विश्वासं व्रजेत् कश्चित् कपि योनि समुद्भवः॥ टीका ॥ 'वानर' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य पिंगल वर्ण नेत्रों वाला, वनों में घूमने वाला, फल खाने वाला तथा किसी का भी विश्वास न करने वाला होता है॥१२॥ अथ नकुल योनि फलम् ॥ चारुदर्शन कार्यार्थी परकार्यार्थ स्यादरः। विलवासी चिरायुः स्यान्नरो नकुल योनिजः॥ टीका॥ 'नकुल' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य देखने में सुन्दर, अपने काम को करने का इच्छुक, पराये काम भी करने वाला, गहरे स्थान में रहने वाला तथा दीर्घायु होता है॥ १३॥ अथ सिंह योनिफलम्॥ महाबली च पिंगाक्षः कृशमध्यो भयानकः। सिंह योनि प्रजातस्तु सर्वभक्ष करो भवेत्॥ टीका॥ 'सिंह' योनि में जन्म लेने वाला मनुष्य महाबलवान्, पिंगलवर्ण के नेत्रों वाला, पतली कमर वाला, भयानक तथा सर्वभक्षी होता है॥ १४॥ इति योनि फलम्॥

अथ द्वादश लग्न फलम् ॥ तत्रादौ मेष लग्न फलम्॥ चण्डाभिमानी गुणवान् सकोपः सुहृद्विरोधी च सखा परेषाम्। पराक्रम प्राप्त यशो विशेषो मेषोदये यः पुरुषोऽति रोषः॥ टीका ॥ 'मेष' लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त अभिमानी, गुणवान्, क्रोधी, स्वजनों का विरोधी, परन्तु दूसरों से मित्रता करने वाला, पराक्रम द्वारा विशेष यश पाने वाला तथा अत्यन्त रोष युक्त होता है॥१॥ वृष लग्न फलम्॥ गुणाग्रणी स्याद् द्रविणेन पूर्णो भक्तो गुरूणां हि रणप्रियश्च। धीरश्च शूरः प्रियवाक् प्रशान्तः स्यात्पूरुषो यस्य वृषे विलग्ने॥ टीका॥ 'वृष' लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य गुणियों में अग्रगण्य, श्रेष्ठ धन से परिपूर्ण, गुरुजनों का भक्त, युद्ध-प्रिय, धैर्यवान, शूर, प्रियवादी तथा प्रशान्त हृदय वाला होता है॥२॥ मिथुन लग्न

मृ० सं० ८७

भा० टी०

फलम्॥ भोगी वदान्यो बहुपुत्रमित्रः सुगूढमन्त्रः सधनः सुशीलः। तस्य स्थितिः स्यान्नृप सन्निधाने लग्ने भवेद्वै मिथुनाभिधाने॥ टीका॥ मिथुन लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य भोगी, दाता, अनेक पुत्र एवं मित्रों वाला, धनी, सुशील एवं राजा से सम्पर्क रखने वाला होता है॥ ३॥ कर्क लग्न फलम्॥ मिष्टान्नभुक् साधुरतो विनीतो विलोमबुद्धिर्जलकेलिशीलः। प्रकृष्टसारोऽतितरामुदारो लग्ने कुलीरे हि नरो भवेच्च॥ टीका॥ कर्क लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य मिष्ठान्नभोजी, सज्जनों की सङ्गति करने वाला, विनम्र, चंचल बुद्धि, जलक्रीड़ा प्रेमी एवं तत्त्व को ग्रहण करने वाला होता है॥ ४॥ सिंह लग्न फलम्॥ कृशोदरश्चारु पराक्रमश्च भोगी भवेदल्पसुतोऽल्पभक्षः। सञ्जात बुद्धिर्मनुजोभिमाने पञ्चानने सञ्जनने विलग्ने॥ सिंह लग्न में जन्म लेनेवाला मनुष्य कृशोदर, सुन्दर, पराक्रमी, भोगी, अल्प पुत्रवान्, अल्पभोजी तथा अपनी बुद्धि पर घमण्ड करने वाला अर्थात अपनी तुलना में दूसरों को बुद्धिहीन समझने वाला होता है॥ ५॥ कन्या लग्न फलम्॥ कामक्रीडा सद्गुण ज्ञान सत्त्व कौशल्याद्यैः संयुतः सुप्रसन्नः। लग्नं कन्या यस्य जन्यां जघन्यां कन्यां क्षीराब्धेरवाप्नोति नित्यम्॥ टीका॥ कन्या लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य कामक्रीड़ा में कुशल, सद्गुणी, ज्ञानवान्, कार्य-कुशल, सदैव प्रसन्न रहने वाला तथा धनवान् होता है॥ ६॥ तुला लग्न फलम्॥ गुणाधिकत्वाद् द्रविणोपलब्धिर्वाणिज्य कर्मण्यपि नैपुणत्वम्। पद्मालया तन्निलये न लोला लग्नं तुला चेत्स कुलावतंसः॥ टीका॥ तुला लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यधिक गुणी तथा व्यवसाय-कुशल होने के कारण अत्यधिक धनोपार्जन करता है। उसके घर में स्थिर लक्ष्मी का निवास होता है और वह अपने कुल में श्रेष्ठ होता है॥ ७॥ वृश्चिक लग्न फलम्॥ शूरो नरोऽत्यन्तविचार सारोऽनवद्य विद्याधिकता समेतः। प्रसूति काले किल लग्नशाली भवेदलिस्तस्य कलिः सदैव॥ टीका॥ वृश्चिक लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य शूर-वीर, तत्त्वज्ञ, परन्तु अपने विचारों को कुमार्ग में प्रवृत्त करने वाला तथा सदैव झगड़े-टंटे

में निमग्न रहने वाला होता है ।। ८ ।। धनु लग्न फलम् ।। प्राज्ञश्च राज्ञः परिसेवनज्ञः सत्यप्रतिज्ञः सुतरां मनोज्ञः । सुज्ञः कलाज्ञश्च धनुर्विधिज्ञश्चेन्नुर्धनुर्यस्य जनुस्तनुः स्यात् ।। टीका ।। 'धनु' लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य विद्वान्, कानून का ज्ञाता, दृढ़प्रतिज्ञ, सुन्दर, कला-विशेषज्ञ एवं शस्त्र-विद्या में निपुण होता है ।। ९ ।। मकर लग्न फलम् ।। कठिन मूर्तिरितीव शठः पुमान्निजमनोगतकृद् बहुसन्ततिः । सुचतुरोऽपि च लुब्धतरो वरो यदि नरो मकरोदय सम्भवः ।। टीका ।। 'मकर' लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य कुरूप, अत्यन्त शठ, अपनी मनमानी करने वाला, बहुत सन्तानों वाला, अत्यन्त चतुर तथा लोभी होता है ।। १० ।। कुम्भ लग्न फलम् ।। लोलस्वान्तोऽत्यन्तसञ्जातकामश्चंचद्देहः स्नेहकृन्मित्रवर्गे । सस्यारम्भः सम्भवैर्युक् सदम्भश्चेत्स्यात्कुम्भे सम्भवो यस्य लग्ने ।। टीका ।। 'कुम्भ' लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य चञ्चल, कामी, सुन्दर, मित्रों से स्नेह रखने वाला, धान्यादि का उपार्जन करने वाला तथा घमण्डी होता है ।। ११ ।। मीन लग्न फलम् ।। दक्षोऽल्पभक्षोऽल्पमनोभवश्च सद्रत्नहेमा चपलोऽतिधूर्तः । स्यान्ना च नानारचनाविधाने मीनाभिधाने जनने विलग्ने ।। टीका ।। 'मीन' लग्न में जन्म लेने वाला मनुष्य कुशल, अल्पभोजी, काम-वासना में अधिक आसक्ति न रखने वाला, रत्न-स्वर्ण आदि से युक्त, चपल, अत्यन्त धूर्त तथा अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण करने में कुशल होता है ।। १२ ।। लग्नफल विचारम् ।। सर्वेदलं लग्नबलं यथोक्तं विलग्नकाले प्रबले प्रसूतौ । तस्मिन्बलोने यदि वा विलग्ने युक्तेक्षिते क्रूरखगैस्तथाल्पम् ।। टीका ।। यदि लग्न पूर्ण बली हो तो उसका पूर्वोक्त फल पूर्ण रूप से घटित होता है, अन्यथा अल्प फल होता है ।। इति लग्नफलम् ।।

अथ नवांश फलम् ।। तत्रादौ प्रथम नवांशफलम् ।। विनीतो धर्मशीलश्च सत्यवादी दृढव्रतः । विद्याव्यसनशीलश्च जायते प्रथमांशके ।। टीका ।। राशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य विनम्र, धर्मात्मा, सत्यवादी, दृढ़व्रती व विद्या व्यसनी होता है ।। १ ।। द्वितीय नवांश फलम् ।। उत्पन्न विभवो भोक्ता संग्रामेषु पराजितः । गन्धर्वप्रमदासक्तो जायेत द्वितियांशके ।। टीका ।। द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य प्राप्त ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला, संग्राम में

हारने वाला, संगीत-प्रिय एवं स्त्री-प्रेमी अथवा वेश्यागामी होता है ॥२॥ तृतीय नवांश-फलम् ॥ स्त्रीजितश्चानपत्यश्च मायायुक्तोऽल्पवीर्यवान् । वीरविद्याविचारज्ञो जायते तृतियांशके ॥ टीका ॥ तृतीयनवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री के वश में रहने वाला, सन्तान-हीन, मायावी, अल्पवीर्य तथा युद्धादि विद्याओं का जानकार होता है ॥३॥ चतुर्थ नवांश फलम् ॥ बहुस्त्री सुभगः पूज्यो जलसेवी धनान्वितः । नृपसेव्यथवाऽमात्यश्चतुर्थांशे प्रजायते ॥ टीका ॥ चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक स्त्रियों से सम्पर्क रखने वाला, पूज्य, जलक्रीड़ा-प्रेमी, धनी तथा राजा का सेवक अथवा मन्त्री होता है ॥४॥ पञ्चम नवांश फलम् ॥ बहुमित्रजनामात्यो बन्धुमित्रसुखान्वितः । महत्प्रतिष्ठामाप्नोति संजातः पञ्चमांशके ॥ टीका ॥ पञ्चम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य अनेक मित्रों वाला, जन-नेता, बन्धु-बान्धव-मित्रों के सुख से सम्पन्न तथा अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है ॥५॥ षष्ठ नवांश फलम् ॥ जितवैरिगणो वीरो दृढसौहृदकारकः । जायते मण्डलाधीशो नरः षष्ठांशकोद्भवः ॥ टीका ॥ षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य शत्रुजयी, वीर, दृढ़ मित्रता का निर्वाह करने वाला तथा मण्डलाधीश अर्थात् राजा, सेनापति अथवा उच्चाधिकारी होता है ॥६॥ सप्तम नवांश फलम् ॥ अव्याहताज्ञः सर्वत्र पृथ्वीनाथः कलायुतः । सेनापतित्वमाप्नोति संजातः सप्तमांशके ॥ टीका ॥ सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य सर्वत्र अपने आदेश का पालन कराने वाला, पृथ्वीपति (राजा), कला-कुशल तथा सेनापति पद प्राप्त करने वाला होता है ॥७॥ अष्टम नवांश फलम् ॥ उदारधीः क्षितिख्यातो धनधान्यव्ययोदितः । कोपी दुर्जनतप्ताङ्गो नरो जातोऽष्टमांशके ॥ टीका ॥ अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य उदार-बुद्धि वाला, पृथ्वी पर विख्यात, धन-धान्य को खर्च करने में संकोच न करने वाला, क्रोधी तथा दुर्जनों के द्वारा सदैव कष्ट पाने वाला होता है ॥८॥ नवम नवांश फलम् ॥ दीर्घजीवी प्रसन्नात्मा विद्याभ्यासी सदा सुखी । ज्ञाता धर्मी जनैर्मान्यो जायते नवमांशके ॥ टीका ॥ नवम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य दीर्घजीवी, प्रसन्न बना रहने वाला, विद्याभ्यासी, सदैव सुखी, ज्ञानी, धर्मात्मा तथा लोकमान्य होता है ॥९॥ इति नवांश फलम् ॥

अथ गण्डान्त फलम्॥ पौष्णादि गण्डान्त भवो हि मर्त्यः क्रमेण पित्रोरशुभोऽग्रजस्य। जातस्य सत्यं त्रिविधे प्रजातः सर्वाभिघातं कुरुते वदन्ति॥ टीका॥ नक्षत्र, तिथि तथा लग्न गण्डान्त में जन्म लेने वाला मनुष्य क्रमशः पिता, माता तथा भाई का घातक होता है। यदि जन्म के समय तीनों प्रकार के गण्डान्त हों तो जातक अपने सम्पूर्ण कुल का नाश करने वाला होता है॥ इति गण्डान्त फलम्॥

अथ पिता भ्रातृ जन्म नक्षत्रे जन्म फलम्॥ पितुर्भ्रातुश्च नक्षत्रे प्रसूतिर्यदि जायते। तातं वा भ्रातरं ज्येष्ठं रिष्टं स कुरुते जनः॥ मूलवत् शान्तिकं तत्र विधेयं च विचक्षणैः। क्षमिरत्नहिरण्यान्नं देयं विप्राय यत्नतः॥ टीका॥ यदि किसी मनुष्य का जन्म अपने पिता अथवा भाई के जन्म-नक्षत्र में ही हुआ हो तो वह अपने पिता अथवा बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होता है। ऐसी स्थिति में 'मूल शान्ति' समान ही शान्ति-कर्म कराना चाहिए तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति भूमि, रत्न, स्वर्ण एवं अन्न का दान देना चाहिए॥ इति पिता भ्रातृ जन्म नक्षत्रे जन्म फलम्॥

अथ अभुक्तमूल जन्म फलम्॥ ज्येष्ठान्त्यघटिकैका च मूलस्याद्य घटीद्वयम्। अभुक्तमूलमित्युक्तं तत्रोत्पन्न शिशोर्मुखम्॥ अष्टवर्षाणि नालोक्यं तातेन शुभमिच्छता। तद्दोष परिहारार्थं शान्तिकं प्रोच्यतेऽधुना॥ टीका॥ ज्येष्ठा नक्षत्र के अन्त की एक घटी एवं मूल नक्षत्र के प्रारम्भ के दो घटी को 'अभुक्तमूल' कहा जाता है। अभुक्तमूल की अवधि में जन्म लेने वाले शिशु का मुँह ८ वर्ष की आयु तक देखना उसके पिता के लिए अशुभ होता है। अतः दोष निवारणार्थ शान्ति-विधान करना चाहिए, जो इस प्रकार है॥ रत्नैः शतौषधी मूलैः सप्तमृद्भिः प्रपूरयेत्। शतच्छिद्रं घटं तस्मान्निःसृतेन जलेन हि॥ बालस्यापितृस्नोत विप्रैः सम्पादिते सति। जपहोम प्रदाने च कृते स्यान्मङ्गलं ध्रुवम्॥ विरुद्धावयवे मूले विधिरेवं स्मृतो बुधैः। मुनीनां वचनं सत्यं मन्तव्यं क्षेममीप्सुभिः॥ टीका॥ अभुक्त मूल में जन्म लेने वाले बालक के माता-पिता नव रत्न, शतौषधी की जड़ तथा सप्त मृत्तिका को सौ छिद्रों वाले पानी से भरे हुए घड़े में डाल कर, ब्राह्मणों के द्वारा, उस घड़े के छिद्रों से निकलते हुए जल से स्नान करके जप, होम

दानादि कृत्य करें। उस विधि से अवश्यमेव कल्याण होगा। कल्याण की कामना करने वाले माता-पिता को मुनि के इन वचनों का पालन अवश्य करना चाहिए॥ इति अभुक्त मूल जन्म फलेन सहितं दोषनिवारण कथनं समाप्तम्॥

अथ मूल चरण फलम्॥ मूलस्य पाद त्रितये क्रमेण पितुर्जनन्याश्च धनस्यरिष्टम्। चतुर्थ पादः शुभदो नितान्तं सार्पे विलोमं परिकल्पनीयम्॥ टीका॥ यदि मूल नक्षत्र के पहले तीन चरणों में जन्म हुआ हो तो जातक के क्रमशः पिता, माता एवं धन की हानि होती है। मूल नक्षत्र का चतुर्थ चरण शुभ कहा गया है। परन्तु आश्लेषा नक्षत्र में जन्म का ठीक इसके विपरीत फल होता है अर्थात् आश्लेषा नक्षत्र का प्रथम चरण शुभ होता है तथा द्वितीय चरण में जन्म लेने से जातक के धन का, तृतीय चरण में जन्म लेने से माता का तथा चतुर्थ चरण में जन्म लेने से पिता का नाश होता है (इस दोष के निवारणार्थ 'मूल-शान्ति' करानी चाहिए)॥ इति मूल-चरण फलम्॥

अथ मूल वेला फलम्॥ कृष्णे तृतीया दशमी वलक्षे भूतो महीजार्किबुधैः समेतः। चेज्जन्मकाले किल यस्य मूलमुन्मूलनं तत्कुरुते कुलस्य॥ दिवा सायं निशि प्रातस्तातस्य मातुलस्य च। पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूल मनिष्टदम्॥ टीका॥ यदि बालक के जन्म समय कृष्ण पक्ष की तृतीया अथवा दशमी अथवा शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तथा मंगल, शनि अथवा बुधवार से संयुक्त मूल नक्षत्र हो तो जातक कुल-नाशक होता है। यदि उसका जन्म दिन में हुआ हो तो वह पिता के कुल का, यदि सन्ध्याकाल में हुआ तो माता के कुल का, यदि रात्रि के समय हुआ हो तो पशुओं का और यदि प्रातः काल में हुआ हो तो मित्र-वर्ग का अनिष्ट करता है॥ इति मूल वेला फलम्॥

अथ होराफलम्॥ होरायां रूप सौहार्द्दं पश्येज्जन्मनि सर्वदा। बहवोधनगाः श्रेष्ठास्तथानेष्टा व्ययेग्रहाः॥ टीका॥ होराचक्र के आधार पर जातक की जन्म-होरा के रूप एवं सौहार्द्द का विचार करना चाहिए। यदि जातक का जन्म चन्द्रमा की होरा में हुआ हो तथा बहुत से ग्रह दूसरे स्थान में स्थित हों तो वह अत्यन्त सुन्दर, महाधनी तथा श्रेष्ठ होता है। यदि सूर्य की होरा में जन्म हुआ हो तथा बहुत से ग्रह अन्य स्थानों में स्थित हों तो जातक

मध्यम रूप, धन एवं मित्रों वाला होता है ॥ १॥ अथ मेष लग्न होरा फलम् ॥ रक्तोत्कटदृक् शूरो धनवान् शुकनासिको ग्रिदाररत:। पीनोन्नत: प्रचण्ड: तस्करनाथ: क्रियादि होरायां ॥ चौर: प्रमाद बहुल: खरोग्रपादांगुलिर्द्वितीयायां। स्निग्धायताक्षश्चतुर: पृथुपीनतनु: सुमेधा च ॥ टीका ॥ मेष लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला जातक लालनेत्रों वाला, तीक्ष्ण दृष्टि वाला, शूर-वीर, धनवान् तथा तोते जैसी नाक वाला, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, पुष्ट तथा ऊँचे शरीरवाला एवं चोरों का नायक होता है। मेष लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला चोर, प्रमादी, कठोर पाँवों वाला, कठोर अंगुलियों वाला, स्निग्ध एवं विशाल नेत्रों वाला, चतुर, पुष्ट शरीर वाला तथा श्रेष्ठ बुद्धि वाला होता है ॥२॥ अथ वृष लग्न होरा फलम् ॥ सौम्योविशाल चक्षुर्ललाट वक्षाश्चयानरति वश्य:। स्थूलाक्षितनु वृषभे प्रथमार्धेस्यात्प्रकोपनवपुष्मान् ॥ पृथ्वायतपीनतनुं ह्युदार सत्वं सुमूर्धजं जनयेत्। व्यस्त कटिं वृषभास्ये वृषस्य होरा द्वितीया च ॥ टीका ॥ वृष लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला सौम्य स्वभाव का, विशाल नेत्र, ललाट एवं वक्ष:स्थल वाला, वाहनों में प्रीति रखने वाला, वश्य, स्थूल शरीर वाला तथा अत्यधिक क्रोधी होता है। वृष लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला भारी तथा पुष्ट शरीर वाला, बड़ा पराक्रमी, सुन्दर केशों वाला, टेढ़ी कमर तथा बैल के समान मुख वाला होता है ॥३॥ अथ मिथुन लग्न होरा फलम् ॥ मध्यायताक्ष मध्यम तनुमूर्तिर्दृढशिरोंघ्रिश्च। मिथुनाद्ये शूरोना वाग्मीमति मान्सुरति शील: ॥ स्वक्ष: कामी शूरो मृदुवल्गु कथोमनस्वी च। चार्वोष्ठि दंत देहो भवेन्नृमिथुने द्वितीय होरायां ॥ टीका ॥ मिथुन लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मध्यम रूप वाला, विशाल नेत्रों वाला, छोटे क़द वाला, दृढ शिर एवं पाँवों वाला, शूर-वीर, सुवक्ता, बुद्धिमान् तथा काम-चेष्टा वाला होता है। मिथुन लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला सुन्दर नेत्रों वाला, कामी, शूर-वीर, सुन्दर वार्तालाप करने वाला, मनस्वी एवं सुन्दर होठ तथा दाँतों वाला होता है ॥ ४॥ अथ कर्क लग्न होरा फलम् ॥ उदवृत्तमूर्त्ति: सुशिर: प्रगल्भ मंदस्वरश्चलोति शठ:। श्यामतनुश्च कृतघ्नो भग्नाग्ररद:

कुलीर पूर्वार्द्धे ॥ द्यूतरतो ध्वनिनिरत: पृथुवक्त्र: प्रमाण संपन्न: । कठिन शरीर: क्रोधी जातनरो द्वितीय होरायां ॥
टीका ॥ कर्क लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य वर्तुलाकार शरीर वाला, श्रेष्ठ शिर वाला, प्रगल्भ,
मन्द स्वर वाला, चंचल, शठ, सुन्दर देह वाला, कृतघ्न तथा आगे के दाँत (जिसके टूट गए हों, ऐसा होता है।
कर्क लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला जुआरी, मार्ग में चलने वाला, मोटे मुख वाला, सम-शरीर वाला
कठोर देही तथा क्रोधी स्वभाव का होता है॥ ५॥ अथ सिंह लग्न होरा फलम् ॥ रक्तांतदृक् प्रगल्भो गुरुरायत दृष्टि देह
इनमाद्ये। जिह्म स्वभाव: सुखभागंते स्थिर सत्व कर्मांच ॥ स्त्रीमिष्टपान भोजन वस्त्रेप्सुर्बहुविचेष्ट कठिनाङ्ग: । दाता
ध्वरतो भोगी स्थिर सुहृदश्चैव चांत्येर्द्धे ॥ टीका॥ सिंह लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य रक्त
वर्ण कोनों से युक्त विशाल नेत्रों वाला, प्रगल्भ, बड़े शरीर वाला, कपटी-स्वभाव का, अन्तिम अवस्था में
सुखोपभोग प्राप्त करने वाला, स्थिर पराक्रम वाला तथा स्थिर कर्मों वाला होता है। सिंह लग्न की द्वितीय होरा में
जन्म लेने वाला स्त्रियों में रत, मिष्ठान्न-प्रेमी तथा मिष्ठान्न-भोजी, श्रेष्ठ वस्त्रों की इच्छा करने वाला, अनेक प्रकार
की चेष्टाओं वाला, कठोर अङ्गों वाला, दानी, मार्ग चलने में रत अर्थात् यात्राएँ करने वाला, भोगी तथा स्थिर मैत्री
वाला होता है॥ ६॥ अथ कन्यालग्न होरा फलम् ॥ सुकुमार मूर्ति कान्ति: सुवाक् सुगीताङ्गनारतिर्मधुदृक् । गांधर्वविद्विनीत:
सुभग: पूर्वार्द्धज: षष्ठे ॥ कन्यांत्येर्द्धे ह्रस्व: सेवा गांधर्व लेख्य लिपि विज्ञ: । स्थूल शिर: सविवाद: पापर्द्धि सुखभाक् सुती-
र्थश्च ॥ टीका ॥ कन्या लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यन्त कोमल शरीर वाला, कान्तिमान्,
सुन्दर वाणी बोलने वाला, श्रेष्ठ संगीत की ज्ञाता स्त्रियों के सम्पर्क में रहने वाला, मीठी चितवन वाली आँखों वाला,
गन्धर्वों के समान संगीतज्ञ, विनम्र एवं सुन्दर स्वरूप वाला होता है। कन्या लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने
वाला मनुष्य छोटे शरीर वाला, सेवाभावी, सङ्गीत-प्रवीण, लिपि शास्त्र का ज्ञाता, स्थूल शिर वाला, विवाद
युक्त, पाप-कर्म द्वारा धनोपार्जन कर सुख भोगने वाला तथा श्रेष्ठ तीर्थों की यात्रा करने वाला होता है॥ ७॥

अथ तुला लग्न होरा फलम् ॥ वृत्ताननउच्चनसः पटुर्विलासी धनीसुधीर्मंत्री । पीनायतोऽस्थिसारोधनवान्प्रियसंयुतस्तुलाद्यर्धे ॥ बहुधनभाक् स्थिरार्थः श्यामः कुंचितशिरोरुहश्चशठः । वृत्ताक्षस्त्वपरार्धेस्वसत्वभिन्नाग्रपादश्च ॥ टीका ॥ तुला लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य गोल मुख तथा ऊँची नासिका वाला, चतुर विलासी, धनी, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, मन्त्री, पुष्ट एवं विशाल शरीरवाला, अस्थिसार युक्त तथा धनी एवं श्रेष्ठ सच्चे मित्रों वाला होता है॥ तुला लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य बहुत धनी, स्थिर धनी, सुन्दर शरीर वाला, कुंचित केशों वाला, शठ, गोल नेत्रों वाला तथा स्वपराक्रम द्वारा जिसके पाँव छिन्न होगए हों अर्थात् अत्यधिक यात्रा करने वाला होता है ॥ ८॥ अथ वृश्चिक लग्न होरा फलम् ॥ रक्तांत पिंगदृष्टिः साहसवपुरपिरणेशूरः । दुष्टस्वभावानामा प्रियार्धभाग्वृश्चिकाद्यर्धे ॥ विस्तीर्णोपचितायत पीनाङ्ः क्ष्माधिपोपसेवीस्यात् । बहुऋणमित्रसमेतः स्फुटिताक्षोवृ-श्चिकापरार्धेच ॥ टीका ॥ वृश्चिक लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य लाल कोने वाले पिङ्गल वर्ण के नेत्रों वाला, उत्साही, युद्ध में शूर-वीर, दुष्ट स्वभाव वाला तथा मित्रों के धन को लेने वाला होता है। वृश्चिक लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य विशाल और पुष्ट शरीर वाला, राजा की सेवा करने वाला, अधिक ऋणवाला मित्रों से युक्त तथा बड़े नेत्रों वाला होता है ॥ ९ ॥ अथ धनु लग्न होरा फलम् ॥ दारित पृष्टमुखवक्षाः करिकुंचित नेत्रः पीत गंडः स्यात् । बाल्येत्यक्तात्म गुरुश्चापाद्यर्धेतपस्वी च ॥ पद्मायताक्षो गुरुदीर्घवाहुः शास्त्रार्थवित् सुनीतः स्यात् । वाक् सुभगो धर्मपरस्त्वपरे निभृतो यशस्वी च ॥ टीका ॥ धनु लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य दलित पृष्ठ, मुख तथा वक्षःस्थल वाला, हाथी की भाँति निमीलित नेत्रों वाला, पुष्ट कपोलों वाला तथा बाल्यावस्था में ही घर के गुरुजनों को त्याग कर तपस्वी बन जाने वाला होता है। धनु लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य कमल-दल जैसे विशाल नेत्रों वाला, बड़ी लम्बी भुजाओं वाला, शास्त्रज्ञ, सुनीतिवान्, श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, सुन्दर, धर्मात्मा तथा विशेष रूप से पूर्ण यशस्वी होता है ॥ १० ॥ अथ मकर लग्न होराफलम्

श्याम मृगाक्षो धन्य: स्त्रीष्वजित: सौम्यमूर्ति शठ: । आद्ये मूढाटन: सु रोषो: मृगाद्य भागे तनूच्चस: ॥ रक्तांत दृष्टिरलसस्तनु दीर्घांगो भवति मूर्ख: । श्यामो रोम चितांग: साहसिको रौद्र कर्मा च ॥ टीका॥ मकर लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर, काली, हरिण जैसी आँखों वाला, धन्यभाग, स्त्रियों द्वारा अविजित, सौम्य मूर्ति, प्रथमावस्था में शठ और मूढ़, अत्यधिक भ्रमण करने वाला, अत्यन्त क्रोधी तथा ऊँची नाक वाला होता है। मकर लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य लालवर्ण के कोनों से युक्त नेत्रों वाला, आलसी, पतले शरीर तथा लम्बे अङ्गों वाला, मूर्ख, नवीन अवस्था वाला अर्थात् अपनी वास्तविक आयु से छोटा दिखाई देने वाला, अङ्गों में अधिक रोमों वाला तथा जानबूझ कर क्रूर-कर्म करने वाला होता है ॥ ११॥ अथ कुम्भ लग्न होरा फलम् ॥ स्थिर मित्र लाभ सक्तो मृदु सत्वोल्प सुत: सद्‌गुण: शूर: । ताम्र प्रभा सुवर्ण: पापरतस्ताम्र दृग्घटाद्यर्धे॥ असित कृश वक्रांगतनु: शठोलसो नैष्कृती विषादी च । घट पर दले दुरंतो दारित ताम्रे क्षण: पुरुष: ॥ टीका ॥ कुम्भ लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य स्थिर-मैत्री युक्त, लाभ पाने वाला, कोमल, पराक्रमी, थोड़े पुत्रों वाला, श्रेष्ठगुणों वाला, शूर-वीर, ताँबे जैसे लाल वर्ण तथा लाल आँखों वाला एवं पाप-कर्म में रत रहने वाला होता है। कुम्भ लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य कृष्णवर्ण तथा कृश-शरीर वाला, टेढ़े अङ्गों वाला, शठ, आलसी, किसी की बात न मानने वाला, विषादी, जिसके रहस्य को न जाना सके तथा ताँबे जैसे लाल नेत्रों वाला होता है ॥ १२॥ अथ मीन लग्न होरा फलम् ॥ ह्रस्व: पृथुचारुतनुर्महाललाटश्च पृथु वक्ष: । स्त्री दयितो मीने र्धे प्रथम सुयश: क्रियापटु: शूर: ॥ श्रेष्ठ: स्थिर: सुमेधामृतो दारांगनानृपति दयित: । शुभवा गुन्नत घोणो झषपरार्धे सुमूर्त्ति: स्यात् ॥ टीका ॥ मीन लग्न की प्रथम होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य छोटे क़द वाला, बड़े और सुन्दर नेत्रों वाला, सुन्दर शरीर वाला, बड़े मस्तक तथा बड़ी छाती वाला, स्त्रियों का प्रिय, श्रेष्ठ यश वाला, क्रिया-कुशल तथा शूर-वीर होता है। मीन लग्न की द्वितीय होरा में जन्म लेने वाला मनुष्य श्रेष्ठ एवं

स्थिर स्वभाव वाला, उत्तम बुद्धिमान्, उदार स्त्री वाला, राजा का प्रिय, सुन्दर वाणी बोलने वाला, ऊँची नासिका वाला, एवं सुदर्शन होता है ॥१३॥ इति लग्न होरा फलम् ॥

अथ द्रेष्काण फलम् ॥ द्रेष्काणे केन्द्रुगः कुर्यादुच्चस्थो भूपतिं ग्रहः। स्वक्षेत्रगश्चमूनाथं मित्रगश्चापि वाग्मिनम् ॥ टीका ॥ द्रेष्काण चक्र में उच्च ग्रह की स्थिति होने पर जातक राजा होता है। स्वक्षेत्री ग्रह हो तो सेनापति होता है। मित्रक्षेत्री ग्रह हो तो श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला - सुवक्ता होता है ॥ प्रत्येक राशि के पूर्व, मध्य तथा अन्तिम - ये तीन-तीन द्रेष्काण होते हैं। अब प्रत्येक राशि के विभिन्न द्रेष्काणों में जन्म लेने के फल का अलग-अलग वर्णन करते हैं ॥ अथ मेष द्रेष्काण फलम् ॥ दाता हंता दीर्घः क्षयोदपी संगर प्रचंडः स्यात्। प्रिय विग्रह स्त्रिभागे मेषाद्ये बंधुषूग्र दंडश्च ॥१॥ स्त्री-चपलः शास्त्ररतः स्त्रीमित्रार्थ भाक् सुवाक् सुतनुः। प्रियगीतश्च मनस्वी मेषस्यांशे द्वितीये स्यात् ॥२॥ गुणवान्परदोषकरो बल सत्व युतो नरेन्द्रु सेवी स्यात्। स्वजन प्रिय धर्ममति स्तृतीय भागे। प्रियादरामिज्ञः ॥३॥ टीका ॥ मेष के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य दानी, हिंसक, दीर्घ शरीर वाला, क्षयोदपी, युद्धक्षेत्र में प्रचण्ड पराक्रम दिखाने वाला, मित्र-विरोधी तथा बन्धु-बान्धवों को उग्र दण्ड देने वाला होता है ॥१॥ मेष के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्रियों में चपल, शास्त्र-निरत, स्त्री और मित्रों के धन का उपभोग करने वाला, सुन्दर वाणी बोलने वाला, सुन्दर शरीर एवं रूप वाला, सङ्गीत-प्रिय तथा मनस्वी होता है ॥२॥ मेष के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य गुणवान्, दूसरों के दोष निकालने वाला, बल एवं पराक्रम से युक्त, राजा का सेवक, स्वजनों का प्रिय, धर्म में बुद्धि रखने वाला तथा प्रियजनों का आदर करनेवाला होता है ॥३॥ इति मेष द्रेष्काण फलम् ॥

अथ वृष द्रेष्काण फलम् ॥ प्रियमान भोज्य नारी वियोग तप्तो वृषस्य पूर्वेण। वस्त्रालङ्कार युतो युवति प्रकृतानुसारी स्यात् ॥१॥ सौम्य वपुः स्त्रीसुभगो महाधनो रूप भोग बल युक्तः। स्नान विभूषणनिरतः

स्थिरो मनस्वी द्वितीये स्यात् ॥२॥ चतुरश्चरस्थिरस्तनुर्मान्यो गौरो मलीनसो भीरुः । विगतधनकुचरित्रैः प्रतप्यते च वृषस्यांते ॥३॥ टीका ॥ वृष के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य अच्छे मित्रों वाला, श्रेष्ठ भोजन करने वाला, स्त्री-वियोग के कारण संतप्त रहने वाला, वस्त्रालङ्कार युक्त तथा स्त्री की इच्छानुसार चलने वाला होता है ॥१॥ वृष के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य सौम्य-शरीर वाला, स्त्री-सौभाग्यवान्, महाधनी, रूपवान्, भोगी, बलवान्, स्नान एवं आभूषणों का प्रेमी, स्थिर तथा मनस्वी होता है ॥२॥ वृष के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य चतुर, चर (यात्रा करने वाला) स्थिर (एक ही स्थान पर रहने वाला) लोकमान्य, गौर वर्ण, मलिन, डरपोक, धन-हीन एवं खोटे चरित्र के कारण संताप पाने वाला होता है ॥३॥ इति वृष द्रेष्काण फलम् ॥

अथ मिथुन द्रेष्काण फलम् ॥ मिथुनादिके त्रिभागे प्रवृत्तमांगोधनान्वितः प्रांशुः । कितवो गुणी विलासीन्नृपा-पामानो वचस्वी स्यात् ॥ १॥ मृदु सौम्यस्वरूपो वपुर्ह्रस्व मुखः सूक्ष्ममूर्धजोनास्यत् । धन्यो मृदुर्महारि द्वितीय भागे प्रतापवान्सुयशः ॥२॥ स्निग्धेक्षणो वपुष्मान्महाशिरः शत्रुयुतः । प्रांशुः रूक्षनखः करपादश्चलार्थविभ्रतोटनस्तृतीये स्यात् ॥ ३॥ टीका ॥ मिथुन के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य मोटे सिर वाला, धनी, लम्बे शरीर वाला, धूर्त्त, गुणी, विलासी, राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त तथा अपने वचन का पालन करने वाला होता है ॥१॥ मिथुन के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य कोमल तथा सौम्य स्वरूप वाला, छोटे शरीर तथा छोटे मुँह वाला सूक्ष्म केशों वाला तथा पतली जाँघों वाला होता है, ऐसा जातक धन्य, कोमल स्वभाव वाला, बड़े शत्रुओं वाला प्रतापी तथा श्रेष्ठ यश वाला होता है ॥ २॥ मिथुन के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य स्निग्ध नेत्रों वाला, सुन्दर शरीर वाला, बड़े सिर वाला, शत्रुओं से युक्त, लम्बे शरीर वाला, रूखे नखों वाला, कठोर पाँवों वाला, चल-धन को प्राप्त करने वाला तथा भ्रमणशील होता है ॥३॥ इति मिथुन द्रेष्काण फलम् ॥

अथ कर्क द्रेष्काण फलम् ॥ कर्कटकाद्ये भागे देव ब्राह्मणरतश्चलो गौरः । कृत्यकरश्च परेषां सुधीः सुमूर्तिः सुतांगना सुभगः ॥१॥ लुब्धार्थो दानपरः स्वप्नपरः स्त्रीजितोभिमानी स्यात् । सहजान्वितो विलासी चपलो बहुरुग् द्वितीये च ॥२॥ काननतोयानुरतो विदेशगस्त्री बलोर्थभाक् साधुः । कर्कटकांत्यत्र्यंशे वृथा शठो भवति माल्यरुचिः ॥३॥ टीका ॥ कर्क के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य देवता तथा ब्राह्मणों में प्रीति रखने वाला, चंचल, गौरवर्ण, पराया काम करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान् , सुन्दर एवं श्रेष्ठ पुत्र एवं स्त्री का सुख पाने वाला होता है ॥१॥ कर्क के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य धन का लोभी, दान करने वाला, अधिक स्वप्न देखने वाला, स्त्रीजित् , अभिमानी, भाइयों से युक्त, विलासी, चपल तथा अनेक रोगों से ग्रस्त रहने वाला होता है ॥२॥ कर्क के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य व्यर्थ ही शठता करने वाला, वन में तथा जल में भ्रमण करने वाला, विदेशगामी, धनी, साधु तथा सुगन्धित पदार्थों में रुचि रखने वाला होता है ॥३॥ इति कर्क द्रेष्काण फलम् ॥

अथ सिंह द्रेष्काण फलम् ॥ दाता हर्त्ता बहुधन दारोरिनृप सेवको रिपुजिगीषुः । स्थिर मित्र सत्व युतः सिंहस्याद्ये दृकाणे स्यात् ॥१॥ सुरुचिः कामी दाता स्थिरो वपुष्मान्विभूषणेप्सुः स्यात् । सुखभाक् श्रुति धर्मरुचिर्विस्तीर्णमति द्वितीयेपि ॥२॥ लुब्धः स्थिरायततनुस्तब्धः परवित्तहृत्सुधीः कितवः । सिंहस्यांतेनैक सुतः स्त्रीणां नेष्ट प्रगल्भश्च ॥३॥ टीका ॥ सिंह के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य दानी, हिंसक स्वभाव वाला, बहुत धनी, अनेक स्त्रियों वाला, अनेक शत्रुओं वाला, राजा का सेवक, शत्रुओं पर विजय पाने की इच्छा रखने वाला, स्थिर मैत्री का निर्वाह करने वाला एवं पराक्रमी होता है ॥१॥ सिंह के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ रुचि सम्पन्न, कामी, दानी, स्थिर स्वभाव वाला, सुन्दर शरीर वाला, आभूषणों का इच्छुक, सुखभोगी, वेद और धर्म में रुचि रखने वाला एवं बड़ा बुद्धिमान् होता है ॥२॥ सिंह के अन्तिम द्रेष्काण

में जन्म लेने वाला मनुष्य लोभी, स्थिर स्वभाव का, बड़े शरीर वाला, स्तब्ध, पराया धन हरण करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, धूर्त, अनेक पुत्रों वाला, स्त्रियों का अहित करने वाला तथा प्रगल्भ होता है॥ ३॥ इति सिंह द्रेष्काण फलम्॥

अथ कन्या द्रेष्काण फलम्॥ सुकुमार तनुः श्यामो मधुदृक् मधुर सुवाक् सुधीः सुनयः। स्त्रिभ्योर्थ भाग् दृकाणे कन्याद्ये दीर्घ कंठश्च॥ १॥ समरोत्कटो विलासी सुत युग्ममुनि सम्मगतिर्विदेशरतः। धीरो व्ययी चाल्पकला कथारताः षष्ट मध्यांशे॥ २॥ नत सुतनुः परधन भाग्गीतरतिः पृथुदृगवनिपाभिमतः। त्यागी स्थिरः सुरूपश्चंडाक न्यांत्य दृक्काणे॥ ३॥ टीका॥ कन्या के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर तथा कोमल शरीर वाला, मधुमय नेत्रों वाला, मीठी वाणी बोलने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, नीतिज्ञ, स्त्रियों को अनिष्ट फल कारक तथा दीर्घ कण्ठ वाला अर्थात् प्रगल्भ होता है॥ १॥ कन्या के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य युद्ध में विशेष पराक्रमी, विलासी, पुत्रवान्, मुनियों जैसी गति वाला, परदेशवासी, धैर्यवान्, अधिक खर्चीला, थोड़ी कला जानने वाला तथा थोड़ी बातचीत करने वाला होता है॥ २॥ कन्या के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य छोटे क़द तथा सुन्दर शरीर वाला, पराये धन का उपभोग करने वाला, सङ्गीत-प्रिय, बड़े नेत्रों वाला, राजाज्ञा का पालन करने वाला, त्यागी, स्थिर-स्वभाव, सुन्दर स्वरूप वान् एवं तीव्र स्वभाव वाला होता है॥ ३॥ इति कन्या द्रेष्काण फलम्॥

अथ तुला द्रेष्काण फलम्॥ श्यामः सेवाप्तकलापण्यनियोगेषु निपुण बुद्धिः स्यात्। मन्त्रज्ञः स्मररूप स्तुलादिमे भवति दृक्काणे॥ १॥ पंकज विशाल नेत्रः सुरूपवान्नृपसखः प्रलापी स्यात्। ख्यातः स्ववंश वर्धिन्त वह्वानुचरः पटुर्द्वितीये च॥ २॥ चपलः शठो कृतघ्नो विरूप जिह्वोपचार तनुमूर्तिः। नष्ट सहृत् द्रविण यशः स्वल्पमतिः पथिरतस्तृतीये स्यात्॥ ३॥ टीका॥ तुला के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य नवीन अवस्था वाला, सेवाद्वारा कला-ज्ञान प्राप्त करने वाला, व्यवसाय-कुशल, बुद्धिमान्, मन्त्रज्ञ एवं कामदेव के समान सुन्दर स्वरूप वाला होता है॥ १॥ तुला के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य कमलदल के समान बड़े

नेत्रों वाला, सुन्दर स्वरूप वाला, राजा का मित्र, अधिक बोलने वाला, प्रसिद्धि प्राप्त, अपने वंश की वृद्धि करने वाला, बहुत सेवकों वाला तथा चतुर होता है ।।2।। तुला के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य चपल, शठ, कृतघ्न, कुरूप, बकवादी, छोटे शरीर वाला एवं मित्र, धन तथा यश को नष्ट करने वाला, अल्प बुद्धि एवं भ्रमण करते रहने वाला होता है।।3।। इति तुला द्रेष्काण फलम् ।।

अथ वृश्चिक द्रेष्काण फलम् ।। गौर: स्थिर: प्रचंडो रणोत्कट: स्यान्नरो विशालाक्ष: । स्थूलविशाल शरीर: कलिप्रियो वृश्चिकाद्यंशे ।।1।। मिष्टान्न पान चतुरश्चलेक्षणो हेम गौरमूर्त्ति: स्यात् । कांत: परवित्त युतो ऋजु क्रियावान् द्वितीयांशे ।।2।। सुभुजो मधुपिंगाक्षो महोदर: श्मश्रु रोम रहितश्च । सहज वियुत: प्रहर्त्ता हिंस्र: कृष्णोलि नस्तृतीयेंशे ।।3।। टीका ।। वृश्चिक के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, स्थिर स्वभाव, प्रचण्ड रणोत्कट, विशाल नेत्रों वाला, स्थूल तथा लम्बे शरीरवाला एवं कलह-प्रिय होता है ।।1।। वृश्चिक के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य मिष्ठान्न-भोजी, पीने में कुशल, चंचल, स्वर्ण की भाँति गौर वर्णवाला, सुन्दर, पराये धन से युक्त एवं सरलक्रिया वाला होता है ।।2।। वृश्चिक के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य श्रेष्ठ भुजाओं वाला, मधुपिंगल नेत्रों वाला, बड़े पेट वाला, दाढ़ी-मूँछ रहित, भाइयों से रहित, अपहरण करने वाला, हिंसक तथा काले वर्ण का होता है ।।3।। इति वृश्चिक द्रेष्काण फलम् ।।

अथ धनु द्रेष्काण फलम् ।। परिमंडलाक्षि वक्षा गणेषु मुख्यो धनी त्रिकोणाद्ये । स्वोचित साध्वाचार स्तथा मृदुर्भवति स: जात: ।।1।। शास्त्रार्थवित्प्रवक्ता क्रतु शत कर्त्ता विभु र्द्वितीये स्यात् । मन्त्रभृतां श्रेष्ठतम स्त्वनेकती र्थायतनचारी ।।2।। बंधुप्रधान चतुर: सतांगति र्धर्मभाक् तृतीयेपि । मानी परांगनाऽभाक् रूप यशोभाजनं वि-जिष्णुश्च ।।3।। टीका ।। धनु के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य गोल आँखों वाला, गोल वक्ष:स्थल वाला, गणों में प्रधान, धनी, अपने उचित साधु आचार में प्रवृत्त तथा कोमल हृदय वाला होता है ।।1।। धनु

के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य शास्त्रार्थ का ज्ञाता एवं प्रवक्ता, सैकड़ों यज्ञ करने वाला, ऐश्वर्यशाली, मन्त्रियों में श्रेष्ठ एवं अनेक तीर्थों की यात्रा करने वाला होता है ॥२॥ धनु के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य अपने बन्धुओं में प्रधान, चतुर, श्रेष्ठजनों की संगति करने वाला, धर्मात्मा, मानी, परस्त्रियों से दूर रहने वाला, रूपवान्, यशस्वी तथा परम श्रेष्ठ होता है ॥ ३॥ इति धनु द्रेष्काण फलम् ॥

अथ मकर द्रेष्काण फलम् ॥ व्यालंबभुजः श्यामः पृथुनयनोरु शठः सुकांतः स्यात् । स्मितभाषीमकराद्ये स्त्रीभिर्वजितो वल्गुचेष्ट धन युक्तः ॥१॥ श्यामः शठोऽल्पवचनः चलः परस्त्री धनापहर्त्ता स्यात् । उद्बद्धजंघः पिशुनो दुरुक्तवादः प्रवास शीलश्च ॥ २॥ घोणाललाट शोभन कलुषः कृशदीर्घः पितृवियोगी च । लभते विदेशगमनात्प्रायो व्यसनानि चाप्यंते ॥ ३॥ टीका ॥ मकर के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बी भुजाओं वाला, कोमल शरीर वाला, बड़े नेत्रों वाला, बड़े उरु वाला, सुन्दर कान्ति वाला, शठ, सुन्दर, कान्तिमान्, स्मितभाषी, स्त्रियों द्वारा अविजित, सुन्दर चेष्टा वाला एवं धनी होता है ॥१॥ मकर के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य कोमल शरीर वाला, शठ, अल्पभाषी, चंचलचित्त वाला, पर-स्त्री एवं पर-धन का हरण करने वाला, आँखों में बन्धन वाला, चुगलखोर, दुष्टभाषी एवं प्रवासी होता है ॥ २॥ मकर के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर नासिका एवं सुन्दर मस्तक वाला, पापी, पतले और लम्बे शरीर वाला, पितृ-वियोगी, प्रायः विदेश यात्रा करने वाला एवं व्यसनी होता है ॥३॥ इति मकर द्रेष्काण फलम् ॥

अथ कुम्भ द्रेष्काण फलम् ॥ स्त्रीमानरतः प्रांशुः स्थिरकर्मा सुखरतो धर्मीरिपुमान् । कुंभादिमे दृकाणे प्रियंगु कुसुम प्रभो भवति ॥१॥ रतिहास्य घनो घट धरमध्ये चोत्कृष्ट वाक् सुचरितमकरः । प्रिय संगीतो लुब्धो मधु गौरः पिंगदृक् समर्थश्च ॥ २॥ दीर्घः शठः प्रलापी कृशोऽल्पबाहुः सतार्थ भाक्स्तब्धः । वह्नृत्तोऽन्तर्विभमो विदारिताक्षो रति विदंत्येच्च ॥३॥ टीका ॥ कुम्भ के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य स्त्री के मान में रत, लंबे शरीरवाला,

स्थिर कर्म करने वाला, सुखी, अधम, शत्रुओं वाला तथा लालवर्ण वाला होता है ॥१॥ कुम्भ के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य अत्यधिक हास्य-क्रीड़ा करने वाला, उत्कृष्ट वाणी बोलने वाला, श्रेष्ठ चरित्र करने वाला, सङ्गीत-प्रिय, लोभी, मधुश्वेत पिंगल नेत्रों वाला तथा सामर्थ्यवान् होता है ॥२॥ कुम्भ के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य लम्बे शरीर वाला, शठ, प्रलापी, कृश तथा छोटी बाँहों वाला, श्रेष्ठ धन को पाने वाला, स्तब्ध अर्थात् विनम्रता-रहित, अत्यधिक झूठ बोलने वाला, अन्तःकरण का कपटी, बड़े नेत्रों वाला तथा रति-पण्डित होता है ॥ ३ ॥ इति कुम्भ द्रेष्काण फलम् ॥

अथ मीन द्रेष्काण फलम् ॥ मीनाद्ये दृक्काणे गौरो मधुदृक् सुधीः कृतघ्नश्च । ज्ञानक्रिया रतिनिरतः सुखी विनीतः सुवाक् ख्यातः ॥१॥ धनिनोपचारवेत्ता परधनभुङ्मिष्टमन्नमाकांक्षी । मुखरः स्वजनानुमतो ज्ञानी झष मध्य मत्स्यंशे ॥२॥ श्यामः पृथुकरपादः सदन्नपानः सुहृद्वरश्चापि । हास्यकलाविश्रेष्ठो प्रियो झषांत्येच दृक्काणे ॥३॥ टीका ॥ मीन के पूर्व द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, मधु जैसी आँखों वाला, कृतघ्न, ज्ञानक्रिया में निरत, सुखी, विनम्र, सुन्दरवाणी बोलने वाला तथा लोकविख्यात होता है ॥१॥ मीन के मध्य द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य धनिकों के उपचार को जानने वाला, पराये धन का उपभोग करने वाला, मिष्ठान्न-भोजन का इच्छुक, मुखर, सम्बन्धियों के मत का आदर करने वाला तथा ज्ञानी होता है ॥२॥ मीन के अन्तिम द्रेष्काण में जन्म लेने वाला मनुष्य कोमल शरीर वाला, बड़े हाथ-पाँवों वाला, श्रेष्ठ अन्न खाने-पीने वाला, मित्रों में श्रेष्ठ एवं हास्य-कला-प्रिय होता है ॥३॥ इति मीन द्रेष्काण फलम् ॥

अथ सप्तांश फलम् ॥ सप्तांशे बन्धु संज्ञा चेति। सप्तांश लग्नात्सहजाधिनाथः क्रूरोथ सौम्यः शुभपाप दृष्टः। पापैर्निजभ्रातृविहीन एव सौम्ये बहुभ्रातृ युतो नरः स्यात् ॥ टीका ॥ सप्तांश से भाई का विचार किया जाता है। सप्तांश लग्न से तृतीय भाव का स्वामी क्रूर अथवा शुभग्रह हो और वह शुभ अथवा पापग्रहों से दृष्टयुक्त हो तो पापग्रहों से

दृष्ट युक्त होने पर जातक भ्रातृहीन होताहै तथा शुभग्रहों से दृष्टयुक्त होने पर भाई से युक्त होता है॥

अथ पृथक् सप्तांश फलानि॥ तत्रादौ मेष सप्तांश फलम्॥ तनु मुख कूर्च प्रचण्डो रक्तांताक्षः कलिक्षता र्पश्च रणकर्म चौर्य निरतः कृशः क्रिये पूर्व सप्तांशे॥१॥ पृथुभाल गण्डमुखो ह्रस्वललाटः सुजङ्घकः। शुभदृक् पृथुपीनांश न तपवो द्वितीय भागे कृशांश संधिश्च॥२॥ दाक्षिण्य चौर्य विग्रह पापाढ्यो विलेख्य शास्त्रवित् कृशः। कामी कांतोटनः प्रवक्ता श्यामो मेषे तृतीय सप्तांशे॥३॥ पृथुनयन कपोलोदर पाणिगौरो गुरुश्च धर्मरतः। माल्यस्नान विभूषणरतः क्रिये तूर्य सप्तांशे॥४॥ ताम्रद्युतिः प्रचण्डो बृहद् भुजभ्रू शिरो ललाटनसः। अज पंचम सप्तांशे शूरस्ताम्रांतमध्वक्षः॥५॥ आयत मूर्तिर्गौरः कांतपृथुमधुविलोचनो धनवान्। शुभवाग्बुद्धिर्ज्ञानी त्वधीतविद्यो जषष्ट सप्तांशे॥६॥ पृथुदीर्घासित मूर्तिः कलिप्रियो भिन्ननरवरदाश्च केशाग्रः। निष्ठुरवाक् प्रगल्भोपि शनोजे सप्तमे भागे॥७॥ इति मेषः॥ टीका॥ मेष के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य छोटी दाढ़ी वाला, महाप्रचण्ड, लालनेत्रों वाला, युद्ध करने में कुशल, चोर, तथा कृशशरीर वाला होता है॥१॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला भरे हुए मस्तक और गण्डस्थल वाला, बड़े मुख तथा छोटे माथे वाला, सुन्दर ठोड़ी तथा सुन्दर दृष्टि वाला, भोगी, दान-निरत, बड़ी और पुष्ट जाँघों वाला, एवं गूढ़ ग्रंथि तथा कृश संधियों वाला होता है॥२॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला चतुर, चोर, पापकर्म करने वाला, लेखक, शास्त्रज्ञ, कामी, सुन्दर रूप वाला, भ्रमणशील, वक्ता तथा कोमल शरीर वाला होता है॥३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला मोटे नेत्र, कपोल, उदर तथा हाथों वाला; गौरवर्ण, भारी, धर्म-निरत, सुगंध प्रेमी एवं स्वप्न तथा आभूषणों का प्रेमी होता है॥४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला ताँबे जैसी कान्ति वाला, प्रचण्ड, बड़ी भुजाओं, भ्रू, शिर, मस्तक तथा नासिका वाला एवं लालवर्ण के कोनों से युक्त मधुवर्णी आँखों वाला होता है॥५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला विशाल शरीर, गौरवर्ण, सुन्दर, बड़े तथा मधुवर्णी नेत्रों वाला, धनी, श्रेष्ठभाषी, बुद्धिमान्, ज्ञानी तथा विद्याध्ययनशील होता है॥६॥ सातवें

सप्तांश मे जन्म लेने वाला मोटे और श्याम वर्ण शरीर वाला, युद्ध-प्रिय, विरल दाँत एवं नखों वाला, सिर पर मोटे केशों वाला, कठोरभाषी, प्रगल्भ तथा चुगलखोर होता है ॥ ७॥ इति मेष सप्तांश फलम् ॥

अथ वृष सप्तांश फलम् ॥ पृथुभालगण्ड वक्ष स्कंध कपोलोरु वाहक: श्याम:। अतिसूक्ष्म कचो व्यस्तो क्षणो वृषे प्रथम सप्तांशे ॥ १॥ स्निग्धद्युतिरायतदृङ् मधुरवचनश्चारुलोचन: सुतनु:। कामी विज्ञान कला निरतो वृषे द्विती-य सप्तांशे ॥ २॥ प्राज्ञश्च पीतगौरो मृगदृक् सुभगो रतिप्रियो दाता। मृदुतनकचो वचश्वी वृषतृतीयेच सप्तांशे ॥ ३॥ उच्चमुखगण्डघोनो धनभाक् स्फुटदृक् पृथुवचो गौर:। रक्तनखोभिन्न कटि: खरो वृषभस्य तूर्य सप्तांशे ॥ ४॥ ताम्राभ्रपिंगलाक्ष: सुकुमार स्तीक्ष्णवाक् परस्वेच्छु:। मृतदारो रोगी गवि सप्तांशे पंचमे भवति ॥ ५॥ पृथुकर्णायततनु रसितदृगुन्नत सक्रियादक्ष:। अभिमानी गविषष्ठे सप्तांशेह्यापदार्त्तश्च ॥ ६॥ गोंत्यांशे भ्रांतमुख: सितांतदृक् श्यामकृशतनु: शूर:। लुब्ध: क्रोधी वक्ता चलोल्पसत्वोटनश्च शठ: ॥ ७॥ इति वृषम् ॥ टीका ॥ वृष के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य मोटे मस्तक तथा गण्डस्थलों वाला, बड़ी छाती और बड़े कंधे, कपोल, उरु तथा भुजाओं वाला, आकर्षक सुन्दर शरीर वाला, सूक्ष्म केशों वाला तथा टेढ़ी दृष्टि वाला होता है ॥ १॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला स्निग्ध कान्ति वाला, विशाल दृष्टि वाला, मधुरभाषी, सुन्दर नेत्रों वाला, सुन्दर शरीर वाला, कामी एवं ज्ञान तथा कला में विशेष निष्णात होता है ॥ २॥ वृष के तीसरे सप्तांश में जन्म लेनेवाला चतुर, पीत-गौर वर्ण, कोमल दृष्टि वाला, श्रेष्ठ अङ्गों वाला, रति-प्रिय, कोमल शरीर तथा छोटे केशों वाला तथा अपनी बात का पक्का होता है ॥ ३॥ वृष के चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला उन्नत मुख, गण्डस्थल तथा नासिका वाला, धनी स्पष्ट दृष्टि एवं भारी आवाज़ (वाणी) वाला, गौर वर्ण, लाल नख, टेढ़ी कमर तथा कठोर शरीर वाला होता है ॥ ४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला ताँबे के समान लाल वर्ण वाला, पिंगल वर्ण नेत्रों वाला, सुकुमार, तीक्ष्ण वाणी वाला, दूसरे के धन की इच्छा रखने वाला, जिसकी स्त्री की मृत्यु हो जाय- ऐसा तथा रोगी होता है ॥ ५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला आकर्ण-सुन्दर विशाल नेत्रों वाला, काम करने में कुशल, अभिमानी तथा विपत्तियों से पीड़ित होता

है ॥६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला, भ्रान्त व्यक्ति जैसे मुख वाला, श्वेत कोने वाले नेत्रों का, कोमल तथा कृश शरीर वाला, शूर-वीर, लोभी, क्रोधी, सुवक्ता, चंचल, थोड़े पराक्रम वाला, भ्रमणशील तथा शठ होता है ॥ इति वृषसप्तांशफलम् ॥

अथ मिथुन सप्तांश फलम् ॥ ज्ञानी कवि वर्चस्वी श्याम: कांत: शुचिविलासी च । रतिगीतरत: ख्यातो मिथुनादिमसप्तमांशेस्यात् ॥ १॥ धनवान् पृथुगौरतनु: पृथुदृक् प्राज्ञ: प्रियालसश्च मृदु: । संगीत धर्म निरतो द्वितीय सप्तांशके मिथुने ॥ २॥ पृथुदृक्ताम्र विदारित मुखो महाहनुरुदार कर्मा च । शूरो हर्त्ता वक्ता प्रहसो मिथुन तृतीय सप्तांशे ॥ ३॥ आयततनु: सुदृक् श्याम: पण्ये प्रयोग मार्ग पटु: । शूर: सुभग: सम्मितवाग् मिथुने च चतुर्थ सप्तांशे ॥४॥ रक्तनखाधर नेत्रश्चंडो वक्ता विभक्त भुज: । रतिचौर्य कुटिल कृत्पंचम सप्तांशके मिथुने ॥ ५॥ गुर्वायत गौर तनु: स्वक्षनस: शास्त्र काव्य धर्मरत: । मधुर: सुधीर्विशिष्ट: षष्ठे सप्तांश के मिथुने ॥ ६ ॥ स्त्रीशास्त्यकथा द्यूताल्पसत्व-रोगाद्यभाक् चलो मिथुने । पुत सस्निग्ध समासित दीर्घा गोत्य सप्तांशे ॥७॥ इति मिथुन: ॥ टीका ॥ मिथुन के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य ज्ञानी, कवि, अपने वचन का पालन करने वाला, कोमल तथा सुन्दर शरीर वाला, पवित्र, विलासी, प्रीति युक्त, गीत-प्रिय तथा प्रसिद्धि पाने वाला होता है ॥ १॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला धनी, मोटे शरीर वाला, गौरवर्ण, मोटी आँखों वाला, चतुर, आलसी, कोमल, सङ्गीत-प्रिय तथा धर्मरत होता है ॥ २॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला बड़े-बड़े लाल नेत्रों वाला, विशाल मुखवाला, बड़ी ठोड़ी वाला, उदार-कर्म करने वाला, शूर-वीर, अपहरणकर्त्ता, सुवक्ता एवं हास्य-प्रिय होता है ॥ ३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला, विस्तृत शरीर वाला, सुन्दर दृष्टि वाला, कोमल स्वरूपवान्, व्यवसाय-मार्ग में प्रवीण, शूर-वीर, श्रेष्ठ अङ्गों वाला तथा अल्पभाषी होता है ॥ ४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला लालनख और लाल होठों वाला, प्रचण्ड, सुवक्ता, शिथिल भुजाओं वाला, रति-प्रिय, चोर एवं कुटिलता के काम करने वाला होता है ॥ ५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला विशाल नेत्रों वाला, गौरवर्ण, सुन्दर नासिका वाला, शास्त्र-काव्य-धर्म निरत, मधुर भाषी तथा श्रेष्ठ

बुद्धि वाला होता है ॥६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेनेवाला श्रेष्ठ-स्त्री, कथा-वार्ता एवं जुए में रत रहने वाला, अल्प
पराक्रमी, रोगी, भ्रमणशील, स्निग्ध शरीर, श्याम वर्ण तथा लम्बे अङ्गों वाला होता है॥७॥इति मिथुन सप्तांश फलम्॥

अथ कर्क सप्तांश फलम्॥ उपचितकचोरुवक्षाः श्यामः प्रांशुः सुवृत्तधीरश्च। वस्त्यायतदृ
कर्कर्किणि दीर्घभुजः प्रथमसप्तांशे॥१॥ स्थूलोष्ठगंडकंठः शूरस्ताम्रद्युतिः कृशः प्रांशुः। प्रहसोजास्य पिंगाक्षः
कुलीर राशे द्वितीय सप्तांशे॥२॥ विद्वांस्तनु रायतदृक्संगीतार्थ विदः कविश्चतुरः। कर्किणि मृदुस्तृतीये सप्तांशे भवति
सुकुमारः॥३॥ पृथुदृग् मृदु सूक्ष्म कचः स्वतोलसः सुघोणश्च। गतिज्ञो लंबभुजः कर्किणि सप्तांशके चतुर्थे च॥४॥
उद्गंड घोणस्ताम्रः कृशतनु पिंगदृक् शूरः। अन्यस्त्रीच्छुः कर्किणी पंचम सप्तांशके लग्नात्॥५॥ दीर्घास्याक्षिनसः
पृथुकर्णोमान्यश्च बंधुभिर्गौरः। सुतनुर्मति वचन कर्मा कर्किणि सप्तांशके षष्ठे॥६॥ खरवाक्क्लेश क्लेशोदीर्घकृशासित
तनुः खलस्त्वटनः। तीव्रदृगुन्नतनसः कर्किणि सप्तांशके प्रांत्ये॥७॥ इति कर्कटः॥ टीका॥ कर्क के प्रथम सप्तां-
-श में जन्म लेने वाला मनुष्य बड़े केशों वाला, विस्तृत उरु तथा वक्षःस्थल वाला, श्याम, प्रांशु एवं वर्तुल शरीर
वाला, धैर्यवान्, पंडित, बड़ी वस्ति एवं विशाल नेत्रों वाला तथा लम्बी भुजाओं वाला होता है॥१॥ दूसरे
सप्तांश में जन्म लेने वाला मोटे होठ तथा गले (कंठ) वाला, शूर-वीर, ताम्रवर्ण कान्ति युक्त, कृश-शरीर, उन्नत
तथा कमल की भाँति उन्नत एवं प्रफुल्लित मुख वाला तथा पिंगल नेत्रों वाला एवं हास्य-प्रिय होता है॥२॥
तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला विद्वान्, छोटे शरीर वाला, विशाल दृष्टि वाला, संगीतार्थ का ज्ञाता, कवि,
चतुर, कोमल शरीर वाला तथा सुकुमार(सुन्दर) होता है॥३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला बड़े नेत्रों वाला
कोमल तथा सूक्ष्म केशों वाला, आलसी, सुन्दर नासिका वाला, संगीतज्ञ तथा लम्बी भुजाओं वाला होता है॥४॥
पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला ऊँचे गण्डस्थल तथा ऊँची नाक वाला, लाल वर्ण, कृश शरीर, पिंगल दृष्टि
वाला, शूर-वीर तथा परस्त्री का इच्छुक होता है॥५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला लम्बे मुख

तथा लम्बे नेत्रों वाला, लम्बी नाक वाला, बड़े कानों वाला, बन्धुओं द्वारा मान्य, गौरवर्ण, सुन्दर शरीरवाला तथा वचन और कर्म से बुद्धिमान् होता है ॥ ६ ॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला कठोर वाणी बोलने वाला, केशों में कष्ट वाला, लम्बा तथा कृश शरीर, श्याम वर्ण, दुष्ट, भ्रमणशील, तीक्ष्ण दृष्टि एवं ऊँची नाक वाला होता है ॥ ७ ॥ इति कर्क सप्तांश फलम् ॥

अथ सिंह सप्तांश फलम् ॥ रक्तांगाक्षो दीर्घश्चण्डः सुपटुः प्रवृद्ध घोणश्च। सिंहादिमे स्थिसारः सप्तांशे तुंगखर रोमः ॥ १ ॥ अभ्युन्नत तीक्ष्णनखो दीर्घो वक्ता द्वितीय सप्तांशे। धृष्टोर्थ शास्त्रास्त्रोपचारनयवि- द् भवेत् सिंहे ॥ २ ॥ पृथुपीनायतदेहः पृथुभालाक्षशिरोर्थ संचयकः। धृति सत्त्वदार सहितो हरे स्तृतीये च सप्तांशे ॥ ३ ॥ कलि दुःशीलश्चण्डः केकरदृक्कविः सुखीनालुच्चः। रक्तघन तनुरसत्त्वः सिंहस्य तुरीय सप्तांशे ॥ ४ ॥ सोत्साह वाक् स्थिरयशो मान प्रताप युक् सुदृशः। हरि पंचम सप्तांशे गौरोनापृथु शिरालश्च ॥ ५ ॥ शिशिरायत वृत्ततनु र्नात्यल्पदृगोनरो त्यटनः। हरि षष्ठे सप्तांशे न्यासे विहितः सुदीर्घ घोणश्च ॥ ६ ॥ मृदुरुन्नत गौराङ्गः प्राज्ञोल्पन सोल्पवाक् सुवेषश्च। सिंहांत्ये सप्तांशे गीतस्त्रीरतः कान्तः ॥ इति सिंहः ॥ टीका ॥ सिंह के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य लाल वर्ण शरीर एवं रक्त वर्ण नेत्रों वाला, लम्बा, प्रचण्ड, चतुर, बड़ी नाक वाला, अस्थिसार युक्त एवं खर रोमों वाला होता है ॥ १ ॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला बड़े तीक्ष्ण नखों वाला, लंबा, वक्ता, ढीठ, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ तथा समझदार होता है ॥ २ ॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला बड़े तथा पुष्ट शरीर वाला, विशाल आकार वाला, बड़े मस्तक वाला, बड़े नेत्रों वाला, बड़े सिर वाला, धन-संचय करनेवा- ला, धैर्यवान्, पराक्रमी तथा स्त्री युक्त होता है ॥ ३ ॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला कलह-प्रिय, दुःशील, पराक्रमी, टेढ़ी दृष्टि वाला, कवि, सुखी, ऊँचे शरीर वाला, लालवर्ण के शरीर वाला एवं पुष्ट होता है ॥ ४ ॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला उत्साह युक्त वचन बोलने वाला, स्थिर यशस्वी, सम्मानित, सुन्दर

दृष्टि वाला तथा बड़े सिर वाला होता है॥ ५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला शीतल, विशाल एवं गोल शरीर वाला, अग्नि की भाँति छोटे नेत्रों वाला, भ्रमणशील, न्यास कर्म में श्रेष्ठ तथा बड़ी नासिका वाला होता है॥ ६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला कोमल, उच्च एवं गौर वर्ण शरीर वाला, चतुर, छोटी नाक वाला, श्रेष्ठ वाणी एवं सुन्दर वेष वाला सङ्गीत एवं स्त्री में रत तथा सुन्दर होता है॥ ७॥ इति सिंह सप्तांश फलम्॥

अथ कन्या सप्तांश फलम्॥ कन्यादिम सप्तांशे वाग्मी प्राज्ञः सुधीर्विनीतश्च। आयतदृक्तनु श्यामो निभृतः समवंश घोणः स्यात्॥ १॥ पीनोरुवंशभुजोदरो वचस्वी मृदुस्तु पूर्ण मुखः। सुकुमारो रतिसक्तो गनाद्वितीये च सप्तांशे॥ २॥ अभिमान कुटुंबस्तेयपरतो रक्तगात्र दृक्चपलः। तनुरोमोच्चक मुखोल्पक चित्तः कन्या तृतीय सप्तांशे॥ ३॥ शिल्प श्रुति मुख कर्मा महाहनु स्कंध दृक् शिरः प्राज्ञः। दानरुचिस्फुट धनवान्कन्या सप्तांशके तुर्ये॥ ४॥ कन्या पंचम सप्तांशे मरोलसो भीरुवाक् क्रोधी। पीनहनुदीर्घमुखः स्नायुतनुर्मृगदृक्॥ ५॥ पूर्णैश्वर्य समेतो दृढ़ श्रुति वचने रतो धर्मी। कन्या षष्ठे सप्तांशे कृष्णाक्षो वक्रमायतः भ्रूः॥ ६॥ तनुपिंग कचोमध्वाप तदृक् स्थूलोष्ठ गंडगलदंष्ट्रः। उग्रः क्रुद्धस्ताम्ररुचिः कन्याया सप्तमांशेंत्ये॥ ७॥ इति कन्या॥ टीका॥ कन्या के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य वक्ता, चतुर विशाल दृष्टि वाला, श्रेष्ठ वाणी तथा सुन्दर देह वाला बुद्धिमान्, विनम्र, परिपूर्ण, समवंश तथा सम-नासिका वाला होता है॥ १॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला पुष्ट उरु, वंश, भुजा और उदर वाला, अपने वचन का पक्का, कोमल, परिपूर्ण मुख, सुकुमार शरीर एवं रति क्रीड़ा में आसक्त रहने वाला होता है॥ २॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला अभिमानी कुल वाला, चोरी करने वाला, लाल वर्ण के शरीर एवं नेत्रों वाला, छोटे रोम तथा मुख वाला एवं छोटे मन वाला होता है॥ ३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला शिल्पज्ञ, वेदज्ञ, धर्मशास्त्र में वर्णित कर्मों को करने वाला, बड़ी ठोड़ी तथा बड़े स्कंध और शिर वाला, प्राज्ञ, दान में रुचि रखने वाला, प्रकट धन वाला तथा स्फुट वाणी बोलने वाला होता

है ॥४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला आलसी, अयमुक्त वाणी बोलने वाला, क्रोधी, पुष्ट ठोड़ी वाला, लम्बे मुख वाला, स्नायु दिखाई देने वाले शरीर वाला एवं हरिण जैसी चितवन वाला होता है ॥५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला पूर्ण ऐश्वर्यवान्, दृढ़तापूर्वक वेद-वचनों में रत, धर्मात्मा, श्याम नेत्रों वाला, विशाल मुख एवं लम्बी तथा टेढ़ी भौंहो वाला होता है ॥६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य छोटे-छोटे पिंगलवर्ण केशों वाला, मधुवर्णी विशाल नेत्रों वाला, मोटे होठ, गण्डस्थल, कण्ठ एवं दाढ़ों वाला, उग्र, क्रोधी एवं ताम्रवर्णप्रभावान् शरीर वाला होता है ॥७॥ इति कन्या सप्तांश फलम् ॥

अथ तुला सप्तांश फलम् ॥ पद्माक्षउच्च घोण स्तरुणांकुर सन्निभः सुदृढ्सुतनुः। वक्ताधनार्जनज्ञ स्तुलादिमे सप्तांशे सुधर्नृभृत् ॥१॥ वृत्तास्यः कृषिकर्माध्वनिरतोन्न तन सोष्ठः। हिंस्रो रक्तश्याम स्तुलाद्वितीये च सप्तांशे ॥२॥ धर्मार्थि शास्त्रास्त्रवित्तुंगनसः शिरालश्च महान्। पृथुवदननयनमूर्ति स्तुलातृतीये च सप्तांशे ॥३॥ कृष्णः खरस्वरांगो दीर्घमुखः पीन कंठवक्षोष्ठः। जिह्मश्चलोग्रकर्मा वक्रनखस्तुला चतुर्थ सप्तांशे ॥४॥ शुभ्रवान नाक्षिनेत्रः श्यामः सुतनुः कलाक्रियानुपटुः। दीर्घमुखः सत्सेव्यः सप्तांशे पंचमे तुलिनि ॥५॥ नतपक्षासितनेत्रः सममूर्तिः स्त्रीबलः सुवाक् चतुरः। तुलषष्ठे सप्तांशे भवति नरः सुमुखघोष कोष्ठश्च ॥६॥ स्थूलोष्ठास्थिर-दो मधुपिंगकेशः स्वल्पदृक् शूरः। बालाब्ज कोमलांड्ः सप्तम सप्तांश के तुलिनि ॥७॥ इति तुला ॥ टीका ॥

तुला के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य कमल जैसे सुन्दर मुख वाला, ऊँची नासिका वाला, नवीन अंकुर की भाँति कोमल शरीर वाला, दृढ़, सुन्दर, सुवक्ता, धनोपार्जन करना जानने वाला तथा मनुष्यों का पालन करने वाला होता है। दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला गोल मुख वाला, कृषि-कर्म-कर्त्ता, यात्राप्रिय, ऊँची नासिका वाला, उन्नत होठों वाला, हिंसक प्रवृत्ति का तथा रक्त-श्याम वर्णवाला होता है ॥२॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला धर्मज्ञ, धनोत्पादन करने वाला, अस्त्र-शास्त्र विद्या का जानकार,

ऊँची नाक, बड़े केश, मोटे मुख, बड़े नेत्र तथा मोटे शरीर वाला होता है।३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला श्याम वर्ण, कठोर स्वर में बोलने वाला, कठोर अङ्गों वाला, लम्बे मुख वाला, चपल, उग्रकर्मी तथा उल्टे नखों वाला होता है॥४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला श्रेष्ठ भौंहों वाला, श्रेष्ठ मुख तथा सुन्दर नेत्रों वाला, कोमल एवं सुन्दर शरीर वाला, कला-क्रिया-कुशल, लम्बे मुख वाला तथा श्रेष्ठ जनों द्वारा सेवित होता है॥५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला झुकी हुई पलकों तथा काले नेत्रों वाला, सममूर्ति, स्त्री की शक्ति वाला, श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, चतुर, सुन्दर मुख वाला, सुभाषी तथा सुन्दर होठों वाला होता है॥६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला मोटे होठ तथा मोटी हड्डियों और दाँतों वाला, मधु-पिंगल केशों वाला, छोटे नेत्रों वाला, शूर-वीर तथा छोटे कमल के समान कोमल अङ्गों वाला होता है॥७॥ इति तुला सप्तांशफलम्॥

अथ वृश्चिक सप्तांश फलम्॥ घातानृतभेदाहवरतोन्नतश्च पिंगरक्ताक्षः। अलि पूर्व सप्तांशे खरपिंगकचः प्रचलदेहः॥१॥ पृथुदृक्कस्तनुरंघ्रिः सुनसः कौर्पे द्वितीयसप्तांशे। धृतपीतारुणकांतिः शास्त्रविधिज्ञः कलाढ्यश्च॥२॥ पटुवाक् निरुद्ध पूर्वार्द्ध वृद्धकायोसिताधिकृतमूर्तिः। कठिनघ्राणोगुरुणा मलिनि तृतीयसप्तांशे॥३॥ पृथुगण्डघोणजठरो बक्रवचः कौर्पे तूर्य सप्तांशे। उद्धतवचनो मानीचात्महितभावमिहा-बाहुः॥४॥ कृशजठर पृथुवक्षा वक्ता धूतप्रियः सुमुखबाहुः। सेवायुक्तोल्पपटुः सप्तांशे पंचमेष्टमभे॥५॥ अलि षष्ठे सप्तांशे सकोमलो दारसत्वतनुः॥६॥ समेरे बालोत्पलदृग्मतिमां स्तनुतुंगनसोल्पवाग्मृदुर्धर्मी। अलि सप्तांशेंत्ये चरव्यातः स्थिरधीर सत्वश्च॥७॥ इति चक्षुः प्रांशुनसः पृथुशीर्षस्फिक् पिंगरोमाक्षः। अलि सप्तांशेंत्ये चरव्यातः स्थिरधीर सत्वश्च॥७॥ इति वृश्चिकः॥ टीका॥ वृश्चिक के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य घाती, भेद-कर्ता, मिथ्यावादी, एवं युद्ध-रत, ऊँचे शरीर वाला, रक्त-पिंगल नेत्रों वाला, कठोर पिंगल केशों वाला एवं चल शरीर वाला होता है॥१॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला मोटे नेत्रों वाला, सूक्ष्म (छोटे) पाँवों वाला, सुन्दर

नासिका वाला, पीत-रक्त कांति वाला, शास्त्रविधिवेत्ता एवं कला-विज्ञ होता है ॥ २॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला बात करते समय पहले कुछ अटकता है तत्पश्चात् चातुर्य्य पूर्ण वार्तालाप करता है। वह वृद्ध-तुल्य दिखाई पड़ने वाला, श्यामवर्ण, कठोर अङ्गों वाला तथा बड़ों की लज्जा न करने वाला होता है ॥ ३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला बड़े गंडस्थल, बड़ी नासिका एवं बड़े पेट वाला, वक्रोक्ति बोलने वाला, उद्धत वाणी वाला, मानी, अपने हित की बात करने वाला तथा बड़ी भुजाओं वाला होता है ॥ ४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला, पतले पेट और बड़ी छाती वाला, वक्ता, जुआरी, सुन्दर मुख तथा श्रेष्ठ भुजाओं वाला, सेवाभावी तथा अल्प चतुर होता है ॥ ५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला कोमल कमलदल जैसे नेत्रों वाला, बुद्धिमान्, सूक्ष्माग्र ऊँची नासिका वाला, अल्पभाषी, कोमल शरीर वाला, धर्मात्मा, कोमल स्वभाव वाला, अत्यन्त उदार तथा पराक्रमी होता है ॥ ६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला युद्ध करने का इच्छुक, ऊँची नाक तथा बड़े सिर वाला, ऊँचे कटिमांसपिण्डों वाला, पिंगलकेशी, पिंगलनेत्र, प्रसिद्ध, स्थिर-बुद्धि वाला तथा धैर्यवान् होता है ॥ ७॥ इति वृश्चिक सप्तांश फलम् ॥

अथ धनु सप्तांश फलम् ॥ स्थूलोष्ठगंडनसा पृथूदरोरश्च सत्ववान्मधुदृक् । तुंगशिरः स्थूल पादश्चाद्यमसप्तमांशे च ॥ १॥ मृगदृक् सुवृत्तजंघो न्यायविद्द्विजेशविनम्रः । दीर्घकरः पृथुश्रुति घोणश्चापद्वितीय सप्तांशे ॥ २॥ क्रोधी वक्ता त्यागी कृशसार वपुः प्रियासुकलिरीर्ष्युः । ताम्राङ्गाक्षो ह्रस्वो वह्निरवो धनुषि तृतीय सप्तांशे ॥ ३॥ उन्नत सुनसस्कंधः स्थूल तनु हनुर्मृगेक्षणः पुरुषः । कपितुंग शिरो गीत प्रियश्चतुर्थे धनुषि सप्तांशे ॥ ४॥ तनु कठिनायत मूर्तिः सुनसो दारितदृक् प्रसमश्च । स्थित काव्यादि कलाढ्यः सप्तांशे पंचमे धनुषि ॥ ५॥ हय षष्ठे सप्तांशे तपोभिरामो मृदुवचः सुकर्मा च । पृथुमुख नयनोगुरुधनो मृणाल गौरोऽपलित शीर्षः ॥ ६॥ दीर्घोष्ठनासिकाक्षः सुसत्यवाग्घतितनुर्धनुषि शूरः । सप्तांशेऽन्त्ये त्यागी महाललाटश्रवण

दंत:॥ ७॥ इति धनु:॥ टीका॥ धनु के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य मोटे होठ, गण्डस्थल तथा नासिका वाला, बड़े उदर तथा वक्षःस्थल वाला, पराक्रमी, मधुवर्ण नेत्रों वाला एवं उन्नत सिर तथा मोटे पाँवों वाला होता है॥१॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला हरिण जैसी आँखों वाला, गोल जाँघों वाला, पराये धन का हरण करने वाला, विशेष एवं विषम विषयों का ज्ञाता, लम्बे हाथ, और मोटे कान तथा मोटी नाक वाला होता है॥२॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला क्रोधी, वक्ता, त्यागी, कृश-शरीर वाला, स्त्रियों से कलह करने वाला, ईर्ष्यालु लाल वर्ण के शरीर एवं नेत्रों वाला, छोटे क़द वाला तथा बकरे जैसा शब्द बोलने वाला होता है॥३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला ऊँची तथा सुन्दर नासिका वाला, उन्नत कंधों वाला, मोटे शरीर तथा बड़ी ठोड़ी वाला, हरिण जैसे नेत्रों वाला, ऊँचे शिर वाला तथा सङ्गीत-प्रिय होता है॥४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला विशाल एवं कठोर शरीर वाला, सुन्दर नासिका वाला, विशाल दृष्टि वाला, इन्द्रिय-निग्रही तथा काव्य शास्त्रादि कलाओं का ज्ञाता होता है॥५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला तपस्वी, कोमल वाणी वाला, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, मोटे मुख तथा नेत्रों वाला, गुणवान्, मृणाल तुल्य गौर वर्ण वाला तथा काले केशों वाला होता है॥६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला लम्बे होठ तथा लम्बी नासिका वाला, बड़े नेत्रों वाला, सत्यवादी, शूर-वीर, त्यागी, बड़े मस्तक तथा कानों वाला एवं बड़े दाँतों वाला होता है॥७॥ इति धनु सप्तांश फलम्॥

अथ मकर सप्तांश फलम्॥ तनु वंश घोणो जिह्व: दीर्घास्य: कीर्तिभाक्।श्याम: खर: कृष्ण वर्ण वासो भीरुर्मकरादि सप्तांशे॥१॥ गौरो पचितो रु तनु: सुमुखो धनी समदचेष्ट:।दक्षश्च लोयुधुत्सुर्द्वितीय सप्तांश मकरे॥२॥ रक्तांगाक्ष प्रचण्ड: कृश: परस्त्रीधन: समदचेष्ट:। विषम स्वभाव: क्रांत स्तृतीय सप्तांश के मकरे॥३॥ स्मित मृदुभाषी मतिमान् वृहत् शिरोगंड घोण नेत्रश्च। मृग तूर्य सप्तमांशे स्त्रीच्छु: पद्मोदर श्याम:॥४॥ संगीत शिल्प सिद्ध: लेक निरतो विशेषतो मान्य:। मृग पंचम सप्तांशे दीर्घासित मूर्त्ति रुरुगंड:॥५॥ हेमप्रभो

विशाल: श्रेष्ठ जनानांप्रिय: कुवलयाक्ष: । मृग षष्ठे सप्तांशे तथ: श्रुतिज्ञानवांश्च मृदु: ॥ ६॥ वृद्धोरुतनुश्चण्डोऽनपत्योरक्तचक्षुरभिमानी । पृथुकंठास्यनसाभ्रु रटनोत्पेमकर सप्तांशे ॥इति मकर: ॥ टीका ॥ मकर के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य छोटे कद तथा छोटी नाक वाला, जिह्म, लम्बे मुख वाला, यशस्वी, नवीन अवस्था वाला, कठोर एवं कृष्ण वर्ण शरीर वाला, मलिनवस्त्रों वाला तथा डरपोक होता है ॥१॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण, सुन्दर तथा बड़े शरीर वाला, सुन्दर मुखवाला, धनी, मस्तमौला, चतुर, चंचल एवं पुष्टचक्षु होता है ॥२॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला लाल वर्ण के अङ्ग तथा नेत्रों वाला, प्रचण्ड, कृश-शरीर, परस्त्री तथा पराये धन द्वारा आनन्दोपभोग करने वाला, खोटे-स्वभाव वाला तथा सुन्दर होता है ॥३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला हास्ययुक्त कोमल वचन बोलने वाला, बुद्धिमान्; बड़े सिर, गण्डस्थल एवं नासिका वाला, बड़ी आँखों वाला, स्त्री की इच्छा वाला, कमल की भाँति कोमल पेट तथा अल्प अङ्गों वाला होता है ॥४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला गन्धर्व-विद्या एवं शिल्प-विद्या में प्रवीण, युद्ध-प्रिय, सेवा-प्रिय, विशेष मानी, लम्बे तथा कृष्णवर्ण शरीरवाला तथा बड़े गण्डस्थलों वाला होता है ॥५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला स्वर्णवर्ण शरीर वाला, विशाल वपु, श्रेष्ठ जनों का प्रिय, कमलदल जैसे नेत्रों वाला, वेदज्ञ तथा कोमल-स्वभाव वाला होता है ॥६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला वृद्ध-तुल्य बड़े शरीर वाला, प्रचण्ड, सन्तानहीन, लालनेत्रों वाला, अभिमानी, बड़े कण्ठ, मुख, नासिका एवं भौंहों वाला तथा भ्रमणशील होता है ॥७॥ इति मकर सप्तांश फलम् ॥

अथ कुम्भ सप्तांश फलम् ॥ निःकृतिरखलो सत्व: खरकेकरदृग्वृहच्छिरराल: । दीर्घश्चादिम सप्तांशे घटस्य विनतघोण: ॥ १॥ पक्वामलकनिभ: पृथुरल्प कपोदारितास्यनासाक्ष: । कुम्भद्वितीयसप्तांशेपिपासु: शूरोमनस्वी च ॥२॥ मार्जारदृक्चलमनस्ताम्रांग: स्वल्पधीर्घटे तृतीये । मेदाहववचौर्यानृत कृतमु सप्तांशे सधूम्रकपिलकच: ॥३॥ मृदुल्पवाक् पिपासु स्तुंगनसो रक्तगौर रणाक्ष: । नीलांबरश्चतुर्थे घटसप्तांशे च पटुविनीत: ॥ ४॥

रूक्षकचोर्वितताङ्गो गौरश्यामः सुरूपसुखवचनः। षट्पंचम सप्तांशे प्रवासरुचिः शिल्पपानरुचिः ॥ ५ ॥ गौरोच्चः पृथुगात्र सुनेत्रवक्षणो विनीतश्च। षट् षष्ठे सप्तांशे वेदव्रत देवतादि कपः ॥ ६ ॥ दीर्घस्ताम्राक्षतनुः ख्यातः सत्वाधिक पृथुनसोष्ठः। उद्धतवाग्वपुष्मान्पिंगलकेशो घटांत्य सप्तांशे ॥ ७ ॥ इति कुंभः ॥ टीका ॥ कुंभ के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य नपुंसक, बलहीन, तीक्ष्ण एवं टेढ़ी दृष्टि वाला, बड़े सिर वाला, लम्बे शरीर वाला तथा दबी हुई नासिका वाला होता है ॥ १ ॥ दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला सुपक्व आँवले जैसी प्रभावाला, मोटा, अल्पभाषी, बड़े मुख तथा बड़ी नासिका वाला, विशाल नेत्रों वाला, तृषातुर, शूर-वीर एवं मनस्वी होता है ॥ २ ॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला बिल्ली जैसी आँखों वाला, चपल-स्वभाव, ताम्रवर्ण शरीर वाला, अल्पबुद्धि; भेद, द्रुह, चोरी एवं असत्य वादन प्रिय तथा धूम्रवर्ण कपिल केशों वाला होता है ॥ ३ ॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला कोमल, अल्पभाषी, तृषातुर, ऊँची नाक वाला, रक्त-गौर वर्ण, हिरण जैसे नेत्रों वाला, नीले रंग के वस्त्र पहिनने वाला, चतुर तथा नीतिज्ञ होता है ॥ ४ ॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला रूक्ष केशों वाला, व्यस्त अङ्गों वाला, गौर-श्याम वर्ण, स्वर्ण प्रभातुल्य, श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, विदेशों में रुचि रखने वाला, शिल्प-प्रेमी तथा मद्यपान में रुचि रखने वाला होता है ॥ ५ ॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला श्वेत-गौर वर्ण, मोटे शरीर एवं सुन्दर मुख वाला, सुन्दर नेत्रों वाला, नीतिज्ञ, वेदव्रती एवं देवोपासक होता है ॥ ६ ॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला लम्बे शरीर वाला, ताम्रवर्ण नेत्रों तथा देह वाला, प्रसिद्ध, महापराक्रमी, मोटी नासिका तथा मोटे होठों वाला, उद्धत वाणी बोलने वाला, सुन्दर तथा पिंगल केशों वाला होता है ॥ ७ ॥ इति कुम्भ सप्तांश फलम् ॥

अथ मीन सप्तांश फलम् ॥ स्वक्षः सुप्रोणदशनः कुवलयदलप्रभः सुमतिः। श्रुतिसत्वरतः स्वच्छो मीनादि सप्तमे भागे ॥ १ ॥ धूर्तांकुराकणतनु स्तनुरोमसुखश्च कर कंजौ। क्षुधिवैरिहा द्वितीये झषसप्तांशे सुदृढसत्वः ॥ २ ॥ पृथु सुमुखाख्यो वृद्धोपचितांगो गीतविद्विनीतश्च। सुभ्रुनासाकेशो झषसप्तांशे तृतीये

भृ० सं० २२५

भा० टी०

च ॥३॥ मंत्री सुनिश्चितार्थः पूर्णास्योवल्गुवाक् सुबुद्धिश्च। झष तूर्ये सप्तांशे पलाशदलवद्विभक्ताङ्गः ॥ ४॥ गौरप्रभारुण वर्णो नीलोत्पलदृङ् मृदुः शुचिर्दक्षः। मांसल वक्त्रतनुर्झष पंचम सप्तांशके क्षांतः ॥५॥ धर्मयुग्दक्षो वारिजदलवर्णनिभो विवृत्त देहः। पृथु सुदृगं सदशनो मीनर्क्षे षष्ठ सप्तांशे ॥ ६॥ रूक्षांगो मलिनरूपः भग्ननसो विविक्तदृष्टिश्च। जिह्मोन शुद्धवेषो झषराशौ चांत्य सप्तांशे ॥ ७॥ इति मीनः ॥ टीका ॥ मीन राशि के प्रथम सप्तांश में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर नेत्र एवं नासिका वाला, सुन्दर दाँतों वाला, कमल-दल तुल्य आभावान्, श्रेष्ठ बुद्धि सम्पन्न, वेदसारज्ञ तथा निर्मल स्वभाव का होता है ॥ १॥ मीन के दूसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला आम की नवीन कोंपलों के रंग की भाँति लाल वर्ण वाला, छोटे रोम तथा छोटे मुख एवं हाथों वाला, युद्ध में शत्रुओं का संहार करने वाला एवं दृढ़ पराक्रमी होता है ॥ २॥ तीसरे सप्तांश में जन्म लेने वाला मोटे तथा सुन्दर मुख वाला, वृद्ध तुल्य, व्यस्त अङ्गों वाला, गन्धर्व-विद्या (संगीत) का जानकार, नीतिज्ञ, सुन्दर भौंहें, सुन्दर नासिका तथा सुन्दर केशों वाला होता है ॥ ३॥ चौथे सप्तांश में जन्म लेने वाला मंत्री, अर्थ का तत्त्व जानने वाला, गोल मुख वाला, सुन्दर वाणी वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान् तथा पलाश पत्र की भाँति भिन्न-भिन्न अङ्गों वाला होता है ॥ ४॥ पाँचवें सप्तांश में जन्म लेने वाला गौर प्रभायुक्त लाल वर्ण वाला, नील-कमल जैसे नेत्रों वाला, कोमल, पवित्र, चतुर, मांसल एवं पुष्ट मुखवाला तथा क्षमाशील होता है ॥ ५॥ छठे सप्तांश में जन्म लेने वाला धर्मयुक्त, चतुर, कमलदल जैसे वर्ण वाला; गोल शरीर, बड़ी आँखें, पुष्ट कंधे तथा दृढ़ दाँतों वाला होता है ॥ ६॥ सातवें सप्तांश में जन्म लेने वाला रूक्ष अङ्गों वाला, मलिन स्वरूप, दबी नासिका वाला, पवित्र दृष्टि वाला, निष्कपट तथा शुद्ध वेष वाला होता है ॥ ७॥ इति मीन सप्तांश फलम् ॥

अथ ग्रह सप्तांश फलम् ॥ शूरः प्रचण्डः स्थिर सम्य कर्मा सप्तांशकेऽर्कस्य बली प्रसिद्धः। शुचिर्मृदुर्धर्म परो विनीतो रतिप्रियः स्याच्छशिनः सुधीश्च ॥ १॥ दुर्मर्षणः सत्व बलाभिमानी स्यात्सप्तभागे क्षितिनंदनस्य।

कविः कथाशिल्प कलाभिरामो विद्वान्सुवाक्यो निपुणो बुधस्य ॥ २॥ विशारदः स्यात्स्थिर सत्व बुद्धिर्गुरोर्मतो ज्ञानवतां वरिष्ठः। कामी विलासी रतिहास्य लीला गन्धर्व गीताभिरतिर्भृगोःस्यात् ॥ ३॥ मूर्खोऽलसो जिह्ममति र्विकर्मा सौरस्य पापाभिरतो नरः स्यात्। स्वक्षेत्र नीचोच्चविधानि यानि ज्ञेयानि चैषां तु फलानि तानि॥४॥ इति॥ टीका॥ यवनाचार्य के मतानुसार जो मनुष्य 'सूर्य' के सप्तांश में जन्म लेता है, वह शूर-वीर, अत्यन्त तेजस्वी, स्थिर-बुद्धि सभा-कर्मी, प्रसिद्ध तथा बलवान् होता है। 'चन्द्रमा' के सप्तांश में जन्म लेने वाला पवित्र, बारम्बार धर्म-कर्म करने वाला, विनम्र तथा रति-प्रेमी होता है ॥१॥ 'मंगल' के सप्तांश में जन्म लेने वाला अत्यन्त क्रोधी एवं पराक्रम पर अभिमान करने वाला होता है। 'बुध' के सप्तांश में जन्म लेने वाला कवि, कथाकार, शिल्पज्ञ, विद्यावान्, श्रेष्ठ वाक्य कहने वाला तथा चतुर होता है ॥२॥ 'गुरु' के सप्तांश में जन्म लेने वाला अत्यन्त चतुर, स्थिर पराक्रमी, स्थिर बुद्धि तथा ज्ञानी जनों में श्रेष्ठ होता है। 'शुक्र' के सप्तांश में जन्म लेने वाला कामी, विलासी, क्रीड़ा प्रेमी, हास्य-कौतुकी एवं गन्धर्व विद्या में प्रीति रखने वाला होता है ॥३॥ 'शनि' के सप्तांश में जन्म लेने वाला मूर्ख, आलसी, खोटे कर्म करने वाला, कपटी तथा पाप में रत रहने वाला होता है। जो ग्रह अपनी उच्चराशि, मित्र राशि अथवा स्वराशि में स्थित होता है, वह यथार्थ श्रेष्ठ फल को करता है तथा जो ग्रह नीच राशि में अथवा शत्रु राशि में होता है, वह नेष्ट फल करता है ॥४॥ इति ग्रह सप्तांश फलम् ॥

अथ चन्द्र राशि फलम् ॥ तत्रादौ मेष राशि फलम् ॥ लोलनेत्रः सदा रोगी धर्मार्थकृतनिश्चयः। पृथु जङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः॥ कामिनी हृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि। चण्डकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः॥१॥ टीका॥ अब चन्द्र राशि का फल कहते हैं। जो मनुष्य 'मेष' राशि में जन्म लेता है, वह चंचल नेत्रों वाला, नित्य रोगी, धर्म तथा धन का उपार्जन करने वाला, स्थूल जाँघों वाला, कृतघ्न, पाप-रहित, राज्य द्वारा सम्मानित, स्त्रियों के हृदय को आनन्द दायक, दानी, पानी से डरने वाला एवं प्रचण्ड कर्म करने के बाद अन्त में नम्र होने वाला

होता है ॥ १॥ वृष राशि फलम् ॥ भोगी दाता शुचिर्दक्षो महासत्त्वो महामतिः। धनी विलासी तेजस्वी सुमित्रश्च वृषे भवेत् ॥२॥ टीका ॥ 'वृष' राशि में जन्म लेने वाला भोगी, दाता, पवित्र, दक्ष, महाबली, महाबुद्धिमान्, धनी, विलासी, तेजस्वी ~~तथा श्रेष्ठ मित्रों~~ वाला होता है ॥ २॥ मिथुन राशि फलम् ॥ मृदुवाक्यो लोल दृष्टिर्दयालुर्मैथुनप्रियः। गान्धर्ववित् कासरोगी कीर्तिभागी धनी गुणी ॥ गौरो दीर्घः पटुर्वक्ता मेधावी च दृढ़ व्रतः। समर्थो न्यायवादी च जायते मिथुने जनः ॥ ३॥ टीका ॥ 'मिथुन' राशि में जन्म लेने वाला मनुष्य प्रियवादी, सुन्दर चंचल दृष्टि वाला, दयालु, मैथुन-प्रेमी, संगीतज्ञ, कासरोगी, कीर्तिमान्, धनी, गुणी, गौर वर्ण, लम्बे शरीर वाला, कुशल वक्ता, मेधावी, दृढ़व्रती, समर्थ तथा न्यायवादी होता है ॥ ४॥ अथ कर्क राशि फलम् ॥ कार्यकारी धनी शूरो धर्मिष्ठो गुरुवत्सलः। शिरोरोगी महाबुद्धिः कृशाङ्गः कृत्य वित्तमः ॥ प्रवासशीलः कोपाढ्यो ऽबलो दुःखी सुमित्रकः। अनासक्तो गृहे वक्रः कर्कराशौ भवेन्नरः ॥ ४॥ टीका ॥ 'कर्क' राशि में जन्म लेने वाला कार्यपटु, धनी, शूर, धर्मात्मा, गुरुभक्त, मस्तक-रोगी, महाबुद्धिमान्, दुर्बलशरीर वाला, कार्यों को जानने वाला, प्रवासी, धनी, अल्पबली, दुःखी, अच्छे मित्रों वाला, अपने घर में अनासक्त तथा कुटिल स्वभाव का होता है ॥ ४॥ अथ सिंह राशि फलम् ॥ क्षमायुक्तः क्रियासक्तो मद्य-मांस रतः सदा। देशभ्रमण शीलश्च शीतभीतः सुमित्रकः। विनयी शीघ्रकोपी च जननी पितृवत्सलः। व्यसनी प्रकटो लोके सिंहराशौ भवेन्नरः ॥५॥ टीका ॥ 'सिंह' राशि में जन्म लेने वाला क्षमाशील, क्रियासक्त, मद्य-मांससेवी, देशभ्रमण करने वाला, ठंड से डरने वाला अच्छे मित्रों वाला, विनम्र, शीघ्र क्रुद्ध होजाने वाला, माता-पिता का भक्त, व्यसनी एवं लोक-विख्यात होता है ॥ ५॥ अथ कन्या राशि फलम् ॥ विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः। दाता दक्षः कविर्वृद्धो वेदशास्त्र परायणः ॥ सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः। प्रवासशीलः स्त्रीदुःखी कन्याराशौ प्रजायते ॥ ६॥ टीका ॥ 'कन्या' राशि में जन्म लेने वाला विलासी, मित्रों को आनन्द देने वाला, सुन्दर, धर्मात्मा, दानी, दक्ष, कवि, वृद्धतुल्य, वेद-शास्त्र परायण, सबलोगों को प्रिय, नाटक तथा सङ्गीत के व्यसन में निरत, प्रवासी तथा स्त्री से दुःखी होता है ॥

६॥ अथ तुलाराशि फलम् ॥ अस्थान रोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः । चलाक्षश्चल लक्ष्मीको गृहमध्ये ऽतिविक्रमः ॥ वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः । प्रवासी सुहृदामिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः ॥७॥ टीका ॥ 'तुला' राशि में जन्म लेने वाला अकारण तथा असमय में रोष करने वाला, दुःखी, मृदुभाषी, कृपालु, चंचल नेत्रों वाला, अस्थिर धन वाला, घर में पराक्रम दिखाने वाला, व्यवसाय-कुशल, देवताओं का पूजक, मित्रवत्सल, प्रवासी एवं बन्धुओं को प्रिय होता है ॥७॥ अथ वृश्चिक राशि फलम् ॥ बाल्यप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिङ्गल लोचनः । परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत् ॥ साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्टधीः । धूर्तश्चौर कलादक्षो वृश्चिके जायते नरः ॥ ८॥ टीका ॥ 'वृश्चिक' राशि में जन्म लेने वाला बाल्यकाल से ही परदेश में रहने वाला, क्रूरात्मा, शूर, पिंगल वर्ण नेत्रों वाला, पर-स्त्री-गामी, मानी, निष्ठुर अपने लोगों के लिए होता है। ऐसा व्यक्ति साहसी, धनी, अपनी माता के प्रति भी दुर्बुद्धि रखने वाला, धूर्त तथा चोरी की कला में दक्ष होता है ॥ ८॥ अथ धनुराशि फलम् ॥ शूरः सत्यधिया युक्तः सात्विको जननन्दनः । शिल्प विज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः ॥ मानी चरित्र सम्पन्नो ललितः प्रियभाषकः । तेजस्वी स्थूल देहश्च धनुराशि भवो नरः ॥ ९॥ टीका ॥ 'धनु' राशि में जन्म लेने वाला शूर, सद्बुद्धियुक्त, सात्विक, लोगों को आनन्द देने वाला, शिल्प-विज्ञानी, धनी, सुन्दर स्त्री वाला, मानी, सच्चरित्र, सुन्दर, प्रियभाषी, तेजस्वी, स्थूल शरीर वाला होता है ॥ ९॥ अथ मकर राशि फलम् ॥ कुले हीनो वशो स्त्रीणां पण्डितःपरिवादकः । निन्दको ललना ग्राह्यः पुत्राढ्यो मातृवत्सलः ॥ धनी त्यागी सुभृत्यश्च दयालुर्बहुबान्धवः । परिचिन्तित सौख्यश्च मकरे जायते नरः ॥ १०॥ टीका ॥ 'मकर' राशि में जन्म लेने वाला अपने कुल में हीन, स्त्रियों के वश में रहने वाला, पण्डितों से विवाद करने वाला, निन्दक, स्त्रियों का प्रिय, पुत्रवान्, माता का प्रिय, धनी, त्यागी, श्रेष्ठ सेवकों वाला, दयालु, अनेक मित्रों-बन्धुओं वाला तथा दूसरों से सुख पाने वाला होता है ॥ १०॥ अथ कुम्भ राशि फलम् ॥ दाताऽलसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनेश्वरः । शुभदृष्टिः सदा सौम्यो धन विद्या कृतोद्यमः ॥ पुण्यात्मा स्नेह

युक्तश्च स्वोपार्जित धनान्वितः । शालूरकुक्षिर्निर्भीकः कुम्भ राशौ प्रजापते ॥ ११॥ टीका ॥ कुम्भ राशि में जन्म लेनेवा-
ला दानी, आलसी, कृतघ्न, हाथी-घोड़ा-धन-सम्पन्न, शुभदृष्टि वाला, सदैव सौम्य स्वभाव वाला, धन और
विद्या लाभ के लिए निरन्तर प्रयत्नशील, पुण्यात्मा, स्नेह युक्त, स्वउपार्जित धन से धनी, मेढ़क जैसे पेट वाला
तथा निर्भीक (निडर) होता है ॥ ११॥ अथ मीन राशि फलम् ॥ गम्भीर चेष्टितः शूरः पटुवाग्यो नरोत्तमः । कोप
नः कृपणो ज्ञानी गुणपूज्यः कुलप्रियः ॥ सुरसेवी शीघ्रगामी गान्धर्वकुशलः शुभः । मीनराशौ समुत्पन्नो
मानवो बन्धुवत्सलः ॥ १२॥ टीका ॥ 'मीन' राशि में जन्म लेने वाला गंभीर चेष्टा वाला, शूर-वीर, वाक्पटु, मनुष्यों
में श्रेष्ठ, क्रोधी, कृपण, ज्ञानी, गुणों के कारण पूजनीय, कुल में प्रिय, देवाराधक, शीघ्रता से चलने वाला,
सङ्गीत विद्या में प्रवीण, शुभ चरित्र वाला तथा बन्धु-वत्सल होता है ॥ १२॥ इति मीनराशि फलम् ॥

टिप्पणी - जब चन्द्रमा बली हो, तब चन्द्रराशिगत नवांश का फल होता है। चन्द्रराशिगत नवांश से जातक
के वर्ण, स्वभाव, स्वरूप आदि लक्षणों का वर्णन आगे किया जाता है। जब पूर्ण बली चन्द्रमा हो अथवा नवांशपति
बली हो, तभी यह फल घटित होता है ॥

अथ चन्द्रराशिगत नवांश फलम् । तत्रादौ मेष नवांश फलम् ॥ मेषेऽजांशोजमुखस्तनुनासाग्रः कृशोऽल्प
रोमा च । चण्डध्वनिः शशांके कृशसंकुचिताक्षपांगश्च ॥१॥ दीर्घास्यगलः श्यामः कृशांघ्रिः स्फुटेक्षणोंबुदवाक् । नत
पृथुललाटजत्रुणि गुर्वं सक्रिये वृषभभागे ॥२॥ रोमन्यस्तातनुजां सोवाक् पण्डितः सरोमांसः । कृश जंघाजानुरालुप्तकुंत-
लोऽजेनमिथुनांशे ॥३॥ भ्रांताननदृक् खंजो रक्तवपुर्ह्रस्वभालनासश्च । अटनः खरांघ्रिरोमः कृशत्वचाढ्यः क्रिये
चतुर्थांशे ॥४॥ हयदृग्गजाकृति शिरः पीनो वृत्तोग्रमूर्तिरल्पकचः । खरवक्त्रांघ्रिस्थक्रियेसिंहांशे पृथुनसोललाटश्च ॥
५॥ मृद्वात्मवान्वपुष्मान्स्फुटाग्रनासः स्फुटाग्रहृद्दंसः । यज्ञाग्निकर्मनिरतः कृशः सुनिपुणो भवेत्षष्ठे ॥६॥ सुनसः
कृशोऽसिताक्षो दूर्वांकुर सन्निभो विलास तनुः । लब्धधनोजसप्तमभागेनारीरतः शांतः ॥७॥ वानरमुखः प्रवक्ताखर

त्वगुन्नततनुश्च गुह्यगदः। हिंसानृतघातरतः सहृत्प्रियो गुरुस्सदाष्टमजः॥८॥ दीर्घः कृशो विहारी व्यस्तललाट श्च वो ष्ट वदनश्च। बहुवाग् जुगुप्स कोपी विद्वान्स्यान्मेषनवमांशे॥९॥ इति मेषः॥ टीका॥ यदि चन्द्रमा मेष के प्रथम नवांश में स्थित हो तो उस समय में जन्म लेने वाला मनुष्य शेज-मुख, छोटी नाक, कृश-शरीर, अल्प रोम वाला, प्रचण्ड स्वर वाला तथा संकुचित नेत्रों वाला होता है॥१॥ द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला लम्बे मुख, लम्बे कण्ठ, कोमल अंग, पतली जाँघों तथा विशाल नेत्रों वाला होता है। वह बकरा की भाँति स्वर वाला, स्थूल ललाट, कठोर हड्डी तथा बड़े कंधों वाला होता है॥२॥ तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला बहुत रोमों वाला, छोटे क़द वाला, छोटी भुजाओं वाला, वाक्पटु, अधिक रोम युक्त कंधों वाला, पतली जाँघों तथा जानुओं वाला एवं मस्तक पर अल्प केशों वाला होता है॥३॥ चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला प्रांत तुल्य मुख एवं दृष्टि वाला, लँगड़ा, लालवर्ण के शरीर वाला, छोटे मस्तक तथा छोटी नाक वाला, भ्रमणशील, कठोर पाँव एवं कठोर रोमों वाला तथा पतली त्वचा वाला होता है॥४॥ पंचम नवांश में जन्म लेने वाला घोड़े जैसी आँखों वाला, हाथी जैसे विशाल सिर वाला, पुष्ट एवं गोल शरीर वाला, क्रूरमूर्ति, अल्प केशों वाला, कठोर मुख तथा कठोर पाँवों वाला एवं बड़ी नासिका तथा बड़े मस्तक वाला होता है॥५॥ षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला कोमल-हृदय, सुन्दर शरीर, ऊँची नाक, बड़े कंधे एवं कृश शरीर वाला, यज्ञ तथा अग्निहोत्रादि करने वाला एवं चतुर होता है॥६॥ सप्तम नवांश में जन्म लेनेवाला सुन्दर नासिका, काले नेत्र एवं दूर्वाङ्कुर जैसे वर्ण वाला, विलासी, यती, अपनी स्त्री में रत तथा शान्तस्वभाव वाला होता है॥७॥ अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला वानर जैसे-शरीर वाला, बहुत बकवादी, कठोर त्वचा एवं उन्नत शरीर वाला, गुह्यरोगी, हिंसक, मिथ्यावादी, घातक, मित्रों को प्रिय तथा क्रूर स्वभाव वाला होता है॥८॥ नवम नवांश में जन्म लेने वाला लम्बा, टेढ़े मुखवाला, कृश-शरीर, टेढ़े मस्तक, टेढ़े होंठ तथा टेढ़े कानों वाला, विवाद करनेवाला, सरल, क्रोधी तथा विद्यावान् होता है॥ इति चंद्रराशिगत मेष नवांश फलम्॥

अथ चन्द्रराशि गत वृष नवांश फलम् ।। असित सम्रांगो विषमेक्षणो विलुब्धोन्य कर्म कृन्नीचः । तत्पूर्वार्द्धे सुख प्रकृति विरुद्धो वृष प्रथम भागे च ।। १ ।। पृथुवदनांस श्रवणो गंभीर दृगल्प धीरा नृतभाषी। अलसो विरुद्ध दारः प्रतिकूलो वृष द्वितीयांशे ।। २ ।। गौरांगः स्ताब्धाक्षो बहुभाषी वित्त शील संयुक्तः । धर्मज्ञो बहुभृत्यो वृषभ तृतीये भवेन्मनुजः ।। ३ ।। ह्रस्वोटनः सरोषो मेषाक्षः पिंगलस्त्वमर्षयुतः । परधनहरणाभिरतश्चतुर्थ भागे च वृषभस्य ।। ४ ।। परिमंडलायताक्षः श्यामतनुः स्त्रीष्वतिप्रसक्तश्च । वृषभस्य पंचमांशे बहु प्रलापी विरुद्ध दाररतः ।। ५ ।। मृद्वात्मवान् वपुष्मान्स्फुराग्रनासः स्फुराग्र वृहद्दंसः । यत्नानि कर्मनिरतः कृशः सुनिपुणो भवेत्षष्ठे ।। ६ ।। मृतनवयुवतिः पुरतो मनाग्विलं वितन सोमिताक्षः स्यात् । उद्धद्धांगः स्वजनद्वेषी गुरुपादः सूक्ष्म केशश्च ।। ७ ।। व्याघ्रेक्षणः सुदर्शनश्चजितः स्फुट नासिकोल्पकर्मा स्यात् । कृव्याच्छीलः केशाग्र नखैः सुखैस्तथाष्टमजः ।। ८ ।। मंदस्मितोल्पसत्वो भीरुः समरुचिरमूर्ति कितवः स्यात् । अनिश्चित धनः प्रसिद्धः कृश स्तब्धस्तात्प्रलाप्यंते ।। ९ ।। इति वृषः ।। टीका ।। वृष के प्रथम नवांश में जन्म लेनेवाला मनुष्य कृष्णवर्ण शरीर, खोटी दृष्टि वाला, लोभी, पराया काम करने वाला, नीच, पूर्वावस्था में सुख एवं स्वभाव का विरोधी होता है ।। १ ।। वृष के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला मोटे मुख वाला, मोटे कानों वाला, गंभीर दृष्टि वाला, थोड़ी बुद्धि वाला, मिथ्यावादी, आलसी, विरुद्ध-स्त्री वाला तथा उल्टे स्वभाव वाला होता है ।। २ ।। वृष के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण, अनम्र नेत्रों वाला, बहुत बातें करने वाला, धनी, सुन्दर स्वभाव वाला, धर्मज्ञ एवं अनेक सेवकों वाला होता है ।। ३ ।। वृष के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला छोटे शरीर वाला, भ्रमणशील, क्रोधी, भेड़ जैसी आँखों वाला, पिंगल वर्ण तथा पराये धन का अपहरण करने वाला होता है ।। ४ ।। वृष के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला गोल तथा विशाल नेत्रों वाला, सुन्दर शरीर वाला, स्त्रियों में अत्यन्त आसक्त बहुत बोलने वाला तथा खोटी-स्त्री में अनुरक्त रहने वाला होता है ।। ५ ।। वृष के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला कोमल-हृदय वाला, सुन्दर शरीर एवं कृश देह वाला, ऊँची नासिका वाला,

बड़े कंधों वाला, यज्ञ तथा अग्निहोत्र करने वाला, कृश-शरीर वाला तथा चतुर होता है॥ ६॥ वृष के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाले मनुष्य की नवयुवती पत्नी की मृत्यु हो जाती है। वह मौनावलम्बी, लम्बी नाक तथा सम नेत्रों वाला, बंधन को प्राप्त होने वाला, मित्रों का शत्रु, बड़े पाँवों वाला तथा सूक्ष्म केशों वाला होता है॥ ७॥ वृष के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला शेर की भाँति क्रूर दृष्टि वाला, सुन्दर स्वरूपवान्, चंचल, ऊँची नासिका वाला, अल्प कर्मों को करने वाला, राक्षसी-स्वभाव का तथा बड़े नख एवं केशों वाला होता है॥८॥ वृष के नवम नवांश में जन्म लेने वाला स्मित-हास्य, अल्पपराक्रमी, भीरु, समरुचि शरीर वाला, धूर्त, अनिश्चित धनी, प्रसिद्ध, अधोभाग में कृश तथा बहुत बोलने वाला होता है॥ ९॥ इति चन्द्र राशिगत वृष नवांश फलम्॥

अथ चन्द्र राशिगत मिथुन नवांश फलम्॥ रोमसभुजो सिताक्षः कृशांघ्रिहस्तास्तथोच्चनसः। दूर्वाकांडश्यामो मिथुने प्रथमांशजः पुरुषः॥ १॥ पटुशीर्षश्च विकर्मा घातरुचिर्मध्यलग्नकोणः स्यात्। बहुभाषी बहुचेष्टो द्वितीयभागे सुविग्रहाधिपतिः॥ २॥ गौरोऽतिरक्तनयनः सुनासिकः समतनुः सुमेधः स्यात्। दीर्घनिनोऽसितभ्रूर्वाक्चतुरस्त्वथ तृतीयेंशे॥ ३॥ कुब्जललाटः कामी नीलोत्पलमूर्ति विपुलवक्षः स्यात्। सितदंतो मृगवक्त्रः प्रशस्तरोमांचितश्चतुर्थेंशे॥ ४॥ पृथुलोचनो बृहत्स्फिक्पीवरवक्षोभुजः खलः कालः। स्थूलशिरामायावी सितांबुजननस्तु पंचमजः॥ ५॥ मध्वेक्षणः प्रलापी व्यस्तललाटहृदयः समः सुतनुः। कितवश्च रुधिरोष्ठरदस्तु षष्ठे तु सत्वयुतः॥ ६॥ ताम्रारुणोरुजठरः समुन्नताक्षो विशालवक्षः स्यात्। शिक्षास्त्रशिल्पनिरतो हास्यरतिः सप्तमे जातः॥ ७॥ श्यामो गुरुर्मनस्वी लज्जितो मधुराभिधानश्च। व्यस्तविवृद्धशरीरो दीर्घोऽसितदृक् कलाविदष्टमजः॥ ८॥ वृत्तासितदृक् सुतनुः स्निग्धो मेधावला रतिः स्यात्। विज्ञानकाव्यनिरतो नवमांशे नाम वै चन्द्रेष्ठः॥ ९॥ इति मिथुनः॥

टीका॥ चन्द्रराशिगत मिथुन के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य रोम-रहित भुजाओं वाला, काले नेत्र, कृश-पाद तथा हाथ, ऊँची नासिका वाला एवं दूर्वादल की भाँति श्याम वर्ण वाला होता है॥ १॥ मिथुन के

द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला घड़े जैसे सिर वाला, खोटे कर्म करने वाला, घात करने का इच्छुक, चपटी नाक वाला, बहुत बोलने वाला, अधिक चेष्टावान् तथा युद्ध करने में प्रमुख होता है ॥ २॥ मिथुन के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण, अत्यन्त लाल नेत्रों वाला, श्रेष्ठ नासिका वाला, सम-शरीर, श्रेष्ठ बुद्धि, लम्बे मुख तथा काली भौंहों वाला एवं वाक्चतुर होता है ॥३॥ मिथुन के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला सुन्दर भौंहों वाला, सुन्दर मस्तक वाला, कामी, नीलकमल की भाँति सुन्दर शरीर वाला, बड़ी छाती एवं श्वेत दाँतों वाला, हरिण जैसे मुखवाला तथा श्रेष्ठ रोमावलीयुक्त होता है ॥ ४॥ मिथुन के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला मोटे नेत्रों वाला, बड़े कटि मांस पिण्डों वाला, पुष्ट छातीवाला, पुष्ट भुजाओं वाला, दुष्ट, कृष्णवर्ण, मोटे सिर वाला, मायावी तथा श्वेतकमल जैसे नेत्रों वाला होता है ॥ ५॥ मिथुन के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला मधुवर्ण नेत्रों वाला, प्रलापी, उल्टे माथे वाला अर्थात् उल्टी बुद्धिवाला, उल्टे हृदय वाला, सम-अङ्गों वाला, श्रेष्ठ शरीर वाला, धूर्त, लाल होठ एवं लाल दाँतों वाला तथा पराक्रमी होता है ॥ ६॥ मिथुन के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला ताम्रवर्ण शरीर वाला, बड़े पैर वाला, सुन्दर तथा ऊँचे नेत्रों वाला, बड़ी छाती वाला, शिथिल, अस्त्र-शस्त्र का ज्ञाता, शिल्पज्ञ एवं हास्य-रत होता है ॥ ७॥ मिथुन के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला तरुण अवस्था वाला, भारी शरीर वाला, मनस्वी, सुन्दर, मीठी बोली बोलने वाला, उल्टी बुद्धि वाला, बड़े शरीरवाला, श्वेत रंग के बड़े नेत्रों वाला, और कलाविद् होता है ॥८॥ मिथुन के नवम नवांश में जन्म लेने वाला गोल तथा काले नेत्रों वाला, सुन्दर शरीरवाला, स्निग्ध, बुद्धि-बली, रतिज्ञ, विद्यावान्, काव्य-निरत तथा श्रेष्ठ पुरुष होता है ॥ ९॥ इति चन्द्रराशि मिथुन नवांश फलम् ॥

अथ चन्द्रराशि कर्क नवांश फलम् ॥ निर्मलवारि सुगौरः सुमूर्द्धजः स्याद्विशालरक्ताक्षः । मंडल मुखोन्नतांसस्तनु वक्षाना कुलीराद्ये ॥ १॥ रक्तच्छवीरणोग्रः कलिप्रियः स्याद्विशाल मुखनेत्रः । कर्किणि द्वितीयभागे

त्यागी कृशजानुजंघश्च ॥ २ ॥ गौरः सुनेत्रो वाग्मी प्रज्ञानवान् स्थूलयोषिदंगश्च । धीमान्मृदुकर्मरतस्तृतीयभागे भवेद
लसः ॥ ३ ॥ श्यामश्छविर्नतभ्रूर्विशालपीनोच्चतनुः सुनासाक्षः । क्षीणाग्ररदो दाता स्वजातिकार्ये शठः चतुर्थे स्यात् ॥ ४ ॥
पृथुकुक्षिरुग्रः कर्कशी मध्यांशे यानपो विकर्मी च । घटशिरोल्पमतिर्युतोनताननो दीर्घदृक् चलत्सुभ्रूः ॥ ५ ॥ दीर्घविशाल
शरीरः प्रशस्तनयनो बहुप्रतापः स्यात् । गौरः सुवंशघोणो वक्ता षष्ठे च पृथुदंतः ॥ ६ ॥ भिन्नशिरोरुहरोमाचलहनुः
स्यात् सिरालरोमजंघश्च । परगृहनिवासशीलः काकाकारश्च सप्तमजः ॥ ७ ॥ घटशिरः कुशिल्पी कृशास्य मुखजानुजंघः
कुमतिः । मध्यविलग्ननसः स्यादष्टमभागे तु कृष्णश्च ॥ ८ ॥ गौरोऽब्जसमनयनो गुरूदरः पृथुपीनवक्षः स्यात् । दीर्घहनुर्लं-
बोष्ठो महोदरः सुकृशजानुगुल्फोंत्ये ॥ ९ ॥ इति कर्कटः ॥ टीका ॥ कर्क राशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य
निर्मल जल जैसे गौरवर्ण का, सुन्दर केश तथा विशाल नेत्रों वाला, गोल मुख तथा उन्नत वक्षःस्थल वाला होता है ॥ १ ॥
द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला लालप्रभा वाला, अत्यन्त क्रूर युद्ध-प्रिय, बिल्ली जैसे मुँह वाला और वैसे ही नेत्रों
वाला, त्यागी, कृशजानु एवं कृश जंघा वाला होता है ॥ २ ॥ तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला गौर वर्ण, सुन्दर नेत्रों
वाला, सुवक्ता विद्यावान्, स्थूल स्त्री वाला, स्थूल अङ्गों वाला, बुद्धिमान्, कोमल कर्म करने वाला तथा आलसी
होता है ॥ ३ ॥ चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला तरुण प्रभावान्, झुकी हुई भौंहों वाला, विशाल और पुष्ट उच्च
शरीर वाला, श्रेष्ठ नासिका एवं नेत्रों वाला, आगे के दाँतों से रहित, दानी तथा स्वजाति सम्बन्धी कार्य करने
में शठ होता है ॥ ४ ॥ कर्क के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला भारी कुक्षि वाला, क्रूर, वाहनों का स्वामी, खोटे
कर्म करने वाला, घड़े जैसे सिर वाला, नीचे झुके हुए मुख वाला, लम्बे नेत्रों वाला एवं चंचल तथा सुन्दर भौंहों
वाला होता है ॥ ५ ॥ कर्क के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला लम्बे और विशाल शरीर वाला, श्रेष्ठ नेत्रों वाला,
अत्यन्त प्रतापी, गौरवर्ण वंश वाला, सुन्दर नासिका वाला, सुवक्ता तथा मोटे दाँतों वाला होता है ॥ ६ ॥ कर्क के
सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला बिखरे हुए केशों वाला, चंचल ठोड़ी, अधिक नाड़ियों, रोमयुक्त जाँघों

वाला, दूसरे के घर में रहने वाला तथा कौए जैसी आकृति वाला होता है ॥ ७ ॥ कर्क के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला घोड़े जैसे सिर वाला, कुशिल्पी, घोड़े जैसे मुँह वाला, कृश जानु और जंघा वाला, खोटी बुद्धि वाला, चपटी नाक वाला तथा कृष्ण वर्ण होता है ॥ ८ ॥ कर्क के नवम नवांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण, मछली जैसी आँखों वाला, बड़े पेट वाला, मोटी तथा पुष्ट छाती वाला, लम्बी ठोड़ी वाला, लम्बे होठों वाला, बड़े पेट वाला, कृश जानु तथा कृश गुल्फों वाला होता है ॥ ९ ॥ इति चन्द्रराशि कर्क नवांश फलम् ॥

अथ चन्द्रराशि सिंह नवांश फलम् ॥ मन्दोदरः प्रचण्डो रक्तागुनसो बृहच्छिराः शूरः। उन्नत मांसलवक्षः सिंहे प्रथमे भवेद्भागे ॥ १ ॥ उन्नत वित्त ललाटश्चतुरस्रतनु विशाल नेत्र गुरुः। दीर्घभुजोन्नत वक्षः पृथुर-गु घोणो द्वितीयेंशे ॥ २ ॥ रोमचिताधत बाहुश्चकोर नयनः शुभश्चलस्त्यागी। उन्नासिकस्तृतीये स्निग्धतनुबाहुर्वृत्त गलः ॥ ३ ॥ घृतमंडगौरदेहो दीर्घासित लोचनो मृदुशरीरः। भिन्नध्वनिश्चतुर्थे पृथु चरणोऽथेक कुक्षिः स्यात् ॥ ४ ॥ घाटाशिरोल्प केशो सित घोणा क्षश्चलो मशोर्ध्व तनुः। लंबोदरः प्रचंडोदं ष्ट्रोत्कटो ह्यरेर्मध्ये ॥ ५ ॥ स्त्रस्तोल्परोम मूर्त्तिः स्निग्धसमोसित विलोचनो दीर्घः श्यामः। स्त्रीणां चतुरो वाक्चतुरो वाक्य मंडितः षष्ठे ॥ ६ ॥ दीर्घाननः शिरालः पीन हनुः स्त्रीषु दुर्भगः कृष्णः। स्यात्सप्तमेभ स सत्वो रोमचितः कुटिल निष्ठुरभाषी ॥ ७ ॥ उद्धृष्ट वाक् शिरालो विसुहृज्जनोल्पचेष्टः स्यात्। कालः स्थिरः खरांगो विकर्मशीलोष्टमेहरेर्भागे ॥ ८ ॥ लंबभुजः खरवदनो सितनेत्रः सुदृढजंघपार्ष्णि स्यात्। पीडित चक्षुशरीरो दुर्वाक्प्रमोहरौ नवमे ॥ ९ ॥ इति सिंह ॥ टीका ॥ सिंहराशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य मन्दोदर, प्रचण्ड एवं लाल नासिका वाला, बड़ी नाड़ियों वाला, शूर-वीर तथा ऊँची छाती वाला होता है ॥ १ ॥ सिंह के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला ऊँचे और बड़े मस्तक वाला, चतुष्कोण शरीर वाला, विशाल देही, बड़े नेत्रों वाला, लम्बी भुजाओं वाला, उन्नत वक्षःस्थल वाला एवं बड़ी नाक वाला होता है ॥ २ ॥ सिंह के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला अधिक रोमों वाला, विशाल भुजाओं वाला, चकोर जैसे

नेत्रों वाला, सुन्दर, चंचल शरीर वाला, त्यागी, ऊँची नाक वाला, स्निग्ध शरीर एवं भुजाओं वाला तथा गोलगले वाला होता है ॥ ३॥ सिंह के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला घृतमण्ड की भाँति गौर वर्ण, लम्बे तथा काले नेत्रों वाला, कोमल शरीर वाला, भग्न-स्वर, मोटे पाँव तथो मेढ़क जैसी कुक्षियों वाला होता है ॥४॥ सिंह के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला घोड़े जैसे सिर वाला, अल्पकेशी, श्वेत नासिका वाला, श्वेत नेत्रों वाला, ऊर्ध्वभाग में अधिक रोमों वाला, लम्बे उदर वाला, प्रचण्ड तथा बड़ी दाढ़ों वाला होता है ॥५॥ सिंह के षष्ठ नवांश में जन्म लेनेवाला स्रस्त ढीले अङ्गों वाला, थोड़े रोमों वाला, स्निग्ध शरीरवाला, सममूर्त्ति, काले नेत्रों वाला, लम्बे कद वाला, तरुणरूप, स्त्रियों में चतुर, वाक्पटु तथा श्रेष्ठ वाणी वाला होता है ॥६॥ सिंह के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला लम्बे मुख तथा बड़े केशों वाला, पुष्ट ठोड़ी वाला, स्त्रियों में खोटे भाग्य वाला, कृष्णवर्ण, पराक्रमी, अधिक रोमों वाला तथा खोटे कर्म एवं वचन वाला होता है ॥७॥ सिंह के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला ढीठों की भाँति बोलने वाला, अधिक केशों वाला, मित्र-हीन, अल्प-चेष्टावान्, कृष्णवर्ण, स्थिर तथा कठोर अङ्गों वाला तथा कुटिल कर्म एवं स्वभाव वाला होता है ॥८॥ सिंह के नवम नवांश में जन्म लेने वाला लम्बी भुजा तथा कठोर मुख वाला, काले नेत्रों वाला, दृढ़ जाँघों वाला, दृढ़ पार्श्वों वाला, पीड़ित नेत्रों वाला, शरीर-पीड़ायुक्त तथा दूब के समान वर्ण वाला होता है ॥९॥ इति चन्द्र राशि सिंह नवांश फलम् ॥

अथ चन्द्र राशि कन्या नवांश फलम् ॥ वक्रोन्नतपीनांग: सारंगमुखो धनी प्रदाता च। संभोगरुचि: श्याम: कन्या प्रथमांशके जात: ॥१॥ श्यामोप्चट सम कुक्षि: पिशुन: कलहप्रिय: सुगूढवच:। भार्याचपलाचस्या द्वितीय भागे महोदरश्चैव ॥२॥ स्फुट नासिक : स्फुट: स्यात्प्रशस्त समुचित गौरवांस:। वाग्मी सुहृत्तृतीये श्रुतवाक्य: स्त्रीरति: ख्यात: ॥३॥ सुकुमारमूर्ति मधुरोल्परोम दीर्घो विभक्त पृथुबाहु:। आताम्रगौर सुवपुश्चतुर्थजो ध, कृश: सुमूर्धाक्ष: ॥४॥ स्थूलोष्ठ बाहुरुन्नत पीन पृथु शिरामहांस: स्यात्। पंचमज: पृथुवक्षा: पराश्रयो

दृढजंघश्च ॥ ५ ॥ स्निग्धछविः स्ववाक्यः स्रस्ततनुः शास्त्रकृतमतिः प्रचुरः । लिपिलेख्य कलाभिज्ञः सुमतिः षष्ठांश
जो विहारी च ॥ ६ ॥ ह्रस्ववदनोन्नतांसः स्निग्धमृदुः सुजातकेशः स्यात् । सप्तमजः पृथुजठरः पृथुकरचरणोम्बु
भीरुश्च ॥ ७ ॥ सुकुमार गौर दीर्घ देहः शुभदृक् प्रचण्डमानी स्यात् । व्यालंबपीनबाहुः पिंगलरोमोऽष्टमे जातः ॥ ८ ॥
ख्यातो मृदुः सुमूर्त्तिर्विशालनेत्रोऽबलः सदृशसत्वः । चतुरो नवमांशे स्यान्नतांसलेख्यादिविद्वांश्च ॥ ९ ॥ इति कन्या

टीका ॥ कन्याराशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य टेढ़े तथा ऊँचे मुखवाला, पुष्ट अङ्गों वाला, हरिण
जैसे मुख वाला, धनी, दाता, भोगमें रुचि रखने वाला तथा तरुण स्वरूप होता है ॥ १ ॥ कन्या द्वितीय नवांश
में जन्म लेने वाला तरुण स्वरूप, घड़े जैसी कुक्षि वाला, चुगलखोर, कलह-प्रिय, गूढ़ तथा श्रेष्ठ वचन बो-
लने वाला, चंचल-स्त्री वाला तथा बड़े उदर वाला होता है ॥ २ ॥ कन्या के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला बड़ी
नाक तथा बड़े मुँह वाला, सुन्दर गौर वर्ण, श्रेष्ठ भुजा एवं बड़े कंधों वाला, श्रेष्ठ वाणी वाला, मित्रभावी, बात को
गंभीरता पूर्वक सुनने और समझने वाला, स्त्री में प्रीति रखने वाला तथा प्रसिद्ध व्यक्ति होता है ॥ ३ ॥ कन्याके
चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला सुन्दर तथा कोमल स्वरूप वाला, मधुरभाषी, अल्परोमों वाला, लम्बी तथा मोटी
भुजाओं वाला, ताँबे की भाँति लाल वर्णवाला एवं अधोभाग में कृश होता है ॥ ४ ॥ कन्या के पंचम नवांश में जन्म
लेने वाला मोटे होठ तथा मोटी भुजाओं वाला; ऊँचे, पुष्ट तथा मोटे सिर वाला, बड़ी नाड़ियों वाला, बड़ी छाती
वाला, दूसरे के आश्रय में रहने वालातथा बँधी हुई सी जाँघों वाला होता है ॥ ५ ॥ कन्या के षष्ठ नवांशमें
जन्म लेने वाला स्निग्ध प्रभावान्, स्ववाक्य को मानने वाला, ढीले शरीर वाला, शास्त्र कर्त्ता, अत्यन्त बुद्धिमान्
लेखन-कला-विशेषज्ञ एवं मनमौजी होता है ॥ ६ ॥ कन्याके सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला छोटे मुख, उन्नत
स्कंध, स्निग्ध एवं कोमल शरीर, सुन्दर केश, बड़े पेट, मोटे हाथ-पाँवों वाला तथा पानी से डरने वाला होता
होता है ॥ ७ ॥ कन्या के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला सुन्दर तथा कोमल शरीर वाला, गौर वर्ण, लम्बा

सुन्दर दृष्टि वाला, प्रचण्ड, मानी, सर्प की भाँति लम्बी तथा मोटी भुजाओं वाला तथा पिंगल वर्ण रोमों वाला होता है ॥८॥ कन्या के नवम नवांश में जन्म लेने वाला प्रसिद्ध, कोमल तथा सुन्दर शरीर वाला, बड़े नेत्रों वाला, निर्बल, कमजोर हृदय वाला, चतुर, झुके हुए कंधों वाला, लेखक तथा विद्वान् होता है ॥९॥ इति चन्द्रराशि कन्या नवांशफलम् ॥

अथ चन्द्रराशि तुला नवांश फलम् ॥ गौरो विशाल नेत्रः श्लाघ्यो दीर्घाननोऽर्थगोप्ता स्यात् । घनकूर्च पुण्यकुशलस्तुलाधराद्यंशजो जनः ख्यातः ॥ १॥ प्लुत मण्डल नेत्रः स्यात्करालदंतो विलग्नमध्यश्च । विस्तृत रुचि मांसस्ताम्रो सित तरजघनः संहतभ्रूश्च ॥ २॥ गौरो प्रवरदः सुमुखो मधून्नताक्षः कृशोऽति लब्ध यशः । दीर्घ शिरोरुह घोणस्तृतीयजः स्याच्चरणयश्च ॥ ३ ॥ तन्वंसबाहुभीरुर्नतदंत कृशो मृगतरलदृक् च स्यात् । हुस्वनसः सविषादी श्यामो शील श्चतुर्थ जो भवति ॥४॥ गंभीर दृक् शिरालः सुहृत्प्रियः पंचमेऽतिमानी स्यात् । खरकेशत्वक् नेत्रो मध्यविलग्नघोण श्च ॥ ५॥ पीनांसोरुतनुः स्याद्विशाल कुक्षिः सुनासिकावंशः । स्निग्ध नखः सुनयनः षष्ठे शास्त्रार्थ शिक्षावित् ॥ ६॥ रक्तावदातामतिमान् गुरुरल्पतनुर्महाललाट श्च । देडोधस्ताद्विवलः सप्तमजः स्याद्यशस्वी च ॥ ७॥ तुंगांशगंडभोक्ता कठिनः पृथुरजघनोऽसित भ्रूः स्यात् । निर्णीत वाक् प्रशांतः सदक्षः स्कंधमस्तकोष्ठमजः ॥ ८॥ स्वक्षः प्रसन्नगौरः समचारुतनुः पटुः कलानिरतः । दाक्षिण्य हास्य निरतो विट स्वभावो भवेन्नवमे ॥ ९॥ इति तुला ॥ टीका ॥ तुलाराशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, बड़े नेत्रों वाला, श्लाघा योग्य, धन-संचयी, बड़ी दाढ़ी वाला, धर्मात्मा, श्रमशील एवं सुप्रसिद्ध होता है ॥ १॥ तुलाराशि के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला गोल नेत्रों वाला, विकराल दाँतों वाला, शरीर के मध्यभाग में कृश, प्रभायुक्त, लाल ताँबे की भाँति वर्ण वाला, काली जाँघों वाला तथा मिली हुई भौंहों वाला होता है ॥ २॥ तुलाराशि के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण, घोड़े जैसे दाँतों वाला, सुन्दर मुख वाला, मधुवर्ण उन्नत नेत्रों वाला, सुन्दर केशों वाला, बहुत धन पाने वाला, लम्बे केश तथा लम्बी नासिका वाला एवं शरणागत की रक्षा करने वाला होता है ॥३॥ तुला राशि के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला छोटे अङ्ग तथा छोटी भुजाओं वाला, झुके हुए

दाँतों वाला, कृश-शरीर, हरिण जैसी सरल दृष्टि वाला, छोटी नाक वाला, विषाद युक्त, तरुणस्वरूप तथा खोटे स्वभाव वाला होता है॥ ४॥ तुला राशि के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला गंभीर दृष्टि वाला, बड़े केशों वाला, मित्रों को प्रिय, महाबुद्धिमान; कठोर केश, कठोर त्वचा एवं कठोर दृष्टि वाला व चपटी नाक वाला, होता है॥ ५॥ तुलाराशि के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला पुष्ट उरु एवं शरीर वाला, बड़ी कुक्षि वाला, सुन्दर नासिका वाला, श्रेष्ठ वंश वाला, स्निग्ध नखों वाला, नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ तथा शिक्षित होता है॥ ६॥ तुला राशि के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला रक्त-गौर-वर्ण, बड़ा बुद्धिमान भारी तथा छोटी देह वाला, बड़े मस्तक वाला, अधोभाग में निर्बल तथा यशस्वी होता है॥ ७॥ तुलाराशि के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला उन्नत स्कंध एवं गण्डस्थलों वाला, भोगी, कठिन तथा मोटी जाँघों वाला, काली भौंहों वाला, निश्चित वचन कहने वाला, शान्त-स्वभाव, पुष्ट छाती वाला तथा श्रेष्ठ मस्तक वाला होता है॥ ८॥ तुलाराशि के नवम नवांश में जन्म लेने वाला सुन्दर नेत्रों वाला, प्रसन्न मूर्ति, गौरवर्ण, सम-सुन्दर शरीर वाला, चतुर, कलाकार, हास्य-कुशल एवं व्यवसायी-स्वभाव का होता है॥ ९॥ इति चन्द्र राशि तुला नवांश फलम्॥

अथ चन्द्रराशि वृश्चिक नवांश फलम्॥ ह्रस्वोन्नतोष्ठघोणः सुललाटः स्यादृढांगगौरश्च। दर्दुरखलाक्षि शिरोऽस्मे प्रथम नवांशे॥ १॥ गौरः पृथ्वायतदृढबाहुस्ताम्राग्रदृग्द्वितीये स्यात्। उद्वृत्त बलनिर्हंता साहस निरतोऽल्पकेशश्च॥ २॥ प्रांशोदृढांस बाहुः प्रसन्न कोशो विबुद्ध वाक्यः स्यात्। दासीरतो वपुष्मांश्चौरो रुधिराधरोष्ठश्च॥ ३॥ परदार द्रोहरतिः क्षिप्रो धीरश्चतुर्थजो दीर्घः। श्यामोऽसितकेशाक्षः प्रगल्भ पीनोदरो तुंगः॥ ४॥ गंभीराताम्राक्षो भग्न नखः पंचमे विरोध वशः। दृप्तो ह्युदुग्रकर्मा व्यस्त दृढांसो यशस्वी स्यात्॥ ५॥ सुनयः प्रचंडकर्मोष्ठे क्षाल्पकचघनभ्रूश्च। दारित मुख: सिरालः प्रकीर्णरदः सिरावद्वाङ्ः॥ ६॥ निम्नोदर कटि प्लुताक्षः कुरदो दारित मुखो सितो दीर्घः। तनुहनुः पृथुवक्षः सप्तमभागे लिनि सिरालः॥ ७॥ चिपिटाग्रनासिकः स्याद्विस्तीर्ण शिराः स्वबंधु वैरश्च। विभ्रांतदृक् प्रभावी गुरुस्वामि मतोऽष्टमांशकजः॥ ८॥ गौरो भवके करदृक् प्रशांत पिंगाग्रदृक् पीनः।

सत्कर्म रतो दाता गुरुदेवरतोलिनोंतिमेंभागे ॥ ९ ॥ इती वृश्चिकः ॥ टीका ॥ वृश्चिक राशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला
मनुष्य छोटे क़द वाला, ऊँचे होठ और ऊँची नासिका वाला, सुन्दर मस्तक वाला, दृढ़ अङ्गों वाला, गौरवर्ण, मेंढ़क की भाँति
लाल नेत्रों वाला तथा घोड़े के समान सिर वाला होता है ॥ १ ॥ वृश्चिक राशि के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण,
विशाल हृदय और बड़ी भुजाओं वाला, लाल नेत्रों वाला, बड़े बलवानों को मारने वाला, हठी तथा थोड़े केशों वाला होता
है ॥ २ ॥ वृश्चिक राशि के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला चतुर, दृढ़ कंधों तथा भुजाओं वाला, प्रसन्नमूर्ति,
श्रेष्ठ वाक्य कहने वाला, दासी में रत, सुन्दर शरीर वाला, चोर तथा लाल होठों वाला होता है ॥ ३ ॥ वृश्चिक
राशि के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला पर-स्त्री एवं पर-द्रोह में रत, धैर्य-रहित, लम्बे शरीर वाला, तरुण
रूप, श्याम केश तथा श्याम नेत्रों वाला, प्रगल्भ, पुष्ट पेट वाला तथा ऊँचे शरीर वाला होता है ॥ ४ ॥ वृश्चिक
राशि के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला गंभीर, ताँबे की भाँति लालवर्ण वाला, चपटी नाक वाला, उल्टे
बड़े, दृढ़ कंधों वाला, विरोधी, महा अभिमानी, क्रूर कर्म करने वाला तथा यशस्वी होता है ॥ ५ ॥ वृश्चिक राशि के
षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला सुन्दर, नीतिज्ञ, प्रचण्ड कर्म करने वाला, छोटे नेत्रों वाला, थोड़े केशों वाला,
बड़ी भुजाओं, बड़े मुख तथा बड़े सिर वाला, प्रकीर्ण दाँतों वाला तथा नाड़ीबन्धन युक्त अंगों वाला होता है ॥ ६ ॥
वृश्चिक राशि के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला निम्न उदर तथा कटि वाला, मोटे नेत्रों वाला, बुरे दाँतों
वाला, बड़े मुख वाला, कृष्णवर्ण, लम्बा, छोटी ठोड़ी तथा बड़ी छाती वाला होता है ॥ ७ ॥ वृश्चिक के अष्टम नवां-
श में जन्म लेने वाला चपटी नासिका वाला, बड़े सिर वाला, बन्धुओं से वैर करने वाला, शांत-दृष्टि, बहुत
बोलने वाला तथा गुरु की आज्ञा का पालन करने वाला होता है ॥ ८ ॥ वृश्चिक राशि के नवम नवांश में
जन्म लेने वाला गौरवर्ण, मछली जैसी दृष्टि वाला, शान्त चित्त, पिंगलवर्ण नेत्रों वाला, तीव्र दृष्टि सम्पन्न,
पुष्ट, श्रेष्ठ कर्म रत, दानी और गुरु तथा देवताओं का भक्त होता है ॥ इति चतुराशिगत वृश्चिक नवांश फलम् ॥

अथ चन्द्रराशिगत धनु नवांश फलम् ॥ सुबृहन्नसोजदृष्टि: स्फुटाग्रहास: प्रभिन्न रोमा चा गौर: सुबद्धवृषण: चापाद्यंशे प्रचण्ड: स्यात् ॥१॥ प्रोतुंग शिर: स्थिर धीर्विस्तीर्णाक्षो गुरुतरश्च । विकृताग्रनसो दीर्घो महातनु: स्याद्द्वितीयेंऽशे ॥ २॥ शिक्षाशास्त्रार्थमति: प्रगल्भ: सम्पूर्णमूर्ति: सुभश्च । स्त्रीवल्लभो मनस्वी तृतीयजो हास्य शिल्पज्ञ: ॥३॥ दक्षो मधुमंडल दृग्गौर: कच्छपविवृद्ध कुक्षि: स्यात् । प्राह्लोटन: सुकेश: पृथु शुभकीर्तिश्च तुर्यांशे ॥ ४॥ पृथु कर्ण नेत्र वदन: प्रवृद्ध महारि विग्रहो महाभ्रू: स्यात् । पीनोन्नतांसहस्त: पंचम जोरूपरोम दृढबुद्धि: ॥५॥ स्निग्धासिततांत पृथुदृड् महाललाट: सुमूर्ति: काव्यरत: । पृथु पीनमुखो नाषष्टे विद्वान्कथासुरत: ॥६॥ स्यामो दृढो वचस्वी तुंगशिरा: संग्रहानुसंधिरत: । दीर्घो विशालनयनो दाक्षिण्य पटुश्च सप्तमज: ॥ ७॥ चिपिटाग्र नासिक: स्याद्विस्तीर्णशिरा: स्वबंधु वैरश्च । विभ्रांतदृक् प्रभाषी गुरुष्वभिमतोऽष्टमांशकज: ॥८॥ गौरो हयाकृति मुखो दीर्घासितदृस्तथा सुवाक्य: स्यात् । सभ्य: सतांविवादी नवमे जटिलोरुजंघश्च ॥ ९॥ इति धनु: ॥ टीका ॥ चन्द्र राशिगत धनु के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर तथा बड़ी नासिका वाला, बकेर जैसी दृष्टि वाला, स्फुट-हास्य कर्त्ता, भिन्न रोमों वाला, गौरवर्ण, बद्ध वृषण तथा प्रचण्ड होता है ॥१॥ धनु के द्वितीयनवांश में जन्म लेने वाला ऊँचे सिर वाला, स्थिर बुद्धि, विशाल नेत्र, भारी शरीर, टेढी नाक वाला, लम्बा तथा बड़े शरीर वाला होता है ॥ २॥ धनु के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला शिक्षाशास्त्र में बुद्धि रखने वाला, प्रगल्भ, पूर्णमूर्ति, श्रेष्ठ भाग्यवान, स्त्री-प्रिय, मनस्वी, हास्य-प्रिय तथा शिल्पज्ञ होता है ॥ ३॥ धनु के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला चतुर, मधुपिंगल वर्ण नेत्रों वाला, गौरवर्ण, कच्छप की भाँति बड़ी कुक्षियों वाला, चतुर, भ्रमणशील, श्रेष्ठ केशों वाला, मोटा तथा यशस्वी होता है ॥४॥ धनु के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला मोटे कान, मोटे नेत्र तथा मोटे मुखवाला, बड़े शत्रुओं के साथ लड़ने वाला, बड़ी भौंहों वाला, पुष्ट तथा उन्नत कंधों वाला, बड़े हाथों वाला, सुन्दर

रोमों वाला तथा निश्चयात्मक बुद्धि वाला होता है ॥ ५ ॥ धनु के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला स्निग्ध काले कोने वाले बड़े नेत्रों वाला, बड़े मस्तक तथा सुन्दर शरीर वाला, काव्यशास्त्र में रत, मोटे तथा पुष्ट मुख वाला, विद्वान् तथा कथा-वार्ता में प्रीति रखने वाला होता है ॥ ६ ॥ धनु के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला तरुण स्वरूप, दृढ़, अपने वचन का पालन करने वाला, ऊँचे सिरवाला, संग्रही, संधिकर्त्ता, लम्बा, विशाल नेत्रों वाला तथा अत्यन्त चतुर होता है ॥ ७ ॥ धनु के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला चपटी नाक वाला, बड़ी विस्तृत नाड़ियों वाला, बन्धु-द्वेषी, भ्रांत नेत्रों वाला, बहुत बोलने वाला एवं गुरुजनों की आज्ञा का पालन करने वाला होता है ॥ ८ ॥ धनु के नवम नवांश में जन्म लेने वाला गौरवर्ण, घोड़े जैसे मुँह वाला, लम्बे कान तथा काले नेत्रों वाला, श्रेष्ठ वाक्य कहने वाला, सभा में मुख्य, श्रेष्ठजनों से विवाद करने वाला, जटिल तथा बड़ी जाँघों वाला होता है ॥ ९ ॥ इति चन्द्रराशिगत धनु नवांश फलम् ॥

अथ चन्द्रराशिगत मकर नवांश फलम् ॥ विरलाग्ररद: श्याम: प्रभिन्नवाक्खरशिरोरुह: ख्यात: । पीताभ्र हास्य निरतो मकराद्ये चलधन: कृशांग: स्यात् ॥ १ ॥ प्रचुराङ्गधन: प्रवासी शठोलस: कुटिलनासिक: सबहुरोम: । श्यामतनुर्मंदसितो बहुगीतरतर्द्वितीयज: कल्प्य: ॥ २ ॥ गांधर्वरसिक: ख्यातो गौरोनितांत दृक् सुनस: । बहुमित्रबंधुरतिमांन्तृतीयजास्त्विष्टकर्मा च ॥ ३ ॥ रक्तासितवृत्ताक्षो महाललाटस्तु दुर्बलाङ्गकर: । भवति च विकीर्णकेशश्चतुर्थजो विरलदंतवाक्यश्च ॥ ४ ॥ उद्दंडधन: कुस्त्रीपति: प्रभोक्ता सुनासिका वंश: । श्यामो वृत्तोरुभुज: पंचमभागो स्थिरारंभ: ॥ ५ ॥ स्निग्धच्छवि: सुवेश: कामरति: सूक्ष्मदंतवाक्यश्च । षष्ठांशज: पृथुहनुर्महाललाट: पुमान्भवति ॥ ६ ॥ श्यामोलसोल्पभाषी कुंचितकेशो वृहत्तनु: कठिन: । मृदुपाणिपादो मतिमान् सप्तमज: शीलसम्पन्न: ॥ ७ ॥ गंभीरदृक्प्रघोणो वक्रास्यो भिन्नखशिरोज: स्यात् । उद्धृततनु: सुवाक्यश्चाष्टमजो घटललाट: स्यात् ॥ ८ ॥ विपुल सुहन्मेदासृक् पूर्णमुखो गीतनृत्यनिरतश्च । साध्वार्य

सत्वयुक्तः साधुर्नयमे भवेत्सुनयः ॥८॥ इति मकरः ॥ टीका॥ मकर राशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य आगे के विरल दाँतों वाला, तरुण रूप, भिन्न वाणी वाला, रूखे केशों वाला, प्रसिद्ध, पीले बादलों की भाँति हास्य रत, अस्थिर-धनी तथा कृश अङ्गों वाला होता है ॥१॥ मकर राशि के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला बड़े अङ्गों वाला, धनी, विदेशवासी, शठ, आलसी, टेढ़ी नासिका वाला, अधिक रोमों वाला, तरुण स्वरूप तथा सङ्गीत-प्रेमी होता है ॥२॥ मकर राशि के तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला गंधर्वविद्या का ज्ञाता, प्रसिद्ध, गौरवर्ण, निबद्ध दृष्टि वाला, सुन्दर नासिका वाला, अनेक मित्रों तथा भाइयों वाला, बुद्धिमान् तथा श्रेष्ठ कर्म करने वाला होता है ॥३॥ मकर राशि के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला लाल और काले रंग के गोल नेत्रों वाला, बड़े मस्तक वाला, दुर्बल अङ्गों वाला, विकीर्ण केशों वाला, विरल दाँतों वाला एवं विरल वाणी वाला होता है ॥४॥ मकर राशि के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला बड़े गण्डस्थलों वाला, खोटी-स्त्री वाला, भोगों का उपभोग करने वाला, श्रेष्ठ नासिका वाला, तरुणस्वरूप, गोल भुजाओं वाला तथा स्थिर आरंभ करने वाला होता है ॥५॥ मकर राशि के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला स्निग्ध प्रभायुक्त, सुन्दर वेष वाला, काम-प्रेमी, सूक्ष्म दाँतों वाला, अल्पभाषी, बड़ी ठोड़ी वाला एवं बड़े मस्तक वाला होता है ॥६॥ मकर राशि के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला तरुण रूप, आलसी, अल्पभाषी, कुण्डल जैसे केशों वाला, बड़े शरीर तथा कठिन अङ्गों वाला, कोमल हाथ-पाँवों वाला, बुद्धिमान् तथा श्रेष्ठ स्वभाव वाला होता है ॥७॥ मकर राशि के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला गंभीर नेत्रों वाला, बड़ी नासिका वाला, उल्टे मुख वाला, भिन्न नख तथा भिन्न केशों वाला, बँधी हुई सी देह वाला, सुन्दर वाक्य कहने वाला तथा घोड़े जैसे सिर वाला होता है ॥८॥ मकर राशि के नवम नवांश में जन्म लेने वाला अनेक मित्रों वाला, अधिक मेदा तथा रक्तपूर्ण शरीर वाला, पूर्णमुख, गीत-नृत्य-प्रेमी, मिष्टभाषी, श्रेष्ठ पराक्रमी तथा नीतिज्ञ होता है ॥ इति चन्द्र राशिगत मकर नवांश फलम् ॥

अथ चन्द्रराशिगत कुम्भ नवांश फलम् ॥ श्यामो मृदु कृशांगः पीततनुः काव्यशास्त्रविपुलमतिः। कामी रतिमान्दाता कुंभस्याद्ये भवेज्जातः ॥ १॥ त्वगास्यदृष्टि शिरोजैः खरैश्च सुविपन्न वत्सलः साधुः। दीर्घशिरोधर सुमुखो द्वितीय भागे तु कुंभस्य ॥२॥ भोक्ता च पीन देहस्तेजस्वी पृथुरदोल्पकचः। पृथुरक्तांतः पृथुदृक् प्रचंडघोणो तृतीयेंऽशे ॥ ३॥ कांतानुरतो गौरो विदारितास्यो रिपु प्रतापकरः। गंभीर धीर सत्वश्चतुर्थजो भोगरतियुक्तः ॥ ४॥ स्पष्टार्थवित्कलाज्ञः खररोम करांघ्रिकेश निकरः स्यात्। संकटृघट घोणः पंचमजः कृष्णनयनश्च ॥५॥ व्याघ्राननः प्रगल्भः कुंचितकेशः स्वतिश्चितार्थश्च। व्याघ्रमृगोरहंता जष्ठांशे वल्लभो नृपतेः ॥ ६॥ कृशदेहोल्पश्मश्रुदीर्घमुखाक्षोन्नताग्रनासश्च। बिरलांगुलिरदलोहित देहः स्यात्सप्तमे स्खलितः ॥ ७॥ मेषाक्षिवदन तीक्ष्णो नरेन्द्र भोगी धनेश्वरः सुभगः। स्थूलरदो विरलाक्षः कृतनुः स्यादष्टमेमनुजः ॥ ८॥ श्यामः श्यामाग्ररदो विश्लेषित सुखोपन्न पुत्र दार सुतः। नवमांशजः सुवाक्यः प्रथितः शाक्तो भवेत्पुरुषः ॥ ९॥ इति कुम्भः ॥ टीका ॥ कुम्भराशि के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य तरुणस्वरूप, कोमल तथा कृश अङ्गों वाला, पीत वर्ण, काव्यशास्त्र का पण्डित, कामी, प्रीतियुक्त एवं दानी होता है॥ १॥ कुम्भराशि के द्वितीय नवमांश में जन्म लेनेवाला कठोर त्वचा, कठोर मुख एवं नेत्रों वाला, कठोर केशों वाला, दीनों का प्रिय, साधु, लम्बी गर्दनवाला तथा लम्बे मुख वाला होता है ॥२॥ कुम्भराशि के तृतीय नवमांश में जन्म लेने वाला भोगी, पुष्ट शरीर वाला, तेजस्वी, मोटे दाँतों वाला, अल्पभाषी, लालकोने वाले बड़े नेत्र तथा बड़ी नाक वाला होता है ॥३॥ कुम्भराशि के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला स्त्री में रत, गौरवर्ण, बड़े मुख वाला, शत्रुओं को सन्तापदेने वाला, बड़ा गंभीर, धैर्यवान्, पराक्रमी, भोगी तथा प्रीतियुक्त होता है ॥ ४॥ कुम्भराशि के पंचम नवांशमें जन्म लेने वाला स्पष्टार्थ का ज्ञाता, कला-मर्मज्ञ, कठिन रोम तथा कठोर हाथ-पाँवों वाला, कठिनकेशों वाला, बड़ी नासिका वाला तथा काले केशों वाला होता है ॥५॥ कुम्भराशि के षष्ठ नवांश में जन्म लेने

वाला व्याघ्र जैसे मुँह वाला, प्रगल्भ, कुण्डलयुक्त केशों वाला, दृढ़निश्चयी, बाघ, हरिण तथा सर्पादि को मारने वाला एवं राजा का प्रिय होता है॥ ६॥ कुम्भ राशि के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला कृश-शरीर, थोड़ी दाढ़ी-मूँछ वाला, लम्बे मुख वाला, अग्रभाग में ऊँची नासिका वाला, विरल अँगुलियों और दाँतों वाला, लाल वर्ण का तथा ढीले अङ्गों वाला होता है॥ ७॥ कुम्भ राशि के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला बकरे जैसी आँखों वाला, क्रूर मुख वाला, राजा के समान ऐश्वर्य भोगी, धनी, श्रेष्ठ भाग्यशाली, मोटे दाँत तथा असुन्दर शरीर वाला होता है॥ ८॥ कुम्भराशि के नवम नवांश में जन्म लेने वाला तरुणस्वरूप, काले दाँतों वाला, सुख द्वारा विश्लेषित; धन, पुत्र तथा स्त्री से युक्त, सुन्दर बोलने वाला, प्रसिद्ध एवं सामर्थ्य वान् होता है॥ ९॥ इति चन्द्र राशिगत कुम्भ नवांश फलम्॥

अथ चन्द्र राशि गत मीन नवांश फलम्॥ गौरो विभक्त देहश्चलो मृदुः स्त्री मतः प्रचल चित्तः। ह्रस्वगलः कृशमध्यो मीनाद्यंशे भवेत् पुरुषः॥ १॥ पृथुपीन मुखाग्र नसः क्रियापटु वाक् रुचिरदेहः। कानन पर्वत चारी बृहच्छिराः स्याद्वितीयेंऽशे॥ २॥ गौरः शठः सुचक्षुः स्रस्ततनुर्धर्मवान् सुविद्वांश्च। दाक्षिण्यवान्विनीतस्तृतीयजो रूपवांश्चतुरः॥ ३॥ गुणवान्विपन्नशीलः प्रवृद्ध सेवी क्रियापटुर्धीरः। सत्वाधिकोन पट्टस्तुंगनसः स्याच्चतुर्थेंऽशे॥ ४॥ दीर्घोऽसितः प्रतापी प्रशांत धीः स्वल्प नासिकः स्वक्षः। हिंसानुरतः सुभगो दुष्प्रसहः पंचमे प्रतापी स्यात्॥ ५॥ कान्तः प्रताप गुणवान्प्रसन्नवेशो वनासिको मानी। तिर्यङ्नयनः ख्यातः षष्ठे स्यात्प्रिय कथा निपुणः॥ ६॥ पुरुषोऽभिमान कर्त्ता धर्मरुचिः श्रेष्ठ सचिवः स्यात्। प्रचलो विषाद शीलः शठ स्थितिः सप्तमे भागे॥ ७॥ दीर्घो बृहच्छिराः स्यात्कृष्णालस रूक्ष नेत्र केशश्च। मंदात्मजो ध्वनिरतो रणकुशलश्चाष्टमे भवति॥ ८॥ ह्रस्वो मृदुः सुधीरो विशाल वक्षोक्ष नासिकः स्निग्धः। विहितांग बुद्धिर्गुणवान्नवमांशे स्यात्समाख्यातः॥ ९॥ यत्प्रोक्तं राशिफलं द्वादशभागेपि तत्फलं वाच्यम्। सप्तमभाग समानं शेषेषु

विनिर्दिशेत्प्राज्ञः ।। इति मीनः ।। टीका ।। चन्द्रराशिगत मीन के प्रथम नवांश में जन्म लेने वाला मनुष्य गौरवर्ण, भिन्न-भिन्न अङ्गों वाला, चंचल, कोमल तथा स्त्री जैसे स्वभाव वाला, चल-चित्त एवं छोटी गर्दन तथा पतली कमर वाला होता है ।। १।। मीन के द्वितीय नवांश में जन्म लेने वाला मोटे तथा पुष्ट मुख वाला, मोटी नाक वाला, क्रिया-चतुर, चतुराई से बोलने वाला, सुन्दर शरीर वाला, वन-पर्वतों में भ्रमण करने वाला तथा बड़े सिर वाला होता है ।।२।। मीन तृतीय नवांश में जन्म लेने वाला गौर वर्ण, शठ, सुन्दर नेत्रों वाला, ढीले शरीर वाला, धर्मात्मा, विद्यावान्, वाक्पटु, नम्र, रूपवान् तथा चतुर होता है ।। ३।। मीन के चतुर्थ नवांश में जन्म लेने वाला गुणी, सुन्दर स्वभाव वाला, वृद्धों की सेवा करने वाला, क्रिया-चतुर, पण्डित, महापराक्रमी, नीतिज्ञ तथा ऊँची नाक वाला होता है ।।४।। मीन के पंचम नवांश में जन्म लेने वाला लम्बे शरीर वाला, कृष्णवर्ण, प्रतापी, श्रेष्ठ बुद्धि वाला, छोटी नाक तथा सुन्दर नेत्रों वाला, हिंसक, सौभाग्यशाली तथा बड़ा तेजस्वी होता है ।।५।। मीन के षष्ठ नवांश में जन्म लेने वाला लम्बे शरीर का, सुन्दर, प्रतापी, गुणी, श्रेष्ठवेषधारी, घोड़े जैसी नाक वाला, मानी, टेढ़ी दृष्टि वाला, प्रसिद्ध एवं प्रिय-कथाओं में निपुण होता है ।। ६।। मीन के सप्तम नवांश में जन्म लेने वाला अभिमानी, धर्मात्मा, श्रेष्ठ मन्त्री, चंचल तथा खोटे स्वभाव वाला एवं शठ होता है ।।७।। मीन के अष्टम नवांश में जन्म लेने वाला लम्बा, बड़े सिर वाला, कृष्णवर्ण, आलसी, कठोर-दृष्टि एवं कड़े केशों वाला, कुपुत्रवान्, मार्ग में रत अर्थात् यात्राएं करने वाला तथा युद्ध-कुशल होता है ।। ८।। मीन के नवम नवांश में जन्म लेने वाला छोटे शरीर वाला, कोमल, श्रेष्ठ पण्डित, विशाल वक्षःस्थल वाला, बड़े नेत्र एवं बड़ी नाक वाला, स्निग्ध शरीर, श्रेष्ठ अङ्गोंवाला, सुबुद्धिमान्, गुणी तथा प्रसिद्ध होता है ।। ९।। इति चन्द्रराशिगत मीन नवांश फलम् ।।

अथ द्वादशांश फलम् ।। जातो मेष द्वादशांशे खलात्मा चौरः पापाचार धर्मानुरक्तः ।। स्त्री वित्ताढ्ये रोगवाक्षुन्नमांशे युग्मांशे तु द्यूतकृत्यः सुशीलः ।।१।। दुराचारः कर्कटांशे तपस्वी सिंहे भागे राजकृत्यः सशूरः ।। द्यूताचारः

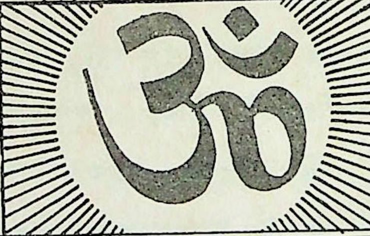
स्त्रीरत: कन्यकांशे व्यापारीस्यात्तौलिभांशे धनाढ्य: ॥ २॥ कीटांशके वधरुचिर्विहिचोरनाथश्चापांशके पितृमहीसुरदेव भक्त: ॥ तस्याधिपो मृगमुखांशभव: सुभृत्य: कुम्भेखलस्त्वनिमिषेधनिकश्च विद्वान् ॥ टीका ॥ जो मनुष्य मेष के द्वादशांश में जन्म लेता है, वह दुरात्मा, चोर और पापी होता है॥ वृष के द्वादशांश में जन्म लेने वाला धनी और रोगी होता है॥ मिथुन के द्वादशांश में जन्म लेने वाला जुआरी तथा सुशील होता है॥१॥ कर्क के द्वादशांश में जन्म लेने वाला दुष्ट-आचार वाला तथा तपस्वी होता है॥ सिंह के द्वादशांश में जन्म लेने वाला राजकृत्य करने वाला तथा शूर-वीर होता है॥ कन्या के द्वादशांश में जन्म लेने वाला द्यूत-रत तथा स्त्री-रत होता है॥ तुला के द्वादशांश में जन्म लेने वाला व्यापारी तथा धनी होता है॥२॥ वृश्चिकके द्वादशांश में जन्म लेने वाला हत्यारी-प्रकृति का एवं चोरों का स्वामी होता है॥ धनु के द्वादशांश में जन्म लेने वाला पितरों, ब्राह्मणों तथा देवताओं का भक्त होता है॥ मकर के द्वादशांश में जन्म लेने वाला कृषि-स्वामी तथा श्रेष्ठ सेवकों वाला होता है॥ कुम्भ के द्वादशांश में जन्म लेने वाला दुष्ट होता है॥ मीन के द्वादशांश में जन्म लेने वाला धनीतथा विद्वान होता है॥ इति द्वादशांश फलम्॥

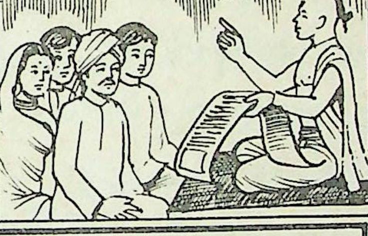
(टिप्पणी- द्वादशांश कुण्डली से स्त्री का विचार किया जाता है। यदि जातक के जन्म समयमें द्वादशांश लग्न में सप्तम का स्वामी शुभ अथवा अशुभ हो, क्रूर-दृष्ट अथवा शुभ-दृष्ट हो तो जातक स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है। शुभयुक्त अथवा शुभ-दृष्ट हो तो एक ही स्त्री होती है और क्रूर युक्त हो तो स्त्री भावका दु:ख बना रहता है। द्वादशांश में चन्द्रमा की राशि के समान फल होता है। स्वभाव तथा अङ्गों के लक्षण सप्तांश की भाँति समझने चाहिए।)

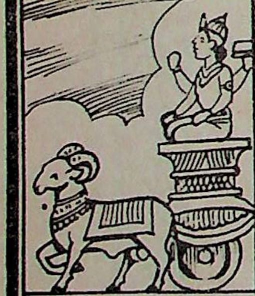
अथ त्रिंशांश फलम्॥ त्रिंशांशे निधन फलं शुभाशुभं सर्व जंतूनामिति पूर्व प्रतिज्ञा अत्रोच्यते॥ त्रिंशांश लग्नान्निधनाधिपश्च क्रूरोथ सौम्य: शुभ पाप दृष्ट:। तीर्थे शुभे क्रूरतरे नरस्य कृच्छ्रंवदेदग्नि जलादि


ॐ
इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
द्वितीय खण्डः समाप्तः





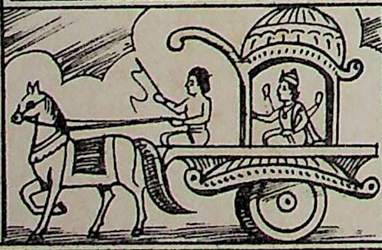
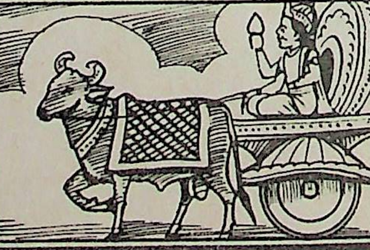
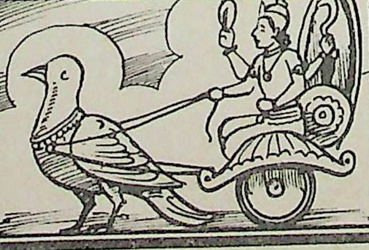
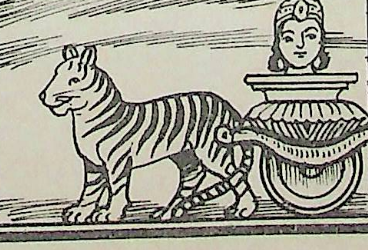
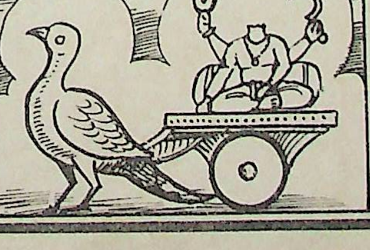


अथ श्रीभृगुसंहितामहाशास्त्रम्

तृतीय खण्डः भाषा टीका सहितम्

ग्रह फलाध्यायः



तश्च ॥ अत्रापिविशेषमष्टमभावेकथयिष्यामि ॥ टीका ॥ त्रिंशांश-कुण्डली में शुभाशुभ मृत्यु का लक्षण विचारा जाता है। त्रिंशांश लग्न से अष्टम गृह का स्वामी शुभग्रह हो और शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो तीर्थस्थान में और शुभ स्थान में दान-धर्मादि करते हुए मृत्यु होती है। यदि त्रिंशांश लग्न से अष्टमगृह का स्वामी क्रूर ग्रह हो और वह पापग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो अग्नि, जल आदि के द्वारा अपमृत्यु होती है ॥ मृत्युकाल के सम्बन्ध में विशेष विचार अष्टमभाव के फल में कहा जाएगा। अब त्रिंशांश का फल कहते हैं ॥ त्रिंशांशे धरणीसुतस्य चपल: काठिन्यवाक् क्रूरधी र्मंदस्याटनतत्परो मलिनधी जीवांशके वित्तवान्। सौम्यांशे गुरुदेवभक्तिनिरत: साधुप्रियो बंधुमान् कामी कांतवपु: सुखीच भृगुजस्त्रिंशांशके जायते ॥ टीका ॥ मंगल के त्रिंशांश में जन्म लेने वाला मनुष्य चपल तथा कठोर-वक्ता एवं क्रूर-बुद्धि वाला होता है। शनि के त्रिंशांश में जन्म लेने वाला भ्रमणशील एवं मलिन-बुद्धि होता है। बृहस्पति के त्रिंशांश में जन्म लेने वाला धनी होता है। बुध के त्रिंशांश में जन्म लेने वाला गुरु, देवता तथा पितरों का भक्त, साधु-प्रिय एवं बंधु युक्त होता है। शुक्र के त्रिंशांश में जन्म लेने वाला कामी, सुन्दर शरीर वाला तथा सुखी होता है ॥ इति त्रिंशांश फलम् ॥

॥ इति श्रीभृगु संहिता महाशास्त्रे द्वितीय खण्डस्समाप्तम् ॥

ॐ

अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम् तृतीय खण्डः

श्री गणेशाय नमः ।। अथ ग्रह भाव फलम् ।। तत्रादौ सूर्य फलम् ।। लग्नेर्के ऽल्प कचः क्रियालस तनुः क्रोधी प्रचण्डोन्नतो । मानी लोचन रुक् सुकर्कश तनुः शूरो क्षमी निर्घृणः ।। फुल्लाक्षः शशिभे क्रिये स्थिति हरः सिंहे निशांधः पुमान् । दारिद्रोपहतो विनष्ट तनयः संस्थस्तुला संज्ञके ।।१।।

टीका ।। जिस जातक की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न (तनु अर्थात् प्रथमभाव) में स्थित हो, वह मनुष्य आलसी शरीर वाला, अल्पकेशों वाला, प्रचण्ड क्रोधी, लम्बा, कण्डुरोग युक्त, नेत्ररोगी, कठोर, शूर-वीर, क्षमाशील तथा निर्लज्ज स्वभाव वाला होता है । यदि लग्न में कर्क राशि हो और उसमें सूर्य बैठा हो जातक कमल जैसे नेत्रों वाला होता है। यदि लग्न में मेष राशि हो तो स्थिति-हारी होता है। यदि सिंह राशि हो तो रात्र्यन्ध अर्थात् रतौंधी रोग वाला होता है। यदि लग्न में तुला राशि हो तो दरिद्र एवं नष्ट पुत्रों वाला होता है ।।१।।

धन सुतोत्तम वाहन वर्जितो हतमतिः सुजनोज्झित सौहृदः । परगृहोपगतो हि नरो भवेद्दिनमणौ द्रविणे यदि संस्थितिः ।।२।।

टीका॥ यदि सूर्य द्वितीय भाव में स्थित हो तो जातक धन, पुत्र एवं श्रेष्ठ वाहन से रहित, बुद्धिहीन, मित्र भाव से रहित तथा दूसरे के घर में रहने वाला होता है॥ २॥ प्रियंवदः स्याद्धनवाहनाढ्यः सुकर्मचित्तो-नुचरान्वितश्च। मितानुजः स्यान्मनुजोबलीयान् दिनाधिनाथे सहजेधिसंस्थे॥ ३॥ टीका॥ यदि सूर्य तृतीयभाव में स्थित हो तो जातक मधुरभाषी, धन तथा वाहनों से युक्त, श्रेष्ठ कामों में मन लगाने वाला तथा सेवकों से युक्त, थोड़े भाइयों वाला एवं बड़ा बलवान् होता है॥ ४॥ सौख्येनयानेन धनेनहीनं तातस्यचित्तोपहत प्रवृत्तं। चलन्निवासं कुरुते पुमांसं पाताल शाली नलिनी विलासी॥ टीका॥ यदि सूर्य चतुर्थ भाव में हो तो जातक सुख, वाहन और धन से हीन, पिता से विरोध करने वाला तथा अपने घर में न टिक पाने वाला होता है॥ ४॥ स्वल्पा पत्यं शैल दुर्गेश भक्तं सौख्यायुक्तं सत्क्रियायैर्विमुक्तम्। भ्रांत स्वांतं मानवं हि प्रकुर्यात्सूनु स्थाने भानुमान्वर्त्तमानः॥ ५॥ टीका॥ यदि सूर्य पंचम भाव में हो तो जातक अल्प संततिवान्, वन दुर्गा एवं शिवजी की भक्ति करने वाला, सुख-रहित, श्रेष्ठ कर्म तथा श्रेष्ठ धन से हीन एवं भ्रान्त चित्त वाला होता है॥ ५॥ शश्वत् सौख्येनान्वितः शत्रुहंता सत्त्वोपेत श्चारु यानो महौजाः। पृथ्वीभर्तुः स्यादमात्यो हि मर्त्यः शत्रुक्षेत्रे मित्र संस्थोऽय-दिस्यात्॥ ६॥ टीका॥ यदि सूर्य षष्ठ भाव में हो तो जातक निरन्तर सुखी रहता है, वह शत्रु-नाशक, पराक्रमी, सुन्दर वाहनों वाला, परम तेजस्वी तथा राजा का मन्त्री होता है॥ ६॥ श्रियाविमुक्तो हत कायकांति र्भयामयाभ्यां सहितः कुशीलः। नृप प्रकोपार्ति कृशो मनुष्यः सीमंतिनी सद्मनि पद्मिनीशे॥ ७॥ टीका॥ यदि सूर्य सप्तम भाव में हो तो जातक लक्ष्मी-हीन, शरीर की शोभा से हीन, भय तथा रोगों से पीड़ित, खोटे स्वभाव का तथा राजकोप के कारण दुःख पाने वाला होता है॥ ७॥ नेत्राल्पत्वं शत्रुवर्गाभिवृद्धिः बुद्धि भ्रंशः पूरुष स्याति रोषः। अर्थाल्पत्व कार्श्य मंगे विशेषा दायुः स्थाने पद्मिनी प्राण नाथे॥ ८॥ टीका॥ यदि सूर्य अष्टमभाव में हो तो जातक मंद-दृष्टि, अनेक शत्रुओं वाला, बुद्धिहीन, महाक्रोधी, अल्पधनी,

मू० सं० ४४८ भा० टी०

तथा विशेषकर कृश अंगों वाला होता है ॥ ८ ॥ धर्मकर्मनिरतश्च सन्मतिः पुत्रमित्रज सुखान्वितः सदा । मातृवर्गविष
मो भवेन्नरस्त्रित्रिकोण भवने दिवामणौ ॥ ९ ॥ टीका ॥ जिस मनुष्य के नवमभाव में सूर्य स्थित हो, वह धर्म-कर्म में रत
श्रेष्ठ बुद्धिमान्, पुत्र-मित्रादि के सुख से युक्त एवं मातृवर्ग का विरोधी होता है ॥ ९ ॥ सद्बुद्धि वाहनधनागमनानि
नूनं भूपप्रसाद सुत सौख्य समन्वितानि । साधूपकार करणं प्रणि भूषणानि मेषूरणे दिनपतिः कुरुते नराणां ॥ १० ॥
टीका ॥ जिसके दशम भाव में सूर्य स्थित हो, वह निश्चित रूप से श्रेष्ठ बुद्धिमान्, वाहन एवं धन युक्त,
राजा की कृपा एवं पुत्रों का सुख पाने वाला तथा साधुजनों का उपकार करने वाला होता है ॥ १० ॥ गीतं
प्रीतिं चारुकर्म प्रवृत्तिंचंचत् कीर्त्तिं वित्तपूर्त्तिं नितांतं । भूपात्प्राप्तिं नित्यमेव प्रकुर्यात्प्राप्तिस्थाने भानुमान्मान
वानाम् ॥ ११ ॥ टीका ॥ जिसके एकादश भाव में सूर्य हो, वह सङ्गीत में प्रीति रखने वाला, श्रेष्ठ कर्मों में
प्रवृत्ति वाला, बड़ा यशस्वी, बड़ा धनी तथा राजा से नित्य लाभ पाने वाला होता है ॥ ११ ॥ तेजोविहीने
नयने भवेतां तातेन सा कंगतचित्त वृत्तिः । विरुद्ध बुद्धिर्व्ययभावयाते कांतेनलिन्याः फलमुक्तमार्यैः ॥ १२ ॥ इति रवेः ॥
टीका ॥ जिसके द्वादश भाव में सूर्य हो, वह तेजहीन नेत्रों वाला अर्थात् मन्द-दृष्टि, पिता के साथ
विरोध-बुद्धि रखने वाला एवं लोगों का विरोधी होता है ॥ १२ ॥ इति सूर्य फलम् ॥

अथ चन्द्रभाव फलम् ॥ दाक्षिण्य रूप धन भोग गुणैर्वरिष्ठश्चन्द्रे कुलीर वृषभाजगते विलग्ने ।
उन्मत्त नीच बधिरो विकलोऽथ मूकः शेषेषुना भवति हीन तनौ विशेषात् ॥ १ ॥ टीका ॥ जिस मनुष्य के लग्न में
कर्क अथवा वृष राशि का चन्द्रमा हो, वह चतुर, रूपवान्, धनी, भोगी तथा श्रेष्ठ गुणों वाला होता है।
लग्न में कर्क अथवा वृष के अतिरिक्त कोई अन्य राशि हो और उसमें चन्द्रमा स्थित हो तो जातक उन्मत्त,
नीच, बधिर, विकल अथवा गूँगा होता है ॥ १ ॥ सुखात्मज द्रव्य युतो विनीतो भवेन्नरः पूर्णविधौ द्वितीये,
क्षीणे स्खलद्वाक् विधनोल्प बुद्धिर्न्यूनाधिकत्वे फल तारतम्यम् ॥ २ ॥ टीका ॥ जिस मनुष्य के द्वितीयभाव

में चन्द्रमा हो, वह सुख, धन तथा पुत्रों से युक्त एवं श्रेष्ठ होता है। यह फल पूर्णचन्द्र का है। यदि द्वितीयभाव में क्षीण-चन्द्रमा हो तो जातक गद्गद् वाणी वाला (हकला), धन-हीन तथा बुद्धि-हीन होता है। चन्द्रमा की हीनकला और अधिक कला जिस अनुपात में हो, उसी के अनुसार न्यूनाधिक भला-बुरा फल होता है ॥२॥ हिंस्रः सगर्वः कृपणोऽल्पबुद्धिर्भवेज्जनो बंधुजनाश्रयश्च। दयाभयाभ्यां परिवर्जितश्च द्विजाधिराजे सहजे भ सूतौ ॥३॥ यदि तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो जातक हिंसक, घमण्डी, कृपण, अल्पबुद्धि, बन्धुजनों के आश्रित रहने वाला तथा दया एवं भय से रहित होता है ॥३॥ जलाश्रयोत्पन्नधनोपलब्धिं कृष्यंगनावाहनसूनुसौख्यम्। प्रसूतिकाले कुरुते कलावान् पातालसंस्थो द्विजदेवभक्तिम् ॥४॥ टीका॥ यदि चतुर्थ भाव में चन्द्रमा हो तो जातक जलाशय अथवा समुद्री-व्यापार से उत्पन्न धन को पाने वाला, कृषि-कर्त्ता, स्त्री-सुख एवं वाहन के सुख से युक्त होता है ॥४॥ जितेन्द्रियः सत्यवचाः प्रसन्नो धनात्मजावाप्तसमस्तसौख्यः। सुसंग्रही स्यान्मनुजः सुशीलः प्रसूतिकाले तनयालये ब्जे ॥५॥ टीका॥ यदि पञ्चमभाव में चन्द्रमा स्थित हो तो जातक इन्द्रियजित्, सत्यवादी, प्रसन्नमूर्ति, धन तथा पुत्रों के सुख से युक्त तथा श्रेष्ठ संग्रह करने वाला होता है ॥५॥ मंदाग्निःस्यान्निर्दयः क्रौर्ययुक्तो नाल्यालस्यो निष्ठुरो दुष्टचित्तः। रोषावेशोत्पन्नसंजातशत्रुः षष्ठे रात्रिनाथे नरः स्यात् ॥६॥ टीका॥ यदि षष्ठभाव में चन्द्रमा स्थित हो तो जातक मंदाग्नि-पीड़ित, दया-हीन, क्रूरता युक्त, बड़ा आलसी, कठोर तथा दुष्ट-स्वभाव वाला, क्रोधी एवं अनेक शत्रुओं वाला होता है ॥६॥ महाभिमानी मदनातुरश्च नरो भवेत्क्षीणकलेवरश्च। धनेन हीनो विनयेन चन्द्रे चन्द्रानन स्थान विराजमाने ॥७॥ टीका॥ यदि सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक महाअभिमानी, कामातुर, कृश-शरीर वाला एवं धन तथा नम्रता से हीन होता है ॥७॥ नानारोगैः क्षीणदेहो ति निस्वश्चौरारातिक्षोणि-पालाभितप्तः ... स्यात् ... मांत्रीं ॥८॥ टीका॥ यदि चन्द्रमा अष्टम

भाव में हो तो जातक अनेक प्रकार के रोगों के कारण कृश-देह वाला, निर्धन एवं चोर, शत्रु एवं राजा द्वारा संतापित तथा चित्त के उद्वेग के कारण व्याकुल होता है॥८॥ कलत्र पुत्र: द्रविणोपपन्न: पुराणवार्ता श्रवणानुरक्त:। सुकर्म सत्तीर्थ परो नर: स्यात् यदाकलावान्नवमालयस्थ॥९॥ यदि चन्द्रमा नवमभाव में हो तो जातक स्त्री, पुत्र तथा धन युक्त, पुराण-श्रवण का प्रेमी एवं श्रेष्ठ कर्म तथा श्रेष्ठ तीर्थ करने वाला होता है॥९॥ क्षोणीपालादर्थलब्धिर्विशाला कीर्त्तिर्मूर्त्तिः सत्वसंतोषयुक्ता। चंचल्लक्ष्मीः शील संशालिनी स्यान्मानस्थाने यामिनी नायकश्चेत्॥१०॥ टीका॥ यदि चन्द्रमा दशमभाव में हो तो जातक राजा से धन प्राप्त करने वाला, श्रेष्ठ यशस्वी, श्रेष्ठ-शरीर वाला, पराक्रमी, सन्तोषी एवं अत्यन्त प्रकाशवान् स्थिर-लक्ष्मी प्राप्त करने वाला होता है॥१०॥ सन्मान नानाविध वाहनाप्ति: कीर्त्तिश्च सद्भोग गुणोपलब्धि:। प्रसन्नतालाभ विराजमाने ताराधिराजे मनुजस्य नूनम्॥११॥ टीका॥ यदि चन्द्रमा एकादश भाव में हो तो जातक श्रेष्ठ सम्मान पाने वाला, अनेक प्रकार के वाहनों वाला, यशस्वी, श्रेष्ठ गुणी एवं प्रसन्नता को प्राप्त होता है॥११॥ हीनत्वं वै चारुशीलेन मित्रै र्वैकल्यं स्यान्नेत्रयो: शत्रुवृद्धि:। रोषावेश: पूरुषाणां विशेषात्पीयूषांशौ द्वादशे वेश्मनीह॥१२॥ टीका॥ यदि चन्द्रमा द्वादश भाव में हो तो जातक बुरे स्वभाव का, मित्र-हीन, नेत्रों में विकलता युक्त, अनेक शत्रुओं वाला तथा विशेष क्रोधी होता है॥१२॥ इति चन्द्र फलम्॥

अथ भौम भाव फलम्॥ अतिमति भ्रमतांच कलेवरे क्षतयुतं बहुसाहसमुग्रताम्। तनुभृतां कुरुते तनु संस्थितोऽवनिसुतो गमनागमनानि च॥१॥ टीका॥ यदि लग्नभाव में मंगल स्थित हो तो जातक अत्यन्त भ्रमित-बुद्धि वाला, क्षत (घाव) युक्त शरीर वाला, उग्र हठी तथा निरन्तर भ्रमण करनेवाला बड़ा साहसी होता है॥१॥ अधनतां कुजनाश्रयतां तथा विमतितां कृपयाऽति विहीनतां। तनुभृतां विदधाति विरोधितां धननिकेतनगोऽवनि नंदन:॥२॥ टीका॥ यदि मंगल द्वितीय भाव में हो तो जातक निर्धन,

खोटी बुद्धि वाला, दया-हीन तथा खोटे लोगों से सम्पर्क रखने वाला होता है ॥२॥ भूपप्रसादोत्तम सौख्यमुच्चै रुदारताचारु पराक्रमश्च। धनानि च भ्रातृसुखोज्झितत्वं भवेन्नराणां सहजे महीजे ॥ ३॥ टीका ॥ यदि मंगल तृतीय भाव में हो तो जातक राजा की कृपा एवं सुखों को प्राप्त करने वाला, अत्यन्त उदार, श्रेष्ठ पराक्रमी, धनी तथा भ्रातृ-सुख से रहित होता है ॥३॥ दुःखं सुहृद्वाहनतः प्रवासो कलेवरे रुग्बलताबलत्वं। प्रसूति काले किल मंगलाख्ये रसातलस्थे फलमुक्तमार्यैः ॥४॥ टीका ॥ यदि मंगल चतुर्थ भाव में हो तो जातक मित्रों और वाहनों के कारण दुःख पाने वाला, विदेशवासी, प्रबल रोगी एवं निर्बल होता है ॥४॥ कफानिलाद्व्याकुलता कलत्रान्मित्राच्च पुत्रादपि सौख्य हानिः। मतिर्विलोला विपुला नजेऽस्मिन् प्रसूतिकाले तनयालयस्थे ॥५॥ टीका॥ यदि मंगल पंचम भाव में हो तो जातक कफ-वात के कारण व्याकुल शरीर वाला; स्त्री, मित्र तथा पुत्रों से सुख की हानि पाने वाला एवं चंचल अर्थात् अस्थिर-बुद्धि वाला होता है ॥५॥ प्राबल्यं स्याज्जाठराग्नेर्विशेषा द्रोषावेशः शत्रुवर्गोऽपि शान्तिः। सद्भिः संगोऽनंग बुद्धिर्नराणां गोत्रापुत्रे शत्रुसंस्थे प्रसूतौ ॥६॥ टीका ॥ यदि मंगल षष्ठभाव में हो तो जातक की जठराग्नि विशेष प्रबल होती है और वह क्रोधी, शत्रु-नाशक, श्रेष्ठ जनों की सङ्गति करने वाला तथा काम की बुद्धि वाला अर्थात् कामी होता है ॥६॥ नानानर्थैर्व्यर्थचिन्तोपसर्गैर्वैरिव्रातैर्मानवं हीन देहं। दारारागात्यंतं दुःख प्रतप्तं दारागारं गारको ऽपं करोति ॥७॥ टीका ॥ यदि मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक का शरीर अनेक प्रकार के अनर्थ एवं व्यर्थ की चिन्ताओं से क्षीण होता है ॥ उसे शत्रु-समूह पीड़ित करता रहता है तथा स्त्री के कारण होने वाले दुःख से वह अत्यन्त संतप्त बना रहता है ॥७॥ वैकल्यं स्यान्नेत्रयोर्दुर्भगत्वं रक्तात्पीड़ा नीच कर्म प्रवृत्तिः। बुद्धेरांध्यं सज्जनानां च निंदा रंध्रस्थाने मेदिनीनंदनेऽस्मिन् ॥८॥ टीका ॥ यदि मंगल अष्टमभाव में हो तो जातक के नेत्रों में विकलता, दुर्भगता, रक्त-पीड़ा एवं नीच कर्मों में प्रवृत्ति होती है। उसकी बुद्धि में अंधापन होता है, जिसके कारण वह श्रेष्ठ जनों की निन्दा करता है ॥८॥

हिंसाविधाने मनसाप्रवृत्तिं भूमीपते गौरवतोल्पलब्धिम् । क्षीणं च पुण्यं द्रविणं नराणां पुण्यस्थित: क्षोणिसुत: करोति ॥९॥ टीका ॥ यदि मंगल नवम भाव में हो तो जातक हिंसक प्रवृत्ति का, राज्य से अल्प सम्मान पाने वाला, क्षीण-पुण्य एवं धन-क्षय को पाने वाला होता है ॥९॥ विश्वंभरापती समत्वमतीव तोषं सत्साहसं परजनोपकृतौ प्रयत्नम् । चंचद्विभूषणमणि द्विविधागमाश्च मेषूरणे धरणिज: कुरुते नराणां ॥१०॥ टीका ॥ यदि मंगल दशमभाव में हो तो जातक राजा के समान प्रसन्नता प्राप्त करने वाला, परोपकार करने में श्रेष्ठ उत्साह पूर्वक प्रयत्नशील, सुन्दर आभूषण एवं मणियों से युक्त तथा दो प्रकार के धर्माधर्म द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला होता है ॥१०॥ ताम्रप्रवालविलसत्कलधौतरक्तवस्त्रागमं सुललितानि च वाहनानि । भूपप्रसाद सुकुतूहल मंगलानि दद्याद्दवापि भवने हि सदा वनेय: ॥११॥ टीका ॥ यदि मंगल एकादशभाव में हो तो जातक को ताँबा, मूँगा, स्वर्ण एवं वस्त्रों का लाभ होता है। इसके अतिरिक्त वह सुन्दर वाहन, राजा की कृपा, बड़े कौतुक तथा मंगलों को भी प्राप्त होता है ॥११॥ स्वमित्रवैरं नयनार्तिबाधां क्रोधाभिभूतं विवलत्वमंगे। धनव्ययं बंधनमल्पतेजो व्ययेधराजो विदधाति नूनम् ॥१२॥ इति भौमस्य ॥ टीका ॥ यदि द्वादशभाव में मङ्गल हो तो जातक मित्रों से विरोध तथा नेत्रों में अत्यन्त पीड़ा पाने वाला, क्रोधी, दुर्बल अङ्गों वाला, धन-हानि पाने वाला, बंधन पाने वाला तथा अल्प तेजस्वी होता है ॥१२॥ इति भौम फलम् ॥३॥

अथ बुध भाव फलम् ॥ शांतो विनीत: सुतरामुदारो नर: सदाचारपरोऽति धीर: ॥ विद्वान्कलाढ्यो विपुलात्मजश्च शीतांशुसूनौ जनने तनुस्थे ॥१॥ टीका ॥ यदि बुध प्रथमभाव में हो तो जातक अत्यन्त शान्त स्वभाव वाला, विनम्र, उदार-हृदय, सदैव आचार-तत्पर, पण्डित, विद्वान्, कला-मर्मज्ञ तथा बहुपुत्रवान् होता है ॥१॥ विमलशीलयुतो गुरुवत्सल: कुशलता कलितार्थ महत्सुख:। विपुल कांति समुन्नति संयुतो धन निकेतन गे

शशिनन्दने ॥ २॥ टीका ॥ यदि बुध द्वितीयभाव में हो तो जातक निर्मल-स्वभाव वाला, गुरु-वत्सल, सकुशल, अत्यन्त सुखी, अत्यन्त शोभावान् एवं उच्च पद पाने वाला होता है ॥ २॥ साहसान्निजजनै परियुक्त श्चित्त शुद्धि रहितो हत सौख्यः । मानवः कुशलितेसित कर्ता शीतभानुतनयेनुज संस्थे ॥ ३॥ टीका ॥ यदि बुध तृतीयभाव में हो तो जातक साहसी, स्वजनों से युक्त, चित्त-शुद्धि-रहित, सुख-रहित तथा स्वेच्छा से शुभ कर्मों को करने वाला होता है ॥ ३॥ सद्वाहनैर्धान्यधनैः समेतः संगीत नृत्याभिरुचिर्मनुष्यः । विद्याविभूषागमनाधिशाली पाताल गे शीतलभानुसूनौ ॥४॥ टीका ॥ यदि बुध चतुर्थभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ वाहनों से युक्त, धन-धान्य सम्पन्न, सङ्गीत एवं नृत्य में रुचि रखने वाला तथा विद्या एवं आभूषणों को प्राप्त करने वाला होता है ॥४॥ पुत्र सौख्य सहितं बहुमित्रं मंत्रवाद कुशलं च सुशीलम् । मानवं किल करोति सलीलं शीतदीधित सुतः सुत संस्थः ॥ ५॥ टीका ॥ यदि बुध पञ्चम भाव में हो तो जातक पुत्र-सुख एवं मित्र-सुख युक्त, मंत्रवाद में कुशल, श्रेष्ठ स्वभाव वाला एवं निश्चितरूप से लीलाएं करने वाला होता है ॥५॥ वाद प्रीतिः सामयोनिष्ठुरात्मा नानाराति व्रात संतप्त चित्तः । नित्यालस्य व्याकुलः स्यान्मनुष्यः शत्रुक्षेत्रे रात्रिनाथात्मजे स्मिन् ॥ ६॥ यदि बुध षष्ठ भाव में हो तो जातक वाद-प्रेमी अर्थात् मुकद्दमेबाजी में रुचि रखने वाला, रोगयुक्त, कठोर हृदय वाला, अनेक प्रकार के उपद्रवों से पीड़ित, नित्यप्रति आलस्य करने वाला एवं व्याकुल चित्त वाला होता है ॥६॥ चारु शीलविभवैरलंकृतः सत्यवाक्यनिरतो नरो भवेत् । कामिनीकनक सूनु संयुतः कामिनी भवनगामिनीं बुधे ॥ ७॥ टीका ॥ यदि बुध सप्तमभाव में हो तो जातक सुन्दर स्वभाव वाला, ऐश्वर्यवान्, सत्यवादी तथा स्वर्ण, स्त्री एवं पुत्रों से युक्त होता है ॥ ७॥ भूतप्रसादाप्त समस्त संपन्नरो विरोधी सुतरां सुगर्वः । सर्वप्रयत्नान्यकृतापहर्त्ता रंध्रे भवेच्चन्द्र सुतः प्रसूतौ ॥८॥ टीका ॥ यदि बुध अष्टम भाव में हो तो जातक भूतों की कृपा से समस्त सम्पदाओं को पाने वाला, विरोधी-

स्वभाव का, महा अभिमानी तथा सब प्रयत्नों द्वारा पराये कृत्यों का अपहरण करने वाला होता है ॥ ८॥ उपकृतिकृतिविद्यो चारुजातादरः स्यादनुचरधनसूनुप्राप्तहर्षो विशेषात्। वितरणकरणोद्यन्मानसो मानवश्चेदमृतकिरणजन्मा पुण्यधामागमो यम् ॥ ९॥ टीका ॥ यदि बुध नवमभाव में हो तो जातक उपकार करने वाला, श्रेष्ठ विद्वान्, आदर करने वाला; सेवक, धन तथा पुत्रों के सुख से युक्त तथा संसार से मुक्त होने की इच्छा रखने वाला होता है ॥ ९॥ ज्ञानप्रज्ञः श्रेष्ठकर्मा मनुष्यो नानासंपत्संयुतो राजमान्यः। चंचल्लीलावाग्विलासाधिशाली मानस्थाने बोधने वर्त्तमाने ॥ १०॥ टीका ॥ यदि बुध दशम भाव में हो तो जातक ज्ञान-बुद्धि वाला, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, अनेक प्रकार की सम्पदाओं से युक्त, राजमान्य एवं सुन्दर लीलाओं सहित वाग्विलास करने वाला होता है ॥ १०॥ भोगासक्तोऽत्यंतवित्तो विनीतो नित्यानंदश्चारुशीलो बलिष्ठः। नानाविद्याभ्यासकृन्मानवः स्याल्लाभस्थाने नंदने शीतभानोः ॥ ११॥ टीका ॥ यदि बुध एकादश भाव में हो तो जातक भोगों से युक्त, बड़ा धनी, विनम्र, नित्य आनन्द को प्राप्त, श्रेष्ठ स्वभाव का, महाबली तथा अनेक विद्याओं का अभ्यास करने वाला होता है ॥ ११॥ दयाविहीनः स्वजनोज्झितश्च स्वकार्यदक्षो विजितात्मपक्षः। धूर्तो नितांतं मलिनो नरः स्याद् व्ययोपपन्ने द्विजराजसूनौ ॥ १२॥ इति बुधस्य ॥ टीका ॥ यदि बुध द्वादशभाव में हो तो जातक दया-हीन, मित्र-हीन, अपने कार्य में चतुर, अपने पक्ष को जीतने वाला, धूर्त्त तथा मलीन होता है ॥ १२॥ इति बुधफलम् ॥ ४॥

अथ गुरु भाव फलम् ॥ विद्यासमेतोऽभिमतो हि राज्ञां प्राज्ञः कृतज्ञो नितरामुदारः। नरो भवेच्चारुकलेवरश्च तनुस्थिते चित्रशिखंडिसूनौ ॥ १॥ टीका ॥ यदि गुरु लग्न (प्रथम भाव) में स्थित हो तो जातक विद्या-संयुक्त, राजाज्ञा मानने वाला, चतुर, कृतज्ञ, उदारचित्त तथा सुन्दर शरीर वाला होता है ॥ १॥ सद्रूपविद्यागुणकीर्त्तियुक्तः संत्यक्तवैरोऽपि नरो गरीयान्। त्यागी सुशीलो द्रविणेन पूर्णो गीर्वाण

वचे द्रविणोपयाते॥ २॥ टीका॥ यदि गुरु द्वितीय भाव में हो तो जातक श्रेष्ठ रूप, विद्या, गुण तथा यश से सम्पन्न, वैर-भाव से रहित, त्यागी, श्रेष्ठ स्वभाव का तथा पूर्ण धनी होता है ॥२॥ सौजन्यहीनः कृपणः कृतघ्नः कांतासुत प्रीतिविवर्जितश्च । नरोऽग्निमांद्याबलता समेतः पराक्रमेशाक्रपुरोहितेस्मिन् ॥ ३॥ टीका॥ यदि गुरु तृतीय भाव में हो तो जातक सुहृद्भाव-रहित, कृपण, कृतघ्न, स्त्री और पुत्रों से प्रेम न करने वाला, एवं मंदाग्नि के कारण बलहीन होता है ॥ ३॥ सन्माननानाधनवाहनाद्यैः संजात हर्षः पुरुषः सदैव । नृपानुकंपासमुपात्तसंपद् मौलि भृन्मंत्रिणि भूतलस्थे॥ ४॥ टीका॥ यदि गुरु चतुर्थ भाव में हो तो जातक सम्मान पाने वाला, अनेक प्रकार के धन तथा वाहनों से युक्त एवं सदैव राजा की कृपा से सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ४॥ सन्मित्रपुत्रोत्तम मंत्रशास्त्र सुखानि नाना धनवाहनानि । दद्याद्गुरुः कोमलवाग्विलासं प्रसूति कालेतनयालयस्थः ॥५॥ टीका॥ यदि गुरु पंचमभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ मित्र एवं पुत्रों वाला, श्रेष्ठ मंत्रज्ञ, अनेक प्रकार के श्रेष्ठ वाहन तथा अनेक प्रकार के धन को प्राप्त होने वाला एवं कोमल वाणी से वाग्विलास करने वाला होता है ॥ ५॥ सद्गीतविद्याहतचित्तवृत्तिः कीर्तिप्रियोऽराति जनप्रहर्ता । प्रारब्धकार्यालसकृन्नरः स्यात्सुरेन्द्रमंत्री यदि शत्रुसंस्थः॥ ६॥ टीका॥ यदि गुरु षष्ठभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ गीत एवं विद्या में अपना चित्त नहीं लगा पाता, वह यश पाने का इच्छुक, शत्रुओं का नाश करने वाला एवं प्रारब्ध (सौभाग्य वृद्धि) के कार्यों में आलस्य करने वाला होता है ॥ ६॥ शास्त्राभ्यासासक्तचित्तो विनीतः कांतावित्तात्यंत संजात सौख्यः । मंत्रीमर्त्यः काव्यकर्ता प्रसूतौ जायाभावे देवदेवाधिदेवो॥७॥ यदि गुरु सप्तम भाव में हो तो जातक शास्त्राभ्यास में चित्त को लगाने वाला, विनम्र, स्त्री एवं धन का अत्यन्त सुख पाने वाले, राजा का मन्त्री तथा कवि होता है ॥ ७॥ प्रेष्यो मनुष्यो मलिनोऽतिदीनो विवेकहीनो विनयोज्झितश्च । नित्यालसः क्षीणकलेवरः स्यादायुर्विशेषे वचसामधीशे ॥ ८॥ टीका॥ यदि गुरु

अष्टम भाव में हो तो जातक द्यूतकर्म करने वाला, मलीन, दीन, विवेक-हीन, नम्रता-रहित, आलस्ययुक्त एवं कृश-शरीर वाला होता है ॥८॥ नरपतेः सचिवः सुकृती कृती सकलशास्त्र कलाकलनादरः। व्रतकरो हि नरो द्विजतत्परः सुरपुरोधसि वैतपसि स्थिते ॥९॥ टीका ॥ यदि गुरु नवमभाव में हो तो जातक राजा का मन्त्री धर्मात्मा, पुण्य-कर्त्ता, सम्पूर्ण शास्त्रों को हृदय में धारण करने वाला, व्रत कर्त्ता एवं ब्राह्मणों की सेवा में संलग्न रहने वाला होता है ॥९॥ सद्राजचिह्नोत्तम वाहनानि मित्रात्मज स्त्रीरमणी सुखानि। यशोभिवृद्धिं बहुधाविधत्ते राज्ये सुरेज्यो विजयं नराणाम् ॥१०॥ टीका ॥ यदि गुरु दशम भाव में हो तो जातक श्रेष्ठ राज-लक्षणों को धारण करने वाला, श्रेष्ठ वाहनों वाला; मित्र, पुत्र, धन तथा स्त्री के सुख से युक्त एवं अनेक प्रकार के यश को पाने वाला होता है ॥१०॥ सामर्थ्यमर्थागमनानि नूनं सद्वस्त्र रत्नोत्तमवाहनानि। भूपप्रसादं कुरुते नराणां गीर्वाणवंद्यो यदि लाभसंस्थः ॥११॥ टीका ॥ यदि गुरु एकादश भाव में हो तो जा-तक बड़ा सामर्थ्यवान्, धन-लाभ पाने वाला, श्रेष्ठ वस्त्र एवं श्रेष्ठ वाहनों वाला तथा राजा का कृपा-पात्र होता है ॥११॥ नानाचित्तोद्वेग संजात कोपं पापात्मानं सालसं त्यक्तलज्जम्। बुद्ध्याहीनं मानवं मानहीनं वागीशोयं द्वादशस्थः करोति ॥१२॥ इति गुरोः ॥ यदि गुरु द्वादश भाव में हो तो जातक अनेक प्रकार के चित्तोद्वेगों के कारण क्रोध करने वाला, पापी, आलसी, निर्लज्ज, बुद्धि-हीन तथा मान-रहित होता है ॥१२॥ इति गुरु फलम् ॥५॥

अथ शुक्रभाव फलम् ॥ बहुकला कुशलो विमलोक्तिकृत्सुवदनामदनानुभवः पुमान्। अवनिनायक मान धनान्वितो भृगुसुते तनुभाव गते सति ॥१॥ टीका ॥ यदि शुक्र लग्न (तनु भाव) में हो तो जातक अनेक कलाओं का ज्ञाता, श्रेष्ठ, निर्मल वाणी वाला, श्रेष्ठ स्त्री के साथ काम-चेष्टाएं करने वाला, राजमान्य तथा धनवान् होता है ॥१॥ सदन्नपानाभिरतं नितांतं सद्वस्त्र

भूषाधनवाहनाढ्यं । विचित्रविद्यं मनुजं प्रकुर्याद्धनोपपन्नो भृगुनंदनोयम् ॥ २॥ टीका ॥ यदि शुक्र द्वितीयभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ अन्न और पानादि पदार्थों में प्रीति रखने वाला; श्रेष्ठ वस्त्र, आभूषण, धन तथा वाहनादि से युक्त एवं विचित्र विद्याओं का जानकार होता है ॥ २॥ कृशांगयष्टिः कृपणो दुरात्मा द्रव्येणहीनोमदनानुतप्तः। सतामनिष्ठो बहुदुष्टचेष्टो भृगोस्तनूजे सहजे नरः स्यात् ॥३॥ टीका ॥ यदि शुक्र तृतीयभाव में हो तो जातक कृश-अङ्गों वाला, कृपण, दुष्ट-चित्तवाला, धन-हीन, काम-पीड़ित, श्रेष्ठ जनों को क्लेशदायक एवं बहुत खोटा व्यवहार करने वाला होता है ॥ ३॥ मित्रक्षेत्रग्रामसद्वाहनानांनाना सौख्यं वंदनं देवतानाम् । नित्यानंदं मानवानां प्रकुर्यात् दैत्याचार्यस्तुर्यभावस्थितोयम् ॥४॥ टीका॥ यदि शुक्र चतुर्थ भाव में हो तो जातक को मित्र, भूमि, ग्राम, श्रेष्ठ वाहन तथा अन्य अनेक प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। वह देव-पूजक एवं नित्य प्रति आनन्द मनाने वाला होता है ॥ ४॥ सकल काव्य कलाभिरलंकृतस्तनयवाहन धान्य समन्वितः। नरपते गुरु गौरव भाङ् नरो भृगुसुते सुत सद्मनि संस्थिते॥५॥टीका॥यदि शुक्र पंचमभाव में हो तो जातक सम्पूर्ण काव्य-कलाओं से अलंकृत, पुत्र, वाहन एवं धन-धान्य युक्त, तथा उच्च राज्य-सम्मान को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ५॥ अभिमतोनभवेत्प्रमदाजनेसुमनोभवहीनतरो नरः। विबलताकलितः किल संभवे भृगुसुतेरिगतेरिभयान्वितः ॥६॥ टीका ॥ यदि शुक्र षष्ठभाव में हो तो जातक स्त्रियों का प्रिय नहीं होता। वह काम-हीन, निर्बलता युक्त एवं शत्रुओं के भय से भीत होता है ॥ ६॥ बहुकला कुशलो जलकेलि कृद्रतिविलास विधानविचक्षणः। अतितरांनटिनीकृत सौहृदः सुनयनाभवने भृगुनन्दने ॥ ७॥ टीका ॥ यदि शुक्र सप्तमभाव में हो तो जातक अनेक कलाओं में कुशल, जल-क्रीड़ा प्रेमी, रति-विलास में अत्यन्त प्रवीण तथा अत्यन्त चंचल स्वभाव वाली स्त्री के साथ प्रेम करने वाला होता है ॥ ७॥ प्रसन्नमूर्त्तिर्नृपलब्धमानः शठोतिनिःशंकतरः सगर्वः। स्त्री

पुत्र चिंता सहितः कदाचिन्नरोऽष्टमस्थानगते सितारव्ये ॥८॥ टीका ॥ यदि शुक्र अष्टम भाव में हो तो जातक प्रसन्न मूर्ति, राजा द्वारा सम्मान प्राप्त, शठ, निःशंक बोलने वाला, घमण्डी तथा कदाचित् स्त्री-पुत्र की चिन्ता से मुक्त होता है ॥८॥ अतिथि गुरु सुरार्चा तीर्थ यात्रार्पितार्थ प्रतिदिन धन यानात्यंत सञ्जात हर्षः। मुनिजन सम वेषः पूरुषस्त्यक्त रोषो भवति नवम भावे संभवे भार्गवेस्मिन् ॥९॥ टीका ॥ यदि शुक्र नवम भाव में हो तो जातक अभ्यागत, गुरु एवं देवता की पूजा करने वाला, तीर्थ-यात्रा में धन-व्यय करने वाला, प्रतिदिन धन तथा वाहन का सुख पाने वाला, मुनियों जैसे वेष वाला तथा क्रोध-रहित होता है॥ ९॥ सौभाग्य सम्मान विराजमानः स्नानार्चनध्यानमना धनाढ्यः। कांता सुत प्रीतिरतीव नित्यं भृगोः सुते राज्य गते नराणाम् ॥१०॥ टीका ॥ यदि शुक्र दशमभाव में हो तो जातक सौभाग्य एवं सम्मान से युक्त शोभावान्, स्नान-पूजन-ध्यान में चित्त को लगाने वाला, धनी तथा स्त्री-पुत्र से प्रतिदिन विशेष स्नेह करने वाला होता है॥ १०॥ सद्गीतनृत्यादिरतानितांतं नित्यं च चिंता गमनानि नूनम्। सत्कर्म धर्मागमचित्तवृत्तिर्भृगोः सुतो लाभगतो यदि स्यात् ॥११॥ टीका ॥ यदि शुक्र एकादश भाव में हो तो जातक श्रेष्ठ गीत-नृत्य में प्रीति रखने वाला, नित्यप्रति यात्रा की चिन्ता प्राप्त करने वाला एवं श्रेष्ठ कर्म, धर्म तथा वेद में चित्तवृत्तियों को लगाने वाला होता है ॥११॥ संत्यक्त सत्कर्मगतिर्विरोधी मनोभवाराधनमानसश्च। दयालुता सत्य विवर्जितः स्यात् काव्ये प्रसूतौ व्ययभावयाते ॥१२॥ टीका॥ यदि शुक्र द्वादशभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ कर्मों को त्याग कर उनका विरोध करने वाला, कामदेव का आराधक एवं दया तथा सत्य से रहित होता है॥१२॥ इति भृगु फलम् ॥

अथ शनि भाव फलम्॥ प्रसूति काले नलिनीशसूनुः स्वोच्चत्रिकोणर्क्षगतो विलग्ने। कुर्यान्नरं देशपुराधिनाथं शेषेष्व भद्रं सरुजं दरिद्रम् ॥१॥ टीका ॥ यदि शनि लग्न (प्रथमभाव) में हो और वह तुला, मकर अथवा कुंभ राशियों में स्थित हो तो जातक को देश तथा पुर का स्वामी बनाता है। यदि किसी अन्य राशि में हो

तो जातक नीच, रोगी तथा दरिद्र होता है ॥१॥ अन्त्यालयस्थो व्यसनाभिभूतो जनोज्झितः स्यान्मनुजश्च पश्चात्। देशांतरे वाहन राजमानो धनाभिधाने भवनेऽर्कसूनौ ॥२॥ टीका ॥ यदि शनि द्वितीयभाव में हो और बृहस्पति उच्चराशि में न हो तो जातक व्यसनों से पीड़ित, स्वजनों से त्यक्त तथा विदेश में वाहन एवं राज-सम्मान को पाने वाला होता है ॥२॥ राजमान शुभ वाहन युक्तो ग्रामपो बहु पराक्रमशाली। पालको भवति भूरिजनानां मानवो हि रविजे सहजस्थे ॥३॥ टीका ॥ यदि शनि तृतीयभाव में हो तो जातक राजद्वारा सम्मानित, श्रेष्ठ वाहनों को प्राप्त करने वाला, ग्राम का स्वामी, बड़ा पराक्रमी तथा बहुत लोगों को पालने वाला होता है ॥३॥ पित्तानिल क्षीणबलं सुशील मालस्य युक्तं कलिदुर्बलाङ्गं। मालिन्यभाजं मनुजं विदध्यात्सुखातलस्थो नलिनीशजन्मा ॥४॥ टीका ॥ यदि शनि चतुर्थ भाव में हो तो जातक पित्त तथा वात के कारण क्षीणबली, खोटे स्वभाव वाला, आलस्य युक्त, लड़ाई के कारण दुर्बल अङ्गों वाला तथा धन-हीन होता है ॥४॥ सदागदं क्षीणतरं शरीरं धनेन हीनत्वमनंग हानिम्। प्रसूति काले नलिनीश पुत्रः पुत्रास्थितः पुत्र भयं करोति ॥५॥ टीका ॥ यदि शनि पंचमभाव में स्थित हो तो जातक सदैव रोगी रहने के कारण क्षीण-शरीर वाला, धन-हीन, काम-शक्ति-हीन एवं पुत्र को पीड़ा करने वाला होता है ॥५॥ विनिर्जितारातिगणो गुणाढ्यः सुज्ञाम्यनुज्ञा परिपालकः स्यात्। पुष्टांग यष्टिः प्रबलोदराग्निर्नरोऽर्कपुत्रे सति शत्रुसंस्थे ॥६॥ टीका ॥ यदि शनि षष्ठ भाव में हो तो जातक शत्रुओं के समूह को जीतने वाला गुणाढ्य, श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञाता, अनेक लोगों का पालन करने वाला, पुष्ट शरीर वाला, प्रबल जठराग्नि वाला एवं बड़ा बलवान् होता है ॥६॥ आमयेन बलहीनतां गतो हीनवृत्ति जनचित्त संस्थितिः। कामिनी भवन धान्य दुःखितः कामिनी भवनगे शनैश्चरे ॥७॥ टीका ॥ यदि शनि सप्तमभाव में हो तो जातक रोग द्वारा निर्बलता को प्राप्त, उपजीविका एवं मनुष्यों के मेल-मिलाप से रहित एवं स्त्री, घर तथा अन्न की चिन्ता में दुःखी रहनेवाला होता है ॥७॥ कृशतनुर्नन्दद्रुविचर्चिका प्रभवतो भयतोष विवर्जितः। अलसता सहितो हि नरो भवेन्निधन

वेश्मनि भानुसुते स्थिते ॥ ८॥ टीका ॥ यदि शनि अष्टम भाव में हो तो जातक कृश-शरीर, दाद-खाज, फोड़े फुंसी आदि से पीड़ित, सन्तोष-रहित एवं आलसी होता है ॥ ८॥ धर्मकर्म सहितो विकलांगो दुर्मतिर्हि मनुजेऽति मनोज्ञः । संभवस्य समये यदि कोणस्त्रित्रिकोणभवने यदि संस्थः ॥ ९॥ टीका ॥ यदि शनि नवम भाव में हो तो जातक धर्म-कर्म युक्त, व्याकुल अङ्गों वाला, दुर्बुद्धि, अत्यधिक तर्क करने वाला एवं अपनी मनमानी करने वाला होता है ॥ ९॥ राज्ञः प्रधान मति नीतियुतं विनीतं सद्ग्राम वृंद पुर भेदन काधिकारम् । कुर्यान्नरं सुचतुरं द्रविणेन पूर्णं मेषूरणे हितरणे स्तनुजः करोति ॥ १०॥ टीका ॥ यदि शनि दशम भाव में हो तो जातक राजा का मन्त्री, नीति-युक्त, विनम्र, श्रेष्ठ ग्राम तथा पुरों के समूह को भेद करने का अधिकार प्राप्त करने वाला, चतुर तथा धन पूर्ण होता है ॥ १०॥ कृष्णाश्वानामिंद्रनीलोर्ष कानां नानाच्चंचद्वस्तुदंतावलानाम् । प्राप्तिं कुर्यान्मानवानां वलीयान् प्राप्तिस्थाने वर्त्तमानेऽर्क सूनौ ॥ ११॥ टीका ॥ यदि शनि एकादश भाव में हो तो जातक कृष्णवर्ण अश्व, नील इन्द्रमणि, ऊर्ण वस्त्र तथा हाथियों के लाभ वाला होता है, यदि शनि बलवान् हो तभी यह फल होता है, अन्यथा सामान्य-लाभ प्राप्त होते हैं ॥ ११॥ दयाविहीनो विधनो व्ययार्त्तः सदाऽलसो नीच जनानुयातः । नरोऽङ्गहीनोज्झित सर्वसौख्यो व्ययस्थिते भानुसुते प्रसूतो ॥ १२॥ इति शनेः ॥ टीका ॥ यदि शनि द्वादश भाव में हो तो जातक दया-हीन, धन-हीन, खर्च से पीड़ित, सदा आलसी, नीचों की संगति करने वाला, अङ्ग हीन तथा सुख-हीन होता है ॥ १२॥ इति शनि फलम् ॥

तथाच्च ॥ तन्वादिस्थ शनेः प्रोक्तं यच्च भावोद्भवं फलम् । राहोस्तदेव विज्ञेयं मुनीनामपि संमतम् ॥ १॥ टीका ॥ तन्वादि द्वादश भावों में शनि की स्थिति का जो फल कहा है, वैसा ही फल राहु का भी होता है - यह मुनियों का कथन है ॥ १॥ स्वोच्चादिस्थः पूर्णफलं हि धत्ते स्वर्क्षे हितर्क्षे हि फलार्धमेव । फलांघ्रि मात्रं रिपुमंदिरस्थश्चास्तं प्रयातः खचरो न किंचित् ॥ २॥ टीका ॥ जो ग्रह अपनी उच्च राशि में स्थित

हो, वह पूर्ण फल देता है। जो ग्रह अपनी स्वराशि अथवा मित्रराशि में स्थित हो, वह भाव का आधा फल देता है। जो ग्रह शत्रु-क्षेत्र में स्थित हो, वह चतुर्थांश भाव-फल देता है और जो ग्रह अस्त होता है अर्थात् सूर्य के समान-अंशों पर होता है अथवा नीच राशि पर होता है, वह थोड़ा भी भाव-फल नहीं देता॥ २॥

अथ राहु भाव फलम्॥ लग्नेतमोदुष्टमति स्वभावं नरंच कुर्यात्स्वजनानु वंचकम्। शीर्ष व्यथा कामरसेन संयुतं करोति वादे विजयं सरोगम्॥ १॥ टीका॥ यदि राहु लग्न (प्रथमभाव) में स्थित हो तो जातक दुष्ट बुद्धि एवं दुष्ट-स्वभाव वाला, सम्बन्धियों को ठगने वाला, शिरोपीड़ा से युक्त, विवाद में विजय पाने वाला तथा रोगी होता है॥ १॥ धनगतो रविचन्द्रविमर्दनो मुखरतांकित भावमयो भवेत्। धनविनाशकरो हि दरिद्रतां खलुतदा लभते मनुजोऽटनम्॥ २॥ टीका॥ यदि राहु द्वितीय भाव में हो तो जातक कठोर-कर्म करने वाला, धन-नाशक, दरिद्र तथा निश्चित रूप से भ्रमणशील होता है॥२॥ दुश्चिक्यगेरिभवोद्‌भवं वितिहते लोके यशस्वी नरः। श्रेयोवादि भवंतदाहि लभते सौख्यं विलासादिकम्॥ भ्रातृणां निधनं यशोश्च मरणं दारिद्र्यभावैर्युतं। नित्यं सौख्यगणैः पराक्रम युतं कुर्याच्च राहुः सदा॥ ३॥ टीका॥ यदि राहु तृतीय भाव में हो तो जातक शत्रुओं के ऐश्वर्य को नष्ट करने वाला, लोक-यशस्वी, कल्याण एवं ऐश्वर्य को पाने वाला, सुख एवं विलास को पाने वाला, भाइयों की मृत्यु करने वाला, यश-नाशक, दारिद्र्य-युक्त, नित्य-प्रति सुख पाने वाला तथा श्रेष्ठ पराक्रमी होता है॥ ३॥ सुखगते रविचन्द्र विमर्दने सुखविनाशनतां मनुजो लभेत्। स्वजनतां सुतमित्र सुखंनरो न लभते च सदा भ्रमणं नृणाम्॥ ४॥ टीका॥ यदि राहु चतुर्थ भाव में हो तो जातक को सुख नहीं मिल पाता। उसे पुत्र एवं मित्रों का सुख भी नहीं मिलता। साथ ही वह सदैव

भ्रमणशील भी बना रहता है ॥ ४॥ गत सुखो नहि मित्र विवर्धिता मुदर शूलविलास निपीडनम्। खलु तदालभ
ते मनुजो भ्रमं सुतगते रविचन्द्र विमर्दने ॥ ५॥ टीका॥ यदि राहु पंचम भाव में हो तो जातक सुख-हीन,
मित्र-हीन, उदर-शूल का रोगी, विलास में पीड़ा पाने वाला तथा भ्रमयुक्त होता है ॥ ५॥ शत्रुक्षयं द्रव्य
समागमं च पशुषु पीडां कटि पीडनं च। समागमं म्लेच्छ जनैर्महाबलं प्राप्नोति जंतुर्यदि षष्ठगे तमे ॥ ६॥ टीका॥
यदि राहु षष्ठ भाव में हो तो जातक के शत्रुओं का नाश होता है, द्रव्य का लाभ होता है, पशुओं
को पीड़ा होती है, कमर में दर्द रहता है, म्लेच्छों से समागम होता है तथा जातक बहुत बलवान्
होता है ॥ ६॥ जाया विरोधं खलु वा प्रणाशं प्रचंड रूपामथ कोप युक्ताम्। विवाद शीला मथ रोग युक्ता
प्राप्नोति जंतुर्मदने तमे च ॥ ७॥ टीका॥ यदि राहु सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री का विरोधी अथवा
स्त्री का नाश करने वाला अथवा प्रचण्ड क्रोध वाली स्त्री को पाने वाला अथवा स्त्री से विवाद करने
वाला अथवा रोगिणी स्त्री को प्राप्त करने वाला होता है ॥ ७॥ अनिष्ट नाशं खलु गुह्य पीडां प्रमेह रोगं
वृषणस्य वृद्धिं। प्राप्नोति जन्तुर्विकलारि लाभं सिंही सुते वा खलु मृत्युगे हे ॥ ८॥ टीका॥ यदि राहु अष्ट-
-म भाव में हो तो जातक नाश को प्राप्त होता है। उसे गुदा में पीड़ा, प्रमेह रोग अथवा अण्डवृद्धि
रोग होता है तथा वह शत्रुओं के कारण व्याकुल बना रहता है ॥ ८॥ धर्मार्थ नाशः किल धर्मगे तमे
सुखाल्पता वै भ्रमणं नरस्य। दारिद्रता बंधु सुखाल्पता च भवेच्च लोके किल देह पीडा ॥ ९॥ टीका॥
यदि राहु नवम भाव में हो तो जातक का धर्म और धन नष्ट होता है, सुख बहुत थोड़ा मिलता है,
उसे भ्रमण करते रहना पड़ता है। ऐसा जातक दरिद्री, संबन्धियों का अल्प-सुख पाने वाला तथा
शरीर-पीड़ा पाने वाला होता है ॥ ९॥ पितुर्नो सुखं कर्म योगस्य राहुः स्वयं दुर्भगः शत्रु नाशं करोति
रुजो वाहने वात पीडां च जंतोर्यदा सौख्यगो मीनगः कष्ट भाजम्॥ १०॥ टीका॥ यदि राहु दशम भाव

में हो तो जातक को पिता का सुख नहीं मिलता। वह खोटे भाग्य वाला, शत्रु-नाशक, रोगी, वाहन-हीन एवं वात-रोगी होता है। यदि दशमभाव मे मीन राशिस्थ राहु हो तो जातक कष्ट भोगने वाला होता है॥१०॥ लाभे गते यदि तमे सकलार्थ लाभं सौख्याधिकं नृपगणाद्विविधं च मानम्। वस्त्रादि कांचन चतुष्पद सौख्य भावं प्राप्नोति सौख्य विजयं च मनोरथं च॥११॥ टीका॥ यदि राहु एकादश भाव में हो तो जातक को सब प्रकार के अर्थ (धन) तथा सुखों का विशेष लाभ होता है। उसे राजवर्ग से अनेक प्रकार के सुख, वस्त्र, स्वर्ण एवं चतुष्पदों का लाभ होता है तथा सर्वत्र विजय एवं मनोरथ-सिद्धि प्राप्त होती है॥११॥ नेत्रे च रोगं किल पाद घातं प्रपंच भावं किल वात्सलत्वम्। दुष्टे रतिं मध्यम सेवनं च करोति जातं व्ययगेत मेवा॥१२॥ इति राहो॥ टीका॥ यदि राहु द्वादश भाव में हो तो जातक नेत्र-रोगी, पाँव में आघात पाने वाला, बड़ा प्रपंची, निश्चित प्रेम करने वाला, दुष्टजनों का स्नेही तथा मध्यम लोगों की सेवा करने वाला होता है॥१२॥ इति राहु फलम्॥ ८॥

अथ केतु भाव फलम्॥ यदा लग्नगश्चेच्छिखी सूत्रकर्त्ता सरोगादि भीतो भयं व्यग्रता च। कलत्रादि चिंता महोद्वेगता च शरीरे प्रबाधा व्यथा मारुतस्य॥१॥ टीका॥ यदि केतु लग्न (प्रथम भाव) में स्थित हो तो जातक सूत्रकर्त्ता, रोगादि के कारण भय को प्राप्त, व्यग्र, स्त्री-पुत्रादि की चिन्ता से युक्त, महान् उद्वेग को प्राप्त होने वाला तथा शरीर में वायु की पीड़ा से दुःखी होता है॥१॥ धनेचेच्छिखी धान्य नाशो धनं च कुटुम्बाद्विरोधो नृपाद्द्रव्य चिन्ता। सुखे रोगता संततं स्यात्तथा च यदा स्वे गृहे सौम्यगेहेति सौख्यम्॥२॥ टीका॥ यदि केतु द्वितीय भाव में हो तो जातक धन-धान्य के विनाश को प्राप्त होता है तथा कुटुम्बियों से विरोध पाता है। उसे राजा के द्वारा धन की चिन्ता होती है तथा सदैव मुख रोगी बना रहता है। यदि केतु स्वगृही अथवा शुभ ग्रह के घर में हो तो सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं॥२॥

शिखी विक्रमे शत्रुनाशं च वादे धनं भोगमैश्वर्य तेजोऽधिकं च। भवेद्बन्धुनाशः सदा बाहुपीडा सुखं स्वोच्चगेहे भवोद्वेगता च ॥ ३॥ यदि केतु तृतीयभाव में हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, शत्रुओं से विवाद करने वाला; धन, भोग, ऐश्वर्य एवं तेज-सम्पन्न, भ्रातृ-नाशक तथा बाहु में पीड़ा पाने वाला होता है। यदि केतु अपनी उच्चराशि में हो तो सुख एवं संसार से उदासीनता देने वाला सिद्ध होता है ॥३॥ चतुर्थे च मातुः सुखं नो कदाचित्सुहृद्वर्गतः पितृतो नाशमेति। शिखी बन्धुहीनः सुखं स्वोच्चगेहे चिरं नैति सर्वैः सदा व्यग्रता च ॥ ४॥ टीका॥ यदि केतु चतुर्थभाव में हो तो जातक को माता का सुख प्रायः नहीं मिलता उसके मित्र, पिता तथा भाइयों का भी नाश होता है। परन्तु यदि केतु अपनी उच्चराशि का हो अर्थात् वृश्चिक अथवा सिंह राशि में हो तो जातक को माता-पिता एवं मित्रादि का सुख प्राप्त होता है, परन्तु वह चिरकालीन नहीं होता तथा जातक का चित्त भी सदैव उदास बना रहता है ॥ ४॥ यदा पंचमे यस्य केतुश्च जातः स्वयं स्वोदरे घातपातादि कष्टं। सुबंधुप्रिया संततिः स्वल्पपुत्रः सदा संभवेद्वीर्ययुक्तो नरश्च ॥५॥ टीका॥ यदि केतु पंचम भाव में हो तो जातक के पेट में घात तथा हिलने से कष्ट होता है। वह अपने सम्बन्धियों से प्रेम रखने वाला, थोड़े पुत्रों वाला, सदैव कल्याणयुक्त तथा बलवान् होता है ॥५॥ शिखी यस्य षष्ठे स्थितो वैरिनाशो भवेन्मातुलात्पक्षतो मानभंगः ॥ चतुष्पात्सुखं दुग्धलाभो नितांतं न रोगोऽस्य देहे सदा व्याधिनाशः ॥ ६॥ टीका॥ यदि केतु षष्ठभाव में हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, मामा के पक्ष से मान-भङ्ग को प्राप्त होने वाला; गाय, भैंस, घोड़ा आदि चतुष्पदों का सुख पाने वाला, निरन्तर धन पाने वाला एवं सदैव व्याधियों से रहित आरोग्य-शरीर वाला होता है ॥ ६॥ शिखी सप्तमे मार्गतश्चित्तवृत्तिं सदा वित्तनाशोऽथवा वारिभूतः। भवेत्कीटगे सर्वदा लाभकारी कलत्रादि पीडा व्ययेऽस्युग्रता च ॥ ७॥ टीका॥ यदि केतु सप्तम भाव में हो तो जातक को निरन्तर

यात्रा करने की चिन्ता बनी रहती है तथा शत्रुओं के कारण धन का नाश होता रहता है । परन्तु यदि केतु वृश्चिक राशि का हो तो वह सदैव लाभ देता है, साथ ही स्त्री आदि की चिन्ता से चित्त को चिन्तित भी बनाये रखता है ॥ ७॥ गुदे पीडनं वाहनैर्दुष्ट लाभं यदा कीटगे कन्यके युग्म गे वा । भवेच्छिद्रगे राहु छाया यदा स्यादजे गोलिगे जायते चाति लाभः ॥ ८ ॥ टीका ॥ यदि केतु अष्टम भाव में हो तो जातक की गुदा में रोग होता है । यदि अष्टम भाव में वृश्चिक, कन्या, मिथुन, मेष अथवा वृष राशि हो और उसमें केतु बैठा हो तो बहुत धन का लाभ देता है ॥ ८॥ यदा धर्मगः केतवः क्लेश नाशः सुतार्थी भवेन्म्लेच्छतो भाग्य वृद्धिः । सहेतु व्यथा बाहु रोगं विधत्ते तपो दान तो हास्य वृद्धिं करोति ॥ ९॥ टीका ॥ यदि केतु नवम भाव में हो तो जातक के क्लेश दूर होते हैं । वह पुत्र की इच्छा वाला होता है तथा म्लेच्छ के सहयोग से उसके भाग्य की वृद्धि होती है । उसे किसी कारण वश पीड़ा होती है तथा बाहु-रोग भी होता है । तप-दान में उसको कोई श्रद्धा नहीं होती ॥ ९॥ पितुर्नो सुखं कर्मगो यस्य केतुः स्वयं दुर्भगः शत्रुनाशं करोति । रुजो वाहने वात पीडां च जंतोर्यदा कन्यगः सौख्यगः कष्टभाजं ॥ १० ॥ टीका ॥ यदि केतु दशम भाव में हो तो जातक को पिता का सुख नहीं होता । वह खोटे भाग्य वाला, अनेक शत्रुओं का नाश करने वाला, रोगी, वाहन की पीड़ा से युक्त एवं वायु-विकार वाला होता है । यदि दशम भाव में कन्या राशि हो तो जातक को सुख-दुःख — दोनों ही प्राप्त होते हैं ॥ १० ॥ सुभाषी सुविद्याधिको दर्शनीयः सुभोगः सुतेजाः सुवस्त्रोपि-यस्य । गुदे पीड्यते संतते दुर्भगत्वं शिखी लाभगः सर्व कालं करोति ॥ ११ ॥ टीका ॥ यदि केतु एकादश भाव में हो तो जातक सुन्दर बोलने वाला, श्रेष्ठ विद्या वाला, दर्शनीय स्वरूप वाला, श्रेष्ठ भोगों वा-ला, तेजस्वी, श्रेष्ठ वस्त्रों वाला, गुदा में रोग वाला तथा खोटी-सन्तान वाला होता है ॥ ११ ॥ शिखी रिस्फगः पाद नेत्रे च पीडां स्वयं राजतुल्यो व्ययं वै करोति । रिपोर्नाशनं मानसे नैव शर्म रुजा पीड्यते

वस्ति गुह्यांग रोगं ॥१२॥ टीका॥ यदि केतु द्वादशभाव में हो तो जातक के पाँवों तथा नेत्रों में पीड़ा रह
ती है । वह राजा की भाँति खर्च करने वाला, शत्रुओं का नाशक तथा चित्त में अशान्ति वाला होता है।
उसके वस्ति तथा गुदा में रोग की पीड़ा भी होती है ॥ इति केतु फलम् ॥ ९॥

अथ द्वादशभावगत राशि फलम् ॥ तत्रादौ लग्नगत मेषादि द्वादश राशि फलम् ॥ मेषोदये
रक्ततनुर्मनुष्यः श्लेष्माधिकः क्रोधपरः कृतघ्नः । सुमन्दबुद्धिः स्थिरता समेतः पराजितः स्त्रीभृतकैः सदैव ॥१॥
वृषोदये जन्म यदा भवेच्च स्वचित्त रोगं स्वजनापमानम् । इष्टैर्वियोगं कलहं च दुःखं शस्त्राभिघातं च धनक्षयं च
॥२॥ तृतीयलग्ने पुरुषोऽति गौरः स्त्रीरतोचित्त नृपपीडितश्च । दूतः प्रसन्नः प्रियवाग्विनीतः सुमूहृज्जो गीतविच-
क्षणश्च ॥३॥ कर्कोदये गौरवपुर्मनुष्यः पित्ताधिकः कल्पतरुः प्रगल्भः । जलावगाहानुरतोऽति बुद्धिः शुचिः क्षमी
धर्मरुचिः सुसेव्यः ॥४॥ सिंहोदये पाण्डुतनुर्मनुष्यः पित्तानिलाभ्यां परिपीडिताङ्गः । प्रियामिषो रम्यरसः सुती-
-क्ष्णः शूरः प्रगल्भः सुतरां चरश्च ॥५॥ कन्याख्य लग्ने कफपित्त युक्तो भवेन्मनुष्यः शुभकान्त भावः । लक्ष्मी
प्रियस्त्रीविजितो नु भीरुर्मायाधिकः कामकदर्थिताङ्गः ॥६॥ तुला विलग्ने च भवेन्मनुष्यः श्लेष्मान्वितः सत्यपरः
सदैव । पराप्रियः पार्थिवमानयुक्तः सुरार्चने तत्पर कल्प एव ॥७॥ लग्नेष्टके क्रोधपरो जरावान्भवेन्मनुष्यो
नृपपूजिताङ्गः । गुणान्वितः शास्त्रकथाऽनुरक्तो प्रमर्दकः शत्रुगणस्य नित्यम् ॥८॥ चापोदये राजयुतो मनुष्यः
कार्ये प्रवीणो द्विजदेवरक्तः । तुरङ्ग युक्तः सुहृदि प्रयुक्तस्तुरङ्गजङ्घश्च भवेत्सदैव ॥९॥ मृगोदये तोयरतः सुतीव्रो
भीरुः सदा पापरतश्च धूर्तः । श्लेष्माऽनिलाभ्यां परिपीडिताङ्गः सुदीर्घगात्रः परवञ्चकश्च ॥१०॥ घटोदये
सुस्थिरता समेतो वाताधिकस्तोयनिषेवणोक्तः । सुहृत्स्वगात्रः प्रमदास्वभीष्टः शिष्टानुरक्तो जनवल्लभ
श्च ॥११॥ मीनोदये तोयरतो मनुष्यो भवेद्विनीतः सुरतानुकूलः । सुपण्डितः सूक्ष्मतनुः प्रचण्डः पित्ताधिकः
कीर्तिसमन्वितश्च ॥१२॥ टीका॥ अब द्वादशभावगत राशियों का फल कहते हैं । उनमें सर्वप्रथम लग्नगत

द्वादश राशियों का फल कहा जाता है। यदि लग्न में 'मेष' राशि हो तो जातक रक्त-गौर वर्ण, कफ-प्रकृति, क्रोधी, कृतघ्न, मन्दबुद्धि, स्थिर-स्वभाव वाला तथा स्त्री एवं नौकरों से पराजित होता है॥१॥ यदि लग्न में 'वृष' राशि हो तो जातक मानसिक-रोगग्रस्त, स्वजनों से अपमानित, मित्रों का वियोग पाने वाला एवं कलह, दुःख, शस्त्राघात एवं धन-हानि के कारण कष्ट पाने वाला होता है॥२॥ यदि लग्न में 'मिथुन' राशि हो तो जातक गौर-वर्ण, स्त्री में आसक्त, राजा से पीड़ित, दूत-कर्म करने वाला, प्रसन्नचित्त, प्रियवादी, विनम्र, सुन्दर केशों वाला तथा संगीतज्ञ होता है॥३॥ यदि लग्न में 'कर्क' राशि हो तो जातक गौर वर्ण, पित्त-प्रकृति वाला, दानी, प्रौढ़, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, अत्यन्त बुद्धिमान्, पवित्र, क्षमाशील, धर्मात्मा तथा नौकरों से सुसेवित होता है॥४॥ यदि लग्न में 'सिंह' राशि हो तो जातक पाण्डुवर्ण, पित्त तथा वात प्रकृति वाला, पीड़ित अङ्गों वाला, मांस-प्रेमी, रम्य-रसिक, तीक्ष्ण स्वभाव वाला, शूर, प्रगल्भ तथा भ्रमणशील होता है॥५॥ यदि लग्न में 'कन्या' राशि हो तो जातक कफ-पित्त प्रकृति, सुशील, स्त्री जैसे स्वभाव वाला, धनी, स्त्री के वश में रहने वाला, डरपोक, मायावी तथा काम-पीड़ित अङ्गों वाला होता है॥६॥ यदि लग्न में 'तुला' राशि हो तो जातक कफ-प्रकृति, सत्यवादी, पर-स्त्री-प्रेमी, राजमान्य तथा देवताओं का आराधक होता है॥७॥ यदि लग्न में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक क्रोधी स्वभाव का, वृद्ध जैसा दिखाई देने वाला, राजमान्य, गुणवान्, शास्त्र में रुचि रखने वाला तथा शत्रुओं का मर्दन करने वाला होता है॥८॥ यदि लग्न में 'धनु' राशि हो तो जातक राजा का प्रिय कार्य-कुशल, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अश्वारोहण-प्रिय तथा घोड़े की जाँघ जैसी जाँघों वाला होता है॥९॥ यदि लग्न में 'मकर' राशि हो तो जातक जल-प्रेमी, अत्यन्त तीव्र स्वभाव का, डरपोक, पापचारी, धूर्त, कफ तथा वात से पीड़ित अङ्गों वाला, लम्बे शरीर वाला तथा ठगने वाला होता है॥१०॥ यदि लग्न में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक स्थिर-स्वभाव का, वात-प्रकृति का, जल-क्रीड़ा-प्रेमी, छोटे शरीर वाला,

स्त्रियों को प्रिय, शिष्टाचार-कुशल तथा लोक-प्रिय होता है ॥११॥ यदि लग्न में 'मीन' राशि हो तो जातक जल-प्रेमी विनम्र सुरत-प्रिय, पण्डित, कृश-शरीर, अत्यन्त क्रोधी, पित्ताधिक्य-प्रकृति वाला तथा कीर्ति युक्त होता है ॥१२॥ इति लग्न गत राशि फलम् ॥१॥

अथ धन भाव गत राशि फलम् ॥ मेषे धनस्थे कुरुते मनुष्यो धनं स पुण्यैर्विविधैः प्रभूतैः सुनीतियुक्तं तनयं प्रसूते चतुष्पदाढ्यं बहुपण्डितत्वम् ॥१॥ वृषे धनस्थे लभते मनुष्यः कृषिप्रसादेन धनं सदैव। अनाभिघातं च चतुष्पदाख्यं तथा हिरण्यं मणिमौक्तिकाद्यम् ॥२॥ तृतीयराशौ धनगे मनुष्यो धनं लभेत्स्त्रीजनतश्च नित्यम्। रौप्यं तथा काञ्चनजं प्रभूतं हयादिकं साधुभिरेव सख्यम् ॥३॥ चतुर्थराशिर्धनगो मनुष्यो धनं लभेद् वृक्षजमेव नित्यम्। जलादुभयं यद्धनमिष्टभोग्यं नयार्जितं प्रीतिकरं सुतानाम् ॥४॥ सिंहे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं तपोऽरण्यजनात्तमानम्। सर्वोपकारं प्रवणं प्रभूत स्वविक्रमोपार्जितमेव नित्यम् ॥५॥ कन्योदये वित्तगते मनुष्यो धनं लभेद् भूमिपतेः सकाशात्। हिरण्यमुक्तामणिरौप्यजातं गजाश्व नानाविधवित्तजं च ॥६॥ तुले धनस्थे बहुपुण्य जातं धनं मनुष्यो लभते प्रभूतम्। पाषाणजं मृन्मयमार्तिजातं सस्योद्भवं कर्मजमेव नित्यम् ॥७॥ धने त्वलिर्यस्य भवेच्च राशिः स्वधर्मशीलं प्रकरोति नित्यम्। विलासिनी कामपरं सदैव विचित्रवाक्यं द्विजदेवभक्तम् ॥८॥ धनुर्धरे वित्तगते मनुष्यो धनं लभेत्स्थैर्य विधान जातम्। चतुष्पदाढ्यं विविधं यशस्वी रसोद्भवं धर्मविधान लब्धम् ॥९॥ मृगे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रपञ्चैर्विविधैरुपायैः। सेवासमुत्थं च सदा नृपाणां कृषिक्रियाभिश्च विदेश सङ्गात् ॥१०॥ घटे धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतं फलपुष्पजातम्। जलोद्भवं साधुजनस्य भोज्यं महाजनोत्थं च परोपकारी ॥११॥ मत्स्ये धनस्थे लभते मनुष्यो धनं प्रभूतैर्नियमोपवासैः। विद्याप्रभावान्निधि सङ्गमाच्च मातापितृभ्यां समुपार्जितं च ॥१२॥

टीका॥ यदि धन स्थान अर्थात् द्वितीय भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के धर्म-कर्म करता है तथा नीतिपूर्वक धनोपार्जन करता है। उसके पुत्र भी नीति-निपुण धन-वाहनादि से युक्त तथा बड़े पण्डित (विद्वान्) होते हैं॥१॥ यदि द्वितीय भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक को कृषि-कर्म से धन-लाभ होता है तथा गाय-भैंस आदि चतुष्पदों का एवं स्वर्ण-रत्नादि का निर्विघ्न लाभ होता रहता है॥२॥ यदि द्वितीय भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक को स्त्रियों की सहायता से सोना, चाँदी एवं चतुष्पद आदि का लाभ होता है तथा साधुजनों का सत्सङ्ग भी प्राप्त होता है॥३॥ यदि द्वितीय भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक को लकड़ी के व्यवसाय से विशेष लाभ होता है तथा जल में डूबने का भय रहता है। वह नीतिपूर्वक जो कुछ कमाता है उस धन का उपभोग उसके मित्रगण करते हैं। उसके पुत्र भी उस धन से सुख उठाते हैं अर्थात् स्वोपार्जित द्रव्य को वह अपने निजी उपभोग में नहीं ला पाता॥४॥ यदि द्वितीय भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक वन में उत्पन्न वस्तुओं एवं वन्य-जन्तुओं द्वारा अपने पराक्रम से लाभ एवं धन का उपार्जन करता है तथा वह धन सबके उपकार में खर्च होता है॥५॥ यदि द्वितीय भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक को राजा से सोना-चाँदी, हीरा-मोती, हाथी-घोड़े आदि का लाभ होता है॥६॥ यदि द्वितीय भाव में 'तुला' राशि हो तो जातक बड़ा पुण्यात्मा होता है तथा उस पुण्य प्रताप से प्रचुर धन कमाता है। उसे पत्थर, मिट्टी, धान्य आदि के व्यवसाय से बहुत लाभ होता है॥७॥ यदि द्वितीय भाव में 'वृ-श्चिक' राशि हो तो जातक स्वधर्म में तत्पर, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, विचित्र विनोद युक्त बातें करने वा-ला, देव-ब्राह्मणों का भक्त होता है॥८॥ यदि द्वितीय भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक स्थिर-कार्यों द्वारा गाय, भैंस, हाथी घोड़े आदि अनेक प्रकार के चतुष्पद, रसोद्भूत वस्तुओं से धन का लाभ एवं यश प्राप्त करने वाला होता है। वह धर्म-कर्म के लिए धन का संग्रह भी करता है॥९॥ यदि द्वितीय भाव में

'मकर' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के प्रपंचों, राजा की सेवा, खेती तथा विदेश यात्रा से धन-संग्रह करने वाला होता है ॥ १० ॥ यदि द्वितीय भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक फल, फूल एवं जलोत्पन्न वस्तुओं से धन कमा कर साधुजनों को खिलाने वाला एवं परोपकारी होता है ॥ ११ ॥ यदि द्वितीय भाव में 'मीन' राशि हो तो जातक व्रत, उपवास, विद्या आदि के प्रभाव से, भूमिगत द्रव्य की खोज से तथा माता-पिता के द्वारा उपार्जित धन का लाभ प्राप्त करने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति द्वितीयभावगत राशि फलम् ॥

अथ सहजभावगत राशि फलम् ॥ तृतीय भावे प्रथमे च राशौ द्विजातिमित्रश्च भवेन्मनुष्यः । परोपकारैः श्रवणैः शुचिश्च प्रभूतविद्यो नृपपूजिताङ्गः ॥ १ ॥ वृषे तृतीये लभते मनुष्यो नरेन्द्रमित्रं प्रचुरप्रतापम् । सुवित्तदं भूरियशोनिधानं शूरं कविं ब्राह्मणरक्तचित्तम् ॥ २ ॥ तृतीयसंस्थे मिथुने च लग्ने करोति मर्त्यं वरयानयुक्तम् । स्त्रीवल्लभं सत्यमुदारचेष्टं कुलाधिकं पूज्यतमं नृपाणाम् ॥ ३ ॥ कुलीरराशौ सहजं प्रयाते मित्रं लभेद्वैश्यगृहप्रदेशे । कृषीबलं धर्मकथानुरक्तं सदा सुशीलं जनसम्मतं च ॥ ४ ॥ सिंहे तृतीये कुरुते मनुष्यं शूरं कुमित्रं वरवित्तलुब्धम् । जघात्मकं पापकथानुरक्तं प्रचण्डवाक्यं त्वतिगर्वितं च ॥ ५ ॥ तृतीयभावस्थितराशिकन्या शास्त्रानुरक्तं मनुजं सुशीलम् । नानासुहृत्संस्तुतकल्पकोषं प्रियद्विजं देवगुरुप्रभक्तम् ॥ ६ ॥ तृतीयसंस्थे तु तुलाभिधाने मैत्री भवेत्पापपरैर्मनुष्यैः । लौल्यात्मको लौल्यकथाऽनुरक्ताः सार्द्धं मनुष्यैः स्वसुताल्पकैश्च ॥ ७ ॥ अलौ तृतीये च भवेन्नरस्य मैत्री सदा पापजनैर्दरिद्रैः । कृतघ्नघातैः कलहानुरक्तैर्व्यपेतलक्ष्यैर्जनताविरुद्धैः ॥ ८ ॥ चापे तृतीये च भवेन्मनुष्यो मन्त्री सुशूरो नृपसेवकश्च । चित्तैः स्वैरैर्धर्मपदैः प्रसन्नः कृपानुरक्ती रणकोविदश्च ॥ ९ ॥ नक्र तृतीये च नरस्य यस्य करोति सौम्यं सततं सुताढ्यम् । नित्यं सुहृद्देवगुरुप्रसक्तं महाधनं पण्डितमप्रमेयम् ॥ १० ॥ कुम्भे तृतीये लभते मनुष्यो मैत्री व्रतह्रैर्जह कीर्तियुक्तैः । क्षमाधिकैः सत्यपरैः सुशीलैर्गीतप्रियैर्गोधपरैः खलैश्च ॥ ११ ॥ तृतीय भाव स्थित

मीन राशौ नरं प्रसूतं बहुवित्तयुक्तम् । पुत्रान्वितं पुण्यधनैरुपेतं प्रियातिथिं सर्वजनाभिरामम् ॥१२॥

टीका ॥ यदि सहज अर्थात् तृतीय भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक ब्राह्मणों का हित, परोपकारी, पुराण-श्रवण करने वाला, पवित्र, अनेक विद्याओं का ज्ञाता तथा राजमान्य होता है ॥१॥ यदि तृतीयभाव में 'वृष' राशि हो तो जातक राजा का मित्र, अत्यन्त प्रतापी, दानी, यशस्वी, पण्डित, कवि तथा ब्राह्मणों का भक्त होता है ॥२॥ यदि तृतीयभाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक उत्तम वाहन से युक्त, स्त्रियों का प्रिय, सत्यवादी, उदार, कुल में श्रेष्ठ तथा लोक-पूज्य होता है ॥३॥ यदि तृतीय भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक व्यापारियों से मित्रता करने वाला, कृषि-कर्म-कर्त्ता, धर्मात्मा, सुशील तथा लोक-प्रिय होता है ॥४॥ यदि तृतीय भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक शूर, कुत्सित मित्रों वाला, धन-लोलुप, हिंसक, पाप-कथा में रुचि रखने वाला, कठोर वाणी बोलने वाला तथा गौरवशाली अथवा घमण्डी होता है ॥५॥ यदि तृतीयभाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक शास्त्राभ्यासी, सुशील, अनेक मित्रों वाला, मित्रों की सहायता से धन-संग्रह करने वाला, ब्राह्मणों का प्रिय तथा देवता एवं गुरुजनों का भक्त होता है ॥६॥ यदि तृतीयभाव में 'तुला' राशि हो तो जातक पापीजनों से मैत्री करने वाला, चंचल-चित्त वाला तथा अपने बच्चे से भी छोटे बच्चों से हँसी-मजाक की बातें करने वाला होता है ॥७॥ यदि तृतीय भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक पापियों तथा दरिद्रों से मैत्री रखने वाला, कृतघ्न, कलह-प्रिय, अव्यवस्थित तथा लोक-विरुद्ध आचरण करने वाले लोगों से प्रेम-सम्बन्ध रखने वाला होता है ॥८॥ यदि तृतीय भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक राजा का मन्त्री, शूर, राजसेवक, हृदयाकर्षक वाक्य बोलने वाला, धर्माचरण करने वाला, प्रसन्न-मुख दयालु तथा युद्ध-कुशल होता है ॥९॥ यदि तृतीय भाव में 'मकर' राशि हो तो जातक सदैव प्रसन्न-मुख, फुलवान, देवता-गुरु-भक्त, महाधनी तथा अद्वितीय विद्वान् होता है ॥१०॥

भा० टी०

मृ० सं० ४३२

यदि तृतीय भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक व्रती, यशस्वी, क्षमाशील, सत्यवादी, सुशील, संगीत-प्रिय तथा दुर्जनों से भी मैत्री रखने वाला होता है ॥ ११॥ यदि तृतीय भाव में 'मीन' राशि हो तो जातक धनवान्, पुत्रवान्, पुण्यवान्, अतिथियों का भक्त तथा सबका प्रिय होता है ॥१२॥ इति तृतीय भावगत राशि फलम् ॥

अथ सुख भाव फलम् ॥ मेषे सुखस्थे लभते सुखं च चतुष्पदेभ्योऽथ विलासिनीभ्यः। भोगैर्विचित्रैः प्रचुरान्नपानैः पराक्रमोपार्जितमर्दनैश्च ॥ १॥ वृषे सुखस्थे लभते सुखानि नरोऽतिमान्यैर्विविधैर्जनैश्च शौर्येण भूपालनिषेवणेन प्रियोपचारैर्नियमैर्व्रतैश्च ॥२॥ तृतीय राशौ सुखगे सुखानि लभेन्मनुष्यः प्रमदाकृतानि। जलावगाहैर्वनसेवया च प्रभूतपुष्पाम्बर सेवनेन ॥३॥ कुलीर राशौ च यदा सुखस्थे नरं सुरूपं सुभगं सुशीलम्। स्त्रीसम्मतं सर्वगुणैः समेतं विद्याविनीतं जनवल्लभं च ॥४॥ सिंहे सुखस्थे न सुखं मनुष्यः प्राप्नोति जातु प्रचुरप्रकोपात्। कन्या प्रसूतिं च दरिद्रसङ्गान्नरो भवेच्छीलविवर्जितश्च ॥५॥ कुमित्र सङ्गी धनसंक्षयाच्च कन्या गृहे बन्धुगते मनुष्यः। पैशुन्यसङ्गाल्लभतेऽसुखानि चौर्येण शुद्रेण विमोहनेन ॥६॥ तुला सुखस्था च नरस्य यस्य करोति सौम्यं शुभकर्मदक्षम्। विद्याविनीतं सततं सुखाढ्यं प्रसन्नचित्तं विभवैः समेतम् ॥७॥ अलौ चतुर्थे विपदा समेतं नरं सुतीक्ष्णं परभीतचित्तम्। प्रभूतसेवं गतवीर्यदर्पं परैः सुदक्षं मतिबुद्धिहीनम् ॥८॥ चापे सुखस्थे लभते मनुष्यः सुखं सदा सङ्गरसेवनेन। तत्कीर्तनेनैव हयैर्विचित्रैः सेवासुखं स्वेन निबन्धनेन ॥९॥ मृगे सुखस्थे सुखभाग् मनुष्यः सदा भवेत्तोयनिषेवणेन। उद्यानवापी तट सङ्गमेन मित्रोपचारैः सुरतप्रधानैः ॥१०॥ घटे सुखस्थे प्रमदाभिधानात्प्राप्नोति सौख्यं विविधं मनुष्यः। मिष्टान्न पानैः फलशाकपत्रैर्विदग्धवाक्यैश्च समुत्सुकत्वैः ॥११॥ मीने सुखस्थे तु सुखी मनुष्यः प्राप्नोति सौख्यं जलसंश्रयेण। शनैश्चरो देवसमुद्भवैश्च स्थानैः सुवस्त्रैः सुधनैर्विचित्रैः ॥१२॥

टीका ॥ यदि सुख अर्थात् चतुर्थ भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक चतुष्पदों, स्त्रियों,

अनेक प्रकार के अन्न-पानादि भोगों तथा स्वोपार्जित धन से सुख प्राप्त करता है ॥१॥ यदि चतुर्थभाव में 'वृष' राशि हो तो जातक मान्य तथा अन्य लोगों से भी सुख-लाभ प्राप्त करता है। वह अपने पराक्रम से तथा राजा की सेवा एवं अन्य उपचारों से भी सुख पाता है ॥२॥ यदि चतुर्थ भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक स्त्रियों से, जल-क्रीड़ा, वन-भ्रमण एवं अनेक प्रकार के पुष्प-वस्त्रादि से सुख प्राप्त करता है ॥३॥ यदि चतुर्थभाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक सुन्दर, भाग्यशाली, सुशील, स्त्रियों का प्रिय, सर्वगुण सम्पन्न, विद्यावान् तथा सब लोगों को प्रिय होता है ॥४॥ यदि चतुर्थ भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक अत्यन्त क्रोध करने के कारण कभी सुखी नहीं रहता। वह कन्या-सन्ततिवान्, दरिद्र लोगों के साथ रहने वाला शील-रहित होता है ॥५॥ यदि चतुर्थभाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक धन पाकर दुष्ट लोगों का साथ करने वाला, चुगलखोरों का साथी एवं चोरी, मारण-मोहन आदि क्रियाओं के कारण दुःख पाने वाला होता है ॥६॥ यदि चतुर्थभाव में 'तुला' राशि हो तो जातक सरल-स्वभाव, सत्कर्म-कुशल, विद्या-विनीत, सदैव सुखी, प्रसन्नचित्त तथा धनी होता है ॥७॥ यदि चतुर्थभाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक विपत्तियुक्त, तीक्ष्ण-स्वभाव का, दूसरों से डरने वाला, अनेक लोगों का सेवक, शत्रुओं द्वारा गर्व-हीन किया गया, कार्य-कुशल बुद्धिमानों से दूर रहने वाला होता है ॥८॥ यदि चतुर्थभाव में 'धनु' राशि हो तो जातक युद्ध-कार्य एवं युद्ध-चिन्तन, घोड़ों की सेवा तथा अपने प्रयत्नों से सुख पाने वाला होता है ॥९॥ यदि चतुर्थभाव में 'मकर' राशि हो तो जातक सदैव जल-विहार, वन-उपवन आदि में भ्रमण, मित्रों के उपचार तथा सुरत-क्रिया आदि से सुख पाने वाला होता है ॥१०॥ यदि चतुर्थ भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक स्त्रियों के आश्रय से, मिष्ठान्न, पान, फल, शाक आदि से एवं उत्साह-वर्द्धक वाक्यों की चतुराई से सुख पाने वाला होता है ॥११॥ यदि चतुर्थ [illegible] देवताओं की

कृपासे वस्त्र तथा अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त, सुखी एवं मन्दगति से चलने वाला होता है ॥१२॥ इति चतुर्थ भावगत राशि फलम् ॥

अथ सुतभावगत राशि फलम् ॥ मेषे सुतस्थे लभते मनुष्यः प्रियेण पुत्रान्वित चेतसा च। सुरालुखानीह कृतानि यानि पापानुरक्ता कुलचित्तयुक्ताः ॥१॥ वृषे सुतस्थे जनिमान् मनुष्यः प्राप्नोति कन्यां सुभगां सुरूपाम्। अपत्यहीनां बहुकान्तियुक्तां सदाऽनुरक्तां निजभर्तृधर्मे ॥२॥ तृतीय राशौ सुतगे मनुष्यः प्राप्नोत्यपत्यानि मनः सुखानि। सुशील युक्तानि गुणाधिकानि प्रीत्या समेतानि बलाधिकानि ॥३॥ कर्के सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान् प्रसिद्धान् पितृहर्षकांश्च। विस्तीर्ण कीर्तिश्च महानुभावान् धनेन युक्तान् विनयेन युक्तान् ॥४॥ सिंहे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः क्रूरस्वभावान्नयनेन कान्तान्। मांस प्रियान् स्त्री जनकान् सुतीव्रान्विदेशभाजः क्षुधया समेतान् ॥५॥ कन्या यदा पञ्चमगा तदा स्युः कन्या नराणां तनयैर्विहीनाः। पतिप्रियाः पुण्यतराः प्रगल्भाः प्रशान्त पापाः प्रियभूषणाश्च ॥६॥ तुला यदा पञ्चमगा नराणां तदा सुशीलानि मनोहराणि। भवन्त्यपत्यानि सरूपकाणि क्रियासमेतानि शुभेक्षणानि ॥७॥ कीटे सुतस्थे जनयेन्नृयोनौ पुत्रान्मनुष्यः सुभगान् सुशीलान्। अज्ञातदोषान् प्रणयेन युक्तान्निजेऽत्र धर्मे सततं मनुष्यः ॥८॥ चापे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः सुतान्विचित्रान् हयलुब्धदक्षान्। धानुष्कचर्यान् हतशत्रुपक्षान् सेवाप्रियान् पार्थिवमानयुक्तान् ॥९॥ मृगे सुतस्थे जनयेन्मनुष्यः पुत्रान् सदा पापमतीन् कुरूपान्। क्लीबान् कुभावान्विगतप्रभावान् सुनिष्ठुरान् प्रेम विवर्जितांश्च ॥१०॥ कुम्भे सुतस्थे स्थिरता समेतान् गंभीरचेष्टानतिसत्ययुक्तान्। पुत्रान् मनुष्यो जनयेत्प्रसिद्धान् कष्टंसहान् पुण्ययशः प्रभूतान् ॥११॥ मीने सुतस्थे ललितान् सुरक्तान् पुत्रान् मनुष्यो लभते व्यवायात्। रोगैः समेतांश्च सदा कुरूपान् सपापके स्त्री सहितान् सदैव ॥१२॥

टीका॥ यदि 'सुत' अर्थात् पंचम भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक मित्रों, पुत्रों, प्रियजनोंसे एवं देवता की सेवा से सुख पाता है, साथ ही पाप-कर्म में फँसकर व्याकुल-चित्त भी बना रहता है ॥१॥ यदि पंचम भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक को सुन्दरी, सौभाग्यवती, लावण्यवती, पति-परायणा, परन्तु सन्तानहीना कन्या प्राप्त होती है ॥२॥ यदि पंचम भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक को प्रसन्न, सुखी, सुशील, गुणी-जनों से प्रेम रखने वाले तथा बलवान् पुत्र प्राप्त होते हैं ॥३॥ यदि पंचम भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक के पुत्र विख्यात, पिता को सुख देने वाले, यशस्वी, उदार, धनी तथा विनम्र होते हैं ॥४॥ यदि पंचम भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक के पुत्र क्रूर-स्वभाव वाले, सुन्दर नेत्रों वाले, मत्स्य-मांस-प्रिय, कन्या सन्तति वाले, तीव्र, विदेशवासी तथा क्षुधातुर होते हैं ॥५॥ यदि पंचम भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक के कन्यायें अधिक होती हैं और वे पुत्रहीना, पतिव्रता, कार्य-कुशला, निष्पाप एवं आभूषणों से प्रेम रखने वाली होती हैं ॥६॥ यदि पंचम भाव में 'तुला' राशि हो तो जातक के पुत्रादि सुशील, स्वरूपवान्, कार्यदक्ष तथा सुन्दर नेत्रों वाले होते हैं ॥७॥ यदि पंचम भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक के पुत्र भाग्यवान्, सुशील, दोष-रहित, विनीत तथा स्वधर्म में तत्पर रहने वाले होते हैं ॥८॥ यदि पंचम भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक के पुत्र अश्व आदि वाहन रखने वाले, शस्त्र-विद्या में निपुण, शत्रुजयी, सेवा कार्य के ज्ञाता, राजा से सम्मान पाने वाले तथा अनेक प्रकार के गुणों से युक्त होते हैं ॥९॥ यदि पंचमभाव में 'मकर' राशि हो तो जातक के पुत्र पापी, कुरूप, नपुंसक, दुष्ट-स्वभाव वाले, प्रभावहीन, निष्ठुर तथा प्रेम-रहित होते हैं ॥१०॥ यदि पंचम भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक के पुत्र स्थिर-स्वभाव वाले, सत्यवादी, सुविख्यात, कष्ट-सहिष्णु, पुण्यवान् तथा यशस्वी होते हैं ॥११॥ यदि पंचम भाव में 'मीन' राशि हो तो जात-, के पुत्र सुन्दर, स्वयं में अनुरक्त अर्थात् पितृ-भक्त होते हैं; परन्तु यदि उसमें पाप-

ग्रह विद्यमान हों तो वे रोगी, कुरूप एवं स्त्री-युक्त होते हैं ॥१२॥ इति पंचमभाव गत राशि फलम् ॥

अथ रिपुभावगत राशिफलम् ॥ मेषे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं सदा नराणां वृषभे रिपुस्थे। अपत्यवर्गे शतमङ्गनानां सङ्गे नितान्तं निजबन्धुवर्गे ॥१॥ तृतीयराशौ रिपुगे नराणां वैरं भवेत्स्त्रीजनितं सदैव, तथा नराणां निहितं च पापैर्वणिग्जनैर्नीचजनानुरक्तैः ॥२॥ कर्के रिपुस्थे सहसा भयंच भवेन्मनुष्यस्य सुखातुरस्य। समं द्विजेन्द्रैश्च नराधिपैश्च महाजनेनैव परानुरोधात् ॥३॥ सिंहे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं पुत्रैः समं बन्धुजनेन नित्यम्। धनं क्षणात्तस्य विनिर्जितं च यद्वा मनुष्यस्य पराङ्गनाभिः ॥४॥ कन्यास्थिते शत्रुगृहे स्ववैरैरसंयुतिर्निर्धनता नराणाम्। दुश्चारिणीभिश्च सुनिम्नगाभिर्वेश्याभिरेवाश्रय वर्जिताभिः ॥५॥ तुलाधरे शत्रुगृहे नरस्य निधिस्थितस्य प्रभवेच्च वैरम्। कार्यं सुधर्मस्य नरस्य साधोः स्वबन्धुवर्गाच्च निजालयाच्च ॥६॥ कौर्पे रिपुस्थे प्रभवेच्च वैरं सार्द्धं द्विजिह्वैश्च सरीसृपैश्च। व्यालैर्मृगैश्चौरगणैर्नराणां सर्वैः सुधन्यैश्च विलासिभिश्च ॥७॥ चापे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं शूरैः समेतैश्च सरागकैश्च। सदा मनुष्यैश्च हयैश्च नागैः पुण्यैस्तथाऽन्यैः परवञ्चनाच्च ॥८॥ मृगे रिपुस्थे च भवेच्च वैरं सदा नराणां धन सम्भवं च। मित्रैः समं साधुजने सहाये प्रभूतकाले गृहसम्भवं च ॥९॥ कुम्भे रिपुस्थे पुरुषस्य वैरं नराधिपेनैव जलाश्रयैश्च। वापीतडागादिभिरेव नित्यं क्षेत्राधिपोच्चैः पुरुषैः प्रवृद्धैः ॥१०॥ मीने रिपुस्थे च भवेन्नराणां वैरं च नित्यं सुतवर्गजातम्। स्त्रीहेतुकं स्वीयभवं पराणामपि प्रियाणामितरेतरे च ॥११॥

टीका ॥ यदि 'रिपु' अर्थात् षष्ठभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक स्वयं लोगों से शत्रुता करने वाला होता है। यदि षष्ठभाव में 'वृष' राशि हो तो जातक की अपनी सन्तान, स्त्री अथवा बन्धु-वर्ग से ही शत्रुता होती है ॥१॥ यदि षष्ठ भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक की अपनी स्त्री

से, पापी लोगों से, वैश्यों से तथा नीचजनों से शत्रुता होती है॥ २॥ यदि षष्ठ भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक की अपने पुत्र के कारण तथा अन्यजनों के अनुरोध के कारण ब्राह्मण, राजा तथा बड़े आदमियों से शत्रुता होती है॥ ३॥ यदि षष्ठभाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक की अपने पुत्रों तथा बन्धुजनों से शत्रुता होती है अथवा पर-स्त्रियों के संग वश उसकी समस्त सम्पत्ति नष्ट हो जाती है॥ ४॥ यदि षष्ठ-भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक की किसी से शत्रुता नहीं होती, परन्तु दुराचारिणी, नीच अथवा वेश्या स्त्री के सङ्ग से उसके धन का नाश होता है॥ ५॥ यदि षष्ठभाव में 'तुला' राशि हो तो जातक धन को भूमि में गाड़ कर रखने वाला अथवा धर्म-कर्म, साधु-सेवा या परोपकार में धन खर्च करने वाला होता है, जिसके कारण उसकी अपने ही घरवालों से शत्रुता होती है॥ ६॥ यदि षष्ठभाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक को चुगुलखोरों, सर्प-बिच्छुओं, सरीसृपों, व्याघ्र-सिंह आदि वनजन्तुओं एवं चोरों से भय होता है तथा प्रतिष्ठित एवं विलासी मनुष्यों से शत्रुता होती है॥ ७॥ यदि षष्ठभाव में 'धनु' राशि हो तो जातक की शस्त्रधारियों से, रागी-मनुष्यों से, घोड़े, हाथी तथा पुण्यात्मा लोगों से शत्रुता होती है॥ ८॥ यदि षष्ठभाव में 'मकर' राशि हो तो जातक की धन के कारण अपने हितू लोगों से भी शत्रुता होती है। कभी कदाचित् किसी सज्जन पुरुष की सहायता करने के कारण से भी घर के लोगों से शत्रुता हो जाती है॥ ९॥ यदि षष्ठ भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो ऐसे योग वाले जातक की राजा से, जल-जन्तुओं से एवं बड़े लोगों से शत्रुता होती है तथा बावड़ी, तालाब आदि से भय प्राप्त होता है॥ १०॥ यदि षष्ठभाव में 'मीन' राशि हो तो जातक की अपने स्वार्थ के कारण अपने ही पुत्रों से, स्त्री से तथा अन्य हितू लोगों से शत्रुता होती है॥ ११॥ इति षष्ठभावगत राशि फलम्॥

अथ जाया भावगत राशि फलम्॥ मेषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं क्रूरं नराणां च

खलस्वभावम्। पापानुरक्तं कठिनं नृशंसं वित्तप्रियं साध्यपरं सदैव॥१॥ वृषेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं सरूप-कं वाक्प्रणतं प्रशान्तम्। पतिव्रता चारुगुणेन युक्तं कलाधिकं ब्राह्मण देव भक्तिम्॥२॥ तृतीयराशौ च भवेत्कलत्रं कलत्रयुक्तं सुधनं सुवृत्तम्। रूपान्वितं सर्वगुणोपपन्नं विनीतवेषं गणवर्जितं च॥३॥ कर्केण युक्ते च मनोहराणि सौभाग्ययुक्तानि गुणान्वितानि। भवन्ति सौभाग्य कलत्रकाणि कलङ्कहीनानि सुसम्मतानि॥४॥ सिंहेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं तीव्रस्वभावं च खलं च दुष्टम्। विहीनवेषं परसक्तयुक्तं वसुप्रियं स्वल्पकृतं कृशं च॥५॥ षष्ठेऽस्तसंस्थे च भवन्ति दाराः सुरूपदेहास्तनयैर्विहीनाः। सौभाग्य भोगार्थनयेन युक्ताः प्रियंवदा, सत्यधनाः प्रगल्भाः॥६॥ तुलेऽस्तसंस्थे गुणगर्विताङ्ग्यो भवन्ति नार्यो विविधप्रकाराः। पुण्यप्रिया धर्मपराः सुदान्तप्रभूत पुत्राः पृथिवी विनीताः॥७॥ कीटेऽस्तसंस्थे विकला समेता भवेच्च भार्या कृपणा नराणाम्। सुशिक्षिता च प्रणयेन हीना दुर्भाग्यदोषैर्विविधैः समेताः॥८॥ चापेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम्। विस्रस्तलज्जं परदोषरक्षं युद्धप्रियं दम्भसमन्वितं च॥९॥ मकरो यस्य च द्यूने भार्या दम्भान्विताऽधमा। निर्लज्जा लोलुपो क्रूरो दुःस्वभावा च दुःखिता॥१०॥ घटेऽस्तसंस्थे च भवेत्कलत्रं नृणां सुदुष्टं विगतस्वभावम्। देवद्विजानां सततं प्रहृष्टं धर्मध्वजं सत्यदया समेतम्॥११॥ मीनेऽस्तसंस्थे च विकारयुक्तं भवेत्कलत्रं विमतं कुपुत्रम्। स्वधर्मशीलं प्रणयेन हीनं सदा नराणां विभवप्रियं च॥१२॥

टीका॥ यदि सप्तम भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक की स्त्री क्रूरा, दुष्टा, पापिनी, कठोर स्वभाव वाली, निर्दय एवं धन-लोलुप होती है॥१॥ यदि सप्तम भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक की पत्नी सुन्दर, मधुरभाषिणी, गृह-कार्य में चतुर, शान्त-स्वभाव की, पतिव्रता, कलाओं को जानने वाली एवं ब्राह्मण तथा देवताओं में भक्ति रखने वाली होती है॥२॥ यदि सप्तम भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक की स्त्री धनवती, सदाचारिणी, रूपवती, सर्वगुण-सम्पन्ना, कोमल-स्वभाव वाली तथा

संघ-वर्जिता होती है ॥३॥ यदि सप्तम भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक की स्त्री सुन्दरी, सौभाग्यवती, प्रसन्न हृदय वाली, झगड़े से डरने वाली तथा पति की आज्ञाकारिणी होती है ॥४॥ यदि सप्तम भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक की स्त्री तीव्र स्वभाव वाली, क्रूरा, दुष्टा, शृङ्गार-विहीना, धन-लोलुप, थोड़ा काम करने वाली तथा दुर्बल-शरीर वाली होती है ॥५॥ यदि सप्तम भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक की स्त्री अत्यन्त सुन्दरी, कन्या-सन्तति वाली; सौभाग्यवती, भोगवती, धनवती, प्रियवादिनी, सत्यवादिनी, प्रगल्भा तथा कार्य-कुशला होती है ॥६॥ यदि सप्तम भाव में 'तुला' राशि हो तो जातक की स्त्री गुण-गौरव-मण्डिता, पुण्य-कर्म करने वाली, धर्म-परायणा, गुणवती, पुत्रवती एवं पृथ्वी के समान क्षमाशीला तथा विनम्रा होती है ॥७॥ यदि सप्तम भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक की स्त्री अनेक कलाओं की जानकार, कृपण, सुशिक्षिता होने पर भी विनय-रहिता तथा दुर्भाग्य-दोषों से युक्त होती है ॥८॥ यदि सप्तम भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक की स्त्री दुष्टा, कुशीला, निर्लज्ज, दूसरों के दोष देखने वाली, झगड़ा करने वाली एवं दम्भ-ईर्ष्या आदि दुर्गुणों से युक्त होती है ॥९॥ यदि सप्तम भाव में 'मकर' राशि हो तो जातक की स्त्री घमण्डिनि, अधम प्रकृति की, निर्लज्ज, कृपण, दुष्ट-स्वभाव वाली एवं दुःखिता होती है ॥१०॥ यदि सप्तम भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की स्त्री दुष्ट-स्वभाव वाली, देवता तथा ब्राह्मणों की भक्त एवं सदैव प्रसन्न रहने वाली तथा दया-धर्म का पालन करने वाली होती है ॥११॥ यदि सप्तम भाव में 'मीन' राशि हो तो जातक की स्त्री विकार युक्त, पति से भिन्न मत रखने वाली, कुत्सित पुत्रों वाली, अपने धर्म में प्रेम रखती हुई भी विनय से हीन तथा सदैव धन की इच्छा रखने वाली होती है ॥१२॥ इति सप्तम भाव गत राशि फलम् ॥७॥

अथ रन्ध्र भावगत राशि फलम् ॥ मेषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां वासो विदेशे तु रुजा स्थितानाम् । कफस्रुतेश्चैव विमूर्च्छितानां महाधनानामति दुःखितानाम् ॥१॥ वृषेऽष्टमस्थे च भवेन्नराणां मृत्यु-

श्लेष्मकृतादिविकारात् । महाशनाद्वाऽथ चतुष्पदाद्वा रात्रौ तथा दुष्टजनादिसङ्गात् ॥२॥ तृतीय राशौ च भवेन्नराणां मृत्युस्थिते मृत्युरनिष्टसङ्गात् । लोभोद्भवो वा रससम्भवो वा गुदप्रकोपादथवा प्रमेहात् ॥३॥ कर्केऽष्टमस्थे च जलोपसर्गात्कीटात्तथा चैव विभीषणाद्वा । भवेद्विनाशः परहस्ततो वा विदेशसंस्थस्य नरस्य चैव ॥४॥ सिंहेऽष्टमस्थे च सरीसृपाच्च भवेद् विनाशः पुरुषस्य सम्यक् । व्यालोद्भवो वाऽपि वनाश्रितस्य चौरोद्भवो वाऽथ चतुष्पदाच्च ॥५॥ कन्या यदा चाऽष्टमगो विलासात्सदा स्वचित्तान्मनुजस्य मृत्युः । स्त्रीणां हि हिंसाद्विषमाशनात्स्यात् स्त्रीणां कृते वा स्वगृहाश्रितस्य ॥६॥ तुलाधरे चाऽष्टमगे च मृत्युर्भवेन्नराणां द्विपदोत्थ एव । निशागमे संस्थकृतोपवासाद् विद्विट् प्रकोपादथवा प्रतापात् ॥७॥ स्थानेऽष्टमस्थाऽष्टमराशिसङ्के नृणां विनाशो रुधिरोद्भवेन । रोगेण वा कीटसमुद्भवेन स्वस्थानसंस्थस्य विषोद्भवो वा ॥८॥ चापेऽष्टमस्थे प्रभवेन्नराणां मृत्युः स्वसंस्थे शरताडनेन । गुह्योद्भवे नापि गदोद्भवेन चतुष्पदोत्थेन जलोद्भवेन ॥९॥ मृगेऽष्टमस्थे च नरस्य यस्य विद्यान्वितो मानगुणैरुपेतः । कामी स शूरोऽथ विशालवक्षाः शास्त्रार्थवित्सर्वकलासु दक्षः ॥१०॥ घटेऽष्टमस्थे विभवप्रणाशो वैश्वानरात्सद्मगतात्तु जन्तोः । नानाव्रणैर्वापि भवैर्विकारैः श्रमात्तथा गेहविहीन मृत्युः ॥११॥ मीनेऽष्टमस्थे प्रभवेच्च मृत्युर्नृणामतीसारकृतश्च कष्टात् । पित्तज्वराद्वा सलिलाश्रयाद्वा रक्तप्रकोपादथवा च शस्त्रात् ॥१२॥

टीका ॥ यदि रन्ध्र अर्थात् अष्टम भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक रोगयुक्त, परदेशवासी, अपनी बीती हुई बातों को याद करके मूर्च्छित होने वाला, धनवान् तथा दुःखी होता है ॥१॥ यदि अष्टम भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक कफ-विकार से, अत्यधिक भोजन करने से, चतुष्पदों के प्रहार से अथवा रात्रि के समय दुष्टजनों का सम्पर्क करने के कारण अपने घर में ही मृत्यु को प्राप्त होता है ॥२॥ यदि अष्टम भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक की मृत्यु शत्रु के सङ्ग, लोभ, किसी रस-पदार्थ के सेवन गुदा-रोग अथवा प्रमेह-रोग के कारण होती है ॥३॥ यदि अष्टम भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक की

मृत्यु पानी में डूबने, किसी कीड़े के काटने अथवा परदेश में किसी अन्य मनुष्य के हाथों होती है ॥४॥ यदि अष्टम भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक की मृत्यु किसी विषैले जन्तु के काटने से, सर्प-दंश से, जंगल में, चोर के द्वारा अथवा किसी चौपाये पशु द्वारा होती है ॥५॥ यदि अष्टम भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक की मृत्यु अधिक भोग-विलास के कारण, अपनी मनमानी करने के कारण, स्त्री की हिंसा करने के कारण, विषम भोजन करने के कारण अथवा स्त्री के हेतु से अपने ही घर में होती है ॥६॥ यदि अष्टम भाव में 'तुला' राशि हो तो जातक की मृत्यु किसी मनुष्य द्वारा अथवा अधिक उपवास के कारण रात्रि के समय, अथवा शत्रु के क्रोध के कारण अथवा सन्ताप के कारण होती है ॥७॥ यदि अष्टम भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक की मृत्यु रक्त-विकार से, कीड़े के कारण अथवा विष के कारण अपने ही स्थान में होती है ॥८॥ यदि अष्टम भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक की मृत्यु शस्त्राघात से, गुप्तेन्द्रिय में रोग होने से, किसी चतुष्पद से अथवा पानी में डूबने आदि कारणों से होती है ॥९॥ यदि अष्टम भाव में 'मकर' राशि हो तो जातक विद्वान, मानी, गुणी, कामी, शूर-वीर, विशाल वक्षःस्थल वाला, शास्त्रज्ञ एवं समस्त कलाओं में निपुण होता है ॥१०॥ यदि अष्टमभाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक की समस्त सम्पत्ति अग्नि द्वारा नष्ट हो जाती है तथा अनेक प्रकार के व्रण, वायु-विकार, अधिक परिश्रम से अथवा पराये घर में उसकी मृत्यु होती है ॥११॥ यदि अष्टम भाव में 'मीन' राशि हो तो जातक की मृत्यु अतिसार रोग या पित्त-ज्वर से, अथवा जल से, रक्त-विकार से, किंवा शस्त्राघात से होती है ॥१२॥ इति अष्टम भाव फलम् ॥

अथ धर्म भाव फलम् ॥ धर्मस्थिते चैव हि मेषलग्ने चतुष्पदोत्थं प्रकरोति धर्मम्। तेषां प्रदानेन तु पोषणेन दयाविवेकेन सुपालनेन ॥१॥ वृषे च धर्मं प्रगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव धनप्रभूतम्। विचित्र दानैर्बहुगो प्रदानैर्विभूषणाच्छादन भोजनेन ॥२॥ तृतीय राशौ प्रकरोति धर्मे धर्मकृतिं सौम्यकृतं सदैव।

अभ्यागतोत्थं द्विजभोजनाद्वा दीनानुकम्पाश्रयमानसेवा: ॥ ३॥ व्रतोपवासैर्विविधैर्विचित्रैर्धर्मं नर: सङ्कुरुते सदैव। धर्माश्रिते चैव चतुर्थराशौ तीर्थाश्रयाद् वा वनसेवनेन ॥ ४॥ धर्माख्यभावाश्रितसिंहराशौ धर्मं परेशां प्रकरोति मर्त्य:। स्वधर्महीनो विक्रियाभिरेव सुतीर्थगामी विनयेन हीन: ॥ ५॥ धर्माश्रित: स्याद्यदि षष्ठराशि: स्त्रीधर्मसेवां कुरुते मनुष्य:। विहीनभक्ति र्बहुजन्मतश्च पाखण्डमाश्रित्य तथाऽन्यपक्षम् ॥ ६॥ तुलाधरे धर्मगते मनुष्यो धर्मं करोत्येव सदा प्रसिद्धम्। देवद्विजानां परितोषणं च जनानुरागेण तथाऽद्भुतञ्च ॥ ७॥ धर्माश्रिते चाऽष्टमगे च राशौ पाखण्डधर्मं द्विजदेवतर्पणम्। पीडाकरं चैव तथा जनानां भक्त्या विहीनं परपोषणेन ॥ ८॥ चापे तथा धर्मगते मनुष्य: करोति धर्मं द्विजदेवतर्पणम्। स्वेच्छान्वितं शास्त्रविनिर्मितं च प्रभूततोयं प्रथितं त्रिलोके ॥ ९॥ धर्माश्रिते चेन्मकरे मनुष्य: प्राप्नोत्यधर्मं कुरुते प्रतापम्। पश्चाद् विरक्तश्च विडम्बनाभि: कौलं समाश्रित्य सदैव पक्षम् ॥ १०॥ कुम्भे च धर्मं प्रगते च धर्मं पुंसां विधत्ते सुरसङ्घजातम्। वृक्षाश्रयोत्थं च तथा शिवं च आरामवापीप्रियता सदैव ॥ ११॥ धर्माश्रिते चैव हि मीन राशौ करोति धर्मं विविधं नृलोके। सत्सेवयाऽऽरामतडागजातं तीर्थाऽटनेनाऽर्थसुरवैर्विचित्रै: ॥ १२॥

टीका ॥ यदि धर्म अर्थात् नवम भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक पशुओं का पालन-पोषण एवं उन पर दया करने वाला तथा पशुओं का दान करने रूपी धर्म करने वाला होता है. ॥ १॥ यदि नवम भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक स्वोपार्जित धन से अनेक प्रकार के दान — अन्नदान, वस्त्रदान, स्वर्णाभूषणदान, गोदान आदि धर्म करने वाला होता है ॥ २॥ यदि नवम भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक सद्भाव से धर्माचरण करने वाला, अतिथियों सत्कार करने वाला, ब्राह्मणों को भोजन कराने वाला तथा दीनजनों पर अनुकम्पा कर उन्हें सम्मान तथा आश्रय देने वाला होता है ॥ ३॥ यदि नवमभाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के व्रत, उपवास, तीर्थयात्रा एवं वनमें रह कर तपस्या आदि करने वाला होता है ॥ ४॥ यदि नवम भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक अपना धर्म छोड़कर पर-धर्म अपनाने वाला, बिना किसी कर्म-कारण के तीर्थों में घूमने वाला, स्वधर्म-रहित तथा विनय-हीन

होता है ॥ ५॥ यदि नवम भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक स्त्रियों जैसे काम करने वाला अथवा स्त्री-धर्म-सेवा करने वाला जन्मसे ही भक्ति-हीन, पाखण्डी अथवा अन्यमतावलम्बी होता है ॥ ६॥ यदि नवम भाव में 'तुला' राशि हो तो जातक अपने वंशपरम्परागत धर्म को मानने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला एवं लोकानुराग से अद्भुत धर्म करने वाला होता है ॥ ७॥ यदि नवम भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक पाखण्डधर्मा, अन्यों के लिए क्लेश-कारक तथा कभी-कभी दूसरों का पालन-पोषण करने वाला भी होता है, परन्तु फिर भी वह भक्ति-हीन होता है ॥ ८॥ यदि नवम भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक ब्राह्मण एवं देवताओं का तर्पण-पूजनादि करने वाला, स्वेच्छानुकूल एवं शास्त्र-विहित धर्म का पालन करने वाला तथा तीनों लोकों में प्रसिद्ध धर्म को करने वाला होता है ॥ ९॥ यदि नवम भाव में 'मकर' राशि हो तो जातक अपने प्रताप को बढ़ाने के लिए अधर्म करता है, तदुपरान्त अत्यधिक विडम्बना के कारण विरक्त होकर अपने कुल-धर्म का आश्रय लेता है ॥ १०॥ यदि नवमभाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक देव-भक्ति, वृक्षारोपण, उपवन-कूप-तड़ाग आदि का निर्माण आदि धार्मिक कार्यों को करनेवाला होता है ॥ ११॥ यदि नवमभाव में 'मीन' राशि हो तो जातक सज्जनों की सेवा, लोकोपकारार्थ बगीचा, तालाब आदि का निर्माण एवं तीर्थाटन आदि धार्मिक-कृत्य करने वाला होता है ॥ १२॥ इति नवमभावगत राशि फलम् ॥

अथ कर्मभावगत राशि फलम् ॥ कर्मांयिते मेष सुनाम राशौ करोत्यधर्मं प्रवरं सुदुष्टम् । पैशुन्यरूपं विनयातिरिक्तं सुनिन्दितं साधुजनस्य लोके ॥ १॥ वृषेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म व्ययात्मकं साधुजनानुकम्पम् । द्विजेन्द्रदेवातिथिभिर्विभाजकं ज्ञानात्मकं प्रीतिकरं सतां च ॥ २॥ युग्मेऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यं कर्मप्रधानं गुरुभिः प्रदिष्टम् । कीर्त्यान्वितं प्रीतिकरं जनानां प्रभासमेतं कृषिजं सदैव ॥ ३॥ कर्केऽम्बरस्थे प्रकरोति मर्त्यः कर्म प्रपारामतडागसंज्ञम् । विचित्रवापीतरुवृन्दजं च कूपापरं नित्यमकल्मषं च ॥ ४॥ सिंहेऽम्बरस्थे कुरुते मनुष्यो रौद्रं स-पापं विकृतं च कर्म । सपौरुषं प्राणसमं च नित्यं वधात्मकं निन्दितमेव नित्यम् ॥ ५॥

नभः स्थलस्थे त्वथ पृष्ठराशौ करोति कर्मालमितो मनुष्यः। स्त्रीराजमानौ भजेतविरूद्धं कामाल्पको निर्धन एव लोके ॥६॥ तुलाधरे व्योमगते मनुष्यो वाणिज्यकर्म प्रचुरं करोति। धर्मात्मकं चापि नयेन युक्तं सतामभीष्टं परसम्पदं च॥७ कीटेऽम्बरस्थे च करोति कर्म पुंसामदुष्टं जनसम्मतं च। व्ययङ्करं देवगुरुद्विजानां सुनिर्दयं नीतिविवर्जितं च ॥ ८॥ चापे ऽम्बरस्थे च करोति कर्म सर्वात्मकं चाययुतं मनुष्यम्। परोपकारात्मकमोचनाख्यं नृपात्मकं भूमि यशः समेतम् ॥९॥ मृगे ऽम्बरस्थे प्रखरप्रतापं कर्मप्रधानं कुरुते मनुष्यम्। सुनिर्दयं बन्धुजनैः समेतं धर्मेण हीनं खलसम्मतं च ॥ १०॥ घटे ऽम्बरस्थे च करोति कर्म प्रधानमर्त्यं परवञ्चनार्थम्। पारवण्ड धर्मान्वितमिष्टलोभाद्विशासहीनं जनताविरूद्धम् ॥११॥ मीनेऽम्बरस्थे प्रकरोति कर्म मर्त्यं कुले धर्मगुरुप्रदिष्टम्। कीर्त्यान्वितं सुस्थिर मादरेण नानाद्विजाराधनसं-स्थिरं च ॥ १२॥

टीका॥ यदि 'कर्म' अर्थात् दशम भाव में 'मेष' राशि हो तो जातक विनयहीन, चुगलखोर तथा साधुजनों द्वारा निन्दित कर्मों को करने वाला होता है ॥१॥ यदि दशमभाव में 'वृष' राशि हो तो जातक साधु जनों के उपकार में धन खर्च करने वाला; देव, ब्राह्मण एवं अतिथियों का सत्कार करने वाला तथा ज्ञाना-त्मक साधुजनों को प्रिय लगने वाले कामों को करने वाला होता है ॥२॥ यदि दशमभाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक गुरुजनों के आदेशानुसार कार्य करने वाला, लोगों को प्रिय लगने वाले तथा यश देने वाले कामों को करने वाला एवं कृषि-कर्म करने वाला होता है ॥३॥ यदि दशमभाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक बगीचा, तालाब आदि का निर्माण कराने वाला तथा लोगों के उपकार के निमित्त निष्पाप-कर्म करने वाला होता है ॥ ४॥ यदि दशमभाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक रौद्र, पापयुक्त, विकृत, पराक्रम पूर्ण, हिंसात्मक एवं निन्दित क्रूर-कर्म करने वाला होता है ॥ ५॥ यदि दशमभाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक मूर्ख की भाँति काम करने वाला, स्त्री तथा राजा के समक्ष अपमानित होने वाला, अल्पकामी,

एवं संसार में निर्धन होता है ।।६।। यदि दशमभाव में 'तुला' राशि हो तो जातक बड़े यत्न से व्यवसाय-कर्म करने वाला, धर्म तथा नीति सम्मत धनोपार्जन करने वाला, सज्जनों को प्रिय तथा पराये धन की वृद्धि करने वाला होता होता है ।।७।। यदि दशम भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक शास्त्र तथा लोक-सम्मत कार्य करने वाला, गुरु तथा ब्राह्मणों के हित में खर्च करने वाला एवं निर्दयता तथा अनीति पूर्ण काम करने वाला भी होता है ।।८।। यदि दशम भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक सब कामों में दक्ष, नित्य लाभ कमाने वाला, परोपकारी, राजा का काम करने वाला एवं भूमि तथा यश सम्पन्न होता है ।।९।। यदि दशम भाव में 'मकर' राशि हो तो जातक उग्र प्रतापी, कर्म-प्रधान, दयाहीन, बन्धुजनों से युक्त, धर्म-हीन तथा दुष्टजनों का प्रिय होता है ।।१०।। यदि दशम भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक कर्म-कुशल, दूसरों को ठगने वाला, पाखण्डी, लोभ के कारण अन्य लोगों में अविश्वस्त तथा जन-विरोधी आचरण करने वाला होता है ।।११।। यदि दशमभाव में मीन राशि हो तो जातक कुल परम्परागत एवं धर्माचार्यों द्वारा विहित धर्म-कर्मों को करने वाला, कीर्तिमान्, आदर सहित ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला तथा स्थिर स्वभाव का होता है ।।१२।। इति दशम भावगत राशि फलम् ।।१०।।

अथ लाभ भावगत राशि-फलम् ।। लाभालये मेष गते च राशौ चतुष्पदोत्थं प्रकरोति लाभम् । तथा नराणां नृप सेवया च देशान्तराऽऽराधित सम्प्रभूतम् ।।१।। आयास्थिते वै वृषभे प्रलाभो भवेन्मनुष्यस्य विशिष्ट जातः । स्त्रीभ्यः सकाशादथ सज्जनेभ्यः कुसीदगोधर्मकृते तथैव ।।२।। तृतीयराशिः कुरुतेऽतिलाभं लाभाश्रितः स्त्रीदयितं सदैव । वस्त्वर्थमुख्याशनपानजातं सदा पुमांसं विबुध प्रसिद्धम् ।।३।। लाभी भवेल्लाभगते च राशौ सदा चतुर्थे वरजातकानाम् । सेवाकृषिभ्यां जनित प्रभूतः शास्त्रेण वा साधुजनैश्च पश्चात् ।।४।। लाभाश्रिते पञ्चमगे च राशौ भवेन्मनुष्यस्य निग्रहणाच्च । नानाजनानां

वध बन्धनैर्वा व्यायाम देशान्तर संश्रयाच्च ॥५॥ कन्यात्मके लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं विविधं सपर्याः। शास्त्रागमा भ्यां विनयेन सार्धं नित्यं विवेकेन तथाऽद्भुतेन ॥ ६ ॥ तुलाधरे लाभगते मनुष्यः प्राप्नोति लाभं वणिजे विचित्रे। सुसाधुसेवाविनयेन नित्यं सुखं स्तुतं मुख्यतमं प्रभूतम् ॥ ७॥ लाभाश्रिते चाऽष्टमगेहराशौ प्राप्नोति लाभं मनुजोऽतिमु- ख्यम् । छलेन पापेन सुभाषणेन परस्य पैशुन्यकृतैर्विकारैः॥ ८॥ लाभाश्रिते चैव धनुर्धरे च नृपैर्विलासान् भजते मनु- ष्यः। सत्सेवया वा निज पौरुषेण सुखं चराराधनतश्च लाभम् ॥ ९॥ लाभाश्रिते वै मकरेऽर्थ लाभो भवेन्नराणां जलपान योगात् । विदेशवासान्नृपसेवनाद्वा व्ययात्मकं भूरितरं सदैव ॥१०॥ आयस्थिते कुम्भधरे च लाभो भवेन्मनुष्यस्य कुकर्मजातः। त्यागेन धैर्येण पराक्रमेण विद्याप्रभावात्सुसमागमश्च ॥ ११॥ लाभाश्रिते चाऽन्त्य गमे च राशौ प्राप्नोति लाभं विविधं मनुष्यः। मित्रोद्भवं पार्थिवमान जातं विचित्रवाक्यैः पुण्येन नित्यम् ॥ १२॥

टीका ॥ यदि लाभ अर्थात् एकादशभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक को पशुओं से, राजा की सेवा से अथवा देशान्तर से विशेष लाभ होता है ॥ १॥ यदि एकादश भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक को स्त्रियों तथा साधुजनों द्वारा विशेष लाभ होता है। इसके अतिरिक्त सूद (ब्याज) तथा गायों की सेवा से भी विशेष लाभ होता है ॥ २॥ यदि एकादश भाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक को सब कामों से लाभ होता है और वह स्त्रियों को प्रिय, उत्तम भोजन-पान करने वाला तथा पण्डितों में प्रसिद्ध होता है ॥ ३॥ यदि एकादश भाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक को नौकरी अथवा कृषि से विशेष लाभ होता है तथा बाद में शास्त्र एवं साधुजनों द्वारा भी लाभ होता है ॥४॥ यदि एकादशभाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक को निन्द्य-कर्म, अनेक प्रकार के जीव-जन्तुओं की हिंसा, व्यायाम तथा देशान्तर की यात्राओं से लाभ होता है ॥ ५॥ यदि एकादशभाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक को अनेक प्रकारों से लाभ होता है। साथ ही वह शास्त्र-पुराणादि के अभ्यास, विनय तथा विवेक के कारण सर्वत्र पूज्य एवं प्रतिष्ठित भी होता है ॥ ६॥ यदि एकादश भाव में

'तुला' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के व्यवसायों से लाभ पाने वाला, साधुओं का सेवक एवं अपनी विनम्रता के कारण लोक में प्रशंसित एवं सुख का भागी होता है ॥ ७ ॥ यदि एकादश भाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक छल, कपट, मिथ्या-भाषण तथा दूसरों की चुगली करके लाभ पाने वाला होता है ॥ ८ ॥ यदि एकादशभाव में 'धनु' राशि हो तो जातक राजा के साथ विलास करने वाला, साधुओं की सेवा करने वाला तथा अपने पुरुषार्थ से विशेष लाभ पाने वाला होता है ॥ ९ ॥ यदि एकादशभाव में 'मकर' राशि हो तो जातक नौका, जहाज द्वारा विदेश-यात्रा एवं राजकीय सेवा द्वारा धन-लाभ प्राप्त करता है तथा शीघ्र ही उसे खर्च भी कर देता है ॥ १० ॥ यदि एकादशभाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक कुत्सित-कर्म, त्याग, चौर्य, पराक्रम तथा विद्या के प्रभाव से लाभ प्राप्त करता है ॥ ११ ॥ यदि एकादश भाव में 'मीन' राशि हो तो जातक अनेक प्रकारों से, राजा द्वारा प्रदत्त सम्मान से, विविध कथा-पुराणों से, मित्रों से तथा विचित्र-वाक्यों द्वारा विनय पूर्वक लाभ प्राप्त करता है ॥ १२ ॥ इति एकादश भाव गत राशि फलम् ॥ ११ ॥

अथ व्यय भाव गत राशि फलम् ॥ मेषे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययः सुखाच्छादनभोजनेन । चतुष्पदानेकविवर्द्धनेन लाभेन नानाविध पौरुषेण ॥ १ ॥ वृषे व्ययस्थे व्यय एव पुंसां भवेद् विचित्राम्बरयोषितां च । लाभेन राज्येन पराक्रमेण स धातुवादैर्विबुधैः सदैव ॥ २ ॥ तृतीयराशौ व्ययगे नराणां व्ययो भवेत्स्त्रीव्यसनात्मकैश्च । भृत्योद्भवो वा सततप्रभूतः कुशीलजः पापजनैर्गजैश्च ॥ ३ ॥ कर्के व्ययस्थे द्विज देवतानां व्ययो भवेद्धर्मसमुद्भवैश्च । धर्मक्रियाभिर्विदधाति चैव प्रशंसिते साधुजनेन लोके ॥ ४ ॥ सिंहे व्ययस्थे तु भवेन्नराणामसेशयो भूरितमः सदैव । रूपैश्च जातैश्च कुकर्मणा च निन्द्यः सतां पार्थिवचौरतो वा ॥ ५ ॥ कन्यात्मके यात्यगते व्ययी च भवेन्मनुष्यः सहि चाङ्गनोत्सुकः । विवाहमाङ्गल्य विचित्र कुरव्यैः सूत्रप्रभाभिर्बहु साधुसङ्गात् ६ ॥ तुले व्ययस्थे सुर विप्र बन्धु श्रुति स्मृतिभ्यश्च कृतो व्ययश्च । भवेन्नराणां नियमैर्यमैश्च सदार्यसेवा

जनिता प्रसिद्धिः ॥७॥ अलौ व्ययस्थे च भवे व्ययस्तु पुंसां प्रदानेन विडम्बनाभिः। कुमित्र सेवा जनितः सुनिन्द्यः कुबुद्धिताश्चौर कृताधिकारात् ॥८॥ चापे व्ययस्थे परवञ्चनेषु व्ययो भवेत्पाप जन प्रसङ्गात्। सेवाकृतो जात्यधिकारि पुंसः कृषि प्रसङ्गात्परबन्धनद्धा ॥९॥ मृगे व्ययस्थे च भवेन्नराणां व्ययस्तु पापाशनके च जातः। स्ववर्ग पूजा निरतस्तथाल्प कृषिर्विहीनश्च विगर्हितश्च ॥१०॥ घटे व्ययस्थे सुरसिद्धविप्र तपस्विनो वन्दनगो व्ययश्च। मीने च पुंसां जलयान जातस्तथा विवादेन विनिर्गतेन ॥११॥ ये स्थान चिन्तासु पुरा प्रदिष्टा योगा मया तान्परिगृह्य शास्त्रा-त्। योगा विचिन्त्याः सुधिया ततस्तु वाच्यः नराणां हि शुभाऽशुभैस्तै ॥१२॥

टीका॥ यदि व्यय अर्थात् द्वादशभाव में 'मेष' राशि हो तो जातक उत्तम भोजन-वस्त्रादि के सुखसंगाय आदि पशुओं के पालन में अपने उपार्जित धन को खर्च करता है॥१॥ यदि द्वादश भाव में 'वृष' राशि हो तो जातक अनेक प्रकार के वस्त्रों में तथा अनेक स्त्रियों के साथ प्रेम-लीला में स्वोपार्जित द्रव्य को खर्च करता है॥२॥ यदि द्वादशभाव में 'मिथुन' राशि हो तो जातक स्त्रियों के साथ की प्रेम-क्रीड़ा में, नौकरों के वेतन में तथा दुष्टजनों के साथ रहकर कुत्सित-कर्मों में अपना धन खर्च करता है॥३॥ यदि द्वादशभाव में 'कर्क' राशि हो तो जातक ब्राह्मण तथा देवता की आराधना में, यज्ञ में तथा साधुजनों से प्रशंसित श्रेष्ठ कर्मों में अपना धन खर्च करता है॥४॥ यदि द्वादश भाव में 'सिंह' राशि हो तो जातक अधिक तमोगुणी; स्वरूप, जन्म रवं क्रिया से निन्दनीय होता है और उसका धन राजा अथवा चोर के द्वारा अपहरण कर लिया जाता है॥५॥ यदि द्वादश भाव में 'कन्या' राशि हो तो जातक स्त्रियों के निमित्त अथवा विवाह आदि मांगलिक कार्यों अथवा साधु-संगति में अपना धन खर्च करता है॥६॥ यदि द्वादशभाव में 'तुला' राशि हो तो जातक देवता, ब्राह्मण, बन्धु-वर्ग वेद तथा शास्त्रों के कामों में धन खर्च करता है तथा नियमव्रत के पालन एवं श्रेष्ठ जनों की सङ्गति के कारण उसे प्रसिद्धि भी प्राप्त होती है॥७॥ यदि द्वादशभाव में 'वृश्चिक' राशि हो तो जातक का धन अनेक

विडम्बनाओं से दान करने में, कपटी-मित्रों की सहायता में व दुर्बुद्धि से चोरों को अधिकार देने में खर्च होता है; इस कारण लोक में उसकी निन्दा भी होती है॥८॥ यदि द्वादश भाव में 'धनु' राशि हो तो जातक का धन पापीजनों की संगति में पड़कर दूसरों को ठगने में, सजातीय अधिकारियों की खुशामद में, कृषि-कर्म में तथा पराधीन बने रहने में खर्च होता है॥९॥ यदि द्वादशभाव में 'मकर' राशि हो तो जातक का धन निन्द्य-वस्तुओं के भोजन में एवं अपने वर्ग के मनुष्यों के सत्कार में खर्च होता है। ऐसा मनुष्य थोड़ी खेती करने वाला, धन-हीन तथा लोक-निन्दित होता है॥१०॥ यदि द्वादश भाव में 'कुम्भ' राशि हो तो जातक का धन देवता, ब्राह्मण, तपस्वी आदि की सेवा में खर्च होता है। यदि द्वादश भाव में 'मीन' राशि हो तो जातक का धन नौका आदि बनवाने में, विवाद (मुकद्दमा आदि) में तथा विदेश-यात्रा में खर्च होता है॥११॥ पूर्व में द्वादशभाव-चिन्ता तथा वर्गों के फल का जो वर्णन किया जा चुका है, उस सब पर विचार करने के पश्चात् ही तारतम्य से शुभाशुभ फल कहना चाहिए॥१२॥ इति द्वादश भाव गत राशि फलम्॥

अथ भावेश फलम्॥ तत्रादौ लग्नेश फलम्॥ लग्नाधिपतिर्लग्ने नीरोगं दीर्घजीविनं कुरुते। अतिबलमवनीशं वा भूलाभ समन्वितम् जातम्॥१॥ लग्नपतिर्धनभवने धनवंतं विपुलजीविनं स्थूलम्। अतिबलमवनीशं वा भूलाभं वा सुधर्मरतं कुरुते॥२॥ सहजगतो लग्नपतिः सद्बन्धुप्रवरमित्रपरिकलितम्। धर्मरतं दातारं शूरं सबलं करोति नरम्॥३॥ लग्नेशे तुर्यगते नृपप्रियं प्रचुर जीवितं कुरुते। संलब्धपितरं पित्रोर्भक्तमबहुभोजनं कुरुते॥४॥ पञ्चमगते लग्नपतौ सुसुतं सत्यागमीश्वरं विदितम्। बहुजीवितं सुगीतं सुकर्मनिरतं जनं कुरुते॥५॥ रिपुभवने लग्नेशे नीरोगं भूमिलाभ-च। सबलं धनिनमरिघ्नं सुकर्मपक्षान्वितं कुरुते॥६॥ प्रथमपतौ सप्तमगे तेजस्वी शोकवान्भवेत्पुरुषः। तद्भार्याऽपि सुशीला तेजः कलिता सुरूपा च॥७॥ लग्नपता-वष्टमगे कृपणो धनसञ्चयी तु दीर्घायुः। क्रूरे खचरे क्रूरः सौम्ये पुरुषो भवेत् सौम्यः॥८॥ मूर्तिपतिर्यदि

नवमे तदा भवति प्रचुरबान्धवः सुकृती। सर्वमित्रस्तु सुशीलः सुमती ख्यातः सुतेजस्वी ॥९॥ प्रथमेशो दशमस्थो नृपलाभी पण्डितः सुशीलश्च। गुरुमातृपूजनमतिर्नृपप्रसिद्धः पुमान् भवति॥१०॥ एकादशस्थ तनुपः सुजीवितं सुतसमन्वितं विदितम्। तेजः कलितं कुरुते पुरुषं बलिनं सुवाहनैर्युक्तम्॥११॥ द्वादशगे मूर्तिपतौ कटुकवत्कर्मपरोऽशुभो नीचः। मानी सहगोत्रीभिर्विदेशगो दत्तभुक्तानरः॥१२॥

टीका॥ यदि लग्नेश लग्न में हो तो जातक नीरोग, दीर्घायु, अत्यन्त बलवान्, राजा अथवा बड़ा भू-स्वामी होता है॥१॥ यदि लग्नेश द्वितीय भाव में हो तो जातक धनी, दीर्घजीवी, स्थूलशरीर वाला, अत्यन्तबली, राजा अथवा भू-स्वामी अथवा धर्मात्मा होता है॥२॥ यदि लग्नेश तृतीयभाव में हो तो जातक उत्तम बन्धु एवं मित्रों से युक्त, धर्मात्मा, दानी, शूर-वीर तथा बलवान् होता है॥३॥ यदि लग्नेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक राजा का प्रिय, चिरजीवी, पिता से धन पाने वाला, माता-पिता का भक्त एवं अधिक भोजन करने वाला होता है॥४॥ यदि लग्नेश पंचम भाव में हो तो जातक सुपुत्रवान्, दानी, राजा, सुप्रसिद्ध, दीर्घायु एवं सुकर्म करनेवाला होता है॥५॥ यदि लग्नेश षष्ठभाव में हो तो जातक नीरोग, भू-स्वामी, बलवान्, शत्रुजयी, सत्कर्मकर्त्ता एवं धनी होता है॥६॥ यदि लग्नेश सप्तम भाव में हो तो जातक तेजस्वी, परन्तु शोकयुक्त होता है तथा (इसकी पत्नी सुशीला, तेजस्विनी एवं सुन्दरी होती है॥७॥ यदि लग्नेश अष्टम भाव में हो तो जातक कृपण, धन-संग्रही एवं दीर्घायु होता है। यदि लग्नेश पापग्रह हो तो क्रूर और यदि शुभग्रह हो तो सौम्य स्वभाव का होता है॥८॥ यदि लग्नेश नवम भाव में हो तो जातक अधिक भाइयों वाला, पुण्यात्मा, सबका मित्र, बुद्धिमान्, सुशील, विख्यात और तेजस्वी होता है॥९॥ यदि लग्नेश दशम भाव में हो तो जातक राजा से लाभ पाने वाला, पण्डित, सुशील, गुरु और माता-पिता का भक्त तथा राजदरबार में प्रसिद्ध पुरुष होता है॥१०॥ यदि लग्नेश एकादश भाव में हो तो जातक सुखी, चिरजीवी, पुत्रवान्, विख्यात, तेजस्वी, बलवान् तथा वाहनों से युक्त होता है॥११॥ यदि लग्नेश

द्वादश भाव में हो तो जातक कुकर्मी, परद्वेषी, नीच, बन्धुओं में मानी, परदेशवासी तथा दूसरों के दिए हुए अन्न को खाने वाला होता है ॥ इति लग्नेश द्वादशभावगत फलम् ॥

अथ धनेश फलम् ॥ द्रव्यपतिर्लग्नगतः कृपणं व्यवसायिनं सुकर्माणम् । धनिनं श्रीपतिविदितं करोति नरमतुलभोगभुजम् ॥ १॥ व्यवसायी च सुलाभी ध्रुतपन्नभुगलीककारको नीचः । आलिककृद्धिदितोऽपि च पूर्णो द्वेगी धनपतौ धनगे ॥ २॥ धनपे सहज गते सति बन्धोर्भेदनापर्जितः क्रूरे । सौम्ये राजविरोधी भूतनये तस्करः पुरुष ॥३॥ तुर्यगते द्रविणपतौ पितृलाभपरः सत्यदयायुक्तः । दीर्घायुः क्रूरखगे त्वथवा मरणं विनिर्देश्यम् ॥ ४॥ तनय कमलविलासी कष्टतरे कर्मणि प्रसिद्धं च । कृपणं दुःखनिधानं तनयगतो धनपतिः कुरुते ॥ ५॥ षष्ठगतो द्रविणपतिर्धनसंग्रहतत्परं रिपुघ्नं च । भूलाभिनं सुखचरैः पापैर्धनवर्जितं पुरुषम् ॥ ६॥ धनेऽपि च सप्तमगे श्रेष्ठगचित्ताविलास भोगवती । धन संगृहणी भार्या क्रूरे खचरे भवेद् वन्ध्या ॥ ७॥ धनपेऽष्टमभवनस्थे अष्टकपालीचाऽऽत्मघातकः पुरुषः । उत्पन्नभुग्विलासी परधनहिंसी भवति दैवपरः ॥ ८॥ धनपे धर्मगृहस्थे सौम्ये दानी प्रसिद्ध वाग्भवति । क्रूरे दरिद्रभिक्षुर्विडम्ब वृत्तिस्तथा मनुजः ॥ ९॥ दशमगृहस्थे धनपे नरेन्द्रमान्यो भवेन्नृपालक्ष्मीः सौख्यगृहगे च मातुर्मनुजः पितृपालको भवति ॥ १०॥ एकादशगः खेचर व्यवहार श्रीपतिः ख्यातः । लोकौघप्रतिपालनरतं धनेशो नरं कुरुते ॥ ११॥ द्रविणपतौ व्ययलीने पुरुषं कृपणं धनवर्जितं क्रूरे । सौम्यो लाभाऽलाभे समं मनुष्यं विधिः कुरुते ॥ १२॥

टीका ॥ यदि धनेश अर्थात् द्वितीय भाव का स्वामी ग्रह लग्न में हो तो जातक कृपण, व्यवसायी, सत्कर्म करने वाला, धनी, धनिकों में विख्यात एवं विपुल सुख भोगने वाला होता है ॥ १॥ यदि धनेश द्वितीय भाव में हो तो जातक व्यवसाय से लाभ कमाने वाला, सत्य को छिपाने वाला, नीच, बाँध बनाने वाला, तथा पूर्ण उद्वेगी होता है ॥ २॥ यदि धनेश तृतीय भाव में हो तो जातक, यदि धनेश पापग्रह हो तो भाइयों से

शत्रुता न रखने वाला, और यदि शुभग्रह हो तो राजा से विरोध करने वाला होता है। यदि मंगल धनेश होकर तृतीयभाव में बैठा हो तो जातक चोर होता है॥ ३॥ यदि धनेश चतुर्थभाव में हो तो जातक अपने पिता से धन पाने वाला, सत्यवादी दयालु तथा दीर्घायु होता है। यदि धनेश पापग्रह होकर चतुर्थभाव में बैठा हो तो वह मृत्युकारक भी हो सकता है॥४॥ यदि धनेश पंचम भाव में हो तो जातक पुत्रों से दुखी, कठिन-कर्म करने वाला, कृपण तथा दुःखी होता है॥५॥ यदि धनेश षष्ठ भाव में बैठा हो तो जातक धन-संग्रह करने वाला व शत्रुजयी होता है। यदि धनेश शुभ ग्रह हो तो जातक को भूमिलाभ भी होता है और यदि वह पाप-ग्रह हो तो जातक निर्धन होता है॥ ६॥ यदि धनेश सप्तम भाव में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक की पत्नी सुशीला, विलासवती, सौभाग्यवती एवं धन-संग्रह करने वाली होती है। यदि पापग्रह हो तो वन्ध्या होती है॥७॥ यदि धनेश अष्टम भाव में हो तो जातक अष्टकपाली अर्थात् प्रत्येक कार्य में असफल होने वाला, आत्मघाती, प्राप्त सुख का उपभोग करने वाला, विलासी, परधनहारी तथा भाग्यवादी होता है॥ ८॥ यदि धनेश नवम भाव में हो तो जातक, यदि शुभग्रह हो तो दानी एवं अपने वचन का पालन करने वाला होता है, और यदि पापग्रह हो तो दरिद्र, भिखारी एवं विडम्बनायुक्त होता है॥ ९॥ यदि धनेश दशम भाव में हो तो जातक राजमान्य व राजा से धन पाने वाला होता है। यदि वह शुभग्रह की राशि में होकर दशमभाव में बैठा हो तो जातक माता-पिता का भक्त होता है॥ १०॥ यदि धनेश एकादश भाव में हो तो जातक ज्योतिषविद्या द्वारा सम्पत्ति उपार्जित करने वाला, विख्यात एवं अनेक लोगों को पालने वाला होता है॥ ११॥ यदि धनेश द्वादश भाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक कृपण और निर्धन होता है और यदि शुभग्रह हो तो हानि-लाभ दोनों समान रूप से प्राप्त होते रहते हैं॥ इति धनेश द्वादश भावगत फलम्॥

अथ सहजेश फलम्॥ सहजपतिर्लग्नगतो वाग्वादी लम्पटः स्वजन भेदी। सेवापरः कुमित्रः क्रूरकरः प्रोच्यते पुरुषः॥ १॥ धनगृहगे सहजेशे भिक्षुर्निधनोऽल्प जीवितो मनुजः। बन्धुविरोधी

क्रूरे सौम्यैः पुनरीश्वरः खचरैः ॥२॥ सहजगतः सहजपतिः समसत्त्वं सुसुहृदं शुभस्वजनम्। देवगुरुपूजनरतं नृपलाभपरं नरं कुरुते ॥३॥ भ्रातृपतौ मातृगते पितृबन्धुसहोदरेषु सुखभोगी। माता सह वैरकरः पितृवित्तस्य प्रभक्षकः पुरुषः ॥४॥ दुश्चिक्यपतौ सुतगे सुतबान्धवसुतसहोदरैः पाल्पः। दीर्घायुर्भवति नरः परोपकारैकनिरतमतिश्च ॥५॥ षष्ठगते सहजपतौ बन्धुविरोधी च नयनरोगी च। भूलाभो भवति भृशं कदाचिदपि रोगसङ्कुलितः ॥६॥ सप्तमगे सहजेशे नरस्य भार्या भवेत्सुशीला च। सौभाग्यवती तु युवतिः क्रूरे देवरगृहं याति ॥७॥ भ्रातृपतिर्वसुमगः जातं मृतसोदरं नरं कुरुते। क्रूरे बाहुव्यङ्गिनमपि जीवति पञ्चाष्टवर्षाणि ॥८॥ धर्मगते सहजपतौ क्रूरे बन्धूज्झितस्तथा सौम्ये। सद्बान्धवश्च सुकृती सोदरभक्तो भवेन्मनुजः ॥९॥ दुश्चिक्येशे दशमे नृपपूज्यो मातृबन्धुपितृभक्तः। उत्तमबोधो बन्धुषु विनिश्चितो जायते जातः ॥१०॥ लाभस्थः सहजेशः सुबान्धवं राजशालिनं कुरुते। कुरुते बन्धुषु सेवाविधायिनं भोगनिरतं च ॥११॥ व्ययगे दुश्चिक्येशे मित्रविरोधोऽतिबंधुसंतापी। दूरे वासित बंधुर्विदेशगामी नरो भवेज्जातः ॥१२॥

टीका॥ यदि सहजेश अर्थात् तृतीय भाव का स्वामी लग्न में हो तो जातक बकवादी, लम्पट, अपने परिवार में भेद रखने वाला, नौकरी करने वाला, कुमित्र वाला तथा नकली-वस्तु बनाने वाला होता है ॥१॥ यदि सहजेश द्वितीयभाव में हो तो जातक, यदि वह पापग्रह हो तो भिक्षुक, निर्धन, अल्पायु एवं बन्धु-विरोधी होता है और यदि शुभग्रह हो तो धनवान् होता है ॥ २॥ यदि सहजेश तृतीयभाव में हो तो जातक बलवान्, अच्छे मित्रों वाला, देवता तथा गुरु का भक्त एवं राजा से धन पाने वाला होता है ॥ ३॥ यदि सहजेश चतुर्थभाव में हो तो जातक पिता, बन्धु एवं सहोदरों से सुख पाने वाला, माता से शत्रुता रखनेवाला, तथा पिता के धन को खाने वाला होता है ॥४॥ यदि सहजेश पंचम भाव में हो तो जातक पुत्र, बान्धव एवं भाइयों से पालित, दीर्घायु तथा परोपकारी होता है ॥५॥ यदि सहजेश षष्ठभाव में हो तो जातक बन्धु-

विरोधी, नेत्र-रोगी, भूमि का उपार्जन करने वाला तथा सदा-कदा रोग-पीड़ित बना रहने वाला होता है ॥ ६ ॥ यदि सहजेश सप्तमभाव में हो और वह यदि शुभग्रह हो तो जातक की स्त्री सौभाग्यवती एवं सुशीला होती है, और यदि वह क्रूर ग्रह हो तो पति को छोड़ कर अपने देवर के साथ रहती है ॥ ७ ॥ यदि सहजेश अष्टमभाव में हो और वह शुभग्रह हो तो अपना कोई सगा भाई-बहिन नहीं होता और यदि वह पापग्रह हो तो जातक अङ्गहीन अथवा केवल आठ वर्ष की आयु पाने वाला होता है ॥ ८ ॥ यदि सहजेश नवमभाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक बन्धु-हीन होता है और यदि शुभग्रह हो तो सद्बन्धु युक्त, पुण्यात्मा एवं भाई-बहिनों से प्रेम करने वाला होता है ॥ ९ ॥ यदि सहजेश दशमभाव में हो तो जातक राजमान्य, माता-पिता, बन्धुजनों स्नेह करने वाला तथा सद्बुद्धि युक्त होता है ॥ १० ॥ यदि सहजेश एकादशभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ बन्धु-बान्धवों से युक्त, राजा का स्नेह पात्र तथा भाई-बन्धुओं का प्रिय एवं भोगी होता है ॥ ११ ॥ यदि सहजेश द्वादशभाव में हो तो जातक मित्रों का विरोधी, बन्धुओं को सन्ताप देने वाला एवं उनसे दूर परदेश में रहने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति सहजेश द्वादशभावगत फलम् ॥

अथ सुखेश फलम् ॥ तुर्यपतिर्लग्नगतः स्नेहं पितृपुत्रयोर्मिथः कुरुते । उच्चतमं पितृपक्षे पितृनाम्नापि प्रसिद्धं च ॥ १ ॥ पातालपे धनस्थे क्रूरखगे पितृविरोधकृच्छुभे भवति । पितृपालकः प्रसिद्धः पिता भुनक्तीह तल्लक्ष्मीम् ॥ २ ॥ तुर्येशे सहजस्थे पितृमातृविभेदकं नरं कुरुते । पित्रा सह कलहं करं पितृबान्धवघातकं कुरुते ॥ ३ ॥ तुर्यगते तुर्यपतौ पितरि क्षितिपाप्त बहुमानः । विदितः पितृलाभकरो भवति सुधर्मा सुखी धनपः ॥ ४ ॥ सुतगे तुर्यगृहेशे पितृधनभागी च दीर्घायुः । भवति च ज्ञातिप्रसिद्धः ससुतः कुलपालकश्चैव ॥ ५ ॥ हिबुकपतौ रिपुभावे मात्रर्थविनाशकः शिशुर्जातः । पितृदोषरतः क्रूरे सौम्ये धन सञ्चयी मनुजः ॥ ६ ॥ अम्बुपतौ सप्तमगे क्रूरे श्वशुरं स्नुषा न पालयति । सौम्ये पालयति

पुनः सकुलवर्ती कुजकवी कुरुतः ॥ ७॥ छिद्रगतस्तुर्यपतिः क्रूरं रोगान्वितं दरिद्रं वा । दुष्कर्मपरं मृत्युप्रियम-
थवा मानवं कुरुते ॥ ८॥ सुकृते तुर्यपतौ सति पितर्यसङ्गी समस्त विद्यावान् । पितृधर्मसंग्रहपरः पितनिर
पेक्षो भवेन्मनुजः ॥ ९॥ पातालपेऽम्बरगते पापे सुतमातरं त्यजेज्जनकः सृजते त्वन्यां दयितां सौम्ये
पुनरन्यपालकः पुरुषः ॥ १०॥ एकादशे तुर्यपतौ धर्मी जनपालकः सुकर्मा च । पितृभक्तो भवति पुनः
प्रचुरायुर्व्याधिरहितश्च ॥ ११॥ द्वादशगे तुर्यपतौ मृतपितृको वा विदेशगो वाच्यः । पुत्रस्य पापखेटे
चाऽन्यपितुर्जन्म निर्दिश्यम् ॥ १२॥ इति ॥

टीका ॥ यदि सुखेश (चतुर्थेश) लग्न में हो तो जातक अपने पिता से प्रेम रखता है और वह पितृ-कुल में श्रेष्ठ एवं अपने पिता के तथा अपने नाम से प्रसिद्ध होता है ॥ १॥ यदि सुखेश द्वितीय भाव में हो और वह पाप ग्रह हो तो जातक अपने पिता का विरोधी होता है। यदि शुभ ग्रह हो तो पिता का भक्त होता है तथा उसका पिता उसके द्वारा उपार्जित सम्पत्ति का उपभोग करता है ॥ २॥ यदि सुखेश तृतीय भाव में हो तो जातक माता-पिता से मतभेद रखने वाला, पिता से कलह करने वाला तथा पिता के बन्धुओं के लिए घातक होता है ॥ ३॥ यदि सुखेश चतुर्थभाव में हो तो जातक के पिता को राजा से सम्मान प्राप्त होता है और जातक स्वयं विख्यात, पिता के लिए लाभप्रद, धर्मात्मा, सुखी तथा अत्यन्त धनी होता है ॥ ४॥ यदि सुखेश पंचम भाव में हो तो जातक पिता के धन का भागी, दीर्घायु क्रिया-प्रसिद्ध, सन्ततिवान् तथा पुत्र-पालक होता है ॥ ५॥ यदि सुखेश षष्ठभाव में हो तो जातक माता के धन को नष्ट करने वाला होता है। यदि सुखेश शुभ-ग्रह हो तो धन-संचयी और पाप-ग्रह हो तो पिता को दोष लगाने वाला होता है ॥ ६॥ यदि सुखेश सप्तमभाव में हो तो जातक (शुभ ग्रह होने की स्थिति में) की पत्नी श्वसुर की सेवा करने वाली होती है। यदि पापग्रह हो तो श्वसुर को कष्ट देने वाली होती है।

यदि सप्तम भावस्थ सुखेश मंगल अथवा शुक्र हो तो जातक की पत्नी कुलीना होती है ॥ ७॥ यदि सुखेश अष्टम भाव में हो तो जातक क्रूर, रोगी, दरिद्र, कुकर्मी अथवा मरने के लिए उद्यत (मृत्यु-प्रिय) होता है ॥ ८॥ यदि सुखेश नवम भाव में हो तो जातक पिता से अलग रहने वाला, सब विद्याओं का ज्ञाता, पिता के धर्म का पालन करने वाला तथा पिता की अपेक्षा न करने वाला होता है ॥ ९॥ यदि सुखेश दशम भाव में हो तो जातक का पिता; यदि सुखेश पापग्रह हो तो, उसकी माता को त्याग देता है तथा दूसरा विवाह कर लेता है। यदि सुखेश शुभग्रह हो तो जातक परोपकारी होता है ॥ १०॥ यदि सुखेश एकादशभाव में हो तो जातक धर्मात्मा, परिजन-पालक, सुकर्मकर्ता, पितृभक्त, दीर्घायु तथा नीरोग होता है ॥ ११॥ यदि सुखेश द्वादशभाव में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक का जन्म पिता के परोक्ष में अथवा पिता की मृत्यु हो जाने के बाद हुआ है - यह समझना चाहिए। यदि चतुर्थेश पापग्रह हो तो जातक को पर-पुरुष से उत्पन्न (जारज-सन्तान) समझना चाहिए ॥ १२॥ इति सुखेशद्वादशभावगत फलम् ॥

अथ पुत्रेश फलम् ॥ लग्नगते पञ्चमपे जनविदितं स्तोकतनयपरिकलितम्। शास्त्रविदं वेदविदं सुकर्मनिरतं तथा कुरुते ॥ १॥ पञ्चमपतिर्धनस्थः क्रूरे खेटे धनोज्झितं कुरुते। गीतादिकलाकलितं कष्टभुजं सद्ग्रहः सुखिनम् ॥ २॥ तनयपतिः सहजगतः सुमधुरवाक्यं जनेषु सविदितम्। कुरुते सुतास्तदीयाः परितो रक्षन्ति तद्बन्धून् ॥ ३॥ सुतपः पातालगतः पितृकमरतं प्रपालितं पित्रा। जननीभक्तं कुरुते क्रूरे तु विरोधिनं पितृभिः ॥ ४॥ तनयगतस्तनयपतिर्मतिमन्तं मानिनं जनं कुरुते। सुतकलितं प्रकटजने विख्यातं मानवं कुरुते ॥ ५॥ पञ्चमपतिश्च षष्ठे शत्रुयुतं मानहीनं च। रोगयुतं धनरहितं क्रूरः खचरः करोति नरम् ॥ ६॥ तनयपतौ सप्तमगे स्वसुताः सुभगाश्च देवगुरुभक्ताः। प्रियवादिनी सुशीला नरस्य ननु जायते दयिता ॥ ७॥ सुतपे निधनगृहस्थे कटुवाङ् स्त्री वर्जितः

मृ० सं० १२०

भा० टी०

यदा भवति। चण्डा पत्नी व्यङ्गी सहजास्तनया भवन्ति तथा ॥८॥ सुकृतगतस्तनयपतिः सुबोधविद्यं कविं सुगीतिज्ञम्। नृपपूजितं सुरूपं नाटकरसिकं नरं कुरुते ॥९॥ सुतपतिरम्बरलीनो नृपकर्माणं नृपात् कलितभावम्। सत्कर्मरतं प्रवरं जननीसुखकृत्सुतं कुरुते ॥१०॥ सुतनाथे लाभस्थे क्रूरः सुतवान् सुसत्यकृतः सद्गुः। गीतादिकलाकलितो नृपभोगी जायते जातः ॥११॥ पञ्चमपे द्वादशगे क्रूरे सुतवर्जितः शुभे सुसुतः। सुतसन्तानपरः स्याद्विदेशगामी भवेन्मनुजः ॥१२॥ इति॥

टीका॥ यदि पुत्रेश (पञ्चमेश) लग्न में हो तो जातक लोक-विख्यात, थोड़े पुत्रों वाला, शास्त्रज्ञ, वेदज्ञ तथा सुकर्म करने वाला होता है॥ १॥ यदि पुत्रेश द्वितीयभाव में हो तो जातक, यदि वह पापग्रह हो तो निर्धन, संगीतज्ञ एवं कष्ट से अर्थोपार्जन कर पेट भरने वाला होता है और यदि शुभग्रह हो तो सुखी होता है॥ २॥ यदि पुत्रेश तृतीय भाव में हो तो जातक मधुरभाषी एवं लोक-विख्यात होता है तथा उसके पुत्र सुयोग्य एवं पिता के परिवार की रक्षा करने वाले होते हैं॥३॥ यदि पुत्रेश चतुर्थभाव में हो तो जातक अपने पिता के काम को करने वाला, पिता के द्वारा पालित तथा माता का भक्त होता है। यदि पुत्रेश पाप-ग्रह हो तो जातक माता-पिता का विरोधी होता है॥ ४॥ यदि पुत्रेश पंचम भाव में हो तो जातक बुद्धिमान, मानी, पुत्रवान् तथा लोक-विख्यात लोगों में अग्रगण्य होता है॥ ५॥ यदि पुत्रेश षष्ठभाव में हो और शुभग्रह हो तो जातक अनेक शत्रुओं वाला तथा मानहीन होता है। यदि पापग्रह हो तो रोगी एवं निर्धन भी होता है॥६॥ यदि पुत्रेश सप्तम भाव में हो तो जातक के पुत्र सुन्दर एवं देव-गुरु-भक्त होते हैं तथा उसकी पत्नी प्रियभाषिणी एवं सुशीला होती है॥७॥ यदि पुत्रेश अष्टम भाव में हो तो जातक स्त्री-विहीन होता है। यदि पत्नी जीवित रहे तो वह कटुभाषिणी एवं अङ्गहीना होती है तथा उसके भाई और पुत्र भी क्रोधी

स्वभाव के तथा अङ्गहीन होते हैं ॥ ८ ॥ यदि पुत्रेश नवमभाव में हो तो जातक सुबुद्धिमान्, विद्वान्, कवि, संगीतज्ञ नाटक-प्रिय, राजमान्य तथा सुन्दर होता है ॥ ९ ॥ यदि पुत्रेश दशम भाव में हो तो जातक राज्यकर्मचारी, राजमान्य, सत्कर्मकर्त्ता, श्रेष्ठ तथा माता को सुख देने वाला होता है ॥ १० ॥ यदि पुत्रेश एकादश भाव में हो तो जातक शूर-वीर, पुत्रवान्, सत्य-प्रिय, सङ्गीत आदि कलाओं का ज्ञाता एवं राजा से सम्मानित होता है ॥ ११ ॥ यदि पुत्रेश द्वादश भाव में हो तो जातक पुत्रवान् होता है, परन्तु उसे पुत्र से सन्ताप प्राप्त होता है और वह परदेशवासी भी होता है। यदि पुत्रेश अशुभग्रह हो पुत्रहीन होता है ॥ १२ ॥ इति पुत्रेश द्वादशभावगत फलम् ॥

अथ षष्ठेश फलम् ॥ षष्ठेशो लग्नगतो नीरुक् सबलः कुटुम्बकष्टकरः। बहुपक्षो रिपुहन्ता भवति नरः स्वैरवचन धनः ॥ १ ॥ शत्रुपतौ द्रविणस्थे दुष्टश्चतुरो हि संग्रहपरेष्टः। स्थानप्रवरो विदितो व्याधितदेहः सुहृद्विधुरः ॥ २ ॥ षष्ठपतिः सहजस्थ कुरुऽतेसौ लोककष्टकरम्। नीचाचरणं जातं कष्टं संग्रामतस्तस्य ॥ ३ ॥ षष्ठाधिपतिस्तुर्ये पितृतनयौ वैरिणो मिथः कुरुते। सरुक पिताऽसौ ससुतो लक्ष्मीं लभते नरः सुचिरम् ॥ ४ ॥ रिपुभवनपतौ सुतगे पितृतनयौ वैरिणो मृतिः सुततः। क्रूरे शुभे च विधनः पदवी दुष्टश्च तत्कपटी ॥ ५ ॥ रिपुभावाधिपे रिपुस्थे नीरुग् वैरी सुखी कृपणः। नहि जन्मतोऽपि सीदति कुस्थलवासी च भवति नरः ॥ ६ ॥ अहितपतौ सप्तमगे क्रूरे भार्या विरोधिनी चण्डी। सन्तापकरी त्वथ सौम्ये बन्ध्या वा गर्भनाशपरा ॥ ७ ॥ शने ग्रहणिकारुजो विषधराद्दूरानन्द नाद। बुधश्च विषदोषतः सपदि मृत्युरेणाङ्कुतः ॥ रवेर्मृगपतेर्वधात्प्रकटमण्टमे षष्ठपाद। गुरोरपि च दुष्टधीर्नयन दोषवान्धुक्रतः ॥ ८ ॥ शत्रुपतिर्यदि नवमः क्रूरः खचरस्तथा भवेत् खञ्जः। बन्धुविरोधी शास्त्रं न मन्यते याचकः सौम्ये ॥ ९ ॥ अरिपे दशम गृहस्थे क्रूरे मातृरिपुस्तदा दुष्टः। धर्मसुत पालन मति

मतुर्दोषो भवेत्सौम्ये ॥१०॥ वैरिपतौ लाभगते क्रूरे मरणं विपक्षतो भवति। रिपुदलं तस्करहानिश्चतुष्पदाल्लाभवान् सौम्ये ॥११॥ षष्ठपतौ द्वादशगे चतुष्पदाद् द्रव्यहानिकरः। गमनाऽऽगमनाल्लक्ष्मी दैवपरः केवलं भवति ॥१२॥ इति ॥

टीका ॥ यदि षष्ठेश लग्न में हो तो जातक नीरोग, बलवान्, कुटुम्बियों को कष्ट देने वाला, अनेक लोगों को अपने पक्ष में रखने वाला, शत्रुजयी तथा बोलने एवं धन कमाने में स्वच्छन्द प्रकृति का होता है ॥१॥ यदि षष्ठेश द्वितीय भाव में हो तो जातक दुष्ट, चतुर, धन-संग्रही, उत्तमस्थान में रहने वाला, रोगी तथा मित्र-हीन होता है ॥२॥ यदि षष्ठेश तृतीयभावमें हो तो जातक लोगों को कष्ट देने वाला, नीच आचरण वाला तथा झगड़े-झंझटों से सदैव कष्ट पाने वाला होता है ॥३॥ यदि षष्ठेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक अपने पिता से शत्रुता रखता है तथा उसका पिता रोगी होता है। साथ ही वह पुत्र सहित चिरकाल तक सम्पत्तिशाली भी बना रहता है ॥४॥ यदि षष्ठेश पंचम भाव में हो तो जातक की पुत्र से शत्रुता होती है तथा पुत्र के कारण ही मृत्यु भी होती है। यदि षष्ठेश शुभग्रह हो तो जातक निर्धन, दुष्ट तथा कपटी होता है ॥५॥ यदि षष्ठेश षष्ठभाव में हो तो जातक नीरोग, लोगों से अकारण-शत्रुता करने वाला, सुखी, कृपण, कभी खिन्न न होने वाला तथा बुरी जगह में रहने वाला होता है ॥६॥ यदि षष्ठेश सप्तम भाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक की पत्नी विरुद्ध-आचरण वाली, क्रूर व सन्ताप देने वाली चण्डी स्वरूपा होती है। यदि षष्ठेश शुभ ग्रह हो तो जातक की पत्नी वन्ध्या अथवा नष्टगर्भा होती है ॥७॥ यदि षष्ठेश अष्टम भाव में हो और वह शनि हो तो जातक की मृत्यु संग्रहणी रोग से, यदि मंगल हो तो विषधर (सर्पादि) जीव से, बुध हो तो विष से, चन्द्रमा हो तो आकस्मिक

रूपसे तथा सूर्य हो तो सिंह, व्याघ्रादि से होती है। यदि गुरु षष्ठेश होकर अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक दुष्ट-बुद्धि होता है और यदि शुक्र हो तो नेत्र-दोष युक्त होता है॥ ८॥ यदि षष्ठेश नवमभाव में हो तो जातक भिखारी होता है, यदि वह पापग्रह हो तो लँगड़ा, बन्धु-विरोधी एवं शास्त्र को न मानने वाला होता है॥ ९॥ यदि षष्ठेश दशमभाव में हो तो जातक धर्म तथा सन्तान का पालन करने वाला, परन्तु मातृ-दोष-युक्त होता है। यदि षष्ठेश पापग्रह हो तो वह अपनी माता का शत्रु एवं दुष्ट-स्वभाव का होता है॥ १०॥ यदि षष्ठेश एकादश भाव में हो तो जातक शत्रु तथा चोरों को नष्ट करने वाला एवं पशुओं से लाभ पाने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो उसकी मृत्यु शत्रु द्वारा होती है॥ ११॥ यदि षष्ठेश द्वादश भाव में हो तो जातक के धन की हानि होती है, दौड़धूप (यात्रा) करने से धन का लाभ होता है, फिर भी वह भाग्य पर भरोसा रखने वाला होता है॥ इति षष्ठेश द्वादशभावगत फलम्॥

अथ जायेश फलम्॥ दयितेशो लग्नगतः स्तोकस्नेहिनन्त्वन्य भार्यायाम्। भोगभुजं रूपयुतं जनयति दयिता दलितचित्तम्॥ १॥ जायापतौ धनस्थे दुष्टा दयिता सुतेप्सिता भवति। वित्तं च कलत्रकृतं सततं निवसति विसङ्कश्च॥ २॥ सप्तमपे सहजगते आत्मबलो बन्धुवत्सलो सौम्ये। देवररता सुरूपा गृहिणी क्रूरे सुहृद्गृहगा॥ ३॥ जायेशे तुर्यस्थे लोलः पितृवैरसाधकस्नेही। अस्य पिता दुर्वाक्यस्तद्भार्यां पालयेज्जनकः॥ ४॥ सप्तमपतौ सुतस्थे सौभाग्ययुतः सुतान्वितः पुरुषः। प्रियसाहसो दुष्टमतिस्तत्तनयः पालयेद्दयिताम्॥ ५॥ रिपुगृहगः कान्तेशः प्रियया सह वैरिणं सरुग्भार्यम्। दयिता सङ्क्षयिणं क्रूरः कुरुते च मृत्युपदम्॥ ६॥ सप्तमपे सप्तमगे परमायुः प्रीतिवत्सलः पत्न्याः। निर्मलशील समेतस्तेजस्वी जायते तातः॥ ७॥ सप्तमपतिर्निधनगतो गणिकासु रतो विवाहविधिरहितः। नित्यं

चिन्तायुक्तो मनुजः किल जायते दुःखी ॥८॥ सुकृतगते सप्तमपे तेजोवाञ्छीलवान्प्रियाऽप्येवम्। क्रूरे वन्ध्यविरूपे लग्नेशे नेक्षिते नये प्रबलः ॥९॥ सप्तमपे दशमस्थे नृपदोषी लम्पटः कपटचित्तः। क्रूरे दुःखार्त्तः स्याच्छत्रोर्वशगो भवेत्पुरुषः ॥१०॥ लाभस्थे जायेशे भक्ता रूपान्विता सुशीला च। दयिता परिणीता स्यान्नरस्य ननु जायते सततम् ॥११॥ सप्तमपे द्वादशगे गृहबन्धुरतो नव भवेद्भार्या। सालीला दुष्टपुत्रा दूराच्चलति च तस्य पुरुषस्य ॥१२॥ इति ॥

टीका ॥ यदि जायेश (सप्तमेश) लग्न में हो तो जातक पर-स्त्रियों से भी कुछ प्रेम करने वाला, भोगी, सुन्दर तथा अपनी पत्नी से भी विशेष प्रेम करने वाला होता है ॥१॥ यदि जायेश द्वितीय भाव में हो तो जातक की पत्नी दुष्ट-स्वभाव वाली एवं पुत्र की इच्छा करने वाली होती है तथा जातक उस स्त्री द्वारा धन-लाभ भी करता है, साथ ही वह अधिक समय तक स्त्री-सङ्ग से रहित भी होता है ॥२॥ यदि जायेश तृतीयभाव में हो और वह शुभग्रह हो तो जातक आत्मबली एवं बन्धुजनों से प्रेम रखने वाला होता है। यदि पापग्रह हो तो उसकी स्त्री सुन्दरी होती है और वह देवर अथवा पति के मित्रों के घर में रहने वाली होती है ॥३॥ यदि सप्तमेश चतुर्थभाव में हो तो जातक चञ्चल स्वभाव का एवं अपने पिता के शत्रुओं से स्नेह करने वाला होता है। उसका पिता कटु-भाषी होता है तथा उसकी स्त्री अपने पिता के घर में ही पलती है ॥४॥ यदि सप्तमेश पंचमभाव में हो तो जातक सौभाग्ययुक्त, पुत्रवान, साहसी तथा दुष्ट-बुद्धि होता है और उसकी पत्नी का पालन उसके पुत्र करते हैं ॥५॥ यदि जायेश षष्ठभाव में हो तो जातक अपनी स्त्री से विरोध रखने वाला, रुग्णा-पत्नीवाला तथा स्त्री-सङ्ग से रहित होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो उसकी मृत्यु भी हो जाती है ॥६॥ यदि जायेश सप्तमभाव में हो तो जातक दीर्घायु, स्त्री-प्रेमी, सुशील तथा तेजस्वी होता है ॥७॥ यदि जायेश अष्टमभाव में हो तो

जातक का विवाह नहीं होता। वह वेश्यागामी, चिन्तित एवं दुःखी बना रहने वाला होता है॥८॥ यदि जायेश नवमभाव में हो तो जातक तेजस्वी और सुशील होता है तथा उसकी पत्नी भी सुशीला होती है। यदि जायेश पापग्रह हो तो जातक नपुंसक एवं कुरूप होता है। यदि सप्तमेश पर लग्नेश की दृष्टि हो तो जातक नीति शास्त्र का पण्डित होता है॥९॥ यदि जायेश दशमभाव में हो तो जातक राज-दोषी, लम्पट तथा कपटी होता है। यदि सप्तमेश पापग्रह हो तो दुःखी एवं शत्रु से पराजित होता है॥१०॥ यदि जायेश एकादश भाव में हो तो उसकी पत्नी पतिव्रता, रूपवती, सुशीला एवं स्नेहयुक्ता होती है॥११॥ यदि जायेश द्वादश भाव में हो तो जातक अपने घर के तथा बन्धु-बान्धवों के कार्य में रत होता है, परन्तु उसकी पत्नी नवीना, चंचला तथा दुष्टलोगों से प्रेम करने वाली होती है, जिसके कारण वह अपने पति को छोड़ कर दूसरों के साथ चली जाती है॥१२॥ इति जायेश द्वादशभाव गत फलम्॥

अथ अष्टमेश फलम्॥ अष्टमेपे लग्नगते बहुविघ्नो दीर्घरोगयुक्स्तेनः। नेष्टानुवाद निरतो लक्ष्मीं लभते नृपतिवचसा॥१॥ निधनपतौ धनसंस्थेऽल्पजीवी वैरिवान्नरश्चौरः। क्रूरे सौम्येऽतिशुभं किमु क्षितिपालतो मरणम्॥२॥ अष्टमपतौ तृतीये बन्धुविरोधी सुहृद्विरोधी च। व्यङ्गो दुर्वाग् लोलः सोदर रहितो भवत्यथ वा॥३॥ निधनेशे तुर्यगते पितृरिपुरथ वै ततो नयेल्लक्ष्मीम्। पितृपुत्रयोश्च युद्धं जनको रोगान्वितो भवति॥४॥ छिद्रपतौ तनयस्थे क्रूरे सुतविरहितः शुभे तु सुतः। जातोऽपि नैव जीवति जीवेदथ कितवकर्मरतः॥५॥ छिद्रेशे रिपुसङ्गते दिनकरे द्रुमच्छिरोधी गुरौ। वक्रे सीदति दृष्टिरोग कलितः शुक्रे सरोगी विधौ॥ भौमे कोपयुतो बुधे हि भयभृत्तुण्डातिभूतः शनौ। कष्टं चैव दधाति तत्र शशभृत्सौम्येक्षिते नैवकिम्॥६॥ मृत्युपतौ सप्तमगे दुरुदररुक् कुशील वल्लभो दुष्टः। क्रूरे भार्याद्वेषी कलत्रदोषान्मृतिं लभते॥७॥ निधनपतौ निधनगते व्यवसायी व्याधिवर्जितो नीरुक्। कितवकला कलित वपुः कि-

-तवकुले जायते विदित: ॥८॥ मृतिनाथे धर्मस्थे निःसङ्गी जीवघातक: पापी। निर्बन्धुर्निःस्नेही रिपुपूज्यो भवेद् विमुखे व्यङ्ग: ॥९॥ कर्मगते निधनेशे नृपकर्मा नीचकर्मनिरतश्च। अलस: क्रूरे खचरे तनयो वा न जीवति माता॥ १०॥ लाभस्थे मृत्युपतौ बाल्ये दुःखी भवति पश्चात्। दीर्घायु: सौम्यखगे पापेऽल्पायुर्नरो भवति ॥११॥ व्ययसंस्थिते ऽष्टमेशे क्रूरवाक् तस्कर: शठो निर्घृण:। आत्मगतिर्व्यङ्गवपुर्मृतस्तु काकादिभिर्भक्ष्य: ॥१२॥ इति ॥

टीका॥ यदि अष्टमेश लग्न में हो तो जातक अनेक विघ्न-बाधाओं से युक्त, दीर्घरोगी, चोर, व्यर्थ विवाद करने वाला तथा राजा की कृपा से धन लाभ करने वाला होता है ॥१॥ यदि अष्टमेश द्वि-तीय भाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक अल्पायु, शत्रुयुक्त तथा चोर होता है। यदि शुभग्रह हो तो अत्यन्त शुभफल मिलता है, परन्तु उसकी मृत्यु राजा के द्वारा होती है ॥२॥ यदि अष्टमेश तृतीयभाव में हो तो जातक बन्धुओं तथा मित्रों का विरोधी, अङ्गहीन, कटुभाषी, चंचल तथा सहोदर से रहित होता है ॥३॥ यदि अष्टमेश चतुर्थभाव में हो तो जातक पिता से शत्रुता करके उसका धन छीन लेने वाला तथा पिता से कलह करने वाला होता है और उसका पिता रोगी भी बना रहता है ॥४॥ यदि अष्टमे-श पंचमभाव में हो तो जातक पुत्रहीन होता है। यदि वह शुभग्रह हो तो पुत्र तो होता है, परन्तु वह जीवि-त नहीं रहता और यदि जीवित रहता है तो धूर्त होता है ॥५॥ यदि अष्टमेश षष्ठभाव में हो और वह सूर्य हो तो जातक राजा का विरोधी होता है, गुरु हो तो शरीर से रोगी रहता है, शुक्र हो तो नेत्ररोगी होता है, चन्द्रमा हो तो रोगी होता है, मंगल हो तो क्रोधी होता है, बुध हो तो डरपोक और मुखरोगी होता है और शनि हो तो कष्ट पाने वाला होता है। यदि अष्टमेश पर चन्द्रमा और बुध की दृष्टि हो तो [illegible] ॥६॥ यदि अष्टमेश सप्तम भाव में हो तो जातक उदररोगी,

दुःशीला पत्नी वाला व दुष्ट स्वभाव वाला होता है। यदि अष्टमेश पापग्रह हो तो जातक की मृत्यु उसकी स्त्री के द्वारा होती है ॥ ७॥ यदि अष्टमेश अष्टमभाव में हो तो जातक उद्योगी, रोग-रहित एवं धूर्तों के घर में जन्म लेने वाला, स्वयं भी धूर्त होता है ॥ ८॥ यदि अष्टमेश नवमभाव में हो तो जातक सङ्गहीन, जीवघाती, पापी, बन्धुहीन, प्रेमहीन, शत्रुओं में मान्य तथा मुख में किसी अङ्ग की कमी वाला होता है ॥ ९॥ यदि अष्टमेश दशमभाव में हो तो जातक राजकर्मचारी, नीच-कर्म करने वाला, आलसी, क्रूर होता है। यदि अष्टमेश पापग्रह हो तो उसकी माता अथवा पुत्र में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है ॥ १०॥ यदि अष्टमेश एकादश भाव में हो और वह सामान्यग्रह हो तो जातक बाल्यावस्था में दुःखी तथा बाद में सुखी होता है। यदि शुभग्रह हो तो दीर्घायु और पापग्रह हो तो अल्पायु होता है ॥ ११॥ यदि अष्टमेश द्वादश भाव में हो तो जातक कटुभाषी, तस्कर, शठ, निर्दय एवं स्वेच्छाचारी होता है और मृत्यु के बाद उसके मांस को कौए-कुत्ते आदि खाते हैं अर्थात् उसकी मृत्यु के बाद दुर्गति होती है ॥ १२॥ इति अष्टमेश द्वादशभावगत फलम् ॥

अथ भाग्येश फलम् ॥ लग्नगते नवमपतौ सुरान् गुरून् मन्यते महाशूरः। कृपणः क्षितिपतिकर्मा स्वल्पग्रासी भवति मतिमान् ॥ १॥ नवमेशे धनसंस्थे वृषतो विदितः सुशील वात्सल्यः। सुकृती मदनव्यङ्ग प्रचतुष्पादोत्पन्नपीडितो मनुजः ॥ २॥ सहजगते सुकृतपतौ साधुस्त्रीबन्धुवत्सलः पुरुषः। बन्धुस्त्रीरक्षणकृद्यदि जीवति बन्धुभिः सदा सहितः ॥ ३॥ सुकृतेशे हिबुकस्थे पितृभक्तः पितृमित्रादिकेऽपि हितः। विदितः सुकृती पुरुषः पितृकर्मरतमतिर्भवति ॥ ४॥ सुकृतगृहपे सुतस्थे सुकृती देवगुरुपूजने निरतः। वपुषा सुन्दरमूर्तिः सुकृतसमेताः सुता बहवः ॥ ५॥ शत्रुगणातिपरायण धर्मप्रसितं कलाविकलकार्यम्। दर्शननिन्दानिरतं सुकृतपतिः षष्ठगः कुरुते ॥ ६॥ नवमपतौ

सप्तमगे सत्यवती सुवदना सुरूपा च। शील श्रीयुतदयिता सुकृतयुता जायते नियतम्॥७॥ दुष्टो जन्तुविघाती गृहबन्धुविवर्जितः सुकृतरहितः। नवमेशो निधनगते क्रूरे षण्ढः स विज्ञेयः॥८॥ सुकृतगतः सुकृतपतिः स्वबन्धुभिः प्रीतिमतुलितसमत्वम्। दातारं देवगुरुस्वजनकलत्रादि संसक्ताम्॥९॥ नृपकर्मणि शूरं माता पित्रोश्च पूजक पुरुषम्। धर्मख्यातं कुरुते सुकृतपतिर्गगनगृहशील:॥१०॥ दीर्घायुर्धर्मपरो धनेश्वरः स्नेहलोकः नृपतिलाभी। सुकृतख्याती सुसुतः सुकृतविभौ लाभभवनस्थे॥११॥ द्वादशगे सुकृतेशे मानी देशान्तरे सुरूपश्च। विद्यावान्धुमखेटे क्रूरे च भवेज्जनो धूर्तः॥१२॥ इति॥

टीका॥ यदि भाग्येश (नवमेश) लग्न में हो तो जातक देवता और गुरुजनों का भक्त, महाबलवान्, कृपण, राजकर्मचारी, अल्पाहारी तथा बुद्धिमान होता है॥१॥ यदि भाग्येश द्वितीयभाव में हो तो जातक प्रसिद्ध धर्मात्मा, सुशील, प्रियवत्सल, पुण्यवान्, सुख-रोगी तथा पशुओं से पीड़ा पाने वाला होता है॥२॥ यदि भाग्येश तृतीयभाव में हो तो जातक श्रेष्ठ स्त्री तथा बन्धुओं से स्नेह करनेवाला व उनकी रक्षा करने वाला होता है और यदि जीवित रहे तो बन्धुजनों के साथ रहता हुआ ही जीवन व्यतीत करता है॥३॥ यदि भाग्येश चतुर्थभाव में हो तो जातक पितृ-भक्त, पिता के काम को करने वाला, विख्यात् एवं पुण्यवान् होता है॥४॥ यदि भाग्येश पंचम भाव में हो तो जातक देव-गुरु-भक्त एवं सुन्दर होता है तथा उसके सभी पुत्र पुण्यात्मा होते हैं॥५॥ यदि भाग्येश षष्ठभाव में हो तो जातक शत्रुओं के समक्ष नत होने वाला, काम को पूरा न कर पाने वाला एवं दर्शन-शास्त्र की निन्दा करने वाला होता है॥६॥ यदि भाग्येश सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी सत्यवादिनी, सुन्दरी, शील एवं सम्पत्ति से युक्त तथा पुण्यवती होती है॥७॥ यदि भाग्येश अष्टम भाव में हो तो जातक दुष्ट, हिंसक स्वभाव का, गृह तथा बन्धुओं से रहित,

एवं पुण्यहीन होता है। यदि नवमेश पापग्रह हो तो नपुंसक होता है॥ ८॥ यदि भाग्येश नवमभावमें
हो तो जातक अपने बन्धुओं से प्रेम रखने वाला, दानी; देव, गुरु, स्वजन एवं मित्री आदि में प्रीति
रखने वाला होता है॥ ९॥ यदि भाग्येश दशम भाव में हो तो जातक राजकर्मचारी, शूर-वीर, माता
पिता का भक्त तथा धर्मात्मा होता है॥ १०॥ यदि भाग्येश एकादशभाव में हो तो जातक दीर्घायु
धर्मात्मा, लोक-स्नेही, राजा से धन पाने वाला, विख्यात पुण्यात्मा तथा श्रेष्ठ पुत्र वाला होता है॥
११॥ यदि भाग्येश द्वादश भाव में हो तो जातक देशान्तर में सम्मान पाने वाला और सुन्दर होता
है। यदि शुभग्रह हो तो विद्वान् और पापग्रह हो तो धूर्त होता है॥ इति भाग्येश द्वादशभावगत फलम्॥

अथ राज्येश फलम्॥ दशम पतौ लग्नगते मातरि वैरी पितुर्भक्तः। मृत्युङ्गते
च ताते खलु परपुरुषरता भवति माता॥ १॥ वित्तस्थे गगनपतौ मात्रा पालितसुतो भवति लोभी।
मातरि दुष्टे नितरां स्वल्पग्रासो श्रुतसुकर्मा च॥ २॥ मातृस्वजन विरोधी सेवानिरतो न कर्मणि समर्थः।
मातुल सुपालितः स्याद्दशमपतौ सहजभवनस्थे॥ ३॥ व्योमपतौ तुर्यगते सुखे तु निरतः सदाचारः। भक्तश्च
पितरि मातरि नृपमानी जायते पुरुषः॥ ४॥ शुभकर्मको विडम्बी नृपलाभी गीतवाद्यनिरतः स्यात्। गगन
पतौ तनयगते पालयति च तं सुतं माता॥ ५॥ अम्बरपे रिपु संस्थे शत्रुभयात्कातरः कलहशीलः। कृपणः
कृपया हीनो नरो न रोगी भवति लोके॥ ६॥ सुतवती शुभरूप समन्विता निजपति प्रतिपालन लालसा। भ-
वति तस्य शुभं कुरुते सदा द्विपतमाम्बरपे दयितां गते॥ ७॥ पुष्करपति रष्टमगः क्रूरं शूरं मृषान्वितं दुष्टम्।
मातरि सन्तापकरं जनयति तनुजीवितं कितवम्॥ ८॥ शुभशीलः सद्बन्धुः सन्मित्रो दशमपे नवमलीने।
तन्माता ऽपि सुशीला सुकृतवती सत्यवचनरता॥ ९॥ गगनपतिर्गगनगते कुरुते जननीसुखप्रदं पुरुषम्। जन-
नीकुलविपुल सुखं प्रकथनद्यदनापदीयांसम्॥ १०॥ मानोर्जिता ऽर्थ सहितो माता च रक्षिणी भवेत्सुखिनी।

दीर्घायुर्मातृसुखी पुरुषो लाभस्थिते ऽम्बरपे ॥११॥ मात्रोज्झितो निजबलः शुभकर्मा नृपतिकर्मरत-चेताः। व्योम-पतौ व्ययसंस्थे देशान्तरगतश्च पापखगे ॥१२॥ इति ॥

टीका॥ यदि राज्येश (दशमेश) लग्न में हो तो जातक अपनी माता का शत्रु तथा पिता का भक्त होता है। पिता के मरजाने पर उसकी माता पर-पुरुष के साथ रहने लगती है॥१॥ यदि दशमेश द्वितीय भाव में हो तो जातक माता द्वारा पालित होने पर भी माता का द्वेषी होता है। वह अल्पाहारी तथा वेदोक्त सुकर्म का जानकार होते हुए भी लोभी होता है॥२॥ यदि दशमेश तृतीय भाव में हो तो जातक माता आदि स्वजनों का विरोधी, सेवाकार्य करने वाला, कार्य करने में अक्षम तथा मामा के द्वारा पालित होता है॥३॥ यदि राज्येश चतुर्थभाव में हो तो जातक सुखी, सदाचारी, माता-पिता का भक्त तथा राजमान्य होता है॥४॥ यदि राज्येश पंचमभाव में हो तो जातक सुकर्म में विडम्बना करने वाला, राजा से धन पानेवाला, सङ्गीत-प्रेमी तथा अपनी माता द्वारा पालित होता है॥५॥ यदि राज्येश षष्ठभाव में हो तो जातक शत्रुओं से भीत, कलह-प्रेमी, कृपण, दयाहीन एवं रोग-रहित होता है॥६॥ यदि राज्येश सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी पुत्रवती, सुन्दरी, पति-सेवा-परायणा एवं सदैव शुभ कार्य करने वाली होती है॥७॥ यदि राज्येश अष्टमभाव में हो तो जातक कुटिल, क्रूर, मिथ्यावादी, दुष्ट, माता को कष्ट देने वाला, धूर्त एवं अल्पायु होता है॥८॥ यदि राज्येश नवमभाव में हो तो जातक सुशील एवं सद्बन्धु तथा सन्मित्रवान् होता है और उसकी माता भी सुशीला, पुण्यात्मा एवं सत्यवादिनी होती है॥९॥ यदि राज्येश दशमभाव में हो तो जातक माता को सुख देनेवाला, माता से सुख पाने वाला तथा अत्यन्त चतुर होता है॥१०॥ यदि राज्येश एकादशभाव में हो तो जातक मानी एवं धनी होता है। उसकी माता रक्षा करने वाली एवं सुख युता होती है। वह स्वयं माता से सुख पाने वाला एवं दीर्घायु होता है॥११॥ यदि राज्येश द्वादशभाव में

हो तो जातक बाल्यावस्था में ही माता से त्यक्त होकर, अपने भुजबल सुकर्म करने वाला तथा राज्यकर्मचारी होता है। यदि दशमेश पापग्रह हो तो जातक परदेशवासी होता है॥ १२॥ इति राज्येश द्वादश भावगत फलम्॥

अथ लाभेश फलम्॥ अल्पायुर्बलकलितः शूरो दाता जनप्रियः सुभगः। लाभपतौ लग्नगते तृष्णा-दोषान्मृतिं लभते॥ १॥ वित्तगते लाभपतावुत्पन्नभुगल्पभोजनोऽल्पायुः। अष्टकपाली रोगी क्रूरे सौम्ये च धन कलितः॥२॥ बन्धुस्त्री पालनकः सुबान्धवो बन्धुवत्सलः सुभगः। लाभेशे सहजगते बन्धूनां रिपुकुलोच्छेत्ता॥ ३॥ तुर्यस्थे लाभेशे दीर्घायुः पितरि भक्तिभाग् भवति। समयैककर्मनिरतः स्वधर्मनिरतश्च लाभवान्मनुजः॥४॥ लाभपतिः पुत्रगतः पितृपुत्रस्नेहलं मिथः कुरुते। तुल्य गुणं च परस्परमल्पायुर्जायते पुरुषः॥५॥ षष्ठगते लाभपतौ सुदीर्घरोगी सुवैरिकलितश्च। तस्करहस्तान्मृत्युः क्रूरे देशान्तरगतस्य॥ ६॥ सप्तमगे लाभेशे तेजस्वी शीलसम्पदः पदवान्। दीर्घायुर्भवति नरस्तथैक दयितापतिर्लित्यम्॥ ७॥ एकादशपे ऽष्टमगेऽल्पायुर्भवति स जातकः सुरोगी। जीवन्मृतश्च दुःखी भवति नरो ऽसौम्य गगनचरे॥८॥ एकादशेशे सुकृतालयस्थे बहुश्रुतः शास्त्रविशारदश्च। धर्मप्रसिद्धो गुरुदेवभक्तः क्रूरे च बन्धुव्रतवर्जितश्च॥ ९॥ मातरि भक्तः सुकृती पितरिद्वेषी सुदीर्घतरजीवी। धनवाग्जननी पालननिरतो लाभाधिपे खगते॥ १०॥ लाभाधिपो लाभगतः करोति दीर्घायुषं पुष्कल पुत्रपौत्रम्। सुकर्मकं रूपवंतं सुशीलं जनप्रधानं विपुलं मनोज्ञम्॥ ११॥ द्वादशगे लाभेशे सूत्पन्नभुक् स्थिरो भवति रोगी। उत्पात रतो मानी दाता च सुखी सदा पुरुषः॥ १२॥ इति॥

टीका॥ यदि लाभेश (एकादशेश) लग्न में हो तो जातक अल्पायु, शूर-वीर, दानी, लोक-प्रिय तथा सुन्दर होता है एवं उसकी मृत्यु तृष्णा-दोष से होती है॥ १॥ यदि लाभेश द्वितीय

भाव में हो तो जातक प्राप्त-सुख को भोगने वाला, स्वल्पाहारी एवं अल्पायु होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो वह अष्टकपाली एवं रोगी होता है। यदि शुभग्रह हो तो धनी होता है ॥ २॥ यदि लाभेश तृतीयभाव में हो तो जातक बन्धु तथा स्त्री का पालक, श्रेष्ठ भाइयों वाला, सुन्दर तथा बन्धुओं के शत्रु-कुलों का संहार करने वाला होता है ॥ ३॥ यदि लाभेश चतुर्थभाव में हो तो जातक दीर्घायु, पितृ-भक्त, एक समय में एक ही काम करने वाला, स्वधर्म-निरत तथा लाभ प्राप्त करने वाला होता है ॥ ४॥ यदि लाभेश पंचमभाव में हो तो जातक पिता के तुल्य रूप-गुण वाला, पिता-पुत्र में पारस्परिक-प्रेम वाला तथा अल्पायु होता है ॥ ५॥ यदि लाभेश षष्ठभाव में हो तो जातक दीर्घ-रोगी एवं शत्रु-युक्त होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो परदेश में तस्कर के द्वारा उसकी मृत्यु होती है ॥ ६॥ यदि लाभेश सप्तमभाव में हो तो जातक तेजस्वी, सुशील, सम्पत्तिवान्, उच्चपदाधिकारी, दीर्घायु तथा एक पत्नी वाला होता है ॥ ७॥ यदि लाभेश अष्टमभाव में हो तो जातक अल्पायु एवं रोगी होता है। यदि लाभेश पापग्रह हो तो वह जीवित रहते हुए भी मृतक-तुल्य दुःखी बना रहता है ॥ ८॥ यदि लाभेश नवम भाव में हो तो जातक अनेक विषयों का ज्ञाता, शास्त्र-निपुण, धर्मात्मा एवं देव-गुरु-भक्त होता है। यदि पापग्रह हो तो बन्धु एवं व्रत-नियम-विरोधी होता है ॥ ९॥ यदि लाभेश दशमभाव में हो तो जातक माता का भक्त, पिता का द्वेषी, दीर्घजीवी, धनी तथा माता का पालन करने वाला होता है ॥ १०॥ यदि लाभेश एकादशभाव में हो तो जातक दीर्घायु, अधिक पुत्र-पौत्रवान्, सुकर्मकर्त्ता, सुशील, लोक में प्रधान, सुन्दर तथा विख्यात होता है ॥ ११॥ यदि लाभेश द्वादशभाव में हो तो जातक प्राप्त-सुख को भोगने वाला, स्थिर-चित्त वाला, रोगी, उत्पात-निरत, मानी, दानी तथा सदा सुखी रहने वाला होता है ॥ इति लाभेश द्वादशभावगत फलम् ॥

अथ व्ययेश फलम्॥ व्यये लग्नं प्राप्ते विदेशगः सुवचनः सुरूपश्च। अपसङ्गवद् दोषी भवति कुमारोऽथवा षण्ढः॥१॥ द्वादशपे वित्तगते कृपणः कटुवाग् विनष्टलाभलयः। सौम्ये निधनं गच्छति नृपतस्करवह्नितोऽतिभयम्॥२॥ सहजगते द्वादशपे क्रूरे गतबान्धवः शुभे च धनी। तनुसोदरः सुकृपणो बन्धुषु दूरे सदा भवति॥३॥ तुर्यगते व्ययनाथे कृपणो रोगी सुकर्मा च। मृतिमाप्नोति सुतेभ्यः सततं मनुजो महादुःखी॥४॥ द्वादशपतौ सुतस्थे क्रूरे सुतविवर्जितः शुभे ससुतः। जनककमलाविलासी समर्थताविरहितः पुरुषः॥५॥ षष्ठगते व्ययनाथे क्रूरः कृपणोऽक्षिदूषणः पुरुषः। लभते मृतिं नितान्तं भृगुतनये नेत्रहीनः स्यात्॥६॥ द्वादशपे सप्तमगे दुष्टो दुश्चरितभृत्कटुवचनः। क्रूरे स्वस्त्रीतः स्यात्सौम्ये क्षयमेति गणिकातः॥७॥ व्ययनाथे निधनगतेऽष्टकपाली कार्यसाधने रहितः। द्रोहमतिः सौम्यखगे धनसंग्रहपरो नरो भवति॥८॥ व्ययनाथे सुकृतगे तीर्थालोकाटने वृत्तिः। क्रूरेखगे च पापैर्निरर्थकं यातितद्द्रव्यम्॥९॥ व्ययपे गगनगृहस्थे पररमणी पराङ्मुख पवित्राङ्गः। सुतधनसंग्रहनिरतो दुर्वचनपरा भवति तन्माता॥१०॥ द्वादशपे लाभस्थे द्रविणपतिर्दीर्घजीवितो भवति। स्थानप्रवरो दाता विख्यातः सत्यवचनपरः॥११॥ विभूतिमान् ग्रामनिवासचित्तः कार्पण्यबुद्धिः पशुसङ्ग्रही च। चेज्जीवति ग्रामयुतः सदा स्याद् व्ययाधिनाथे व्ययगेह लीने॥१२॥ इति॥

टीका॥ यदि व्ययेश (द्वादशेश) लग्न में हो तो जातक परदेशवासी, प्रियवक्ता, सुन्दर, नीचों के सङ्ग से दोष पाने वाला एवं आजन्म अविवाहित अथवा नपुंसक होता है॥१॥ यदि व्ययेश द्वितीय भाव में हो तो जातक कृपण और कटुभाषी होता है। यदि व्ययेश शुभग्रह हो तो राजा, चोर अथवा अग्नि-भय से उसकी मृत्यु होती है॥२॥ यदि व्ययेश तृतीयभाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक बन्धु-विहीन होता है। यदि शुभग्रह हो तो धनी, थोड़े भाइयों

वाला एवं कुटुम्बियों से अलग तथा दूर रहने वाला होता है॥ ३॥ यदि व्ययेश चतुर्थभाव में हो तो जातक कृपण, रोगी, सुकर्मकर्त्ता, सदा दुःखी रहने वाला तथा पुत्र के द्वारा मृत्यु पाने वाला होता है॥ ४॥ यदि व्ययेश पंचमभाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक सन्तान-हीन होता है। यदि शुभग्रह हो तो पुत्रवान्, पिता के धन का उपभोग करने वाला एवं सामर्थ्यहीन होता है॥ ५॥ यदि व्ययेश षष्ठभाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक कृपण, नेत्ररोगी अथवा नेत्रहीन अथवा बाल्यावस्था में ही मृत्यु को पाने वाला होता है॥ ६॥ यदि व्ययेश सप्तमभाव में हो तो जातक दुष्ट, दुश्चरित्र तथा वाक्पटु होता है। यदि व्ययेश पापग्रह हो तो जातक अपनी स्त्री के द्वारा और यदि शुभग्रह हो तो वेश्या के द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है॥ ७॥ यदि व्ययेश अष्टमभाव में हो और वह पापग्रह हो तो जातक अष्टकपाली, कार्य-साधन-हीन तथा लोकद्रोही होता है। यदि व्ययेश शुभग्रह हो तो धन-संग्रही होता है॥ ८॥ यदि व्ययेश नवमभाव में हो तो जातक तीर्थाटन करने वाला होता है। यदि व्ययेश पापग्रह हो तो धन को व्यर्थ खर्च करने वाला होता है॥ ९॥ यदि व्ययेश दशमभाव में हो तो जातक पर-स्त्री से विमुख, पवित्रहृदय वाला, पुत्रवान् एवं धन-संग्रही होता है, परन्तु उसकी माता कटुवादिनी होती है॥ १०॥ यदि व्ययेश एकादश भाव में हो तो जातक धनी, चिरजीवी, उत्तम स्थान में रहने वाला, दानी, सुप्रसिद्ध एवं सत्यवादी होता है॥ ११॥ यदि व्ययेश द्वादशभाव में हो तो जातक सम्पत्तिशाली, ग्रामवास से सुखी, कृपण एवं पशुओं का संग्रह करने वाला होता है। यदि वह जीवित रह जाय तो ग्राम का स्वामी होता है॥ १२॥ इति व्ययेश द्वादश भावगत फलम्॥ इति भावेश फलम् समाप्तम्॥

अथ चन्द्र कुण्डली भाव फलम्॥ तत्रादौ द्वादशभाव गत रवि फलम्॥ चन्द्रेण सहितः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। विदेशगामी भोगी च कलहे कृतवासनः॥ १॥ चन्द्राद् द्वितीयगे भानुर्जन्मकाले

यदा भवेत्। बहुभृत्यो यशस्वी च राजपूज्यो भवेन्नरः ॥२॥ चन्द्रात् तृतीयस्थाने ऽर्को जन्मकाले यदा भवेत्। स्व-र्णार्थी च शुचिश्चैव राजतुल्यो भवेन्नरः ॥३॥ चन्द्राच्चतुर्थगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। मातृहन्ता भवेद्वाऽसौ मातृभक्तिविवर्जितः ।४॥ चन्द्रात् पंचमगे सूर्यो यस्य जन्मनि संस्थितः। सुताभिश्चासुखी चैव बहुपुत्रो भवे-न्नरः ॥५॥ चन्द्रात् षष्ठमगे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। शत्रूणां विजयी शूरः क्षात्रकर्मरतः सदा ॥६॥ चन्द्रात् सप्तमगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। सुस्त्रीकः शुभशीलश्च राजमान्यो महातपः ॥७॥ चन्द्रादष्टमगः सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। सर्वदा क्लेशयुक्तोऽसौ बहुरोगैश्च पीडितः ॥८॥ चन्द्रान्नवमभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। धर्मात्मा सत्यवादी च बन्धुक्लेशी सदा भवेत् ॥९॥ चन्द्राद्दशमभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। तस्य द्वारेषु तिष्ठन्ति धनिनो नात्र संशयः ॥१०॥ चन्द्रादेकादशे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। राजगवी-तिवेत्ता च प्रसिद्धः कुलनायकः ॥११॥ चन्द्राद् द्वादशभे सूर्यो जन्मकाले यदा भवेत्। एकनेत्रोऽल्पचक्षु-र्वा तदा जातो भवेन्नरः ॥१२॥ इति ॥

टीका॥ यदि जातक के जन्म काल में चन्द्रमा के साथ सूर्य हो अर्थात् चन्द्र और सूर्य - दोनों एक ही भाव में हों तो जातक परदेशवासी, सुखभोगी, एवं कलह - प्रिय होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में सूर्य हो तो जातक अनेक नौकर रखने वाला, यशस्वी तथा राजमान्य होता है ॥ २॥ यदि चन्द्रमा से तृतीय स्थान में सूर्य हो तो जातक स्वर्ण रखने वाला, अत्यन्त पवित्र हृदय वाला तथा राजा के समान होता है ॥३॥ यदि चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो जातक माता - पिता का विनाशक अथवा उनकी भक्ति - रहित होता है ॥ ४॥ यदि चन्द्रमा से पंचम स्थान में सूर्य हो तो जातक कन्याओं से दुःखी तथा अनेक पुत्रों वाला होता है ॥५॥ यदि चन्द्रमा से षष्ठ स्थान में सूर्य हो तो जातक शत्रुजयी, वीर एवं क्षत्रियोचित कर्म करने वाला होता है ॥ ६॥ यदि चन्द्रमा से सप्तम स्थान में सूर्य हो

तो जातक की पत्नी सुशीला एवं सुन्दरी होती है और वह स्वयं भी शुभशीलवान् तथा राजमान्य होता है॥
७॥ यदि चन्द्रमा से अष्टमस्थान में सूर्य हो तो जातक सदैव क्लेशयुक्त तथा अनेक रोगों से पीड़ित होता
है॥८॥ यदि चन्द्रमा से नवमस्थान में सूर्य हो तो जातक धर्मात्मा, सत्यवादी एवं बन्धुओं को क्लेश देनेवाला
होता है॥९॥ यदि चन्द्रमा से दशमस्थान में सूर्य हो तो जातक के द्वार पर धनी व्यापारी सदैव उप-
-स्थित बने रहते हैं॥१०॥ यदि चन्द्रमा से एकादश स्थान में सूर्य हो तो जातक राज-गौरव को प्राप्त,
अनेक विषयों का ज्ञाता, सुप्रसिद्ध एवं कुलनायक होता है॥११॥ यदि चन्द्रमा से द्वादश स्थान में
सूर्य हो तो जातक काना अथवा क्षीण-दृष्टि वाला होता है॥१२॥ इति द्वादशभावगत रविफलम्॥

अथ चन्द्राद् द्वादश भावगत भौम फलम्॥ चन्द्रेण सहितो भौमो जन्मकाले यदा
भवेत्। रक्ताक्षी रुधिरस्रावी रक्तवर्णो भवेन्नरः॥१॥ चन्द्राद् द्वितीयभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्।
धराधीशो भवेज्जातः कृषिकर्त्ता न संशयः॥२॥ चन्द्रात् तृतीयभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। चतुर्भ्रातृ
समायुक्तः सुशीलः सर्वदा सुखी॥३॥ चन्द्राच्चतुर्थभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। सुखभङ्गो दरिद्रः
स्यात्पुंसः स्त्री म्रियते ध्रुवम्॥४॥ चन्द्रात्पञ्चमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। पुत्रहीनो नरः स्त्री-
-णां लग्ने पतति निश्चितम्॥५॥ चन्द्राच्च षष्ठभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। अधर्मे विमुखो वैरो
रक्तरोगेण पीडितः॥६॥ चन्द्रात्सप्तमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्॥ कुशीला स्त्री भवेत्तस्य सदा
चाऽप्रियवादिनी॥७॥ चन्द्रादष्टमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत् जीवहंता महापापी शील सत्य विवर्जि-
तः॥८॥ चन्द्रान्नवमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। लक्ष्मीवांश्च भवेत्पुत्रैर्वृद्धकाले न संशयः॥९॥ चन्द्रा-
-द्दशमभे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। तस्या द्वारेषु तिष्ठन्ति गजाऽश्वाद्या न संशयः॥१०॥ चन्द्रादेका-
दशे भौमो जन्मकाले यदा भवेत्। राजद्वारे प्रसिद्धः स्याद्यशोरूप समन्वितः॥११॥ चन्द्राद् द्वादशभे

भौमो जन्मकाले यदा भवेत् । मातुश्चाऽसुखकारी च सदा कष्टप्रदायक :॥ १२॥ इति ॥

टीका ॥ यदि चन्द्रमा और मङ्गल दोनों एक साथ हों अर्थात् एक ही भाव में हों तो जातक लाल नेत्रों वाला, रक्तवर्ण तथा रक्तस्राव (अर्श) रोग से ग्रस्त होता है ॥ १ ॥ यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में मङ्गल हो तो जातक का पुत्र भू-स्वामी एवं कृषि-कर्म करने वाला होता है ॥ २ ॥ यदि चन्द्रमा से तृतीय स्थान में मङ्गल हो तो जातक के चार भाई होते हैं और वह सुशील तथा सुखी जीवन बिताने वाला होता है ॥ ३ ॥ यदि चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में मङ्गल हो तो जातक सुखहीन तथा दरिद्र होता है एवं उसकी पत्नी की मृत्यु उसके सामने ही हो जाती है ॥ ४ ॥ यदि चन्द्रमा से पंचम स्थान में मङ्गल हो तो जातक पुत्र-हीन होता है, यदि स्त्री के लग्न से ऐसा योग हो तो जातक अवश्य ही सन्तानहीन होता है ॥ ५ ॥ यदि चन्द्रमा से षष्ठस्थान में मङ्गल हो तो जातक अधर्म से विमुख एवं रक्त-रोग से पीड़ित होता है ॥ ६ ॥ यदि चन्द्रमा से सप्तम स्थान में मङ्गल हो तो जातक की पत्नी कुशीला एवं अप्रियवादिनी होती है ॥ ७ ॥ यदि चन्द्रमा से अष्टम स्थान में मङ्गल हो तो जातक जीवघाती, महापापी एवं शील तथा सत्य से रहित होता है ॥ ८ ॥ यदि चन्द्रमा से नवमस्थान में मङ्गल हो तो जातक सम्पत्तिशाली होता है तथा वृद्धावस्था में उसे अपने पुत्रों के द्वारा सुख प्राप्त होता है ॥ ९ ॥ यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में मङ्गल हो तो जातक के दरवाज़े पर हाथी-घोड़े आदि वाहन खड़े रहते हैं, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १० ॥ यदि चन्द्रमा से एकादश स्थान में मङ्गल हो तो जातक राजदरबार में प्रसिद्ध तथा यशस्वी एवं स्वरूपवान् होता है ॥ ११ ॥ यदि चन्द्रमा से द्वादश स्थान में मंगल हो तो जातक माता को असुख देने वाला एवं सब को कष्टदायक होता है ॥ १२ ॥ इति चन्द्रात् द्वादश भावगत भौम फलम् ॥

अथ चन्द्राद् द्वादशभावगत बुध फलम् ॥ चन्द्रेण सहितः सौम्यः सुखरूपसम-

न्वित:। मृषाभाषी परद्वेषी भवेद् बन्धुजनप्रिय: ॥१॥ चन्द्रात् द्वितीयभे सौम्ये धनधान्य समाकुल:। गृह
बन्धुजनप्राप्ति: शीतरोगैर्विनिश्यति ॥२॥ चन्द्रात् सहजभे सौम्य: कुरुते चाऽर्थसम्पद:। राज्यलाभो भवेत्तस्य
महतां सङ्गमो ध्रुवम् ॥३॥ चन्द्राच्चतुर्थभे सौम्य: सर्वदा सुखकारक:। मातृपक्षे महालाभ: सुखं जीवति
मानव: ॥४॥ चन्द्रात्पञ्चमभे सौम्ये बुद्धिमांश्च विचक्षण:। रूपवांश्च महाकामी कुवाक्यं धारयेन्नर: ॥
५॥ चन्द्रात्षष्ठगते सौम्ये कृपण: कातरो भवेत्। विवादे च महाभीरु: रोमशो दीर्घलोचन: ॥६॥ चन्द्रात्स-
प्तमभे सौम्ये स्त्रीणां च वशगो नर:। धनाढ्य: कृपणश्चैव दीर्घायुश्च सदा भवेत् ॥७॥ चन्द्रादष्टमभे
सौम्ये देहे शीतभयं भवेत्। राजमध्ये प्रसिद्धश्च शत्रूणां च भयङ्कर: ॥८॥ चन्द्रात् धर्मगत: सौम्य: स्वध-
र्मस्य विरोधक:। अन्यधर्मरतो नृणां विरोधी दारुणो भवेत् ॥९॥ चन्द्राद्दशमगे सौम्ये राजयोगी नर:
सदा। कर्कराशौ यदा चन्द्र: कुटुम्बे नायको भवेत् ॥१०॥ चन्द्राल्लाभगते सौम्ये लाभकारी पदे पदे।
पत्नीपाणिग्रहादूर्ध्वं तस्य भाग्योदयो भवेत् ॥११॥ चन्द्राद् द्वादशगे सौम्ये मानव: कृपणो भवेत्। तत्सुत-
स्य जयो नास्ति लभते च पराजयम् ॥१२॥ इति॥

टीका॥ यदि चन्द्रमा और बुध एकसाथ हों अर्थात् जन्मकुण्डली के एक ही
भाव में हों तो जातक सुखी, रूपवान्, मिथ्यावादी, परद्वेषी तथा अपने कुटुम्बियों का प्रिय होता है॥
१॥ यदि चन्द्रमा से बुध द्वितीयस्थान में हो तो जातक धन-धान्यादि से युक्त एवं गृह तथा बन्धु-
-जनों का लाभ पाने वाला होता है और उसकी मृत्यु शीत-रोग से होती है॥२॥ यदि चन्द्रमा से तृतीय
स्थान में बुध हो तो जातक धन-सम्पत्ति एवं राज्य का लाभ पाने वाला तथा महापुरुषों की सं-
-गति करने वाला होता है॥३॥ यदि चन्द्रमा से चतुर्थस्थान में बुध हो तो जातक सदैव सुखी रहता
है। उसे मातृ-पक्ष से विशेष लाभ होता है और वह आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करता है॥४॥

यदि चन्द्रमा से पंचम स्थान में बुध हो तो जातक विलक्षण बुद्धिमान्, रूपवान्, महाकामी तथा कुवाक्य बोलने वाला होता है॥ ५॥ यदि चन्द्रमा से षष्ठस्थान में बुध हो तो जातक कृपण, कातर, विवाद से डरने वाला, अधिक रोम वाला तथा बड़े नेत्रों वाला होता है॥ ६॥ यदि चन्द्रमा से सप्तम स्थान में बुध हो तो जातक स्त्री के वश में रहने वाला, धनी, कृपण तथा दीर्घायु होता है॥ ७॥ यदि चन्द्रमा से अष्टमस्थान में बुध हो तो जातक को शीत से भय होता है और वह राजाओं में विख्यात तथा शत्रुओं के लिए भयंकर होता है॥ ८॥ यदि चन्द्रमा से नवमस्थान में बुध हो तो जातक अपने धर्म का विरोधी, परधर्म को मानने वाला, लोक-विरोधी तथा दारुण स्वभाव का होता है॥ ९॥ यदि चन्द्रमा से दशमस्थान में बुध हो तो जातक राजयोगी होता है। यदि चन्द्रमा कर्क राशि में हो तो अपने कुल में श्रेष्ठ होता है॥ १०॥ यदि चन्द्रमा से एकादश भाव में बुध हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में लाभ होता है और उसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है॥ यदि चन्द्रमा से बुध द्वादश स्थान में हो तो जातक कृपण होता है तथा उसके पुत्रों को कभी विजय नहीं मिलती, वे सदैव पराजय ही प्राप्त करते हैं॥ १२॥ इति चन्द्रात् द्वादश भावगत बुध फलम्॥

अथ चन्द्रात् द्वादशभावगत गुरु फलम्॥ चन्द्रेण सहिते जीवे दीर्घजीवी भवेन्नरः। व्याधिना रहितः शूरो निर्धनो न कदाचन॥ १॥ चन्द्राद् द्वितीयगे जीवे राजमान्यः शतायुषः। अनुग्रश्च प्रतापी च धर्मिष्ठः पापवर्जितः॥ २॥ चन्द्रात्तृतीयगे जीवे नराणां बल्लभो भवेत्। धनवृद्धिः पितुर्गेहे वर्षे सप्तदशे तथा॥ ३॥ चन्द्राच्चतुर्थगे जीवे नरः सुखविवर्जितः। मातृपक्षे महाकष्टो परेषां गृहकर्मकृत्॥ ४॥ चन्द्रात्पञ्चमगे जीवे दिव्यदृष्टिर्भवेन्नरः। तेजस्वी पुत्रवांश्चैव महोग्रश्च महाधनी॥ ५॥ चन्द्राच्च षष्ठगे जीवे उदासी गृहवर्जितः। आयुर्बहु भवेत्पुंसां भिक्षावृत्या व्यवस्थितः॥ ६॥

चन्द्रात्सप्तमगे जीवे बहुजीवी व्ययं विना। स्थूलदेही क्लीवपाण्डुर्गृहमध्ये च नायकः ॥७॥ चन्द्रादष्टमगे जीवे देहरोगी सदा नरः। सुतातोऽपि महाक्लेशी सुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥८॥ चन्द्रान्नवमगे जीवे धर्मिष्ठो धनपूरितः। सुमार्गे सुगतश्चैव देवगुर्वोश्च सेवकः ॥९॥ चन्द्राद्दशमगे जीवे जन्मकाले यदा भवेत्। पुत्रदारपरित्यागी तपस्वी च भवेन्नरः ॥१०॥ चन्द्रादेकादशे जीवे जन्मकाले यदा भवेत्। वा-हनादिसुखेनाढ्यो राजतुल्यो भवेन्नरः ॥११॥ चन्द्राद् द्वादशगे जीवे जन्मकाले यदा भवेत्। स्वकुटुम्ब विरोधी च सुखं शत्रोर्द्धिर्भेद् गृहे ॥१२॥ इति॥

टीका॥ यदि चन्द्रमा और गुरु एक साथ हों अर्थात् जन्मकुण्डली के एकही भावमें हों तो जातक दीर्घजीवी, रोग-रहित, वीर तथा सदैव धन से पूर्ण होता है॥१॥ यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में गुरु हो तो जातक राजमान्य, शतायु, अत्यन्तउग्र, प्रतापी, धर्मात्मा तथा पाप-रहित होता है॥२॥ यदि चन्द्रमा से तृतीयस्थान में गुरु हो तो जातक जन-प्रिय, होताहै तथा उसकी सत्रह वर्ष की आयुमें पिता के घर में धन की वृद्धि होती है॥३॥ यदि चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में गुरु हो तो जातक सुख-हीन, मातृपक्ष के लिए महाकष्टकारक तथा पराये लोगों के घर का काम करने वाला होता है॥४॥ यदि चन्द्रमा से पञ्चम स्थान में गुरु हो तो जातक दिव्य-दृष्टि-सम्पन्न, तेजस्वी, पुत्रवान्, उग्र स्वभाव वाला तथा महाधनी होता है॥५॥ यदि चन्द्रमा से षष्ठ स्थान में गुरु हो तो जातक उदासीन, गृह-हीन, दीर्घायुतथा भिक्षावृत्ति आदि के द्वारा जीवन-यापन करने वाला होता है॥६॥ यदि चन्द्रमा से सप्तमस्थान में गुरु हो तो जातक दीर्घजीवी मितव्ययी, स्थूल-शरीर वाला, नपुंसक, पाण्डुरोगी तथाअपने घर का मुखिया होता है॥७॥ यदि चन्द्रमा से अष्टमस्थान में गुरु हो तो जातक शरीर से रोगी बना रहता है। वह श्रेष्ठपिता के होते हुए भी महाक्लेशी होता है तथा स्वप्न में भी सुख के दर्शन नहीं कर पाता॥८॥ यदि चन्द्रमा से

नवम स्थान में गुरु हो तो जातक धर्मात्मा, धनी, सुमार्गगामी एवं देव-गुरुजनों का सेवक होता है ॥ ९ ॥ यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में गुरु हो तो जातक स्त्री-पुत्र को त्यागकर तपस्वी हो जाता है ॥ १० ॥ यदि चन्द्रमा से एकादश स्थान में गुरु हो तो जातक वाहनादि के सुख से सम्पन्न एवं राजतुल्य ऐश्वर्यवान् होता है ॥ ११ ॥ यदि चन्द्रमा से द्वादश स्थान में गुरु हो तो जातक स्वकुटुम्ब-विरोधी तथा शत्रुओं को सुख देने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति चन्द्रात् द्वादशभावगत गुरु फलम् ॥

अथ चन्द्रात् द्वादश भावगत शुक्र फलम् ॥ चन्द्रेण सहितः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । जले मृत्युर्भवेत्तस्य सन्निपातो हि हिंसया ॥ १ ॥ चन्द्राद् द्वितीयभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । महाधनी महाज्ञानी राजतुल्यो न संशयः ॥ २ ॥ चन्द्रात्सहजभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । धर्मिष्ठो बुद्धिमांश्चैव म्लेच्छतो लाभदायकः ॥ ३ ॥ चन्द्राच्चतुर्थगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । कफाधिको महाकामो वार्द्धक्ये धनपूरितः ॥ ४ ॥ चन्द्रात्पञ्चमगः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । बहुकन्याप्रजावान् स धनाढ्योऽप्ययशोऽन्वितः ॥ ५ ॥ चन्द्रात् षष्ठगृहे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । दुर्मेधी भयकारी च सङ्ग्रामे च पराजितः ॥ ६ ॥ चन्द्रात् सप्तमभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । प्रसिद्धो हि महायोद्धा दाता भोक्ता महाधनी ॥ ७ ॥ चन्द्रादष्टमभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । पुरुषार्थविहीनोऽसौ शङ्कितश्च पदे-पदे ॥ ८ ॥ चन्द्राद्धर्मगतः शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । बहुभ्राता तथा मित्र भगिनी बहुलो भवेत् ॥ ९ ॥ चन्द्राद्दशमभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । मातापित्रोः सुखं प्राप्ति जीवितं तु बृहद् भवेत् ॥ १० ॥ चन्द्रादेकादशे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । बह्वायुश्च भवेत् तस्य रिपुरोग विवर्जितः ॥ ११ ॥ चन्द्राद् द्वादशभे शुक्रो जन्मकाले यदा भवेत् । परदाररतो नित्यं लम्पटः ज्ञानहीनकः ॥ १२ ॥ इति ॥

टीका ॥ यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र हो अर्थात् चन्द्रमा और शुक्र — दोनों एक ही भाव में हों तो जातक की मृत्यु जल, सन्निपात अथवा हिंसा से होती है ॥ १॥ यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में शुक्र हो तो जातक महाधनी, परमज्ञानी एवं राजतुल्य ऐश्वर्यशाली होता है ॥२॥ यदि चन्द्रमा से तृतीय स्थान में शुक्र हो तो जातक धर्मात्मा, बुद्धिमान एवं म्लेच्छ जातियों से धन-लाभ करने वाला होता है ॥ ३॥ यदि चन्द्रमा से शुक्र चतुर्थ स्थान में हो तो जातक कफ-प्रकृति एवं दुर्बल शरीर वाला तथा वृद्धावस्था में धन से पूर्ण होता है ॥ ४॥ यदि चन्द्रमा से शुक्र पंचमस्थान में हो तो जातक अनेक कन्याओं वाला तथा धनवान् होते हुए भी अपयश पाने वाला होता है ॥ ५॥ यदि चन्द्रमा से षष्ठ स्थान में शुक्र हो तो जातक निन्दित कामों में धन खर्च करने वाला, भयकारी तथा युद्ध में पराजित होता है ॥ ६॥ यदि चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुक्र हो तो जातक लोक-प्रसिद्ध, महायोद्धा, दानी, भोगी तथा महाधनी होता है ॥७॥ यदि चन्द्रमा से अष्टम स्थान में शुक्र हो तो जातक पुरुषार्थ-हीन एवं पग-पग पर शङ्का करने वाला होता है ॥ ८॥ यदि चन्द्रमा से नवम स्थान में शुक्र हो तो जातक अनेक भाई, बहिन तथा मित्रों वाला होता है ॥ ९॥ यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में शुक्र हो तो जातक को माता-पिता से सुख प्राप्त होता है और वह दीर्घायु होता है ॥ १०॥ यदि चन्द्रमा से एकादश स्थान में शुक्र हो तो जातक दीर्घायु एवं शत्रु तथा रोग-रहित होता है ॥ ११॥ यदि चन्द्रमा से द्वादश स्थान में शुक्र हो तो जातक पर-स्त्री-गामी, लम्पट तथा ज्ञान-हीन होता है ॥ १२॥ इति चन्द्रात् द्वादशभावगत शुक्रफलम् ॥

अथ चन्द्रात् द्वादशभावगत शनि फलम् ॥ चन्द्रेण सहितो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । रोगयुक्तोऽर्थहीनश्च बन्धुहीनोऽथवा भवेत् ॥१॥ चन्द्राद् द्वितीयभे मन्दो जन्मकाले

यदा भवेत् । मातुश्च कष्टकारी च अजाक्षीरेण जीवति ॥२॥ चन्द्रात्सहजगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । बहुकन्याभवेत्तस्य उत्पद्य म्रियते ध्रुवम् ॥३॥ चन्द्राच्चतुर्थगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । महापौरुषकारी च शत्रुहन्ता न संशयः ॥४॥ चन्द्रात्पञ्चमगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । नारी श्यामलवर्णाऽस्य तथा च प्रियवादिनी ॥५॥ चन्द्रात् षष्ठगृहे मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । महाक्लेशी च कष्टी च आयुर्हीनो भवेन्नरः ॥६॥ चन्द्रात् सप्तमराशिस्थो यदा स्याद् रविनन्दनः । महाधर्मी च दाता च बहुस्त्रीणां करग्रहः ॥७॥ चन्द्रादष्टमगो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । पितुश्च कष्टकारी च बहुदाने शुभं भवेत् ॥८॥ चन्द्रान्नवमो मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । तदा तस्य दशाकाले धर्महानिः प्रजायते ॥९॥ चन्द्राद्दशमगो मन्दो जन्मकाले भवेद्यदि । नृपतुल्यो भवेद्देही कृपणो धनपूरितः ॥१०॥ चन्द्रादेकादशे मन्दो जन्मकाले भवेद्यदि । तदा पशुधनैर्युक्तो दीर्घायुश्च सुखी नरः ॥११॥ चन्द्राद् द्वादशगे मन्दो जन्मकाले यदा भवेत् । निर्धनो भिक्षुकश्चैव धर्मेणाऽपि विवर्जितः ॥१२॥ इति ॥

टीका॥ यदि चन्द्रमा और शनि-दोनों एक साथ हों अर्थात् एक ही भाव में स्थित हों तो जातक रोगी, धनहीन तथा बन्धु-हीन होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में शनि हो तो जातक की माता को कष्ट होता है और वह बकरी का दूध पीकर जीवित रहता है अर्थात् शैशवावस्था में उसे माँ का दूध पीने को नहीं मिलता ॥२॥ यदि चन्द्रमा से तृतीय स्थान में शनि हो तो जातक की अनेक कन्याएं होती हैं और वे मर भी जाती हैं ॥३॥ यदि चन्द्रमा से चतुर्थ स्थान में शनि हो तो जातक बड़ा पौरुषवान् एवं शत्रुहन्ता होता है ॥४॥ यदि चन्द्रमा से पंचम स्थान में शनि हो तो जातक की स्त्री श्यामवर्णा तथा प्रियवादिनी होती है ॥५॥ यदि चन्द्रमा से षष्ठ स्थान में शनि हो तो जातक महाक्लेशी, कष्टी तथा, अल्पायु होता है ॥६॥ यदि चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शनि हो तो जातक महान् धर्मात्मा,

दानी तथा अनेक स्त्रियों के साथ पाणिग्रहण करने वाला होता है ॥ ७॥ यदि चन्द्रमा से अष्टम स्थान में शनि हो तो जातक पिता को कष्ट देने वाला होता है, परन्तु बहुत दान करने पर उसका कल्याण होता है ॥८॥ यदि चन्द्रमा से नवम स्थान में शनि हो तो जातक के जीवन में जब कभी शनि की दशा- अन्तर्दशा आती है, उस समय उसके धर्म की हानि होती है ॥ ९॥ यदि चन्द्रमा से दशम स्थान में शनि हो तो जातक राजा के समान धनी होते हुए भी कृपण होता है॥ १०॥ यदि चन्द्रमा से एकादश स्थान में शनि हो तो जातक पशु- धन से युक्त, दीर्घायु तथा सुखी होता है ॥११॥ यदि चन्द्रमा से द्वादश स्थान में शनि हो तो जातक धनहीन, भिक्षा माँग कर खाने वाला तथा पापी होता है ॥१२॥ इति चन्द्रात् द्वादशभावगत शनि फलम् ॥

अथ चन्द्रात् द्वादश भावगत राहु फलम् ॥ प्रथमे दशमे धर्मे चन्द्राद्यदि भवेत्तमः। बाल्यकाले सुखी स स्याद् वृद्धकाले महाधनी ॥ १॥ तृतीयैकादशे षष्ठे राहुश्चन्द्राद् भवेद् यदि। स राजा राजमन्त्री वा धनधान्य समाकुलः ॥२॥ चतुर्थे सप्तमे राहुश्चन्द्रतो यदि जायते। माता पिता तथा भार्यास्य कष्टेन संयुताः॥३॥ धने व्यये ऽष्टमे स्थाने चन्द्राद्राहुः यदा भवेत्। धन मानव संयुक्तः सुखं स्वप्ने न दृश्यते ॥४॥ पञ्चमे च यदा राहुश्चन्द्राज्जलज सम्भवम्। निधनं चापि संसिद्धमापदश्च पदे पदे॥ ५॥ इति॥

टीका॥ यदि चन्द्रमा के साथ अथवा दशम अथवा नवम स्थान में राहु हो तो जातक बाल्यावस्था में सुखी तथा वृद्धावस्था में महाधनी होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें स्थान में राहु हो तो जातक राजा या राजमन्त्री तथा धन- धान्य से पूर्ण होता है ॥२॥ यदि चन्द्रमा से चौथे अथवा सातवें स्थान में राहु हो तो जातक की माता, पिता एवं पत्नी को कष्ट होता है ॥ ३॥ यदि चन्द्रमा से दूसरे, आठवें अथवा बारहवें भाव में राहु हो तो जातक धन-

जन से युक्त होने पर भी कभी सुखी नहीं रह पाता ॥ ४॥ यदि चन्द्रमा से पाँचवें स्थान में राहु हो तो जातक की जल से मृत्यु होने की संभावना रहती है तथा पग-पग पर आपत्तियाँ आती रहती हैं ॥ ५॥

इति चन्द्रात् द्वादशभावगत राहु फलम् ॥ इति चन्द्र कुण्डली भाव फल समाप्तम् ॥

[टिप्पणी - केतु का फल राहु की भाँति ही होता है, यह जैमिनि आदि का मत है]

अथ चन्द्र निर्याणम् ॥ शृणुत्वं चन्द्रनिर्याणं प्राचीन मुनि संमतम् । यवनै रुदितं यत्र सविस्तर मथोच्यते ॥ टीका॥ अब प्राचीन मुनियों द्वारा सम्मत चन्द्र निर्याण के विषय में सुनो। यवनाचार्य के मत को मैं विस्तार पूर्वक कहता हूँ॥

अथ मेषराशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम् ॥ धनवान्पुत्रवानुग्रः परोपकरणे रतः । सर्वकर्म समायुक्तः सुशीलो राजवल्लभः ॥ १॥ गुणाभिरामः सततं देवब्राह्मण पूजकः । कोष्णशाकाल्पभोक्ता च ताम्रविस्तृतलोचनः ॥२॥ शूरः शीघ्र प्रमादी च कामी दुर्बलजानुकः । शिरोव्रणयुतो दाता कुनखी सेवकप्रियः ॥ ३॥ द्विमार्गे सङ्कटे भीरुश्चपलो नितरां भवेत् । प्रथमे सप्तमे वर्षे त्रयोदशमिते ज्वरः ॥ ४॥ षोडशे वा सप्तदशे वर्षे स्यात्तु विशूचिका । तृतीये द्वादशे वापि जलाद्भीतिः प्रजायते ॥ ५॥ पञ्चविंशन्मिते वर्षे सन्तानं च निशान्धता । द्वात्रिंशत्प्रमिते वर्षे शस्त्रघातः प्रजायते ॥ ६॥ कार्यारम्भ प्रलापी च विदेशगमने रतः। कृशांगः शीघ्रगो मानी शुभलक्षण संयुतः ॥ ७॥ वाताधिक्यः शुभैर्दृष्टे चन्द्रे नवतिसंमिते । आयुस्तस्य विनिर्दिष्टं कार्तिकस्य सितेतरे ॥ ८॥ पक्षे बुधे नवम्यां च निशीथे च शिरोरुजा । निधनं जायते नूनं जन्मनीन्दावजस्थिते ॥ ९॥

टीका॥ यदि चन्द्रमा मेष राशि में हो तो जातक धनवान्, पुत्रवान्, उग्र-स्वभावी, परोपकारी, सब कार्यों में कुशल, सुशील, राजा का प्रिय, गुणी, देव-ब्राह्मण-भक्त, किंचित् उष्णतथा

स्वल्पशाकादि का आहार करने वाला एवं ताम्रवर्ण के बड़े-बड़े नेत्रों वाला होता है ॥६॥२॥ वह शूर, शीघ्र प्रमादी, कामी, दुर्बल घुटनों वाला, सिर पर व्रण युक्त, दानी, खराब नखों वाला, नौकर पर स्नेह रखने वाला ॥३॥ दो स्त्रियों वाला, युद्ध से डरने वाला एवं चपल स्वभाव का होता है। उसे जन्म से पहले, सातवें तथा तेरहवें वर्ष में ज्वर होना संभव है ॥४॥ सोलहवें अथवा सत्रहवें वर्ष में विशूचिका तथा तीसरे एवं बारहवें वर्ष में जल से भय होता है ॥५॥ पच्चीसवें वर्ष में सन्तान की प्राप्ति तथा रतौंधी की बीमारी होती है एवं बत्तीसवें वर्ष में शस्त्राघात का भय होता है ॥६॥ ऐसा जातक अपने किए हुए कार्यों की प्रशंसा करने वाला, विदेश-यात्राएं करने वाला, कृपालु, शीघ्र-चलने वाला, मानी तथा शुभलक्षणों से युक्त होता है ॥७॥ उसमें वायु की अधिकता होती है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो उसकी आयु ६० वर्ष की होती है। कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की नवमी तिथि को, बुध वार को, मध्यरात्रि में मस्तक-रोग के कारण उसकी मृत्यु होना संभव है ॥८॥९॥ इति॥

अथ वृषराशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम् ॥ अल्पतेजा नरः स्तब्धः कर्मबुद्धिविवर्जितः। सत्यवागर्थवान्कामी कामिनी वचनानुगः ॥१॥ चिरायुरल्पकेशश्च परोपकरणे रतः। पितुर्मातुर्गुरूणां च भक्तो भूपतिवल्लभः ॥२॥ सभायां चतुरो नित्यं संतुष्टो येन केनचित्। पीडास्यात्प्रथमे वर्षे तृतीयेऽग्नि भयं दिशेत् ॥३॥ विशूचिकाभयं विद्यात्सप्तमे नवमे व्यथा। दशमे रुधिरोद्गारो द्वादशे पतनं तरोः ॥४॥ सर्पाच्च षोडशे भीतिः पीडा चैकोनविंशके। पञ्चविंशन्मिते तोयाद्भयं भवति निश्चितम् ॥५॥ त्रिंशन्मिते तथा पीडा द्वात्रिंशत्प्रमितेऽपि च। श्लेष्मलः शान्तिभाक्शूरः सहिष्णुर्बुद्धिमान्नरः ॥६॥ सौम्यग्रहेक्षिते चन्द्रे षण्णवत्यब्दसंख्यया। आयुर्जन्तोर्विनिर्देश्यमवश्यं वचनात्सताम् ॥७॥ माघमासे नवम्यां च शुक्लेपक्षे भृगोर्दिने। रोहिण्यां निधनं विद्याज्जन्मनीन्दौ वृषस्थिते ॥८॥

टीका॥ यदि वृषराशि में चन्द्रमा हो तो जातक अल्पतेजस्वी, स्तब्ध, कर्म-शुद्धि-रहित, सत्यवादी, धनी, कामी, स्त्री के वश में रहने वाला, दीर्घायु, अल्पकेशी, परोपकार-निरत, पिता-माता और गुरु का भक्त, राजा का प्रिय, सभा-चतुर एवं थोड़े में ही सन्तोष करने वाला होता है। उसे जन्म से पहले वर्ष में कष्ट, तीसरे वर्ष में अग्नि-भय, सातवें वर्ष में विशूचिका, नवें वर्ष में व्यथा, दसवें वर्ष में रक्त-वमन, बारहवें वर्ष में ऊँचाई से गिरने का भय, सोलहवें वर्ष में सर्प-भय, उन्नीसवें वर्ष में पीड़ा, पच्चीसवें वर्ष में जल से भय एवं तीसवें तथा बत्तीसवें वर्ष में पीड़ा होती है। वह कफ-प्रकृति का, शान्त, शूर, सहिष्णु तथा बुद्धिमान् होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो उसे छियानवे वर्ष की आयु प्राप्त होती है। माघमास के शुक्ल पक्ष में, नवमी तिथि, शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव है ॥१-८॥ इति॥

अथ मिथुन राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ ग्रामण्यां चतुरः प्राज्ञो दृढसौहृदकारकः। मिष्ठान्नाशी सुशीलश्च छिन्नवाक्चललोचनः॥१॥ कुटुम्बवत्सलः कामी कुतूहल रति प्रियः। वयसः पूर्व भागे तु सुखी मध्ये तु मध्यमः॥२॥ चरमेऽतितरां दुःखी द्विभार्यो गुरुवत्सलः। स्वल्पापत्यो गुणैर्युक्तो नरो भवति निश्चितम्॥३॥ वृक्षाद्भीः पञ्चमे वर्षे षोडशेऽरिकृतं भयम्। अष्टादश प्रमाणे तु कर्णरुक्परिपीडनम्॥४॥ त्रिंशत्या प्रमिते वर्षे पीडात्यन्तं प्रजायते। अष्टत्रिंशन्मिते नूनं पीडा स्यान्मृतुना समा॥५॥ भोगी दानरतो नित्यं सत्यधर्म परायणः। सुभगो विषयासक्तो गीतनृत्य प्रियः सुधीः॥६॥ शास्त्रज्ञः शुभवाग्जीवेदशीतिः शरदां नरः। वैशाखे शुक्लपक्षे च द्वादश्यां बुधवासरे॥७॥ मध्याह्ने हस्तनक्षत्रे निर्याणं खलु निर्दिशेत्। इत्युक्तं मिथुनस्थे तु जन्मकाले कलानिधौ॥८॥

टीका॥ यदि मिथुन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक गाँव के सब लोगों में चतुर,

विद्वान्, दृढ़ मैत्री वाला, मिष्ठान्न-प्रिय, सुशील, अल्पभाषी, चंचल नेत्रों वाला, कुटुम्ब-पालक, कामी, कुतूहल-रति-प्रिय, बाल्यावस्था में सुखी तथा युवावस्था में मध्यम-सुख पाने वाला होता है एवं अन्तिम अवस्था में दुःख प्राप्त करता है। वह दो स्त्रियों वाला, थोड़ी सन्तानों वाला, गुरुजनों का भक्त तथा गुणी होता है। उसे पाँचवें वर्ष में वृक्ष से भय, सोलहवें वर्ष में शत्रु से भय, अठारहवें वर्ष में कर्ण-रोग की पीड़ा, बीसवें वर्ष में अधिक कष्ट एवं अड़तीसवें वर्ष में मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है। वह भोगी, दानी, सदैव सत्य-धर्म-परायण, सुन्दर, विषयासक्त, गीत-नृत्य प्रेमी सुबुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ एवं प्रियवादी होता है। वह अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करता है। वैशाख शुक्ला द्वादशी बुधवार को मध्याह्न में, हस्त नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना सम्भव है॥ १-८॥ इति॥

अथ कर्क राशिस्थ-चन्द्र निर्याण फलम्॥ परोपकृतिकर्ता च सर्वसंग्रह तत्परः। पुत्रवान्-गुणवान्साधुर्भक्तः पित्रोः स्त्रिया जितः॥१॥ अल्पायुः प्रथमे भागे निःस्वो मध्ये सुखी भवेत्। तृतीये धर्म संसक्तः स्तीर्थयात्रापरायणः॥२॥ रेखातस्य भवेन्नूनं ललाटे मध्यगामिनी। वामाङ्केऽग्निभयं विद्याच्चर्दोषरु-क्परिपीडितः॥३॥ बान्धवैर्बहुभिर्युक्तो बहुभार्यः प्रजायते। भगृहस्थितिवेत्ता च बहुमित्रः प्रियंवदः॥४॥ रोगी स्यात् प्रथमे वर्षे तृतीये लिङ्गपीडनम्। एकत्रिंशन्मिते वर्षे सर्पतो भयमादिशेत्॥५॥ द्वात्रिंशत्प्रमि-ते वर्षे बहुपीडोद्भवो भवेत्। पंचाशीतिमितं ब्रूयादायः षण्णवतिश्च वा॥६॥ माघे मासे सिते पक्षे नवम्यां भृगुवासरे। रोहिणी नाम नक्षत्रे व्रजेदायुः प्रपूर्णताम्॥७॥ प्रसूतौ कर्कराशिस्थे कुमुदानन्दने सति। पुराणै मुनिभिः प्रोक्तं निर्याणमिति निश्चितम्॥८॥

टीका॥ यदि कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक परोपकारी, सब वस्तुओं का संग्रह करने वाला, पुत्रवान्, **गुणवान्**, सज्जन, पितृ-भक्त, मातृ-भक्त, स्त्री के वशीभूत, अल्पायु, जीवन के

प्रथम भाग (बाल्यावस्था) में निर्धन, मध्य आयु में सुखी तथा वृद्धावस्था में धर्म-तत्पर होकर तीर्थ-यात्रा करने वाला होता है। उसके ललाट के मध्यभाग में एक छोटी सी रेखा होती है। उसे वामाङ्ग में अग्नि का भय होता है, वह मस्तक-रोग से पीड़ित रहता है। वह अनेक बन्धु-बान्धवों से युक्त, अनेक स्त्रियों वाला, ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, अनेक मित्रों वाला तथा प्रियभाषी होता है। उसे जन्म के पहले वर्ष में रोग-भय, तीसरे वर्ष में लिङ्ग-पीड़ा, इकत्तीसवें वर्ष में सर्प-भय तथा बत्तीसवें वर्ष में अनेक प्रकार की पीड़ाऐं होती हैं। उसकी आयु पिचासी अथवा छियानवे वर्ष की होती है। माघमास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि, शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना सम्भव है—ऐसा पौराणिक मुनियों का कथन है॥ १—८॥ इति॥

अथ सिंह राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ धन धान्य समायुक्तः श्रीमांश्च समरप्रियः। विद्वान्सर्व कलाभिज्ञो विदेश गमने रतः॥१॥ विशालः पिङ्गलाक्षश्च क्रोधी स्वल्पात्मजो नरः। सर्वगः शत्रु हंता च शिरोरुङ् निष्ठुरो महान्॥२॥ भूताद्बाधादिमे वर्षे पञ्चमे ऽब्दे ऽग्नितो भयम्। सप्तमे ज्वरबाधा च नृणां भवति निश्चितम्॥३॥ विशूचिकोद्भवा पीडा नृणां भवति निश्चितम्। विंशन्मिते भयं सर्पादेकविं-शे प्रपीडनम्॥४॥ अष्टाविंशन्मिते वर्षे चापवादभयान्वितः। द्वात्रिंशत्प्रमिते नूनं वत्सरे परिपीडनम्॥५॥ उदरे सव्य भागे तु वातगुल्मादि संभवः। सुशीलः कृपणोऽत्यंतं सत्यवादी विचक्षणः॥६॥ शुभग्रहेक्षिते चन्द्रे शतायुर्जायते नरः। फाल्गुनस्यासिते पक्षे पञ्चम्यां भौमवासरे॥७॥ मध्याह्ने जलमध्ये च मृत्युर्नूनं न संशयः। सिंह राशिस्थिते चन्द्रे निर्याणमिदमीरितम्॥८॥

टीका॥ यदि सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक धन-धान्य से युक्त, श्रीमान्, युद्ध-प्रिय, विद्वान्, समस्त कलाओं को जानने वाला, विदेश-यात्रा का प्रेमी, विशाल-शरीर एवं पिङ्गलवर्ण

नेत्रों वाला, क्रोधी, अल्प पुत्रवान्, सब जगह जाने वाला, शत्रुनाशक, शिरोरोगी एवं महानिष्ठुर होता है। उसे जन्म से पहले वर्ष में भूत-बाधा, पाँचवें वर्ष में अग्नि-भय, सातवें वर्ष में ज्वर और विशूचिका, बीसवें वर्ष में सर्प-दंश तथा इक्कीसवें वर्ष में पीड़ा का कष्ट होता है। अट्ठाईसवें वर्ष में लोकापवाद, बत्तीसवें वर्ष में उदर के वाम भाग में वातगुल्मादि रोग की पीड़ा संभव है। ऐसा जातक सुशील, कृपण, सत्यवादी तथा विचक्षण-बुद्धि वाला होता है। यदि सिंह राशिस्थ चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जातक सौ वर्ष की आयु प्राप्त करता है। फाल्गुन मास, कृष्णपक्ष, पंचमी तिथि, मंगलवार को मध्याह्न के समय जल में अथवा जल के समीप उसकी मृत्यु होना संभव होता है॥१-८॥ इति॥

अथ कन्या राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ स्वजनानन्दकृन्नित्यं धनवान्बहुसेवकः। प्रवासी च कलाभिज्ञो गुरुभक्तः प्रियंवदः॥१॥ देवता द्विजवर्याणां भक्तिस्तत्परमानसः। धर्मकर्म समायुक्तो जनानामति दुर्लभः॥२॥ कन्यकाल्पत्वमापन्नो भूरिपुत्रो भवेन्नरः। शिश्ने कण्ठप्रदेशे च लाञ्छनं निश्चितं भवेत्॥३॥ वह्निपीडा तृतीयेऽब्दे पंचमे लोचनव्यथा। नवमे ज्वरबाधा च त्रयोदशमितेऽपि च॥४॥ तथा पञ्चदशे वर्षे सर्पतो भयमादिशेत्। एकविंशन्मिते वर्षे पतनं वृक्षभित्तितः॥५॥ अरण्ये शस्त्रघातः स्याद्वर्षे त्रिंशन्मिते ध्रुवम्। अशीत्यब्दे भवेदायुश्चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते॥६॥ चैत्रकृष्ण त्रयोदश्यां निधनं रविवासरे। शीतद्युतौ स्थिते सुतौ कन्याया मिति संस्मृतम्॥७॥

टीका॥ यदि कन्या राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्वजनों को नित्य आनन्ददायक, धनवान्, बहुत सेवकों वाला, प्रवासी, कलाभिज्ञ, गुरुभक्त, प्रियवादी, देवता और ब्राह्मणों की भक्ति में चित्त लगाने वाला, धर्म-कर्म करने वाला तथा मनुष्यों में अत्यन्त श्रेष्ठ होता है। वह थोड़ी कन्याओं तथा अधिक पुत्रों वाला, शिश्न तथा कण्ठ-प्रदेश में चिह्न वाला होता है। उसे जन्म से तीसरे वर्ष में अग्नि-पीड़ा, पाँचवें वर्ष में

नेत्र-पीड़ा, नवें तथा तेरहवें वर्ष में गुदा-मार्ग में कष्ट, पन्द्रहवें वर्ष में सर्प-भय, इक्कीसवें वर्ष में वृक्ष अथवा दीवार से गिरने का भय तथा तीसवें वर्ष में वन में शस्त्राघात का भय उपस्थित होता है। यदि चन्द्रमा पर शुभ-ग्रह की दृष्टि हो तो उसकी आयु अस्सी वर्ष की होती है। चैत्रमास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि को रविवार के दिन उसकी मृत्यु होना सम्भव है ॥ १-७॥ इति ॥

अथ तुला राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम् ॥ मान्यः सर्वजनैर्नूनं वस्तुसंग्रह तत्परः। भोगी धर्मपरः श्रीमान्बहुभृत्यो विचक्षणः ॥ १॥ वापी कूप तड़ागादि निर्माता सादरः सदा। प्राज्ञः सर्वकलाभिज्ञो नृपाणामति बल्लभः ॥ २॥ मधुरान्नरसप्रीतिर्द्विभार्यः पितृभक्तिकृत्। स्वल्पापत्योऽल्पबन्धुश्च कृषिकर्मविचक्षणः ॥३॥ क्रयविक्रय सम्प्राप्तिर्देव ब्राह्मणपूजकः। भार्यावचोनुगामी च सप्तमेऽब्दे ऽग्निजं भयम् ॥ ४॥ अष्टमे ज्वरजा पीडा द्वादशे च जलाद्भयम्। तरोस्तुरगतः पातः सर्पभीर्वापि विंशके ॥ ५॥ एकविंशन्मिते पीडा चन्द्रे सौम्यग्रहेक्षिते। पञ्चाशीतिर्भवेदायुर्वैशाख स्याद्यपक्षके ॥ ६॥ सार्पेष्टम्यां भृगोर्वारे निधनं पूर्व यामके। तुलाराशिस्थिते चन्द्र निर्य्याणमिति सूचितम् ॥ ७॥

टीका॥ यदि तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सबलोगों में मान्य, वस्तु-संग्रह में तत्पर, भोगी, धर्मपरायण, श्रीमान्, अनेक नौकरों वाला, पण्डित; वापी, कूप, तड़ाग आदि का निर्माण कराने वाला, प्राज्ञ, समस्त कलाओं का जानकार, राजाओं का प्रिय, मधुर अन्न तथा रस का प्रेमी, दो स्त्रियों वाला, पितृ-भक्त, अल्प-सन्तति एवं अल्प बन्धुवान्, कृषि-कर्म में निपुण, क्रय-विक्रय से सम्पत्ति अर्जि-त करने वाला, देवता तथा ब्राह्मणों का पूजक एवं स्त्री की बात पर चलने वाला होता है। उसे जीवन के सातवें वर्ष में अग्नि-भय, आठवें वर्ष में ज्वर-पीड़ा, बारहवें वर्ष में जल-भय, बीसवें वर्ष में वृक्ष अथवा घोड़े से गिरने का भय अथवा सर्प-भय व इक्कीसवें वर्ष में अनेक प्रकार के कष्ट होते हैं। यदि

चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जातक की आयु पिचासी वर्ष की होती है। वैशाखमास के शुक्लपक्ष में, आश्लेषा नक्षत्र, अष्टमी तिथि तथा शुक्रवार को प्रथम प्रहर में उसकी मृत्यु होना संभव है॥ १-७॥ इति॥

अथ वृश्चिक राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ परतापपरः क्रोधी विद्वेषी कलहप्रियः। विश्वासघातकश्चापि मित्रद्रोही विचक्षणः॥ १॥ असन्तुष्टो नृपैः पूज्यो विघ्नकर्तान्य कर्मणि। शुभलक्षणसंयुक्तो गुप्तपापश्च विक्रमो॥ २॥ बहुभृत्यश्चतुर्बन्धुर्द्विभार्यो जायते पुमान्। प्रथमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तृतीये भयमग्नितः॥ ३॥ पंचमेऽब्दे ज्वरात्पीडा तथा पंचदशेऽपि च। पंचविंशन्मिते वर्षे पीडा स्यान्महती ध्रुवम्॥ ४॥ चन्द्रे सौम्यग्रहैर्दृष्टे नवत्यब्दान्स जीवति। ज्येष्ठमासि सिते पक्षे दशम्यां बुधवासरे॥ ५॥ हस्तनक्षत्र संयुक्ते मध्यरात्रे गते सति। चन्द्रे वृश्चिक राशिस्थे निर्याणमिति कीर्तितम्॥ ६॥

टीका॥ यदि वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दूसरों को सन्ताप देने वाला, क्रोधी, विद्वेषी, कलहप्रिय, विश्वासघाती, मित्रद्रोही, विलक्षण बुद्धि वाला, असन्तोषी, राजा द्वारा सम्मानित, दूसरों के काम में विघ्न डालने वाला, शुभलक्षणों से युक्त, गुप्त पापी, पराक्रमी, अनेक नौकरों वाला तथा चार भाई और दो स्त्रियों वाला होता है॥ उसे जन्म के बाद पहले वर्ष में ज्वर, तीसरे वर्ष में अग्निभय, पाँचवें तथा पन्द्रहवें वर्ष में ज्वर एवं पच्चीसवें वर्ष में विशेष पीड़ा होती है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो जातक की आयु नब्बे वर्ष की होती है तथा ज्येष्ठमास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि, बुधवार, हस्तनक्षत्र में मध्य रात्रि के समय उसकी मृत्यु होती है॥ १-६॥ इति॥

अथ धनु राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ प्राज्ञो धर्मी सुपुत्रश्च राजमान्यो जनप्रियः। द्विजदेवार्चने प्रीतिर्वस्तु संग्रहतत्परः॥ १॥ सभायां च भवेद्वक्ता सुनखी सुमतिः शुचिः। स्थूल दन्ताधरग्रीवः काव्यकर्ता प्रगल्भकः॥ २॥ कुलशाली वदान्यश्च सभाग्यो दृढसौहृदः। निम्नपादतलः क्ले-

-प्री साहसी विनयान्वितः ॥३॥ शान्तः क्षिप्र प्रकोपी च तापसः स्वल्पभुङ्नरः। स्वल्पापत्यो सुबंधुश्च पूर्वे वयसि वित्तवान् ॥४॥ सबाधः प्रथमे वर्षे महापीडा त्रयोदशे। अष्टषष्टमितं प्राहुरायुर्वा पंचसप्ततिः॥५ चन्द्रे सर्वशुभैर्दृष्टे शतवर्षाणि जीवति। आषाढस्या सिते पक्षे पंचम्यां भृगुवासरे॥६॥ निशायां हस्तनक्षत्रे निधनं सर्वथा भवेत्। निर्याणमिति संप्रोक्तं चंद्रे सूता धनुस्थिते॥७॥

टीका॥ यदि धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक विद्याशीला, सुपुत्रवान्, राजमान्य, जनप्रिय, ब्राह्मण और देवताओं का भक्त, वस्तुओं का संग्रह करने में तत्पर, सभा में भाषण करने वाला, सुन्दर नखों वाला, सुबुद्धि, पवित्र; मोटे दाँत, होठ तथा ग्रीवा (कण्ठ) वाला, कवि, प्रगल्भ, श्रेष्ठकुलवाला दानी, सौभाग्यशाली, दृढ़मैत्री करने वाला, गहरे पदतल वाला, क्लेशयुक्त, साहसी, विनयी, शान्त, शीघ्र क्रुद्ध होजाने वाला, तपस्वी, स्वल्पाहारी, थोड़ी सन्तति वाला, अच्छे भाइयों वाला व पूर्वावस्था में धनी होता है। उसे जन्म से पहले वर्ष में बाधा व तेरहवें वर्ष में विशेष कष्ट होता है। किसी आचार्य ने उसकी आयु अरसठ वर्ष और किसीने पिचहत्तर वर्ष की बताई है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह सौ वर्ष तक जीवित रहता है। आषाढ़मास के कृष्णपक्ष की पंचमी तिथि, शुक्रवार एवं हस्तनक्षत्र में रात्रि के समय उसकी मृत्यु होती है॥१-७॥ इति॥

अथ मकर राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ धीरो विचक्षणः क्लेशी पुत्रवान्नृपतिप्रियः। कृपालुः सत्यसंपन्नो वदान्ये सुभगोऽलसः॥१॥ कृष्णतालुः पुमान्नूनं विस्तीर्णकटिरुद्भवेत्। पंचमे वत्सरे पीडा सप्तमे च जलाद्भयम्॥२॥ दशमे पतनं वृक्षात् द्वादशे शस्त्रपीडनम्। विंशन्मिते ज्वराद्बाधा शाखासु पञ्चविंशके॥३॥ पंचत्रिंशत्समा काले वामाङ्केऽग्निभयं दिशेत्। अब्दानां नवतिर्नूनमायुस्तस्य प्रकीर्तितम्॥४॥ श्रावणस्य सिते पक्षे दशम्यां भौमवासरे। ज्येष्ठायां निधनं नूनं चन्द्रे मकर संस्थिते॥५॥

टीका॥ यदि मकर राशि में चन्द्रमा हो तो जातक धीर, विचक्षण, क्लेश युक्त, पुत्रवान्, राजा का प्रिय, कृपालु, सत्यवादी, दानी, सुन्दर, आलसी, कृष्णवर्ण के तालु वाला एवं विस्तीर्ण कटि वाला होता है। उसे जन्म से पाँचवें वर्ष में पीड़ा, सातवें वर्ष में जल-भय, दसवें वर्ष में वृक्ष से गिरने का भय, बारहवें वर्ष में शस्त्र-पीड़ा, बीसवें वर्ष में ज्वर-बाधा, पच्चीसवें वर्ष में अङ्ग-पीड़ा व पैंतीसवें वर्ष में बाँये अङ्ग में अग्नि का भय होता है। उसकी आयु नब्बे वर्ष की होती है। श्रावणमास के शुक्लपक्ष की दशमी तिथि, मंगलवार तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना संभव है॥ १-५॥ इति॥

अथ कुम्भ राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ दाता मिष्टान्नभोक्ता च धर्मकार्येषु सत्वरः प्रियवक्तृत्व संयुक्तो नरः क्षीण कलेवरः॥१॥ स्वल्पापत्यो द्विभार्यश्च कामी द्रव्यविवर्जितः। वामहस्ते भवेल्लक्ष्म पीडा प्रथमवत्सरे॥२॥ पञ्चमेऽग्निभयं विद्यादथ द्वादशवत्सरे। व्यालाद्वा जलतो भीतिरष्टाविंशतिमे क्षतिः॥३॥ चौरेभ्यश्च भवेदायुर्वर्षाणां नवतिर्ध्रुवम्। भाद्रमास्यसिते पक्षे चतुर्थ्यां शनिवासरे॥४॥ भरणी नाम नक्षत्रे गृणन्ति मरणं नृणाम्। एवमुक्तं मुनिश्रेष्ठैश्चन्द्रे जन्मनि कुम्भगे॥५॥

टीका॥ यदि कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दानी, मिष्ठान्नभोजी, धर्म-कर्म में शीघ्रता करने वाला, प्रियवक्ता, क्षीण शरीर वाला, अल्प सन्ततिवान्, दो पत्नियों वाला, कामी, धनहीन, तथा बाँये हाथ में चिह्न वाला होता है। उसे जन्म के पहले वर्ष में पीड़ा, पाँचवें वर्ष में अग्नि-भय, बारहवें वर्ष में सर्प अथवा जल से भय एवं अट्ठाईसवें वर्ष में चोर से हानि होती है। उसकी पूर्णायु नब्बे वर्ष की मानी गई है। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि, शनिवार तथा भरणी नक्षत्र में उसकी मृत्यु होती है — ऐसा मुनियों ने कहा है॥ १-५॥ इति॥

अथ मीन राशिस्थ चन्द्र निर्याण फलम्॥ धनी मानी विनीतश्च भोगी संहृष्टमानसः

पितृमातृसुराचार्यगुरुभक्तियुतो नरः ॥१॥ उदारो रूपवाञ्छ्रेष्ठो गन्धमाल्यविभूषणः । पञ्चमेऽब्दे जलाद्भीतिरष्टमे ज्वरपीडनम् ॥२॥ द्वाविंशे महती पीडा चतुर्विंशन्मितेऽब्दके। पूर्वाशागमनं चायुरब्दानां नवतिः स्मृता ॥३॥ आश्विनस्यासिते पक्षे द्वितीयायां गुरोर्दिने । कृत्तिकानाम नक्षत्रे सायं मृत्युर्न संशयः ॥४॥ इतीरितं तु निर्याणं यवनाचार्यसंमतम् । मीनस्थे यामिनी नाथे भवेदल न संशयः ॥५॥

टीका॥ यदि मीन राशि में चन्द्रमा हो तो जातक धनी, मानी, विनयी, भोगी, प्रसन्न चित्त वाला; माता, पिता, देव, आचार्य एवं गुरु की भक्ति (सेवा) करने वाला, उदार, रूपवान्, श्रेष्ठ, गन्धमालादि से विभूषित होता है। उसे जन्म से पाँचवें वर्ष में जल-भय, आठवें वर्ष में ज्वर, बाईसवें वर्ष में महान् पीड़ा होती है तथा चौबीसवें वर्ष में पूर्व दिशा की यात्रा करनी पड़ती है। उसकी आयु नब्बे वर्ष की मानी गई है। आश्विन मास के कृष्णपक्ष की द्वितीया तिथि, गुरुवार, कृत्तिका नक्षत्र में उसकी मृत्यु होना सम्भव है। इस प्रकार यवनाचार्य-सम्मत मीनराशिस्थ चन्द्रमा का फल तथा निर्याण का उल्लेख यहाँ किया गया है॥ १-५॥ इति द्वादश राशिस्थ चन्द्र निर्याण फल समाप्तम्॥

अथ पंच संवत्सरात्मक युगानयन फलम्॥ पूर्व वर्णित ६० संवत्सरों में से पाँच-पाँच संवत्सरों का एक-एक युग माना जाता है। इस प्रकार कुल साठ संवत्सरों के बारह युग होते हैं। इन द्वादश युगों में जन्म लेने वाले जातकों का सामान्य-फल यहाँ कहा जाता है।

अथ द्वादशयुग फलम्॥ मद्यमांसप्रियो नित्यं परदाररतः सदा। कविः शिल्परतः प्राज्ञो जायते प्रथमे युगे ॥१॥ वाणिज्यव्यवहारी च धर्मिष्ठः सत्यसङ्गतः। द्रव्यं लुम्पत्यपापात्मा युगे जातो द्वितीयके ॥२॥ भोक्ता दाता कृतप्रज्ञो देवब्राह्मणपूजकः। तेजस्वी धनयुक्तश्च तृतीये फलमश्नुते ॥३॥ वाटिका क्षेत्र लोभी स्याद्दोषधी प्रियमानवः। धातुवादेऽर्थनाशी च जायते च चतुर्युगे ॥४॥

पुत्रोत्पत्तिः सदा भोक्ता धनवांश्च जितेन्द्रियः । पितृ मातृ प्रियश्चैव जायेत पञ्चमे युगे ॥५॥ सर्वशत्रुश्चनीचश्च सर्वदा महिषीप्रियः । पट्टघातो भयार्त्तश्च युगे षष्ठे च जायते ॥६॥ बहुमित्रप्रियश्चैव व्यापारे कुटिला गतिः । शीघ्रगामी तथा कामी जायेत सप्तमे युगे ॥७॥ पापकर्ता च सन्तुष्टो व्याधि दुःखान्वितस्तथा । कर्ता च परहिंसाया जायते त्वष्टमे युगे ॥८॥ वापी कूप तडागादि देवदीक्षाऽतिथि प्रियः । भूपति वृत्रहातुल्यो जायते नवमे युगे ॥९॥ राजाधिराजमन्त्रीच स्थानप्राप्ति महासुखः । सुवेषरूपो दाता च जायेत दशमे युगे ॥१०॥ बुद्धिमांश्च सुशीलश्च स्थापकश्चाऽसुरद्विषाम् । सङ्ग्रामे च भवेच्छूरो जात एकादशे युगे ॥११॥ तेजस्वीच प्रसन्नात्मा नरमध्ये महाजनः । कृषिवाणिज्यकर्ता च जायते द्वादशे युगे ॥१२॥

टीका ॥ पंच संवत्सरात्मक प्रथम युग में जन्म लेने वाला जातक मद्य-मांस-प्रिय, पर-स्त्री गामी, कवि, शिल्पज्ञ तथा प्राज्ञ (पण्डित) होता है ॥१॥ द्वितीय युग में जन्म लेने वाला जातक व्यवसाय-कुशल, धर्मात्मा, सत्यवादी एवं नीति-मार्ग से धनोपार्जन का इच्छुक होता है ॥२॥ तृतीय युग में जन्म लेने वाला जातक भोगी, दानी, ज्ञानी, देव-ब्राह्मण-पूजक, तेजस्वी व धनी होता है ॥३॥ चतुर्थ युग में जन्म लेने वाला जातक वाटिका, खेत का लोभी, लतादि वनस्पतियों को प्रेम करने वाला तथा धातुवाद में धन को नष्ट करने वाला होता है ॥४॥ पंचम युग में जन्म लेने वाला अधिक पुत्रवान्, भोगी, धनी, जितेन्द्रिय, एवं माता-पिता का भक्त होता है ॥५॥ षष्ठ युग में जन्म लेने वाला जातक सबका शत्रु, नीच, सदैव भैंस को स्नेह करने वाला (अथवा रानी को प्रेम करने वाला?), पत्थर से आघात पाने वाला एवं भयभीत होता है ॥६॥ सप्तम युग में जन्म लेने वाला अनेक मित्रों को प्रिय, व्यवसाय में कुटिल-बुद्धि वाला, शीघ्रगामी तथा कामातुर होता है ॥७॥ अष्टम युग में जन्म लेने वाला जातक पापी होते हुए भी सन्तोषी, रोगों के कारण दुःखी तथा पर-हिंसक होता है ॥८॥ नवम युग में जन्म लेने वाला जातक बावड़ी, कुआ, ता-

लाब आदि बनवाने वाला अथवा इनसे प्रेम करने वाला, देवता, दीक्षा (मन्त्र) एवं अतिथियों को प्रेम करने वाला तथा इन्दु के समान तेजस्वी राजा होता है ॥ ९ ॥ दशम युग में जन्म लेने वाला जातक महाराजा अथवा राजमन्त्री, स्थान-लाभ से सुखी, सुन्दर वेष वाला तथा दानी होता है ॥ १० ॥ एकादश युग में जन्म लेने वाला जातक बुद्धिमान्, सुशील, देवता की प्रतिष्ठा कराने वाला तथा युद्ध क्षेत्र में शूर-वीर होता है ॥ ११ ॥ द्वादश युग में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी, प्रसन्न-चित्त, मनुष्यों में श्रेष्ठ एवं कृषि-कर्म तथा वाणिज्य करने वाला होता है ॥ १२ ॥ इति द्वादश युग फलम् ॥

अथ गोल फलम् ॥ मेषादि षट्कगे सूर्ये उत्तरो गोल उच्यते । तुलादि षट्कगे सूर्ये याम्य गोलः स उच्यते ॥ १ ॥ सौम्य गोले समुत्पन्नो धनवान् विद्ययाऽन्वितः । पुत्र पौत्रादि युक्तश्च राजमान्यो नरो भवेत् ॥ २ ॥ याम्य गोले च यो जातः सदा स सुख वर्जितः । कूट साक्षी दुराचारो हीनाङ्गश्चाऽपि निर्धनः ॥ ३ ॥ इति ॥

टीका ॥ मेषादि ६ राशियों (मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह और कन्या) में जब सूर्य रहता है, तब उस अवधि को 'सौम्य' अथवा 'उत्तर' गोल कहा जाता है तथा तुलादि ६ राशियों (तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन) में जब सूर्य रहता है, तब उस अवधि को 'याम्य' अथवा दक्षिण गोल कहा जाता है ॥ १ ॥ 'सौम्य' अर्थात् उत्तर गोल में जन्म लेने वाला जातक धनी, विद्वान्, पुत्र-पौत्रादि से युक्त तथा राजमान्य होता है ॥ २ ॥ 'याम्य' अर्थात् दक्षिण गोल में जन्म लेने वाला जातक सदैव सुख से रहित, मिथ्यावादी, दुराचारी, हीनांङ्ग तथा निर्धन होता है ॥ ३ ॥ इति गोल फलम् ॥

राशि ध्रुवाङ्कानुसारेण आयुर्दाय ज्ञानम् ॥ दिक् काल नख बाणे भ द्वङ् नखाः समयो दिशः । मनवो राम वेदाश्च मेषाद्यष्टोत्तरं शतम् ॥ जन्मपत्र्यां यत्र स्थाने ग्रहो भवति तत्र तेषां

लग्नानां ध्रुवाङ्का: सम्मेल्य तदेवाऽऽयुर्द्दैयम् ॥ टीका ॥ दिक् (१०), काल (६), नख (२०), बाण (५), भ (८), द्वन्द्व (२), नख, (२०), समय (६), दिशा (१०), मनव (१४), राम (३) और वेद (४) — ये क्रमशः मेषादि राशियों के ध्रुवाङ्क हैं अर्थात् मेष के १०, वृष के ६, मिथुन के २०, कर्क के ५, सिंह के ८, कन्या के २, तुला के २०, वृश्चिक के ६, धनु के १०, मकर के १४, कुम्भ के ३ तथा मीन के ४ ध्रुवाङ्क माने गए हैं। सूर्य आदि ग्रह जन्मकुण्डली में जिस राशि में हों, उनसबको जोड़ने पर जातक का आयुर्दाय (उम्र) ज्ञात होता है ॥

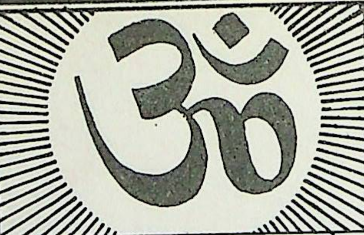
द्वादश भावात् विचारणीय विषया: ॥ यो भावः स्वामिसौम्याभ्यां युक्तो दृष्टोऽपमेधते। पौष्टश्चेदन्यथा ह्रेयो जन्मतः पृच्छतोऽपि च ॥१॥ रूपं तथा वर्णविनिर्णयश्च चिह्नानि जाति वयसः प्रमाणम्। सुखानि दुःखान्यपि साहसं च लग्ने विलोक्यं खलु सर्वमेतत् ॥२॥ स्वर्णादि धातु क्रयविक्रयश्च रत्नानि कोषोऽपि च सङ्ग्रहश्च। एतत्समस्तं परिचिन्तनीयं धनाभिधाने भवने सुधीभिः ॥३॥ सहोदराणामथ किङ्कराणां पराक्रमाणामुपजीविनां च। विचारणा जातकशास्त्रविद्भिस्तृतीयभावे विनयेन कार्या ॥४॥ सुहृद् गृहं ग्राम चतुष्पदो वा क्षेत्राद्यमालोकनकं चतुर्थे। दृष्टे शुभानां शुभयोगतो वा भवेत्प्रवृद्धिर्नियमेन तेषाम् ॥५॥ बुद्धि प्रबन्धात्मज मन्त्रविद्या विनेय गर्भस्थिति नीति संस्था:। सुताभिधाने भवने नराणां होरागमज्ञैः परिचिन्तनीयम् ॥६॥ वैरिव्रातं क्रूरकर्मामयानां चिन्ता शङ्का मातुलानां विचारः। होरा पारावार पारं प्रयातै रेतत्सर्वं शत्रुभावे विचिन्त्यम् ॥७॥ रणाङ्गणं चापि वणिक्क्रिया च जायाविचारो गमन प्रमाणम्। शास्त्रप्रवीणेन विचारणीयं कलत्रभावे किल सर्वमेतत् ॥८॥ नद्युत्तारात्यन्यवैषम्य दुर्गं शास्त्रं चायुः सङ्कटञ्चेति सर्वम्। रन्ध्रस्थाने सर्वथा कल्पनीयं प्राचीनानामाज्ञया जातकज्ञैः ॥९॥ धर्मक्रियायां हि मनः प्रवृत्तिर्भाग्योपपत्तिं विमलं च शीलम्। तीर्थप्रयाणं प्रणयः पुराणैः पुण्यालये सर्वमिदं प्रदिष्टम् ॥१०॥ व्यापार मुद्रा नृप मान राज्यं प्रयोजनं चापि पितुस्तथैव। महत्फलाप्तिः खलु सर्वमेतद्राज्याभिधाने भवने विचार्यम् ॥११॥ गजाश्व हेमाम्बर

छत्र जातमान्दोलिका: मङ्गलमङ्गलानि। लाभ: किलैषामखिलं विचार्यमेतत्तु लाभस्य गृहे गृहस्थै: ॥१२॥ हानिर्दानं व्ययश्चापि दण्डो निर्बन्ध एव च। सर्वमेतद् व्ययस्थाने चिन्तनीयं प्रयत्नत: ॥१३॥ इति॥

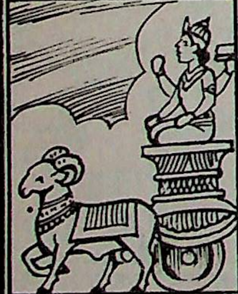
टीका॥ जिस भाव पर अपने स्वामी की अथवा शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा योग हो, उस भाव की वृद्धि होती है तथा जिस भाव पर पापग्रह की अथवा उस भाव के स्वामी के शत्रु ग्रह की दृष्टि हो, उसकी हानि होती है। यह नियम जन्मकुण्डली अथवा प्रश्न कुण्डली का अवलोकन करते समय ध्यान में रखना चाहिए॥१॥ तनुभाव (लग्न अथवा प्रथम भाव) से जातक अथवा किसी पदार्थादि के रूप, वर्ण, चिह्न, जाति, आयु का प्रमाण, सुख, दु:ख तथा साहस के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए॥२॥ धनभाव (द्वितीयभाव) से स्वर्ण, चाँदी आदि धातु, क्रय-विक्रय, रत्न, भण्डार एवं कोष, द्रव्यादि के संग्रह के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए॥३॥ तृतीयभाव से सहोदर, सेवक, पराक्रम तथा अनुजीवी आदि का विचार करना चाहिए॥४॥ चतुर्थभाव से मित्र, घर, ग्राम, चतुष्पद, खेत तथा अमालोकन आदि का विचार करना चाहिए। इस भाव में शुभग्रहों के योग अथवा दृष्टि से इन सब वस्तुओं की वृद्धि होती है॥५॥ पंचम भाव से बुद्धि, प्रबन्ध, सन्तान, मन्त्र, विद्या, न्याय, गर्भ-स्थिति एवं नीति के सम्बन्ध में तथा गर्भ-स्थिति के विषय में विचार करना चाहिए॥६॥ षष्ठभाव से शत्रु-समूह, क्रूर-कर्म, फोड़ा-फुंसी-व्रण, रोग, चिन्ता, शङ्का एवं मामा के संबंध में विचार करे॥७॥ सप्तमभाव से युद्ध, वाणिज्य, स्त्री तथा यात्रा के विषय में; अष्टमभाव से नदी, मार्ग की विषमता, शस्त्राघात, आयु एवं संकट के बारे में; नवमभाव से धर्म, मनोवृत्ति, भाग्योदय, पवित्रता, तीर्थयात्रा आदि के बारे में; दशमभाव से व्यवसाय, मुद्रा, राज्य-सम्बन्ध, पिता एवं उच्चपद आदि के बारे में; एकादश भाव से सब प्रकार के लाभ, स्वर्ण, वस्त्र, वाहन आदि के विषय में तथा द्वादश भाव से हानि, व्यय, दण्ड तथा बंधन आदि के विषय में विचार करना चाहिए॥८-१३॥ इति तृतीयखण्डस्समाप्त:॥

—•—







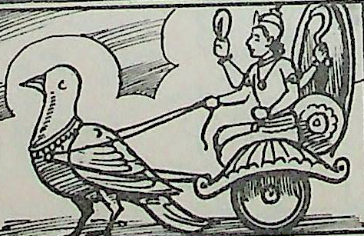
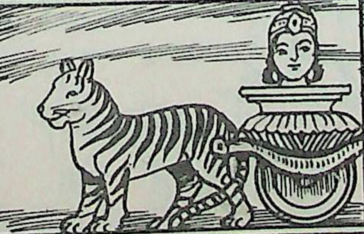
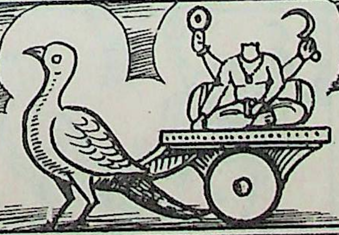



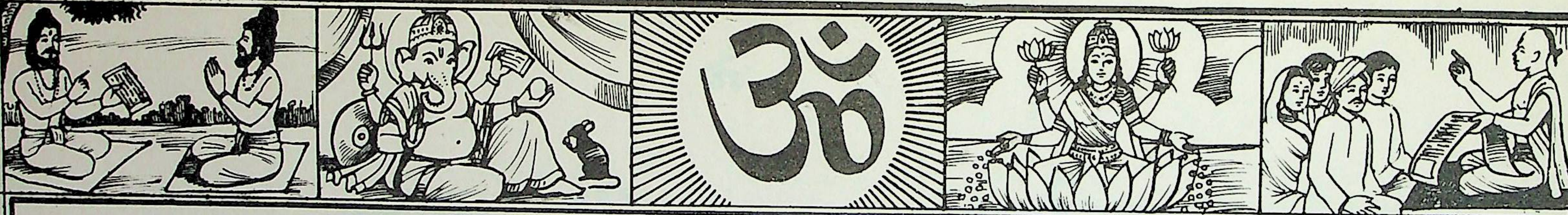


इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

तृतीय खण्डः समाप्तः









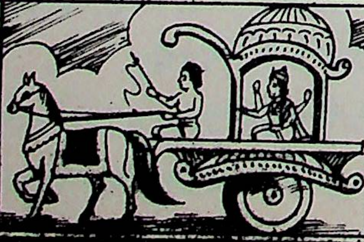
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

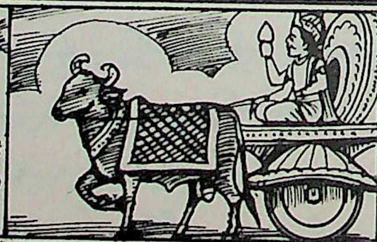
चतुर्थ खण्डः भाषा टीका सहितम्

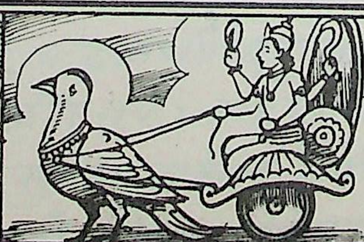
ग्रहदृष्टि फलाध्यायः



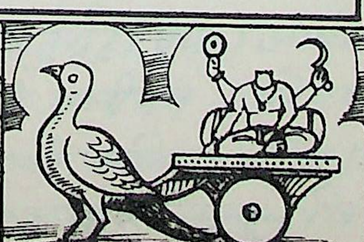












ॐ

अथ श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम् चतुर्थ खण्डः

श्रीगणेशाय नमः ॥ भृगु उवाच ॥ त्र्यंशा त्रिकोणं चतुरस्रमस्तं खेटाश्चरणाभिवृद्ध्या । मन्दो गुरुर्भूमिसुतःपरे च क्रमेण सम्पूर्णदृशो भवन्ति ॥ टीका सभी ग्रह अपने आश्रित स्थान से अर्थात् वे जिस भाव में स्थित हों वहाँ से, तीसरे तथा दसवें स्थान को एकपाद (चरण) दृष्टि से, पाँचवें तथा नवें स्थान को द्विपाद दृष्टि से, चौथे तथा आठवें स्थान को त्रिपाद दृष्टि से तथा सप्तम स्थान को चतुष्पाद अर्थात् पूर्ण दृष्टि से देखते हैं; परन्तु शनि सातवें स्थान के अतिरिक्त तीसरे तथा दसवें स्थान को भी; गुरु सातवें के अतिरिक्त पाँचवें और नवें स्थान को भी तथा मंगल सातवें के अतिरिक्त चौथे तथा आठवें स्थान को भी पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥

अथ मेषादि गृहे रवौ दृष्टि फलम् ॥ दानधर्म बहु भृत्य संयुतः कोमलामल तनुर्गृहप्रियः । आवनेय भवने विरोचने शीतदीधिति निरीक्षिते सति ॥ १ ॥ क्रूरो नरः सङ्गरकर्मधीरश्चारक्तनेत्रांघ्रिरलं बलीयान् । भवेद वश्यं कुज गेहसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २ ॥ सुखेन सत्त्वेन धनेन हीनः प्रेष्यः प्रवासी मलिनः सदैव । भवेदवश्यं परवान्मनुष्यः सहस्ररश्मौ कुजभे ज्ञदृष्टे ॥ ३ ॥ दाता दयालुर्बहुलार्थयुक्तो नृपालमन्त्री कुलधुर्यवर्यः । स्या-

न्मानवो भूतनपालयस्थे पत्यौ नलिन्याः किल जीवदृष्टे ॥ ४ ॥ हीनाङ्गना प्रीतिरतीव दीनो धनेन हीनो मनुजः कुमि-
त्रः । त्वग्दोषयुक्तः क्षितिपुत्रगेहे मित्रेऽधिसंस्थे भृगुपुत्रदृष्टे ॥ ५॥ उत्साहहीनो मलिनोऽति दीनो दुःखा
न्वितो वै विमतिर्नरः स्यात् । कांते नलिन्याः क्षितिजालयस्थे प्रसूतिकाले रविजेन दृष्टे ॥ ६॥ वाराङ्गना प्रीतिक-
रो नितांतं स्याद्भूरिभार्यः सलिलोपजीवी । दिनाधिराजे भृगुजालयस्थे कलानिधिप्रेक्षणतां प्रयाते ॥ ७॥ संग्राम
धीरोऽतितरां महौजाः सुसाहसप्राप्तधनोरुकीर्तिः । क्षीणो नरस्याद्भृगुमंदिरस्थे सहस्ररश्मौ कुसुतेन दृष्टे ॥ ८॥
संगीतसत्कार्यकलाकलापे लेखक्रियायां कुशलो नरः स्यात् । प्रसन्नमूर्तिर्भृगुवेश्मयाते प्रद्योतने सोमसुतेन दृष्टे
॥ ९॥ वंशानुमानं नृपतिप्रधानः सद्रत्नभूषाद्दविणान्वितो वा । भक्तिर्नरः शुक्रगृहं प्रयाते दृष्टे रवौ देवपुरोहि-
तेन ॥ १०॥ सुलोचनः कांतवपुः प्रधानो मित्रैरमित्रैः सहितः सचिंतः । भवेन्नरो दैत्यगुरोर्गृहेऽर्के नि-
रीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥ ११॥ दीनोऽर्थहीनोऽलसतां प्रपन्नो भार्यामनोवृत्तिविभिन्नवृत्तः । असाधुवृत्तामय
युक् नरः स्याच्छुक्रालयेऽर्केऽर्कसुतेन दृष्टे ॥ १२॥ मित्रैरमित्रैः परिपीडितश्च विदेशयातोऽपि धनेन हीनः ।
निरंतरोद्वेगकरो नरः स्यात्सौम्यालयेऽर्के हरिणांकदृष्टे ॥ १३॥ रिपुभयकलहाद्यैः संयुतोऽत्यंतदीनो रणजयविधि
हीनोऽत्यंतसंजातलज्जः । भवति ननु मनुष्यः सालसश्चापि हंसे, बुधभवननिवासे लोहिताङ्गेन दृष्टे ॥ १४॥ भूप
प्रसादोन्नतिमात्मजातां नयत्यथो शत्रुजनाप्तवित्तः । प्रसूतिकाले नलिनीवनेशे बुधर्क्षसंस्थे च बुधेन दृष्टे ॥ १५॥
सुगुप्तमन्त्रोऽतितरां स्वतन्त्रः कलत्रपुत्रादिजने सगर्वः । भवेन्नरः शीतकरात्मजर्क्षे दिवाकरे देवगुरुप्रदृष्टे ॥ १६॥
विदेशवासी चपलो विलासी विषाग्निशस्त्राङ्कितमूर्तिवर्ती पृथ्वीपते दौत्यकरो नरः स्यादर्के बुधर्क्षे भृगुपुत्रदृष्टे॥
१७॥ धूर्तोऽतिभृत्यो गतचित्तबुद्धिर्जितैः सदोद्विग्नमना मनुष्यः । दिवाकरे शीतकरात्मजर्क्षे निरीक्षिते भा-
स्करिणा प्रसूतौ ॥ १८ ॥ पण्यैश्च पानीयभवैर्महार्घैः पृथ्वीपतिर्वा सचिवश्च रौद्रः । भवेन्नरो जन्मनि चण्ड
रश्मौ कर्कटकस्थे शिशिरांशुदृष्टे ॥ १९॥ स्वबन्धुवर्गे गतचित्तबुद्धिः शोफादिरोगैश्च भगंदरैर्वा । पीडा नराणां

हि कुलीरसंस्थे दिवामणौ क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २० ॥ विद्यायशोमान विराजमानो भूपानुकंपाप्त मनोभिलाषः। निरस्त शत्रुश्च बुधेन दृष्टे कर्किरकस्थे द्युमणौ नरः स्यात् ॥ २१ ॥ कुलाधिकश्चामलकीर्तिशाली भूपाल संप्राप्त महापदार्थः। भवेन्नरः शीतकरर्क्षयाते दिवामणौ वाक्पतिवीक्ष्यमाणे ॥ २२ ॥ स्त्रीसंश्रयाद्वस्त्र धनोपलब्धिः परस्य कृत्ये हृदये विषादः। निशाकरागारकृताधिकारे दिवाकरे भृगुनिरीक्ष्यमाणे ॥ २३ ॥ कफानिलार्तः पिशुनोऽन्य कार्ये स्यादंतरायश्चपलस्वभावः। क्लेशी नरः शीतकरर्क्षसंस्थे दिवामणौ मंदनिरीक्ष्यमाणे ॥ २४ ॥ धूर्तो गभीरः क्षितिपालमान्यो धनोपलब्ध्यार्थयुतः प्रसिद्धः। मित्रे निजक्षेत्रयुते प्रसूतौ नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ २५ ॥ नानाङ्गना प्रीतिरतीव धूर्तः कफात्मकः क्रूरतरश्च शूरः महोद्यमः स्यान्मनुजः प्रधानः सिंहस्थितेऽर्के कुसुतेन दृष्टे ॥ २६ ॥ धूर्तो नृपानुव्रजनः सुसत्वो विद्वत्प्रियो लेखनतत्परश्च। भवेन्नरः केसरिणि प्रयाते दिवामणौ सौम्य निरीक्ष्यमाणे ॥ २७ ॥ देवालयारामतडागवापीनिर्माणकर्ता स्वजने प्रियश्च। भवेन्नरो देवपुरोहितेन निरीक्षितेऽर्के मृगराजसंस्थे ॥ २८ ॥ त्वग्दोषरोगापयशोऽभिभूतो गतोत्सवः स्वीयजनोज्झितश्च ॥ स्यान्मानवः सत्यदयाविहीनः पञ्चानने ऽर्के भृगुजेन दृष्टे ॥ २९ ॥ शठो नरः कार्यविघातकर्ता संतापयेदात्मजनांश्च नूनम्। नरो मृगेन्द्रोपगते दिनेशे दिनेश पुत्रेण निरीक्ष्यमाणे ॥ ३० ॥ कायकान्तियुत सौख्यसमेतो वाग्विलासकुशलः कुलशाली। स्यान्नरः सुरपुरोहितभस्थे भास्करे हिमकरेण हि दृष्टे ॥ ३१ ॥ संग्राम संप्राप्त यशो विशेषो वक्ता विमुक्तानुजनानुसङ्गः। स्थिराश्रमो जीवगृहस्थितेऽर्के भौमेन दृष्टे पुरुषः प्रचण्डः ॥ ३२ ॥ धातुक्रिया काव्यकला कथाढ्यः सद्वाक्यमन्त्रादिविधि प्रवीणः। सतां मतः स्यात्पुरुषो दिनेशे सौम्येक्षिते जीवगृहोपयाते ॥ ३३ ॥ नृपालमन्त्री कुल भूमिपालः कलाविधिज्ञो धनधान्ययुक्तः। विद्वान्युमान्मान्-नुमतीज्यगेहे संहृष्टदेहेऽमरपूजितेन ॥ ३४ ॥ सुगन्धमाल्याम्बर चारुयोषा भूषाविशेषानुभवाप्त सौख्यः। भवेन्नरो देवपुरोहितर्क्षे प्रद्योतने दानववन्द्यदृष्टे ॥ ३५ ॥ परान्नभुङ् नीचनरैः प्रवृत्तश्चतुष्पद प्रीतिपरो

नरः स्यात्। सूर्ये सुराचार्य दृष्टे प्रयाते निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ ३६॥ नारीप्रसङ्गेन गतार्थ सौख्यो माया-पटुश्चञ्चलचित्तवृत्तिः। भवेन्मनुष्यः शनिवेश्मयाते सहस्ररश्मौ हिमरश्मि दृष्टे ॥३७॥ परकलह हतार्थो व्याधिवैर प्रतप्त स्त्वतिविकल शरीरो ऽत्यन्त चिन्ता समेतः। भवति ननु मनुष्यो सम्भवे तिग्मरश्मौ गतवति सुतगेहे दृष्टदेहे कुजेन ॥ ३८॥ क्लीबस्वभावः परवित्तहारी साधूज्झितः शूरतरो नरः स्यात्। दिवाकरे शीतकरात्मजेन दृष्टे प्रसूतौ शनिमन्दिरस्थे ॥३९॥ सत्कर्मकर्त्ता मतिमान्बहूनां समाश्रयश्चारु यशा मनस्वी। स्यान्मानवो भानुसुता-लयस्थे भानौच वाचस्पतिना प्रदृष्टे ॥४०॥ शङ्खप्रवालामलरत्नवित्तं वराङ्गनाभ्योपि धनोपलब्धिम्। करोति भानुर्ननु मानवानां शन्यालयस्थो भृगुजेन दृष्टः ॥ ४१॥ प्रौढ़ प्रतापा द्विजितारिपक्षः क्षोणीपति प्रीतिमहाप्रतिष्ठः। प्रसन्नमूर्तिः प्रभवेन्मनुष्यः शन्यालये ऽर्के शनिना प्रदृष्टे ॥ ४२॥

टीका॥ यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक दानी, धर्मात्मा, अनेक सेवकों वाला, कोमल स्वभाव एवं निर्मल शरीर वाला तथा गृह-सज्जा-प्रेमी होता है ॥१॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, संग्राम-प्रिय, लालवर्ण के नेत्र तथा चरण वाला एवं अत्यन्त बलवान् होता है॥ २॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो सुख, बल एवं धन से हीन, परदेश में नौकरी करनेवाला, मलिन-हृदय वाला तथा सदैव पराधेवश में रहने वाला होता है ॥३॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो दानी, दयालु, अत्यन्त धनी, राजमन्त्री तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है॥ ४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो कुल-टा स्त्री में प्रीति रखने वाला, धन-हीन, दुष्टों से मैत्री करने वाला एवं चर्म-रोग युक्त होता है ॥५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो उत्साह-हीन, मलिन, दरिद्र, दुखी तथा कुबुद्धि होता है ॥६॥

यदि वृष अथवा तुला राशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक वेश्या-प्रेमी अनेक पत्नियाँ रखने वाला एवं जल के आजीविको पार्जन करने वाला होता है॥ ७॥ यदि मंगल की दृष्टि

मू० सं० २३५ — भा० टी०

हो तो संग्रामजयी, महाबली, साहस द्वारा धन कमाने वाला तथा कृश-शरीर का होता है ॥ ८॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो संगीत एवं काव्य आदि कलाओं तथा लेखन-कार्य में निपुण होता है तथा प्रसन्न-मुख होता है ॥९॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो कुलानुसार राजमन्त्री आदि उच्च पदाधिकारी होता है तथा वस्त्र, आभूषण धन आदि से सम्पन्न, परन्तु भीरु-स्वभाव का होता है ॥ १०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर नेत्र एवं शरीर वाला, लोक में प्रधान पद पाने वाला, अधिक मित्र एवं अधिक शत्रुओं वाला तथा चिन्तित बना रहने वाला होता है ॥ ११॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक दीन, धनहीन, आलसी, स्त्री का विरोधी, अनुचित-व्यवहार करने वाला तथा रोगी होता है ॥ १२॥

यदि मिथुन अथवा कन्या राशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक अपने मित्र तथा अमित्र—दोनों से कष्ट पाने वाला, विदेश-भ्रमण करने पर भी धन-हीन तथा सदैव उद्वेग युक्त होता है ॥ १३॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो शत्रु-कलह से दुःखी, दीन, सर्वत्र पराजित होने वाला, लज्जावान् तथा आलसी होता है ॥ १४॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो राजा से सम्मान पाने वाला तथा धन पाने वाला, सन्तान से सुखी एवं अपने शत्रु से भी धन पाने वाला होता है ॥ १५॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, स्वतन्त्र एवं स्त्री-पुत्रादि परिजनों से सदैव सुखी रहता है ॥ १६॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो परदेश में रहने वाला, चंचल, विलासी एवं विज्ञ, अग्नि अथवा शस्त्र से घायल अङ्ग वाला होता है ॥ १७॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो धूर्त, नौकरी करने वाला, बुद्धि-हीन तथा सदैव उद्विग्न-चित्त रहने वाला होता है ॥ १८॥

यदि कर्कराशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक जलोत्पन्न-पदार्थों के व्यवसाय से महाधनी, राजा अथवा मन्त्री होता है ॥ १९॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक अपने बन्धु-वर्ग

से उदासीन तथा शोफ-भगन्दर आदि रोगों से पीड़ित रहता है॥२०॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक विद्वान्, यशस्वी, सम्मानित, राजा की कृपा से धन-लाभ पाने वाला तथा शत्रु-रहित होता है॥२१॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो स्वकुल में श्रेष्ठ, निर्मल कीर्तिवाला एवं राजा द्वारा सब पदार्थों को पाने वाला होता है॥२२॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्री के द्वारा वस्त्र एवं धन पाने वाला तथा पराये उत्कर्ष को देखकर जलने वाला होता है॥२३॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो कफ एवं वात रोग से पीड़ित, चुगलखोर, पराये कामों में विघ्न डालने वाला, चंचल स्वभाव का तथा कष्टयुक्त होता है॥२४॥

यदि सिंह राशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक धूर्त, गंभीर, राजमान्य, धनोपार्जन करनेवाला तथा लोक-विख्यात होता है॥२५॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो अनेक स्त्रियों से प्रेम करने वाला, अत्यन्त धूर्त, कफ-प्रकृति वाला, शूर-वीर तथा उद्यमी होता है॥२६॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो धूर्त, राजा का अनुचर, बलवान्, विद्वानों का प्रेमी तथा लेखन-कला में निपुण होता है॥२७॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो देवालय, बगीचा, तालाब, कुँआ, बावड़ी आदि का निर्माण कराने वाला तथा अपने बन्धुजनों को प्रिय होता है॥२८॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो चर्मरोगी, क्रोधी, अपयशी, उत्सव-हीन, स्वजनों से परित्यक्त तथा दया-रहित होता है॥२९॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो शठ, दूसरों के कामों में विघ्न उपस्थित करने वाला एवं स्वजनों को सन्ताप देने वाला होता है॥३०॥

यदि धनु अथवा मीन राशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त सुन्दर, कान्तिमान्, पुत्र-सुख से युक्त, वाक्पटु तथा अपने कुल में श्रेष्ठ होता है॥३१॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो युद्ध-जयी, वाक्-चतुर, विरक्तजनों का सङ्ग करने वाला तथा स्थिर आश्रम वाला होता है॥३२॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो धातु-क्रिया में कुशल, काव्य-कलादि में निपुण, सत्यवादी,

अपने विचारों को गुप्त रखने वाला तथा सज्जनों को प्रिय होता है ।। ३३ ।। यदि गुरु की दृष्टि हो तो राजा का मंत्री अपने कुल में श्रेष्ठ, कला-मर्मज्ञ एवं धन-धान्य-सम्पन्न होता है ।। ३४ ।। यदि शुक्र की दृष्टि हो तो पुष्प, चन्दन सुगन्ध, वस्त्र, आभूषण आदि भोग्य-पदार्थों से युक्त होता है ।। ३५ ।। यदि शनि की दृष्टि हो तो परान्न-भोजी नीच-कर्म-कर्त्ता एवं पशु-पालक होता है ।। ३६ ।।

यदि मकर अथवा कुम्भ राशि स्थित सूर्य पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों के प्रेम मे पड़कर अपना धन नष्ट करने वाला, कपटी तथा चंचल स्वभाव का होता है ।। ३७ ।। यदि मंगल की दृष्टि हो तो पराये झगड़े में अपना धन नष्ट करने वाला रोग तथा शत्रु-पीड़ित एवं विकल-शरीर तथा चिन्तायुक्त होता है ।। ३८ ।। यदि बुध की दृष्टि हो तो नपुंसक जैसे स्वभाव का, परन्तु शूर-वीर, पराये धन का अपहरण करने वाला एवं साधुजनों द्वारा परित्यक्त होता है ।। ३९ ।। यदि गुरु की दृष्टि हो तो अनेक लोगों का पालन करने वाला, यशस्वी तथा मनस्वी होता है ।। ४० ।। यदि शुक्र की दृष्टि हो तो शंख, मूँगा, मोती आदि रत्नों तथा स्त्रियों के द्वारा धन-लाभ पाने वाला होता है ।। ४१ ।। यदि शनि की दृष्टि हो तो स्वपराक्रम से शत्रुजयी, राजा का कृपापात्र अत्यन्त प्रतिष्ठित तथा प्रसन्नचित्त होता है ।। ४२

मेषादि गृहे चन्द्र प्रतिग्रहदृष्टि फलम् ।। उग्र स्वभावोऽपि मृदुर्नतानां धीरो धराधीश्वरगौरवाढ्यः ।। नरो भवेत्सङ्गरभीरुरेव मेषे शशांके नलिनीशदृष्टे ।। विशाग्निवातास्त्रभयं कदाचित्स्यान्मूत्रकृच्छ्रं महदाश्रयश्च । दन्ताक्षिपीडा निबिड़ा जडांशौ मेषस्थिते भूमिसुतेन दृष्टे ।। २ ।। विलसदमलकीर्तिः सर्वविद्याप्रवीणो । द्रविणगुणगणाढ्यः संमतः सज्जनानाम् ।। भवति ननु मनुष्यो मेषराशौ शशांके । शशधरसुतदृष्टे श्रेष्ठसंपत्प्रतिष्ठः ।। ३ ।। नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा कुलानुभावाद्बहुसम्पदाढ्यः । भवेन्नरः कैरविणीवनेशे मेषस्थिते गीष्पतिना प्रदृष्टे ।। ४ ।। योषा विभूषा धनसूनु सौख्यो भोक्ता सुवक्ता परिमुक्तरोषः । स्या-

त्पूरुषो मेषगतेऽमृतांशौ निरीक्ष्यमाणे भृगुणा गुणज्ञः ॥ ५॥ गदयुतं हतचित्तसमुन्नतिं विगतवित्तमसत्य मसत्कृतम् । क्रियगतोऽर्कसुतेन निरीक्षितो हिमकरो हि नरं कुरुते खलम् ॥ ६॥ कृषिक्रियायां निरतो विधिज्ञः स्यान्मंत्रिको वाहनधान्ययुक्तः । नरो नितांतं चतुरः स्वकार्ये दृष्टे दिनेशेन वृषे शशांके ॥ ७॥ कामातुरश्चित्तहरोऽङ्गनानां स्यात्साधुमित्रः सुतरां पवित्रः । प्रसन्नमूर्तिश्च नरो वृषस्थे शीतद्युतौ भूमिसुतेन दृष्टे ॥ ८॥ प्राज्ञं विधिज्ञं कृपया समेतं हर्षान्वितं भूतहिते रतं च । गुणाभिरामं मनुजं प्रकुर्याद् वृषे शशांके शशिजेन दृष्टे ॥ ९॥ जायात्मजानन्दयुतं सुकीर्तिं धर्मक्रियायां निरतं च पित्रोः । भक्तौ प्रसक्तं मनुजं प्रकुर्याद् वृषस्थितेन्दुर्गुरुणा प्रदृष्टः ॥ १०॥ भूषणाम्बरगृहासनशय्यागंधमाल्यचतुरंघ्रिसुखानि । आतनोति सततं मनुजानां चन्द्रमा वृषगतो भृगुदृष्टः ॥ ११॥ कलानिधिः पूर्वदले वृषस्य शनीक्षितश्चेन्निधनं जनन्याः । करोति सत्यं मुनिभिर्यदुक्तं तथा परार्धे खलु तातभक्तम् ॥ १२॥ प्राज्ञं सुशीलं द्रविणेन हीनं क्लेशाभिभूतं सततं करोति । नरं च सर्वोत्सवदं प्रसूतौ द्वन्द्वे स्थितो भानुमता च दृष्टः ॥ १३॥ उदारदारं चतुरं च शूरं प्राज्ञं च सुज्ञं धनवाहनाद्यैः । युक्तं प्रकुर्यान्मिथुनस्थितेन्दुर्निरीक्षितो जन्मनि भूसुतेन ॥ १४॥ धीरं सदाचारमुदारसारं नरं नरेन्द्राप्तधनं करोति । निशाधिनाथो मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीनाथसुतेन दृष्टः ॥ १५॥ विद्याविवेकान्वितमर्थवन्तं ख्यातं विनीतं सुतरां सुपुण्यम् । करोति मर्त्यं मिथुनाधिसंस्थो निशीथिनीशो गुरुणा प्रदृष्टः ॥ १६॥ वस्त्रप्रसूनान्नवराङ्गनाभ्यः सद्वाहनेभ्यश्च विभूषणेभ्यः । करोति सौख्यं हि सुधामयूखो द्वन्द्वस्थितो जन्मनि शुक्रदृष्टः ॥ १७॥ धनाङ्गनावाहननन्दनाद्यैर्विश्लेषमायाति विगर्हितत्वम् । नरो हि नीहारकरे नृयुग्मे निरीक्षिते भानुसुतेन सूतौ ॥ १८॥ निरर्थकं क्लेशकरं विकीर्णैर्नृपाश्रयं दुर्गकृताधिकारम् । कुर्यात्कलावान्परिसूतिकाले कुलीरसंस्थो नलिनीशदृष्टः ॥ १९॥ दक्षं च शूरं जननीविरुद्धं क्षीणाङ्गयष्टिं मनुजं करोति । कुलीरसंस्थः परिसूतिकाले दृष्टः कलावान्किल मङ्गलेन ॥ २०॥ दारार्थपुत्रोन्नतिनीतिसौख्यं सेनापतिं वा सचिवं मनुष्यं । कर्काधिसंस्थे कुरुते हिमांशुर्हिमांशुपुत्रेण निरी-

-क्ष्यमाणे ॥ २१ ॥ नृपाधिकारं गुणिनं नयज्ञं सुखान्वितं चारुपराक्रमं च । करोति जातं यदि कर्कवर्ती पीयूषमूर्तिर्गुरुणेक्ष्य-
माणः ॥ २२ ॥ सद्रत्नचामीकररत्नभूषावरांगनासौख्ययुतं नितान्तम् । नरं निजागारगतः करोति सुधाकरः शुक्र-
निरीक्ष्यमाणः ॥ २३ ॥ सत्येन हीनं जननीविरुद्धं सदाटनं पापरतं गतार्थम् । करोति जातं निजगेहगामी चेद्या-
मिनीशो रविजेन दृष्टः ॥ २४ ॥ गुणयुतं सततं नृपतिप्रियं वरपदं च विलम्बितसन्ततिम् । हरिगतो वितनोति
निशाकरः खरकरप्रविलोकनसंयुतः ॥ २५ ॥ नरपतेः सचिवो धनवाहनात्मजकलत्रसुखो हि भवेन्नरः । हरिणलक्ष्म-
णि केसरिणि स्थिते क्षितिसुतेन ननु प्रविलोकिते ॥ २६ ॥ धनाङ्गनावाहननन्दनेभ्यः सुखप्रपूरं हि नरं करोति ।
द्विजाधिराजो मृगराजसंस्थो द्विजाधिराजात्मजसंप्रदृष्टः ॥ २७ ॥ बहुश्रुतं विख्यातसाधुवृत्तं कुर्यान्नरं भूमिपतेः
प्रधानम् । चन्द्रो मृगेन्द्रोपगतोऽमरेन्द्रोपाध्यायदृष्टिः परिसूतिकाले ॥ २८ ॥ स्त्रीवैभवं वै गुणिनं गुणज्ञं प्राज्ञं
विधिज्ञं कुरुते मनुष्यम् । पीयूषरश्मिर्जनने यदि स्यात्पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ २९ ॥ कान्ताविमुक्तः कृषि-
कर्मदक्षो दुर्गाधिकारी हि नरोऽल्पकायः । सिंहोपयाते सति शीतभानौ निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥ ३० ॥
भूमीशकोशाधिकृतं सुवृत्तं भार्याविमुक्तं गुरुभक्तियुक्तम् । जातं च कन्याश्रितशीतरश्मिस्तनोति जन्तुं
खररश्मिदृष्टः ॥ ३१ ॥ हिंसापरं शूरतरं सकोपं नृपाश्रितं लब्धजयं रणादौ । कुमारिकासंश्रितशीतभानु-
र्भूसूनुदृष्टो मनुजं करोति ॥ ३२ ॥ ज्योतिर्निबद्धाकाव्यसंगीतविज्ञं प्राज्ञं युद्धे लब्धकीर्तिं विनीतम् । कुर्यान्नू-
नं मानवं मानवन्तं कन्यास्थोऽब्जश्चेन्दुजेन प्रदृष्टः ॥ ३३ ॥ सूरिं बन्धुमवनीपतिप्रियं चारुवृत्तशुभकी-
र्तिसंयुतम् । मानवं हि कुरुतेऽङ्गनाश्रितश्चन्द्रमाः सुरपुरोहितेक्षितः ॥ ३४ ॥ विलासिनीकेलिविलासचित्तं
कान्ताश्रितं भूपतिलब्धवित्तम् । कुर्यान्नरं शीतकरः कुमार्यां स्थितः सितेन प्रविलोकितश्च ॥ ३५ ॥
निष्किञ्चनं हीनमतिं नितान्तं स्त्रीसंश्रयादाप्तधनं जनन्याः । हीनं प्रकुर्यात्खलु कन्यकायां गतो मृगांकोऽ-
र्कसुतेन दृष्टः ॥ ३६ ॥ सदाटनः सौख्यधनैर्विहीनः सदङ्गनासूनुजनैर्विहीनः । मित्रैरमित्रैश्च नरोऽतितप्तस्तु-

लाधरे शीतकरेऽर्क दृष्टे ॥३७॥ कुर्यात् परार्थाकरणैकचित्तं मायासमेतं विषयाभितप्तम् । करोति जातं हि तुलागतेन्दुर्निरीक्ष्यमाणो धरणीसुतेन ॥३८॥ कलाविधिज्ञं धनधान्ययुक्तं वक्तृत्वविद्याविभवैः समेतम् । कुर्यान्नरं शीतकरस्तुलास्थः प्रसूतिकाले शशिजेन दृष्टः ॥३९॥ विचक्षणो वस्त्रविभूषणानां क्रयेऽथवा विक्रयताविधाने । तुलाधरे शीतकरो नरः स्याद् दृष्टः शुनासीर पुरोहितेन ॥४०॥ प्राप्तस्त्वनेकोद्यमसाधितार्थः स्यात्पार्थिवानां कृपया समेतः । दृष्टो नरः पीनकलेवरश्च जूके मृगांके भृगुजेन दृष्टे ॥४१॥ धनैश्च धान्यैर्वरवाहनैश्च युतोऽपि हीनो विषयोपभोगैः । भवेन्नरस्तौलिनि जन्मकाले कलानिधौ भानुतनूज दृष्टे ॥४२॥ सद्वृत्तिहीनं धनिनं जनानामसह्यमत्यन्तकृतप्रयासम् । सेनानिवासं मनुजं प्रकुर्यात्ताराधिपः कौर्प्यगतोऽर्क दृष्टः ॥४३॥ रणाङ्गनावाप्तयशोविशेषो गंभीरतागौरवसंयुतश्च । भूपानुकम्पासमुपात्तवित्तो नरोऽलिनीन्दौ क्षितिजेन दृष्टे ॥४४॥ वाग्विलासकुशलो रणशीलो गीतनृत्यनिरतश्च नितान्तम् । कूटकर्मणि नरो निपुणः स्याद् वृश्चिके शशिनि चन्द्रजदृष्टे ॥४५॥ लोकानुरूपः सुतरां सुरूपः सत्कर्मकृद्वित्तविभूषणाढ्यः । स्यान्मानवो जन्मनि शीतरश्मौ संस्थेऽलिनीज्येन निरीक्ष्यमाणे ॥४६॥ प्रसन्नमूर्तिः समुदारकीर्तिः कूटक्रियाज्ञो धनवाहनाढ्यः । कान्ताहृतार्थः पुरुषोऽलियाते शीतद्युतौ दैत्यगुरुप्रदृष्टे ॥४७॥ स्थानभ्रंशं दैन्यनाशाल्पवित्तं नीचापत्यासत्त्वयक्ष्मप्रकोपम् । कुर्याच्चन्द्रः सूतिकालेऽलिसंस्थश्छायापुत्रप्रेक्षणत्वं प्रयातः ॥४८॥ प्रौढप्रतापोत्तमकीर्तिसम्पत्सद्वाहनाप्याहवजं जयं च । नृपप्रसादं कुरुते नराणां ताराधिपश्चापगतोऽर्कदृष्टः ॥४९॥ सेनापतित्वं च महत्प्रतापं पश्चालयालङ्करणोपलब्धिम् । कुर्यान्नराणां हरिणांक एष शरासनस्थोऽवनिजेन दृष्टः ॥५०॥ सद्वाग्विलासं बहुभृत्ययुक्तं कुर्यान्नरं ज्यौतिषशिल्पविद्यम् । तुरङ्ग जङ्घे हि कुरङ्गजन्मा कुरङ्गलक्ष्मप्रभवेण दृष्टः ॥५१॥ महापदस्योधनवान्सुवृत्तोभवेन्नरश्चारुशरीरयष्टिः । धनुर्धरे शीतकरे प्रयाते निरीक्षिते शक्रपुरोहितेन ॥५२॥ सन्तानार्थोत्पन्नसंजातधर्मः शश्वत्सौख्येनान्वितो मानवः स्यात् । तारास्वामी चापगामी प्रसूतौ दैत्यामात्यप्रेक्षणत्वं प्रयातः

॥५३॥ सत्त्वोपेतं नित्यशास्त्रानुरक्तं सद्वक्तारं मानवं च प्रचण्डम्। कोदण्डस्थस्तीक्ष्णरश्म्यात्मजेन दृष्टः सूतौ शीतरश्मिः करोति॥५४॥ गतधनो मलिनश्चलनप्रियो हतमतिः खलु दुःखितमानसः हिमकरे मकरे च दिवाकरे क्षितितनौ हि नरः प्रभवेद्यदि॥५५॥ अतिप्रचण्डो धनवाहनाढ्यः प्राज्ञश्च दारात्मजसौख्ययुक्तः। स्यान्मानवो वैभवभाङ्नितान्तं मृगे मृगांके ऽवनिजेन दृष्टे॥५६॥ बुद्ध्या हीनो निर्धनस्त्यक्तगेहो गेहिन्याद्यैरुज्झितः पूरुषः स्यात्। आकोकेरस्थाकरे शीतरश्मौ पीयूषांशोरात्मजेन प्रदृष्टे॥५७॥ नृपालजः सत्ययुतो गुणज्ञः कलत्रपुत्रादियुतो नरः स्यात्। मृगानने जन्मनि यामिनीशे वाचामधीशेन निरीक्ष्यमाणे॥५८॥ सुनयनो धनवाहनसंयुतः सुतविभूषणवस्त्रसुखी नरः। कुमुदिनीदयिते मृगसंस्थिते भृगुसुतेन जनो ननु वीक्षिते॥५९॥ महालसो मन्दधनस्त्वसत्यो मलीमसः स्याद्व्यसनाभिभूतः। पीयूषमूर्तिर्यदि चक्रवर्ती त्रिमूर्तिपुत्रेण निरीक्ष्यमाणः॥६०॥ कृषीवलः कैतवसंयुतश्च नृपाश्रितो धर्मरतो नरः स्यात्। पीयूषमूर्तिर्यदि कुम्भगामी त्वम्भोजिनीस्वामिनिरीक्ष्यमाणः॥६१॥ धनभवनजनित्रीतातविश्लेषयुक्तो विषमतमपदार्थोत्पादको ऽनल्पजल्पः। भवति मलिनचित्तो ऽत्यन्तधूर्तो हि मर्त्यः शशिनि कलशयाते वीक्षिते सूनुतेन॥६२॥ विषयसौख्यरतो ऽशनसंक्रियाकचिरतीव शुचिः प्रियभाषणः। युवतिगीतसुनीतिकृतादरो घटगतेन्दुरिहज्ञनिरीक्षितः॥६३॥ महीपुरग्रामसुखादि गौरवं भोगान्वितं साधुजनप्रवृत्तिम्। कुर्यान्नरं श्रेष्ठतमं घटस्थो निशाकरः शुक्रगुरुप्रदृष्टः॥६४॥ मित्रात्मजस्त्रीगृहसौख्यहीनो दीनो जनोत्सारितगौरवः स्यात्। निशाकरे कुम्भधरे प्रसूतौ संवीक्षिते दानवपूजितेन॥६५॥ खरोष्ट्रबालाश्वतरादिलाभं कुस्त्रीरतं धर्मविरुद्धवृत्तिम्। करोति मर्त्यं हि घटे ऽधितिष्ठन्निशाकरो भास्करसूनुदृष्टः॥६६॥ मनोद्भवो त्कर्षमतीव सौख्यं सेनापतित्वं बहुवृत्तिवृद्धिम्। सत्कर्मसिद्धिं कुरुते हिमांशौ झषे दिनेशेन निरीक्ष्यमाणे॥६७॥ पराभिभूतं कुलटाधिसख्यं सौख्योज्झितं पापरतं नितान्तम्। करोति जातं हि निधिः कलानां मीनस्थितो भूमिसुतेन दृष्टः

॥६८॥ वराङ्गना सूनु सुखानि नूनं मानं धनं भूमिपतेः प्रसादम् । कुर्य्यान्नराणां हरिणांक एषो वैसारिणस्थोऽज्ञनिरीक्ष्यमाणः ॥६९॥ उदार देहं सुकुमार देहं सद्गेहिनी सूनु धनादि सौख्यम् । नृपं विदध्यात्पृथुरोमगामी तमीपतिर्वाक्पति वीक्षितश्चेत् ॥७०॥ सद्गीतविद्यादिरतं सुवृत्तं विलासिनी केलि विलास शीलम् । करोति मर्त्यं तिमियुग्म राशौ शीतद्युतिर्जन्मनि शुक्र दृष्टः ॥७१॥ कामातुरं दारसुतैर्विहीनं नीचाङ्ग सख्यमविक्रमं च । नीहाररश्मिः शफरं प्रपन्नो नरं विदध्याद्रवि सूनु दृष्टः ॥७२॥

टीका॥ यदि मेष राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक उग्रस्वभाव का होते हुए भी विवेकीजनों के समक्ष विनम्र रहने वाला, धीर, राजा से सम्मान पाने वाला एवं झगड़े से डरने वाला होता है ॥१॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक को विष, अग्नि, वायु तथा शस्त्र से भय होता है और मूत्रकृच्छ्, दन्त-रोग, नेत्र-रोग होते हैं तथा किसी बड़े आदमी का आश्रय प्राप्त होता है ॥२॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक संसार में निर्मल यश पाने वाला, समस्त विद्याओं का ज्ञाता तथा धन-धान्य युक्त होता है ॥३॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजा या राजमन्त्री अथवा सेनापति होता है एवं अपने कुलानुसार सब प्रकार के वैभव से सम्पन्न होता है ॥४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक वस्त्र, आभूषण, धन, स्त्री, पुत्रादि के सुख से युक्त, भोगी, सुवक्ता एवं क्रोध-रहित होता है ॥५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक रोगी, हतचित्त, निर्धन, मिथ्यावादी, तथा लोक में अनादर पाने वाला होता है ॥६॥

यदि वृष राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कृषि-कर्म में निपुण, विधिज्ञाता, मान्त्रिक, वाहन तथा धान्य युक्त, अत्यन्त चतुर तथा अपना कार्य सिद्ध करने में परम प्रवीण होता है ॥७॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक कामातुर, स्त्रियों का मन हरने वाला, सज्जनों का मित्र, अत्यन्त पवित्र एवं प्रसन्न बना रहने वाला होता है ॥८॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक पण्डित, व्यवहार-कुशल,

दयालु, प्रसन्नचित्त, पराये हित में संलग्न रहने वाला तथा गुणवान् होता है ॥ ९ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक
स्त्री-पुत्रादि से सुखी, कीर्तिमान्, धर्म-कर्म करने वाला, माता-पिता का भक्त तथा सुखी होता है ॥१०॥ यदि
शुक्र की दृष्टि हो तो जातक वस्त्र, आभूषण, गृह, आसन, शय्या, गंध, माला आदि भोग्य वस्तुओं तथा पशुओं
का सुख पाने वाला होता है ॥ ११॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक के माता-पिता की पूर्वार्द्ध-चन्द्र एवं
उत्तरार्द्ध-चन्द्र के अनुसार क्रमशः मृत्यु होती है ॥ १२॥

यदि मिथुन राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्वान्, सुशील, परन्तु
धन-हीन एवं कष्ट युक्त तथा सबको प्रसन्न करने वाला होता है ॥ १३॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक
की पत्नी उदार-हृदय वाली होती है और वह स्वयं चतुर, शूर-वीर, पण्डित, विवेकी तथा धन-वाहन-
सम्पन्न होता है ॥ १४॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक धीर, सदाचारी, उदार-हृदय एवं राजा से धन-ला-
-भ पाने वाला होता है ॥ १५॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक विद्वान्, विनम्र, विवेकी, धनी, सुविख्यात,
तथा पुण्यात्मा होता है ॥ १६॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक वस्त्र, सुगन्ध, माला, धन, धान्य तथा स्त्री,
वाहन एवं आभूषण आदि से सुखी एवं सम्पन्न होता है ॥१७॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्त्री,
पुत्र, धन, वाहन आदि से हीन होता है ॥ १८॥

यदि कर्क राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक लोगों को अकारण ही
कष्ट देने वाला तथा राज्याश्रय पाकर किसी दुर्ग का अधिपति अथवा प्रबन्धक होता है ॥ १९॥ यदि
मंगल की दृष्टि हो तो जातक कार्य-कुशल, शूर-वीर, माता का विरोधी कृश-शरीर वाला होता है ॥२०॥
यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-पुत्र एवं धन-धान्यादि से सुखी, नीतिज्ञ, सेनापति अथवा राजा
का मन्त्री होता है ॥ २१॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजा का विश्वासपात्र, अधिकारी, गुणवान्,

नीतिज्ञ एवं सुखी तथा पराक्रमी होता है ।। २२।। यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक रत्न, स्वर्ण, आभूषण एवं स्त्री आदि के सुख से सम्पन्न होता है ।। २३।। यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक मिथ्यावादी, माता का विरोधी, निरर्थक-भ्रमण करने वाला, पापी तथा धन-हीन होता है ।।२४।।

यदि सिंह राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गुणी, राजा का प्रिय, उच्च पद पाने वाला, परन्तु सन्तान-सुख से हीन होता है ।। २५।। यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक धन, स्त्री, पुत्र एवं वाहनादि के सुख से सम्पन्न होता है ।। २६।। यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक धन, स्त्री, वाहन एवं सन्तानादि के सुख से पूर्ण होता है ।।२७।। यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक सब विषयों का जानकार, सज्जनता के कारण सुविख्यात तथा राजा का प्रमुख सहयोगी (उच्च पदाधिकारी) होता है ।। २८।। यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक श्रेष्ठ स्त्री, धन आदि से युक्त, गुणवान्, गुणग्राही तथा व्यवहार-कुशल होता है ।। २९।। यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-हीन, कृषि-कर्म करने वाला, दुर्ग का अधिकारी तथा अल्प धनी होता है ।। ३०।।

यदि कन्या राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजा का कोषाध्यक्ष, सदाचारी, स्त्री-रहित एवं गुरुजनों का भक्त होता है ।। ३१ ।। यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक हिंसक, शूर-वीर, क्रोधी, राजा का आश्रित एवं युद्ध जयी होता है ।।३२।। यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक ज्योतिष, काव्य-सङ्गीत आदि का ज्ञाता, शास्त्रज्ञ, यशस्वी, युद्धजयी, विनम्र, परन्तु मानी (स्वाभिमानी) होता होता है ।। ३३।। यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक अनेक भाइयों तथा मित्रों से युक्त, राजा का प्रिय, सदाचारी तथा श्रेष्ठ कीर्ति वाला होता है ।। ३४।। यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, पत्नी का प्रिय तथा राजा द्वारा धन-लाभ प्राप्त करने वाला होता है ।। ३५।। यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक

अकिंचन, बुद्धि-हीन, स्त्री के आश्रय से धन-लाभ करने वाला तथा मातृ-हीन होता है ॥ ३६॥

यदि तुला राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सदैव भ्रमण करने वाला, सुख, धन, स्त्री तथा पुत्र से हीन एवं अपने मित्र तथा अमित्रों से संतप्त रहता है ॥ ३७॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक पराया अहित करने की बुद्धि रखने वाला, मायावी तथा विषयासक्त होता है ॥ ३८॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक कलाओं का ज्ञाता, धन-धान्य युक्त, सुवक्ता, विद्वान् तथा धनी होता है ॥ ३९॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक चतुर एवं वस्त्राभूषणों के क्रय-विक्रय में प्रवीण होता है ॥ ४०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक पण्डित, अनेक प्रकार के उद्योगों से धन कमाने वाला, राजा का प्रिय तथा पुष्ट शरीर वाला होता है ॥ ४१॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक धन-धान्य एवं उत्तम वाहनादि से युक्त तथा विषयों से विरक्त होता है ॥ ४२॥

यदि वृश्चिक राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक श्रेष्ठ व्यवहार से रहित, धनी, लोगों में अप्रिय, परिश्रमी तथा सेनाधिकारी होता है ॥ ४३॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक युद्धजयी, गंभीर, गौरव युक्त एवं राजा की कृपा से धन-लाभ करने वाला होता है ॥ ४४॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक वाक्पटु, युद्ध-प्रिय, गीत-नृत्यादि का ज्ञाता एवं कूटनीतिज्ञ होता है ॥ ४५॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक लोक-प्रिय, सुन्दर रूप वाला, सदाचारी एवं धन, वस्त्र तथा आभूषणादि से युक्त होता है ॥ ४६॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्नचित्त, उदार, यशस्वी, कूट-क्रिया-विशेषज्ञ, धन-वाहन से युक्त तथा स्त्री के निमित्त धन खर्च करने वाला होता है ॥ ४७॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्थान-भ्रष्ट, दीन-दुःखी, अल्पधनी, अधम सन्तान वाला, अल्पपराक्रमी तथा यक्ष्मा रोग से पीड़ित होता है ॥ ४८॥

यदि धनु राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त प्रतापी, यशस्वी,

धन-वाहनादि से युक्त, संग्रामजयी तथा राजा का प्रिय होता है ॥ ४९॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक सेनापति, अत्यन्त प्रतापी एवं सब प्रकार की सम्पत्ति तथा वस्त्राभूषणों से युक्त होता है ॥५०॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक प्रियवादी, सेवकों का सुख पाने वाला, ज्योतिषी तथा शिल्पज्ञ होता है ॥५१॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक उच्चपद पाने वाला, धनी, सदाचारी तथा सुन्दर शरीर वाला होता है ॥५२॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सन्तान, धन तथा धर्म से युक्त एवं सदा सुखी रहने वाला होता है ॥५३॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक बलवान्, शास्त्रानुरक्त, सत्यवादी एवं प्रचण्ड स्वभाव का होता है ॥५४॥

यदि मकर राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धनहीन, मलिन, भ्रमणशील, बुद्धिहीन तथा दुःखी होता है ॥ ५५॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त प्रचण्ड, धन-वाहनादि से युक्त, विद्वान् तथा स्त्री-पुत्रादि से सुखी वैभव-सम्पन्न होता है ॥ ५६॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक बुद्धिहीन, निर्धन, गृहहीन तथा स्त्री-पुत्रादि से परित्यक्त होता है ॥ ५७॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजकुल में उत्पन्न, सत्यवादी, गुणग्राही एवं स्त्री-पुत्रादि के सुख से सम्पन्न होता है ॥ ५८॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर नेत्रों वाला, धन-वाहनादि से युक्त तथा स्त्री-पुत्र, वस्त्राभूषणादि से सुखी एवं सम्पन्न बना रहता है ॥ ५९॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त आलसी, अल्पधनी, असत्यवादी, मलिन तथा व्यसनासक्त होता है ॥ ६०॥

यदि कुंभ राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कृषि-कर्म करने वाला, धूर्त, राजा का आश्रित एवं धर्मात्मा होता है ॥ ६१॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक धन, भवन, माता एवं पिता से रहित, विषम पदार्थों को उत्पन्न करने वाला, अत्यधिक बोलने वाला, मलिन-हृदय तथा धूर्त होता है ॥ ६२॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक विषय-सुखों में आसक्त, भोजन में रुचि रखने वाला,

अत्यन्त पवित्र हृदय वाला तथा मधुरभाषी होता है ॥ ६३ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक कृषि, नगर एवं ग्राम आदि से सुखी, भोगी, साधुजनों का प्रेमी तथा श्रेष्ठ पुरुष होता है ॥ ६४ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक मित्र, पुत्र, स्त्री तथा गृह के सुख से रहित, दीन-दुःखी एवं लोक-निन्दित होता है ॥ ६५ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक गदहा, ऊँट, हरिण, खच्चर आदि पशुओं के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला, दुष्ट-स्त्री से प्रेम करने वाला तथा धर्म-विरुद्ध आचरण करने वाला होता है ॥ ६६ ॥

यदि मीन राशि स्थित चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कामी, सुखी, सेनापति, धन की वृद्धि करने वाला एवं अपने काम को सिद्ध करने वाला होता है ॥ ६७ ॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुओं से पराजित, कुलटा-स्त्री से प्रेम करने वाला, सुख-हीन तथा पापी होता है ॥ ६८ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक श्रेष्ठ स्त्री-पुत्रादि से सुखी, मानी, धनी तथा राजा का प्रिय होता है ॥ ६९ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त उदार, कोमल शरीर वाला, सुशीला स्त्री वाला, सत्पुत्रवान् तथा धन-धान्यादि से सुखी होता है ॥ ७० ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सङ्गीत-वाद्य में निपुण, सदाचारी, गुणी स्त्री के साथ से सुखी एवं विलासिनी-स्त्रियों के साथ सुन्दर विलास करने वाला होता है। यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक कामातुर, स्त्री-पुत्र के सुख से हीन, नीच-स्त्री से प्रेम करने वाला एवं पराक्रम-हीन होता है ॥ इति चन्द्र प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥

अथ मेषादि गृहे भौम प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥ प्रायः सुवक्ता पितृ मातृ भक्तो धनी प्रधानोऽतितरामुदारः ॥ नरो भवेदात्मगृहे महीजे सरोजिनी राज निरीक्ष्यमाणे ॥ १ ॥ अन्याङ्गनासक्त मतीव शूरं कृपाविहीनं हत चौर वर्गम् । नरं प्रकुर्यान्निज धामगामी भूमीतनूजो द्विजराज दृष्टः ॥ २ ॥ पण्यांगना लंकरणैक वृत्तिर्विनय कोऽन्यद्रविणापहारी। भवेन्नरः स्वर्क्षगते प्रसूतौ क्षोणीसुते सोमसुतेन दृष्टे ॥ ३ ॥

वंशेऽवनीशो धनवान्सकोपो नृपोपचारः कृतचौर सख्यः। आरे निजागारगतेऽम्बरः स्यात्सूतौ सुराचार्य निरीक्ष्य-माणे ॥ ४॥ भूयो भूयो भोजनौत्सुक्य युक्तः कांताहेतोर्यानचिन्ता नितान्तम्। प्राणी पुण्ये कर्मणि प्रीतिमान्स्यात्स्वर्क्षे भौमे भार्गवेण प्रदृष्टे ॥ ५॥ मित्रोज्झितं मातृवियोगतप्तं कृशाङ्ग्यष्टिं विषमं कुटुम्बे। ईर्ष्याविशेषं पुरुषं विदध्यात्कुजः स्वभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टे ॥ ६॥ कान्ता मनोवृत्तिविहीनमुच्चैर्वनाद्रिसंस्थानरुचिं विपक्षम्। प्रचण्डकोपं कुरुते मनुष्यं कुजः सितागारगतोऽर्कदृष्टः ॥ ७॥ अम्बाविरुद्धः खलु युद्धभीरुर्वह्वङ्गनानामपि नायकश्च। स्यान्मानवो भूतनये सितर्क्षे नक्षत्रनाथेन निरीक्ष्यमाणे ॥ ८॥ शास्त्रप्रवृत्तिः कलहप्रियः स्यादनल्पजल्पोऽल्पधनागमश्च। सत्काय कांतिः पृथिवीतनूजे सितालयस्थे शशिजेन दृष्टे ॥ ९॥ बन्धुप्रियः स्यान्निरतोऽति भाग्यः सद्गीतिनृत्यादिविधिप्रवीणः। क्षोणीतनूजे भृगुजर्क्षयाते निरीक्षिते वाक्पतिना प्रसूतौ ॥ १०॥ सुश्लाघ्यनामा क्षितिपालमन्त्री सेनापतिर्वा बहुसौख्ययुक्तः। स्यान्मानवः शुक्रगृहोपयाते निरीक्षिते भूमिसुते सितेन ॥ ११॥ ख्यातो विनीतो धनवान्सुमित्रः पवित्रबुद्धिः कृतशास्त्रयत्नः। नरः पुरग्रामपतिः सितर्क्षे भूनन्दने भानुसुतेन दृष्टे ॥ १२॥ विद्याधनैश्वर्ययुतं ससत्त्वमरण्यदुर्गाचलकेलिशीलम्। कुर्यान्नरं सोमसुतालयस्थः क्षोणीसुतः सूर्यनिरीक्ष्यमाणः ॥ १३॥ संरक्षणे भूप-तिना नियुक्तं कांतारतिं सत्त्वयुतं सतोषम्। भूमीसुतः संजनयेन्मनुष्यं बुधर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥ १४॥ अनल्पजल्पं गणितप्रगल्भं काव्यप्रियं चानृतचारुवाक्यम्। दौत्ये प्रयासैः सहितं प्रकुर्याद्धरातनूजो ज्ञगृहे ज्ञदृष्टः ॥ १५॥ अन्यदेशगमनं व्यसनाद्यैः संयुतं हि कुरुते नरमुच्चैः। सोमसूनुभवनेऽवनिसूनुर्दानवारिसचिवेन च दृष्टः ॥ १६॥ वस्त्रान्नपानीयसुखैः समेतं कान्ताप्रसक्तं सुतरां समृद्धम्। कुर्यान्नरो भूमिसुतो बुधर्क्षसंस्थः प्रदृष्टो भृगुनंदनेन ॥ १७॥ अतीव शूरो मलिनोऽलसश्च दुर्गाचलारण्यविलासशीलः। भवेन्नरो भास्करपुत्रदृष्टे धरासुते सोमसुतालयस्थे ॥ १८॥ पित्तप्रकोपार्तियुतोऽतिधीरो दण्डाधिकारी सुतरां महौजाः। भवेन्नरः कर्कगते महीजे निरीक्ष्यमाणे रविणा प्रसूतौ ॥ १९॥ गदाभिभूतो गतवस्तुशोको विहीनवेषो गतसाधुवृत्तः। भवेन्नरः कर्कटगे

भृ० सं० ३८८

महीजे सोमेन सूतौ च निरीक्ष्यमाणे ॥२०॥ मित्रैर्विमुक्तोऽल्पकुटुम्बभारः पापप्रचारः खलचित्तवृत्तिः। बुधेन दृष्टे सति कर्कटस्थे भौमे नरः स्याद्व्यसनाभिभूतः ॥२१॥ नरेन्द्रमन्त्री गुणगौरवाढ्यो मान्यो वदान्यो मनुजः प्रसिद्धः। कुलीरसंस्थे तनये धरित्र्या निरीक्षिते चित्रशिखण्डिजेन ॥२२॥ अर्थक्षयो दुर्व्यसनेन नूनं निरन्तरानर्थसमुद्भवः स्यात्। भवेन्नराणां भृगुणा प्रदृष्टे त्वङ्गारके कर्कटराशिसंस्थे ॥२३॥ कीलालधान्यादिधनः सुकान्तिर्महीपतिप्राप्तधनो मनुष्यः। महीसुते कर्कटराशिसंस्थे निरीक्षिते सूर्यसुतेन सूतौ ॥२४॥ हितप्रकर्ताऽभिमतेषु नूनं द्विषज्जनानामहितप्रदाता। वनादिकुञ्जेषु कृतप्रचारः सिंहे महीजे रविणा प्रदृष्टे ॥२५॥ प्रपुष्टमूर्तिः कठिनस्वभावश्चा-चालिनीतो निपुणः स्वकार्ये। तीव्रः पुमांश्चारुमतिः प्रसूतौ सिंहे महीजे द्विजराजदृष्टे ॥२६॥ सत्काव्यशिल्पादिकलाकलापे विज्ञोऽपि लुब्धप्रचलचित्तवृत्तिः। स्वकार्यसिद्धौ निपुणो नरः स्यात्सिंहे महीजे शशिजेन दृष्टे ॥२७॥ प्रशस्तबुद्धिर्नृपतेः सुहृच्च सेनाधिनाथोऽभिमतो बहूनाम्। विद्याप्रवीणो हि नरः प्रसूतौ जीवेक्षिते सिंहगते महीजे ॥२८॥ गर्वोन्नतोऽत्पन्नशरीरकान्तिर्नानाङ्गनाभोगयुतः समृद्धः। भूमीसुते सिंहगते प्रसूतौ निरीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥२९॥ भवेन्निवासोऽन्यगृहेऽन्यचिन्ता वृद्धाकलत्रं द्रविणोज्झितत्वम्। भवेन्नराणां धरणीतनूजे सिंहस्थिते भानुसुतेन दृष्टे ॥३०॥ वनाद्रिदुर्गेषु कृताधिवासं क्रूरं सभाग्यं जनपूजितं च। करोति जातं धरणीतनूजो जीवर्क्षयातस्तरणिप्रदृष्टः ॥३१॥ विद्वद्विद्विष्टं नृपतेरसह्यं कलिप्रियं सर्वनिराकृतं च। प्राज्ञं प्रकुर्यान्मनुजं धराजो जीवर्क्षगः शीतकरप्रदृष्टः ॥३२॥ प्राज्ञं च शिल्पे निपुणं सुशीलं समस्तविद्याकुशलं विनीतम्। करोति जीवं खलु लोहिताङ्गः सौम्येन दृष्टो गुरुगेहयातः ॥३३॥ कान्तातिचिन्तासहितं नितान्तमरातिवर्गैः कलहानुरक्तम्। स्थानच्युतं भूमिसुतः प्रकुर्याज्जीवेक्षितो जीवगृहाधिसंस्थः ॥३४॥ उदारचेता विनयानुरक्तो विचित्रभू-षा परिभूषितश्च। भाग्यान्वितः सत्पुरुषोऽवनीजे जीवर्क्षगे दानवपूज्यदृष्टे ॥३५॥ कायकान्तिरहितश्चनितान्तं स्थानसंचलतोऽपि च दुःखी। अन्यकर्मनिरतश्च नरः स्याज्जीवधाम्नि कुसुतेर्कजदृष्टे ॥३६॥ कलत्र

भा० टी०

पुत्रार्थ सुखैः समेतं श्यामं सुतीक्ष्णं सुतरां च शूरम्। कुर्य्यान्नरं भूतनयोऽर्कदृष्टश्चार्कात्मजागारगतः प्रसूतौ ॥३७॥ सद्भूषणं मातृसुखेन हीनं स्थानच्युतं चञ्चलसौहृदं च। उदारचित्तं प्रकरोति जातं कुजोऽर्कजर्क्षे शशिना प्रदृष्टः ॥३८॥ प्रियोक्तियुक्तोऽटनलब्धवित्तो सत्वान्वितः कैतवसंयुतश्च। अभीर्नरो मन्दगृहं प्रयाते पृथ्वीसुते चन्द्रसुतेन दृष्टे ॥३९॥ दीर्घायुषं भूपकृपागुणाढ्यं बंधुप्रियं चारुशरीरकांतिम्। कार्यं प्रलापं जनयेन्मनुष्यं जीवेक्षितो मन्दगृहे महीजः ॥४०॥ सद्भोगसौभाग्यसुखैः समेतः कांताप्रियोऽत्यंतकलिप्रियश्च। क्षोणीसुते मन्दगृहं प्रयाते निरीक्ष्यमा-णे भृगुणा नरः स्यात् ॥४१॥ नृपात्तवित्तो वनिताविपक्षी बहुश्रुतोऽत्यन्तमतिः सकष्टः। रणप्रियः स्याद्रणीतनू-जे मन्देक्षते मन्दगृहं प्रयाते ॥४२॥

टीका ॥ यदि अपनी मेष अथवा वृश्चिक राशि स्थित मङ्गल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्राज्ञ (विद्वान्), सुवक्ता, माता-पिता का भक्त, धनी, प्रधान पद पाने वाला और अत्यन्त उदार स्वभाव का होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक पर-स्त्री में आसक्त, अत्यन्त शूर-वीर, दया-रहित तथा चोरों को नष्ट करने वाला होता है ॥२॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक वेश्याओं से प्रेम कर, उन्हें वस्त्राभूषण देने वाला, चतुर तथा पराये धन का अपहरण करने वाला होता है ॥३॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक अपने कुल में श्रेष्ठ, धनी, क्रोधी, राजा के समान उपचारों वाला एवं चोरों का मित्र होता है ॥४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक बारम्बार भोजन करने का इच्छुक, स्त्री तथा वाहन के हेतु चिन्तित रहने वाला एवं पुण्य कर्मों में प्रीति रखने वाला होता है ॥५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक मित्र एवं माता के वियोग से दुःखी, कृश-शरीरवा-ला, कुटुम्ब-विरोधी तथा ईर्ष्यालु होता है ॥६॥

यदि वृष अथवा तुला राशि स्थित मङ्गल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अपनी स्त्री से अल्प प्रेम करने वाला, वन-प्रदेश में भ्रमण करने वाला, लोक-प्रतिकूल चलने वाला तथा अत्यन्त क्रोधी

होता है ॥७॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो मातृ-विरोधी, युद्ध-भीरु तथा अनेक स्त्रियों का नायक होता है ॥८॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक शास्त्रज्ञ, झगड़ालू-प्रकृति का, अधिक बोलने वाला, अल्पधनी तथा सुन्दर शरीर वाला होता है ॥९॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक बन्धु-प्रिय, अत्यन्त भाग्यशाली एवं गीत-नृत्यादि का ज्ञाता होता है ॥१०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त यशस्वी, राजा का मन्त्री अथवा सेनापति तथा सब सुखों से युक्त होता है ॥११॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक लोक-विख्यात, विनयी, धनी, श्रेष्ठ मित्रों वाला, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ तथा नगर अथवा गाँव का अधिपति होता है ॥१२॥

यदि मिथुन अथवा कन्या राशि स्थित मङ्गल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्या, धन एवं प्रभुत्व सम्पन्न, पराक्रमी तथा दुर्ग, वन एवं पर्वतों में विहार करने वाला होता है ॥१३॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक राजा द्वारा नियुक्त संरक्षक अथवा सुरक्षा विभाग का अधिकारी, स्त्री-प्रेमी, बलवान् तथा सन्तोषी स्वभाव का होता है ॥१४॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक अधिक बोलने वाला, गणित में योग्य, काव्य-प्रिय, असत्य एवं प्रिय बोलने वाला तथा दूतकर्म को कुशलता पूर्वक करने वाला होता है ॥१५॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक परदेशवासी एवं व्यसनासक्त होता है ॥१६॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक वस्त्र, आभूषण, अन्न-पानादि के सुख से सम्पन्न, स्त्री में आसक्त तथा अत्यन्त धनी होता है ॥१७॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त शूर-वीर, मलिन, आलसी तथा दुर्ग, पर्वत एवं वन में विचरण-विहार करने वाला होता है ॥१८॥

यदि कर्क राशि स्थित मङ्गल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक पित्त से पीड़ित, अत्यन्त धैर्यवान्, दण्डाधिकारी तथा महान् बलशाली होता है ॥१९॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक रोग-पीड़ित, खोई हुई वस्तु के शोक से दुःखी, कुत्सित-वेष वाला एवं अनाचारी होता है ॥२०॥ यदि बुध की

दृष्टि हो तो जातक मित्र-विहीन, थोड़े कुटुम्ब वाला, दुराचारी एवं दुष्ट-चित्तवृत्ति वाला होता है ॥ २१॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजा का मन्त्री, गुण तथा गौरव से युक्त, लोकमान्य, दानी और प्रसिद्ध पुरुष होता है ॥२२॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक दुर्व्यसनों के कारण धन नष्ट करने वाला एवं निरन्तर अनुचित-कर्म करने वाला होता है ॥ २३॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक दूध-दही-धान्यादि धनों से धनी, सुन्दर रूपवान् तथा राजा से धन-लाभ पाने वाला होता है ॥ २४॥

यदि सिंह राशिस्थ मण्डल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अपने लोगों का हित करने वाला, शत्रु-नाशक एवं वन, पर्वत आदि में विहार करने वाला होता है ॥ २५॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक पुष्ट-देह वाला, कठिन प्रकृति वाला, मातृ-भक्त, स्वकार्य-कुशल, तीक्ष्ण स्वभाव का तथा बुद्धिमान् होता है ॥२६॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक काव्य, शिल्प आदि कलाओं में निपुण, विद्वान्, लोभी, चञ्चल-प्रकृति का तथा स्व-कार्य-साधन में कुशल होता है ॥ २७॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक कुशाग्र-बुद्धि, राजा का प्रिय, सेनापति, अनेक लोगों का प्रिय तथा विद्या-प्रवीण होता है ॥२८॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक गौरवोन्नत, अत्यन्त सुन्दर, अनेक स्त्रियों के साथ विलास करने वाला एवं सदैव सम्पत्तिशाली होता है ॥ २९॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक पराये घर में रहने वाला, अत्यधिक चिन्तायुक्त, युवावस्था में ही वृद्ध तुल्य दिखाई देने वाला एवं निर्धन होता है ॥ ३०॥

यदि धनु अथवा मीन राशिस्थ मण्डल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक वन, पर्वत एवं दुर्ग में निवास करने वाला, क्रूर स्वभाव का, भाग्यशाली तथा लोक में आदर पाने वाला होता है ॥ ३१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक विद्वान्, व्यवहार-कुशल, राजा को अप्रिय, कलह-प्रिय, सबसे अलग रहने वाला तथा बुद्धिमान् होता है ॥ ३२॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक

विद्वान्, शिल्प-विद्या में निपुण, सुशील, समस्त विद्याओं में कुशल तथा विनम्र स्वभाव का होता है ॥ ३३॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक स्त्री के लिए अत्यधिक चिन्तातुर, शत्रुओं के साथ कलह-निरत एवं स्थान-च्युत अर्थात् पदावनति पाने वाला होता है॥ ३४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक उदार-हृदय, विषयास-क्त, अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों से युक्त, भाग्यशाली तथा सज्जन होता है ॥ ३५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक कान्ति-हीन देह वाला, अनेक स्थानों में भ्रमण करने वाला, दुःखी तथा दूसरों का काम अथवा नौकरी करने वाला होता है ॥३६॥

यदि मकर अथवा कुम्भराशिस्थित मङ्गल पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से सुखी, श्यामवर्ण, तीव्र-स्वभाव वाला तथा शूर-वीर होता है ॥ ३७॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक वस्त्राभूष-णादि से युक्त, मातृ-सुख-रहित, स्थान-च्युत, अस्थिर-मैत्री वाला तथा उदार-हृदय होता है ॥ ३८॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक प्रियवादी, भ्रमण से धन-लाभ पाने वाला, बलवान्, कपटी तथा निर्भय होता है ॥ ३९॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक दीर्घायु, राजा का कृपापात्र, गुणवान्, बन्धु-प्रिय, सुन्दर शरीर वाला तथा कार्य-सम्पादक होता है ॥ ४०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान्, भोग्य वस्तुओं के सुख से युक्त, स्त्रियों का प्रिय तथा कलह-प्रिय होता है ॥ ४१॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक राजा से धन पाने वाला, स्त्रियों का विरोधी, बहुश्रुत, अत्यन्त बुद्धिमान् कष्टयुक्त तथा युद्ध-प्रिय होता है ॥ ४२॥ इति भौम प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥

अथ मेषादि गृहे बुध प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥ बन्धुप्रियं सत्यवचो विलासं नृपालसद्गौरव संयुतं च। करोति जातं क्षितिसूनुगेहे सस्यो बुधो भानुमता प्रदृष्टः ॥१॥ सद्गीतनृत्यादिरुचिः प्रकामं कांतारतिर्वाहनभृत्ययुक्तः। कौटिल्यभाक्स्यान्मनुजः कुजर्क्षे सोमात्मजे शीतकरप्रदृष्टः ॥२॥ भूपप्रियं

भूरिधनं च शूरं कलाप्रवीणं कलहोद्यतं च। क्षुधान्वितं सञ्जनयेन्मनुष्यं सौम्यः कुजर्क्षे कुसुतेन दृष्टः ॥३॥ सुखोपपन्नं चतुरं सुवाग्म्यं कांतासुताद्यैः सहितं प्रसन्नम्। करोति मर्त्यं कुजगेहगामी सोमात्मजो वाक्पतिना प्रदृष्टः ॥४॥ कांतावि-लासं गुणगौरवाढ्यं सुहृत्प्रियं चारुमतिं विनीतम्। करोति जातं शशिजः कुजर्क्षे संस्थश्च शुक्रेण निरीक्ष्यमाणः॥५॥ सुसाहसं चोग्रतरस्वभावं कुलात्कलिप्रीतिमसाधुवृत्तिम्। करोति मर्त्यं हरिणाङ्कसूनुर्भौमर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥६॥ दारिद्र्यदुःखामयतप्तदेहं परोपकारगतिरतं नितांतम्। शांतं सुचित्तं पुरुषं प्रकुर्यात्सौम्यो भृगुक्षेत्रयुतोऽर्कदृष्टः॥७॥ बहुप्रपञ्चं धनधान्ययुक्तं दृढव्रतं भूमिपतिप्रधानम्। ख्यातं प्रकुर्यान्मनुजं हि सौम्यः शुक्रर्क्षसंस्थः शशिना प्रदृष्टः ॥८॥ राजापमानादिगदप्रतप्तं त्यक्तं सुहृद्भिर्विविधैश्च नूनम्। कुर्यान्नरं सोमसुतः सितर्क्षे स्थितो धरापुत्रनिरीक्ष्यमाणः ॥९॥ देशोत्तमो ग्रामपुराधिराजं प्राज्ञं गुणज्ञं गुणिनं सुशीलम्। कुर्यान्नरं चन्द्रसुतः सित-तर्क्षसंस्थः सुराचार्यनिरीक्ष्यमाणः ॥१०॥ अति सुललितवेषं वस्त्रभूषाविशेषं युवतिजनमनोज्ञं मन्मथोत्कर्ष-हर्षम्। अतिचतुरमुदारं चारुभाग्यं च कुर्याद् भृगुगृहगतसौम्यो भार्गवेण प्रदृष्टः ॥११॥ कलत्रमित्रात्मजया-न पीडासंतप्तचित्तं सुखवित्तहीनं। कुर्यान्नरं शत्रुजनाभिभूतं मंदेक्षितो ज्ञः सितधामगामी ॥१२॥ सत्यो-पेतं चारुलीलाविलासं भूमीपालात्प्राप्तमानोन्नतिं च। चञ्चत्क्षीणं चापि कुर्यान्मनुष्यं स्वक्षेत्रस्थश्चन्द्रपुत्रोऽर्क-दृष्टः ॥१३॥ अनल्पजल्पोऽमृततुल्यभाषी कलिप्रियो राजसमीपवर्ती। भवेन्नरः सोमसुते स्वगेहे निरीक्ष्य-माणे मृगलाञ्छनेन ॥१४॥ प्रसन्नगात्रं कुटिलं कलाज्ञं नरेन्द्रकृत्ये सुतरां प्रवीणम्। जनप्रियं सञ्जनयेन्मनुष्यं भौमेक्षितो ज्ञः स्वगृहेऽधिसंस्थः ॥१५॥ बलार्थसामर्थ्यविराजमानं सद्राजमानाप्तपदाधिकारम्। सुतं प्रकुर्या-न्निजमंदिरस्थः सौम्यः प्रदृष्टः सुरपूजितेन ॥१६॥ नरेन्द्रदूतो विजितारिवर्गः सन्धिक्रियामार्गविधिप्रगल्भः वाराङ्गनासक्तमनोभिलाषः शुक्रेक्षिते ज्ञे निजभे नरः स्यात् ॥१७॥ प्रारम्भसिद्धिं विनयं विशेषात्सद्वस्त्रभूषा-दिसमृद्धिमुच्चैः। कुर्यान्नराणाममृतांशुजन्मा स्वमन्दिरस्थो रविसूनुदृष्टः ॥१८॥ कांतानिमित्ताप्तमहाव्यली-

-को द्रव्यव्ययात्यन्तकृशांगयष्टिः । बहूपसर्गोऽपि भवेन्मनुष्यः कुलीरगे ज्ञे नलिनीशदृष्टेः ॥ १९ ॥ वस्त्रादिशुद्धौ मणिसंग्रहे
च गृहादिनिर्माणविधौ प्रवीणः । प्रसूनमालाग्रथनेऽपि मर्त्यः कुलीरगे ज्ञे शशिना प्रदृष्टे ॥ २० ॥ स्वल्पश्रुतं चार्थरतं च
शूरं प्रियंवदं कूटविधौ प्रवीणम् । कुर्य्यान्नरं शीतकरस्य सूनुः कुलीरसंस्थोऽवनिसूनुदृष्टः ॥ २१ ॥ प्राज्ञो विधिज्ञो विधि-
-नातिशाली सद्वाग्विलासोऽवनिपालमान्यः । स्यान्मानवो जन्मनि सोमसूनौ कुलीरगामिन्यमरेज्यदृष्टे ॥ २२ ॥ प्रियं-
वदश्चारुशरीरभाक् च सङ्गीतवाद्यादिविधौ प्रवीणः । स्यान्मानवो दानववंद्यदृष्टे कर्कटकस्थेऽमृतभानुसूनौ ॥ २३
गुणैर्विहीनं स्वजनैर्वियुक्तमलीकदम्भानुरतं कृतघ्नम् । करोति मर्त्यं परिसूतिकाले कुलीरगो ज्ञो रविसूनुदृष्टः ॥ २४ ॥
कृपाविहीनं च चलस्वभावं सेर्ष्यं च हिंसाभिरतं च रौद्रम् । क्षुद्रं प्रकुर्य्यान्मनुजं प्रसूतौ बुधोऽर्कदृष्टो मृगराजसंस्थः
॥ २५ ॥ रूपान्वितं चारुमतिं विनीतं सङ्गीतनृत्याभिरतं नितान्तम् । सद्वृत्तवृत्तं कुरुते हि मर्त्यं चन्द्रेक्षितः सिंहगतो बु-
धाख्यः ॥ २६ ॥ कन्दर्पसत्त्वोज्झितमुक्तवृत्तं क्षताङ्कितं हीनमतिं विचित्रम् । सुदुःखितं संजनयेत्पुमांसं भौमेक्षितः
सिंहगतश्च सौम्यः ॥ २७ ॥ कोमलामलरुचिः कुलवर्यश्चारुलोचनयुतश्च समर्थः । वाहनोत्तमधनो मनुजः स्यादि-
न्दुजे हरिगते गुरुदृष्टे ॥ २८ ॥ सद्रूपशाली प्रियवाग्विलासो नृपाश्रितो वाहनवित्तयुक्तः । भवेन्नरः सोमसुते प्रसूतौ सिंह
स्थिते दानववन्द्यदृष्टे ॥ २९ ॥ स्वेदोद्गमोद्भूतमहोग्रगंधं विस्तीर्णगात्रं च कुरूपमुग्रम् । सुखेनहीनं मनुजं प्रसु-
-यीन्मंदेक्षितः सिंहगतो यदि ज्ञः ॥ ३० ॥ शूलाश्मरीमेहनिपीडिताङ्गो सङ्कोज्झितः शान्तिमुपागतश्च । स्यात्पुरुषो गीष्प-
-तिवेश्मसंस्थे निशीथिनीस्वामिसुतेऽर्कदृष्टे ॥ ३१ ॥ लेखक्रियायां सुतरां प्रवीणः सुसंगतः साधुसुहृज्जनानाम् ।
नरः सुखी शीतमयूखपुत्रश्चन्द्रेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३२ ॥ परस्परा चोरवनिस्थिताश्च स्युर्लेखका धान्यधनैर्वि-
हीनाः । नरास्तु नीहारकरप्रसूतो जीवालये मंगलदृष्टदेहे ॥ ३३ ॥ विज्ञानशाली स्वकुलावतंसो नृपालकोशालयलेख-
कर्ता । भर्ता बहूनां मनुजस्तु सौम्ये जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३४ ॥ भूपामात्याप्तप्रलेखाधिकारं चौर्यासक्तं सौकु-
मार्येण युक्तम् । द्रव्योपेतं मानवं सोमसूनुर्जीवर्क्षस्थः शुक्रदृष्टः करोति ॥ ३५ ॥ बह्वन्नभोक्ता मलिनः कुवृत्तः कांतार-

दुर्गाचलवासशील: । कार्योपयुक्तो न भवेन्मनुष्यो जीवर्क्षगो ज्ञोऽर्कसुतेन दृष्ट: ॥३६॥ प्रारब्धकार्यकलितप्रतापं सन्मल्लविद्याकुशलं कुशीलम् । कुटुम्बिनं संजनयेन्मनुष्यं बुध: शनिक्षेत्रगतोऽर्कदृष्ट: ॥३७॥ जलोपजीवी धनवांश्च भीरु: प्रसूनकन्दो धामतत्परश्च । पुमान्भवेद्भानुसुतालयस्थे बुधे सुधारश्मिनिरीक्ष्यमाणे ॥३८॥ व्रीडालसस्तब्धतरस्वभाव: सौम्य: सुखी वाक्चपलोऽर्थयुक्त: । स्यान्मानवो भानुसुतर्क्षसंस्थे दृष्टेऽवजसूनो क्षितिनन्दनेन ॥३९॥ धान्यवाहनधनान्वित: सुखी ग्रामपत्तनपतिर्महामति: । भानुसूनुभवनेऽवजनन्दने देवदेवसचिवेक्षिते नर: ॥४०॥ बहुप्रजासंजनकं कुरूपं प्राज्ञोज्झितं नीचजनानुयातम् । कामाधिकं संजनयेन्मनुष्यं शुक्रेक्षितो ज्ञ: शनिगेहसंस्थ: ॥४१॥ सुखोज्झित: पापरतं च दीनमकिंचनं हीनजनानुयातम् । करोति मर्त्य: शनिधामसंस्थ: सौम्यस्तमोहंतृसुतेनदृष्ट: ॥४२॥

टीका ॥ मेष अथवा वृश्चिक राशि पर स्थित बुध पर यदि सूर्य की दृष्टि हो तो जातक बन्धुओं का प्रिय, सत्यवादी, एवं राजा से मान तथा प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक सङ्गीत एवं नृत्य में रुचि रखने वाला, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, वाहन तथा सेवक आदि से युक्त एवं कुटिल स्वभाव का होता है ॥२॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक राजा का प्रिय, अत्यन्त धनी, शूर-वीर, कला-कुशल, कलह-प्रिय तथा क्षुधान्वित अर्थात् बार-बार भोजन पाने की इच्छा रखने वाला होता है ॥३॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक सब प्रकार के सुखों से युक्त, प्रियवादी अर्थात् प्रिय-वचन बोलने वाला, स्त्री-पुत्र आदि से युक्त तथा सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है ॥ ४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-सुख से सुखी, गुणी, प्रतिष्ठित, मित्र-प्रिय, बुद्धिमान् तथा विनम्र-स्वभाव का होता है ॥५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक साहसी, उग्र-स्वभाव का, स्वबन्धुओं से कलह करने वाला तथा अनाचारी होता है ॥ ६॥

यदि वृष अथवा तुला राशि स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दारिद्र्य के कारण

दुःखी, रोग-पीड़ित, परोपकारी, शान्त-स्वभाव का तथा पवित्र हृदय वाला होता है ॥ ७ ॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त प्रपञ्ची, पूर्ण धनी, दृढ़-प्रतिज्ञ, राजा का प्रधान पुरुष अर्थात् उच्चपदस्थ राज्यकर्मचारी एवं लोक-विख्यात होता है ॥ ८ ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक राजा द्वारा अपमानित, रोग-पीड़ित, मित्रों से परित्यक्त तथा विषय-सुख-हीन होता है ॥ ९ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक देश, ग्राम अथवा नगर का अधिपति, विद्वान्, गुणी, गुणग्राही तथा सुशील स्वभाव का होता है ॥ १० ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर स्वरूपवान्, वस्त्राभूषणों से युक्त, स्त्रियों का प्रिय, अत्यन्त चतुर, उदार हृदय तथा भाग्यशाली होता है ॥ ११ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्त्री, पुत्र, मित्र एवं वाहन से कष्ट पाने वाला एवं सुख तथा धन से रहित होता है ॥ १२ ॥

यदि मिथुन अथवा कन्या राशि स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सत्यवादी, श्रेष्ठ हास्य-विलास से युक्त, राजा से सम्मान तथा उन्नति पाने वाला एवं कृश-शरीर वाला होता है ॥ १३ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक सत्यवादी, अधिक किन्तु प्रिय वचन बोलने वाला, कलह-प्रिय तथा राजा का समीपवर्ती होता है ॥ १४ ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्न-मुख, कुटिल, कला-मर्मज्ञ, राज कार्य करने वाला एवं लोक-प्रिय होता है ॥ १५ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त धनी, बलवान् एवं राज्य से सम्मान तथा अधिकार पाने वाला होता है ॥ १६ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक राजदूत, शत्रुजयी, सन्धि करने की कला में कुशल तथा वेश्या-प्रेमी होता है ॥ १७ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक किसी भी कार्य को आरम्भ कर उसमें सिद्धि (सफलता) पाने वाला, विनयी तथा वस्त्राभूषणादि से सुखी होता है ॥ १८ ॥

यदि कर्क राशि स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्त्री के द्वारा अपमानित,

धन के अधिक खर्च होजाने की चिन्ता से दुर्बल शरीर वाला तथा अनेक प्रकार के उत्पातों से युक्त होता है ॥१९॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक वस्त्रों की स्वच्छता, रत्नों के संग्रह, गृह-निर्माण तथा पुष्पादि की माला बनाने के कार्य में कुशल होता है ॥२०॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक अल्प-विद्वान, धन-संग्रह में तत्पर, शूर-वीर, प्रियवादी एवं नकली-वस्तुएं तय्यार करने में कुशल होता है ॥२१॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक विद्वान्, व्यवहार-कुशल, भाग्यशाली, प्रिय एवं सत्यवादी तथा राजमान्य होता है ॥२२॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक प्रियवादी, सुन्दर शरीर वाला, सङ्गीत-कुशल एवं वाद्य-वादन में पटु होता है ॥२३॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक गुणहीन, स्वजनों से रहित, मिथ्यावादी, दम्भी तथा कृतघ्न होता है ॥२४॥

यदि सिंह राशि स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक दयाहीन, चंचल स्वभाव का, ईर्ष्यालु, हिंसक, भयानक (रौद्र) तथा क्षुद्र हृदय का होता है ॥२५॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर रूपवान्, बुद्धिमान्, विनयी, सङ्गीत एवं नृत्य कुशल तथा सदाचारी होता है ॥२६॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक काम-वासना-रहित, आघात युक्त शरीर वाला, बुद्धिहीन तथा दुःखी होता है ॥२७॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक कोमल एवं निर्मल शरीर वाला, अपने कुल में श्रेष्ठ, सुन्दर नेत्रों वाला, सामर्थ्यशाली एवं श्रेष्ठ धन-वाहनादि से युक्त होता है ॥२८॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुन्दर स्वरूपवान्, प्रियवादी, राजा का आश्रित एवं धन-वाहन-सम्पन्न होता है ॥२९॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्वेदयुक्त दुर्गन्धित शरीर वाला, विशाल देही, कुरूप, उग्र-स्वभाव तथा सुख-हीन होता है ॥३०॥

यदि धनु अथवा मीन राशि स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक शूल, पथरी, प्रमेह आदि रोगों से पीड़ित, सङ्ग-हीन तथा शान्त-स्वभाव का होता है ॥३१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक लेखन-क्रिया-कुशल साधु तथा मित्रजनों का सङ्गी एवं सदैव सुखी रहने वाला होता है ॥३२॥

यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक वंश-परम्परागत चोर, वनवासी, लेखक, परन्तु धन-धान्य-विहीन होता है ॥ ३३॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक विज्ञानवेत्ता, स्वकुल में श्रेष्ठ, राजा का कोषाध्यक्ष एवं अनेक लोगों का पालन करने वाला होता है ॥ ३४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक राजा का मन्त्री अथवा प्रलेखाधिकारी, चोर-बुद्धि, सुकुमार शरीर वाला एवं धनी होता है ॥ ३५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो अधिक भोजन करने वाला, मलिन, अनाचारी; वन, पर्वत, दुर्ग आदि में रहने वाला किसी भी कार्य के अनुपयुक्त होता है ॥ ३६॥

यदि मकर अथवा कुम्भ राशि स्थित बुध पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अपने द्वारा आरम्भ किए गए कार्य को पूरा करने वाला, युद्ध-कला में निपुण, सुशील तथा भरेपूरे कुटुम्ब वाला होता है ॥ ३७॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जलोत्पन्न वस्तुओं से आजीविकोपार्जन करने वाला, धनी, डरपोक एवं कन्द, मूल, फल आदि का व्यवसाय करने वाला होता है ॥ ३८॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक लज्जा एवं आलस्य से पूर्ण, सौम्य स्वभाव का, वाक्-चपल तथा धनी होता है ॥ ३९॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक धन-धान्य एवं सवारी आदि से सुखी, ग्राम अथवा नगर का प्रधान एवं अत्यन्त बुद्धिमान होता है ॥ ४०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अधिक सन्तानों वाला, कुरूप, बुद्धिहीन, नीचों की सङ्गति में रहने वाला तथा कामी होता है ॥ ४१॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक सुखहीन, पापी, अकिंचन, दरिद्र तथा नीच लोगों की सङ्गति करने वाला होता है ॥ ४२॥ इति मेषादि राशिस्थिते बुध प्रति ग्रह-दृष्टि फलम् ॥

अथ मेषादि राशि स्थिते गुरु प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥ असत्यभीरुर्बहुधर्मकर्ता ख्यातश्च सद्भाग्ययुतो विनीतः । भवेन्नरो देवगुरौ प्रयाते भौमस्य गेहे रविदृष्टदेहे ॥१॥ ख्यातो विनीतो वनितानुयातः सतां मतो धर्मरतः प्रशान्तः । जातो भवेद् भूमिसुतर्क्षयाते वाचांपतौ शीतकरेण दृष्टे ॥२॥ क्रूरोऽतिधूर्तः परगर्वहर्त्ता नृपाश्रया-ज्जीवनवृत्तिकर्ता । भर्त्ता बहूनां ननु मानवः स्याज्जीवे कुजर्क्षे च कुजेन दृष्टे ॥३॥ सद्वृत्तसत्योत्तमवाग्विही-

नरिछद्रप्रतीक्षी प्रणयानुयातः। मर्त्यो भवेत्कैतव संप्रयुक्तो वाचस्पतौ भौमगृहे सुदृष्टे ॥४॥ गन्धमाल्यशय-
नासनभूषायोषिदम्बरनिकेतनसौख्यम्। संप्रयच्छति नृणां भृगुणा चेद्वीक्षितः सुरगुरुः कुजभस्थः ॥५॥ लुब्धं रौद्रं
साहसैः संयुतं च मित्रापत्योद्भूतसौख्योज्झितञ्च। कुर्यान्मर्त्ये निष्ठुरं देवमन्त्री धात्रीपुत्रक्षेत्रगो मन्दृदृष्टः ॥६॥
सङ्ग्रामविजयं क्षतगात्रं सामयं च बहुवाहनभृत्यम्। मन्त्रिणं हि कुरुते सुरमन्त्री दैत्यमन्त्रिगृहगो रविदृष्टः ॥७॥
सत्येन युक्तं सततं विनीतं परोपकाराभिरतं सुचित्तम्। सद्भाग्यभाजं कुरुते मनुष्यं जीवः सितर्क्षेऽमृतरश्मिदृष्टः
॥८॥ भाग्योपपन्नं सुतसौख्यभाजं प्रियंवदं भूपतिलब्धमानम्। नरं सदाचारपरं करोति भौमेक्षितेज्यो भृगुजा
लयस्थः ॥९॥ सन्मन्त्रविद्यानिरतं नितान्तं भाग्यान्वितं भूपतिलब्धवित्तम्। चंचत्कलाढ्यं पुरुषं प्रकुर्याद्गुरुर्भृगु
क्षेत्रगतो ज्ञदृष्टः ॥१०॥ धनान्वितं चारुविभूषणाढ्यं सद्वृत्तचित्तं विभवैः समेतम्। करोति मर्त्यं सुरराजमन्त्री
शुक्रालयस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥११॥ सत्पुत्रदारादिसुखैरुपेतं प्राज्ञं पुरग्रामभवोत्सवाढ्यम्। नरं प्रकुर्याच्चतुरं सुरेज्यो
दैत्येज्यभस्थोऽर्कसुतेन दृष्टः ॥१२॥ सत्पुत्रदारं धनमित्रसौख्यं श्रेष्ठप्रतिष्ठाप्तविराजमानम्। नरं प्रकुर्यात्सुरराज
मन्त्री रविप्रदृष्टो बुधवेश्मसंस्थः ॥१३॥ गुणान्वितं ग्रामपुरोपकारं विराजमानं बहुगौरवेण। कुर्यान्नरं देवगुरुर्बुध-
र्क्षसंस्थो निशानाथनिरीक्ष्यमाणः ॥१४॥ संग्रामसम्प्राप्तजयं क्षताङ्गं धनेन सारेण समन्वितं च। करोति जातं
विबुधेन्द्रमन्त्री बुधालयस्थः क्षितिसूनुदृष्टः ॥१५॥ सन्मित्रदारात्मजवित्तसौख्यो दक्षो भवेज्ज्योतिषशिल्पवेत्ता
स्याच्चारुभाषी पुरुषः प्रकामं जीवे बुधर्क्षे च बुधेन दृष्टः ॥१६॥ धनाङ्गनासूनुसुखैरुपेतः प्रासादवापीकूपेक्ष-
र्मचित्तः। भवेत्प्रसन्नः पुरुषः सुरेज्ये दैत्येजदृष्टे बुधवेश्मसंस्थे ॥१७॥ नरेन्द्रसद्गौरवसंप्रयुक्तं नित्योत्सवं
पूर्णगुणाभिरामम्। नरं पुरग्रामपतिं करोति गुरुर्ज्ञगेहे शनिना प्रदृष्टः ॥१८॥ दारात्मजार्थोद्भवसौख्यहानिं
पूर्वं च पश्चात्खलु तत्सुखानि। कुर्यान्नराणां हि गुरुः सुराणां कुलीरसंस्थो रविणा प्रदृष्टः ॥१९॥ नरेन्द्रको-
शाधिकृतं सुकान्तं सद्वाहनार्थादिसुखोपपन्नम्। सद्वृत्तचित्तं जनयेन्मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो शशिना हि दृष्टः

॥२०॥ कुमारदाराम्बरचारुभूषाविशेषभाजं गुणिनं च शूरम् । प्राज्ञं क्षताङ्गं कुरुते मनुष्यं कर्कस्थितेज्यो ऽवनिजेन
दृष्टः ॥२१॥ मित्राश्चयोत्पादितसर्वसिद्धिः सद्वृत्तिबुद्धिर्विलसत्प्रतापः । मंत्री नरः कर्कटराशिसंस्थे गीर्वाणवन्द्ये
शशिसूनुदृष्टे ॥ २२॥ बलाङ्गना वैभवमात्मजादि नानासुखानामुपलब्धयः स्युः । कुलीरयाते वचसामधीशे नि-
रीक्षिते दैत्यपुरोहितेन ॥२३॥ सन्मानभूषागुणचारुशीलः सेनापुरग्रामपतिर्नरः स्यात् । अनल्पजल्पः खलु
कर्कटस्थे वाचस्पतौ सूर्यसुतेन दृष्टे ॥२४॥ व्ययान्वितं ख्यातमतीव धूर्तं नृपाप्तवित्तं शुभकर्मचित्तम् ।
नरं प्रकुर्यात्सुरराजपूज्यः सूर्येण दृष्टो मृगराजसंस्थः ॥२५॥ प्रसन्नमूर्तिं गतचित्तशुद्धिं स्त्रीहेतुसंप्राप्त-
धनं वदान्यम् । कुर्यात्पुमांसं वचसामधीशः शशांकदृष्टः करिवैरिसंस्थः ॥२६॥ मान्यो गुरूणां गुणगौरवेण
सत्कर्मनिर्माणविधौ प्रवीणः । प्राणी भवेत्केसरिणि स्थिते ऽस्मिन्गीर्वाणवंद्ये ऽवनिजेन दृष्टे ॥२७॥ गृहादि-
निर्माणविधौ प्रवीणो गुणाग्रणीः स्यात्सचिवो नृपाणाम् । वाणीविलासे चतुरो नरः स्यात् सिंहस्थिते देवगु-
रौ ज्ञदृष्टे ॥२८॥ भूमिपतिप्राप्तमहापदस्थः कान्ताजनप्रीतिकरो गुणज्ञः । भवेन्नरो देवगुरौ हरिस्थे नि-
रीक्षिते चासुरपूजितेन ॥२९॥ सुखेन हीनं मलिनं सुवाचं कृशाङ्गयष्टिं विगतोत्सवं च । करोति मर्त्यं मरु-
ताममात्यः सिंहस्थितः सूर्यसुतेन दृष्टः ॥३०॥ राज्ञा विरुद्धमतीव नूनं सुहृज्जनेनापि च वैमनस्यम् । प्राप्नुते
गमः स्यान्नियतं नराणां जीवेऽर्कदृष्टे स्वगृहं प्रयाते ॥ ३१॥ सुगर्वितं भाग्यधनाभिवृद्ध्या क्रियाप्रियत्वाभि-
मतं विशेषात् । करोति जातं सुखिनं विनीतं चन्द्रेक्षितो देवगुरुः स्वभस्थः ॥३२॥ व्रणाङ्कितं सङ्गरकर्मद-
क्षं हिंसापरं क्रूरतरस्वभावम् । परोपकाराभिरतं प्रकुर्याद् गुरुः स्वभस्थः क्षितिजेन दृष्टः ॥३३॥ नृपाप्त-
अथ प्राप्तमहाधिकारो दाराधनैश्वर्यसुखोपपन्नः । परोपकारादरतैकचित्तो नरो गुरौ स्वर्क्षगते ज्ञदृष्टे ॥३४॥
सुखोपपन्नं सधनं प्रसन्नं प्राज्ञं सदैश्वर्यविराजमानम् । नूनं प्रकुर्यान्मनुजं सुरेज्यो दैत्येज्यदृष्टो निज-
मन्दिरस्थः ॥३५॥ पदच्युतं सौख्यसुतैर्विहीनं संग्रामसंजातपराभवं च । करोति दीनं स्वगृहे सुरेज्यः सू-

-र्यात्मजेन प्रविलोक्यमानः ॥३६॥ प्रसन्नकान्तिं शुभवाग्विलासं परोपकारादरतासमेतम्। कुले नृपालं कुरुते सुरेज्यो मंदालयस्थो यदि भानुदृष्टः ॥३७॥ कुलोद्वहस्तीव्रमतिः सुशीलो धर्मक्रियायां सुतरामुदारः। नरोऽभिमानी पितृमातृभक्तो जीवे शनिक्षेत्रगतेन्दुदृष्टे ॥३८॥ स्यादर्थसिद्धिर्नृपतेः प्रसादात्कीर्तिः सुखानामुपलब्धिरेव। सूतौ सुरेज्ये शनिमन्दिरस्थे निरीक्ष्यमाणे धरणीसुतेन ॥३९॥ शान्तं नितान्तं वनितानुकूलं धर्मक्रियार्थैर्निरतं नितान्तम्। करोति मर्त्यं मरुतां पुरोधा बुधेन दृष्टः शनिमन्दिरस्थः ॥४०॥ विद्याविवेकार्यगुणैः समेतः पृथ्वीपतिप्राप्तमनोभिलाषः। स्यात्पूरुषः सूर्यसुतर्क्षसंस्थे जीवे प्रसूतौ भृगुजेन दृष्टे ॥४१॥ कामं सकामं सुगुणाभिरामं सद्धार्थप्राप्तिं धनधान्ययुक्तम्। ख्यातं विनीतं कुरुते मनुष्यं मन्देक्षितो मन्दगृहस्थजीवः ॥४२॥

टीका॥ मेष अथवा वृश्चिक राशि स्थित गुरु पर यदि सूर्य की दृष्टि हो तो जातक असत्य से डरने वाला, धर्मात्मा, सुख्यात, भाग्यवान् तथा विनयी होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक लोक-विख्यात, विनम्र, स्त्री में आसक्त, सज्जनों का प्रिय, धर्मात्मा एवं शान्त स्वभाव का होता है ॥२॥ यदि मंगल की दृष्टि हो तो जातक क्रूर, धूर्त, शत्रु का गर्व हरने वाला, राजा के आश्रय से आजीविका प्राप्त करने वाला तथा अनेक लोगों का पालन करने वाला होता है ॥३॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक सदाचार, सत्य एवं प्रिय वचन से रहित, पराये अवगुण देखने वाला तथा विनम्रता से वश में होने वाला होता है ॥४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक पुष्प, चन्दन, माला, शय्या, आसन, आभूषण, स्त्री, वस्त्र तथा गृहादि के सुख से सदैव सम्पन्न बना रहता है ॥५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक लोभी, भयानक, साहसी, मित्र तथा सन्तानादि के सुख से हीन एवं निष्ठुर स्वभाव का होता है ॥६॥

यदि वृष अथवा तुला राशि स्थित गुरु पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक संग्रामजयी, शस्त्रादि के प्रहार से घायल शरीर वाला, रोगयुक्त, अनेक सेवकों तथा वाहनों वाला एवं राजमन्त्री होता है ॥७॥

यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक सदैव सत्य बोलने वाला, विनयी, परोपकारी, पवित्र हृदय वाला एवं भाग्यवान्
होता है ॥ ८॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक भाग्यशाली, सन्तानादि के सुख से युक्त, प्रियवादी, राजा से सम्मा-
-न पाने वाला तथा सदाचारी होता है ॥ ९॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक मन्त्र-विद्या में निपुण, अत्यन्त भाग्य-
शाली, राजा से धन पाने वाला तथा समस्त कलाओं का जानकार होता है ॥ १०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक
धन-धान्य एवं वस्त्राभूषणों से युक्त, सदाचारी तथा वैभवशाली होता है ॥ ११॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो
जातक सुपुत्रवान्, साध्वी-स्त्री से सुखी, पण्डित, नगर तथा ग्राम के उत्सवों से सुख पाने वाला तथा चतुर
होता है ॥ १२॥

यदि मिथुन अथवा कन्या राशि स्थित गुरु पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक श्रेष्ठ पुत्र, स्त्री,
धन तथा मित्र आदि से सुखी एवं अच्छी प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ॥ १३॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक
गुणी, ग्राम तथा नगर का उपकार करने वाला एवं अत्यधिक गौरव से युक्त होता है ॥ १४॥ यदि मङ्गल की दृष्टि
हो तो जातक युद्धजयी, शस्त्राघात से विक्षत देह वाला, धन एवं बल से युक्त होता है ॥ १५॥ यदि बुध की दृष्टि
हो तो जातक श्रेष्ठ मित्र, स्त्री, पुत्र, धन आदि से सुखी, कार्य-कुशल, ज्योतिष एवं शिल्प विद्या का जानकार
तथा सत्यवादी होता है ॥ १६॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धन, स्त्री, पुत्र आदि के सुख से युक्त, पक्के
मकान, तालाब, कुआँ, बावड़ी आदि बनवाने वाला, कृषि कर्त्ता एवं प्रसन्न-चित्त होता है ॥ १७॥ यदि शनि
की दृष्टि हो तो जातक राजा से सम्मान पाने वाला, नित्य उत्सव मनाने वाला, सब गुणों से युक्त तथा ग्राम
अथवा नगर का मुखिया होता है ॥ १८॥

यदि कर्क राशि स्थित गुरु पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक पूर्व वयस में स्त्री, पुत्र एवं
धन से सुख पाने के बाद इन सबका विशेष सुख प्राप्त करता है ॥ १९॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो

भा० टी०

बृ० सं० २८३

तो जातक राजा का कोषाध्यक्ष, सुन्दर शरीर वाला, कान्तिमान्, वाहन तथा धन आदि से सुखी एवं सदाचारी होता है ॥ २० ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक सुपुत्र, स्त्री, वस्त्र, आभूषण आदि से सुखी, गुणी, शूर-वीर, पण्डित एवं क्षत-अङ्ग वाला होता है ॥ २१ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक मित्रों की सहायता से अपने सब कामों को सिद्ध करने वाला, सदाचारी, प्रतापी तथा राज्यमन्त्री होता है ॥ २२ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अनेक स्त्रियों, पुत्रों, वैभवों, आत्मजादि नाना सुखों से युक्त सदैव सुखी रहता है ॥ २३ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक लोक में आदर पाने वाला, वस्त्रालङ्कारों से युक्त, सुशील, सेनापति अथवा नगराध्यक्ष एवं अधिक बोलने वाला होता है ॥ २४ ॥

यदि सिंह राशि स्थित गुरु पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अधिक खर्च करने वाला, प्रसिद्ध, धूर्त, राजा से धन पाने वाला एवं शुभ-कर्म करने वाला होता है ॥ २५ ॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्नचित्त, दयालु-प्रकृति का, स्त्री द्वारा धन लाभ करने वाला एवं दानी होता है ॥ २६ ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक गुरुजनों द्वारा सम्मानित, गुण-गौरव युक्त तथा सत्कर्म करने में तत्पर रहता है ॥ २७ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक गृहादि का निर्माण करने में प्रवीण, गुणियों में श्रेष्ठ, राजमन्त्री, प्रियवादी एवं कार्य-कुशल होता है ॥ २८ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक राजा द्वारा उच्च-पद पाने वाला, स्त्रियों को प्रसन्न करने वाला एवं गुणाढ्य होता है ॥ २९ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक सुख-हीन, मलिन, प्रियवादी, कृश-शरीर तथा उत्सव (आनन्द)-रहित होता है ॥ ३० ॥

यदि धनु अथवा मीन- इन स्वराशियों पर स्थित गुरु पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजा का विरोधी, अपने मित्रों से भी वैमनस्य रखने वाला एवं अनेक शत्रुओं वाला होता है ॥ ३१ ॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक धन तथा भाग्य की वृद्धि से सुगर्वित, अपने हित तथा अनहित-सभी को

प्रिय, सुखी तथा विनम्र स्वभाव का होता है ॥ ३२॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक व्रण युक्त शरीर वाला,
संग्राम-निपुण, हिंसक, कुटिल-स्वभाव वाला तथा परोपकारी होता है ॥ ३३॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक
राज्याश्रय से उच्च अधिकार पाने वाला, स्त्री, पुत्र, धन आदि से सुखी एवं परोपकार में तत्पर होता है॥
३४॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक सुखी, धनी, प्रसन्नचित्त, पण्डित एवं ऐश्वर्यशाली होता है॥३५॥
यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्थान-हीन, सुख-धन-हीन, संग्राम में पराजित होने वाला तथा दीन
दुःखी होता है ॥३६॥

यदि मकर अथवा कुम्भ राशि स्थित गुरु पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्नमूर्ति
प्रियवादी, परोपकाररत एवं स्वकुल में श्रेष्ठ होता है ॥३७॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक कुल-
पोषक, तीक्ष्ण-बुद्धि, सुशील, धर्मात्मा, उदार, अभिमानी एवं माता-पिता का भक्त होता है ॥ ३८॥ यदि मंगल
की दृष्टि हो तो जातक राजा की कृपा से अपने कार्य सिद्ध करने वाला, यशस्वी तथा सुखी होता है ॥३९॥
यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक शान्त स्वभाव का, स्त्रियों को प्रिय तथा धर्म-कर्म में सदैव तत्पर बना
रहने वाला होता है ॥४०॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक विद्या, विवेक एवं धन से युक्त, गुणवान्
तथा राजा के आश्रय से अभीष्ट-सिद्धि करने वाला होता है ॥४१॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक
कामी, गुणी, गृह तथा धन-धान्यादि से युक्त, विख्यात एवं विनीत स्वभाव का होता है ॥४२॥ इति
मेषादि राशिस्थिते गुरु प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥

अथ मेषादि राशिस्थिते शुक्र प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥ कृपाविशेषं नृपतेर्नितान्-
-तमतीव जायाजनितव्यलीकम्। कुर्य्यान्नराणां तरणिप्रदृष्टः शुक्रो हि वक्रस्य गृहं प्रयातः ॥१॥ श्रेष्ठं प्रतिष्ठं
चलचित्तवृत्तिं कामातुरत्वाद्विकृतिं प्रयातम्। करोति मर्त्यं कुजगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः॥२॥

धनेन मानेन सुखेन हीनं दीनं विशेषान्मलिनं करोति। नूनं धरित्रीतनयालयस्थः शुक्रो धरित्रीतनयेन दृष्टः ॥३॥
अनार्यमर्त्यात्मजनैर्विहीनं स्वबुद्धिसामर्थ्यपराङ्मुखं च। क्रूरं पराधीपहरं नरो हि करोति शुक्रः कुजभे हि दृष्टः ॥४॥
कलत्रपुत्रादि सुखैः समेतं सत्कायकान्तिं सुतरां विनीतं। उदारचित्तं प्रकरोति मर्त्यं जीवेक्षितो दैत्यगुरुः कुजर्क्षे ॥५॥
सुगुप्तवित्ताभियुतं प्रशान्तं मान्यं वदान्यं स्वजनानुयातम्। करोति जातं क्षितिपुत्रगेहे संस्थः सितो भानुसुतेन दृष्टः
॥६॥ वराङ्गनाभ्यो धनवाहनेभ्यः सुखानि नूनं लभते मनुष्यः। प्रसूतिकाले निजवेश्मयाते सिते पतङ्गेन निरीक्ष्य-
माणे ॥७॥ विलासिनी केलि विलाससक्तः कुलाधिपालोऽमलबुद्धिशाली। नरः सुशीलः शुभवाग्विलासः स्वीयाल-
यस्थास्फुजितीन्दुदृष्टे ॥८॥ गृहादि सौख्योपहतं नितान्तं कलिप्रसङ्गाभिभवोपलब्धिम्। कुर्यान्नराणां दनुजेन्द्रम-
न्त्री स्वक्षेत्रसंस्थः क्षितिपुत्रदृष्टः ॥९॥ गुणाभिरामं सुभगं प्रकामं सौम्यं सुसत्त्वं धृतिसंयुतं च। स्वक्षेत्रगो
दैत्यगुरुः प्रकुर्य्यान्नरं तुषारांशुसुतेन दृष्टः ॥१०॥ सद्वाहनानां गृहिणीगणानां सुमित्रपुत्रद्रविणादिकानाम्। क-
रोति लब्धिं निजवेश्मयातः सितः सुराचार्यनिरीक्षितश्चेत् ॥११॥ गदाभिभूतो हतसाधुवृत्तः सौख्यार्थहीनो
मनुजोऽतिदीनः। भवेत्प्रसूतौ निजवेश्मयाते भृगोः सुते भानुसुतेन दृष्टे ॥१२॥ नृपावरोधिकृतं विनीतं गुणा-
न्वितं शास्त्रकृतप्रवेशम्। कुर्य्यान्नरं दैत्यगुरुः प्रसूतौ सौम्यर्क्षसंस्थो रविणा प्रदृष्टः ॥१३॥ सदन्नवस्त्रादि
सुखोपपन्नं नीलोत्पलश्यामलचारुनेत्रम्। सुकेशपाशं मनुजं प्रकुर्यात् सौम्यर्क्षसंस्थो भृगुरिन्दुदृष्टः ॥१४॥
भाग्यान्वितः कामविधिप्रवीणः कान्तानिमित्तं द्रविणव्ययः स्यात्। कुर्यान्नराणामुशनाः प्रकामं बुधर्क्षसंस्थः कुसु-
तेन दृष्टः ॥१५॥ प्राज्ञं महावाहनवित्तवृद्धिं सेनापतित्वं परिवार सौख्यम्। कुर्य्यान्नराणामुशनाः प्रवीणं बुधर्क्ष-
संस्थश्च बुधेन दृष्टः ॥१६॥ सद्बुद्धिवृद्धिर्बहुवैभवाढ्यः प्रसन्नचेताः सुतरां विनीतः। मर्त्यो भवेत्सौम्यगृहो-
पयाते दृष्टे सिते देवपुरोहितेन ॥१७॥ पराभिभूतं चपलं विविक्तं सुदुःखितं सर्वजनोज्झितं च। मर्त्यं करोत्येव
भृगोस्तनूजः सोमात्मजर्क्षे रविजेन दृष्टः ॥१८॥ सरोषयोषाकृतहर्षनाशः स्यात्पुरुषः बान्धुजनाभिभूतः। दैत्या-

र्चिते कर्कटराशियाते निरीक्षिते ऽहपतिना प्रसूतौ ॥१९॥ कन्याप्रजापूर्वकपुत्रलाभमम्बां सपत्नीं बहुगौरवाणि ।
कुर्यान्नराणां हरिणाङ्कदृष्टः कुलीरगो भार्गवनामधेयः ॥२०॥ कलासु दक्षो हतशत्रुपक्षो बुद्ध्या च सौख्येन युतो
मनुष्यः । परन्तु कान्ताकृतचिन्तयार्तो भौमेक्षिते कर्कटगे सिते स्यात् ॥२१॥ विद्याप्रवीणं गुणिनं गुणाढ्यं कलत्र
पुत्रोद्भवदुःखतप्तम् । जनोज्झितं चापि करोति मर्त्यं काव्यः कुलीरोपगतो ऽर्कदृष्टः ॥२२॥ अतिचतुरमुदारं
चारुवृत्तिं विनीतमतिविभवसमेतं कामिनीसूनुसौख्यम् । प्रियवचनविलासं मानुषं संविधत्ते सुरपतिगुरुदृष्टो
भार्गवः कर्कटस्थः ॥२३॥ सद्वृत्तसौख्योपहतं गतार्थं व्यर्थं प्रयत्नं वनिताजितं च । स्थानच्युतं संजनयेन्म-
नुष्यं मन्देक्षितः कर्कगतः सिताख्यः ॥२४॥ स्पर्द्धातिसंवर्द्धितचित्तवृत्तिः कान्ताश्रयोत्पन्नधनो मनुष्यः । क्रमेलका
चौर्यादि वा युतः स्यादर्केक्षिते सिंहगते सिताख्ये ॥२५॥ नूनं जनन्याश्च भवेत्सपत्नी पत्नीविरोधो विभवोद्भव-
श्च । यस्य प्रसूतौ दनुजेन्द्रमन्त्री चन्द्रेक्षितः सिंहगतो यदि स्यात् ॥२६॥ नृपप्रियं धान्यधनैरुपेतं कन्दर्पजातव्य-
-सनाभिभूतम् । करोति मर्त्यं मृगराजसंस्थो भृगोस्तनूजोऽवनिजेन दृष्टः ॥२७॥ धनान्वितं संग्रहचित्तवृत्तिं लु-
-ब्धं स्मराधिक्यविकारनिन्द्यम् । दैत्येन्द्रमन्त्री कुरुते मनुष्यं सिंहस्थितः सोमसुतेन दृष्टः ॥२८॥ नरेन्द्रमन्त्री धन
वाहनाढ्यो बह्वङ्गनानंदनभृत्यसौख्यः । विख्यातकर्मा च भृगोस्तनूजे जीवेक्षिते सिंहगते नरः स्यात् ॥२९॥ नृपो-
-पमं सर्वसमृद्धिभाजं दण्डाधिकारेऽप्यथ वा नियुक्तम् । करोति मर्त्यं मृगराजवर्ती दैत्यार्चितः सूर्यसुतेनदृष्टः ॥
३०॥ रौद्रं प्राज्ञं भाग्यसौभाग्यभाजं सत्त्वोपेतं वित्तवन्तं विशेषात् । नानादेशप्राप्तयानं मनुष्यं कुर्याच्छुक्रो जीवभे
भानुदृष्टः ॥३१॥ सद्राजमानेनविराजमानं ख्यातं विनीतं बहुभोगयुक्तम् । धीरं ससारं हि नरं करोति भृगुर्गुरुक्षे-
त्रगतोऽब्जदृष्टः ॥३२॥ द्विषामसह्यं धनिनं प्रसन्नं कान्ताकृतप्रेमभरं सुपुण्यम् । सद्वाहनाढ्यं कुरुते मनुष्यं भौमे
क्षितेज्यालयगामिशुक्रः ॥३३॥ सद्वाहनार्थाम्बरभूषणानां लाभं सदन्नानि सुखानि नूनम् । कुर्यान्नराणां गुरुमन्दि
-रस्थो दैत्यार्चितः सोमसुतेन दृष्टः ॥३४॥ तुरङ्गहेमाम्बरभूषणानां महागजानां वनितासुखानाम् । करोत्यवाप्तिं

भृगुजः प्रसूतौ जीवेक्षितो जीवगृहाश्रितश्च ॥३५॥ सद्भोग सौख्योत्तम कर्म भाजं नित्योत्सवोत्कर्षयुतं सुवित्तम्। करोति मर्त्यं गुरुगेहयातो दैत्यार्चितो भानुसुतेक्षितश्च ॥३६॥ स्थिर स्वभावं विभवोपपन्नं महाधनं सारवि-राजमानम्। कान्ता विलासैः सहितं प्रकुर्याद् भृगुः शनिक्षेत्रगतोऽर्क दृष्टः ॥३७॥ ओजस्विनं चारुशरीरयष्टिं प्रकृष्टसत्वं धनवाहनाढ्यम्। करोति मर्त्यं शनिगेहयातो भृगोः सुतः शीतकरेण दृष्टः ॥३८॥ अमामयाभ्या-मतितप्तमूर्तिमिनर्यतोऽर्थक्षति संयुतं च। कुर्यान्नरं दानवराजपूज्यः कुजेक्षितः सूर्यसुतालयस्थः ॥३९॥ वि-द्वद्विधिज्ञंधनिनं सुतुष्टं प्राज्ञं सुसत्त्वं बहुल प्रपञ्चम्। सद्वाग्विलासं मनुजं प्रकुर्याद्भृगुः शनिक्षेत्रगतो ज्ञ दृष्टः ॥४०॥ सद्गन्ध माल्याम्बर चारुवाद्य संजात सङ्गीत रुचिः शुचिश्च। स्यान्मानवो दानवराज्यपूज्ये सुरेज्य दृष्टे शनि मन्दिरस्थे ॥४१॥ प्रसन्नगात्रं च विचित्र लाभं धनाङ्गना वाहन सूनु सौख्यम्। कुर्यान्नरं दानववृन्द देवो मन्देक्षितो मन्दगृहाधिसंस्थः ॥४२॥

टीका ॥ मेष अथवा वृश्चिक राशि स्थित शुक्र पर यदि सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजा की कृपा प्राप्त करता है तथा स्त्री से कष्ट पाता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त प्रतिष्ठित, चंचल-चित्त वाला तथा कामातुर होता है ॥२॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक धन, मान तथा सुख से हीन, दीन, दुःखी एवं मलिन होता है ॥३॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक दुराचारी, धन एवं परिजनों से हीन, बुद्धि-बल से पराङ्मुख अर्थात् निर्बुद्धि एवं पराये धन का अपहरण करने वाला तथा क्रूर स्वभाव का होता है ॥४॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-पुत्रादि से सुखी, अत्यन्त सुन्दर शरीरवाला विनयी तथा उदार चित्त का होता है ॥५॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक धन को गुप्त रखने वाला, शान्त स्वभाव का, लोक-मान्य, दानी तथा स्वजनों के अनुकूल चलने वाला होता है ॥६॥

यदि वृष अथवा तुला – इन दोनों स्वराशियों पर स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो

तो जातक वेश्याओं तथा धन-वाहनादि के सुख को प्रभूत मात्रा में प्राप्त करता है ॥७॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो तो जातक स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, अपने कुल में श्रेष्ठ, निर्मल बुद्धि वाला, सुशील एवं प्रियवादी होता है ॥ ८॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक गृह आदि के सुख से हीन एवं कलह (झगड़े) में पराजित होने के कारण दुःख पाने वाला होता है ॥ ९॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक गुणवान्, सुन्दर, अत्यन्त सौम्य, बलवान् एवं धैर्यवान् होता है ॥१०॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक उत्तम गृह, स्त्री, पुत्र, मित्र एवं धन सम्पत्ति से सदा सुखी रहता है ॥११॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक रोग-पीड़ित, दुराचारी, सुख एवं धन से हीन तथा दुःखी होता है ॥१२॥

यदि मिथुन अथवा कन्या राशि स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक राजा के अन्तःपुर का अधिकारी, विनम्र, गुणी तथा शास्त्रज्ञ होता है ॥१३॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक उत्तम अन्न, वस्त्रादि से पूर्ण सुखी एवं नील-कमल जैसे सुन्दर नेत्रों वाला होता है ॥१४॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक भाग्यवान्, भोग-विलास करने वाला तथा स्त्री के हेतु अधिक धन खर्च करने वाला होता है ॥१५॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक पण्डित, उत्तम सवारी एवं धन से युक्त, सेनापति तथा परिवार का पोषक होता है ॥१६॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान्, बहुत धन-सम्पत्ति से युक्त, प्रसन्न-मुख तथा विनयी होता है ॥१७॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक शत्रु द्वारा पराजित, चंचल-स्वभाव वाला, निर्जन स्थान में रहने वाला, दुःखी तथा सब लोगों से परित्यक्त होता है ॥१८॥

यदि कर्क राशि स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक क्रोधवती-स्त्री से दुःखी एवं शत्रुओं से पराजित होता है ॥१९॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक पहले कन्या तथा बाद में पुत्र सन्तान पाने वाला, सौतेली-माता से सुख पाने वाला तथा लोक में महत्व पाने वाला होता है

मृ० सं० २८०

॥२०॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक कला-कुशल, शत्रुजयी, बुद्धिमान्, सुखी तथा स्त्री के हेतु चिन्तित बना रहने वाला होता है॥२१॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक विद्या-प्रवीण, गुणी, गुणज्ञ, स्त्री-पुत्र से कष्ट पाने वाला तथा स्वजनों से परित्यक्त एवं कवि होता है॥२२॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक अत्यन्त चतुर, उदार हृदय वाला, सदाचारी, विनम्र, धनी, स्त्री-पुत्रादि से सुखी एवं प्रियवचन बोलने वाला होता है॥२३॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक अनाचारी, सुख-हीन, निर्धन, उद्योग में असफल, स्त्री से पराजित एवं स्थान-भ्रष्ट होता है॥२४॥

यदि सिंह राशि स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक अन्य लोगों के स्पर्द्धा करके मनोरथ की वृद्धि करने वाला, स्त्री के सहारे धन की वृद्धि करने वाला तथा ऊँट आदि की सवारी रखने वाला होता है॥२५॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक की माता की सौत होती है अर्थात् जातक का पिता एक पत्नी (जातक की माता) के रहते हुए भी दूसरा विवाह करता है एवं जातक का अपनी पत्नी से विरोध रहता है, फिर भी वह धन-धान्य से पूर्ण रहता है॥२६॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक राजा का प्रिय धन-धान्यादि सम्पत्ति से युक्त एवं कामातुर होता है॥२७॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक धनी, संग्रह कर्त्ता, लोभी तथा कामी होने के कारण लोक-निन्दित होता है॥२८॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक राज-मन्त्री, धन-वाहनादि से युक्त; स्त्री, पुत्र तथा सेवकों से सुखी एवं प्रसिद्ध कीर्ति वाला होता है॥२९॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक राजा अथवा राजा के समान, सब प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त अथवा न्यायाधीश आदि होता है॥३०॥

यदि धनु अथवा मीन राशि स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक क्रोधी, पण्डित, सुन्दर, भाग्यवान्, बलवान्, धनवान् तथा अनेक देशों में भ्रमण करने वाला होता है॥३१॥

यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक राजा से आदर पाने वाला, विख्यात यशस्वी, विनयी, भोगी, धीर तथा वीर होता है ॥ ३२ ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुओं को भय देने वाला, धनी, प्रसन्न चित्त, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, पुण्यवान् तथा अच्छी सवारी से युक्त होता है ॥ ३३ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक श्रेष्ठ सवारी, धन, वस्त्र, आभूषण एवं उत्तम भोजनादि से सदैव सुखी रहता है ॥ ३४ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक हाथी, घोड़ा आदि वाहन, वस्त्र-आभूषण तथा सुन्दरी स्त्री आदि का सुख पाने वाला होता है ॥ ३५ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक स्थिर प्रकृति वाला, ऐश्वर्य-सम्पन्न, महाधनी एवं बलवान् होता है ॥ ३६ ॥

यदि मकर अथवा कुम्भ राशि स्थित शुक्र पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्थिर प्रकृति वाला, ऐश्वर्य-सम्पन्न, महाधनी एवं बलवान् होता है ॥ ३७ ॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक तेजस्वी, सुन्दर शरीर वाला, महाबली एवं धन-वाहनादि से सुखी होता है ॥ ३८ ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक परिश्रम तथा रोग से पीड़ित एवं अकार्य करके धन की हानि करने वाला होता है ॥ ३९ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक विद्वान्, व्यवहार-कुशल, धनी, सन्तोषी, बलवान्, प्रपञ्ची तथा वाक्पटु होता है ॥ ४० ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक पुष्प-चन्दन आदि सुगन्ध, माला, वस्त्र, आभूषण आदि से सुखी तथा संगीत एवं वाद्य में निपुण एवं पवित्र होता है ॥ ४१ ॥ यदि शनि की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्न-मुख, अनेक प्रकार के लाभ प्राप्त करने वाला एवं धन, वाहन तथा स्त्री आदि से सुखी होता है ॥ ४२ ॥

इति मेषादि राशि स्थित शुक्र प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥

अथ मेषादि राशि स्थित शनि प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥ तुलाय गोजाविसमृद्धि भाजं कृषि क्रियायां निरतं सदैव। सत्कर्मसक्तं जनयेन्मनुष्यं भौमालयस्थः शनिरर्कदृष्टः ॥ १ ॥ नीचानुयायी चपलं कुशीलं खलं सुखार्थैः परिवर्जितं च। कुर्यादवश्यं रविजो मनुष्यं शशीक्षितो भूसुतवेश्मसंस्थः ॥ २ ॥

अनल्पजल्पं गतसत्पदार्थं कार्यक्षतिं जातविनष्टवित्तम् । करोति जातं ननु भानुसूनुः कुजेन दृष्टः कुजवेश्मसंस्थः ॥३॥ चौर्यकर्मकलहादितत्परं कामिनीजनगतोत्सवं नरम् । ईक्षितो हि कुरुतेऽर्कनन्दनो भूमिसूनुभवनाधिसंस्थितः ॥४॥ सुखधनैः सहितं नृपसन्निभं नृपसमाश्रितमुख्यतयान्वितम् । सुरपुरोहितवीक्षितभानुजोवनिजवेश्मगतः कुरुते नरम् ॥५॥ बहुप्रधाणाभिरतं विकान्तिं पापाङ्गनासक्तमतिं विचित्तम् । करोति मर्त्यं क्षितिजालयस्थो भानोस्तनूजो भृगुजेन दृष्टः ॥६॥ विद्याविचारे प्रचुरोऽतिवक्ता परान्नभोक्ता विधनश्च शान्तः । भवेन्नरस्तिग्मकरेण दृष्टे सूर्यात्मजे भार्गववेश्मसंस्थे ॥७॥ नृपप्रसादाप्तमहाधिकारं योषाविभूषाम्बरजातसौख्यम् । बलान्वितं सत्स्वजनपेन्मनुष्यं मन्दः सितर्क्षे हरिणाङ्कदृष्टः ॥८॥ संग्रामकार्याभिरतं नितान्तमनल्पजल्पं च महत्प्रसादम् । कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भूसूनुदृष्टो भृगुजालयस्थः ॥९॥ कान्तारतो नीचजनानुयातो विनोदहास्याभिरतो गतार्थः । क्लीबादिसख्यश्च भवेन्मनुष्यः शनौ सितर्क्षे शशिसूनुदृष्टे ॥१०॥ परोपकारे कृतचित्तवृत्तिः परस्य दुःखेन सुदुःखितश्च । दाता धनी सर्वजनप्रियश्च मन्दे सितर्क्षे गुरुणा प्रदृष्टे ॥११॥ रत्नादिलाभं वनिताविलासं बलाधिकत्वं नृपगौरवाप्तिम् । कुर्यान्नराणां तरणेस्तनूजः शुक्रेक्षितः शुक्रगृहं प्रयातः ॥१२॥ सुखोज्झितं नीचरतं सकोपमधार्मिकं द्रोहकरं सुधीरम् । कुर्यान्नरं तिग्मकरस्य सूनुर्भानुप्रदृष्टो बुधमन्दिरस्थः ॥१३॥ प्रसन्नमूर्तिर्नृपतिप्रसादात्प्राप्ताधिकारोन्नतिकार्यवृत्तिः । कान्ताधिकारो यदि वा नरः स्यान्मन्दे ज्ञभस्थेऽमृतरश्मिदृष्टे ॥१४॥ प्रकृष्टबुद्धिं सुतरां विधिज्ञं ख्यातं गभीरं च नरं करोति । सोमात्मजक्षेत्रगतोऽर्कसूनुर्भूसूनुदृष्टः परिसूतिकाले ॥१५॥ धनान्वितं चारुमतिं विनीतं गीतप्रियं सङ्गरकर्मदक्षम् । शिल्पेऽप्यभिज्ञं मनुजं प्रकुर्यात्सौम्येक्षितं सौम्यगृहस्थमन्दः ॥१६॥ राजाश्रितश्चारुगुणैः समेतः प्रियः सतां गुप्तधनो मनस्वी । भवेन्नरो मन्दचरो यदि स्यात् ज्ञराशिसंस्थः सुरपूज्यदृष्टः ॥१७॥ योषाविभूषाकरणे प्रवीणं सत्कर्मधर्मानुरतं नितान्तम् । स्त्रीसक्तचित्तं प्रकरोति मर्त्यं सितेक्षितो भानुसुतो ज्ञराशौ ॥१८॥ आनन्ददाराद्रविणैर्विहीनः सदन्नभोगैरपि वञ्चितश्च । मातुर्महाक्लेशकरो नरः स्यान्मन्दे कुलीरोपगते

भृ० सं० २८२ — भा० टी०

ऽर्कदृष्टे ॥ १९ ॥ निपीडिनं बन्धुजने जनन्यां नूनं धनानामभिवर्द्धनं च । कुर्य्यान्नराणां द्युमणेस्तनूजः कुलीरसंस्थो द्विजराजदृष्टः ॥ २० ॥ गलद्बलः क्षीणकलेवरञ्च नृपार्पिताप्योत्तमवैभवो ऽपि । स्यान्मानुषो भानुसुते प्रसूतौ कर्कस्थिते क्षोणिसुतेन दृष्टे ॥ २१ ॥ वाग्विलासकठिनो ऽटनबुद्धिश्चेष्टितैर्बहुविधैरपि युक्तः । दम्भवृत्तिचतुरो ऽपि नरः स्यात्कर्कगामिनि शनौ बुधदृष्टे ॥ २२ ॥ क्षेत्रपुत्रगृहगेहिनीधनै रत्नवाहनविभूषणैरपि । संयुतो भवति मानवो जनौ जीवदृष्टियुजि कर्कगे शनौ ॥ २३ ॥ उदारतागौरवचारुमानैः सौन्दर्यवर्यामलवाग्विलासैः । नूनं विहीना मनुजा भवेयुः शुक्रेक्षिते कर्कगते ऽर्कपुत्रे ॥ २४ ॥ धनेन धान्येन च वाहनेन सद्वृत्तसत्योत्तमचेष्टितैश्च । भवेद्विहीनो मनुजः प्रसूतौ सिंहस्थिते भानुसुते ऽर्कदृष्टे ॥ २५ ॥ सद्रत्नभूषाम्बरचारुकीर्तिं कलत्रमित्रात्मजसौख्यपूर्तिम् । प्रसन्नमूर्तिं कुरुते ऽर्कसूनुर्नरं हरिस्थो हरिणाङ्कदृष्टः ॥ २६ ॥ संग्रामकर्मण्यतिनैपुणः स्यात्कारुण्यहीनो मनुजः सकोपः । क्रूरस्वभावो ननु भानुसूनौ सिंहस्थिते भूमिसुतेक्षिते च ॥ २७ ॥ धनाङ्गनासूनुसुखेन हीनं दीनं च नीचव्यसनाभिभूतम् । करोति जातं तपनस्य सूनुः सिंहस्थितः सोमसुतेक्षितश्च ॥ २८ ॥ सन्मित्रपुत्रादिगुणैरुपेतं ख्यातं सुवृत्तं सुतरां विनीतम् । नरं पुरग्रामपतिं करोति सौरिर्हरिस्थो गुरुणा प्रदृष्टः ॥ २९ ॥ धनैश्च धान्यैरपि वाहनैश्च सुखैरुपेतं वनिताप्रतप्तम् । कुर्य्यान्मनुष्यं तपनस्य सूनुः पञ्चाननस्थो भृगुसूनुदृष्टः ॥ ३० ॥ ख्यातिं धनाप्तिं बहुगौरवाणि स्नेहप्रवृत्तिं परनन्दनेषु । लभेन्नरो देवगुरोरगारे शनैश्चरे पद्मिनिनाथदृष्टे ॥ ३१ ॥ सद्वृत्तशाली जननीविपुक्तो नामद्‌व्यालङ्करणप्रपातः । तथार्थभार्यासुखभाङ्नरः स्यात्सौरे सुरेज्यालयगे ऽब्जदृष्टे ॥ ३२ ॥ वातान्वितं लोकविरुद्धचेष्टं प्रवासिनं दीनतरं करोति । नरः धरासूनुनिरीक्ष्यमाणो मार्तण्डपुत्रः सुरमन्त्रिणो भे ॥ ३३ ॥ गुणाभिरामो धनवान्प्रकामं नराधिराजाप्तमहाधिकारः । नरः सदाचारविराजमानः शनौ ज्ञदृष्टे गुरुमन्दिरस्थे ॥ ३४ ॥ नृपप्रधानः पृतनापतिर्वा सवार्थशाली बलवान्सुशीलः । स्यान्मानवो भानुसुते प्रसूतौ जीवेक्षिते जीवगृहं प्रयाते ॥ ३५ ॥ विदेशवासी बहुकार्यसक्तो द्विमातृपुत्रः सुतरां पवित्रः । स्यान्मानवो दानव

मन्त्रिदृष्टे मन्दे ऽमराचार्यगृहं प्रपाते ॥ ३६ ॥ कुरूपभार्यश्च परान्नभोक्ता नानाप्रयासामयसंयुतश्च। विदेशवासी प्रभवेन्मनुष्यो मन्दे निजागारगते ऽर्कदृष्टे ॥३७॥ धनाङ्गनाढ्यं वृजिनानुयातं चलस्वभावं जननीविरुद्धम्। कामातुरं चापि नरं प्रकुर्यान्मन्दः स्वभस्थो ऽमृतरश्मिदृष्टः ॥ ३८ ॥ शूरः क्रूरः साहसी सद्गुणाढ्यः सर्वोत्कृष्टः सर्वदा हृष्टचित्तः। ख्यातो मर्त्यश्चात्मभस्थे ऽर्कपुत्रे धात्रीपुत्रप्रेक्षणत्वं प्रपाते ॥ ३९ ॥ सद्वाहनान्साहसिकान्ससत्त्वान्धीरांश्च नानाविधकार्यसक्तान्। करोति मर्त्यान्ननु भानुपुत्रः स्वक्षेत्रसंस्थः शशिपुत्रदृष्टः ॥ ४० ॥ गुणान्वितं क्षोणिपतिप्रधानं निरामयं चारुशरीरयष्टिम्। कुर्यान्नरं देवगुरुप्रदृष्टश्चण्डांशुसूनुर्निजवेश्मसंस्थः ॥४१॥ कामातुरं सन्नियमेन हीनं भाग्योपपन्नं सुखिनं धनाढ्यम्। भोक्तारमीशं कुरुते स्वभस्थो रवेः सुतो भार्गवसूनुदृष्टः ॥ ४२ ॥

टीका ॥ यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक गाय-भैंस आदि के व्यवसाय से धन कमाने वाला एवं कृषि-कर्म में निपुण होता है ॥ १ ॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक नीचजनों की संगति करने वाला, चंचल, दुष्ट स्वभाव का, खल तथा सुख एवं धन से रहित होता है ॥२॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक अधिक बोलने वाला, उत्तम पदार्थों से वंचित, कार्यों में असफल तथा धन की हानि करने वाला होता है ॥ ३ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक चोरी तथा झगड़ा करने में तत्पर एवं स्त्री-सुख से वंचित होता है ॥ ४ ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक सुखी, धनी, राजमन्त्री अथवा राजा का प्रियपात्र होता है ॥ ५ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक अधिक यात्राएं करने वाला, कान्तिहीन, दुष्ट-स्त्री में आसक्त एवं आनन्द रहित होता है ॥ ६ ॥

यदि वृष अथवा तुला राशि स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक विद्या में चतुर, अतिवक्ता, परान्न भोगी, धनहीन, परन्तु शान्त स्वभाव वाला होता है ॥ ७ ॥ यदि चन्द्रमा

भृ० सं० २८४

भा० टी०

की दृष्टि हो तो जातक राजा की कृपा से उच्चपद पाने वाला, स्त्री-वस्त्र-आभूषण आदि से सुखी तथा बलवान् होता है ॥८॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक संग्राम-निपुण, अधिक बोलने वाला तथा अत्यधिक प्रसन्न रहने वाला होता है ॥९॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक स्त्री में आसक्त, नीच जनों का साथी, हास्य-विनोद में मन लगाने वाला, धनहीन तथा नपुंसकों से मैत्री रखने वाला होता है ॥२०॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक परोपकार में तत्पर, दूसरों के दुःख से दुःखी, दानी, उद्योगी तथा सब लोगों का प्रिय होता है ॥२१॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक स्वर्ण-रत्नादि का लाभ पाने वाला, स्त्री-विलासी, अधिक बलवान् तथा राजा से आदर पाने वाला होता है ॥२२॥

यदि मिथुन अथवा कन्या राशि स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुख-हीन, नीचजनों का सङ्गी, क्रोधी, धर्म-विरोधी, दूसरों से द्रोह रखने वाला, परन्तु धीर पुरुष होता है ॥२३॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक प्रसन्न-मुख, राजा की कृपा से उच्च पद पाने वाला, उन्नतिशील तथा योग्य अधिकार रखने वाला होता है ॥२४॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक तीव्र-बुद्धि, व्यवहार-कुशल, विख्यात एवं गम्भीर विचार वाला होता है ॥२५॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक धनी, बुद्धिमान्, विनम्र, संगीत-प्रिय युद्ध-कुशल तथा शिल्पज्ञ होता है ॥२६॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक राजा का आश्रित, उत्तम गुणवान्, सज्जनों का प्रिय, धन को गुप्त रखने वाला एवं मनस्वी होता है ॥२७॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक स्त्रियों के अलङ्करण निर्माण में प्रवीण, सत्कर्म तथा धर्म में निरत एवं स्त्री में आसक्त होता है ॥२८॥

यदि कर्क राशि स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक स्त्री-पुत्र-धन आदि से सुखी, अच्छे पदार्थों के भोजन से रहित तथा माता को कष्ट देने वाला होता है ॥२९॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक स्वबन्धुओं तथा माता को पीड़ा देने वाला धन में अभिवृद्धि करने वाला होता है ॥३०॥

यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक बलहीन, कृश-शरीर तथा राजा से धन पाने वाला होता है॥२१॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक कठोर वचन बोलने वाला, भ्रमणशील, अनेक प्रकार के व्यवसाय-उद्योग करने वाला, दंभी तथा चतुर होता है॥२२॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक भूमि, गृह, स्त्री, पुत्र, धन, आभूषण एवं वाहन आदि से सदैव सम्पन्न तथा सुखी रहता है॥२३॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धन-धान्य, वाहन उदारता गौरव तथा सम्मान से रहित तथा सौन्दर्य एवं प्रियभाषण से भी रहित होता है॥२४॥

यदि सिंह राशि स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक धन, धान्य, वाहन, सदाचार तथा उत्तम कार्यों से रहित होता है॥२५॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक स्वर्ण, रत्न, आभूषण, वस्त्र, उत्तम यश, स्त्री, पुत्र तथा मित्र आदि से सुखी एवं सदैव प्रसन्न रहने वाला होता है॥२६॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक युद्ध-कुशल, दयाहीन, क्रोधी तथा क्रूर प्रकृति वाला होता है॥२७॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक धन-स्त्री-पुत्रादि से हीन, दरिद्र तथा नीच कर्मों में रत रहने वाला होता है॥२८॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक मित्र-पुत्रादि से सुखी, गुणी, प्रसिद्ध, सदाचारी, विनम्र तथा ग्राम अथवा नगर का अधिपति होता है॥२९॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक धन-धान्य तथा वाहनादि से सुखी एवं स्त्री द्वारा अपमानित होकर दुःखी होता है॥३०॥

यदि धनु अथवा मीन राशि स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक सुविख्यात, धनी, अधिक गौरवशाली एवं पराये-पुत्र से प्रेम करने वाला होता है॥३१॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक सदाचारी, मातृ-हीन, दो नामों वाला तथा स्त्री-पुत्र एवं धन से सुखी होता है॥३२॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक वातरोगी, लोक-विरोधी, विदेशवासी तथा दीन-दुःखी होता है॥३३॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक अनेक गुणों से युक्त, अत्यन्त धनी, राजा का अधिकारी तथा सदाचारी होता है॥३४॥ यदि गुरु

की दृष्टि हो तो जातक राजा का प्रधान मन्त्री अथवा सेनापति, समस्त सम्पत्तियों से युक्त, बलवान् तथा सुशील होता है ॥ ३५ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक विदेशवासी, अनेक कार्यों में रुचि रखने वाला, दूसरी माता का पुत्र अर्थात् दत्तक एवं अत्यन्त पवित्र चरित्र वाला होता है ॥ ३६ ॥

यदि मकर अथवा कुम्भ राशि में स्थित शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो जातक कुरूपा पत्नी वाला, परान्नभोगी, अनेक प्रयास तथा रोगों के कारण दुःखी एवं परदेशवासी होता है ॥ ३७ ॥ यदि चन्द्रमा की दृष्टि हो तो जातक धन तथा स्त्री से दुःखी, पापाचारी, चंचल, माता का विरोधी एवं कामी होता है ॥ ३८ ॥ यदि मङ्गल की दृष्टि हो तो जातक शूर-वीर, क्रूर स्वभाव का, साहसी, उत्कृष्ट गुणों वाला तथा सदैव प्रसन्न चित्त रहने वाला होता है ॥ ३९ ॥ यदि बुध की दृष्टि हो तो जातक उत्तम वाहन, साहस तथा बल से युक्त, धैर्यवान एवं अनेक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है ॥ ४० ॥ यदि गुरु की दृष्टि हो तो जातक गुणवान्, राजा का मन्त्री, नीरोग शरीर वाला तथा सुन्दर रूपवान् होता है ॥ ४१ ॥ यदि शुक्र की दृष्टि हो तो जातक कामी, नियमों का पालन न करने वाला, भाग्यवान्, सुखी, धनी तथा भोगी होता है ॥ ४२ ॥ इति मेषादि राशि स्थित शनि प्रति ग्रह दृष्टि फलम् ॥

अथ ग्रह स्वरूप कथनम् ॥ शूरो गम्भीरश्चतुरः सुरूपः श्यामारुणश्चाल्पककुन्तलश्च । सुवृत्तगात्रो मधुपिंगनेत्रो मित्रो हि पित्तास्थ्यधिको न तुङ्गः ॥ १ ॥ सद्वाग्विलासोऽमलधीः सुकायो रक्ताधिकः कुञ्चितकृष्णकेशः । कफानिलात्माम्बुजपत्रनेत्रो नक्षत्रनाथः सुभगोऽतिगौरः ॥ २ ॥ मज्जासारो रक्तगौरो ऽथुदारो हिंस्रः शूरः पैत्तिकस्तामसश्च । चण्डः पिङ्गाक्षो युवा ऽखर्वगर्वः खर्वश्चोर्वी सूनुरग्निप्रभः स्यात् ॥ ३ ॥ श्यामः शिरालश्च कलाविधिज्ञः कुतूहली कोमलवाक्त्रिदोषी । रजोधिको मध्यमरूपधृक्स्यादाताम्रनेत्रो द्विजराजपुत्रः ॥ ४ ॥ दीर्घाकारश्चारुचामीकराभो मज्जासारः सुस्वरोदारबुद्धिः । दक्षः पिङ्गाक्षः कफीचातिमांसः प्राज्ञः सुदृष्टैः

कीर्तितो जीव संज्ञः ॥५॥ सजलजलदनीलः श्लेष्मलश्चानिलात्मा कुवलयदलनेत्रो वक्रनीलालकश्च । सुसरलभुजशाली राजसश्चाति कामी मदयुतगजगामी भार्गवः शुक्रसारः ॥६॥ श्यामलोऽतिमलिनश्च शिरालः सालसश्च जटिलः कृशदीर्घः । स्थूलदन्तनखपिङ्गलनेत्रयुक्शनिनश्च खलतानिलकोपः ॥७॥ लग्नस्य नन्दांशपतेर्हि मूर्त्या मूर्तिः समाना बलशालिनो वा । स्यादिन्दुनन्दांशपतेस्तु वर्णः परं विचार्याः कुलजातिदेशाः ॥८॥

टीका॥ सूर्यादि ग्रहों के गुण, वर्ण तथा आकार आदि इस प्रकार बताये गये हैं। सूर्य ग्रह — शूर, गंभीर, कुशल, सुन्दर शरीर वाला, श्यामाभायुक्तरक्तवर्ण, अल्पकेशी, चतुरस्र आकार अर्थात् लम्बाई-चौड़ाई में बराबर, मधु (शहद) के रंग जैसी आँखों वाला, पित्त-प्रकृति, बलवान् तथा नाटे क़द वाला है ॥१॥ चन्द्रमा — श्रेष्ठ वक्ता, निर्मल बुद्धि वाला, सुन्दर शरीर वाला, रक्त की अधिकता वाला, काले एवं घुँघराले केशों वाला, कफ-वात-प्रकृति, कमलपत्र के समान नेत्रों वाला तथा अत्यन्त गौर वर्ण वाला है ॥२॥ मङ्गल — मज्जासार युक्त, रक्त-गौर वर्ण, अत्यन्त उदार, हिंसक-स्वभाव वाला, शूर, पित्त-प्रकृति का, तामसी-वृत्ति, भयङ्कर, पीत वर्ण नेत्रों वाला, युवावस्था वाला, अत्यन्त अभिमानी तथा अग्नि तुल्य कान्ति वाला है ॥३॥ बुध — श्याम वर्ण, नसों में ऐंठन वाला, कला-निपुण, उत्कण्ठित, कोमल वाणी वाला, त्रिदोष-प्रकृति का, रजोगुणी एवं ताँबे के समान रंग के नेत्रों वाला है ॥४॥ गुरु — लम्बे क़द वाला, स्वर्ण जैसे वर्ण वाला, मज्जा-सार युक्त, कोमल वाणी वाला, उदार बुद्धि वाला, चतुर, पीतवर्ण नेत्रों वाला, कफ प्रकृति का, ज्ञानी तथा पण्डित है ॥५॥ शुक्र — जलयुक्त मेघ वर्ण, कफ-वात-प्रकृति, कमल पत्र जैसे नेत्रों वाला, घुँघराले केशों वाला, सुन्दर, बलिष्ठ भुजाओं वाला, रजोगुणी, कामातुर एवं मदमत्त हाथी जैसी चाल वाला है ॥६॥ शनि-अधिक श्याम अर्थात् कृष्णवर्ण, मलिन-बुद्धि, नसों में बल वाला, आलसी, जटायुक्त केशों वाला, कृश-शरीर, मोटे दाँतों वाला, मोटे नख वाला, पीली आँखों वाला, दुष्ट स्वभाव तथा वायु-प्रकृति वाला है ॥७॥

जन्म लग्न भाव में जो नवांश हो, उसके स्वामी के समान आकार तथा चन्द्रमा जिस राशि के नवांश में हो उस
राशि के स्वामी के समान जातक के शरीर का वर्ण कहना उचित है। यदि कहीं संशय उत्पन्न हो जाय तो कुल,
जाति अथवा देशानुसार जातक के वर्ण का निर्णय करना चाहिए ॥८॥

ग्रहाणां सत्त्वादि गुणविचारम् ॥ सत्त्वं भवेयुः शशिसूर्यजीवास्तमो यमारौ च रजो ज्ञशुक्रौ।
त्रिंशल्लवे यस्य गतो दिनेशो वाच्यो गुणस्तस्य खगस्य नूनम् ॥ टीका॥ सूर्य, चन्द्रमा और गुरु — ये तीनों ग्रह
सत्त्वगुण प्रधान हैं। मङ्गल तथा शनि तमोगुण प्रधान हैं। बुध तथा शुक्र — ये दोनों रजोगुण प्रधान हैं। जिस
के त्रिंशांश में सूर्य रहे, उसके अनुसार ही जातक का गुण अर्थात् स्वभाव समझना चाहिए॥

अथाङ्गेषु द्रेष्काणवशेन राशिविन्यासम् ॥ शिरोऽक्षिणी कर्णनसे कपोलौ हनुर्मुखं च प्रथमे दृका-
-णे। कण्ठांसदोर्दण्डककुक्षिवक्षः क्रोडं च नाभिस्त्रिलवे द्वितीये ॥१॥ वस्तिस्ततो लिङ्गगुदे ततोऽण्डावूरू च जानू
चरणौ तृतीये। क्रमेण लग्नात्परपूर्वभागे वामं तथा दक्षिणमङ्गमत्र ॥२॥ टीका॥ लग्न में यदि प्रथम द्रेष्काण का
उदय हो तो लग्नभाव में मस्तक (सिर), दूसरे तथा बारहवें भाव में नेत्र, तीसरे और ग्यारहवें भाव में कान,
चौथे तथा दसवें भाव में नाक, पाँचवें तथा नवें भाव में गाल, छठे तथा आठवें भाव में ठोड़ी तथा
सातवें भाव में मुख को समझना चाहिए। यदि लग्न में द्वितीय द्रेष्काण हो तो कण्ठ को लग्न में, दूसरे तथा
बारहवें भाव में कन्धा, तीसरे तथा ग्यारहवें भाव में बाहु, चौथे तथा दसवें भाव में कुक्षि, पाँचवें तथा
नवें भाव में हृदय, छठे तथा आठवें भाव में उदर तथा सातवें भाव में नाभि को स्थापित करना चाहिए।
यदि लग्न में तृतीय द्रेष्काण का उदय हो तो लग्न में पेडू, दूसरे तथा बारहवें भाव में लिङ्ग और गुदा, तीस-
-रे तथा ग्यारहवें भाव में अण्डकोश, चौथे तथा दसवें भाव में ऊरु, पाँचवें तथा नवें भाव में ठेहुना,
छठे तथा आठवें भाव में जंघा तथा सातवें भाव में पाँवों की स्थापना करनी चाहिए। इस प्रकार क्रम से

लग्न के पीछे ६ राशियों में बाँये अङ्ग, तथा लग्न से आगे की ६ राशियों में दाँये अङ्गों की स्थापना करनी चाहिए ॥१-२॥

अथ व्रण मषकादि ज्ञानम् ॥ मत्स्यं तिलं लक्ष्म बलानुसारं कुर्वन्ति सौम्या व्रणमत्र पापाः । स्वांशः स्वभाग स्थिरगाश्च लक्ष्मयुतेक्षिताः सम्यनभश्चरेन्दैः ॥१॥ कुर्याद्दुर्व्रणं क्रूरखगो रिपुस्थो युक्तः शुभैर्लक्ष्म तिलं च दृष्टः । ग्रहत्रयं यत्र बुधान्वितं स्यात्तत्र व्रणोऽङ्गे खलु राशितुल्यः ॥ २॥ रवेर्व्रणः काष्ठ चतुष्पदोत्थः शृङ्गचम्बुवारिप्रभवः शशाङ्कात् । कुजाद्विषाग्न्यस्त्रकृतश्च चान्द्रे भौमः शनेश्चापि मरुद्दृषद्भ्याम् ॥३॥ टीका ॥ जिस द्रेष्काण में जन्म हुआ हो, तदनुसार एक चक्र बनाऐं तथा अङ्गों की स्थापना करें । जिस अङ्ग में शुभ ग्रह हो, उस अङ्ग में : एसा तिल तथा लहसन होता है और जिस में पापग्रह हों, उसमें व्रण होता है ॥ पापग्रह अपने द्रेष्काण अथवा नवांश में होकर स्थिर राशि में हो तथा शुभग्रह से युक्त, दृष्ट तो व्रण के स्थान पर चिह्न होता है ॥ १॥ यदि जन्म कुण्डली के षष्ठभाव में पापग्रह हो तो वह व्रण कारक होता है । यदि षष्ठभाव में शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट पापग्रह हो तो लहसन अथवा तिल होता है । यदि बुध तीन पापग्रहों से युक्त हो तो वह जिस अङ्ग में बैठा हो, उसमें अवश्य ही व्रण होता है ॥२॥ पूर्वोक्त द्रेष्काण चक्र में जिस अङ्ग में सूर्य हो, उसमें काष्ठ अथवा चतुष्पद के आघात से, चन्द्रमा हो तो सींगयुक्त पशु अथवा जलचर से, मंगल हो तो अग्नि, विष अथवा शस्त्र से, बुध हो तो मिट्टी के आघात से और शनि हो तो वायु अथवा पत्थर के आघात से उस अङ्ग में व्रण होता है ॥ इति ॥

॥ इति भृगुसंहिता महाशास्त्रे ग्रहदृष्टिफलाध्याय चतुर्थखण्डः ॥


ॐ
इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
चतुर्थ खण्डः समाप्तः


ॐ
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
पंचम खण्डः भाषा टीका सहितम्
विविध योगाध्यायः

अथ श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम् पंचम खण्डः

ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ परमानन्दरूपोऽपि विश्वभारधरश्च यः। सर्वसाक्षी त्रिलोकेश तस्मै सूर्य्याय वै नमः॥ यानि वाक्यानि शुक्राय प्रोक्तानि भृगुणा मुदा। तानि सर्वाणि योगैर्हि कथयामि न संशयः॥ टीका॥ जो परमानन्द स्वरूप, विश्वंभार को धारण करने वाले, सबके साक्षी एवं तीनों लोकों के स्वामी हैं, उन श्रीसूर्य देव को मैं नमस्कार करता हूँ॥ पहले श्रीभृगुमहाराज ने शुक्र के प्रति जिन योगों का वर्णन किया था, अब यहाँ उन सब के विषय में लिखा जाता है॥

तदादौ नाभस योगाः॥ सर्वैश्चरस्था अपि वा स्थिरस्था द्विदेहसंस्था यदि वा भवन्ति। क्रमेण रज्जुर्मुसलं नलञ्च योगत्रयं स्यादिदमाश्रयाख्यम् ॥१॥ केन्द्रत्रये सौम्यखगैस्तु माला खलग्रहैर्व्यालसमाह्वयः स्यात्। इदं तु योगद्वितयं दलाख्यं पराशरेण प्रतिपादितं हि॥२॥ आसन्न केन्द्रद्वयगैर्गदाख्यो लग्नास्तसंस्थः शकटः समेतैः। खबन्धुवातैर्विहगः प्रदिष्टः शृङ्गाटकं लग्ननवात्मजस्थैः॥३॥ धनारिखस्थैस्त्रिमदायगैर्वा चतुर्थरन्ध्रव्यय संस्थितैर्वा। नभस्तलस्थैर्हलनाम योगः किलोदितोऽयं निखिलागमज्ञैः॥४॥ लग्नस्मरस्थानगतैः शुभाख्यैः पापैश्च मेषूरणबन्धुयातैः। वज्राभिधस्तद्विपरीतसंस्थैर्यवश्च मिश्रैः कमलाभिधानः॥५॥ सूर्याच्चतुर्थे कवि

चन्द्रसूनू कथं भवेतामिति नैव युक्तौ। यवाख्यवज्रौ त्विदमामनंति तत्रोपपत्तिं परिदर्शयामि ॥६॥ विलग्नपार्श्वद्वय वर्तिनौ चेज्ज्ञशुक्र जीवान्यतमा विलग्ने। कुजार्कि चंद्राः खलस्मरस्था वज्रविलोमाच्च यवो निरुक्तः ॥७॥ सर्वैर्नभोगैर्यदि नाभसाख्यो व्यालाख्यमाले त्रिभिरेव खेटैः। कथं भवेतामिति चिन्तयन्ति मुनिप्रणीतं कथमन्यथा स्यात् ॥८॥ त्यक्त्वा केन्द्राणि चेत्खेटाः शेषस्थानेषु संस्थिताः। वापीयोगो भवेदेवं गदितः पूर्वसूरिभिः ॥९॥ लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्याच्चतुर्गृहस्थैर्गगनेचरेन्द्रैः। क्रमेण यूपश्च शरश्च शक्तिर्दण्डः प्रदिष्टः खलु जातकज्ञैः ॥१०॥ लग्नाच्चतुर्थात्स्मरतः खमध्यात्सप्तर्क्षगैर्नौरिषुकूट संज्ञैः। छत्रं धनुश्चाप्यगृह प्रवृत्तैर्नौपूर्वकैर्योग इहार्धचन्द्रः ॥११॥ तनोर्धनाच्चैकगृहान्तरेण स्युः स्थानषट्के गगनेचरेन्द्राः। चक्राभिधानश्च समुद्रनामा योगा इतीहाकृतिजाश्च विंशत् ॥१२॥ ये योगाः कथिताः पुरा बहुतरास्तेषामभावे भवेद्। गोलश्चैकगतैर्युगं द्विगृहगैः शूलस्त्रिगेहा यगैः ॥ केदारश्च चतुर्षु सर्वखचरैः पाशस्तु पञ्चस्थितैः। षट्स्थैर्दामिनिका च सप्तगृहगैर्वीणेति संख्या इमे ॥१३॥ नानाप्रकारैः किल कालविद्भिर्योगा महद्भिः परिकीर्तिता ये। तत्कर्तृपाको हि फलं तदीयं बलानुमानेन विचिन्तनीयम् ॥१४॥

टीका॥ यदि सभी ग्रह चर राशि में हों तो 'रज्जु' नामक योग होता है। यदि सभी ग्रह स्थिर राशि में हों तो 'मुसल' नामक योग होता है। यदि सभी ग्रह द्विस्वभाव राशि में हों तो 'नल' नामक योग होता है ॥१॥ यदि सभी शुभ ग्रह तीन केन्द्रों में हों तो 'माला' नामक योग होता है। यदि तीन केन्द्रों में सभी पापग्रह हों तो 'सर्प' नामक योग होता है। महर्षि पाराशर ने इन दोनों योगों को 'दल' योग का नाम दिया है ॥२॥ यदि समीपस्थ दो केन्द्रों (यथा १,४ अथवा ४,७ अथवा ७,१० अथवा १०,१ भाव) में सभी ग्रह हों तो 'गदा' नामक योग होता है। यदि सभी ग्रह लग्न तथा सप्तम भाव में हों तो 'शकट' नामक योग होता है। यदि सभी ग्रह चतुर्थ और दशम भाव में हों तो 'विहग' (पक्षी) नामक योग होता है। यदि लग्न से त्रिकोण तक (१,५,९) में सभी ग्रह हों तो 'शृंगाटक'

नामक योग होता है॥३॥ यदि सभी ग्रह द्वितीय, षष्ठ तथा दशम भाव में अथवा तृतीय सप्तम और एकादश भाव में अथवा द्वादश, चतुर्थ, अष्टम भाव में हों तो इन तीनों प्रकारों की ग्रहस्थिति में 'हल' नामक योग होता है॥४॥ यदि लग्न तथा सप्तम भाव में सब शुभ ग्रह स्थित हों अथवा चतुर्थ तथा दशम भाव में सब पापग्रह हों तो इन दोनों प्रकार से 'वज्र' नामक योग होता है। इसके विपरीत लग्न और सप्तम में सभी पाप ग्रह अथवा चतुर्थ एवं दशम भाव में सभी शुभ ग्रह हों तो 'यव' नामक योग होता है। यदि इन दोनों स्थानों – लग्न और सप्तम अथवा चतुर्थ और दशम भाव में शुभ तथा पापग्रह – दोनों बैठे हों तो 'कमल' नामक योग होता है॥५॥ सूर्य से चतुर्थ में शुक्र और बुध किस प्रकार हो सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं हो सकते। तब 'वज्र तथा 'यव' योग किस प्रकार सिद्ध होंगे – इसकी युक्ति बतलाता हूँ॥६॥ बुध शुक्र और गुरु – इन तीनों में से दो – बुध और शुक्र – लग्न के आगे अथवा पीछे हों, गुरु लग्न में हो तथा पाप ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) दशम, चतुर्थ तथा सप्तम भाव में हों तो 'वज्र' योग अन्यथा इससे विपरीत स्थिति में 'यव' योग समझना चाहिए॥७॥ यदि सब ग्रहों से 'नाभस योग' होता है तो केवल तीन पाप अथवा शुभ ग्रह से ही 'सर्प' तथा 'माला' योग क्यों कहे गए हैं? अतः मुनियों द्वारा वर्णित 'वज्र' तथा 'यव' योग में ही सब ग्रहों को नहीं लेना चाहिए, क्योंकि मुनियों का कथन असंगत नहीं हो सकता॥८॥ यदि चारों केन्द्रों को छोड़ कर अन्य स्थानों में उक्त प्रकार से ग्रहों की स्थिति हो तो पूर्वाचार्यों ने उसे 'वापी' नामक योग का नाम दिया है॥९॥ यदि लग्न से लगातार चार स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'यूप' नामक योग होता है। यदि चतुर्थ भाव से लगातार चार स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'शर' नामक योग होता है। यदि सप्तम भाव से लगातार चार स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'शक्ति' नामक योग होता है। यदि दशम भाव से लगातार चार स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'दण्ड' नामक योग होता है॥१०॥ यदि लग्न से आरम्भ करके लगातार सात स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'नौका' नामक योग

होता है। यदि चतुर्थभाव से लगातार सात स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'कूट' नामक योग होता है। यदि सप्तमभाव से लगातार सात स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'छत्र' योग होता है। यदि दशमभाव से लगातार सात स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'धनुष' नामक योग होता है। यदि केन्द्र (१.४.७.१०) के अतिरिक्त किसी स्थान से आरंभ करके लगातार सात स्थानों में सभी ग्रह हों तो 'अर्द्धचन्द्र' नामक योग होता है॥ ११॥ लग्न से आरम्भ कर, एकान्तर करके अर्थात् एक-एक भाव को छोड़ कर (यथा—१.३.५.७ आदि), विषम भावों में सभी ग्रह हों तो 'चक्र' नामक योग होता है। यदि द्वितीय भाव से आरम्भ कर, एकान्तर कर के (यथा- २,४,६ आदि), छः भावों में सभी ग्रह हों तो 'समुद्र' नामक योग होता है। इस प्रकार से २० तरह के आकृति योग होते हैं॥ ॥१२॥ उक्त योगों के लक्षणों से भिन्न अर्थात् यदि सभी ग्रह (सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु, शुक्र तथा शनि ये ७ ग्रह) एक ही राशि में हों तो 'गोल' नामक योग होता है। यदि दो स्थानों (भावों) में हों तो 'युग' नामक योग होता है। यदि तीन स्थानों में हों तो 'शूल' नामक योग होता है। यदि चार स्थानों में हों तो 'केदार' नामक योग है। यदि पाँच स्थानों में हों तो 'पाश' नामक योग होता है। यदि छै स्थानों में हों तो 'दाम' नामक योग होता है और यदि सात स्थानों में हों तो 'वीणा' नामक योग होता है॥ ३॥ इस प्रकार के जो योग मुनियों द्वारा कहे गए हैं, उनका फल ग्रहों के बलानुसार पूर्ण, मध्यम अथवा अल्प—तारतम्य से समझना उचित है॥१४॥

नाभसयोगफलम्॥ चञ्चद्रूपेणान्विताः क्रौर्यभाजो जातोत्साहाः क्रूरकार्ये नितान्तम्। रज्जुयोगोत्पन्नमर्त्याः स्वदेशे ह्यन्यस्मिन्वै सञ्चरन्त्यर्थलब्ध्यै॥ १५॥ नाना मानैर्हीन धान्योपपन्नः पुत्रैर्लक्ष्म्या राजते राजतेजाः। पृथ्वीपालस्याश्रितः स्यात्सहर्षो हर्षोत्कर्षो वापि कुन्मौसलेषु॥१६॥ शश्वत्पूर्णापूर्णरत्नैः स्वगेहा राजस्नेहाः पुण्यदेहाश्च मर्त्याः। कीर्त्या युक्ताः सर्वदासीन देवा दैवज्ञेषां जन्मकाले नलश्चेत्॥१७॥ पुत्रैर्मित्रैश्चारुभूषाविशेषैर्नानायानैरन्वितास्ते भवन्ति। येषां पुंसां सूतिकाले हि माला मालादोलाकामिनीकेलि

शीला ॥१८॥ योक्तान्यस्यन्नस्य रौद्रो दरिद्रो निद्रोत्साहो रुट् समुद्रोत्यभद्रः। दुर्धर्षः स्याच्चोपकाराश्च सार्पः सर्प-
सूतौ यस्य मर्त्यस्य योगः ॥१९॥ नानाशास्त्रानेकमन्त्रानुरक्तो गीते वाद्ये कोविदश्चापि यज्वा। रौद्रो द्वेषी द्वेषि-
वर्गैर्वियुक्तो युक्तो योषाभूषणाद्यैर्गदायाम् ॥२०॥ दीनो हीनो वैभवेनार्थमित्रैर्यस्योत्पत्त्यावाप्तकाश्योऽप्यवश्यम्। पा-
ति प्रीतिं प्राप्य मर्त्यः कुयोषां त्यक्त्वा योगे शाकटे यस्य जन्म ॥२१॥ येषां सूतौ मानवानां विहंगो योगो भो-
गोत्पन्नसौख्यं न तेषाम्। याने प्रीतिर्नित्यमेव प्रवासः सर्वार्थानामल्पता जल्पतार्क्ष्यौ ॥२२॥ भूपोत्कर्षः साहसी
संगरेच्छुः सौख्यैर्युक्तोऽत्यंत बुद्धिर्नरः स्यात्। प्रीतिर्गच्छेत्पूर्वपत्न्याः सपत्न्या द्रोहं चैवं शृङ्गपूर्वे मुखोटे ॥२३॥
प्रेष्यो युक्तः साधुभिर्मित्रवर्गैः कृष्या जीवी दुःखितोऽत्यन्तमुर्वस्यात्। उत्पत्तिर्यो लाङ्गलाख्ये प्रयाति याति क्लेशं
निर्धनत्वात्प्रकामम् ॥२४॥ आद्ये भागे जीवितस्यांतिमे च सौख्योपेतो भाग्यवान्मानवः स्यात्। मध्ये भागे
भाग्यहीनः प्रकामं कामैः क्रोधैरन्वितो वज्रयोगे ॥२५॥ मध्ये भागे धर्मकामार्थसंपत्सौख्यैर्युक्तः स्याद्विनीतो वदा-
न्यः। नित्योत्साहः सद्व्रते तु प्रशांतः शांतक्रोधो यः प्रसूतो यवाख्ये ॥२६॥ नित्यं हर्षोत्कर्षशाली बलीयां-
श्चञ्चत्कांतिर्गीतिकीर्तिर्मनुष्यः। योगे सूतिश्चेत्सरोजे स राजा राज्ञां वंश्यो वा भवेद्दीर्घजीवी ॥२७॥ दीर्घायुः
स्यादात्मवंशावतंसः सौख्योपेतोऽत्यंत धीरो मनीषी। चंचद्वाक्यः सन्मनाः पुण्यवापीवापीयोगे यः प्रसूतः
प्रतापी ॥२८॥ धीरोदारो यत्नकर्मानुसारो नानाविद्यासद्विचारो नरो वै। यस्योत्पत्तौ वर्तते यूपयोगो योगो
लक्ष्म्या जायते तस्य नूनम् ॥२९॥ हिंस्रोऽत्यंतं शिल्पदुःखैः प्रतप्तः प्राप्तानन्दः काननांते शरद्यः। मर्त्यो योगे
यः शरे जातजन्मा जन्मारंभात्तस्य न क्वापि सौख्यम् ॥३०॥ नीचैरुच्चैः प्रीतिकृत्सालसश्च सौख्यैरर्थैर्व-
र्जितो निर्बलश्च। वादे युद्धे तस्य बुद्धिर्विशाला शाला सौख्यस्याल्पता शक्तियोगे ॥३१॥ दीनो हीनोऽन्नपत्त-
संजातसख्यः प्रेष्यो द्वेषी गोत्रजैस्तातवैरः। कांतापुत्रैरर्थमित्रैर्विहीनो हीनो बुद्ध्या दण्डयोगाप्तजन्मा ॥३२॥
क्लेशी शश्वच्चंचलस्वांतवृत्तिर्वृत्तिस्तेयो-
ख्यातो लुब्धो भोगसौख्यैर्विहीनो यो नौयोगे लब्धजन्मा मनुष्यः।

दूभूतधाम्येन तस्य ॥३३॥ दुर्गारण्यावासशीलश्च मल्लो भिल्लप्रीतिर्निर्धनो निन्द्यकर्मा धर्माधर्मज्ञानहीनश्च कूटः कूटप्राप्तोत्पत्तिरेवं मनुष्यः ॥३४॥ प्राज्ञो राज्ञां कार्यकर्ता दयालुः पूर्वं पश्चात्सर्वसौख्यैरुपेतः। यस्योत्पत्तौ छत्रयोगो पलब्धिस्तस्य च्छत्रसच्चामराद्यौ ॥३५॥ आद्ये भागे चांतिमे जीवितस्य सौख्योपेतः काननाद्रिप्रचारः। योगे जातः कार्मुके सोऽतिगर्वो गर्वोन्मत्तापत्तिकृत्कार्मुकास्त्रः ॥३६॥ भूमीपालप्राप्तचंचत्प्रतिष्ठः श्रेष्ठः स्वर्णाऽभूषणाद्यम्बराद्यैः। चेदुत्पत्तौ यस्य योगोऽर्द्धचन्द्रश्चन्द्रः साक्षात्पुत्सवाद्यैर्जनानाम् ॥३७॥ श्रीमद्रूपोऽत्यंतजातप्रतापो भूपो भूयोपायनैरन्वितः स्यात्। योगे जातः पुरुषो यस्तु चक्रे चक्रे पृथिव्यः शालिनी तस्य कीर्तिः ॥३८॥ दानी धीरश्चारुशीलो दयालुः पृथ्वीपालप्राप्तसौख्यः प्रकामम्। योगे जातो यः समुद्रे स धन्यो धन्यो वंशस्तेन नूनं नरेण ॥३९॥ विद्यासत्त्वौदार्यसामर्थ्यहीना नानायासा नित्यजातप्रवासाः। येषां योगः संभवे गोलनामा नानासत्प्रीतयोऽनीतयस्ते ॥४०॥ यारवंडेनाखण्डितप्रीतिभाजो निर्लज्जाः स्युर्धर्मकर्मा प्रयुक्ताः। पुत्रैरर्थैः सर्वथा ते वियुक्ता युक्ता युक्ताज्ञानशून्या युगाख्ये ॥४१॥ युद्धे वादे तत्पराश्चातिशूराः क्रूराः स्वांते निष्ठुरा निर्धनाश्च। योगे येषां सूतिकाले हि शूलः शूलप्रायास्ते जनानां भवन्ति ॥४२॥ सत्योपेताश्चार्थवंतो विनीताः कृष्यौत्सुक्याश्चोपकारादराश्च। योगे केदारे ये नरास्तेऽपि धीराचारश्चापि तेषां विशेषात् ॥४३॥ दीनाकारास्तत्पराश्चापकारे बन्धेनार्ता भूरितल्पाः सदम्भाः। नानानर्थाः पाशयोगे प्रजाता जातारण्यप्रीतयः स्युर्मनुष्याः ॥४४॥ जातानन्दो नन्दनाद्यैः सुधीरो विद्वान्भूषाकोशसंजाततोषः। चंचच्छीलोदारबुद्धिप्रशस्तः शस्तः सूतौ दामिनी यस्य योगः ॥४५॥ अर्थोपेताः शास्त्रपारंगताश्च सङ्गीतज्ञाः पोषकाः स्युर्बहूनाम्। नानासौख्यैरन्विताऽस्तु प्रवीणा वीणायोगे प्राणितं जन्म येषाम् ॥४६॥ प्रोक्तैरेतैर्नाभसाख्यैश्च योगैः स्यात्सर्वेषां प्राणिनां जन्मकामम्। तस्मादेतेऽत्यंतयत्नाद पूर्वाः पूर्वाचार्यैर्जातके संप्रदिष्टाः ॥४७॥ एवं योगानां फलं शालिनी सद्वृत्तैर्व्यक्तं युक्तियुक्तं निरुक्तम्। तस्मात्प्राज्ञैः सत्कवीनामनूनं सौख्यं चैवं जातके कोमलोक्त्या ॥४८॥

टीका॥ 'रज्जु' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर स्वरूप वाला, क्रूर स्वभाव वाला,
उत्साही एवं धनोपार्जन के लिए देश-विदेश में भ्रमण करने वाला होता है॥ १५॥ 'मुसल' नामक योग में जन्म
लेने वाला मनुष्य सर्वत्र सम्मानित; ज्ञान, धन-धान्य तथा पुत्रादि सब प्रकार के सुख एवं सम्पत्ति से
युक्त, राजा के समान तेजस्वी, राजा का आश्रित तथा सदैव हर्ष एवं उत्कर्ष को पाने वाला होता है॥ १६॥
'नल' नामक योग में जन्म लेने वाला सदैव न्यूनाधिक रत्नों से अपने घर को भरने वाला, राजा का प्रियपात्र
पुण्यवान्, यशस्वी तथा देवताओं को प्रसन्न करने वाला होता है॥ १७॥ 'माला' योग में जन्म लेने वाला पुत्र,
मित्र, धन-धान्य, वस्त्र, आभूषण एवं अनेक प्रकार की सवारियों वाला तथा सुन्दरी स्त्रियों के साथ सुखो-
-पभोग करने वाला होता है॥ १८॥ 'सर्प' नामक योग में जन्म लेने वाला परान्नभोजी, क्रूर, भयानक, दरिद्र,
अधिक सोने वाला, क्रोध का समुद्र अर्थात् महाक्रोधी, अभद्र, दुर्धर्ष तथा परोपकार करने में सर्प के समा-
-न होता है॥ १९॥ 'गदा' नामक योग में जन्म लेने वाला अनेक शास्त्र तथा मन्त्र-तन्त्र में अनुरक्त, सङ्गीत
तथा वाद्य-कला में निपुण, यज्ञकर्त्ता, रौद्र वेष वाला, पर द्वेषी तथा स्त्री, आभूषण आदि से युक्त होता है॥ २०॥
'शकट' नामक योग में जन्म लेने वाला दीन, ऐश्वर्य-हीन, कृश-शरीर, मित्र-हीन, दुष्ट-स्त्री के सङ्ग से दुःखी होने
तथा उसे छोड़ कर प्रसन्न होने वाला होता है॥ २१॥ 'विहग' नामक योग में जन्म लेने वाला सुख-भोग-रहित,
व्यर्थ-भ्रमण में रुचि रखने वाला, सदैव परदेश में रहने वाला तथा सब पदार्थों की कमी रहते हुए भी बहुत
डींगें हाँकने वाला होता है॥ २२॥ 'शृङ्गाटक' नामक योग में जन्म लेने वाला नित्य उत्कर्ष पाने वाला, साहसी,
संग्राम-प्रिय, अत्यन्त बुद्धिमान् तथा अपनी पहली स्त्री से प्रेम तथा दूसरी से द्वेष करने वाला होता है॥ २३॥
'हल' नामक योग में जन्म लेने वाला दूत-कर्म करने वाला, साधु-प्रिय, मित्र युक्त, कृषि-कर्म से आजीविको-
-पार्जन करने वाला, दुःखी, बहुत भोजन करने वाला तथा धन की कमी से कष्ट पाने वाला होता है॥ २४॥

'वज्र' नामक योग में जन्म लेने वाला बाल्यावस्था एवं अन्तिम अवस्था में भाग्योदय एवं सुख भोगने वाला होता है। मध्यमायु में भाग्य तथा सुख की कमी रहती है॥ २५॥ 'यव' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य युवावस्था में सम्पत्ति आदि से सुखी रहता है तथा विनयी, सुयशी, उत्साही, दानी, शान्त स्वभाव का तथा सद्गुणी होता है अर्थात् बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में दुःख भोगता है॥ २६॥ 'कमल' नामक योग में जन्म लेने वाला नित्य आनन्द तथा उत्कर्ष को प्राप्त होने वाला, बलवान्, मनोहर कान्ति वाला, विख्यात, सुयशी और राजवंश में जन्मा हो तो राजा अन्यथा दीर्घजीवी होता है॥ २७॥ 'वापी' नामक योग में जन्म लेने वाला जातक दीर्घायु, अपने कुल में भूषण स्वरूप, सब प्रकार के सुखों से युक्त, धैर्यवान्, विद्वान्, प्रियवादी, मनस्वी तथा प्रतापी होता है॥ २८॥ 'यूप' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य धीर, उदार, यज्ञकर्ता, अनेक विद्याओं का जानकार, विवेकशील तथा सब प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त होता है॥ २९॥ 'शर' नामक योग में जन्म लेने वाला हिंसक, शिल्प-कर्म से दुःख पाने वाला, वन में रह कर आनन्द पानेवाला, बाण आदि शस्त्रों का निर्माता तथा जन्म से ही कभी भी सुख न पाने वाला होता है॥ ३०॥ 'शक्ति' नामक योग में जन्म लेनेवाला मनुष्य छोटे-बड़े सब लोगों से प्रेम करने वाला, आलसी, सुख तथा धन से हीन, निर्बल, वाद-विवाद एवं युद्ध करने में श्रेष्ठ बुद्धि वाला तथा गृह-सुख से रहित होता है॥ ३१॥ 'दण्ड' नामक योग में जन्म लेने वाला दीन, नीचएवं उन्मत्त लोगों का साथी, दूत-कर्म करने वाला, स्वजनों से वैर करने वाला तथा स्त्री-पुत्र एवं धन से हीन, बुद्धि-रहित होता है॥ ३२॥ 'नौका' नामक योग में जन्म लेने वाला सुप्रसिद्ध, कृपण, सुख-भोग-हीन, सदैव क्लेश पाने वाला तथा चोरी का धन खाने वाला होता है॥ ३३॥ 'कूट' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य वन-पर्वत-दुर्ग आदि में वास करने वाला, मत्स्य, भीलों से प्रेम करने वाला, निर्धन, निन्द्य-कर्म करने वाला, धर्माधर्म के ज्ञान से रहित तथा क्रूर-कर्म करने वाला

अर्थात् मिथ्या-साक्षी देने वाला अथवा नकली वस्तुऐं बनाने वाला होता है ॥ ३४॥ 'छत्र' नामक योग में जन्म लेने वाला जातक पण्डित, राज्यकर्मचारी, दयालु, प्रारंभ से अन्त तक सुखी जीवन बिताने वाला तथा छत्र-चँवर आदि राज्य-चिह्न धारण करने वाला होता है ॥ ३५॥ 'धनुष' नामक योग में जन्म लेने वाला अपने जीवन के पूर्व तथा अन्तिम भाग में सुखी होता है। वह वन में विहार करने वाला, अत्यन्त गौरव शाली तथा धनुष-विद्या का जानकार होता है ॥३६॥ 'अर्द्धचन्द्र' नामक योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा द्वारा विशेष सम्मानित, स्वर्णभूषण, धन तथा वस्त्रों का श्रेष्ठ लाभ पाने वाला एवं लोकप्रिय होता है ॥ ३७॥ 'चक्र' योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सुन्दर स्वरूपवान्, अत्यन्त प्रतापी, अनेक उपहारों से युक्त, पृथ्वी का पालक प्रतापी राजा होता है ॥ ३८॥ 'समुद्र' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दानी, धीर, सुशील, दयालु, राजा से सुख पाने वाला, यशस्वी तथा अपने कुल को धन्य बनाने वाला होता है ॥ ३९॥ 'गोल' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य विद्या, बल, उदारता एवं सामर्थ्य से हीन, अनेक यत्नों में विफल, सदैव परदेश में रहने वाला असत्यवादी एवं अनीति कर्त्ता होता है ॥ ४०॥ 'युग' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य पाखण्डी, किसी से भी प्रेम न करने वाला, निर्लज्ज, धर्म-कर्म-रहित, पुत्र एवं धन से हीन तथा उचित-अनुचित के विवेक से रहित होता है ॥ ४२॥ 'शूल' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य युद्ध तथा विवाद में तत्पर, शूर-वीर, क्रूर, कठोर, निर्धन तथा लोक के लिए कण्टक स्वरूप होता है ॥ ४२॥ 'केदार' नामक योग में जन्म लेने वाला, सत्यवादी, धनी, विनम्र, कृषि-कर्म करने वाला, परोपकारी, दूसरों का सम्मान करने वाला तथा सदाचारी होता है ॥ ४३॥ 'पाश' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य दीन, दूसरों का अपकार करने वाला, बन्धन (कारावास आदि) के कारण दुःखी, अनेक बिस्तर रखने वाला, घमण्डी, अनेक प्रकार के अनर्थों से युक्त तथा वनवास-प्रिय होता है ॥ ४४॥ 'दामिनी' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य

पुत्र, स्त्री, धन आदि से सुखी, धीर, विद्वान्, स्वर्ण-रजत-रत्नादि से परिपूर्ण कोष से सन्तुष्ट, सुशील, उदार-बुद्धि वाला तथा श्रेष्ठ पुरुष होता है ।। ४५ ।। 'वीणा' नामक योग में जन्म लेने वाला मनुष्य सब प्रकार की सम्पत्तियों से सम्पन्न, शास्त्रों के तत्व एवं संगीत का ज्ञाता, अनेक लोगों का पालक तथा सब प्रकार के सुखों से युक्त होता है ।। ४६ ।। प्राणियों के जन्म के समय इन योगों में से कोई-न-कोई योग अवश्य उपस्थित रहता है और उस योग का फल भी जातक को सदैव प्राप्त होता है। अतः पूर्वाचार्यों ने यत्नपूर्वक इन योगों का उल्लेख जातक शास्त्र में किया है ।। ४७ ।। इन योगों के फल शालिनी नामक युक्ति सहित स्पष्ट कहे गए हैं। इन कोमल युक्तियों द्वारा पण्डितजनों को अवश्य ही अधिक आनन्द प्राप्त होगा - ऐसी आशा है ।। ४८ ।। इति नाभसयोग फलम् समाप्तम् ।।

अथ सूर्य योगाः ।। रवेश्वरादिनमणेर्विधुवर्ज्यं द्वादशे च धनभे तुभये वा । वोशिवेश्युभयचार्यभिधानाः प्राक्तनैः समुदिता इति योगाः ।। १ ।। स्यान्मन्ददृष्टिर्बहुकर्मकर्ता पश्यत्यधश्चोन्नत पूर्वकायः । असत्यवादी यदि वोशियोगः प्रसूतिकाले मनुजस्य यस्य ।। २ ।। चेत्सम्भवे यस्य च वेशियोगो भवेद्दयालुः पृथुपूर्वकायः । स्याद्वाग्विलास्यालसतासमेतस्तिर्यक्प्रचारः खलु तस्य दृष्टेः ।। ३ ।। सर्वसहः स्थिरतरोऽतितरां समृद्धः सत्त्वाधिकः समशरीरविराजमानः । नात्युच्चकः सरलदृक् प्रबलामलश्रीयुक्तः किलोभयचरीप्रभवो नरः स्यात् ।। ४ ।।

टीका ।। अब सूर्य योगों के विषय में कहते हैं। चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य कोई भी ग्रह यदि सूर्य से द्वादशभाव में हो तो 'वोशि' नामक योग होता है। यदि द्वितीयभाव में हो तो 'वेशि' नामक योग होता है। यदि द्वितीय और द्वादश- दोनों भावों में ग्रह हों तो 'उभयचरी' नामक योग होता है ।। १ ।। वोशि नामक योग में जन्म लेने वाला मन्द-दृष्टि, अनेक कामों को करने वाला, नीचे देख कर चलने वाला तथा मिथ्या-व्यवहार करने वाला होता है ।। २ ।। 'वेशि' नामक योग में जन्म लेने वाला दयालु, स्थूल शरीर वाला,

वाक्पटु, कुछ आलसी तथा तिरछी दृष्टि वाला होता है ॥ ३॥ 'उभयचरी' योग में जन्म लेने वाला क्षमाशील, स्थिर स्वभाव का, सब प्रकार की सम्पत्तियों से युक्त, अत्यन्त बलवान्, समान शारीरिक अवयवों से शोभित, अधिक उन्नत नहीं, सरल दृष्टि वाला तथा अचल सम्पत्ति से युक्त होता है ॥ ४॥

सूर्यस्य वीर्यात्खचरानुसारो द्रष्टव्यं शयोगात्प्रविचार्य सर्वम्। न्यूनं समं वा प्रबलं नराणां फलं सुधीभिः परिकल्पनीयम् ॥ टीका॥ इन योगों में सूर्यादि ग्रहों की उच्च-नीचादि राशि अंशों में स्थिति देख कर ही तारतम्य से न्यून, मध्यम अथवा अधिक फल घटित होने के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए॥

अथ चन्द्रयोगाः॥ द्विजपतेर्धनिगैः सुनफा भवेद्व्ययगतैरनफा रविवर्जितैः। दुरुधराः खचरैरुभयस्थितैर्मुनिवरैरुदिता महदादरात् ॥१॥ निशाकराज्जन्मनि खेचरेन्द्रा धनव्ययस्थानगता न चेत्स्युः। वदन्ति केमद्रुमनाम योगं लक्ष्मीवियोगं कुरुते स नूनम् ॥२॥ निजभुजार्जितमानसमुन्नतो विशदकीर्तियुतो मतिमान्सुखी। ननु नरः सुनफाप्रभवो भवेन्नरपतेः सचिवः सुकृतिः कृती ॥३॥ उदारमूर्तिं गुणकीर्तिशाली कन्दर्पकायः शुभवाग्विलासः। सद्वृत्तियुक्तः सततं विनीतः प्रभुर्नरः स्यादनफाभिधाने ॥४॥ द्रविणवाहनबन्धुवसुन्धरासुखयुतं सततं कुरुते नृपम्। दुरुधराऽतितरां जितवैरिणं सुनयनानयनाञ्चललालसम् ॥५॥ विरुद्धवृत्तिर्मलिनः कुवेषः प्रेष्यो मनुष्यो हि विदेशवासी। कान्तासुहृत्सूनुधनैर्विहीनः केमद्रुमे भूमिपतेः सुतोऽपि ॥६॥ केन्द्रादिगामी यदि यामिनीशः स्यात्पद्मिनीनायकतः करोति। विभ्राजमानोन्नति नैपुणानि कनिष्ठमध्योत्तमतायुतानि ॥७॥ प्रालेयरश्मिः परिसूतिकाले निरीक्ष्यमाणः सकलैर्नभोगैः। नरं चिरंजीवितसार्वभौमं करोति केमद्रुममाशु हत्वा ॥८॥ चतुर्षु केन्द्रेषु भवन्ति खेटा दुष्टोऽपि केमद्रुमयोग एषः। विहाय केमद्रुमतां नितान्तं कल्पद्रुमः स्यात्किल सत्फलाप्त्यै ॥९॥ क्षितिसुतश्रुत जीवे सूतिकाले तुलायां विलसति नलिनीनां नायकः कन्यकायाम्। विधुरपि यदि शोभैर्नेक्षितो मेषवर्ती जनयति नृपतीन्दुं हन्तु केमद्रुमं च ॥१०॥

टीका।। सूर्य के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह यदि चन्द्रमा से द्वितीय भाव में हो तो 'सुनफा' नामक योग होता है। यदि द्वादश भाव में हो तो 'अनफा' नामक योग होता है। यदि द्वितीय तथा द्वादश - दोनों भावों में ग्रह हों तो 'दुरुधरा' नामक योग होता है ।।१।। यदि चन्द्रमा से द्वितीय तथा द्वादश भाव में कोई भी ग्रह न हो तो 'केमद्रुम' नामक योग होता है ।।२।। यदि जातक के जन्म समय में 'सुनफा' योग हो तो वह अपने भुजबल धन तथा सम्मान अर्जित करता है एवं परम यशस्वी, बुद्धिमान्, सब प्रकार के सुखों से युक्त, राजमन्त्री, पुण्यवान् एवं पण्डित होता है ।।३।। यदि 'अनफा' योग हो तो जातक उदार, गुणवान्, यशस्वी, अत्यन्त सुन्दर, प्रियभाषी, सदाचारी, विनयी, राजा अथवा राजा के समान होता है ।।४।। यदि 'दुरुधरा' योग हो तो जातक धन, वाहन, बन्धु, भूमि आदि सम्पत्तियों से युक्त, राजा के समान शत्रुजयी तथा सुन्दर स्त्रियों के सुख से सुखी होता है ।।५।। यदि 'केमद्रुम' योग हो तो जातक विरुद्ध-आचरण करने वाला, मलिन, कुरूप, दूत-कर्म करने वाला, विदेशवासी एवं स्त्री, मित्र, धन आदि से रहित होता है ।।६।। यदि सूर्य से चन्द्रमा 'केन्द्र' में हो तो जातक को धन, जन, विद्या, यश, निपुणता आदि का उत्तम लाभ होता है। यदि 'पणफर' में हो तो उक्त विषयों का मध्यम लाभ होता है और यदि 'आपोक्लिम' स्थान में हो तो इन विषयों का निम्नकोटि का (अल्प) लाभ होता है ।।७।। यदि जन्म काल में चन्द्रमा पर सभी ग्रहों की दृष्टि हो तो 'केमद्रुम' योग भङ्ग हो जाता है तथा जातक चिरजीवी, सुखी एवं सार्वभौम राजा होता है ।।८।। यदि जन्म समय में केन्द्रों (चारों केन्द्रों) में ग्रह स्थित हों तो दुष्ट 'केमद्रुम' योग भङ्ग हो जाता है तथा सब प्रकार के सुखों को देने वाला 'कल्पद्रुम' नामक योग बनता है ।।९।। यदि जन्म समय में मंगल और गुरु तुला में, सूर्य कन्या में तथा चन्द्रमा मेष राशि में हो और उस (चन्द्रमा) पर अन्य ग्रहों (बुध, शुक्र तथा शनि की दृष्टि न भी हो तो भी 'केमद्रुम' योग भङ्ग होता है तथा जातक राजा होता है ।।१०।।

अथ सुनफा योग विशिष्ट फलम् ॥ विक्रमवित्तप्रायो निष्ठुरवचन प्रचमूपतिः प्रचण्डः। हिंस्रो डिम्भविरोधी सुनफायां भौमयोगेन ॥१॥ श्रुति शास्त्रगेयकुशलो धर्मरतः काव्यकृन्मनस्वी च। स्त्री क्षेत्रे सर्वहितो रुचिरतनुः सोमजे भवति ॥२॥ नानाविद्याख्यातं नृपं नृपश्रीयुतं तथावापि। सुकुटुम्ब धन समृद्धं सुनफायां सुरगुरुः कुरुते ॥३॥ स्त्रीक्षेत्रवित्तगृहपश्चतुष्पदाढ्यः सुविक्रमो भवति। नृपसत्कृतः सुवेशो दक्षः शुक्रेण सुनफायाम् ॥४॥ निपुणमति ग्रामपुरैर्नित्यं संपूजितो धनसमृद्धः। सुनफायां रविपुत्रे क्रिया सुगुप्तो भवेन्मलिनः ॥५॥ टीका ॥ जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा से दूसरे स्थान में मङ्गल हो, वह अत्यन्त पराक्रमी, धनी, निष्ठुर वचन बोलने वाला, सेनापति, प्रचण्ड हिंसक तथा बालकों का विरोधी होता है ॥१॥ यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान में बुध हो तो जातक वेद, शास्त्र एवं सङ्गीत में निपुण, धर्मात्मा, कवि, मनस्वी, स्त्री तथा क्षेत्र में सबका हित करने वाला एवं सुन्दर स्वरूप वाला होता है ॥२॥ यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान में गुरु हो तो जातक अनेक विद्याओं का ज्ञाता, प्रसिद्ध राजा अथवा राजश्री युक्त, श्रेष्ठ कुटुम्ब वाला एवं धन की समृद्धि से युक्त होता है ॥३॥ यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान में शुक्र हो तो जातक स्त्री तथा क्षेत्र युक्त, श्रेष्ठ वेशवाला, गृहपति, चतुष्पदजीवी, अत्यन्त पराक्रमी, राजा द्वारा सम्मानित तथा चतुर होता है ॥४॥ यदि चन्द्रमा से दूसरे स्थान में शनि हो तो जातक चतुर, बुद्धिमान्, ग्राम तथा पुर में मान्य, धन की समृद्धि वाला, गुप्त क्रियाओं वाला तथा मलिन वेश वाला होता है ॥५॥

अथ अनफा योग विशिष्ट फलम् ॥ चौरस्वामी दृप्तः सुधनी मानी रणोत्कटः सेर्ष्यः। क्रोधी श्लाघ्यः सुतनुः कुजेऽनफायां प्रगल्भश्च ॥१॥ गांधर्वलेख्यपटुः कविः प्रवक्ता नृपाप्तसत्कारः। रुचिरः सुभगो नयवान्प्रसिद्धकर्मा बुधेन भवेत् ॥२॥ गांभीर्यसत्वसेवास्थानयुतो बुद्धिमान्नृपाप्तयशाः। अनफायां त्रिदश [illegible] सत्कवि र्भवति ॥३॥ [illegible] सुभगः प्रणयी क्षितिपस्य गोपतिः कांतः। कनक

समृद्धश्च पुमान् ऽनफायां मार्गवे भवति ॥ ४॥ विस्तीर्णभुजः सुभगो गृहीतवाक्यश्चतुष्पदसमृद्धः । दुर्विनिता गणभोक्ता गुणसहितः पुत्रवान्नविजे ॥ ५॥ टीका ॥ जिसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से बारहवें स्थान में मंगल स्थित होने के कारण 'अनफा' योग बनता हो, वह जातक चोरों का स्वामी, धनी, मानी, युद्ध में प्रबल, ईर्ष्यालु, क्रोधी तथा सुन्दर शरीर वाला होता है ॥ १॥ यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में बुध हो तो जातक गन्धर्व विद्या का जानकार, लिखने में चतुर, कवि, वक्ता, राजा द्वारा सम्मानित, सौभाग्यशाली एवं नीतिज्ञ होता है ॥ २॥ यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में गुरु हो तो जातक गंभीर, सत्त्ववान्, सेवा-कर्म में नियुक्त, बुद्धिमान्, राजा द्वारा यश प्राप्त करने वाला तथा श्रेष्ठ कवि होता है ॥ ३॥ यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शुक्र हो तो जातक स्त्रियों के सौभाग्य वाला, राजा से स्नेह पाने वाला, गायों का स्वामी, सुन्दर रूपवान् तथा स्वर्ण की समृद्धि वाला होता है ॥ ४॥ यदि चन्द्रमा से बारहवें स्थान में शनि हो तो जातक विस्तृत भुजाओं वाला, सुन्दर, वचन-पालक, चतुष्पदों से समृद्ध, दुष्ट-स्त्रियों के साथ भोग करने वाला, गुणी तथा पुत्रवान् होता है ॥ ५॥

अथ दुरुधरा योग विशिष्ट फलम् ॥ अनृतको बहुवित्तो निपुणोऽतिशठो गुणाधिको लुब्धः । वृद्धा सती प्रसक्तः कुलाग्रणीः शशिनि भौमबुधमध्ये ॥ १॥ ख्यातः कर्मसु कितवो बहुधन वैरस्त्व मर्षणो धृष्टः । आरक्षकः कुजगुर्वोः संग्रहशीलः शशिनि मध्ये ॥ २॥ उत्तमरामासुभगो विवादशीलोऽस्त्रविद् वेच्छूरः । व्यायामी रणशीलः सितासोर्मध्यगे चन्द्रे ॥ ३॥ कुत्सितयोषिद् भगो बहुसिंचय कारकः व्यसनतप्तः । क्रोधी पिशुनो रिपुमान्यमारयोः स्याद् दुरधुरायाम् ॥ ४॥ धर्मपरः शास्त्रो वाचालः सत्कविर्भवेन्नृपतिः । त्यागयुतो विख्यातो गुरुबुध मध्य स्थिते चन्द्रे ॥ ५॥ प्रियवाक् सुभगः कांतः प्रनृत्यगेयादि विक्रयी नृपतिः । सेर्ष्यः शूरो मन्त्री बुधासितयोर्दुरधुरायोगे ॥ ६॥ देशाद्देशं गच्छति वित्तधरो नातिविद्यया सहितः । चन्द्रेऽन्येषां पूज्यः स्वजनविरोधी ह्यमंदयोर्मध्ये ॥ ७॥ धृतिमेधा सौख्य

पुतो नीतिज्ञः कनकरत्नपरिपूर्णः। ख्यातो नृपकृत्यकरो गुरुसितयोर्धुरधुरा योगे ॥८॥ सुखनय विज्ञानयुतः प्रियवाग्विद्यान्सुवत्सलो मान्यः। स्वतो धनी सुरूपः चन्द्रे गुरुभनुजांतः स्थे ॥९॥ वृद्धवनितां कुलाढ्यं निपुणं स्त्रीवल्लभं धन समृद्धम्। नृपसत्कृतं विधेयं कुरुते चन्द्रः सितासितयोः ॥१०॥

टीका॥ अब दुरुधरा योग सम्बन्धी विशिष्ट फल कहा जाता है॥ यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा मंगल तथा बुध के मध्य में हो तो जातक मिथ्यावादी, बड़ाधनी, अत्यन्त चतुर, गुणी, लोभी, वृद्धा-स्त्री में आसक्त तथा अपने कुल में प्रमुख होता है॥१॥ यदि चन्द्रमा मंगल तथा बृहस्पति के मध्य में हो तो जातक प्रसिद्ध कर्म करने वाला, धूर्त्त, अत्यन्त धनी, अनेक शत्रुओं वाला, क्रोधी, ढीठ, रक्षा करने वाला तथा संग्रहकर्त्ता होता है॥२॥ यदि चन्द्रमा मंगल तथा शुक्र के मध्य में हो तो जातक श्रेष्ठ भाग्यशाली, विवादयुक्त, शास्त्र-का ज्ञाता, शूर-वीर, व्यायाम करने वाला तथा युद्ध करने वाला होता है॥३॥ यदि चन्द्रमा शनि और मङ्गल के मध्य में स्थित हो तो जातक निन्द्य-स्त्री के साथ रमण करने वाला, अधिक संचय करने वाला, वायु से तप्त, क्रोधी, चुगलखोर तथा शत्रुओं से युक्त होता है॥४॥ यदि चन्द्रमा बुध एवं बृहस्पति के मध्य में स्थित हो तो जातक धर्म में तत्पर, शास्त्रज्ञ, वाचाल, श्रेष्ठ कवि, राजा अथवा त्यागी एवं प्रसिद्ध व्यक्ति होता है॥५॥ यदि चन्द्रमा बुध और शुक्र के मध्य में स्थित हो तो जातक मधुरभाषी, श्रेष्ठ भाग्यशाली, सुन्दर, नृत्य-गीतादि की बिक्री करने वाला, अनेक मनुष्यों का स्वामी, ईर्ष्यालु, शूर वीर तथा मन्त्री होता है॥६॥ यदि चन्द्रमा बुध और शनि के मध्य में स्थित हो तो जातक देश-देशान्तर में भ्रमण करने वाला, धनी, अल्पविद्यावान्, मित्र-विरोधी तथा लोक-पूज्य होता है॥७॥ यदि चन्द्रमा गुरु और शुक्र के मध्य में स्थित हो तो जातक धीर-बुद्धि, सुखी, नीतिज्ञ, स्वर्ण-रत्नों से परिपूर्ण, प्रसिद्ध एवं राजकाज करने वाला होता है॥८॥ यदि चन्द्रमा गुरु तथा शनि के मध्य में

स्थित हो तो जातक सुख, नीति एवं विद्या से युक्त, मधुरभाषी, विद्वानों को प्रिय, सम्मानित, धनी तथा सुन्दर रूप वाला होता है ॥ १९ ॥ यदि चन्द्रमा शुक्र तथा शनि के मध्य में हो तो जातक वृद्धा-स्त्री वाला, अपने कुल में प्रधान, चतुर, स्त्री-प्रिय, धन की समृद्धि वाला एवं राजा द्वारा सत्कार प्राप्त होता है ॥ २० ॥

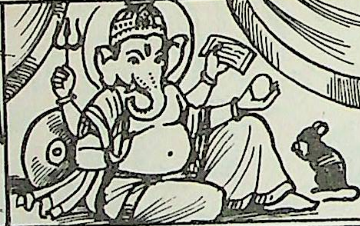
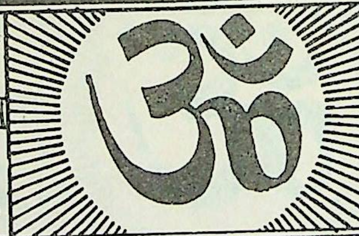
अथ केमद्रुम योग विशिष्ट फलम् ॥ लग्ने स्थिते हिमकरे यदि वामदस्थे केमद्रुमो भवति जीवदृशा विहीने । अत्यल्पविंदुसहिता यदि खेचरेन्द्राः केमद्रुयोगफलदाविकलाश्च सर्वे ॥ १ ॥ चन्द्रे सभानौ यदि नीचदृष्टे पापांशके याति दरिद्र योगं । क्षीणेन्दु लग्नान्निधने निशायां पापेक्षिते पापयुते तथा स्यात् ॥ २ ॥ विधु तुलादि ग्रह पीडितेंदो पापेक्षिते चाशुदरिद्रमेति । लग्नाच्चतुष्केन्द्रु गृहे सपापे निशाकराद्वा यदि तद्वदंति ॥ ३ ॥ चन्द्रे पराजित शुभग्रह दृष्टि युक्ते राह्वादि पीडित तनौ तु दरिद्र एव । नीचारिवीक्षणयुतेरिपुराशिवर्गे चन्द्रे तुलाधरगते तु तथावदंति ॥ ४ ॥ केन्द्रे वा यदि कोणगे हिमकरे नीचारि वर्ग स्थिते । चन्द्रादन्त्य सपल रंध्रगृहगे जीवे दरिद्रो भवेत् ॥ पापांशे रिपुवीक्षिते चरगृहे चन्द्रे चरांशेऽथ वा । जातो याति दरिद्रच योगमतुलं देवेड्य दृग्वर्जिते ॥ ५ ॥ अन्योन्य दृष्टौ शनि दानवेड्यौ नीचारिपापग्रहवर्ग यातौ । एकर्क्षगौ वा यदि राजवंशे जातोपि केमद्रुम योगमेति ॥ ६ ॥ चन्द्रे पापयुते तु पाप भवने पापांशके वा निशि । व्योमेशेन निरीक्षिते गतवले केमद्रु योगो भवेत् ॥ भाग्यस्थानपतीक्षिते खलयुते नीचांशकेऽजे तथा । चन्द्रे नीचयुते निशिक्षय तनौ जातस्य केमद्रुमः ॥ ७ ॥ निशाकरे केन्द्रगते भृगौ वा जीवेक्षिते नैव दरिद्र योगः । शुभान्विते वा शुभमध्यगेंदौ जीवेक्षिते नैव दरिद्र योगः ॥ ८ ॥ चन्द्रोतिमित्र निजतुंग गृहांशकस्थे जीवेक्षिते यदि दरिद्रतया विहीनः । पूर्णे तनौ शुभ युते विदितुंग जाते जीवेक्षिते हिमकरेन भवेद्दरिद्रः ॥ ९ ॥ योगे केमद्रुमे प्राप्ते यस्मिन्कस्मिन्श्च जातको राजयोगा विनश्यन्ति हरिं दृष्ट्वा यथा द्विपाः ॥ १० ॥ इति चन्द्र योग प्रकरणम् ॥

टीका ॥ अब केमद्रुम योग का विशेष फल कहते हैं । जिसके जन्म काल में चन्द्रमा

सप्तमस्थान में स्थित हो तथा बृहस्पति की दृष्टि से रहित हो, तो केमद्रुम योग होता है। जिसके जन्म
समय में समस्त ग्रह अष्टवर्ग में चार बिन्दुओं से हीन हों और षड्बल में पंचरूप से हीन हों, तब केमद्रुम
योग होता है॥१॥ जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा सूर्य से युक्त वृश्चिक राशि में तथा पापग्रह के नवांश में स्थित
हो, तब दरिद्र योग केमद्रुम होता है। यदि क्षीण चन्द्रमा रात्रि के जन्म में, जन्म लग्न से अष्टम हो तथा
पापग्रहों से दृष्ट हो, तब केमद्रुम योग होता है॥२॥ यदि राहु से लेकर पापग्रहों द्वारा चन्द्रमा पीड़ित हो तथा
पापग्रहों द्वारा दृष्ट भी हो, तब दारिद्र्य योग होता है। लग्न से अथवा चन्द्रमा से केन्द्र स्थानों — १,४,७,१०
— में पापग्रह स्थित हों, तब दारिद्र्य योग होता है॥३॥ यदि जन्मकाल में चन्द्रमा राहु से लेकर पाप
ग्रहों से युक्त हो तथा पराजित शुभग्रह द्वारा दृष्ट हो तो दारिद्र्य योग होता है। जिसके जन्म काल में
तुला राशि का चन्द्रमा शत्रुवर्ग में स्थित हो तथा नीचग्रह एवं शत्रुग्रह द्वारा दृष्ट हो, तब दारिद्र्य
योग होता है॥४॥ जिसके जन्म समय में केन्द्र (१,४,७,१०) अथवा त्रिकोण (५,९) में चन्द्रमा स्थित
हो और वह नीच अथवा शत्रु ग्रह के वर्ग में हो तथा चन्द्रमा से बारहवें, आठवें तथा छठे स्थान में
बृहस्पति हो, तब दारिद्र्य योग होता है। यदि चर राशि, चर नवांश में अथवा पापग्रह के नवांश में
स्थित चन्द्रमा पर शत्रु ग्रह की दृष्टि हो और वह बृहस्पति की दृष्टि से हीन हो, तब महादारिद्र्य योग
होता है॥५॥ यदि नीच, शत्रु अथवा पापग्रह के वर्ग में स्थित शनि और बृहस्पति परस्पर एक दूसरे
को देखते हों अथवा एक ही राशि में स्थित हों, तब राजवंश में जन्म लेने वाला भी केमद्रुम
योग को प्राप्त होता है॥६॥ जिसके जन्मकाल में पापग्रह की राशि में तथा पापग्रह से युक्त
चन्द्रमा हो अथवा पापग्रह के नवांश में चन्द्रमा रात्रि के जन्म में हो तथा वह हीनबली हो और
उस पर नवमेश की दृष्टि हो, तब केमद्रुम योग होता है। यदि रात्रि का जन्म हो तथा क्षीण चन्द्रमा

वृश्चिक राशि में हो, तब केमदुम योग होता है ॥७॥
जिसके जन्मकाल में चन्द्रमा अथवा शुक्र केन्द्र (१, ४, ७, १०) भाव में स्थित हो और उसपर
बृहस्पति की दृष्टि हो, तब दारिद्र्य योग नहीं होता। यदि चन्द्रमा शुभग्रह से युक्त अथवा शुभ ग्रहों के मध्य
बृहस्पति द्वारा दृष्ट हो, तब भी दारिद्र्य योग नहीं होता ॥८॥ यदि चन्द्रमा अधिमित्र के अथवा अपनी
उच्च राशि अथवा नवांश में स्थित हो तथा उस पर बृहस्पति की दृष्टि हो, तब दारिद्र्य योग नहीं होता।
यदि पूर्णचन्द्रमा शुभग्रह से युक्त, बुध की उच्च राशि में स्थित हो तथा बृहस्पति द्वारा दृष्ट हो तो
दारिद्र्य योग नहीं होता ॥९॥ जिस जातक के जन्मकाल में केमदुम योग होता है, उसके राजयोग उसी
प्रकार से नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार कि सिंह को देख कर हाथी भाग जाते हैं ॥१०॥ इति ॥

अथ पञ्चमहापुरुषयोगाः ॥ ये महापुरुषसंज्ञका नृपाः पञ्च पूर्वमुनिभिः प्रकीर्तिताः।
बच्मि तान्नु सरलान्महोक्तिभी राजयोगविधिदर्शनेच्छया ॥१॥ स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वावनिसू-
नुमुख्यैः। क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः ॥२॥ दीर्घास्यः स्वच्छकान्तिर्बहुरुधिरब-
लः साहसाच्चाप्तसिद्धिश्चारुभ्रूर्नीलकेशः समकरचरणो मन्त्रविच्चारुकीर्तिः ॥ रक्तश्यामोऽतिशूरो रिपुबल-
मथनः कम्बुकण्ठो महौजाः क्रूरो भक्तः सुराणां द्विजगुरुविनतः क्षामजानूरुजङ्घः ॥३॥ खट्वाङ्गपाशवृष-
कार्मुकचक्रवीणावज्राङ्कहस्तचरणः सरलाङ्गुलः स्यात्। मन्त्राभिचारकुशलस्तुलयेत्सहस्रं मध्यं च तस्य
शास्त्रा-
गदितं मुखदैर्घ्यतुल्यम् ॥४॥ सह्यस्य विन्ध्यस्य तथोज्जयिन्याः प्रभुः शरत्सप्तति जीवितोऽसौ। शास्त्रा-
गिनचिह्नो रुचकाभिधाते देवालये तन्निधनं प्रयाति ॥५॥ शार्दूलप्रतिमाननो द्विपगतिः पीनोरुवक्षस्थलो।
लम्बापीनसुवृत्तबाहुयुगलस्तत्तुल्यमानोच्छ्रयः ॥ कामी कोमलसूक्ष्मरोमनिचयैः संरुद्धगण्डस्थलः। प्राज्ञः
पङ्कजगर्भपाणिचरणः सत्त्वाऽधिको योगवित् ॥६॥ शङ्खासिकुञ्जरगदाकुसुमेषुकेतुचक्राब्जला-

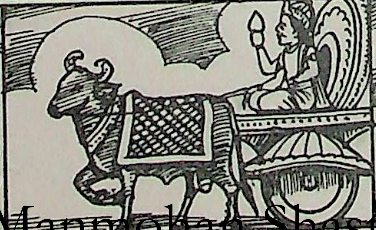




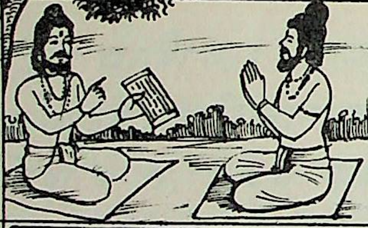

इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

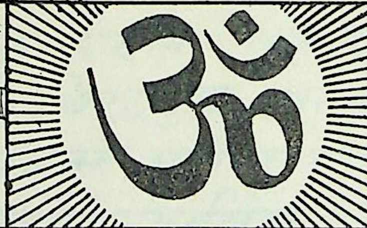
पञ्चम खण्डः समाप्तः

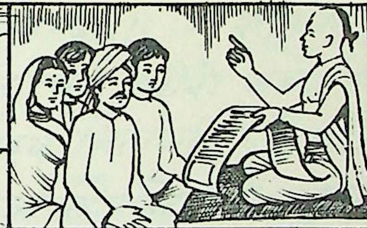










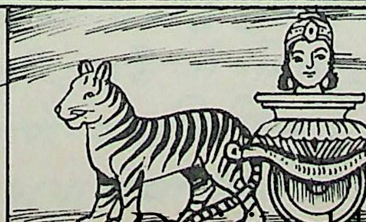
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

षष्ठखण्डः भाषा टीका सहितम्

स्त्री जातकाध्यायः






ङ्कुलविचिह्नित पाणिपादः । यात्रा गजेन्द्र मदवारि कृतार्द्रभूमिः सत्कुङ्कुमप्रतिमगन्धतनुः सुकोषः ॥ ७॥ सद्रूपगो
ऽतिमतिमान्खलुशास्त्रवेत्ता मानोपभोगसहितोऽतिविगूढगुह्यः । सत्कुक्षिधर्मनिरतो सुललाटपट्टो धीरो भवेदसि
तकुञ्चितकेशपाशः ॥८॥ स्वतन्त्रः सर्वकार्येषु स्वजनं प्रति न क्षमा । युज्यते विभवस्तस्य नित्यमर्थिजनैः परैः
॥९॥ भालं तुलायां तु भवेत्सुरत्नैः श्रीकान्यकुब्जाधिपतिर्भवेत्सः । भद्रोद्भवः पुत्रकलत्रसौख्यो जीवन्नृपाः
लः शरदामशीतिम् ॥१०॥ रक्तास्योन्नतनासिकः सुचरणो हंसो प्रसन्नेन्द्रियो । गौरः पीनकपोलरक्त
करजो हंसस्वनः श्लेष्मलः ॥ शंखाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगलैः खट्वाङ्गमालाघटैः । चञ्चत्पादकरस्थले
मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः ॥११॥ जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वनितासु नूनम् । उच्चाङ्गुलैः
वै षडशीतितुल्यैरायुर्भवेत्पण्णवतिः समानाम् ॥१२॥ वाह्लीकदेशान्तरशूरसेनगान्धर्वगङ्गायमुनान्तराला
न् । भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः पुराणैः ॥१३॥ अस्थूलोष्ठोऽतिविषमवपुर्नैव
रिक्ताङ्गसन्धिर्मध्ये क्षामः शशधररुचिर्हस्तिनासः सुगण्डः । सद्दीप्ताक्षिः समशितरदो जानुदेशाप्तपाणिर्मा
लव्योऽयं विलसति नृपः सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥१४॥ वक्त्रं त्रयोदशमिताङ्गुलमस्य दीर्घं तिर्यग्दशाङ्गुलमितं
श्रवणान्तरालम् । मालव्यसंज्ञनृपतिः स भुनक्ति नूनं लाटांश्च मालवकसिन्धुसुपारियात्रान् ॥१५॥ लघु
द्विजास्योद्भुतगः सकोपः शठोऽतिशूरो विजनप्रचारः । वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्तः प्रियातिथिर्नातिलघुः
प्रसिद्धः ॥१६॥ नानासेनानिचयनिरतो दन्तुरश्चापि किञ्चिद्धातोर्वादो भवति कुशलश्चञ्चलः कोलनेत्रः ।
स्त्रीसंयुक्तः परधनहरो मातृभक्तः सुजंघो मध्ये क्षामः सुललितमती रन्ध्रवेदी परेषाम् ॥१७॥ पर्यङ्कशंख
शरशस्त्रमृदङ्गमाला वीणोपमः खलु करे चरणे च रेखा । वर्षाणि सप्ततिमितानि करोति राज्यं सम्य
क्शशस्य नृपतिः कथितो मुनीन्द्रैः ॥१८॥ केन्द्रोच्चगा यद्यपि भूसुताद्या मार्तण्डशीतांशुयुता भवन्ति ।
कुर्वन्ति नो वो पतिमात्मपाके [illegible] ॥

टीका॥ पूर्वमुनियों ने राजाओं में पाँच महापुरुषों का उल्लेख किया है। उनके विषय में राजयोग देखने के आशय से कहा जाता है॥ १॥ यदि मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि - ये अपनी उच्च राशि के होकर केन्द्र में स्थित हों तो क्रमसे (१) रुचक, (२) भद्र, (३) हंस, (४) मालव्य और (५) शशक - ये पाँच प्रकार के योग होते हैं॥२॥

'रुचक' योग में जन्म लेने वाला दीर्घायु, मनोहर कान्ति वाला, रुधिर बली, साहस से कार्य सिद्ध करने वाला, सुन्दर भौंहों वाला, कृष्णवर्ण केशों वाला, समान हाथ तथा पाँवों वाला, मन्त्रविद्या का ज्ञाता, परम यशस्वी, रक्त-श्याम वर्ण, अत्यन्त शूर-वीर, शत्रुजयी, शंख जैसे कण्ठ वाला, महाबली, उग्रस्वभाव का, देव-भक्त, गुरुजनों का सेवक, पतले घुटने तथा लम्बी जाँघों वाला होता है॥३॥ उसके हाथ तथा पाँवों में खट्वांग, पाश, वृष, धनुष, चक्र तथा वीणा के चिह्न होते हैं॥ वह मन्त्र शास्त्र के मारण-मोहन आदि कार्यों में कुशल होता है। उसके शरीर का भार एक सहस्र तोले के लगभग होता है। उसकी कमर की चौड़ाई मुख की लम्बाई के बराबर होती है॥४॥ वह सह्याचल, विन्ध्याचल तथा उज्ज-यिनी का पालक होता है। वह शस्त्र अथवा अग्नि के चिह्न वाला सत्तर वर्ष तक जीवित रह कर, किसी देवालय के समीप मृत्यु को प्राप्त होता है॥ ५॥

'भद्र' योग में जन्मलेने वाला सिंह के समान पराक्रमी, हाथी जैसी चाल वाला, विशाल जंघा एवं छाती वाला, आजानु लम्बी तथा गोल बाँहों वाला, समतुल्य लम्बाई-चौड़ाई वाला, कामी, कोमल, सूक्ष्म दाढ़ी तथा केश वाला, पण्डित, कमल सरीखे हाथ-पाँवों वाला, अधिक बलवान् तथा योगी होता है॥६ उसके हाथ तथा पाँवों में शंख, खड्ग, हाथी, गदा, पुष्प, शर, ध्वजा, चक्र, कमल तथा हल के चिह्न होते हैं। यात्रा के समय उसकी सेना के हाथियों के मद से पृथ्वी आर्द्र हो जाती है। वह सर्वकुंकुम के समान

सुगंधित शरीर तथा गम्भीर शब्द वाला होता है॥ ७॥ वह सुन्दर स्वरूपवान्, अत्यन्त बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ, लोक-सम्मानित, भोगी, अपने विचारों को गुप्त रखने वाला, सुन्दर उदर वाला, धर्मात्मा, सुन्दर ललाटवाला, धीर एवं घुँघराले केशों वाला होता है॥ ८॥ वह सब कामों में स्वतन्त्र, अपने परिजनों को उचित दण्ड देने वाला एवं याचकों को नित्य दान देने वाला होता है॥ ९॥ 'भद्र योग' में उत्पन्न पुरुष का मस्तक रत्नों से सुशोभित रहता है। वह कान्यकुब्ज देश का पालक एवं पुत्र-स्त्री आदि के सुख से युक्त होकर अस्सी वर्ष की आयु तक जीवित रहता है॥ १०॥

'हंस' योग में उत्पन्न पुरुष रक्त-कमल के समान सुन्दर मुख वाला, उन्नत नासिका, सुन्दर पाँव, प्रसन्नेन्द्रिय, गौरवर्ण, पुष्ट कपोल, लालवर्ण के नख, हंस के समान सुन्दर मधुर शब्द, एवं कफात्मक प्रकृति का होता है। उसके हाथ-पाँवों में शंख, कमल, अंकुश, मत्स्य, रज्जु, खाट तथा कलश के चिह्न होते हैं। उसके नेत्र मधुवर्ण तथा मस्तक गोलाकार होता है॥ ११॥ वह जलाशय का प्रेमी तथा कामी होता है। उसे स्त्रियों से तृप्ति नहीं होती। उसकी ऊँचाई ८६ अंगुल होती है और वह ९६ वर्ष तक जीवित रहता है॥ १२॥ वह वाह्लीक, शूरसेन, गान्धर्वदेश तथा गंगा-यमुना के मध्य स्थित देशों का पालन करता हुआ किसी वन में मृत्यु को प्राप्त होता है॥ १३॥

'मालव्य' योग में जन्म लेने वाला मनुष्य पान के समान पतले होठों वाला, विषम (न्यूनाधिक) अङ्गों वाला, पुष्ट शरीर-सन्धियों वाला, पतली कमर वाला, चन्द्रमा के समान दर्शनीय कान्ति वाला, लम्बी नाक वाला, सुन्दर तथा पुष्ट कपोलों वाला, तेजस्वी नेत्र, समान श्वेत दाँत तथा आजानु भुजाओं वाला होता है॥ १४॥ उसका मुख-मण्डल १३ अंगुल लम्बा तथा १० अंगुल विस्तार होता है। वह लाट, मालव, सिन्धु तथा परियात्र देश का पालक होता है॥ १५॥

'शशक' योग में जन्म लेने वाला मनुष्य छोटे दाँत तथा छोटे मुख वाला, अद्भुत-चाल चलने वाला, क्रोधी, शठ, शूर-वीर, निर्जन-स्थान में विहार करने वाला, वन, पर्वत तथा नदी में प्रीति रखने वाला, अतिथियों का आदर करने वाला, मध्यम कद का तथा लोक-विख्यात होता है ॥ २६ ॥ वह अनेक प्रकार की सेना रखने वाला, कुछ उन्नत दाँतों वाला, धातु-क्रिया में कुशल, चंचल तथा छोटी आँखों वाला, स्त्री में आसक्त, पराये धन का लोभी, मातृ-भक्त, सुन्दर जाँघ व पतली कमर वाला, अत्यन्त बुद्धिमान् तथा शत्रुओं के छिद्रों (कमजोरियों) का जानकार होता है ॥ २७ ॥ उसके हाथ-पाँवों में खाट, शंख, शर, शस्त्र, मृदङ्ग, माला, वीणा आदि के चिह्न होते हैं। वह शशक जाति का पुरुष होता है तथा ७० वर्ष तक श्रेष्ठ प्रकार से राज्य का उपभोग करता है ॥ २८ ॥ इन योगों में मङ्गल आदि ग्रह यदि केन्द्रगत उच्च में होकर सूर्य तथा चन्द्रमा से युक्त हों तो वे जातक को राजा न बना कर, अपनी-अपनी दशा में शुभ-फल अवश्य देते हैं ॥ २९ ॥ इति ॥

॥ इतिश्री भृगुसंहिता महाशास्त्रे पंचम खण्डस्समाप्तः ॥

अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम् षष्ठ खण्डः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ।। अथ स्त्रीजातकम् ।। शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात्स्त्री मन्तिनीनामपि तत्फलं
हि । विवाहकालात्परतः प्रवीणै रसम्भवात्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ।। १।। अतीव सारं फलमङ्गनानामुदीरितं शौनकना-
रदाद्यैः । व्यक्तं यथा लग्ननिशाकराभ्यां मया तथैव प्रतिपाद्यते तत् ।।२।। टीका ।। पूर्वजन्म के संचित कर्मों के
कारण ही स्त्रियों को शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं । विवाहोपरान्त स्त्री की कुण्डली के फल स्त्री को न मिल
कर उसके पति को प्राप्त होते हैं; परन्तु जो फल स्त्री को ही प्राप्त होने सम्भव हैं, (उसके पति को प्राप्त
नहीं हो सकते) उनका फल जाति, कुल आदि का विचार करके कहना चाहिए ।। १।। शौनक तथा नारदादि
ऋषियों ने स्त्रियों के जन्म लग्न तथा चन्द्रमा की स्थिति के आधार पर स्त्रियों के सम्बन्ध में
विचार करने का निर्देश किया है, उनका उल्लेख यहाँ किया जा रहा है ।।२।।

सौभाग्यं सप्तमस्थाने शरीरं लग्न चन्द्रयोः । वैधव्यं निधनस्थाने पुत्रे पुत्रं विचिन्तयेत् ।।
३।। सौम्यभ्यां प्रवरा शुभत्रययुते जाया भवेद्भूपतेः । सौम्यैकेन पतिप्रिया मदनभे दृष्टे युते जन्मनि ।। पापै-
केन पुनर्विलोलनयना पापद्वयेनाधमा । पापानां त्रितयेन सा परकुलं हत्वा पतिं गच्छति ।।४।। टीका ।।
स्त्रियों के सौभाग्य के विषय में सप्तमस्थान से । शरीर के शुभाशुभ के विषय में लग्न तथा चन्द्रमा से

वैधव्य के विषय में अष्टम स्थान से एवं पुत्र के सम्बन्ध में पंचमभाव से विचार करना चाहिए ॥ ३ ॥ यदि सप्तमभाव दो शुभग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त हो तो स्त्री ऐश्वर्यवती होती है, यदि तीन शुभग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो राजपत्नी होती है। यदि एक शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो पति की प्यारी होती है। यदि सप्तमभाव में एक पापग्रह हो तो स्त्री चंचल नेत्रों वाली अर्थात् पर-पुरुष से आँखें लड़ाने वाली; दो पापग्रह हों तो अधमा अर्थात् नीच कर्म (व्यभिचारादि) करने वाली एवं तीन पापग्रह हों तो पति को मारकर अन्यकुल के पुरुष के पास जाने वाली होती है ॥ ४ ॥

जनुः काले यस्या मदनभवने वासरमणौ। पतिं त्यक्त्वा नूनं कुपित हृदया भूमितनये ॥ अवश्यं वैधव्यं सपदि कमलाक्षी रविसुते। जरां पापैर्दृष्टे निजपति विरोधं व्रजति वा ॥ ५ ॥ यस्याः शशाङ्के जनिलग्नभे वा रामर्क्षगे सा प्रकृतिः स्थिरा स्यात्। शुभेक्षिते रूपवती गुणाढ्या पतिक्रिया चारुविभूषणाढ्या ॥ ६ ॥ यदाङ्गचन्द्रावसमे भवेतां तदा नराकारसमा कुरूपा। पापेक्षितौ पापयुतौ विशेषाद्दुर्गदातुरा रूपगुणैर्विहीना ॥ ७ ॥ टीका ॥ यदि सप्तमभाव में सूर्य हो तो स्त्री पति को त्याग देती है और वह कुपित-हृदया अर्थात् अत्यधिक क्रोधी स्वभाव की होती है। यदि सप्तमभाव में मंगल हो तो शीघ्र विधवा होती है। यदि शनि सप्तमभाव में हो तो विवाह बड़ी आयु में होता है, यदि सप्तम भाव पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो स्त्री अपने पति से विरोध रखती है ॥ ५ ॥ यदि लग्न अथवा तृतीय भाव में चन्द्रमा हो तो स्त्री स्थिर स्वभाव की होती है। यदि चन्द्रमा पर शुभग्रहों की दृष्टि भी हो तो वह रूपवती, गुणवती, पति की सेवा में कुशल तथा सुन्दर आभूषणादि से युक्त होती है ॥ ६ ॥ यदि लग्न और चन्द्रमा विषम-राशि-नवांश में हों तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान आकार वाली, पुरुषवत् आचरण करने वाली तथा कुरूपा होती है। यदि लग्न और चन्द्रमा पापग्रह से युक्त

और दृष्ट हों तो वह विशेष रूपसे रुग्णा एवं रूप-गुण-रहिता होती है॥ ७॥

जनुः काले यस्या मदनसदने दानवगुरौ। शुभाभ्यामाक्रान्ते गतवति तदा सा विधुमुखी॥ गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृत कुचा। प्रिया पत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवाक्षितिलके॥ ८॥ समाक्रान्ते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाऽप भृगुणा। बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये॥ मृगे कर्के चन्द्रे सति भवति लावण्यतिलका। तपोरेखा योषा प्रभवति विशेषात् क्षितिपते॥ ९॥ शशाङ्के कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते। तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये॥ सहस्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती। विशेषादेषान्यान्नृपतिपतिका पुण्य लतिका॥ १०॥ टीका॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के सप्तमभाव मे शुक्र शुभग्रहों से युक्त हो, वह चन्द्रमुखी अपने कुचों को गजमोतियों की माला से आवृत्त रखती है अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य सम्पन्ना होती है। वह नित्य ही पति की प्रिय होती है। यदि उसके नेत्रों में तिल भी हो तो इन्द्राणी के समान होती है॥ ८॥ यदि लग्न में गुरु-शुक्र की युति हो, सप्तमभाव में कन्या राशि का बुध हो तथा मकर राशि में मंगल एवं कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर रूपवती, राजपत्नी अर्थात् जैसे उसने तपस्या द्वारा राज्यपद प्राप्त किया हो, ऐसी होती है॥ ९॥ यदि जन्म कुण्डली में चन्द्रमा कर्क राशि में, बुध कन्या राशि में, गुरु मीन राशि में तथा शुक्र वृष राशि में हो तो ऐसी स्त्री सहस्र सखियों से सम्मानित गुणवती राजकन्या होती है तथा विशेष कर राजगृह की स्वामिनी एवं पुण्य-लता अर्थात् पुण्य करने वाली होती है॥ १०॥

अथ सप्तम भावस्थ ग्रह फलम्॥ दिनपताविह काम निकेतनं गतवति प्रवराप्यवरा भवेत्। जनुषि वल्लभभावविवर्जिता सुजनता रहिता वनिता ध्रुवम्॥ १॥ वृषे राकानाथे भवति

मदने जन्म समये। भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना॥ विनम्रा मुक्तालीवलितकुच भारेण नितरां
परा लीला लक्ष्मी रतिपतिरमेव क्षितितले॥२॥ अंगारके मदनमन्दिरमिन्दुभावं मन्दान्विते हरिभगे जननेऽङ्ग-
नायाः। वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबन्धाद्वाराङ्गना भवति सैव वराङ्गनाऽपि॥३॥ अनेकस्त्रीभर्ता भवति नरक
च मदने। बुधे तुङ्गे यस्या जनुषि खलु तस्याः पतिरिह॥ स्वयं वामा कामाकुलितहृदयामोदकलया। परीता मु-
क्ताली रजतकनकाली मणिगणैः॥४॥ परिक्रान्ते यस्या मदनभवने देवगुरुणा। गुणढ्या धर्मढ्या निजपति
पदाब्जं भजति सा॥ मणीनां मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसा। समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव
शशिभे॥५॥ कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीन भवने। तदा कान्तो दान्तो रतिपति कला कौतुक पटुः॥ धनुर्ध-
र्ता भर्ता स्वयमपि च सङ्गीत रसिका। विलोला पद्माक्षी वसनलसिता भूषणवृता॥६॥ मदनभावगते तपना-
त्मजे पतिरतीव गदाकुलितो भवेत्। मलिनवेषधरो विबलो महान् जनुषि तुङ्गगेत प्रवरो धनी॥७॥ सप्त
मे सिंहिकापुत्रे कुलदोषविवर्द्धिनी। नारी सुखपरित्यक्ता तुङ्गे स्वामिसुखान्विता॥८॥

टीका॥ यदि जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में 'सूर्य' हो तो श्रेष्ठ स्त्री भी अपेक्षा
हो जाती है तथा पति उससे प्रेम नहीं करता। ऐसी स्त्री अत्यन्त सुजनता-रहित अर्थात् दुष्ट स्वभाव
की होती है॥१॥ यदि स्त्री की जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में चन्द्रमा हो तो वह निर्मल-वस्त्र धारण
करने वाली, सुन्दर मुख वाली, कोमल शरीर वाली, मुक्ताहार से सुशोभित स्तनों के भार से नम्र,
श्रेष्ठ लीलाएँ करने वाली एवं कामदेव की पत्नी रति तथा लक्ष्मी के समान पृथ्वीतल पर सुशोभित
होती है॥२॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में कर्क राशि का 'मंगल' हो अथवा शनि
युक्त मंगल सिंह राशि का हो, वह अवश्य ही विधवा होती है तथा कुकर्मरता एवं कपटिन होती है।
यदि वह उत्तम कुल अथवा धर्म में श्रेष्ठ हो तो भी वेश्या अथवा वेश्या जैसी दुराचारिणी होती है॥३॥

जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में उच्च राशि का बुध हो, उसका पति अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों का स्वामी, महायज्ञ एवं यज्ञ करने वाला होता है और वह स्त्री स्वयं भी कामाग्नि से व्याकुल चित्त अर्थात् रतिक्रीड़ा की विशेष इच्छुक, प्रसन्न-मन वाली तथा मुक्तामाल, चाँदी, सोना एवं मणियों के समूह से परिपूर्ण अर्थात् ऐश्वर्यवती होती है ॥४॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में गुरु (बृहस्पति) हो, वह गुणवती, धर्म की ज्ञाता, अपने पति के चरणों की सेविका अर्थात् पतिव्रता एवं स्वर्ण-मणि खचित मालाओं से विभूषित रहने वाली होती है। यदि सप्तम स्थान में कर्क राशि का चन्द्रमा हो तो वह स्त्री कामदेव के समान सुन्दर स्वरूपवाली होती है ॥५॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तमभाव में मीन राशि का शुक्र हो, उसका पति उदार बुद्धि वाला, काम-क्रीड़ा में प्रवीण तथा धनुर्धारी (शस्त्रधारी) होता है और वह स्त्री स्वयं भी सङ्गीत-रसिका, चंचल-स्वभाव वाली, कमल सरीखे नेत्रों वाली, उत्तम वस्त्रों से सुशोभित तथा आभूषणों से युक्त होती है ॥६॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के सप्तम भाव में शनि हो, उसका पति रोग के कारण अत्यन्त व्याकुल, मलिन वेषधारी तथा अत्यन्त दुर्बल होता है। यदि शनि उच्च का हो तो श्रेष्ठ एवं धनी होता है ॥७॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तमभाव में राहु हो तो वह अपने कुल के दोषों में वृद्धि करनेवाली तथा सुख-हीना होती है। यदि सप्तम भाव में उच्चराशि का राहु हो तो स्त्री पति-सुख से युक्त होती है ॥८॥

अथ दुष्कर्मयोग ॥ मिथस्तौ शुक्रार्की यदि लवगतौ वीक्षणमितौ। भवेतां वा लग्ने गुरुशनिलवे शुक्रभवने ॥ अनङ्गैः रालीला कलित नररूपाभिरनिशं। स्थिताभिः कान्ताभिः खलु मदनशान्तिं व्रजति सा ॥९॥

टीका :। यदि शुक्र तथा शनि परस्पर नवांश में हों अर्थात् शुक्र के नवांश में शनि तथा शनि के

नवांश में शुक्र हो तथा दोनों का परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध भी हो अथवा लग्न शुक्र की राशि (वृष और तुला) का हो और उसके गुरु अथवा शनि के नवांश में ये दोनों स्थित हों तो ऐसे ग्रहयोग वाली स्त्री काम-लीला से सुशोभित पुरुषरूपधारण करनेवाली स्त्रियों के द्वारा नित्य अपनी काम-वासना को शान्त करती है ॥ १॥

अथ मोहिनी रूपा योग ॥ क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीरंगमथवा । मदागारं सारं सुरगुरु बुधाभ्यामपि युतम् ॥ महान्तो ऽपि भ्रान्ताः कति कति मनोजाधिकतथा । पुरस्तां पश्यन्तो दधति परमानन्दलहरीम् ॥ २॥ टीका ॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न में कर्क राशि का चन्द्रमा हो अथवा सप्तम भाव में मंगल हो और वह गुरु तथा बुध से भी युक्त हो तो उस स्त्री के समक्ष बड़े-से-बड़े मनुष्य भी काम-पीड़ित हो भ्रान्त-चित्त अर्थात् मोहित हो जाते हैं और वह अत्यन्त स्वरूपवती मोहिनी होती है ॥ २॥

अथ सुभगा योग ॥ मृगागोर सोर गतवति विसारं सुरगुरौ । कवौ वा पातालं तपन, केनापि मिलिते। जनुः काले यस्याः करिमुकुट मुक्ताफलमणि । भुजानां मालाभिर्वलितयुत वक्षोजयुगलम् ॥ ३॥ टीका ॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली में, लग्न में मकर राशि का मंगल तथा मीनराशि का गुरु हो अथवा चतुर्थ भाव में शनि और शुक्र की युति हो तो ऐसी स्त्री गजमुक्ताओं तथा मणियों की मालाओं से सुशोभित स्तनों वाली सुभगा होती है ॥ ३॥

अथ वैधव्य योग ॥ निशाकरात् सप्तमभाव संस्था महीजमन्दागुदिवाकराश्चेत् । ततोरिभे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यमलं मदे वा ॥ टीका ॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में चन्द्रमा से सातवें स्थान में मंगल, शनि, राहु अथवा सूर्य स्थित हो तथा ये ग्रह लग्न में, शत्रु-

राशि में अथवा अष्टम या सप्तमभाव में हो तो वैधव्य की संभावना रहती है ॥४॥

अथ स्वैरिणी योग ॥ लग्नाधिपो वाऽस्त मदालयेशो वर्गे गतः पापनभश्चराणाम् । मदे
तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा कुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥ टीका ॥ ५ ॥ यदि लग्नेश अथवा सप्तमेश पापग्रहों के
षड्वर्ग में हो अथवा सप्तम भाव तथा लग्न में पापग्रह के वर्ग में हों तो ऐसी स्त्री चंचल नेत्रों वाली
अर्थात् इधर-उधर आँखें लड़ाने वाली तथा अपने पति एवं कुल को त्याग देने वाली होती है ॥५॥

अथ व्यभिचारिणी योग ॥ पापान्तराले यदि लग्नचन्द्रौ स्यातां शुभालोकनवर्जितौ तौ ।
अनङ्गलोला खलसंगमेन कुलद्वयं हन्ति तदा मृगाक्षी ॥ ६ ॥ टीका ॥ यदि लग्न तथा चन्द्रमा पापग्रहों के
मध्य में हों तथा दोनों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि भी न हो तो ऐसे योगवाली मृगाक्षी स्त्री कामदेव
के कारण चञ्चला बन कर, दुष्टों की संगति कर, पिता तथा पति के दोनों कुलों का नाश करती है
अर्थात् व्यभिचारिणी होती है ॥ ६॥

अथ पुंश्चली योगः ॥ व्यये ऽष्टमे भूमिसुतस्य राशौ वर्गौ सपापे भवतीह रण्डा । मदे
कुलीरे सरवौ कुजेऽपि धनेन हीना रमते ऽन्य लोकैः ॥ ७ ॥ तनौ चतुर्थे निधने व्यये वा मदालये
पापयुतः कुजश्चेत् । अनङ्गलीलां प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोलनेत्रा ॥८॥ परस्परांशोपग-
तौ भवेतां महीज शुक्रौ जनने ऽङ्गनायाः । स्वयं मृगाक्षी त्वभिसारिकेव प्रयाति कामाकुलिता ऽन्य
गेहे ॥ ९ ॥ टीका ॥ यदि मंगल की राशि (मेष और वृश्चिक) का राहु बारहवें अथवा आठवें भाव
में पापग्रह से युक्त होकर बैठा हो तो ऐसी स्त्री विधवा होती है। यदि सप्तमभाव में कर्कराशि
हो और उसमें सूर्य मंगल की युति हो तो ऐसी चंचलनेत्रों वाली स्त्री अपने पति तथा धन से
रहित होकर अन्य पुरुषों के साथ रमण करती है ॥ ७ ॥ यदि लग्न, चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश

भाव में अथवा सप्तम भाव में पापग्रह से युक्त मंगल हो तो ऐसी चंचलनेत्रों वाली स्त्री अपने पति का अनादर करके जार-पुरुषों के साथ रमण करती है अर्थात् व्यभिचारिणी होती है ॥ ८ ॥ यदि स्त्री के जन्म के समय मंगल तथा शुक्र एक दूसरे के नवांश में हों तो वह मृगाक्षी स्वयं ही कामदेव से व्याकुल होकर अपने अभिसार-स्थल के विषय में पर-पुरुष को बतलाती है और उसके साथ रमण करती है अर्थात् स्वेच्छा से व्यभिचार करती है ॥ ९ ॥

अथ पत्याज्ञया व्यभिचारिणी योग ॥ पापग्रहे सप्तमगे बलोने शुभेन दृष्टे पति सौख्य हीना। स्यात् मदे भौमकवी सचन्द्रौ पत्याज्ञया सा व्यभिचारिणी स्यात् ॥ १० ॥ टीका ॥ यदि पापग्रह बलहीन होकर सप्तम भाव में हो तो स्त्री पति-सुख से हीन होती है। यदि सप्तम भाव में मंगल, शुक्र तथा चन्द्रमा की युति हो तो स्त्री अपने पति की आज्ञा से व्यभिचारिणी होती है अर्थात् उसका पति ही उसे व्यभिचार-कर्म में प्रवृत्त होने के लिए प्रेरित करता है ॥ १० ॥

अथ मात्रासह व्यभिचारिणी योग ॥ मन्दार राशौ सभिते शशाङ्के खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी। मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मदे खलांशे व्रणविद्ध योनिः ॥ ११ ॥ टीका ॥ जिस स्त्री की शनि अथवा मंगल की राशि (मकर-कुम्भ और मेष-वृश्चिक) में शुक्र सहित चन्द्रमा पापग्रह से दृष्ट होकर लग्न में बैठा हो तो वह मृगाक्षी अपनी माता सहित व्यभिचार-कर्म में प्रवृत्त होती है ॥ यदि सप्तम भाव में पापग्रह का नवांश हो अथवा चन्द्रमा सप्तम भावेश पापग्रह के नवांश में हो तो उस स्त्री की योनि व्रण-विद्ध रहती है अर्थात् उसकी योनि में व्रण बना रहता है ॥ ११ ॥

अथ रण्डा योगाः ॥ पापग्रहे सप्तम लग्न गेहे भर्ता दिवं गच्छति सप्तमाब्दे। निशाकरे चाष्टम वैरिभावे तदाष्टमाऽब्दे निधनं प्रयाति ॥ १२ ॥ सप्तमेशोऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः।

पापेक्षण युतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ २३॥ सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ । तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥२४॥ टीका॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तमभाव में अथवा जन्म लग्न में पापग्रह हों वह विवाह से सातवें वर्ष विधवा होजाती है। यदि चन्द्रमा आठवें अथवा छठे भाव में हो तो स्त्री का पति विवाह से आठवें वर्ष मृत्यु को प्राप्त हो जाता है॥ २२॥ यदि सप्तमेश अष्टम भाव में तथा अष्टमेश सप्तम भाव में हो और वह पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो ऐसे ग्रह योग वाली स्त्री विवाहोपरान्त शीघ्र ही विधवा हो जाती है ॥२३॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में सप्तमेश तथा अष्टमेश पापग्रह से पीड़ित होकर छठे अथवा बारहवें भाव में हो, वह स्त्री विधवा हो जाती है- इसमें सन्देह नहीं है ॥२४॥

अथ ग्रहराशिवशेन त्रिंशांश फलानि॥ यदाङ्; चन्द्रौ कुजभे कुजस्य त्रिंशांशके दुष्टतमैव कन्या । मन्दस्य दासीहि गुरोस्तु साध्वी मायाविनी ज्ञस्य कवेः कुवृत्ता ॥ २५॥ शुक्रभे भौमत्रिंशांशे दुष्टा सौरेः पुनर्भवा । गुरोर्गुणमयी विज्ञा बुधे कामातुरा कवेः ॥२६॥ बुधभे भूमिपुत्रस्य कापटी क्लीबवच्छनैः । गुरोः सती विदो विज्ञा कवेः कामातुरा भवेत् ॥ २७॥ कुलीरभे भूमिसुतस्य वेश्या शनेः पतिप्राणविघातकर्त्री । गुरोर्गुणव्रातवती बुधस्य शिल्पाक्रियाढ्या कुलटा भृगोः स्यात् ॥ २८॥ सिंहे नराकारधरा कुजस्य वराङ्गना भानुसुतस्य नारी । गुरोरिलाधीशवधूर्बुधस्य दुष्टा कवेरंगजगामिनी स्यात् ॥२९॥ गुरोर्विचित्रा गुरुभे कुजस्य मन्दस्य मन्दा गुणतत्त्वविज्ञा । जीवस्य विज्ञा शशिनन्दनस्य शुक्रस्य रम्यापि भवेदरम्या ॥ २०॥ मन्दालये भूमिसुतस्य दासी शनेरसाध्वी भवतीति साध्वी। गुरोर्निशानाथसुतस्य दुष्टा शुक्रस्य वन्ध्या क्रमतः प्रदिष्टा॥२१॥

टीका॥ [illegible] और [illegible] लग्न की राशि में अथवा [illegible] के त्रिंशांश

में हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त दुष्ट स्वभाव वाली होती है। शनि के त्रिशांशक में हों तो दासी, गुरु के त्रिशांशक में हों तो श्रेष्ठ स्वभाव वाली एवं पतिव्रता, बुध के त्रिशांशक में हों तो मायाविनी एवं शुक्र के त्रिशांशक में हों तो दुष्ट आचरण वाली होती है॥ १५॥ यदि लग्न और चन्द्रमा शुक्र की राशि में मंगल के त्रिशांशक में हों तो स्त्री दुष्टा होती है। यदि शनि के त्रिशांशक में हों तो स्त्री पुनर्भू (दो बार विवाह करने वाली होती है। यदि गुरु के त्रिशांशक में हों तो गुणवती, बुध के त्रिशांशक में हों तो बुद्धिमती एवं शुक्र के त्रिशांशक में हों तो कामातुर-चित्त वाली होती है॥ १६॥ यदि लग्न और चन्द्रमा बुध की राशि (मिथुन-कन्या) में मंगल के त्रिशांशक में हों तो स्त्री कपटी-चित्त वाली, शनि के त्रिशांशक में हों तो नपुंसिका (हिजड़ी) जैसी, गुरु के त्रिशांशक में हों तो पतिव्रता एवं शुक्र के त्रिशांशक में हों तो कामातुरा होती है॥ १७॥ यदि लग्न और चन्द्रमा कर्क राशि में मंगल के त्रिशांशक में हों तो स्त्री वेश्या होती है। यदि शनि के त्रिशांशक में हों तो पति के प्राण हरने वाली, गुरु के त्रिशांशक में हों तो गुणवती, बुध के त्रिशांशक में हों तो शिल्प-कर्म जानने वाली तथा शुक्र के त्रिशांशक में हों तो व्यभिचारिणी होती है॥ १८॥ यदि लग्न और चन्द्रमा सिंह राशि में मंगल के त्रिशांशक में हों तो स्त्री पुरुष जैसे आकार तथा स्वभाव वाली होती है। यदि शनि के त्रिशांशक में हों तो श्रेष्ठ स्वभाव वाली एवं शुभलक्षणों वाली एवं गुरु के त्रिशांशक में हों तो पृथ्वी-पति राजा अथवा भूस्वामी की पत्नी होती है। यदि बुध के त्रिशांशक में हों तो दुष्टा एवं शुक्र के त्रिशांशक में हों तो अपने ही द्वारा उत्पन्न किए गए पुत्र के साथ रमण करने वाली अर्थात् अपने बेटे के साथ ही संभोग करने वाली होती है॥ १९॥ यदि लग्न और चन्द्रमा गुरु की राशि (धनु और मीन) में मंगल के त्रिशांशक में हों तो स्त्री अनेक गुणों से युक्त होती है। यदि शनि

के त्रिंशांशक में हों तो मन्दबुद्धि वाली, गुरु के त्रिंशांशक में हों तो गुणों के तत्त्व को जानने वाली, बुध के त्रिंशांशक में हों तो सबकुछ जानने वाली तथा शुक्र के त्रिंशांश में हों तो सुरूपा होती हुई भी कुरूपा होती है॥ २०॥ यदि लग्न और चन्द्रमा शनि की राशि (मकर और कुम्भ) में मंगल के त्रिंशांशक में हों तो स्त्री दासी होती है। यदि शनि के त्रिंशांशक में हों तो दुष्टलक्षणों वाली, गुरु के त्रिंशांशक में हों तो पतिव्रता एवं शुभलक्षणों वाली, बुध के त्रिंशांशक में हों तो दुष्टा और शुक्र के त्रिंशांशक में हों तो पुत्र-रहिता वन्ध्या होती है॥ यह क्रमशः त्रिंशांश का फल कहा है॥ २१॥

अथ ब्रह्मवादिनी योग॥ मन्दे मध्यबले कवीन्दुशशिजैर्वीर्यच्युतैः प्रायशः। शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषवन्नारी यदोजे तनुः। जीवांगाररवीन्दुजैर्बलयुतैश्चेदांगराशौ समे। गीतातत्त्वविचारसारचतुरा वेदान्तवादिन्यपि॥ २२॥ टीका॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में शनि मध्यबली तथा शुक्र, चन्द्र, बुध बल-हीन हों तथा विशेष कर अन्य ग्रह — सूर्य, मंगल, गुरु बलवान् हों तथा लग्न में विषम राशि हो, वह पुरुष तुल्य होती है अथवा अनेक पुरुषों से सम्बन्ध रखती है। यदि गुरु, मंगल, सूर्य तथा बुध — ये ग्रह बली हों तथा लग्न में वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर अथवा मीन राशि हो तो ऐसी स्त्री गीतातत्त्वज्ञान में पटु अर्थात् ब्रह्मवादिनी होती है॥ २२॥

अथ अष्टमस्थ ग्रहाणां फलम्॥ यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृतपुत्रका च। कुजेऽष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी चन्द्रेऽष्टमे स्वामिसुखेन हीना॥ २३॥ मन्दे रते रोगरतस्य भार्या दिनाधिपे सा परितापतप्ता। अनङ्गरङ्गा परकान्तसङ्गा सुतावगौ सा कुलधर्मभङ्गा॥ २४॥ टीका॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के अष्टम भाव में गुरु अथवा शुक्र हो वह नष्टगर्भा होती है अर्थात् उसके गर्भ नष्ट हो जाया करते हैं अथवा सन्तानें जन्म लेने के बाद मर जाती हैं। यदि अष्टम भाव में मङ्गल हो तो स्त्री कुलटा अर्थात् व्यभिचारिणी होती है। यदि अष्टमभाव में चन्द्रमा हो तो पति-सुख

से रहित होती है ॥ २३ ॥ यदि अष्टम भाव में शनि हो तो रोगी-पुरुष की पत्नी होती है अर्थात उसका पति रोगी बना रहता है। यदि अष्टम भाव में सूर्य हो तो सब प्रकार के संतापों से संतप्त रहती है और यदि अष्टमभाव में राहु हो तो पर-पुरुष के साथ काम-क्रीड़ा करने वाली एवं अपने कुल-धर्म को भङ्ग करने वाली होती है ॥ २४ ॥

अथ पुत्रभाव विचार :॥ पञ्चमे शुभ संदृष्टे पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्र कोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत् ॥ २५ ॥ पंचपुत्रवती जीवे सबले ससिते विधौ। सुता सुखवती पापे नारी सन्तान वर्जिता ॥ २६ ॥ टीका ॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के पञ्चम भावपर शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा पंचमेश केन्द्र (लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव) अथवा त्रिकोण (नवम तथा पंचम भाव) में हो तो वह अनेक पुत्रों वाली होती है ॥ २५ ॥ यदि पंचम भाव में बलवान् बृहस्पति हो तो स्त्री के पाँच पुत्र होते हैं। यदि शुक्र अथवा चन्द्रमा बलवान् होकर पंचमभाव में स्थित हों तो कन्याओं का सुख प्राप्त होता है। यदि पंचम भाव में पापग्रह हो तो स्त्री सन्तान-हीना होती है ॥ २६ ॥

अथ विषाख्या योगा:॥ भद्रासार्पानिलवरुणभे भानुमन्दारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी। पापे लग्ने शुभखगयुत: पापखेटावरिस्थौ स्यातां यस्या जननसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ २७ ॥ आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजंगमे भौमदिनेऽम्बु जर्क्षे। चेत्सप्तमी वापरवौ विशाखा हरे स्तिथौ वापि च सा विषाख्या ॥ २८ ॥ धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने। पंचमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥ २९ ॥ विषाख्या शोकसन्तप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका। वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता भवेत् ॥ ३० ॥ सप्तमे सप्तमाधीशः शुभो वा लग्नचन्द्रयो:। विषयोगमलं हन्ति रंहो हरिरिवं यथा ॥ ३१ ॥ [illegible] ॥ ३२ ॥

टीका ॥ जिस स्त्री के जन्म के समय भद्रा (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी) तिथि;
आश्लेषा, कृत्तिका एवं शतभिषा नक्षत्र एवं रवि, शनि अथवा मंगलवार हों अथवा यह क्रम भी है कि द्वितीया
तिथि, आश्लेषा नक्षत्र और रविवार अथवा सप्तमी तिथि, कृत्तिका नक्षत्र और शनिवार अथवा द्वादशी तिथि
शतभिषा नक्षत्र और मंगलवार हो तो वह 'विषाख्या' संज्ञक होती है। यदि पापग्रह की लग्न पापग्रह
से युक्त हो तथा दो पापग्रह लग्न से छठे भाव में स्थित हों तो ऐसे ग्रह योग वाली स्त्री भी 'विषाख्या'
संज्ञक होती है ॥ २७ ॥ यदि शनिवार द्वितीया तिथि और आश्लेषा नक्षत्र, अथवा मंगलवार, शतभिषा
नक्षत्र और सप्तमी तिथि, अथवा रविवार, विशाखा नक्षत्र और द्वितीया तिथि को जन्म हुआ हो तो
ऐसी कन्या भी 'विषाख्या' संज्ञक होती है ॥ २८ ॥ यदि जन्म कुण्डली के नवमभाव में मंगल, लग्न में
शनि तथा पंचमभाव में सूर्य हो तो ऐसी कन्या भी 'विषाख्या' संज्ञक होती है ॥ २९ ॥ 'विषाख्या' योग
वाली कन्या शोक-सन्तप्त रहती है, भाग्यहीना होती है, मृत-पुत्रिका (जिसके पुत्र जन्म लेकर मर जाते
हों) होती है तथा वस्त्रालङ्कार से रहित होती है — ऐसा पूर्वाचार्यों एवं पण्डितों का कथन है ॥ ३० ॥ यदि
सप्तमेश सप्तमभाव में ही हो अथवा लग्न या चन्द्रमा से सप्तम स्थान में शुभग्रह हो तो 'विषाख्या' योग
उसी प्रकार नष्ट हो जाता है, जिस प्रकार कि सिंह हाथी को नष्ट कर देता है ॥ ३१ ॥ कन्या के विवाह के
समय लग्न तथा चन्द्रमा से विचार करना आवश्यक है, क्योंकि स्त्रियों का शुभाशुभ फल विवाह के
अधीन रहता है ॥ ३२ ॥

अन्यच्च ॥ भर्तृगुणज्ञानम् ॥ ताभ्यां सप्तमभे बलेन सहिते सौम्यग्रहावीक्षिते । भर्त्ता
कापुरुषोऽर्कजेन्दुसुतयोः क्लीबोऽस्तराशिस्थयोः ॥ प्रायोऽस्ते चरभे प्रवाससहितो भर्त्ता स्थिरे स्वस्थि-
तः । [illegible] सहितो लाभः स्त्रियाः स्यात्पतिः ॥१॥ टीका ॥ अब पति कैसा होगा, इस विषय

को कहते हैं। स्त्री की कुण्डली में यदि लग्न से अथवा चन्द्रमा से सप्तराशि बलहीन हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो उस स्त्री का पति कातर स्वभाव का अथवा कुत्सित होता है। यदि लग्न और चन्द्रमा से सप्तम राशि 'चर' संज्ञक हो तो पति प्रवासी होता है। यदि स्थिर राशि हो तो घर में ही रहनेवाला होताहै और यदि द्वि-स्वभाव राशि हो तो कभी घर में और कभी परदेश में रहने वाला होता है ॥१॥

अथ भर्तृगुणज्ञानम् ॥ सूर्यर्क्षे वांशके वा धुनभवनगते भूरि कर्मा मृदुः स्याच्चेन्दु कामी मृदुर्वा क्षितिसुत गृहगे स्त्रीविलोलोऽति कोपः। बौद्धे विद्वान्सुशीलः कुरु गुरुगृहगे सद्गुणी स्यात्स्ववश्यः प्रोक्ते कांतः सुभाग्यो रविसुत भवने मूर्ख भर्त्ता जरार्त्तः ॥२॥ टीका ॥ सिंह राशि अथवा सिंह के नवांशक स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम भाव में हों तो उसका पति अत्यन्त व्यावहारिक तथा कोमल स्वभाव का होता है। सप्तम भाव में कर्कराशि अथवा कर्क नवांशक हो तो कामातुर एवं कोमल होता है। मेष अथवा वृश्चिक राशि अथवा इन राशियों का नवांशक सप्तमभाव में हो तो पति अनेक स्त्रियों की इच्छा रखने वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होता है। यदि सप्तमभाव में मिथुन अथवा कन्या राशि अथवा इन राशियों का नवांशक हो तो पति पण्डित और सुशील होता है। यदि धनु अथवा मीन राशि अथवा इन राशियों का नवांशक सप्तम भाव में हो तो पति गुणवान, जितेन्द्रिय तथा तेजस्वी होता है। यदि वृष अथवा तुलाराशि अथवा इन राशियों का नवांशक सप्तमभाव में हो तो पति रूपवान तथा भाग्यशाली होता है। यदि सप्तमभाव में मकर अथवा कुंभराशि अथवा इन राशियों का नवांशक हो तो पति मूर्ख एवं वृद्ध होता है। यदि राशि तथा अंश एक दूसरे से भिन्न हों तो उन दोनों में जो बलवान् हो, उसी के आधार पर फल कहना चाहिए ॥ अर्थात् यदि सप्तमभाव में राशि और नवांश दोनों एक ही ग्रह के हों तो उक्त फल होगा। यदि दोनों में भिन्नता हो तो जिसके (राशि अथवा नवांश के) स्वामी

बन्धनात् । तौ चेद् द्वयङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये निमग्नात् स्वतः ॥६॥ रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् । किल जलोदरसञ्जनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥७॥ निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति ॥८॥

टीका ॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के अष्टम भाव में पापग्रह हो तो वह वैधव्यकारक होता है। अष्टमेश जिस ग्रह के नवमांश में हो उसकी दशा-अन्तर्दशा में मृत्यु होती है। यदि द्वितीय स्थान में शुभ ग्रह हों तो स्त्री की मृत्यु अपने पति के सामने ही हो जाती है अर्थात् वह विधवा नहीं होती ॥ ५॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के दशम भाव में सूर्य तथा चतुर्थ भाव में मंगल हो तो पर्वत से गिर कर मृत्यु होती है। यदि मंगल, चन्द्रमा और शनि – ये क्रमशः द्वितीय, सप्तम तथा चतुर्थ भाव में हों तो कुएं अथवा तालाब (जलाशय) में गिर कर मृत्यु होती है। यदि सूर्य तथा चन्द्रमा कन्या राशि में पापग्रहों से दृष्ट हों तो बन्धन द्वारा मृत्यु होती है। यदि सूर्य तथा चन्द्रमा मिथुन राशिवाली लग्न में स्थित हों तो पानी में डूब कर मृत्यु होती है ॥६॥ यदि कर्क राशि में शनि तथा मकर राशि में चन्द्रमा हो तो स्त्री की मृत्यु जलोदर रोग से होती है ॥७॥ यदि दो पापग्रहों के बीच चन्द्रमा मेष अथवा वृश्चिक राशि में हो तो शस्त्र अथवा अग्नि से मृत्यु होती है ॥ ८॥

अथ प्रगल्भा योगः ॥ शुक्रेन्दुसौम्या विबला भवेयुः शनैश्चरो मध्यबली यदि स्यात् । शेषाः सवीर्याः विषमे च लग्ने योषा विशेषात् पुरुषप्रगल्भा ॥ ९॥ टीका ॥ यदि जन्म कुण्डली में शुक्र, चन्द्रमा एवं बुध निर्बल हों, शनि मध्यबली हो तथा सूर्य, मंगल और गुरु बलवान् हों तथा लग्न में विषम राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु अथवा कुम्भ) हो तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान ही प्रगल्भा होती है ॥ ९॥

बली हों उसके अनुसार फल कहना चाहिए। यदि राशि एवं नवांश-पति दोनों ही समान-बली हों तो दोनों के फल समझने चाहिए ॥ २॥

सप्तम भावस्थ ग्रहाणां विशिष्ट फलम् ॥ आग्नेयैर्विधवास्तराशि सहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत्। क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता। अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्ताङ्गना। द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया॥३॥ टीका॥ यदि तीनों पाप ग्रह सप्तम भाव में हों तो स्त्री विधवा होती है। यदि सप्तमभाव में पापग्रह तथा शुभग्रह दोनों ही हों तो 'पुनर्भू' (एक पति को छोड़ कर दूसरा पति करने वाली) होती है। यदि सप्तमभाव में बलहीन पापग्रह हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री पति-परित्यक्ता होती है। यदि शुक्र और मंगल परस्पर नवांश में हों तो पर-पुरुष-रता होती है। यदि चन्द्रमा सहित शुक्र और मंगल सप्तम भाव में हों तो अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुष-गमन करने वाली होती है ॥ ३॥

अथ प्रव्रज्या योगः॥ पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन। उद्वाहे वरण विधौ प्रदान काले चिन्तायामपि सकलं विधेयमेतत् ॥४॥ टीका॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तम भाव में पापग्रह तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह हो तो नवमभाव में जो ग्रह हो, उसके अनुसार ही वह स्त्री विभिन्न प्रकार की प्रव्रज्या ग्रहण करती है। यदि नवम भाव में कोई ग्रह न हो तो प्रव्रज्या भी नहीं होगी।

अथ अनिष्ट योगाः॥ वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे रन्ध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे। मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि ॥५॥ सूर्यारौ खजलास्थितौ हिमवतः शैलाग्र पातान्मृतिः ... सूर्यचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ

अथ नारी-चक्रम्॥ नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम्। प्रत्येके स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः॥ १०॥ नाभादेयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोधिष्ण्याच्चन्द्रधिष्ण्यावधीत्यम्। सत्सन्तापः शीर्षभे वक्त्रसंस्थे नित्यं मिष्टान्नानि सौख्योपलब्धि ॥११॥ कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यन्तहर्षः। पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः॥ १२॥ टीका॥ एक नारी-आकृति का चक्र बनाकर, उसमें सूर्याश्रित नक्षत्र से ३ नक्षत्र मस्तक में, ७ नक्षत्र मुख में, ४-४ नक्षत्र दोनों स्तनों में, ३ नक्षत्र हृदय में, ३ नक्षत्र नाभि में तथा ३ नक्षत्र गुह्येन्द्रिय में स्थापित कर, तात्कालिक-नक्षत्र जिस अङ्ग में पड़े, तदनुसार फल का विचार करना चाहिए। यदि मस्तक में चन्द्र-नक्षत्र हो तो सन्ताप, मुख में हो तो मिष्टान्न-भोजन एवं सुख, स्तन में हो तो पति से प्रेम, हृदय में हो तो अत्यन्त आनन्द लाभ, नाभि में हो तो पति की चिन्ता एवं गुह्येन्द्रिय में हो तो काम की अधिकता होती है॥ १०-१२॥

अथ वैधव्य भंगोपायः॥ वैधव्ययोगयुक्तायाः कन्यायाः शान्तिपूर्वकम्। वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना॥१॥ दीर्घायुषं पतिं हन्ति कुयोगैश्च कुलक्षणैः। अतः सुलक्षणा कन्या परिणीया विचक्षणैः॥२॥ कुलक्षणविलक्षिता यदि सुताऽत्र सञ्जायते। श्रुतिस्मृतिपथानया परसोमवार व्रतम्। विधाय तदनन्तरं रहसि कारयित्वाऽच्युत। द्रुमेण हरिणा कृती शुभघटेन पाणिग्रहम्॥ ३॥ शुभेऽहनि कुमारिकाकर निपीडनं कारयेद्वरेण चिरजीविना पुनरिदं न दोषावहे। इदं तु बहुसम्मतं मुनिवरेण गीतं पुनः प्रमाणपटुना हृतं प्रियविनोदकन्दप्रदम्॥ ४॥

टीका॥ अब वैधव्य-भङ्ग के उपाय कहते हैं॥ वैधव्य-योग वाली कन्या की पिप्पली व्रत, सावित्री व्रत, विष्णु-प्रतिमा से विवाह आदि उपायों द्वारा शान्ति करे, तत्पश्चात् वेदोक्त

विधि से बहु काल पर्यन्त जीवित रहने वाले वर के साथ उसका विवाह करे ।।१।। स्त्री के कुरूपेण तथा कुलक्षणों से दीर्घायु वाला पति भी नष्ट हो जाता है . अतः सुलक्षणा कन्या के साथ ही विवाह करना उचित है ।।२।। यदि कुलक्षणा कन्या उत्पन्न हो तो वेद एवं शास्त्रोक्त विधि से उससे सोमवार का व्रत कराये, तदनन्तर किसी एकान्त स्थान में विष्णु की प्रतिमा एवं पीपल के वृक्ष की जड़ पर घट स्थापित करके उसके साथ वेदोक्त विधि से कन्या का विवाह कराये। विष्णु प्रतिमा एवं पीपल के साथ विवाह करने के बाद शुभ मुहूर्त में चिरजीवी वर के साथ विवाह कराये। इससे पुनर्विवाह का दोष नहीं होता। ये श्रेष्ठ उपाय आचार्यों तथा मुनियों द्वारा बताये गये हैं ।।

अथ कारक विचार:।। उद्वाह कारकौ चन्द्र शुक्रौ होवातपो ऽथवा शनिमूर्ति करो भौम रवी नीचा सती पती। गुरुः शुभकरः पुत्रे कुजो भ्रातरि शत्रुभे ।।१।। मदेश्चापे शुभाः सर्वे स्वोच्चगौ भौम सूर्यजौ। भाग्ये ऽशुभाः शुभा पापा अशुभाः स्वपतिं विना ।।२।। ग्रहराशि स्वभावेन पुंस्त्रियो राशिमेव च। स्वभावं च वदेद् बुधया देशकाल कुलानुगः ।।३।। तेषामिष्ट फले वृद्धिस्त्व शुभारम्भ फलादयः। अन्यथा (वसदेवस्यात्तस्य तस्मान्मृतौफलम् ।।४।। रविस्तु पाचको ज्ञेयश्चन्द्रमा बोधकः सदा। पाचको बोधकश्चैव कारको वेधकः क्रमात् ।।५।। रव्यादीनां च विज्ञेया मंदारेज्य सितास्तथा। शुक्रारमदरवयो रवीन्दु शनि चन्द्रजाः ।।६।। चन्द्रज्यसित भौमाश्च मन्दारेन्दु दिनेश्वराः भौमह सूर्यमंदाः स्युः सितेन्दु गुरु भूमिजाः ।।७।। षट् सप्त नव रुद्रेषु सप्तानंद भवत्रिसु। द्विषडायव्यये-ष्वेवं द्वि वेदेन्द्रियवह्निषु ।।८।। षट् पंच सप्तारिष्केषु द्विषड् व्यय चतुर्ष्वपि। त्रिरुद्रषट् सप्तमेषु स्थिता स्थानेषु ते ग्रहाः ।।९।। पाचकाद्यास्तु चत्वारः सूर्यादिभ्यः क्रमादिह। पीडर्क्षे वाप्य पीडर्क्षे केन्द्रे लग्नं विना तथा ।।१०।। षट् सप्तधर्म कर्माय मूर्तिष्वेव गताः क्रमात्। पाचकाधाश्चतुर्वै च बलवंतः

समीरिता:॥ ११॥ कारको मंदफलदो वेधको विघ्नकृत्स्मृत:। बोधक: शीघ्र फलद: पाचको विफलप्रद:॥१२॥ तदंश कालस्यांते वाप्यादावंशकेऽपि च। धृत्यांशकेऽपि फलदा: पाचकाद्या: क्रमादिह॥१३॥ आदौ फलप्रदौ भौम रवी मध्ये सितार्यकौ। सर्वदाह्न: शानी मंदस्त्ववसाने फलप्रदौ॥१४॥

टीका॥ अब स्त्री जातक कहते हैं। उसमें प्रथम कारक विचार कहा जाता है॥ चन्द्रमा और शुक्र विवाह कारक होते हैं अथवा बुध और गुरु भी विवाह कारक होते हैं। शनि मृत्यु कारक होता है। भौम कुलटा कारक होता है तथा सूर्य पतिव्रता कारक है। पंचम भाव में गुरु शुभ फल देता है। मंगल तृतीय भाव में तथा शनि छठे भाव में शुभ फल देता है। एकादश भाव में सभी ग्रह शुभ फल देते हैं। मंगल तथा शनि अपनी उच्चराशि में हों तो शुभद होते हैं। भाग्य (नवम) भाव में पापग्रह अशुभ तथा शुभ ग्रह शुभ फल देते हैं, परन्तु पाप ग्रह यदि भाग्यभाव का स्वामी हो तो शुभ फल देता है॥१-२॥ स्त्री-पुरुषों के स्वभाव तथा गुण आदि के विषय में राशि तथा ग्रहों के अनुरूप देश, काल तथा कुल का विचार करते हुए फलादेश करना चाहिए॥३॥ जिस भाव का इष्ट बल अधिक हो, उसका शुभ फल उत्तरोत्तर अधिक तथा जिसका कष्ट बल अधिक हो उसका अशुभ फल उत्तरोत्तर अधिक होता है॥४॥ सूर्य पाचक होता है, चन्द्रमा बोधक होता है। सूर्य को कारक तथा चन्द्रमा को वेधक भी कहते हैं॥५॥ सूर्य से छठे, सातवें, नवें तथा ग्यारहवें स्थानों में क्रमश: शनि, मंगल, गुरु व शुक्र-पाचक, बोधक, कारक तथा वेधक होते हैं॥ चन्द्रमा से सातवें, नवें, ग्यारहवें तथा तीसरे स्थानों में शुक्र, मंगल, शनि और सूर्य; मंगल से दूसरे, छठे, ग्यारहवें तथा बारहवें स्थानों में सूर्य, चन्द्र और शनि; बुध से दूसरे, चौथे, पाँचवें तथा तीसरे स्थानों में चन्द्रमा, गुरु, शुक्र और मंगल; गुरु से छठे, पाँचवें, सातवें तथा बारहवें

स्थानों में शनि, मंगल, चन्द्रमा और सूर्य; शुक्र से दूसरे, छठे, बारहवें तथा चौथे स्थानों में मंगल, बुध, सूर्य और शनि तथा शनि से तीसरे, ग्यारहवें, छठे एवं सातवें स्थानों में शुक्र, चन्द्र, गुरु तथा मंगल — ये क्रमशः पाचक, बोधक, कारक तथा वेधक होते हैं ॥ ८-९॥ सूर्यादि ग्रहों की शत्रु राशि तथा मित्र राशि में लग्न के अतिरिक्त केन्द्र में गये हुए सभी पाचक आदि ग्रह बलवान होते हैं ॥१०॥ लग्न से छठे, सातवें, नवें, दसवें, ग्यारहवें, आठवें तथा चौथे- इन स्थानों में गये हुए सूर्यादि ग्रह पाचक आदि क्रम से बली होते हैं ॥ ११॥ कारक ग्रह न्यून फलकर्ता, वेधक ग्रह अपने भाव के फल की हानि करने वाला, बोधक ग्रह अपने भाव के फल को शीघ्र देने वाला तथा पाचक ग्रह अपने भाव सम्बन्धी फल को विफल (निष्फल) करने वाला होता है ॥ १२॥ ये पाचक, बोधक, कारक तथा वेधक ग्रह अन्तिम नवमांश में अथवा पंचम तथा अन्तिम नवांश में भी फल देते हैं ॥१३॥ मंगल तथा सूर्य राशि के आदि में, शुक्र तथा गुरु राशि के मध्य में, बुध सर्वदा तथा चन्द्रमा और शनि राशि के अन्त्य में फल देने वाले होते हैं ॥१४॥

पुंयोषितोर्जन्मफलं तु तुल्यं किं चात्र राशीश्वर लग्न संस्थम् । तद्वीर्ययोगाद्वपुराकृतिः स्यात्सौभाग्यशीलत्वमथांति चास्ते ॥ १॥ शुभाशुभं पूर्वजनेर्विपाकात्सीमन्तिनीनामपि तत्फलं हि । विवाहकालात्परतः प्रवीणैरसम्भवात्तत्पतिषु प्रकल्प्यम् ॥२॥ अतीव सारं फलमङ्गनानामुदीरितं शौनकनारदाद्यैः । व्यक्तं यथा लग्न निशाकराभ्यां मया तथैव प्रतिपाद्यते तत् ॥३॥

टीका॥ पुरुष तथा स्त्री के जन्मकालीन ग्रहों का फलादेश एक जैसा ही होता है, परन्तु कई फल पुरुषों में घटते असंभव होते हैं, इसीकारण स्त्री-जातक का अलग से वर्णन किया गया है। लग्न और चन्द्रमा के बल-योग से स्त्री के शरीर तथा आकार के सम्बन्ध में

विचार करना चाहिए तथा सप्तम भाव से सौभाग्य एवं स्वभाव के विषय में विचारना चाहिए- ऐसा आचार्यगण कहते हैं ॥१॥ सभी लक्षण पूर्व जन्म के संचित कर्म-फल के रूप में प्राप्त होते हैं। स्त्रि-यों के सम्बन्ध में भी यही बात समझनी चाहिए। यदि विवाह के बाद कोई फल स्त्री में दिखाई न दे तो वह उसके पति को प्राप्त होगा-यह समझना चाहिए। अस्तु, लग्न तथा चन्द्रमा की स्थिति के आधार पर जो फल स्त्रियों को प्राप्त होते हैं, अब उनका प्रतिपादन किया जाता है ॥२-३॥

यद्यत्फलं नरभवेऽक्षममङ्गनानां तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम्। तासांतु भर्तृ-मरणं निधने वपुस्तु लग्नेन्दुगं सुभगतास्तमये पतिश्च ॥१॥ युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री सच्छीलभूषणयुता शुभदृष्टयोश्च। ओजःस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता पापा च पापयुत-वीक्षितयोर्गुणोना ॥२॥ कन्यैव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वी समाया कुचरित्रयुक्ता। भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोंऽशकेषु वक्रार्किजीवेन्दुजभार्गवानाम् ॥३॥ दुष्टा पुनर्भूः सगुणा कलाज्ञा ख्याता गुणैश्चासुर-पूजितर्क्षे। स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा ॥४॥ स्वच्छन्दा पतिघाति-नी बहुगुणा शिल्पिन्यसाध्वीन्दुभे,नाचारा कुलटार्कभे नृपवधू पुंश्चेष्टितागम्यगा। जैवे नैकगुणा-ल्परत्यतिगुणा विज्ञानयुक्ता सती, दासी नीचरतार्किभे पतिरता दुष्टाऽप्रजा स्वांशकैः ॥५॥ शशि-लग्नसमायुक्तैः फलं त्रिंशांशकैरिदम्। बलाबलविकल्पेन तयोरुक्तं विचिन्तयेत् ॥६॥ दृक्संस्था-वसितासितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घटराशिसम्भवोंऽशः। स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलप्रदीप्तं संशान्तिं नयति नराकृतिस्थिताभिः ॥७॥ शून्ये कापुरुषोऽबलेऽस्तभवने सौम्यग्रहावीक्षिते, क्लीबो-ऽस्ते बुधमन्दयोश्चरगृहे [illegible]। उत्सृष्टा रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तरा-

-शि स्थिते कन्यैवाशुभवीक्षितेऽर्कतनये द्यूने जरां गच्छति ॥ ८॥ आग्नेयैर्विधवास्तराशिसहितैर्मिश्रैः पुनर्भूर्भवेत् । क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता । अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोरन्यप्रसक्ताऽङ्गना द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया ॥ ९॥ सौरारर्क्षे लग्नगे सेन्दुशुक्रे मात्रा सार्द्धं बन्धकी पापदृष्टे । कौजेऽस्तांशे सौरिणा व्याधियोनिश्चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे ॥१०॥ वृद्धो मूर्खः सूर्यजर्क्षेऽशके वा स्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेये । शौक्रे कान्तोऽतीव सौभाग्ययुक्तो विद्वान्भर्ता नैपुणज्ञश्च बौधे ॥ ११॥ मदनवशगतो मृदुश्च चान्द्रे त्रिदशगुरौ गुणवान् जितेन्द्रियश्च । अतिमृदुरतिकर्मकृच्च सौर्ये भवति गृहेऽस्तमयस्थितेंऽशके वा ॥ १२॥ ईर्ष्यान्विता सुखपरा शशिशुक्रलग्ने ज्ञेन्द्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या । शुक्रज्ञयोस्तु रुचिरा सुभगा कलाज्ञा त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥ १३॥ क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरोंऽशो यस्य स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा । सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः कन्यालिगोहरिषु चाल्पसुतत्वमिन्दौ ॥ १४॥ सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः शेषैर्वीर्यसमन्वितैः पुरुषिणी यद्योजराश्युद्गमः। जीवारास्फुजिदैन्दवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि ॥ १५॥ पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्यां प्रव्रज्यां युवतिरुपैत्यसंशयेन । उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिन्तायामपि सकलं विधेयमेतत् ॥ १६॥ इति बृहज्जातके ॥

टीका ॥ जो फल स्त्री जातक में घटित होने असम्भव हों, वे उनके पति को प्राप्त होते हैं — यह समझना चाहिए। स्त्री के पति की मृत्यु के सम्बन्ध में अष्टमभाव से, शरीर के सम्बन्ध में लग्न और चन्द्रमा से तथा सौभाग्य के सम्बन्ध में सप्तमभाव से विचार करना चाहिए ॥१॥ स्त्री की कुण्डली में यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों सम-राशि में हों तो वह कोमल,

मु० सं० ३२८

भा० टी०

कान्तिवान्, सलज्ज, प्रियवादिनी आदि स्त्रियोचित गुणों से सम्पन्न होती है। यदि लग्न तथा चन्द्रमा पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह उत्तम स्वभाव की तथा वस्त्राभूषणों से सम्पन्न होती है। यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों ही विषम-राशि में हों तो ऐसी स्त्री पुरुष जैसी आकृति एवं स्वभाव वाली होती है। यदि लग्न और चन्द्रमा पर पापग्रह की दृष्टि अथवा युति हो तो स्त्री पापकर्म करने वाली तथा गुणहीना होती है ॥२॥ [यदि लग्न और चन्द्रमा — इन दोनों में से एक सम तथा दूसरा विषम राशि में हो तथा पाप एवं शुभ — दोनों प्रकार के ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो मिश्र-स्वभाव की होगी] यदि मेष अथवा वृश्चिक में लग्न अथवा चन्द्रमा हो तथा मंगल का त्रिंशांश हो तो ऐसी कुण्डली वाली स्त्री कौमार्यावस्था में ही दोषयुक्ता तथा पर-पुरुष से समागम करने वाली होती है। यदि शनि का त्रिंशांश हो तो दासी, गुरु का त्रिंशांश हो तो पतिव्रता एवं सुशीला, बुध का त्रिंशांश हो तो मायाविनी (माया जानने वाली) एवं शुक्र का त्रिंशांश हो तो दुश्चरित्रा होती है ॥३॥ यदि लग्न चन्द्रगत वृष अथवा तुला राशि में मंगल का त्रिंशांश हो तो ऐसी स्त्री दुष्ट स्वभाव वाली, यदि शनि का त्रिंशांश हो तो 'पुनर्भू' अर्थात् एक पति को छोड़ कर दूसरा पति करने वाली, यदि गुरु का त्रिंशांश हो तो गुणवती, बुध का त्रिंशांश हो तो कलाओं को जानने वाली, एवं शुक्र का त्रिंशांश हो तो अपने गुणों के कारण विख्यात होती है। यदि मिथुन अथवा कन्या राशि में मंगल का त्रिंशांश हो तो कपटिन, शनि का त्रिंशांश हो तो नपुंसकी (हिजड़ी), गुरु का त्रिंशांश हो तो सती, बुध का त्रिंशांश हो तो गुणवती एवं शुक्र का त्रिंशांश हो तो कामातुरा होती है ॥४॥ यदि कर्क राशिगत लग्न अथवा चन्द्रमा में मंगल का त्रिंशांश हो तो स्त्री स्वतन्त्र स्वभाव वाली (स्वेच्छाचारिणी), शनि का त्रिंशांश हो तो पति को मारने वाली, गुरु

का त्रिशांश हो तो अनेक गुणों से युक्ता, बुध का त्रिशांश हो तो शिल्प-कर्म में निपुण एवं शुक्र का त्रिशांश हो तो दुराचारिणी होती है। यदि सिंह राशि के लग्न अथवा चन्द्रमा में मंगल का त्रिशांश हो तो स्त्री पुरुष जैसे स्वभाव वाली, शनि का त्रिशांश हो तो कुलटा, गुरु का त्रिशांश हो तो राज-पत्नी, बुध का त्रिशांश हो तो पुरुष जैसा आचरण करने वाली एवं शुक्र का त्रिशांश हो तो नीच-पुरुष से सङ्ग करने वाली होती है। यदि धनु अथवा मीन राशि के लग्न अथवा चन्द्रमा में मंगल का त्रिशांश हो तो अनेक गुणों से युक्ता, शनि का त्रिशांश हो तो अल्प-रति (संभोग) करने वाली, गुरु का त्रिशांश हो तो अत्यधिक गुणवती, बुध का त्रिशांश हो तो विज्ञान की जानकार तथा शुक्र का त्रिशांश हो तो व्यभिचारिणी होती है। यदि मकर अथवा कुंभ राशि के लग्न अथवा चन्द्रमा में मंगल का त्रिशांश हो तो दासी, शनि का त्रिशांश हो तो नीच पुरुषों के साथ रहने वाली, गुरु का त्रिशांश हो तो पतिव्रता, बुध का त्रिशांश हो तो दुष्ट-स्वभाव वाली एवं शुक्र का त्रिशांश हो तो वन्ध्या होती है॥ ५॥ इन फलों को चन्द्रमा तथा लग्नगत त्रिशांशों से समझना चाहिए। लग्न तथा चन्द्रमा—इन दोनों में जो बलवान् हो, उसके त्रिशांश का फल ही विशेष रूप से कहना चाहिए। यदि दोनों बलवान् हों तो दोनों के त्रिशांश से सम्बन्धित फल स्त्री को मिलता है॥ ६॥ यदि शनि के नवांश में शुक्र तथा शुक्र के नवांश में शनि हो एवं दोनों में परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध भी हो तो इन योगों में उत्पन्न स्त्री पुरुषाकृति-स्त्री (अर्थात् जिस स्त्री ने अपना आकार पुरुष जैसा बना रक्खा हो) के द्वारा अपनी प्रज्ज्वलित काम-वासना की शान्ति कराती है अर्थात् ऐसे योग में उत्पन्न कामातुरा-स्त्री पति से वियोग प्राप्त कर, किसी अन्य स्त्री के साथ, उसे काष्ठ-चर्म आदि का शिश्न धारण करवा कर, मैथुन कराती और अपनी कामाग्नि शान्त करती

है।।७।। यदि लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तमभाव में कोई ग्रह न हो अथवा वह (सप्तम भाव) निर्ब-
-ल हो तथा किसी शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसे योग वाली कन्या का पति नीच पुरुष अथवा अनु-
-योगी होता है। यदि सप्तम भाव में बुध और शनि हो तो पति नपुंसक होता है। सप्तमभाव में चर
राशि हो तो पति परदेशी होता है। सप्तम भाव में सूर्य हो तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है, मंगल
हो तो बाल-विधवा होती है, शनि हो तो कौमार्यावस्था में ही वृद्धा जैसी दिखाई पड़ती है [यदि स्थिर
राशि हो तो पति सदैव घर में रहता है और द्विस्वभाव राशि हो तो कभी घर में और कभी परदेश
में रहता है—यह समझना चाहिए]।।८।। यदि सप्तम भाव में तीनों पापग्रह हों तो ऐसी स्त्री विधवा
होती है। यदि सप्तम भाव में पापग्रह एवं शुभग्रह दोनों हों तो 'पुनर्भू' अर्थात् एक पति को छोड़
कर दूसरा पति करने वाली होती है। यदि सप्तम भाव में बलहीन पापग्रह हो और उस पर शुभ
ग्रह की दृष्टि हो तो पति-परित्यक्ता होती है। यदि शुक्र और मंगल परस्पर नवांश में हों तो ऐसी
स्त्री पर-पुरुष में आसक्त होती है। यदि चन्द्रमा सहित शुक्र और मंगल सप्तम भाव में हों तो ऐसी
स्त्री अपने पति की आज्ञा से पर-पुरुष के साथ रमण करने वाली होती है।।९।। यदि लग्न में
मंगल हो और वह शनि की राशि—मकर-कुंभ में स्थित हो और उसमें शुक्र तथा चन्द्रमा पापग्रह
से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता के साथ व्यभिचार-कर्म में रत होती है। यदि सप्तमभाव
में मंगल का नवांश हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो उस स्त्री की योनि में कोई रोग होता
है। यदि सप्तम भाव में शुभग्रह का नवांश हो तो ऐसी स्त्री सुन्दर भग वाली, सुन्दरी तथा पति को
प्रिय होती है।।१०।। यदि सप्तम भाव में शनि की राशि अथवा नवांश हो तो उस कन्या का
पति वृद्ध तथा मूर्ख होता है, यदि मंगल की राशि अथवा नवांश हो तो पति स्त्री-लम्पट

एवं क्रोधी होता है, यदि शुक्र की राशि अथवा नवांश हो तो पति अत्यन्त सुन्दर तथा भाग्यशाली होता है और यदि बुध की राशि अथवा नवांश हो तो पति विद्वान् एवं सूक्ष्मदृष्टि वाला (निपुण) है ॥११॥ यदि सप्तम भाव में चन्द्रमा की कर्क राशि अथवा कर्क का नवांश हो तो स्त्री का पति कामातुर एवं कोमल हृदय वाला होता है। यदि गुरु की राशि—धनु अथवा मीन अथवा इन का नवांश हो तो पति गुणवान् एवं जितेन्द्रिय होता है। यदि सूर्य की सिंह राशि अथवा सिंह का नवांश हो तो पति अत्यन्त कोमल एवं अधिक काम करने वाला होता है [टिप्पणी- यदि सप्तम भाव में राशि तथा नवांश-दोनों एक ही ग्रह के हों, तभी यह फल होता है। यदि भिन्न ग्रहों के हों तो जिसका स्वामी बली हो, उसके अनुसार फल कहना चाहिए। यदि राशि एवं नवांशपति - दोनों समान बली हों तो दोनों का फल समझना चाहिए]॥१२॥ यदि जन्म लग्न में चन्द्रमा और शुक्र हो तो स्त्री ईर्ष्यालु-स्वभाव की तथा सुखी-जीवन बिताने वाली होती है। यदि बुध और चन्द्रमा हो तो कलाओं की जानकार, सुखी एवं गुणवती होती है। यदि बुध और शुक्र हों तो लावण्यवती, सौभाग्यवती एवं कलाओं की जानकार होती है। यदि तीनों शुभग्रह - बुध, गुरु एवं शुक्र हों तो अनेक प्रकार के धन, सुख एवं गुणों से युक्त होती है॥१३॥ यदि लग्न से अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो स्त्री विधवा होती है। अष्टमेश जिस ग्रह के नवांश में हो, उस ग्रह की अवस्था (बाल, युवा, वृद्ध) अथवा दशा-अन्तरदशा के समय में स्त्री विधवा होगी। यदि द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हो, उस स्त्री की मृत्यु अपने पति के सामने ही होती है अर्थात् वह अपने पति से पहले मर जाती है। जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में कन्या, वृश्चिक, वृष अथवा सिंह राशि में चन्द्रमा स्थित हो, उसके सन्तानें कम होती हैं॥१४॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि मध्यबली हो; चन्द्रमा, शुक्र तथा बुध—ये तीनों बलहीन हों तथा

सूर्य, मङ्गल और गुरु – ये तीनों बलवान् हों तथा लग्न में विषम-राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु अथवा कुंभ) हो, वह स्त्री अनेक पुरुषों से संबंध रखने वाली अथवा पुरुष-समूह में रहने वाली होती है। यदि लग्न में सम-राशि (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर अथवा मीन) हो तथा गुरु, मंगल, शुक्र और बुध – ये बलवान् हों, वह स्त्री संसार में प्रसिद्ध, अनेक शास्त्रों में निपुण तथा ब्रह्मविद्या की ज्ञाता होती है ॥१५॥ यदि सप्तम भाव में पापग्रह तथा नवम भाव में कोई अन्य ग्रह हो तो नवम भावस्थ ग्रह के अनुरूप वह स्त्री प्रव्रज्या प्राप्त करती है। यदि नवमभाव में ग्रह न हो तो प्रव्रज्या नहीं होती॥ इन सब बातों पर विवाह, वरण, कन्यादान आदि के समय विचार करना चाहिए ॥१६॥ [टिप्पणी- मतान्तर से– लग्नमें सम-राशि एवं गुरु, चन्द्र, शुक्र तथा बुध – ये चारों ग्रह बली होने पर स्त्री ब्रह्मवादिनी होती है]॥

अन्यच्च ॥ सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिः भौमेन्द्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः। सूर्याचन्द्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बन्धनात् तौ चेद्द्व्यङ्गविलग्न संस्थितिकौ तोये निमग्नात् स्वतः॥१॥ रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत्। किल जलोदर सञ्जनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥२॥ निशाकरः पापखगान्तरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति। पापे स्मरस्थे ऽन्यखगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति॥३॥ कन्यालिगे सिंहगते शशाङ्के पङ्करुहाक्षी खलु स्वल्पपुत्रा। पुत्रालयं चेच्छुभखेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुला च तेषाम्॥४॥

टीका॥ यदि जन्मकुण्डली के दशम भाव में सूर्य तथा चतुर्थभाव में मंगल हो तो स्त्री की मृत्यु पर्वत अथवा किसी ऊँचे स्थान से गिर कर होती है। यदि मंगल, चन्द्र और शनि – ये क्रमशः द्वितीय, सप्तम तथा चतुर्थ भाव में हों तो कुऐं अथवा तालाब में डूब कर मृत्यु होती है। यदि सूर्य

तथा चन्द्रमा कन्या राशि में पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो बंधन (फांसी आदि) से मृत्यु होती है। यदि सूर्य तथा चन्द्रमा धनु, मीन अथवा मिथुन राशि के होकर लग्न में बैठे हों तो पानी में डूबकर मृत्यु होती है ॥ २॥ यदि दो पापग्रहों के बीच चन्द्रमा मेष अथवा वृश्चिक राशि पर बैठा हो तो शस्त्र अथवा अग्नि से मृत्यु होती है। यदि सप्तम भाव में पाप ग्रह एवं नवम भाव में शुभ ग्रह हो तो स्त्री तपस्विनी होती है॥ ३॥ यदि चन्द्रमा कन्या, वृश्चिक अथवा सिंह राशि में हो तो कम पुत्र होते हैं। यदि पंचम भाव में शुभग्रहों का योग अथवा दृष्टि हो तो अधिक पुत्र होते हैं ॥ ४॥

अथ नारीचक्रम् ॥ नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम्। प्रत्येके स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः ॥ १॥ नाभादेयं भत्रयं त्रीणि गुह्ये भानोधिष्ण्याच्चन्द्रधिष्ण्यावधीत्थम्। सत्सन्तापः शीर्षभे वक्त्रसंस्थे नित्यं मिष्टान्नानि सौख्योपलब्धिः ॥ २॥ कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यन्त हर्षः। पत्युश्चिन्तानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ॥ ३॥

टीका ॥ एक नारी की आकृति का चक्र बनाकर, उसमें सूर्याश्रित नक्षत्र से ३ नक्षत्र मस्तक में, ७ नक्षत्र मुख में, ४-४ नक्षत्र स्तनों में, ३ नक्षत्र हृदय में, ३ नक्षत्र नाभि में तथा ३ नक्षत्र गुह्येन्द्रिय में स्थापित कर, तात्कालिक नक्षत्र जिस अङ्ग में पड़े, तदनुसार फल कहना चाहिए। यथा- मस्तक में चन्द्र नक्षत्र हो तो सन्ताप, मुख में हो तो मिष्टान्न-भोजन और सुख, स्तन में हो तो स्वामी से प्रेम, हृदय में हो तो अत्यन्त आनन्द का लाभ, नाभि में हो तो पति की चिन्ता तथा गुह्येन्द्रिय में चन्द्र-नक्षत्र हो तो काम की अधिकता होती है ॥ १-३॥

अथ राजभार्या योगाः ॥ पृष्ठोदयर्क्षेन्दु-च कण्टकस्थाः सौम्याः खलाः सूर्ययुता नृरा-

-शौ । कांता भवेद् भूपति कामिनी सा सुशीलिनी पुत्रधनैरुपेता ॥ १॥ यदि तुंगगः शशिसुत स्तनुगो भवभाव-
-गो यदि सुरेन्दु गुरुः । नृपकामिनी भवति सा वनिता शुभशील सौख्य सुरूप युता ॥२॥ रस वर्ग केषु यदि
शुद्द तमस्त्रि दशार्चितः खलु चतुष्टयगः । अपि पूर्ण काप शशि दृष्टि युतो नृपचित्तवित्त सहिता वनिता ॥३॥
यदि काम धामग सितेन्दु सुतौ गुरु वीक्षितौ भगवतः शशभृत् । नरनाथ योषिदति कीर्ति सुखा बहुपुत्रिणी शुभ
गता सहिता ॥४॥

टीका ॥ अब राजपत्नी योगों को कहते हैं — यदि पृष्ठोदय राशियों के शुभग्रह केन्द्र में हों,
तथा सूर्ययुक्त पापग्रह नृराशियों के हों तो स्त्री सुन्दरी, रूपवती, राजपत्नी, सुन्दर स्वभाव वाली, पुत्र-
वती तथा धनवती होती है ॥१॥ यदि लग्न में कन्या राशि का बुध हो एवं एकादश भाव में कर्क राशि का
गुरु हो तो स्त्री राजपत्नी, सुन्दर, सुखी, श्रेष्ठ चरित्र वाली तथा सुरूपवती होती है ॥२॥ यदि षड्वर्ग
की कुण्डली मे बलवान् बृहस्पति केन्द्र मे हो और वह पूर्ण चन्द्रमा से युक्त अथवा दृष्ट हो तो ऐसी
स्त्री निश्चित रूप से राजा की प्रियतमा एवं धनवती होती है ॥३॥ यदि सप्तम स्थान में शुक्र बुध
हों और उन पर गुरु की दृष्टि हो तथा चन्द्रमा एकादश भाव हो तो स्त्री राजपत्नी, अत्यन्त कीर्तिमती,
सुखवती, अनेक पुत्रो वाली तथा सच्चरित्रा होती है ॥४॥

केन्द्रे च सौम्या यदि पृष्ठभाजः पापाः कलत्रे च मनुष्य राशौ । राज्ञी भवेत् स्त्री बहु
कोषयुक्ता नितं प्रशान्ता च सपुत्रिणी च ॥५॥ बुधे विलग्ने यदि तुङ्ग संस्थे लाभस्थितो देवपुरोहितश्च,
नरेन्द्र पत्नी वनिता प्रसंगे तदा प्रसिद्धा भवतीह भूमौ ॥६॥ एकोऽपि जीवो रस वर्ग शुद्धः केन्द्रे यदा चन्द्र
निरीक्षितेश्च । राज्ञी भवेत् स्त्री सधना सपुत्रा रूपान्विता पीन नितम्ब बिम्बा ॥७॥ कर्कोदये सप्तमगे
पतंगे जीवेन दृष्टे परिपूर्ण देहा । विख्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना राज्ञी गतारिर्बहुपुत्र पौत्रा ॥८॥

षड्वर्गशुद्धैस्त्रिभिरेव राज्ञी चतुर्भिरंशैश्च तथैकपत्नी। पंचादिभिर्देवविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात्॥९॥ लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः। जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी ख्याता धरण्यां सकलैः स्तुता च॥१०॥ जनुः काले यस्या मदनसदने दानवगुरौ, शुभाभ्यामाक्रान्ते गतवति तदा सा विधुमुखी। गजेन्द्राणां मुक्ताफलविमलमालावृतकुचा, प्रिया पत्युर्नित्यं प्रभवति शचीवत् क्षितितले॥११॥ समाक्रांते लग्ने त्रिदशगुरुणा वाऽथ भृगुणा, बुधे कन्याराशौ मदनभवने भूमितनये। मृगे कर्के चेन्दुः सति भवति लावण्यतिलका, तपोरेखा योषा प्रभवति विशेषात् क्षितिपतेः॥१२॥

टीका॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सभी शुभग्रह केन्द्र में हों तथा पृष्ठोदय राशि में हों और मनुष्य राशि में होकर सप्तम स्थान में हों वह विपुलधन से युक्त, शान्त स्वभाव वाली, सुन्दर पुत्र से युक्त राजरानी होती है॥५॥ जिस स्त्री की कुण्डली में लग्न में कन्या राशि का बुध हो तथा गुरु एकादश भाव में हो वह पृथ्वी पर प्रसिद्ध राजपत्नी होती है॥६॥ जिस स्त्री के एक बृहस्पति ही षड्वर्ग में शुद्ध हो कर केन्द्र में स्थित हो और वह चन्द्रमा द्वारा दृष्ट भी हो तो वह धन-पुत्रों से युक्त पुष्ट नितम्बों वाली राजरानी होती है॥७॥ जिस स्त्री की जन्म-लग्न कर्क हो, सूर्य सप्तमभाव में हो और वह गुरु द्वारा दृष्ट भी हो, वह परिपूर्ण शरीर वाली, विद्याधरी, श्रेष्ठ, शत्रु-रहिता, पुत्र-पौत्रों से युक्त प्रधान राजपत्नी होती है॥८॥ जिस स्त्री के जन्म-काल में षड्वर्गों में से तीन वर्ग शुद्ध हों, वह रानी होती है। यदि चार वर्ग शुद्ध हों तो जगत्-विख्यात रानी होती है और यदि पाँच वर्ग शुद्ध हों तो देव-विमान पर बैठने वाली त्रैलोक्याधिपति की पत्नी होती है॥९॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में एकादश भाव में चन्द्रमा व सप्तमभाव में बुध से युक्त तथा गुरु से दृष्ट शुक्र बैठा हो, वह सम्पूर्ण लोगों से प्रशंसित, विख्यात कीर्तिवाली राजपत्नी होती है॥१०॥ यदि जन्मकुण्डली में लग्न से सप्तमभाव

में दो शुभ ग्रहों के साथ शुक्र बैठा हो, वह स्त्री चन्द्र तुल्य मुख वाली, गजमुक्ताओं की मालाओं से आच्छादित स्तनों वाली, नेत्र में तिल-चिह्न वाली तथा अपने पति को इन्द्राणी की भाँति प्रिय राजरानी होती है॥२१॥
यदि लग्न में बृहस्पति, सप्तमभाव में कन्या राशि का बुध, मकर राशि का मंगल तथा कर्क राशि का चन्द्रमा हो वह लावण्यमयी, परमतपस्विनी एवं परमसुन्दरी राजरानी होती है ॥२२॥

शशाङ्के कर्कस्थे भवति हि युवत्यां विधुसुते। तनौ जीवे मीने गवि भृगुसुते जन्मसमये।
सहस्राली मान्या जगति नृपकन्या गुणवती। विशेषादेषा स्यान्नृपतिपतिका पुण्यलतिका॥२३॥

टीका॥ यदि जन्मकुण्डली में कर्क राशि का चन्द्रमा, कन्या राशि का बुध, लग्न में मीन राशि का बृहस्पति तथा वृष राशि का शुक्र हो, वह स्त्री एक सहस्र सखियों से सत्कार पाने वाली, राजकुलोत्पन्न, सद्गुण सम्पन्ना, पुण्यलता तथा विशेषतः राजपत्नी होती है॥२३॥

अथ सप्तमभावे ग्रहफलम्॥ दिनपताविह कामनिकेतनं गतवति प्रवराऽप्यवरा भवेत्। जनुषि बल्लभभावविवर्जिता सुजनता रहिता वनिता भृशम्॥१॥ वृषे राकानाथे भवति मदने जन्मसमये, भवेदेषा योषा विमलवसना चारुवदना। विनम्रा मुक्तालीचलितकुचभारेण नितरां, परा लीलालक्ष्मी रतिरिव रमा तु क्षितितले॥२॥ अङ्गारके मदनमन्दिरमिन्दुभावं मन्दान्विते हरिभगे जननेऽङ्गनायाः। वैधव्यमेव नियतं कपटप्रबन्धा द्वाराङ्गना भवति सैव वराङ्गनापि॥३॥ अनेकं श्रीभर्ता भवति मखकर्ता च मदने बुधे तुङ्गे यस्या जनुषि खलु तस्याः पतिरिह। स्वयं वामा कामाकुलितहृदयामोदकलया परीता मुक्तालीरजतकनकाली मणिगणैः॥४॥ परिक्रान्ते यस्या मदनभवने देवगुरुणा। गुणज्ञा धर्मज्ञा निजपतिपदाब्जं भजति सा॥ मनोज्ञा मालाभिः कनकघटिताभिश्च शिरसः। समाक्रान्ता कान्ता रतिपतिपताकेव शशिभा॥५॥ कवौ यस्या जन्मन्यपि मदनगे मीनभवने। तदा कान्तो दान्तो रतिपतिकला

कौतुक पटुः ॥ धनुर्धर्ता भर्ता स्वयमपि च सङ्गीत रसिका । विलोली पद्माक्षी वसन लसिता भूषणवृता ॥६॥ मदनभावगते रविसूनये पतिरतीव गदाकुलितो भवेत्। मलिनवेषधरो विबलो महान् जनुषि तुंगगते प्रवरो धनी ॥७॥ सप्तमे सिंहिकापुत्रे कुलदोष विवर्द्धिनी । नारी सुख परित्यक्ता तुंगे स्वामि सुखान्विता ॥८॥

टीका॥ अब सप्तमभावस्थ ग्रहों के फल को कहते हैं । जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तम भाव में सूर्य हो, वह उत्तम कुल में जन्म होने के कारण यदि उत्तमा हो तोभी अधम बर्त्ताव करने वाली पति के स्नेह से रहित तथा सज्जनता, लज्जा आदि सद्गुणों से रहित होती है ॥१॥ यदि सप्तम भाव में वृष राशि का चन्द्रमा हो तो ऐसी स्त्री उज्ज्वल वस्त्र धारण करने वाली, मनोहर मुखवाली, मोतियों की माला से आच्छादित स्तनों के भार से नम्र कटिवाली, अनेक प्रकार की उत्तम लीलाएं करने वाली तथा रति के समान सुन्दरी होती है ॥२॥ यदि सप्तम भाव में कर्क राशि का मंगल हो अथवा सप्तम भाव में सिंह राशि हो और उसमें शनि के साथ मंगल बैठा हो – तो इन दोनों योगों वाली स्त्री वैधव्य-गुण से युक्त होती है तथा उत्तम कुल में जन्म लेकर भी अनेक प्रकार के कपट युक्त व्यवहार करती हुई वेश्या बन जाती है ॥३॥ यदि सप्तमभाव में बुध हो तो स्त्री का पति अनेक प्रकार की सम्पत्तियों का स्वामी व अनेकों यत्न करने वाला होता है तथा वह स्त्री भी सदैव आनन्दित रहनेवाली एवं मुक्तामाल, स्वर्णमाला तथा मणियुक्त आभूषणों को धारण करने वाली होती है ॥४॥ यदि सप्तम भाव में वृहस्पति हो तो स्त्री गुणवती, धर्मज्ञा, अपने पति की चरण-सेविका, स्वर्ण एवं मणिजटित मालाओं को कण्ठ में धारण करने वाली, पति को प्रिय, कामदेव की मूर्तिमती पताका जैसी सुन्दर तथा पुरुषों के मन में कामोद्दीपन करने वाली होती है ॥५॥ यदि सप्तमभाव में शुक्र हो तो ऐसी

स्त्री का पति काम-कला में प्रवीण, इन्द्रियों का दमन करने वाला तथा धनुर्धारी (शस्त्रधारी) होता है और वह स्त्री स्वयं भी संगीत-रसिका, चंचला, कमलनयनी एवं दिव्य वस्त्राभूषणों को धारण करने वाली होती है ॥ ६॥ यदि सप्तमभाव में शनि हो तो ऐसी स्त्री का पति अनेक प्रकार के रोगों से पीड़ित, मलिन वेषधारी तथा अत्यन्त दुर्बल होता है। परन्तु यदि सप्तमभावस्थ शनि अपनी उच्च राशि का हो तो ऐसी स्त्री का पति धनी तथा अत्यन्त प्रतिष्ठित होता है ॥ ७॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के सप्तमभाव में राहु हो तो वह अपने कुल को कलंकित करने वाली एवं सुख-भोग-रहिता होती है। परन्तु यदि राहु उच्च का हो तो पति-सुख से सम्पन्न होती है ॥ ८॥

अथ विविध योगाः॥ क्षपानाथे यस्या गतवति कुलीरांगमथवा। मदागारं सारं सुरगुरुबुधाभ्यामपि युतम्॥ महान्तोऽपि भ्रान्ताः कति कति मनोजाधिकतया। पुरस्तां पश्यन्तो दधति परमानन्दलहरीम् ॥१॥ मृगागारे सौरे गतवति विसारं सुरगुरौ। कवौ या पातालं तपनतनयेनापि मिलिते जनुःकाले यस्याः करिमुकुटमुक्ताफलमणि गिजानां मालाभिर्वलितमुत वक्षोजयुगलम् ॥२॥ निशाकरात् सप्तम भाव संस्था महीजमन्दा गुरुदिवाकराश्चेत्। लग्नेऽरिभे जन्मनि नैधने वा दिशन्ति वैधव्यफलं मदे वा ॥२॥ लग्नाधिपो वाऽथ मदालयेशो वर्गेगतः पापनभश्चराणाम्। मदे तनौ वा खलखेटवर्गस्तदा कुलं मुञ्चति चञ्चलाक्षी ॥३॥ पापान्तराले यदि लग्न चन्द्रौ स्यातां शुभालोकन वर्जितौ तौ। अनङ्गलीला खल सङ्गमेन कुलद्वयं हन्ति तदा मृगाक्षी ॥४॥ जनुःकाले यस्या मदनभवने दानवगुरुः पतिं त्यक्त्वा नूनं कुपित हृदया भूमितनये। अवश्यं वैधव्यं सपदि कमलाक्षी रविसुते जरां पापैर्दृष्टे निजपति विरोधं व्रजति वा ॥५॥ व्यये ऽष्टमे भूमिसुतस्य राशावगौ सपापे [illegible] ... रमते ऽन्य लोकैः ॥६॥ तनौ चतुर्थे निधने भवतीह ... [illegible]

व्यये वा मदालये पापयुतः कुजश्चेत् । अनंग लीला प्रकरोति जारैः पतिं तिरस्कृत्य विलोल नेत्रा ॥ ८ ॥ परस्परांशोपगते भवेतां महीजशुक्रौ जनने ऽङ्गनायाः । स्वयं मृगाक्षी व्यभिसारिकेव प्रयाति कामाकुलितान्यगेहे ॥ ८ ॥ पापगृहे सप्तम लग्न गेहे भर्ता दिवं गच्छति सप्तमाब्दे । निशाकरे चाष्टम वैरिभावे तदाष्टमाऽब्दे निधनं प्रयाति ॥ ९ ॥ सप्तमेशो ऽष्टमे यस्याः सप्तमे निधनाधिपः । पापेक्षणयुतो बाला वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ १० ॥ सप्तमाष्टपती षष्ठे व्यये वा पापपीडितौ । तदा वैधव्यमाप्नोति नारी नैवात्र संशयः ॥ ११ ॥ मन्दारराशौ ससिते शशाङ्के खलेक्षिते लग्नगते मृगाक्षी । मात्रा सहैव व्यभिचारिणी स्यान्मन्दे खलांशे व्रणवृद्धयोनिः ॥ १२ ॥

टीका ॥ अब विभिन्न योगों को कहते हैं ॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में कर्कराशि का चन्द्रमा लग्न में स्थित हो अथवा जिसके सप्तम भाव में मंगल, बुध तथा गुरु – ये तीनों ग्रह बैठे हों, उस स्त्री के रूप को देख कर पुरुष अत्यधिक कामासक्त हो जाते हैं अर्थात् वह अपूर्व सुन्दरी पुरुषों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करती है ॥ १ ॥ यदि जन्मकुण्डली में मकर राशि में मंगल, मीन राशि में गुरु तथा चतुर्थ भाव में शनि और शुक्र की युति हो तो स्त्री के दोनों स्तन गजमुक्ता एवं मणिमालाओं से आच्छादित बने रहते हैं अर्थात् वह सुभगा एवं सौभाग्यवती होती है ॥ २ ॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली में चन्द्रमा से सप्तम भाव में मंगल, शनि, राहु तथा सूर्य – इनमें से कोई भी ग्रह बैठा हो अथवा लग्न, षष्ठ, सप्तम अथवा अष्टम भाव में इनमें से कोई ग्रह बैठा हो, वह अवश्य ही विधवा होती है ॥ ३ ॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्नेश अथवा सप्तमेश पापग्रहों के षड्वर्ग का होकर बैठा हो अथवा जन्म के समय सप्तम भाव तथा लग्न में पाप ग्रहों का षड्वर्ग हो तो ऐसी स्त्री अपने कुल का परित्याग कर, चंचल नेत्रों वाली वेश्या हो जाती है ॥ ४ ॥ जिस स्त्री की कुण्डली में जन्म लग्न एवं चन्द्रमा – ये

दोनों ही पापग्रहों के मध्य में हों और उन दोनों पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो, तो वह खल मनुष्यों की संगति में पड़कर, अत्यधिक काम-चंचला हो अपने पिता तथा श्वसुर-दोनों के कुलों को भ्रष्ट कर, पर-पुरुषगामिनी बन जाती है ॥५॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में लग्न से सप्तम भाव में शुक्र हो, वह अपने पति का परित्याग करने वाली तथा सदा क्रोध से युक्त रहती है। जिसके सप्तमभाव में मंगल हो, वह अवश्य ही विधवा होती है। जिसके सप्तम भाव में शनि हो, वह शीघ्र वृद्धा हो जाती है और जिसके सप्तम भाव पर पापग्रहों की दृष्टि हो, वह अपने पति से विरोध करने वाली होती है ॥६॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तम तथा द्वादश-दोनों भावों में मंगल की राशि हो अर्थात् सप्तम में वृश्चिक एवं द्वादश भाव में मेष राशि हो और उसमें पापग्रह सहित राहु बैठा हो, तो वह विधवा होती है। यदि सप्तमभाव में कर्क राशि हो और उसमें सूर्य-मंगल की युति हो तो स्त्री धनहीना तथा पर-पुरुषों से रमण करनेवाली होती है ॥७॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली के लग्न, चतुर्थ, अष्टम, द्वादश अथवा सप्तम भाव में किसी पाप ग्रह के साथ मंगल बैठा हो, वह अपने पति को तिरस्कृत कर, पर-पुरुषों के साथ रमण करने वाली होती है ॥८॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शुक्र के नवांश में मंगल तथा मंगल के नवांश में शुक्र बैठा हो, वह स्वयं ही काम-पीड़िता होकर, अभिसारिका की भाँति पर-पुरुष के घर में जाती है ॥९॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तम भाव तथा लग्न में पापग्रह हो, उसका पति विवाह के बाद सातवें वर्ष में मर जाता है। यदि चन्द्रमा भी षष्ठ अथवा अष्टम भाव में बैठा हो तो पति की मृत्यु विवाह के बाद आठवें वर्ष में हो जाती है ॥१०॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सातवें तथा आठवें भाव के स्वामी-दोनों ही पापग्रह से पीड़ित (दृष्ट) होकर छठे अथवा बारहवें भाव में बैठे हों, वह अवश्य ही विधवा हो जाती है ॥११॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि-मंगल की राशि लग्न में

हो और उसमें पापग्रह से दृष्ट चन्द्रमा शुक्र के साथ बैठा हो, वह अपनी माता सहित पर-पुरुष-गामिनी होती है। जिसके सप्तम भाव में पापग्रह का नवांश हो, उस स्त्री की योनि पर घाव का चिह्न होता है॥ १२॥

अथ अष्टमभावस्थ ग्रहाणां फलम्॥ यदाष्टमे देवगुरौ भृगौ वा विनष्टगर्भा मृतपुत्रिका च। कुजेऽष्टमे सा कुलटा मृगाक्षी चन्द्रेऽष्टमे स्वामिसुखेन हीना॥ १॥ मन्देऽष्टमे रोगरतस्य भार्या दिनाधिपे सा परितापतप्ता। अनङ्गरङ्गा परकान्तसङ्गा मृतावगौ सा कुलधर्मभङ्गा॥ २॥

टीका॥ यदि स्त्री की जन्म कुण्डली के अष्टमभाव में गुरु अथवा शुक्र बैठा हो तो वह विनष्टगर्भा होती है अर्थात् पाँचवें-सातवें महीने में उसे गर्भपात हो जाया करता है अथवा वह मृत-संतान को जन्म देती है। यदि अष्टम भाव में मंगल हो तो स्त्री कुलटा होती है। यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो पति-सुख से रहित होती है। यदि शनि अष्टम भाव में हो तो रोग-ग्रस्त पति की भार्या होती है। यदि सूर्य अष्टम भाव में हो तो परिताप से तप्त होती है और यदि राहु अष्टम भाव में हो तो कामाग्निपीड़ित, पर-पुरुषगामिनी एवं कुलधर्म से भ्रष्ट होती है॥ १-२॥

अथ पुत्रभाव विचार॥ पञ्चमे शुभसंदृष्टः पञ्चमाधिपतावपि। केन्द्रकोणे तदा नारी बहुपुत्रवती भवेत्॥ १॥ पञ्चपुत्रवती जीवे सबले ससिते विधौ। सुता सुखवती पापे नारी सन्तानवर्जिता॥ २॥

टीका॥ जिस स्त्री की जन्मकुण्डली के पंचम भाव पर शुभग्रह की दृष्टि हो तथा पंचमेश केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठा हो, वह अनेक पुत्रों वाली होती है। जिसके पंचमभाव में बृहस्पति बैठा हो, उसके पाँच पुत्र होते हैं। यदि पंचमभाव में बली चन्द्रमा शुक्र सहित बैठा हो, उसे पुत्रों

का सुख प्राप्त होता है और जिसके पंचम भाव में बलवान् पापग्रह बैठा हो, वह संतान हीना होती है॥१४॥

अथ विषाख्या योग विचार ॥ भद्रासार्पानिलवरुणभे भानुमन्दारवारे यस्या जन्म प्रभवति तदा सा विषाख्या कुमारी । पापे लग्ने शुभखगयुत: पापखेटावरिस्थौ स्यातां तस्या जनन समये सा कुमारी विषाख्या ॥१॥ आदित्यसूनोर्दिवसे द्वितीया भुजंगमे भौमदिने ऽम्बुजर्क्षे । चेत्सप्तमी वाथ रवौ विशाखा हरेस्थितो वापि च सा विषाख्या ॥२॥ धर्मगेहगते भौमे लग्नगे रविनन्दने । पञ्चमे दिवसाधीशे सा विषाख्या कुमारिका ॥३॥ विषाख्या शोक संतप्ता दुर्भगा मृतपुत्रिका । वस्त्राभरणहीना च पुराणैरुदिता भवेत् ॥४॥ सप्तमे सप्तमाधीश: शुभो वा लग्न चन्द्रयो: । विषयोगमलं हन्ति अहो हरिरिभं यथा ॥५॥ इत्थं विवाहकाले ऽपि ज्ञातव्यं लग्नचन्द्रयो: । तदाधीनं यत: स्त्रीणां शुभाशुभफलं भवेत् ॥६॥ वैधव्य योग युक्ताया: कन्याया: शान्तिपूर्वकम् । वेदोक्तविधिनोद्वाहं कारयेच्चिरजीविना ॥७॥

टीका॥ अब 'विषाख्या' योग के विषय में कहते हैं— भद्रा, आश्लेषा, कृत्तिका और शतभिषा – इनमें से कोई नक्षत्र तथा रवि, शनि अथवा मंगलवार हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाली कन्या 'विषाख्या' संज्ञक होती है। यदि लग्न में शुभग्रह के साथ पापग्रह हो तथा षष्ठभाव में भी पापग्रह बैठा हो तो इस योग में जन्मी स्त्री भी 'विषाख्या' कही जाती है। यदि शनिवार, द्वितीया तिथि और आश्लेषा नक्षत्र; अथवा मंगलवार, सप्तमी तिथि और शतभिषा नक्षत्र; अथवा रविवार, द्वादशी तिथि और विशाखा नक्षत्र – इन योगों में जिस कन्या का जन्म हुआ हो, वह भी 'विषाख्या' संज्ञक होती है। यदि जन्मकाल में नवमस्थान मंगल, लग्न में शनि तथा पंचम भाव में सूर्य स्थित हो तो ऐसे योग वाली कन्या भी 'विषाख्या' कही गई है॥ २-३॥

जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में विषाख्या योग हो, वह शोक-संतप्ता, दुर्भगा, मृत-पुत्रिका तथा वस्त्रा-भूषणों से रहिता होती है — ऐसा पुराणों में कहा गया है ॥४॥ जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सप्तमेश सप्तमभाव में ही बैठा हो, तो विषाख्या योग उसी प्रकार नष्ट हो जाता है, जिस प्रकार कि सिंह हाथियों को नष्ट कर देता है ॥५॥ इसी प्रकार विवाह काल में भी लग्न तथा चन्द्रमा का फल समझना चाहिए, क्योंकि स्त्रियों का शुभाशुभ विवाह के अधीन होता है ॥६॥ जिस कन्या की कुण्डली में विधवा योग हो, उसका वेदोक्त विधि से शान्ति-कर्म कराने के पश्चात् ही विवाह करना चाहिए ॥७॥

अथ निषेकाध्याय: ॥ कुजेन्दु हेतु प्रतिमासमार्तवं गते तु पीडर्क्षमनुष्णदीधितौ । अतोऽन्यथास्थे शुभपुंग्रहेक्षिते नरेण संयोगमुपैति कामिनी ॥ १॥ यथास्तराशिर्मिथुनं समेति तथैव वाच्यो मिथुनप्रयोग: । असद्ग्रहालोकितसंयुते ऽस्ते सरोष इष्टै: सविलासहास: ॥२॥ रवीन्दु शुक्रावनिजै: स्वभागगैर्गुरौ त्रिकोणोदयसंस्थितेऽपि वा । भवत्यपत्यं हि विबीजिनामिमे करा हिमांशोर्विदृशामिवाफला: ॥३॥ दिवाकरेन्द्वो: स्मरगौ कुजार्कजौ गदप्रदौ पुङ्गलयोषितोस्तदा । व्ययस्वगौ मृत्युकरौ युतौ तथा तदेकदृष्ट्या मरणाय कल्पितौ ॥४॥ दिवार्कशुक्रौ पितृमातृसञ्ज्ञितौ शनैश्चरेन्दू निशि तद्विपर्ययात् । पितृव्यमातृस्वसृसञ्ज्ञितौ च ताव थौजयुग्मर्क्षगतौ तयो: शुभौ ॥५॥ अभिलग्नबद्धिरुदयर्क्षमसद्भिर्मरणमेति शुभदृष्टिमयाते । उदयराशि सहिते च यमे स्त्री विगलितोडुपति भूसुतदृष्टे ॥६॥ पापद्वयमध्यसंस्थितौ लग्नेन्दू न च सौम्यवीक्षितौ । युगवत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विपद्यते ॥७॥ क्रूरे शशिनश्चतुर्थगे लग्नाद्वा निधनाश्रिते कुजे । बन्धवन्त्यगयो: कुजार्कयो: क्षीणेन्दौ निधनाय पूर्ववत् ॥८॥ उदयास्तगयो: कुजार्कयोर्निधनं शस्त्रकृतं वदेत्तथा । मासाधिपतौ निपीडिते तत्कालं स्रवणं समादिशेत् ॥९॥

शशाङ्कः लग्नोपगतैः शुभग्रहैस्त्रिकोण जाया ऽर्थ सुखास्पद स्थितैः। तृतीय लाभर्क्षगतैश्च पापकैः सुखी तु गर्भो रविणा निरीक्षितः ॥२०॥ ओजर्क्षे पुरुषांशकेषु बलिभि र्लग्नार्कगुर्विन्दुभिः। पुञ्जन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु तैर्योषितः। गुर्वर्कौ विषमे नरं शशिसितौ वक्रश्च युग्मे स्त्रियं। द्व्यङ्गस्था बुधवीक्षणाच्च यमलौ कुर्वन्ति पक्षे स्वके ॥२१॥ विहाय लग्नं विषमर्क्ष संस्थः सौरोऽपि पुञ्जन्म करो विलग्नात्। प्रोक्त ग्रहाणामवलोक्य वीर्यं वाच्यः प्रसूतौ पुरुषोऽङ्गना वा ॥२२॥

टीका॥ अब निषेक के विषय में कहते हैं — प्रत्येक मास मङ्गल तथा चन्द्रमा के कारण स्त्रियों को ऋतुधर्म होता है। यदि स्त्री की जन्मराशि से अनुपचय स्थान (तृतीय, षष्ठ, दशम, एकादश) में चन्द्रमा हो और उस पर मङ्गल की दृष्टि भी हो तो स्त्री को गर्भ-धारण करने योग्य ऋतु होता है। यदि इससे भिन्न अर्थात् पुरुष-राशि से अनुपचय स्थान में चन्द्रमा हो और वह पुरुष ग्रह (गुरु) से दृष्ट हो स्त्री-पुरुष का संयोग भर होता है अर्थात् गर्भ नहीं ठहरता ॥१॥ गर्भाधान लग्न अथवा प्रश्न लग्न से सप्तम राशि के समान राशि का प्रतीक जन्तु जिस प्रकार मैथुन करता हो, उसी प्रकार मैथुन करने से गर्भ-स्थिति संभव होती है। सप्तम भाव यदि पापग्रह से युक्त तथा दृष्ट भी हो तो कलह पूर्वक एवं शुभ ग्रह से युक्त तथा दृष्ट हो तो हास-विलास सहित मैथुन का प्रयोग करना चाहिए॥२॥ यदि सूर्य, चन्द्र, मङ्गल तथा शुक्र – ये अपने नवांश में हों अथवा गुरु त्रिकोण या लग्न में हो तो निश्चित रूप से गर्भ-स्थिति सम्भव होती है, परन्तु जिस प्रकार अन्धे आदमी के लिए चन्द्रमा की किरणें निष्फल रहती हैं, उसी प्रकार नपुंसक अर्थात् निर्वीर्य मनुष्यों के लिए ये सब योग भी निष्फल सिद्ध होते हैं अर्थात् उनके द्वारा गर्भ-स्थिति संभव नहीं होती॥३॥ यदि सूर्य से सप्तमभाव में शनि और मङ्गल हो तो पुरुषों

के लिए और चन्द्रमा से सप्तम स्थान में हों तो स्त्रियों के लिए रोगप्रद होते हैं। इसी प्रकार सूर्य से द्वादश अथवा द्वितीय भाव में शनि मङ्गल हों तो पुरुष के लिए मृत्युकारक होते हैं। यदि मंगल तथा शनि – इन दोनों में से किसी एक से युत तथा दूसरे से दृष्ट सूर्य हो तो पुरुष के लिए और इन्हीं दोनों (मङ्गल - शनि) में से किसी एक से युत तथा दूसरे से दृष्ट चन्द्रमा हो तो स्त्री के लिए मृत्यु कारक होते हैं ॥ ४॥ यदि दिन में गर्भाधान अथवा जन्म हो तो सूर्य पितृ संज्ञक एवं शुक्र मातृ संज्ञक होते हैं। यदि रात्रि में हो तो शनि पितृ संज्ञक एवं चन्द्रमा मातृ संज्ञक होते हैं ॥ इसके विपरीत पितृव्य तथा मातृष्वसृ संज्ञक भी होते हैं अर्थात् दिन में शनि पितृव्य (चाचा आदि) तथा चन्द्रमा मातृष्वसृ (मौसी आदि) संज्ञक तथा रात्रि में गर्भाधान होने से सूर्य पितृव्य एवं शुक्र मातृष्वसृ संज्ञक होते हैं। इनमें पितृ संज्ञक एवं पितृव्य संज्ञक यदि विषम राशि में हों तो पिता और पितृव्य (चाचा आदि) को शुभ होते हैं तथा मातृसंज्ञक एवं मातृष्वसृ संज्ञक ग्रह सम राशि में हों तो माता तथा मौसी आदि को शुभ फल देते हैं। इससे अन्यथा अशुभ फलकारक होते हैं ॥ ५॥ यदि पापग्रह लग्न में जाने को उद्यत हो अर्थात् अपने अन्तिम अंश में द्वादशभाव में मार्गी हो और वह शुभग्रह से अदृष्ट हो तो गर्भवती स्त्री की मृत्यु होती है। यदि गर्भाधान लग्न में शनि हो और वह क्षीणचन्द्र तथा मङ्गल – इन दोनों से दृष्ट हो तो भी स्त्री की मृत्यु होती है ॥ ६॥ यदि लग्न और चन्द्रमा दोनों एक साथ हों अर्थात् चन्द्रमा लग्न में बैठा हो अथवा अलग - अलग पापग्रहों के मध्य में हो तथा शुभग्रह से दृष्ट न हो तो गर्भ सहित गर्भवती - स्त्री की मृत्यु होती है, परन्तु यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो मृत्यु नहीं होती ॥ ७॥ यदि लग्न से अथवा चन्द्रमा से चतुर्थभाव में पापग्रह हो तथा मंगल अष्टमभाव में हो अथवा चतुर्थ भाव में मंगल एवं द्वादशभाव में सूर्य हो तथा चन्द्रमा क्षीण हो

तो गर्भवती स्त्री तथा गर्भ के मृत्युकारक होते हैं ॥ ८ ॥ यदि लग्न में मंगल तथा सप्तमभाव में सूर्य हो तो शस्त्र द्वारा (अथवा शल्यक्रिया द्वारा) गर्भिणी की मृत्यु कहनी चाहिए। गर्भ के जिस महीने में निपीडित (अर्थात् युद्ध में पराजित, केतु से अभिधूमित आदि) हो तो उसी महीने में गर्भपात होगा—यह कहना चाहिए ॥ ९ ॥ यदि चन्द्रमा अथवा लग्न के साथ शुभग्रह हो अथवा लग्न और चन्द्रमा से पंचम, नवम, सप्तम, द्वितीय, चतुर्थ एवं दशम—इन स्थानों में शुभ ग्रह हो तथा लग्न अथवा चन्द्रमा पर सूर्य की दृष्टि हो एवं तृतीय तथा एकादश स्थान में पापग्रह हो तो गर्भ सुखी (पुष्ट) होता है ॥ १० ॥ यदि लग्न, सूर्य, गुरु तथा चन्द्रमा—ये बलवान् होकर विषम राशि, विषम नवांश में हों तो पुरुष (बालक) का जन्म होगा और यदि ये चारों सम राशि, सम नवांश में हों तो स्त्री (कन्या) का जन्म होगा—यह कहना चाहिए। यदि गुरु तथा सूर्य—ये दोनों विषम राशि में हों तो बालक का एवं चन्द्रमा, शुक्र और मंगल—ये तीनों समराशि में हों तो बालिका का जन्म समझना चाहिए। यदि चन्द्रमा, शुक्र और मंगल द्विस्वभाव राशि में हों और उस पर बुध की दृष्टि हो तो अपने पक्ष में यमल (जुड़वां) बच्चों को जन्म देते हैं [यदि विषम द्विस्वभाव राशि हो तो दो पुत्रों का और सम द्विस्वभाव राशि हो तो दो पुत्रियों का जन्म होगा। यदि विषम और सम दोनों में हो तो एक लड़का और एक लड़की होगी। यहाँ यह स्मरण रखना चाहिए कि यमल-योग में जब बुध की दृष्टि होती है, तभी यमल का जन्म होता है, अन्यथा नहीं होता] ॥ ११ ॥ लग्न से लग्न को छोड़कर अन्य विषम स्थान में शनि भी पुरुष (लड़का) को जन्म देने वाला होता है। इसी भाँति पूर्वोक्त योगों में बलाबल का विचार कर, यदि पुरुषकारक ग्रह बली हो तो पुत्र का एवं स्त्रीकारक ग्रह बली हो तो कन्या का जन्म कहना चाहिए ॥ १२ ॥

अन्योऽन्यं यदि पश्यतः शशिरवी यद्यार्किसौम्यावपि । वक्रो वा समगं दिनेशमसमे चन्द्रोदयौ चेत्स्थितौ ॥ युग्मौ जर्क्षगतावपीन्दुशशिजौ भूम्यात्मजेनेक्षितौ । पुम्भागे सितलग्नशीतकिरणाः स्युः क्लीबयोगाश्च षट् ॥ १३ ॥ युग्मे चन्द्रसितौ तथौजभवने स्युर्द्वारजीवोदया । लग्नेन्दू नृनिरीक्षितौ च समगौ युग्मेषु वा प्राणिनः ॥ कुर्युस्ते मिथुनं ग्रहोदयगतान्द्व्यङ्गांशकान् पश्यति । स्वांशे ज्ञे त्रितयं ज्ञकांशकवशाद्युग्मं स्वमिश्रैः समम् ॥ १४ ॥ धनु-र्धरस्यान्त्यगते विलग्ने ग्रहैस्तदंशोपगतैर्बलिष्ठैः । ज्ञेनार्किणा वीर्ययुतेन दृष्टे सन्ति प्रभूता अपि कोशसंस्थाः ॥ १५ ॥ कललघनाङ्कुरास्थिचर्माङ्गजचेतनताः । सितकुजजीवसूर्यचन्द्रार्किबुधाः परतः ॥ उदयपचन्द्रसूर्यनाथाः क्रमशो गदिता । भवति शुभाशुभं च मासाधिपतेः सदृशम् ॥ १६ ॥ त्रिकोणगे ज्ञे बिबलैस्ततो परैर्मुखा-ङ्घ्रिहस्तं द्विगुणस्तदा भवेत् । अवाग्गवीन्दावशुभैर्भसन्धिगैः शुभेक्षितैश्चेत्कुरुते गिरं चिरात् ॥ १७ ॥ सौम्य-र्क्षांशे रविजरुधिरौ चेत्सदन्तोऽत्र जातः । कुब्जः स्वर्क्षे शशिनि तनुगे मन्दमाहेयदृष्टे ॥ पङ्गुर्मीने यमशशि कुजैर्वीक्षिते लग्नसंस्थे । सन्धौ पापे शशिनि च जडः स्यान्न चेत्सौम्यदृष्टिः ॥ १८ ॥ सौरशशाङ्कदिवाकर दृष्टे वामनको मकरान्त्यविलग्ने । धीनवमोदयगैश्च दृकाणैः पापयुतैरभुजाङ्घ्रिशिराः स्यात् ॥ १९ ॥ रवि शशियुते सिंहे लग्ने कुजार्किनिरीक्षिते, नयनरहितः सौम्यासौम्यैः सबुद्बुदलोचनः । व्ययगृहगतश्चन्द्रो वामं हिनस्त्यपरं रविर्न शुभगदिता योगा याप्या भवन्ति शुभेक्षिताः ॥ २० ॥ तत्कालमिन्दुसहितो द्विरसांशको यस्तत्तुल्यराशिसहिते पुरतः शशाङ्के । यावानुदेति दिनरात्रिसमानभागस्तावद्गते दिननिशोः प्रवदन्ति जन्म ॥ २१ ॥ उदयति मृदुभांशे सप्तमस्थे च मन्दे यदि भवति निषेकः सूतिरब्दत्रयेण । शशिनि तु विधिरेष द्वादशेऽब्दे प्रकुर्यान्निगदितमिह चिन्त्यं सूतिकालेऽपि युक्त्या ॥ २२ ॥

टीका ॥ (१) यदि समराशि में चन्द्रमा तथा विषम राशि में सूर्य हो एवं दोनों में परस्पर दृष्टि-सम्बन्ध भी हो, (२) यदि विषम राशि में शनि तथा सम राशि में बुध हो तथा दोनों में परस्पर

दृष्टि-सम्बन्ध भी हो, (३) यदि विषम राशि स्थित मंगल की सम राशि स्थित सूर्य पर दृष्टि हो, (४) यदि सम राशि में चन्द्रमा तथा विषम राशि मे लग्न हो और इन दोनों पर मंगल की दृष्टि हो, (५) यदि सम राशि में चन्द्रमा तथा विषम राशि में बुध हो और इन दोनों पर मंगल की दृष्टि हो अथवा (६) शुक्र, लग्न और चन्द्रमा — ये तीनों किसी राशि में विषम नवांश में हों तो ये ६ योग नपुंसक सन्तान को जन्म देने वाले होते हैं ॥ २३ ॥ यदि (१) चन्द्रमा और शुक्र दोनों सम राशि में हों तथा बुध, मंगल, गुरु और लग्न — ये विषम राशि में हों अथवा (२) लग्न और चन्द्रमा — दोनों सम राशि में हों तथा पुरुष-ग्रह से दृष्ट हों अथवा (३) बुध, मंगल, गुरु और लग्न — ये बलवान् होकर सम राशि में हों तो मिथुन-सन्तान अर्थात् एक साथ दो शिशुओं का जन्म होता है। यदि सभी ग्रह तथा लग्न द्विस्वभाव नवांश में हों एवं बुध अपने नवांश (मिथुन अथवा कन्या के अंश) में होकर ग्रहगत अथवा लग्नगत द्विस्वभाव नवांश को देखता हो तो इस प्रकार के योग में एक साथ तीन शिशुओं का जन्म होता है, उनमें बुध के नवांश सजातीय दो कहने चाहिए। यदि नवांश सजातीय हो तो तीनों संतानें एकजातीय (पुत्र अथवा पुत्रियाँ) होती हैं। तात्पर्य यह है कि यदि बुध मिथुन राशि के नवांश में हो और ग्रह लग्न सम (कन्या, मीन) नवांश में हो तो २ पुत्र और १ कन्या का जन्म होगा। यदि बुध कन्या के नवांश में हो और ग्रह लग्न विषम (मिथुन, धनु) में हो तो २ कन्या तथा १ पुत्र का जन्म होगा यदि बुध और ग्रह लग्न विषम नवांश में ही हों तो तीनों ही पुत्र होंगे और यदि सब सम नवांश में ही हों तो तीनों ही कन्या होंगी — ऐसा समझना चाहिए ॥ २४ ॥ यदि अन्तिम नवांश गत धनु लग्न हो तथा सब ग्रह धनुराशि के नवांश में हों एवं बलवान् बुध और शनि लग्न को देखते हों तो गर्भ में तीन से भी अधिक अनेक सन्तानें हैं — यह कहना चाहिए ॥ २५ ॥ गर्भ प्रथम मास में

कलल' (अर्थात् रज-वीर्य मिश्रण), दूसरे मास में 'घन' (पिण्ड), तीसरे मास में 'अंकुर' (अवयव), चौथे मास में 'अस्थि' (हड्डी), पाँचवें मास में 'चर्म' (चमड़ा), छठे मास में 'अंगज' (रोम), सातवें मास में 'चैतन्य' होता है। इन सातों मासों के अधिपति क्रमशः शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि तथा बुध होते हैं। इसके बाद अष्टम, नवम तथा दशम मास के अधिपति क्रमशः लग्नेश, चन्द्र और सूर्य होते हैं। मासाधिपति के शुभाशुभत्व के आधार पर ही गर्भ का शुभ अथवा अशुभ फल होता है अर्थात् जिस मास का स्वामी बलवान् हो, उस मास में गर्भवती को सुख मिलता है तथा जिसमास का स्वामी निर्बल हो, उस मास में दुःख होता है ॥१६॥ यदि बुध लग्न से त्रिकोण में हो तथा शेष ग्रह निर्बल हों तो जातक २ मुख, ४ पाँव तथा ४ हाथों वाला होता है। यदि चन्द्रमा वृष राशि में हो तथा पापग्रह पापग्रह राशि-सन्धि (राशि गण्डान्त) में हो तो जातक गूँगा होता है। यदि उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो अधिक दिनों में बोलता है ॥१७॥ यदि शनि मंगल बुध की राशि तथा बुध के ही नवांश में हो तो जातक के जन्म के समय मुँह में दाँत होते हैं। यदि कर्क राशि का चन्द्रमा लग्न में हो तथा शनि मंगल से दृष्ट हो तो जातक कुब्ज (कुबड़ा) होता है। यदि मीन लग्न हो और शनि, चन्द्र, मंगल तीनों से ही वह दृष्ट हो तो जातक पंगु (लँगड़ा) होता है। यदि पापग्रह तथा चन्द्रमा राशि-सन्धि में हो तो जातक जड़ (बहिरा) होता है। यदि शुभग्रह की दृष्टि न हो तभी इन योगों का प्रभाव होता है, यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो उक्त फल नहीं होते ॥१८॥ यदि मकर अन्तिम द्रेष्काण से लग्न में हो तथा शनि, चन्द्र, सूर्य से दृष्ट हो तो जातक वामन (बौना) होता है। यदि पञ्चम, नवम तथा लग्न — इन भावों के द्रेष्काण पापग्रह (मंगल) से युक्त हो तथा शनि, चन्द्र और सूर्य — इन से दृष्ट हो तो जातक क्रमशः भुजा-रहित (लूला), पाँव-रहित तथा मस्तक-रहित होता है।

यह फल तभी होता है, जब शुभ ग्रह की युति अथवा दृष्टि न हो ॥ १९॥ यदि लग्न में सिंह राशि हो और उसमें सूर्य तथा चन्द्रमा स्थित हों तथा उन पर मंगल और शनि की दृष्टि हो तो जातक अंधा होता है। यदि शुभ तथा पापग्रह दोनों से दृष्ट हो तो जातक की आँख में फुली होती है। यदि द्वादश भाव में चन्द्रमा हो तो जातक के वाम नेत्र का तथा सूर्य हो तो दक्षिण नेत्र का नाश होता है। इन योगों में यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो पूर्ण फल नहीं होता ॥२०॥ गर्भाधान काल में चन्द्रमा जितने संख्यक द्वादशांश में हो, उस राशि से उतने संख्यक राशि में, दसवें मास में जब चन्द्रमा जाता है, उस समय प्रसव होता है अथवा दिन बली अथवा रात्रि बली गर्भाधानकालिक लग्न के जितने अंश उदित हों, उतने ही दिन अथवा रात्रि व्यतीत होने पर जातक का जन्म होगा - यह कहना चाहिए ॥२१॥ यदि लग्न में शनि की राशि- मकर अथवा कुम्भ- के नवांश हो तथा शनि सप्तम भाव में हो तो ऐसे योग में यदि गर्भाधान हो तो तीन वर्ष में प्रसव होगा। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा में हो अर्थात् लग्न में कर्क का नवांश हो तथा चन्द्रमा सप्तम भाव में हो तो ऐसे योग में गर्भाधान होने पर बारह वर्ष में प्रसव होता है। इन फलों को युक्ति पूर्वक जन्मकाल में भी विचारना चाहिए ॥२२॥

अथ स्त्री शुभाशुभ लक्षणम् ॥ शुभ लक्षण संयुक्ता भवेदिह यदाङ्गना। तत्करग्रहणादेव वर्द्धते गृहिणां सुखम् ॥१॥ शुभाशुभं पुरा गीतं वेदव्यासेन धीमता। प्रकाश्यते तदेवात्र नारीणां मंगलक्षणम् ॥२॥

टीका ॥ अब स्त्री के शुभाशुभ लक्षणों का वर्णन करते हैं:- जो कन्या शुभलक्षणों से युक्त हो, उसका पाणिग्रहण करने से गृहस्थ पुरुषों के सुखों की वृद्धि सदैव होती रहती है ॥१॥ बुद्धिमान् वेद व्यासजी ने [illegible] ॥२॥

अथ पाद तल लक्षणम् ॥ युवति पादतलं किल कोमलं शममतीव जपाकुसुमप्रभम् । दिशति मांसलमुष्णमिलापतेरतिहिते बहु धर्मविवर्जितम् ॥ १ ॥ कमलकम्बुरथध्वजचक्रवत्पृथुलमीनविमानवितानवत् । भवति लक्ष्म पदे यदि योषितां क्षितिभृतां वनिता विभुताभृता ॥ २ ॥ टीका ॥ जिस स्त्री का पगतल कोमल: बराबर (गड्ढे से रहित), जवाकुसुम के समान लाल रंग का, उष्णता युक्त तथा कुछ मोटा हो, वह धर्म-रहिता एवं राजा की पत्नी होती है ॥ १ ॥ जिस स्त्री के पगतल में कमल, शंख, रथ, ध्वजा, चक्र, मछली, विमान तथा वितान (चँदोवा) के चिह्न हों तथा जिसके मध्यभाग में गड्ढा न हो, वह ऐश्वर्य सम्पन्न राजा की पत्नी होती है। जिस स्त्री का पाँव सूप जैसे आकार का, रंगहीन, विशेषकर शुष्क, कड़ा तथा रूखा हो, वह मंदभागिनी होती है ॥ २ ॥

अथ पादाङ्गुष्ठादि लक्षणम् ॥ यस्या समुन्नताङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुल सौख्यदः । शूर्पाकारो नखो यस्याः सा भवेद् दुःखभागिनी ॥ १ ॥ यस्या अन्योन्यमारूढा पादांगुल्यो भवन्ति चेत् । सा पतीन्बहुधा हत्वा वारवामा भवेदिह ॥ २ ॥ कनिष्ठा न स्पृशेद्भूमिं चलन्त्या योषितस्तदा । सा द्रुतं स्वपतिं हत्वा जारेण रमते पुनः ॥ ३ ॥ अनामिका च मध्या च यदि भूमिं न संस्पृशेत् । आद्या पतिद्वयं हन्ति चापरा तु पतित्रयम् ॥ ४ ॥ अनामिका च मध्या च यदि हीना प्रजायते । तदा सा पतिहीना स्यादित्याह भगवान्स्वयम् ॥ ५ ॥ यदि पादनखाः स्निग्धा वर्तुलाश्च समुन्नताः । ताम्रवर्णा मृगाक्षीणां महाभोगप्रदायकाः ॥ ६ ॥ यदि भवेदमलं किल कोमलं कमलपृष्ठवदेव मृगीदृशाम् । अरुणकुङ्कुमविद्रुमसन्निभं बहुगुणं पदपृष्ठमिति ध्रुवम् ॥ ७ ॥ अंघ्रिमध्ये दरिद्रा स्यान्नम्रत्वेन सदाकुला । शिरालेनाध्वगा नारी दासी लोमाधिकेन सा ॥ ८ ॥ संचलन्त्याः पदा धूलिधारा यदा राजमार्गेऽबलायां बलादुच्छलेत् । पांसुला सा कुलानां त्रयं सत्वरं नाशयित्वा खलैर्मोदते सर्वदा ॥ ९ ॥

टीका॥ जिस स्त्री के पाँव का अँगूठा उन्नत तथा गोल हो, वह अतुल सुख देने वाली होती है। जिसके नख सूप जैसे आकार के हों, वह स्त्री दुःख भोगती है॥ १॥ जिसके पाँव की दो अँगुलियों में एक अँगुली पर दूसरी चढ़ी हुई हो, वह स्त्री अनेक प्रकार से अपने पति को मार कर वारांगना (वेश्या अथवा बहु-पुरुष-गामिनी) हो जाती है॥२॥ जिस स्त्री के पाँव की कनिष्ठा अँगुली चलते समय पृथ्वी का स्पर्श न करे, वह अपने पति को मार कर (अर्थात् विधवा होकर अथवा उसे त्याग कर) पर-पुरुष के साथ रमण करती है॥ ३॥ जिस स्त्री की अनामिका और मध्यमा- ये दोनों अँगुलियाँ चलते समय भूमि का स्पर्श न करें तो वह पति को मारने वाली होती है। यदि अनामिका पृथ्वी का स्पर्श न करे तो दो पतियों को तथा मध्यमा भूमि-स्पर्श न करे तो तीन पतियों को मारती है। जिस स्त्री की अनामिका और मध्यमा - ये दोनों, पाँव की अँगुलियाँ, छोटी हों, वह स्त्री पति-हीना होती है - इस बात को भगवान् ने स्वयं अपने मुख से कहा है [ऐसी स्त्रियां व्यभि-चारिणी तो होती ही हैं]॥ ४-५॥ जिस स्त्री की पाँव की अँगुलियों के नख लाल, चिकने, गोल तथा उन्नत हों, वह अनेक प्रकार के सुखोपभोगों का उपभोग करती है॥ ६॥ जिस स्त्री का पादपृष्ठ कोमल, उज्ज्वल, मूंगे अथवा केशर जैसे रंग का, लाल अथवा कमल-पृष्ठ जैसा हो, वह अनेक सद्गुणों से युक्त होती है॥ ७॥ जिस स्त्री की अँगुलियों के मध्य में गहरापन हो, वह दरिद्रा होती है। यदि अँगुलियों का मध्यभाग अधिक नसों वाला हो, उसे बहुत मार्ग चलना पड़ता है और जिसके रोम अधिक हों, वह दासी होती है॥८॥ जिस स्त्री के चलते समय मार्ग में धूलि उड़ती हो, वह पर-पुरुष-गामिनी होकर अपने माता, पिता तथा पति - तीनों के कुलों को दूषित करने वाली एवं हर समय कामी तथा दुष्ट-पुरुषों के साथ विषयानन्द का भोग करने वाली होती है॥ ९॥

अथ गुल्फादि लक्षणम् ॥ निर्मांसेन सदा नारी दुर्भगा खलु जायते। गुल्फौ गूढौ शुभौ स्यातामशिरालौ च वर्तुलौ ॥ १॥ अगूढौ शिथिलौ यस्यास्तस्या दौर्भाग्यसूचकौ। गुल्फलक्षणमाख्यातं पार्ष्णिलक्षणमुच्यते ॥ २॥ समानपार्ष्णिः सुभगा पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा। कुलटा तुङ्गपार्ष्णिश्च दीर्घपार्ष्णिर्गदाकुला ॥ ३॥ जङ्घे रम्भोपमे यस्या रोमहीने च वर्तुले। मांसले च समे स्निग्धे राज्ञी सा भवति ध्रुवम् ॥ ४॥ एक रोमा प्रिया राज्ञो द्विरोमा सौख्यभागिनी। त्रिरोमा विधवा ज्ञेया रोमकूपेषु कामिनी ॥ ५॥ भवति जानुयुगं यदि मांसलं तदतिवृत्तमतीव शुभप्रदम्। भुवनभर्तृजतो विपरीतमादिभिरिदं विपरीतमुदीरितम् ॥ ६॥ समुन्नत नितम्बाढ्या यस्याः सिंहांगुला कटिः। सा राजपट्टमहिषी नाना लीभिः समावृता ॥ ७॥ निर्मांसा विनता दीर्घा चिपिटा शकटाकृतिः। लध्वी रोमाकुला नार्याः वैधव्यं दिशते कटिः ॥ ८॥ सीमन्तिनीनां यदि चारुविम्बो भवेन्नितम्बो बहुभोगदः स्यात्। समुन्नतो मांसल एव यासां पृथुः सदा कामसुखाय तासाम् ॥ ९॥

टीका॥ जिस स्त्री की गुल्फ (पिण्डली) निर्मांस अर्थात् पतली हो, वह दुर्भगा होती है। जिसकी पिण्डली नसों की अधिकता से रहित, गोल तथा मांसल हो, वह शुभ फल देने वाली होती है॥ १॥ जिस स्त्री के गुल्फ के मांस निकले हों और शिथिल हों, वे दुर्भाग्य सूचक होते हैं। यह गुल्फ के लक्षण कहे गए। अब एड़ी (पार्ष्णि) के लक्षण कहते हैं॥२॥ जिस स्त्री की एड़ी समान हो, वह सुभगा होती है। मोटी एड़ी वाली दुर्भगा, ऊँची एड़ी वाली पर-पुरुष-गामिनी तथा लम्बी एड़ी वाली स्त्री रोगिणी होती है॥ ३॥ जिस स्त्री की जाँघें केले के खम्भ के समान चिकनी, रोम-रहित, गोल, समान तथा मांसल हों, वह राजरानी होती है॥ ४॥ जिस स्त्री की रोमराजि में सर्वत्र एक-एक रोम हों, वह रानी, दो-दो रोम हों तो सुख भोगने वाली और एक रोम कूप में तीन-तीन रोम हों तो विधवा

होती है ॥ ५॥ जिस स्त्री की दोनों जाँघें मोटी और अत्यन्त गोल हों, वह राजरानी होती है। इसके विपरीत होने से विपरीत-फल होता है ॥ ६॥ जिस स्त्री के नितम्ब ऊँचे हों व कमर चौबीस अंगुल की हो, वह अनेक सखियों के साथ रहने वाली राजरानी होती है। जिसकी कमर मांसहीन, आगे अथवा पीछे की ओर झुकी हुई, लम्बी, चिपटी, गाड़ी के आकार की लम्बी तथा रोम संयुक्त हो, वह स्त्री विधवा होती है ॥ ७-८॥ जिस स्त्री के नितम्ब बिम्ब जैसे हों, वह अनेक भोगों को भोगने वाली होती है। जिसके नितम्ब उन्नत, मांसल तथा पुष्ट हों, वह सदैव काम-सुखों का उपभोग करती है ॥ ९॥

अथ योनि लक्षणम् ॥ यदा गजस्कन्ध समानरूपो भगोऽथवा कच्छपपृष्ठवेषः। इलापते कामविनोद दायी कामोन्नतः सोऽपि सुताजनेता ॥ १॥ अश्वत्थदलरूपो वा भगो गूढमणिः शुभः। चुल्हिकोदर रूपा यः कुरङ्गखुर सन्निभः ॥ २॥ रोमाकुलो दुष्ट योनिर्विकृतास्योऽमहाधनः। कामिनां न विनोदार्ही भगो भवति सर्वथा ॥ ३॥ कामिन्या कन्चुकावर्तो भगो दौर्भाग्य वर्द्धकः। स गर्भधारणेऽशक्तो वक्राकारोऽपि तादृशः ॥ ४॥ वेतस वंशदलप्रतिभासः खर्पररूपवदेव भगो वा। लम्बगलो विकटो गजलोमा नैव शुभश्चिपिटोपि निरुक्तः ॥ ५॥ मृदुतरं मृदुरोम कुलाकुलं यदि तदा जघनं भगभाजनम्। उत समुन्नतमायतनं तदा पतिकलाकलितं गदितं बुधैः ॥ ६॥ तदेव दक्षिणावर्तं मांसलं शुभ सूचकम्। वामावर्तं च नारीणां खण्डितं खण्डिताश्रयम् ॥ ७॥ निर्मांसं कुटिलाकारं रुक्षं वैधव्य सूचकम्। अति स्थूलं महादीर्घं सद्यो दौर्भाग्यकारकम् ॥ ८॥

टीका ॥ अब योनि के लक्षण कहते हैं — जिस स्त्री की योनि (भग) हाथी के कंधे के समान अथवा कछुए की पीठ के आकार वाली हो, वह कामक्रीड़ा में कुशल राजरानी होती है। यदि भग वाम भाग में उन्नत हो तो ऐसी स्त्री कन्या-सन्तान को जन्म देनेवाली

होती है॥ १॥ जिस स्त्री की योनि पीपल के पत्ते जैसे आकार की, गुप्त मणितुल्य, चूल्हे के आकार की, अथवा हरिण के खुर के आकार की हो, उसे शुभ समझना चाहिए। जिस स्त्री की योनि रोमाच्छादित रहने के कारण दिखाई न देती हो, वह धनहीना होती है तथा कामीजनों के विनोद के योग्य नहीं होती, जिस स्त्री की भग दोनों ओर से उन्नत (उठी हुई) परन्तु मध्य में नीची हो, वह दुर्भाग्य वर्द्धक तथा गर्भ-धारण करने में अशक्त होती है। वक्राकार भग का भी यही फल है। यदि भग बेंत अथवा बाँस के दल के आकार की, खप्पर के आकार की, लम्बे गले वाली, विकट, हाथी के समान लोमयुक्त अथवा चिपटी हो तो वह शुभ नहीं होती॥ २-५॥ जिस स्त्री की भग अथवा कमर के पीछे का भाग अत्यन्त कोमल, रोमयुक्त, सम्यक् प्रकार से उन्नत (ऊँचा) अथवा लम्बा हो, उसे पति द्वारा सम्मान पूर्वक सेवनीय कहा गया है अर्थात् शुभ होता है। यदि वही भाग दक्षिणावर्त तथा मांसल हो तो शुभ सूचक होता है। यदि वह वामावर्त एवं खंडित हो तो जारिणीपन का आश्रय होता है। यदि वह मांस-रहित, टेढ़े आकार का अथवा रूखा हो तो वैधव्य का सूचक होता है। यदि भग स्थूल अथवा लम्बी हो तो वह दुर्भाग्य कारक होती है॥ ६-८॥

अथ वस्ति, नाभि, उदर लक्षणम्॥ मृदुला विपुला वस्तिः शोभना च समुन्नता। अशुभा रेखयाक्रान्ता शिराला लोम सङ्कुला॥ १॥ गम्भीरा दक्षिणावर्ता नाभिर्भोग विवर्द्धिनी। व्यक्त ग्रंथिः समुत्ताना वामावर्ता न शोभना॥ २॥ पृथूदरी यदा नारी सूते पुत्रान् बहूनपि। भेकोदरी नरेन्द्राणां बलिनं चायतोदरी॥ ३॥ उन्नतेनोदरेणैव बन्ध्या नारी प्रजायते। जठरेण कठोरेण सा भवेद्भिक्षुकांगना॥ ४॥ कोमलैर्मांस संयुक्तैः समानैः पार्श्वकैः शुभम्॥ ५॥ विविरेणं मृदुत्वचा सपुत्रो जठरेणाति कृशेन कामिनी सा। बहुधातुलभोग लालिता सानुदिनं मोदक सत्कलाशिनी स्यात्॥ ६॥ घटा-

-कारं यस्या भवति च मृदंगेन सदृशं । यवाकारं दैवादुदरमहिपुत्रैर्विरहितम् ॥ अभद्रं नो भद्रं तदपि यदि कूष्माण्डसदृशं । निरुक्तं तत्वज्ञैः कठिनमुरुशालेन च समम् ॥ ७॥ कृशातरा त्रिवली सरसावली ललितनर्मविनोदविवर्धिनी । भवति सा कपिला कुटिला कुला शुभकरी विरला महदाकृतिः ॥ ८॥

टीका ॥ जिस स्त्री की बस्ति नरम, बड़ी तथा ऊँची हो, वह शुभ होती है। जो बस्ति अनेक रेखाओं, नसों तथा रोमों से युक्त हो, वह अशुभ होती है ॥ १॥ जिस स्त्री की नाभि गहरी तथा दक्षिणावर्त हो, वह भोगों की वृद्धि करने वाली होती है। जिसके मध्य की घुंडी (गुंथि) दिखाई देती हो, जो ऊँची तथा वामावर्त हो, वह अशुभ फल देती है ॥ २॥ जिस स्त्री का उदर पुष्ट हो, वह अनेक पुत्रों को जन्म देती है। जिसका पेट मेढ़क जैसे आकार का हो, वह राजा तथा बलवान् पुत्रों को उत्पन्न करती है। उन्नत पेट वाली स्त्री बाँझ (वन्ध्या) होती है। जिस स्त्री का उदर कठोर हो, वह अधम मनुष्यों में उत्तम अर्थात् महा अधम पुरुष की पत्नी होती है और स्वयं भी दासी होती है। जिसकी कोख नरम, मांसल तथा समान हो, वह शुभ गुणवती होती है। जिस स्त्री का उदर नसों से रहित, कोमल चर्मवाला तथा पतला हो, वह अनेक प्रकार के भोगों से सम्पन्न, प्रतिदिन अनेक प्रकार के मिष्ठान्नों का भोजन करने वाली तथा अनेक शुभ फलों को प्राप्त करने वाली होती है। जिस स्त्री का उदर घड़े जैसा, मृदंग जैसा अथवा यव के आकार का हो, वह पुत्र-रहिता एवं अमंगलरूपा होती है। जिसका उदर कूष्माण्ड (काशीफल) जैसा हो, वह मंगलरूपा होती है। जिस स्त्री के उरु शाल कठोर हों, वह भी शुभ फल प्राप्त करती है ॥ ३-७॥ जिस स्त्री के उदर में अत्यन्त पतली तथा सीधी त्रिवली हो, वह मनोहर हास्य-क्रीड़ा में वृद्धि करने वाली होती है। यदि त्रिवली भूरे रंग की तथा कुछ टेढ़ी हो तो स्त्री व्याकुल रहती है। यदि त्रिवली छिछली तथा बड़ी हो तो शुभ फलदायक होती है ॥ ८॥

भृ० सं० ३७४

अथ वक्ष एवं स्तन लक्षणम् ॥ लोमहीनं हृदयं यदा भवेन्निम्नता विरहितं समायतम्। भोगमेत्य सकलं वरांगना सा पुनः प्रिय वियोगमालभेत ॥१॥ उद्भिन्नरोमहृदया स्वपतिं निहन्ति विस्तार- सूप हृदया व्यभिचारिणी स्यात्। अष्टादशाङ्गुलमितं हृदयं सुखाय चेद्रोमशं च विषमं न सुखाय किञ्चित ॥२॥ उन्नतं पीवरं शस्तं हृदया वारयोषिताम्। अपीवरमिदं नीचं दुर्भाग्यस्य च सूचकम् ॥३॥ भवत एव समौ सुदृढाविमौ यदि घनौ सुदृशस्तु पयोधरौ। निजपतेरनिशं परिवर्तुलौ कुसुमवाणविनोद विवर्धकौ ॥४॥ सुमुखो विरलौ सूक्ष्मौ स्थूलाग्रावहिताविमौ। पयोधरौ तदा नार्याः प्रथवे दक्षिणोन्नतौ ॥५॥ पुत्रदोऽप्य -प कन्यादो यदा वामान्नतो भवेत्। सान्तरालौ च विस्तारौ पीवरास्यौ न शोभनौ ॥६॥ मूले स्थूले कृशाग्रे तीक्ष्णे च पयोधरौ। सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यन्तदुःखदौ ॥७॥

टीका॥ अब वक्ष एवं स्तनों के लक्षण कहते हैं— जिस स्त्री का वक्ष (हृदयस्थल) रोमराशि-रहित, गढ्ढे से रहित, समान तथा लम्बा हो, वह सब भोगों को भोगने के अनन्तर पति-वियोग प्राप्त करती है अर्थात् विधवा हो जाती है। रोमयुक्त हृदय वाली स्त्री अपने पति को मारने वाली, विस्तृत हृदय वाली पर-पुरुष-गामिनी तथा अठारह अंगुल प्रमाण हृदय वाली सुखदायक होती है। अधिक रोम वाली व विषम आकार वाली स्त्री सब समय दुःख देती है। उन्नत तथा पुष्ट हृदय वाली स्त्री को हर समय दुःख प्राप्त होता रहता है। पतला तथा निम्न हृदय स्त्री के दुर्भाग्य का सूचक होता है॥ १-३॥ जिस स्त्री के स्तन सम, सुदृढ़ तथा परस्पर मिले हुए गोल हों, वह अपने पति की कामक्रीड़ा के समय आनन्द-वृद्धि करती है। मध्य में अन्तराल सहित सूक्ष्म तथा मोटे अग्रभाग वाले स्तन स्त्री का अहित करने वाले होते हैं। दक्षिणोन्नत स्तन पुत्र-सन्तति को तथा वामोन्नत स्तन कन्या-सन्तति को जन्म देते हैं। यदि दोनों स्तनों के बीच खाली जगह हो अर्थात् दोनों स्तन दूर-दूर हों अथवा

भा० टी०

अत्यन्त पुष्ट हों अथवा उनका अग्रभाग मोटा हो तो वे शुभ नहीं होते। जड़ में स्थूल तथा ऊपर क्रमशः कृश एवं अग्रभाग में तीक्ष्ण स्तन पूर्वावस्था में सुखदायक तथा वृद्धावस्था में दुःखदायक होते हैं॥ ४-७॥

अथ स्कन्ध, बाहु, करतलादि लक्षणम्॥ पुत्रिणी विनत स्कन्धा ह्रस्व स्कन्धा सुखप्रदा, पुष्टस्कन्धा तु कामान्धा रतिभोग सुखावहा॥ १॥ मदान्धा कुटिलस्कन्धा स्थूलस्कन्धा च तादृशी। यदि लोमाकुलस्कन्धा वैधव्यं द्रुतमावहेत्॥२॥ त्रस्तांसा संहतांसा च धान्या भवति कामिनी। तुंगांसा विधवा ज्ञेया निर्मांसा सा तथैव च॥ ३॥ अंगुष्ठांगुलिकं युग्मं यत्पद्मकलिका समम्। बहुभोगाय नारीणां निर्मितं विधिना परा॥ ४॥ करतलं भुजयोर्यदि कोमलं विमलपद्मनिभं च समुन्नतम्। निजपतेः कुसुमायुधवर्धकं निगदितं मुनिना विधिनोदितम्॥ ५॥ स्वच्छरेखाकुलं भद्रं न भद्रं हीनरेखया। अभद्रं रेखया हीनं वैधव्यं चातिरेखया॥ ६॥ शिरालं कुरुते निःस्वं नारीकरतलं यदि। समुन्नतं च विशिरं कर-पृष्ठं सुशोभनम्॥ ७॥

टीका॥ अब स्कन्ध, बाहु तथा करतल आदि के लक्षण कहते हैं— जिस स्त्री के कंधे झुके हुए हों वह पुत्र-सन्तान वाली, छोटे कंधे हों तो सुख भोगने वाली, पुष्ट कन्धे हों तो हरसम-य कामान्ध एवं रति-भोग रूप सुख को देने वाली, टेढ़े अथवा स्थूल हों तो मदान्ध एवं अधिक रोमों वाले हों तो शीघ्र विधवा होने वाली होती है॥ १-२॥ जिस स्त्री के बाहुमूल फैले हुए हों अथवा दृढ़ हों, वह धन्य होती है। जिसके बाहुमूल ऊँचे अथवा मांस-रहित हों, वह विधवा होती है॥ ३॥ जिस स्त्री के हाथ के अँगूठे के समीप वाली दोनों अंगुलियाँ - तर्जनी तथा मध्यमा — कमलकली जैसी हों वह अनेक भोगों का उपभोग एवं [illegible] करने वाली होती है॥ ४॥ जिस

स्त्री की हथेली निर्मल, कमल जैसी व उन्नत हो, वह पति का कामोद्दीपन करने वाली होती है। जिस स्त्री की हथेली स्वच्छ रेखाओं से युक्त हो वह कल्याण कारिणी होती है। जिसकी हथेली में तीन रेखायें हों, वह अमंगल करने वाली होती है। जिसकी हथेली में रेखायें हों ही नहीं, वह अमंगलकारिणी होती है और जिसकी हथेली में बहुत रेखायें हों, वह विधवा होती है॥ ५-६॥ जिस स्त्री का करपृष्ठ (हाथ का पिछला भाग) अधिक नसों से युक्त हो, वह दरिद्रा होती है। जिसका करपृष्ठ उन्नत तथा कम नसों वाला हो, उसे अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। जिसका करपृष्ठ रोमों से युक्त, गहरा तथा मांस-रहित हो, वह अपने पति के प्राणों को नष्ट करती है अर्थात् विधवा होती है॥ ७॥

अथ प्रथम रजोदर्शन फलम्॥ आद्यं रजः शुभं माघमार्गराधेष फाल्गुने। ज्येष्ठ श्रावणयोः शुक्ले सद्वारे सत्तनौ दिवा॥ १॥ श्रुतित्रय मृदुक्षिप्र ध्रुव स्वातौ सिताम्बरे। मघपंच मूलादितिभे पितृमिश्रे परेष्वसत्॥ २॥

टीका॥ अब स्त्री को पहली बार होने वाले रजोदर्शन का फल कहते हैं— यदि माघ, मार्गशीर्ष, वैशाख, आश्विन, फाल्गुन, ज्येष्ठ तथा श्रावण—इन महीनों में तथा शुक्लपक्ष में, शुभग्रह के दिन में अर्थात् शुभवार में, शुभ लग्न में, दिन के समय; श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा; मृदु, क्षिप्र तथा ध्रुव संज्ञक एवं स्वाति नक्षत्र में तथा उजले वस्त्र में स्त्री को पहली बार रजोदर्शन (मासिकधर्म का स्राव) हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। इनके अतिरिक्त मूल, पुनर्वसु, मघा तथा मिश्र संज्ञक नक्षत्रों में प्रथम मासिकधर्म हो तो उसे मध्यम समझना चाहिए। शेष मास तथा वार आदि में पहली बार किसी स्त्री का ऋतुमती होना अशुभ माना गया है॥ १-२॥

अथ गर्भाधान विचारः॥ गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षे च मूलान्तकं दास्रं

पौष्णमघो परागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् । पित्रोः श्राद्धदिनं दिवाच परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे मन्युत्पातहतानि मृत्यु भवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥१॥ भद्रा षष्ठी पर्व रिक्ताश्च सन्ध्या भौमार्कार्कीनाद्य रात्रीश्चतस्रः । गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्क मैत्र ब्राह्मी स्वाती विष्णुवस्वम्बुपे सत् ॥२॥

टीका ॥ अब गर्भाधान सम्बन्धी विचार कहते हैं — तीनों प्रकार के गण्डान्त, सप्तम तारा, जन्म तारा; मूल, भरणी और रेवती — ये नक्षत्र, ग्रहण का दिन, पात योग, वैधृति योग, माता अथवा पिता के श्राद्ध का दिन, दिन के समय, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, उत्पात, हस्त नक्षत्र, जिस समय जन्म राशि से अष्टम राशि की लग्न हो तथा पाप-ग्रह की राशि — इन सब में स्वपत्नी के साथ समागम नहीं करना चाहिए ॥१॥ भद्रा, षष्ठी, पर्व-दिन, रिक्ता तिथि, सन्ध्या-समय; मंगल, रवि तथा शनिवार, स्त्री के रजोदर्शन से बाद की चार रात्रियाँ — इन सब को छोड़ कर, तीनों उत्तरा, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा — इन नक्षत्रों में गर्भाधान करना शुभ होता है ॥२॥

टिप्पणी - इस ग्रंथ के पञ्चम खण्ड में भी 'स्त्री-जातक' का वर्णन है। अतः उसे भी देख लें।

॥ इति श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रे षष्ठ खण्ड समाप्तम् ॥

अथ श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम् सप्तम खण्डः

अथ अरिष्ट विचार :॥ रिष्टाध्यायाधीनमायुर्नराणां यस्मात्तस्माद्रिष्टमात्रं प्रवच्मि। यस्याभावे साधितायुः प्रमाणे प्रामाण्यं स्यात्सम्भवे सर्वथैव ॥१॥ टीका ॥ आयु का विचार करते समय अरिष्ट योगों को देखना आवश्यक होता है। अरिष्ट-योगों का विचार किये बिना आयु का प्रमाण बताना व्यर्थ होता है, अतः सर्वप्रथम अरिष्ट योगों का उल्लेख किया जा रहा है, क्योंकि जातक के जन्मकाल में यदि अरिष्ट योग न हो, तभी गणितागत आयु का ठीक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है॥१॥

तत्रादौ जातका मरणे॥ मीमालये ऽर्करशनीन्दु दृष्टे गृहे ऽष्टमे चित्रशिखण्डि सूनुः। अदृष्टमूर्तिर्भृगुणात्र योगे प्राणैर्वियोगं लभते मनुष्यः॥२॥ षष्ठाष्टमे वापि चतुष्टये वा विलोमगामी कुजमन्दिरस्थः। बलान्वितेनावनिजेन दृष्टो वर्षैस्त्रिभी रिष्टकरः शनिः स्यात्॥३॥ चन्द्रार्कयुग्जन्मनि भानुसूनुः करोति नूनं निधनं नवाब्दैः। मासेन मन्दावनिसूनुसूर्याश्चिद्वारिगेहाश्रितता समेताः॥४॥ एकोऽपि पापोऽष्टमगोऽरिगेहे पापेक्षितोऽब्देन शिशुं निहन्यात्। सुधारसो यद्यपि येन पीतः किमत्र चित्रं न हि येन पीतः॥५॥ सूर्येन्दुगेहे दनुजेन्द्रमन्त्री व्ययाष्टमारिस्थित सौम्य खेटैः। सर्वैः प्रदृष्टः खलु षड्भिरब्दैर्जातस्य जन्तोर्वितनोति रिष्टम्॥६॥ सोमस्य सूनुर्यदि कर्कटस्थः षष्ठेऽष्टमे वा भवने विलग्नात्। चन्द्रेण दृष्टोऽब्द चतुष्टयेन


इतिश्री भृगुसंहितामहाशास्त्रम
षष्ठ खण्डः समाप्तः


ॐ
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम
सप्तम खण्डः भाषा टीका सहितम्
अरिष्ट एवं आयुर्निर्णयाध्यायः

जातस्य जन्तोः प्रकरोति रिष्टम् ॥७॥ केतूदयो भे प्रभवेच्च यस्मिंस्तस्मिंन्प्रसूतिर्यदि यस्य जन्तोः। स्यात्तस्य मास द्वितयेन नाशो विनिश्चयेनेति वदन्ति पूर्वे ॥८॥ मेषूरणेऽर्को धरणीसुतस्य गेहेऽथवार्कात्मजधामसंस्थः। पापैरनेकैश्च निरीक्ष्यमाणः प्राणैर्वियोगं स तु याति तूर्णम् ॥९॥ लग्ने भवन्ति द्रेष्काणः शृङ्खलापाशपक्षिणाम्। सपापा मरणं कुर्युः सप्तवर्षैर्नसंशयः ॥१०॥ राहुर्भवेज्जन्मनि केन्द्रवर्ती क्रूरग्रहैश्चापि निरीक्षितश्चेत्। करोति वर्षैर्दशभिर्विनाशं वदन्ति वा षोडशभिश्च केचित् ॥११॥ षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्राः पापारिस्थकोणे यदि जन्म लग्नात्। क्रूरेक्षितास्ते निधनं विदध्युर्वर्षाष्टकेनैव खलप्रदृष्टाः ॥१२॥

टीका॥ यदि मेष अथवा वृश्चिक राशिगत गुरु लग्न से अष्टमभाव में हो और उस पर सूर्य, चन्द्रमा, मंगल और शनि की दृष्टि हो तथा शुक्र की दृष्टि न हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है ॥२॥ यदि जन्मकाल में वक्री शनि मेष अथवा वृश्चिक राशिगत होकर लग्न से षष्ठ अथवा अष्टम अथवा लग्न, चतुर्थ, सप्तम या दशम भाव में हो और उस पर बली मंगल की दृष्टि हो तो वह तीन वर्ष में अरिष्ट कारक सिद्ध होता है ॥३॥ यदि जन्म काल में सूर्य, चन्द्रमा और शनि - ये तीनों एकसाथ बैठे, आठवें भाव में हों तो ९ वर्ष में; तथा शनि, मंगल और सूर्य - ये तीनों यदि बैठे, आठवें भाव में हों तो १ मास में अरिष्ट कारक सिद्ध होते हैं ॥४॥ यदि जन्म-काल में एक भी पाप ग्रह बैठे, आठवें भाव में हो और उस पर किसी पापग्रह की दृष्टि भी हो तो वह एक ही वर्ष में अरिष्टकारक सिद्ध होता है, इस योग में यदि जातक अमृत-पान करले तो भी अरिष्ट होता ही है, फिर जो अमृत-पान नहीं करता, उसके विषय में तो कहा ही क्या जाय ? ॥५॥ यदि कर्क अथवा सिंह राशिगत शुक्र बैठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तथा उस पर सभी शुभग्रहों की दृष्टि भी हो तो वह ६ वर्ष में अरिष्ट कारक सिद्ध होता है ॥६॥ यदि कर्कराशिस्थ बुध बैठे अथवा आठवें भाव में हो और [illegible] भी हो तो

वह ४ वर्ष में जातक को अरिष्टकारक होता है ॥७॥ जिस नक्षत्र में धूमकेतु उदित हुआ हो, उस नक्षत्र में चन्द्रमा के रहने के समय जिस जातक का जन्म हुआ हो उसकी मृत्यु २ मास में हो जाती है- यह पूर्वाचार्यों का कथन है ॥८॥ यदि मंगल अथवा शनि की राशि (मेष-वृश्चिक, मकर-कुम्भ) में स्थित सूर्य दशमभाव में हो और उस पर अनेक पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है ॥९॥ यदि जन्मलग्न में शृङ्खला, पाश अथवा पक्षी द्रेष्काण हो तथा वह पापग्रह से युक्त भी हो तो जातक को सातवें वर्ष में अरिष्ट होता है ॥१०॥ यदि जन्मकाल में केन्द्रवर्ती राहु पर पापग्रहों की दृष्टि हो तो वह १० अथवा १६ वें वर्ष में अरिष्टकारक होता है ॥११॥ यदि सभी शुभ ग्रह छठे, आठवें भाव में हों तथा पापग्रह पाँचवें, नवें भाव में हों और उन पर पापग्रह की दृष्टि भी हो तो आठवें वर्ष में अरिष्ट होता है ॥१२॥

सूतिकाले भवेच्चन्द्रः षष्ठे वाऽष्टम संस्थितः। बालस्य कुरुते सद्यं मृत्युं पापविलोकितः ॥१३॥ शुभाशुभालोकनतुल्यतायां वर्षैश्चतुर्भिर्निधनं तदानीम्। न्यूनाधिकत्वे सुधिया विधेय स्त्रैराशिकेनैव विनिश्चयोऽयम् ॥१४॥ धनांतगैर्वाऽरिमृतस्थितैर्वा धर्माष्टमस्थैर्व्ययशत्रुगैर्वा। क्रूरग्रहै या जननं प्रपन्नः षष्ठेऽष्टमे मासि मृतिं प्रयाति ॥१५॥ षष्ठाष्टमस्थाः शुभखेचरेन्द्रा विलोमगैः पापखगैः प्रदृष्टाः। शुभैरदृष्टा यदि ते भवन्ति मासेन नूनं निधनं तदानीम् ॥१६॥ विलग्न जन्माधिपती भवेताम् स्तंगतावष्टरिपुव्ययस्थौ। जातस्य जन्तोर्मरणप्रदौ तौ वदन्ति राशिप्रमितैर्हि वर्षैः ॥१७॥ होराधिपः पापखगैः प्रदृष्टः चतुर्थमासे मृतिकृन्मृतिस्थः। जन्मेश्वरस्तन्निधनं दिनेशः शुक्रेक्षितोऽब्दैर्भवन प्रमाणैः ॥१८॥ होराधिपः पापयुतः स्मरस्थः करोति नाशं खलु जीवितस्य मासेन जन्माधिपतिस्तु तद्वत्पापान्वितो रन्ध्रगृहाश्रितश्चा। १९॥ युक्तो भवेदार दिवाकराभ्यां निशाकरश्चान्यखगैर्न दृष्टः। स्वसूनुगेहोपगतो वि-

-नाशं करोति वर्षे नवमेऽर्भकस्य ॥२०॥ लग्नास्तरंध्रान्त्यगते शशांके पापान्विते सौम्यखगैरदृष्टे। केन्द्रेषु सौम्यग्रह वर्जितेषु कीनाशदेशं हि शिशुः प्रयाति ॥२१॥ रन्ध्रालये वाथ चतुष्टयेषु खलग्रहाणां मिलनं यदि स्यात्। कलानिधौ क्षीणकलाकलापे लग्नस्थिते नश्यति च प्रसूतः ॥२२॥ लग्नेकुलीरेऽथवाऽलि संज्ञे खल ग्रहाः पूर्वदले यदि स्युः। सौम्याः परार्धे खलु वज्रमुष्टियोगोऽयमुक्तः प्रकरोति रिष्टम् ॥२३॥ व्ययारिरन्ध्रे-षु शुभाभिधानस्त्रिकोणकेन्द्रेषु भवन्ति पापाः। सरोजबन्धोरुदये प्रसूतिर्यस्यान्यलोकं त्वरया स याति॥ २४॥ सौरस्यालयसंस्थो देवगुरुर्निधन भावगो लग्नात्। पापग्रहदृष्टतनुर्निधनायैकादशोऽह्नि तुल्यः स्यात् ॥२५॥

टीका॥ यदि जन्म लग्न से छठे अथवा आठवें भाव में स्थित चन्द्रमा पापग्रहों से दृष्ट हो तो जातक की मृत्यु शीघ्र होती है॥ १३॥ उक्त अरिष्ट योगों में यदि अरिष्ट कारक ग्रह पर शुभ तथा अशुभ - दोनों प्रकार के ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक की मृत्यु ४ वर्ष में होती है। इस प्रकार शुभाशुभ ग्रह की दृष्टिवश अरिष्ट-काल का ज्ञान त्रैराशिक से प्राप्त करना चाहिए॥ १४॥ लग्न से द्वादश - द्वितीय में, अथवा षष्ठ- अष्टम में, अथवा नवम - अष्टममें, अथवा षष्ठ - द्वादश मे - इन दो-दो भावों में पापग्रह हों तो जातक की मृत्यु छठे अथवा आठवें महीने में होजाती है॥ १५॥ यदि जन्म लग्न से छठे, आठवें भाव में शुभग्रह हों और उनपर वक्री पापग्रह की दृष्टि हो तथा शुभग्रह की दृष्टि न हो तो एक मास में जातक की मृत्यु हो जाती है॥ १६॥ यदि जन्म लग्नेश तथा जन्म राशीश अस्त होकर छठे, आठवें भाव में हों तो राशि संख्या तुल्य वर्ष में वह अरिष्ट कारक होता है॥ १७॥ यदि जन्म लग्नेश अष्टम भाव में पापग्रह से दृष्ट हो तो चौथे महीने में अरिष्ट होता है। यदि सूर्य लग्नेश होकर अष्टम भाव में बैठा हो तथा शुक्र से दृष्ट हो तो राशि-संख्या-तुल्य वर्ष में जातक को अरिष्ट होता है॥ १८॥ यदि जन्म लग्नेश पापग्रह से युक्त होकर सप्तम भाव में बैठा हो अथवा जन्म राशीश पापग्रह से युक्त होकर अष्टमभाव में बैठा हो

तो एक मास के भीतर ही अरिष्ट होता है ।। १९ ।। यदि सूर्य-मंगल से युक्त चन्द्रमा मिथुन अथवा कन्या राशि में बैठा हो और उस पर किसी ग्रह की दृष्टि भी न हो तो जातक को नवें वर्ष में अरिष्ट होता है ।। २० ।। यदि पापग्रहों से युक्त चन्द्रमा लग्न, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादशभाव में हो और उस पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो तथा केन्द्र में भी कोई शुभग्रह न हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है ।। २१ ।। यदि लग्न से आठवें, चौथे, सातवें अथवा दसवें भावों में पापग्रह हो तथा क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है ।। २२ ।। यदि लग्न में कर्क अथवा वृश्चिक राशि हो और लग्न से द्वै राशियों तक पापग्रह हों एवं सातवें तथा बारहवें भाव में शुभग्रह हों तो यह 'वज्रमुष्टि' योग कहलाता है। यह योग जन्म काल में हो तो जातक के लिए अरिष्ट कारक होता है ।। २३ ।। यदि बारहवें, छठे तथा आठवें भाव में शुभ ग्रह तथा लग्न, पाँचवें, नवें, चौथे, सातवें तथा दसवें भाव में पापग्रह हों तथा सूर्योदय के समय जन्म हुआ हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है ।। २४ ।। यदि मकर अथवा कुम्भ राशिगत गुरु लग्न से अष्टमभाव में पापग्रह द्वारा दृष्ट हो तो जातक की मृत्यु ग्यारहवें दिन ही हो जाती है ।। २५ ।।

रन्ध्राम्बुजायाभवनेषु खेटा विधौ च पापाद्वयमध्यपाते । यस्य प्रसूतिः स तु याति कामं यमस्य धामं प्रव्रजन्ति पूर्वे ।। २६ ।। सन्ध्याद्वये भांत्यगताश्च पापाश्चन्द्रस्य होरा यदि जन्मकाले। चतुर्षु केन्द्रेषु शशाङ्कपापाः स याति बालः किल कालगेहम् ।। २७ ।। स्मराष्टमस्था यदि पापखेटाः पापोऽन्ता साधुखगैर्न दृष्टाः । करोति रिष्टं त्वरयार्भकस्य साकं जनन्याभिमतं बहूनाम् ।। २८ ।। निजो परागे त्वशुभान्वितेन्दुर्लग्नस्थितो भूमिसुतोऽष्टमस्थः । तदा जनन्या सह बालकस्य मृत्युस्तथाऽर्के सति शस्त्रघातः ।। २९ ।। भूमीसुते वार्कसुते विलग्ने भानौ स्मरस्थानगतेऽन्यथा वा । युक्ते तयोरन्यतमेन चन्द्रेऽचिरेण मृत्युः परिवेदितव्यः ।। ३० ।। पापैर्विलग्नाष्टमधामसंस्थैः क्षीणे विधौ द्वादशभावयाते । केन्द्रेषु सौम्यान

भवन्ति नूनं शिशोस्तदानीं निधनं प्रकल्प्यम् ॥ ३१॥ त्रिकोण केन्द्रेषु भवन्ति पापाः शुभग्रहालोकन वर्जिताश्चेत्।
लग्नोपयाते सति भास्करे वा निशाकरे रिष्ट समुद्भवः स्यात् ॥ ३२॥ भानु भानुतनयो मानसः स्युश्चेत्प्रसूति
समये खलयुक्ताः। यद्यपीन्द्र गुरुणा परिदृष्टा रिष्टदास्तनुभृतां नवमेऽब्दे ॥ ३३॥ कामिनी भवनगस्तु हिमांशु-
शुर्लग्नगो मूर्तिपतिः शनिदृष्टः। रिष्टदो नवसमाभिरीडितो जातकस्य मुनिभिः पुरातनैः ॥ ३४॥ दृष्टेऽरिष्टे
नात्र दृष्टेऽस्य काले प्रालेयांशौ स्वालये वा विलग्नम्। वीर्योपेते सङ्गते शक्तियुक्तौः पापैर्दृष्टे मृत्युकाला-
ब्दमध्ये ॥ ३५॥ लग्नत्रिकोणांन्तिम सप्तरन्ध्रे चन्द्रे सपापेऽपचयं प्रयाते। शुभैर्नयुक्ते यदि न प्रदृष्टे रिष्टं
भवेदत्र किमत्र चित्रम् ॥३६॥ सूर्यज्ञजीवाः शनिभौमयुक्ताः सूर्यारमन्दाश्च यदीन्दुयुक्ताः। प्रसूतिकाले मि-
लिता यदिस्युर्नाशः शिशोरब्दक पञ्चकेन ॥ ३७॥ विलग्ननाथो भवनप्रमाणैर्वर्षैर्विनाशं कुरुते रिपुस्थः। मासैः
र्द्रेकाणाधिपतिर्लवेशो दिनैर्मुनीन्द्रा प्रवदन्ति सर्वे ॥ ३८॥ लग्ने शनिः क्रूरनिरीक्षितश्चेच्छिशोर्विनाशं खलु षोड
शाहात्। करोति मासेन च पापयुक्तः पापैर्वियुक्तः खलु वत्सरेण ॥ ३९॥ रवीन्दुयुक्पापनिरीक्षितो ज्ञश्चैकाद-
शाब्दैः कुरुते विनाशम्। लग्नेऽर्कमन्दावनिजः कृशेन्दु स्मरे षडब्दैरथ सप्तभिर्वा ॥ ४०॥

टीका ॥ यदि जन्म समय में चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच में हो तथा अन्य सभी
ग्रह अष्टम, चतुर्थ एवं सप्तम भाव में हों तो शीघ्र अरिष्ट होता है ॥ २६॥ यदि जातक का जन्म प्रातः
कालीन संध्या अथवा सायंकालीन संध्या में हुआ हो, पाप ग्रह राशि के अन्त में होकर चारों केन्द्रों में
हों तथा चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो और उसीकी होरा भी हो तो जातक की मृत्यु शीघ्र होती है ॥ २७॥
यदि जन्म लग्न से सप्तम एवं अष्टम भाव में पापग्रह हों और उनपर पापग्रहों की दृष्टि भी हो और वे
शुभग्रहों की दृष्टि से रहित हों तो जातक के साथ उसकी माता की भी मृत्यु हो जाती है ॥ २८॥ यदि पाप
ग्रह के साथ राहु ग्रस्त चन्द्रमा लग्न में हो तथा अष्टम भाव में मंगल हो तो जातक की मृत्यु शस्त्र द्वारा

होती है ॥ २९॥ यदि लग्न में मंगल अथवा शनि हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो अथवा चन्द्रमा मंगल अथवा शनि से युक्त हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है ॥ ३०॥ यदि लग्न से अष्टम भाव में दो से अधिक पाप ग्रह हों तथा द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो एवं केन्द्र में कोई शुभ ग्रह भी न हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३१॥ यदि केन्द्र और त्रिकोण में सभी पापग्रह हों और उन पर किसी शुभग्रह की दृष्टि भी न हो तथा लग्न में सूर्य अथवा चन्द्रमा हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३२॥ यदि सूर्य, शनि तथा शुक्र – ये तीनों पापग्रहों से युक्त हों, तो यदि उन पर गुरु की दृष्टि हो तो भी जातक की नवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है ॥ ३३॥ यदि सप्तम भाव में चन्द्रमा तथा लग्न में अष्टमेश हो और उस पर शनि की दृष्टि भी हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३४॥ जिन योगों में अरिष्ट बताया गया है, परन्तु उनके साथ समय का उल्लेख नहीं किया गया है, उन योगों में एक वर्ष के भीतर ही, जब कि चन्द्रमा बलवान् होकर षष्ठ राशि में अथवा जन्मराशि में पहुँचता है तथा किसी बलवान् पापग्रह की उस पर दृष्टि पड़ती है, उसी समय में जातक की मृत्यु होती है ॥ ३५॥ यदि पापग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न, पंचम, नवम, द्वादश, सप्तम अथवा अष्टम भाव में हो और उसका किसी शुभ ग्रह से दृष्टि अथवा युति का सम्बन्ध भी न हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३६॥ यदि जन्मसमय में सूर्य, बुध, गुरु और चन्द्रमा की युति हो, अथवा सूर्य, मंगल, शुक्र और चन्द्रमा की युति हो, अथवा सूर्य, मंगल, शनि और चन्द्रमा की युति हो तो जातक की पाँचवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है ॥ ३७॥ यदि लग्नेश षष्ठ भाव में हो तो राशि संख्या तुल्य वर्ष में जातक की मृत्यु होती है; यदि लग्न का द्रेष्काणपति षष्ठभाव में हो तो राशि संख्या तुल्य मास में जातक की मृत्यु होती है और यदि लग्न नवमांशपति षष्ठभाव में हो तो राशि संख्या तुल्य दिनों में जातक की मृत्यु हो जाती है ॥ ३८॥ यदि लग्न में शनि हो और उस पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो सोलह दिन में, यदि वह पापग्रहों से युक्त हो तो एक मास

और यदि पापग्रहों से युक्त न हो तो एक वर्ष में जातक को अरिष्ट होता है ॥ ३९॥ यदि सूर्य, चन्द्रमा और बुध की जन्मकुण्डली के किसी एक भाव में युति हो और उनपर किसी पापग्रह की दृष्टि हो तो ११ वें वर्ष में जातक को अरिष्ट होता है। यदि लग्न में सूर्य, शनि तथा मंगल हों एवं सप्तम भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तो छठे अथवा आठवें वर्ष में अरिष्ट होता है ॥ ४०॥

कृशः शशाङ्कः स्मरगो विलग्ने मन्दारशुक्रा गुरुदृष्टिहीनाः। विनाशनं तेऽब्दकसप्तके न कुर्वन्ति जातस्य विनिश्चयेन ॥ ४१॥ चन्द्रः सचान्द्रिर्यदि केन्द्रसंस्थः सूर्यांशुलुप्तः कुजमन्ददृष्टः। वर्षद्वयेन प्रकरोति रिष्टं स्पष्टं वशिष्ठादय एवमूचुः ॥ ४२॥ निशापतिर्लग्नपतेः सकाशाच्चेदष्टमस्थः कृशतां प्रयातः। क्रूरैश्च दृष्टश्च शुभैर्नदृष्टो वर्षद्वयान्ते स करोति रिष्टम् ॥ ४३॥ लग्नाधिपः पापखगो नवांशे चतुस्थ च द्वादशगः शशाङ्कात्। पापेक्षितो मारयति प्रसूतो शिशुं नवाब्दैः खलु कीर्तयन्ति ॥ ४४॥ लग्नेश्वरः सूर्यमयूखलुप्तोऽष्टमे खचरेण प्रविलोक्यमानः। रिष्टङ्करा राशिसमानवर्षैः प्राहैरुदाहारि नरस्य जन्म ॥ ४५॥ अदृश्यभागे यदि पापखेटा दृश्ये विभागे शुभदा भवंति। स्वर्भानुनामा तनुभावगामी जीवेत्प्रसूतोऽब्दकसप्तकं हि ॥ ४६॥ सिंहीसुतः सप्तमभावसंस्थः शनैश्चरादित्यनिरीक्षितश्चेत्। नालोकितः सौम्यखगैस्तु जीवेद्वर्षाणि हि द्वादश यः प्रसूतः ॥ ४७॥ सिंहालिकुम्भस्थित सैंहिकेयो विलोकितः क्रूरखगैर्यदि स्यात्। वर्षाणि सप्तैव तदीयमायुः प्रकीर्तितं जातकशास्त्रविद्भिः ॥ ४८॥ केन्द्रक्षयः स्यात्प्रथमं ततश्चेन्निर्घातवाताशनयो भवन्ति। यो रौद्रसार्पाख्यमुहूर्तजन्मा प्राप्नोति कामं यममन्दिरं सः ॥ ४९॥ चन्द्रं क्रूरयुतं क्षीणं पश्येद्राहुर्यदा तदा। दिवैः स्वल्पतरैर्बालः कालस्यालयमाव्रजेत् ॥ ५०॥ मातङ्गैर्नवभिश्च रामनयनैर्नेत्राग्निभिः सायकैरेकेनां बुधिभिस्त्रिलोचनमितैर्धृत्या च विंशोन्मितैः। भूनेत्रैर्दशभिर्लवैर्यदि भवेन्मेषादिसंस्थो विधुर्वर्षैर्भागसमैः करोति निधनं कालोऽयमत्रोदितः ॥ ५१॥

टीका।। यदि सप्तम भाव में क्षीण-चन्द्रमा तथा लग्न में शनि, रवि और शुक्र हों तथा उन पर गुरु की दृष्टि न हो तो जातक के लिए सातवें वर्ष में अरिष्ट कारक होते हैं।। ४१।। यदि चन्द्र-मा और बुध सूर्य के साथ अस्त होकर केन्द्र में बैठे हों और उनपर मङ्गल तथा शनि की दृष्टि भी हो तो जातक की मृत्यु दो वर्ष में हो जाती है- यह वशिष्ठ आदि मुनियों का कथन है।। ४२।। यदि क्षीणचन्द्र-मा लग्नेश से अष्टम स्थान में हो और उस पर शुभग्रहों की दृष्टि भी न हो तो जातक की दो वर्ष में मृत्यु हो जाती है।। ४३।। यदि पापग्रह लग्नेश होकर कर्कराशि के नवमांश में चन्द्रमा से द्वादश भाव में हो तो जात-क को ९ वर्ष में अरिष्ट होता है।। ४४।। यदि जन्म लग्नेश सूर्य के साथ अस्त हो और उस पर अष्टमेश की दृष्टि भी हो तो जिस राशि में सूर्य हो, उस राशि के संख्या-तुल्य वर्ष में जातक को अरिष्ट होता है।। ४५।। यदि जन्म के समय सभी पापग्रह अदृश्य चक्रार्द्ध (लग्न से सप्तम भाव तक) में हों तथा शुभ ग्रह दृश्य चक्रार्द्ध (सप्तम भाव से लग्न तक) में हों और लग्न में राहु स्थित हो तो जातक ७ वर्ष तक जीवित रहता है।। ४६।। यदि राहु जन्म लग्न से सप्तम भाव में हो और उस पर शनि तथा सूर्य की दृष्टि हो, किसी शुभग्रह की दृष्टि न हो तो जातक बारह वर्ष तक ही जीवित रह पाता है।। ४७।। यदि राहु सिंह अथवा वृश्चिक अथवा कुम्भराशि में स्थित हो और उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो जातक की आयु केवल ७ वर्ष की होती है।। ४८।। यदि जातक के जन्म समय धूमकेतु का उदय हो, तत्पश्चात् निर्घात, झंझावात अथवा वज्रपात आदि उपद्रव हुए हों तथा जन्म रौद्र अथवा सार्प मुहूर्त में हुआ हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है।। ४९।। यदि पापग्रह से युक्त क्षीण-चन्द्रमा पर राहु की दृष्टि हो तो जातक की मृत्यु थोड़े ही दिनों में हो जाती है।।५०।। यदि चन्द्रमा मेष के ८ अंश, वृष के ९ अंश, मिथुन के २३ अंश, कर्क के २२ अंश, सिंह के ५ अंश, कन्या का १ अंश, तुला के ४ अंश, वृश्चिक के २३ अंश,

धनु के १८ अंश, मकर के २० अंश, कुम्भ के २१ अंश तथा मीन के १० अंश पर हो तो उक्त अरिष्ट योगों की स्थिति में कथित अंश-संख्या-तुल्य वर्ष में जातक की मृत्यु होती है ॥ ५१॥

अथ चन्द्रकृत अरिष्ट भङ्ग योगाः॥ होरागमज्ञैर्बहुविस्तरेण रिष्टाख्ययोगा यदपि प्रदिष्टाः। तेरिष्टभङ्गे सति नो समर्थाः स रिष्टभङ्गोऽप्यभिधीयतेऽतः ॥१॥ पूर्णः कैरविणीपतिर्दिविचरैः सर्वैः प्रदृष्टस्तदा। रिष्टं यत् हन्त्यथवा सुहृल्लवगतः सद्वीक्षितोऽतिप्रभः॥ क्षीणोवापि निजोच्चगः शुभखगैः शुक्रेण दृष्टस्तदा। रिष्टं समुपागतं स तु हरेत्सिंहो यथा सिंधुरम् ॥२॥ रिष्टं निहन्युः शुभदा शशाङ्कात्पापैर्विनास्ताष्टमशत्रुसंस्थाः। शुभान्वितः साधुदृकाणवर्ती पीयूषमूर्तिः शमयत्यरिष्टम् ॥३॥ शुभग्रहा द्वादशभावसंस्थाः पूर्णः शशी रिष्टहर प्रदिष्टः। लग्नेशदृष्टः शुभराशियातो नान्येक्षितो रक्षति रिष्टयोगात् ॥४॥ वलक्षपक्ष यदि जन्मरात्रौ कृष्णे दिवाष्टारिगतोऽपि चन्द्रः। क्रमेण दृष्टः शुभ पापखेटैः पितेव बालं परिपालयेत्सः॥ ५॥ स्थितः शशी क्रूरखगस्य राशौ राशीश्वरेणापि विलोकितश्च। तद्वर्गगोवा यदि तेन युक्तः कुर्यादलं मङ्गलमेव नान्यत् ॥६॥ जन्माधिपालो बलवान्किल स्यात्सौम्यैः सुहृद्भिश्च निरीक्ष्यमाणः। यद्वा तनुस्थः सकलैः प्रदृष्टो रिष्टं हि चन्द्रेण कृतं निहन्ति ॥ ७॥ स्वोच्चे स्वभे वा यदि वात्मवर्गे स्थितो हितानां च स्तं प्रदृष्टः। शुभैर्न पापा-रियुतेक्षितश्च रिष्टं हरेत्पूर्ण कलः कलावान् ॥ ८॥ वाचामधीशो दशमे शशाङ्काद्व्यये त्रशुक्रौ च खलः किलाये। विलग्नपात्यम्बुदृशान्त्यलाभे शुभेक्षितेन्दुश्च हरेत्स रिष्टम्॥ ९॥ प्रसूति काले यदि जन्मपालः किलेक्षितो निर्मलखेचरैश्च। बलाधिशाली प्रलयं करोति रिष्टस्य शीतांशु समुद्भवस्य॥ १०॥ भवेन्निशा जन्मनि पद्मिनीशः परोच्चगामी निजवेश्मगो वा। तदंशगो वापि शुभेक्षितश्च पूर्णः शशाङ्को निधनं निहन्ति ॥११॥ झस्रेऽग्निभे वा गुरुभे शशाङ्कः वर्गोत्तमे पूर्ण कला कलापे। त्रिपुष्करं शीतकरे हि रिष्टं प्रकृष्टमप्यासु लयं प्रयाति॥ १२॥ पादे द्वितीये यदि वा तृतीये तिष्यस्य ताराधिपतिर्यदि स्यात्। वा रोहिणीनां चरणे

द्वितीये सौम्येक्षितो रक्षति मृत्युदोषात् ॥१३॥ कुलीर मेषगश्चन्द्रः केन्द्रस्थः शुभवीक्षितः । ग्रस्तोऽपि रिष्टभङ्गाय भवेदत्र न संशयः ॥१४॥ केन्द्रेषु चेदम्बरमार्गगानां द्वयं द्वयं सौम्यखगो विलग्ने। क्षीणोऽपि चन्द्रः स्मर भावसंस्थः सम्प्राप्तारिष्टं शमयेदवश्यम् ॥१५॥

टीका॥ होराशास्त्र में जो अनेक प्रकार के अरिष्ट योग कहे गए हैं, वे सब अरिष्ट-भङ्ग-योग होने पर अप्रभावी हो जाते हैं। ऐसे अरिष्ट-भङ्ग-कारक योगों का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है ॥१॥ यदि चन्द्रमा पूर्ण रश्मि हो तथा सब ग्रहों से दृष्ट भी हो, अथवा वह अपने मित्र-ग्रह के नवांश में हो और शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो सब प्रकार के अरिष्ट योगों को नष्ट कर देता है। यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च (वृष) राशि में हो तथा शुभग्रहों से अथवा केवल शुक्र से ही दृष्ट हो तो वह सब अरिष्टों का उसी प्रकार नाश करदेता है, जिस प्रकार कि सिंह हाथियों के झुण्ड को नष्ट करदेता है॥२॥ यदि चन्द्रमा शुभ द्रेष्काण में शुभग्रह से युक्त हो तथा चन्द्रमा से छठे, सातवें तथा आठवें भाव में केवल शुभ ग्रह हों, कोई पाप ग्रह न हो तो सब अरिष्ट दूर हो जाते हैं ॥३॥ यदि द्वादशभाव में सब शुभ ग्रह हों, तथा पूर्ण चन्द्रमा शुभ ग्रह की राशि में लग्नेश से दृष्ट हो तथा किसी अन्य ग्रह से दृष्ट न हो तो अरिष्ट योगों का नाश हो जाता है ॥४॥ यदि शुक्लपक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्णपक्ष में दिन का जन्म हो तथा चन्द्रमा छठे, आठवें भाव में स्थित रहते हुए भी क्रमशः शुभग्रह तथा पापग्रह से दृष्ट हो तो वह पिता के समान बालक की रक्षा करता है तथा अरिष्ट नहीं होता ॥५॥ यदि चन्द्रमा पाप ग्रह की राशि में हो, परन्तु उस राशीश्वर से दृष्ट हो अथवा उसके षडवर्ग में हो अथवा उससे युक्त हो तो वह मंगलकारी होता है तथा अरिष्ट दूर करता है ॥६॥ यदि जन्मलग्नेश बलवान् शुभग्रह एवं मित्रग्रहों से दृष्ट हो अथवा लग्न में स्थित होकर सब शुभग्रहों से दृष्ट हो तो चन्द्रकृत अरिष्ट नष्ट हो जाता है ॥७॥ यदि पूर्णचन्द्रमा

अपनी उच्च राशि, स्व राशि (कर्क) अथवा नवमांशादि अपने वर्ग में शुभग्रह अथवा मित्र-वर्ग में होकर शुभग्रह से दृष्ट हो तथा पापग्रह से दृष्ट न हो तो सब अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥ ८ ॥ यदि चन्द्रमा से दशम भाव में गुरु, बारहवें भाव में बुध और ग्यारहवें भाव में पापग्रह हो अथवा लग्नेश से तीसरे, चौथे, दूसरे, बारहवें एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा शुभग्रह से दृष्ट हो तो सब अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥ ९ ॥ यदि जन्म लग्नेश बलवान् हो और उस पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो चन्द्रकृत सभी अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥ १० ॥ यदि रात्रि में जन्म हुआ हो तथा सूर्य अपने परमोच्च में हो अथवा अपनी राशि या नवमांश में हो अथवा चन्द्रमा ही अपनी उच्च राशि में हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो सभी अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥ ११ ॥ यदि पूर्ण चन्द्रमा अश्विनी, कृत्तिका अथवा पुष्य नक्षत्र के वर्गोत्तम नवमांश में स्थित हो तो 'त्रिपुष्कर' (अनिष्ट तिथि, वार एवं नक्षत्रोत्पन्न) अरिष्ट शीघ्र नष्ट हो जाता है ॥ १२ ॥ यदि चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र के द्वितीय या तृतीय चरण में अथवा रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में सब शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो वह सब अरिष्टों से रक्षा करता है ॥ १३ ॥ यदि चन्द्रमा कर्क अथवा मेष राशि में होकर केन्द्र में हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो वह राहु से ग्रस्त होने पर भी अरिष्टों का नाश करता है ॥ १४ ॥ यदि लग्न में शुभग्रह तथा केन्द्र-स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो क्षीण-चन्द्रमा सप्तम भाव में होने पर भी अरिष्ट-नाशक होता है ॥ इति चन्द्रकृत अरिष्ट भङ्ग फलम् ॥

अथ सकलारिष्ट भङ्ग योगाः ॥ मरीचिमालामलकान्तिमाली प्रसूतिकाले प्रबलो यदि स्यात्। बृहस्पतिर्मूर्तिगतो निहन्ति रिष्टानि नूनं मुनयो वदन्ति ॥ १ ॥ पापैरवीर्यैश्च शुभैः सवीर्यैः शुभस्य राशौ तनुभावयाते। निरीक्षिते व्योमचरैः शुभाख्यैः संक्षीयते रिष्टमुपागतं वै ॥ २ ॥ सौम्यवर्गाश्रिताः पापाः सौम्यवर्गाश्रितैः शुभैः। दृष्ट्वा अपि प्रकृष्टं ते रिष्टं नाशयितुं क्षमाः ॥ ३ ॥ मूर्तेस्तु राहुस्त्रिषडाय

-वर्ती रिष्टं हरत्येव शुभैः प्रदृष्टः। शीर्षोदयस्थैर्विकृतिं न यातैरशेषखेटैः किल रिष्टभङ्गः ॥४॥ प्रसूतिकाले विजयाधिशाली शुभो हरेद्दृष्टमपापदृष्टः। कश्चिद् ग्रहश्चेत्परिवेषगामी क्रूरैः प्रदृष्टः किल रिष्टभङ्गः ॥५॥ रजोविहीनं गगनं च खस्था: (स्वस्था) भवेयुर्जलदाः सुनीलाः। मन्दानिलाश्चेद्विमला मुहूर्ताः प्रसूतिकाले किल रिष्टभङ्गः ॥६॥ कुम्भयोनिमुनीनां चेदुदगमे जननं भवेत्। विलीयते तदा रिष्टं नूनं लाक्षेव वह्निना ॥७॥ वृषाजककर्क्यविलग्नसंस्थो राहुर्भवेरिष्टविनाशकर्ता। शुभाश्च योगा बहवो यदि स्युस्तथापि रिष्टं विलयं प्रयाति ॥८॥ नक्रत्रये लाभरिपुत्रिसंस्थः केतुस्तु हेतुर्निधनोपशान्त्यै। परस्परं भार्गव जीव सौम्यास्त्रिकोणगास्तेऽपि हरन्त्यरिष्टम् ॥९॥ सन्ध्या भवा वैधृतिपातभद्रा गण्डान्तयुक्ता अपि जन्मकाले। भवन्ति रिष्टस्य विनाशनार्थं निरन्तरा दृश्यदलेऽपि सर्वे ॥१०॥

टीका॥ यदि जन्म के समय दैदीप्यमान रश्मि युक्त गुरु लग्न में हो तो सब अरिष्टों का नाश हो जाता है - यह मुनियों का कथन है ॥१॥ यदि लग्न में शुभग्रह की राशि हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तथा सभी शुभग्रह बलवान् हों तो समस्त अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं ॥२॥ यदि पापग्रह शुभग्रह के षड्वर्ग में हों तथा शुभग्रहों से दृष्ट भी हों तो प्रबल अरिष्ट भी नष्ट हो जाता है ॥३॥ यदि लग्न से तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें भाव में राहु शुभग्रह से दृष्ट हो अथवा सभी ग्रह शीर्षोदय राशि में हों तो भी अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥४॥ यदि जन्म समय में शुभग्रह विजयी हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो, पापग्रह की दृष्टि न हो अथवा कोई ग्रह परिवेष (मण्डल) से युक्त होकर पापग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥५॥ यदि जन्म के समय आकाश निर्मल हो, ग्रह तथा नक्षत्र दैदीप्यमान रश्मियों से युक्त हों, नीलवर्ण के मेघ आकाश में छाये हों तथा मन्द-मन्द वायु बह रही हो तो अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥६॥ यदि अगस्त्य तारा के उदय के समय में जन्म हो तो सब ग्रहों द्वारा

कृत अरिष्टों का उसी प्रकार नाश हो जाता है, जिस प्रकार कि अग्नि में गिरने पर लाख भस्म हो जाती है ॥७॥ यदि राहु वृष, मेष अथवा कर्क लग्न में हो तो वह अरिष्ट-नाशक होता है। यदि जन्म समय में शुभयोग अधिक हों तो भी अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं ॥८॥ यदि मकर, कुम्भ अथवा मीन राशिस्थ केतु एकादश अथवा षष्ठभाव में हो तो अरिष्ट नष्ट होते हैं। यदि शुक्र, गुरु और बुध - ये परस्पर त्रिकोणस्थान में हों तो अरिष्टों का नाश हो जाता है ॥९॥ यदि जन्म समय में सभी ग्रह दृश्य-चक्रार्ध में हों तो सन्ध्या, वैधृति, गण्डान्त आदि सभी दोष नष्ट हो जाते हैं ॥१०॥

त्र्यायारितुङ्गेषु गतः पतङ्गो नोपप्लुतो रिष्टविनाशकर्ता। एकर्क्षगाः षट्त्रिदशायसंस्थाः सर्वेऽपि रिष्टं शमयन्ति खेटाः ॥११॥ शीतभानोस्तनोर्वापि द्वौ त्रयो वाप्यनेकशः। एकान्तस्थास्तदारिष्टभङ्गो भवति निश्चयात् ॥१२॥ पातालयातः प्रबलेन्दुदृष्टो निजालयस्थो यदि जन्मकाले। देवेन्द्रमन्त्री दलयत्यवश्यममङ्गलं रिष्टभवं क्षणेन ॥१३॥ लग्नस्थितस्य खेटस्य व्यये वित्ते त्रयस्त्रयः। तत्कालमुद्भवाः खेटा रिष्टदारणकारिणः ॥१४॥ केन्द्रेष्वापोक्लिमेष्वेव यद्वा पणफरेषु च। शुभांशस्था ग्रहाः सर्वे रिष्टभङ्गकराः स्मृताः ॥१५॥ अन्योन्यं हि चतुर्थस्था युग्मभावमुपागताः। स्वर्भानुसंयुताः खेटा रिष्टदोषापहारकाः ॥२६॥ चतुष्टये श्रेष्ठबलाधिशाली शुभो नभोगोऽष्टमगो न कश्चित्। त्रिंशन्मितायुः प्रकरोति नूनं दशान्वितं तच्छुभखेटदृष्टः ॥२७॥ निजत्रिभागे स्वगृहे गुरुश्चेदायुर्मितिः स्यात्खलु सप्तविंशत्। बृहस्पतिस्तुङ्गगतो विलग्ने भृगोः सुतः केन्द्रगतः शतायुः ॥२८॥ लग्ने स्वतुङ्गे बलशालिनीन्दौ सौम्याः स्वभस्थाः खलु षष्टिरायुः। मूलत्रिकोणेषु शुभेषु तुङ्गे लग्ने गुरावायुरशीतिरेव ॥२९॥ लग्नाष्टमारीन्दुयुता न चेत्स्युः क्रूराः स्वभस्था यदि खेचरौ द्वौ। बलान्वितावम्बरगौ भवेतां जातः शतायुः कथितो मुनीन्द्रैः ॥२०॥ शून्ये रन्ध्रे केन्द्रगैः सौम्यखेटैर्लग्ने जीवे व्ययगे शुभाश्चेत्। नो संदृष्टाः पापखेटैस्तदा स्यादायुर्मानं सप्ततिर्वत्सराणाम् ॥२१॥

भृ० सं० ३६२

टीका॥ यदि उच्च राशि का सूर्य तीसरे, छठे अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो ग्रहणकाल जन्य अरिष्ट नहीं होता। अथवा सभी ग्रह एक राशि में होकर तीसरे, छठे, दसवें अथवा ग्यारहवें भाव में हों तो भी सब अरिष्टों का नाश होता है॥ ११॥ चन्द्रमा अथवा लग्न से दो, तीन अथवा अधिक ग्रह एक ही स्थान में हों तो निश्चित रूप से अरिष्ट-भङ्ग होता है॥ १२॥ यदि गुरु स्वराशि में स्थित होकर चतुर्थ भाव में हो और उस पर बलवान् चन्द्रमा की दृष्टि भी हो तो सभी अरिष्ट शीघ्र नष्ट होते हैं॥ १३॥ यदि लग्न में एक ग्रह हो तथा द्वितीय एवं द्वादश भाव में तीन-तीन ग्रह हों तो अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं॥ १४॥ यदि सभी ग्रह केन्द्र, पणफर अथवा आपोक्लिम स्थानों में हों तथा शुभग्रह के नवमांश में हों तो वे अरिष्ट-नाशक होते हैं॥ १५॥ यदि राहु सहित सभी ग्रह द्विस्वभाव राशि में हों तथा परस्पर चतुर्थ स्थान में स्थित हों तो अरिष्ट नष्ट हो जाते हैं॥ १६॥ यदि बलवान् शुभग्रह केन्द्र में हो तथा अष्टमभाव में कोई ग्रह न हो तो जातक की आयु ३० वर्ष की होती है और यदि उस पर शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो ४० वर्ष की आयु होती है॥ १७॥ यदि गुरु अपनी राशि तथा द्रेष्काण में हो तो जातक की आयु २७ वर्ष की होती है। यदि लग्न में उच्च राशि का गुरु तथा केन्द्र में शुक्र हो तो जातक १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है॥ १८॥ यदि वृष राशि का पूर्ण चन्द्रमा लग्न में हो तथा शुभ ग्रह अपनी-अपनी राशि में हों तो जातक की आयु ६० वर्ष होती है। यदि शुभग्रह अपने मूल त्रिकोण में तथा गुरु अपनी उच्चराशि गत होकर लग्न में हो तो जातक ८० वर्ष की आयु प्राप्त करता है॥ १९॥ अपनी राशि में स्थित पापग्रह यदि लग्न, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हों और वे चन्द्रमा से युक्त न हों तथा अन्य दो ग्रह बलवान् हों तो जातक १०० वर्ष की आयु प्राप्त करता है— यह मुनियों का कथन है॥ २०॥ यदि अष्टमभाव में कोई ग्रह न हो, शुभग्रह केन्द्र में अथवा लग्न में हों, गुरु तथा शुभग्रह तीसरे छठे और ग्यारहवें भाव में हों तथा पापग्रहों से अदृष्ट हों तो जातक की आयु ७० वर्ष की होती है॥ २१॥ इति॥

भा० टी०

अन्यच्च ॥ अरिष्ट योगाः ॥ भौम क्षेत्रे यदा जीवो जीवक्षेत्रे च भूसुतः। द्वादशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥१॥ धनस्थाने यदा भौमः शनैश्चर समन्वितः। सहजे च भवेद्राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥२॥ चतुर्थे च यदा राहुः षष्ठे चन्द्रोऽष्टमेऽपि वा। सद्यश्चैव भवेन्मृत्युः शङ्करो यदि रक्षति ॥३॥ अष्टमस्थो निशानाथः केन्द्रः पापेन संयुतः। चतुर्थे च यदा राहुर्वर्षमेकं स जीवति ॥ ४॥ सप्तमे भवने भौमाश्चाऽष्टमे भार्गवो यदा। नवमे भवने सूर्यः अल्पं जीवति जातकः ॥ ५॥ धने क्रूरः स्वभवने क्रूरः पातालगो यदा। दशमे भवने क्रूरः कथं जीवति जातकः ॥६॥ लग्न स्थाने यदा भौमो द्वादशे च यदा गुरुः। शुक्रः शत्रुगृहे यस्य मासमेकं स जीवति ॥७॥ क्षीणचन्द्रे गते लग्ने क्रूरग्रह निरीक्षिते। द्वितीये द्वादशे भौमे मासमेकं स जीवति ॥८॥ मूर्तिसप्तमयोः क्रूरा द्वितीये व्ययगामिनः। चतुर्थे च यदा राहुः सप्ताहान्म्रियते तथा ॥९॥ षष्ठाऽष्टमेऽपि चन्द्रः सद्यो मरणाय पाप संदृष्टः। अष्टाभिः शुभदृष्टो वर्षैर्मिश्रैस्तदर्द्धेन ॥१०॥ द्वादशस्थो यदा सौरिर्लग्न संस्थश्च भूसुतः। चतुर्थः सैंहिकेयश्च ह्यष्टमासान् स जीवति ॥११॥ शुभलग्ने यदा जीवो ह्यष्टमे च शनैश्चरः। रन्ध्र संस्थे च पापे च सद्यो मृत्युप्रदो भवेत् ॥१२॥ चतुर्थे नवमे सूर्ये त्वष्टमे च बृहस्पतौ। द्वादशे च शशाङ्के च सद्यो मृत्युकरो भवेत् ॥१३॥ शशि सूर्य सिते केन्द्रे संयुक्तः सोम आर्किणा। हन्ति वर्षद्वयेनैव जातकं शिष्ट भाषितः ॥१४॥ सूर्ये मन्द गृहे शुक्रो गुरुणा च विलोकितः। नवभिर्मारयत्येनं वर्षैर्जातं न संशयः ॥१५॥ सूर्येण सहितश्चन्द्रो बुधवेश्मगतः यदा। न वीक्षितश्च सौम्येन नववर्षैर्मृत्युदः ॥ १६॥ बुधसूर्येन्दु संयुक्तो वीक्षितोऽपि शुभैर्ग्रहैः। वर्षैरेकादशैस्तेन मारयत्येव निश्चितम् ॥१७॥ लग्नादष्टमगो राहुः शनि सूर्यावलोकितः। निरीक्षितः शुभैः कुर्यादष्ट द्वादशभिः क्षयम् ॥१८॥ धने राहुर्बुधः शुक्रः सौरिः सूर्यो यदा स्थिताः। तत्र जातस्य मृत्युः स्यान्मृते पितरि जायते ॥१९॥ व्यये राहु सौरि सौम्यौ जीवो लग्ने च पञ्चमे। अत्रयोगे च यो जातो जातमात्रः स नश्यति ॥२०॥ एकः पापोऽष्टमस्थोऽपि शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत्। पापेन वीक्षितो वर्ष-

न्मारयत्येव बालकम् ॥२१॥ भौम भास्कर मन्दाश्च शत्रुक्षेत्रे ऽष्टम यदा। यमेन रक्षितोऽप्येव वर्षमात्रं स जीवति ॥२२॥ वक्री शनिर्भौमगेहे केन्द्रे षष्ठेऽष्टमेऽपि वा। कुजेन बलिना दृष्टो हन्ति वर्षद्वये शिशुम् ॥२३॥ लग्नस्थश्च यदा भानुः पञ्चमस्थो निशाकरः। अष्टमस्था यदा पापास्तदा जातो न जीवति ॥२४॥ शनिराहुकुजैर्युक्ताः सप्तमे नवमे शशी। सप्तमे दिवसे हन्ति मासे वा सप्तमे शिशुम् ॥२५॥ क्रूरक्षेत्रे यदा जीवो लग्नेशोऽस्तंगतो भवेत्। अकर्मी च तदा जातः सप्तवर्षाणि जीवति ॥२६॥

टीका॥ यदि मङ्गल के घर में गुरु तथा गुरु के घर में मंगल बैठा हो तो ऐसे योग वाले जातक की १२ वर्ष की आयु में मृत्यु होजाती है ॥१॥ यदि शनि और मंगल लग्न से द्वितीय भाव में हों तथा तृतीय भाव में राहु हो तो बालक एक वर्ष तक ही जीवित रहता है ॥२॥ लग्न से चतुर्थ राहु तथा छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो ऐसे जातक की यदि शिवजी भी रक्षा करें तो भी तत्काल मृत्यु होजाती है ॥३॥ यदि लग्न से अष्टम भाव में चन्द्रमा तथा केन्द्र में पापग्रह हों एवं चतुर्थ भाव में राहु हो तो जातक केवल एक वर्ष तक ही जीवित रहता है ॥४॥ यदि लग्न से सप्तम भाव में मंगल, अष्टम भाव में शुक्र तथा नवम भाव में सूर्य हो तो जातक अल्पायु होता है ॥५॥ यदि लग्न से द्वितीय भाव में कोई क्रूर ग्रह अपनी राशि का होकर बैठा हो तथा चतुर्थ एवं दशम भाव में भी क्रूर ग्रह हों तो जातक बड़े कष्ट से ही जीवित रह पाता है ॥६॥ यदि लग्न में मंगल, द्वादश भाव में बृहस्पति तथा षष्ठ भाव में शुक्र हो तो बालक केवल एक मास तक ही जीवित रह पाता है ॥७॥ यदि लग्नस्थित क्षीणचन्द्रमा पर किसी क्रूरग्रह की दृष्टि हो तथा द्वितीय अथवा द्वादश भाव में मंगल हो तो बालक केवल एक मास ही जीवित रहता है ॥८॥ यदि लग्न, सप्तम, द्वादश तथा द्वितीय भाव में क्रूर ग्रह हों तथा चतुर्थ भाव में राहु हो तो बालक सात दिन में ही मर जाता है ॥९॥ यदि लग्न से छठे अथवा आठवें भाव में पापग्रह से दृष्ट चन्द्रमा हो तो बालक की

तत्काल मृत्यु हो जाती है। यदि शुभग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा छठे, आठवें घर में हो तो आठवें वर्ष में मृत्यु होती है।
यदि शुभाशुभ ग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा छठे अथवा आठवें भाव में हो तो चार वर्ष की आयु में मृत्यु होती है ।। १०।।
यदि लग्न से द्वादश भाव में शनि, लग्न में मंगल तथा चतुर्थ भाव में राहु हो तो जातक केवल आठ मास
तक ही जीवित रहता है ।। ११।। यदि शुभग्रह के लग्न में गुरु हो, अष्टमभाव में शनि हो तथा उसी भाव में
अन्य पापी ग्रह भी हों तो जातक की मृत्यु जल्दी ही होती है ।। १२।। यदि लग्न से चौथे अथवा नवें घर में
सूर्य, आठवें घर में बृहस्पति तथा बारहवें घर में चन्द्रमा हो तो जातक की तत्काल मृत्यु होती है ।। १३।।
यदि चन्द्रमा, सूर्य और शुक्र केन्द्र में हो और चन्द्रमा शनि युक्त हो तो अन्य शुभग्रहों द्वारा भावित होने पर भी
ऐसे ग्रहयोग वाला जातक दो वर्ष में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।। १४।। यदि गुरु से दृष्ट शुक्र सूर्य अथवा
शनि की राशि में हो तो ऐसा जातक नवें वर्ष में मर जाता है ।। १५।। यदि सूर्य-चन्द्र बुध की राशि में हों
तथा किसी सौम्य ग्रह द्वारा दृष्ट भी न हों तो ऐसा जातक नवें वर्ष में मर जाता है ।। १६।। यदि सूर्य-चन्द्र
से युक्त बुध किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की मृत्यु ग्यारहवें वर्ष में हो जाती है ।। १७।। यदि अष्टमभाव
में स्थित राहु पर शनि-सूर्य की दृष्टि हो तो आठवें वर्ष में, और यदि किसी शुभग्रह की दृष्टि हो तो
बारहवें वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाती है ।। १८।। यदि द्वितीय भाव में राहु, शुक्र, शनि, सूर्य हों तो
ऐसे योग वाला जातक अपने पिता की मृत्यु के बाद जन्म लेता है तथा स्वयं भी थोड़े ही दिनों में मर
जाता है ।। १९।। यदि द्वादश भाव में राहु, शनि तथा बुध हों एवं गुरु लग्न अथवा पंचम भाव में हो तो
जातक जन्म लेते ही मर जाता है ।। २०।। यदि एक भी पापग्रह शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम भाव में बैठा हो
तथा उस पर पापग्रहों की दृष्टि भी हो तो जातक एक वर्ष के भीतर ही मर जाता है ।। २१।। यदि मंगल, सूर्य
तथा शनि शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम भाव में बैठे हों तो ऐसा बालक यमराज से रक्षित होने पर भी एक वर्ष

से अधिक समय तक जीवित नहीं रहता॥ २२॥ यदि वक्री शनि मङ्गल के घर का होकर केन्द्र में अथवा छठे आठवें घर में बैठा हो तथा बली मंगल की उस पर दृष्टि भी हो तो ऐसा जातक दो वर्ष में मर जाता है॥२३॥ यदि लग्न में सूर्य, पंचमभाव में चन्द्रमा तथा अष्टम भाव में सभी पापग्रह हों तो जन्म लेने वाला जीवित नहीं रहता॥ २४॥ यदि शनि, राहु तथा मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम अथवा नवमभाव में हो तो ऐसा जातक सातवें दिन अथवा सातवें महीने में मर जाता है॥ २५॥ यदि पाप ग्रह की राशि का बृहस्पति हो तथा लग्नेश अस्तंगत हो तो ऐसा जातक कुकर्मी होता है केवल सात वर्ष तक जीवित रहता है॥ २६॥

शनि क्षेत्रे यदा भानु भानु क्षेत्रे यदा शनिः। द्वादशे वत्सरे मृत्युर्निश्चितं तस्य जायते ॥२७॥ षष्ठेऽष्टमे वा मूर्तौ च शत्रुक्षेत्रे यदा बुधः। चतुर्वर्षैर्भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥२८॥ अष्टमस्थो यदा राहुः केन्द्र स्थाने च चन्द्रमाः। सद्य एव भवेन्मृत्युर्बालकस्य न संशयः ॥२९॥ चतुर्थस्थो यदा राहुः षष्ठाऽष्टम गृहे शशी। विंशत्या दिवसैर्मृत्युर्बालकस्य न संशयः॥ ३०॥ सप्तमे नवमे राहुः शत्रुक्षेत्रे यदा भवेत्। षोडशे वत्सरे मृत्युर्बालकस्य न संशयः॥ ३१॥ द्वादशस्थो यदा चन्द्रः पापः स्यादष्टमे गृहे। एकमासे भवेन्मृत्युस्तस्य बालस्य निश्चितम्॥ ३२॥ षष्ठाऽष्टमे यदा चन्द्रो बुधयुक्तश्च तिष्ठति। विषदोषेण बालस्य तदा मरणमुच्यते॥ ३३॥ भानुना संयुतश्चन्द्रः षष्ठाऽष्टमयुतो भवेत्। गजदोषेण मृत्युर्वा सिंहदोषेण वा भवेत् ॥ ३४॥ लग्ने ऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रेण यदि दृश्यते। दशाहे जायते तस्य बालस्य मरणं ध्रुवम्॥ ३५॥ लग्नाच्च नवमे सूर्यः सूर्यपुत्रे तथाऽष्टमे। एकादशे भार्गवेच मासमेकं स जीवति॥ ३६॥ शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे षष्ठे द्वितीये द्वादशे रविः। स जीवेद्दश वर्षाणि बालको नाऽत्र संशयः॥ ३७॥ शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे मूर्तौ बुधः षष्ठे प्रजायते। बालो जीवति वर्षाणि चत्वार्यत्र न संशयः॥३८॥ शत्रु क्षेत्रे यदा शुक्रो द्वितीये द्वादशे भवेत्। एकविंशति वर्षायु जायते बालको ध्रुवम्॥ ३९॥ शत्रुक्षेत्रेऽष्टमे षष्ठे द्वितीये द्वादशे शनिः। अष्टौ दिनान्यष्टमासानष्ट वर्षाणि जीवति॥ ४०॥ राहौ च केन्द्रगे मृत्युः पापानां

दृष्टिसंपुते। संवत्सरे तु दशमे कोऽङ्के तु विशेषतः॥४१॥ चन्द्रः सप्तम भवने शनि भौमराहुयुतो भवति। सप्तम दिवसे मृत्युः सप्तम
मासे न सन्देहः॥४२॥ भौमे क्षेत्रे यदा जीवो षष्ठे वाप्यष्टमे विधुः। षष्ठेऽष्टमे भवेन्मृत्युः रक्षको यदि
शङ्करः॥४३॥ जन्म सप्तमभे सौरिरष्टमे चन्द्रमा यदि। ब्रह्मपुत्रो यदा जातः सोऽपि बालो न जीवति॥४४॥
षष्ठाऽष्टमे यदा चन्द्रो रविर्भवति सप्तमः। पितृमातृधनं हन्ति मासमेकं स जीवति॥४५॥ द्वादशे जीव
शुक्रौ च जन्मतो राहुरेव च। सप्तमे च यदा सौरिर्वर्षमेकं स जीवति॥४६॥ भौमे दिवाकरे छिद्रे जातः शत्रु
गृहे यदि। स नरो म्रियतेऽवश्यं यमो मासेन रक्षकः॥४७॥ यदा लग्ने ग्रहः क्रूरो षष्ठे वाप्यष्टमे विधुः।
तदा सद्यो भवेन्मृत्युर्जातकस्य न संशयः॥४८॥ चतुर्थेऽपि यदा राहुः केन्द्रे भवति चन्द्रमाः। विंशद्वर्षे भवे-
न्मृत्युर्जातकस्य न संशयः॥४९॥ सप्तमस्थो यदा राहुर्जन्मकाले यदा तदा। दशवर्षैर्भवेन्मृत्युरमृतं यदि
पीयते॥५०॥ लग्नेऽष्टमे यदा राहुश्चन्द्रो वा यदि पश्यति। जातकस्य तदा मृत्युर्यदि शक्रेण रक्षितः॥५१॥
दशमेऽपि यदा भौम उच्चस्थानुगृहे स्थितः। जातकस्य भवेन्मृत्युर्मातुश्चैव न संशयः॥५२॥ लग्नस्थितो
यदा भानुः पञ्चमस्थो निशापतिः। लग्नेऽष्टमे स्थिताः पापास्तदा जातो न जीवति॥५३॥ लग्नात्सप्तम
शीतांशुः पापोऽष्टमगतो ग्रहः। लग्नस्थितो यदा भानुर्मासेन म्रियते शिशुः॥५४॥ स्वस्थाने लग्नतः क्रूरः
क्रूरः पातालगः पुनः। दशमे भवने क्रूरः कष्टं जीवति जातकः॥५५॥ अस्मिन्योगे हि यो जातो मातुर्दुःखकरो
भवेत्। यदि जीवेदसौ जातो मातृपक्षभयङ्करः॥५६॥ क्रूरक्षेत्रे भवेत्सूर्यः कन्यायां क्रूरसंस्थितः। क्रूरक्षेत्रे
भवेद्राहुः कष्टं जीवति जातकः॥५७॥ शुक्रे च वाक्पतौ सौम्ये नीचे राहुसमन्विते। नदृश्यते च चन्द्रेण
सोऽपि बालो न जीवति॥५८॥ षष्ठाऽष्टमे यदा चन्द्रो द्वादशे रविमङ्गलौ। सोऽपि जातो न जीवेत रक्षको
यदि शङ्करः॥५९॥ षष्ठाऽष्टमे यदा केतुः केन्द्री भवति चन्द्रमाः। सद्यो बालकमृत्युः स्याद्रक्षिता यदि शङ्करः॥
६०॥ रवि राहू सौरि भौमो जीवो लग्ने च पञ्चमे। योगेऽस्मिन्नपि यो जातो जातमात्रो विनश्यति॥६१॥

टीका॥ यदि शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो इस योग में जन्म लेने वाले जातक की मृत्यु बारहवें वर्ष में हो जाती है ॥२७॥ यदि लग्न अथवा छठे भाव में बुध शत्रु क्षेत्री होकर बैठा हो तो जातक की चौथे वर्ष में मृत्यु हो जाती है ॥२८॥ यदि लग्नसे अष्टम भाव में राहु तथा केन्द्र में चन्द्रमा हो तो जातक की तत्काल मृत्यु हो जाती है ॥२९॥ यदि चतुर्थभाव में राहु तथा षष्ठ अथवा अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक की मृत्यु बीस दिन में हो जाती है ॥३०॥ यदि सप्तम अथवा नवमभाव में शत्रुक्षेत्री राहु हो तो सोलह वर्ष की आयु में जातक की मृत्यु हो जाती है ॥३१॥ यदि द्वादशभाव में चन्द्रमा तथा अष्टमभाव में पापग्रह हों तो एक मास के भीतर जातक की मृत्यु हो जाती है ॥३२॥ यदि यदि छठे अथवा आठवें घर में बुध-चन्द्र की युति हो तो बालक की विष-दोष से मृत्यु हो जाती है ॥३३॥ यदि छठे अथवा आठवें घर में सूर्य-चन्द्र की युति हो तो बालक की मृत्यु हाथी अथवा सिंह के कारण होती है॥ ३४॥ यदि लग्न अथवा अष्टम भाव में स्थित राहु पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो दस दिन के भीतर ही बालक की मृत्यु हो जाती है ॥३५॥ यदि नवमभाव में सूर्य तथा अष्टम भाव में शनि हो तथा शुक्र एकादश भाव में हो तो जातक केवल एक मास तक जीवित रहता है ॥३६॥ यदि छठे, आठवें अथवा द्वितीय, द्वादश भाव में सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर बैठा हो तो जातक केवल ६ वर्ष तक जीवित रहता है ॥३७॥ यदि लग्न, छठे अथवा आठवें भाव में शत्रुक्षेत्री बुध बैठा हो तो जातक केवल ४ वर्ष तक ही जीवित रहता है ॥३८॥ यदि द्वितीय अथवा द्वादश भाव में शत्रुक्षेत्री शुक्र बैठा हो तो जातक की आयु केवल २१ वर्ष की होती है ॥३९॥ यदि द्वितीय, द्वादश, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में शत्रुक्षेत्री शनि बैठा हो तो जातक की आयु ८ दिन, ८ मास अथवा ८ वर्ष की होती है॥ ४०॥ यदि पापग्रह से युक्त-दृष्ट राहु केन्द्र (लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशमभाव) में बैठा हो तो जातक की मृत्यु १० अथवा १६ वें वर्ष में होती है॥ ४१॥ यदि सप्तमभाव में शनि, मंगल

और राहु से युक्त चन्द्रमा बैठा हो तो शिवजी द्वारा रक्षा किए जाने पर भी वह जातक सातवें दिन अथवा सातवें महीने में अवश्य मर जाता है ।। ४२ ।। यदि मेष अथवा वृश्चिक राशि में बृहस्पति हो तथा छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शिवजी द्वारा रक्षा किए जाने पर भी उस जातक की मृत्यु छठे-आठवें वर्ष में हो जाती है ।। ४३ ।। यदि लग्न अथवा सप्तम भाव में शनि हो तथा अष्टम भाव में चन्द्रमा हो तो ऐसा जातक चाहे ब्रह्मा का पुत्र ही क्यों न हो, तो भी जीवित नहीं रहता ।। ४४ ।। यदि षष्ठ अथवा अष्टम भाव में चन्द्रमा तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसा जातक अपने माता-पिता के धन का नाश कर, केवल एक मास तक जीवित रहता है ।। ४५ ।। यदि द्वादश भाव में गुरु, शुक्र और राहु हों तथा सप्तमभा-व में शनि हो तो जातक एक वर्ष तक जीवित रहता है ।। ४६ ।। यदि मंगल अथवा सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर अष्टमभाव में बैठे हों तो यमराज द्वारा रक्षा किए जाने पर भी जातक एक मास में ही मर जाता है ।। ४७ ।। यदि लग्न में क्रूर ग्रह हों तथा छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाले की तुरन्त मृत्यु हो जाती है ।। ४८ ।। यदि चतुर्थ भाव में राहु तथा केतु में चन्द्रमा हो तो इस योग वाला जातक केवल बीस वर्ष तक ही जीवित रहता है ।। ४९ ।। यदि सप्तम भाव में राहु हो तो अमृत-पान कर लेने पर भी जातक केवल दस वर्ष तक जीवित रहता है ।। ५० ।। यदि लग्न अथवा अष्टमभाव में स्थित राहु पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो इन्द्र द्वारा रक्षा किए जाने पर भी जातक जीवित नहीं रहता ।। ५१ ।। यदि दशम भाव में उच्च का अथ-वा शत्रुक्षेत्री मंगल बैठा हो तो जातक की तथा उसकी माता की अवश्य मृत्यु होती है ।। ५२ ।। यदि लग्न में सूर्य तथा पंचम भाव में चन्द्रमा हो तथा लग्न अथवा अष्टम भाव में पापग्रह भी हो तो बालक जीवित नहीं रहता ।। ५३ ।। यदि सप्तम भाव में चन्द्रमा; लग्न में सूर्य तथा अष्टमभाव में पापग्रह हो तो जातक की मृत्यु एक मास में ही हो जाती है ।। ५४ ।। यदि स्वक्षेत्री क्रूर ग्रह लग्न में बैठे हों तथा चतुर्थ एवं दशम

भाव में भी क्रूर ग्रह हों तो जातक कठिनाई से ही जीवित बच पाता है॥ ५५॥ यदि जीवित रह भी जाय तो वह अपनी माता को दुःख देने वाला तथा मातृ-पक्ष का विनाश करने वाला होता है ॥५६॥ यदि क्रूर ग्रह की राशि में सूर्य हो और क्रूर ग्रह कन्या राशि में हो तथा क्रूर क्षेत्र में राहु भी हो तो इस योग वाला जातक कठिनाई से ही जीवित रह पाता है॥ ५७॥ यदि गुरु, शुक्र और बुध—इन तीनों में से कोई राहु से युक्त होकर नीच राशि में हो और उस पर चन्द्रमा की दृष्टि भी न हो तो ऐसा जातक जीवित नहीं रह पाता॥ ५८॥ यदि चन्द्रमा छठे आठवें भाव में तथा सूर्य- मङ्गल बारहवें भाव में हों तो शिवजी द्वारा रक्षा किए जाने पर भी इस योग वाला जातक जीवित नहीं रह पाता ॥५९॥ यदि छठे, आठवें भाव में केतु तथा केन्द्र में चन्द्रमा हो तो शंकर द्वारा रक्षा किए जाने पर भी बालक मर जाता है॥ ६०॥ यदि सूर्य, राहु, शनि, मंगल और गुरु—ये ग्रह लग्न में अथवा पंचमभाव में हों तो जातक की तुरन्त मृत्यु हो जाती है॥ ६१॥ इति॥

अन्य अरिष्ट भङ्ग योगाः॥ एको ऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात्केन्द्रगतो यदि । अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा॥ १॥ एक एव बली जीवो लग्नस्थो रिष्टसंचयः । हन्ति पापक्षयं भक्त्या प्रणाम इव शूलिनः॥ २॥ एक एव विलग्नेशः केन्द्रसंस्थो बलान्वितः अरिष्टं निखिलं हन्ति पिनाकी त्रिपुरं यथा॥ ३॥ शुक्लपक्षे क्षपाजन्म लग्ने सौम्यनिरीक्षिते। विपरीतं कृष्णपक्षे तथारिष्ट विनाशनम्॥ ४॥ व्ययस्थाने यदा सूर्यस्तुला लग्ने तु जायते। जीवेत्स शतवर्षाणि दीर्घायुर्बालको भवेत्॥ ५॥ गुरुर्भौमो यदा युक्तौ गुरुदृष्टो ऽथवा कुजः। हत्वारिष्टमशेषं च जनन्याः शुभकृद्भवेत्॥ ६॥ सौम्यान्तरगतैः पापैः शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः। सद्यो नाशयते ऽरिष्टं तद्भावोत्थ फलं न तत्॥ ७॥

टीका॥ यदि बुध, गुरु तथा शुक्र में से एक भी ग्रह लग्न अथवा केन्द्र में हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार कि सूर्योदय से अंधकार नष्ट हो जाता है॥ १॥ यदि

यदि केवल अकेला गुरु ही बलवान् हो कर लग्न में बैठा हो तो समस्त अरिष्ट उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं, जिस प्रकार कि शंकरजी को प्रणाम करने से पाप नष्ट हो जाते हैं ॥ २ ॥ यदि अकेला लग्नेश ही बली होकर केन्द्र में बैठा हो तो वह सब अरिष्टों को उसी प्रकार नष्ट कर देता है, जिस प्रकार कि शिवजी ने त्रिपुर को नष्ट कर दिया था ॥ ३ ॥ यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो तथा लग्न पर शुभग्रह की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो अरिष्ट नष्ट हो जाता है ॥ ४ ॥ यदि तुला लग्न में जन्म हो तथा द्वादश भाव में सूर्य स्थित हो तो जातक १०० वर्ष तक जीवित रहता है ॥ ५ ॥ यदि गुरु और मंगल की युति हो अथवा मंगल पर गुरु की दृष्टि हो तो अरिष्ट नष्ट होता है तथा जातक अपनी माता को सुख देता है ॥ ६ ॥ यदि शुभग्रह के मध्य में पापग्रह हों तथा शुभग्रह केन्द्र और त्रिकोण में हों तो अरिष्ट नष्ट होता है तथा उस भावों के फलों की वृद्धि होती है ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ आयुर्दाय विचारः ॥ मय यवन मणित्थ शक्ति पूर्वैर्दिवसकरादिषु वत्सराः प्रदिष्टाः। नवतिथिविषयाश्विभूतरुद्रदश सहिता दशभिः स्वतुङ्गभेषु ॥ १ ॥ नीचेऽतोऽर्द्धं ह्रसति हि ततश्चान्तरस्थेऽनुपातो होरात्वंशप्रतिममपरे राशितुल्यं वदन्ति ॥ हित्वा वक्रं रिपुगृहगतैर्हीयते स्वत्रिभागः। सूर्योच्छिन्नद्युतिषु च दलं प्रोज्झ्य शुक्रार्कपुत्रौ ॥ २ ॥ सर्वार्द्धत्रिचरणपञ्चषष्ठभागाः क्षीयन्ते व्ययभवनादसत्सु वामम्। सत्स्वर्द्धं ह्रसति तथैकराशिगानामेकोंऽशं हरति बली तथाह सत्यः ॥ ३ ॥ सार्द्धोदितोदितनवांशहतात्समस्ताद्भागोऽष्टयुक्तशतसंख्यमुपैति नाशम्। क्रूरे विलग्नसहिते विधिना त्वनेन सौम्येक्षिते दलमतः प्रलयं प्रयाति ॥ ४ ॥ समाः षष्टिर्द्विघ्नी मनुजकरिणां पञ्च च निशा। हयानां द्वात्रिंशत्खरकरभयोः पञ्चककृतिः ॥ विरूपा साऽप्यायुर्वृषमहिषयोर्द्वादश शुनां। स्मृतं छागादीनां दशकसहिताः षट् च परमम् ॥ ५ ॥ अनिमिष परमांशके विलग्ने शशितनये गवि पञ्चवर्गलिप्ते। भवति हि परमायुषः प्रमाणं यदि सकलाः सहिताः स्वतुङ्गभेषु ॥ ६ ॥ स्वमतेन

मृ० सं० ३८२

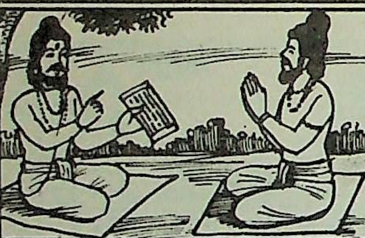
किलाह जीवशर्मा ग्रहदायं परमायुषः स्वरांशम्। ग्रहभुक्तनवांशराशितुल्यं बहु साम्यं समुपैति सत्यवाक्यम्॥७॥ सत्योक्ते ग्रहमिष्टं लिप्तीकृत्वा शतद्वयेनाप्तम्। मण्डलभागविशुद्धेऽब्दाः स्युः शेषात्तु मासाद्याः॥८॥ सत्युक्तं वक्रोपगतैस्त्रिगुणं द्विरुत्तमस्वांशकभत्रिभागगैः। इयान्विशेषस्तु भदत्तभाषिते समानमन्यत्प्रथमेऽप्युदीरितम्॥९॥ किन्त्वत्र भांशप्रतिमं ददाति वीर्यान्वितराशिसमं च होरा। क्रूरोदये योपचयः स नात्र कार्यं च नाब्दैः प्रथमोपदिष्टैः॥१०॥ सत्योपदेशो वरमत्र किन्तु कुर्वन्त्ययोग्यं बहुवर्गणाभिः। आचार्यकत्वं च बहुघ्नतायामेकं तु यद्भूरि तदेव कार्यम्॥११॥ गुरुशशिसहिते कुलीरलग्ने शशितनये भृगुजे च केन्द्रयाते। भवरिपुसहजोपगैश्च शेषैरमितमिहायुरनुक्रमाद्विना स्यात्॥१२॥

भा० टी०

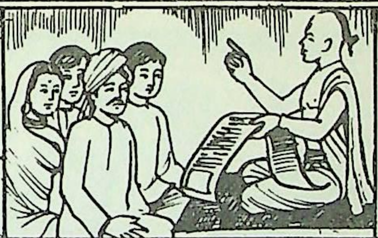
टीका॥ मय, यवन, मणित्थ, पाराशर आदि पूर्वाचार्यों के मतानुसार यदि सूर्य आदि ग्रह अपनी उच्च राशि में हों तो क्रमशः १९, २५, १५, १२, १५, २१ तथा २० – इन वर्षों में रव्यादि ग्रहों की आयु समझनी चाहिए। जैसे- सूर्य अपने परम उच्च (मेष राशि के १० अंश) में हो तो रविकृत आयु १९ वर्ष होगी। इसी प्रकार चन्द्रकृत २५ वर्ष, मंगल कृत १५ वर्ष, बुध कृत १२ वर्ष, गुरु कृत १५ वर्ष, शुक्र कृत २१ वर्ष तथा शनिकृत २० वर्ष की आयु होती है॥२॥ जो ग्रह अपने परम नीच में हो, उसके द्वारा कृत उपर्युक्त आयु का आधा भाग नष्ट हो जाता है। जैसे- नीचस्थ रविकृत आयु ९ वर्ष ६ मास, नीचस्थ चन्द्र कृत आयु १२ वर्ष ६ मास, नीचस्थ मंगल कृत आयु ७ वर्ष ६ मास, नीचस्थ बुध कृत आयु ६ वर्ष, नीचस्थ गुरु कृत आयु ७ वर्ष ६ मास, नीचस्थ शुक्र कृत आयु १० वर्ष ६ मास तथा नीचस्थ शनिकृत आयु १० वर्ष, ६ मास रह जाती है॥ अतः उच्च और नीच के मध्य में अनुपात से आयुर्दाय का मान समझना चाहिए। लग्न की आयु अंश (लग्न भुक्त नवांश) तुल्य वर्षादि होती है। अन्य आचार्य लग्न के भुक्तराशि तुल्य वर्षादि लग्नायु कहते हैं। वक्रीग्रह को छोड़ कर शत्रुगृही ग्रहों का गणितागत आयु का तृतीयांश नष्ट हो जाता है तथा शुक्र एवं शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह

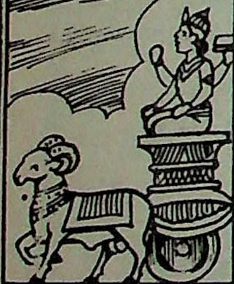
यदि सूर्य-सान्निध्यवश अस्त हों तो उनका आधा आयुर्दाय नष्ट होजाता है॥ २॥ द्वादश भाव से उत्क्रम से सप्तमभाव तक पापग्रह हों तो क्रमशः गणितागत आयु का पूरा, आधा, तृतीयांश, चतुर्थांश, पंचमांश और षष्ठांश का नाश हो जाता है और यदि उन्हीं स्थानों में शुभग्रह हो तो पापग्रह की अपेक्षा आधा नाश होता है। यथा- द्वादशभाव में पापग्रह हो तो उसका सब भाग तथा शुभ ग्रह का आधा; एकादश में पापग्रह का आधा तथा शुभग्रह का चतुर्थांश, दशम भाव में पापग्रह का तृतीयांश तथा शुभग्रह का षष्ठांश, नवम भाव में पापग्रह का चतुर्थांश तथा शुभग्रह का अष्टमांश; अष्टम भाव में पापग्रह का पंचमांश तथा शुभग्रह का दशमांश तथा सप्तमभाव में पापग्रह का षष्ठांश एवं शुभग्रह का द्वादशांश आयुर्दाय का नाश होता है। यदि एक ही स्थान में दो अथवा अधिक ग्रह हों तो उनमें जो सबसे अधिक बलवान् हो, केवल उसी ग्रह का अंश नष्ट होता है, सब ग्रहों का नहीं- ऐसा सत्याचार्य का मत है॥ ३॥ यदि लग्न में पापग्रह हों तो लग्न के वर्तमान नवांश सहित जितने गत नवांश हों, उससे गणितागत समस्त आयु प्रमाण (वर्षादि) को गुणा करके, उसमें १०८ का भाग देकर जो वर्षादि लब्ध हों, उतना नाश हो जाता है अर्थात् उतने वर्षादि गणितागत आयु में से घटा देने चाहिए। यदि लग्नगत पापग्रह पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो उक्त विधि से प्राप्त फल (वर्षादि) का मात्र आधा ही नष्ट होता है॥ ४॥ मनुष्य की १२० वर्ष और ५ अहोरात्र की आयु होती है। इतनी ही परमायु हाथियों की भी होती है। घोड़े की ३२ वर्ष, गदहे तथा ऊँट की २५ वर्ष, गाय और भैंस की २४ वर्ष, कुत्ते की १२ वर्ष तथा बकरा, भेड़, हरिण आदि की परमायु १६ वर्ष कही गई है- यह औसत मान है॥ ५॥ यदि मीन के अन्तिमांश लग्न हो तथा बुध वृष राशि की २५ वीं कला में हो तथा शेष सभी ग्रह अपने-अपने परमोच्च में हों तो उक्त विधि से गणित द्वारा परमायु का प्रमाण होता है॥ ६॥ जीवशर्मा आचार्य के मत से उच्च स्थान में [illegible] २३ दिन, ८ घड़ी

३४ पल) तुल्य ही कहा है। परन्तु यह सर्वसम्मत नहीं है। अतः ग्रह जितने नवांश भोग कर चुके हों, उतनी राशि तुल्य वर्ष महायुर्दाय होता है। इस प्रकार सत्याचार्य के कथन से अनेक आचार्य संमत हैं॥ ७॥ सत्याचार्य के मतानुसार प्रत्येक ग्रह को कलात्मक बना कर, उसमें २०० के साथ भाग देने से लब्धनवांश संख्या यदि १२ से अधिक हो तो १२ का भाग दे कर जो शेष बचे, उतने वर्ष और शेष कला पर से मासादिक का साधन करें। इस प्रकार उस ग्रह का वर्षादि आयुर्दाय होगा॥ ८॥ आयुर्दाय का साधन करके जो ग्रह अपने उच्च में हो अथवा वक्री हो, उसके आयुर्दाय को त्रिगुणित कर देना चाहिए। जो ग्रह अपने वर्गोत्तम नवांश में अथवा अपने द्रेष्काण में हो, उसके आयुर्दाय को द्विगुणित कर देना चाहिए। इतनी क्रिया सत्याचार्य के मत में अन्य आचार्यों से विशेषता है और अन्य क्रियायें समान ही हैं॥ ९॥ सत्याचार्य के मत से लग्न में जितनी राशि के नवांश भुक्त हुए हों, उतने वर्ष की आयु होती है, परन्तु यदि लग्न बलवान् हो अर्थात् अपने स्वामी या बुध-गुरु से युत-दृष्ट हो तो भुक्त राशि के तुल्य वर्षादि आयु और भी देती है तथा लग्न में पापग्रह होने पर अन्य आचार्यों के मत में जो अपचय कहा गया है, सत्याचार्य के मतानुसार उसे नहीं करना चाहिए एवं पूर्वोक्त (नवतिथि अथवा परमायुर्दाय के सप्तमांश ग्रहपिण्ड) वर्षों से भी लग्नायुर्दाय नहीं करना चाहिए॥ १०॥ मय, जीवशर्मा तथा सत्याचार्य- इन तीनों के मत में सत्याचार्य का मत ही अच्छा है, परन्तु उसमें भी लोग बहुवर्गणा को करके अयोग्य (अनुचित) कर डालते हैं। पाण्डित्य तो यह है कि बहु-वर्गणा प्राप्त हो तो जो बड़ी गुणना हो, वह एक ही और एकबार ही करनी चाहिए॥ ११॥ यदि चन्द्रमा और गुरु से युक्त कर्क लग्न हो, बुध-शुक्र-दोनों केन्द्र में हों तथा शेष ग्रह लग्न से एकादश, षष्ठ और तृतीय इन स्थानों में एक साथ अथवा अलग-अलग भी हों तो गणित क्रम को छोड़ कर, उस जातक का आयुर्दाय प्रमाण-रहित समझना चाहिए॥ १२॥ इति बृहज्जातके आयुर्दायविचारः॥ इति सप्तमखण्डस्समाप्तः॥





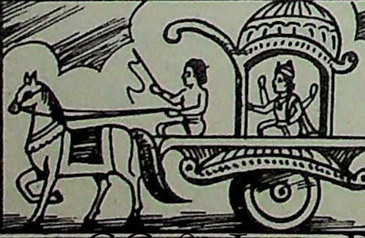
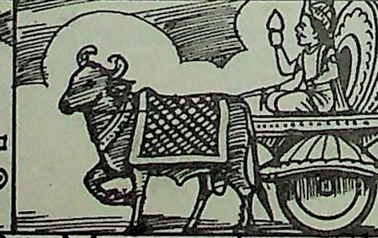
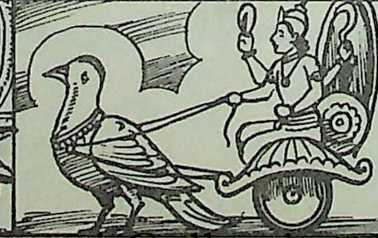
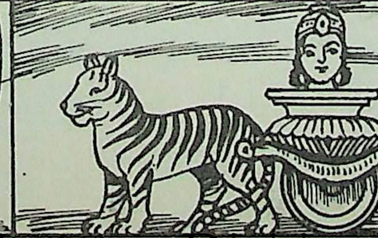
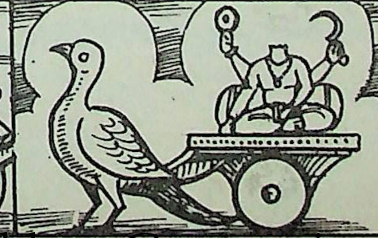


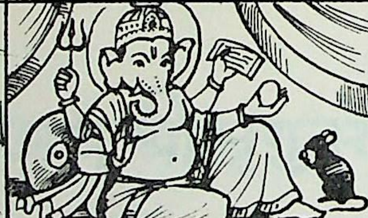


इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

सप्तम खण्डः समाप्तः



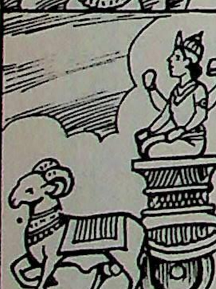




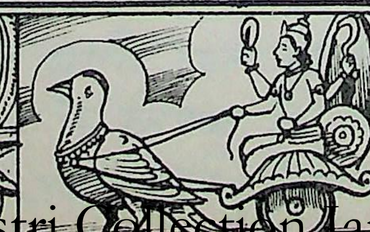
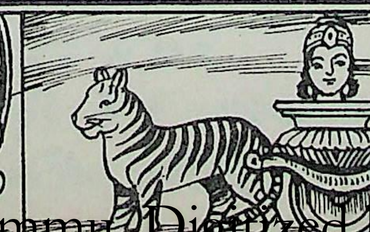

अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

अष्टम खण्डः भाषा टीका सहितम्

प्रश्न विचाराध्यायः






अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम् अष्टम खण्डः

अथ प्रश्न विचारम् ॥ तत्रादौ शुभाशुभ लक्षणम् ॥ तैलाभ्यक्तोऽथवा शुद्रो जलगर्त समीपगः । प्रष्टा दैवविदे वाथ मरणं तस्य निर्दिशेत् ॥ १ ॥ पुष्पैः फलैः कनकरत्नयुतैः स्वभूमौ नक्षत्र जाति सहितं ग्रहराशि चक्रम् । अभ्यर्च्य भक्तिभरबंधुरकंधराग्रः श्रद्धां विधाय निज चेतसि निर्विकल्पे ॥ २ ॥ प्रातः पुमान्विहितदेवगुरु प्रणामः पाणौ वहन् कुसुमरत्नफलाक्षतांश्च । सत्कृत्य दैवविदमादरमादधानः पृच्छेत्सकृच्छुभमनाः शुभदिङ्मुखस्थः ॥ ३ ॥ प्रश्नाक्षरैरुदयहेतुभिरुल्लसद्भिर्बाह्यस्थितैश्च शकुनैरधिगम्य सम्यक् । प्रष्टुः शुभं च यदि वाप्यशुभं प्रयत्नात्तत्कालजं तदिह दैवविदाऽभिधेयम् ॥ ४ ॥ फलभर कुसुमाभिराममूमीरुहभुवि गोमयपु-ष्पतोयवत्याम् । चरणसुख कृति प्रपृच्छतां स्यादभिमतसिद्धिरंसशयेन पुंसाम् ॥ ५ ॥ हृच्चेतसोः सुखकरी यदि भूमिरस्ति मांगल्य वस्तुविषये शुभदर्शने चेत् । पृच्छाविधौ शुभमुपस्थितमादरेण तत्रापि वाच्यमिति वक्ति मयो मणित्थः ॥ ६ ॥ प्रष्टुः शुभैः पंचभिरिष्ट लाभोऽनिष्टप्रदैः पंचभिरप्यनिष्टम् । तुल्यैर्बलाबलवशात्फलमूहनीयं ह्येयं चतुर्भिरथ वापि फलं बलाच्च ॥ ७ ॥

टीका ॥ अब प्रश्न विचार के विषय में कहते हैं। उसके आरंभ में शुभाशुभ लक्षणों के विषय में जान लेना आवश्यक है। यदि प्रश्नकर्त्ता तैल लगाये हुए हो, अशौच में (अपवित्र) हो, जल

के गड्ढे के समीप बैठ कर प्रश्न करता हो एवं ज्योतिषी भी यदि ऐसी ही स्थितियों में हो तो प्रश्न का उत्तर देना मृत्युभय दायक होता है ॥ १॥ पुष्प, फल, स्वर्ण तथा रत्नादिक से अपने घर की भूमि में नक्षत्र सहित ग्रह-चक्र का पूजन करके, भक्ति युक्त, निर्विकल्प, श्रद्धायुक्त चित्त से प्रातः काल के समय देवता तथा गुरु को प्रणाम कर, हाथ में फल तथा पुष्प एवं अक्षत लेकर, आदर पूर्वक ज्योतिषी का सम्मान करके, शुभ दिशा की ओर अपना मुख कर, प्रश्नकर्त्ता को चाहिए कि वह शुद्ध एवं एकाग्रचित्त से एक ही बार प्रश्न पूछे ॥ २-३॥ फिर ज्योतिषी को उचित है कि वह प्रश्नाक्षरों से तथा बाहर के अन्य शकुनों पर विचार करके प्रयत्न पूर्वक शुभाशुभ फल को कहे ॥ ४॥ फल और पुष्पों से शोभित वृक्ष युक्त, जल युक्त, गोमय युक्त अर्थात गोबर से लिपी-पुती एवं पृच्छक के चरणों को सुखदायक, ऐसी भूमि में बैठकर प्रश्न करने से ही मनवांछित फल की प्राप्ति होती है ॥ ५॥ दृष्टि तथा चित्त को सुखदेने वाली भूमि यदि देखने और सुनने में मंगलदायक कोई वस्तु उपस्थित हो तो प्रश्न का शुभ फल प्राप्त होता है ॥ ६॥ पूर्वोक्त पाँच शुभ वस्तुओं की उपस्थिति प्रश्नकर्त्ता के लिए इष्ट लाभ कराने वाली तथा अशुभ वस्तुओं की उपस्थिति अनिष्टकारक होती है ॥ शुभ और अशुभ — दोनों संख्या में बरा-
-बर हों तो उनके बलाबल का विचार करके ही दृष्ट अथवा अनिष्ट फल समझना चाहिए ॥ ७॥

अथ शुभाशुभ विचार ॥ भावः स्वेशेनेक्षितो वा युतः स्यात्पापादन्यैर्वापि तस्यास्ति वृद्धिः सौम्या यस्यांत्यास्तखस्थांबुगा वा पापैरेवं हानिरादेशनीया ॥ १॥ पर्यायसंज्ञा चैतेषां कथ्यते मुनिसंमता । कार्यसंज्ञा च तस्योक्ता तस्मात्प्रश्नविचारणा ॥ २॥ आरोग्यपूजागुणकल्यवृत्तमायुर्वयोजातिरदोषसौख्यम् । क्लेशाकृती लक्षणरूपवर्णास्तद्भागिनेयस्य वधूस्तनौ स्यात् ॥ ३॥ माणिक्यमुक्ताफलरत्नधातुद्रव्यांबरस्वर्णहयादि कार्यम् । रूप्यं सधान्यक्रयविक्रयादि साधारणं तद्भवति द्वितीये ॥ ४॥

स्नुषानुजक्षेम सुबुद्धि लाभ भृत्यादि दासी भटकर्म कर्तुः । भ्रात्रादिचिंताविषयं समग्रं पर्यायमेतत् कथितं तृतीये ॥ ४॥ गृहं निधानं विवर प्रवेशो महौषध क्षेत्र खलादि वाटी। सुहृज्जलं वै पितृप्रयोगो गमागमौ ग्राम सुखादिकं च ॥ ६॥ स्थानच्युतिर्लाभ गृहप्रवेशौ वृद्धिर्जनित्री जनकश्च तद्वत् । देशादि कार्याण्यपि लाभमस्य पर्यायमेतत्कथयंति तुर्ये ॥ ७॥ नाना प्रयोगो विनय प्रबंधं विनेयविधानय बुद्धि मंत्राः । संधानगर्भागमवादिकं च प्रज्ञा सुतार्थस्य च पंचमे स्यात् ॥ ८॥ अस्वास्थ्य दौस्थित्य विपक्ष दास क्रूरोग्र कर्म परकृत्यशंका । युद्धादितन्मातुल माहिषाद्यं रोगोऽपि चिंत्यो रिपुभाव तुल्यः ॥ ९॥ वस्तु क्रय स्वास्थ्य वणिज्यवाद कामोदयो दास कलत्र चौर्यम् । निवृत्ति स्वस्त्रेयगमागमाद्यं कलत्रपर्यायमिदं निरुक्तम् ॥ १०॥ आयुर्विरोधो निधनं च राज्यं भेदोऽथवा बन्धुजनस्य छिद्रम्। वैषम्य दुर्गादिकलत्रशत्रुवधो नदीतारणमष्टमर्क्षे ॥ ११॥ स्वाध्याय दीक्षा सुरगेह यात्रा नृपाभिषेको गुरु धर्मकृत्यम् । जलाशयश्यालक देवरादीन् भ्रातुर्गृहिण्यो नवमस्य पूर्वैः ॥ १२ आकाश वृत्तांत जल प्रपातः स्थानं पितुः कार्यसुखादिमानम् । पुण्यं नृपत्वं च तथाऽधिकारो मुद्राच्युतिस्तद्दशमस्य तुल्यम् ॥ १३॥ कार्यस्य वृद्धिः क्रयवृद्धि लब्धिर्गजाश्ववस्त्रादिक यान शय्याः । स्वर्णानुवित्ताप्तहृतादि कन्यालाभो गजादेः श्वशुराद्यमाये ॥ १४॥ त्यागादिभोगेष्टि विवाह दान कृष्यादि कर्म व्यय संक्षतिश्च । पितृव्य मातृष्वसृमातुलानी युद्धेक्षणं युद्धपराजयोऽन्त्ये ॥ १५॥

टीका॥ जो भाव अपने स्वामी अथवा शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, उस भाव की वृद्धि होती है। द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, दशम तथा द्वादश — इन भावों में शुभग्रह होने से भी वृद्धि होती है तथा इन्हीं भावों में यदि पापग्रह हों तो हानि होती है॥ १॥ अब प्रश्न-विचार के हेतु द्वादश भावों की पर्याय संज्ञा तथा कार्य संज्ञा के विषय में कहा जाता है॥ २॥ आरोग्य, प्रजा, गुण, कल्प, वृत्त, आयु, अवस्था, जाति, निर्दोषता, सुख, क्लेश, आकृति, लक्षण, रूप, वर्ण तथा भानजे की पत्नी – इन सबके

विषय में प्रथम भाव से विचार करना चाहिए ॥ ३ ॥ माणिक्य, मोती, रत्न, धातु, द्रव्य, वस्त्र, स्वर्ण, घोड़े आदि का काम, चाँदी तथा धान्य सहित सभी पदार्थों के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में सामान्य विचार द्वितीय भाव से करना चाहिए ॥ ४ ॥ पुत्रवधू, छोटा भाई, कल्याण, सद्बुद्धि, लाभ, नौकर, दासी, योद्धा-कर्म, तथा भाइयों आदि की चिन्ता विषयक बातों पर तृतीय भाव से विचार करना चाहिए ॥ ५ ॥ गृह, निधि, गुहा आदि छिद्र-स्थानों में प्रवेश, औषध, खेत, खला, बगीचा, मित्र, जल, पितृोपत्ति का प्रयोग, आना-जाना गाँव का सुख, स्थान, हानि, लाभ, गृह-प्रवेश, वृद्धि, माता, पिता, देश आदि का कार्य तथा लाभ के सम्बन्ध में चतुर्थभाव से विचार करना चाहिए ॥ ६-७ ॥ अनेक प्रकार के प्रयोग, विनय, प्रबंध, वि-नेय, नीति, विद्या, बुद्धि, मन्त्र, सन्धि, गर्भ, पुत्र तथा प्रज्ञा आदि के सम्बन्ध में पंचमभाव से विचार करना चाहिए ॥ ८ ॥ अस्वास्थ्य, बुरी अवस्था, शत्रु, दास, क्रूर-कर्म, उग्र-कर्म, शत्रु द्वारा किए जाने वाले मारणादि के प्रयोग, शंका, युद्ध, मामा, भैंस तथा रोग — इन सबके विषय में षष्ठभाव से विचार करना चाहिए ॥ ९ ॥ किसी भी वस्तु को बेचना, स्वास्थ्य, वाणिज्य, वाद, काम-विकार, दास, स्त्री, चोर-कर्म, निवृत्ति, भानजा एवं आना-जाना — इन सबके विषय में सप्तम भाव से विचार करना चाहिए ॥ १० ॥ आयु, विरोध, मृत्यु, राज्य, भेद, बन्धुजनों का छिद्र, विषमता, गढ़, दुर्ग आदि, स्त्री, शत्रु का वध, एवं नदी में तैरना — इन सबके विषय में अष्टम भाव से विचार करना चाहिए ॥ ११ ॥ वेदाध्ययन, दीक्षा, देव-मन्दिर, यात्रा, राज्याभिषेक, गुरु, धर्म-कर्म, जलाशय, साला, देवर तथा भाभी — इन सब के विषय में नवमभाव से विचार करना उचित है ॥ १२ ॥ आकाश का वृत्तान्त, जल-वर्षा और जल का स्थान, पिता का कार्य, सुख आदि, मान, पुण्य, राज्याधिकार, पद, सिक्का एवं स्थान-भ्रष्टता — इन सब के विषय में दशमभाव से विचार करना चाहिए ॥ १३ ॥ कार्य की वृद्धि, खरीदी हुई वस्तु की वृद्धि

और लाभ, हाथी, घोड़ा, वस्त्र, वाहन, शय्या, स्वर्ण आदि द्रव्य का हरण, कन्या तथा गज आदि का लाभ, एवं श्वसुर- इन सबके विषय में एकादश भाव से विचार करना चाहिए ॥ २४ ॥ त्याग, भोग, इष्टि, विवाह, दान, कृषि आदि कर्म, व्यय, क्षय, काका (चाचा), मौसी, माई, युद्ध-दर्शन तथा युद्ध में हार- इन सबके बारे में द्वादशभाव से विचार करना चाहिए ॥२५॥

यद्यद्भावेषु यद्वस्तु कथितं यवनादिभिः। तत्कार्यं संलग्नमाख्यातं ततः प्रश्नविचारणा ॥२६॥ यस्य भावस्य यद्वस्तु प्रश्नमात्रे प्रकाशितम्। तत्पृच्छायां तु तल्लग्नमेवं वा पूर्ववद्भवेत् ॥ २७॥ यद्यद्भावेषु यत्कर्म तस्माल्लग्नव्यवस्थितिः। अतीतानागते कार्ये त्वतीतानागतादपि ॥ २८॥ मूर्द्धोदये सौम्य विलग्नगे वा लग्नेऽपि वा सौम्ययुते शुभं स्यात्। अतोऽन्यथात्वे तु तदन्यथात्वं मिश्रं विमिश्रैरधिकं बलाढ्यैः ॥२९॥ केन्द्रोपगा नवमपञ्चमगाश्च सौम्याः केन्द्राष्टवर्ज्यमशुभास्त्रिषडाय संस्थाः। सर्वार्थसाधनकराः परिपृच्छतां स्युरेभिर्विपर्ययगुणैस्तु विपर्ययः स्यात् ॥२०॥ केन्द्राधिनाथो यदि लग्नगः स्यात्तन्मित्रमेतस्य च केन्द्रगं वा। व्ययाष्टकेंद्राण्यपहाय पापाश्चान्यत्र याता यदि तच्छुभं स्यात् ॥२१॥ नरराशिलग्नमभिवीक्षितं शुभैरुदयास्तबन्धु दशगैः शुभैस्तथा। त्रिकलाभषष्ठभगतैस्तथा शुभैः शुभलाभवित्तविषयांस्तदा वदेत् ॥ २२॥ कन्या तुला च मिथुनं च घटो नृराशिश्चैतेषु सौम्यसहितेषु शुभं विभाव्यम्। पापा व्ययाय भगता न शुभा विलग्ने पापः शशी न शुभदो दशमे शुभश्च ॥ २३॥ चतुष्पदे वा द्विपदे विलग्ने पापग्रहस्थेन तदीक्षितैश्च। शुभग्रहैस्त्वीक्षित एव दृष्टं नृराशि लग्ने तु शुभं समस्तम् ॥ २४॥ उदय तुहिनदीधिती भवेतां यदि च शुभैरभिवीक्षितौ तदानीम्। शुभमशुभमतोऽन्यथेत्यभीष्टं गुणगण मौलिमणेः शशिप्रभोस्तु ॥ २५॥

टीका ॥ जिस-जिस भाव में आचार्यों ने जिन-जिन बातों पर विचार करने के

विषय में कहा है। उस-उस वस्तु के नाम से ही उस भाव का नाम है. अत: उस भाव से ही प्रश्न का विचार करना चाहिए ॥१६॥ जिस भाव की जो वस्तु प्रश्न में प्रकाशित हुई है. उस प्रश्न में उसी भाव को लग्न समझना चाहिए। अर्थात् प्रश्न कुण्डली में जिस वस्तु के विषय में विचार करना हो, उस वस्तु से सम्बन्धित भाव को ही लग्न मान कर विचार करना चाहिए ॥ १७॥ जिस भाव में जो कर्म कहा गया है, उस पर से लग्न का उपरोक्त रीति से निश्चय होगा, परन्तु भूत एवं भविष्य काल के प्रश्न में अनुक्रम से लग्न के द्वादश तथा द्वितीय भाव को लग्न समझना चाहिए ॥१८॥ शीर्षोदय अर्थात् मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ – प्रश्न-लग्न हो अथवा शुभ लग्न हो अथवा लग्न में कोई शुभग्रह हो तो प्रश्न का फल शुभ होता है। इससे विपरीत पृष्ठोदय अर्थात् मेष, वृष, कर्क, धनु अथवा मकर लग्न हो अथवा पाप-राशि की लग्न हो अथवा लग्न में पापग्रह हो तो अशुभ फल समझना चाहिए, मिश्र-स्वभाव की लग्न होने पर मिश्र-बलाबल का विचार करके फल कहना चाहिए ॥१९॥ केन्द्र-अर्थात् लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव तथा नवम एवं पंचम भाव में शुभ ग्रह हों तथा केन्द्र से अष्टम वर्जित तृतीय, षष्ठ एवं एकादश भाव में अशुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्ता की सभी कामनाऐं सिद्ध होती हैं। इससे अन्यथा हो तो अर्थ की हानि होती है ॥ २०॥ केन्द्र का स्वामी लग्न में गया हो. अथवा उस का मित्र केन्द्र में हो तथा पापग्रह केन्द्र एवं द्वादश भाव के अतिरिक्त अन्यत्र बैठे हों तो शुभ फल होता है॥ २१॥ यदि नर-राशि की अर्थात् मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुंभ-लग्न शुभग्रह से दृष्ट हो अथवा लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में शुभ ग्रह हों तथा तृतीय, षष्ठ एवं एकादश-इन भावों में पापग्रह स्थित हों तो शुभ, लाभ, एवं धन की प्राप्ति आदि फल कहना चाहिए ॥२२॥ यदि कन्या, तुला, मिथुन और कुंभ तथा नर-राशि में शुभग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिए। यदि

भा० टी०

मु० सं० ३६०

द्वादश तथा एकादश भाव में पापग्रह हों तो अशुभ फल होता है। यदि चन्द्रमा लग्न में हो तो अशुभ और यदि दशमस्थान में हो तो शुभ समझना चाहिए। लग्न, द्वितीय, दशम और एकादश - इन भावों में शुभग्रह पापग्रह से युक्त हों तो भी बड़ी सिद्धि को देते हैं ॥२३॥ यदि लग्न में चतुष्पद अथवा द्विपद राशि हो और वह पापग्रह से युक्त हो तथा उस पापग्रह से दृष्ट शुभग्रहों की लग्न पर दृष्टि हो तो वृद्धि होती है। यदि नर-राशि की लग्न हो तो हर प्रकार से शुभ समझना चाहिए॥ २४॥ यदि लग्न और चन्द्रमा पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तो शुभ एवं पापग्रहों की दृष्टि हो तो अशुभ फल होगा। ऐसा चन्द्रमा का अभीष्ट फल कहा गया है ॥ २५॥ इति॥

अथ लाभालाभ विचारम्॥ लाभास्त्रपञ्च सहजेषु शुभग्रहाः स्युर्लाभप्रदा ददति नेष्ट फलानि पापाः। स्थानं शुभा दशमसप्तमगाश्च दद्युर्मानार्थदा द्वितियपञ्चमलग्नगाश्च ॥१॥ चन्द्रं सप्तदशद्विषष्ठसहजायस्थानसंस्थं शुभः। पश्येद्वै प्रमदाकृतं शुभफलं लाभादिकं स्यात्तदा॥ लग्नाष्टत्रिनवात्मजेषु च भयं कार्यार्थनाशोऽशुभै रेतेष्वेव गताः शुभास्तु शुभदा मानार्थसम्पत्तये ॥२॥ त्रिकोणकेन्द्रालयगाः शुभग्रहास्तथाऽशुभाश्चत्र्यरिलाभगा यदि। भवंति लाभाय तदाऽऽशु पृच्छतां विपर्ययस्थास्तु न लाभदा अमी ॥३॥ चन्द्रश्चतुर्थे यदि सप्तमे शुभो विलग्नगो वा दशमे विवस्वान् ।स्याद र्थलाभो मनुजस्य वाच्यस्तदेति सत्यो बलिरेवमाह ॥४॥ वृषहर्यालिघटैः स्थानप्राप्तिं वदेन्नचर राशौ। द्वितनौ लग्नोपगते चरस्थिरोक्तं फलं दलतः ॥५॥

टीका॥ तृतीय, पंचम, सप्तम तथा एकादश - इन भावों में शुभग्रह लाभदायक होते हैं तथा पापग्रह नेष्ट फल देते हैं। दशम तथा सप्तम स्थान में शुभग्रह लाभ देते हैं। लग्न, द्वितीय तथा पंचम स्थानों में शुभग्रह सम्मान तथा धन देने वाले सिद्ध होते हैं ॥१॥

द्वितीय, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, दशम तथा एकादश — इन स्थानों में शुभग्रहों से दृष्ट चन्द्रमा स्थितहो तो वह स्त्री सम्बन्धी शुभ-फल एवं लाभ को देता है। लग्न, तृतीय, पंचम, अष्टम तथा नवम भाव में अशुभ ग्रह से दृष्ट चन्द्रमा भयदायक होताहै तथा कार्य एवं अर्थ का नाश करता है। इन्हीं भावों में शुभ ग्रहों की स्थिति सम्मान एवं धन-सम्पत्ति देने वाली होती है॥२॥ नवम, पंचम तथा केन्द्र-चतुष्टय एवं लाभ स्थान में शुभग्रह तथा तृतीय, षष्ठ एवं एकादश स्थान में अशुभ ग्रह हों तो प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। इस के विपरीत-स्थिति में लाभ नहीं होता॥३॥ यदि चन्द्रमा चतुर्थ अथवा सप्तम भाव में हो तथा सूर्य लग्न अथवा दशम भाव में बैठा हो तो मनुष्य (प्रश्नकर्त्ता) को तत्काल अर्थ-लाभ होता है॥४॥ यदि वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुंभ - ये लग्नमेंहों तो प्रश्नकर्त्ता को स्थान का लाभ होताहै। यदि मेष, कर्क, तुला अथवा कुंभ — ये राशियाँ लग्न में हों तो स्थान का लाभ नहीं होता। यदि लग्न में मिथुन, कन्या, धनु अथवा मीन राशि हो तो आधा लाभ होताहै॥५॥ इति॥

अथ सामान्य गमनागमन विचारम्॥ स्थिरे विलग्ने न गमागमौ स्तश्चरे विलग्ने तु विनिश्चितौ तौ। मिश्रं फलं स्याद्द्वितनौ तदर्धं द्वये चरस्थावरवत्तदूह्यम्॥१॥ सूर सौरिगुरु सौम्य सिता नामिकोऽपि चरलग्नगतश्चेत्। आशु तर्हि गमनं स्पृहणीयं वक्रतामुपगतस्तु न हीति॥२॥ स्थिर राशिलग्नवर्ती गुरुबुधसितभास्करेषु यद्येकः। गंतुः पथो निवृत्तिं जनयति निःसंशयं प्रश्ने॥३॥ रविर्वा गुरुर्वा बुधो वा सितो वा भवेदाद्यराशिस्थितः प्रश्नकाले। गतिः पृच्छतः शीघ्रमेवाभिधेया निवृत्तिं पथोऽमीभिरंत्यालयस्थैः॥४॥ सौरांगिरसौ यद्येदेकोऽपि वा स्थिरं समुपयातम्। प्रष्टाऽऽगमनं पृच्छेत्तस्यागमनं न वक्तव्यम्॥५॥ षष्ठत्रिकोण संस्थैः पापैश्च पापसंदृष्टैः। गमनागमनं न वाच्यं स्थिर लग्ने चेच्चरे तु विपरीतम्॥६॥ चन्द्रतोऽथ यदि वा विलग्नतो द्वादशद्वितयराशि-

-गामिन: । शुक्र वाचस्पति शशांक नन्दना: का गमाऽऽगमकथाऽस्ति पृच्छत: ।।७।। बलेन सर्वोत्तमतामुपागतो गृहो गृहे यावति लग्नतो भवेत्। प्रवासत स्तत्सम संख्य मासतो निवर्तनं गन्तुरसंशयं वदेत् ।।८।। चरांशक-स्थे किल काल एव स्थिरांशके तद्द्विगुणस्तु वाच्य: । द्विदेह लग्नांश गते गृहे तु विचिन्तित स्तत्त्रिगुणो विधेय: ।।९।। यातु: पृच्छालग्नत: सप्तमस्य स्वामी यायाद्यावता वक्रभावम् । कालेनैति प्रस्थितस्ता-वतेति प्राहुस्त्वेते प्रश्न तत्त्व प्रवीणा: ।।१०।।

टीका।। स्थिर अर्थात् वृष, सिंह, वृश्चिक एवं कुम्भ - इनमें से कोई एक राशि प्रश्न लग्न में हो तो परदेश में आना - जाना नहीं होता । यदि चर-लग्न हो तो आना - जाना अवश्य होता है। द्वि-स्वभाव लग्न का मिश्र - फल होता है अर्थात् द्विस्वभाव लग्न के पूर्वार्द्ध का फल चर-लग्न जैसा और उत्तरार्द्ध का फल स्थिर -लग्न जैसा होता है ।।१।। सूर्य, शनि, बुध और शुक्र - इनमें से कोई भी ग्रह चर-लग्न में गया हो तो तुरन्त जाना होगा, परन्तु वह ग्रह वक्र गति से गया हो तो जाना नहीं होगा - यह समझना चाहिए ।।२।। लग्नमें स्थिर राशि हो और उसमें गुरु, बुध, शुक्र तथा सूर्य - इनमें से कोई भी एक ग्रह प्रश्न समय में पड़ा हो तो गमनोद्यत व्यक्ति का जाना भी निश्चित रूप से नहीं होगा ।। ३।। रवि, गुरु बुध और शुक्र - इनमें से कोई ग्रह प्रश्न कुण्डली के एकादश भाव में हो तो प्रश्न कर्त्ता को शीघ्र ही परदेश जाना पड़ेगा । यदि इनमें से कोई ग्रह द्वादश भाव में पड़ा हो तो यात्रा तो होगी, परन्तु यात्री मार्ग में से ही पीछे लौट आएगा - यह कहना चाहिए ।।४।। यदि लग्न स्थिर-राशि की हो और उस पर शनि अथवा बृहस्पति की दृष्टि हो तथा परदेश गये हुए मनुष्य के लौटने का प्रश्न हो तो यह कहना चाहिए कि परदेशी मनुष्य अभी नहीं लौटेगा ।।५।। यदि पंचम, षष्ठ तथा नवम भावों में पापग्रह हों तथा उन पर पापग्रहों की ही दृष्टि भी हो और

लग्न स्थिर हो तो आना अथवा जाना - दोनों ही नहीं होंगे, परन्तु यदि चर लग्न हो तो गमनागमन (आना- जाना) होगा ॥ ६॥ शुक्र, गुरु और बुध - ये ग्रह चन्द्रमा अथवा लग्न से बारहवें अथवा द्वितीय स्थान में हों तो परदेश जाना तथा परदेश गए हुए का लौट कर आना - ये दोनों ही न होंगे ॥ ७॥ प्रश्न समय में सब ग्रहों से अधिक बलवान् ग्रह लग्न से जितने घर (भावों) के अन्तर से (अर्थात् दूर) बैठा हो, उतने ही महीने में प्रवासी प्रवास से लौटेगा - यह कहना चाहिए ॥ ८॥ वह बलवान् ग्रह यदि चरराशि के नवांश में हो तो वही पूर्वोक्त समय कहना चाहिए और यदि वह ग्रह स्थिर राशि के नवांश में हो तो भी वही पूर्वोक्त समय कहना चाहिए। परन्तु यदि द्विगुणित एवं द्विस्वभाव राशि के नवांश में हो तो तीनगुना समय कहना चाहिए ॥ ९॥ गमनोद्यत व्यक्ति के प्रश्न लग्न से सप्तमस्थान का स्वामी जितने समय में वक्र गति प्राप्त करेगा, उतनी ही समयावधि में वह पुरुष घर लौट कर आएगा - यह प्रश्न तत्त्ववेत्ता आचार्यों का कथन है ॥ १०॥

अथ शत्रु गमनागमन विचार ॥ पापै रिपुस्थैर्यदि वा सुतस्थैर्निवर्तते वर्त्मन एव शत्रुः चतुर्थगैरंतिकसंगतोऽपि पराङ्मुखो गच्छति भग्न सैन्यः ॥ १॥ चतुर्थगैरलि मीन कर्कटैः पराजयो भवति शुभैर्विलोकनात्। चतुष्पदैः पुनरिह तुर्यवर्तिभिः पलायते नियतमरातिरागतः ॥ २॥ चरोदये भवति यदा शुभग्रहस्तदा भृशं जनयति यायिनो शुभम्। चरोदये त्वशुभसमन्विते शुभं स्थिरोदये भवति शुभं व्यवस्थया ॥ ३॥ स्थिरे शशांके चरराशि लग्ने नवांशके वाऽस्य रिपुस्तदैति। चरे शशांके स्थिर राशि लग्ने नवांशके तस्य तु वागमः स्यात् ॥ ४॥ शीतगौ द्वितनुराशि संस्थिते लग्नतामुपगते यदि स्थिरः। शत्रुरेत्य विनिवर्तते ऽरिभे ह्रेज्य शुक्र सहिते विनश्यति ॥ ५॥ लग्ने स्थिरे गुरु शनैश्चर दृष्टि दृष्टे शत्रोर्न वा गमनमागमनं न वा स्यात्। पापास्त्रिपंचरिपुगा रिपुसंगमाय तुर्ये स्थिताः पुनररातिनिवर्तनाय ॥ ६॥

चन्द्रश्चरे द्वितनुलग्नमथो यथो ऽर्धमागत्य गच्छति रिपुर्द्वितनौ च चन्द्रे। लग्ने चरे रिपुरुपैति बलद्वयेन पापे-
क्षणाद्भवति तस्य पराजयो ऽपि ॥ ७॥ चन्द्रार्कौ यदि हिबुके स्थितौ भवेतामत्युग्रं न हि परचक्रमभ्युपैति।
आक्रांतं गुरु बुध भार्गवैश्चतुर्थं चेत्त्वरितमुपैत्यरिस्तदानीम् ॥ ८॥ सिंहाजकोदण्ड वृषा भवन्ति विलग्नगा
वापि चतुर्थगा वा। ग्रहेण युक्ता यदि वा वियुक्ता ध्रुवं तदा तिष्ठति नैव शत्रुः ॥ ९॥ रवौ गुरौ वा
स्थिर लग्नगामिनः स्थितो रिपुः स्वाश्रम एव निश्चलः। रवौ गुरौ वाथ चरोदयस्थिते वदेदरातेरचिरा-
त्समागमम् ॥ १०॥ सुराचार्य देवद्विषन्मन्त्रिणौ द्वौ द्वितीये तृतीये यथा वा तथा वा। तदा क्षिप्रमायात्यरा-
तिः स्थिरस्थैर्न लग्नेश धर्मेश कर्मेश भेद्यैः ॥ ११॥ यावत्संख्यं भवति रजनीनाथगेहं विलग्नान्नैको ऽपि
स्यान्नियतमनयोर्मध्यवर्ती ग्रहश्चेत्। तावत्संख्यैरपि गतदिनैः शत्रुरागच्छतीति ज्योतिर्विद्याविपुल गणक
ग्रामणीरुद्गृणाति ॥ १२॥

टीका॥ यदि पंचम भाव में अथवा षष्ठ भाव में अथवा तीन से अधिक पापग्रह एक साथ हों तो शत्रु मार्ग में से ही पीछे लौट जाएगा- यह कहना चाहिए। यदि चतुर्थ भाव में इसी प्रकार पाप ग्रह हो तो आया हुआ शत्रु भी अपनी सेना को हटाकर भाग जाएगा॥ १॥ यदि चतुर्थ भाव में वृश्चिक अथवा मीन राशि शत्रु-ग्रह से दृष्ट हो तो शत्रु की हार होगी। यदि मेष, वृष अथवा सिंह में से कोई राशि चतुर्थ भाव में हो तो सामने आया हुआ शत्रु भी भाग जाएगा - यह कहना चाहिए॥ २॥ यदि लग्न चर हो और वह शुभग्रह से युक्त हो तो शत्रु पर चढ़ाई करने वाले राजा को सफलता मिलेगी और यदि अशुभ ग्रह से युक्त हो तो अशुभ फल होगा। स्थिर लग्न हो तो व्यवस्था करके अर्थात् उक्त फल स्थायी और शुभ होगा॥ ३॥ स्थिर राशि का चन्द्रमा हो तथा चर-राशि के लग्न-चन्द्र हों अथवा चर-स्थिर राशि के नवांश में अनुक्रम से चन्द्र और लग्न हों तो शत्रु चढ़कर तो आयेगा, परन्तु पीछे लौट जाएगा अर्थात् चरराशि

का चन्द्रमा और स्थिर राशि का लग्न हो अथवा नवांश हो तो शत्रु पीछे लौट जाएगा ।। ४ ।। यदि द्विस्वभाव राशि का चन्द्रमा और स्थिर राशि का लग्न हो तो शत्रु पीछे लौट जाएगा । यदि इसी योग में छठे स्थान में बुध, बृहस्पति और शुक्र बैठे हों तो शत्रु का नाश होगा — यह कहना चाहिए ।। ५ ।। यदि गुरु तथा शनि की दृष्टि से दृष्ट स्थिर लग्न हो तो शत्रु का गमन अथवा आगमन में से कुछ भी नहीं होगा । यदि तीसरे, पाँचवें तथा छठे स्थान में पापग्रह हों तो शत्रु से सामना होगा तथा चौथे स्थान में पापग्रह हों तो शत्रु लौट जाएगा — यह कहना चाहिए ।। ६ ।। यदि चन्द्रमा चर राशि में हो तथा लग्न में द्विस्वभाव राशि हो तो शत्रु आधे मार्ग से पीछे लौट जाएगा । यदि चन्द्रमा द्विस्वभाव राशि में हो तथा लग्न चर राशि की हो तो शत्रु दूनी सेना साथ लेकर सामने आयेगा, परन्तु यदि चन्द्रमा और लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो उसकी हार भी होगी ।। ७ ।। यदि चन्द्रमा और सूर्य चतुर्थ स्थान में हों तो पराई सेना नहीं आयेगी । यदि गुरु, बुध और शुक्र चतुर्थ स्थान में हों तो शत्रु शीघ्र आयेगा — यह कहना चाहिए ।। ८ ।। यदि मेष, वृष, सिंह तथा धनु — इनमें से कोई भी राशि लग्न अथवा चतुर्थ स्थान में हो और उस स्थान में कोई ग्रह हो अथवा न हो तो भी शत्रु सामने नहीं ठहर पायेगा — यह निश्चित है ।। ९ ।। यदि लग्न स्थिर हो और वहाँ सूर्य अथवा गुरु बैठा हो तो शत्रु अपने घर में ही निश्चल होकर बैठा है — यह समझना चाहिए, यदि सूर्य अथवा गुरु चर लग्न में हों तो शत्रु शीघ्र आयेगा — यह कहना चाहिए ।। १० ।। यदि गुरु और शुक्र द्वितीय अथवा तृतीय स्थान में अलग-अलग अथवा एकत्र बैठे हों तो शत्रु का आगमन शीघ्र होगा, परन्तु लग्न, नवम एवं दशम स्थानों के स्वामी जिन-जिन राशि में हों, उन-उन राशियों के स्वामी उक्त ग्रहों की राशि में हों तो शत्रु का आगमन नहीं होता ।। ११ ।। लग्न से जितने घर के अन्तर पर चन्द्रमा का घर हो और उन दोनों के बीच कोई ग्रह न हो तो उतने ही अन्तर तुल्य दिन बीतने पर शत्रु का आगमन

होता है — ऐसा श्रेष्ठ ज्योतिषी कहते हैं ॥ २२ ॥ इति ॥

अथ प्रवास-चिन्ता विचारम् ॥ लग्नतः सहजपुत्रवित्तगा दूरगागमनशंसिनो ग्रहाः। नष्टलम्भन कराः शुभग्रहाः शीघ्रमागमकरौ तु मन्त्रिणौ ॥ १ ॥ बृहस्पतौ केन्द्रगते तु कश्चन ग्रहो भवेत् षष्ठगतोऽथ सप्तमः भवेत्तदा प्रोषितपूरुषागमस्त्रिकोणगे चन्द्रसुते सितेऽपि वा ॥ २ ॥ अष्टमे शशिनि पापवर्जिते कंटके सुखमुपैति चाध्वगः। कंटकस्थितशुभग्रहैः शुभं स्वं निवासमयमेति लाभवान् ॥ ३ ॥ पृष्ठे लग्ने पापदृष्टे वधो वा बंधो वा स्यात्सौम्य दृष्टे तु न स्यात्। पापे षष्ठे केन्द्रगे वा तृतीये नष्टो भ्रष्टः स्थानतः प्रच्युतो वा ॥ ४ ॥ यथातथा यदि भवतः कथंचन द्वये त्रये सुरगुरुदैत्यमंत्रिणौ। प्रवासिनां भवति तदाऽऽगमो नृणां तुरीयगौ नियतगृह प्रवेशदौ ॥ ५ ॥ पापकैः षष्ठलाभत्रिकस्थायिभिः सौम्यकैः किंच केन्द्र त्रिकोणस्थितैः। दूरगस्यागमो निर्विशंकं स्फुटं जल्पनीयो ग्रहग्रंथविद्भिः सदा ॥ ६ ॥ अशुभर्क्षगतोऽशुभैश्च दृष्टश्चतुरस्रगृहेऽथवा त्रिकोणके। दिवसेश्वरनंदनोऽध्वगानां नियतं शंसति बन्धनं तदानीम् ॥ ७ ॥ शुभयुक्ते स्थिर लग्ने सुस्थिर बंधस्त्वेर त्वशुभयुक्ते। क्षिप्रं भवति विमोक्षो द्वितनौ कालक्रमान्मोक्षः ॥ ८ ॥ अरिभिरवलोक्यमानास्त्रिकोणयामित्रगाः पापाः। पृष्ठोदयं विलग्नं सौम्यादृष्टं च पांथमरणाय ॥ ९ ॥ अध्वस्थाने सौम्यैरध्वा निरुपद्रवोऽध्वनीनस्य। भयरोग परिक्लेशाः पापैर्लग्नस्थितैस्तस्य ॥ १० ॥ गृहे ग्रहो यावति लग्नतो भवेत्तदा हता द्वादश राशयः स्फुटम्। अवेहि तावद्दिवसैर्गतागमं निवर्तनं वक्रगतग्रहेण च ॥ ११ ॥

टीका ॥ यदि लग्न से दूसरे, तीसरे तथा पाँचवें भाव में ग्रह बैठे हों अथवा दूर स्थान में हों तो परदेश गया हुआ मनुष्य दूर चला गया है — यह कहना चाहिए; परन्तु यदि वे शुभग्रह हों तो परदेश गया हुआ मनुष्य आवेगा। यदि उक्त स्थानों में गुरु तथा शुक्र हों तो शीघ्र आयेगा - यह कहना चाहिए ॥ १ ॥ यदि गुरु केन्द्र में हो तथा छठे अथवा सातवें भाव में भी कोई ग्रह हो तो

परदेश गया हुआ मनुष्य लौट कर आयेगा। यदि बुध अथवा शुक्र नवम अथवा पंचम भाव में हों तो भी प्रवासी आयेगा — यह कहना चाहिए॥२॥ यदि अष्टमस्थान में पापग्रह से रहित चन्द्रमा हो तथा केन्द्र में भी कोई पापग्रह न हो तो प्रवासी मनुष्य सुख पूर्वक घर लौटेगा। यदि केन्द्रों में शुभ ग्रह भी हों तो वह लाभ अर्जित करके लौटेगा — यह कहना चाहिए॥३॥ यदि पृष्ठोदय लग्न हो और उस पर पापग्रह की दृष्टि हो तो प्रवासी मनुष्य का वध अथवा बन्धन होगा, परन्तु यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो ऐसा नहीं होगा। यदि षष्ठभाव में, केन्द्र में तथा तृतीय स्थान में पापग्रह हों तो प्रवासी अपने स्थान से भाग गया है अथवा च्युत या स्थान-च्युत हुआ है — यह कहना चाहिए॥४॥ यदि गुरु तथा शुक्र किसी भी प्रकार से द्वितीय तथा तृतीय स्थान में बैठे हों तो प्रवासी पुरुष का आगमन होगा। यदि चतुर्थ स्थान में हों तो प्रवासी का घर में प्रवेश होगा॥५॥ यदि तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें स्थानों में पापग्रह हों तथा लग्न, चतुर्थ, सप्तम, दशम, पंचम और नवम अर्थात् केन्द्र और त्रिकोण में शुभग्रह हों तो दूर गए प्रवासी का निश्चित रूप से आगमन होता है॥६॥ यदि अशुभग्रह से दृष्ट तथा अशुभ राशिस्थित शनि चौथे, आठवें, पाँचवें अथवा नवें स्थान में बैठा हो तो 'प्रवासी निश्चित रूप से बन्धन में पड़ा है' — यह कहना चाहिए॥७॥ इस योग में यदि लग्न में स्थिर राशि हो तथा शुभग्रह बैठा हो तो बन्धन स्थिर होगा, यदि अशुभग्रह युक्त चर लग्न हो तो शीघ्र ही बन्धन-मुक्ति होगी और यदि द्विस्वभाव लग्न हो तो कुछ विलम्ब के बाद बन्धन से छुटकारा मिलेगा॥८॥ यदि पंचम, नवम तथा सप्तम भाव में पापग्रह हों और उन पर उनके शत्रु-ग्रहों की दृष्टि हो तथा लग्न पृष्ठोदय हो तो प्रवासी की मृत्यु होगी — यह समझना चाहिए॥९॥ यदि नवम स्थान में शुभग्रह हो तो मार्ग-चलने वाले को मार्ग में किसी प्रकार का उपद्रव नहीं होगा, परन्तु यदि लग्न में पापग्रह हो तो मार्ग में चलने वाले को भय, रोग, क्लेश आदि होंगे॥१०॥ यदि

आगमन योग कारक ग्रह लग्न से जितनी संख्या के घर में हो, उस संख्या से राशि अर्थात् १२ को गुणा करके जो अङ्क प्राप्त हो, उतने ही दिनों में प्रवासी का आगमन होगा तथा वक्रगति ग्रह लग्न से जितने घर के अन्तर पर हो। प्रवासी उतने ही दिनों में परदेश से लौटेगा– यह कहना चाहिए ॥ ११॥ इति ॥

अथ जय-पराजयविचारम् ॥ दशम सप्तम लग्नगताः शुभा नगरवासिनृपस्य जयप्रदाः। शनिकुजौ नवमे भयभङ्गदौ विजयदा गुरुभार्गव चन्द्रजाः ॥ १॥ नागराश्चक्रभागैस्तृतीयादितः प्रश्नलग्नाच्च धर्मादितो यायिनः । तत्र सौम्येन जुष्टो जयप्राप्तिदः पापजुष्टस्तु भागो भवेद्भङ्गभाक् ॥२॥ मिश्रयुक्ते विमिश्रं फलं निर्दिशेत्तद्द्विरूपं फलं केचिदाचक्षते । पंक्तिलाभव्ययस्थास्तु पापग्रहा यातुरिष्टाः परं तत्पुरस्थाः शुभाः ॥३॥ मिथुन तुला घट कन्या मेषाणामेकको ऽपि पापयुतः। यदि भवति तदा विजयो गन्तुः स्थास्नोर्भवेद्भङ्गः ॥ ४॥ लग्ने नृराशि भवने यदि सन्ति सौम्याः केन्द्रव्ययायभवनेष्वशुभा भवन्ति। सन्धिस्तदा ध्रुततरं प्रवदेन्नराणां पापैर्द्विदेहगृहगैस्तु विरोधमाहुः ॥ ५॥ केन्द्रस्थिता यदि शुभा यदि वा भवन्ति लग्ने नृराशि भवने शुभदृष्टिपुष्टः । प्रीतिस्तदा भवति पापविलोकितैस्तु पापैरमीषु भवनेषु भवेद्विरोधः ॥६॥ अशुभग्रहस्य लग्ने बलिभिस्त्वशुभैश्च वीक्षिते युक्ते। युद्धं महदादेश्यं क्षुद्रं सौम्यग्रहैर्दृष्टे ॥७॥ सूर्यसमीरण सुरगुरुशुक्रान् समरे पृष्ठतः कृत्वा। जयति परान्केवलमपि परमफलं प्राह यवनेन्द्रः ॥८॥ केन्द्रगमर्के केन्द्री यदि शनिरुद्वीक्षते तदा भंगः। एवंविधशनिदृष्टे मृत्युगते ऽर्के भवेन्मृत्युः ॥९॥ लग्ने खवाष्टमगे शशांके कुजार्कजाभ्यामवलोक्यमाने। अर्के ऽष्टमे लग्नगते च चन्द्रे भंगो भवेत् प्रष्टुर संशयेन ॥१०॥ लाभस्थिताश्च शशिभास्करजीवसूर्यभृगुजास्तनया हि लोक दुश्चिक्य लग्न भवने परिपृच्छतः स्युः। भूमिपुत्रा यायी विजित्य रिपुमेति गृहं कृतार्थः ॥ ११॥ लग्ने वा क्षितिसुत मंदयोः सुतस्थे जीवे ऽर्के दशमगृहाश्रिते विलग्नात्। लाभे वा नभसि सितेन्दुपुत्रयोर्वा प्रश्नेवं समिति रिपूञ्जयत्यवश्यम् ॥ १२॥

जीव तीव्रकर शीत मयूखैर्लग्नशत्रुदशगैर्जयसिद्धिः। तद्वदेव गुरु भार्गव सूर्यैर्लग्नशत्रुदशगैरवधार्यम् ॥२३॥ आये गुरौ स्यात्सचिवस्य लाभः कर्मस्थयोः सूर्यजभौमयोश्च। चतुर्थगे द्वेऽष्टमगे शशांके जायास्थिते चापि भृगौ जयः स्यात् ॥२४॥ दशम गेहगते क्षितिनन्दने किरणमालिनि लाभगृहं गते। सहजगेऽर्कसुते रिपुगे विधौ तदितरैरुदयालयगैर्जयः ॥२५॥ भूमिनन्दन तीव्रभानुशनैश्चरैः सहजस्थितैर्लग्नगैश्च शुभग्रहैरिह पृच्छतां विजयः स्फुटः। लग्नशालिनि वा गुरौ विधुभैस्तु लाभगृहागतैः कर्मगैरथवा जयो भवतीति चाह पराशरः ॥२६॥ क्षिति सुत सूर्य सुतौ यदि षष्ठे सुरगुरुचन्द्रमसौ च विलग्ने। शशिसुत दैत्यगुरू यदि चाये दिवसकरो दशमश्च जयाय ॥२७॥ नवमात्मज लग्नगैरिह स्याच्छनिशीतांशुकुजैर्नृपस्य भङ्गः। वसुधासुत दृष्टयोर्विलग्ने शशभृन्मंदगयोर्भवेच्च मृत्युः ॥२८॥ अष्टमे कुजयुते शनैश्चरे लग्नगे च मरणं दिवाकरे। त्र्यायमृत्युषु च रोहिणीपतौ स्याद्वधः समिति भास्करानुगे ॥२९॥ कुजबुधशनिभिः स्मरस्थितैर्भवति रिपूनथ गच्छतो वधः। उदयगृहगयोः सितारयोरपि च रिपूपचयः क्षुधा मृतिः ॥२०॥ विज्ञेया : क्षितिसुतमन्दयोर्विलग्ने षष्ठर्क्षे बुधसितयोरिहाष्टमर्क्षे। तीक्ष्णांशोर्ध्रुवमिति पापिनो रिपूणां संग्रामे पटुतरमन्त्रिणो वधाय ॥२१॥ विलग्नात्मजस्थान संस्थैरवश्यं वधं प्रष्टृपुत्रस्य जानीहि पापैः। सचन्द्रे कुजे लग्नगे सौरिदृष्टे पुनः सङ्गरे भङ्ग एव प्रदिष्टः ॥२२॥ द्यूनने धनगते सितयुतौ लग्नगामिनि च तीक्ष्णदीधितौ। गच्छतः समिति वा विपर्यये त्रासभङ्गमरणागमा ध्रुवम् ॥२३॥ द्वित्रिकेन्द्रास्थितैः पापरूपैर्ग्रहैः शक्तिहानिं वहद्भिः स्वकीयां शुभैः। अष्टमस्थे निशानायके भूभुजां बन्धनाशात्ययाः स्फुरणे पृच्छताम् ॥२४॥ द्यूने महीनन्दन चन्द्रयोः स्याद् बुधोऽर्क लग्ने स्वबलस्य भेदः। यमारयोस्तद्वदवेहि भङ्गं युद्धे बुधाहस्करयोस्तथैव ॥२५॥ सर्वैरमीभिर्नवमस्थितैस्तु हन्यान्नृपो मन्त्रिपुरोहितादीन्। अत्रैव योगे च शशी विलग्ने सदेशिकाश्वस्थपतिस्वपुत्रान् ॥२६॥ अर्कसूर्यसुतयोश्च विलग्ने दृष्टयोश्च धरणीतनयेन। अस्तगे शशधरे बलहीनैर्वाहिनीपतिवधः किल सौम्यैः ॥२७॥ अस्तगे

शशिना लग्नगे खावष्टमे कुजशनैश्चरो यदा। ह्यस्तृतीयगृहगस्तदा रणे मंत्रिणा सह विहन्यते नृपः ॥२८॥
शीर्षोदयं शुभ सुहृद् ग्रहयुक्तदृष्टं लग्नं शुभा बलयुताः शुभवर्गलग्ने। सर्वार्थ सिद्दिदमतोऽन्यदनिष्टमेव प्रस्थान जन्मफलयुक्तिभिरन्य दूह्यम् ॥२९॥

टीका ॥ लग्न, सप्तम और दशम – इन स्थानों में शुभग्रह हों तो नगरवासी राजा को विजय प्राप्त होती है। नवम स्थान में शनि, मंगल हों तो भय भङ्ग होता है। यदि बुध, गुरु और शुक्र नवम स्थान में हों तो विजय मिलती है॥ १॥ प्रश्न-लग्न से तृतीय, चतुर्थ, पंचम, षष्ठ, सप्तम तथा अष्टम – यह भाग नगर-निवासियों का होता है तथा नवम, दशम, एकादश, द्वादश, प्रथम और द्वितीय – यह भाग परचक्र वाले यायि-ओं (आक्रमणकारियों) का है। इन दोनों में जो भाग शुभग्रह युक्त हो, उस भागवालों की विजय होती है एवं जो भाग पापग्रह से युक्त हो, उस भाग वालों की पराजय होती है॥२॥ यदि दोनों भागों में शुभ तथा अशुभ प्रकार के ग्रह हों तो मिश्र फल कहना चाहिए। कुछ आचार्यों के मतानुसार दशम, एकादश तथा द्वादश-इन स्थानों में पापग्रह हों तो युद्ध के लिए जाने वाले राजा को तो शुभ फल देते हैं, परन्तु उसके पुर (राज्य अथवा प्रजाजनों) के लिए अशुभ होते हैं॥ ३॥ यदि मेष, मिथुन, कन्या, तुला एवं कुंभ-इन राशियों में से कोई एक पापग्रह से युक्त हो तो यायी (आने वाले) की विजय होती है तथा स्थायी की हार होती है॥ ४॥ यदि लग्न पुरुष राशि की हो और उसमें शुभग्रह बैठे हों तो स्थायी एवं यायी में परस्पर सन्धि हो जाती है। यदि पापग्रह द्विस्वभाव राशि के हों तो विरोध होता है॥५॥ यदि केन्द्र में शुभग्रह हों तथा नर-राशि की लग्न में शुभग्रह हों और उस पर शुभग्रह की दृष्टि भी हो तो स्थायी एवं यायी-दोनों की परस्पर प्रीति होती है, परन्तु इसी योग में यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो परस्पर विरोध होता है॥ ६॥ अशुभग्रह की लग्न अथवा पाप से युक्त तथा दृष्ट हो तो बड़ा भयानक युद्ध

होता है, परन्तु यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो अल्प युद्ध होता है ॥ ७॥ यवनाचार्य का कथन है कि सूर्य, वायु, गुरु तथा शुक्र - इन्हें पृष्ठभाग में करके युद्ध करने से शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है ॥ ८॥ यदि केन्द्रस्थ सूर्य पर केन्द्रस्थ शनि की दृष्टि हो तो युद्ध - भङ्ग होता है। यदि अष्टमस्थान में स्थित सूर्य पर केन्द्रस्थ शनि की दृष्टि हो तो मृत्यु होती है ॥ ९॥ लग्न में सूर्य एवं अष्टम भाव में चन्द्रमा हो और उन दोनों पर शनि - मङ्गल की दृष्टि हो तो प्रश्न करने वाले का निश्चित रूप से युद्ध - भङ्ग होगा। इसी प्रकार सूर्य अष्टम भाव में तथा चन्द्रमा लग्न में हो तोभी युद्ध - भङ्ग होता है ॥ १०॥ यदि गुरु, बुध, सूर्य तथा शुक्र - ये पंचम, चतुर्थ तथा लग्न - इनमें प्रश्न के समय हों तथा चन्द्र, शनि और मङ्गल - ये एकादश में भाव में हों तो चढ़ाई करने वाले को संग्राम में निस्सन्देह शत्रु पर विजय प्राप्त होगी ॥ ११॥ लग्न में मंगल अथवा शनि हो, पंचम भाव में गुरु हो तथा दशम स्थान में सूर्य हो, साथ ही शुक्र अथवा बुध एकादश अथवा दशम भाव में हों तो संग्राम में शत्रु पर अवश्य विजय प्राप्त होती है ॥ १२॥ यदि गुरु, सूर्य और चन्द्रमा - ये क्रमशः लग्न, षष्ठ एवं दशम भावों में स्थित हों तो जयसिद्धि प्राप्त होती है। यदि इन्हीं भावों में क्रमशः गुरु, शुक्र तथा सूर्य बैठे हों तो संग्राम में विजय मिलेगी ॥ १३॥ प्रश्न कुण्डली में लाभ स्थान में गुरु तथा दशम स्थान शनि - मंगल हों तो मन्त्री का लाभ होता है। यदि चतुर्थ स्थान में बुध तथा अष्टम स्थान में चन्द्रमा एवं सप्तम स्थान में शुक्र हो तो विजय प्राप्त होती है ॥ १४॥ यदि दशम स्थान में मङ्गल, एकादश स्थान में सूर्य, तृतीय स्थान में शनि तथा छठे स्थान में चन्द्रमा हो एवं शेष ग्रह लग्न में हों तो विजय होती है ॥ १५॥ यदि मंगल, सूर्य और शनि तृतीय स्थान में हों तथा शुभग्रह लग्न में हों तो प्रश्नकर्त्ता की विजय होती है। यदि लग्न में गुरु व एकादश अथवा दशमभाव में पाप ग्रह हों तो विजय होती है - ऐसा पाराशर का कथन है ॥ १६॥

यदि मङ्गल और शनि षष्ठ स्थान में, गुरु और चन्द्रमा लग्न में, बुध और शुक्र एकादश भाव में तथा सूर्य दशम भाव में हों तो विजय होती है ॥१७॥ यदि नवम, पंचम और लग्न – इन स्थानों में क्रमशः शनि, चन्द्र और मङ्गल हों तो युद्ध में राजा की हार होगी। यदि लग्न में चन्द्र और शनि मंगल द्वारा दृष्ट हों तो राजा की मृत्यु होगी॥१८॥ यदि अष्टम स्थान में मंगल युक्त शनि तथा लग्न में सूर्य हो तो मृत्यु होगी अथवा तृतीय, एकादश और अष्टम- इनमें से किसी भी भाव में सूर्य-चन्द्र की युति हो तो संग्राम में मृत्यु होगी- यह कहना चाहिए ॥१९॥ यदि मंगल, बुध और शनि- ये सप्तम भाव में बैठे हों शत्रु पर चढ़ाई करने वाले की मृत्यु होगी। यदि लग्न में शुक्र -मङ्गल की युति हो तो शत्रु की वृद्धि होने के कारण क्षुधा से मृत्यु होगी॥ २०॥ यदि लग्न में मंगल अथवा शनि की राशि हो तथा षष्ठ भाव में बुध अथवा शुक्र की तथा अष्टम भाव में सूर्य की राशि हो और इन स्थानों में पापग्रह बैठे हों तो शत्रुओं के साथ संग्राम करते समय बुद्धिमान् मन्त्री की मृत्यु होती है॥२१॥ यदि लग्न और पंचम स्थान में पापग्रह हो तो प्रश्न करने वाले का पुत्र संग्राम में मारा जाएगा। यदि लग्न में चन्द्र-मंगल की युति हो और उस पर शनि की दृष्टि हो तो संग्राम में हार होती है॥२२॥ यदि चन्द्रमा सप्तम अथवा अष्टम स्थान में हो तथा सूर्य लग्न में हो तो युद्ध में जाने वाले का भास-भङ्ग तथा मरण होता है ॥२३॥ यदि द्वितीय, तृतीय एवं केन्द्र – इन स्थानों में अस्तंगत पापग्रह हों तथा अष्टम स्थान में चन्द्रमा हो तो प्रश्न पूछने वाले राजा का बंधन होता है अथवा मृत्यु होती है ॥२४॥ यदि सप्तम स्थान में मंगल अथवा चन्द्रमा की राशि हो अथवा लग्न में बुध अथवा सूर्य की राशि हो तो अपनी ही सेना में फूट पड़ जाती है। इसी प्रकार यदि शनि-मंगल, बुध और शुक्र की राशि क्रमशः सप्तम और लग्न में हो तो भी भंग होता है ॥२५॥ यदि सूर्य, मंगल, शनि और बुध – ये सभी ग्रह नवम स्थान में हों तो राजा, मन्त्री, पुरोहित आदि का नाश

होता है और इसी योग में चन्द्रमा यदि लग्न में हो तो गुरु, अश्व, शिल्पी एवं प्रश्नकर्त्ता के पुत्रों का भी नाश होता है ॥२६॥ यदि लग्न में सूर्य तथा शनि हों और उन पर मंगल की दृष्टि हो तथा चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो एवं शुभग्रह बलहीन हों तो सेनापति की मृत्यु होती है ॥२७॥ यदि सप्तम स्थान में चन्द्रमा, लग्न में सूर्य तथा अष्टम स्थान में मंगल हो और शनि हो तथा तृतीय स्थान में बुध हो तो मन्त्री सहित राजा की मृत्यु होती है ॥२८॥ अपने मित्रग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट शीर्षोदय लग्न हो तथा शुभग्रहों के वर्ग में हो एवं शुभग्रह बलवान् हों तो सभी अर्थों की सिद्धि होती है; यदि इसके विपरीत हो अर्थात् शत्रुग्रह से युक्त अथवा दृष्ट एवं अशुभग्रहों के वर्ग में लग्न हो एवं पापग्रह बलवान् हों तो अनिष्ट फल होता है ॥२९॥ इति॥

अथ रोग विचारम् ॥ लग्नस्थितो वाऽष्टम संस्थितो वा पापग्रहो यस्य तु जन्मराशिम् निरीक्षते तस्य गदार्दितस्य निःसंशयं मृत्युमुदाहरंति ॥१॥ पृष्ठोदये विलग्ने क्रूराः केन्द्रेऽष्टगः शशी यस्य। रोगार्तस्य विनाशो दृष्टे वा बलयुतैः पापैः ॥२॥ शशिनं शशिपुत्रं वा पश्यति पापो विलग्न गेहस्थम् ।आ-देष्टव्यः प्रष्टुः कष्टो व्याधिर्न सन्देहः ॥३॥ सौम्यग्रहा यदि सुतस्मरमृत्युसंस्थाः पापा भवंति च शुभग्रहदृश्यमानाः । आयत्रिषड्दशमगश्च निशाकरः स्यात् तस्माच्छुभाश्च यदि वा शुभमाहुरस्य॥ ४॥ पापेक्षितः पापयुतः शुभानां दृग्योगहीनो नवमः शनिश्चेत् । तदा रुजार्तः परदेशगः स्यात् षष्ठाष्टमे मृत्युकरस्तवक्रयम् ॥५॥ उच्चपगृहगे चन्द्रे शुभेषु केन्द्र त्रिकोण निधनेषु । शुभदृष्टे वा लग्ने रोगी देशान्तरे नीरुक् ॥६॥ लग्नगतः परिपूर्णो रजनीजानिर्विलोकितो गुरुणा । केन्द्रे वा गुरुभृगुजौ रोगार्तस्तत्र नीरोगः ॥७॥ प्रश्न श्चेत्स्थिरलग्ने तदा न मरणं न रोग शांतिर्वा । चरलग्ने विपरीतं द्विदेहलग्ने तु पूर्वमिव॥८॥ इति॥

टीका॥ लग्न अथवा अष्टम भाव गत पापग्रह जिस रोगी की जन्म राशि को देख रहा हो, उसकी मृत्यु अवश्य ही होती है ॥१॥ पृष्ठोदय लग्न हो तथा केन्द्र में क्रूर ग्रह हों एवं चन्द्रमा अष्टम

स्थान में हो तो रोगी की मृत्यु होती है। अथवा पापग्रह बलवान् हों तो भी मृत्यु होती है॥२॥ यदि चन्द्रमा अथवा बुध लग्नस्थ हों और वे पापग्रह से दृष्ट भी हों तो प्रश्नकर्त्ता से यह कहना चाहिए कि रोग कष्ट-साध्य है॥३॥ पंचम, सप्तम और अष्टम स्थानों में शुभ ग्रह हों तथा पापग्रहों पर शुभग्रहों की दृष्टि हो तथा चन्द्रमा एकादश, तृतीय, षष्ठ अथवा दशमभाव में हो तथा चन्द्रमा से इन्हीं अर्थात् ग्यारहवें, तीसरे, छठे तथा दसवें स्थानों में शुभग्रह हों तो आरोग्य होता है॥४॥ यदि पापग्रह से युक्त तथा शुभ-दृष्टि से रहित शनि नवम स्थान में हो तो रोग-पीड़ित मनुष्य परदेश जाता है। यदि ऐसा शनि छठे अथवा आठवें स्थान में हो तो मृत्यु होती है॥५॥ उपचय अर्थात् तीसरे, छठे, दसवें तथा ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो तथा लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम तथा दशम-इन स्थानों में शुभ ग्रह हो तथा लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो रोगी परदेश में जाकर अच्छा (आरोग्य) होगा – यह कहना चाहिए॥६॥ यदि लग्न स्थित पूर्ण चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो अथवा केन्द्र में गुरु और शुक्र हों तो रोगी रोग-मुक्त हो जाता है॥७॥ यदि प्रश्न में स्थिर लग्न हो तो रोग न तो शान्त होता है और न मृत्यु होती है। चरलग्न हो तो इसके विपरीत फल होता है तथा द्विस्वभाव लग्न का फल स्थिर-लग्न जैसा ही समझना चाहिए॥८॥ इति॥

अथ नष्ट लाभाऽलाभ विचारम्॥ स्थिरोदये वा यदि वा स्थिरांशे वर्गोत्तमे वा यदि वा विलग्ने। तत्रैव तच्चोरितमस्ति वस्तु स्वकेन केनापि चरे परैस्तु॥१॥ द्विशरीर राशिलग्ने प्रातिवेशि जनेन हृतमुदाहार्यम्। तत्रस्थं स्थिर राशौ चर राशौ तच्च संचलितम्॥२॥ लग्ने प्रजोत द्वितनौ हृतं स्वं गृहाद् बहिर्निर्गमितं विचिन्त्यम्। हर्ता सवीर्य्यास्तगखेटतुल्यो नौजेनदृष्टे दयिताऽन्य थात:॥३॥ लग्नांशकादपहृतद्रविणस्य जातिर्द्रेष्काणतस्तदपहर्तृजन स्वरूपम्। दिग्देश कालकलनं किल

राशितः स्याल्लग्नांशकादुभवाः जाति वयो विभागः ॥४॥ वयांसि तेषां स्तनपान बाल्य व्रतस्थिता यौवन मध्य वृद्धाः। अतीव वृद्धा इति चन्द्र भौमज्ञशुक्र जीवार्क शनैश्चराणाम् ॥५॥ रवीन्दुयुक्ते शनि भौमदृष्टे सिंहोदयेऽन्धः किल तस्करः स्यात्। वामेन काणः शशिनि व्ययस्थे स चक्षुषाऽन्येन रवौ व्ययस्थे ॥६॥ क्रूरः षष्ठः क्रूरराशौ विलग्नाद्यस्मिन्राशौ तत्प्रदेशे व्रणोऽस्य। एवं प्रोक्तं यन्मया जन्मकाले चिह्नं रूपं तत्तदस्मिन्विधेयम् ॥७॥ आद्ये हृतं निपतितं तदनु द्वितीये द्रव्यं च विस्मृतमथो यदि वा तृतीये। द्रेष्काणकेषु परिकल्प्यमिदं क्रमेण वाच्यं हृतं तदपि वेश्मसुखेऽन्तरेऽन्त्ये ॥८॥ ग्रहैर्दिशः केन्द्रगतैर्विचिन्त्या विलग्नराशेस्तदसम्भवे वा। विलग्नमध्याच्चलितैर्नवांशैर्विचिन्तनीयानि हि योजनानि ॥९॥ शुक्रे धने देवगुरौ व्ययस्थे मूर्तौ शुभे वा हृतलब्धिरुक्ता। होरेन्दुयुक्तालयदिङ्मुखेषु सूर्येण लग्नाधिपराशिभूमौ ॥१०॥ पूर्णः शशी यदि विलग्नगतः शुभो वा शीर्षोदये यदि पुनः शुभदृष्टिदृष्टः। लाभस्थितो बलयुतो यदि वा शुभः स्यात् नष्टस्य लाभमचिरेण ततः करोति ॥११॥ लग्नाद्द्वितीये यदि वा तृतीये शुभेन युक्तो हिबुकेऽथवा स्यात्। सौम्यैः सुहृत्सप्त दशस्थितैर्वा निःसंशयं चोरितवस्तुलाभः ॥१२॥ लग्ने सम्पूर्णतनुर्जीवेन सितेन वीक्षितश्चन्द्रः। केन्द्रोपचयस्थैर्वा यदि सौम्यैः स्वोपचयगैराप्तिः ॥१३॥ लग्ने पूर्णश्चन्द्रो जीवः शुक्रो बुधोऽपि वा भवति। लभतेऽपहृतं द्रव्यं शुभयुक्ते सप्तमे यदि वा ॥१४॥ लग्नात्पालाद्वा द्वितीयस्थोऽथवा तृतीयस्थः। भवति शुभग्रहश्चेन्नूनं प्रश्ने नष्टं धनं लभते ॥१५॥ पापविलग्नं पापे पश्यति नष्टं विनष्टमेव स्यात्। शुभखगलग्ने तु शुभैर्दृष्टे नष्टाप्तिरेष्टव्या ॥१६॥ सिंहालिकुंभा यदि पापवीक्षिता युताः स्मरस्थाः स्वनवांशगामिनः। तदाविनष्टं त्वथवा बलान्विते कुजेऽष्टमस्थे यदि तन्नवांशे ॥१७॥ इति ॥

टीका॥ यदि लग्न स्थिर राशि का अथवा स्थिर अंश में अथवा वर्गोत्तम में

हो तो चोरी गई वस्तु किसी अपने ही आदमी ने चुराई है और वह वस्तु उसी स्थान में है—यह कहना चाहिए। यदि लग्न चर राशि अथवा चर नवांश की हो तो किसी अन्य व्यक्ति ने चुराई है—यह समझना ॥१॥ द्विस्वभाव लग्न में गई वस्तु पड़ोसी ने चुराई है—यह कहना चाहिए। स्थिर लग्न हो तो वस्तु अपने ही स्थान पर है तथा चर लग्न हो हो तो अन्यत्र चली गई—यह समझना चाहिए ॥२॥ द्विस्वभाव लग्न आये तो चुराया हुआ धन-माल बाहर चला गया—यह जानें। सप्तम स्थान में जो बलवान् ग्रह हो, उसकी जाति, वर्ण, गुण तथा आकृति के तुल्य मनुष्य को चोर समझना चाहिए। वह सप्तमस्थ बलीग्रह यदि विषम राशि का तथा पुरुषग्रह द्वारा दृष्ट हो तो चोर पुरुष है अन्यथा समराशि का और स्त्री ग्रह से दृष्ट हो तो चुराने वाली स्त्री है—यह समझना चाहिए ॥३॥ लग्न के नवांश पर से गत-वस्तु (चोरी गई वस्तु) की जाति तथा द्रेष्काण पर से चोर का स्वरूप और राशि पर से दिशा, देश तथा काल का विचार करना चाहिए। नवांश से जाति तथा अवस्था आदि का विचार किया जाता है ॥४॥ चन्द्रमा, मंगल, बुध, शुक्र, गुरु, सूर्य तथा शनि—इन ग्रहों की अनुक्रम से (१) स्तनपान करने वाला (शिशु), (२) बालक, (३) व्रतस्थ (ब्रह्मचारी अर्थात् किशोर आयु वाला), (४) युवा, (५) मध्यम, (६) वृद्ध तथा (७) अतिवृद्ध—ये सात अवस्थाएं समझनी चाहिए ॥५॥ यदि सूर्य तथा चन्द्रमा से युक्त सिंह लग्न हो और उस पर शनि-मङ्गल की दृष्टि हो तो चोर अन्धा है; चन्द्रमा बारहवें भाव हो तो चोर बाँई आँख से काना है और सूर्य बारहवें स्थान में पड़ा हो तो चोर दाँई आँख से काना है—यह समझना चाहिए ॥६॥ छठे स्थान में क्रूर ग्रह हो तथा लग्न से जिस-जिस स्थान में क्रूर राशि क्रूर ग्रह से युक्त हो, उस-उस अङ्ग में चोर के शरीर में व्रण-चिह्न होगा। इसके अतिरिक्त जन्म-समय में चिह्न-रूप का विचार जिन आधारों पर किया जाता है, उन्हीं से यहाँ भी चोर के चिह्न-रूप आदि के विषय में विचार करना चाहिए ॥७॥ प्रश्न-लग्न प्रथम द्रेष्काण में हो तो द्रव्यचोरी

गया है, दूसरे द्रेष्काण में हो तो गिर गया है और तीसरे द्रेष्काण में हो तो कहीं रख कर भूल गया है—यह समझना चाहिए। परन्तु तीसरे द्रेष्काण में यदि चोरी गया हो तो भी वह घर के दरवाजे के भीतर ही है—यह कहना चाहिए ॥८॥ केन्द्रस्थ ग्रह की दिशा से द्रव्य जाने की दिशा का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए यदि केन्द्र में ग्रह न हो अथवा अनेक ग्रह हों तो लग्न गत राशि की दिशा समझनी चाहिए। लग्न के मध्य नवांश से जितने नवांश बीते हों, उतने योजन की दूरी पर द्रव्य (चोरी गई वस्तु अथवा धन) गया है—यह कहना चाहिए ॥९॥ यदि धन स्थान में शुक्र तथा व्यय स्थान में गुरु तथा लग्न में शुभग्रह हो तो चोरी गया धन पीछे मिलेगा। यदि लग्न चन्द्र युक्त हो तो लग्न राशि की दिशा में मिलेगा और यदि लग्न में सूर्य हो तो लग्नेश की दिशा में मिलेगा—यह कहना चाहिए ॥१०॥ शीर्षोदय लग्न में पूर्ण चन्द्र या शुभग्रह बैठा हो और उस पर शुभग्रह की दृष्टि भी हो अथवा एकादशभाव में बलवान् शुभग्रह हो तो नष्ट-द्रव्य (चोरी गई वस्तु या धन) का शीघ्र लाभ होता है ॥११॥ लग्न से द्वितीय तथा तृतीय स्थान में शुभ ग्रह हो अथवा चतुर्थ स्थान में अथवा चतुर्थ, सप्तम और दशम—इन स्थानों में शुभग्रह हो तो चोरी गई वस्तु वापिस मिल जाती है ॥१२॥ यदि लग्न में पूर्ण-चन्द्रमा हो और उस पर गुरु अथवा शुक्र की दृष्टि हो अथवा केन्द्र तथा उपचय स्थान में शुभग्रह हो अथवा धन स्थान में शुभग्रह हो तो गई हुई वस्तु की प्राप्ति होगी—यह कहना चाहिए ॥१३॥ यदि लग्न में पूर्ण चन्द्रमा, गुरु, शुक्र और बुध—इनमें से कोई भी एक ग्रह हो तो चोरी में गया हुआ द्रव्य बाद में मिल जाएगा अथवा सप्तमस्थान में शुभग्रह हो तो भी मिल जाएगा—यह समझें ॥१४॥ लग्न से अथवा चतुर्थ से दूसरे अथवा तीसरे घर में शुभग्रह हो तो नष्ट-धन बाद में मिल जाता है ॥१५॥ यदि लग्न में पापग्रह की राशि हो और उस पर पाप-ग्रह की दृष्टि भी हो तो गया हुआ धन या वस्तु पुनः नहीं मिलेगी। यदि शुभग्रह

का लग्न शुभग्रह की दृष्टि से युक्त हो तो मिल जाएगी- यह समझना चाहिए ॥२६॥ सिंह, वृश्चिक और कुंभ - इनमें की स्वनवांश युक्त कोई राशि सप्तम स्थान में हो और उस पर पापग्रह की दृष्टि हो तो नष्ट-द्रव्य नहीं मिलता। ऐसे अष्टमस्थान में मंगल बलवान् पूर्वोक्त सिंहादि राशियों के नवांश में हो तो भी नष्ट-द्रव्य प्राप्त नहीं होता॥ २७॥ इति॥

अथ मनोमुष्टिचिन्ता विचारम् ॥ लग्नस्थः शनिबुधवीक्षितः सुधांशुश्चान्द्रिर्वा कथयति चिन्तितां कुमारीम्। वृद्धां स्त्रीं शनिरिनंगीष्पती प्रसूतां शुक्रारावथ तरुणीं नरेऽपि चैवम् ॥१॥ अस्ते सि-तार्करविजैः परकीयजाया स्वीया गुरौ शशिनि तत्तनये च वेश्या। वाच्या वयश्च शशिवत्परिचिन्तनीयं सौरे-न्त्यजातिरितरैरपि चिन्तिता स्यात् ॥२॥ लग्ने ग्रहैरात्मसमो बलस्थैर्भ्राता तृतीयैस्तनयः सुतस्थैः। माता चतुर्थैरथवा स्वसा स्याच्छत्रुस्थितैः शत्रुगतैव चिन्ता ॥३॥ भार्या भवेत्सप्तमगैरमीभिर्धर्मस्थितो धर्मसमाश्रितैश्च। स्वस्थैर्गुरुः स्वांशपमित्रप्राप्तस्थानेषु तद्वद्बलवत्सु वाच्यम् ॥४॥ भागे चरे चरविलग्नगते च मध्याद् भ्रष्टप्रवासविषया भवतीह चिन्ता। भ्रष्टः स चेद्भवति सप्तमतस्तदा तु व्यावर्तते यदि न वक्रगतो ग्रहोऽसौ ॥५॥ दीर्घास्तुलालिमृगनायककन्यकाः स्युर्मध्या धनुर्मकरकर्कटयुग्मसंज्ञाः। ह्रस्वाश्च मेषवृषमीनघटाः प्रदि-ष्टा वस्तुप्रमाणमपि राशिसमानमेव॥ ६॥ रक्तौ सूर्यमहीसुतौ शशिसितौ श्वेतौ सुधादीधितेः। सूनुः स्याद्हरिताकृतिः सुरगुरुः पीतः शनिः श्यामलः। सूर्यः स्याच्चतुरस्रकः क्षितिसुतो वृत्तस्तथा रंध्रवान्। सौम्यो दीर्घतनुस्तथा शशधरो दीर्घाकृतिः सुन्दरः ॥७॥ जीवो वृत्तवपुः सितस्त्वतिकृशः सौरिश्च दी-र्घाकृतिर्मध्ये रन्ध्रसमन्वितश्च कथितं रूपं ग्रहाणामिदम्। इत्येवं कृतचिंतितादिविषयप्रश्नेषु वर्णाकृती द्रव्यस्यापि बलान्वितग्रहवशान्निःसंशयं निर्दिशेत् ॥८॥ लग्ने वाभ्युदितं त्रिकोणभवने स्वांशं निजां-शास्थितो यः कश्चिद्ग्रह ईक्षते तदिह वा स्याद्धातुचिन्ता ध्रुवम्। अन्यांशे समवस्थितः पुनरसौ जीव

स्य चिन्ताकरो मूलस्यापि पराशके परिगतः पश्यन् परांशं ग्रहः ॥ ९ ॥ विषाद् ग्रहे तु विषमे किल धातु मूल जीवान् समेतु विपरीतमिदं विचिन्त्यम् । लग्नांशकक्रमवशाद्गणनीयमेवं संक्षेप एष विवृतिस्त्वतिचिंतनेन ॥ १० ॥ बलिनौ भास्कर भौमौ धातुकरौ संस्थितौ प्रश्ने । मूलकरौ शनि सौम्यौ शशिगुरुभृगुजास्तथा जीवाः ॥ ११ ॥ मेषे सिंहे वृश्चिके वा विलग्ने भौमार्काभ्यामन्विते वीक्षिते वा । धातोश्चिन्तां सौरिचन्द्रात्मजाभ्यां मूले युग्मे कुम्भ कन्या मृगेषु ॥ १२ ॥ मीन कर्क वृष चापतौलिभिश्चन्द्र शुक्र गुरुभिर्युतेक्षितैः । जीवमाहुरिति मिश्रितं धनं मिश्रित ग्रहयुतेक्षणात्तथा ॥ १३ ॥ इति ॥

टीका ॥ यदि लग्न में चन्द्रमा अथवा बुध हो और उस पर शनि अथवा बुध की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्त्ता को कुमारी कन्या से सम्बन्धित चिन्ता है - यह कहें । इसी प्रकार यदि लग्न में शनि हो तो वृद्धा-स्त्री की, सूर्य अथवा गुरु हो तो प्रस्थूला-स्त्री की एवं शुक्र अथवा मंगल हो तो युवती स्त्री की चिन्ता है -- यह कहना चाहिए । इसी प्रकार पुरुष-विषयक प्रश्न में भी कुमार-वृद्ध आदि का भेद उक्त नियमानुसार ही समझ लेना चाहिए ॥ १ ॥ सप्तम स्थान में शुक्र, सूर्य और शनि हो तो पर-स्त्री की चिन्ता, गुरु हो तो स्वकीया-स्त्री की चिन्ता और चन्द्रमा अथवा बुध हो तो वेश्या की चिन्ता है - यह कहना चाहिए । इसी प्रकार चन्द्रमा के अंशों से विचार करके बाल्य आदि अवस्थाएं कहनी चाहिए । शनि अथवा राहु-केतु लग्न में हों तो अन्त्य जाति की स्त्री की चिन्ता है - यह कहना चाहिए ॥ २ ॥ यदि लग्न में बलवान् ग्रह बैठे हों तो अपने समतुल्य की चिन्ता है ; यदि तृतीय स्थान में बलवान् ग्रह हों तो भाई से सम्बन्धित चिन्ता है ; पंचम भाव में हों तो पुत्र सम्बन्धी, चतुर्थ भाव में हों तो माता अथवा बहिन से सम्बन्धित तथा छठे भाव में हों तो शत्रु सम्बन्धी चिन्ता है - यह समझना चाहिए ॥ ३ ॥ सप्तम भाव में बलवान् ग्रह हो तो अपनी स्त्री की, नवम भाव में हो तो धर्म सम्बन्धी तथा दशम भाव में

हों तो गुरु से सम्बन्धित चिन्ता कहनी चाहिए। स्वांश, मित्रांश तथा शुभस्थान आदि का विचार करके गुह्यल को समझ लेना चाहिए॥ ४॥ यदि लग्न चर राशि एवं चर नवांश का हो बीच मार्ग से लौटने वाले प्रवासी की चिन्ता है_यह समझना चाहिए। यदि सप्तम स्थान में वक्री ग्रह हो तो वह प्रवासी पीछे लौट आएगा और यदि वक्र गति का ग्रह न हो तो नहीं लौटेगा -यह समझें॥ ५॥ तुला, वृश्चिक, सिंह और कन्या-ये चार राशियाँ लम्बे आकार वाली हैं; धनु, मकर, कर्क और मिथुन - ये चारों मध्यम आकार की हैं तथा मेष, वृष, कुम्भ और मीन - ये चारों छोटे (ह्रस्व) आकार वाली हैं। इन्हीं के अनुसार प्रश्न-वस्तु के आकार का निर्धारण करना चाहिए॥ ६॥ सूर्य तथा मंगल का वर्ण रक्त (लाल) है, चन्द्रमा तथा शुक्र श्वेत रंग वाले हैं, बुध हरे रंग का, गुरु पीले रंग का तथा शनि श्याम रंग वाला है। सूर्य चौकोन, मंगल गोल तथा छिद्रयुक्त, बुध लम्बा, चन्द्रमा लम्बा, गुरु गोल, शुक्र अत्यन्त दुर्बल एवं शनि दीर्घाकृति तथा बीच में छिद्र वाला है, अतः इनके बलाबल के आधार पर प्रश्न करने वाले की चिन्तित वस्तु के वर्ण, आकृति आदि का निर्णय करना चाहिए॥ ७-८॥ लग्न में अथवा नवम, पंचम स्थान में, प्रश्न-समय में वर्तमान अपने नवमांश को कोई भी ग्रह स्वनवांश स्थित होकर देखता हो अथवा वह ग्रह वहाँ बैठा हो तो निश्चित रूप से प्रश्नकर्त्ता को धातु की चिन्ता है-यह कहना चाहिए। इसी प्रकार दूसरे ग्रह के अंश में स्थित ग्रह देखता हो अथवा वहाँ पर बैठा हो तो जीव की चिन्ता कहें। यदि ग्रह अन्यांश में होकर पूर्वोक्त लग्न आदि स्थानगत अन्यांश को देखता हो तो मूल चिन्ता कहनी चाहिए॥ ९॥ यदि प्रश्न लग्न मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुंभ-इन राशियों की हो तो उसके नवांश क्रम से धातु, मूल तथा जीव चिन्ता समझनी चाहिए। प्रथम नवांश में धातु, दूसरे में मूल तथा तीसरे में जीव चिन्ता, फिर इसी क्रम से चौथे नवांश में धातु, पाँचवें में मूल तथा छठे में जीव चिन्ता क्रमशः समझनी चाहिए। वृष,

भा० टी०

कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा मीन — इन लग्नों के नवमांशों में उक्त क्रम के विपरीत अर्थात् जीव, मूल और धातु के अनुक्रम से चिन्ता के विषय में विस्तारपूर्वक विचार करना चाहिए ॥१०॥ यदि प्रश्न कुण्डली में सूर्य और मंगल बलवान् हों तो धातु चिन्ता, शनि अथवा बुध बलवान् हों तो मूल चिन्ता और यदि चन्द्र, गुरु अथवा शुक्र बलवान् हों तो जीवचिन्ता कहनी चाहिए ॥११॥ मेष, सिंह अथवा वृश्चिक राशिलग्न में हो और वह सूर्य-मंगल से युक्त अथवा दृष्ट हो तो धातुचिन्ता; मिथुन, कन्या, मकर अथवा कुम्भ - इन राशियों की लग्न शनि तथा चन्द्रमा से युक्त अथवा दृष्ट हो तो मूल चिन्ता एवं मीन, वृष, कर्क, धनु, कुंभ अथवा तुला राशि की लग्न हो और वह चन्द्र, शुक्र अथवा गुरु से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जीव चिन्ता समझनी चाहिए। यदि लग्न मिश्रित ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो मिश्रित चिन्ता कहनी चाहिए ॥१२-१३॥

अथ वृष्टि निर्णय विचारम् ॥ चन्द्रार्कयोः शनिसितौ यदि सप्तमस्थौ तुर्येऽष्टमे च भवतो यदि वा विलग्नात्। स्यातां धने च सहजे यदि तौ विलग्नाद्वर्षासु वर्षमचिरेण तदा विधत्तः ॥१॥ पक्षे सिते सलिलराशिगताः शुभाश्चेत् केन्द्रद्वितीयसहजालयगाश्च सम्यक्। चन्द्रोऽथवा सलिलराशिविलग्नगश्चेत् वृष्टिं वदेन्नियतमेव तदा धरित्र्याम् ॥२॥ कर्कटमृगमीनानामुदये चन्द्रः सितोऽपि वृष्टिकरः। तद्वत्केन्द्रोपगतौ सितचन्द्रौ वा शुभैर्दृष्टौ ॥३॥ शीतद्युतिः सलिलराशिविलग्नगामी वीर्यान्वितेन भृगुजेन निरीक्ष्यमाणः। वृष्टिं करोति महतीं भृगुजोऽपि तद्वच्छीतांशुना बलयुतेन विलोकितश्चेत् ॥४॥ इति॥

टीका॥ चन्द्रमा और सूर्य से शनि तथा शुक्र सप्तम स्थान में हो अथवा लग्न से चतुर्थ-अष्टम स्थान में हो अथवा लग्न से द्वितीय, तृतीय स्थान में हों तो वर्षाऋतु में तत्काल वर्षा होगी — यह कहना चाहिए ॥१॥ शुक्लपक्ष में जो शुभग्रह जलराशि के अर्थात् कर्क, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ और मीन — राशि के हों तो निश्चित रूप से वर्षा होगी — यह कहना चाहिए ॥२॥ यदि

लग्न में कर्क, मकर और मीन राशि हो तथा उसमें चन्द्रमा अथवा शुक्र बैठा हो तो वर्षा होगी। ऐसे शुक्र और चन्द्रमा केन्द्र में गये हों तथा उन पर शुभग्रहों की दृष्टि होगी, तो वर्षा होगी ॥ ३॥ यदि जलराशि की लग्न हो और उसमें चन्द्रमा स्थित हो तथा उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो बड़ी भारी वर्षा होगी। इस प्रकार के बली चन्द्र से दृष्ट शुक्र भी वर्षा करता है॥ ४॥ इति॥

अथ विवाहलाभ विचारम्॥ लग्नाच्छशी त्रिमदनायसुतारि संस्थः सूर्यामरेज्यशशिजैरवलोक्यमानः। प्रष्टुर्भवेन्नियतमेव विवाहदाता केन्द्रत्रिकोणभवनेष्वथवा शुभाश्च॥ १॥ अत्रैव यदि योगे स्याच्छुभः सप्तमवेश्मनि। तदा लभेत सज्जायां पापश्चेद्रूपवर्जिताम्॥ २॥ समस्थिते सूर्यसुते वरस्य लभ्या भवेन्निश्चितमेव कन्या। अतोऽन्यथात्वं विषमस्थितेऽस्मिन्निःसंशयं प्रष्टुरुदाहरन्ति॥ ३॥ सप्तमवित्तोपचयस्थानस्थो गुरुनिरीक्षितश्चन्द्रः। विदधाति युवतिलाभं तन्नाशं पापयुतदृष्टः॥ ४॥ यस्य प्रश्नविलग्नात् षष्ठाष्टमराशिगो भवेच्चन्द्रः। व्यूढस्य तस्य नूनं मृत्युः स्यादष्टमे वर्षे॥ ५॥ यदि लग्नगतः क्रूरः पापस्तस्माच्च सप्तमे भवति। सप्तभिरेव तदाऽब्दैः पुंसो निधनं विनिर्देश्यम्॥ ६॥ एवं लग्नोपगते चन्द्रे तस्माच्च सप्तमे भौमे। परतो विवाहकालाज्जीवेन्मासाष्टकं स पुमान्॥ ७॥ उदयाष्टमराशि संस्थिते भृगुपुत्रेऽथवेन्दुनंदने। विधवा क्षितिजे तु सप्तमे म्रियते निश्चितमेव कन्यका॥ ८॥ दिवामणिः सप्तमगो लग्नात्कन्यां मृतप्रजां कुरुते। कुलटामुदयोपगतः कुरुते नैवात्र सन्देहः॥ ९॥ सक्रूरौ कुरुतोऽमृतांशुशशिजौ षष्ठे स्त्रियं दुर्भगां कुर्वाते शशिभार्गवौ च कुलटामायेच जायास्थितौ। अत्रैवेन्दुजभार्गवौ जनयतो वैधव्यमावश्यकं प्रत्येकं च सपापकैर्यदि ततोऽवश्यं तु वेश्या भवेत्॥ १०॥ लग्नात्स्मरेशत्रिसुतारिगश्चेद्गुर्वर्कसौम्यैः शशभृन्नचान्यैः। दृष्टो दिशेदाशु तदा विवाहं चिरात्सविघ्नं त्वशुभेक्षितश्चेत्॥ ११॥ लग्नगं शशिसुतं शशिनं वा वीक्षते बलयुतो यदि शुक्रः। योषिदाप्तिरचिरेण तदा स्यात्पापदृष्टिसहितं तु न हीति॥ १२॥ चरालयस्थौ यदि लग्नचन्द्रौ

मू० सं०

भा० टी०

विलोक्यमानौ भृगुनन्दनेन। पापग्रहाः कण्टकसङ्गताश्चेत्प्रभूतकान्तां लभते तदानीम्॥ २३॥ इति॥

टीका॥ यदि लग्न से तीसरे, पाँचवें, छठे, सातवें अथवा ग्यारहवें स्थान में चन्द्रमा हो और उस पर सूर्य, गुरु तथा बुध की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्त्ता से कहना चाहिए कि उसका विवाह अवश्य होगा। यदि केन्द्र तथा नवम, पंचम में शुभग्रह हों तो भी विवाह होगा॥१॥ इसी योग में यदि सप्तम भाव में शुभग्रह हो तो सुन्दरी पत्नी प्राप्त होगी। यदि पापग्रह हो तो कुरूपा स्त्री मिलेगी॥२॥ प्रश्न कुण्डली में शनि सम-स्थान में हो तो प्रश्नकर्त्ता को कन्या का लाभ होगा और यदि शनि विषम स्थान में हो तो लाभ नहीं होगा — यह निस्सन्देह समझना चाहिए॥३॥ द्वितीय, सप्तम तथा उपचय- इन स्थानों में गुरु से दृष्ट चन्द्रमा बैठा हो तो स्त्री का लाभ होगा। वही चन्द्रमा यदि पापग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो स्त्री का लाभ नहीं होगा॥४॥ यदि प्रश्न लग्न में छठी अथवा आठवीं राशि का चन्द्रमा हो तो प्रश्नकर्त्ता की विवाह होने के बाद आठवें वर्ष में मृत्यु हो जाती है॥५॥ यदि लग्न में क्रूर ग्रह हो और उससे सप्तम स्थान में पापग्रह हो तो तो सातवें वर्ष में उस पुरुष की मृत्यु हो जाएगी॥६॥ यदि ऐसा चन्द्रमा लग्नगत हो तथा उससे सप्तम स्थान में मंगल हो तो विवाहोपरान्त वह पुरुष आठ मास तक जीवित रहता है॥७॥ यदि कोई कन्या के विवाह से सम्बन्धित प्रश्न करे और उस प्रश्न-लग्न में अथवा अष्टम स्थान में शुक्र अथवा बुध हो तो वह कन्या निश्चित रूप से विधवा होगी — यह कहना चाहिए। यदि प्रश्न कुण्डली के सप्तम भाव में मंगल हो तो विवाह से पहले ही मृत्यु हो जाएगी॥८॥ यदि लग्न में अथवा सप्तम भाव में सूर्य हो तो कन्या की सन्तान जीवित न रहेगी। यदि लग्न में सूर्य हो तो वह व्यभिचारिणी होगी॥९॥ यदि छठे स्थान में क्रूरग्रह युक्त-चन्द्रमा तथा बुध हो तो स्त्री दुर्भागिनी होगी। ऐसे चन्द्रमा और शुक्र एकादश अथवा सप्तम भाव में हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होगी। इन्हीं स्थानों यदि बुध, शुक्र क्रूर ग्रह से युक्त हों तो अवश्य ही

भृ० सं० ४४४ — भा० टी०

विधवा होगी। इन योगों में सर्वत्र पापग्रह का योग भी हो तथा अन्य सभी योग घटित होते हों तो ऐसी स्त्री निश्चित रूप से वेश्या होती है॥२०॥ यदि लग्नसे तृतीय, पंचम, षष्ठ, सप्तम अथवा एकादश भाव में चन्द्रमा हो और उस पर गुरु, सूर्य अथवा बुध की दृष्टि हो तथा उक्त ग्रहों के अतिरिक्त अन्य किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो विवाह शीघ्र एवं निर्विघ्न सम्पन्न होगा – यह कहना चाहिए, परन्तु यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो बहुत समय बाद होगा एवं उसमें विघ्न भी पड़ेंगे॥२१॥ यदि लग्न में बुध अथवा चन्द्रमा हो और उस पर बलवान् शुक्र की दृष्टि हो तो स्त्री शीघ्र प्राप्त होगी। यदि पापग्रह की दृष्टि हो तो स्त्री प्राप्त नहीं होगी॥२२॥ यदि लग्न और चन्द्रमा चर-राशि के हों तथा उन पर शुक्र की दृष्टि हो तथा केन्द्र में पापग्रह हों तो श्रेष्ठ-स्त्री प्राप्त होगी - यह समझना चाहिए॥२३॥ इति॥

अथ स्त्री-पुरुष जन्म विचारम्॥ स्थिरे विलग्ने स्थिरलग्नगामिभिर्ग्रहैः शुभैश्चापि विलोकिते च। मृतं युवत्या ध्रुवमेव गर्भं ब्रूयादिति श्रीयवनाधिनाथः॥१॥ लग्नतो विषमराशिगः शनिः पुत्रजन्मनि भवेत्सकारणम्। स्त्रीजनिश्च समगे शनैश्चरे प्राह दिव्यगणको बृहस्पतिः॥२॥ पुरुषवर्गगते च तथोदये नरनभोगतिनाऽभिनिरीक्षिते। बलिनि निश्चितमेव सुतोद्भवो वरमथीह शुभं लभतेऽङ्गना॥३॥ उदयगते स्त्रीराशौ स्त्रीनवभागेऽपि पुंग्रहाऽदृष्टे। स्त्रीजन्म भवति तद्वत्स्त्रीद्रेष्काणोदये यवनः॥४॥ ओजर्क्षे पुरुषांशकेषु बलिभिर्लग्नार्कगुर्विन्दुभिः पुंजन्म प्रवदेत्समांशकगतैर्युग्मेषु तैर्योषितः। गुर्वर्कौ विषमे नरं शशिसितौ वक्रश्च युग्मे स्त्रियं धीलाभोपगतैः शुभैरुदयतः स्त्रीगर्भयुक्ता ध्रुवम्॥५॥ चन्द्रलग्नान्तरगतैर्ग्रहैः स्युरुपसूतिकाः। बहिरन्तश्च चक्रार्धे दृश्याऽदृश्याऽन्यथा परे॥६॥ बलयुक्तौ स्वगृहांशेष्वर्कसितावुपचयर्क्षगौ पुंसाम्। स्त्रीणां वा कुजचन्द्रौ यदा तदा सम्भवति गर्भः॥७॥ सौरांशेऽब्जांशे वा चन्द्रः सौरान्वितोऽथवा हिबुके। शान्तो दीपो जलान्त्याधाने प्रश्नकाले वा॥८॥ पापद्वयमध्यसंस्थितौ लग्नेन्दू न च

सौम्य वीक्षितौ। युगपत्पृथगेव वा वदेन्नारी गर्भयुता विपद्यते॥ ९॥ भृगुसुतो वसुधा तनयो गुरुर्दिनपतिः शशभृद्रविनन्दनः। शशिसुतोऽपि च लग्नपती रविः शशधरोऽपि च मासपतिः क्रमात्॥ १०॥ एते यदा शत्रुगृहे वसन्ति युद्धे जिताः शत्रुभिरस्तगा वा। अन्यत्र वा पीडितदेहभाजो गर्भस्यपातं जनयन्ति खेटाः॥ ११॥ रक्तस्तीक्ष्णतनुर्दिनेश उदितः सौन्दर्यवान् शीतगुः क्रूराक्षो धरणीसुतोऽतिविनयी सोमात्मजोऽपि स्मृतः। जीवः पण्डितमण्डलीषु सहितः शुक्रश्च काणः शनिः खंजो लग्नसमन्वितो निजफलं दत्ते बलं चिन्त्यताम्॥ १२॥ इति॥

टीका॥ यदि गर्भ सम्बन्धी प्रश्न हो और प्रश्न कुण्डली में लग्न स्थिर हो तथा स्थिर राशिस्थ शुभग्रह लग्न को देखते हों तो स्त्री निश्चित रूप से गर्भवती है—यह कहना चाहिए॥ १॥ यदि लग्न से विषम स्थान में शनि बैठा हो तो पुत्र का जन्म होगा और सम-स्थान में हो तो कन्या होगी-यह समझें॥ २॥ लग्न पुरुष वर्ग में अर्थात् द्रेष्काण नवमांश आदि पुरुष-ग्रह के हों और वे बलवान् भी हों तथा पुरुष ग्रह की दृष्टि भी हो तो निश्चित रूप से पुत्र का जन्म होगा तथा स्त्री को अपने पति से कुछ उपहार भी मिलेगा॥ ३॥ स्त्री राशि स्त्री नवांश तथा स्त्री द्रेष्काण लग्न में हो और उस पर पुरुष-ग्रह की दृष्टि न हो तो कन्या का जन्म होता है॥ ४॥ लग्न, गुरु तथा चन्द्रमा - ये विषम-राशि के हों तथा पुरुष राशि नवांश में हों तथा बलवान् भी हों तो पुत्र का जन्म होता है और यदि सम-राशि तथा स्त्री-नवांश में हों तो कन्या का जन्म होगा॥ गुरु, सूर्य विषम राशि के हों तो पुत्र का जन्म और चन्द्र, शुक्र तथा राहु समांश और सम राशि के हों तो कन्या का जन्म होगा। यदि पंचम तथा एकादश स्थान में शुभ ग्रह हो तो स्त्री निश्चित रूप से गर्भवती है - यह कहना चाहिए॥ ५॥ लग्न तथा चन्द्रमा के बीच जितने ग्रह बैठे हों सन्तान-जन्म के समय उतनी ही उपसूतिका स्त्रियाँ कहनी चाहिए। द्वितीय स्थान से छः घर अदृश्य तथा अष्टम से छः घर दृश्य हैं। अथवा लग्न के भुक्तांश से सप्तम के भुक्तांश पर्यन्त अदृश्य

और सप्तम के भुक्तांश से लग्न के भुक्तांश तक दृश्य समझना चाहिए ॥ ६॥ सूर्य और शुक्र अपनी राशि और अपने ही अंश में बल युक्त तथा उपचय स्थान में पुरुष के हों तथा चन्द्र, मंगल स्त्री को वैसे ही बलवान् हों, तब गर्भ-स्थिति संभव होती है ॥ ७॥ यदि चन्द्रमा शनि के अथवा अपने अंश में हो अथवा शनि के साथ चतुर्थभाव में बैठा हो तो 'बालक के जन्म के समय दीपक बुझ गया था'- यह कहना चाहिए। इसी प्रकार जन्म लग्न तथा आधान लग्न से भी फल कहा जा सकता है ॥ ८॥ यदि लग्न और चन्द्रमा दो पापग्रहों के बीच एकत्र अथवा अलग-अलग हों तो स्त्री गर्भ सहित मृत्यु को प्राप्त होगी - यह कहना चाहिए ॥ ९॥ शुक्र, मंगल, गुरु, सूर्य, चन्द्र, शनि, बुध, लग्नेश, सूर्य तथा चन्द्रमा - ये क्रमशः प्रथम से लेकर दशम मास तक गर्भ के महीनों के स्वामी माने गए हैं ॥ १०॥ ये मासाधिपति ग्रह यदि शत्रु के घर में बैठे हों अथवा शत्रु से पराजित होगए हों अथवा अस्तंगत या पीड़ित हों तो जिस मास का स्वामी इस प्रकार का हो, उसी मास में गर्भपात हो जाता है ॥ ११॥ सूर्य सदैव उदित, रक्तवर्ण तथा तीक्ष्ण शरीर वाला है; चन्द्रमा सुन्दर शरीर वाला है, मङ्गल क्रूर नेत्रों वाला है, बुध अत्यन्त विनम्र है, बृहस्पति पण्डित मण्डली में रहने वाला विद्वान् है, शुक्र एक नेत्र से काना है तथा शनि खंज है - इन ग्रहों में से जो ग्रह लग्न में होगा वह अपने समान फल देगा। यदि लग्न में दो या तीन ग्रह हों तो उनके बलाबल का विचार करके ही फल कहना चाहिए ॥ इति ॥

अथ प्रकीर्ण विषयाः॥ च्युतिर्लग्नाज्ज्ञेया हिबुक गृहतो वृद्धिरुदिता प्रवासः स्यान्मध्यादुभवति विनिवृत्तिः स्मरगृहात्। गृहैरेतत्प्रश्नोदय समयगैर्वाच्य मखिलं प्रविष्टः स्वं गेहं हिबुक गृहगे प्रोषित पुमान्॥ १॥ लग्नाद्द्वितीयनिधनास्तमयेषु सौम्यैः पापैस्त्रिषष्ठभगतैश्च शुभं फलं स्यात्॥ २॥ सौम्यैरष्टमसंस्थैर्द्वितीय व्ययागः सम्पदि सेवक सेव्ययोश्च नित्यं प्रवास कलहौ प्रतिपादनीयौ ॥ २॥ सौम्यैरष्टमसंस्थैर्द्वितीय

संस्थैस्तथैव दीर्घायु: । भवति प्रष्टुर्नित्यं तदन्यथात्वे ऽन्यथात्वं स्यात् ॥३॥ दशम चतुर्थैरेभि: सुखसंपत्
क्षतिस्तु विपरीते । वित्तैकादश संस्थैर्वित्ताप्ति: प्रष्टुरादेश्या॥ ४॥ पापैर्विलग्ने परिपृच्छतस्तु शरीरपीडा
कलहश्च वाच्य: । सुखक्षति: स्यात्सुखगैर्गृहस्य भेदस्तथा बांधवविग्रहश्च॥५॥ अस्तस्थितै: स्याद्ग-
-मनस्य बाध: कर्मस्थितै: कर्मविनाशमाहु: । सर्वत्र चामुत्र शुभैर्न दृष्टे कृच्छ्रेण संसिद्धिमुदाहरन्ति ॥६॥
शीतद्युतौ पापयुतेक्षिते वा नारीजनै: स्यात्सह विग्रहस्तु । सुखस्थितैर्द्यूनगतैश्च यद्वा तथैव पापैरवधा-
-रणीय: ॥७॥ लग्नादष्टमगेऽर्के शुभयुक्ते वा शुभेन संदृष्टे । तस्माद्देशाद्वयं देशगत इति पिता तस्य॥
८॥ सूर्य: कटु शशधरो लवणो महीजास्तिक्तो विमिश्रितरसश्च शशांकसूनु: । जीवो भवेच्च मधुरोऽम्ल-
कषायकौ च शुक्रार्कजौ च बलवानिह केन्द्रगामी ॥९॥ यस्तत्रकाले किल लग्नदृग् वा ग्रहो रसस्तस्य तु य:
प्रदिष्ट: । स एव तावत्प्रतिपादनीयो बलक्रमेण द्वितये रसाश्च ॥१०॥

टीका॥ प्रश्न में प्रश्न-कुण्डली-लग्न से च्युति, चतुर्थ स्थान से वृद्धि, दशमस्थान से प्रवास तथा सप्तमस्थान से प्रवास-निवृत्ति के विषय में, उक्त स्थानों में जैसे ग्रह बैठे हों, उनके बलाबल का विचार करके, विचार करना चाहिए। चतुर्थस्थान में बलवान् शुभग्रह बैठा हो तो यह कहना चाहिए कि प्रवासी अपने घर आगया है॥१॥ लग्न से द्वितीय, सप्तम तथा अष्टम- इन स्थानों में शुभग्रह तथा तृतीय एवं षष्ठ स्थान में पापग्रह हों तो सेवक तथा स्वामी को शीघ्र शुभ फल प्राप्त होता है। यदि द्वितीय, सप्तम तथा अष्टम स्थान में पापग्रह हों तथा तृतीय और षष्ठस्थान में शुभग्रह हों तो सेवक और स्वामी का नित्य कलह तथा प्रवास होता है॥२॥ यदि अष्टम अथवा द्वितीय भाव में शुभ ग्रह बैठे हों तो प्रश्नकर्त्ता की दीर्घायु होती है। यदि इन स्थानों में पापग्रह हों तो अल्पायु कहनी चा-हिए॥३॥ यदि दशम तथा चतुर्थभाव में शुभ ग्रह हों तो सुख-सम्पत्ति हो, यदि इन स्थानों में

पापग्रह हों तो हानि हो और यदि द्वितीय तथा एकादशभाव में शुभग्रह हों तो धन का लाभ कहना चाहिए ॥४॥ यदि प्रश्न-लग्न में पापग्रह हों तो प्रश्नकर्त्ता को शरीर-पीड़ा तथा कलह होगी। यदि चतुर्थ स्थान में पापग्रह हों तो हानि, फूट एवं बन्धुजनों से विरोध- ये फल प्राप्त होंगे ॥५॥ यदि सप्तमस्थान में पापग्रह हो तो परदेश-गमन नहीं होगा। यदि दशम स्थान में पा. ग्रह हो तो कर्म का विनाश होगा- इन सब योगों में यदि शुभग्रह की दृष्टि न हो तो कष्ट पूर्वक कार्य-सिद्धि होगी- यह कहना चाहिए ॥६॥ यदि चन्द्रमा पापग्रह से युक्त हो तो स्त्रियों से विरोध होगा। यदि चतुर्थ अथवा सप्तम स्थान में पापग्रह हों तोभी स्त्रियों से विरोध होता है ॥७॥ यदि लग्न से अष्टम स्थान में शुभग्रह से युक्त सूर्य बैठा हो अथवा उस पर शुभग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्नकर्त्ता का पिता प्रवास में जिस देश में था, उससे हट कर अन्य स्थान को चला गया है - यह कहना चाहिए ॥८॥ सूर्य का रस कटुक (कड़वा), चन्द्रमा का लवण (क्षार), मंगल का तिक्त (चरपरा), बुध का मिश्रित स्वाद वाला, गुरु का मधुर, शुक्र का अम्ल (खट्टा) तथा शनि का कषाय (कसैला) होता है। इन ग्रहों में जो ग्रह केन्द्र में गया हो, उसे बलवान् समझना चाहिए ॥९॥ प्रश्नकाल में जिस ग्रह की लग्न पर दृष्टि हो, उसका जो रस कहा गया है, पहले केन्द्रस्थ ग्रह का वही रस कहना चाहिए, तत्पश्चात् बलानुक्रम से अन्य ग्रहों के रस के विषय में कहना चाहिए ॥१०॥

सौम्यर्क्षसंस्थस्य स शोभनः स्यात्पापर्क्षसंस्थस्य तु नीरसः स्यात्। ग्रहस्य वक्र-स्य रसं न भोक्ता भुक्तं च पात्रे च पुनः प्रदत्तम् ॥११॥ स्थिरे विलग्ने न गमागमौ स्तो न रोगशान्तिर्न च वित्तनाशः। मृतो न इष्टो न पराभवोऽपि चरे विलग्ने विपरीतमेतत् ॥१२॥ विमिश्रितं स्याद्द्वितनौ तदंशद्वये चरस्थावरवद्वदंति। शुभेक्षणाल्लग्नशशांकयोर्वा भवेच्छुभं चाशुभमन्यथा तु ॥१३॥ कं दृक्श्रोत्र नसा [illegible] गुदे तत्स्थ

भृ० सं० ६२०

भा० टी०

वृषणावूरू ततो जानुनी जंघांघ्रीत्युभपत्र वा समुदितैर्द्रेष्काणभागैस्त्रिधा ॥२४॥ तस्मिन्पापयुते व्रणः शुभयुते दृष्टे
च लक्ष्मादिशेत्स्वर्क्षांशस्थिरसंयुते च सहजः स्यादन्यथाऽऽगंतुकः। मंदेऽश्मानिलजोऽग्निशस्त्रविषजो भौमे बुधे
भूभवः सूर्ये काष्ठचतुष्पदेन हिमगौ शृङ्गाब्जजोऽन्यैः शुभः ॥२५॥ समनुपतिता यस्मिन्भागे त्रयः सबुधा
ग्रहा भवति नियमात्तस्यावाप्तिः शुभेष्वशुभेषु वा। व्रणकृदशुभः षष्ठो लग्नात्तनौ भसमाश्रिते तिलकमस-
कृद्दृष्टः सौम्यैर्युक्तैस्स च लक्ष्मवान् ॥२६॥ क्रियः शिरोवक्त्रगली वृषोऽन्यः पादांसकौ पृष्ठमुरोऽथ पार्श्वे।
कुक्षिस्त्वपानोऽध्रय मेढ्रमुष्कौ स्फिक्पुच्छमित्याह चतुष्पदांगे ॥२७॥ शंकुच्छायांगुलतो ज्ञात्वा तत्काल
लग्नलिप्तासु। छायांगुलैर्विगुणिता अथ पृथक् सप्तभिर्विभजेत् ॥२८॥ शेष ग्रहगुणकारोऽर्केन्दुकुजज्ञेज्य
शुक्रसौरीणाम्। पंचैकविंश मनवो नवाष्ट वह्नीश संज्ञाश्च ॥२९॥ हत्वा स्मरापशेषे स्यादुदयः शुभग्रह-
-स्य तदा। अभिमतसिद्धिः प्रष्टुर्न क्रूरस्योदये किंचित् ॥२०॥

टीका॥ वह ग्रह यदि शुभराशि का हो तो रस अच्छा और सुन्दर होगा। यदि पापराशि
का हो तो स्वाद-रहित होगा। यदि पात्रमें परोसा हुआ वक्री ग्रह सम्बन्धी रस हो तो भोजन करने वाला
उस रस का सेवन न करे, अपितु वही रस जब बाद में पुनः परोसा जाय, तब सेवन करे॥ २१॥
यदि गमनागमन सम्बन्धी प्रश्न हो तथा लग्न स्थिर हो तो गमन और आगमन में से कुछ भी नहीं होगा,
यदि रोगी से सम्बन्धित प्रश्न हो तो रोग-शान्ति नहीं होगी, यदि धन सम्बन्धी प्रश्न हो तो धन का
नाश नहीं होगा, इसी प्रकार स्थिर लग्न में न तो रोगी की मृत्यु होती है, न परदेश गया हुआ पुरुष
नष्ट होता है और न युद्ध में राजा की हार ही होती है। चर लग्न में इसका विपरीत-फल समझना
चाहिए॥ २२॥ द्विस्वभाव लग्न में मिश्रित-फल कहना चाहिए। इसी प्रकार चर-स्थिर अंश का भी
फल होता है। यदि लग्न और चन्द्रमा पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो सब कुछ शुभ होता है और यदि

पापग्रह की दृष्टि हो तो सब कुछ अशुभ होता है ॥२३॥ मस्तक, नेत्र, कान, नाक, गाल, हनु, मुख, कंठ, कंधा, भुजा, पसली, हृदय, गोद, नाभि, पेडू, शिश्न, गुदा, जाँघ, घुटने, पिंडली तथा पाँव — इन इक्कीस अङ्गों के विषय में लग्न द्रेष्काण पर से विचार करना चाहिए; यथा— लग्न प्रथम द्रेष्काण में हो तो मस्तक आदि सात अङ्ग, द्वितीय द्रेष्काण में हो तो कण्ठ आदि सात अङ्ग तथा तृतीय द्रेष्काण में हो तो पेडू आदि सात अङ्गों के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए ॥ २४ ॥ पूर्वोक्त अङ्गों में जहाँ पापग्रह स्थित हो अथवा पापग्रह की दृष्टि हो, वहाँ अर्थात् उस अङ्ग में व्रण (घाव) होता है और शुभ ग्रह का योग अथवा दृष्टि हो तो लक्ष्म (लांछन) कहना चाहिए॥ परन्तु यदि ग्रह अपनी स्वराशि का अथवा अपने अंश का हो तो वह व्रण अथवा लक्ष्म शरीर के साथ ही उत्पन्न हुआ होगा, अन्यथा आगन्तुक अर्थात् जन्म के बाद बीच में उत्पन्न हुआ होगा — यह कहना चाहिए। शनि के संबंध से पत्थर अथवा वायु द्वारा व्रण होता है, मंगल के सम्बन्ध से अग्नि, शस्त्र और विष से होता है; मंगल तथा बुध के सम्बन्ध से पृथ्वी द्वारा, सूर्य के सम्बन्ध से लकड़ी अथवा चतुष्पद पशु की चोट लगने के कारण तथा चन्द्रमा के सम्बन्ध से सींग लगने अथवा पानी के योग से व्रण होता है — यह समझना चाहिए। शुभग्रह सम्बन्धी व्रणादि शुभ तथा अशुभ ग्रह सम्बन्धी अशुभ होते हैं ॥ २५॥ जिस अङ्ग में बुध सहित तीन ग्रह पड़े हों, उस अङ्ग में निश्चित रूप से व्रण आदि होंगे, चाहे वे ग्रह शुभ हों अथवा अशुभ हों। लग्न से छठे स्थान में स्थित अशुभ ग्रह व्रण देने वाला होता है। यदि लग्न में ग्रह हो तो तिलक अथवा मस्सा होता है। यदि वहाँ शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो वह पुरुष अवश्य ही चिह्न युक्त होगा॥ २६॥ चतुष्पद पशुओं के अङ्ग में मेषादि राशि के क्रमानुसार शिर, मुख, पाँव, कंधा, पीठ, छाती, पार्श्व, कोख, गुदा, पाँव, जननेन्द्रिय, स्फिक् तथा पूँछ — यह अङ्ग समझने चाहिए॥ २७॥ प्रश्न के समय १२ अंगुल का शंकु स्थापित करके उसके

छायांगुलों पर से इष्टकाल लाकर, उस पर से लग्न स्पष्ट करके, लग्न राशि तथा अंश को छोड़ कर केवल कला को शंकुच्छाया जितने अंगुल की हो, उस अङ्क से गुणा करें, फिर उन्हें दो स्थानों में स्थापित कर, एक स्थान में ७ का भाग दें। जो अंक शेष बचे, उसे सूर्यादि क्रम से सात ग्रह सम्बन्धी अङ्क समझना; यथा- १ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा इत्यादि। शनि का शून्य समझना। फिर शेष अंक जिस ग्रह का आया हो, उस ग्रह के इस प्रकार गुणा करें सूर्य ५, चन्द्रमा २१, मंगल १४, बुध ९, गुरु ८, शुक्र ३ तथा शनि ११। जो अंक दूसरे स्थान में स्थापित हैं, उनको ही गुणा करें। फिर उस गुणाकार में ७ का भाग देने पर जो अंक शेष बचे, उस पर से इस ग्रह का उदय समझना चाहिए। वह उदय शुभ ग्रह का हो पृच्छक का अभिमत सिद्ध होगा और यदि अशुभ ग्रह का हो तो सिद्ध नहीं होगा ॥२०॥

गुणकारैकक्या विभक्ते तस्मिन् सूर्यादिगुणकपरिशुद्धे। यस्य न शुद्ध्यति वर्गो विज्ञेयस्तद्दशाकालः ॥२१॥ भौमदिवाकर शेषे दिवसाः शुक्रेन्दुशेषतः पक्षाः। सुरगुरुशेषे मासाः सौम्ये ऋतवः शनावब्दाः ॥२२॥ आधाने तदनु जये पराजये वा शत्रूणां निधनविधौ समागमे वा। अर्थाप्तौ शुभमशुभं च सर्वकालं पृच्छायां समयमिमं विचिन्त्य वाच्यम् ॥२३॥ रवौ विलग्ने ज्वलनः प्रदीपो रक्तं च वस्त्रं नृपदर्शनं च। श्वेतं च वस्त्रं सितपुष्पगन्धा नारी च पीयूषमयूखगर्भे ॥२४॥ महीसुते विद्रुमहेमरक्तस्रावस्तपैवार्द्रमृगादिमांसम्। शशांकपुत्रे नभसि प्रयाणं जीवे सुरैर्बन्धुजनेन योगः ॥२५॥ शुक्रे सलिलोत्तरणं लङ्घाक्रमणं खरांशुपुत्रे च। लग्नस्थे वक्तव्यं स्वप्नप्रश्ने विमिश्रितं मिश्रैः ॥२६॥ शत्रुगृहनीचगृहैर्दुःस्वप्नो निर्जितैर्ग्रहैर्वाच्यः। रविकिरणलुप्तकायैः स्वप्ने प्रष्टुर्भवेद्भङ्गः ॥२७॥ लग्नचन्द्रान्तराल संख्यया फलपाककालो वाच्यः। स्वस्वप्नांतरे यं निरूप्यं पूर्वपूर्ववदित्येवं प्राह पवनेश्वरः ॥२८॥ अकचटतपयशवर्गा रविकुजसितसौम्यजीवसौरीणाम्। चन्द्रस्य च निर्दिष्टा प्रश्ने प्रथमोद्भवं वर्णम् ॥२९॥ ज्ञात्वा तस्माल्लग्नं संगृह्य शुभाशुभं वदेत्प्राज्ञः।

वर्गादिमध्यचरमैर्वर्णैः प्रश्नोद्भवैर्विषमम् ॥ ३० ॥ राशिं लग्नं प्रवदेच्छेषैर्युग्मं सितगुरुजीवानाम् । कुजरविणयो-
श्च नैवं रविशशिनोरेक राशित्वात् ॥ ३१ ॥ तस्मात्प्रागवत्प्रवदेत्पृच्छासमये शुभाशुभं सर्वम् । कालस्याविज्ञानादे-
तच्चिन्त्यं सदा प्रश्ने ॥ ३२ ॥ इति ॥

टीका ॥ छायांगुल तथा लग्न लिप्ता के गुणाकार को उक्त सूर्यादि सातों ग्रहों के गुणांक के संख्या
से भाग लेकर जो शेषांक बचे, उसमें से सूर्यादिक के गुणक शुद्ध करें अर्थात् जितने जायें, उतने बाद करें;
जो अंक बाद न हो, उसे अशुद्ध अङ्क समझें । वह अशुद्ध अङ्क जिस ग्रह का आये, उसपर से प्रश्नगत कार्य की
अवधि कहनी चाहिए ॥ २१ ॥ मङ्गल अथवा सूर्य का अङ्क अशुद्ध रहे तो शोधन करने पर जितने शेष बचें,
उतने दिन में कार्य होगा — यह कहना चाहिए । शुक्र तथा चन्द्रमा का अंक अशुद्ध रहा हो तो शेष का प्रमा-
-ण 'पक्ष', ऐसे ही गुरु का अंक अशुद्ध हो तो 'मास', बुध का हो तो उतने ही 'ऋतु', अन्य अङ्क अशुद्ध आये तो
शेषांक समान 'वर्ष' में कार्य होगा — यह समझना ॥ २२ ॥ गर्भ, जय-पराजय, शत्रु-नाश, गमनागमन
तथा धन-प्राप्ति आदि पूर्वोक्त प्रश्नों के शुभाशुभ फल की कालावधि इस समय का विचार करके कहनी
चाहिए ॥ २३ ॥ स्वप्न के प्रश्न में यदि सूर्य लग्नगत हो तो अग्नि, दीपक, रक्त वस्त्र अथवा राजा का दर्शन
स्वप्न में हुआ है — यह कहना चाहिए । यदि लग्न में चन्द्रमा हो तो श्वेत वस्त्र, पुष्प, गंध और स्त्री — इनको
स्वप्न में देखा होगा । यदि मंगल हो तो मूँगा, स्वर्ण, बहता हुआ रक्त एवं गीला मृग आदि का मांस — इन्हें देखा
है । यदि लग्न में बुध हो तो स्वप्न में आकाश में यात्रा करता देखा होगा । यदि गुरु हो तो देवताओं तथा
बंधुजनों का समागम देखा होगा । यदि शुक्र हो तो पानी में उतरना एवं शनि हो तो पर्वत आदि ऊँची जगह
पर चढ़ना स्वप्न में देखा होगा । यदि मिश्र ग्रह हो तो मिश्र-फल कहना चाहिए ॥ २४-२६ ॥ यदि प्रश्न-लग्न में
ग्रह शत्रु की राशि का हो अथवा युद्ध में दूसरे ग्रह से हारा हुआ हो तो दुष्ट-स्वप्न देखा है — यह कहना चाहिए,

यदि लग्न में अस्तंगत ग्रह हो तो प्रश्न करने वाले का भङ्ग (विनाश या हानि) हो – यह कहना उचित है ॥२७॥ लग्न तथा चन्द्रमा के बीच जितने घर का अन्तर हो, उतने ही दिनों में स्वप्न का फल प्राप्त होगा – यह कहना चाहिए। अपने स्वप्न का फल भी इसी प्रकार समझना चाहिए ॥२८॥ सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध, गुरु तथा शनि – ये अनुक्रम से अ, क, च, ट, त, प – ये वर्ग हैं तथा चन्द्रमा के 'य' और 'श' – ये दो वर्ग हैं। अस्तु, प्रश्नकर्ता के मुख से जो पहला वर्ण (अक्षर) निकले, वह वर्ण जिस वर्ग का हो और वह वर्ग जिस ग्रह का हो, उसे समझ कर, उस पर से लग्न निश्चित करके शुभ-अशुभ फल कहना चाहिए। वर्ग के अक्षर पर से लग्न लाने का प्रकार यह है – वर्ग का प्रथम, मध्य और अन्त का जो अक्षर आये तथा वर्ग मंगल, बुध, गुरु, शुक्र तथा शनि – इनमें से जिसका हो, उसका विषम राशि का लग्न कहना चाहिए। यथा – प्रश्नकर्त्ता के मुख से पहला अक्षर क, ग अथवा ङ निकला तो यह 'कवर्ग' हुआ। क-वर्ग मङ्गल का है, अतः मंगल की विषम राशि 'मेष' लग्न हुई। इसी प्रकार सम अक्षर 'ख' और 'घ' – ये पहले मुख से निकलें तो मंगल की समराशि 'वृश्चिक' लग्न होगी। इसी प्रकार से बुध गुरु आदि ग्रहों के वर्गाक्षर से लग्न निश्चित करनी चाहिए, परन्तु यह तरीका (नियम) सूर्य तथा चन्द्रमा के लिए नहीं है, क्योंकि इन दोनों की एक-एक राशि ही है। अस्तु, अवर्ग के सभी अक्षरों से 'सिंह' लग्न तथा 'य' और 'श' वर्ग के सभी अक्षरों से 'कर्क' लग्न समझनी चाहिए ॥२९-३२॥ इति॥

अथ लग्नचिन्ता विचारम् ॥ देहः कोशो योधो वाहं मंत्रः शत्रुर्मार्गो ऽप्यायुः। चित्तं कर्म प्राप्तिर्मन्त्री प्राग्लग्नाद्या भावाश्चिन्त्याः ॥१॥ त्रिलाभ वर्ज रविसौरि भौमा निघ्नंति नो कर्म च सूर्यभौमौ। पुष्णंति सौम्या रिपुराशि वर्ज्यं नास्तं मृत्युर्मृत्युमिनर्क्षमिन्दुः ॥२॥ लग्नोपगतैः सौम्यैरारोग्यं वित्त सौख्यं च। अर्थस्थैरर्थचयो योधाविवृद्धिस्तृतीयस्थैः ॥३॥ वाहन सुहृदां वृद्धिश्चतुर्थगैः पंचमैस्तु मंत्रबलम्। रिपुनाशं

भृ० सं० ४२८

भा० टी०

षष्ठस्था भृगुवर्ज्यं सप्तमे ऽ ध्वहिताः ॥४॥ रक्षत्यायुर्निधने शशिवर्ज्यं नवमभे यशः संपत् । कर्मणि सिद्धिर्लाभो बलसंघातश्च दशमाद्येः ॥५॥ सौमार्कार्किशशांकैर्लग्ने वधबंधमरण संत्रासाः । अर्थक्षयो द्वितीयैस्तृतीय संस्थैर्यशो द्युतिमत् ॥६॥ वाहन मित्र वियोगो मंत्रस्रावो रिपुक्षयश्चेति । हिबुकादिषु सप्तमगैः स्वविषयनाशो भृगुसुते च ॥७॥ मृत्युर्निधनोपगतैः सेनाव्यसनं महन्नवमस्थैः । दशमस्थौ कुजसूर्यौ जयदौ भंगप्रदः सौरिः ॥८॥ जय एकादश संस्थैः क्रूरैरंत्योपगैः स्वबलभेदः । उपचयवर्ज सौम्यैस्तत्पापैर्विपर्यस्तम् ॥९॥ क्रूरो ऽप्यनुकूलस्थः शस्तो लग्ने शुभो ऽपि नानिष्टः । वक्री न शुभः केन्द्रे तदहस्तद्वर्गलग्नं च ॥१०॥

टीका ॥ अब लग्न-विचार के विषय में कहते हैं ॥ देह, कोश, योद्धा, वाहन, मन्त्र, शत्रु, मार्ग, आयुष्य, चित्त, कर्म, लाभ तथा मन्त्री - इनके सम्बन्ध में लग्न आदि द्वादश भावों से क्रमशः विचार करना चाहिए ॥१॥ सूर्य, शनि और मङ्गल - यह तीनों ग्रह तृतीय तथा एकादशभाव को पुष्ट करते हैं तथा अन्य स्थानों का विनाश करते हैं, परन्तु सूर्य तथा मंगल दशम स्थान का विनाश नहीं करते। शुभग्रह अपने शत्रु के घर के अतिरिक्त शेष सब स्थानों को पुष्ट करते हैं, परन्तु शुक्र सप्तम स्थान को, चन्द्र अष्टम स्थान को तथा सिंह राशि वाले स्थान को पुष्ट नहीं करता ॥२॥ यदि लग्न में शुभग्रह हो तो आरोग्य, धन और सुख की, यदि द्वितीय भाव में हो तो धन की, तृतीय भाव में हो तो योद्धाओं (पराक्रम) की, चतुर्थ भाव में हो तो वाहन और मित्र की और पंचम भाव में हो तो मन्त्र (सम्मति) की वृद्धि करते हैं। यदि षष्ठभाव में शुभग्रह हो तो शत्रु का नाश होता है। शुक्र के अतिरिक्त अन्य कोई भी शुभग्रह सप्तम भाव में हो तो यात्रा सुखद तथा हितकर रहती है। चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य कोई भी शुभग्रह अष्टम भाव में हो तो आयु की रक्षा होती है। यदि शुभग्रह नवमभाव में हो तो यश और सम्पत्ति की प्राप्ति, दशम भाव में हो तो कर्म-सिद्धि, एकादश भाव में हो तो लाभ तथा द्वादशभाव में हो तो बल (सेना)

आदि की वृद्धि करता है ॥ ३-५॥ मंगल, सूर्य, शनि और चन्द्रमा -ये लग्न में हों तो बंधन, मारण और त्रास प्राप्त होते हैं। येही ग्रह यदि द्वितीय भाव में हों तो यश की प्राप्ति होती है, परन्तु धन का नाश होता है। येही ग्रह यदि तृतीय भाव में हों तो यश प्राप्त होता है; चतुर्थ भाव में हों तो मित्र और वाहन का वियोग होता है; यदि पंचम भाव में हों कोई भी मन्त्र (सम्मति) गुप्त नहीं रह पाता- सब पर प्रकट हो जाता है और यदि षष्ठभाव में हों तो शत्रु का नाश होता है। यदि सप्तम भाव में मंगल, सूर्य, शनि, चन्द्रमा अथवा शुक्र हों तो अपना देश छूट जाता है। शुक्र के अतिरिक्त अन्य चारों ग्रह अर्थात मंगल, सूर्य, शनि और चन्द्रमा अष्टम भाव में हों तो मृत्यु हो जाती है; यदि ये नवम स्थान में हों तो सेना को संकट होता है। यदि दशम भाव में मंगल या सूर्य हों तो विजय मिलती है, परन्तु शनि हो तो विनाश (भङ्ग) होता है। यदि मंगल आदि पूर्वोक्त ग्रह एकादश भाव में हों तो विजय मिलती है। यदि द्वादश भाव में क्रूर ग्रह हो तो अपनी सेना में ही फूट पड़ जाती है। तृतीय, षष्ठ, दशम तथा एकादश भावों को छोड़ कर अन्य भावों में स्थित शुभग्रहों का जो फल कहा गया है, पापग्रहों का फल उससे विपरीत समझना चाहिए ॥ ९॥ यदि लग्न में क्रूरग्रह हो, परन्तु वह अनुकूल हो तो उसका फल अच्छा ही समझना चाहिए। वक्री ग्रह यदि केन्द्र में भी हो तो भी अशुभ होता है। वक्रीग्रह का वार, लग्न तथा वर्ग अर्थात द्रेष्काण नवांश आदि भी अशुभ होते हैं ॥ १०॥

प्रश्नगत द्रेष्काणे राजा नेता द्वितीये ऽस्य। परतो गणपुरोहितभिषजां परतोऽस्य भृत्यानाम् ॥ ११॥ स्थानपराक्रमचिन्ता परतो व्यवहार नृपसैन्ये। अभ्यवहार्यं शयनासने च तत्पंचसु क्रमशः ॥ १२॥ यानासन शय्या वाहनानि दशमे परतोऽन्नपानानि। वाहन योधाः परतस्त्रयोदशे ऽपि युवराजः ॥ ॥ १३॥ ज्ञेयं बलं प्रयातुर्मन्त्रस्य निश्चयश्च तत्परतः। परतः पंचदशाद्ये द्रेष्काणचतुष्टये रिपवः ॥ १४॥

एकोनविंशतितमे सैनिकशयने क्षणानि परतोऽर्थः । परतोऽस्य दण्डनेता सैन्यस्योपद्रवः परतः ॥२५॥ सेनाछिद्रं तस्मात्सेनानेता भवेच्चतुर्विंशे । सेनारोग्यं सैन्यं चतुःपदं च क्रमात्त्रितये ॥२६॥ कार्यं कोशः फलसिद्धयस्त्रपे भूभुजस्त्रपे परतः । धर्मक्रियार्थयोधार्चनं च यात्रासमाप्तिश्च ॥२७॥ इत्युदयाद्या द्रेष्काणैर्ये मयाऽऽदिष्टाः । सदसत्फलमादेश्यं सदसद्युतवीक्षणात्तेषाम् ॥२८॥ नवमांशे तिग्मांशोर्वाहननाशो विलग्नसंप्राप्ते । कुचद्वात स्वगृहगमनं प्रतापमृदुला च चन्द्रांशे ॥२९॥ कौजेऽग्निभयं बौधे मित्रप्राप्तिर्धनागमो जैवे । भोगविवृद्धिः शौक्रे भृत्यविनाशो रविसुतांशे ॥२०॥

टीका ॥ लग्न के प्रथम द्रेष्काण से बारहवें भाव के अन्तिम द्रेष्काण तक ३६ द्रेष्काणें द्वारा राजा आदि, यात्रा समाप्ति पर्यन्त का शुभाशुभ अथवा अशुभ ग्रह के योग एवं दृष्टि का द्रेष्काण द्वारा विचार करके फल कहना चाहिए॥ छत्तीस द्रेष्काणों द्वारा क्रमशः इनके विषय में विचार करना चाहिए — प्रथम द्रेष्काण से राजा, द्वितीय से सेनापति, तीसरे से ज्योतिषी, पुरोहित, वैद्य, चौथे से नौकर, पाँचवें से व्यवहार, छठे से राज-सैन्य, सातवें से पड़ाव, आठवें से शयन, नवें से आसन, दसवें से पाल-की, आसन, शय्या, वाहन और अश्व, ग्यारहवें से अन्न-पान, बारहवें से योद्धा और वाहन, तेरहवें से युवराज, चौदहवें से मन्त्र (सम्मति), निश्चय, पन्द्रहवें से शत्रु, सोलहवें, सत्रहवें तथा अठारहवें से भी शत्रु, उन्नीसवें से सेना, शयन, दर्शन, बीसवें से अर्थ अर्थात् धन, इक्कीसवें से दण्डनायक (कोतवाल), बाईसवें से सेना के उपद्रव, तेईसवें से सेना के छिद्र, चौबीसवें से सेनापति, पच्चीसवें से सेना का आरोग्य, छब्बीसवें से सेना, सत्ताईसवें से चतुष्पद, अट्ठाईसवें से कार्य, उन्तीसवें से कोष, तीसवें से फल, सिद्धि, इकत्तीसवें से धर्म, बत्तीसवें से क्रिया, तेतीसवें से धन, चौंतीसवें से यो-द्धा, पैंतीसवें से पूजा तथा छत्तीसवें से यात्रा की समाप्ति के विषय में विचार करना चाहिए ॥

१९-१८॥ यदि लग्न सूर्य के नवांश में हो तो वाहन का नाश हो, चन्द्रमा का नवांश हो तो मन्द प्रताप होकर कष्ट से घर लौटे। मंगल के नवांश में अग्नि का भय, बुध के नवांश में मित्र-प्राप्ति, गुरु के नवांश में धन का आगमन, शुक्र के नवांश में भोग-वृद्धि तथा शनि के नवांश में नौकरों का नाश होता है॥ १९-२०॥

यदुदयति फलं प्रदिष्टं जनयति तस्य नवांशको विलग्ने। शुभ भवन नवांशके सहायं रिपुबल भाग उपैति यातुरर्थात ॥ २१॥ शुभर्क्षे तन्नवांशे च यो याति मनुजेश्वरः। शत्रु बलान्नेता साहाय्य-मुपगच्छति ॥२२॥ यत्प्रोक्तं राश्युदये द्वादशभागेऽपि तत्फलं वाच्यम्। यच्च नवांशक विहितं त्रिंशांशस्योदये तत्स्यात् ॥२३॥ उदयमुदयपं वा जन्मपं जन्मभं वा तदुपचयग्रहं वा वीक्ष्य लग्ने यियासोः। विनिहतमरिपक्षं विद्धि शत्रोरिदं वा यदि हिबुक समेतं पृच्छतोस्तास्थितं वा॥२४॥ शत्रोर्होरा राशिस्तदधिपतिर्जन्मभं तदीशो वा। यद्यस्तेहिबुके वा तथापि शत्रुर्हतो वाच्यः ॥२५॥ क्षुत्तृष्णार्तिर्मार्गनाशोऽक्षिरोगः क्लेश स्यापि स्तिग्मगोः प्राग्विलग्ने। शस्तं चान्द्रे देवतार्च्या स्वदेशे कौजे पित्त व्याल शस्त्राग्नि पीडाः॥ २६॥ बौधे तुष्टिर्वाञ्छिताप्तिर्यशश्च जैवेऽर्थाप्तिः स्थानलाभोऽरिनाशः। स्त्रीरत्नाप्तिः कार्यसिद्धिश्च शौक्रे मांदे वह्नि व्याधिनीचापमानाः ॥२७॥ वृष वृश्चिक कर्कटैर्नृणामनुकूलैरपि लग्नमाश्रितैः। गमनं च वदंत्यशोभनं मुनयोऽन्त्यर्क्षसमाश्रितैरपि ॥२८॥ मीने कुटिलो मार्गो भवति तदंशेन्यराशि लग्नेऽपि। नो यानमाप्य लग्ने कार्यं तेषां नवांशेऽपि॥ २९॥ सर्वं प्रमाणं मुनिनोदितत्वात्किं त्वत्र होरा बलमेव योग्यम्। यस्मिन्सहस्रांशुरवास्थितोऽर्धे तिर्यङ्मुखी सा गणयेत्ततोऽन्याः ॥३०॥ धत्तेवांछित कार्यमूर्ध्व वदना क्लेशाढ्यिना लग्नगा क्लेशायासपरिक्षयांश्च कुरुते तिर्यङ्मुखी गच्छतः। सैन्यभ्रंशमधोमुखी प्रकुरुते कृच्छ्राद्गृहे चागमं सर्वाः पुष्ट फलप्रदाः स्वपतिना दृष्टा न पापग्रहैः॥ ३१॥

टीका॥ पहले लग्न का जो शुभाशुभ फल कहा गया है, वह फल लग्न के नवांश में होता है। लग्न में शुभ राशि का नवांश हो तो शत्रु की सेना का कुछ भाग आक्रमणकारी राजा की सहायता करता है॥ २१॥ शुभ लग्न तथा शुभ नवांश में जो राजा शत्रु के ऊपर चढ़ाई करता है, उसे शत्रु की सेना के ही सेनापति की भी सहायता प्राप्त होती है॥ २२॥ लग्नगत राशि का जो फल कहा गया है, वही फल लग्नगत द्वादशांश का भी कहना चाहिए तथा जो नवांश का फल कहा है, वही त्रिंशांश का भी समझना चाहिए॥ २३॥ लग्नेश, जन्मराशि, जन्म लग्नेश अथवा जन्मराशीश अथवा जन्मलग्न व जन्मराशि से उपचयस्थानगत राशि - इनमें से एक भी प्रश्न-लग्न में हो तो शत्रु पर चढ़ाई करने वाले के शत्रु का नाश होता है। यदि यह योग शत्रु की जन्म लग्न आदि के चतुर्थ स्थान में हो अथवा प्रश्नकर्त्ता के जन्म लग्न आदि का प्रश्न-लग्न के सप्तम स्थान में हो तो भी शत्रु-पक्ष का नाश होता है॥ २४॥ शत्रु की जन्म लग्न राशि और उसका स्वामी अथवा शत्रु की जन्म राशि अथवा उसका स्वामी- ये प्रश्न कुण्डली में चतुर्थ अथवा सप्तम स्थान में हों तो शत्रु का नाश होगा- यह कहना चाहिए॥ २५॥ सिंह लग्न में यात्रा करने वाले को पहले क्षुधा-तृषा सम्बन्धी पीड़ा, मार्ग-नाश, नेत्र-रोग तथा क्लेश की प्राप्ति होती है। कर्क लग्न में देव-कार्य के लिए अपने ही देश में जाना शुभ होता है। मेष तथा वृश्चिक लग्न में यात्रा करने से पित्तरोग, सर्प-भय, शस्त्र तथा अग्नि पीड़ा होती है॥ २६॥ मिथुन तथा कन्या लग्न में प्रस्थान करने से सन्तोष, इच्छित-फल की प्राप्ति तथा यश की उपलब्धि होती है॥ वृषभ एवं तुला लग्न में यात्रा करने से स्त्री तथा रत्न की प्राप्ति होती है। मीन लग्न में यात्रा करने से धन और स्थान का लाभ तथा शत्रु का नाश होता है। मकर एवं कुंभ लग्न में यात्रा करने से अग्नि-भय, रोग तथा नीच-पुरुष से अपमान की प्राप्ति होती है॥ २७॥ वृषभ, वृश्चिक तथा कर्क - ये राशियां मनुष्य को पूर्वोक्त प्रकार से अनुकूल

भी हों तो भी लग्न और द्वादश स्थान में शुभ नहीं होती – यह मुनियों का कथन है ॥२८॥ लग्न में मीन राशि हो अथवा लग्न तो अन्य राशि की हो, परन्तु उसमें नवांश मीन का हो तो भी यात्रा करने वाले को मार्ग क्लेश दायक होता है तथा जलराशि के लग्न में तथा नवांश में भी प्रस्थान नहीं करना चाहिए ॥२९॥ यह सभी फल मुनियों ने कहे हैं; अतः योग्य हैं; परन्तु होरा-बल सबसे योग्य है। होरा तीन प्रकार की है – (१) तिर्यङ्मुखी, (२) ऊर्ध्वमुखी तथा (३) अधोमुखी। अब होरा देखने की रीति कहते हैं। कुण्डली में सूर्य जिस राशि के जिस अर्द्धभाग में अर्थात् पहले १५ अंश में अथवा बाद के १५ अंश में जहाँ बैठा हो, वह प्रथम होरा है और उसका नाम 'तिर्यङ्मुखी' समझना चाहिए। उसके आगे १५-१५ अंश के प्रमाण से ऊर्ध्वमुखी, अधोमुखी, फिर तिर्यङ्मुखी – इसी क्रम से जो होरा यात्रा-लग्न में आये, उसका फल इस प्रकार समझना चाहिए कि यदि ऊर्ध्वमुखी होरा लग्न में हो तो बिना क्लेश के इच्छित कार्य पूरा होगा। यदि तिर्यङ्मुखी होरा हो तो क्लेश, परिश्रम एवं क्षय आदि अनिष्ट-फल होंगे और अधोमुखी होरा हो तो सेना भङ्ग होगी तथा उसमें प्रस्थान करने वाला कष्ट सहित ही घर लौटेगा; परन्तु यदि अपने स्वामी की दृष्टि हो और पापग्रह की दृष्टि न हो तो सभी होरा श्रेष्ठ फल देने वाली सिद्ध होती हैं ॥३०॥३१॥

आरुद्रमीशा रविभौमजीवविद्भार्गवैनीन्दव इत्यतोऽगुः। यामार्धमिन्द्वानिलकालशंभुतोयाग्निचन्द्रासुरमध्यतोऽन्यत ॥ ३२॥ दिनाधिपाच्चा रविशुक्रसौम्यशशांकसौरीज्यकुजाः क्रमेण ॥ [वारादेर्घटिका द्विघ्नाः स्वाक्षहृच्छेषवर्जिताः। सैका तष्टा नगैः कालहोरेशा दिनपात् क्रमात्]॥ ३३॥ व्यतिपातविष्टिवैधृतिपापग्रहलग्नदिवसेषु। चौर्यावस्कंदानृतसंग्रामाः सिद्धिमायांति ॥३४॥ प्राच्यादिदिक्षु मेषाद्याः स्वपंच नवमैर्युताः। तत्रगे यामिनीनाथे तदाशागच्छतोऽग्रतः ॥३५॥ ओजदण्डे पुरश्चन्द्रे पृष्ठे राहौ रणे जयः। सिद्धिर्दक्षिणगे चन्द्रे हानिर्वामे परे मृतिः ॥३६॥ यात्रादिगीशाच्चदि पंचमेऽन्यो गृहे ग्रहो वीर्ययुतोऽव

तिष्ठेत् । समुच्चताशाकथितानि भंक्ता फलानि वीर्यान्नयाति स्वकाष्ठाम् ॥३७॥ एकोपि जीवज्ञसिताऽसितानां कुजा त्रिकोणे रवितोऽथवेन्दुः । यद्योद्यतस्तत्र न याति याता तयोर्बलीयान्नयाति स्वकाष्ठाम् ॥ ३८॥ परस्परं सौरि कुजौ रवीन्दू त्रिकोणगौ भार्गवलोहितौ च । फलं यदुक्तं तद्देशमेव विनाश्य पश्चात्स्वदिशं नयेताम् ॥३९॥ ताराग्रहश्चेत्क्षितिजात्त्रिकोणे सूर्यादपि स्याद्यदि वा शशांकः । दिगीश्वरात्पंचमगो बली वा ग्रहः स्वकाष्ठां नयति प्रसह्य ॥४०॥ दृष्टाऽदृष्टफलाप्त्यै शास्त्रं हृदये निधाय मिहिरस्य । दैवज्ञवल्लभाख्यं दृष्ट्वा प्रश्नं वेदेत्तज्ज्ञः ॥ ४१॥ यदुपचितमन्यजन्मनि शुभाऽशुभं तस्य कर्मणः पंक्तिम् । व्यंजयति शास्त्रमेतत् तमसि द्रव्याणि दीप इव ॥४२॥ लग्नस्य योंऽशको देवि तस्य स्वामी तु यो ग्रहः । तद्वशात्कालविज्ञानमुदितांशक संख्यया ॥ ४३॥ सूर्येऽयनं क्षणश्चेन्दु दिनान्यारे तथा बुधे । ऋतवश्च गुरौ मासाः शुक्रे पक्षाः प्रकीर्तिताः॥ सूर्यपुत्रे समा देवि सर्वत्रैव विधिः स्मृतः ॥ ४४॥ इति ॥

टीका॥ पूर्व आदि आठ दिशाओं में अर्द्ध याम तक राहु भ्रमण करता है । उसे देखने का विचार इस प्रकार है — रवि, मंगल, गुरु, बुध, शुक्र, शनि और चन्द्रमा — ये ग्रह अनुक्रम से पूर्व से उत्तर पर्यन्त दिशाओं के स्वामी हैं । जो वार जिस दिशा का स्वामी है, उसी दिशा में पहले अर्द्धयाम में राहु रहता है, दूसरे अर्द्धयाम में उस दिशा से छठी दिशा में रहता है । इसी प्रकार आगे छठी-छठी दिशा में आधे-आधे प्रहर तक रहता है । यथा- रविवार को प्रातः ३॥ (साढ़े तीन) घड़ी तक पूर्व में, फिर ३॥ घड़ी वाय-व्य कोण में, फिर ३॥ घड़ी दक्षिण में, फिर ३॥ घड़ी ईशान कोण में, फिर ३॥ घड़ी पश्चिम में, फिर ३॥ घड़ी आग्नेय कोण में और फिर ३॥ घड़ी नैर्ऋत्य कोण में । इसी प्रकार सोमवार को प्रथम उत्तर से आरंभ करके जानना चाहिए ॥ ३२॥ प्रथम होरा वाराधिपति की, फिर क्रमशः रवि, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनि, गुरु तथा मंगल की समझनी चाहिए [illegible] समय तक जो गत घटिका हुई हों, उन्हें दूना करके

भृ० सं० ८३२

दो जगह लिखें। एक जगह उन घड़ियों में ५ का भाग देने से जो शेष रहे, वह अङ्क अन्यत्र दूसरी जगह लि-
-खी हुई द्विगुणित घड़ियों में से निकाल कर जो अंक आये, उसमें १ मिला कर, ७ का भाग देने पर जो
अङ्क शेष बचे, उस वार की होरा उस समय समझनी चाहिए। यथा- १ बचे तो रवि की, २ बचें तो चन्द्रमा
की इत्यादि। उदाहरणार्थ- रविवार को इष्टघटी ६ द्विगुणित करने पर १२ हुए। इनमें ५ का भाग देने पर
शेष २ बचे। इन्हें १२ में से कम किया तो शेष १० बचे। इनमें १ जोड़ा तो ११ हुए। इनमें ७ का भाग
दिया तो शेष ४ बचे। चौथा वार बुधवार होता है, अत: रविवार को इष्टघटी ६ पर बुध की होरा आय-
-गी]॥३३॥ व्यतिपात, भद्रा, वैधृति तथा पापग्रह का लग्न और वार - इनमें चोरी, झगड़ा, मिथ्या-भाषण,
संग्राम आदि करने से कार्य-सिद्धि होती है॥३४॥ मेष, सिंह और धनु का चन्द्रमा पूर्व दिशा में, वृष, कन्या
तथा मकर का चन्द्रमा दक्षिण दिशा में, मिथुन, तुला तथा कुंभ का चन्द्रमा पश्चिम दिशा में एवं कर्क,
वृश्चिक तथा मीन राशि का चन्द्रमा उत्तर दिशा में निवास करता है। जिस दिशा में चन्द्रमा का निवास
हो, उस दिशा में जाने वाले के लिए चन्द्रमा सम्मुख होता है॥३५॥ परिघदण्ड वाम भाग में हो, चन्द्रमा
सम्मुख हो तथा राहु पीठ पर हो - ऐसे मुहूर्त में यात्रा करने वाले को संग्राम में विजय प्राप्त होती है।
दक्षिण चन्द्रमा सिद्धि देता है, वाम चन्द्रमा हानिकारक सिद्ध होता है तथा पृष्ठभाग का चन्द्रमा मृत्यु-दायक
माना गया है॥३६॥ जिस दिशा में जाना हो, उस दिशा का स्वामी कुण्डली में जहाँ बैठा हो, उससे पंचम
स्थान में कोई बलवान् अन्य ग्रह बैठा हो तो वह ग्रह अपनी इष्ट-दिशा के फल का नाश करके, उस
दिशा में पुरुष को अपने बल से ले जाता है॥३७॥ मंगल से पंचम अथवा नवम स्थान में गुरु, बुध,
शुक्र और शनि - इनमें से कोई भी एक ग्रह हो अथवा सूर्य से पंचम अथवा नवम स्थान में चन्द्रमा हो
तो जाने वाला मनुष्य, जिस दिशा में जाना चाहता है, उस दिशा में नहीं जाता, अपितु उक्त दोनों ग्रहों में

भा० टी०

जो अधिक बलवान् होता है, वह उसे अपनी दिशा में ले जाता है ॥३८॥ शनि और मंगल, अथवा सूर्य और चन्द्रमा, अथवा शुक्र और मंगल — ये परस्पर एक दूसरे से नवम-पंचम स्थान में बैठे हों तो उक्त फल का नाश हो जाता है तथा ये मनुष्य को अपनी दिशा में ले जाते हैं ॥३९॥ यदि मंगल से नवम और पंचम स्थान में बुध, गुरु, शुक्र अथवा शनि में से कोई एक भी बैठा हो अथवा सूर्य से चन्द्रमा नवम-पंचम हो तो अथवा गन्तव्य-दिशा के स्वामी से पंचम स्थान में बलवान् ग्रह हों तो वे ग्रह मनुष्य को अपनी दिशा में ले जाते हैं। ।४०॥ वराहमिहिर द्वारा विनिर्मित इस दैवज्ञवल्लभा नामक शास्त्र को अपने हृदय में विचार पूर्वक धारण कर तथा प्रश्न देखकर प्रश्न का फल कहना चाहिए। जिस प्रकार दीपक अंधकार में रखे हुए पदार्थों को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार यह शास्त्र पूर्व जन्म के शुभ तथा अशुभ कर्मों के फल को प्रकाशित करता है ॥४१-४२॥ प्रश्न-लग्न के नवांश का जो स्वामी ग्रह हो, उससे प्रश्न की अवधि अर्थात् दिन, मास, पक्ष आदि का निर्णय करके कहना चाहिए। उन दिन आदि की संख्या लग्न के नवांशों से कहनी चाहिए, यथा-लग्न पाँचवें नवांश में हो तो ५ दिन, ५ मास आदि कहना चाहिए। सूर्य नवांश का स्वामी हो तो अयन, चन्द्रमा हो तो क्षण, मंगल हो तो दिन, बुध हो तो ऋतु, गुरु हो तो मास, शुक्र हो तो पक्ष एवं शनि हो तो वर्ष कहना चाहिए ॥ ४३-४४॥ इति वराहमिहिर विनिर्मित प्रश्न विचारम् ॥

अन्यच्च॥ तिथिः प्रहर संयुक्ता तारका वारमिश्रिता। अग्निभिस्तु हरेद्भागं शेषं सत्त्वरजस्तमाः॥१॥ सिद्धि तात्कालिकी सत्त्वे रजसा तु विलम्बकम्। तमसा निष्फलं कार्यं ज्ञातव्यं प्रश्न-कोविदैः॥२॥

टीका॥ तिथि ५, वार ३, नक्षत्र ७, प्रहर २ — इन सबको जोड़ने पर १७ हुए तथा ३ से भाग देने पर लब्धि ५, शेष २ बचे, तो दूसरा तत्त्व 'रज' हुआ। इस उदाहरण के अनुरूप ही पृच्छक

जिस तिथि, वार, नक्षत्र तथा प्रहर में प्रश्न करे, उन सब को जोड़ कर उसमें ३ का भाग दे। यदि १ शेष बचे तो 'सत्व', २ बचे तो 'रज' और ० शेष बचे तो 'तम' तत्त्व होगा। 'सत्त्व' तत्त्व में किया गया प्रश्न कार्य-सिद्धि को देने वाला, 'रज' तत्त्व वाला कार्य में विलम्ब करने वाला तथा 'तम' तत्त्व वाला निष्फल अर्थात् कार्य की सिद्धि न देने वाला होता है। इस प्रकार प्रश्न-कालिक तत्त्व का विचार करके ज्योतिषी को प्रश्न का उत्तर देना चाहिए॥ १-२॥

अथ स्वच्छायोपरि प्रश्न ज्ञानम्॥ आत्मच्छाया त्रिगुणिता त्रयोदश समन्विता। वसुभिश्च हरेद् भागं शेषं चैव शुभाशुभम्॥ लाभश्चैके त्रिके सिद्धिर्वृद्धिः पञ्चमसप्तमे। द्वयोर्हानिश्चतुः शोकं षष्ठाष्टे मरणं ध्रुवम्॥ १-२॥ टीका॥ अपने शरीर की छाया को नापकर उसे अंगुलों में गिनें। जितने अंगुल की छाया हो, उसमें १३ मिलाकर ८ का भाग दें, जो अंक शेष बचे, उसका फल इस प्रकार समझना चाहिए - यदि १ शेष बचे तो लाभ, २ बचें तो हानि, ३ बचें तो सिद्धि। ४ बचें तो शोक, ५ बचें तो वृद्धि, ६ बचें तो मरण, ७ बचें तो वृद्धि और ८ बचें तो मृत्यु॥ १-२॥

अथ पन्था प्रश्ना:॥ तिथि प्रहर संयुक्ता तारका वारमिश्रिता। सप्तभिश्च हरेद् भागं शेषं तु फलमादिशेत्॥ वर्तमानं च नक्षत्रं गणयेत्कृत्तिकादितः। सप्तभिश्च हरेद् भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्॥ प्रश्नाक्षरं रुद्रयुक्तं सप्तभिर्भाजितं तथा। फलमेवं क्रमाज्ज्ञेयं सर्वेषां हि शुभाशुभम्॥ एक शेषे भवेत्स्थाने द्वितीये पथि वर्तते। तृतीयेऽर्द्धमार्गे तु चतुर्थे ग्राममादिशेत्॥ पञ्चमे पुनरावृत्तिः षष्ठे व्याधियुतं वदेत् शून्यं ज्ञेयं सप्तमे हि चैतत्प्रश्नस्य लक्षणम्॥ धन सहजगतौ सितामरेज्यौ कथयेच्चागमनं प्रवासिपुंसाम्। तनु हिबुकगताविमौ तद्वत् झटिति नृणां कुरुते गृहप्रवेशम्॥ १-६॥ टीका॥ पथिक के विषय में प्रश्न होने पर इस प्रकार विचार करना चाहिए - प्रश्न-काल के तिथि, वार, नक्षत्र तथा प्रहर को जोड़ कर, उसमें ७ का भाग दें।

जो अङ्क शेष बचे उसके अनुसार फल कहें। दूसरी रीति यह है कि कृत्तिका से वर्तमान नक्षत्र तक गिन कर, उसमें ८ का भाग दें तथा जो अङ्क शेष बचे उसके अनुसार फल कहें। इन दोनों प्रकारों से शेष बचे अङ्कों का फल इस प्रकार कहना चाहिए- यदि १ शेष बचे तो कहें कि यात्री अभी अपने स्थान पर ही है अर्थात् उसने यात्रा आरम्भ नहीं की है। यदि २ शेष बचें तो यात्री मार्ग में है। ३ बचें तो आधे मार्ग में है। ४ बचें तो ग्राम में है। ५ बचें तो मार्ग से लौट गया है। ६ बचें तो रोग-ग्रस्त है तथा ० बचे तो मर गया है- यह कहना चाहिए॥ यदि प्रश्न-लग्न से दूसरे स्थान में शुक्र व तीसरे में गुरु हो अथवा लग्न में शुक्र और चतुर्थ स्थान में गुरु हो तो परदेशी शीघ्र आएगा-- यह कहना चाहिए॥ १-६॥

अथ कार्याकार्य प्रश्नम्॥ दिशा प्रहर संयुक्ता तारका वार मिश्रिता। अष्टभिस्तु हरेद् भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्॥ पञ्चैके त्वरिता सिद्धिः षट्चतुर्थे दिनत्रयम्। त्रिसप्तके विलम्बश्च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ॥ १-२॥ टीका॥ प्रश्नकर्त्ता का मुख जिस दिशा की ओर हो उस दिशा, उस समय के प्रहर, वार तथा नक्षत्र - इन सबकी संख्या को जोड़ कर, उसमें ८ का भाग दें। जो शेष बचे, उसके आधार पर शुभाशुभ फल इस प्रकार कहें-- यदि १ अथवा ५ शेष बचें तो कार्य की सिद्धि शीघ्र हो, ६ अथवा ४ शेष बचें तो तीन दिन में कार्य सिद्ध हो। यदि ३ या ७ शेष बचें तो विलम्ब से कार्य हो और २ या ८ बचें तो कार्य नहीं होगा॥ १-२॥

अथ अङ्क प्रश्न फलम्॥ अङ्कं द्विगुणितं कृत्वा फलनामाक्षरैर्युतम्। त्रयोदशयुतं कृत्वा नवभिर्भागमाहरेत॥ एके हि धनवृद्धिश्च द्वितीये च धनक्षयः। तृतीये क्षेममारोग्यं चतुर्थे व्याधिरेव हि॥ स्त्री लाभः पञ्चशेषे स्यात्षष्ठे बन्धुविनाशनम्। सप्तमे ईप्सितासिद्धिरष्टमे मरणं ध्रुवम्॥ नवमे राज्य सम्प्राप्तिर्नवमे [illegible] यथा॥ नवाग्रहात्मकं चक्रं कृत्वा प्रश्नं निरीक्षयेत। फलं पूर्वोक्तमेवात्र दृष्टव्यं

भृ० सं० ४६३

भा० टी०

प्रश्नकोविदैः ॥ १-४॥ टीका॥ प्रश्न कर्त्ता का नाम जितने अङ्क का हो, उन अङ्कों को दूनाकरके उन में प्रश्नकर्त्ता द्वारा बताये गये किसी फल के नाम के अङ्कों को जोड़ें। फिर उसमें १३ और जोड़ कर ९ का भाग दें। जो शेष बचे, उसका फल आगे बताये अनुसार कहें। दूसरी विधि यह है कि ९ कोष्ठकों का एक चक्र बना कर, उसके प्रत्येक खाने में १ से ९ तक के अंक इस प्रकार से रक्खें कि प्रत्येक ओर से जोड़ने पर योग १५ आये। जिस प्रकार १५ के यन्त्र का स्वरूप बनता है, उसी प्रकार यह चक्र भी तय्यार करना चाहिए, चक्र के तय्यार होजानेपर पृच्छक से कहना चाहिए कि वह उसके किसी एक अंक पर अपनी अँगुली रक्खे। पृच्छक जिस अङ्क पर अंगुली रक्खे, उसका फल भी इसी प्रकार कहना चाहिए। पूर्वोक्त विधि से शेष बचे, अथवा चक्र के किसी अङ्क पर अंगुली रक्खे जाने वाले अङ्क का फल इस प्रकार समझें— १ से धन-वृद्धि, २ से धन-क्षय, ३ से आरोग्य, ४ से व्याधि, ५ से स्त्री-लाभ, ६ से बन्धु-नाश, ७ से कार्य-सिद्धि, ८ से मरण तथा ९ से राज्य-प्राप्ति ॥१-४॥

इसी सम्बन्ध में एक अन्य आचार्य का मत इस प्रकार है ॥ सप्तत्रयाङ्के कथयन्ति वार्ता नवे कपञ्च त्वरितं वदन्ति। अष्टौ द्वितेयनहि कार्यसिद्धिः रसाश्च वेदा घटिका त्रयं च॥ टीका॥ यदि ७ अथवा ३ शेष बचे तो बातचीत चलती रहेगी। ९, १ अथवा ५ शेष बचें तो कार्य शीघ्र होगा। ८ और २ बचें तो कार्य नहीं होगा तथा ६ अथवा ४ बचें तो तीन घड़ी में कार्य होगा — यह कहना चाहिए॥ १-४॥

अथ वार-नक्षत्र युक्त पंथा प्रश्नः॥ बुध चन्द्र भवेत् मार्गे समीपे गुरु शुक्रयोः। रवौ भौमे तथा दूरे शनौ च परिपीड्यते॥ निर्जीवाः सप्त ऋक्षाणि सजीवा द्वादशस्मृताः। व्याधिता नव ऋक्षाणि सूर्याधिष्ण्यात्तु चन्द्रभम् ॥ १९-२०॥ टीका॥ यदि बुधवार अथवा सोमवार को पथिक के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया हो तो यात्री को मार्ग में चलता हुआ जानें। गुरु अथवा शुक्रवार को प्रश्न किया गया हो तो समीप आया हुआ समझें। रवि अथवा मंगलवार को प्रश्न किया गया हो तो यात्री को दूर समझें और शनिवार

को प्रश्न किया गया हो तो यात्री अभी पीड़ित है - यह कहना चाहिए। सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र पर्यन्त लिखने के क्रम से पहले ७ नक्षत्रों तक चन्द्रमा आये तो यात्री (जिसके विषय में प्रश्न किया गया हो) को निर्जीव कहना चाहिए। यदि दूसरे १२ नक्षत्रों तक चन्द्रमा आये तो यात्री को जीवित कहना चाहिए और यदि तीसरे ९ नक्षत्रों तक चन्द्रमा आये तो रोगी समझना चाहिए॥ १-२॥

अथ नष्ट-वस्तु प्रश्नः॥ तिथि वारं च नक्षत्रं लग्नं वह्नि विमिश्रितम्। पञ्चभिस्तु हरेद्भागं शेषं तत्त्वं विनिर्दिशेत्॥ पृथिव्यां तु स्थिरं ज्ञेयमप्सु व्योम्नि न लभ्यते। तेजस्तु राजसाज्ज्ञेयं वायौ शोकं विनिर्दिशेत्॥१-२॥ टीका॥ प्रश्न की तिथि वार नक्षत्र और लग्न को जोड़ें। योग में ३ मिला कर ५ का भाग दें। यदि १ बचे तो नष्ट-वस्तु 'पृथ्वी' में है, २ बचे तो 'जल' में है - परन्तु मिलेगी नहीं; ३ बचें तो 'आकाश' में है - परन्तु मिलेगी नहीं, ४ बचें तो 'तेज' में है और राज्यकोष में चली गई है' तथा ५ बचें तो 'वायु' में है, अतः फल शोक-दायक है - यह कहना चाहिए॥ १-२॥

अथ गर्भिणी प्रश्नः॥ तत्प्रश्नलग्ने रविजीव भौमे तृतीय धून्नवपञ्चमे च। गर्भः पुमान्वै ऋषिभिः प्रणीतश्चाऽन्यग्रहे स्त्री विबुधैः प्रणीता॥१॥ टीका॥ गर्भवती-स्त्री जिस लग्न में प्रश्न करे, उसी लग्न के आधार पर उत्तर देना चाहिए। यदि लग्न से तृतीय, सप्तम, नवम तथा पञ्चम स्थान में सूर्य, मंगल अथवा गुरु स्थित हों तो पुत्र होगा और यदि इन स्थानों में अन्य ग्रह हों तो कन्या होगी - यह कहना चाहिए॥ १॥

अथ मुष्टि प्रश्नम्॥ मेषे रक्तं वृषे पीतं मिथुने नीलवर्णकम्। कर्के च पाण्डुरं ज्ञेयं सिंहे धूम्रं प्रकीर्तितम्॥ कन्यायां नीलमिश्रं तु तुलायां पीतमिश्रितम्। वृश्चिके ताम्रमिश्रं च चापे पीतविमिश्रितम्॥ नक्रे कुम्भे कृष्णवर्णं मीनं पीतं वदेत्सुधीः॥१-२॥ टीका॥ प्रश्नकर्ता की मुट्ठी में किस रंग की वस्तु है - इसे

बताने का नियम यह है कि प्रश्न के समय यदि मेष लग्न हो तो प्रश्नकर्त्ता की मुट्ठी में लाल रंग की वस्तु है-यह कहना चाहिए। यदि वृष लग्न हो तो पीत वर्ण की, मिथुन हो तो नील वर्ण की, कर्क हो तो पाण्डुर वर्ण की, सिंह हो तो धूम्र वर्ण की, कन्या हो तो नीलमिश्रित वर्ण की, तुला हो तो पीतमिश्रित वर्ण की, वृश्चिक हो तो ताम्र मिश्रित वर्ण की, धनु हो तो पीत मिश्रित वर्ण की, मकर अथवा कुम्भ हो तो कृष्ण वर्ण की एवं मीन लग्न हो तो पीत वर्ण की वस्तु कहनी चाहिए ॥ १-२॥

अथ लग्नबलेन मनश्चिन्तितप्रश्नः॥ मेषे च द्विपदां चिन्ता वृषे चिन्ता चतुष्पदाम्। मिथुने गर्भचिन्ता च व्यवसायस्य कर्कटे॥ सिंहे च जीवचिन्ता स्यात् कन्यायां च स्त्रियास्तथा। तुलायां धनचिन्ता च व्याधिचिन्ता च वृश्चिके॥ चापे च धनचिन्ता स्यान्मकरे शत्रुचिन्तनम्। कुम्भे स्थानस्य चिन्ता स्यान्मीने चिन्ता च दैवकी॥ १-३॥ टीका॥ यदि मेष लग्न में प्रश्न किया गया हो तो प्रश्नकर्त्ता को किसी मनुष्य की चिन्ता है - यह कहना चाहिए। यदि वृष लग्न हो तो चतुष्पद की, मिथुन लग्न हो तो गर्भ-सम्बन्धी, कर्क लग्न हो तो व्यवसाय सम्बन्धी, सिंह लग्न हो तो जीव सम्बन्धी, कन्या लग्न हो तो स्त्री सम्बन्धी, तुला लग्न हो तो धन सम्बन्धी, वृश्चिक लग्न हो तो रोग सम्बन्धी, धनु लग्न हो तो धन सम्बन्धी, मकर लग्न हो तो शत्रु सम्बन्धी, कुम्भ लग्न हो तो स्थान सम्बन्धी एवं मीन लग्न हो तो देवता, भूत-पिशाच आदि बाहरी बाधा सम्बन्धी चिन्ता है - यह कहना चाहिए॥ १-३॥

अथ संज्ञानुसारेण लग्ननामानि॥ धातुर्मूलं जीवश्चरस्थिरद्विस्वभावश्च। मेषादयः क्रमेणैव ज्ञातव्याः प्रश्न कोविदैः॥ ३१॥ टीका॥ मेष आदि बारह लग्नों की दो-दो संज्ञाएं हैं। मेष की संज्ञा 'धातु' और 'चर'; वृष की 'मूल' और 'स्थिर'; मिथुन की 'जीव' और 'द्विस्वभाव'; कर्क की 'धातु' और 'चर'; सिंह की 'मूल' और 'स्थिर', कन्या की 'जीव' और 'द्विस्वभाव'; तुला की 'धातु' और 'चर'

वृश्चिक की 'मूल' और 'स्थिर'; धनु की 'जीव' और 'द्विस्वभाव'; मकर की 'धातु' और 'चर', कुम्भ की 'मूल' और 'स्थिर' तथा मीन की 'जीव' और 'द्विस्वभाव' संज्ञायें हैं ॥१॥

अथ अङ्क प्रश्नम् ॥ अष्टोत्तरशताङ्केषु पृष्टा त्वेकं वदे लिखेत् । तस्मिन् द्वादशभिर्भक्ते शेषं चैव शुभाशुभम् ॥ एके दुर्गा सप्तके वै विलम्बं नागे तुर्ये दिक्षु शृतेषु नाशः । रुद्रे सिद्धिर्युग्मके वृद्धिरुक्ता शीघ्रं कार्यं स्यात्त्रिषड् द्वादशेषु ॥१-२॥ टीका ॥ प्रश्नकर्त्ता से कहे कि वह एक सौ आठ अङ्कों में से कोई एक अङ्क लिखे अथवा कहे । वह जो अङ्क बताये, उसमें १२ का भाग दें । जो अङ्क शेष बचें, उनके आधार पर फल इस प्रकार कहना चाहिए — यदि १, ७ अथवा ९ बचें तो कार्य विलम्ब से होगा । यदि ८, ४, १० अथवा ५ बचें तो कार्य का नाश होगा । यदि ११ बचें तो कार्य सिद्ध होगा । यदि २ बचें तो वृद्धि होगी और यदि ३, ६ अथवा १२ (०) बचें तो कार्य शीघ्र होगा — यह कहना चाहिए ॥१-२॥

अथ रोगिणां प्रश्नम् ॥ तिथि वारं च नक्षत्रं लग्नं प्रहरमेकतः । अष्टभिस्तु हरेद्भागं शेषे तु फलमादिशेत् ॥ हयाग्नौ देवताबाधा पित्रोर्वै नेत्रदन्तिषु । षट्चतुर्षु भूतबाधा न बाधा एकपञ्चके ॥१-२॥ टीका ॥ रोगी के सम्बन्ध में प्रश्न हो तो इस प्रकार फल कहें — तिथि, वार, नक्षत्र, प्रहर तथा लग्न की संख्या जोड़कर उसमें ८ का भाग दें । यदि ७ अथवा ६ शेष बचें तो देवता की बाधा, यदि २ अथवा ८ बचें तो पितरों की बाधा, यदि ६ अथवा ४ बचें तो भूत की बाधा है तथा १ अथवा ५ बचें तो किसी की भी बाधा नहीं है — यह कहना चाहिए ॥१-२॥ केवल लग्नोपरि प्रश्नः ॥ मेषे च देवदोषः स्याद् वृषे दोषश्च पैत्रिकः मिथुने शाकिनी दोषः कर्कटे भूतदोषकः ॥ सिंहे सहोदराणां वै कन्यायां कुलमातृजः । तुले दोषश्चण्डिकायां नाडीदोषो हि वृश्चिके ॥ चापे च यक्षिणी पीडा मकरे ग्रामदेवतात् । अपुत्रा दृष्टिजः कुम्भे मीने आकाशगामिनः ॥३-५॥ टीका ॥ अब केवल प्रश्न-समय की लग्न के आधार पर निर्णय करने के लिए

में कहते हैं— यदि मेष लग्न में प्रश्न किया गया हो तो रोगी को देवी का दोष है, यदि वृष लग्न हो तो पितृ-दोष,
मिथुन हो तो शाकिनी-दोष, कर्क हो तो भूत-दोष, सिंह हो तो भ्रातृ-दोष, कन्या हो तो कुल-देवता का दोष, तुला
हो तो चण्डिका-दोष, वृश्चिक हो तो नाडी-दोष, धनु हो तो यक्षिणी-दोष, मकर हो तो ग्राम-देवता का दोष,
कुम्भ हो तो सूर्य की दृष्टि से अपुत्री होने का दोष तथा मीन लग्न हो तो रोगी को आकाशगामियों का दोष
है — यह कहना चाहिए ॥ ३-५॥

अथ वृष्टि प्रश्नम्॥ आषाढास्या ऽसिते पक्षे दशम्यादि दिन त्रये। रोहिणी कालमाख्याति
सुख दुर्भिक्ष लक्षणम् ॥ १॥ रात्रावेव निरभ्रं स्यात्प्रभाते मेघडम्बरम्। मध्याह्ने जलबिन्दुः स्यात्तदा दुर्भिक्षकारणम्॥ २॥
कुंभ कर्क वृषा मीन मकरौ वृश्चिकस्तुला। जललग्नानि चोक्तानि लग्नेष्वेतेषु सूर्यभम्॥ भवत्येव तदा वृष्टिर्ज्ञातव्या
गणकोत्तमैः॥३॥ अश्विनी मृग पुष्येषु पूषाविष्णु मघासु च। स्वात्यां प्रविशते भानुर्वर्षते नात्र संशयः ॥४॥
आर्द्रादि दशकं स्त्रीणां विशाखादि त्रिनपुंसकम्। मूलाच्चतुर्दशं पुंसां नक्षत्राणि क्रमात् बुधैः॥ ५॥ वायुर्नपुंसके मे
च स्त्रीणां मे चाभ्रदर्शनम्। स्त्रीणां पुरुष संयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥६॥ अश्विन्यादि त्रयं चैव आर्द्रादेः
पञ्चकं तथा। पूर्वाषाढादि चत्वारि चोत्तरारेवतीद्वयम्। उक्तानि शशिभान्यन्यत् प्रोच्यते सूर्यभं तथा॥७॥ रोहिणी
च मृगश्चैव पूर्वाफल्गु काद्वयम्। नक्षत्राणि करात् सप्त वारुणादितये तथा॥ सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे चन्द्रे न
वर्षति। चन्द्रार्कयोर्भवेद्योगस्तदा वर्षति मेघराट् ॥८॥ टीका॥ आषाढ के कृष्ण पक्ष में दशमी, एकादशी तथा
द्वादशी तिथि को रोहिणी नक्षत्र होने पर क्रमशः सुभिक्ष, मध्यम-काल तथा दुर्भिक्ष होगा — यह समझना
चाहिए ॥ १॥ यदि रात्रि को मेघ न रहें, प्रातःकाल बादल गरजें तथा मध्याह्न में बूँदें पड़ें तो उस वर्ष
अन्न महँगा होगा — यह समझना चाहिए ॥२॥ कुम्भ, कर्क, वृष, मीन, मकर, वृश्चिक और तुला — ये सब जल-
लग्न हैं; इनसे जब सूर्य-नक्षत्र का संयोग हो, तब वर्षा होती है॥ ३॥ अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, रेवती,

श्रवण, मघा तथा स्वाति नक्षत्र में सूर्य के प्रवेश करने पर अधिक वर्षा होती है ॥ ४॥ आर्द्रा से दस नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा और स्वाति-स्त्री-संज्ञक हैं। विशाखा से तीन नक्षत्र अर्थात् विशाखा, अनुराधा और ज्येष्ठा - नपुंसक-संज्ञक हैं तथा मूल से चौदह नक्षत्र अर्थात् मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा - पुरुष-संज्ञक हैं। नपुंसक-नक्षत्र में स्त्री-नक्षत्र के मिलने पर मेघ-दर्शन होता है तथा स्त्री-पुरुष नक्षत्रों के मिलन-योग में वर्षा अवश्य ही होती है ॥ ५-६॥ अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, उत्तरा और रेवती - ये सब चन्द्र-नक्षत्र हैं। अन्य सब नक्षत्रों को सूर्य-नक्षत्र समझना चाहिए। यदि दिन का नक्षत्र और सूर्य-नक्षत्र - ये दोनों चन्द्रमा के हों तो वर्षा नहीं होगी और यदि चन्द्र तथा सूर्य नक्षत्र का योग हो तो अच्छी वर्षा होगी - यह कहना चाहिए ॥ ७-८॥

अथ पशुविषये प्रश्नः ॥ द्युमणिभान्नवमेषु वने पशुस्तदनु षट्सु च कर्णपथे स्थितम्। अचलभेषु गते गृहमागतं द्वयगतेव मृतं त्रिषु चोच्यते ॥ १॥ टीका ॥ यदि सूर्य-नक्षत्र से प्रश्नवाले दिन की नक्षत्र संख्या ९ हो तो पशु वन में चला गया है; ६ हो तो मार्ग में है; ७ हो तो घर आगया है तथा २ हो तो नहीं आयेगा - यह कहना चाहिए। यदि सूर्य-नक्षत्र से वर्तमान नक्षत्र तीसरा हो तो पशु की मृत्यु होगई है - यह कहना चाहिए ॥ पशु के सम्बन्ध में किए गये प्रश्न का उत्तर इसी विधि से देना योग्य है ॥ १॥

अथ राज्यभङ्गादि योग प्रश्नः ॥ यदि भवति कदाचिच्चाऽश्विनी यच्चमायां शनि रवि कुज वारे स्वातियपुष्य योगे। गगनचर पशूनां जंगमस्थावराणां नृपति जन विनाशो राज्यभङ्गस्तथोक्तः ॥ १॥ रवि

शशिपरिवेषे पूर्वयामे च पीडा, रविशशि परिवेषे मध्ययामे च वृष्टिः। रविशशि परिवेषे धान्य नाशस्तृतीये, र्वि शशि परिवेषे राज्यभङ्गश्चतुर्थे ॥ २॥ टीका॥ राज्यभङ्गादि योग के विषय में इस प्रकार विचार करना चाहिए— शनि, रवि अथवा मंगलवार की अमावास्या को अश्विनी अथवा स्वाति नक्षत्र एवं आयुष्मान् योग हो तो पक्षी, पशु, जंगम, स्थावर, राजा और प्रजा का नाश होता है। इस अशुभ योग से राजभङ्ग भी होता है॥ १॥ सूर्य का अथवा चन्द्रमा का मण्डल प्रथम प्रहर में दिखाई दे तो मनुष्य को पीड़ा, द्वितीय प्रहर में हो तो वर्षा, तृतीय प्रहर में हो तो धान्य का नाश एवं चतुर्थ प्रहर में हो तो राज्यभङ्ग होता है॥ २॥ इति॥

अथ आरूढ़लग्नादायुर्निर्णय प्रकारम्॥ तिर्यगूर्ध्वश्चतस्रस्तु रेखा रज्जु समालिखेत्। एकीकुर्यात्तु चत्वारि मध्यस्थानि पदानि च॥ १॥ तत्रपद्मं लिखेद्रेखामध्यं च सकर्णिकम्। ईशान्यकोष्ठादरभ्य मीनाद्या राशयः क्रमात्॥ २॥ मेषवीथी वृषाद्यास्तु कौर्प्याद्या मिथुनस्य तु। वीथयो मीनमेषौ तु तुलाकन्ये वृषस्य तु॥ ३॥ आरूढात् वीथिभं यावत्तावच्छत्रं तु लग्नतः। आरूढराशि लग्नं चेच्छत्रं चापि भवेत्तथा॥ ४॥ जन्मलग्नं समासाद्य यथाप्रोक्तं तु जातके। तत्सर्वं प्रश्न लग्नेन प्रश्नकालाद्वदेद् बुधः॥ ५॥ यत्कालावधिर्लग्नं तत्तत्कालावधिस्थिते। तेषां बलवतां चैव निर्णयः स्वायुषाः स्मृतः॥ ६॥ आद्य द्रेष्काणमंत्यं च मृत्यंदु च क्रमाद्भवेत्। मृगालिकर्कटानां च मीनस्यारूढ़लग्नतः॥ ७॥ लग्ने पृष्ठोदये क्रूरवेश्मास्तव्ययगा यदि। धने धर्मे कुजे मंदे चन्द्रे रन्ध्रे मृतिर्भवेत्॥ ८॥ पापैदुरुधरो जाते लग्नकाम सुहृत्स्थिते। चन्द्रऽर्के च विलग्नस्थे म्रियते व्याधिना ध्रुवम्॥ ९॥ राहुकाल समायोग मरणं निश्चितं भवेत्॥१०॥

टीका॥ दैवज्ञ को चाहिए कि वह प्रश्न के समय पूर्वाभिमुख पवित्र होकर बैठे तथा चार रेखा तिरछी और चार रेखा खड़ी - खींच कर, १६ कोष्ठकों वाला चक्र तय्यार करे। चक्र के मध्य के चार कोष्ठकों में कर्णिका के साथ कमल बनाये। इसमें ईशान कोण से आरम्भ करके मीन आदि राशियों को लिखे

भृ० सं० ४४९ भा० टी०

चक्र में वृष से सिंह पर्यन्त चार राशियों की 'मेष वीथि'; वृश्चिक से चार राशियों की 'मिथुन वीथि' तथा मीन; मेष, तुला तथा कन्या राशियों की 'वृषवीथि' संज्ञा जानकर, 'आरूढ़ लग्न' का ज्ञान प्राप्त करे। प्रश्नकर्त्ता जिस दिशा में बैठा हो, उस दिशा की लग्न को 'आरूढ़ लग्न' कहा जाता है अथवा प्रश्नकर्त्ता से राशिचक्र में अँगुली रखवावे। प्रश्नकर्त्ता जिस राशि पर अँगुली रक्खे, वही 'आरूढ़ लग्न' होगी। आरूढ़ लग्न से वीथि की राशि तक 'छत्र' होता है। यदि आरूढ़ राशि ही प्रश्न लग्न हो तो वहीं 'छत्र' होता है॥ इसका विचार करें। जिस प्रकार जन्म लग्न से विचार किया जाता है, उसी प्रकार यहाँ भी सभी बातों का विचार करना चाहिए ॥१-५॥ तात्कालिक लग्न की जितने काल तक स्थिति हो, उतनी ही आयु की भी स्थिति होगी॥ मकर, वृश्चिक, कर्क तथा मीन राशि का आरूढ़-लग्न से प्रथम और अन्त्य द्रेष्काण हो तो वह मृत्युदायक होता है ॥६-७॥ यदि पृष्ठोदय राशि में प्रश्न हो तथा पापग्रह लग्न से चौथे, सातवें अथवा बारहवें भाव में हो तथा शनि-चन्द्र आठवें भाव में हों तो मृत्यु होती है ॥८॥ प्रश्न लग्न अथवा जन्म लग्न में पापग्रह से 'दुरुधरा' योग हो अथवा लग्न, सप्तम एवं चतुर्थभाव में हों तथा सूर्य लग्न में हो और राहु-काल का योग हो तो अवश्य ही व्याधि से मृत्यु होती है॥ ९-१०॥

अथ काल-राहु समा योग लक्षणम् ॥ मेषाद् व्युत्क्रमतो राहुर्वृषात्काल: क्रमाच्चरेत्। राशौ राशौ तु पंचाशद्भोगकालो विनाडिका:। अर्कोदयादित प्रचोभौ भुंजाते च पुन: पुन: ॥१॥ एकद्व्यब्धिंच रामेषु षडष्टौ नाडिकाक्रमात्। अर्कवारादितो राहू रात्रावेवमुदीरित: ॥२॥ राहुरुत्क्रमश: प्राच्यां कालश्च क्रमशश्चरेत्। उभौ सार्धविनाड्येन राशिषु द्वादशास्वपि ॥३॥ रन्द्रेद्रग्निनिशाचरधाम वारीशवायव:। रुद्र चन्द्र जले शेश पाप केन्द्रयमस्थित:॥ रक्षो वायु स्तलेग्नीशयम वारुण राक्षसा:॥ वायु सोमशानीनाथ रक्षोग्नि-जलपेंद्रक ॥ ४-५॥ वाद्वीशेन्द्रयमा: पश्चा द्युमे द्वौ च निशाचर:। मरुद्वरुण चन्द्रेशपावको वरुणो यम:

॥६॥ वायुरुद्रशशीन्द्वग्नी राक्षसाश्च ततः परम् । वायुरक्षः शशीन्द्रेशपावकांत श्च वारुणाः ॥ ७॥ अर्कवारादितो वामं राहुः संचरति क्रमात् । रुद्रः समीरः सोमाग्नो यमोऽप निऋतिर्जलम् ॥ ८॥ अंतिमादादिमाद्राहुः कालश्च चरतस्तथा । द्वयोर्योगे तु मरणमेकस्मिन्व्याधिरुच्यते ॥ ९॥

टीका॥ मेष राशि से उल्टी ओर, अर्थात् मीन, कुंभ, मकर आदि के क्रम से राहु चलता है। वृष राशि से क्रमशः काल चलता है। प्रत्येक राशि में इनका भोग ५० पल होता है। सूर्योदय-कालिक-लग्न से दोनों अर्थात् 'राहु' और 'काल' — बारम्बार लग्नों को भोगते हैं। सूर्यादि वारों में क्रमसे १. २. ४. ३. ५. ६. ८ घटी पूर्वदिशा से आरम्भ कर, विलोम दिशाओं में राहु घूमता है तथा इसी मान से काल भी पूर्वादि दिशा से क्रमशः घूमता है। ये दोनों ढाई घण्टे के मान से प्रत्येक दिशा में घूमते हैं। प्रत्येक वारों में दिशा के क्रम से इन्दु, अग्नि, निशाचर, शम, वरुण, वायु, रुद्र, चन्द्र, जल शेष नाम होते हैं ॥ ६-७॥ क्रमशः पूर्व, ईशान, वायु, उत्तर, आग्नेय, दक्षिण नैऋत्य और पश्चिम — इन दिशाओं में रविवार से वर्तमान वार तक, अश्विनी से व॰ मान नक्षत्र तक तथा प्रतिपदा से वर्तमान तिथि तक राहु अन्तिम दिशा पश्चिम से विलोम राहु तथा आदि ईशान से क्रमशः काल घूमता है। इनमें किन्हीं दो का योग हो तो मृत्यु एवं एक का हो तो व्याधि होती है ॥ ८-९॥

एकयोगे तु सर्वेषु व्याधिर्द्वाभ्यां भवेन्मृतिः । लक्ष्मीयोगेषु सर्वेषु व्याधिस्तत्क्षयनवाऽपि वा ॥ १०॥ टीका॥ जिन मृत्यु योगों के विषय में कहा गया है, उनमें यदि लक्ष्मी योग भी हो तो कभी मृत्यु हो भी जाती है और कभी नहीं भी होती है ॥ १०॥

अथ रोगिणां मृत्युविषयक प्रश्नः॥ वैधृतौ च व्यतीपाते सार्पभेन्तिम संहिते । कुलीरे विष नाडीषु सूर्यदुष्टेषु पंचसु ॥ १॥ पापयुक्ते तु नक्षत्रे राशौ तत्संयुतेऽपि च । सन्धौ च मासशून्यर्क्षा तिथि राशिषु जन्मभे ॥ २॥ अपाष्टमे च क्षीणेन्दौ पापग्रह निरीक्षिते । पादं पृष्ठं च जंघां च जानु नाभिं च गुल्फके ॥ ३॥

कर्णौ च चक्षुषी भालमास्यं कण्ठं स्पृशेद्यदा । व्याधिर्वाम्रियते तद्वन्मूर्तिं राशिं स्पृशेत्तु वा ॥ ४॥ अष्टमर्क्षं स्पृशेद्यद्वा कालांशादिषु वा तथा । विपद्वध प्रत्यक्ऋक्षे च वैनाशं ऋक्षमेव वा ॥ ५॥ सं स्पृशेत्प्रश्न काले तु व्याधिर्वा तस्य वा मृतिः ॥६॥

टीका ॥ यदि रोगी सम्बन्धी प्रश्न के समय वैधृति, व्यतीपात – ये योग, आश्लेषा तथा रेवती – ये नक्षत्र, कर्कांश, विषनाडी, सूर्य से दूषित भौम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि, पापग्रह युक्त नक्षत्र, पापग्रह से युक्त राशि, राशि-सन्धि, मास की शून्य राशि, तिथि और नक्षत्र, जन्म का नक्षत्र; लग्न से द्वादश अथवा अष्टम भाव में क्षीण चन्द्रमा, जोकि शत्रुग्रह से दृष्ट हो – ये सब योग हों तथा प्रश्नकर्ता अपने कान, नेत्र, ललाट, मुख अथवा कण्ठ का स्पर्श कर रहा हो तो व्याधि अथवा मृत्यु होती है । यदि काल-राहु स्पर्श करता हो – अष्टम राशि को अथवा षोडशांश को, अथवा विपत्तारा वैनाशिक नक्षत्र को स्पर्श करता हो तो भी व्याधि अथवा मृत्यु होती है ॥ १-६ ॥

शिरो ललाट भ्रूनेत्र नासा कर्ण कपोलकाः । ओष्ठं च चिबुकं कण्ठांसौ हृदयमेव च ॥ ७॥ पार्श्वौ च वक्षः कुक्षिश्च नाभिश्च कटिरेव च । जघनं च नितम्बं च लिङ्गमण्डं च वस्ति च ॥ ८॥ ऊरू च जानु जंघा च गुल्फांघ्री चाश्विभात्क्रमात् ॥ ९॥ तैलाभ्यक्तोऽथवा शुद्धो जलगर्त समीपगः प्रष्टा दैव विदे वा य मरणं तस्य निर्दिशेत् ॥१०॥ लग्नान्नि सुत कामारि धर्मायपगः शुभः । रोगशान्तिकरा नो चेद्रिपुनीचग्रहस्थिताः ॥ ११॥ स्युः पापा मृतिकरा नो चेत्स्वर्क्षोच्चमित्रगाः । यस्य यस्य शुभं वापि रिःफस्थान गता शुभाः ॥ १२॥ यद्वा त्रिकोणकेन्द्रस्थास्तस्य तस्य शुभप्रदाः ॥ १३॥

टीका ॥ अश्विनी से रेवती तक २७ नक्षत्र क्रमशः शरीर के सिर आदि २७ अङ्गों के अधिपति हैं । यदि प्रश्नकर्ता तैल लगाये हो, अपवित्र हो, जलाशय के समीप प्रश्न कर रहा हो और

ज्योतिषी भी इन्हीं स्थितियों में हो तो प्रश्न का उत्तर देते समय 'रोगी की मृत्यु होगी'– यह कहना चाहिए। यदि प्रश्न-लग्न से तृतीय, पंचम, सप्तम, षष्ठ, नवम तथा एकादश स्थानों में शुभग्रह हों तो 'रोग शान्त हो जायेगा'— यह कहना चाहिए। यदि पूर्वोक्त स्थानों में पापग्रह हों तो मृत्यु कहनी चाहिए। परन्तु यदि शुभ ग्रह नीच आदि स्थानों में न हों तथा पाप ग्रह उच्च आदि स्थानों में न हों तो पूर्वोक्त फल होगा। यदि द्वादश, नवम, पंचम, लग्न, सप्तम तथा दशम – इन स्थानों में जन्म-लग्न से अथवा प्रश्न-लग्न से शुभ ग्रह हों तो शुभ फल होता है ॥७–१३॥

अथ अयनादि ज्ञानम्॥ मृगकर्क्यादितः सूर्यो राशिपूर्वापरार्धतः। शनिशुक्रारचन्द्रज्ञगुरवः शिशिरादयः॥१॥ अर्को ग्रीष्मस्ततोऽन्यैर्वा वायनादृतुरेव च। शुक्रारमंदचन्द्रज्ञ जीवाश्च परिवर्तिताः॥२॥ लग्नद्रेष्काणपाः प्रोक्ता नवांशेनैव चापरे। तत्पूर्वपरतो मासौ तिथिः स्यादनुपाततः॥३॥ लग्न त्रिकोणगो जीवो नवांशस्थोऽथवा भवेत् ज्ञात्वा वयोनुरूपेण ह्यनुमानवशात्समाः॥४॥ सूर्यस्थितांशतुल्यो वा तिथिं प्रोवाच भार्गवः। राशौ रात्रि दिवाख्ये च जन्म स्यात्तु विलोमतः॥५॥ गतप्राणैर्जन्मकाले ते च प्राणा भवंत्यथ। यद्राशिगः शशी मासः समं वा स्पृशदंगकम्॥६॥ तत्त्रिकोणाबलाधिक्यं राशिर्लग्नात्तु यावति। चन्द्रस्तावतिभं चापि जन्मलग्नं विनिर्दिशेत्॥७॥ मीने मीनं तु लग्नं वा तथान्यैस्त्वन्य लग्नभम्। छायया संयुता यामवारर्क्षतिथिराशयः॥८॥ यावंस्तास्तु धनिष्ठादि जन्मर्क्षतद्विनिर्दिशेत्। कालांशादिषु यत्प्रोक्तमृक्षं तद्वा भवेदिदम्॥९॥

टीका॥ जन्म काल अथवा प्रश्न-काल में मकर आदि ६ राशियों के भीतर सूर्य हों तो उत्तरायण तथा कर्क आदि ६ राशियों के भीतर हों तो दक्षिणायन होता है। इसी भाँति मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृष तथा मिथुन – इन राशियों के पूर्वार्द्ध में क्रमशः शनि, शुक्र, मंगल, चन्द्र, बुध तथा गुरु हों तो क्रमशः शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद् तथा हेमन्त ऋतु कहनी चाहिए। इसी भाँति यदि कर्क, सिंह,

कन्या, तुला, वृश्चिक एवं धनु राशियों के उत्तरार्द्ध में पूर्वोक्त ग्रह हों तो शिशिर आदि ऋतु कहनी चाहिए ॥१॥ यदि प्रश्न-लग्न में सूर्यादि ग्रह हों तो भी ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमन्त, शिशिर तथा वसन्त ऋतु कहें अथवा अयन से ऋतु के विषय में कहें। शुक्र, मंगल, शनि, चन्द्र, बुध और गुरु —इनमें जो द्रेष्काणाधिपति हो, उससे अथवा जो नवांश हो, उससे ऋतु के सम्बन्ध में कहना चाहिए ॥२॥ इस प्रकार से जो ऋतु निर्णीत हुई हो, वह यदि राशि के पूर्वार्द्ध की हो तो उस ऋतु का पूर्व मास; और यदि उत्तरार्द्ध की हो तो उस ऋतु का उत्तर मास जानना चाहिए। ऋतु के भुक्त भोग्य द्वारा अनुपात करके तिथि का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ॥३॥ प्रश्न-लग्न से त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम में गुरु जिस राशि में हो, उसी राशि के गुरु में जन्म हुआ है — यह समझना। यदि गुरु त्रिकोण में न हो तो जहाँ कहीं जिस नवांश में हो, उस नवांश राशि के गुरु में जन्म कहना चाहिए, परन्तु वर्ष का निर्णय अवस्था के अनुमान से करना चाहिए ॥४॥ सूर्य जिस त्रिशांश में हो, उसके तुल्य तिथि कहनी चाहिए। प्रश्न-लग्न रात्रि-बली हो तो दिन में और दिवा-बली हो तो रात्रि में जन्म कहना चाहिए ॥५॥ प्रश्न-समय जितने प्राण बीत चुके हों, उतने ही प्राण जन्म-समय में जानने चाहिए। प्रश्न-समय जिस राशि का चन्द्रमा हो, उसी राशि वाला मास होता है, यथा— मेष में चैत्र आदि ॥६॥ प्रश्न-समय में चन्द्रमा जिस राशि को स्पर्श करता हो, चाहे 'सम' हो अथवा 'विषम'; उससे त्रिकोण की जो राशि हो — उन दोनों में जो बली हो, वही राशि होती है। मेषादि गणना से जितनी संख्या वाली राशि पर चन्द्रमा हो, उतनी ही संख्या वाली लग्न होती है। यथा—मीन प्रश्न-लग्न हो तो मीन राशि आदि ॥७॥ प्रश्न के समय प्रश्नकर्त्ता की छाया को पाँव से नाप कर उसमें प्रहर, वार, तिथि जोड़ दें। यदि २७ से अधिक संख्या बैठे तो उसमें २७ का भाग दें फिर जो शेष बचे, उस संख्या के तुल्य धनिष्ठादि नक्षत्र होते हैं ॥८॥ अथवा पहले कालांशादि में जो नक्षत्र कहा है, वही नक्षत्र होता है। कालांश का आधा होरा कहा है, वही होरा होती है ॥९॥

अथ ग्रहाणां बलम् ।। उच्च मूल सुहृत्स्वर्क्षे स्वद्रेष्काणं नवांशके । स्थितस्य स्थानवीर्यं स्यात्कुजाकौ दशमे शनि: ।। १ ।। सप्तमेऽह्न गुरू लग्ने चन्द्र शुक्रौ तु वेश्मनि । दिग्वीर्य संयुता एते नान्यत्र प्रश्न कर्मणि ।। २ ।। मृगादि राशि षट्कस्था श्चन्द्रार्क ह्यार्य भार्गवा: । बलवंत: कुजार्कीतु कर्कटादिगतौ तथा ।। ३ ।। पूर्वपक्षे शुभे कृष्णे पापास्तु बलिनस्तथा वक्रिणो बलिन: खेटा श्चेष्टा बल समन्विता: ।। ४ ।। शुभा: पापादिवारात्रौ बलिन: स्यु: क्रमात्स्मृता: । निसर्ग बलिन: प्राग्वदेवं स्यु: प्रश्नकर्मणि ।। ५ ।। लग्न होरा द्रेष्काणार्क नवांशा: सप्तमांशका: । कलांश: कालहोरा च त्रिंशांश: षष्ठिभाजक: ।। ६ ।। पूर्व पूर्वो बली प्रोक्ता न बली चोत्तरोत्तर: । प्रश्न लग्नं कली कृत्य नवघ्नं भेन भाजितम् ।। ७ ।। लब्धं नवांशकं ज्ञेयं शिष्टमेकत्र संस्थिते । लब्धं सप्तगुणं वेदभक्तं शिष्टमि- हांशक: ।। ८ ।। नवांश सदृशं लग्नं यद्वा त्रिघ्नार्क भाजितम् । सप्ताप्त शिष्टं लग्नं च सप्तमे मास निश्चिते ।। ९ ।। सौम्ये तदेव कर्मर्क्षे जन्म र्क्षे वा भवेद् बलम् इदं शास्त्रं मया प्रोक्तमाप्यंत तव सुव्रत ।। १० ।।

टीका ।। प्रश्न-कुण्डली में जो ग्रह अपने उच्च, मूल त्रिकोण, मित्रराशि, स्वराशि, स्वद्रेष्काण एवं स्वनवांश में हो, वह स्थान बली होता है । मंगल तथा सूर्य दशम स्थान में, शनि सप्तम स्थान में, बुध और लग्न में, चन्द्र और शुक्र चतुर्थ स्थान में दिग्बली होता है । मकर से ६ राशियों तक चन्द्र, सूर्य, बुध, गुरु तथा शुक्र अयन बल को प्राप्त करते हैं । कर्क से ६ राशि के भीतर मंगल और शनि अयन बली होते हैं । शुक्ल पक्ष में शुभग्रह तथा कृष्णपक्ष में पापग्रह बली होते हैं । वक्री ग्रह चेष्टाबली होते हैं । शुभ ग्रह दिवाबली तथा पाप ग्रह रात्रिबली होते हैं । निसर्ग बल ज्योतिष के पूर्व नियमानुसार जानना चाहिए । इस प्रकार प्रश्न-काल में ग्रहों के बलों को जानना आवश्यक है । लग्न, होरा, द्रेष्काण, द्वादशांश, नवांश, सप्तांश, षोडशांश, काल होरांश, त्रिंशांश तथा षष्ठ्यंश -यह उत्तरोत्तर हीनबली होते हैं । प्रश्न लग्न की कला बना कर ९ से गुणा कर के २७ का भाग देने से लब्धि- नवांश होता है । शेष को पृथक् रक्खें । लब्धि को ७ से गुणा कर ४ से भाग देने पर लब्धि नवांश होती है ।

रसी के समान जन्म लग्न होता है अथवा तिगुना करके १२ से भाग दें, जो शेष रहे, वही जन्म लग्न होगा। अथवा शेष को ७ से भाग देने पर जो आये, उसे सातवें मासकी लग्न जानना। शुभ ग्रह की राशि हो तो उसी को कर्म-नक्षत्र अथवा जन्म-नक्षत्र जानना चाहिए। इस प्रकार शकुनशास्त्र के विषय में कहा गया॥९-१०॥

अन्यच्च। शुभाशुभ ज्ञान माह॥ केन्द्रत्रिकोणेषु शुभान्वितेषु पापेषु केन्द्राष्टमवर्जितेषु। सर्वार्थ सिद्धिं प्रवदेन्नराणां विपर्ययस्थेषु विपर्ययः स्यात॥१॥ इन्दुं द्विसप्तदशमायरिपुत्रिसंस्थं पश्येद् गुरुः शुभफलं प्रमदाकृतं स्यात। लग्नत्रिधर्मसुतनैधनगाश्च पापाः कार्यार्थनाशभयदाः शुभदाः शुभाश्च॥२॥ शुभ ग्रहाः सौम्य निरीक्षिताश्च विलग्नसप्ताष्टमपञ्चमस्थाः। त्रिषड्दशाये च निशाकरः स्याच्छुभं भवेद्रोगनिपी-डितानाम्॥३॥

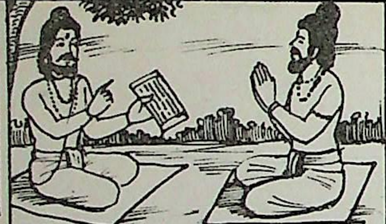
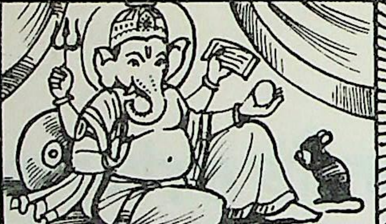
टीका॥ अब शुभाशुभ ज्ञान के अन्य प्रकारों को कहा जाता है। यदि शुभग्रह केन्द्र-अर्थात लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव-में तथा त्रिकोण-अर्थात नवम-पंचम भाव-में हों तथा पाप ग्रह केन्द्र तथा अष्टम भाव के अतिरिक्त अन्य स्थानों में हों तो प्रश्नकर्त्ता की समस्त कामनाऐं पूर्ण होंगी-यह कह-ना चाहिए। यदि ग्रह इसके विपरीत हों तो प्रश्न कर्त्ता की इच्छा पूर्ण नहीं होगी, अपितु हानि होगी-यह कहें॥१॥ यदि प्रश्न-लग्न से दूसरे, सातवें, दसवें, ग्यारहवें, छठे तथा तीसरे— इनमें से किसी भी स्थान में चन्द्रमा हो तथा उस पर गुरु की दृष्टि हो तो लाभ-सम्बन्धी प्रश्न होने पर 'स्त्री द्वारा लाभ होगा'-यह कहना चाहिए। लग्न, तृतीय, नवम तथा अष्टम-इन स्थानों में पापग्रह हों तो कार्य-नाश, द्रव्य-नाश, तथा भय की प्राप्ति होती है, परन्तु इन स्थानों में यदि शुभ ग्रह हों तो शुभ-फल प्राप्त होता है-यह समझना चाहिए॥२॥ यदि सौम्य-ग्रहों की दृष्टि से युक्त शुभ ग्रह लग्न, सप्तम, अष्टम तथा पंचम भाव में हो तथा तृतीय, षष्ठ, दशम एवं एकादश स्थान में चन्द्रमा हो और रोग सम्बन्धी प्रश्न हो

तो रोगी शीघ्र रोग-मुक्त होगा—यह कहना चाहिए; परन्तु यदि इससे विपरीत योग हो तो अशुभ फल कहना चाहिए ॥ ३॥

स्थानप्रदा दशम सप्तमगाश्च सौम्या मानप्रदाः स्वसुत लग्नगता भवन्ति। पापा व्ययाय सहिता न शुभप्रदाः स्युर्लग्ने शशी न शुभदो दशमे शुभश्च ॥ ४॥ त्रिपञ्च लाभास्तमयेषु सौम्या लाभप्रदा नेष्ट फलाश्च पापाः। तुलाऽथ कन्या मिथुनं घटश्च नृराशयस्तेषु शुभं वदन्ति ॥ ५॥ टीका ॥ यदि शुभ ग्रह दशम तथा सप्तम भाव में हों तो प्रश्नकर्त्ता को स्थान का लाभ होता है। यदि शुभग्रह पंचम भाव तथा लग्नमें हों तो सम्मान एवं धन का लाभ होता है। यदि पापग्रह एकादश अथवा द्वादशभाव में हों तो अनिष्ट फल प्राप्त होता है। यदि प्रश्न-लग्न में क्षीण-चन्द्रमा हो तो शुभ फल नहीं देता, परन्तु यदि दशमभाव में क्षीण-चन्द्रमा हो तो शुभ फल देता है ॥ ४॥ प्रश्न लग्न से तृतीय, पंचम, एकादश एवं सप्तम स्थान में शुभ ग्रह हो तो पृच्छक को इच्छित-फल प्राप्त होता है। यदि इन स्थानों में पापग्रह हों तो अनिष्ट-फल होता है। तुला, कन्या, मिथुन तथा कुम्भ- ये मनुष्य-राशियाँ हैं; यदि इन राशियों का लग्न हो और उसमें शुभग्रहों की दृष्टि हो अथवा शुभग्रह स्थित हों तो पृच्छक को शुभ-फल प्राप्त होता है ॥ ५॥ इति ॥

॥ इति श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रे प्रश्न-विचार नाम्नि अष्टमखण्डः ॥


ॐ
इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
अष्टम खण्डः समाप्तः





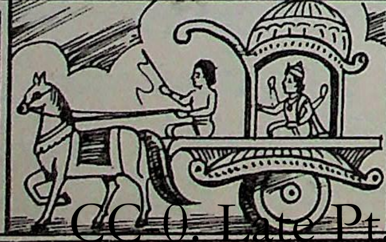
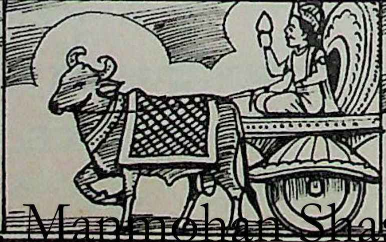
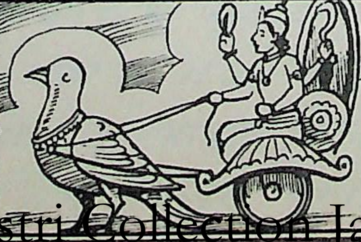


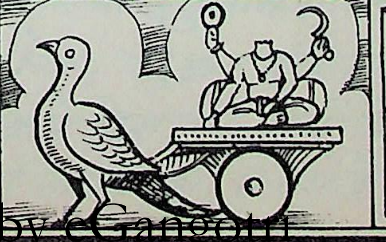
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

नवम खण्डः भाषा टीका सहितम्

नष्ट जातकाध्यायः





अथ श्रीभृगु संहिता महाशास्त्रम् नवम खण्डः

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ नष्ट जातकम् ॥ आधानकालोऽप्यथ जन्मकालो न ज्ञायते यस्य नरस्य नूनम् । प्रसूतिकालं प्रवदन्ति तस्य नष्टाभिधानादपि जातकाच्च ॥१॥ तज्जातकं येन शुभाशुभादिर्जातस्य जन्तोर्जननोपकालात् । तस्मिन्प्रणष्टे सति जन्म कालो येनोच्यते नष्टक जातकं तत् ॥२॥ टीका ॥ अब नष्ट-जातक विषय को कहते हैं। जिस मनुष्य का आधानकाल अथवा जन्मकाल ज्ञात न हो, उसे 'नष्टाभिधान' जातक कहते हैं। जिसे जन्म कालिक समय के आधार पर शुभाशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसे 'जातक' कहा जाता है तथा जिसका जन्म समय ज्ञात न हो, उसे नष्ट-जातक कहते हैं॥ नष्ट-जातक की जन्मकुण्डली तय्यार करने की विधियाँ यहाँ लिखी जाती हैं॥ १-२॥

आधान जन्मापरिबोधकाले सम्पृच्छतो जन्म वदेद्विलग्नात् । पूर्वापरार्धे भवनस्य विन्द्याद्भानावुदग्दक्षिणगे प्रसूतिम् ॥१॥ लग्न त्रिकोणेषु गुरुस्त्रिभागैर्विकल्प्य वर्षाणि वयोऽनुमानात् । ग्रीष्मोऽर्क लग्ने कथितास्तु शेषैरन्यायनर्तावृतुरर्कचारात् ॥२॥ चन्द्रज्ञ जीवाः परिवर्तनीयाः शुक्रार मन्दैरयने विलोमे । द्रेष्काणभागे प्रथमे तु पूर्वो मासोऽनुपाताश्च तिथिर्विकल्प्यः ॥३॥ अत्रापि होरा पटवो द्विजेन्द्राः सूर्यांशतुल्यां तिथिमुद्दिशन्ति रात्रिद्युसञ्ज्ञेषु विलोम भागैश्च वेलाः क्रमशो विकल्प्याः ॥४॥ केचिच्च

शाङ्का ध्युषितान्नवांशाच्चुक्लान्तसङ्गृहं कथयन्ति मासम् । लग्नत्रिकोणोत्तमवीर्ययुक्तं सम्प्रोच्यतेऽङ्गालभनादिभ-
र्वा ॥५॥ यावान् गतः शीतकरो विलग्नाच्चन्द्राद्धेत्तावति जन्मराशिः । मीनोदये मीनयुगं प्रदिष्टं भक्ष्याहृता-
कारकतैश्च चिन्त्यम् ॥६॥ होरा नवांशप्रतिमं विलग्नं लग्नाद्रविर्यावति वा दृकाणे । तस्माद्धेत्तावति वा
विलग्नं प्रष्टुः प्रसूताविति शास्त्रमाह ॥७॥ जन्मादिशेल्लग्नगवीर्यगे वा छायाङ्गुलघ्नेऽर्कहतेऽवशिष्टम् ।
आसीनसुप्तोत्थिततिष्ठताभं जायासुखाह्वोदयगं प्रदिष्टम् ॥८॥ गोसिंहौ जितुमाष्टमौ क्रियतुले कन्यामृगौ च
क्रमात् संवर्ग्या दशकाष्टसप्तविषयैः शेषाः स्वसंख्यागुणाः । जीवारास्फुजिदैन्दवाः प्रथमवच्छेषा ग्रहाः
सौम्यवद्राशीनां नियतो विधिर्ग्रहयुतैः कार्या च तद्गुणना ॥९॥ सप्ताहतं त्रिघनभाजितशेषमृक्षं दत्त्वाथवा नव
विशोध्य न चाथवाऽस्मात् । एवं कलत्रसहजात्मजशत्रुभेभ्यः प्रष्टुर्वदेदुदयराशिवशेन तेषाम् ॥१०॥

टीका ॥ जिस मनुष्य का गर्भाधान अथवा जन्म का समय ज्ञात न हो, उसके जन्म-समय
का ज्ञान प्रश्न-लग्न के आधार पर प्राप्त करना चाहिए। यथा- प्रश्न लग्न-राशि के १५ अंश के भीतर अर्थात्
प्रथम होरा में हो तो उत्तरायण (मकर से ६ राशि के) सूर्य में और यदि लग्न १५ अंश के ऊपर हो तो
दक्षिणायन (कर्क से ६ राशि के) सूर्य में समझना चाहिए ॥१॥ यदि लग्न में प्रथम द्रेष्काण हो तो लग्न
की राशि में जन्मकालिक गुरु समझना चाहिए। द्वितीय द्रेष्काण हो तो लग्न से पंचम राशि में तथा तृतीय
द्रेष्काण हो तो लग्न से नवम राशि में जन्मकालिक गुरु समझना चाहिए। फिर, संवत्सर जानने के हेतु
प्रश्नकर्त्ता की रूपाकृति के आधार पर अनुमान लगाते हुए जन्म का वर्ष निश्चित करना चाहिए। यदि
लग्न में सूर्य हो तो ग्रीष्म ऋतु तथा अन्य ग्रहों की ऋतु समझनी चाहिए। जो अयन आया हो, उसी
अयन की ऋतु है अथवा भिन्न अयन की ऋतु है- इसका निर्णय करने के लिए ऋतु का ज्ञान सूर्य
संक्रान्ति के आधार पर प्राप्त करना चाहिए- चान्द्रमान के आधार पर नहीं ॥२॥ यदि अयन और ऋतु में

भिन्नता हो तो चन्द्रमा को शुक्र से, बुध को मंगल से तथा गुरु को शनि से परस्पर परिवर्तन करते हुए ऋतु का निर्णय करना चाहिए। इस प्रकार अयन तथा ऋतु में एकता स्थापित हो जाएगी। मास-ज्ञान के हेतु लग्नगत द्रेष्काण के पूर्वार्द्ध (५ अंश के भीतर) हो तो ऋतु का पहिला सौर मास और यदि द्रेष्काण के उत्तरार्द्ध हो तो दूसरा मास समझना चाहिए। उसमें द्रेष्काण के भुक्त अंशों से अनुपात द्वारा तिथि अर्थात् सूर्य के भुक्तांश समझें। ३।। पूर्व प्रकार से मास का ज्ञान हो जाने पर, आचार्यों के मतानुसार सूर्य के अंश तुल्य चन्द्र-तिथि समझनी चाहिए अर्थात् सूर्य के भुक्तांश तुल्य गत तिथि और कला-विकला तुल्य वर्तमान तिथि की गत घटी-पल होते हैं। अब प्रकारान्तर से इष्ट-काल का ज्ञान प्राप्त करने की विधि कहते हैं— यदि प्रश्न-लग्न दिवाबली राशि हो तो रात्रि में तथा रात्रिबली राशि हो तो दिन में जन्म समझना चाहिए। लग्न के भुक्तांश के द्वारा अनुपात से दिनगत अथवा रात्रिगत इष्टकाल का ज्ञान कर लेना चाहिए [राशि का उदयमान जहाँ प्रश्न हो, वहाँ का ग्रहण करना आवश्यक है]।।४।। कुछ आचार्यों का मत है कि प्रश्न-काल में चन्द्रमा जिस नवांश (नक्षत्र-चरण) में हो, उस नाम से प्रसिद्ध 'शुक्लान्त्य-चान्द्रमास' ही जन्म-मास समझना चाहिए तथा लग्न, पंचम और नवम —इन तीनों में जो भाव अधिक बलवान् हो, वही जन्म की राशि होती है। अथवा प्रश्नकर्ता अपने शरीर के जिस अङ्ग का स्पर्श करते हुए प्रश्न करे, वह जन्म-राशि माननी चाहिए अर्थात् जिस अङ्ग का पृच्छक स्पर्श करके प्रश्न कर रहा हो, उस अङ्ग में 'कालाङ्गानि' प्रकार से जो राशि हो, वही जन्म-राशि होगी।। ५।। जन्म-राशि ज्ञात करने का एक अन्य नियम यह है कि प्रश्न-लग्न से जितने संख्या-स्थान पर चन्द्रमा हो, उससे उतने ही स्थान आगे जो राशि हो, वही प्रश्नकर्त्ता की जन्म-राशि समझनी चाहिए। परन्तु यदि प्रश्न-लग्न मीन हो तो उस मीन को ही जन्म-राशि समझना चाहिए अथवा प्रश्नकाल में जिस राशि के भक्ष्य, जिस राशि सदृश आकार का प्राणी हो अथवा जिस राशि सदृश शब्द अचानक देखने अथवा

सुनने में आये, वही जन्म-राशि समझनी चाहिए ॥६॥ प्रश्न-लग्न में जिस राशि का नवांश हो, वही जन्म लग्न समझनी चाहिए अथवा लग्न से जितने द्रेष्काण आगे सूर्य हो, उतने ही, सूर्य से आगे जो राशि हो, उसी को प्रश्नकर्त्ता की जन्म-लग्न समझना चाहिए — यह शास्त्र का आदेश है ॥७॥ प्रश्न-लग्न में जो ग्रह हों, उनमें जो बली हो, उसको तात्कालिक द्वादशांगुल शंकु की छाया से गुणाकर, गुणनफल में १२ का भाग देकर, शेष को जन्म लग्न कहना चाहिए अथवा प्रश्नकर्त्ता यदि बैठकर प्रश्न करे तो लग्न से सप्तम राशि को जन्म-लग्न समझना चाहिए। यदि पृथ्वी पर लेट कर प्रश्न करे तो प्रश्न-लग्न से चतुर्थ राशि को, यदि पहले से तो बैठा हो, परन्तु बाद में उठ कर प्रश्न करे तो प्रश्न लग्न से दसवीं राशि को और यदि खड़े-खड़े आकर प्रश्न करे तो प्रश्न-लग्नको ही प्रष्टा की जन्म लग्न समझना चाहिए [यहाँ इष्ट काल में द्वादशांगुल शंकु की छाया नाप लेनी चाहिए। ग्रह की अंगुलादि छाया से गुणा करते समय यह ध्यान रक्खें कि राश्यादि ग्रह को कलात्मक बना कर, अंगुलादि छाया से गुणा करके, गुणनफल कलादि को फिर राश्यादि बना कर १२ से तष्टित करना उचित है]॥८॥ प्रश्न-लग्न में यदि वृष अथवा सिंह राशि हो तो राश्यादि लग्न की कला पिण्ड बना कर १० से गुणा करें। यदि मिथुन अथवा वृश्चिक लग्न हो तो ८ से गुणा करें। यदि मेष अथवा तुला लग्न हो तो ७ से गुणा करें और यदि कन्या अथवा मकर लग्न हो तो ५ से गुणा करें। शेष राशियोंकीलग्नहो तो कला पिण्ड को अपनी-अपनी संख्या से अर्थात् कर्क को ४ से, धनु को ९ से कुम्भ को ११ से तथा मीन को १२ से गुणा करना चाहिए। यदि लग्न में गुरु हो तो १० से, मंगल हो तो ८ से, शुक्र हो तो ७ से और बुध हो तो ५ से गुणा करना चाहिए। यदि शेष ग्रह (शनि, रवि, चन्द्र) हों तो इन्हें ५ से गुणा करें। लग्न राशि की गुणन विधि तो निश्चित होती है, परन्तु लग्न में जो ग्रह हो उसी की गुणना होती है। यदि लग्न में अधिक ग्रह हों तो उनकी गुणना करनी चाहिए। इस प्रकार लग्न कला को गुणा करने से जो पिण्ड हो, उससे आगे कही अनुसार विधि

से वर्ष, मासादि का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ॥ ९ ॥ पूर्व साधित लग्न लिप्ता पिण्ड को ७ से गुणा कर, २७ का भाग देकर, शेष को अश्विनी आदि नक्षत्र समझना चाहिए। इसमें इतना संस्कार और करना है कि नक्षत्रादि मान असंभव ज्ञात हो तो ९ जोड़ कर अथवा घटा कर समझलें। कुछ आचार्यों का यह कथन है कि यदि लग्न हो तो गुणाकार से गुणित लिप्तापिण्ड में ८ और जोड़ें। यदि स्थिर लग्न हो तो ९ घटायें; यदि द्विस्वभाव लग्न हो तो न जोड़ें और न घटायें अर्थात् यथागुणित ही रहने दें, उसमें अपने विकल्प के भाग देकर नक्षत्रादि को जानें। यह नियम प्रश्नकर्त्ता के स्वयं के नष्ट-जातक के लिए है। इसी प्रकार सप्तमभाव से कलापिण्ड बनाकर प्रश्नकर्त्ता की स्त्री का, तृतीय भाव से भाई का, पञ्चमभाव से पुत्र का तथा षष्ठभाव से शत्रु का नष्ट-जातक-पत्र तय्यार करना चाहिए ॥ १० ॥

वर्षर्तुमासतिथयो द्युनिशं ह्युडूनि वेलोदयर्क्षनवभागविकल्पना स्युः। भूयो दशादिगुणिताः स्वविकल्पभक्ता वर्षादयो नवकदानविशोधनाभ्याम् ॥ ११ ॥ विज्ञेया दशकेष्वब्दा ऋतुमासास्तथैव च। अष्टकेष्वपि मासार्द्धास्तिथयश्च तथा स्मृताः ॥ १२ ॥ दिवारात्रिप्रसूतिं च नक्षत्रानयनं तथा। सप्तकेष्वपि वर्गेषु नित्यमेवोपलक्षयेत् ॥ १३ ॥ वेलामथ विलग्नं च होरामंशकमेव च। पञ्चकेषु विजानीयान्नष्टजातकसिद्धये ॥ १४ ॥ संस्कार नाममात्रा द्विगुणच्छायाङ्गुलैः समायुक्ताः। शेषात्त्रिनवकभक्तान्नक्षत्रं तद्धनिष्ठादि ॥ १५ ॥ द्वित्रिचतुर्दशदशशीति सप्तत्रिगुणनवाष्ट चैन्द्राद्याः। पञ्चदशघ्नास्तद्द्विङ्गुरवान्विता भं धनिष्ठादि ॥ १६ ॥

टीका ॥ पूर्व रीति से साधित लग्न लिप्ता पिण्ड को फिर से १० आदि अपने-अपने गुणाकारों से गुणा करके, अपने-अपने विकल्प अर्थात् संख्या से भाग देकर, शेष तुल्य वर्ष, ऋतु, मास, तिथि, दिन, रात्रि, इष्टकाल, लग्न व राशि नवांश समझना चाहिए। यहाँ वर्ष आदि सब विषयों के आनयन में लग्नपिण्ड के समान ९ जोड़ घटाकर अथवा यथावत् पिण्ड पर से क्रिया करनी चाहिए ॥

२२॥ पूर्व साधित लिप्तापिण्ड को १० गुणा करके १२० से भाग देकर शेष वर्ष, उसी दशगुणित पिण्ड में ६ के भाग से शेष तुल्य शिशिर आदि ऋतु तथा २ का भाग देकर १ शेष में ऋतु का प्रथम मास, २ शेष में द्वितीय मास समझना चाहिए। फिर लिप्तापिण्ड को ८ से गुणाकर, ९ से संस्कृत करके २ के भाग से, १ शेष शुक्ल तथा ० शेष में कृष्णपक्ष एवं १५ का भाग देकर १ आदि शेष तुल्य प्रतिपदा आदि तिथि समझनी चाहिए ॥२२॥ जन्म दिन में हुआ है अथवा रात्रि में – यह जानने के लिए तथा नक्षत्रानयन के लिए लिप्तापिण्ड पर से सदैव ७ का गुणा करना चाहिए (इसके लिए पिण्ड को ७ से गुणा कर के २ से भाग दें। १ शेष बचे तो दिन में और ० शेष बचे तो रात्रि में जन्म समझना चाहिए ॥२३॥ दिन अथवा रात्रि में जन्म का ज्ञान हो जाने पर इष्ट-समय अथवा लग्न, होरा, नवांश जानने के लिए पिण्ड को ५ से गुणा करना चाहिए। ये क्रियाएं केवल अज्ञात जन्म-समय आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए ही हैं अर्थात् जब यह निश्चित हो जाय कि जन्म दिन में हुआ है तो इष्ट घटी की जानकारी के लिए पिण्ड को ५ से गुणा करके, दिनमान घट्यादि से भाग देकर तथा रात्रि में रात्रिमान घट्यादि से भाग देकर शेष घट्यादि को इष्टकाल समझना चाहिए। उस पर से लग्न-साधन विधि के नियमानुसार लग्न का ज्ञान करना चाहिए। यदि बिना इष्टघटी-ज्ञान के ही फलार्थ नष्टजातक सम्बन्धी जन्म-लग्न का ज्ञान करना हो तो पंचगुणित पिण्ड को ही १२ का भाग देकर, शेष तुल्य मेष आदि लग्न समझनी चाहिए। यदि लग्न का ज्ञान हो जाय तो होरा-फल-कथन के लिए उसी पंचगुणित पिण्ड को २ से भाग देकर १ शेष में प्रथम तथा ० (शून्य) में द्वितीय होरा समझना चाहिए तथा नवांश-ज्ञान के लिए ९ का भाग देकर एवं द्वादशांश ज्ञान के लिए १२ का भाग देकर, लब्धि तुल्य नवांश अथवा द्वादशांश समझ कर, लग्नराशि के अनुसार उसका फलादेश करना चाहिए॥२४॥ नामकरण-संस्कार-विधि से माता-पिता द्वारा प्रश्नकर्त्ता का जो नाम रखवाया हो,

उसमें जितने वर्ण हों, उनकी मात्राओं (ह्रस्व की १, दीर्घ की २ तथा हल् व्यञ्जन की आधी) के योग में तात्कालिक द्वादशाङ्गुल शङ्कु की छायाङ्गुल संख्या जोड़ कर २७ का भाग दें। जो शेष बचें, वह धनिष्ठादि नक्षत्र समझना चाहिए। यथा— 'देवदास'—इस नाम के चारों वर्णों में २ ह्रस्व तथा दीर्घ वर्ण हैं। अतः सब मात्राऐं ६ हुईं। इन्हें दूना करने पर १२ हुए। इसमें तात्कालिक द्वादशांगुल शंकु की छाया ७ को मिलाया तो १९ हुए। इसमें २७ के भाग से, शेष १९ वाँ धनिष्ठा से गिनने पर 'चित्रा' नक्षत्र आया तो यही जन्म-नक्षत्र होगा ॥ २५॥ पूर्व आदि दस दिशाओं में क्रम से २, ३, १४, १०, १५, ७, ३, ३, ९, ८ —ये अङ्क हैं। प्रश्नकर्ता जिस दिशा की ओर मुख करके प्रश्न करे, उस दिशा के अङ्क को १५ से गुणा करें तथा प्रश्न-स्थल में अन्य जितने व्यक्ति उस दिशा की ओर (जिस ओर प्रश्नकर्ता का मुख हो) मुख किये बैठे हों, उतनी संख्या गुणनफल में मिला कर, २७ का भाग दें जो शेष बचे, उसे धनिष्ठादि क्रम से नक्षत्र समझ-ना चाहिए। यथा- किसी व्यक्ति ने अपना मुँह ऊपर की ओर उठाये हुए प्रश्न किया तथा वहीं पर एक अन्य व्यक्ति भी अपना मुँह ऊपर की ओर किए हो तो ऊर्ध्व दिशा के अङ्क ८ को १५ से गुणा करने पर १२० हुए, इसमें १ संख्या और मिलाई तो १२१ हुए। इसमें २७ का भाग देकर शेष १३ बचे तो धनि-ष्ठा नक्षत्र से गिनने पर 'पुष्य' नक्षत्र जन्म-नक्षत्र होगा ॥ २६॥

अन्यच्च ॥ जातकचन्द्रिकायां नष्टजातकनिर्णयम् ॥ अब जातक चन्द्रिका के मतानुसार नष्टजातक की जन्माङ्क बनाने की विधि का वर्णन किया जाता है ॥

मेषादितः प्रश्नविलग्नलिप्ताः कार्याः क्रमात्ता मुनिभिः खचन्द्रैः। गजैश्च वेदैर्दश-भिश्च बाणैः शैलेर्भुजङ्गैः खचन्द्रैः शरैश्च ॥ १॥ शिवैः पतङ्गैर्निहताः पुनस्ता विलग्नगाश्चेद् भृगुभौमजी-वाः। तदा तुरङ्गैः करिभिः खचन्द्रैर्गुण्याः शरैरन्यखगा यदि स्युः ॥२॥ ग्रहद्वयं वा बहवो विलग्ने तदा

तदीयैर्गुणकैश्च गुण्या: । एवं कृते कर्म विधाय योग्यो राशि: पृथक्स्था: परिरक्षणीय: ॥३॥ पृथक्स्थराशिर्मुनिभि-र्विनिघ्न स्त्वाद्ये दृकाणे नवयुग् द्वितीये । यथास्थितोऽयं नववर्जितोऽन्त्ये भसंख्ययाप्तो ह्यवशेषमृक्षम् ॥४॥ स्त्रीपुत्र मित्रादि निमित्तकं चेत्पृच्छाविलग्नं त्वतुभिश्च वेदै: । त्रिभि: शरैर्युक्तमनुक्रमेण ततो विलग्नस्य कला विधेया: ॥५॥ लग्नस्यराशेर्गुणकेन गुण्याश्चेत्संभवो लग्नगतग्रहस्य । पुनस्तदीयेन गुणेन गुण्या: प्रागुक्तवद्भं परिवेदितव्यम् ॥६॥ दशाहते कर्म विधान राशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् । रवार्कैर्हृते शेषमिताष्टसं-ख्य मायुर्गतं तत्खलु पृच्छकस्य ॥७॥ षड्भिर्विभक्तो ऋतवो भवन्ति शेषाङ्कतुल्या: शिशिरादय: स्यु: । द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रं पूर्वापरौ तावृतुजौ च मासौ ॥८॥ अष्टाहते कर्म विधान राशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिके स्मिन् । द्विभाजिते शेषकमेकमभ्रतुल्येऽस्ति पूर्वापरपक्षकौ स्त: ॥९॥ पञ्चेन्दुभक्ते सति शेषतुल्या: पक्षे च तस्मिंस्तिथयो भवन्ति । नक्षत्रतिथ्यानयनाय योग्यादहर्गणाद्धारविचारणाऽत्र ॥१०॥ सप्ताहते कर्मविधानरा-शौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाधिकेऽस्मिन् । द्विभाजिते शेषकमेकमात्रं दिवा च रात्रौ जननं तदानीम् ॥११॥ पञ्चाहते कर्मविधानराशौ प्राग्वन्नवोनेऽप्यथवाऽधिकेस्मिन् । दिनस्य रात्रेरथवा प्रमित्या भक्तेऽवशिष्टं दिनरात्रि नाड्य: ॥१२॥

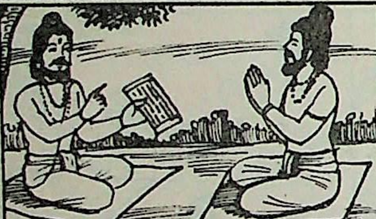
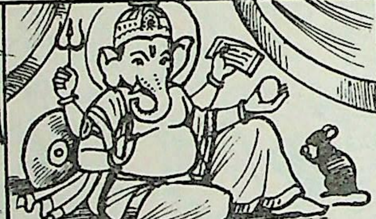
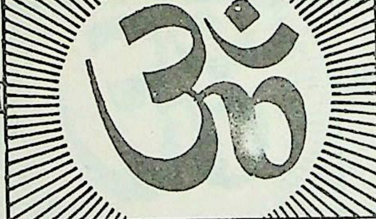
टीका॥ प्रश्न के समय मेष आदि जो लग्न हो, उस लग्न की राशि को ३० से गुणा करके अंश जोड़ कर, ६० से गुणा करके कला जोड़ें । जोड़ने पर जो अङ्क मिलेगा, उसे 'लिप्तापिण्ड' कहा जाता है। उस लिप्ता पिण्ड को अपने गुणक से गुणा करें । अब गुणाङ्क के विषय में बताते हैं कि प्रश्न-लग्न यदि मेष हो तो ७ से, वृष हो तो १० से, मिथुन हो तो ८ से, कर्क हो तो ४ से, सिंह हो तो १० से, कन्या हो तो ५ से, तुला हो तो ७ से, वृश्चिक हो तो ८ से, धनु हो तो ९ से, मकर हो तो ५ से, कुंभ हो तो ८ से और मीन हो तो १२ से गुणा करें । गुणाकार का नाम गुणनफल होता है । फिर, जो भी ग्रह लग्न में हो तो गुणनफल को फिर

उस ग्रह के गुणक से गुणा करें। ग्रहों के गुणक इस प्रकार हैं— प्रश्न-लग्न में यदि शुक्र हो तो गुणनफल को ७ से गुणा करें। यदि मंगल हो तो ८ से, गुरु हो तो १० से और सूर्य, चन्द्रमा, बुध तथा शनि— इनमें से कोई प्रश्न-लग्न में हो तो ५ से गुणा करें ॥१-२॥ यदि लग्न में दो अथवा अधिक ग्रह हों तो अपने-अपने गुणकों में से एक-एक बार गुणनफल से गुणा करें, फिर जितना हो, उस राशि को अलग लिख लें। इसका नाम 'कर्म-विधान-राशि' है ॥३॥ अब जन्म नक्षत्र निकालने का नियम कहते हैं— पृथक् राशि अर्थात् कर्म-विधान-राशि को ७ से गुणा करें। जो गुणाकार हो, उसमें प्रश्न-लग्न का प्रथम द्रेष्काण अर्थात् प्रश्न-लग्न १० अंश के भीतर हो तो ९ जोड़ें। द्वितीय द्रेष्काण अर्थात् ११ अंश से २० अंश तक हो तो ९ को न जोड़ें और न घटायें। तृतीय द्रेष्काण अर्थात् प्रश्न-लग्न २१ अंश से ३० अंश तक हो तो उसमें से ९ घटा दें। इस प्रक्रिया के बाद जो अङ्क बचें, उनमें २७ का भाग दें। जो शेष रहे, उस संख्या को अश्विनी आदि से गणना कर, जो नक्षत्र-संख्या आये, उसी को पृच्छक का जन्म-नक्षत्र समझना चाहिए ॥४॥ अब स्त्री, पुत्र, मित्र आदि के जन्म-समय को जानने का नियम बताते हैं— यदि स्त्री के नष्ट-जातक के सम्बन्ध में प्रश्न हो तो तात्कालिक-लग्न-स्पष्ट की राशि में ६ राशि जोड़ दें। पुत्र के प्रश्न में ४ राशि, मित्र के प्रश्न में ३ राशि, शत्रु के प्रश्न में ५ राशि, पिता के प्रश्न में ९ राशि तथा भाई के नष्ट-जातक सम्बन्धी प्रश्न में २ राशि जोड़ दें। अंश और कला तात्कालिक लग्न के ही रहेंगे। फिर राशि, अंश, कला— इन सबका जो योग हो, उसका क्रमशः कला पर्यन्त पिण्ड बनायें ॥५॥ फिर, पिण्ड को लग्न-राशि के पूर्वोक्त गुणक से गुणा करें, वह गुणनफल होगा। यदि लग्न-राशि में कोई ग्रह हो तो उस ग्रह के पूर्वोक्त गुणक से गुणनफल को गुणा करें। फिर नक्षत्रानयन का जो कर्म कहा है, उसे करके, स्त्री आदि का जन्म-नक्षत्र जानना चाहिए। सभी के लिए वर्ष आदि निकालने का काम इस विधि

से करना चाहिए कि कर्म-विधान-राशि को १० से गुणा करके, उसमें पूर्वोक्त प्रकार से द्रेष्काण का विचार कर, अर्थात् ९ जोड़ना अथवा न जोड़ना अथवा घटाना, जैसा द्रेष्काण हो वैसा करके तीन जगह रखें। एक जगह १२० का भाग दें, जो शेष बचें उतने ही वर्ष पृच्छक के जानने चाहिए ॥ ६-७ ॥ दूसरी ६ का भाग देने पर जो शेष बचे, उसे शिशिर आदि ऋतु समझना चाहिए। तीसरी जगह २ का भाग देने पर यदि १ शेष बचे तो पहले जो ऋतु आई है, उसका पहिला महीना और यदि ० (शून्य) बचे तो दूसरा महीना जानना चाहिए ॥ ८ ॥

कर्म-विधान राशि को ८ से गुणा करके उसमें पूर्ववत् दृकाण का विचार कर अर्थात् प्रश्न-लग्न प्रथम द्रेष्काण का हो तो ९ जोड़ें, द्वितीय द्रेष्काण का हो तो न कुछ जोड़ें और न घटायें तथा तृतीय द्रेष्काण का हो तो ९ घटायें। जो अङ्क शेष बचें, उन्हें दो जगह रखलें। एक जगह २ से भाग दें। यदि १ शेष रहे तो शुक्ल पक्ष और शून्य (0) शेष बचे तो कृष्णपक्ष समझना चाहिए ॥ ९ ॥ दूसरी जगह जो अङ्क रखे हैं, उनमें १५ का भाग दें। जो अङ्क शेष बचे, उससे प्रतिपदा आदि तिथि को जानें। फिर नक्षत्र-तिथि को लाकर, इससे योग अहर्गण बना कर विचार करना चाहिए ॥ १० ॥ कर्म विधान राशि को ७ से गुणा करके, उसमें पूर्ववत् दृकाण का विचार करें। यदि १ शेष बचे तो दिन का और ० शेष बचे तो रात्रि का जन्म जानना चाहिए ॥ ११ ॥ कर्म-विधान राशि को ५ से गुणाकर, पूर्ववत् द्रेष्काण का विचार करें तथा जो अंक हो उसमें दिन का जन्म हो तो दिनमान से भाग देकर, जो अङ्क शेष रहे, उतने दिन पूर्व पृच्छक का जन्म कहना अर्थात् उसी को जन्मेष्ट समझना। यदि रात्रि का जन्म हो तो रात्रिमान का भाग देकर जो शेष रहे, उतनी व्यतीत हुई रात्रि का जन्म जानकर, रात्रिगत घटियों में दिनमान जोड़ कर जन्मेष्ट समझना चाहिए ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ इतिश्री भृगुसंहिता महाशास्त्रे नवम खण्डस्समाप्तः ॥

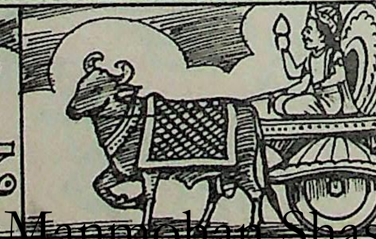
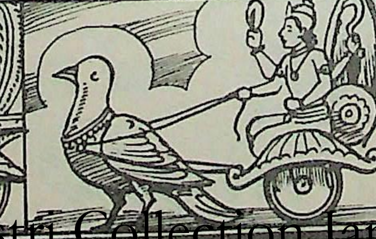
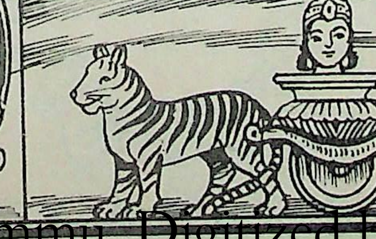


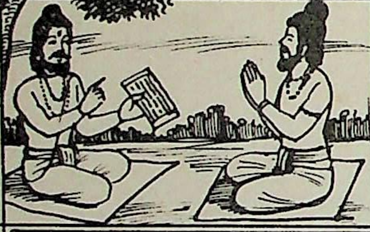


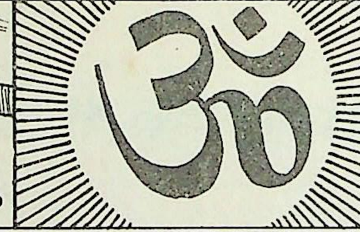

इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

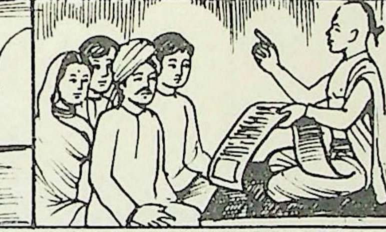
नवम खण्डः समाप्तः







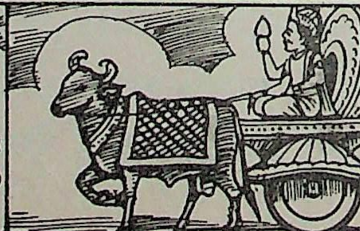
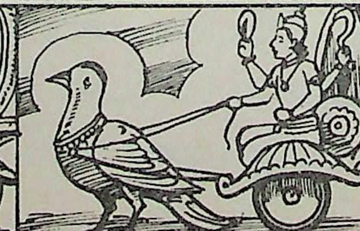
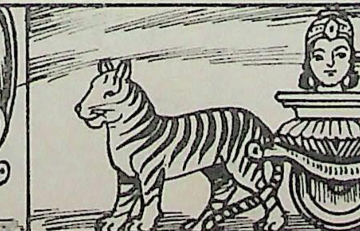
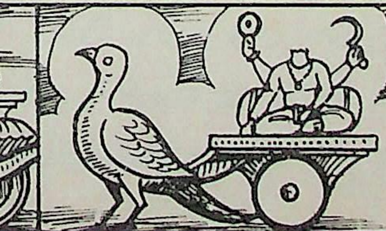


अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

दशम खण्डः भाषा टीका सहितम्

जन्मकुण्डली खण्डः



अथ श्रीभृगु संहिता महाशास्त्रम् दशम खण्ड:

ॐ अथ कुण्डली खण्डम् ॥ इस प्रकरण में सैकड़ों जन्मकुण्डली-चक्र दिए गए हैं, जिनका चक्र सहित फलादेश अगले अष्टम खण्ड में वर्णित है। स्त्रियों की जन्म कुण्डली के फलादेश का विचार भी पुरुष की कुण्डली के समान ही किया जाता है, परन्तु उनमें जो विषय विशेष रूप से विचारणीय होते हैं, उनका उल्लेख इस ग्रंथ के अगले नवम खण्ड में किया गया है। अस्तु, भृगु संहिता के आधार पर यदि किसी स्त्री की जन्म कुण्डली के फलादेश पर विचार करना हो तो 'अष्टम फलित खण्ड' के अतिरिक्त नवम 'स्त्री जातक' खण्ड में उल्लिखित सिद्धान्तों तथा नियमों पर भी ध्यान देकर तदनुसार ही सम्पूर्ण फलादेश का सम्यक् विचार करना चाहिए।

स्मरणीय है कि भृगु संहिता नाम से प्रसिद्ध कोई सम्पूर्ण प्राचीन ग्रंथ कहीं भी उपलब्ध नहीं है। अतः भृगुसंहिता को ज्योतिर्विद् ऋषि-मुनि तथा आचार्यों की एक विशिष्ट फलादेश-परम्परा ही कहा जा सकता है, जिसमें समय-समय पर परिवर्द्धन एवं परिवर्तन होते चले आये हैं। यदि विभिन्न ग्रह तथा लग्नों के आधार पर समस्त संभावित कुण्डलियों को एकत्र किया जाय तो उनकी संख्या करोड़ों में होगी तथा उनका विस्तृत फलादेश ग्रंथ भी करोड़ों पृष्ठों का बैठेगा, जिसे किसी भी आचार्य द्वारा एक तो क्या, अनेक जन्मों में भी लिखकर पूरा किया जाना संभव नहीं है। यही कारण है कि भृगु संहिता नामक यत्र-तत्र हस्तलिखित प्राचीन स्फुट ग्रंथ

ही उपलब्ध होते हैं और उनमें से प्रत्येक में कुछ सौ कुण्डलियों के फलादेश का वर्णन ही पाया जाता है। इस प्रकार के अत्यन्त दुर्लभ, प्राचीन तथा हस्तलिखित अनेक ग्रंथ-खण्डों को हमने प्रचुर द्रव्य तथा श्रम खर्च करके बड़ी कठिनाई से ढूँढा तथा उपलब्ध किया है। ये ग्रंथ अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण अवस्था में थे। अतः वर्षों के कठिन परिश्रम द्वारा उनकी प्रतिलिपि उतार कर, सुसम्पादित ढंग से वर्तमान ग्रंथ को प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन खण्डों में से अनेक में केवल संस्कृत के श्लोक ही पाये जाते हैं, जिनका अर्थ कर पाना वर्तमान समय के संस्कृत से अल्प भिज्ञ ज्योतिर्विदों के लिए कुछ कठिनाई का कारण भी बन सकता है तथा सामान्य हिन्दी ज्ञाता पाठकों के लिए तो वे अत्यन्त दुरूह ही हो सकते हैं। यही जानकर सर्वसाधारण के लाभ हेतु इस ग्रंथ को प्राचीन श्लोकों के साथ नवीन तथा सरल हिन्दी टीका सहित सम्पादित किया गया है।

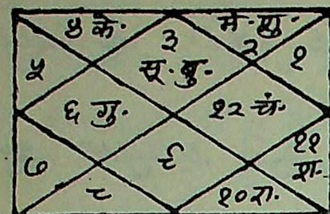
जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, संसार की समस्त संभावित कुण्डलियों का एकत्र मिल पाना कहीं संभव नहीं है, अतः प्राचीन स्फुट ग्रंथ खण्डों में जितनी कुण्डलियों के फलादेश हमें उपलब्ध हो सके, वे सब इस ग्रंथ में संकलित हैं, तथापि किसी भी अन्य जन्म कुण्डली का फलादेश, जो इस ग्रंथ में संकलित नहीं है अथवा जो प्राचीन खण्डों में उपलब्ध नहीं है, को भी ज्ञात करने के ज्योतिषशास्त्रीय प्रामाणिक सिद्धान्तों का उल्लेख इस ग्रंथ के विभिन्न खण्डों में प्राचीन आचार्यों के ग्रंथों से उद्धृत किया गया है, जिसके कारण यह ग्रंथ सर्वसाधारण के लिए अत्यन्त उपादेय बन गया है तथा इसके आधार पर किसी भी जन्म कुण्डली का फलादेश आसानी से किया जा सकता है। जिन लोगों के पास अपनी जन्म कुण्डली नहीं है तथा जिन्हें अपने जन्म का समय, तिथि, मास, वर्ष आदि का भी ज्ञान नहीं है, ऐसे नष्ट-जातक की जन्मकुण्डली प्रश्न-लग्न के आधार पर तय्यार करने की विधि का वर्णन भी इस ग्रंथ के नवम खण्ड में किया गया है, जिसके अनुसार प्रत्येक स्त्री-पुरुष की नष्ट-जन्मपत्री का निर्माण कर, फलादेश किया जा सकता है॥

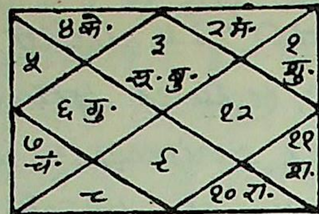
यहाँ यह बात स्मरण रखने योग्य है कि प्रत्येक व्यक्ति की जन्म कुण्डली के सभी ग्रहों का ज्यों का त्यों मिल जाना सम्भव नहीं होगा, यद्यपि बहुत सी कुण्डलियां ज्यों की त्यों भी मिल सकती हैं; अतः जिन कुण्डलियों के सभी ग्रह न मिल पाते हों, उनका फलादेश जानने के लिए शनि, राहु, बृहस्पति तथा केतु - इन चार प्रमुख ग्रहों का मिलान करना चाहिए तथा कुण्डली खण्ड में उल्लिखित जिस कुण्डली से उक्त चार ग्रहों का मिलान हो जाय, उसके नीचे लिखे हुए नम्बर वाली पृष्ठ संख्या के अनुसार फलादेश खण्ड की कुण्डली को अपनी कुण्डली का ही फलादेश समझना चाहिए। अन्य ग्रहों के प्रभाव के सम्बन्ध में तृतीय खण्ड में वर्णित ग्रह भाव फल तथा प्रथम एवं द्वितीय खण्ड में वर्णित फलादेश के सिद्धान्तों के आधार पर सम्पूर्ण फलादेश करना उचित रहेगा। यदि प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय खण्ड में वर्णित जन्म राशि, नवांश, ग्रह तथा ग्रह दृष्टि के आधार पर फलित खण्ड में वर्णित फलादेश को संयुक्त करके फलादेश किया जायेगा, तो वह प्रायः शतप्रतिशत सही बैठेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

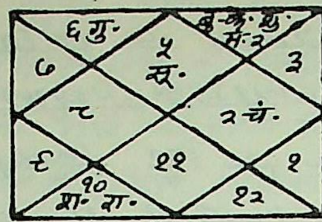
जन्म कुण्डली के फलादेश से सम्बन्धित अन्य नियमों के सम्बन्ध में इस कुण्डली खण्ड के अन्तिम पृष्ठों पर उल्लिखित टिप्पणियों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

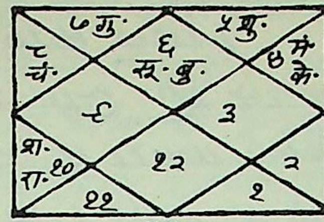
इस कुण्डली खण्ड में उल्लिखित कुण्डलियों के नीचे जो संख्या दी गई है, फलादेश खण्ड में उसी पृष्ठ संख्या पर, उस कुण्डली का फलादेश प्राप्त होगा।

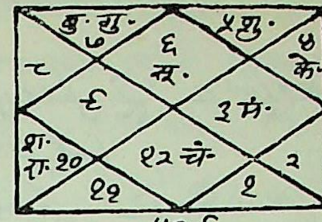
(५१०४ कुण्डलियाँ हैं)


५२४


५२५

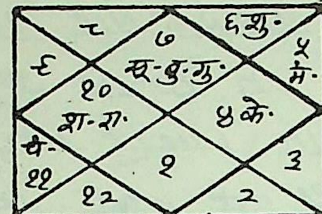

५२७

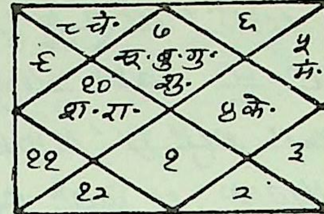

५२८


५२९

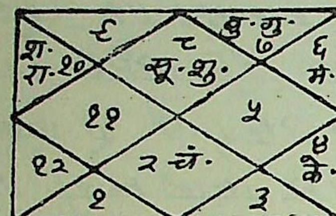

५३२

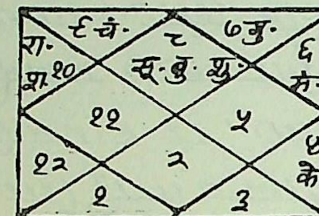

५३३

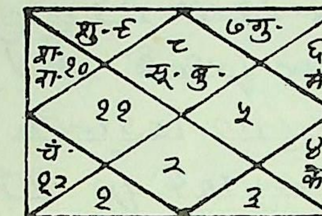

५३४

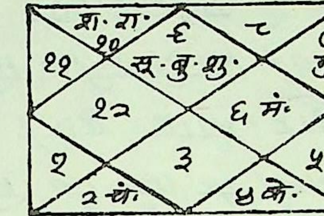

५३६

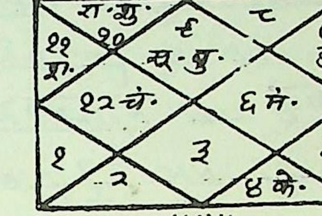

५३७

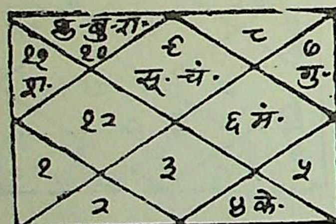

५३९

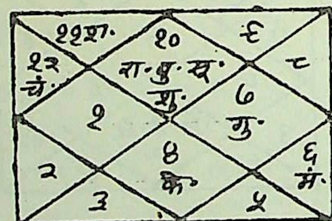

५४०

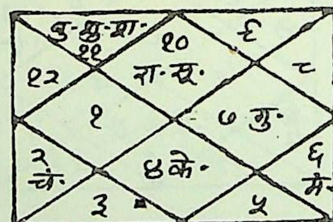

५४२

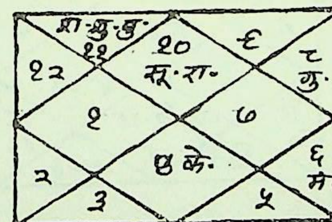

५४३

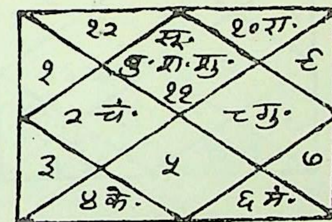

५४५

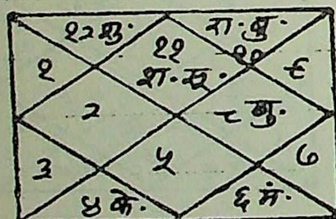

५४६

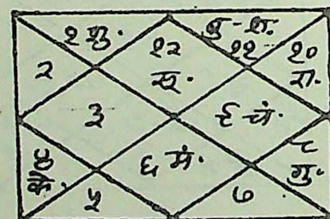

५४८

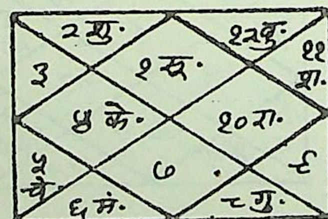

५५०

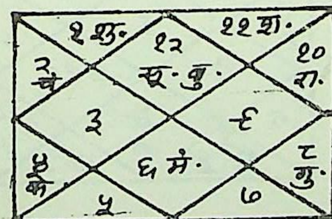

५५१

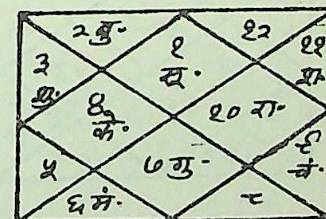

५५२


५५३

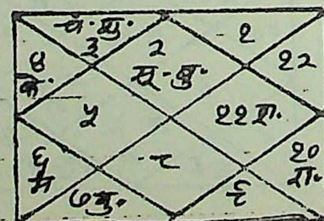

५५५

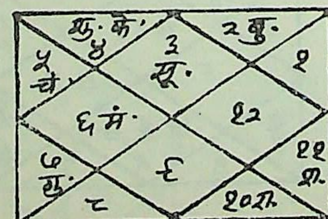

५५६

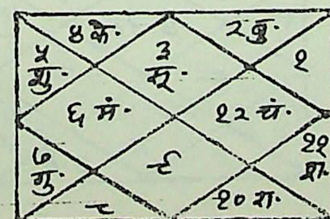

५५८

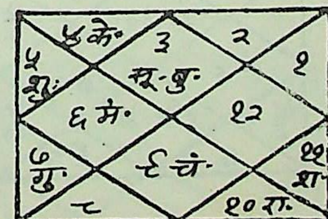

५५९


५६१


५६३

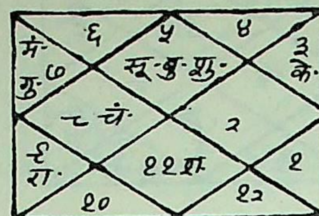

५६४

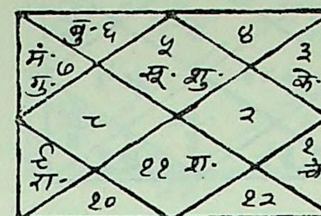

५६६

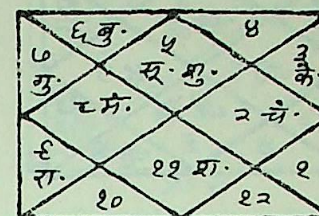

५६८

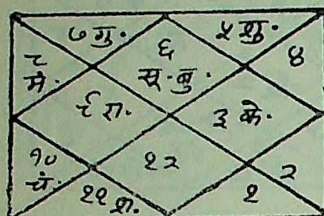

५६९

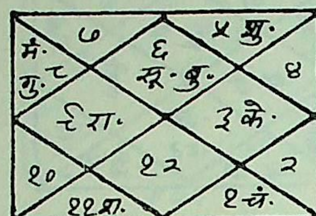

५७१

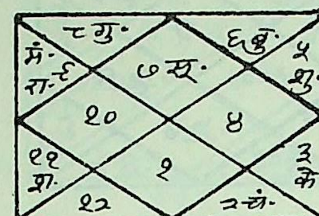

५७३


५७४

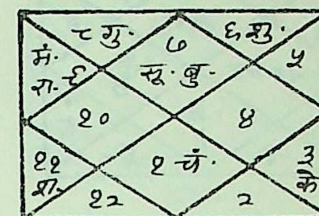

५७६

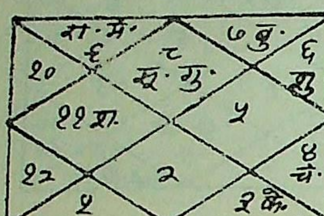

५७७


५७९

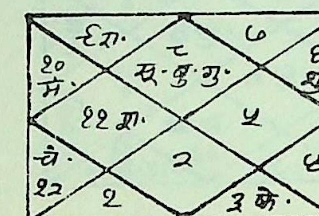

५८०

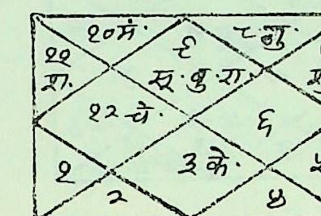

५८२

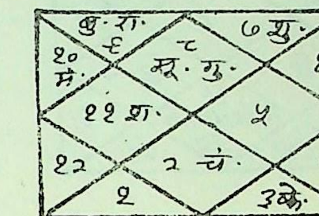

५८३

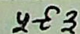

५८५

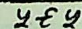

५८७

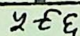

५८८

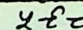

५९०

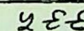

५९१

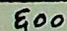

५९३

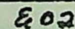

५९५

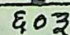

५९६

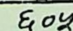

५९८

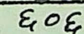

५९९

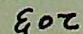

६००

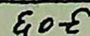

६०२

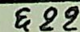

६०३

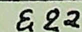

६०५

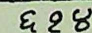

६०६

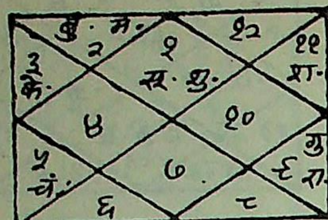

६०८


६०९

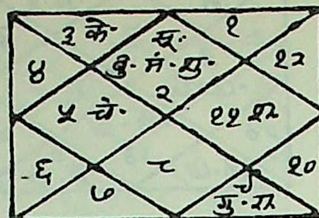

६११

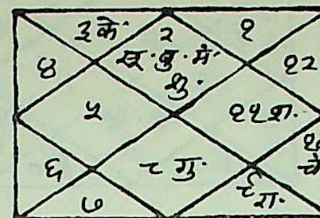

६१२


६१४

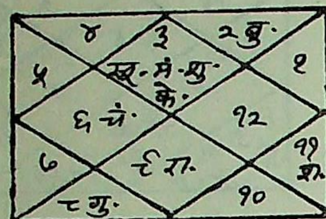

६१५

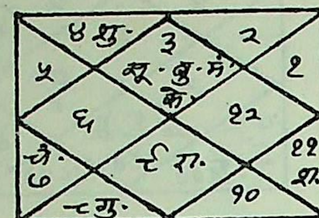

६१७

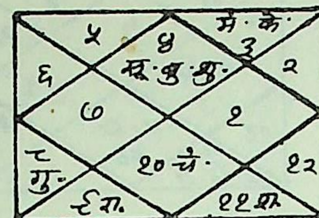

६१९

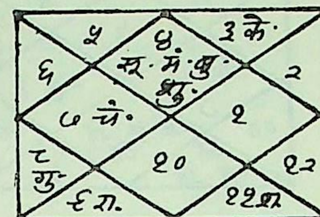

६२०


६२२


६२३

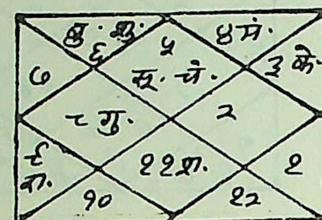

६२४

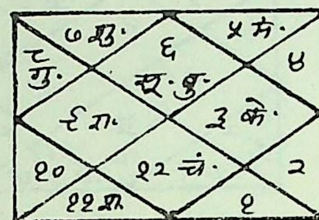

६२६

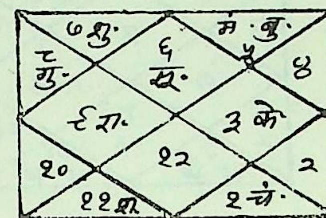

६२८

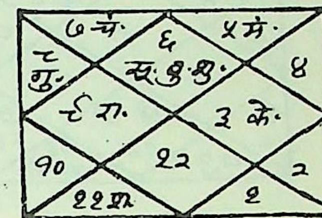

६२९

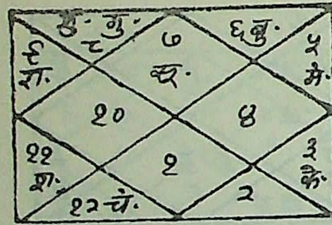

६३०

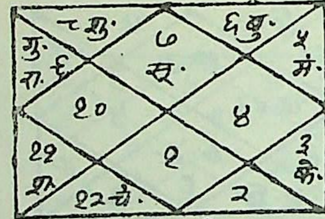

६३२

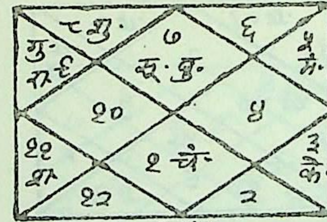

६३३

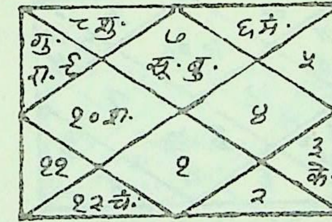

६३५

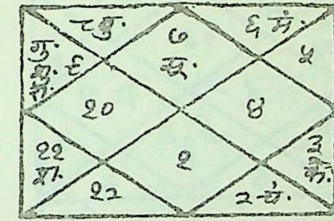

६३६


६३८

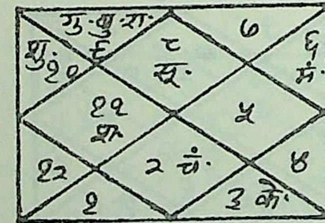

६३९

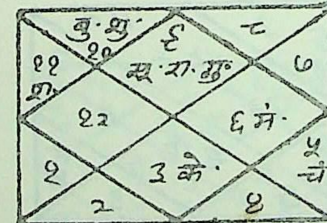

६४१

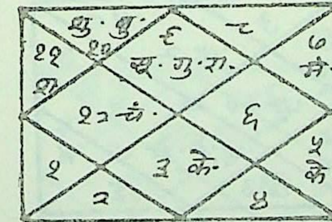

६४२

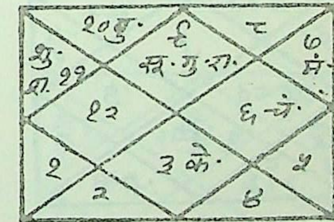

६४४

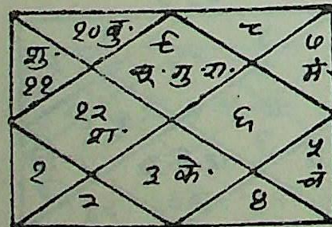

६४५

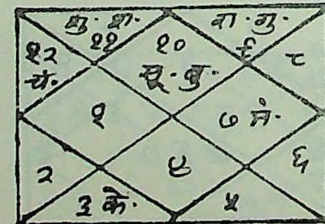

६४७

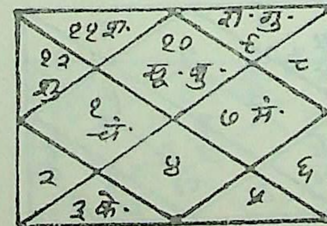

६४८

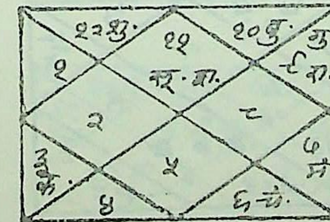

६५०

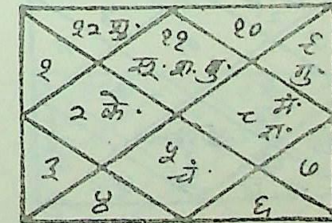

६५२

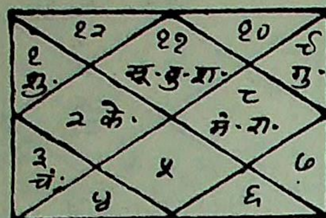

६५३

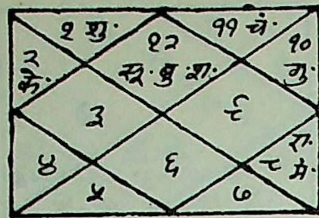

६५४

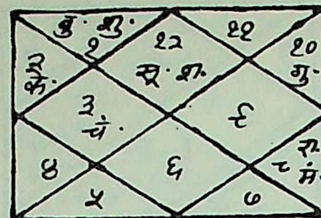

६५६

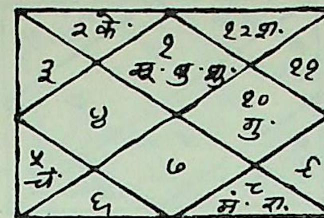

६५७

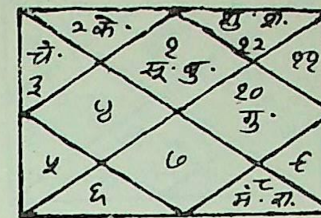

६५९


६६०

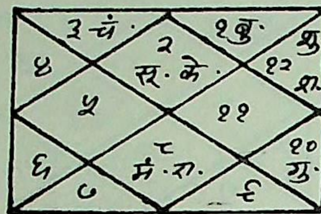

६६२

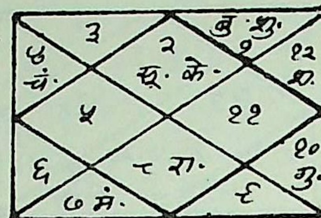

६६३

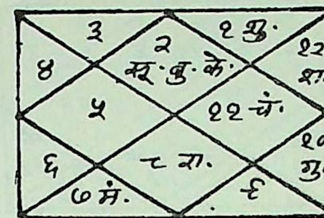

६६५

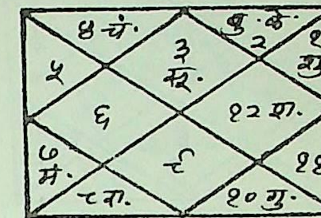

६६६

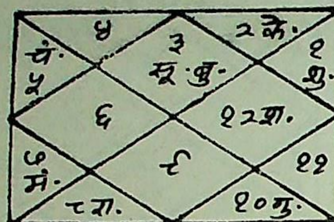

६६८

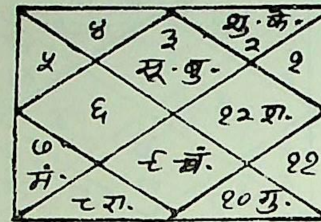

६६९

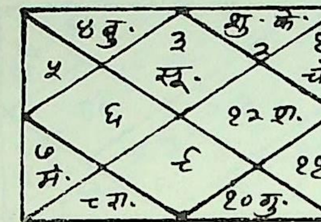

६७१

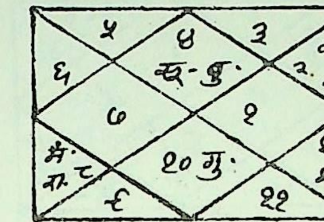

६७३

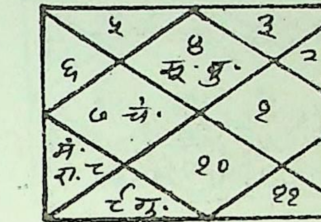

६७४

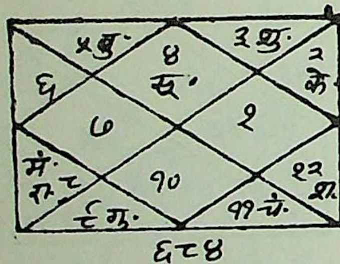

६७६

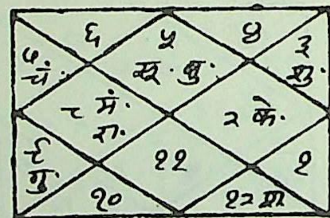

६७८

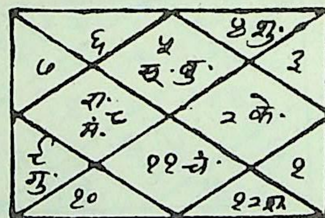

६७९

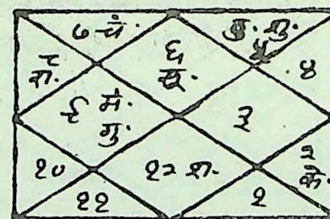

६८१

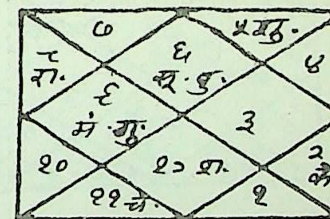

६८३

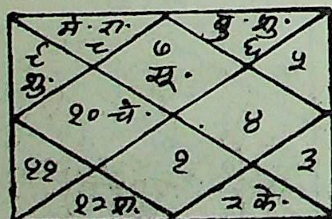

६८४

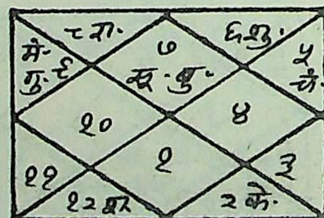

६८६


६८७

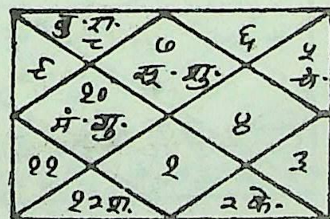

६८९

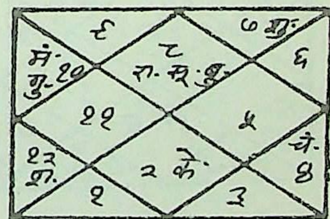

६९१


६९२

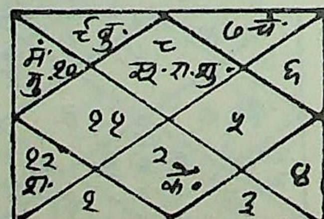

६९४

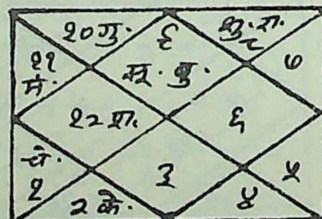

६९५

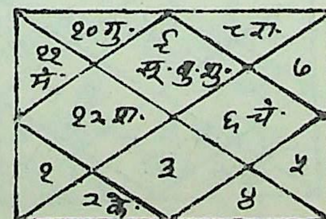

६९७

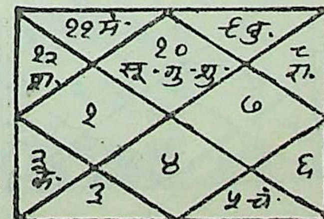

६९९

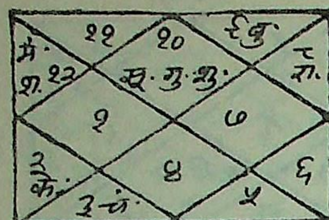

७००

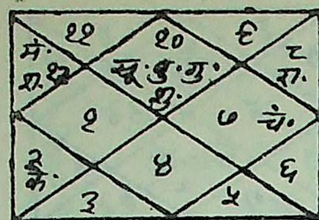

७०२

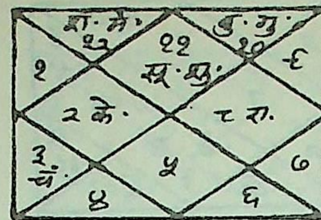

७०४

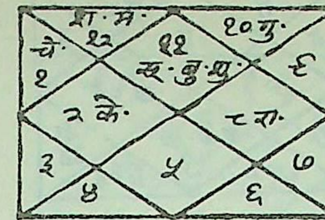

७०६

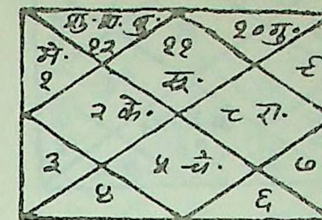

७०७

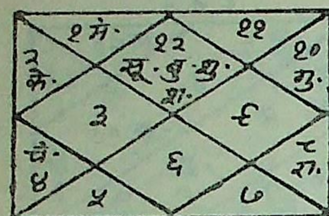

७०९

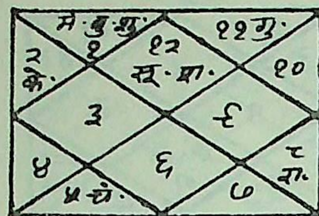

७१०

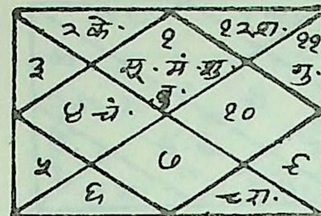

७१२

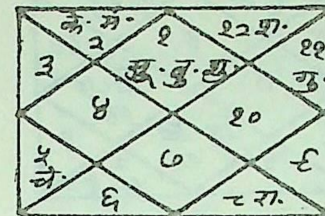

७१४

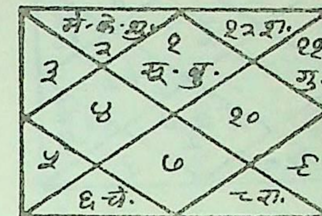

७१६

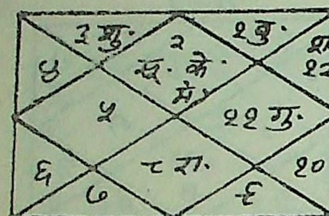

७१७

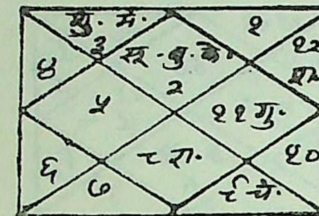

७१९

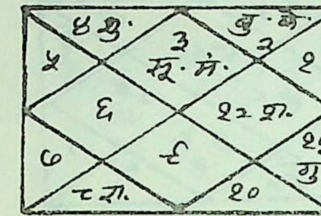

७२१

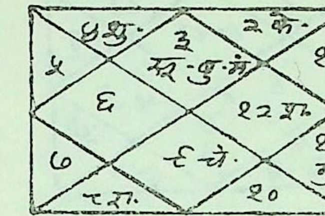

७२३

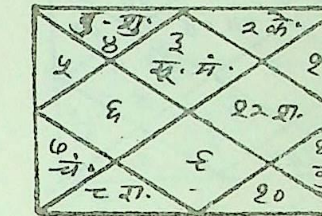

७२५

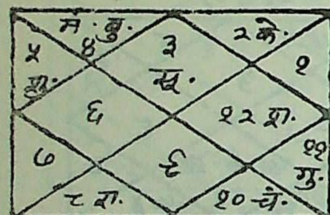

७२६

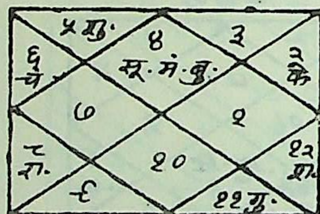

७२८

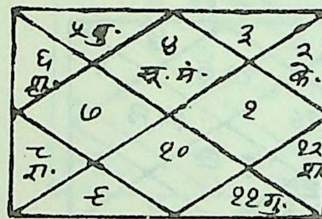

७३०

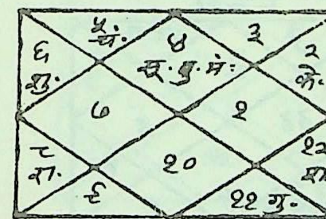

७३२

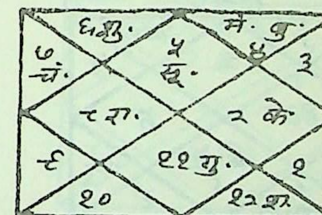

७३४


७३५

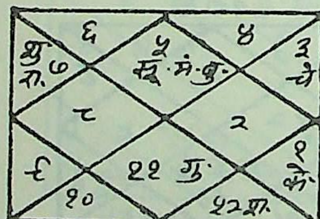

७३६

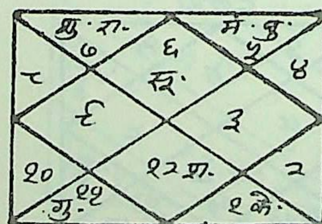

७३८

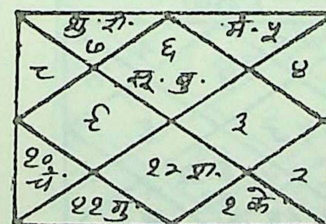

७४०

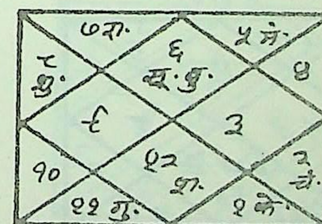

७४२

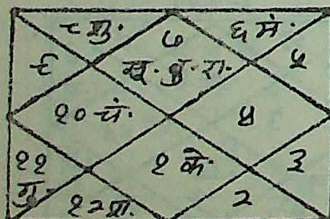

७४३

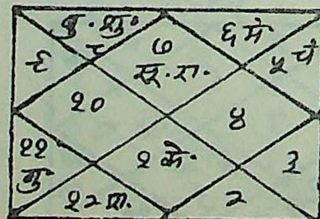

७४५

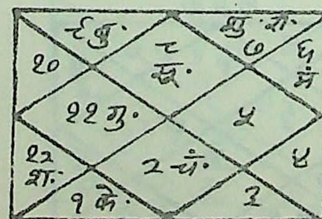

७४७

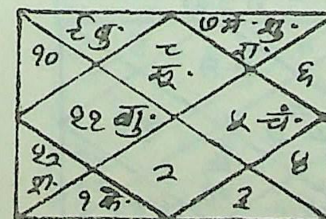

७४९


७५०


७५२

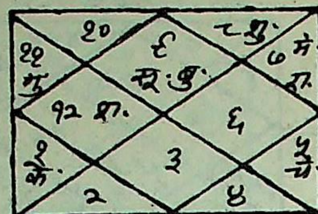

७५४

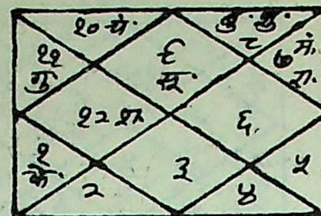

७५६

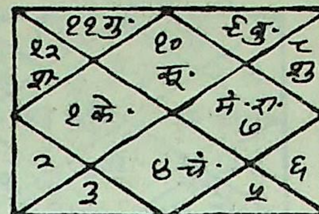

७५७


७५९


७६१

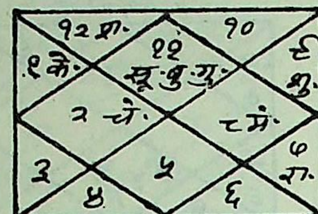

७६२


७६४

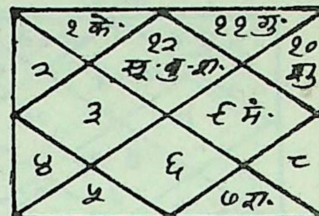

७६५

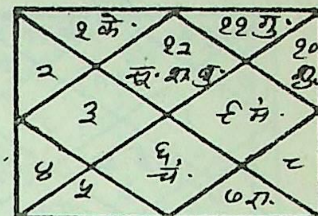

७६७


७६८

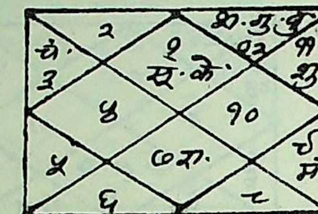

७७०

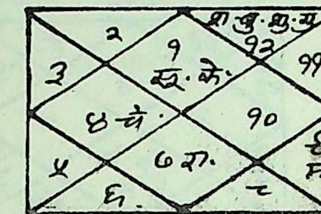

७७२

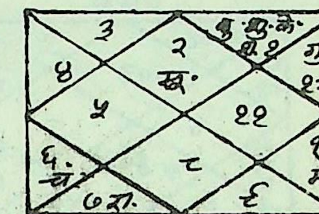

७७३

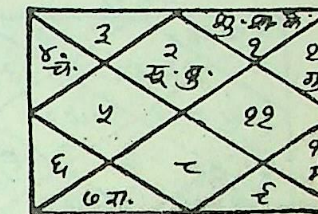

७७५

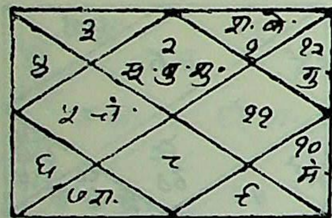

७७७

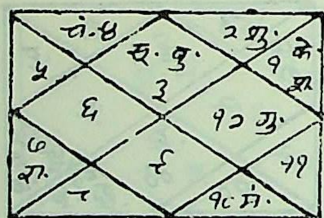

७७८

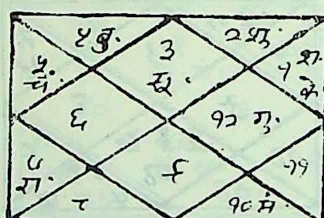

७८०

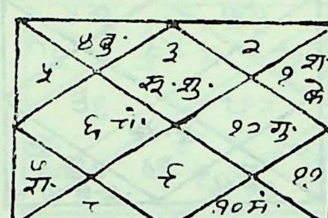

७८२

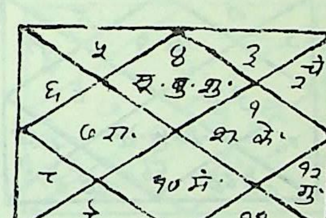

७८४


७८५


७८६

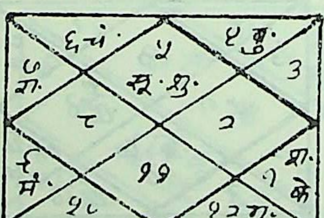

७८९


७९०


७९२

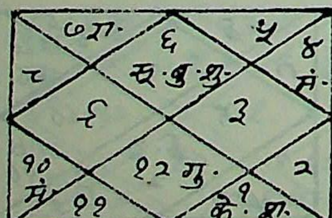

७९४

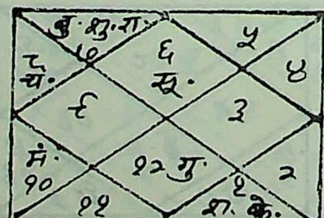

७९६

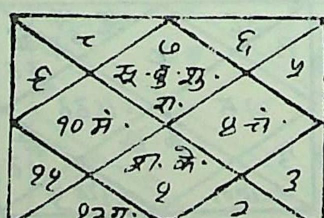

७९८

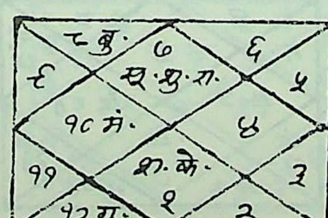

७९९

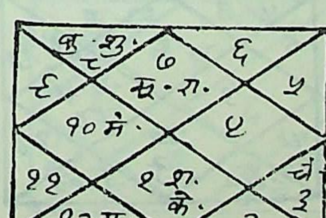

८०१

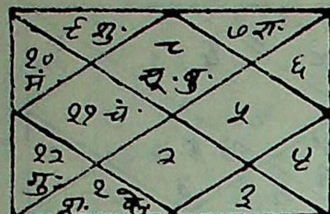

८०३

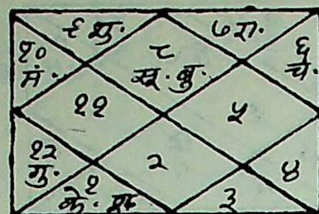

८०४

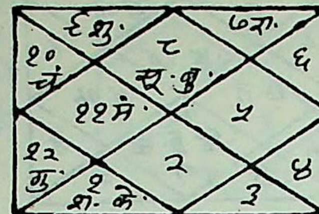

८०६

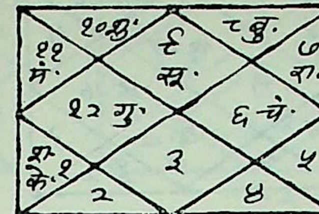

८०८


८१०


८२१


८२३

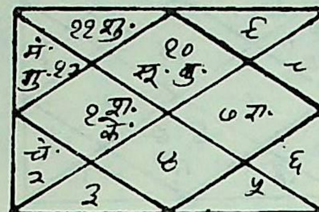

८२५

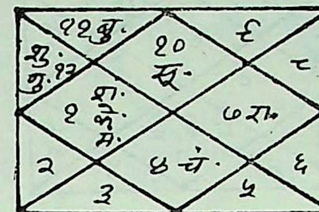

८२७

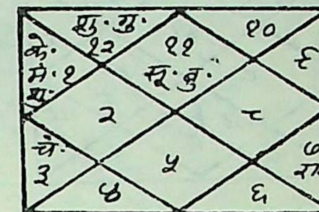

८२९

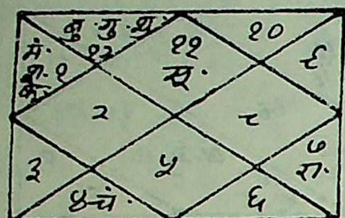

८२०


८२२

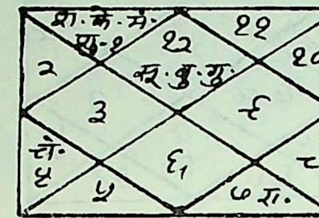

८२४

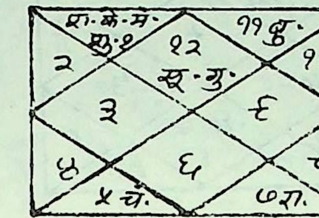

८२६

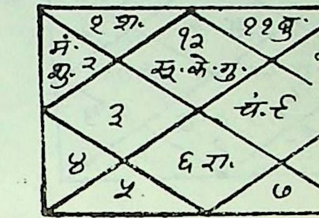

८२८

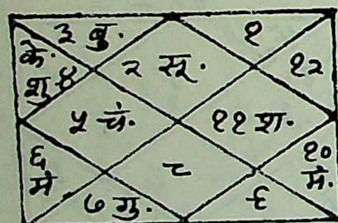

८३०


८३१

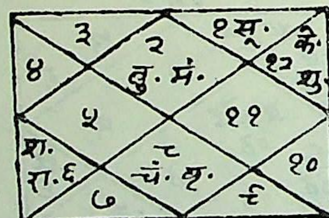

८३३


८३५

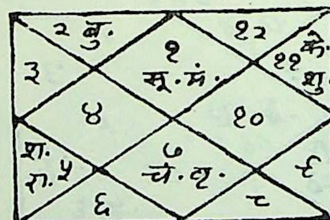

८३७



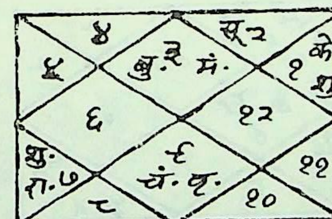
८३९



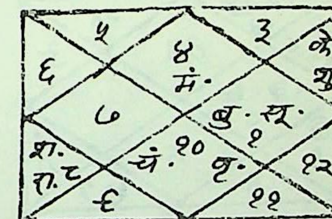
८४२



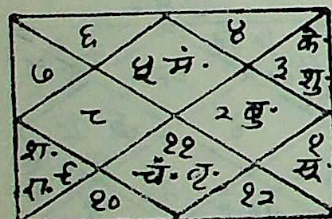
८४१



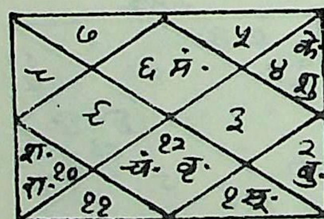
८४१



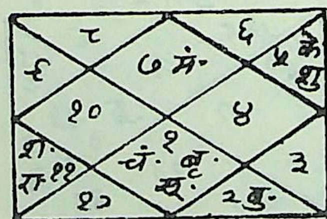
८४१



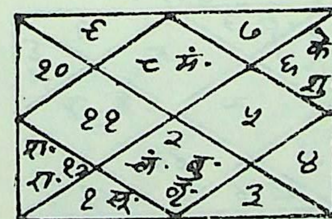
८४१



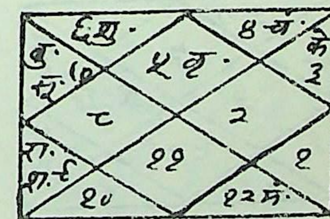
८४१



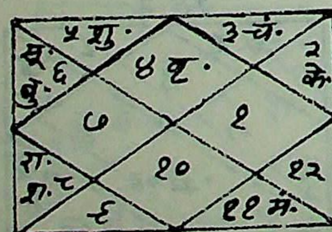
८४१



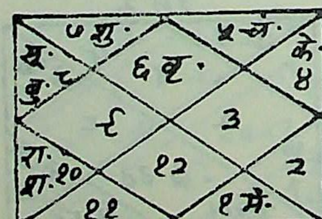
८४२



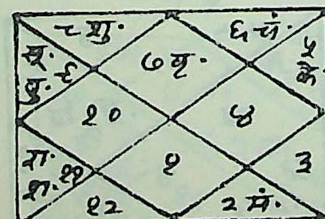
८४६



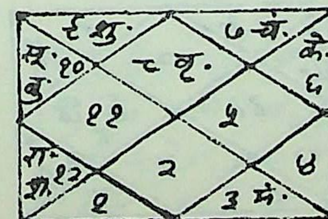
८४६



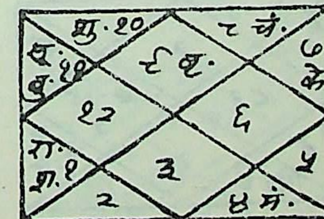
८४६



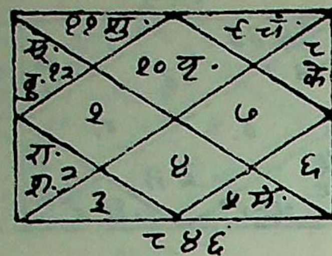
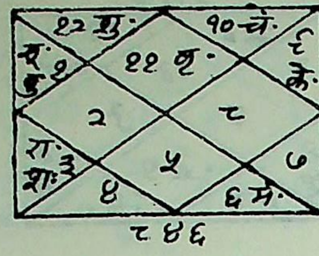
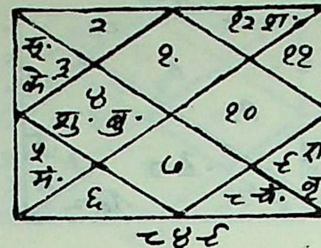
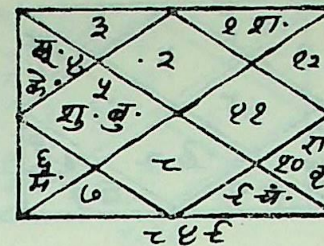
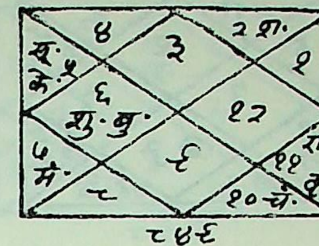
८४६

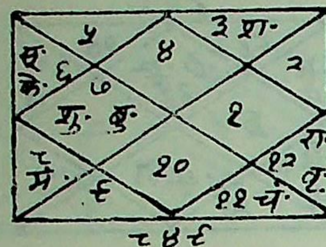
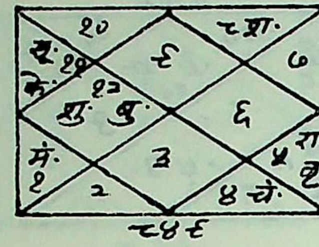
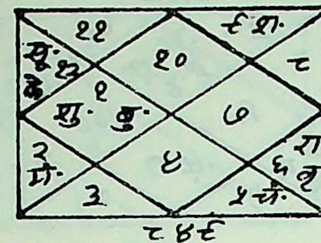
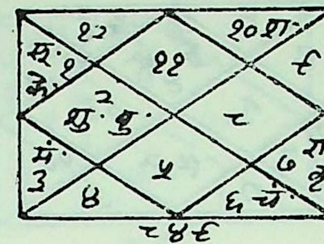
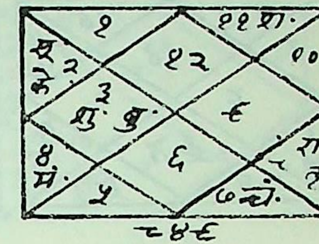


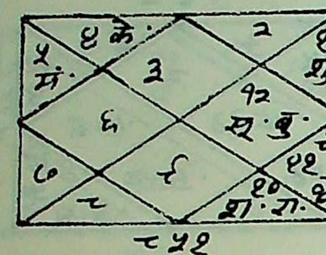
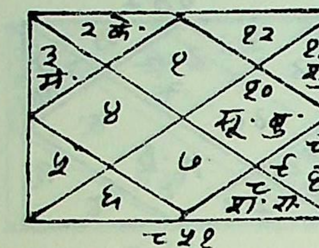
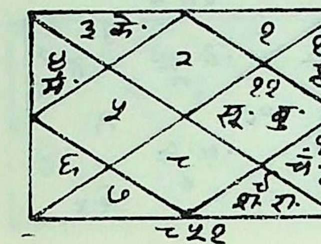
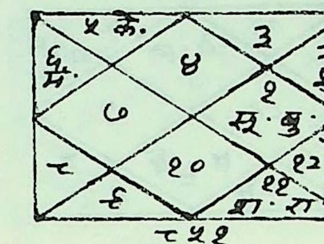
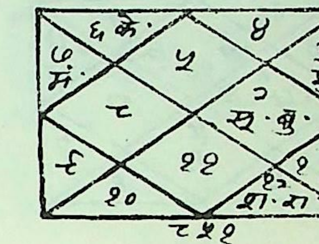
८४६



८४६

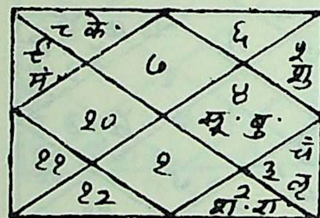






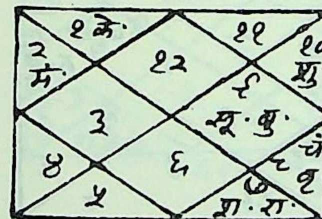








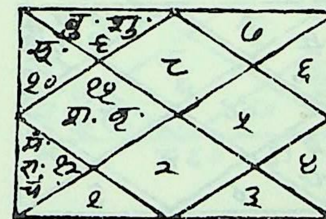
८५१



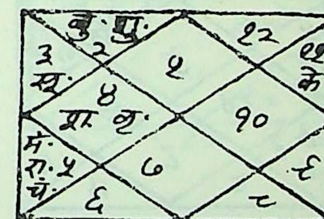
८५१



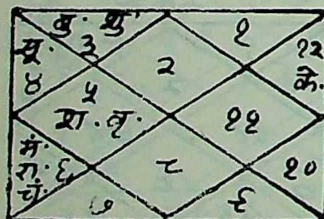
८५१



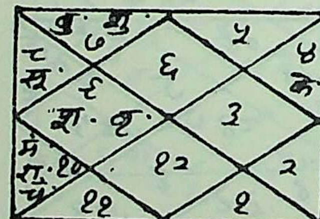
८५४



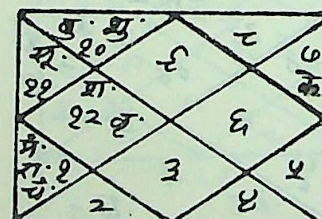
८५४



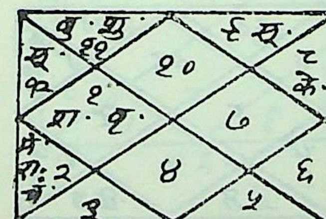
८५४



८५४



८५४



८५४



८५४



८५६



८५६



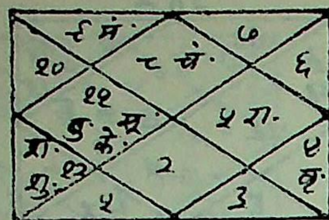
८५६

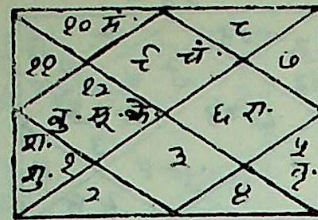


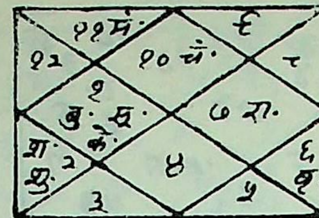
८५६



८५६

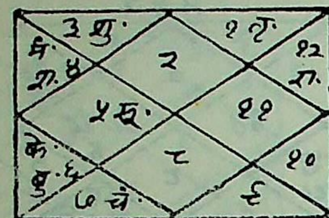

८५६

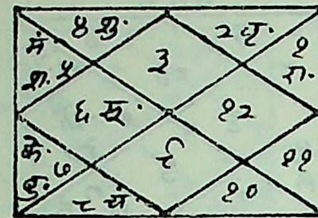

८५६

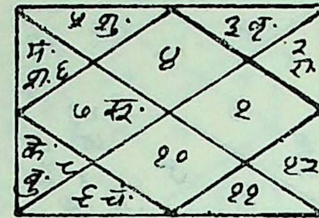

८५६

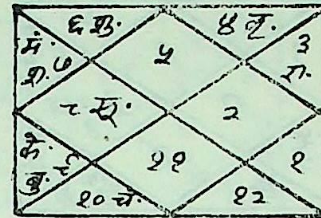

८५८


८५८


८५८

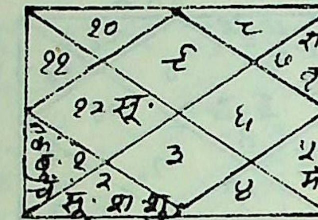

८५८

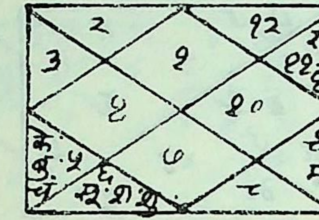

८५८

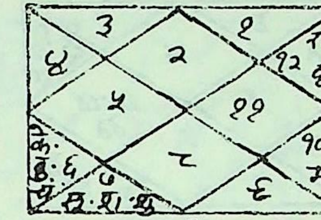

८५८

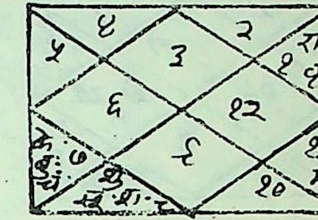

८५८

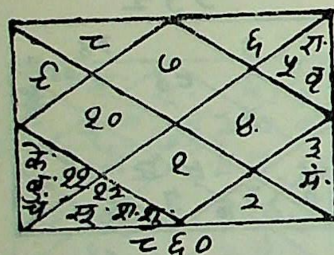

८५८

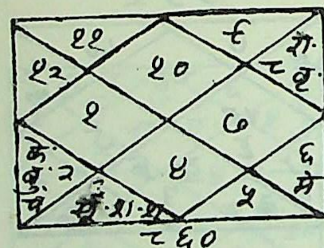

८६०

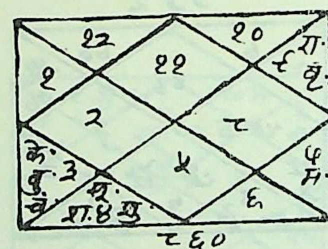

८६०

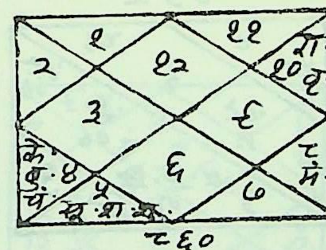

८६०

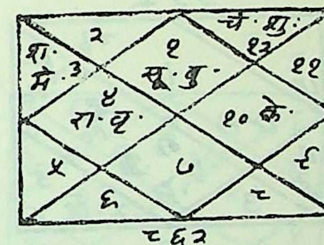

८६०

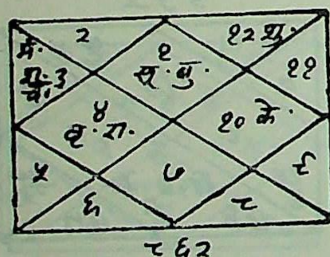

८६०

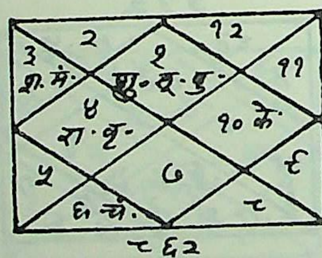

८६०

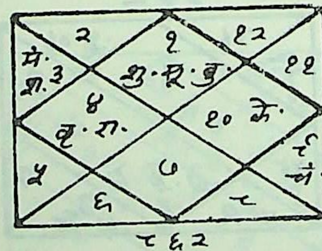

८६०

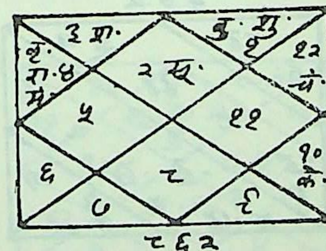

८६०


८६२

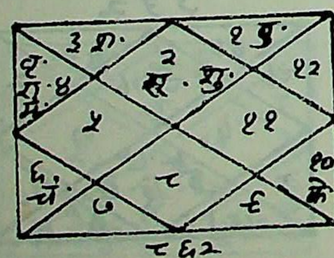

८६२


८६२

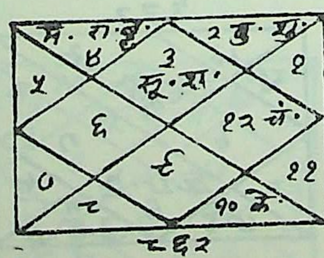

८६२

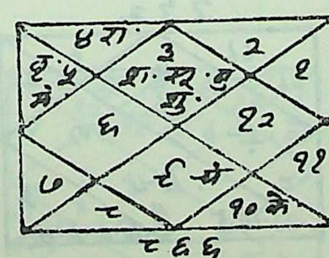

८६२

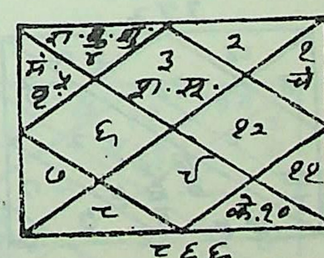

८६२

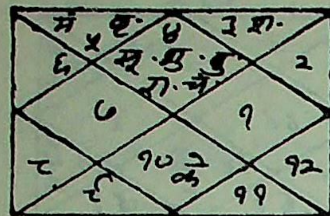

८६२

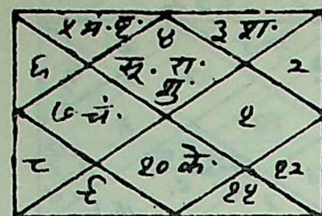

८६२

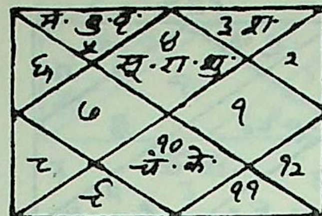

८६२

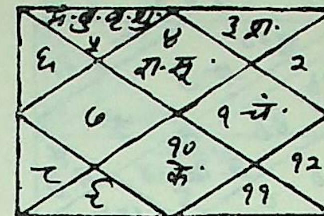

८६६

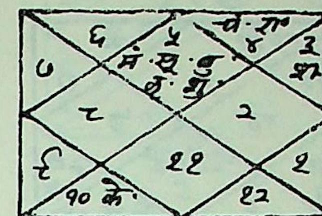

८६६

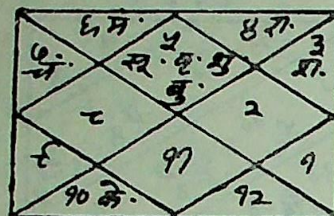

८६६

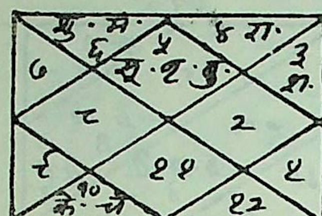

८६६

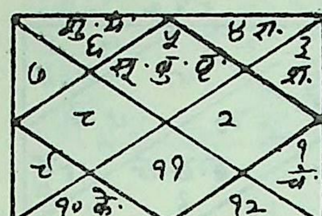

८६६


८६६

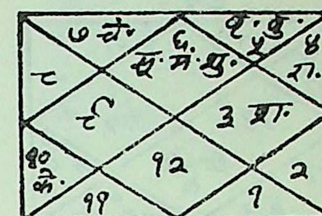

८६६

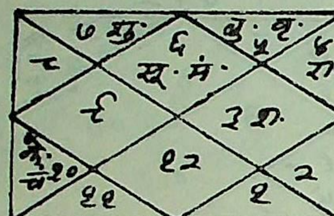

८६६

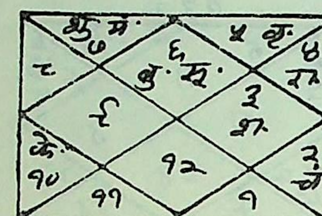

८६६

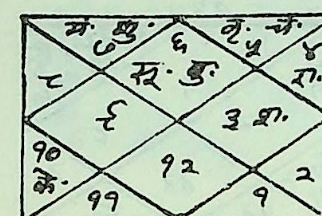

८६६

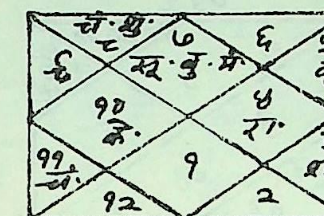

८६६

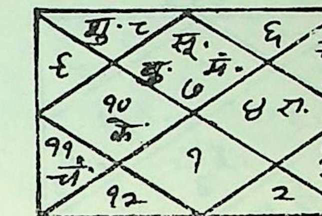

८६६

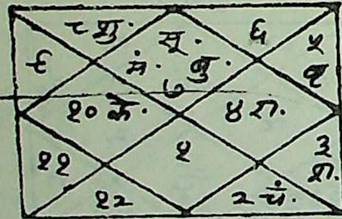

८६६


८६६

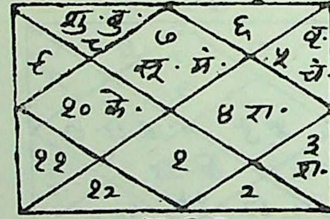

८६६


८६६

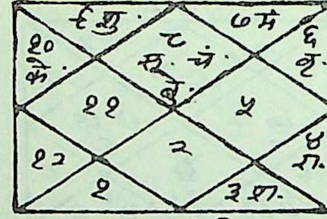

८६६



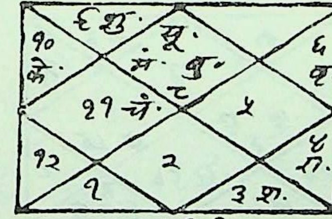
८६६



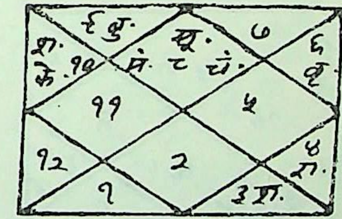
८६६



८६९



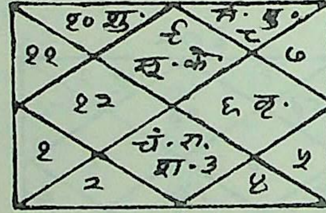
८६९



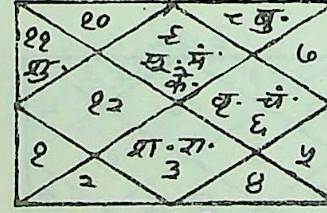
८६९



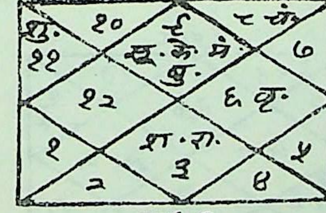
८७३



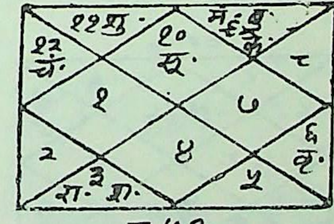
८७३



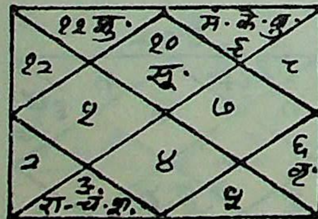
८७३



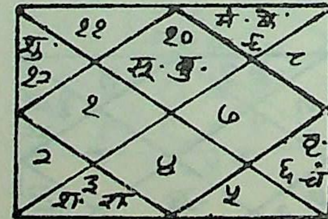
८७३



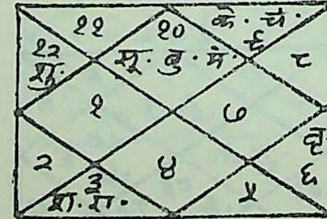
८७३



८७३



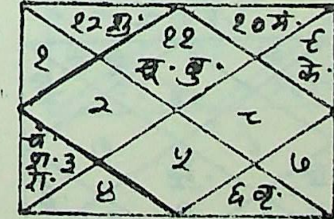
८७३



८७३

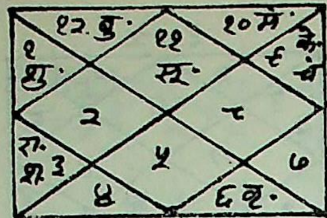


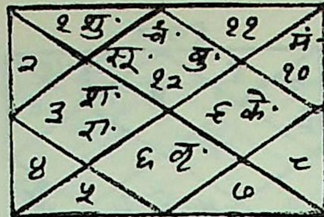
८७३



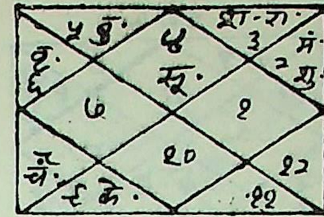
८७३

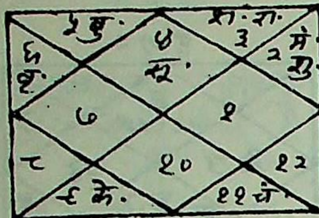

८७३

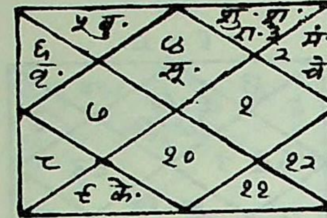

८७३

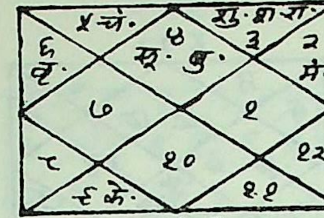

८७३

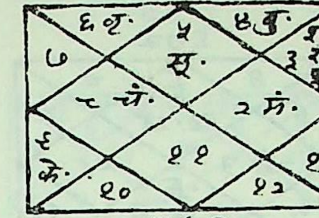

८७३

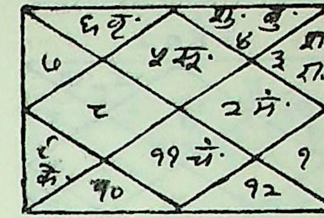

८७३

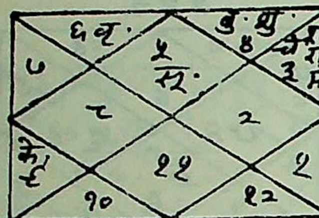

८७३

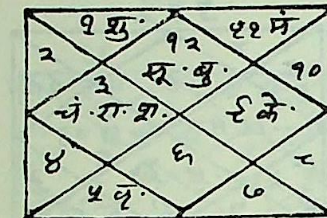

८७३

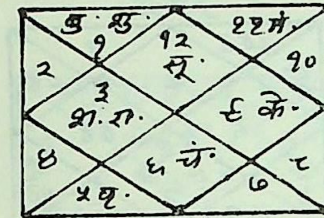

८७३

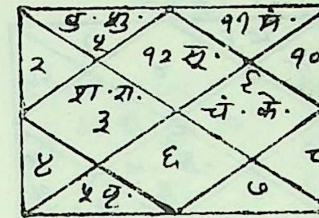

८७३

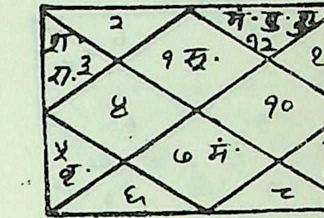

८७३

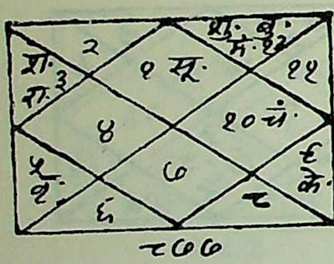

८७३

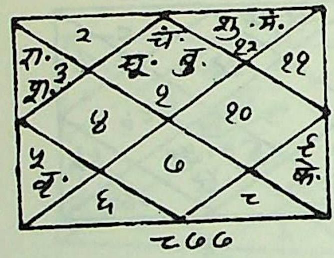

८७७

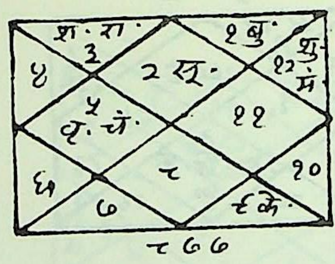

८७७

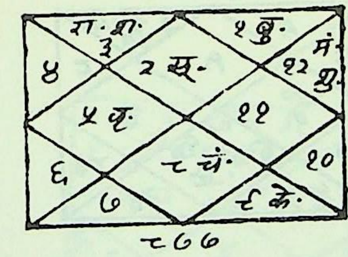

८७७

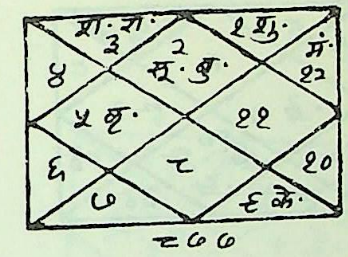

८७७

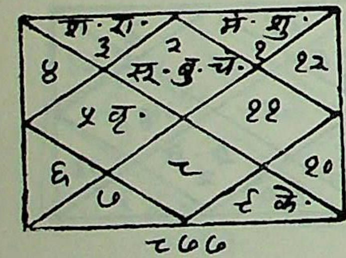

८७७

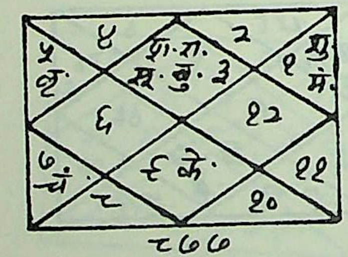

८७७

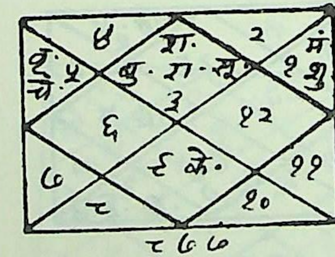

८७७

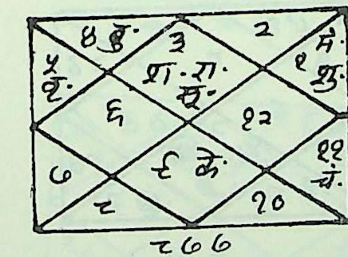

८७७

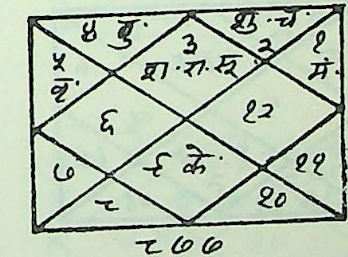

८७७

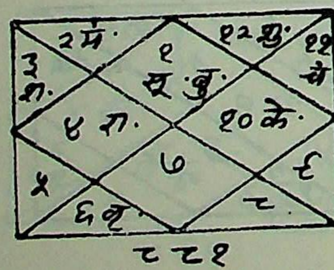

८७७


८७७

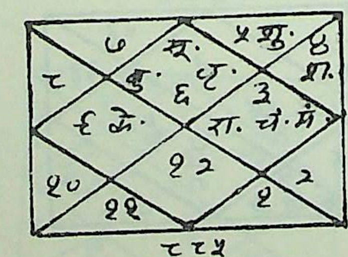

८७७

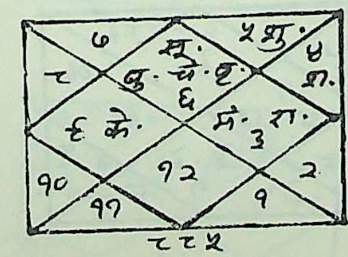

८७७

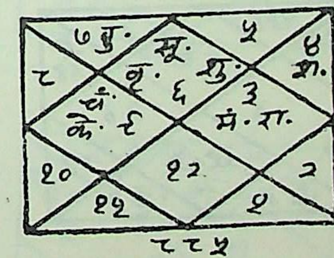

८७७

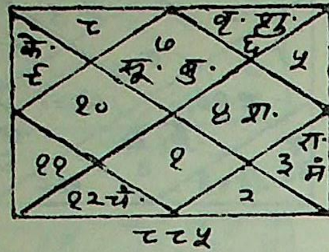

८८१


८८५

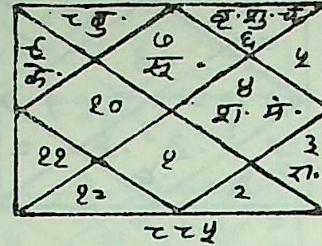

८८५

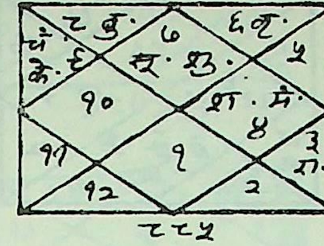

८८५

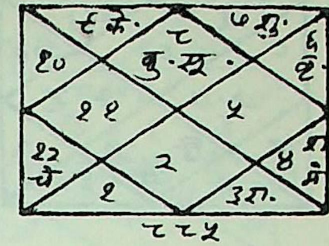

८८५

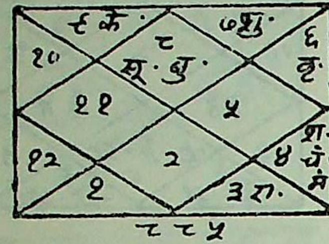

८८५

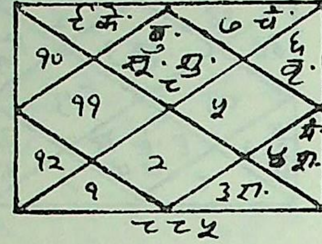

८८५

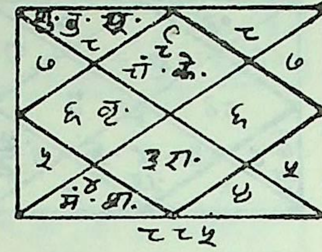

८८५

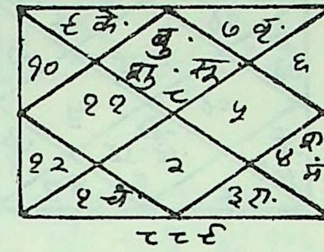

८८५

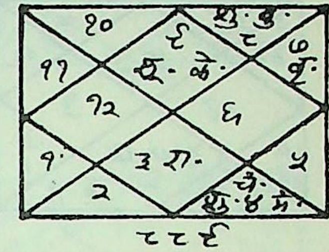

८८५

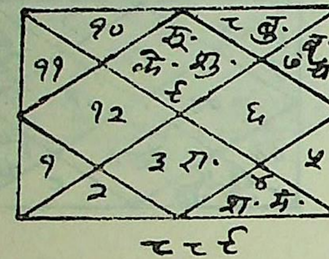

८८५

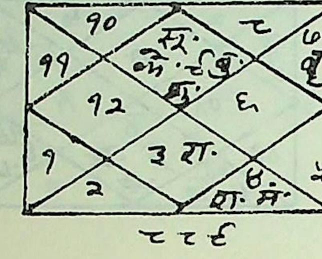

८८५

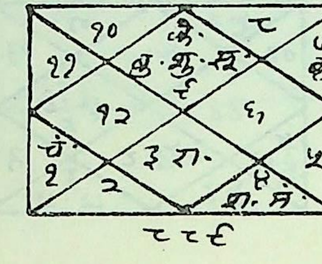

८८५

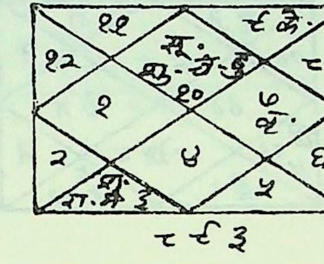

८८६

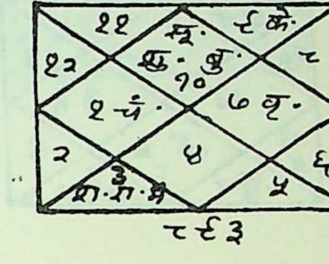

८८६

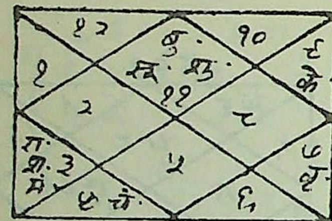

८८६

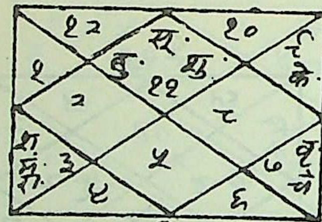

८८६

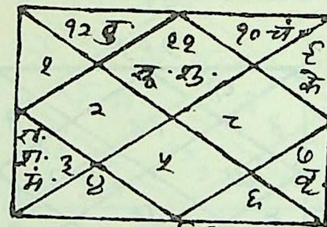

८८६

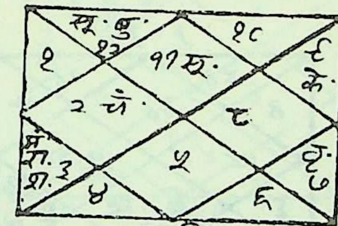

८९३

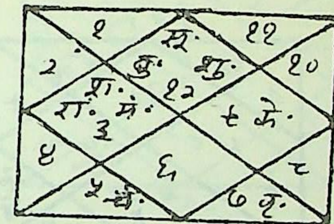

८९३

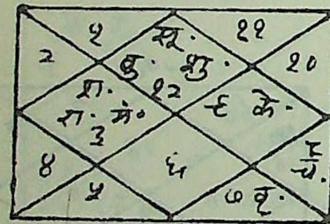

८८३

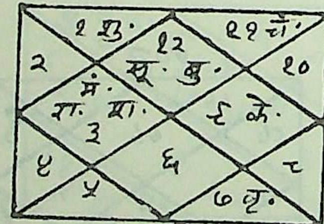

८८३

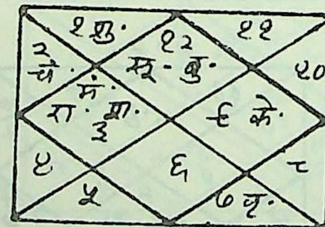

८८३

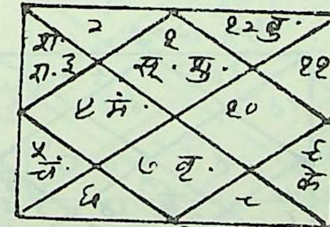

८८३

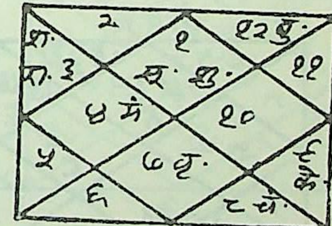

८८३


८८३

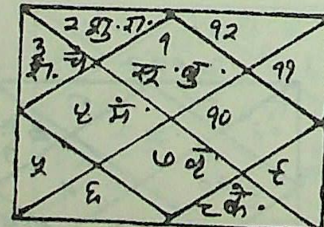

८८३

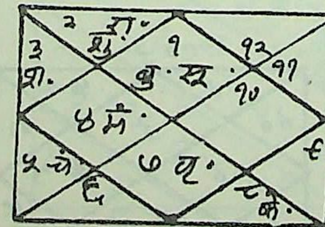

८८३


८८३


८८३

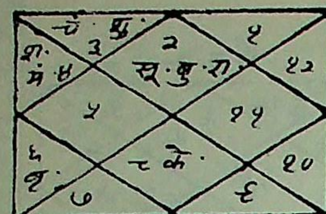

८८६


८८६

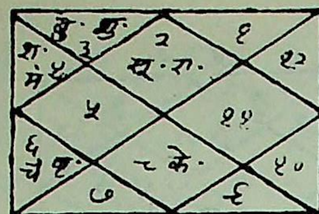

८८६


८८६

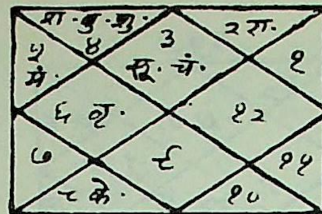

८८६



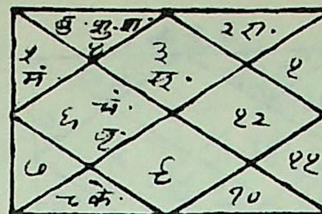
६००



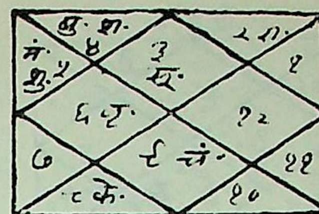
६००



६००



६००



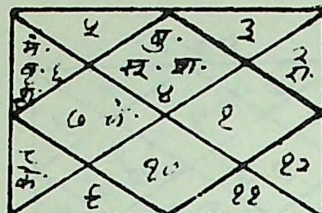
६००



६००



६००



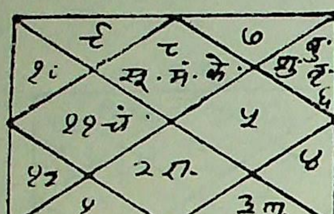
६००



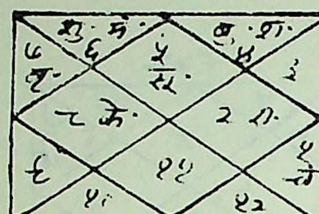
६००



६०५



६०५



६०६



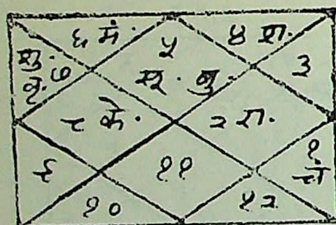
६०६

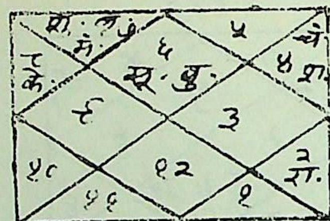


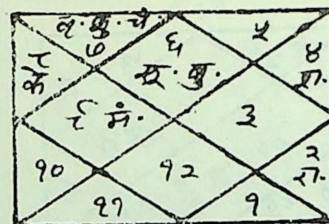
६०६

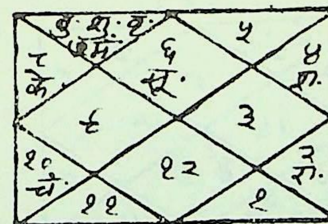


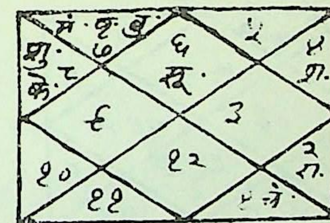
६०६

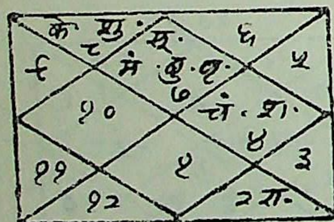

९०९

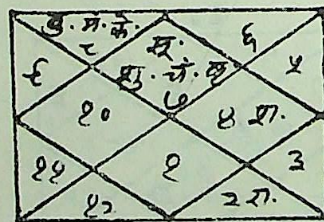

९०९

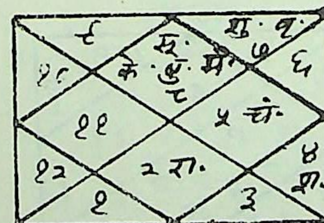

९०९

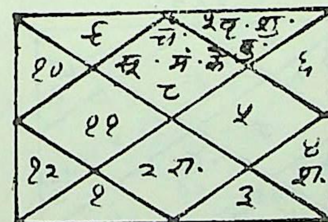

९०९

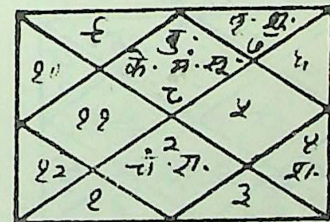

९०९

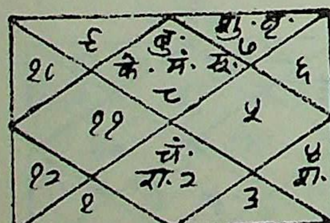

९०९


९०९

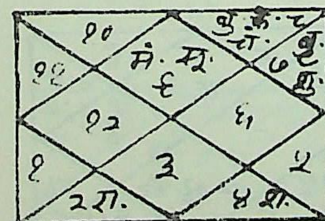

९०९

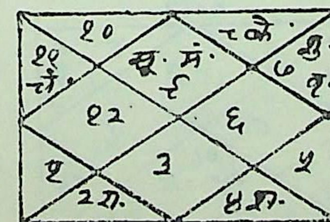

९०९

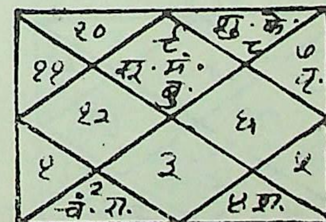

९०९


९०९

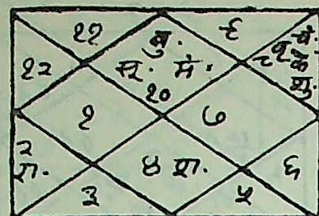

९०९

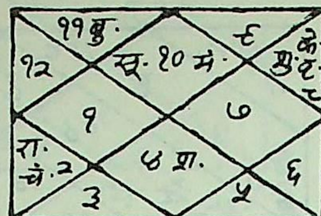

९०९

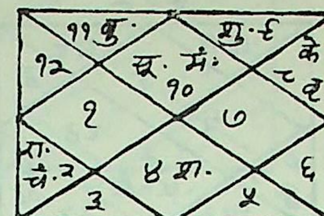

९०९

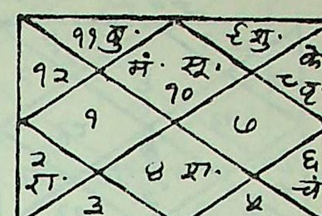

९०९

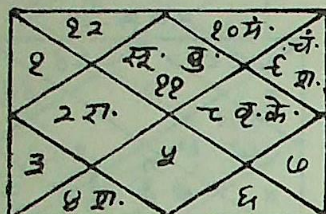

६१३

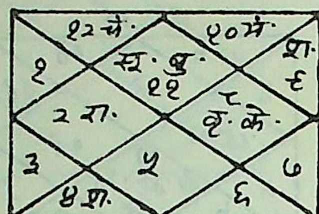

६१३

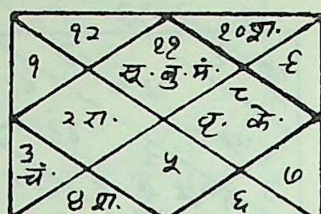

६१३

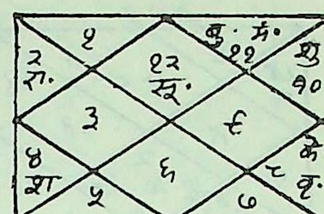

६१३

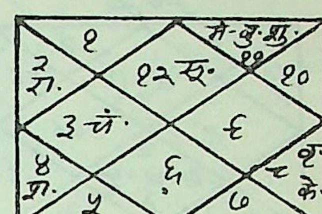

६१३

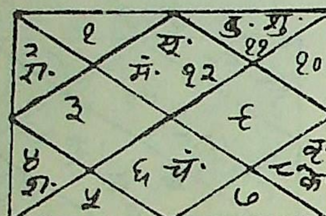

६१३

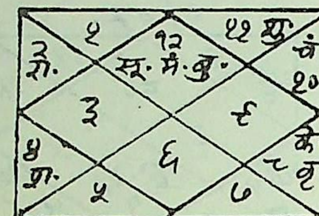

६१३

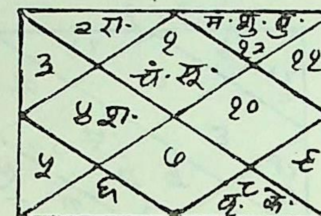

६१३

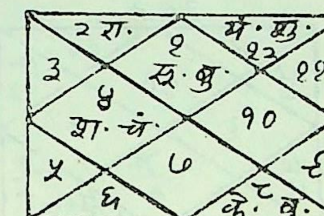

६१३

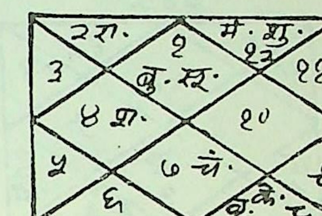

६१३

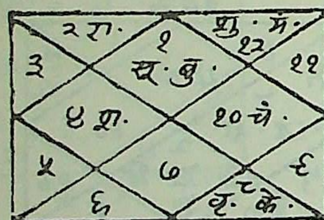

६१३

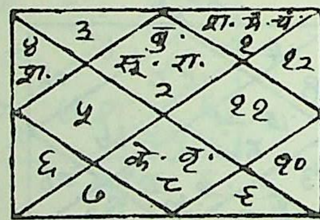

६१३

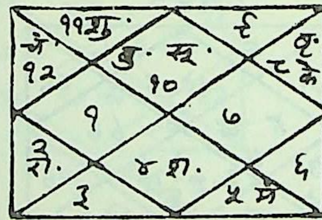

६१३

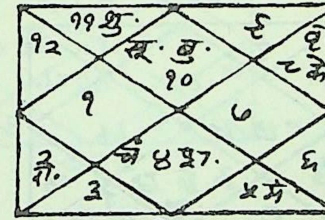

६१३

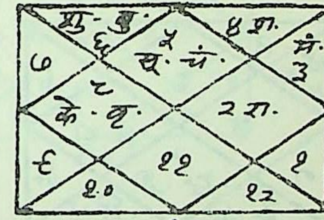

६१३

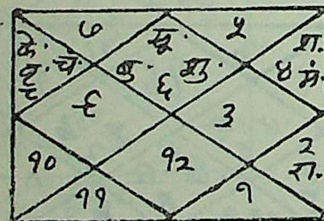

६२३

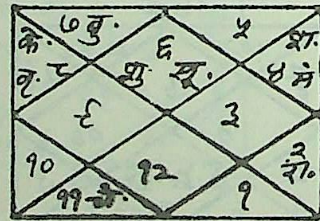

६२३

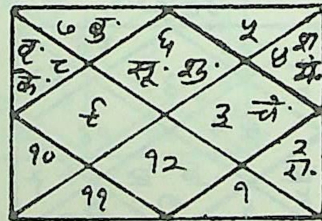

६२६

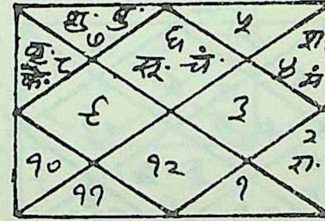

६२६

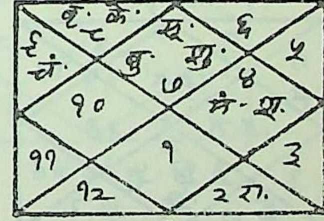

६२६

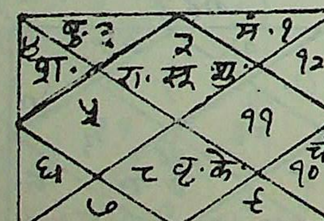

६२६

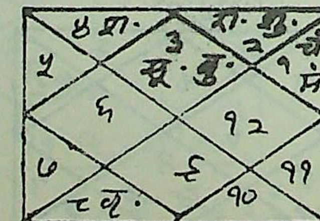

६२६

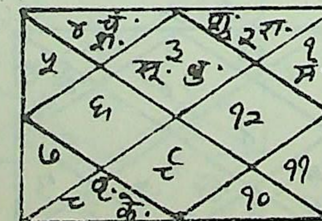

६२६

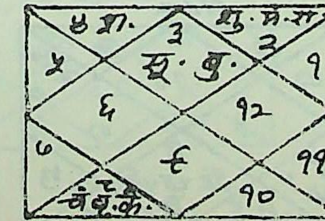

६२६

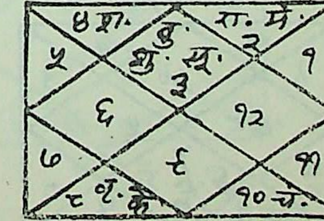

६२६

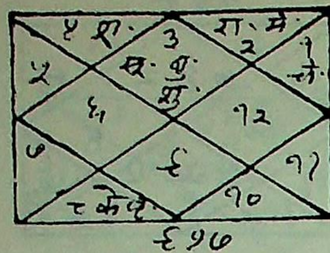

६२६


६२६

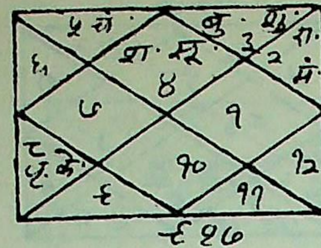

६२६


६२६

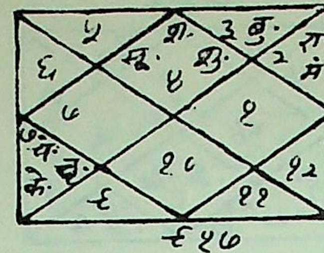

६२६



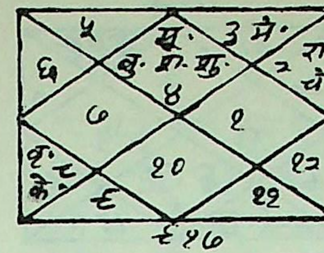
६५७



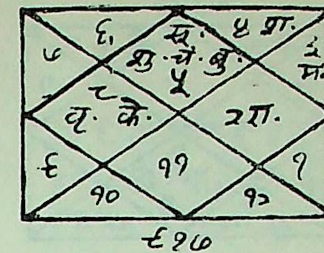
६५७



६५७



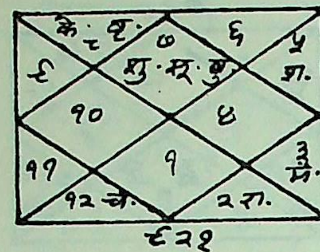
६५७



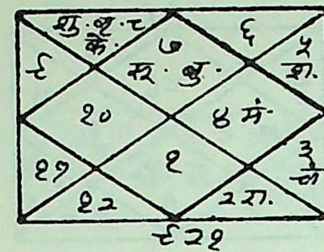
६५७



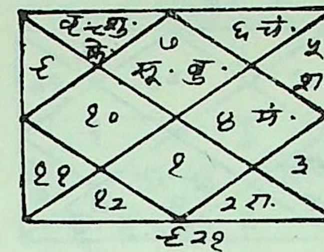
६५७



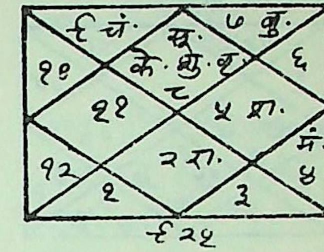
६२१



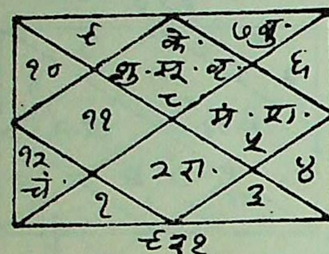
६२१



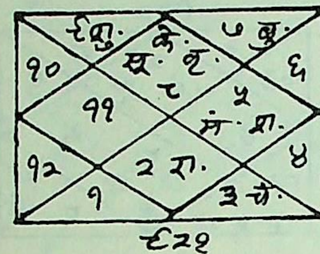
६२१



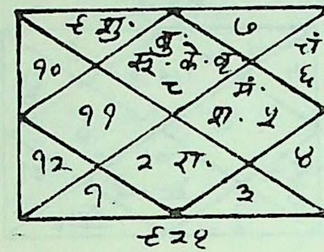
६२५



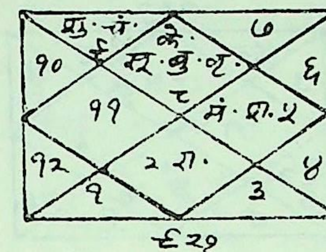
६२१



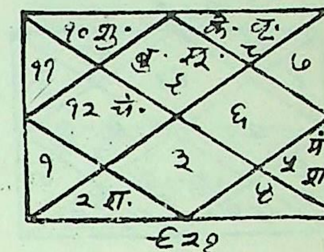
६२१



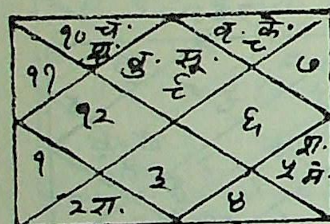
६२५



६२१



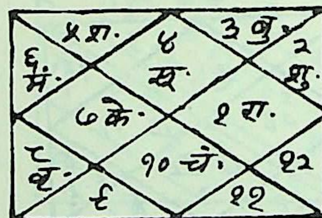
६२१



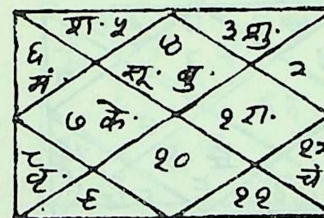
६२१



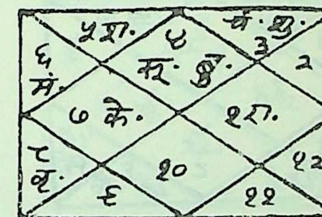
६२५



६२६



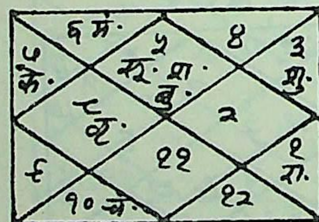
६२६



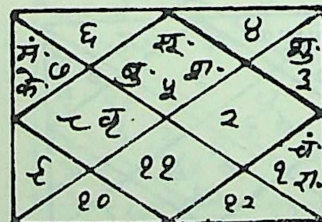
६२६



६२६



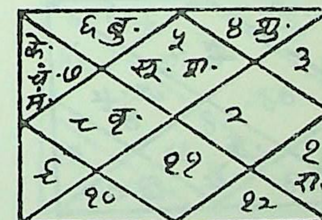
६२६



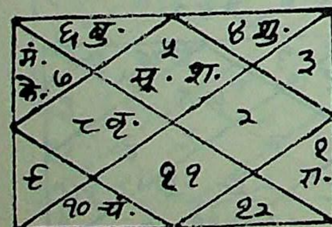
६२६



६२६



६२७



६३४



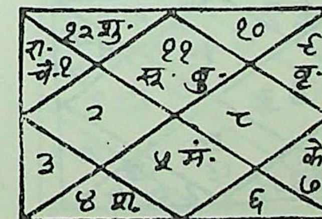
६३४



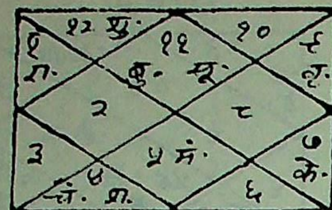
६३४



६३४



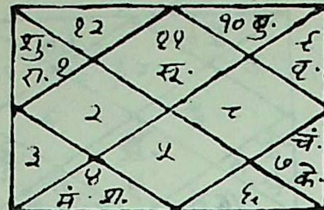
६३८



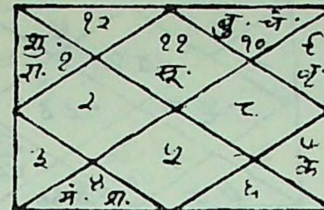
६३८



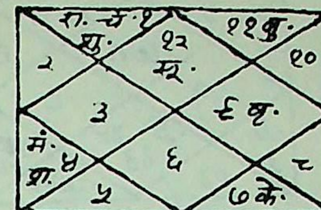
६३८



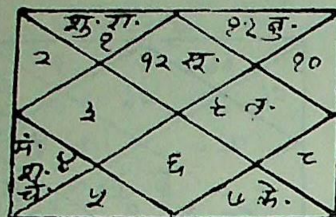
६३८



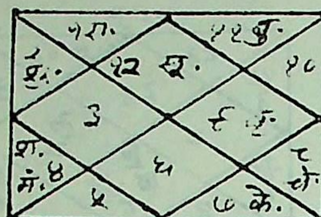
६३८



६३८



६३८



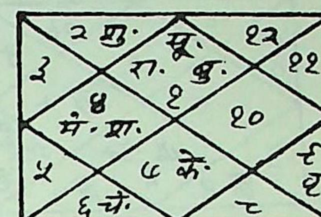
६३८



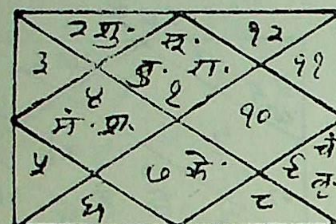
६३८



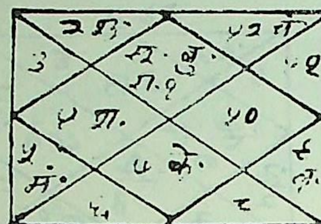
६३८



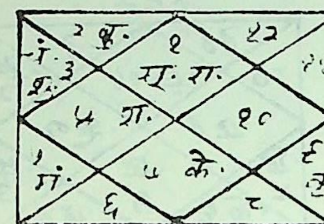
६३८



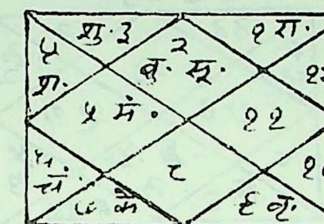
६३८



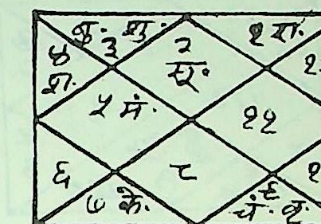
६३८



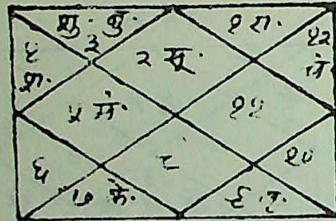
६३८

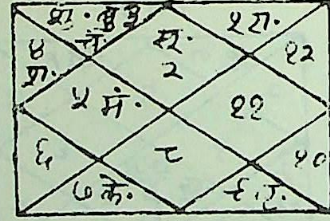


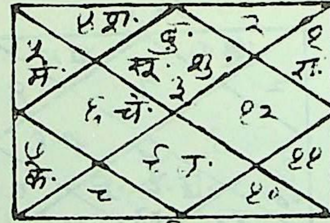
६३८

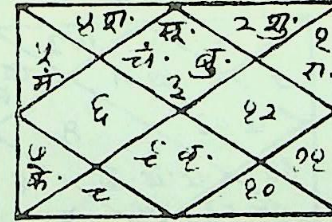


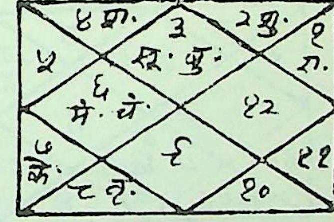
६३८

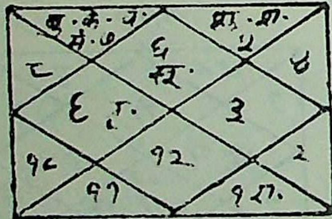

६३८

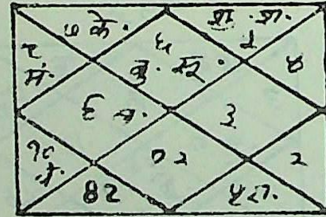

६३८

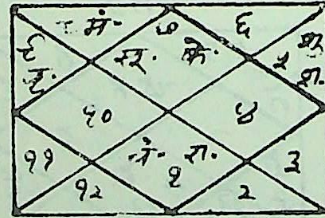

६३८

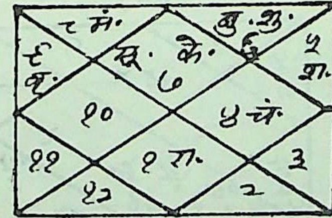

६३८

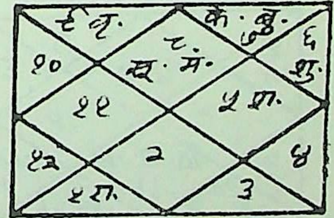

६३८


६४३

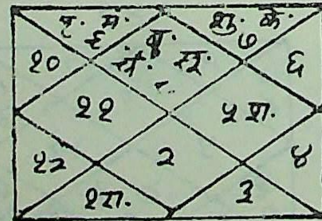

६४३

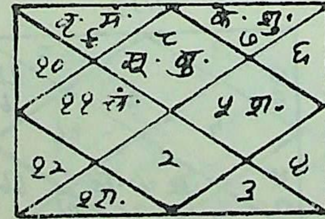

६४३

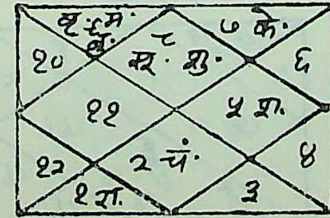

६४३

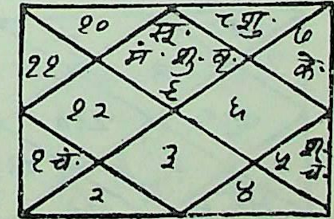

६४३


६४३

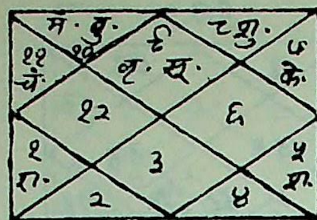

६४३

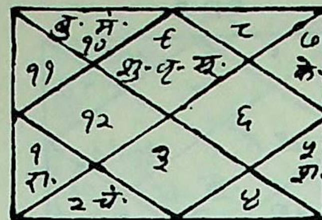

६४३

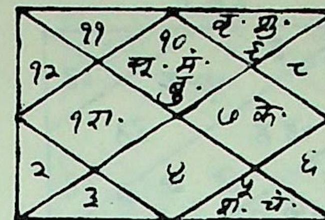

६४३

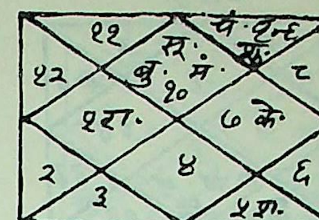

६४३


९४३

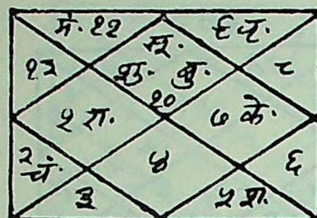

९४७

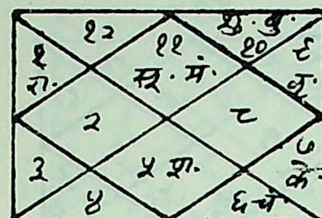

९४७

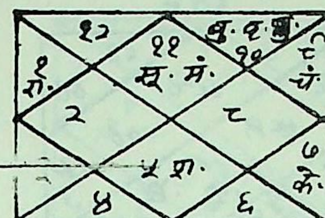

९४७

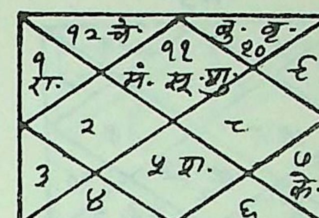

९४७

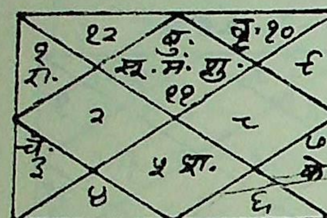

९४७

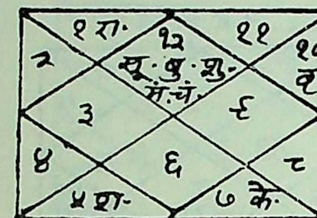

९४७

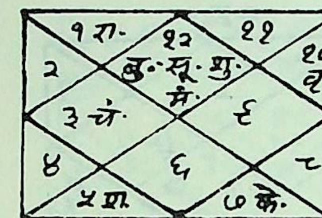

९४७

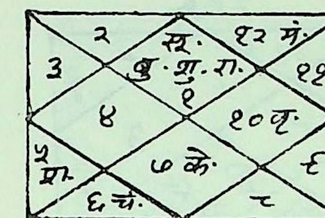

९५१

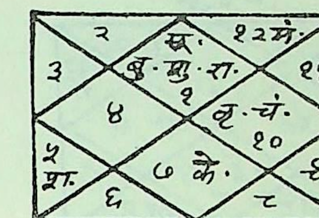

९५१

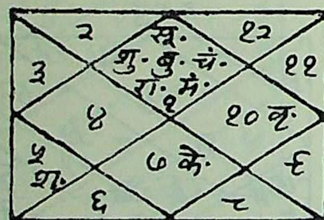

९५१


९५१

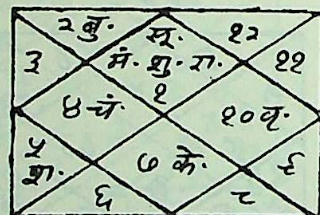

९५१


९५१

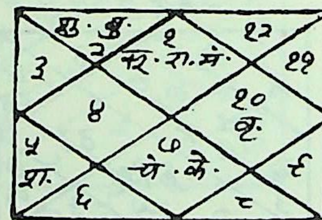

९५१



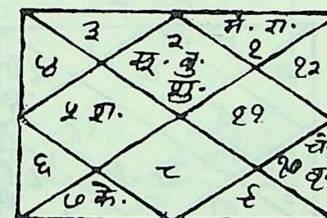
६५१



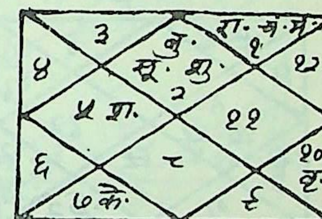
६५१



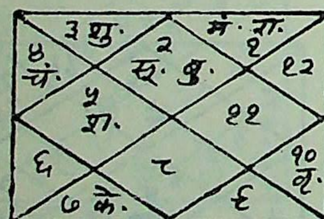
६५१



६५१



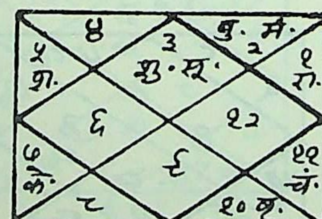
६५१



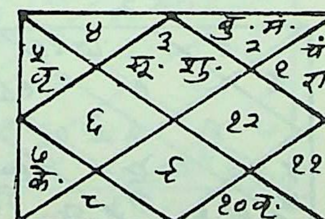
६५१



६५५



६५१



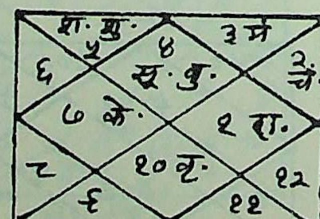
६५१



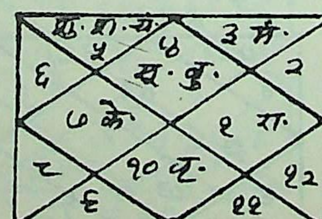
६५१



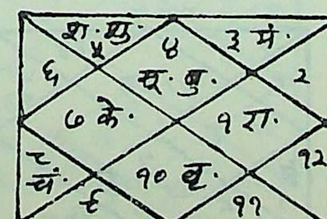
६५५



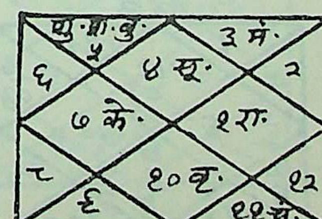
६५१



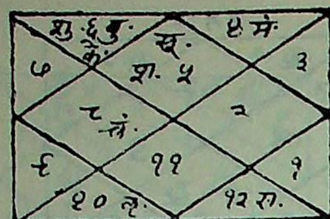
६५१



६५१

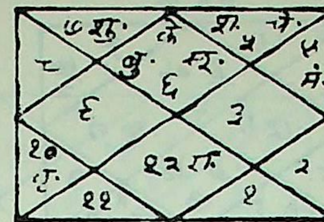


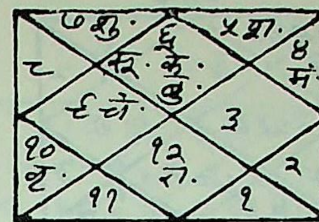
६५१

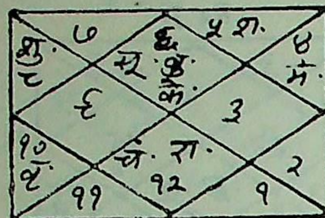

६५५

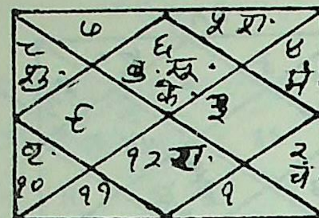

६५५

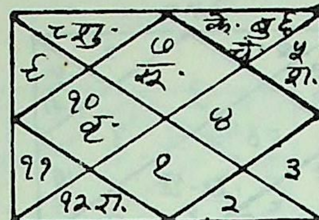

६५५

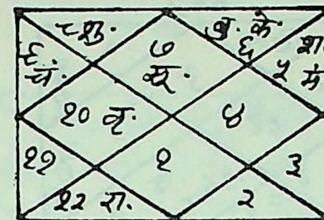

६५५


६५५

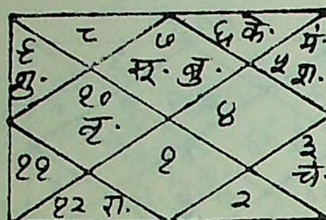

६५५

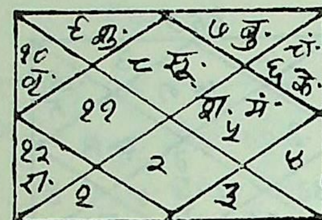

६५५

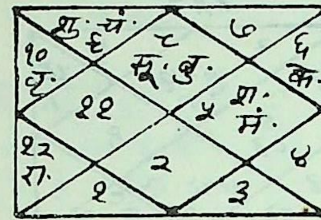

६५५

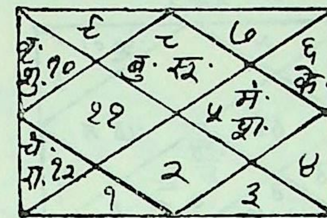

६५५

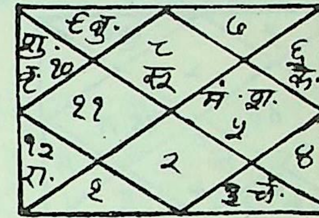

६५५

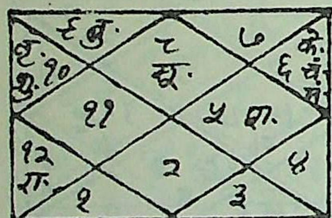

६५५


६५५

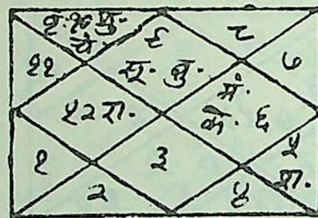

६५५


६५५

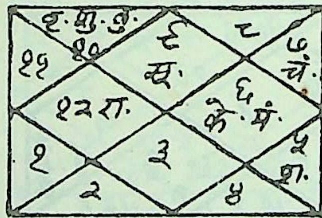

६५५



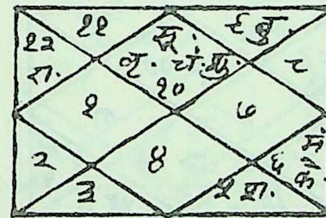
६५५



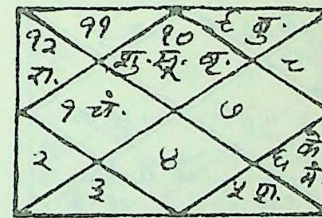
६५५



६५५



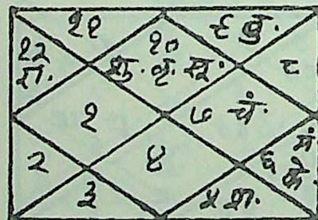
६५५



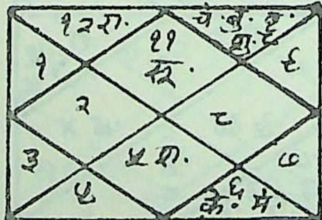
६५५



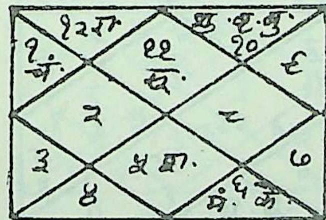
६५५



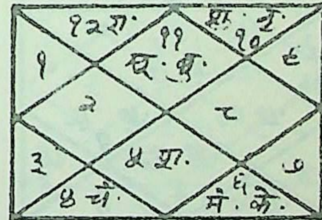
६५५



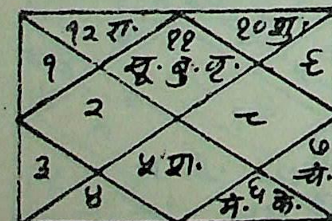
६५५



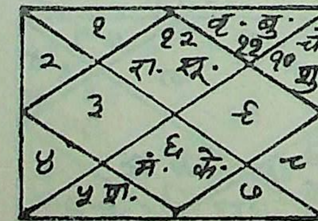
६५५



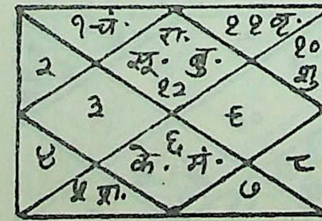
६५५



६६०



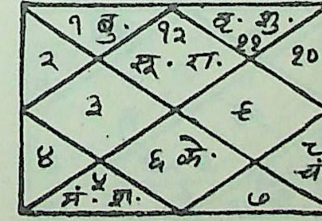
६६०



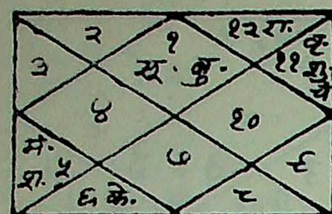
६६०



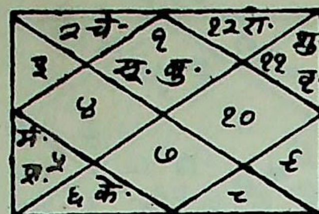
६६०



६६०



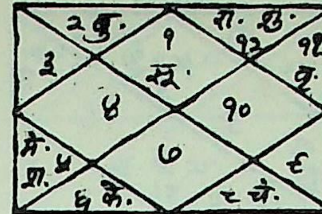
६६०



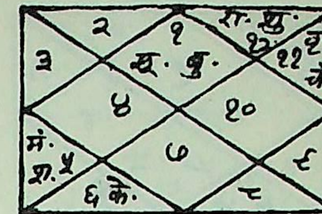
६६०



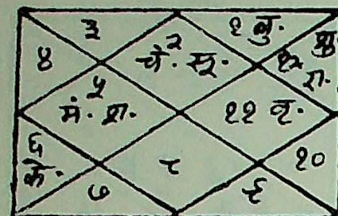
६६०



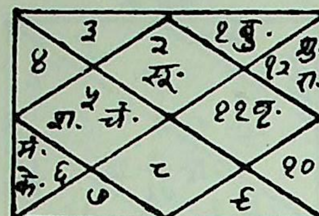
६६०



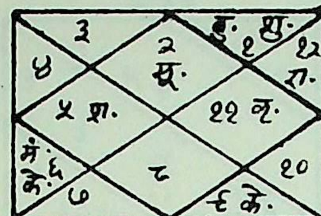
६६०



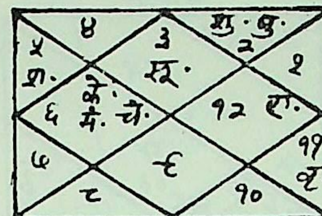
६६०



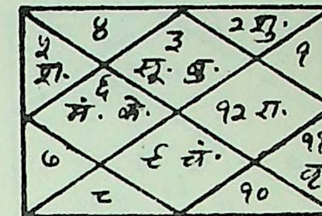
६६०



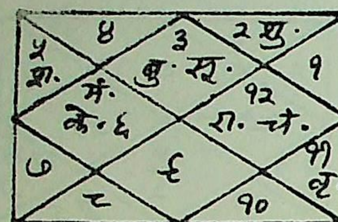
६६०



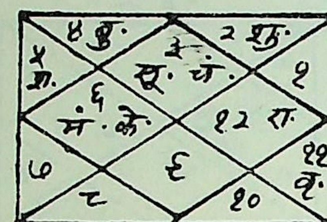
६६०



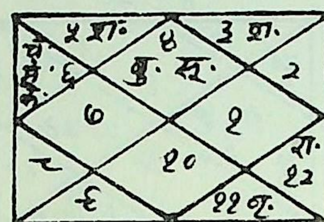
६६०



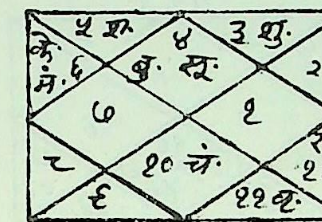
६६०



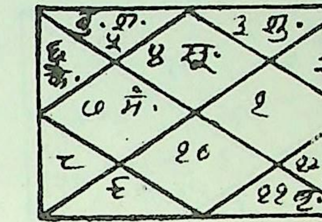
६६०



६६०



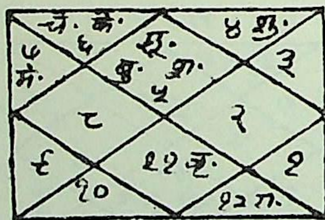
६६०



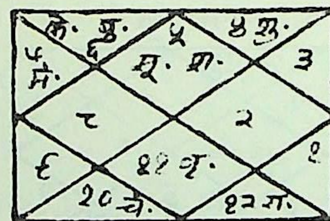
६६०



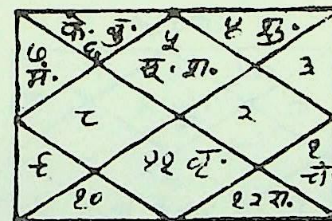
६६०



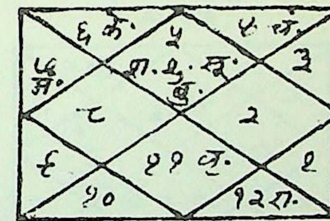
६६०



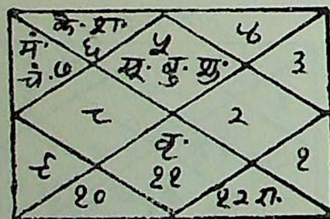
६६०



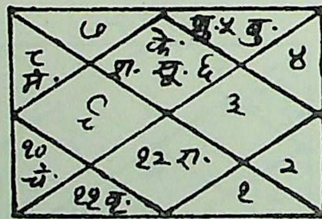
६६०



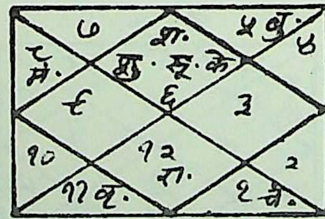
६६०



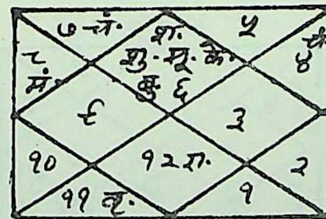
६६४



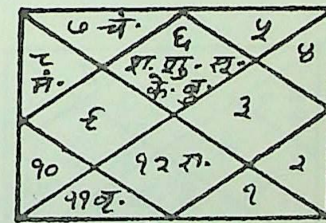
६६४



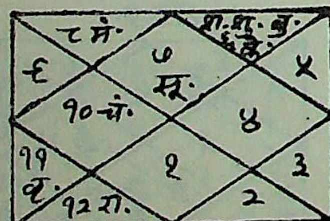
६६४



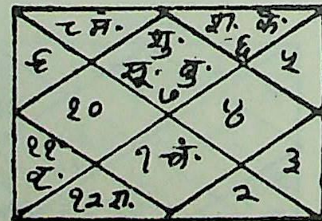
६६४



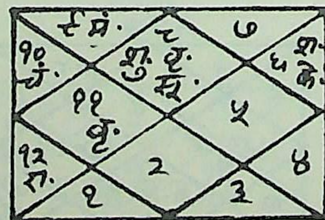
६६४



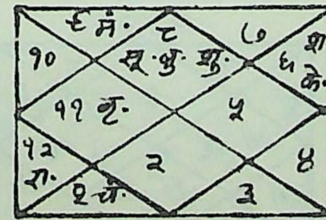
६६४



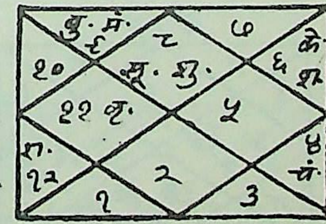
६६४



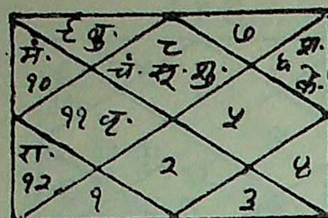
६६४



६६४



६६४



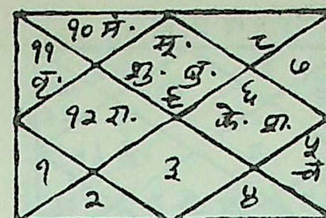
९६४



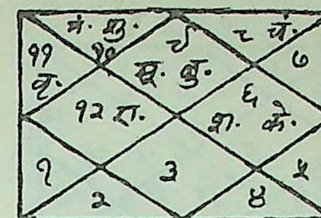
९६४



९६४



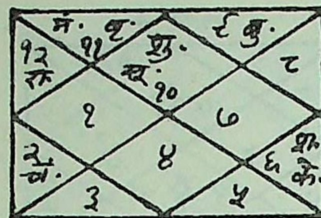
९६४



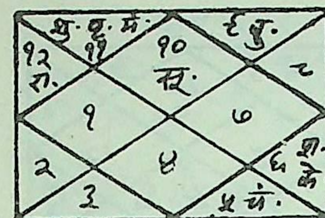
९६४



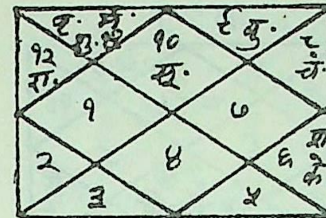
९६४



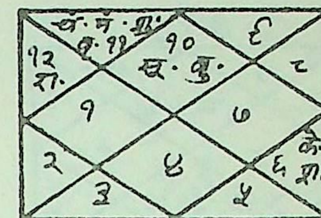
९६४



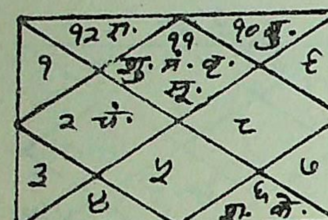
९६४



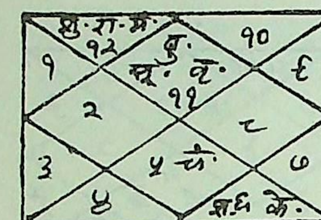
९६४



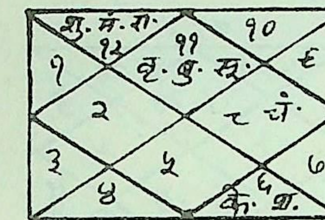
९६४



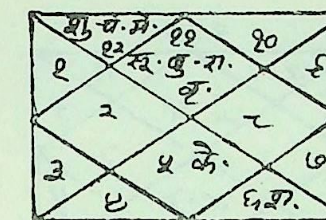
९६४



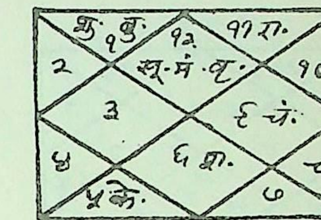
९६४



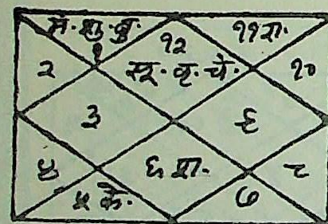
९६४



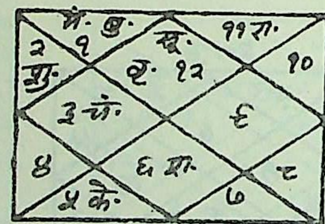
९६९



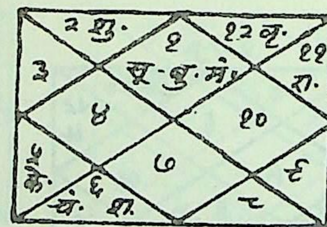
९७३



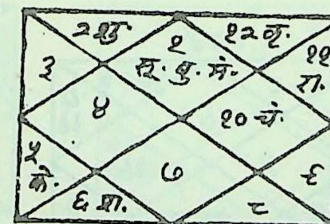
६७३



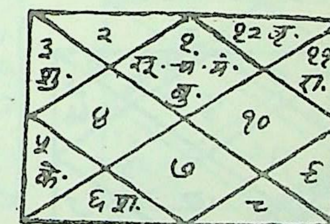
६७३



६७३



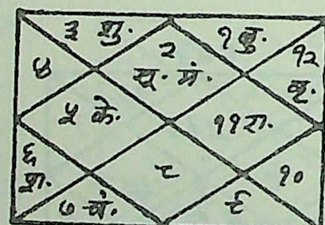
६७३



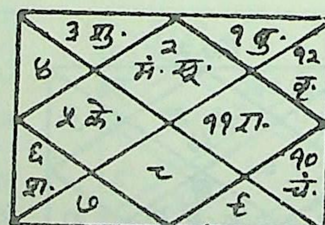
६७३



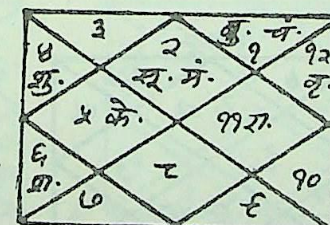
६७३



६७३



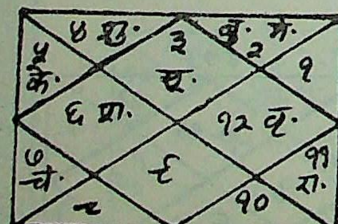
६७३



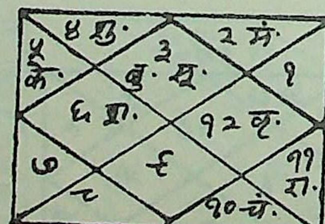
६७३



६७३



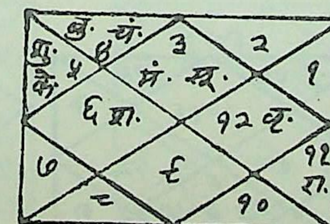
६७३



६७३



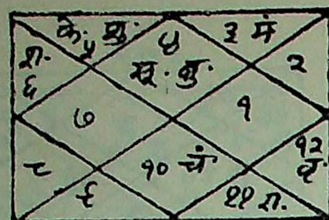
६७३

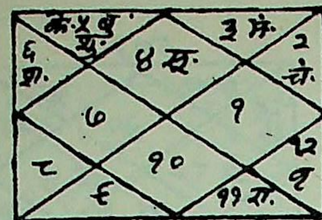


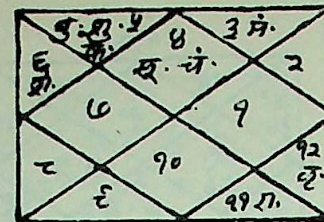
६७३

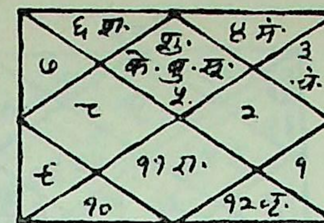


६७३


६७३

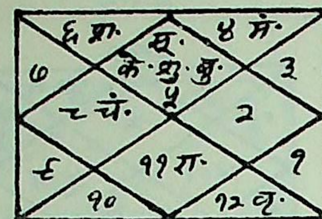

६७३

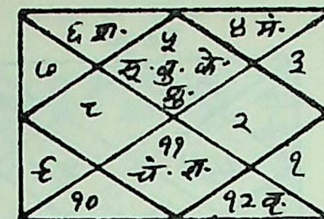

६७३

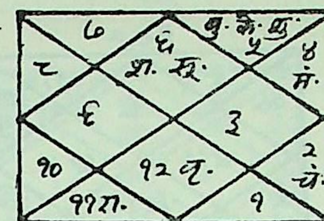

६७३

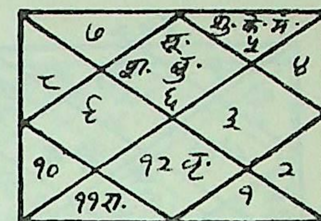

६७३

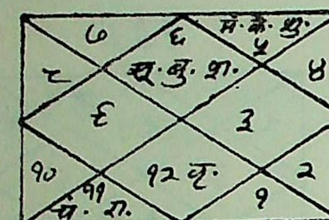

६७३

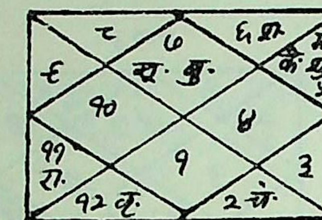

६७३

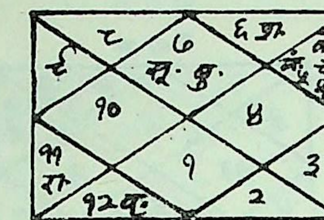

६७३

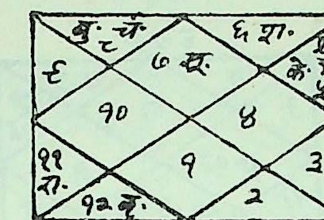

६७३

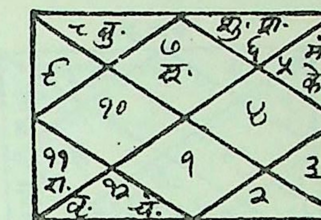

६७३

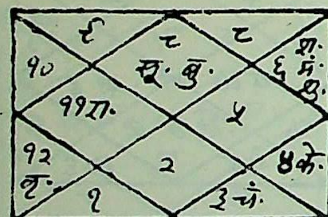

६७३

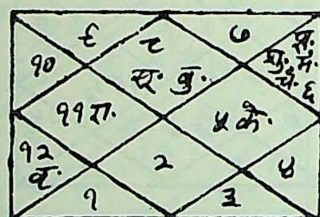

६७३

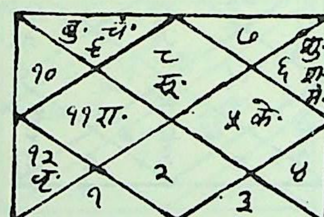

६७३

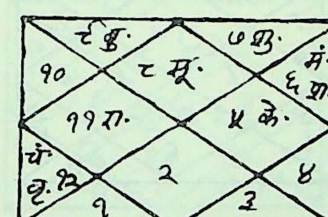

६७३

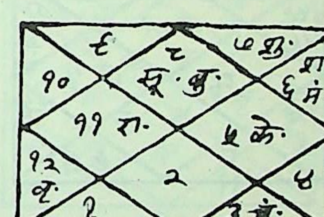

६७३


६७३

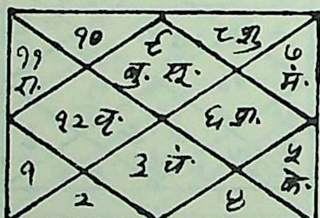

६७३

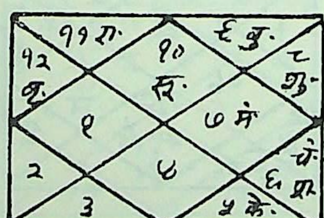

६७३

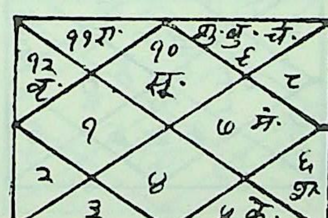

६७३

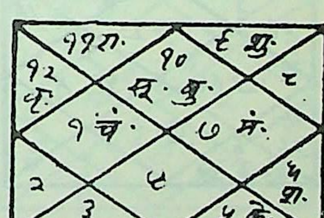

६७३

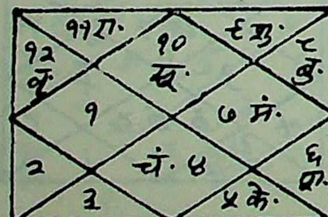

६७३

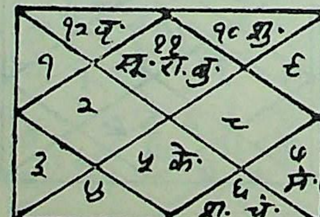

६७३

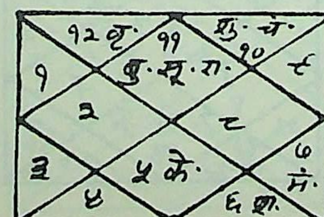

६७३


६७३

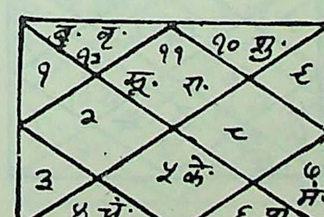

६७३

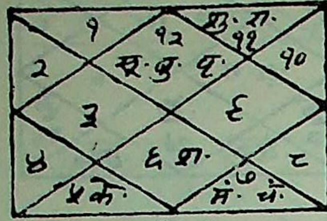

६७३


६७३


६७३


६७३

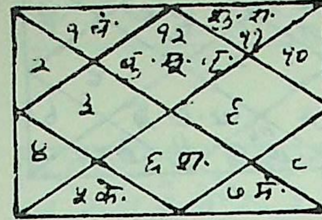

६७३



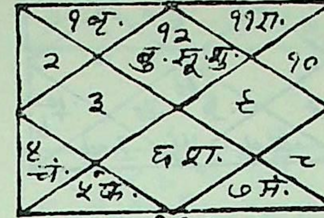
९७३



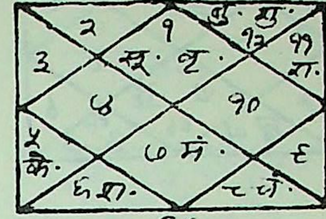
९७३



९७३



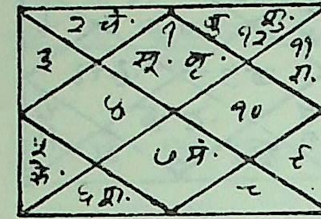
९७७



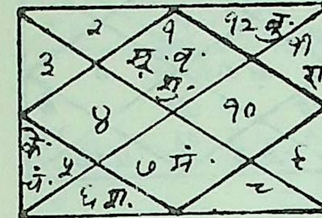
९७७



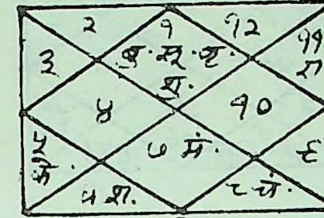
९७७



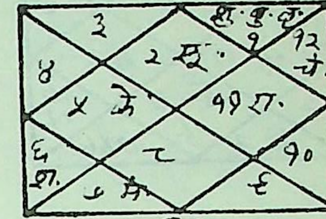
९७७



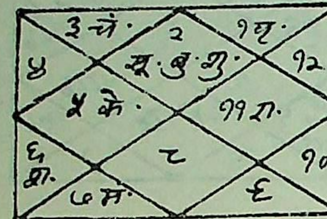
९७७



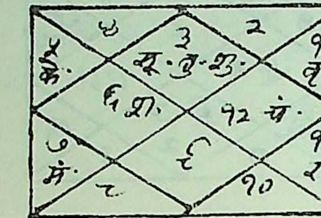
९७७



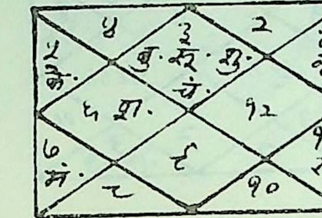
९७७



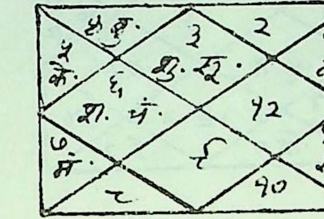
९७७



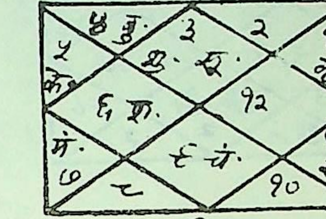
९७७



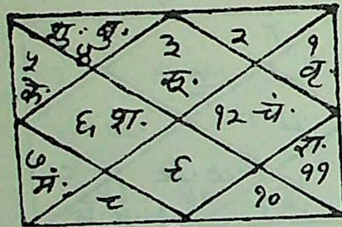
९७७

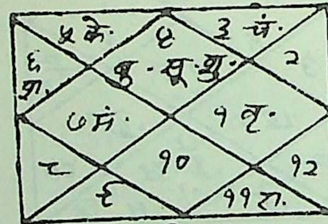


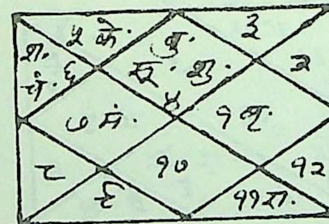
९७७

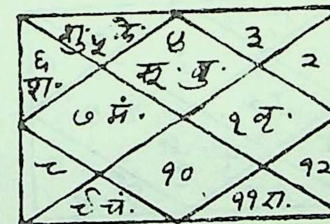


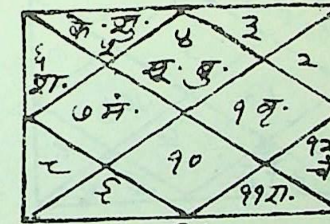
९७७


९७७

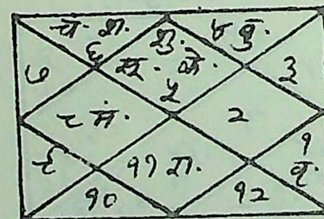

९७७

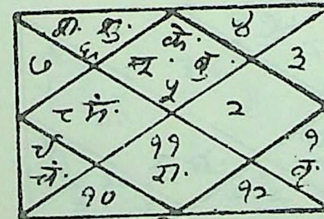

९७७

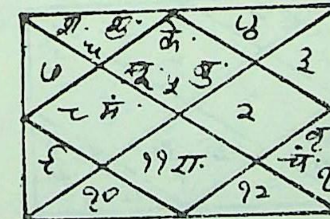

९७७

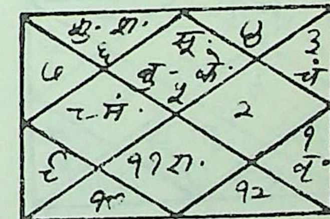

९७७

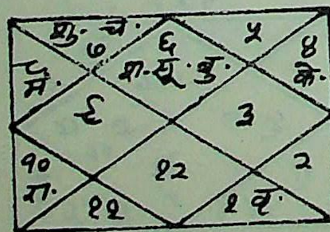

९७७


९७७

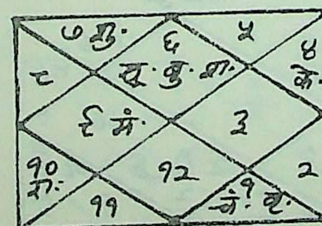

९७७

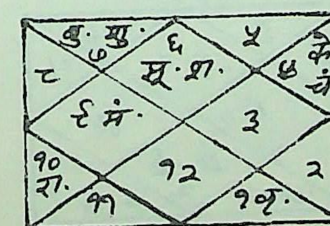

९७७

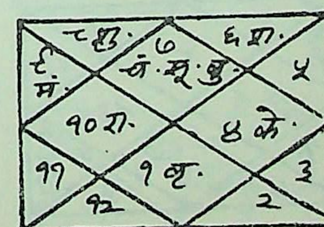

९७७

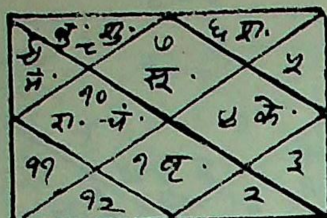

९८१


९८१


९८१

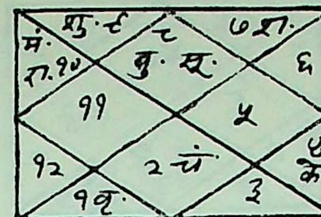

९८१

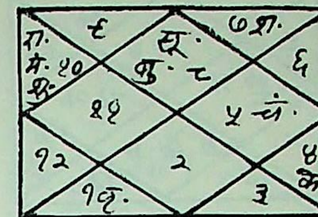

९८१


६८१

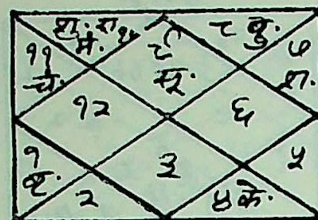

६८१

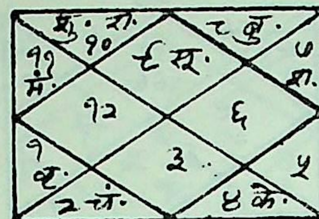

६८५

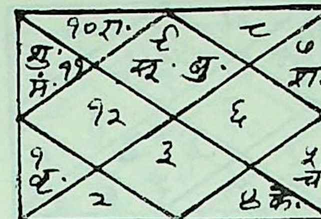

६८५

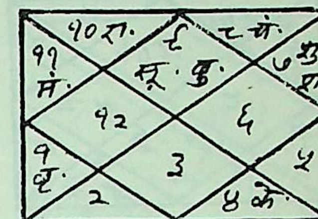

६८५

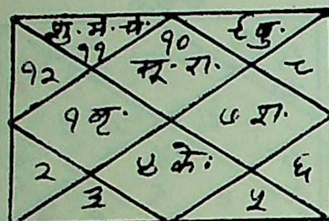

६८५

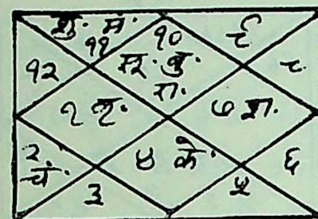

६८५

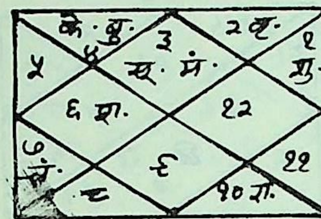

६८५

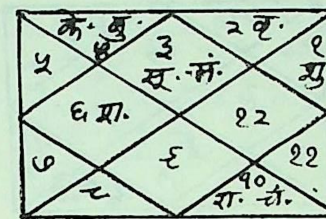

६८५

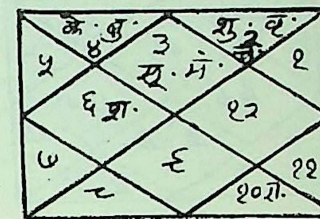

६८५

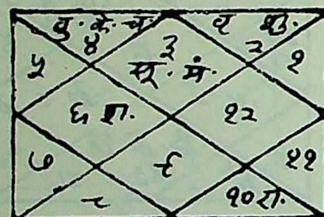

६८५

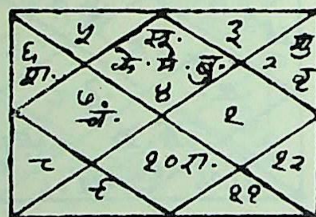

६८५

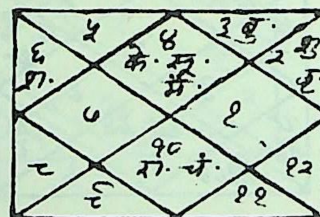

६८६

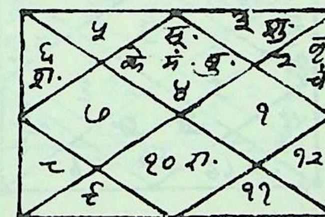

६८६

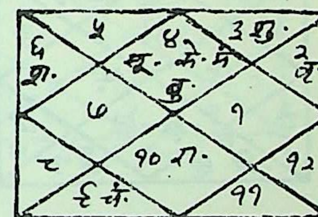

६८६

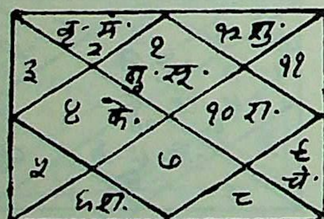

६८६

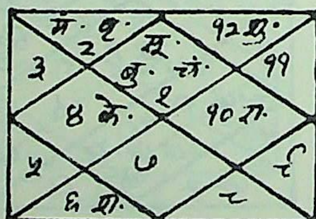

६८६

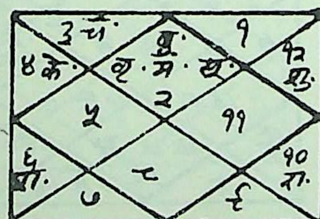

६८६


६८६

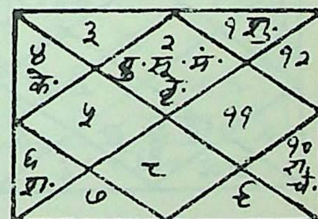

६८६

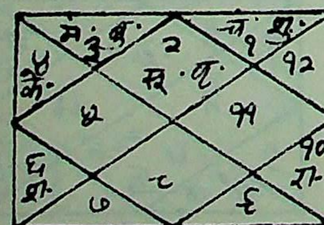

६८६

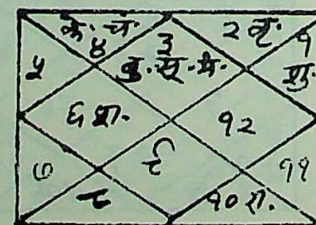

६८६

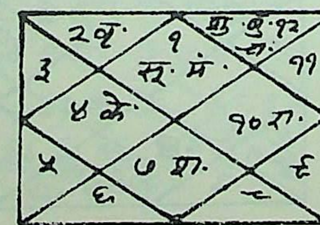

६८६

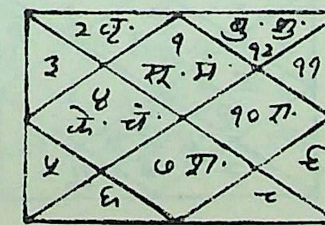

६८६

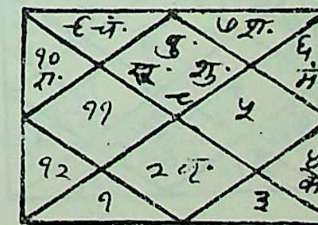

६८६

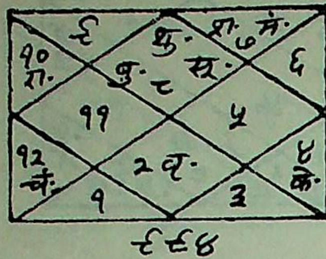

६८६


६८६

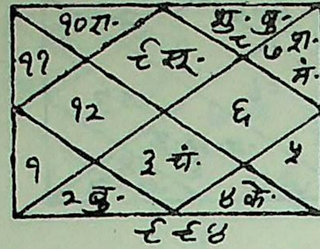

६६४


६६४

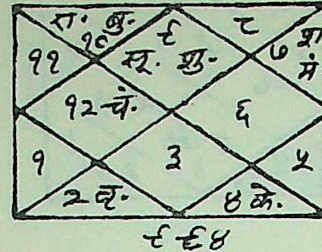

६६४



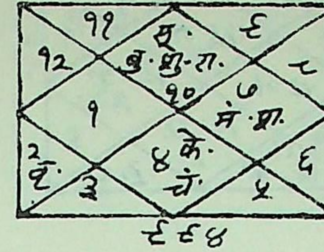
९९४



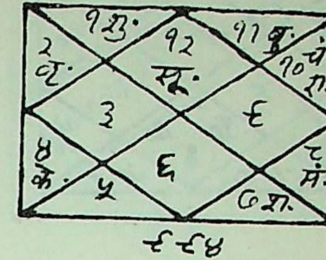
९९४



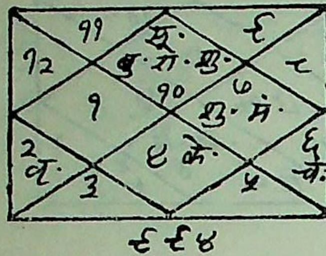
९९४



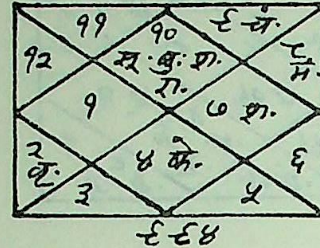
९९४



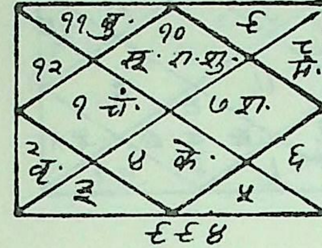
९९४



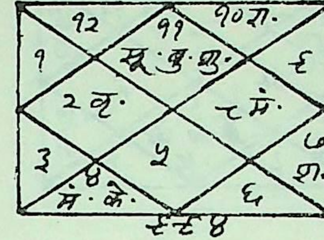
९९४



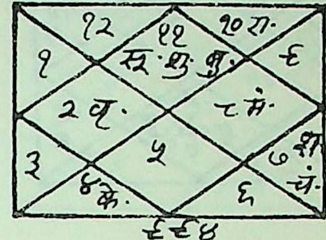
९९४



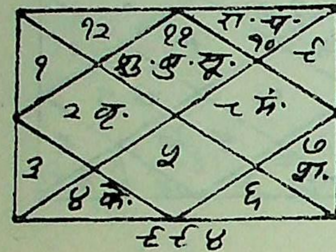
९९४



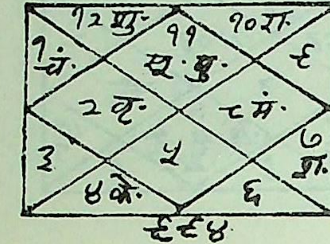
९९४



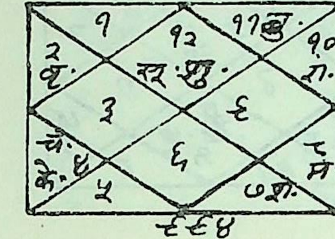
९९४



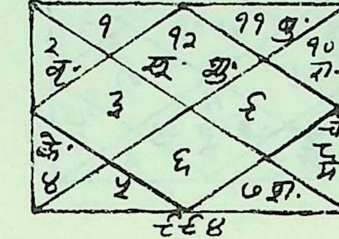
९९४



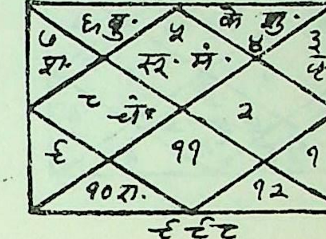
९९४



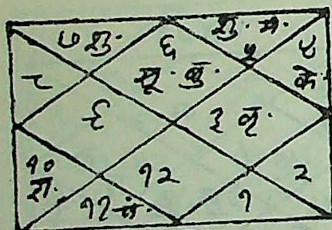
९९४



९९४



९९८



९९८

९९८

९९८

९९८

९९८

९९८

९९८

९९८

९९८

९९८

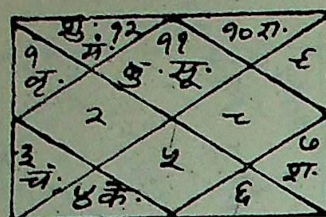
९९८

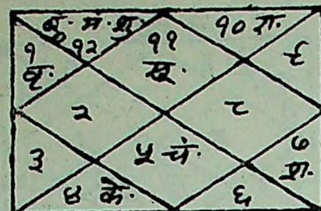
९९८

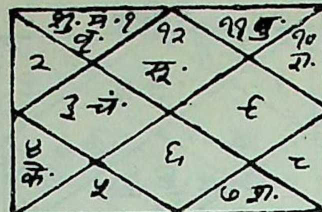
२००२

२००२

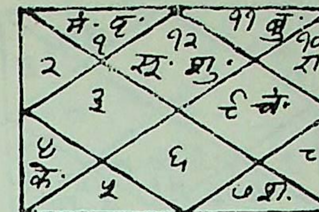
२००२


२००२


२००२


१००२

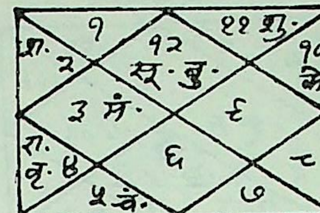

२००२

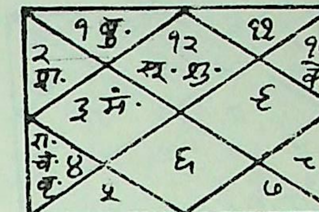

२००२

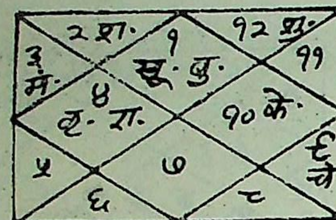

२००५


२००६

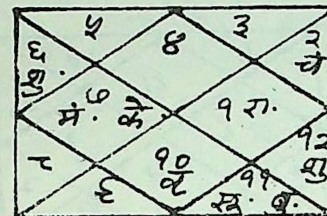

२०२०


२०२०

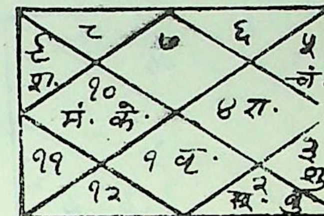

२०२०

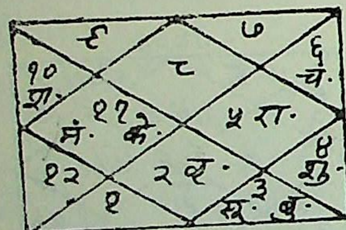

२०२०

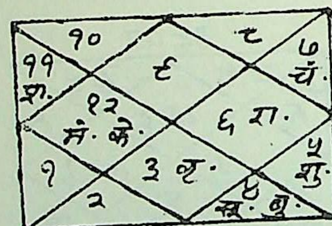

२०२२

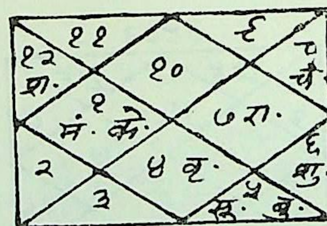

२०२२

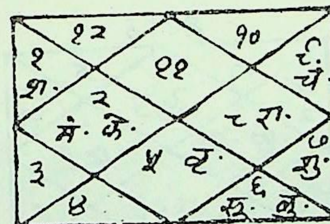

२०२२

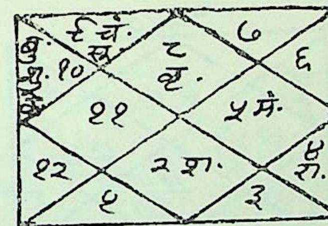

२०२२

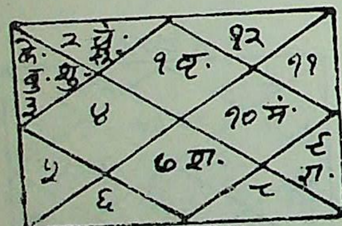

२०१२


२०१२

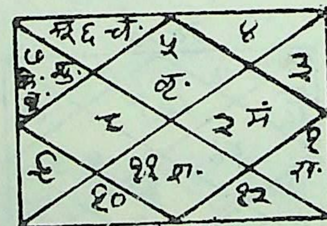

२०१२

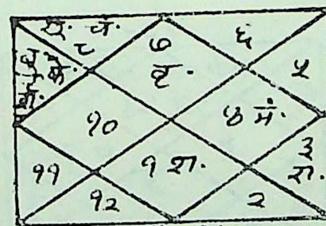

२०१२

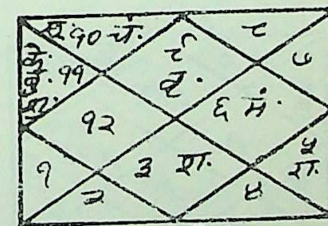

२०१५


२०१५

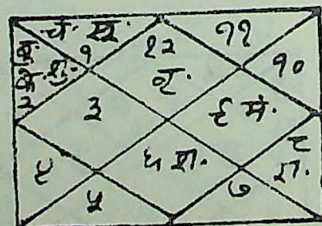

२०१५

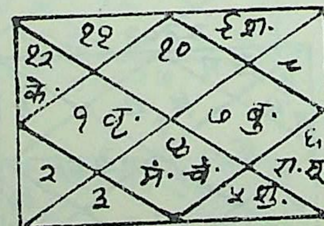

२०१५

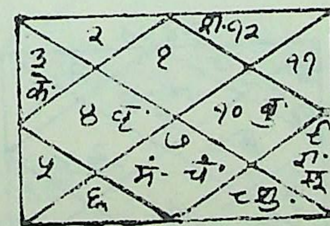

२०१५

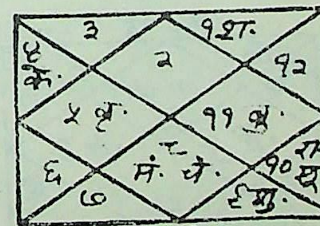

२०१५

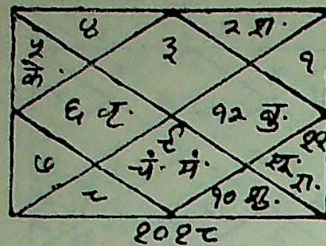

२०१५


२०१५

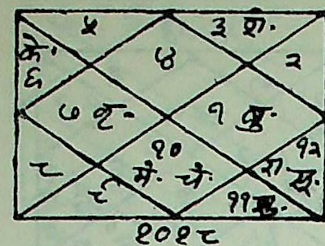

२०१८


२०१८


२०१८



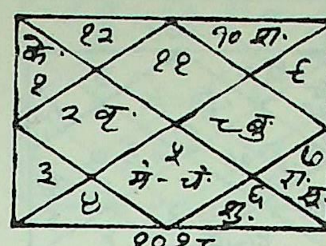
२०१८



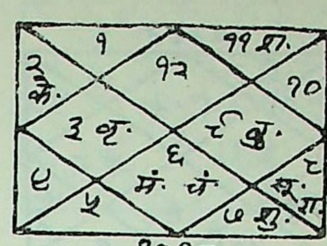
२०१८



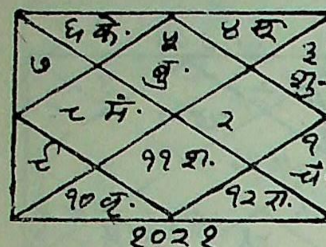
२०१८



२०१८



२०१८



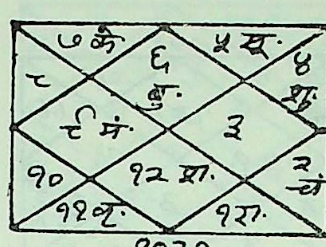
२०२१



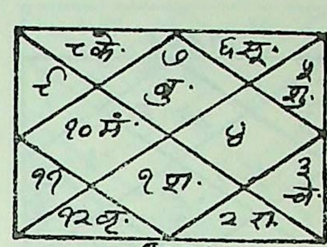
२०२१



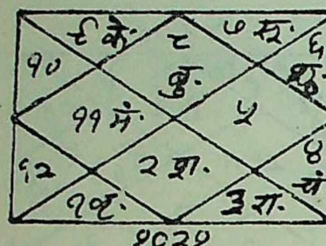
२०२१



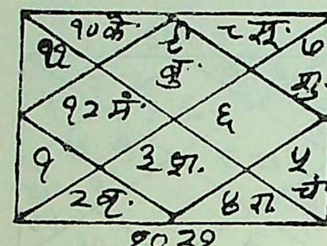
२०२१



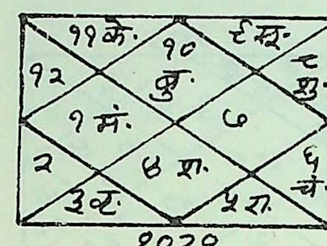
२०२१



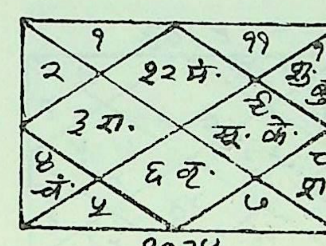
२०२१



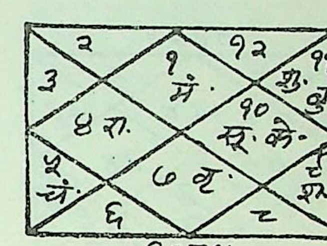
२०२१



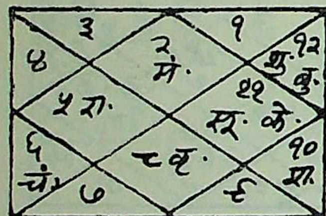
२०२१



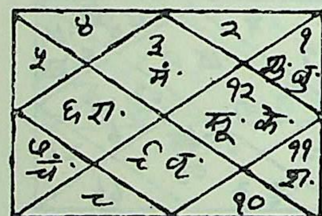
२०२४



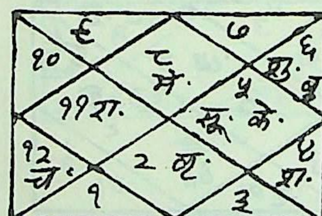
२०२४



२०२४



२०२४



२०२४



२०२४



२०२४



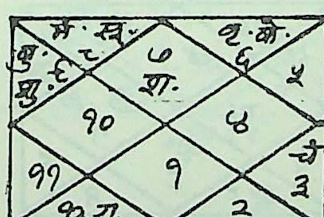
२०२४



२०२७



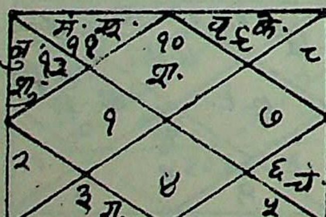
२०२७



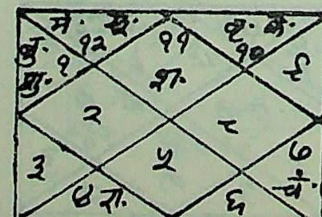
२०२७



२०२७



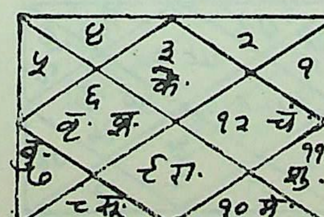
२०२७



२०२७



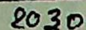
२०२७

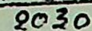


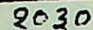
२०३०

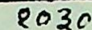


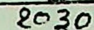
२०३०

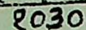

२०३०

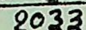

२०३०

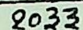

२०३०

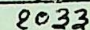

२०३०

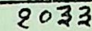

२०३०

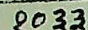

२०३०

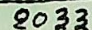

२०३३

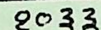

२०३३

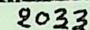

२०३३

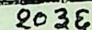

२०३३


२०३३

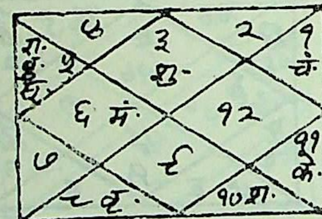

२०३३

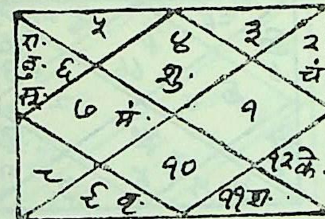

२०३३

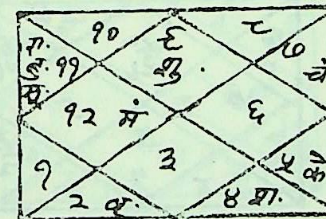

२०३३

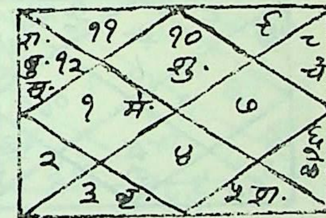

२०३६

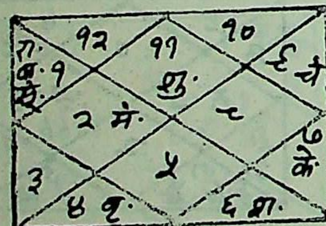

२०३६


२०३६

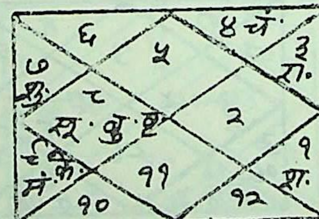

२०३६

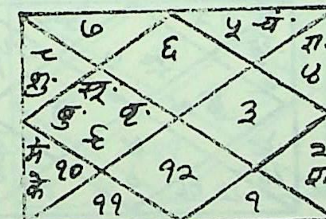

२०३६

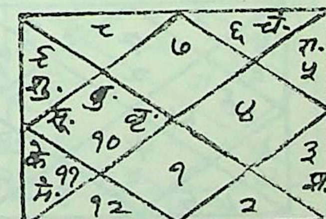

२०३६

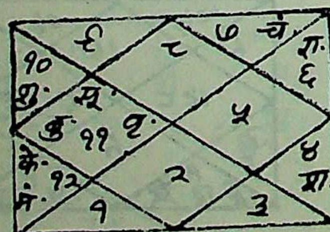

२०३६

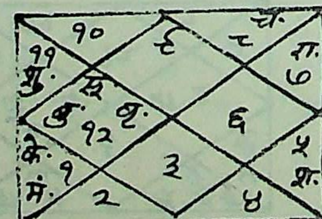

२०३६


२०३९


२०३९

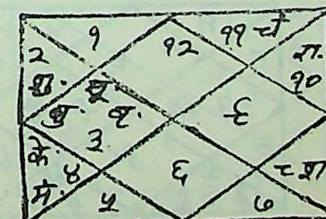

२०३९

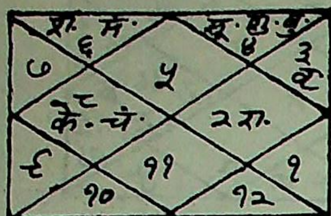

२०३९

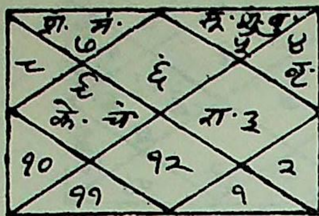

२०३९

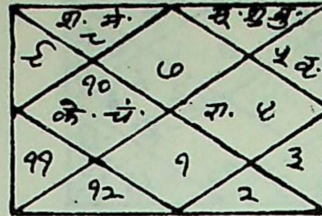

२०३९

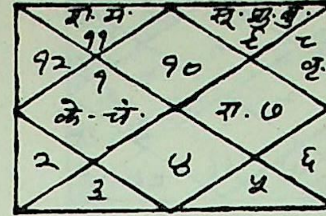

२०३९

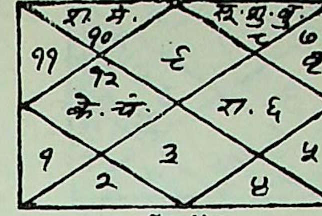

२०३९

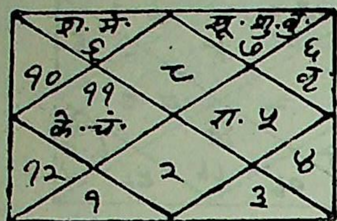

२०४२

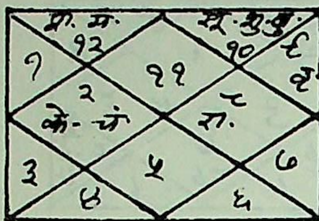

२०४२

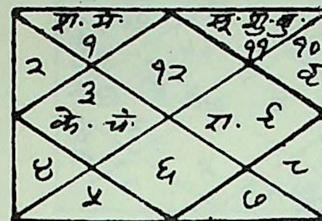

२०४२

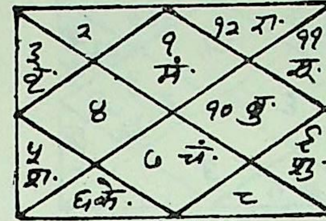

२०४२


२०४२


२०४२

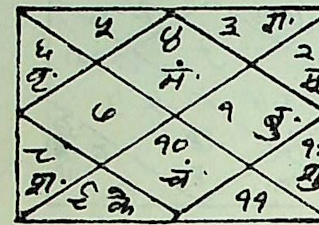

२०४२

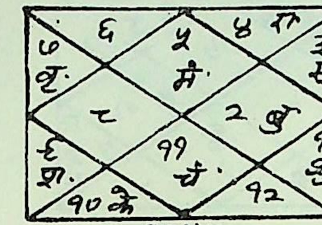

२०४२

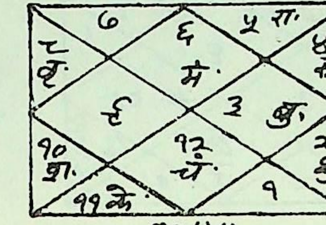

२०४५

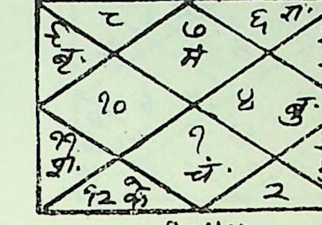

२०४५

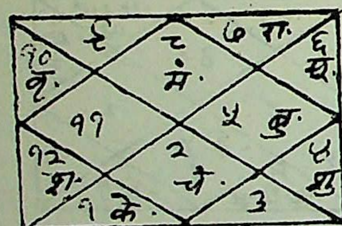

२०४५

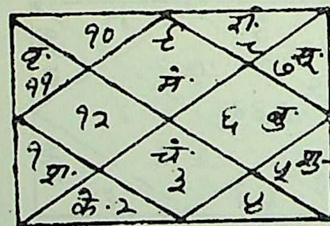

२०४५

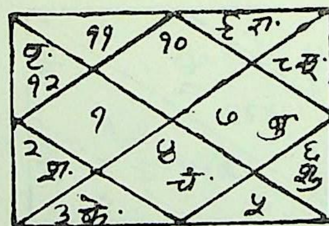

२०४५

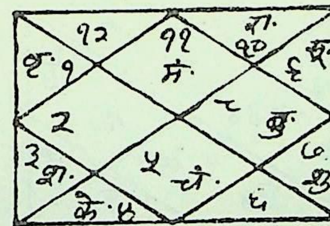

२०४५

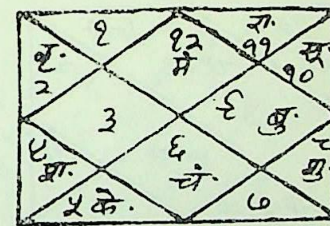

२०४५

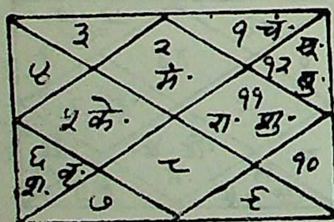

२०४५

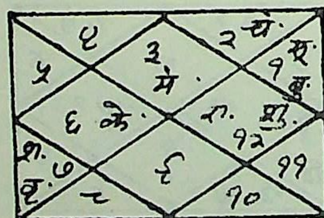

२०४५

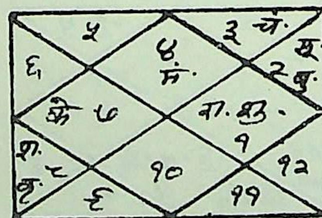

२०४५

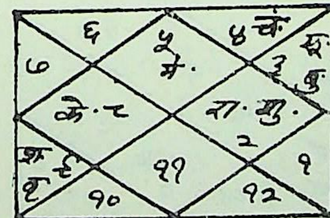

२०४५

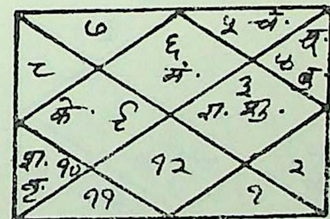

२०४५

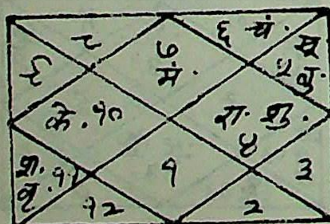

२०४८

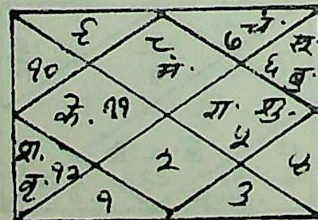

२०४८

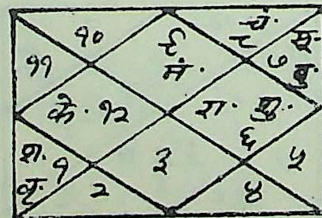

२०४८

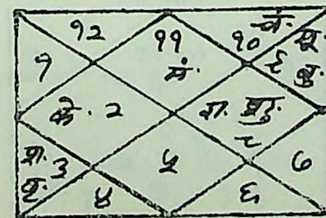

२०४८

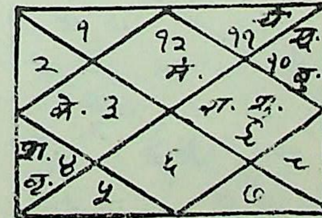

२०४८

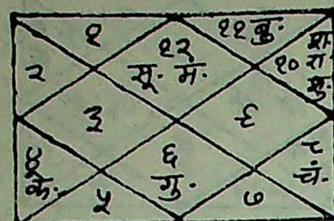

२०४८

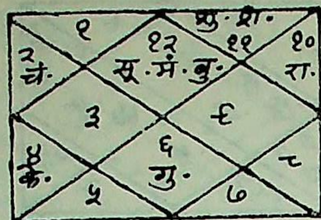

२०४८

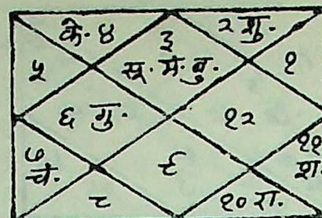

२०४८

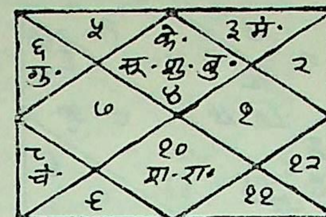

२०४८

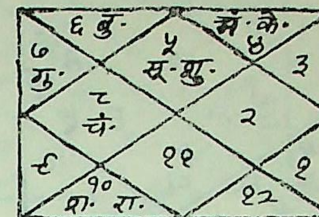

२०४८


२०५१

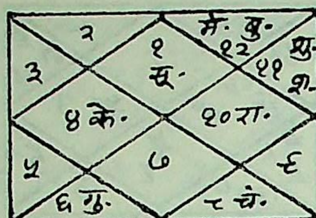

२०५३

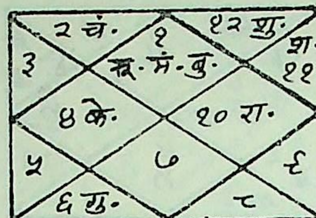

२०५४

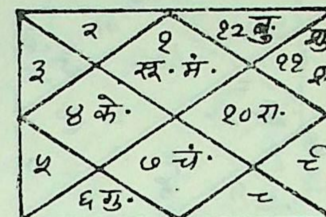

२०५६

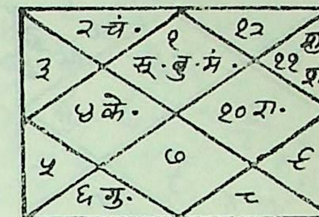

२०५७


२०५८

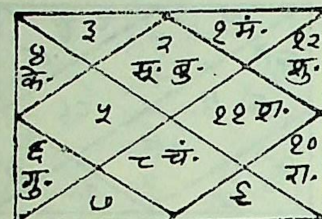

२०५९

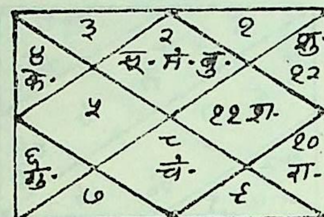

२०६०

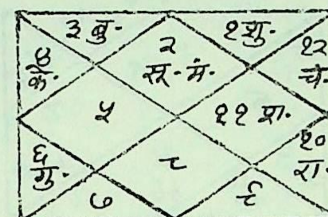

२०६२

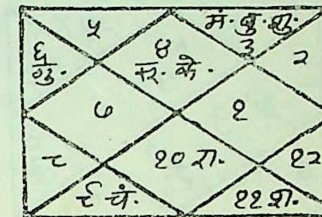

२०६४

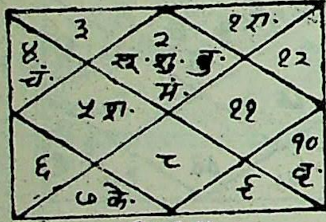

२०६६


२०६८

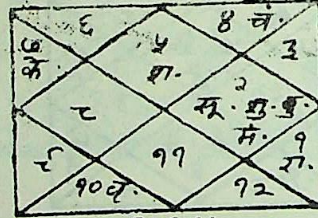

२०७०


२०७१

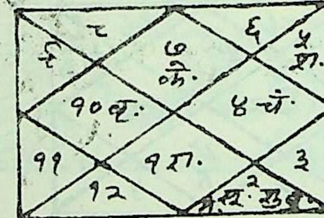

२०७२



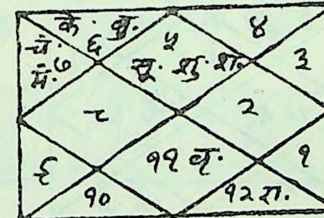
२०७४



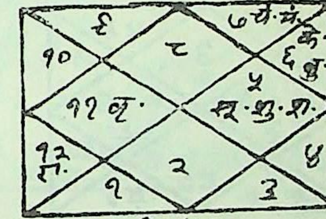
२०७४



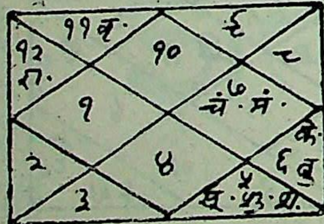
२०७४



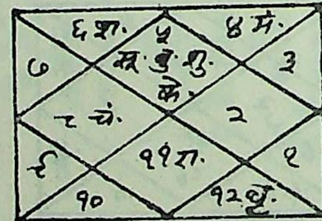
२०७७



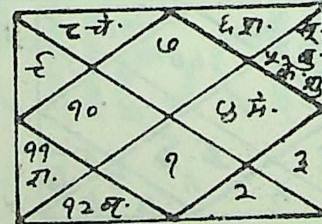
२०७७



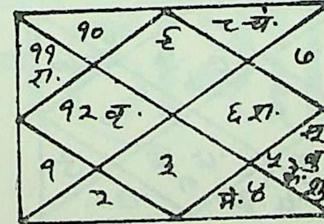
२०७७



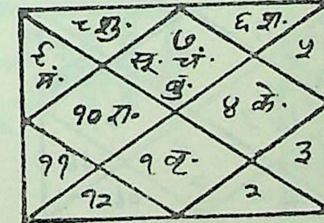
२०८०



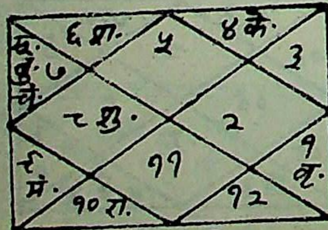
२०८०



२०८०



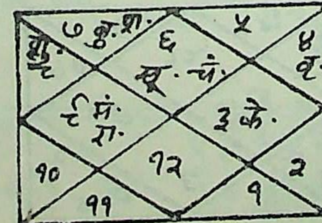
२०८३



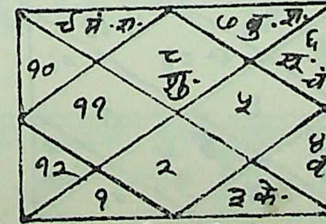
२०८३



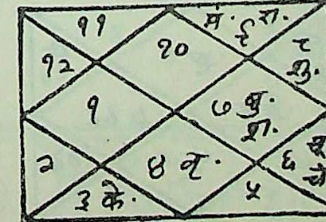
२०८३



२०८६



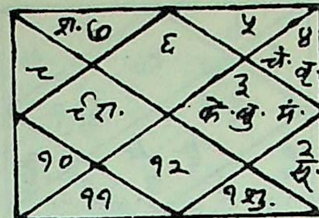
२०८६

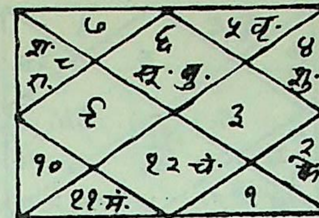


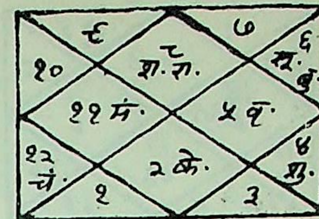
२०८६


१०८९


१०८९

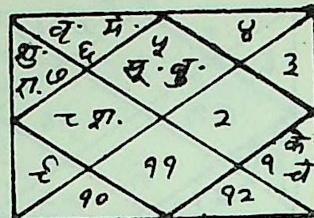

१०८९

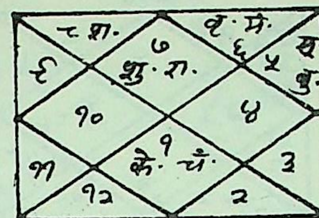

१०९२

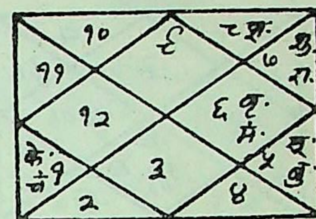

१०९२


१०९२

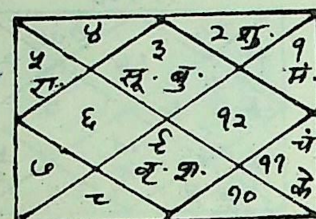

१०९२

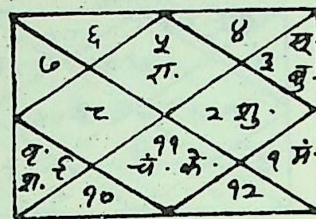

१०९५

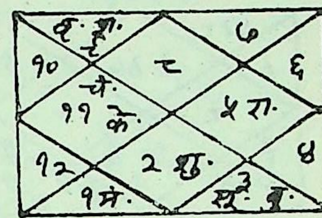

१०९५

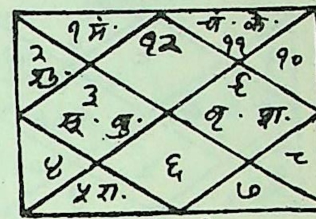

१०९५

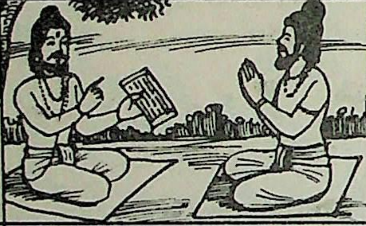
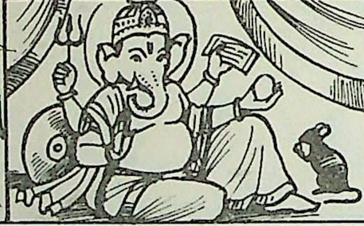
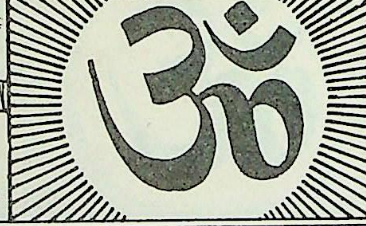

१०९५


१०९८


१०९८


१०९८


१०९८

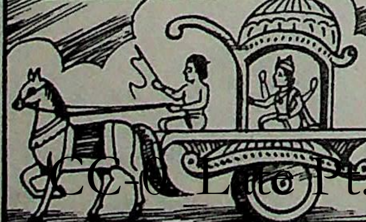
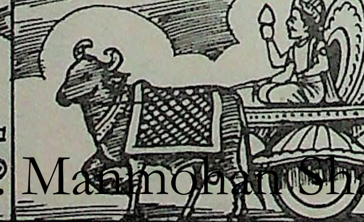


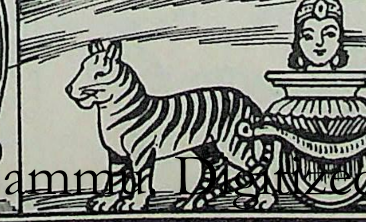



इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

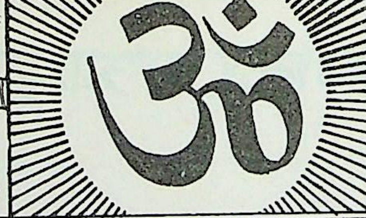
दशम खण्डः समाप्तः









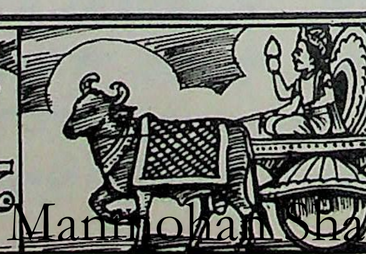
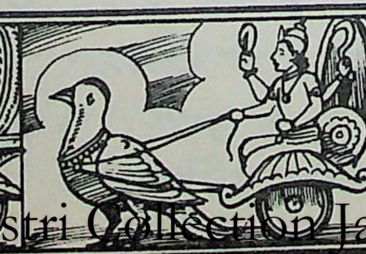
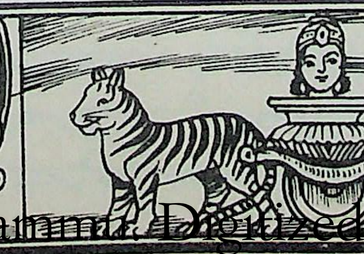
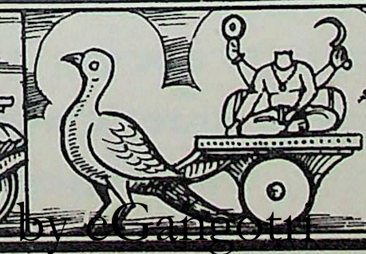



अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

एकादश खण्डः भाषा टीका सहितम्

जन्म कुण्डली फलादेशाध्यायः



ॐ

अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम् एकादश खण्ड:

इस खण्ड में कुण्डली खण्ड मे प्रदर्शित जन्मकुण्डलियों के फलादेश का वर्णन किया जाता है। कुण्डली खण्ड में कुण्डलियों के नीचे जो संख्या लिखी हुई है, उसी के अनुसार इस फलादेश को समझें।

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां यो जन्म प्राप्नोति जीवनं तस्य की दृशम्। उच्यतां कृपया तात सुराचार्यस्तदाऽब्रवीत्॥ भृगु उवाच॥ दानशीलोऽभिमानी च मातृपित्रोश्च वंचित:। अल्पायुश्चाल्पहृष्टोऽयं कवि: ज्योतिर्विदोप्यसौ॥ नीतिवान् पैतृकात् युक्त: धनाधीशः स्त्रिय: प्रिय:। पादपीडानुभावहृ: विवेकी धार्मिकस्तथा। स्वरूपोऽनुभवशीलश्च वपुसा मध्यमस्तथा। कटुसत्य वदश्चायात् व्ययो अस्याधिकं भवेत्॥ कृपणो ऋणकर्ता च बहिर्मुखश्च प्रभाववान्। शत्रुजिन्मृत्युरस्यास्ति गेहैय पत्नि सम्मुखे॥ अमावास्यां फाल्गुनस्य वर्षैकं षष्ठितमे तथा। उदरे रक्तयो: रुग्णा: भार्या अस्य भविष्यति॥ नवमं द्वादशं वर्ष एकविंशाति संख्यकम्। त्रयोत्रिंशत वर्षञ्च षड्पञ्चाशतं तथा॥ पंचचत्वारिंशाब्दञ्च इष्ट नाशन हेतवे। चेष्ठं सप्तदशं तद्वत् विंशाष्टविंश संख्यके॥ त्रिचत्वारिंशताब्दञ्च पञ्चपञ्चाशतं क्वचित्। विपदां नाशनायैव गुरुदेवार्चको भवेत्॥ गुरुमन्त्रञ्जपो स्वर्णे प्रवालरत्न

मावहेत् । म्लेच्छो ऽयं पूर्वकालस्य भवेद् वैशाखनन्दन :।। परं विवेकतश्चैव मनुष्योऽपि भविष्यति । अस्यां लग्ने द्वितीये वा षष्ठ सप्तमयो: यदि ।। चन्द्रो वा दशमे भूयात् क्रमशो ऽस्य भविष्यति । सुसन्तति: धनी रुग्ण: यात्रा मृत्यु: प्रतापवान् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे तात ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले- हे शुक्र ! यह जातक दानी, अभिमानी, मातृ-हीन, अल्पायु, पितृ-सुख-वंचित, अपूर्ण विद्यावान् , कवि, लेखक, ज्योतिषी, सफलवक्ता, नीतिज्ञ, स्त्री-प्रेमी, पैतृक-सम्पत्ति के लाभवाला, धनी, मानी, अधार्मिक, पाँवों में दर्द का अनुभव करने वाला, विवेकी, अनुभवी, चतुर, कटु-सत्यवादी, सुन्दर, स्वरूप, मध्यमक़द वाला तथा प्रतापी होगा । इसका व्यय आय से अधिक रहेगा । यह ऋण लेकर काम चलाने वाला, बाह्य-जीवन में प्रभावशाली, शत्रुजित् तथा कृपण होगा । इसकी मृत्यु किसी तीर्थ क्षेत्र में अथवा स्त्री के सामने अपने ही घर में, ६१ वर्ष की आयु में फाल्गुन कृष्णा ३० गुरुवार को होना संभव है। यह सन्तान की ओर से चिन्तित बना रहेगा । इसके जीवन के ८, १२, १८, ३३, ४५ और ५६वें वर्ष नेष्ट तथा १७, २०, २८, ४३ एवं ५५वें वर्ष श्रेष्ठ सिद्ध होंगे । विपत्ति के समय गुरु-मन्त्र का जप तथा गुरुदेव का पूजनाभिषेक एवं गुरु-स्तोत्र का अनुष्ठान हितकर रहेगा।

४ के.
३ सू. बु.
मं. शु. २
१
५
६ गु.
१२ चं.
७
९
११ श.
८
१० रा.

सोने की अँगूठी में मूँगा जड़वा कर धारण करना शुभ रहेगा । यह व्यक्ति पूर्व जन्म में म्लेच्छ था तथा अगले जन्म में गर्दभ योनि में जन्म लेगा , परन्तु उस योनि में भी विवेक बने रहने के कारण उससे अगली योनि में पुन: मनुष्य कुल में उत्पन्न होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, षष्ठ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः श्रेष्ठ सन्तान युक्त, धनी, सदैव रोगी, यात्रा में मृत्यु पाने वाला, प्रतापी तथा राजा द्वारा सम्मानित होगा ।। इति [illegible] ।।

ॐ ।। शुक्र उवाच ।। प्रश्नोऽयं भार्गवेणोक्तः पितोऽस्यास्ति च किं फलम् । महर्षिश्च तदा कर्ण्य भाविनं तस्य प्रोक्त-वान् ।। भृगु उवाच ।। जातकोऽयं स्वाभिमानी नयज्ञो बुद्धिमान् महान् । बान्धवानां प्रियो दानी कामुको मन्द कर्तृकः ।। धनपतिर्विवेकी च युक्तबन्धुः पितुः रिपुः । मातृभक्तः शरीरेण नातिदीर्घो सुरूपवान् ।। पीड़ितश्चैव पादाभ्यां स्वेच्छा-तथा जनैः । कटुसत्यादुपेक्ष्योऽयं पत्निश्चैनं प्रपत्स्यति ।। द्वाविंशतम वर्षायौ भयादस्य च दुःखिता । विद्योपजीव्य सौ प्राणी: धार्मिकोऽपि विडम्बितः ।। राज्याभियोग कालेऽयं चातुर्येण पृथग् भवेत् । तिस्रः कन्याः सुता : न्यूना : भक्ता वास्य भविष्यतः ।। चतुर्थ्यां शुक्लपक्षस्य वैशाखे मृत्युमाप्नुयात् । असीतितमवर्षायौ शिरो वा नेत्र पीड़या ।। प्रथमैकादशे वर्षे चतुर्विंशाष्ट सप्ततौ । नैक पञ्चाशताब्दञ्च षड्त्रिंशत तमं क्वचित् । द्विसप्ततितमञ्चास्मै नैवेष्टाय कथञ्चनम् । द्वाविंश षोडषं वर्षं चतुःत्रिंशत संख्यकम् ।। चत्वारिंशत संख्याया: षड्पञ्चाशतं तथा । षड्षष्ठितमञ्चाब्दं त्रिसप्तत्याब्दमुत्तमम् ।। हीरकं रजताङ्गुष्ठ्यां धारयेत् पूजनं तथा । कुर्यात् गणपतेरस्यां चन्द्रः स्याद्यपि पञ्चमे ।। द्वितीये दशमे स्थाने षष्ठ द्वादशयोरपि । स्त्रियः प्रियो धनाढ्यश्च राजसेवी सशत्रुकः ।। कर्मशी-लो व्ययी वास्यात् द्विजोऽयं पूर्वजन्मनः । ब्राह्मण एव पुनर्भूत्वा जन्मप्राप्स्यसि निश्चितम् ।।

भाव	ग्रह
३	सू. बु.
२	मं.
१	शु.
१२	
११	श.
१०	रा.
९	
८	
७	चं.
६	ध. गु.
५	
४	के.

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक स्वाभिमानी, बुद्धिमान्, कुशलनीतिज्ञ, विवेकी, भाइयों का प्रिय, दानी, भोगी, धनी, कामी, धीरे काम करनेवाला, शत्रुजित्, बन्धु-बान्धवों से युक्त, पिता का विरोधी, मातृ-भक्त, भाग्यशाली, नाटे कद वाला, गेहुंएं रंग का, पाँवों में पीड़ा का अनुभव करने वाला तथा मनमौजी होता है। अप्रिय-सत्य कहने के कारण यह लोक में अपवाद भी प्राप्त करेगा। ... की ... ले ... । इसकी पत्नी जीवनभर इससे दुःखी रहेगी तथा

दुःखी बनी रहेगी। यह मनुष्य विद्योपजीवी, धार्मिक, परन्तु विडम्बना पूर्ण स्थिति में बना रहेगा। राजकोप-कलंक लगने पर उस स्थिति को अपनी चतुराई से पार कर लेगा। इसकी सन्तानों में पुत्रों की संख्या कम होगी। कन्यायें तीन होंगी। इसके दो पुत्र सेवा करेंगे। नेत्र-पीड़ा अथवा अतिसार रोग से, ८० वर्ष की आयु में, अपने घर पर ही, वैशाख शुक्ला ४ बुधवार को इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन में १, ११, २४, ३६, ४९, ७२ तथा ७८वें वर्ष अशुभ तथा १६, २२, ३४, ४०, ५६, ६६ तथा ७३वें वर्ष शुभ सिद्ध होंगे। विपत्ति अथवा अरिष्ट के समय चाँदी की अँगूठी में हीरा धारण करना तथा गणपति का पूजन करना लाभप्रद रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, षष्ठ, दशम तथा द्वादश भाव में हो तो यह मनुष्य क्रमशः धनवान्, स्त्री-प्रेमी, शत्रुओं को पाले वाला, कर्मनिष्ठ, राज्याश्रयी तथा खर्चीला होता है। यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण कुल में ही उत्पन्न होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ शुक्राचार्योऽब्रवीत् तात अस्याञ्जातस्य जीवने। किं भविष्यति मे ब्रूहि भृगुस्तामिदमुक्तवान्॥ भृगुरुवाच॥ अतिप्रताप युक्तोऽसौ वपुसाऽपि तथैव च। सुरूपो गौरवर्णश्च पाकपटुश्च विवेकवान्॥ विचिन्त्यैव वदेद्वाणीं सदा शत्रुं विजेष्यति। प्रबलो राजद्वारेऽपि न्यूनापत्यः पराक्रमी॥ पत्न्याभिन्नोऽपि भोगी स परस्त्रीभगप्रीतिवान्। स्वार्जितेन प्रसन्नात्मा निष्णातः ज्योतिषामपि॥ विद्वान् गणित विद्यायाः दयाशील व्ययेपटुः। अग्रेऽपि बलसम्पन्नः गुह्यनय प्रवर्तकः॥ पण्डिते व्यवहारज्ञः स्वाभिमानी तथैव स। शत्रुहन्ता परं रुग्णः वायुना केनचित्सदा॥ महतां संगतश्चापं लावण्ये सरुचिर्भवेत्। पुत्रत्रयञ्च कन्यैका सरलोऽपि प्रदर्शकः॥ द्विसप्ततितमे वर्षे ज्येष्ठस्य प्रथमे दिने। मृत्युरस्य तथैवास्मै हानिदं वर्षमीदृशम्॥ तृतीयं त्रि चतुस्त्रिंश एकादशाष्टषष्ठिके। एकविंशं तथा पञ्चं चत्वारिंशत संख्यकम्॥ उत्तमानि च वर्षाणि सप्तमं शोडषं क्वचित्। चतुर्विंशञ्च षड्त्रिंशं द्विपञ्चाशत मात्रकम्॥ पञ्चपञ्चाशतं तद्वत द्विषष्ठितम संख्यकम्। तीर्थे सर्पस्यदंशाद्वा शस्त्राघातेन मृत्युस्यात्॥ गोमेद धारणञ्चैवं वासुदेव

स्य यांत्रिकम् । अनुष्ठानं विपद्घातं शूद्रः पूर्वस्य कालिकः ॥ पिशाचश्चाग्रिमे भूयात् अस्याञ्चन्द्रो भवेद्यदि । सप्तमे दशमे लग्ने चतुर्थे वास्तु भाविनम् ॥ शान्तः सत्कर्म कुर्याच्च मातृहीनस्तथा स्त्रियः । यास्येत् राज्याधिकारत्वं फलमेतन्नु संमतम् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले – हे वत्स! इस जातक का व्यक्तित्व अत्यन्त प्रतापी होगा । यह दीर्घ तथा पुष्ट शरीर वाला, गौरवर्ण, सुन्दर, वाक्पटु, विवेकी, सोच-समझ कर बोलने वाला, शत्रुजयी, विचार-दृढ, उत्साही, अल्पसन्ततिवान्, पराक्रमी, अपनी स्त्री से अलग रहने वाला, पर-स्त्री भोगी,

६ गु. | ५ सू. | बु. के. शु. मं. ४ | ३ | ७ | ८ | २ चं. | ९ | ११ | १ | १० श. रा. | १२

स्वोपार्जित धन से प्रसन्न, ऐश्वर्यशाली, भोगी, ज्योतिष तथा कर्मकाण्ड में निष्णात, गणितज्ञ, दयालु, तत्परता से धन खर्च करने वाला, स्वस्थ, बलिष्ठ, उग्रकर्मी, गुप्तयोजनाओं का निर्माता, व्यवहार-कुशल, स्वाभिमानी तथा पण्डित होगा । इसके समक्ष शत्रु नहीं ठहर सकेंगे । यह वायु-विकार ग्रस्त बना रहेगा । बड़े लोगों से सम्पर्क रखने वाला, नमकीन वस्तुओं का प्रेमी तथा ठाठ-बाट से रहने वाला होगा । इसके एक पुत्री तथा तीन पुत्रों का योग है । केवल एक ही पुत्र इसकी सेवा करेगा । परन्तु यह उस पुत्र की सदैव निन्दा ही करता रहेगा । इसकी मृत्यु ज्येष्ठ कृष्णा १ सोमवार को ७२ वर्ष की आयु में, सर्पदंश अथवा शस्त्राघात द्वारा किसी तीर्थ स्थान में होना संभव है । इसके जीवन के ३, ११, २१, ३४, ४५ तथा ६८ वें वर्ष हानिकारक तथा ७, १६, २४, ३६, ५२, ५५ तथा ६२ वें वर्ष लाभप्रद रहेंगे । विपत्ति निवारणार्थ गोमेद धारण तथा वासुदेव का मन्त्रात्मक अनुष्ठान उत्तम रहेगा । यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा आगे पिशाच योनि में जन्म लेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह क्रमशः शान्त, सत्कर्म करने वाला, मातृ-हीन, बहुस्त्रीगामी तथा राज्याधिपति होगा । ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ आत्मपुत्रेण संस्पृष्ट: भृगुस्तं प्रत्युवाचह । कुण्डल्यां जायमानोऽस्यां भविष्यं तस्य श्रूयताम् ॥ भृगु उवाच ॥ स रुप रूप सम्पन्न: स्वस्थो भवति संयमी । प्रसन्नात्मा प्रतापी च स्वाभिमानेन पूरित: ॥ विचारवान् धार्मिको राज्यात् समानार्हो दृढस्तथा । पैतृकं धनमासाद्य स्त्रियापि स्वात्मजान्वित: ॥ दीर्घवपु: परै: नित्यं त्रस्तो भार्या नवाप्स्यति । विदुषीं धार्मिकीं वर्षे पञ्चविंशति संख्यके ॥ बहुसन्तति वानेष सेविष्यतैकया परम् । चिकित्सकोऽपि श्रेष्ठोऽयं हृदयस्य भविष्यति ॥ बान्धवानां प्रियश्चायं ऐश्वर्ये वीतचिन्तक: । समानाय व्ययपोश्चास्य मृत्यु: गेहैव निश्चितं ॥ वैशाख शुक्ल सप्तम्यामष्ट सप्तति संख्यक: । वर्षे रात्रौ च हान्यर्धे चतुस्त्रिंशतथैकादशम् ॥ नैक पञ्चाशतं वर्षे त्रिषष्ठ्यैक विंशके । तद्वत् द्विसप्तर्ति वर्षे उत्तमाब्दञ्च जीवने ॥ सप्तदशं सप्तत्रिंश द्वौनपञ्चाशतं तथा । चतु: पञ्चाशतञ्चैवं सप्तमं षड् षष्ठिकम् ॥ भाग्यं यातू वर्षञ्चास्य षड्विंश पञ्चविंशयो: । अनन्तं पूजयेदेवं धारयेत् पन्नकं स्वयम् ॥ विपन्नष्टुञ्च चन्द्रोऽस्य लग्ने तृतीय षष्ठयो: । सप्तमे नवमेवास्तु स्त्री प्रियश्चालसी तथा ॥ कुगणो भार्येति योगश्च भाग्यवान् क्रमशो भवेत् । क्षत्रिय: पूर्वमोन्याश्च सर्पश्चाग्रिम जन्मन: ॥

७ गु.
५ शु.
८ चं.
६ सू. बु.
४ मं. के.
९
३
श. १० रा.
१२
२
११
१

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे विभो! इस कुण्डली का फलादेश कहें । आचार्य भृगु बोले – हे वत्स! इस कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, प्रसन्नचित्त, उद्यमी, संयमी, प्रतापी, स्वाभिमानी, विवेकी, परम धार्मिक, तेजस्वी, पैतृक धन प्राप्त करने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, सुदृढ़, लम्बे क़द वाला, स्त्री संयोग से धन पाने वाला, कुत्सित सन्तान वाला व विरोधी जनों से पीड़ित होता है । इसे २५ वर्ष की आयु में परम विदुषी एवं धार्मिक स्त्री मिलेगी । सन्तानें अधिक होंगी, परन्तु वे नष्ट भी अधिक होंगी । केवल एक सन्तान ही इसकी सेवा करेगी । यह जातक हृदय-रोग चिकित्सा का विशेषज्ञ भी हो सकता है । भाई-बन्धु इसे बहुत प्रेम करेंगे ।

यह अपने ऐश्वर्य के समक्ष लाभ की अधिक चिन्ता नहीं करेगा। अपने खर्च योग्य धन ही इसे प्राप्त होता रहेगा, फिर भी इसकी आवश्यकताऐं अधिक रहेंगी। इसकी मृत्यु ७८ वर्ष की आयु में, रक्त-विकार के कारण वैशाख शुक्ला ७ रविवार को रात्रि के समय होना सम्भव है। इसके जीवन के ११, २१, ३४, ४५, ६३ तथा ७२ वें वर्ष अनिष्टकारक एवं ७, १७, ३७, ४८, ५४ तथा ६६ वें वर्ष श्रेष्ठ रहेंगे। भाग्योदय २५-२६ वर्ष की आयु में होगा। संकट काल में अनन्तदेव का पूजन तथा सोने की अँगूठी में पन्ना धारण शुभ होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि क्रमशः लग्न, तृतीय, षष्ठ, सप्तम अथवा नवम में हो तो जातक स्त्री-प्रेमी, आलसी, रोगी, अनेक स्त्रियों वाला तथा भाग्यशाली होता है (यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था और अगले जन्म में इसे सर्प योनि प्राप्त होगी॥ इति शुभम्॥

बु० ७ गु०
५ शु०
६ सू०
४ के०
८
९
३ मं०
१० श० रा०
१२ चं०
२
११
१

ॐ शुक्र उवाच॥ शुक्रो ऽभाषत प्रभो मह्यं जातकस्यास्य भाविनम्। कृपया भाषताऽस्यां कुण्डल्यां जन्मयो लभेत्॥ भृगु उवाच॥ तदा वाचस्पतिश्चैवं वर्णयामास तत्फलम्। जातको ऽयं प्रतापी वै गौरो दीर्घ शरीरवान्॥ विद्वानुग्रः स्वाभिमानी शुद्ध वृत्त्यानुपालकः। वैरिणो बलिनश्चास्य धार्मिकः कीर्ति हेतवे॥ पञ्चपुत्रास्तथा भार्या त्रिविंशाब्दैव धार्मिकी। कृपणो ऽति स्थिरः क्षेत्रेन्यकृतो ऽपि रतीच्चुकः॥ धातु रक्त विकारे ऽपि चलो दृष्ट्यापितादृशः। दुराग्रही व्ययी स्त्रीषु म्लेच्छ संसर्गवानपि॥ सुतौ द्वौ सेवका वसूं धर्मपत्न्याः मतान्तरम्। चलाचलां पूर्वसू गेहात् प्राप्स्यत्येष सम्पदाम्॥ वैशाख शुक्ल सप्तम्यां चतुः सप्तति संख्यके। वर्षे तीर्थे क्वचिदायो: सीमा प्राप्स्यति चान्तमाम्॥ जीवने नेष्ट वर्षञ्च षष्ठाष्ट त्रिंशते तथा। द्वादशाष्टादशे वर्षे षड् जीवनोत्कर्ष कारकम्॥ द्विषष्ठीमष्टषष्ठीञ्च इदमञ्चोत्तमाब्द वै। नवदशैकविंशे च चतुः त्रिंशाब्दिकं क्वचित्॥ द्वेन पञ्चाशतञ्चैवं सप्तपञ्चाशकं तथा। चतुष्षष्ठीञ्च भाग्यस्यं वृद्धिमस्य करिष्यति॥ शूद्रञ्चाग्निम जन्मे ऽपि यदि ... संकट। "ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा" इति वरुण पूजनं॥ कुर्यात् मुक्ताश्च हस्ते ऽसौ धारये

दायदो सदा। चन्द्रोऽयं सप्तमे लग्ने द्वितीये दशमे तथा॥ चतुर्थे वास्तु संभूयात् नृपवन्मातृपूजकः। वत्से दमेन भाग्यञ्च अस्माज्जातस्य देहिनः॥

भावार्थः- शुक्र ने कहा - हे प्रभो! कृपया इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। श्रीभृगुजी बोले- हे तात! इस कुण्डली वाला जातक उग्रकर्मा, प्रतापी, गौरवर्ण, ऊँचे कद वाला, क्रोधी, विद्वान्, नीच-कर्म में प्रवृत्ति रखने वाला, स्वाभिमानी, दयालु, विरोधियों पर प्रभाव रखने वाला, भाग्यहीन, आडम्बरी तथा यश-प्राप्ति की इच्छा से धर्म करने वाला, ५ पुत्रों से युक्त, धर्मात्मा-स्त्री वाला, २३ वर्ष की आयु में पत्नी पाने वाला, धन कृपण, धन की मर्कट के कण्ठहार की भाँति रक्षा करने में तत्पर, स्त्री-क्षेत्र में पराजयी, स्त्री-प्रेमी, अधिक विषयी, धातु तथा रक्त रोगी, नेत्र-दृष्टि दोषी, चंचल, किसी की न सुनने वाला, म्लेच्छों की संगति वाला, स्त्री-सम्बन्ध में धन खर्च करने वाला होता है। ५ पुत्रों में से केवल दो पुत्र ही इसकी सेवा करेंगे। पत्नी से इसका मतभेद बना रहेगा। ससुराल-पक्ष से चल-अचल सम्पत्ति का लाभ होगा। इसकी मृत्यु ७४ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला सप्तमी शनिवार को सायंकाल किसी तीर्थ-स्थान में होना सम्भव है। इसके जीवन के ६, १२, १८, ३८, ५६, ६२ तथा ६८ वें वर्ष नेष्ट तथा १९, २१, ३४, ४८, ५७ एवं ६४ वें वर्ष श्रेष्ठ तथा भाग्योन्नति कारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में भी शूद्र-कुल में वर्ण-संकर रूप में उत्पन्न होगा। विपत्ति के समय वरुण देव का पूजन तथा 'ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा०' इस मन्त्र से अभिमन्त्रित मोती को चाँदी की अँगूठी में धारण करना हितकर सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः शान्त, धनी, मातृ-भक्त, व्यवसायी और नृपतुल्य होता है। इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिधे किं जीवनञ्चास्यां जातस्यास्ति वदस्व मे। एवं शुक्रवचः श्रुत्वा भृगुरेव विवर्णयत्॥ भृगु उवाच॥ वत्स दीर्घशरीरेण क्षीणः गौरश्च लोकवित्। शान्तः वीरः प्रतापी च कूटनीतिविदां परः॥

पैतृक सम्पदामीशः नयतः वैभवे तथा । पत्न्या भाग्योदयं तद्वत् राज्याद्धनार्जकस्तथा ॥ सन्तत्याः पीड़ितश्चायं वाणिज्ये लाभ दर्शने । हेयाहेयां विचार्येत् विवाहोऽस्य भविष्यति ॥ षड्विंशैकविंशे वा भाग्यस्योदय कन्यया । सन्तति एक रुग्णस्य अभावात् स्याद् भविष्यति जीवने ॥ गोपालसन्तति प्रयोगाच्च प्रभावात् शत्रुनाशकः । चतुरसीति वर्षायौ आमीत रक्त विकारतः ॥ वैशाख कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्यां गृहे स्थितः । मरिष्यति स्त्रिया शाकं विवादो ऽस्य न्प संयुतः ॥ तेन पुंसत्वहीनोऽसौ पूर्वं पञ्चाशतादपि । कष्टं दास्यन्ति वर्षाणि अष्टमाष्टादशे तथा ॥ चतुःत्रिंशाष्टविंशे च द्वानपञ्चाशतं तथा । द्विसप्ततिं तथैवास्मै जड़ षष्ठ्यात्मकं परम् । सुखदं द्वादशं वर्षं षड्विंशमैकविंशकम् । नवत्रिंश त्रिषष्ठीञ्च चतुः सप्तति संख्यकम् ॥ माणिक्यं स्वर्ण संयुक्तं हीरकं रजेत तथा । सिद्धयर्थं धारयेद्धस्ते कुद्राक्षार्चनं शिवम् ॥ द्विजोऽयं पूर्वकालस्य भाविनो वर्णसंकरः । चन्द्रो लग्ने तृतीये वा पञ्चमे सप्तमेऽथवा ॥ नवमे स्यात्तु आद्योऽयं स्त्रीजित् सौभाग्य संयुतः । ग्रहाणामीदृशो योगो फलमेतद्विदास्यति ॥

बु. गु. ७	६ सू. शु.	५	४ मं. के.
८	९ चं.	३	
श. रा. १०	१२	२	
११		१	

भावार्थ : शुक्र ने पूछा - हे तिथे ! इस कुण्डलीवाले जातक का फलादेश कहें । भृगु जी ने कहा - हे वत्स ! यह मनुष्य लम्बे कद वाला, क्षीणकाय, गौरवर्ण, व्यवहार-कुशल, अनेक योजनाएँ बनाने वाला, स्वाभिमानी, प्रतापी, परम पराक्रमी, विद्वान्, राज्याश्रय से धनोपार्जन करने वाला, दयालु, सन्तान की ओर से कष्ट पाने वाला, व्यवसायी, उद्योगी एवं लाभ के लिए ऊँचे-नीचे काम करने वाला होगा । इसका विवाह २१ अथवा २६ वर्ष की आयु में धार्मिक विचार वाली स्त्री के साथ होगा और तभी से इसका भाग्योदय भी होगा । सन्तान बड़ी कठिनाई से एवं उपायों द्वारा केवल एक ही होगी और उसीसे इसे सुख मिलेगा । 'सन्तानगोपाल स्तोत्र' का पाठ तथा अनुष्ठान उत्तम रहेगा । इसके प्रताप के समक्ष शत्रु तथा विरोधी जन दबे

भृ० सं० ५३२

भा० टी०

रहेंगे, परन्तु परोक्ष-स्थिति में विरोध करेंगे। इनकी मृत्यु ८४ वर्ष की आयु में, वैशाख मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी तिथि एवं शुक्रवार को मध्याह्न के समय अर्शरोग अथवा रक्त-विकार के कारण घर पर ही होना सम्भव है। अपनी पत्नी से इसका मतभेद बना रहेगा, परन्तु इसके सम्पर्क में अनेक स्त्रियाँ आयेंगी, जिनके कारण ४५ वर्ष की आयु में ही यह पुंसत्व-शक्ति से क्षीण होने लगेगा। इसके जीवन के ८, १८, २८, ३४, ४८, ६६ तथा ७२ वें वर्ष हानिकारक तथा १२, २१, २६, ३२, ५३, ६३ तथा ७४ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होंगे। माणिक्य तथा हीरे को क्रमशः सोने तथा चाँदी में जड़वाकर धारण करना लाभप्रद रहेगा। किसी भी संकट के समय बुध तथा राहु का पूजन-अनुष्ठान हितकर सिद्ध होगा। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में वर्ण-संकर होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम अथवा नवम में हो तो यह जातक क्रमशः स्त्री-प्रेमी, आलसी, भाग्यवान्, स्त्री-जित् तथा धनी होगा। इतिशुभम्।

ॐ शुक उवाच॥ तदा शुक्रोऽवदत् तातः श्रोतुमिच्छामि भाविनम्। अस्यां यो जायते तस्य तच्छ्रुत्वा भृगुरुक्तवान्॥ भृगु उवाच॥ मानवोऽयं दीर्घबाहुः गौराङ्गश्च कृशोदरः। नीतिवान् चतुरः गुह्य योजनानां विधायकः॥ धनिको लम्पटः क्रुद्धः स्त्रीप्रियो व्यवहारवित्। व्ययशीलः शरीरस्य प्रसाधन प्रियः सदा॥ ऐश्वर्यवान् तथा धर्मे प्रदर्शनप्रिय रुचिः। विमतो बान्धवैः शाकं पितृभक्तो विटस्तथा॥ क्षीणलाभोऽस्ति वाणिज्ये कला संगीतयोः रुचिः। पाणिग्रहण संस्कारं द्वाविंशेऽस्य भविष्यति॥ कन्यया शीलवत्या च किन्त्वेवं परां भजेत्। कार्पण्याद्धन लाभोस्यात् वैरिणः प्रबलाः सदा॥ ज्येष्ठ्यां तञ्च पत्नेन एका स्थास्यति सन्ततिः। हरिवंश नवाह्नञ्च पुत्रलाभाय कारयेत्॥ त्रिसप्ततितमे वर्षे फाल्गुन कृष्णपक्षिके। दशम्यां मृत्युरस्यास्ति शस्त्राघातगतो गृहे॥ राजसंवर्धितोऽप्येष सन्तत्याहीन सौख्यवान्। जीवने कष्टदं वर्षं तृतीयं नवमं तथा॥ द्वाविंशषोडशं वर्षं अष्टपञ्चाशतं क्वचित्। द्वात्रिंशं षडषष्ठिञ्च जीवनोत्कर्ष

दायकम् ॥ एकादशे त्रिविंशञ्च अष्टादशाष्ट त्रिंशके । सप्तपञ्चाशतञ्चाब्दं एक सप्तति संख्यकम् ॥ आदित्य हृदयेणार्कं पूजयेदिष्ट साधितुम् । क्षत्रियोऽयं पुरासीच्च शूद्रश्चाग्रिम जन्मनः ॥ अस्याचन्द्रश्चतुर्थे वा लग्नेषष्ठाष्टयोस्तथा । द्वादशेवा भवेदेव व्ययी स्त्री शत्रुजितं वरः ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे नाथ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले- हे शुक्र! यह मनुष्य लम्बे क़द वाला, गौर वर्ण, कृशोदर, प्रतापी, नीतिवान्, चतुर, गुप्त योजनाएं बनाने वाला, धनी, आलसी, सन्तान-पक्ष से कष्ट पाने वाला, स्त्री-प्रेमी, लम्पट, व्यवहार-कुशल, क्रोधी, कृपण, शरीर के सम्बन्ध में ध्यान कम देने वाला, शान-शौकत-प्रिय, ऐश्वर्यशाली, भोगी, धार्मिक परन्तु आडम्बरी, बन्धु-विरोधी, व्यवसाय में कम लाभ पाने वाला तथा सङ्गीत-कला-प्रेमी होगा। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दरी तथा सुशीला स्त्री के साथ होगा, परन्तु यह लम्पट पर-स्त्रियों में आसक्ति रक्खेगा। यह धनवृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहेगा। इसके विरोधी प्रबल होंगे, परन्तु अपनी चतुराई से यह उन पर विजय पाता रहेगा। इसकी सन्तान एक ही जीवित रह सकेगी, वह भी उपाय एवं कष्ट द्वारा प्राप्त होगी। पुत्र-लाभ के लिए हरिवंश पुराण का नवाह्न-पारायण सविधि सम्पन्न कराना शुभ रहेगा। इसकी आयु ७३ वर्ष के लगभग होगी तथा फाल्गुन कृष्ण १० शनिवार की रात्रि को श[illegible] -घात अथवा अग्नि भय से घर पर ही मृत्यु होना संभव है। सन्तान से सुख नहीं मिलेगा। इसके जीवन के ३, ९, १६, २२, ३२, ५८ तथा ६६ वें वर्ष हानिप्रद तथा ११, १८, २३, ३८, ५७ एवं ७१ वें वर्ष लाभकारी सिद्ध होंगे। सोने की अंगूठी में मूँगा धारण करना शुभ रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में नीच योनि में जन्म लेगा। [illegible] चन्द्रमा [illegible] अथवा द्वादश भाव में हो तो क्रमशः स्त्री-जित, सुखी, शत्रु-

कुण्डली:
- ६ : सू० शु०
- ७ : बु० गु०
- ५ : मं०
- ४ : के०
- ८
- ९ : चं०
- ३
- १० : श० रा०
- १२
- २
- ११
- १

भृ० सं० ५३८

भा० टी०

किदक, जल से भय पानेवाला तथा अधिक खर्चीला होगा। इतिशुभम् ॥

ॐ शुक्रउवाच ॥ शुक्रेनोक्तं पितः ब्रूहि अस्यांजातस्य जीवनम्। अतः भृगुरुवाचैवं शृणुवत्स तवेप्सितम् ॥ भृगु उवाच ॥ सर्वजिन्नीतिवान् धीमान् विद्या विनय संयुतः। मृदुवाग्धार्मिको गौरः मध्यमोवपुषा मृदुः ॥ बन्धुः प्रियः उदारश्च अर्थाभावानुभावकः। मानी धर्मेव्ययाद् धृष्टः राज्याद्धानि भविष्यति ॥ पत्निः कटु स्वभावस्य चातुर्येण रिपुञ्जयी। ज्योतिर्विद् कीर्तियुक्तश्च जलयात्रा भयान्वितः ॥ मार्गशीर्ष परे पक्षे सप्तम्यां परमावधिः। मध्ये द्वौन षष्ठयाञ्च एक षष्ठयाश्च हायते ॥ रक्तवीर्य विकाराभ्यां जीवनोन्नति दायकम्। विंशञ्चैकं चतुर्थं च द्वाविंश सप्त संख्यके ॥ द्वौन पञ्चाशतञ्चैव द्विपञ्चाशत संख्यकम्। त्रयो त्रिंशं तथातिष्टं तृतीयञ्चाष्ट संख्यकम् ॥ षोडषं षड्विंशञ्च द्विचत्वारिंशतं तथा। अष्ट पञ्चाशतं तद्वत् विवाहश्चास्य निश्चितम् ॥ त्रयो विंशैव भाग्यस्य उदयोऽरिष्ट नाशिनम्। रजते हीरकं धृत्वा विष्णु चक्रस्य पूजनं ॥ कवचस्यार्चनं कुर्यात् ब्राह्मणः पूर्व जन्मनः। द्विज एव पुनर्भूत्वा कार्यकर्म रतो भवेत् ॥ सोमोऽस्यां पञ्चमे चैवं द्विती-ये सप्तमेऽथवा। दशमाष्ट मयोस्याच्चेत् दीनो राज्याश्रितो भवेत् ॥

Position	Contents
Top-left	८
Top centre	७ सू. बु. गु.
Top-right	६ शु.
Left	९
Right	५ मे.
Left centre	१० श. रा.
Centre	४ के.
Lower left	चं. ११
Bottom centre	१
Lower right	३
Bottom-left	१२
Bottom-right	२

भावार्थः शुक्र ने पूछा – हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक प्रतापी, प्रभावी, तेजस्वी, परम धार्मिक, बुद्धिमान, विवेकी, नीतिज्ञ, विद्या-विनय सम्पन्न, मृदुभाषी, गौरवर्ण, सामान्य कद वाला, क्षीणकाय, मृदुल स्वभाव वाला, उदार चेता, दानी, बन्धु-प्रिय, मातृभक्त, धन की कमी वाला, पैतृक-व्यवसाय में हानि उठाने वाला, स्वोपार्जित धन-लाभ से प्रसन्न, कटु-स्वभावी स्त्री वाला। राज्य तथा सन्तान पक्ष से हानि पाने वाला, स्वाभिमानी, धर्म-कर्म में व्यय कर स्वयं को धन्य समझने वाला, परम चतुर, भाई से विवाद तथा विरोधियों पर विनम्रता से विजय पाने वाला, जल-यात्रा में

भय पाने वाला, कीर्तिवान्, सभाजित, ज्योतिषी तथा तत्वज्ञानी होता है। इसकी आयु ५८ से ६१ वर्ष की होगी तथा इसकी मृत्यु मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष में सप्तमी तिथि एवं गुरुवार के दिन रक्तदोष अथवा वीर्य-विकार के कारण रात्रि के प्रथम प्रहर में होना सम्भव है। इसके जीवन के १, ४, ८, १०, २२, ३३, ४८ तथा ५२ वें वर्ष श्रेष्ठ तथा ३, ८, १६, २६, ४२ और ५८ वें वर्ष अत्यधिक नेष्ट सिद्ध होंगे। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होगा और तभी भाग्योदय भी होगा। अरिष्ट निवारणार्थ चाँदी की अँगूठी में हीरा जड़वा कर पहिनना लाभकर सिद्ध होगा। सन्तान प्राप्ति के लिए पुरुषोत्तम चक्र तथा कवच का पूजनानुष्ठान हितकर रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण होकर धर्म-कर्म में तत्पर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, सप्तम, अष्टम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः दरिद्र, कन्यायुक्त, सुन्दर स्त्री पाने वाला, जलहानि से युक्त तथा राज्याश्रित रहेगा। इति शुभम्।

ॐ शुक्र उवाच॥ पितः किं भविनं ब्रूहि अस्यां कुण्डलिजस्य वै। श्रुत्वात्मजावचस्तस्य फलं गीष्पतिरुक्तवान्॥ भृगु उवाच॥ शृणु तात मनुष्योऽयं स्वाभिमानी बलान्वितः। नयज्ञोऽपि पराभूतः तस्यां न्यायप्रियः सदा॥ पुरातत्त्वविदां श्रेष्ठः धीमान् काव्यकलाप्रियः। गीतज्योतिर्विदश्चायं सतां संगतिकारकः॥ लोके कीर्तिमवाप्नोति ऐश्वर्येणात्म जीवनं। वहेदुदररोगेण ग्रस्तां भार्याञ्च प्राप्नुयात्॥ एकविंशतमाब्देव भाग्योदयेन संयुतः। पुत्रद्वयञ्च कन्ये ऽस्य सेवां द्रौहि करिष्यतः॥ वैरिणश्चपरो नैव हातुं यत्न विधायकाः। कौशलं व्यवहारस्य सर्वान् जेष्यति निश्चितम्। वाणिज्ये दुर्जनाद्दूरं लाभाया स्यान्तिमा तिथिः। मार्गशीर्ष सिते पक्षे षष्ठी षड्षष्ठितमे क्वचित्॥ अभ्युदयाय जीवेनम सप्तविंशैकविंशके। अष्टत्रिंश त्रिषष्ठीञ्च द्विचत्वारिंशतं तथा।। त्रिपञ्चाशत संख्याया: अनिष्टं निम्नवर्षेसु। अष्टचत्वारिंशाब्दंच पञ्चविंश त्रयोदशे॥ षड्पञ्चाशते तद्वत् षड्षष्ठि नवत्रिंशते। हीरकं धारयेत् सिद्धये वैष्णवीञ्चार्चयेत शुभम्॥ [illegible] द्वितीये

पञ्चमे ऽथवा ॥ सप्तमे दशमे वा स्यात् क्रमशो ऽयं भविष्यति । स्त्री चौरो दीनहीनश्च सुतावान् नृपरक्षित : ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस जातक की कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगु जी बोले - यह जातक उद्यमी, व्यवसायी, विद्यावान्, प्रतापी, ज्ञानी, संगीत, काव्य, ज्योतिष तथा पुरातत्त्व का ज्ञाता, विवेकी, नीतिवान्, आत्म गौरवी, स्वाभिमानी, तेजस्वी, बल - वीर्य - पराक्रम से युक्त, धार्मिक, व्यवहार - कुशल, प्रियसत्यभाषी, न्याय प्रिय, साधु जनों का सत्संगी, राजनीतिज्ञ, परन्तु राजनीति में असफलता पाने वाला, प्रजा में प्रभाव तथा कीर्ति पाने वाला, ऐश्वर्य शाली, ठाठ - बाट से रहने वाला, सुन्दर, कर्मनिष्ठ, सुदृढ़, गेहुँए रंग का, विद्वान् - प्रिय तथा उदर - विकार वाली स्त्री से युक्त होगा । इसके विवाह २१ वें वर्ष में रक्त - विकार युक्त स्त्री के साथ होगा । स्त्री अपव्यय भी होगा । सन्तानों में तीन पुत्र तथा दो कन्याएं होंगी । दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे । शत्रु तथा विरोधी उखाड़ - पछाड़ करते रहेंगे, परन्तु अपनी व्यवहार - कुशलता से यह सब पर विजय प्राप्त करता रहेगा । दुर्जन व्यक्ति की साझेदारी से इसे बचना चाहिए । मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी को अपराह्न काल में, ६६ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है । इसके जीवन के २१, २८, ३८, ४२, ५३ तथा ६३ वें वर्ष उत्तम रहेंगे तथा ११, १३, २५, ३७, ४८, ५६ एवं ६६ वें वर्ष अनिष्टकारक हैं । विपत्ति - काल में चाँदी में हीरा जड़वा कर पहिनना लाभकर रहेगा । विष्णु यन्त्र का पूजन तथा वैष्णवी देवी का पूजन अर्चन हितकर सिद्ध होगा । यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था, परन्तु अगले जन्म में कर्म - विपाक से गर्दभ योनि प्राप्त करेगा । यदि इस जन्मकुण्डली में चन्द्रमा लग्न, द्वितीय, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः स्त्री - लम्पट, दरिद्री, अधिक कन्याओं वाला, स्त्री - प्रेमी तथा राज्याश्रित होगा । इति शुभम् ॥

भाव	अंक / ग्रह
लग्न	७ सू. बु. गु. शु.
द्वितीय	८ चं.
तृतीय	९
चतुर्थ	१० श. रा.
पंचम	११
षष्ठ	१२
सप्तम	१
अष्टम	२
नवम	३
दशम	४ के.
एकादश	५ मं.
द्वादश	६

ॐ शुक्र उवाच ॥ दैत्यगुरुरुवाचैवं फलादेशञ्च जीवनम् । लोकेश: कथ्यतांमस्यां जायमानस्य प्राणिन: ॥
भृगु उवाच ॥ भृगुमुनिस्तदाभाषत् जातो ऽस्यां जायते सदा । नीतिज्ञ: प्रियवक्ता च राज्ये सम्मानितो ऽथवा ॥
उच्चस्थ: निपुणो न्याये चिकित्सायां दुराग्रही । व्ययाधिक्येन कार्यञ्च ऋणे नैव प्रचालयेत् ॥ अभावं भाग्य
विघ्नाञ्च गौरोभीतो जलात् सदा । विवेकी सर्वत: नीत्या कार्य सम्पादकस्तथा ॥ प्रतापी तेजसां पुञ्ज: गन्धर्व शास्त्र
शारद: मातृपित्रग्रजानाञ्च भक्त: स्वार्थेण धार्मिक: ॥ स्त्रीणां प्रियाश्च खिन्नो ऽपं सन्तत्या: पत्निमाप्स्यति ।
चतुर्विंशे सुकामाञ्च सुन्दरीं गुण संयुताम् ॥ नवविंशे सप्तत्रिंशे भाग्यस्योदयमात्मन: । असाफल्यं धने प्राप्ये
त् पौषकृष्णाष्टमी भवेत् ॥ सप्तषष्ठितमाब्दे ऽस्य जीवने परमावधि: । षड्विंशैकादशे
वर्षे चतुर्दशं तथा क्वचित् ॥ एक चत्वारिंशताब्दं च नेष्टमीष्टञ्च जीवने । त्रयोदशं
द्विषष्ठीञ्च सप्तदशसप्तत्रिंशके ॥ पञ्चचत्वारिंशाब्दम् षड्पञ्चशतं क्वचित् ।
जीवने श्रेयसं चैवं सन्तत्योपाय हेतवे ॥ माणिक्यं धारयेत्स्वर्णे विश्वेदेवाश्चपूजयेत् ॥
क्षत्रियायां द्विजोत्पन्न: वर्णसंकर अग्रिमे ॥ यदि चन्द्रो ऽत्र लग्ने वा द्वितीये पञ्चमे
ऽथवा । सप्तमे नवमे चैवं दशमेत्वास्तु भाग्यवान् ॥

(कुण्डली: ८ सू. शु.; ९; ७ बु. गु.; १० श. रा.; ६; ११; ५ मं.; १२ चं.; ४ के.; २; १; ३)

भावार्थ: शुक्र ने कहा – 'हे लोकेश! आप इसकुण्डली वाले जातक का फला
देश कहने की कृपा करें। इस पर भृगुजी बोले – हे तात! यह जातक नीति-चतुर, प्रियवक्ता, अत्यन्त स्वाभिमानी,
राज्य में उच्चपद पाने वाला, न्याय-निपुण, चिकित्सा-निपुण, हठी, ऐश्वर्यशाली, आमदनी से अधिक खर्च करने वाला
ऋणी, यदा-कदा भाग्य में कमी अनुभव करने वाला, गौरवर्ण, जल से भय पाने वाला, विवेकी, नीति-कुशल, प्रतापी,
तेजस्वी, सङ्गीत-प्रिय, मधुर स्वर वाला, विरोधियों पर विजय पाने वाला, भाई-बन्धु तथा माता का प्रिय, पितृभक्त,
लाभ अथवा यश की कामना से धर्म-कर्म करने वाला, सर्वप्रिय तथा सन्तान की ओर से दुःखी अथवा सन्तति-

विहीन होता है। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होगा। स्त्री परम सुन्दरी, गुणवती, तीव्रकामेच्छायुक्त तथा प्रदर रोगिणी होगी। २८ तथा ३७ वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा। धन-लाभ कम होगा। ६७ वर्ष की आयु में पौष कृष्णा अष्टमी रविवार को प्रातःकाल इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे ११, १४, २६, ४१ तथा ५३वें वर्ष नेष्ट तथा १३, १७, २८, ३७, ४५, ५६ एवं ६२वें वर्ष शुभ फलदायक सिद्ध होंगे। स्वर्ण की अँगूठी में माणिक्य धारण करना हितकर रहेगा। संकट के समय तथा सन्तान-प्राप्ति के हेतु विश्वेदेवाओं का पूजन हितकर रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिया-स्त्री के गर्भ से उत्पन्न ब्राह्मणपिता का पुत्र था। अगले जन्म में यह शूद्र कुल में वर्णसंकर रूप में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम अथवा दशम भावों में हो तो जातक क्रमशः नीतिवान्, धनी, सन्तति युक्त, स्त्री-प्रेमी, भाग्यवान तथा यशस्वी होगा।

इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अथ प्रश्नो ऽस्ति शुक्रस्य जीवनं कीदृशी भवेत्। अस्यां जातस्य जीवस्य पुनस्तं भृगुरब्रवीत्॥
भृगु उवाच॥ वत्सैव मानवो भूयात् कलाविच्च बहुश्रुतः स्वाभिमानी दयाशीलः विद्वान्नीतिज्ञ धार्मिकाः॥ मध्यमो वपुषा गौरः पुष्टः साहित्य काव्यवित्। सत्येऽपि प्रियवक्ता ऽयं न्यायात्प्रीति उदारचित्॥ राज्याश्रयेण लाभोऽस्मै तिस्रः कन्याः सुतस्तथा। पञ्चएवात्मजैः हीनोऽथवा दत्तकपुत्रवान्॥ प्रसाधन प्रियश्चायं स्त्रीप्रियश्चिन्ताकोमहान्। धनाभावं प्रपूर्येच्च यशस्वी भाग्यवृद्धिकम्॥ वर्षं विंशात्मकं पत्न्याः प्राप्तयः सप्तदशेऽथवा। त्रयो विंशेऽपि आप्नोति यावज्जीवकुमारोऽथवा॥ तदा दारान्यसम्बन्धात् सुरापानं करिष्यति। जीवनस्यान्तमस्यास्ति द्विषष्ठितम संख्यके॥ पञ्चम्यां माघ शुक्लस्य जीवने ह्रासकारकम्। प्रथमं अष्टमं वर्षं एकादशैक विंशते॥ त्रिपञ्चाशतं तद्वत् चतुःत्रिंशति संख्यकम्। अभ्युत्थानाय भाग्यस्य सप्तमं विंशतं तथा॥ सप्तदशं त्रयोविंशं अष्टत्रिंशैक पञ्चाशते। सन्ततौ पूजयेत् भौमं तद्ग्रहस्यैव सिद्धये॥ प्रवाल फलदं रत्नं धारयेच्च महेतवे। शूद्रोऽयं म्लेच्छसम्पर्कात् शूद्रश्चाग्रेऽपि

चन्द्रमा: ॥ चतुर्थे पञ्चमे लग्ने सप्तमे दशमे भवेत् । अस्यास्तु लम्पटो स्त्रीयुत् सापत्यो राजसम्मत: ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा– हे पिता! इस कुण्डली वाले मनुष्य का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले – हे वत्स! यह जातक स्वाभिमानी, कलाविद्, बहुश्रुत, विद्वान्, धार्मिक, नीतिज्ञ, दयालु, उदार, मध्यम शरीर वाला, गौरवर्ण, पुष्ट, काव्य-प्रिय, साहित्यकार, प्रिय-सत्य भाषी, न्यायी, राज्याश्रय से धन प्राप्त करने वाला, दो अथवा तीन कन्या सन्तति तथा अधिकाधिक ५ पुत्र पाने वाला अथवा सन्तति-विहीन अथवा दत्तक पुत्र लेने वाला होगा। इसे सन्तान से दु:ख का अनुभव होगा । यह उदार, ऐश्वर्यशाली, स्त्री-प्रेमी, महान् विचारक, धन की कमी वाला,

९	८ सू. शु.	बु. ७ गु.
श. रा. १०		६ मं.
११		५
१२	चं. २	४ के.
१		३

धन कमाने में निरन्तर प्रयत्नशील, व्यवसायी, मानी तथा यशस्वी होगा । इसका भाग्योदय २० वर्ष की आयु में होगा । १६ अथवा २३ वर्ष की आयु में इसका विवाह होगा । यदि इन वर्षों में विवाह न हो तो आजीवन अविवाहित ही बना रहेगा, परन्तु अनेक स्त्रि-यों से इसके सम्बन्ध बने रहेंगे । यह मद्यपायी भी हो सकता है । बाद में जीवन में सुधार होगा । इसकी मृत्यु ६२ वर्ष की आयु में माघ शुक्ला ५ रविवार को मध्याह्न काल में होना सम्भव है । इसे १, ८, ११, २१, ३४ तथा ५३ वें वर्ष नेष्ट तथा ७, १७, २०, २३, ३८ व ५१ वें वर्ष श्रेष्ठ सिद्ध होंगे । इसे सन्तान-प्राप्ति के लिए मंगल का व्रत तथा अन्य सफलताओं के लिए मंगल का अनुष्ठान करना एवं मूँगा धारण करना हितकर सिद्ध होगा । यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में म्लेच्छ संसर्ग के कारण शूद्र कुल में ही उत्पन्न होगा । इस कुण्ड-ली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो उसके आधार पर यह जातक क्रमश: लम्पट, सुखी, सन्ततिवान्, स्त्रीयुत एवं राजद्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होगा – यह समझना चाहिए । इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ अस्यां यो जायमानोऽस्ति भविष्यं तस्य मे वद । परया कृपया तात सुराचार्यस्तदोक्तवान् ॥ भृगुरुवाच विवेकी क्रोधयुक्तोऽपि मानी स्त्रीलुब्धकः सदा । कुण्डल्याः वत्स अस्याः सः कृशो भवति धार्मिकः ॥ नातिगौरः दीर्घदेही व्ययी धर्मार्थ कर्मसु । राज्याश्रित उदारश्च बुद्धिमान् काव्य कोविदः ॥ ज्योतिर्विद् धर्मभीरुश्च शीलसौन्दर्य संयुतः । चत्वारोऽस्यात्मजाः नूनं व्ययी सन्ततिविग्रहे ॥ साफल्यं यत्नतो राजद्वारे नैवास्य हानिदाः । वैरिणश्चास्य सम्बन्धः वैवाहिकोऽस्तु विंशके ॥ वर्षे भाग्योदयं भूयात् त्रिविंशे सप्तविंशते । अष्टषष्ठितमाब्देऽस्य शुक्लपक्षस्य सप्तमी ॥ मार्गशीर्षस्य चास्यास्ति जीवनस्यान्तिमावधिः । जीवनस्योत्तमं कुर्युः विंशाष्ट सप्तदशानि च ॥ सप्तत्रिंश त्रयोविंशं षड् पञ्चाशतं तथा । द्वौ पञ्चाशतं तद्वत् घातकानि च जीवने ॥ एकादशा ष्टविंशे च अष्टादशनवत्रिंशते । चतुःपञ्चाशतं चास्मै युक्तं मौक्तिकधारणम् ॥ व्रतशुक्रस्य सिद्ध्यर्थं पूजनं गुरुपादयोः । आसीत् म्लेच्छोऽग्रिमे देहे द्विजो गुरुप्रभावतः ॥ पद्मस्यां चन्द्रमा तिष्ठेत् द्वितीये षष्ठ सप्तसु । चतुर्थैकादशे भूयात् धनेशः राजयौगिकः ॥

६ चं.	८	७ गु.
रा. १० श.	सू. बु. शु.	६ मं.
११		५
१२	२	४ के.
१		३

भावार्थ: शुक्र ने कहा– हे प्रभो! इस कुण्डली वाले मनुष्य का फलादेश कहने का कष्ट करें। भृगु बोले– हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक कृश शरीर, विवेकी, क्रोधी, मानी, स्त्री-लोलुप, धर्मात्मा, गेहुँआ रंग का, दीर्घदेही, व्ययी, धर्म-प्रियता के कार्यों में खर्च करने वाला, राज्याश्रित, उदार, बुद्धिमान्, काव्य-कोविद, ज्योतिर्विद एवं शील-सौन्दर्य युक्त होगा। इसके चार पुत्र होंगे तथा सन्तान एवं विग्रह के सम्बन्ध में इसे धन खर्च करना पड़ेगा। इसे मुकदमों में विजय प्राप्त होती रहेगी तथा शत्रु इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। बीस वर्ष की आयु में इसका विवाह होगा तथा २३ एवं २७ वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा। ६८ वर्ष की आयु में मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, शनिवार को रात्रि के समय इसकी मृत्यु होना संभव है।

भृ० सं० ५८४

भा० टी०

इसके जीवन के ८, १७, २०, २३, ३७, ४८ तथा ५६ वें वर्ष उत्तम रहेंगे तथा ११, १८, २८, ३८ तथा ५४ वें वर्ष हानिप्रद सिद्ध होंगे। चाँदी की अँगूठी में मोती जड़वा कर पहिनना हितकर रहेगा। किसी भी संकट के समय गुरु-पादुका पूजन तथा अभिषेक कल्याणकारी सिद्ध होगा। शुक्रवार का व्रत उत्तम फलदायक रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में म्लेच्छ था, परन्तु गुरु की कृपा से यह अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, सप्तम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनी, कुटुम्बी, शत्रुजयी व्यवसायी तथा राजयोगी होगा — ऐसा समझना चाहिए। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णयन्तु फलं तात अस्यां कुण्डलिजस्य मे। इति शुक्रस्य संपृष्टे भृगुणैव मुदीरितम्॥

भृगु उवाच॥ मनुष्यो ऽयं विचारज्ञः विवेकी चोपदेशकः। शत्रुजित् स्वाभिमानी च दृढ़चित्ते च मध्यमः॥ नयज्ञ बान्धवैर्युक्तः विद्यायां गणनाप्रियः। सदयो धार्मिको विद्वान् कुशलः स्त्री लुब्धको ऽपि च॥ राजपाश्रितो ऽपि वित्तेच्छुः प्रसाधन व्ययी परम्। विवेकादरिजेता च स्वस्थो गौरञ्च प्राप्नुयात्॥ धार्मिकीं शील सम्पन्नां परे रुग्णां पतिव्रतां। भार्यामष्टादशे वर्षे आगंपयात् दयं तदा॥ एकविंशैकत्रिंशे च पञ्चत्रिंशे ऽपि वर्षेसु। स्वल्प पैतृक लाभान्यः स्वार्जितेन वहेत्स्वयम्॥ कौटुम्बिको ऽस्य भेदो ऽस्ति सुतौ सेविष्यतः सदा। आयोरवधिरस्या ऽस्ति भाद्रकृष्ण चतुर्दशी॥ सप्त षष्ठ्याख्य वर्षे ऽस्य जीवने पातकानि च। त्रयोदशे त्रिषष्ठीञ्च सप्तममष्ट त्रिंशकम्॥ अष्टपञ्चाशतञ्चैवं सप्तदश तमं तथा। द्वाविंशञ्च शुभायास्मै तृतीयमेकविंशतम्॥ चतुर्दशैक त्रिंशे च चतुः पञ्चाशतं तथा। द्वौ न पञ्चाशतं वर्षं पञ्चत्रिंशं वियोगवान्॥ बाल्ये मातुः कुमारे पितुः स्वाभाविको भवेत्। विपद्येषं व्रतं कुर्यात् शनैः नीलम धारणम्॥ पूर्वस्यां क्षत्रियेश्चैवं कीटादौ यातु शोचतः। चन्द्रश्चेद् पञ्चमे लग्ने द्वितीये सप्तमे ऽथवा॥ दशमे स्याद्धनी चोऽयं सुतायुक्तो धनाधिपः। स्त्रीजित् राज्ये ऽपि मान्यो ऽस्तु क्रमशो ऽफलमीदृशम्॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक के फलादेश का वर्णन करने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे तात ! यह जातक महान् विचारक, उपदेष्टा, विवेकी, क्रोधी, शत्रुजित, प्रतापी, स्वाभिमानी, अधिक पुत्रों वाला, सुखी, भाई-बन्धुओं से युक्त, हठी, सामान्य धनी, कुशल-व्यवहारी, नीतिज्ञ, चतुर, गणितज्ञ, उदार, दयालु, धार्मिक, राज्याश्रयी अथवा राज्य से सम्मानित, प्रबुद्ध, विद्वान्, कार्य-कुशल, स्त्री-लोलुप, धन प्राप्ति में अधिक आशा रखकर कम लाभ पाने वाला, ठाठ-बाट में अधिक व्यय करने वाला, विवेक द्वारा शत्रुओं पर विजय पाने वाला, मध्यम कद वाला, सुन्दर, सुडौल तथा गौरवर्ण होगा। इसकी पत्नी सुशीला, धार्मिक, पतिव्रता किन्तु रोगिणी होगी। इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में होगा। २१, ३१ तथा ३५ वें वर्ष में इसका भाग्योदय होगा। पैतृक-सम्पत्ति का लाभ सामान्य होगा। यह स्वउपार्जित धन से ही अपना काल-यापन करेगा। केवल एक अथवा दो पुत्र ही इसकी सेवा करेंगे। कुटुम्बियों से सदैव मत-भेद बना रहेगा। इसकी मृत्यु भाद्रपद कृष्णा १४ मंगलवार को सायंकाल ६७ वें वर्ष में होना संभव है। इसके जीवन के ७, १३, १७, २२, ३८, ५८ तथा ६३ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे तथा ३, १४, २१, ३१, ३५, ४८ तथा ५४ वें वर्ष श्रेष्ठ सिद्ध होंगे। इसे अल्पायु में ही मातृ-वियोग तथा युवावस्था के आरम्भ में ही पितृ-वियोग होना सम्भव है। इसका सम्बन्ध अनेक स्त्रियों से रहेगा। संकट के समय शनिवार का व्रत तथा शनिदेव का विधिपूर्वक पूजन एवं चाँदी की अँगूठी में नीलम धारण करना हितकर सिद्ध होगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में कीटादि की योनि को प्राप्त होगा। यदि इस कुण्डली में चतुर्थ लग्न, द्वितीय, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो उसके फलस्वरूप जातक कुरूप, नीच, धनी, कन्यासन्ततिवान्, स्त्रीप्रिय तथा [illegible] ॥

भाव	अंक / ग्रह
लग्न	८ सू. बु.
द्वितीय	७ गु.
तृतीय	६ मं.
चतुर्थ	५
पंचम	४ के.
षष्ठ	३
सप्तम	२
अष्टम	१
नवम	१२ चं.
दशम	११
एकादश	१० श. रा.
द्वादश	९ शु.

भृ० सं० ५८३   भा० टी०

ॐ शुक्र उवाच ॥ जन्मलग्नवतोऽस्यां मे भविष्यं ब्रूहि तात वै । इत्याकर्ण्यात्मनः सूनोः वचः श्रीभृगुरब्रवीत् ॥ भृगु उवाच ॥ वत्स नीतिविदां श्रेष्ठः शल्यचिकित्सकोऽथवा । विद्या विनय सम्पन्नः जातकोऽयं भविष्यति ॥ पराक्रमी विवेकी च योजनानां प्रवर्तकः । मुखे नेत्रे च रुग्णोऽसौ कुचैलाचारश्च युक्तकः ॥ श्रीहीनः पण्डितश्चापि संगीतज्ञः सुपुत्रकः सतां संगतिहीनश्च मातृपक्षप्रणाशकः ॥ दृढ़ात्मविचारेषु गुप्तचर क्रियापटुः । प्रवीणः चाटुविद्यायां व्ययात्साफल्यमाप्नुयात् ॥ विवाहश्च चतुर्विंशे षड्विंशं मातृशोकदम् । विंशे भाग्योदयश्चास्य पितुः कीर्त्या हितं वहेत् ॥ अष्ट सप्तति वर्षायौ आश्विन शुक्ल पञ्चमी । षण्णपञ्चाशतं वर्षे नवत्रिंशं त्रिषष्ठिकम् ॥ नैक पञ्चाशतञ्चैव पञ्च सप्तोति संख्यकम् । अनिष्टकाले कुर्यात् यमाराधन पूजनम् ॥ प्रवाल रत्नं धृत्वा च पुरा क्षात्रेण ब्राह्मण ॥ शूद्रो वृषालिमर्ता च भविनोऽसौहि चन्द्रमा ॥ लग्ने तृतीय षष्ठे वा नवमे-कादशेऽथवा । स्थित चैवात्म युक्तोऽसौ शत्रुजित् भाग्यवान् परम् ॥

श. १० रा.	९	८	७ गु.
११	सू. बु. शु.		
१२		६ मं.	
१	३		५
चं. २		४ के.	

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुण्डली का फलादेश वर्णन करें । भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक कुशल राजनीतिज्ञ अथवा शल्य-चिकित्सक, विवेकी, विद्या-विनय सम्पन्न, योजनाकार, प्रतापी, प्रबल पराक्रमी, नेत्रपीड़ा युक्त, मुखरोगी, धार्मिक, नीतिवान्, कुचैल-स्त्री-भोगी, आत्माभिमानी, पण्डित, संगीत-प्रिय, धन-लाभ से वंचित, पुत्रवान्, सुखी, दुर्जनों की संगति करने वाला, मातृ-पक्ष का द्रोही, अल्पव्यय वाला, विद्या-विनय-सम्पन्न, स्व-निश्चय पर दृढ़ रहने वाला, जासूसी के काम में कुशल, स्त्रियों को मनाने में चतुर एवं गृह-भूमि के लाभ से रहित होगा। शत्रुता अथवा विवाद में धन खर्च करके विजयी होगा । इसका शरीर सुदृढ़, कद मध्यम तथा स्वस्थ और सुन्दर होगा । इसकी आमदनी का एक अंश रोग-चिकित्सा में व्यय होता रहेगा । इसे २६ वर्ष की आयु में मातृ-वियोग होगा । २४ वर्ष की आयु में विवाह तथा २० वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा।

भृ० सं० ४४८

भा० टी०

यह पिता के बाद पिता की कीर्ति से लाभ कमायेगा । आश्विन शुक्ला ५ शनिवार कर्कराशि को ७८ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होने की संभावना है । इसके लिए ९, २१, ३०, ३३, ४४, ५४ तथा ७२ वें वर्ष हानिकारक एवं ६, १२, २८, ३९, ४९, ६३ तथा ७५ वें वर्ष लाभकारी सिद्ध होंगे । आपत्तिकाल में यमराज का साङ्गोपाङ्ग पूजन तथा सोने की अँगूठी में मूँगा जड़वा कर पहिनना प्रसन्नता दायक रहेगा । यह जीव पूर्वजन्म में शाक्तधर्म से युक्त ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में वृषली-स्त्री का पति एवं शूद्र होगा । यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा लग्न, तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः आत्मगौरवशाली, साहसी, शत्रुजित, भाग्यशाली एवं सम्पन्न होगा । इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ।। कृपया वर्ण्यतामस्यां जायमानस्य भाविनम् । इति शुक्रस्य संपृष्टः भृगुस्तं प्रत्युदाहरत् ।। भृगु उवाच ।। बहुविद्याविदो विद्वान् विवेकी सत्यमानयुत् । धनेशः कृपणोऽप्येष पुरुषार्थी त्रिपुत्रवान् ।। नातिदीर्घः कुटुम्बी च राज्याश्रितश्च धार्मिकः । साहित्यिको निरालस्यः स्वस्थो मुखचक्षुपीडितः ।। विवाहोऽस्य त्रिविंशेऽस्ति परमार्थान्वितः सदा । पैतृकेनात्मनो द्रव्यं योगेऽनायास सम्पदः ।। पादयोः वातरोगश्च साफल्यं नास्ति शत्रुषु । परं नोन्नति संत्रासः गृहतीर्थेषु मानसः ।। चतुःसप्तति वर्षेऽस्य जीवनस्यान्तिमावधिः ।। वैशाखस्य द्वितीयायां शुक्लपक्षस्य निश्चितम् ।। उन्मादश्चान्निमे नूनं जीवनाकर्षहेतवे । तृतीयं द्वात्रिंशत्श्चाब्दं नैकविंश त्रयोदशम् ।। त्रिपञ्चाशत्तं वर्षं चतुःपञ्चाशतं क्वचित् । एक षष्ठ्याष्ट षष्ठ्याख्ये जीवनोत्कर्षदायकम् ।। सप्तमं सप्तविंशाब्द सप्तदशं त्रित्रिंशते । अष्टपञ्चाशतं पञ्चचत्वारिंश षड्षष्ठिके ।। द्विसप्तति विपन्नाष्टु अष्टाच स्वार्चनं तथा । नीलमं धारयेद्वजतो क्षत्रियश्चैष पूर्वजः ।। अग्रिमे दक्षिणे शूद्रो भारतेऽथ भविष्यति । चन्द्रोऽस्य यदि लग्नेस्यात् चतुर्थे सप्तमेऽथवा ।। नवमे द्वादशे वास्तु क्रमशोऽयं भविष्यति । रूपवान् धनिपः मातुभक्तः तिर्पश्च भाग्यवान् ।।

भृ० सं० ५८४   भा० टी०

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे तात ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले – हे वत्स ! इस कुण्डली वाला जातक विद्वान्, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, विवेकी, सत्यवादी, स्वाभिमानी, धनी, पुरुषार्थी, कृपण, नष्ट सन्तान वाला, तीन पुत्रों वाला, सुन्दर, मध्यम कद वाला, गेहुँए रंग का, कुटुम्बवान्, धार्मिक, विचारशील, साहित्यिक, राज्य मंत्री अथवा राज्यद्वारा सम्मानित, मुख-रोगी, नेत्र-हानि पाने वाला, स्वस्थ एवं २३ वर्ष की आयु में सुन्दर स्त्री प्राप्त करने वाला होता है । यह विवाहिता-पत्नी के अतिरिक्त अन्य अनेक स्त्रियों से भी सम्बन्ध रखता है । दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे । माता-पिता के धन-भूमि लाभ के अतिरिक्त यह स्वयं भी पर्याप्त धन उपार्जित करेगा ।

ग्रह स्थिति:
१० रा. शु. | ९ सू. बु. | ८
११ श. | | ७ गु.
१२ चं. | | ६ मं.
१ | ३ | ५
२ | | ४ के.

इसके पाँवों में वायु-विकार होगा । अनायास धन-लाभ के योग बनेंगे । शत्रु तथा विरोधियों पर सफलता कम मिलेगी, परन्तु उन्नति में कोई बाधक नहीं बन सकेगा । यह गुरुजनों का आदर करने वाला तथा तीर्थाटन-प्रेमी भी होगा । वैशाख शुक्ला २ गुरुवार को उन्माद रोग के कारण इसकी मृत्यु ७८ वर्ष की आयु में होना सम्भव है । इसके जीवन के ३, १३, १९, ३२, ४७, ५४, ६१ तथा ६८ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे तथा ७, १७, २७, ३३, ४५, ५८, ६६ और ७२ वें वर्ष लाभकर रहेंगे । आपत्तिकाल में आठ वस्तुओं का पूजन करना अरिष्ट-निवारक रहेगा । चाँदी में नीलम जड़वाकर पहिनने से भी बहुत लाभ होगा । यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में भारत के दक्षिणी भाग में शूद्र-कुल में उत्पन्न होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः अत्यधिक रूपवान्, धनी, मातृभक्त, स्त्री-प्रेमी, भाग्यवान् तथा वर्चस्वी होगा । इस जन्मकुण्डली का फलादेश यही है । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ किं फलादेशमस्याः वै कुण्डल्यां ब्रूहि सत्वरम् । तदा शुक्र वचः श्रुत्वा गीष्पतिरिदमब्रवीत् ॥ भृगु उवाच ॥ जातकोऽयं महाविद्वान् तेजस्वी धार्मिकस्तथा । राजमान्यो धनाधीशः काव्य सङ्गीत योरुचिः ॥ पत्न्याखिन्नः दूरदर्शी परिजनः प्रिय कीर्तिवान् । द्विभार्या योग इत्येस्य बहुरपत्यवान् तथा ॥ न्यायाधीशः नयज्ञश्च शत्रुजिच्चं दुराग्रही । ज्योतिर्विदि गणितज्ञश्च ह्रस्वकायश्च सम्भवः ॥ विंशाष्टदशमोश्चास्य विवाहो भाग्यवर्द्धनम् । षड्त्रिंशे चतुःविंशे षड्पञ्चाशत संख्यके ॥ पैतृकेण सहैवाऽयं स्वार्जितं द्रव्यवान् भवेत् । पुरुषार्थोद्धनं भूयात् गार्हस्थ्यस्य विडम्बनात् ॥ नैवलाभोऽस्ति तावच्च देशाटनप्रियस्तथा । गेहात् पृथक् वसेच्चैव बहिरस्थो विलासकः ॥ अष्टषष्ठितमे वर्षे ज्येष्ठस्य प्रथमे दिने । आयोरवधिरस्यास्ति नेष्टं जीवन वृद्धये ॥ तृतीयंशोऽप्य पञ्चाष्टं षड्विंशाष्ट त्रिंशते । द्विचत्वारिंशतञ्चाब्दं अष्ट पञ्चाशतं तथा ॥ द्विषष्ठीमुन्नतिं कर्तुं विंशमष्टादशं तथा । द्वात्रिंशन्नवमं तद्वत् चतुःपञ्चाशतं क्वचित् ॥ चतुःषष्ठिं तथा पञ्चचत्वारिंशत संख्यकम् । श्रेयसे जीवने युक्तं गोमेधं स्वर्ण संस्थितम् ॥ धारणं गुरुपूजा च क्षत्रियः क्षत्रियो भवेत् । चतुर्थे सप्तमे लग्ने नवमे दशमेऽथवा । चन्द्रस्याद्यादि कुण्डल्यां क्रमात् मातृप्रियस्तथा । स्त्री-चौरः पतिरेकश्च भाग्यवान् राजनीतिकः ॥

शु० बु० रा० १०	९ सू० चं०	८	७ गु०
११ श०	१२	६ मं०	
१	३	५	
२		४ के०	

भावार्थः शुक्रने कहा – हे तात! इस कुण्डली का फलादेश शीघ्र कहने की कृपा कीजिए। शुक्र के वचन सुन कर भृगुजी ने कहा – हे तात! इस कुण्डली वाला जातक परम विद्वान्, तेजस्वी, प्रतापी, सफल वक्ता, राज्याश्रित अथवा राज्य द्वारा सम्मानित, काव्य-सङ्गीत-प्रेमी, धर्मात्मा, दयालु, आत्माभिमानी, स्त्री की ओर से दुःखी, निरंकुश, दूरगामी-दृष्टि में दोष युक्त, पुरुषार्थी, धनी, कुटुम्ब-प्रिय, लोकप्रिय, कीर्तिमान्, बाल्यावस्था में रोगी, अधिक सन्तानों वाला, द्विभार्या योग वाला, न्यायप्रिय, सफल निर्णायक, मध्यम कद वाला, सुन्दर, अत्यधिक हठी,

रहने पर भी वे इसकी सेवा करेंगे तथा इसका संचित-धन पुत्रों के द्वारा शुभ कार्यों में व्यय होगा। २० वर्ष की आयु में विवाह तथा २८ वें वर्ष में भाग्योदय होगा। ५६ वें वर्ष में भी भाग्य वृद्धि होगी। पौष शुक्ला पंचमी मंगलवार को ६८ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु जल अथवा जलोदर रोग से होगी। इसके लिए ५, १५, २४, ३८, ५२ तथा ६३ वें वर्ष हानि-कारक तथा ७, ११, १२, ३२, ४४, ५६ एवं ६१ वें वर्ष श्रेष्ठ रहेंगे। विपत्ति-निवारणार्थ मंगल का व्रत तथा स्वर्ण में मूँगा जड़वा कर पहिनना हितकर रहेगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ अष्ट अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः विदेश यात्री, मातृभक्त, शत्रुजित्, जल से मृत्यु पाने वाला तथा राज्यमान्य होगा। यह पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य होना सम्भव है। इति शुभम्॥

स्थान	ग्रह
११	श. सू.
१२	शु.
१	
२	
३	
४	के.
५	
६	मं.
७	
८	गु.
९	
१०	रा. बु.

ॐ शुक्र उवाच ॥ फलं किं जन्मकुण्डल्यां अस्यां तस्यात्कदस्व मे। निशम्येदं सुराचार्यः शुक्रं तत्त्वं प्रचोदयात् ॥ भृगु उवाच ॥ अस्यां जातो मृदुर्वाण्या दीर्घकायो बलान्वितः। बालरुग्णश्च नेत्रार्तः व्याकुलश्चैव शीघ्रगः॥ परदाराधने प्रीतिः मानी च व्यसनैः परः। सवाहनः पितुः भक्तः विक्रेता शुक्लवस्तुनाम्॥ विद्याहीनो बहुभिः शोकं भीतोऽपि शास्त्रतस्तथा। योगो वै वाहिकश्चास्य एकविंशे पुनर्भवेत्॥ अष्टविंशतमाब्दे वै रुग्णा जायास्य भाविनी। सन्ततौ चण्डिकापूजां गोपालसन्तोषरोषि॥ कुपति पलादपद्मैकं सेविष्येत् जीवने इमे। भाग्योदयं पितुः भक्त्या सप्तमे सप्तविंशते॥ सप्तदशेऽपि सामान्यं जयं राज्ये च शत्रुसु। जीवनस्यावधिश्चास्य पौषशुक्लस्य चाष्टमी। अष्टसप्तति वर्षाणि वह्नितोयेष जीवने। शुभ हेतूनि चाब्दानि सप्तमं सप्तविंशतम्॥ सप्तदशाष्ट षष्ठे च द्वात्रिंशश्चाष्ट संख्यकम्। त्रिपञ्चाशत् च चतुःचत्वारिंशत संख्यकम्॥ अशुभानि च वर्षाणि पञ्चमं दशमं तथा। पञ्चादश द्विषष्ठीञ्च षट्पञ्चाशत संख्यकम्॥ षट्त्रिंशपञ्चविंशश्च द्विसप्ततिञ्च संख्यकम्। जीवनेऽस्मै गुरौः स्तोत्रं व्रतं तस्यैव श्रेयसे॥ पुष्परागमणि

स्वर्णे धारयेत् सिद्धि हेतवे । पुरा शूद्रोऽयमासीच्च अग्रिमे वर्णसंकरः ।। स्त्री स्वभावयुत श्चन्द्रः तिष्ठेच्च धरूपपञ्चमे, चतुर्थे नवमे लग्ने एकादशे तदा भवेत् ।। स्त्री लुब्धः पतिरेकस्याः पुत्रवान् भा ग्यसंयुतः । धनवान्नापि स्यादेव ग्रहाणां योगतः स्फुटम् ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता! इस जन्म कुण्डली का फलादेश कहें । भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक मिष्टभाषी, लम्बे कद वाला, श्यामवर्ण, बलिष्ठ, द्विभार्यायोग वाला, विवेकी, सन्तान-पक्ष से दुःखी, धन, पुत्र-पौत्रादि से हीन, नेत्र-रोगी, बाल्यावस्था में रोगी, सामान्य गृहस्थ, जल्दी चलने वाला, व्याकुल, पर-स्त्री के धन से प्रेम करने वाला, निर्व्यसनी, स्वाभिमानी, धार्मिक, वाहनादि से युक्त, पितृभक्त, पर-धन-लाभ पाने वाला; चाँदी, सीसा अथवा श्वेतरंग की वस्तुओं का व्यवसाय करनेवाला, बन्धु-बान्धव तथा मित्रों से विग्रह करने वाला एवं अग्नि अथवा शस्त्र से चोट खाने वाला होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होगा। फिर दूसरा विवाह २८ वर्ष की आयु में होना संभव है । पत्नी सदैव रुग्ण बनी रहेगी। सन्तान प्राप्ति के लिए सन्तानगोपाल मन्त्र का प्रयोग तथा षष्ठी-अनुष्ठान आवश्यक है । उपाय द्वारा एक सन्तति जीवित रह कर, सेवा कर सकेगी। पितृभक्ति के कारण ७,१८ तथा २७ वें वर्ष में भाग्योदय होगा । शत्रुओं पर तथा विवादों पर इनकी विजय होती रहेगी। पौष शुक्ला अष्टमी सोमवार को दिन के मध्याह्न में अग्नि-पीड़ा के कारण ७८वें वर्ष में मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के ५, १०, १५, २५, ३६, ४६, ६२ तथा ७२ वें वर्ष हानिकारक तथा ७, ८, १६, २७, ३२, ४०, ५३ एवं ६८ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होंगे। गुरुवार का व्रत तथा गुरु-स्तोत्र का पाठ एवं पुखराज धारण करना लाभप्रद रहेगा । पूर्वजन्म में यह जातक शूद्रकुल में उत्पन्न हुआ था तथा अगले जन्म में स्त्री स्वभाव युक्त वर्ण-संकर जाति में जन्म लेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः स्त्री-लोलुप, एक पत्नी वाला, पुत्रवान, भाग्यशाली तथा धनवान होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ।। वदन्तु कृपयामह्यं भविष्यमस्य प्राणिनः । इति पुत्र वचः श्रुत्वा तत्फलं भृगुरुक्तवान् ।। भृगु उवाच।।
अनङ्ग इवरूपोऽसौ मध्यमो वपुषा भवेत् । मनस्वी तेज सम्पन्नः धार्मिकश्चिन्तको महान् ।। राजेव विपुलं द्रव्यं
स्वतन्त्रो चिन्तितः स्त्रियाः । विलासे व्ययशीलश्च गार्हस्थ्ये ऽपि च पत्यकः ।। त्रयोविंशे विवाहश्च द्विचत्वारिं
शते भवेत् । वियोगपत्नितश्चैवं सन्तत्यै च गजाननम् ।। पूजयेत् धारयेद्रत्न माणिक्यं स्वर्ण संस्थितम् । माघ
कृष्णस्य षष्ठ्यांच वर्षे नवषष्ठि संख्यके ।। शिरोवेदनया मृत्युः स्यादस्य जीवने शुभम् । नवमं द्वादशं वर्षं
त्रयोविंशैक विंशते ।। जैक पञ्चाशतञ्चाब्दं सप्तपञ्चाशतं क्वचित् । चतुष्षष्ठिं त्रिंशञ्च जातकस्य जीवने।।

१ शु. / २	१२ सू.	बु. श. ११ / १० रा.
३		९ चं.
४ के. / ५	६ मं.	८ गु. / ७

षोडषं नवपञ्चाशं षष्ठ षड्विंशते तथा । अष्टत्रिंश तथा सप्तचत्वारिंशत संख्-
-कम् ।। क्षत्रियेणैव शूद्रायां भविष्ये पूर्वजन्मनः । क्षत्रियश्चतुर्मास्तिष्ठे
दस्यां यदि पञ्चमे ऽथवा । तृतीये नवमे लग्ने दशमे त्वेव भाविनः ।। धीरः
शान्तश्च राजेव धातिकोऽपत्य भाग्यवान् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए।
भृगुजी बोले - हे पुत्र ! इस कुण्डली वाला जातक विचारवान्, तेजस्वी, धनी, मनस्वी, चिन्तन-
शील, व्यवसायी, राजमान्य, स्वतन्त्र, अत्यन्त सुन्दर, कोमलाङ्ग, मध्यम कद वाला, परम
धार्मिक, रत्न-वाहनादि से युक्त, स्त्री की ओर से दुःखी, गुरु-पितृ-भक्त, परन्तु पिता से विरोध पाने वाला, भोग-
विलास में धन खर्च करने वाला, सन्तान की ओर से चिन्तित तथा रक्तप्रदर-रोगिणी स्त्री का पति होता है। इसका
विवाह २३ वें वर्ष में होगा तथा ४२ वर्ष की आयु में ही इसकी पत्नी की मृत्यु हो जाएगी। सन्तान-प्राप्ति के लिए इसे
गणेशजी का पूजन करना चाहिए। माघ कृष्ण ६ रविवार को मध्यरात्रि में, ६९ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव
है। उन्नति के लिए माणिक्य जटित स्वर्ण-मुद्रिका धारण करना हितकर रहेगा। इसकी मृत्यु मस्तिष्क-पीड़ा से

होगी। जीवन के ६, १६, २६, ३८, ४७ तथा ५९ वें वर्ष हानिकारक तथा ९, १२, २१, २३, ३३, ४९ और ६४ वें वर्ष लाभकारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में क्षत्रिय पिता द्वारा शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, नवम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः शान्त, उद्यमी, साहसी, पुत्रवान, भाग्यवान तथा राजा के समान धनी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ कृपया जातकस्यास्य फलं भावितमुच्यताम्। शुक्रोऽपृच्छत् फलादेशं सुराचार्यः स्मुऽमुक्तवान्॥ भृगु उवाच॥ कुण्डल्यां जायमानोऽस्यां क्रोधी भवति सर्वदा। प्रतापी गौरवर्णश्च मानी तेजसि सूर्यवत्॥ विद्वान् शत्रुजितश्चा-

२ शु.	१ सू.	१२ बु.
३	४ के. / १० रा.	११ श.
५ चं.	७	९
६ मं.		८ गु.

-यं धार्मिको भाग्यवान् परम्। मातृत्यक्तः पितुर्भक्तः कृतज्ञो दीर्घदेहवान्॥ दूरं गृहाद्वुष्येत् श्वसृपित्रोः धनाधिपः॥ जामातृत्वेन वान्यस्यां स्त्रियः प्राप्स्यति सम्पदाम्। शत्रुजिदपि शत्रूणां भावोऽस्ति सततं परम्॥ पुत्रौ द्वौ परमंप्रीतौ किन्तु तौ स्तां विरोधिनौ॥ कारागारस्य योगोऽयं गुरुं पदमवाप्स्यति। लक्षाधीशस्य योगोऽस्यां सुखं भौतिकमाप्नुयात्॥ देशाटनेन लाभोऽस्मै आयोन्निावधिः परम्। वर्षे षड्षष्ठि संख्यायाः तृतीया मार्गशीर्षयोः॥ सप्तं सप्तदशं वर्षं सहविंशतिकं तथा। षड्त्रिंशत्रिपष्ठ्यारब्धे नैक पञ्चाशतं तथा॥ द्वेन पञ्चाशतंश्चास्मै उत्तमे जीवने परम्। एकादश चतुर्विंशे द्विचत्वारिंश संख्यकम्॥ वर्षे षड्षष्ठि संख्याकमष्टपञ्चाशतं तदा। पञ्चादशान्च कष्टाय घोरमस्मै न संशयः॥ क्षत्रियोऽयं पुरासीच्च द्विजः सम्भव जन्मनः॥ पन्नकं स्वर्ण संश्लिष्टं उन्नत्यै धारयेत्तथा। पित्र्यार्चनश्च कष्टाय चन्द्रो लग्ने भवेद्यदि। द्वितीये पञ्चमे स्थाने अष्टमे नवमेऽथवा॥ क्रमशोऽयं जनः भूयात् शान्तं धनाधिपस्तथा। पुत्रवान् जलात् भीतिः भा-ग्यवान् परमः स्वयम्॥

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन फलादेश क्या होगा? भृगुजी बोले- हे पुत्र!

इस कुण्डली वाला जातक सूर्य के समान प्रतापी, प्रभावशाली, लम्बे कदवाला, तेजस्वी, स्वाभिमानी, क्रोधी, गौरवर्ण, अनेक विद्याओं में पारङ्गत, शत्रुजित, धार्मिक, भाग्यशाली, मातृ-सुख से वञ्चित, पितृ-भक्त, धर्म-कर्म में पटु, बदले की भावना रखने वाला, नष्ट-सन्तति युक्त तथा नीरोग होगा। यह पितृ-स्थान में अधिक नहीं रह सकेगा। इसे ससुराल-पक्ष अथवा किसी अन्य स्त्री द्वारा विपुल धन का लाभ होगा। इसका पिता एवं नाना-दोनों के कुलों पर अधिकार प्राप्त होगा। शत्रुओं पर विजय मिलेगी, परन्तु विरोधी उत्पन्न होते रहेंगे। इसके दो पुत्र होंगे यह स्वयं पुत्रों पर प्यार करेगा, परन्तु पुत्र इससे मतभेद रखेंगे। राज्य-बन्धन (कारावास) की भी स्थिति बनेगी, परन्तु कारावास होगा नहीं, साथ ही राज्य में उच्च सम्मान भी प्राप्त होगा। इस कुण्डली में लक्ष्माधीश-योग है। गृह, भूमि, वाहन आदि का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। देशाटन करने से विशेष लाभ होगा। मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया चन्द्रवार को ६६ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होती सम्भव है। इसके जीवन के ७, १७, २७, ३६, ४८, ५९ तथा ६३ वें वर्ष उत्तम रहेंगे तथा १२, १९, २४, ३२, ५८ तथा ६६ वें वर्ष हानिकर सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। भाग्योन्नति के लिए अँगूठी में पन्ना धारण करना हितकर सिद्ध होगा। संकट के समय पितृ-देवताओं का पूजन उचित है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा नवम स्थान में हो तो यह जातक क्रमशः परमशान्त, अत्यन्त धनी, पुत्रवान्, जल से भय पाने वाला तथा भाग्यशाली होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ शुक्रोऽब्रवीत् भृगुनाथ फलं ब्रूहि यथामतम्। अस्यां भवति कुण्डल्यां जन्म यस्यापि प्राणिनः॥ भृगुरुवाच॥ अस्य जातः फलादेशः शृणु शुक्र द्विजोत्तम। विद्वान् विवेकशीलश्च नीतिमान् सत्यभाषकः॥ क्षणः क्रोधी गौरवर्णः दृष्टिदोषी च मध्यमः। स्त्रियो व्यापारतो लाभो धनस्यैकैव पुत्रकः॥ संग्रही धार्मिको लोके गुणग्राही कृपायुतः। पौरुषार्जित लक्ष्मीवान् विस्मयसंपि तादृशः॥ भाग्योत्कर्षाय संलग्नः

माता पित्रो प्रियश्च सः। धीरो वीरो दृढ़ध्येये शत्रुजिच्चारि घातकः॥ कटु तीक्ष्ण विकाराभ्यां युक्ताभार्योस्य भाविनि द्वाविंशतितमे वर्षे धर्मधारित कर्तृकः॥ सौभाग्यं द्वादशे वर्षे अष्टाविंशाब्दके तथा। सम्पर्के राजकर्तृणां राजकार्येर्थ सिद्धयः॥ तत्प्रभावेण लोकेऽयं ख्यातिं पूतामवाप्स्यति। यश वैभव विद्यासु विद्वांसोऽपि प्रभाविताः॥ अन्तं द्वासीति वर्षायौ चैत्रस्य कृष्ण पञ्चमौ। देहावसान कालेऽस्य भगवन्नाम प्रभावतः॥ पूर्वापेक्षा परं जन्म दिवं मुक्त्वा भविष्यति। घातकानि च वर्षाणि सप्तविंशति शोडषे॥ द्विचत्वारिंशतं वर्षं त्रिपञ्चाशत संख्यकम्। बष्ठकश्चोत्तमान्यस्मै चतुःषष्ठी षड सप्ततिम्॥ सप्त पञ्चाशतं तद्वत् दशमं पञ्चत्रिंशंशकम्। जीवनोत्कर्ष हेतुश्च स्वर्णेध्याण पुष्पराग॥ आपत्काले ऽर्चनं युक्तं कदल्या आङ्गिरसव्रतम्। चन्द्रश्चेत् भवेदस्यां लग्ने वा द्वितीयगो॥ सप्तमैकादशे क्रमशः फलं तस्य भविष्यति। सुन्दरः स्त्री प्रिये वित्ते मध्यमः नाति लाभवान्॥

१ शु.		११ श.
२ चं.	१२ सू. बु.	१० रा.
३		९
४ के.	६ मं.	८ गु.
५		७

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे नाथ! जिस जातक की यह कुण्डली है, उसका फलादेश वर्णन करने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे शुक्र! इस कुण्डली वाला जातक परम विद्वान, विवेकी, ज्ञानी, स्वाभिमानी, सत्यवादी, नीतिज्ञ, गेहुँए रंग वाला, मध्यम कद वाला, क्षण-क्रोधी, नेत्र-दोष युक्त, ममताप एवं स्त्री-पक्ष से लाभ पाने वाला, सगुही, एक पुत्र वाला, धनी, परम धार्मिक, कृपालु, गुणग्राही, अपने पराक्रम से धन, कीर्ति तथा विद्या अर्जित करने वाला, धर्म-कर्म में धन खर्च करने वाला, मातृ-पितृ-भक्त, राजतुल्य धनी, सम्मानित, दृढ़निश्चयी, हठी, भाग्योन्नति के उपायों में संलग्न, धीर, वीर तथा शान्त स्वभाव का होगा। यह शत्रुओं तथा विरोधियों को पराजित करेगा। इसका भाग्योदय १२ अथवा २८ वें वर्ष में होगा। राज्याधिकारियों के सम्पर्क में रहने के कारण इसे राज्यकार्य में सफलता मिलेगी तथा धन का लाभ होगा

प्रत्येक कार्य धर्म पर आधारित रहने के कारण इसे शनैः-शनैः विद्या, धन एवं प्रसिद्धि का लाभ होगा। बड़े-बड़े विद्वान भी इसकी योग्यता का लोहा मानेंगे। चैत्र कृष्णा पंचमी गुरुवार को मध्याह्न काल में ८२ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। पूर्व जन्म में मृत्यु के समय भगवन्नाम का उच्चारण करने के कारण इसे क्षत्रिय का जन्म मिला था। इस बार यह स्वर्गादि के सुखों का उपभोग करेगा। इसके जीवन के ६, १६, २७, ४२, ५३ तथा ७८ वें वर्ष हानिकारक एवं १०, २२, ३५, ५७, ६४ तथा ७६ वें वर्ष लाभकारी रहेंगे। सोने की अँगूठी में पुखराज धारण करना शुभफलदायक रहेगा। संकट काल में केले का पूजन, गुरुवार का व्रत शुभ रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, तृतीय, सप्तम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, सामान्यधनी, स्त्री-प्रिय तथा कम लाभ पानेवाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

१ सू.
२ बु.
३ शु.
४ के.
५
६ मं.
७ गु.
८
९ चं.
१० रा.
११ श.
१२

ॐ शुक्र उवाच ॥ वद मे भावमस्यास्त्वम् कुण्डल्याः शुक्र उक्तवान् ॥ भृगुरुवाच ॥ सूर्यवत्तेजपुञ्जोऽयं भृगुनोक्तं भविष्यति ॥ स्वाभिमानी तथा क्रोधी धार्मिकश्चशत्रुजित्सदा। गानसाहित्ययोस्तस्य भाषणे च स्थिरं मनः ॥ प्रतीकारेण मुक्तश्च पौरुषैश्वर्यवान्नपि। सन्तत्याः दुःखितो दीर्घः शरीरेण कृशोदरः ॥ म्लेच्छयोगाद्धनी वास्तु कृपणो लवणः प्रियः। यांत्रिकः सुस्त्रिया युक्तं स्वभावात् भिन्नधीस्त्रियः ॥ पाणिग्रहण संस्कारं ऊनविंशति पश्चिमे। वियोगः पत्निनः नूनं त्रयः त्रिंशस्य मध्यमे ॥ काठिन्यादात्मजः एकः तूर्णिं स्याद्धन्ति शत्रवः। राजद्वारे च विजयी धार्मिकी स्यातिरुत्तमा ॥ किन्तु कामनया सदा सा हितसाधन हेतवे। शुक्लपक्षे तृतीयायां फाल्गुने वधि सन्निमा ॥ द्विषष्ठितम वर्षायौ जीवने नेष्टकारकम्। एकादशं त्रयोविंशं त्रयस्त्रिंशति संख्यकम् ॥ षण्णपञ्चाशतं वर्षं चतुःपञ्चाशतं तथा। वर्षान्यदशमत्वद्धत इष्टान्येतानि जीवने ॥ सप्तसप्तदशे चास्मै अष्टा-

विंशतिकं तथा। नैकपञ्चाशतं वर्षं षड्पञ्चाशत संख्यकम् ॥ एकषष्ठितमश्चैवं विंशमप्याष्ट त्रिंशकम् । जीवनोन्नति हेतुस्तु माणिकं स्वर्ण संस्थितम् ॥ धारयेदर्चनं कुर्यात् गीष्पते व्रतमाचरेत् । क्षत्रियोऽयं पुरासीच्चम्लेच्छयोगाद्भविष्यति ॥ शूकरश्चन्द्रमा लग्ने चतुर्थे यदि सप्तमे । नवमे द्वादशे वास्यात् क्रमशोऽस्मिन् भविष्यति, शान्तोऽतीव सुभक्तश्च मातुः स्त्री लम्पटस्तथा । भाग्यवान् व्ययशीलोऽपि भवितानात् व्यतिक्रमः ॥

भावार्थः - शुक्र ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक सूर्य के समान स्वतेजवान् तथा दूसरों को चमकाने वाला, स्वाभिमानी, क्रोधी, धर्मात्मा; भाषण, साहित्य एवं सङ्गीत में अभिरुचि रखने वाला, विरोधी-विजेता, कर्मठी, सामान्य धनी, पुरुषार्थी, ऐश्वर्यशाली, कृपण, प्रतीकार-भावना युक्त, सन्तान से दुःखी, अपने स्थान पर अधिक समय तक न टिकने वाला, लम्बे कद वाला तथा यान्त्रिक होगा। इसकी स्त्री सुन्दरी होगी, परन्तु इसका उससे मतभेद बना रहेगा। विवाह 20 वर्ष की आयु में होगा तथा 23 वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग हो जाएगा। केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा कर पायेगा। शत्रु दबे रहेंगे। विवाद (मुकद्दमे आदि) में विजयी रहेगा, धर्म-कर्म सकाम अथवा दिखावे के लिए करेगा। फाल्गुन शुक्ला तृतीया रविवार को मध्याह्न के समय 62 वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के 10, 11, 23, 33, 44 तथा 54 वें वर्ष हानिकारक तथा अपमृत्यु कारक रहेंगे एवं 6, 16, 20, 28, 38, 49, 56 तथा 61 वें वर्ष लाभकारी सिद्ध होंगे। उन्नति एवं लाभ के लिए सोने की अँगूठी में माणिक्य जड़वा कर धारण करना हितकर रहेगा। गुरुग्रह का पूजानुष्ठान तथा गुरुवार का व्रत लाभप्रद सिद्ध होगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में म्लेच्छ-संसर्ग के कारण शूकर योनि प्राप्त करेगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा लग्न, चतुर्थ, सप्तम, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः शान्त, सुन्दर, मातृ-भक्त, स्त्री-लम्पट, भाग्यवान तथा खर्चीला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ श्रोतुमिच्छाम्यहं नाथ कुण्डल्याः भाविनं तदा । भाषस्व कृपयास्यास्त्वं भृगुश्चोत्तरमब्रवीत् ॥

भृगुरुवाच ॥ धीरो वीरश्च शान्तोऽपि संस्कृतः म्लेच्छ वागविदः । विवेकी कर्मशीलश्च नीतिज्ञः धनिकः परम् ॥ प्रनष्टमजवाङ्जेतां शत्रूणां राजद्वारि च । जलयात्रान्महद् भीतः प्रवासी धार्मिकः परम् ॥ आस्तिकः उद्यमी राज्ये प्रभावोऽस्य सुनिश्चितम् । तेजस्वी दीर्घबाहुश्च मुखमस्तकयोः क्षतः ॥ नेत्रदृष्ट्यां मनाग् दोषः वर्णे पिङ्गलतास्ति च । षड्विंशति वर्षायौ परमासुन्दर कन्यया ॥ विवाहः स्यात्स्त्रिया सार्कं माधुर्येणास्ति जीवनम् । वणिक् कर्मणि लाभोऽस्य स्त्रियः स्वर्णेन वेष्टुतः ॥ कुर्यात् व्यापारमस्यास्ति योगोलक्षाधिपस्य च । गृहभूमिसुखञ्चापि यात्रां वैदेशिकीं प्रति ॥ सन्देहोऽपि परं विघ्नः दुःस्वभावोऽस्य कारणम् । दशमं सप्तमञ्चास्य सप्तविंशति संख्यकम् ॥ भाग्यदस्य वर्षञ्च योगः पुत्र त्रयात्मकः । हीरकं घत लाभाय गोमेदं मानहेतवे ॥ धारयेत् स्वर्णसंयुक्ते कार्तिकार्चितमापदि । ज्येष्ठकृष्ण चतुर्थ्याञ्च वर्षे नवपञ्चाशते ॥ जीवनान्तञ्च मध्याह्ने जीवनायेष्टकारकम् । दशमं त्रिनविंशञ्च अष्टाविंशति संख्यका ॥ पञ्चत्रिंशस्य संख्याकम् षड्पञ्चाशतं क्वचित् । पञ्चाशततमं चास्मै नेष्टमेकञ्चतुर्थकम् ॥ षष्ठैकादशं संख्याया: द्वाविंशतितमं तथा । चतुःत्रिंशत संख्याकं षण्णपञ्चाशतं क्वचित् ॥ पुरा द्विजोऽयमासीच्च म्लेच्छ संसर्गतः पुनः । म्लेच्छयोनौ भवेदेष चन्द्रश्चेदस्य सप्तमे ॥ द्वितीये पञ्चमे वास्तु नवमे क्रमशः फलम् । भोगी स्त्रीणां धनाधीशो सौभाग्येन समन्वितः ॥

२ शु॰ | १ सू॰ बु॰ | १२ | ११ श॰ | ३ | ४ के॰ | १० रा॰ | चं॰ ९ | ५ | ७ गु॰ | ६ मं॰ | ८

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगु जी बोले- हे वत्स! यह जातक धीर, वीर, शान्त, विवेकी, संस्कृत एवं म्लेच्छ भाषाओं का ज्ञाता, कार्य-कुशल, नीतिज्ञ, कर्मनिष्ठ, पुण्यवती-अष्ट-सन्ततिवान, जल-यात्रा में भय पाने वाला, मुकद्दमे में तथा शत्रुओं पर विजय पाने वाला,

परदेशगामी, धार्मिक, ईश्वरनिष्ठ, उद्यमी, व्यवसायी, राज्य में प्रभावी, तेजस्वी, लम्बे क़द वाला, पिंगलवर्ण, नेत्र-दृष्टि में कमी पाने वाला एवं मुख तथा मस्तक पर चोट के चिह्न वाला होता है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होगा। इसकी पत्नी सुन्दरी, सुशीला, विदुषी तथा धार्मिक विचारों की होगी। उससे मधुर-सम्बन्ध बना रहेगा। व्यवसाय में स्त्री अथवा स्त्री-पक्ष से सहायता मिलेगी। गुड़ अथवा स्वर्ण के व्यवसाय से पर्याप्त धन-लाभ होगा। गृह, भूमि आदि का सुख उपलब्ध रहेगा। विदेश-यात्रा के प्रसङ्ग अनेक बार उपस्थित होने पर भी यह अपने स्वभाववश विदेश-यात्रा नहीं करेगा। १०, १७ तथा २७ वें वर्ष भाग्योदय कारक हैं। तीन पुत्र होंगे। धार्मिक वृत्ति श्रेष्ठ बनी रहेगी। धन-लाभ के लिए हीरा तथा सम्मान-लाभ के लिए स्वर्ण जटित गोमेद धारण करना लाभप्रद सिद्ध होगा। संकट-निवारणार्थ स्वामिकार्तिकेय का पूजनानुष्ठान हितकर सिद्ध होगा। ज्येष्ठ कृष्णा चतुर्थी मंगलवार को अपराह्न-काल तथा ५९ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के १, ४, ६, ११, २२, ३४ तथा ४४ वें वर्ष हानिकारक तथा १०, १७, २८, ३५, ५० एवं ५६ वें वर्ष लाभकारक सिद्ध होंगे। यह जातक पिछले जन्म में ब्राह्मण था, परन्तु म्लेच्छ सम्पर्क के कारण अगले जन्म में म्लेच्छ बनेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, सप्तम अथवा नवमभाव में हो तो जातक क्रमश: धनी, पुत्रवान्, अनेक स्त्री-भोगी तथा सौभाग्यशाली होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वदति शुक्र इदं भृगुमुत्तमम्। कुण्डलिस्य प्रभो वद मे फलम्॥ भृगुरुवाच॥ भृगुरुवाच तदामिह प्राणिनः। फलमिदं शृणु शुक्र तथा स्वयम्॥ विवेकी परमो वीरः दीर्घसूत्री च सुहृदः। तनुना मध्यमो मानी नयज्ञो नाति बुद्धिमान्॥ राजपाश्रितः सुभाषी च भाग्यवान् परपीड़ितः। कन्यायां सन्ततौ योगः खिन्नचित्तात्मजैः भृशम्॥ साधुर्वा परमो भोगी असंख्यातमथाच्युतः। चतुः विंशात्मके वर्षे योगो विवाहकर्मणः। पीड़ितः वातरोगेण क्रोधकर्ताऽपि मध्यधी। जायामिन्नधियः तस्मात् उदयं भाग्यस्य वर्तते॥ ऊन विंशात्मे वर्षे

चतुर्विंशति संख्यके । षड्चत्वारिंशते वर्षे पुत्रावाज्ञानुवर्तिनौ ॥ स्त्रीवियोगी तथा श्रेष्ठः नूनं भाग्ये पराक्रमे । पौष शुक्लदशम्यांञ्च सप्तषष्ठिश्च संख्यके ॥ वर्षायौ रात्रि काले च मृत्यो रवधिरन्तिमा । अपमृत्युकरं वर्षं द्वितीये पञ्चमाष्टमे ॥ अष्टादशं नवत्रिंशं द्विचत्वारिंशतं तथा । पञ्चपञ्चाशतं तद्वत् त्रिषष्ठ्यात्मक संख्यकम् ॥ उत्तमानि च वर्षाणि नैक विंशति संख्यकम् । षड्चत्वारिंशताब्दञ्च एकादशत्रिपञ्चाशते ॥ भाग्योन्नत्यै व्रतं कुर्यात् राहोः शक्रार्चनस्तथा । पञ्चम्यां राज्य लाभाय श्रेष्ठनीलम धारणम् ॥ प्राप्नुयाच्च द्वयोर्नित्यञ्च वैश्यो ऽसौ पूर्वजन्मतः । चन्द्रमाश्चादि लग्ने ऽस्य द्वितीये पञ्चमे स्तथा ॥ सप्तमैकादशेवास्तु क्रमशो ऽपं भविष्यति । शान्तो धनपतिर्विद्वान् स्त्रीप्रियो गृहभूमिभाक् ॥

चं० ३ शु० | १ | ४ के० | २ सू० बु० | १२ | ५ | ११ श० | ६ मं० | ८ | १० रा० | ७ गु० | ९

भावार्थः शुक्र ने कहा — हे आचार्य ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगु बोले — हे शुक्र ! यह जातक पराक्रमी, वीर, आलसी, इष्ट-द्वेषी, गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, पुष्ट, सुदृढ़, आत्माभिमानी, भाग्यशाली, राज्याश्रित अथवा राज्य से सम्मान पाने वाला, राजकर्मचारी, धार्मिक, गृह तथा भूमि लाभ से युक्त, कृपण, व्यवहार-कुशल, नीतिवान्, विरोधियों से कष्ट पाने वाला, सन्तान से दुःखी, अधिक कन्या सन्तति वान्, धर्म साधु, भोगी, वायु-विकार से दुःखी, कंधे पर चोट खाने के चिह्न वाला, अस्थिर-मति तथा क्रोध करने वाला होगा । इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होगा । स्त्री-सम्पर्क से इसकी मति अलग रहेगी । इसका भाग्योदय १५, २४ तथा ४६ वें वर्ष में होगा । इसके दो पुत्र आज्ञानुवर्ती तथा सेवा करने वाले होंगे । भाग्य तथा पराक्रम की स्थिति श्रेष्ठ रहेगी । स्त्री की मृत्यु पहले हो जाएगी । पौष शुक्ला दशमी शनिवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में तथा ६७ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है । इसके जीवन के २, ५, ८, १८, ३९, ४२, ५५ तथा ६३ वें वर्ष हानिप्रद तथा अपमृत्यु

कारक एवं ११, १८, ४६, ५३ तथा ६५ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होंगे। विपत्ति एवं अरिष्ट के समय राहु का अनुष्ठान, इन्दु का पूजन तथा पंचमी का व्रत लाभकारी रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा भविष्यत् जन्म में शूद्र कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, सप्तम अथवा एकादशभाव में हो तो जातक क्रमशः शान्त, सुन्दर, परमधनी, सन्तान से दुःखी, स्त्री-प्रिय तथा विद्वान् होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ भार्गवोऽवद् प्रभो वृत्तं अस्या सर्वञ्च भाविनम्। कथ्यतां श्रोतुकामोऽस्मि सुराचार्यस्तदाऽब्रवीत् ॥ भृगुरुवाच ॥ प्रभावी सुविवेकी च चलधी दीर्घदेहवान्। वर्णे गौरः सुकौटुम्बी प्रीतियुक्तः परैः सदा। वाणिज्ये मध्यमे लोके कार्पण्यार्जित द्रव्यवान्। पौरुषार्जित द्रव्येण भाग्यवान् गृहभूपतिः ॥ पादभ्यां वातरोगी च मातास्य व्यभिचारिणी, विदुषी शील सम्पन्ना भार्यास्मै च सुलक्षणा ॥ वर्षे विंशति काले च प्राप्स्यत्यसिन्न संशयः। द्वादशे द्वाविंशकाब्दे द्वात्रिंशततमेऽपि च ॥ भाग्योदयोऽस्य भूतस्य गृहे वान्तोऽपि वाससः। एकासीतितमे वर्षे आश्विन् कृष्ण त्रयोदशौ ॥ सन्ततौ च कुशीलेऽपि तथै वास्त्यस्य कीर्तनम्। ग्रह संख्यात्मकं वर्षमादित्यात्म संख्यकम् ॥ द्वाविंशश्च द्विषष्ठिञ्च द्वात्रिंशाष्ट सप्ततीम्। उत्तमो लाभं तद्वत् तृतीये कादशेन तु ॥ सप्तदशं चतुर्विंशं षड्विंशषड्त्रिंशकम्। चतुर्नषष्ठि संख्यायाः अष्ट षष्ठ्यै कासीतिके ॥ नेष्टञ्चास्मै तयोन्नत्यै सन्तत्यै वार्चनं गुरोः। युक्तं पितृश्वराणां च पुरासीदेष पुत्रकः ॥ क्षत्रियेणाहि शूद्रायां जातश्चाग्रेऽपि तादृशः ॥ विद्याविनय सम्पन्नः स्वाभिमानी च धार्मिकः ॥ मध्यमे हो दरे व्यऽसौ ग्रस्तोऽवक्ता पयोधरः। यदि लग्ने तृतीये वा पञ्चमे सप्तमेऽथवा ॥ चन्द्रस्याद् दशमेऽप्यस्य क्रमशोऽपि भविष्यति। शान्तऽधम शीलश्च राजमान्यः स्त्रियः प्रियः ॥

४ शु. के.
२ बु.
३ सू.
१
५ चं.
६ मं.
१२
७ गु.
९
११ श.
८
१० रा.

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले - हे शुक्र! यह जातक प्रभावशाली, विवेकी, परन्तु अस्थिर-मति, लम्बे क़द वाला, गौर-वर्ण, स्त्री-सन्तान से युक्त, डरपोक, विरोधियों से संघर्ष न करने वाला, कृपण, मलिन वस्त्र धारी, सामान्य-व्यवसायी, भाग्यवान, अपने ही पुरुषार्थ से धन कमाने वाला, द्रव्य-संग्रही, गृह-भूमि के लाभ से युक्त तथा माता का विरोधी होगा। इसका एक पुत्र सेवा करेगा। पाँवों में वायु-विकार के कारण कष्ट रहेगा। इसकी माता व्यभिचारिणी होगी। पत्नी सुशीला, विदुषी, धार्मिक तथा सुलक्षणा होगी। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा तथा भाग्योदय १२, २२ एवं ३२ वें वर्ष में होगा। आयु की परमावधि ८१ वर्ष है। इसकी मृत्यु आश्विन कृष्णा त्रयोदशी शुक्र-वार को प्रातः काल अपने ही घर में होना सम्भव है। सन्तान कुचाली होगी, परन्तु उसी के द्वारा इसकी उन्नति होगी तथा कीर्ति का विस्तार होगा। इसके जीवन के ९, १२, २२, ३२, ४८, ६२ तथा ७८ वें वर्ष उत्तम तथा ३, ११, १७, २४, २६, ३६, ५६, ६८ तथा ८१ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। भाग्योन्नति के लिए इसे नीलम धारण करना तथा सन्तान-वृद्धि के लिए गुरु-पूजन करना शुभ रहेगा। अरिष्ट काल में अर्यमा पितृश्वरों का पूजन करना हितकर रहेगा। यह व्यक्ति पूर्वजन्म में क्षत्रिय के द्वारा शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था तथा अगले जन्म में भी जार-पति द्वारा शूद्रा के गर्भ से ही उत्पन्न होगा। यह जातक सफलवक्ता, तेजस्वी, धर्मात्मा, विद्या-विनय-सम्पन्न, स्वाभिमानी तथा मधुमेही एवं उदर-रोगी होगा। यह अल्प कुटुम्बवान् तथा सामान्य-कर्म करने वाला होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पञ्चम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो उसके प्रभाव से यह जातक क्रमशः शान्त-स्वभाव का, उद्यमी, सुपात्र, सन्ततिवान्, स्त्री-प्रिय तथा राज्यमान्य होगा - यह समझना चाहिए। इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ।। किं फलादेशमस्यास्ति जातस्यां समुच्यताम् । सुराचार्यस्तदा श्रुत्वा मुक्तवान् तस्य भाविनम् ।।
भृगुरुवाच ।। सहोदरप्रियो मानी दाती भोगी च कामुकः । शत्रुजिद्धनसम्पन्नः बाल्येरुग्णश्च भाग्यवान् । दीनो
देशाटनी चैव परमार्थरतः स्वयम् । पराधीनो मदेमत्तः परस्त्री द्रव्य चिन्तकः ।। स्वच्छवस्त्रावृतः वाण्या मधुरो
मैत्रि संयुतः । शास्त्रज्ञः कर्महीनश्च नेत्ररोगेण संवृतः ।। भागिनेये ऽस्य स्नेहः स्यात् सिद्धः पितृप्रवञ्चकः । पाणि-
ग्रहण संस्कारं त्रयोविंशति संख्यके ।। सुन्दर्या कन्यया भूपात् परं नैक्यं तयोः क्वचित् । परस्त्री गत चेताऽयं
तास्वेव भवितात्मधी ।। वर्षे भाग्योदयाय ऽस्मै त्रयोविंशाष्ट विंशके । एकादशञ्च योग्यापि सन्ततिरस्य दुःखदा ।।

४ के.	३ सू.	२ बु.
५ शु.		१
६ मं.		१२ चं.
७ गु.	९	११ श.
८		१० रा.

ह्रियाल्पोकस्य वार्द्धक्ये सुतः सेवां करिष्यति । एव आत्मनि दौर्बल्य प्राप्स्यत्योत्कर्ष-
कारकम् ।। जीवनैकादशं तद्वत् त्रयोविंशाष्ट विंशके । नवत्रिंशत संख्यायाः षड्पञ्चा-
-शतन्तथा ।। सप्तषष्ठितमं वर्षमेक सप्ततिमुत्तमम् । नैकपञ्चाशतं तद्वत् जीवना-
-घात हेतवे ।। पञ्चादश तृतीयञ्च सप्तमं दशमं तथा । सप्तत्रिंशति संख्याकमष्ट
पञ्चाशतं क्वचित् ।। षड् त्रिंशतमस्याब्दं अष्ट सप्तति संख्यकम् । आश्विनकृष्ण
पञ्चम्यां वायुदोषेण जीवनम् ।। द्विसप्ततितमे वर्षे अन्तयास्यति निश्चितम् ।
विपत्काले च शम्भोः सः कृपादर्चन पूजनम् ।। बधिकः पूर्वकालस्य भाविनो
वर्णसंकरः । चन्द्रो यद्यस्य लग्ने स्यात् तृतीये पञ्चमेऽथवा ।। दशमे द्वादशे भावे व्ययी राज्याङ्कितः
भवेत् । पुत्रवान्नुद्यमी श्रान्तः कुण्डल्या प्रतिपाद्यते ।।

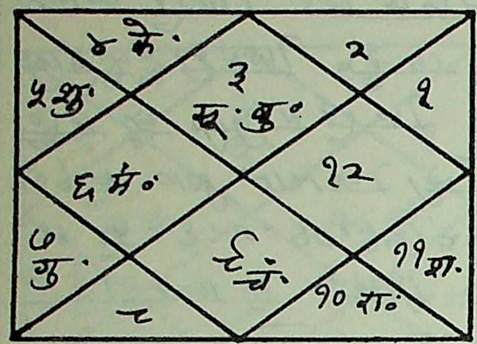
भावार्थः शुक्र ने पूछा- हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले -हे वत्स!
यह जातक अभिमानी, बन्धु-प्रिय, दानी, भोगी, धनी, कामी, शत्रुजित, धीरे काम करने वाला, बाल्यावस्था
में रोगी, भाग्यवान, दीन, ... प्रेमी, पराधीनता में ... वाला, पर-स्त्री-प्रेमी, ... बार

में धनखर्च करनेवाला, व्याकुल, यदा-कदा धन की कमी अनुभव करने वाला, पर-स्त्री-धन का लोभी, मैत्रीभाव शून्य, विद्वान्, कृतघ्न, परन्तु कुकर्मी, नेत्र-रोगी, मधुरभाषी, औंरों से प्रेम करने वाला, सुन्दरवस्त्रधारी, पाखण्डी, धर्मरुचि से रहित, हीन-वीर्य, परन्तु मदनानुरक्त एवं पिता के साथ छल करने में कुशल होगा। हे पुत्र! इसका विवाह 23 वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दरी होगी, परन्तु इसका अपनी पत्नी से सदैव मतभेद बना रहेगा; क्योंकि यह पर-स्त्रियों में आसक्त रहेगा। इसका भाग्योदय 11, 23 तथा 28 वें वर्ष में होगा। इसकी सन्तान विद्वान् होते हुए भी अविवेकी तथा पितृ-विरोधी होगी। लोकलाज के कारण केवल एक पुत्र ही वृद्धावस्था में इसकी सेवा करेगा। इसे स्व-पराक्रम में कुछ कमी का अनुभव होता रहेगा। इसके जीवन के 3, 7, 10, 15, 27, 36, 58 तथा 78 वें वर्ष हानिकारक एवं 11, 23, 28, 38, 48, 56, 67 और 71 वें वर्ष लाभकर सिद्ध होंगे। इसकी मृत्यु 82 वर्ष की आयु में; वायु-विकार के कारण अथवा श्वास-रोग से पीड़ित होकर आश्विन कृष्ण 5 शनिवार को होना सम्भव है। संकट-काल में शिव-पूजनाभिषेक हितकर रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्रूरकर्मा वधिक था तथा अगले जन्म में वर्ण-संकर जाति में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, दशम अथवा द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः भ्रान्त, उद्यमी, पुत्रवान्, राज्याश्रित एवं स्वर्चोत्था होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ उशनोवाच कुण्डल्याः फलमस्याः पितः वद। भृगुनावर्णितञ्चैव जातकोऽयं भविष्यति॥

भृगु उवाच॥ प्रतापवान् स्वाभिमानी धार्मिकोऽपि प्रवंचकः। नीतिज्ञश्चिन्तितो द्रव्यादालस्याद्धित जातकः॥ सन्तप्ता; परमः खिन्नः द्रोही मित्र कुटुम्बयोः। पैतृकभूमि युतः श्रेष्ठः कृपणो राज्याश्रये सदा॥ शत्रवोवृद्धि रहिताः योजन्यास्य च प्राणिनः। ग्रहप्रभावे भवत्ः परदाररतः सदा॥ चतुर्विंशति वर्षायौ धार्मिक्या कन्यया सह। योगे वैवाहिकश्चास्य किन्तु साधर्ममाचरेत्॥ पृष्टतः जातकस्यास्य सन्ततौ जीवनद्वयोः। नष्ट सन्तति

न्यास्ति भाग्यस्योऽभ्युदयं तथा ॥ त्रयोविंशे त्रयोत्रिंशे वर्षयोश्चास्य जीवने । प्राप्स्यत्याशाधिकं साफल्यं कृतकर्मसु यत्नतः ॥ मूत्रकृच्छ्रेणदोषेण वर्षे त्र्योनसप्ततौ । दशम्यां शुक्लपक्षस्य मार्गशीर्षे दिवं व्रजेत् ॥ त्रयोविंशः चतुःविंशः सप्तदशत्रित्रिंशते । द्विचत्वारिंशतञ्चाब्दमष्टपञ्चाशतं क्वचित् ॥ जीवनाभ्युदयेतुस्तत् जीवने सेष्टकारकम् । तृतीयं सप्तमञ्चैवमष्टविंशति संख्यकम् ॥ सप्तपञ्चाशतं वर्षं सप्तषष्ठ्यात्मकं तथा । पञ्चचत्वारि संख्याकम् धारयेत् श्रेयसे तथा ॥ माणिक्यं स्वर्णसंयुक्तं कुर्याच्च गुरुपूजनं । वैश्योऽयं पूर्वकालस्य वैश्य एव पुनः भवेत् ॥ यदि चन्द्रः स्थितोऽस्मांस्यात् पञ्चमे सप्तमे तथा । द्वितीये द्वादशेवास्य सर्वैश्वर्यमवाप्नुयात् ॥



भावार्थ: शुक्रने कहा – हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगु बोले – हे पुत्र! यह जातक स्वाभिमानी, प्रतापी, व्यवसायी, धार्मिक, परन्तु पाखण्डी होगा यह विवेकी, व्यवहार-कुशल, धन-चिन्ता से व्यग्र, उद्यमी, आलस्य के कारण अपना काम बिगाड़ लेने वाला, मित्रों तथा कुटुम्बियों का द्रोही, सन्तान की ओर से दुःखी, गृह-भूमि-लाभ युक्त, कृपण, प्रबुद्ध, राज्याश्रय तथा सम्मान पाने वाला, नेत्र-मुख-रोगी, दाँई भुजा में चोट पाने वाला, मलिन तथा कुचाली होगा। इसकी गुप्त-योजनाएँ शत्रु को पनपने नहीं देंगी। यह पर-स्त्री-रत रहते हुए भी स्व-पत्नी को कष्ट नहीं देगा। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में धार्मिक विचारों वाली स्त्री के साथ होगा। वह इससे छिपा कर धर्म-कर्म करती रहेगी। इसके एक या दो पुत्र जीवित रहेंगे। भाग्योदय २३ तथा ३३ वर्ष की आयु में होगा, परन्तु आर्थिक-स्थिति उत्तम नहीं रहेगी। इसे अपने कामों में आशा से कम सफलताएँ मिलेंगी, फिर भी यह प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में लोक-प्रसिद्ध होगा। इसकी मृत्यु ६७ वर्ष की आयु में मूत्र-रोग के कारण मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी रविवार को मध्याह्न के समय होना सम्भव है। इसके जीवन के १७, २३, २८, ३३,

४२ तथा ५८वें वर्ष उत्तम तथा ३, ७, २८, ४५, ५७ तथा ६७वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। इसे संकट निवारण तथा उन्नति के लिए गुरुदेव का पूजन तथा बृहस्पति का अनुष्ठान हितकर रहेगा। स्वर्ण में पुखराज अथवा माणिक्य धारण करना हितकर सिद्ध होगा। यह जातक पूर्वजन्म में धन-सम्पन्न वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, सप्तम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, पुत्रवान्, स्त्री-प्रिय, ऐश्वर्यशाली तथा विरोधी-स्वभाव का होगा। इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ शुक्र आह सुराचार्य जातोऽस्मिन् ग्रहमण्डले। भावस्तस्यास्ति किं लोके गीष्पतिस्तम् बोधयत्॥ भृगु उवाच॥ शृणु वत्स भविष्यन्तत् विवेकी स्वाभिमान् सुतः। राजमान्यो बलिष्ठोऽपि गुह्यनय प्रवर्त्तकः॥ लम्बोदरः प्रभावी च मातृभक्तो मदोत्कटः। पितृगेहस्य वात्सल्यः हीन सन्ततिरात्मनः॥ रुग्णावातेन जायास्य रुग्णोदर स्वयं भवेत्। धर्मवित् श्यामवर्णस्य श्रीयुक्तो वपुसा महान्॥ मरणं शस्त्रघातेन वा पादागत घर्षणात्। द्विपञ्चाशत संख्याया द्विषष्ठ्यात्मकेऽथवा॥ तीर्थक्षेत्रे क्वचिद्द्रव्यः पुरुषार्थेन चार्जयेत्। कुटुम्बार्थेविभिन्नं च व्ययोऽस्य च भविष्यति॥ सुखाभावोऽस्ति संसारे संतत्या सर्वथा स्फुटम्। प्राप्नुयात् दत्तकं पुत्रं भाग्यवृद्धिं प्रयास्यति। त्रयोविंशति वर्षायौ द्वाविंशत्यष्ट त्रिंशयोः। द्वाविंशेऽथ विवाहोऽस्य सम्भवो नान्यथा क्वचित्॥ भूत्वा जन्म विवाही च परमायो मुपास्यति। भार्या वा पुंश्चली तस्य वर्षे जीवन घातकम्॥ चतुर्थमष्टमञ्चैव अष्टादशाष्ट विंशके। द्विषष्ठितम संख्याकं द्विपंचाशतन्तथा॥ उत्तमानि च वर्षाणि त्रयोविंशाष्ट त्रिंशते। एकोन पञ्चाशतं तद्वत् त्रयोन पञ्चाशतं क्वचित्॥ विपत्कालस्य रोद्धुश्च शनैः ध्यानञ्चनीलमम्। धारयेत् प्राण घाती सः क्षत्रियो पूर्वजन्मनि॥ भविता कर्मणा सत्यं विधर्मी वर्णसंकरः। सम्भुवै

६	५ शु.	३ बु.
	४ सू. के.	२
७ मं. गु.		१ चं.
८	१० रा.	१२
९		११ श.

भृ० सं० ५६०

भा० टी०

वास्य द्रव्यस्य क्षयं भुक्त्वैव तत्परम् ।। चन्द्रश्चेदस्य कुण्डल्यां द्वितीये दशमे ऽथवा। चतुर्थे पञ्चमे स्थाने ति-
-ष्ठेतत्फलमीदृशम् ।। जलान्मृत्युः विवेकी च राजमान्यो धनाधिपः । कारणारस्य योगोऽपि कुण्डल्यां दृश्यते क्वचित् ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुंडली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए। भृगुजी बोले-
हे वत्स! इस कुण्डलीवाला जातक विवेकी, स्वाभिमानी, क्रोधी, गुप्त-योजनाओं का जनक, पुरुषार्थी, कुटुम्बी,
कुचाली, क्रूरकर्मा, राजमान्य, वायु-रोगिणी स्त्री का पति, स्वयं उदर-रोगी, उन्मत्त, मदमत्त, बलिष्ठ, प्रभाव-
-शाली, बड़े पेट वाला, ऐश्वर्यवान्, सन्तान-हीन, पिता के घर में अधिक समय तक न रहने वाला, मातृ-
भक्त, परन्तु प्रत्यक्ष में माता के प्रति कठोर शब्दों का उच्चारण करने वाला, धर्मज्ञ, पर-धर्म में आसक्त,
दीर्घवपु तथा श्याम वर्ण का होगा। इसकी मृत्यु ५२ अथवा ६२ वर्ष की आयु में, शस्त्राघात अथवा
किसी दुर्घटना के कारण, तीर्थ क्षेत्र में होने की सम्भावना है। यह अपने पुरुषार्थ द्वारा धन उपार्जित
करेगा तथा कुटुम्ब के लिए खर्च भी करेगा, परन्तु इसे सन्तान-सुख नहीं मिलेगा। इसे दत्तक-पुत्र
प्राप्ति भी सम्भव है। इसका विवाह २२ वें वर्ष में तथा भाग्योदय २३ और ३८ वें वर्ष में होगा।
यदि २२ वें वर्ष में विवाह न हुआ तो आजीवन अविवाहित ही रहेगा तथा कुलटा स्त्रियों से सम्पर्क
रखेगा। इसकी वह स्त्री भी पुंश्चली होगी। इसके लिए ४, ८, १८, २८, ४८, ५२ तथा ६२ वें वर्ष हानिकारक
एवं २३, ३८, ४७ तथा ५१ वें वर्ष लाभकारक सिद्ध होंगे। विपत्ति-निवारणार्थ नीलम-धारण तथा
शनिदेव का पूजन हितकर रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में हत्यारा क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में
परधर्मावलम्बी वर्ण-शंकर होगा। इसका धन इसके जीवन में ही नष्ट हो जाएगा, परन्तु यह अनेक प्रकार के भोगों का
उपभोग करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम अथवा दशम भाव में हो तो जातक
क्रमशः धनी, विवेकी, जल से मृत्यु पानेवाला तथा राजमान्य होगा। इसे कारावास भी हो सकता है। इति शुभम् ।।

भृ० सं० ६०४ | भा० टी०

ॐ शुक्र उवाच ॥ शुक्रेनोक्तं प्रभो तूर्णं फलादेशं समुच्यताम् । कुण्डल्याः जातकस्यास्य भृगोरुच्चरमीदृशम् ॥ भृगु उवाच ॥ दुराग्रही प्रतापी च विद्याजीवी सुशीलवान् । विद्वान् भूम्याधियोगे हि भुजोपार्जित द्रव्यवान् ॥ पितृभक्तः प्रबुद्धश्च दीर्घकौटुम्बिकः परम् । उपेक्षितश्चेतनासौ शास्त्रज्ञः कटुसत्यवाक् ॥ शत्रुजिद्धन सम्पन्नः स्वहस्तोपार्जित द्रव्यवान् । प्रकृत्यां यस्य वैचित्र्यं क्षणे कुप्यति तुष्यति ॥ कलाप्रियः कविर्दक्षः गौराङ्गः दीर्घदेहवान् । एकोनविंशके वर्षे योगे वैवाहिकोऽस्य च ॥ सप्तविंशतमैकविंशे द्विचत्वारिंशे संख्यके । वर्षे भाग्योदयो भूयात् तूर्णं स्यास्यन्ति शत्रवः ॥ पुत्र दुःखेन सेव्योऽयं माधोरित्यन्च पूर्णता । षड्षष्ठितमे वर्षे गुह्यरोगेण केनचित् ॥ एकादश्यां तिथौ शुक्ले मार्गशीर्षे शनिश्चरे । किञ्चिन्नेत्रविकारोऽपि जीवने नवमं तथा ॥ एकोनविंश संख्याकं सप्तविंशैक विंशके । द्विचत्वारिंशतञ्चैवमष्टपञ्चाशतन्नापि ॥ उत्तमं वर्तते तद्वत् सप्तदशञ्च सप्तमन्तथा । पञ्चत्रिंश त्रयोविंश षड्पञ्चाशत संख्यकम् त्रिषष्ठ्यष्ट चत्वारिंशे इष्टपालनतत्परम् । तस्मादुन्नति हेतुञ्च सेवेत सदा गजाननम् ॥ प्रवाल रत्न मङ्गुष्ठ्यां हेम्नो निर्माय धारयेत् । पुरा क्षत्रियवंशस्थ द्विजोऽग्रे च भविष्यति ॥ यस्यस्यां चन्द्रमा तिष्ठेत् लग्ने द्वितीय चतुर्थके । सप्तमे दशमेचैवं पञ्चमे तद्धि सो भवेत् ॥ चिकित्सकः सुखी श्रीमान् नष्टात्मजावन्मयम् । भार्या सौन्दर्य सम्पन्ना गौराङ्गः सरलः परम् ॥

कुण्डली	
५ शु.	३ के.
४ स्. बु.	६
२	७ मं. गु.
१	८
१० चं.	१२
९ रा.	११ श.

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे प्रभो ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुनकर भृगुजी बोले – हे तात ! इस कुण्डली वाला जातक हठी, प्रतापी, दृढ़निश्चयी, विद्योपजीवी, अनेक विद्याओं में पारङ्गत, व्यवहार-कुशल, गृह-भूमि सम्पन्न, पितृ-भक्त, प्रबुद्ध, विवेकी, धार्मिक, राज्य-कर्मचारी अथवा राज्यद्वारा उच्च-सम्मान पानेवाला, बड़े कुटुम्बवाला, परन्तु कुटुम्बियों द्वारा उपेक्षित,

भृ० सं० ५०२

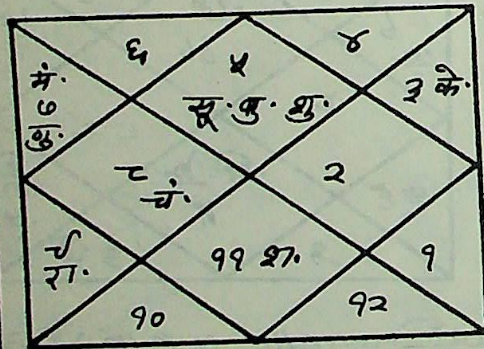
भा० टी०

विचित्र स्वभाववाला, उग्र तथा शान्त, शत्रु-नाशक, धनी, अनायास धन पानेवाला, अनेक कार्यों द्वारा जीविकोपा-र्जन करनेवाला, कवि, साहित्यिक, सङ्गीतज्ञ, गौराङ्ग तथा लम्बे कद वाला होता है। इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में होगा। इसका भाग्योदय २१, २७ तथा ४२ वें वर्ष में होगा। इसके शत्रु तथा विरोधी सदैव दबे रहेंगे। केवल दो पुत्र ही इसकी सेवा करेंगे। इसकी आयु ६६ वर्ष की होगी तथा मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी शनिवार को मध्या-ह्न में गुह्यरोग के कारण इसकी मृत्यु सम्भावित है। इसके लिए जीवन के ८, १८, २१, २७, ५२ तथा ५८वें वर्ष श्रेष्ठ तथा ७, १७, २३, ३५, ४८, ५६ और ६३ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। विपत्ति-निवारणार्थ श्री श्रीगणेशजी का पूजन तथा प्रवाल युक्त स्वर्ण-मुद्रिका धारण करना शुभ रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः अत्यन्त सरल, गौराङ्ग, अत्यधिक धनी, पूर्ण सुखी, नष्ट-सन्तति, सुन्दरी पत्नी वाला तथा वैद्य अथवा चिकित्सा के क्षेत्र में काम करने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यहि जन्मकुण्डल्या फलं किं मे वद स्वतत्। शुक्रो पृच्छति प्रश्ने ऽस्मिन् सुरा-चार्य प्रचोदयात्॥ भृगुरुवाच॥ धीरः शान्तः विवेकी च राजनीति विशारदः। विद्या विनय सम्पन्नः मातृ पितृश्च सेवकः॥ ज्योतिर्विदो दूरदर्शी व्यवसायी च कीर्तिवान्। प्रवणः विविधान् क्रीडान् काठिन्येनैक पुत्रवान्॥ साहित्यिको शास्त्रवेत्ता उद्यमी चपलः सदा। कृष्णवर्णस्य भार्यास्यात् नार्यं तस्मिन् भविष्यति॥ पण्डितो देहविज्ञाने चित्रकारः कलानिधिः। लम्बोदरश्च गौराङ्गः कायेनासौ च मध्यमः॥ क्रोधवत्याऽस्य संयोगः विवाहस्याथ वर्तते। पञ्चविंशति वर्षायौ भाग्योत्कर्षकरन्तथा॥ एक विंशतमं वर्षं सप्तविंशति सं-ख्यकम्। सप्तत्रिंशत संख्यांकं द्रोहः कौटुम्बिकः वसेत्॥ वातरोगी च मद्यपायी भयं नेत्र कृते भवेत्। -धामिकस्य... सप्तविंशत्... दे वर्षे... चन्द्रवासरे। शुक्ले कार्तिकमा-

सस्य मृत्युरस्यास्ति निश्चितम्।। जीवनं कादशं वर्षं सप्तविंशैक विंशते। द्विचत्वारिंशत स्चैवं द्विनषष्ठि त्रिषष्ठिके
द्विपञ्चाशत मुन्नत्यै नेष्टं जीवन साधने। पञ्चादशं चतुर्विंश त्रिन पञ्चाशतं तथा।। अष्टत्रिंशत संख्याया:
त्रिपञ्चाशत संख्यकम्। षड्षष्ठितमं वर्षं सप्तषष्ठितमं क्वचित्।। विपक्षस्य कृते मुक्तं सिद्ध्यै लाभाय
चात्मन:। कार्तिकस्यार्चनं शुतं मुक्ताभरणमङ्गुलौ।। नोचितं शत्रुभिर्वाद: गौरवं धर्म कर्मत:। तेनासौ भाविनो
विप्रं तत: मोक्षप्रयास्यसि।। द्वितीये चतुर्थे षष्ठे सोमश्चेद् दशमे तथा। अष्टमे वा भवेन्नूनं शत्रुजित सुखमाप्नुयात्।

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगु जी बोले- हे वत्स!



इस कुण्डली वाला जातक धीर, शान्त और उग्र, राजनीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, महान उद्यमी, माता-पिता का भक्त, विवेकी, विद्या-विनय सम्पन्न, अनेक उपाय तथा कठिनाइयों से केवल एक पुत्र पाने वाला, व्यवहार-कुशल, ज्योतिषी, साहित्यिक, दूरदर्शी, कुशल खिलाड़ी, कृष्णवर्णा-स्त्री का पति, अनेक स्त्रियों का भोगी, युद्ध तथा विवाद में स्त्रियों की भाँति भीरु, घर में क्रोधी, चपल, व्यवसायी, कीर्तिमान, चित्रकार, शीघ्र-विज्ञानी, लम्बोदर, मध्यम कद वाला तथा गौरवर्ण होगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में क्रोधी-स्वभाव वाली स्त्री से होगा। भाग्योदय २१, २८ तथा ३७ वें वर्ष में होगा। कुटुम्बियों से प्रेम करने पर भी उनसे द्रोह बना रहेगा। मध्यमायु में नेत्र-दोष तथा वायु-पीड़ा होना सम्भव है। यह धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करेगा। इसके जीवन के ११, २१, २८, ३७, ४२, ५२, ५८ तथा ६३ वें वर्ष उत्तम एवं १५, २४, ३८, ४७, ५३, ६६ तथा ६७ वें वर्ष अनिष्टकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६७ वर्ष की आयु में, कार्तिक शुक्ला दशमी सोमवार को, प्रातःकाल अपने ही घर में होना सम्भव है। इसे शत्रु के साथ विवाद में नहीं पड़ना चाहिए। धार्मिक कृत्यों को करने से इसे सम्मान तथा आत्म-

गौरव का लाभ होगा। संकटकाल में स्वामि कार्तिकेय का पूजन करना तथा मोती धारण करना हितकर रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा इसके बाद अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर मोक्ष प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में यदि चन्द्रमा द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, अत्यन्त सुखी, शत्रुजित्, जल से भीति पाने वाला तथा राज्यमान्य होगा। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ पितः वदस्व कुण्डल्या अस्याभाविनमादित:। पृष्टे दैत्यगुरावेवं भृगुर्वाचमुदीरयेत् भृगुरुवाच ॥ सौभाग्यगुण सम्पन्नः नानाकर्म विशारदः। सुरूपः प्रियदर्शी च धर्मपत्न्या पराङ्मुखः॥ भोगीस्त्रीणां रतौ प्रीतिः गार्हस्थ्ये निपुणः परम्। रुग्णो दम्भी पितृभक्तः धनिकोऽपि तन्नाशकः॥ भोगी मित्र कन्यांपः बन्धुहीनश्च दुर्बलः। सन्ततिर्भाग्यहीनास्य शत्रुवान् कृपणः सदा॥ विवाहश्चास्य द्वाविंशे भार्या च सरुजा भवेत्। भाग्योदयस्य वर्षन्तु षड्विंशैकादशे तथा। एकोनविंशमप्यास्ति दूरंस्थास्यन्ति शत्रवः॥ परं परोक्षवैरुद्ध्यं भविष्यतीति नानृतम्॥ पुत्रद्वयं प्रयत्नेन सेवांतामेव जीवने। करिष्यतः परं भाग्याद्धीनौ तौ संभविष्यतः॥ पौष कृष्णा चतुर्थ्यां च त्रिसप्तति तमे भवेत्। मृत्युः भाग्योदयायास्य नैक विंशतमं तथा॥ षड्विंशञ्चाष्ट त्रिंशे नैक. पञ्चाशतं क्वचित्। चतुः पञ्चाशतञ्चापि द्विषष्ठि सप्तद्वयो स्तथा॥ एकमेकादशञ्चैव नवविंशाष्ट त्रिंशते। त्रयो न पञ्चाशतं तद्वत् एकोनषष्ठि षोडशे॥ सप्तत्रयं तथैवास्मै नेष्टं त्रिसप्तकं सदा। प्रवालरत्न स्वर्णेऽपं धृत्वा सिद्धिमवाप्नुयात्॥ विपदन्नाशनायेष्टं गुरोरर्चन पूजनम्। विप्रोऽपं भविष्ये ऽपि चन्द्रः स्याद्यदि पञ्चमे॥ चतुर्थे नवमे लग्ने दशमे त्वेष संभवेत्। सौम्य मातृ रिपुश्चैवं भाग्यवान् राजसम्मतः॥

कु. ६ | ४ | मं. ७ शु. | ५ सू. बु. | ३ के. | ८ | २ | ९ रा. | ११ श. | चं. १ | १० | १२

भावार्थः शुक्र ने कहा— हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें।
भृगुजी बोले- हे पुत्र! ऐसा जातक अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, सौभाग्य एवं सद्गुणों से युक्त, सुन्दर, लम्बे
क़दवाला, गौर वर्ण, प्रिय-दर्शन, सुरति-प्रिय, अनेक स्त्रियों का भोगी, मन-ही-मन कार्य का विचार
करने वाला, बड़ा पण्डित, गृहस्थ-संचालन में निपुण, पत्नी की ओर से विमुख, रोगी, दम्भी, मित्र
की कन्या से भोग करने वाला, कुचाली, परम विद्वान, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, तेजस्वी, भाग्यहीन,
सन्तति वाला, कृपण, धन होने पर धन खर्च करने वाला, पितृभक्त, कोमलाङ्ग, बन्धु-हीन, इकहरे
शरीर वाला, शत्रुओं से युक्त, बाल्यावस्था में रोगी तथा व्याकुल-चित्त वाला होता है। इसका विवाह
२२ वर्ष की आयु में होगा। यह अपनी स्त्री से द्वेष रखेगा तथा स्त्री रुग्णा बनी रहेगी। इसका
भाग्योदय ११, १९ तथा २६ वें वर्ष में होगा। शत्रु इसका सामना नहीं कर सकेंगे, परन्तु परोक्ष में
विरोध करेंगे। अनेक उपायों तथा कठिनाइयों से इसे केवल एक अथवा दो पुत्रों की प्राप्ति होगी
वे इसकी सेवा भी करेंगे। परन्तु इसकी सन्तानें भविष्य में भाग्यहीन ही सिद्ध होंगी। इसकी आयु की
परमावधि ७३ वर्ष है। पौष कृष्णा चतुर्थी मंगलवार की रात्रि के प्रथम प्रहर में इसकी मृत्यु होना
सम्भव है। इसके जीवन के १, १२, १६, २९, ३८, ४७, ५९, ७० तथा ७३ वें वर्ष हानिकारक एवं
१९, २६, ३८, ४९, ५८, ६२ तथा ७२ वें वर्ष लाभप्रद सिद्ध होंगे। सोने की अँगूठी में मूँगा जड़वा कर
पहनने से कष्ट-निवारण तथा मनोरथों का लाभ होगा। संकट-काल में बृहस्पति का पूजन तथा गुरुवार
का व्रत हितकर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, नवम अथवा दशम भाव में हो
तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, मातृ-विरोधी, पुत्रवान्, भाग्यशाली तथा राजमान्य होता है। यह जातक पूर्व
जन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण ही होगा। इति शुभम्॥

भृ० सं० ३०५ | भा० टी०

ॐ शुक्र उवाच ॥ पृष्टे भविष्यमाचार्य दैत्यानामस्य प्राणिनः । अङ्गिरसोऽब्रवीत् शुक्रमस्या भाग्यफलं शृणु ॥ भृगुरुवाच ॥ स्त्रीणां प्रियोऽपि सौम्योऽयं स्वपत्न्याः स्नेहवञ्चितः । चिकित्सकः सचेष्टस्च काठिन्येनैकपुत्रवान् ॥ शत्रुजित् शास्त्रविद्धीरः तूष्णीं कार्यप्रसाधकः । निरंकुशः सुवक्ता च धर्मकर्मसुखावहः ॥ गृहे वाहनभूम्यादेः भावं स्यात् क्षीणदृष्टिवान् । षड्विंशे त्रयोविंशे विवाहो वा भविष्यति ॥ श्रेयसे जीवने वर्षं चतुर्विंशाष्टविंशके । विंशतश्चोत्तमञ्चास्मै सप्तसप्तदशे तथा ॥ द्वाविंशञ्च षष्ठ्याख्यं द्विषष्ठीञ्चाष्ट त्रिंशतम् । चत्वारिंशाष्ट संख्याकम् तथैवानिष्टहेतवे ॥ द्विचत्वारिंशतं वर्षं सप्तत्रिंशत संख्यकम् । चतुर्विंशति संख्या या चतुःपञ्चाशतं तथा ॥ त्रिषष्ठिं प्राणिनो नूनं अग्निघात कुमृत्युभ्याम् । पौष शुक्ल तृतीयायां षड्षष्ठितमे गृहे ॥ मृत्युकालोऽस्य जीवस्य रात्रौ तीर्थेऽर्कवासरे । शम्भोःपार्थिव पूजाञ्चै पुष्परागस्य धारणम् ॥ उत्तमं द्विज पूर्वस्य इह भार्या विरोधतः । द्विजाऽग्रे युक्त वैधुर्यः सोमो यदि स्थितो भवेत् ॥ तृतीये सप्तमे चैवं चतुर्थे दशमेऽथवा । अस्यान्तु क्रमशो भूयात् सुखी सौम्यः स्त्रियो जयी ॥ धनाधीशोऽपि लोकेस्मिन् नृपाणां प्राप्नुयात् यशः । देशाटने रुचिस्तस्य सत्यमेतन्न संशयः ॥

६ बु.	५ सू. शु.	४
७ गु.		३ के.
८ मं.		२ चं.
९ रा.	११ श.	१
१०		१२

भावार्थ: शुक्र ने कहा — हे पिता ! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले — हे पुत्र ! यह जातक प्रतापी, प्रभावशाली, अत्यन्त सुन्दर, स्त्रियों को प्रिय, परन्तु अपनी स्त्री से विरोध रखने वाला, विवेकी, उद्यमी, चेष्टावान्, व्यवसायी, चिकित्सक, कठिनाई से एक पुत्र पानेवाला, शत्रु-नाशक, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, सुन्दर स्वरूपवान्, नीति-निपुण, व्यवहार-कुशल, बन्धु-बान्धवों से युक्त, महाधनी, विचारक, गम्भीर, शान्त, गुप्त-योजनाओं का निर्माता, निरंकुश, अनेक स्त्रियों का भोगी, सफल वक्ता, धर्म-कार्य से [illegible] करनेवाला, गृह, भूमि-वाहनादि से युक्त, चतुर तथा सुलक्षण होगा ।

आयु के मध्यभाग में इसे दृष्टि-दोष होगा। विवाह २३ अथवा २६ वें वर्ष में होगा। भाग्योदय २०, २४ तथा २८ वें वर्ष में होगा। जीवन के ७, १७, २२, २९, ३८, ४८, ६० तथा ६२ वें वर्ष में ०६ तथा २४, ३७, ४२, ५४ एवं ६३ वें वर्ष नेष्ट सिद्ध होंगे। यह ६६ वर्ष की आयु प्राप्त करेगा। चैत्र शुक्ला ३ रविवार को रात्रि के तीसरे प्रहर में, अपने घर या अथवा किसी तीर्थ-क्षेत्र में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। संकट निवारणार्थ पुरवराज धारण तथा शिव का पार्थिव-पूजन हितकर रहेगा। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था, इस जन्म में स्त्री-विरोधी होने से अगले जन्म में पुनः ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर विधुर बनेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, दशम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः अत्यन्त सुन्दर, धनी, परम सुखी, स्त्री-जित, राजतुल्य धनी तथा देशाटन करने वाला होगा। इति शुभम्॥

७ गु.	६ सू. बु.	५ शु.
८ मं.		४
९ रा.		३ के.
१० चं.	१२	२
११ श.		१

ॐ शुक्र उवाच॥ बोद्धुमिच्छाम्यहं तात फलादेशं वदस्व मे। भृगो रुक्तिरियं तस्मै शृणु वत्स मदीरितम्॥ भृगु उवाच॥ अस्याः योगेन जीवोऽयं साहसी परमं भवेत्। कालरूग्ण: प्रतापी च धीमान् पुष्पवपुस्तथा॥ सौम्यो व्यक्तिवान् दम्भी वंशक्षीणश्च सत्यवान्। शत्रुहन्ता प्रपक् वन्द्यो निष्णातं म्लेच्छभाषिणाम्॥ एकदाक्षीण वित्तोऽयं कदाचित्पश्यतोहर:। सम्मानितो धनाधीशं भार्यां प्राप्स्यति धार्मिकाम्॥ एकविंशति वर्षे च वर्षे सप्तदशेऽथवा। वार्द्धक्ये विनजीवी च नष्ट सन्ततिरात्मन:॥ द्विचत्वारिंशते वर्षे चतुःविंशति संख्यके। चतुर्विंशति वर्षे च भाग्यस्योदय मादित:॥ माघ शुक्लाष्टमी चास्य अघोरवधिरन्तिमा। अष्ट षष्टितमे वर्षे जीवनात्साद कारकम्। पञ्चमसप्तमस्चाग्रैकविंशात्येक षष्ठिक:। द्विचत्वारिंशतं तद्वत् चतुर्विंशति संख्यकम्॥ चतुःत्रिंशत संख्याया त्रिपञ्चाशत संख्यकम्। घातकानि च वर्षाणि षष्ठाष्टादश संख्यके॥ नवविंशतमञ्चाब्दम् चत्वारिंशत संख्यकम्। द्विपञ्चाशत् त्रिषष्ठ्यारव्ये अष्टषष्ठितमं सदा॥ श्रेयसे मौक्तिकयुतं शुक्रं विपदि पूजयेत्।

क्षत्रियः पूर्वयोनौ च शूद्रो चाऽग्रिम जन्मनः ।। चन्द्रोऽस्यां यदितिष्ठेत्तु द्वितीये पञ्चमेऽथवा। नवमैकादशे तद्वत् सप्तमे क्रमशो भवेत् ।। धनाढ्यः पुत्रयुक्तश्च उद्यमी भाग्यवान्नपि। सर्वतो धनमाप्नोति ग्रहाणां फलमीदृशम् ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे नाथ ! मैं इस कुण्डली का फलादेश सुनना चाहता हूँ, कृपया कहिए। तब भृगुजी बोले - हे शुक्र ! इस कुण्डली वाला जातक अत्यन्त साहसी, बाल्यावस्था में रोगी, नेत्र-कष्ट से दुःखी, प्रतापी, मेधावी, पुत्र-पौत्रादि से रहित, भाइयों से अलग रहने वाला, सुबुद्धिमान्, हृष्ट-पुष्ट, कान्तिमान्, नाममात्र को शीलवान्, पवित्र, सत्यवादी, महापण्डित, व्यक्तित्व सम्पन्न, परदेश-गमन में रुचि रखने वाला, सुखी, सुन्दरी भार्या का पति, धनी, सम्मानित, उद्यमी, उत्साही, एक बार अपने सम्पूर्ण धन को गँवा देने वाला, रोगी, व्यर्थ-बार में खर्च करने वाला, दम्भी, बलहीन, शत्रु-नाशक, कुलक्षयी, दंभियों का मित्र, यदा-कदा चौर-वृत्ति में भी कुशल, विद्यावान् तथा म्लेच्छ भाषा का जानकार होता है। इसकी पत्नी परमसुन्दरी एवं धर्मशीला होगी। इसका विवाह २१ अथवा १७ वर्ष की आयु में होगा। सन्तानें होकर नष्ट हो जाऐंगी। वृद्धावस्था में स्वोपार्जित धन से सुखी रहेगा। कुटुम्बियों से द्वेष बना रहेगा। इसका भाग्योदय २४, ३४ तथा ४२ वें वर्ष में होगा। माघ शुक्ला ८ बुधवार को रात्रि के द्वितीय प्रहर में, उदर-विकार के कारण, अपने ही घर में, ६८ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन में ६, १८, २९, ४०, ५२, ५७, ६३ तथा ६८ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे तथा ५, ९, १७, २१, २४, ३४, ४२, ५३ तथा ६१ वें वर्ष उत्तम एवं लाभकारी सिद्ध होंगे। इसे अपनी उन्नति के लिए चाँदी की अँगूठी में मोती जड़वाकर धारण करना चाहिए। विपत्ति के समय शुक्र का व्रत एवं अनुष्ठान हितकर रहेगा। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में शूद्र-कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः पूर्णधनी, पुत्रवान्, व्यवसायी, भाग्यवान् तथा अनेक प्रकार से धन-लाभ करने वाला होगा। इति शुभम् ।।

भृ० सं० ३०४८ भा० टी०

ॐ शुक्र उवाच ॥ वद त्वं नाथ फलं भृगुमुक्तवान् । रहसि स भृगुणा परितोषितः ॥ भृगु उवाच ॥ भवति कुण्डलि-जः कवि धार्मिको प्रियजनश्च दुखी कृपणेः सदा ॥ अस्या जातो जनो वाल्ये रुग्णः शत्रुजयी तथा । सन्तत्याः खिन्नचित्तश्च बन्धुहीनः कलाप्रियः ॥ दुर्बलो दीर्घदेही च कार्पण्ये ऽपि दृशां प्रियः । कृशभार्या च गौराङ्गी तयाष्टा-दश संख्यके ॥ अविलासस्तयस्य सम्बन्धः पितृस्नेहेन वञ्चितः । यत्नतः कन्यकैवास्य सूनुस्तु कुलनाशकः ॥ शव-सृवेशो ऽपि क्षीणो ऽस्य स्त्रीष्वासक्तिर्विशेषतः । षोडशैक विंश संख्यापाः अष्टाविंशति संख्यके ॥ वर्षे भाग्योदय ञ्चास्य आधारवर्जितमा । माघ शुक्ल दशम्यां च एक सप्तति संख्यके ॥ विजने सहसा नूनं जीवनोदय

मं. च. गु.	७ / ६ सू. बु.	५ शु. / ४
८ रा.		३ के.
१०	११ श. / १२	१ चं. / २

कारकम् । सप्तमष्टादशे वर्षे एक त्रिंशाष्ट विंशके ॥ चत्वारिंशत् तत्राब्द मष्टपञ्चा-शतं तथा । द्विचत्वारिंशतञ्चैवं अष्टषष्ठितमं शुभम् ॥ वर्षाण्येतानि जीवाय घातकानि भवन्ति वै । पञ्चमैकादशे विंशं द्वात्रिंशं सप्तति तथा ॥ नवत्रिंशत संख्याकम् नवपञ्चाशतं क्वचित् । अष्ट त्रिंशत माब्दं च एक सप्ततिकं सदा ॥ आदित्यार्चन पूजा च मुक्ताहीरक धारणम् । विपत् घातकञ्चास्मै सक्तत्वै नीलकं शुभम् ॥ पुरा क्षत्रिय वंशस्य: भविष्ये द्विजकन्यका । भूत्वा सा व्यभिचार स्य कुशला स्यात्पुंश्चारिका ॥ द्वितीये पञ्चमे वास्य चतुस्यादष्टमे ऽथवा । नवमे वा मध्यमो वित्ते धार्मिको जल भीतिवान् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा — हे नाथ! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे तात! इस कुण्डली वाला जातक विलासी, नीति-निपुण, स्वजन-प्रिय, कवि, धर्मात्मा, दानी, वेद-मार्ग में स्थित, संगीत-प्रिय, लोक-प्रिय, शत्रुजित, कीर्तिमान, बाल्यावस्था में रोगी, सन्तान से दुःखी, कोमल, सत्यवादी, महान् व्यक्तित्व सम्पन्न, कृपण, एक बार धन हानि पाने वाला, भाई-बन्धुओं से रहित, लम्बे क़द वाला, गौरवर्ण, वायु-

विकार युक्त, उदारता से धन खर्च न करने वाला, दम्भी, ठाठ-बाट से रहने वाला, कुल-नाशक, पुत्र-पौत्रादि से हीन, दुर्बल स्त्री से युक्त, कठिनाई से एक पुत्र तथा एक पुत्री पाने वाला एवं पितृ-सुख-हीन होता है। इसे गौरवर्णा, धार्मिक विचारवाली, सुन्दरी तथा कृशाङ्गी पत्नी १८ वर्ष की आयु में मिलेगी। ससुराल-पक्ष में श्रीमान् लोग होंगे। परस्त्रियों में इसकी आसक्ति रहेगी। इसका भाग्योदय १६, २१ तथा २८वें वर्ष में होगा। इसके जीवन में ७, १८, २१, २८, ४०, ४२, ५८ तथा ६८वें वर्ष लाभप्रद तथा ५, ११, २०, ३२, ३६, ४८, ५६, ७० एवं ७१वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। इसकी मृत्यु माघ शुक्ला १० सोमवार को किसी एकान्त स्थान में, आकस्मिक एवं सामान्य रोग से ७१ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। सन्तान-प्राप्ति के लिए नीलम धारण करना तथा अरिष्टनिवारणार्थ हीरा अथवा मोती धारण करना उचित है। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण-कन्या के रूप में उत्पन्न होकर व्यभिचार-कर्म में प्रवृत्त होगा। इस कुंडली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा नवम भाव में हो तो जातक क्रमशः सामान्य धनी, पुत्रवान्, जल से भय पाने वाला तथा धार्मिक विचारों का होगा॥ इति शुभम्॥

८ गु.	७ सू.	६ बु.
मं. ९ रा.		५ शु.
१०	४	
११ श.	१	३ के.
१२		२ चं.

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्याकाल भविष्येकिमुच्यतां गीष्पतिस्तत:॥ भृगुरुवाच,

भृगुरुवाच जातोऽस्यां शूरो वीर: प्रतापवान्॥ व्याकुल: क्रूर कर्मा च दानीश्रेष्ठ: कुबुद्धिमान्। खिन्न परोदया चौर: राजबन्धन योगिक:॥ ऐश्वर्येऽपि न तुष्टोऽपि परै: मानमवाप्स्यति। विद्वान् बन्धुप्रियश्चायं भ्रातृ जायापतिस्तथा॥ हीन सन्तति पुत्राश्च स्वजना: हितकारक:। विधिवेत्तास्य सम्बन्ध: परस्त्रीभिर्भविष्यति॥ विवाहश्चास्य सन्दिग्ध: पञ्चादशतमेऽथवा। भाग्योदयोऽस्यं सन्तत्या पंचचत्वारिंशालके॥ पञ्चमी मार्गशीर्षस्य कृष्णपक्षस्य मृत्युवे। मध्यमे कोन पञ्चाशे जीवनोत्कर्ष हेतवे। पञ्चादश त्रयोविंशे सप्तविंश पञ्चाशते। अनिष्टानि च वर्षाणि त्रिंशमष्टा दशं

तथा ॥ एकादशं चतुर्विंशं द्वात्रिंशत् चतुर्दशे । षड्त्रिंशं सप्तविंशञ्च घातकं परमं सदा ॥ पन्नकं धारये-त् सिद्धये प्रवालोपररत्नकम् । निन्द्यो ऽयं क्षत्रियः पूर्वं पिशाचाग्रिम जन्मनः ॥ तृतीये सप्तमे लग्ने दशमे वास्य चन्द्रमा । तदा शान्तो धनी धीरः स्त्री-लम्पटश्च सम्भवेत् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे प्रभो ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन- फलादेश कहिए । भृगुजी बोले- यह जातक अल्पायु, बलवान्, शूर-वीर, दानी, स्वजनों से प्रीति रखने वाला, प्रतापी, श्रेष्ठ, व्याकुल, क्रूरकर्मी, पराई-वृद्धि से ईर्ष्या करने वाला, असन्तोषी, चिन्तित, ऐश्वर्यशाली, स्वस्थान में रह कर प्रसन्नता तथा परदेश में प्रतिष्ठा पाने वाला, कृपण, भीरु, पशु-संग्रही, विद्वान्, रूपवान्, बन्धु-प्रिय, भाई के घर की स्त्री का पति, बन्धु-प्रेमी, चौर वृत्ति वाला, राज-बन्धन पाने वाला, मलिन-बुद्धि सन्तान का पिता, दण्डी, शस्त्र तथा जल से हानि पाने वाला, कानून का जानकार तथा भाग्यहीन भी होता है । यह स्वजनों को सताता भी है, परन्तु इसके प्रताप एवं प्रभाव के समक्ष सब दबे रहेंगे । इसका विवाह कठिनाई से ही होगा, यदि हुआ तो १५ वर्ष की आयु में ही हो जाएगा । पर-स्त्रियों से इसका सम्बन्ध रहेगा । भाग्योदय ४५ वर्ष की आयु में सन्तान के द्वारा होगा । मार्गशीर्ष कृष्णा ५ शनिवार को अपराह्न के समय, ५८ वर्ष तथा ६ मास की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है । इसके जीवन के ११, १४, १८, २०, २४, २७, ३२ तथा ३६ वें वर्ष अत्यन्त हानिकारक तथा १५, २३, ३७, ४५ एवं ५० वें वर्ष लाभप्रद रहेंगे । मूँगा तथा पन्ना धारण करना लाभप्रद रहेगा । यह जातक पूर्वजन्म में निन्द्य- कर्म करने वाला क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में पिशाच योनि प्राप्त करेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः शान्त, गम्भीर, स्त्री-लोलुप, धनी तथा उद्यमी होता है ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ कथं चास्यति जीवस्य अस्यां जातस्य मे वद । वाचस्पति एवाचैवं श्रुत्वा दैत्यगुरोः वचः ॥ भृगु उवाच ॥ अस्यां कुण्डलिनो जीवः कृष्णचेता च द्रोहवान् । ईर्ष्या पाखण्ड युक्तश्च क्रुद्धो धर्म पराङ्मुखः ॥ प्रतापी तेज सम्पन्नः दैत्यकर्म्येर्ण सिद्धये । भार्या देवरासक्ता च स्त्री जिदात्म समः सुतः ॥ चौर कर्मार्जितो द्रव्यम् भार्याचास्मै प्ररोदयेत् । पितृ द्रव्येषु वान्नित्यं तस्याः वृत्तिर्भविष्यति ॥ राजद्रोहेऽपि जेतायं प्रबुद्ध दारा प्रभावतः । क्षीण तेजः शनैश्चायं भिक्षुवज्जीवनं वहेत् ॥ त्रिषष्ठितम वर्षायौ पत्निकं प्रवान वत्तरा । अक्षयन् कृष्ण षष्ठ्यान्च सप्तषष्ठितमे स्वयं ॥ पौषमासे भवेन्मृत्युः ब्रह्मराक्षसतां व्रजेत् । पूर्व जन्मनि सोऽयं पुरोः सर्पस्य दोषतु ॥ दुर्गतिस्यात्तथा सर्व जीवने नष्ट कारकम् । एकादशं त्रयोविंशं पञ्चविंशात्मकं तथा ॥ द्विचत्वारिंशतञ्चैवं पञ्चाशततमं क्वचित् । द्वि न पंचाशतं वर्षं अष्टादशतमं तथा ॥ सर्वघातिप्रदं वर्षं शुभं चतुर्थ सप्तमे । पञ्चादशं तथैवास्मै वर्षं सप्तदशं क्वचित् ॥ माणिक्य धारणञ्चैवं गुरु शाप विमोचकम् । मुक्तमस्मै शुभायैव यदि लग्ने च चन्द्रमा ॥ द्वितीये सप्तमेवास्यात् चतुर्थे दशमे तथा । कारयेत् शान्ता गम्भीरो राजमान्ये धनाधिपम् ॥

च गु.	शु बु ६	५
मं. ८ रा.	७ सू.	४
१० चं.		
श. ११	१	३ के.
१२		२

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे प्रभो ! इस कुण्डली का फलादेश कहने का कष्ट करें ! भृगु मुनि बोले – हे शुक्र ! इस कुण्डली वाला जातक मलिन-चित्त, कुवेषी, ईर्ष्यालु, परद्रोही, पाखण्डी, कुकर्मी, क्रोधी, प्रतापी, तेजस्वी, धर्म-विमुख, अपना पराक्रम बढ़ाने के लिए राक्षसी वृत्ति से धर्म-कर्म करने वाला तथा स्त्री-जित होगा। इसकी स्त्री अपने देवर में आसक्त रहेगी। इसे केवल अपने ही जैसा एक उग्रवीर्य पुत्र प्राप्त होगा। यह जातक चोरी द्वारा भी धन-संचय करेगा। इसकी स्त्री पर-कुल एवं अपने पितृ-कुल से धन का संचय करेगी तथा इसकी बुद्धि पर रोयेगी। यह अनेक मुकद्दमों में राज्य

भृ०
सं०
४८३

भा०
टी०

के विरुद्ध विजयी होगा। यह ४६ वर्ष की आयु में किसी शूद्रवर्ण वाली स्त्री के सम्पर्क-दोष के कारण इसका प्र-ताप एवं प्रभाव नष्ट हो जाएगा। तत्पश्चात् भिक्षुक जैसा जीवन व्यतीत करेगा॥ ६३ वर्ष की आयु में यह अपनी पत्नी तथा पुत्रों द्वारा निरादर सहित दिए गए भोजन को ग्रहण करेगा। पौषकृष्णा ६ मंगलवार को ६७ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। अगले जन्म में यह ब्रह्मराक्षस होगा। पूर्व जन्म में यह प्रतापी राजा था। परन्तु गुरु एवं सर्प के दोष तथा शाप वश इसे यह दुर्गति प्राप्त होगी। इसके जीवन के ११,१४,१८,२३,२५, ३२,४२,४८ तथा ५२ वें वर्ष अत्यन्त कष्टप्रद तथा ४,७,१५ एवं १७ वें वर्ष शुभ सिद्ध होंगे। गुरु-शाप विमोचनार्थ रुद्रजपादि करना उचित है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः शान्त, गम्भीर तथा धनी, शूर्, सुखी, सुन्दर एवं राजमान्य होगा। इति शुभम्॥

८ गु०	६ शु०		
९ मं० रा०	७ सू० बु०	५	
१०	४		
११ श०	१ चं०	३ के०	
१२	२		

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णितज्जीवनमस्याः कुण्डल्याः शुक्र रुक्तवान्। सुराचा-र्योऽपि तत्पृष्टे वर्णयामास तत्फलम्॥ भृगुरुवाच॥ कफरुग्णश्च धर्मात्मा गोविप्रा-दित्य सेवकः। अन्येषाञ्च कृपापात्रम् चित्रवाक् सुख संयुतः॥ धीरश्च सलिलस्नेही सहिष्णुं कष्ट सम्पदाम्। यशस्वी शुद्धवसनः स्वस्त्रिया शत्रु पराहृतः॥ पापात्मा धनलुब्धा च क्रूरा दारास्य भाविनी। अष्टषष्ठितमे शुक्ले एकादश्यां प्रश्वासतः॥ मार्गशीर्षस्य रात्रौ च मृत्युं यास्यति ब्राह्मणान्। भोजयिष्यति दीनोऽपं धर्मेण कूप मन्दिरे॥ धर्मशालादि निर्माय देशाटनप्रियस्तथा। दुर्जनैः निन्दनीयो ऽपं शुभकर्म व्ययी सदा॥ कलाप्रियः सतां बन्धु व्ययी अन्येषु दुःखभाक्। सुकर्म व्ययया-पत्यः जीवनानन्द वाहकम्॥ सप्तमैकादशे वर्षे सप्तदशाष्टविंशके। द्विचत्वारिंशत वर्ष पञ्च त्रिंशति संख्य-कम्॥ षड्पञ्चाशतञ्चाग्रे त्रिषष्ठ्यात्मक संख्यकम्। तथा नेष्टप्रदं वर्षं त्रयोदशैकविंशके॥ नवविंशाष्ट

त्रिंशे च सप्तपञ्चाशतं तथा । षड्चत्वारिंशतं वर्षे त्रिषष्ठि षड् षष्ठिके ॥ आपत्नष्टुमसौ कुर्यात् अर्चनं शंकरस्य वा । हीरकं धारयेदेष पूर्वमासीत् गुहप्रिय: ॥ क्षत्रियश्चाग्रिमे योनौ द्विजो भूत्वा तरिष्यति । अस्याञ्चन्द्रो भवेल्लग्ने पञ्चमे सप्तमे ऽथवा ॥ दशमे वा क्रमश: सौम्य: भाग्यवान् सुपुत्रवान् । स्त्रिया धर्म्या च युक्तोऽयं तथा राजसमो धने ॥

भावार्थ: भृगु ने कहा – हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा कीजिए । भृगुजी बोले – हे वत्स! यह जातक कफ-विकारी, सत्यवादी, देव-पूजक, स्वधर्म-रत, स्त्री-विलासी, गो-ब्राह्मण भक्त, विचित्र-वाक्य बोलने वाला, राज-सेवक, अन्य जनों का कृपापात्र, सुखी, जलक्रीड़ा प्रेमी; उद्यान, वापी, नदी तट पर विहार करने वाला, पुण्यात्मा, यशस्वी, नवीन-वस्त्र धारण करने वाला, अपनी स्त्री से शत्रुता रखने वाला, पाप-कर्म में तत्पर एवं धन-लोलुप, क्रूर एवं खल स्वभावा परस्त्री में अनुरक्ति रखने वाला होगा। ६८ वर्ष की आयु में श्वास-कास रोग से, मार्गशीर्ष शुक्ला ११ रविवार को, रात्रि के चतुर्थ प्रहर में इसकी मृत्यु होना सम्भव है । सामान्यत: यह जातक अतिथि एवं ब्राह्मणों का सेवक, धार्मिक प्रवृत्ति के कारण शीत स्वभाव वाला; कूप, बावड़ी, धर्मशाला, मन्दिर आदि का निर्माण कराने वाला, योगाभ्यासी, देशाटनी, दुर्जनों द्वारा निन्दित, विवाहादि मङ्गल-कृत्यों एवं साधु-सङ्गति में धन खर्च करने वाला, यमधनी, रथ-वाहनादि से युक्त, सज्जनों से प्रेम करने वाला, कुशल-कार्यकर्ता, अधिक खर्च करने वाला, वन में दु:ख पाने वाला, दुर्बल शरीर वाला तथा तीर्थचारी होगा । इसकी सन्तानें विहित-कर्म से पराङ्मुख होंगी । इसके जीवन के ७, ११, १७, २८, ३५, ४२, ५६ एवं ६३ वें वर्ष उत्तम तथा १३, २१, २८, ३८, ४६, ५७, ६३ और ६६ वें वर्ष हानिकर रहेंगे। संकट के समय शिव-पूजन तथा हीरा धारण उचित रहेगा। यह पूर्वजन्म में गुहभक्त क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर वैकुण्ठवासी होगा । इस कुण्डली में ... जातक

क्रमशः परम सुन्दर, भाग्यवान्, सुपुत्रवान्, धर्मात्मा स्त्री का पति तथा राजा के तुल्य धनी होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ ज्ञातुमिच्छाम्यहं भाग्यमस्या भाषस्व मे पितः । कथयामास शुक्रं तत् भृगुरस्या फलं क्रमात् ॥ भृगु उवाच ॥ राजमान्यः सुशास्त्रज्ञः स्थिरधी शत्रुनाशकः । धर्मजीवी सुखी गौरः पुत्रकन्यायुतस्तथा ॥ शाक मिष्ठान्नयोः प्रीतिः श्लेष्मयुक्तः परैः क्षतः । विवाहोदष्टादशे वर्षे गोधूमवर्णकन्यया ॥ गृहैवास्याष्ट षष्ठ्यायौ कफाज्जीर्ण विकारतः । पशोः पादस्पघातेन दशम्यां माघशुक्लयोः ॥ मृत्युं प्राप्स्यति रात्रौ च ततोपवासवान् सदा । तीर्थस्थः शास्त्रविद्वो ऽयं ख्यातो ब्राह्मण देवसु ॥ श्रुति स्मृत्यादि सम्बन्धे धनं दास्यत्युदाराः । गृहभूमिपतिः शास्त्र-

रा. ९ मं. | ७ बु. | ८ सू. गु. | ६ शु. | १० | ११ श. | ५ | चं. ४ | १२ | २ | १ | ३ के.

-त अनन्याविषमयान्वितः ॥ कृशकायः परैः खिन्नः कोमलाङ्गश्च रत्नभू । सात्मजः पूर्वयौनौ च विप्रश्चाग्रे ऽपि ब्राह्मणः ॥ जीवनं घातकान्यस्मै सन्ति वर्षाण्यशेषतः । अष्टमैकादशे सप्तदशं सप्तपंचाशतम् ॥ त्रिन पञ्चाशतं वर्षं पञ्चत्रिंशत संख्यकम् । अष्ट षष्ठ्येक षष्ठ्याख्ये षड्विंशति तमं तथा ॥ उत्तमानि च वर्षाणि अष्टादश त्रयोदशे । चतुर्विंश तथा वर्षं पञ्चमं सप्तत्रिंशतम् ॥ नवविंशति संख्यायाः नैक पञ्चाशतं क्वचित् । द्विचत्वारिंशतञ्चाब्दं चतुःपञ्चाशतं तथा ॥ पञ्चषष्ठि तमञ्चास्मै विष्णोः पूजनमुत्तमम् । धारणं पुष्परागस्य विपद्हेतो च चन्द्रमाः ॥ चतुर्थे पञ्चमे स्थाने द्वितीयेकादशे ऽथवा । सप्तमाष्टमयोर्वास्यात् नवमे क्रमशः फलम् ॥ धनाढ्यः सुख युक्तश्च बलधी स्त्रीप्रियः सदा । जलाद् भीतश्च शुभ्रादौ कुर्याद् वस्तुषु चार्जनम् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । यह सुनकर भृगुजी बोले – हे पुत्र ! यह जातक क्रोधी, राजमान्य, गुणी, शास्त्र-कथा-प्रिय, शत्रु-नाशक, यशस्वी, स्थिर-बुद्धि, पुण्यधिती, धर्म विधि से लाभ पाने वाला, देव-गुरु-भक्त, अनेक पुत्र-पुत्रियों से युक्त, पण्डित, सुखी,

विविध प्रकार के भोगों का उपभोग करने वाला, शाकाहारी, मिष्ठान्न-प्रिय, चतुर-वार्ताकार, गेहुँए रंग का तथा १८
वर्ष की आयु में सुन्दरी पत्नी प्राप्त करने वाला होगा। यह अन्यों से विरोध पाने वाला तथा श्लेष्म-विकारी होगा।
६८ वर्ष की आयु में, माघ शुक्ला दशमी को रात्रि के समय, अपने ही घर में, कफ-विकार, भोजन-विकार अथवा
पशु के पदाघात के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। यह व्रतोपवासी, तीर्थाश्रयी, पुरुषार्थी, शास्त्रागमी,
सुप्रसिद्ध; ब्राह्मण, देवता, श्रुति-स्मृति आदि के हेतु धन खर्च करने वाला, साहसी, गृह-भूमि का लाभ पाने
वाला, शस्त्र तथा अग्नि से भय पाने वाला, वाहनादि-सम्पन्न, विरोधियों से दुःखी, कृशकाय, कोमलाङ्ग, रत्न-
धारण करने वाला, वाणीकार तथा पुत्र-कन्यादि से युक्त होगा। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले
जन्म में भी ब्राह्मण-कुल में ही जन्म लेगा। इसके जीवन के ८, ११, १७, २६, ३५, ४०, ५०, ६१ तथा ६८वें
वर्ष हानिकारक एवं ५, १३, १८, २४, २९, ३७, ४२, ४९, ५४ तथा ६५वें वर्ष लाभदायक रहेंगे। सङ्कट के समय
विष्णु-पूजन तथा पुखराज-धारण हितकर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ, पञ्चम, अ-
ष्टम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः पूर्ण धनी, सुखी, अस्थिर-मति, स्त्री-प्रिय,
जल से भय पाने वाला, भाग्यवान् तथा चाँदी अथवा श्वेत-वस्तु के व्यवसाय से धनी बनेगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ अथं शुक्रोऽपृच्छत् वदतु फलमस्याः सुरगुरोः। भृगुस्तच्छ्रुत्वैव वदति सहसा सज्ज्योतिर्विज्ञानी परि-
भाविनि कथाम् ॥ भृगु उवाच ॥ धनाढ्योऽयं जीवः पटुतरकविः शास्त्रनिपुणः। गृहभूम्याश्वयुक्तश्च पतिरेकस्याः
जनपुतः श्रीपतिरपि ॥ मध्यमो वपुषा गौरः राजमान्योऽटने रुचिः। स्वधर्मे वीतरागोऽयं कलाकारः पटुः सुधी ॥ व-
द्धपोरपि ॥ स्त्रीणां प्रियश्च सत्येन हीनदृष्टिस्तपांसवान्। स्योकित रक्षण सन्नद्धः पितृभ्यां लभते बलम् ॥ तथापि पितृ-
क्तारिजित् प्रतापी च धनाधीशः प्रदर्शकः। स्त्रीस्यादष्टादशे वर्षे चतुर्विंशेऽथवास्य वै ॥ बहुपुत्रक योगोऽस्य परं द्वौ
विद्वेषी सुरूपा व्यत्यया ऽथवा।

तेषु सेवकौ । भाग्योदयस्य वर्षञ्च सप्तविंशति सरव्यकम् ॥ एकविंशन्नवत्रिंशं गुल्मेण सिरसो रुजा । फाल्गुन शुक्ला-

छम्यान्च अष्टषष्ठितमान्दके ॥ मृत्यु योगो ऽस्य जीवस्य अपमृत्युकरं तथा । पञ्चमैकादशे तद्वन् त्रयोविंशत्रिष-

ष्ठिकम् ॥ अष्टपञ्चाशतञ्चैव षड्त्रिंश षड्विंशयो: । हीरकं धारयेत् वरुणं पूजयेदार्तिनाशनम् ॥ विप्रजोऽयं

क्षत्रियाणां स्याद्विप्र एव पूर्वत: । अस्या ञ्चन्द्र: स्थितश्चैवं द्वितीये नवमे ऽथवा । चतुर्थे दशमे षष्ठे द्वादशे वास्तु

श्वासत: । रुग्ण: स्वमृत्युरियो भीत: जत्पात भाग्याधिपो व्ययी ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस जातक की कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा

	९ श.	७ शु.	
१० मं.	८ सू. बु. गु.		६
११ रा.			५ चं.
१२	२		४
	१	३ के.	

करें । तब भृगुजी बोले - हे शुक्र! यह जातक अत्यन्त चतुर, धनी, ऐश्वर्यशाली, देस-परदेस में भ्रमण करने वाला, विद्वान्, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, राजनीतिज्ञ, कवि, ज्योतिषी, कर्मकाण्डी, बड़े कुटुम्ब वाला, लोक-व्यवहार में कुशल, गौरवर्ण, मध्यम क़द वाला, राज मान्य, श्रीसम्पन्न, गृह-भूमि-वाहन युक्त, दो स्त्रियों का पति, अथवा एक स्त्री का पति और अनेक स्त्रियों से विहार करने वाला, उद्यमी, बाँये कंधे तथा दाँये नेत्र में दृष्टि-दोष वाला, स्त्रियों को प्रिय, स्वधर्म-कर्म में उपेक्षा भाव रखने वाला, चतुर, चित्रकार, सामान्य क्रोधी, विवेकी, सफल वक्ता, जनसमूह में विद्वान् माना जाने वाला, शत्रु-नाशक, प्रतापी, उदार, द्रव्य-संग्रही, ठाठ-बाट में धन खर्च करने वाला, बात का धनी, प्रबुद्ध, वातरोगी, माता-पिता से लाभ पाने में कुशल, परन्तु पिता का विरोधी होता है । इसका विवाह १८ तथा २४ वर्ष की आयु में परम सुन्दरी स्त्री के साथ होगा । इसके कई पुत्र होंगे, जिनमें से दो इसकी सेवा करेंगे । भाग्योदय २१, २८ तथा ३८ वर्ष की आयु में होगा । इसकी मृत्यु कैंसर रोग के कारण फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, रविवार को प्रात: काल ६८ वर्ष की आयु में होना सम्भव है । इसके जीवन में ५, ११, २३, २६, ३६, ५८ तथा ६३वें वर्ष हानि

तथा अपमृत्यु कारक होंगे। हीरा धारण करने तथा वरुणदेव का पूजन करने से संकट दूर होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में क्षत्रिया के गर्भ से ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में यदि चन्द्रमा द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो जातक क्रमशः श्वास-कास का रोगी, बहिनों का प्रिय, रोगी, जल से भय पाने वाला, भाग्यवान् तथा खर्चीला होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अतोऽस्य जीवस्य प्रभो भविष्यं ग्रहमण्डलस्थं वद मे तदैव॥ भृगुरुवाच॥ निशम्य शुक्रं भृगुरब्रवीत प्रभावशाली च विवेकशील:॥ जातो जनोऽस्यां भवतीति तद्वत् प्रतापवान् नीतिपटुस्तथैव, दयान्वितो धर्मरतो धनाढ्य: सुपुत्रक: गौरतनु: कलावित्॥ राज्याश्रयाद् वृद्धिमवाप्नुयात्तत् कारागृहस्यापि च तत्र योग:। विपश्चित: शत्रुहरश्च धर्मे मन्देति नूनं मतिरस्य भूयात्॥ पुत्रं चतुष्टयं तनुजा त्रयञ्च विद्याविनम्रश्च सुतैकसेव्य: सुशिक्षिता रूपवती च भार्या कृशोदरी गौरतनुश्च वर्णे॥ पञ्चाधिके विंशति संख्यके मिलेत् देशाटनी. तत्र धनार्जन प्रिय:। ऐश्वर्य गेहास्थित भूमिस्वामी चलोऽपि व्यक्तित्वमय प्रधानात्॥ भाग्योदय: सूनुरवाप्य नन्तरं भविष्यति त्रिंशतमे त्रिन्यूने। अन्यानि भाग्योदयकारकाणि निम्नानि वर्णोऽपि प्रचोदितानि॥ चतुर्पञ्चाशतं वर्षं अष्टत्रिंशत संख्यकम्। त्रिचत्वारिंशत ञ्चास्मै घातकान्यपि श्रूयताम्॥ अष्टमेकादशे वर्षे अष्टादशञ्च त्रिंशकम्। एकोनषष्ठितमञ्चैव द्विपञ्चाशत संख्यकम्॥ त्रिषष्ठि संख्यकं वर्षं भवधिरयस्य प्राणित:। चतुर्थ्यां कार्तिकस्यास्ति शुक्लस्य व्रण घातत:॥ क्षत्रियां द्विजोत्पन्न पुरासीदेष भाविन:। शूद्रोऽल्पजीवमानोऽयं नीलमं धारयेत् पुन:॥ आदित्यार्चनञ्चास्मै फलदञ्चन्द्रमा: यदि। तृतीये पञ्चमे लग्ने सप्तमे दशमे गृहे॥ स्याद्दुष्कर्मी कुप्रवृत्ति: अल्पहृ: स्त्रीप्रियस्तथा। सामान्यत: चिकित्साया: व्यवसायप्रियो भवेत्॥



भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे नाथ! इस जन्मकुण्डली का फलादेश बताएं। यह सुनकर भृगुजी बोले – हे ज्ञानेच्छु इस कुण्डली वाला जातक प्रतापी, प्रभावशाली, विवेकी, महापण्डित, शास्त्रज्ञ, अनेक विद्याओं का ज्ञाता, नीतिज्ञ स्वाभिमानी, क्रोधी, प्रिय-अप्रिय-सत्य बोलने वाला, न्यायी, दयालु, धर्मात्मा, धनी, पुत्रवान्, पूर्ण सुखी, गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, कुशल कारीगर, राजमान्य अथवा राज्य कर्मचारी, उच्चपद एवं सम्मान पाने वाला, कभी कारा-वास का योग भी पाने वाला, शत्रु तथा विरोधियों पर विजय पाने वाला, धर्म-कर्म की कुछ उपेक्षा करने वा-ला, विवाद-विजयी, चार पुत्र तथा तीन कन्याओं का पिता, एक पुत्र का सुख भोगी, विद्या-विनय-स-म्पन्न तथा रासायनिक तत्त्वों का जानकार होगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुशिक्षिता, गौराङ्गी तथा कृशोदरी स्त्री के साथ होगा। यह ऐश्वर्यशाली, परदेश यात्रा-प्रेमी, अनायास धन-लाभ पाने वाला, द्रव्य-संग्रही, गृह-भूमि-वाहन आदि के सुख से सम्पन्न, चंचल तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा। इसका भाग्योदय विवाह तथा पुत्रजन्मोपरान्त २७ वर्ष की आयु में होगा। इसे ३८, ४३ तथा ५४वें वर्ष भाग्योदय कारक रहेंगे, परन्तु ८, ११, १८, ३०, ४८, ५९ तथा ६३ वें वर्ष अशुभफलदायक रहेंगे। इसकी मृत्यु कार्तिक शुक्ला चतुर्थी शनिवार को मध्याह्न काल में, ६३ वर्ष की आयु में, किसी व्रणादि रोग के कारण होना सम्भव है। यह व्यक्ति पूर्वजन्म में ब्राह्मण के द्वारा क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न हुआ था तथा अगले जन्म में शूद्र योनि में उत्पन्न होकर अल्पायु प्राप्त करेगा। नीलम धारण करने तथा सूर्यदेव का पूजन अनुष्ठान करने से संकट दूर होंगे। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो जातक क्रमशः कुत्सित स्वभाव का, उद्यमी, अल्पविद्यावान्, स्त्री-प्रेमी, व्यवसायी तथा राज्य सम्मान प्राप्त चिकित्सक होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ क्रियतां वर्णनञ्चस्याः कुण्डल्याः प्राणिनः पितः। तच्छ्रुत्वा भृगुनारब्धं शुक्रस्ये-

-प्सितवर्णनम् ॥ भृगुरुवाच ॥ प्रतापी च प्रभावी च विवेकी परमार्गदः । श्यामो मुखेन रुग्णश्च वातोदरेण पीड़ितः ॥ स्वाभिमानी क्रियाशीलः नास्तिकोऽधर्मसेवकः । विद्वान् क्रोधेन युक्तश्च व्यापारे योजनान्वितः ॥ धनमूल्यकरो द्रव्यं कापट्येनार्जयेत् क्वचित् । आलस्योद्यमयुक्तोऽपं पित्रोः शत्रुजलात्तथा ॥ अग्नेः हानिस्तथैवायं परैर्लाभा-न्वितः सदा । दुर्जनैः सहवासोऽस्य व्यवसायेऽन्य धार्मिकः ॥ राज्यार्पणकर्ताऽसौ त्रयोविंशति संख्यके । विवाहोऽस्य भवेन्नूनं रुग्णकन्या सहाग्रिमे ॥ नवमे द्वादशे तद्वत् अष्टत्रिंशत संख्यके । एकादशेऽस्य भाग्यस्यो-दयं भवतु निश्चितम् ॥ विधुरः स्यात् सुतावास्य विद्याधर्मयुतौ च तौ । सेवां करिष्यतोऽयञ्च राज्यात्पदमवा-

१० मं., ९ गु., ७ शु., ११ श., ८ सू. बु. रा., १२ चं., ६, १, ३ के., ५, २, ४

प्स्यति ॥ एकोनसप्ततितमे वर्षे वैशाखे पूर्वद्वादशौ । रक्तविकार दोषेण मृत्युरस्या-स्ति जीवने ॥ घातकानि च वर्षाणि द्विचत्वारिंशतं तथा । एकत्रिंशैक पञ्चाशे त्रिषष्ठि सप्तषष्ठिके ॥ अष्टषष्ठितमं तद्वत् जीवनोद्धार हेतवे । हीरकं धारयेच्चै-वं बुद्धस्य व्रतमाचरेत् ॥ म्लेच्छकर्मा वणिक् पूर्वं वैश्योऽग्रेऽपि भविष्यति ॥ यदि चन्द्रोऽस्य लग्ने स्यात् द्वितीय षष्ठयोस्तथा ॥ चतुर्थे नवमे वास्तु पित्रोः भक्तो धनाधिपः । भ्रातृणामाश्रयश्चैवं नीरोगो धार्मिको भवेत् ॥

भावार्थः शुकने कहा – हे पिता इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए, भृगुजी बोले – हे पुत्र ! यह जातक प्रतापी, प्रभावशाली, विवेकी, अन्य लोगों का पथ-प्रदर्शक, श्यामवर्ण, मुख-रोगी, उदर में वायु-विकार से पीड़ित, विद्वान्, सामान्य क्रोधी, स्वाभिमानी, नास्तिक, धर्म-विमुख, कामी, साहसी, उद्यमी, व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करने वाला, ऊँच-नीच कर्मों का कर्ता, असन्तोषी, धनी, छली, कपटी, कभी उद्यमी और कभी आलसी, विद्वान्, बन्धु-बान्धवों से युक्त, माता-पिता का विरोधी, जल तथा अग्नि से भय पाने वाला, विरोधियों से लाभ उठाने वाला, कर्मार्पी, दुर्जनों का साथी, व्यवसायी,

मन-ही-मन धर्मशास्त्रों पर श्रद्धा भी रखने वाला एवं राज्य से सहायता पाने वाला होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होगी। स्त्री रुग्णा होगी। उसकी मृत्यु पहले ही हो जाएगी। इसका भाग्योदय ८, १२, २१ अथवा ३८ वर्ष की आयु में होगा। दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे, जो इसी की भाँति विद्वान् होंगे। यह राज्य में उच्चपद तथा सम्मान प्राप्त करेगा। वैशाख कृष्णा १२ मंगलवार को रात्रि में अग्नि अथवा रक्त-विकार के कारण, ६८ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे ३१, ४२, ५१, ६२, ६७ तथा ६८ वें वर्ष अशुभ रहेंगे। हीरा धारण तथा बुधवार का व्रत हितकर रहेगा। यह पूर्वजन्म में म्लेच्छ धर्मा वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा नवमभाव में हो तो जातक क्रमशः माता-पिता का भक्त, धनी, बन्धु-आश्रयदाता, रोग-रहित तथा धार्मिक स्वभाव का होगा। इति शुभम्॥

बु. ६ रा.
८ सू. गु.
७ शु.
१० मं.
६
११ श.
५
१२
२ चं.
४
१
३ के.

ॐ शुक्र उवाच॥ जीवनं कृपया स्याः माम् कुण्डल्यः वदतां पितः। तच्छ्रुत्वा भृगुनाख्यातं शुक्रस्येप्सितवर्णनम्॥ भृगुरुवाच॥ जातकोऽयं प्रतापी च तेजस्वी च अधार्मिकः। सर्वविद्या प्रवीणोऽयं हृदयाद्धर्मबोधकः॥ राजकीयेन संस्थानं उद्योगस्य प्रचालयेत्। तस्मादूनी पितृभक्तः ज्ञानी इत्री वृत्तिमुक्तिवान्॥ राजोपदेशको मुख्यः चिकित्सा केन्द्र चालकः। गौराङ्गः रोगमुक्तश्च मध्यमस्तनुना तथा॥ बृहद् कुटुम्बवानासौ धीरो गृहाश्वयुत सदा। दूरदर्शी सत्यवक्ता प्रेरक श्चान्य प्राणिनाम्॥ निरङ्कुशः सुरूपश्च न्यायप्रियः सुसाहसी। प्राप्स्यत्येनं वर्णयुक्ता भार्या विंशति संख्यके॥ वर्षे प्रदररुग्णा सा वर्षे भाग्योदयाय च। एक त्रिंशैक विंशेच्च त्रिचत्वारिंशतं क्वचित्॥ अष्ट पञ्चाशत ञ्चैवं जीवने नेष्टकारकम्। एकादशं चतुर्विंशं त्रयो त्रिंशं त्रिषष्टिकम्। नैक पञ्चाशतं वर्षे नैक षष्ठितमं तथा। नव सप्तति संख्याकं जीवनावधिरन्तिमा॥ मधुमेहान्न वपष्ठितमोऽब्दे फाल्गुने क्वचित्। सप्तम्यां कृष्णपक्षस्य विपन्नष्टञ्च धारयेत॥ हीरकं पूजयेच्छम्भुं पुरासी वैश्य वंशजः।

पितुः शापाद्भवेद् विप्रः भविष्ये चन्द्रमा यदि ॥ अस्य लग्ने तृतीये च पञ्चमे सप्तमेऽथवा । दशमे वास्तु दुष्कर्मी शुभाज्जीवत वाहक: ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले – हे जिज्ञासु ! यह जातक प्रतापी, तेजस्वी, प्रभावशाली, अनेक विद्याओं में पारङ्गत, चतुर, विनम्र, धर्म-विमुख, परन्तु हृदय में धर्म पर श्रद्धा रखने वाला, राजमान्य अथवा राजकीय सहायता से किसी बड़े उद्योग का संचालन करते हुए प्रचुर धनोपार्जन करनेवाला, मानी, उदार, चिकित्सालय आदि का निर्माता अथवा उन्हें दान देने वाला, बहु-कुटुम्बी, मातृ-पितृ-भक्त, ज्ञानी, स्त्री की ओर से उदासीन अथवा सन्यासी अथवा राज्य का मुख्य धर्मोपदेशक, उद्यमी, साहसी, गौरवर्ण, कृशोदर, मध्यम कद वाला, सुन्दर, स्वस्थ, गृह-वाहनादि से युक्त, धीर, शान्त, गंभीर, विवेकी, दूरदर्शी, योजना-कुशल, पुत्रवान्, निरंकुश, अन्य लोगों को प्रेरणा देने वाला, न्याय-प्रिय तथा सत्यवादी होगा। इसकी स्त्री को प्रदर रोग होगा। विवाह 20 वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय २१, ३१, ४३ तथा ५८ वें वर्ष में होगा। जीवन के ११, २४, ३३, ४९, ५९, ६३ तथा ६९ वें वर्ष हानि एवं पीड़ादायक रहेंगे। ६९ वर्ष की आयु में, मधुमेह रोग के कारण फाल्गुन कृष्णा सप्तमी बुधवार को घर पर ही इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे अरिष्ट निवारणार्थ लहसुनियां धारण करना चाहिए तथा शिवजी का पूजन करना चाहिए। यह जातक पितृदोष के कारण पूर्वजन्म में वैश्य-कुल में उत्पन्न हुआ था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होगा। इस जन्म कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में पड़ा हो तो उसका प्रभाव क्रमशः इस प्रकार होगा कि यह जातक कुत्सित-कर्म करने वाला, साहसी, अधिक पुत्रों वाला, श्वेत रंग की वस्तु का व्यवसाय करने वाला तथा राज्य-पूज्य होगा। यह फलादेश चन्द्रमा की विभिन्न भावों में स्थिति को देखकर करना चाहिए ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ तातमे वद कुण्डल्याः अस्या भावं कृपानिधे । निशम्य शुक्रो वाचास्य भृगुरुत्तममब्रवीत् ॥ भृगु उवाच ॥ कर्म स्वभावतश्चोग्रः कृष्णो दीर्घवपुस्तथा । कुरूपः कर्मनिष्ठश्च म्लेच्छवाग्विद्सुसाहसी ॥ वैरिणां वैर युक्तोऽयं वंशहीनो धनाधिपः । धर्मात् पराङ्मुखो रक्तः ऋणजीवी दुराग्रही ॥ निरङ्कुशोऽभिमानी च जारः स्वस्त्री प्रणाशकः । पुत्रवान् जारवृत्त्यैव वार्द्धक्ये दुःख रोगिणौ ॥ शास्त्रदग्धोऽविवेकी च दस्युवत् कर्मकारकः । व्याजस्तुति पटुस्तेन आत्मकार्य प्रसाधकः ॥ आद्यौ विंशति वर्षस्य विवाहोऽस्य भविष्यति । चतुर्विंशति वर्षायौ परयोगेन तां त्यजेत् ॥ त्रिचत्वारिंशतं वर्षं भाग्येस्योदय हेतुकम् । घातकानि च वर्षाणि अष्टममष्ट विंशकम् ॥ षट्चत्वारिंशतं वर्षं सप्तत्रिंशत संख्यकम् । नैक पञ्चाशतं तद्वत् द्वित्रिंशस्य वर्षकम् ॥ राजबन्धन योगोऽपि द्रव्यार्जनपुरो भवेत् । सयत्नाः शत्रवो नष्टुं परन्नास्मित् फलं क्वचित् । सूनवश्चास्य विद्वांसः भविष्यन्ति च धार्मिकाः । तैर्वाधिकश्चास्य सेवां ते ह्येकोहि करिष्यति ॥ मृत्युरस्यास्ति संभाव्या वर्षे सप्तति संख्यके । भाद्रकृष्ण त्रयोदश्यां ततः पूर्वे ऽपि सम्भवा ॥ माणिक्यं धारयेदेष आदित्यार्चनमुत्तमम् । अस्याश्चन्द्रो भवल्लग्ने चतुर्थाष्टमयोस्तथा ॥ षष्ठे च दशमे नूनं शान्तः श्वासादितो रुजः । राजबन्धन मुक्तश्च गृह भूमिपतिर्भवेत् ॥

मं. १० बु.	९ सू. रा.	गु. शु. ८
११ श.		७
१२		६
१	३ के.	५
२		चं. ४

भावार्थः शुक्र ने कहा– हे पिता ! इस कुण्डली का फलादेश कहिए । शुक्र के वचन सुनकर भृगुजी बोले– हे प्रिय ! इस कुण्डली वाला जातक कर्म तथा स्वभाव से अत्यन्त उग्र, कृष्णवर्ण, लम्बे शरीर वाला, कुरूप, कर्मनिष्ठ, साहसी, म्लेच्छ भाषाविद्, विरोधियों से युक्त, कुटुम्ब-हीन, सब का विरोधी, धर्म-विमुख, धन-सम्पन्न, अत्यन्त खर्चीला, ऋण लेकर काम चलाने वाला, व्याकुल-चित्त, हठी, निरंकुश, अभिमानी, अपनी स्त्री का [illegible] ... स्त्री से सन्तान उत्पन्न करने वाला, वृद्धावस्था में रोग,

तथा शोक से ग्रस्त, शस्त्र से आघात पाने वाला, विवेक-हीन, दस्यु-कर्म करने वाला, लम्पट, ठग, धूर्त, चाटुकारी से अपना काम निकालने में चतुर तथा विचित्र स्वभाव वाला होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा तथा २४ वर्ष की आयु में पर-स्त्री के कारण अपनी स्त्री से वियोग हो जाएगा। इसका भाग्योदय ४३ वें वर्ष में होगा। इसके जीवन में ८, २८, ३२, ३७, ४६, ५९ तथा ७० वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। इसे राजबन्धन (कारावास) का भी योग है। किसी भी शत्रु का इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके पुत्र इसकी अपेक्षा अधिक विद्वान् होंगे। वे परम धार्मिक तथा सुयोग्य होंगे। पुत्रों की संख्या अधिक होने पर भी केवल एक ही पुत्र इसके पास रह कर सेवा करेगा। भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी शनिवार को ७० वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके लिए जीवन के २४, ४३ तथा ५७ वें वर्ष अपमृत्युकारक सिद्ध होंगे। अरिष्ट-निवारण के लिए माणिक्य धारण करना तथा सूर्य का अनुष्ठान करना हितकर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः शान्त स्वभाव का, गृह-भूमि का स्वामी, स्वस्थ, श्वासादि का रोगी तथा राज-बन्धन से रहित होगा। इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ कथितं वर्णनं देव कुण्डल्याः भाणिनोऽस्य मे। ततो भृगुरुवाचेदं जातोऽस्यां क्रूर कर्मवान्॥ भृगुरुवाच॥ स्वाभिमानी प्रतापी च क्रोधी सैश्वर्य जीवकः। व्ययी राजनेय गूढ़ प्रमेहे दुष्ट पातकः॥ व्याकुलश्चेतसा श्यामः तामसी धर्म कर्मसु। श्रमशीलः स्त्रियो रुष्टः नष्टात्मजश्च सालसः॥ राज्या-श्रयी राज्यभक्तो यांत्रिको वोपयांत्रिकः। प्रवासी पितृभक्तश्च दुराग्रहरत स्तथा॥ सम्पत्स्यति विवाहोऽस्य आयौ विंशतिवर्षिके। षड्विंशतिवर्षायौ भाग्यस्यास्योदयं भवेत्॥ आयाद् व्ययोऽधिक श्चास्य शान्ता-स्यास्यति शत्रवः। सन्तत्या श्चैक एवास्य सुतः सेवां करिष्यति। प्राप्स्यति राजवित्त ञ्च भार्याभिजज-

निर्भरा । जीवने द्वादशं वर्षं भयो विंशति संख्यकम् ॥ षण्ण पञ्चाशतान्दञ्च अष्टपञ्चाशतं तथा । पञ्चा-शतं चतुःषष्ठिं अपमृत्युकरं महत् ॥ मरणञ्चास्यभयेन्नूनं शुक्रदोषे जलं तथा । पौषशुक्ल चतुर्थ्याञ्च वर्षे चतुष्षष्ठिके ॥ जीवने ऽस्मै विपन्नष्टुं हीरकं पुष्परागकौ । धारयेत्तु व्रतं भौमं द्विजो ऽयं पूर्वजन्मन ॥ अविताम्लेच्छयोन्याञ्च सोमः स्यादस्य पञ्चमे । द्वितीये नवमे वान्ये चतुर्थे तस्य भाविनम् ॥ धर्मशीलो धनाढ्यश्च विद्वान् कौटुम्बिकस्तथा । पुत्रवान् जीवने चायं सत्यं वाच्मि न संशयः ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा— हे सर्वज्ञ! इस जातक की कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले—हे पुत्र!

१० बु॰	९ सू॰ रा॰	गु॰ शु॰ ८
श॰ मं॰ ११		७
१२		६
१	३ के॰	५ चं॰
२		४

इस कुण्डली वाला जातक क्रूर-स्वभाव वाला, स्वाभिमानी, प्रतापी, क्रोधी, ऐश्वर्य-शाली, ठाठ-बाट से रहने वाला, अधिक खर्च करने वाला, राजकीय सम्बन्धों से लाभ उठाने वाला, वायु-रोगी, मूत्र-रोग अथवा वीर्य-दोष की चिकित्सा में धन खर्च करने वाला, व्याकुल-चित्त वाला, श्यामवर्ण, उद्यमी, साहसी, धर्म में तमोगुणी आस्था रखने वाला, पितृ-भक्त, स्त्री की ओर से दुःखी, नष्ट-सन्तति वाला, हठी, अभिमानी, कुटुम्ब-हीन, परदेशवासी, मधुमेह-रोगी, धर्म-कर्म के सम्पादन में आलसी, राजकीय ठेकेदार अथवा यान्त्रिक आदि होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय २१, २७ तथा ३६वें वर्ष में होगा। आमदनी की अपेक्षा खर्च अधिक रहेगा। शत्रु इससे दबे रहेंगे। सन्तानों में केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। इसे राज्य से धन की प्राप्ति होगी। इसकी स्त्री निरन्तर औषधियों का सेवन करती हुई जीवन व्यतीत करेगी। इसके जीवन के ११, २३, ३२, ४४, ५०, ५८, ६० तथा ६४वें वर्ष हानिकारक एवं अपमृत्युकारक सिद्ध होंगे। पौष शुक्ला चतुर्दशी शनिवार को प्रातः काल, जल अथवा वीर्य-दोष के कारण, ६४ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है।

पुखराज एवं हीरा धारण करना तथा मंगलवार का व्रत रखना अरिष्ट-निवारक सिद्ध होगा। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में म्लेच्छ योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम अथवा नवम भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, कुटुम्बी, विद्वान्, पुत्रवान् तथा धर्मात्मा होगा।। इतिशुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच ।। उच्यतां भाविनं तात अस्यां कुण्डलिजस्य मे। भृगुरालोक्य तां शुक्रं तत्फलादेश मुक्तवान् ।। भृगुरुवाच ।। मन्दगतिश्च शान्तोऽसौ धीरो वीरो च साहसी। नाति धनिक न ज्ञानी नातिगौरः सुशीलवान् ।। विद्या विनय युक्तश्च पीडितो राजसेवकः। गृहाद् भूमिपतिश्चायं वादजीऽनुभावकः ।। कीर्तिवान्

शा. मं. बु. ११	रा. ९	गु. ८ शु.
१२	१० सू.	
१		७
चं. २	४	६
३ के.		५

भाग्यवान् दन्तैरल्पयौ पीडितस्तथा। द्वाविंशतितमे वर्षे रूपवत्या सहास्यस्यात् ।। विवाहश्चानु रोगी तौ विज्ञानेऽप्यरि पूजितः ।। सुतावेवास्य कुर्यातां सेवां शत्रवाग्नि भीतियुत ।। भाग्योन्नति र्भवेदस्य षडुचत्वारिंशके तथा। दशमे द्वाविंश संख्यायाः वर्षे पञ्चाशतेऽथवा।। चतुर्विंशति वर्षायौ सामान्याद्हानि कारकम्। एकादशञ्चतु-र्पञ्च नवत्रिंशत संख्यकम् ।। षडुविंशति वर्षेन्तु षडुपञ्चाशतं तथा। त्रिषष्ठ्यारब्ध्च पूर्णायुः तृतीयायां भविष्यति ।। फाल्गुने कृष्णपक्षस्य नेष्टे त्रिषष्ठि संख्यके। आदित्योपासनं कुर्यात् हीरकं माणिकं तथा ।। धारयेच्छ्रेयसे पूर्वम् आसीत् क्षत्रिय वंशजः। क्षत्रिय एव भाव्योऽयं सदा दुर्गाजने मनः।। व्यक्तित्वं स्थापयेल्लोके दृढश्चन्द्रोऽस्य सम्भवेत्। तृतीये पञ्चमे चैवं सप्तमे दशमेऽथवा।। क्रमशोऽयं धर्मी तद्वत् पुत्रवान् पत्न्युपासकः। राजतुल्यो भवेन्नूनं कुण्डल्यां स्फुट मीदृशम्।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा– हे तात! आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले– हे वत्स! यह जातक परमशान्त, मंदाग्नि-पीड़ित, धीर, वीर, उद्यमी, सामान्य धनी, गेंहुए रंग का, पैतृक रूप में गृह-भूमि का लाभ पाने वाला, पुरुषार्थी, आत्मज्ञानी, प्रभावशाली, विवेकी, सुशील, विद्या-

विनय-सम्पन्न, पाँवों में दर्द का अनुभव करने वाला, राजकर्मचारी, राज द्वारा धन लाभ पाने वाला, धर्म-कर्म युक्त, सौभाग्यशाली, कीर्तिवान् तथा यशस्वी होगा। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सुन्दरी स्त्री के साथ होगा। दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे। यह अल्पायु में ही दन्त-पीड़ा से ग्रस्त होगा। शत्रुओं द्वारा प्रशंसित, ख्याति प्राप्त, नीति तथा विज्ञान में चतुर एवं अग्नि तथा शस्त्र से भय पाने वाला होगा। इसका भाग्योदय १०, २२, ३४, ४६ तथा ५० वें वर्ष में होगा। इसके जीवन में ११, १८, २६, ३८, ५६ तथा ६३ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। फाल्गुन कृष्णा तृतीया बुधवार को मध्याह्न काल में, ६३ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे उन्नति तथा कष्ट निवारणार्थ हीरा एवं माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य की उपासना तथा रविवार का व्रत कल्याणकारी सिद्ध होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में भी क्षत्रिय कुल में ही उत्पन्न होगा। यह धन-संचय पर विशेष ध्यान देगा तथा अपना रहन-सहन ठाठ का बनाये रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी, पुत्रवान्, स्त्री-विलासी तथा राजतुल्य ऐश्वर्य वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ किमस्या ग्रह कुण्डल्या जातकस्यार्य भाविनम्। सुराचार्यस्तदा शुक्रं फलं तस्या उदाहरत् ॥ भृगुरुवाच ॥ दीर्घायुः धन सम्पन्नः भूमि लाभान्वितस्तथा। धार्मिको बन्धुयुक्तश्च पितृवैरि विलासकः ॥ पुत्रहीनः पितुः पूर्वं मृत्युयोगोऽस्य सत्यवाक्। स्वल्पेऽयंऽटनशीलोऽपि चिरायुर्गुणश्च बुद्धिमान् ॥ मातृहीनोऽल्पभोगी च दुष्कर्मी गुरुदेवयोः। पूजकः कृपणश्चायं कर्मशीलो धराधिपः ॥ ख्यातो विवाह योगश्च एकविंशति संख्यके। वर्षायौ स्वैरिणी भार्या प्रमादस्य विपराह्ति सा ॥ सहसा राजसेवा तो मुक्तो वाणिज्य माचरेत्। प्रदर्शन प्रियश्चायं जीवने सम्भविष्यति ॥ द्वावेवास्य सुतौ भाग्य मुदयं पात्य संशयः। सप्तविंशैक विंशे च अष्टत्रिंशति संख्यके ॥ वर्षायौ जीवनस्यास्य नवपञ्चशतात्मके। परमोऽन्तो घातयन्त्वस्मै

दशममेकत्रिंशतम् ॥ पञ्चपञ्चाशतञ्चैवं द्विचत्वारिंशतं क्वचित् । पञ्चाशतं तथैवास्मै कुलञ्चर्यैणपूजनम् ॥ अनुष्ठानञ्च सूर्यस्य शुभं माणिक्य धारणम् । पुरावैश्य कुलोत्पन्नः वैश्य एवागुजन्मतः ॥ चतुर्थे पञ्चमे लग्ने चन्द्रस्तिष्ठेद्यदष्टमे । क्रमशोऽयं भवेत् सौम्यः भूपतिः स्त्रीप्रियः सुखी ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली का फलादेश वर्णन करने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे प्रिय! इस कुण्डली वाला जातक विपुल आय सम्पन्न, धनी, पुष्ट शरीर, बलवान, राजतुल्य, भूमि-लाभ पाने वाला, धार्मिक, व्यवसायी, उद्यमी, भाई-बन्धुओं से युक्त, भोगी, पितृ-विरोधी, पिता के सामने ही मृत्यु को प्राप्त

मं. श. 11		10 सू. बु.		शु. रा. 9
12				8 गु.
	1 चं.		7	
2		4		6
	3 के.		5	

होने वाला, पुत्र-हीन अथवा प्रथम पुत्र के नष्ट हो जाने का योग पाने वाला, परदेश-भ्रमण में रुचि रखने वाला, स्वस्थ, चेष्टावान, स्वेच्छाचारी, धनी, कुटुम्बियों का विरोधी, विघ्न पाने वाला, दीर्घकालिक रोगी, अशुभकर्म करने वाला, देव-गुरु पूजक, कृपण, राज्यकर्मचारी, बुद्धिमान, राजाओं जैसे कर्म करने वाला, मातृ-हीन, अल्प-भोजी, प्रसिद्ध तथा सत्यवादी होगा। इसका विवाह 21 वर्ष की आयु में स्वैरिणी-स्त्री के साथ होगा, परन्तु इसकी स्त्री इसके प्रताप एवं प्रभाव के समक्ष सदैव दबी रहेगी। यह किसी समय अचानक ही राज्य-सेवा को छोड़ कर व्यवसाय के क्षेत्र में प्रवेश करेगा। ठाठ-बाट से रहना इसे प्रिय होगा। इसे केवल दो पुत्र प्राप्त होंगे। भाग्योदय 21, 28 तथा 38 वर्ष की आयु में होगा। इसकी कुल आयु 55 वर्ष से अधिक नहीं होगी। इसे 10, 22, 31, 42, 50 तथा 55 वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। दीर्घायु-प्राप्ति के लिए सूर्य नारायण का व्रत तथा अनुष्ठान एवं माणिक्य धारण करना लाभप्रद रहेगा। यह पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर, कुटुम्ब-प्रेमी, स्त्री-प्रेमी तथा दीर्घायु होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच॥ दीयतां वर्णनं देव भविष्यं प्राणिनोऽस्य तत्। गीष्पतिरुक्तवान् शुक्रं अस्याञ्जातो भविष्यति॥ भृगु उवाच॥ धनाधीशः सुखी स्वस्थः पुष्टो बलसमन्वितः। धार्मिकः कृपणः ख्यातः सुकृतोऽतुलभोगवान्॥ श्रेष्ठबान्धवयुक्तोऽयं सम्बन्धीनाञ्च सेवकः। पित्रोः वैरिस्तथेर्ष्यालुः पितृबन्धुजनान् प्रति॥ वेदशास्त्रविच्चाध्येषं गुरुदेवप्रपूजकः। परैर्हानिमवाप्नोति राजदण्ड्योऽपि रक्षकः॥ जीवानामल्पभोगी च राजसम्मान्यसेवकः। मातृशत्रुः पितृप्रियः स्वस्थाने लब्धकीर्तिवान्॥ पितृमृत्योरनन्तञ्च मातास्याद् व्यभिचारिणी। एकोनविंशते वर्षे परम सुन्दर कन्यया॥ विवाहश्चास्य पुत्रो द्वौ सेवामस्य करिष्यतः। भाग्योदयस्य वर्षाणि त्रियो त्रिंशैक विंशके॥ षण्णपञ्चाशताब्दञ्च अनिष्टानि च सप्तमम्। त्रयोविंशैक षष्ठ्यारव्ये दशमञ्चाष्ट त्रिंशतम्॥ चतुःषष्ठितमं वर्षं त्रिपञ्चाशत संख्यकम्। मार्गशीर्षे परे षष्ठ्यां षड्षष्ठितम संख्यके॥ वर्षायै चावसानं वै भौमस्य व्रतमाचरेत्। प्रवालरत्नमङ्गुष्ठ्यां उन्नत्यै परमोत्तमम्॥ आसीद् वैश्यः पुराऽग्रे च शूद्रः पित्र्यभिशापतः। सोमश्चेदस्य कुण्डल्यां तिष्ठेल्लग्न-चतुर्थयोः॥ पञ्चमे सप्तमे चैव नवमे स्तु ततो भवेत्। सुरूपः गृहभूमीशः विद्वान् स्त्रीणां प्रियः सदा॥

११ सू. श.	१० बु. शु.	९ रा.
१२ मं.		८ गु.
१		७
२	४	६ चं.
३ के.		५

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे देव! आप इस जातक की कुण्डली के फलादेश का वर्णन करें। यह सुनकर भृगुजी बोले – हे शुक्र! इस जातक के विषय में सुनो। यह धनी, स्वस्थ, सुखी, पुष्ट शरीर वाला, धार्मिक, बलवान्, कृपण, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, विपुल भोगों का भोगी, व्यवसायी, श्रेष्ठ बन्धुओं से युक्त, सम्बन्धियों की सेवा करने वाला, माता-पिता का विरोधी, पिता के बन्धुओं से ईर्ष्या करने वाला, सुप्रसिद्ध, पुत्रवान्, वेद तथा शास्त्रों का ज्ञाता, स्वस्थ एवं पुष्ट, उद्यमी, स्वेच्छाचारी, शत्रुओं से हानि पाने वाला, जीव-रक्षक, राजदण्ड-भोगी, देव-गुरु-पूजक, अल्पभोगी, राज्यकर्मचारी अथवा राज्य से सम्मान पाने वाला, माता का शत्रु तथा पिता से कुछ प्रेम रखने वाला

होगा। इसका विवाह १९ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी परम सुन्दरी होगी। दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे। इसका भाग्योदय २१, ३३ तथा ४४ वें वर्ष में होगा। जीवन के ७, १०, २३, ३८, ५३, ६१ तथा ६४ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। मार्गशीर्ष शुक्ला षष्ठी शुक्रवार को, ६६ वर्ष की आयु में मध्याह्न के समय इसकी मृत्यु होना सम्भव है। मूंगा धारण करना तथा मंगलवार को व्रत रखना लाभप्रद रहेगा। यह पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में मातृ-पितृ दोष से शूद्र कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम तथा नवम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, गृह-भूमि का स्वामी, विद्वान्, स्त्री-प्रिय तथा भाग्यशाली होगा॥ इति शुभम्॥

१२ मं. | ११ सू. श. | १० बु. शु. | ९ गु. रा. | १ | २ | ८ | ३ के. | ५ चं. | ७ | ४ | ६

ॐ शुक्र उवाच॥ श्रोतुमिच्छाम्यहं तात भविष्यं प्राणिनोऽस्य तत्। जातेयोऽस्या गृह-भूम्यां वदस्व कृपया नु मे॥ भृगुरुवाच॥ तदाकर्ण्य सुरगुरोः वचो भृगुः प्रत्युवाच। जातोऽस्यां बालरोगी स नेत्राभ्यां वीर्यतोऽपि च॥ दीर्घकायोऽटने प्रीतिः क्षमाशीलश्च दुर्बलः। कृषकः श्यामवर्णश्च स्वाभिमानी च धार्मिकः॥ व्ययशीलोऽधिकं आयात् वंशरक्षण तत्परः। यथेच्छार्जिः निरायासात् दुष्टो भूपतिवत् क्वचित्॥ अर्थसिद्धमापन्न मलिनो क्षुद्रयोगतः। स्वल्पाहारश्चपलोदानी ग्रासग्राहेतोऽपि वाग्पटुः॥ पैतृकं लब्धहानि-श्च प्रदर्शने व्ययी तथा। क्षीणः पौत्रादि सन्तत्या वैमत्यं प्राप्नुयात् सदा॥ नवविंशतमे वर्षे विवाहोऽस्य भविष्यति। कन्यया मध्यवर्णस्य नष्टगर्भान्विताऽपि सा॥ उपायेन त्रयः पुत्राः किन्त्वेक एव सेवकः। भाग्यञ्चास्याति सामान्यात् विंशवर्षे तथा पुनः॥ द्वापञ्चाशेत वर्षे द्वात्रिंशैव तरिष्यति। कष्टं दास्यन्ति वर्षाणि जीवनेऽस्य चतुष्किम्॥ एकादशं त्रयोविंशं चतुःपञ्चाशतं क्वचित्। षण्णपञ्चाशतं तद्वत् एक सप्तति संख्यकम्॥ आश्विन शुक्ल चतुर्थ्याञ्च अस्यायो वर्ततेऽवधिः। द्विसप्तति तमे वर्षे म्लेच्छोऽयं ज्ञानवान् पुरा॥ भवेदग्रिम योनौ च क्षत्रियो वर्णसंकरः। वरुणस्यार्चनं कुर्यात् व्रतं शुक्रस्य धारणम्॥ हीरकस्यास्य माङ्गल्यं चन्द्रश्चेत् संभवेत् यदि।

द्वितीये सप्तमे षष्ठे चतुर्थे मध्यमोजनः ॥ धनवान: गृहभूमीशो शत्रुञ्जयति सर्वदा । स्त्रीलम्पटो भवेत् प्राणी चन्द्रश्चेत् यदि सप्तमे ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो ! इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगु मुनि बोले - हे पुत्र ! इस कुण्डली वाला जातक बाल्यावस्था में रोगी, नेत्र-पीड़ा से पीड़ित, व्याकुल, स्वाभिमानी, श्यामवर्ण, लम्बे क़द वाला, आमदनी से अधिक खर्च करने वाला, धातु-रोगी, परदेश में भ्रमण करने वाला, क्षमाशील, कृषि-कर्म में चतुर, दुर्बल-शरीर वाला, अनायास ही यथेच्छ धन पाने वाला, धार्मिक, राजतुल्य धनी, परन्तु कभी-कभी आर्थिक-कष्ट से पीड़ित, दम्भी, मलिन, नीचों की संगति करने वाला, मदमत्त, अल्पकेशी, वाचाल, दानी, चपल, शास्त्रज्ञ, शस्त्राघात पाने वाला, वात-रोगी, अपने पुत्रों से सेवा पाने वाला, पैतृक-सम्पत्ति की हानि पाने वाला, ठाठ-बाट से रहने वाला, अधिक खर्चीला तथा कुछ लोगों से विरोध पाने वाला होता है । इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में सामान्य क़द तथा मध्यम वर्ण वाली स्त्री के साथ होगा । स्त्री को गर्भ नष्ट होने का योग रहेगा, परन्तु उपायों द्वारा तीन पुत्रों की प्राप्ति होगी, जिनमें केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा । भाग्योदय २०, ३२ तथा ४८ वर्ष की आयु में होगा । इसके जीवन में ४, ११, २३, ४४, ५४ तथा ६१ वें वर्ष हानि एवं कष्टप्रद रहेंगे । आश्विन शुक्ला चतुर्थी मंगलवार को ६२ वर्ष की आयु में इसकी जीवन-लीला समाप्त होना सम्भव है । यह जातक पूर्वजन्म में म्लेच्छ था तथा अगले जन्म में वर्णसंकर क्षत्रिय होगा । वरुण देव का पूजन तथा शुक्रवार का व्रत करने एवं हीरा धारण करने से इसके संकट दूर होने में सहायता मिलेगी तथा कल्याण होगा । इस जन्म कुण्डली में यदि चन्द्रमा द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा सप्तमभाव में हो तो उसके प्रभाव से यह जातक क्रमशः धनवान्, गृह-भूम्याधिपति, शत्रु-नाशक तथा स्त्री-लम्पट होगा - यह समझना चाहिए । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ अस्यां जातस्य जीवस्य कथं यास्यति जीवनम् । श्रुत्वा शुक्रवचः देवगुरुस्तं प्रत्यभाषयत् ॥ भृगु उवाच ॥ वैरीर्भवति सर्वेषां अस्याञ्जात पराजयी । बान्धवैस्त्यक्तरायुष्मान् वीर्यवान् धार्मिकस्तथा ॥ जन्मनः पितृहीन-श्च दुराचाररतः सदा । विदेशस्थः पितुः पुत्रः पुत्रसेव्यः धनाधिपः ॥ द्वाविंशतमवर्षौ यौ शीलवत्या सुपात्रया । पाणिग्रहण-मस्यास्ति एकपत्नी व्रतस्तथा ॥ भार्यासक्तः सुरूपश्च भाग्ये विघ्नमुपार्जकः । दीर्घरुग्णोऽस्य भाग्यस्योदयं त्रिंशतमे भवेत् ॥ राज्ये सम्मानितश्चायं तद्वृत्याश्रयवान्नपि । विरिजोऽसैख्यकाश्चापि नैव हानिप्रदाः क्वचित् ॥ कदाचित् वातदोषेणं शिरोवेदनयाऽथवा । स्वस्थोऽप्येष वसेत् खिन्न आयश्रोतोऽस्य श्रेष्ठकः ॥ जीवनेऽनिष्टहेतूनि अपमृत्यु-कराणि च । पञ्चैकादशे चैवं त्रयोविंशाष्ट षष्ठिके ॥ द्विचत्वारिंशतं वर्षं चतुःपञ्चा-शतन्तथा । त्रित्रिंशततमं वर्षं आपोरवधिरन्तिमा ॥ सप्ततौ पौष शुक्लस्य दशम्याञ्चा-तिमुत्तमम् । धारणं हीरकस्यास्मै शनैश्च व्रत पूजने ॥ म्लेच्छः कर्मरतः शूर्वं क्षत्रियोऽपञ्च भाविनः । तच्चैव यदि चन्द्रोऽस्यां लग्ने तृतीय षष्ठये ॥ चतुर्थे दशमे वास्यात् तदैव गृह भूपतिः । शोभनोद्यमशीलैश्च शत्रुजित् राजदण्डितः ॥

- १२ मं.
- ११ स्य. बु. श.
- १० शु.
- १
- ९ गु. रा.
- २ चं.
- ८
- ३ के.
- ५
- ७
- ४
- ६

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे पुत्र ! यह जातक सबका विरोधी, भाइयों द्वारा परित्यक्त, दुराचारी, पराजय पाने वाला, स्वस्थ, बलवान्, दीर्घायु, धार्मिक, धनी, प्रसिद्ध, जन्म के समय पितृ-हीन अथवा पिता परदेशवासी हो, पुत्रवान्, पुत्रों से सेवा पाने वाला तथा श्रेष्ठ विचारों वाली स्त्री का पति होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में कुलीन एवं सद्गुणी स्त्री के साथ होगा। यह अपनी स्त्री से प्रेम करने वाला, उसके अधीन रहने वाला, रूपवान्, दीर्घकालिक रोगी, राज्य से आजीविकोपार्जन करने वाला तथा भाग्योदय में विघ्न पाने वाला होगा। भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में होगा। विरोधी इसका

कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। कभी-कभी वायु-विकार एवं मस्तक-पीड़ा से पीड़ित रहेगा। इसके जीवन के ५, ११, २३, ३३, ४२, ५४ तथा ६८वें वर्ष हानि एवं अपमृत्यु कारक रहेंगे। पौषशुक्ला १० रविवार को मध्याह्न काल में ७० वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। हीरा धारण करने तथा शनिदेव का व्रत एवं पूजन करने से लाभ तथा अरिष्ट-नाश होगा। यह जातक पूर्वजन्म में म्लेच्छ कर्मयुक्त क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में भी क्षत्रिय ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर, उद्यमी, गृह-भूमि-स्वामी, शत्रुजित तथा राज्य द्वारा दण्डित होगा ।। इति शुभम् ।।

- १
- १२ सू. मं.
- ११ बु. शु. श.
- २ चं.
- १०
- ३ के.
- ९ गु. रा.
- ४
- ६
- ८
- ५
- ७

ॐ शुक्र उवाच ।। दैत्याचार्योऽवदत् तात किमस्याः भावितं तदा। सुराचार्योऽब्रवीत् शुक्रं यत्पृष्टं तस्य विस्तृतम् ।। भृगुरुवाच ।। शृणु वत्स सदैवायं सर्वधारि विघातकः। राज्याधिकार सम्पन्नः धनाढ्योऽपि स्वसम्मुखे ।। स्त्री पुत्र गृहहीनोऽयं मानी नानाकुचालकः। परभार्यारतः स्त्रीणां गुह्य चुम्बन चातुरः ।। स्वार्जितं सम्मुखैवाऽयं नष्टवान्ने भिक्षुकः भवेत्। भूत्वेह परलोकार्तः मृत्युर्यास्यति चान्तिमे ।। चतुरसीति वर्षायौ मार्गकृष्ण प्रतिपदे। अष्टादशतमे वर्षे विवाहस्त्वास्य निश्चितम् ।। द्विदन्त्या सहैवास्यं भाग्यं यात्युदयं तदा। द्वाविंशताष्टविंशे च सप्तत्रिंशत संख्यके ।। इष्ट घातक वर्षे च नवमे षोडषेऽपि च। एकोनपञ्चाशतञ्चैव चत्वारिंशतसंख्यकम् ।। सप्तविंशतमं वर्षं पञ्चषष्ठ्यात्मकं तथा। सप्तती द्वेन सप्ततिकं सर्वथैवास्य नाशकम् ।। पन्नकं धारयेच्चैवं भौमस्य व्रतमाचरेत्। जीवनोत्थान हेतुञ्च कुविप्रः पूर्वजन्मनः ।। प्रेतश्चाग्रेऽस्य चन्द्रः स्यात् लग्न तृतीय पञ्चसु। सप्तमे नवमे चापं शान्तः सौम्यो भविष्यति ।। सदाचारी कुटुम्बी च भाग्ययुक्तश्च धार्मिकः ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा— हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए। भृगु जी बोले- हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक शत्रुओं का गुप्त एवं प्रकट रूप से दमन करने वाला, राज्याश्रयी, राज्याधिकारी, अपने ही सामने स्त्री-पुत्रादि से हीन स्थिति को प्राप्त होने वाला, धातुरोगी, मध्यमायु में आलसी, वृद्धावस्था में अत्यन्त दुःखी, अनेक प्रकार की कुचालें करने वाला, अहंकारी, क्रोधी, परस्त्रीगामी, स्त्री के गुह्यभाग का चुम्बन करने वाला, स्वोपार्जित धन को स्वयं ही नष्ट करके वृद्धावस्था में व्याकुल हो, वैराग्य ले, भिक्षावृत्ति करने वाला तथा अपने दोनों लोकों को बिगाड़ने वाला होगा। मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा शनिवार को ८४ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होने की संभावना है। इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में छिद्रयुक्त दाँतों वाली स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २२, २८ तथा ३८वें वर्ष में होगा। इसके जीवन के ९, १६, २७, ४०, ४९, ६५, ६८ तथा ७१ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। पन्ना धारण करने एवं मंगलवार के दिन व्रत रखकर मङ्गल का पूजन करने से अरिष्ट-शान्ति में सहायता मिलेगी। यह जातक पूर्वजन्म में क्रूरकर्मा ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में प्रेतयोनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पञ्चम, सप्तम अथवा नवमभाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर और शान्त, भाग्यशाली, पुत्रवान्, स्त्री युक्त अथवा गृहस्थ, धार्मिक तथा सदाचारी होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ शुक्रोऽवदत् पितोऽस्यास्त्वं फलादेशं वदस्व मे। भृगुः वदति हे वत्स अयं कुण्डलिजो भवेत्॥ भृगुरुवाच॥ पुत्रवान् लैश्वरश्चैव ज्योता तेजस्वी बलवान् तथा। सुखी वाहनयुक्तश्च कृपणोऽतुल भोगवान्॥ पुण्यात्मा वणिजश्चापि मित्रवैमत्य भाजकः। बन्धुहीनः प्रवासी च पितुः कीर्त्यैव कीर्तिमान्॥ स्वाधीनः श्रमशीलश्च बहुपत्निरतः सदा। स्वभार्याधीनवासश्च अह्लोत्‌रय-क्त देहवान्॥ देवगुरु पूजकं च राजमान्योऽल्पभाग भवेत्। धीमान् वाक्‌पटुश्चैव दानी मानी गृहे

स्थित:।। षोडशी कृष्णदेहस्य कृष्णां प्राप्स्यति भार्यया। सप्तदशतमे वर्षे जीवनोदयकारकम्।। एक विंशाष्ट विंशेच्च द्विचत्वारिंशतं भवेत्। अपमृत्युकरञ्चास्मै षष्ठैकादश संख्यके।। द्वादशञ्च त्रयोविंश द्वात्रिंशत्नव षष्ठिकम्। त्रिचत्वारिंशतं वर्षं पञ्चपञ्चाशतं तथा।। कार्तिक शुक्ल षष्ठ्याञ्च एक सप्तति संख्यके। वर्षेस्य प्राणनाशो ऽस्ति लशुनामिति धारयेत्।।चण्डिपूजार्चनं कुर्यात् जीवनाभ्युदयाय च। द्विज: कुद्द पुराणीच्च द्विजकृत्यान्तरिष्यति।। अस्याऽचन्द्र स्तृतीयेस्यात् पञ्चमे नवमे ऽथवा। दशमे ऽथ्यस्त्वसौदीन: पुत्रवान् पापकृत् भवेत्।।

१ | १२ | शु. श. ११ | १० | २ | सू. मं. बु. | ३ के. | रा. ९ गु. | ४ चं. | ६ | ८ | ५ | ७

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा कीजिए। यह सुन कर भृगुजी बोले - हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक पुत्रवान्, पुत्रों द्वारा ख्याति अर्जित करने वाला, तेजस्वी, सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला, बलवान्, वाहन-सम्पन्न, कृपण, अतुल भोगी, मित्रों से विरोध पाने वाला, बन्धु-विहीन, कुटुम्ब से दूर रहने वाला, श्रेष्ठ कर्मा, व्यवसायी, पिता के नाम से प्रसिद्धि पाने वाला, उद्यमी, बलवान्, नीरोग, स्वतन्त्र जीवन बिताने वाला, अनेक स्त्रियों का भोगी तथा अपनी पत्नी के भी अधीन रहने वाला, स्वेच्छाचारी, घर से बाहर किसी अज्ञात-स्थान में शरीर त्यागने वाला, देव-गुरु-पूजक, राजमान्य, अल्पभोजी, बुद्धिमान्, माता-पिता का भक्त, वार्तालाप में चतुर, मानी, दानी, ऐश्वर्यशाली तथा अपने ही घर में सुखी रहने वाला होता है। इसका विवाह १७ वर्ष की आयु में स्थूल शरीर वाली श्यामा षोडशी के साथ होगा। भाग्योदय २१, २८ तथा ४२ वें वर्ष में होगा। इसके जीवन के ६, ११, २३, ३२, ४३, ५५ तथा ६० वें वर्ष हानिकारक रहेंगे, कार्तिक कृष्णा [illegible] ७१ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है।

लहसुनियाँ धारण करने तथा चण्डी का व्रत पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा कल्याण होगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्रोधी ब्राह्मण था। इस जन्म के शुभ कर्मों के प्रताप से अगले जन्म में पुनः ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होकर वैकुण्ठ लोक को प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, पंचम, नवम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी, बहुपुत्रवान्, भाग्यहीन तथा कुचाली होगा॥ इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ पितरं पृष्टवान् शुक्रः किमस्या भावितं वद। अस्यां यो जायते वत्स शृणु तस्य फलं स्वयम्॥ भृगुरुवाच॥ वाणिज्ये दुग्धवान्नेष आलीभैः लाभ संयुतः। त्रस्तो निजैश्च राजेऽपं धनमात्र प्रतिष्ठितः॥ सहायकः परेषाञ्च द्विजदेव प्रपूजकः। विनीतः धन सम्पन्नः सुन्दरीणामुपासकः॥ दुष्कर्मः जवतिर्भूयात् शत्रुजित् परनिन्दकः। दीनः शत्रुभिरार्तश्च बन्धुभ्यः कष्टदायकः॥ भीतः व्याकुल चेता च सुतौ द्वौ सुखदायकौ। नैकविंशेऽस्य विवाहो भाग्यं फलतु चाग्रिमे॥ अष्टविंशे त्रयोविंशे द्वौन पञ्चाशोत शुभे। त्रिसप्ततिमाब्दे वयस्य भगवच्चिन्तने स्वचित्॥ श्रावणे शुक्ल पक्षस्य त्रयोदश्यामितः व्रजेत्। आयोर्वर्षाणि हीनानि तृतीयं नवमं तथा॥ एकादशं त्रयोविंशं अष्टपञ्चाशतान्नपि। षड्षष्ठिञ्च तथैवास्मे नव त्रिंशत् संख्यकम्॥ श्रेयस्करं भवेदस्मै गोमेद पुखराजयोः। धारणं पूजनं तद्वत् गुरुपादकयोस्तथा॥ दुर्लभा चाग्रिमा योनिः पूर्वस्यां क्षत्रियोऽभवत्। चन्द्रमाः यदि लग्ने ऽस्य तृतीये पञ्चमे ऽथवा॥ अष्टमेकादशे वास्यात् धीमान् सौम्यश्च भान्वितः; पुत्रवान् विश्रुतः भीतः धनिपश्चैष भाविनः॥

भाव	राशि	ग्रह
लग्न	१२	सू. बु.
द्वितीय	१	मं.
तृतीय	२	
चतुर्थ	३	के.
पंचम	४	चं.
षष्ठ	५	
सप्तम	६	
अष्टम	७	
नवम	८	
दशम	९	रा. गु.
एकादश	१०	
द्वादश	११	शु. श.

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे पिता! अब आप इस जातक-कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले - हे वत्स! इस कुण्डली का फलादेश सुनो। यह जातक व्यवसाय से

धन कमाने वाला, सुखी, अपने ही लोगों से भय पाने वाला, स्वजनों से सुखी, राज्य द्वारा प्रतिष्ठा एवं धन अर्जित करने वाला, साहस-कर्म करनेवाला, सबका सहायक, पराये धन का रक्षक, ब्राह्मण तथा देवताओं का पूजक, सुन्दरी स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, विनीत, धन-वाहनादि से पुष्ट, सुन्दर वस्त्र धारणकरने वाला, शुभ कर्म करने में आलसी तथा निषिद्ध कर्मों का कर्त्ता, शत्रुजित, व्यसनी, सुप्रसन्न, पर-निन्दक, कुचाली, शत्रु-नाशक, धनी, तेजस्वी, भाइयों को कष्ट देने वाला, हाथ में पीड़ा पाने वाला, भयाकुल तथा चित्तमें घबराहट रखने वाला होता है। इसे दो पुत्रों का सुख प्राप्त होगा। १८ वर्ष की आयु में विवाह तथा २८, ३३ एवं ४८ वें वर्ष में भाग्योदय होगा। श्रावण शुक्ला १३ शनिवार को ७३ वर्ष की आयु में; भगवच्चिन्तन करते हुए, अपने ही घर में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवनमें ३, ८, ११, २३, ३८, ५८ तथा ६६ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। गोमेद तथा पुखराज धारण करने एवं गुरु-पादुका-पूजनाभिषेक से कष्ट-निवारण होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगला जन्म होना दुर्लभ है अर्थात् यह जीवन्मुक्त होसकता है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो जातक क्रमशः बुद्धिमान् और सुन्दर, उद्यमी और साहसी, पुत्रवान्, विद्युत् शक्ति से भय पाने वाला, धनी तथा सुखी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णयतु भवान्नस्याः कुण्डल्याः भाविनं प्रभो। शुक्रात्मज वचः सत्या भृगुस्तं प्रत्युवाच ह॥ भृगु उवाच॥ अस्यां जातो जनः भोगी सुखवानाञ्च भयार्दितः। स्वजनैश्चास्य लाभोऽस्ति वाणिज्ये राजसम्मतः॥ धनलाभस्तु राज्याच्च परद्रव्येच्छुकस्तथा। परेषां सेवकश्चैवः देवब्राह्मण पूजकः॥ सुशोभितस्तोनमः गृहे सुवाहनान्वितः। अरिणां धनजेता च राजैव धन संयुतः॥ कर्मणो विहिताद्हीनः प्रसन्नात्मान्यनिन्दकः। कर्मणा चैव चाण्डाल्यः जात्युन्नत्या प्रमोदितः॥ पश्येत् बंधुविनाशञ्च

पुत्रैकस्य सुखं भजेत् । अष्टाशे विवाहश्च बहु विंशाष्टत्रिंशते ॥ द्विपञ्चाशताब्दे ऽस्य भाग्योदयं भविष्यति।
शत्रुषु राजद्वारे च जयं प्राप्स्यति निश्चितम् ॥ कर्मक्षेत्रे राजदोषात् व्यवधानानि पूर्वता । जीवनस्यास्य
वर्षयौ नैक सप्तति संख्यके ॥ द्वादश्यां श्रावणे कृष्णे स्यात् शल्य चिकित्सया । अपमृत्यु कृते वर्षे प्रथमैका-
दशे तथा ॥ सप्तत्रिंश त्रयोविंशं द्विचत्वारिंशतं क्वचित् । त्रिपञ्चाशत संख्याया: अष्ट पञ्चाशतं तथा ॥
सप्तषष्ठितमं वर्षमुपादेयं शिवार्चनम् । धारयेत् पन्नकं तद्वत् हीरकं सर्व जन्मन: ॥ आसीद् वैश्य: पुनर्वै-
श्य: भविष्ये वर्णसंकर: । सोमश्चेदस्य लग्ने वा द्वितीयं सप्तमे ऽथवा ॥ चतुर्थे दशमे वास्यात् भार्यासखा:
धनाधिप: । सवाहन: सुपत्नीक: ऐश्वर्ये भाग्यवान् भवेत् ॥

१ मं. | ११ श. | स्. बु. शु. १२ | २ | १० | ३ के. | ९ रा. गु. | ४ | ६ चं. | ८ | ५ | ७

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे तात! इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें।
भृगुजी बोले - हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक सुखी, स्वजनों से भीत, व्यवसाय
में अधिक लाभ अर्जित करने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित एवं राज्य से धन-लाभ
पाने वाला, साहसी, सबका सहायक, परधन-लोलुप, ब्राह्मण-भक्त, देव-पूजक,
सुन्दरी स्त्रियों का प्रेमी, विनीत, गृह-भूमि-धन-वाहनादि से युक्त, सुन्दर वस्त्रादि
धारण करने वाला, शत्रुजित्, शत्रुओं से धन लेने वाला, प्रसन्न, चाण्डाल जैसे
कर्म करने वाला, कुसंगति-प्रेमी, जाति-उन्नति से आनन्दित होने वाला, शत्रु से भय पाने वाला, तेजस्वी तथा
अपने बन्धु-बान्धवों का विनाश देखने वाला होता है। इसे एक पुत्र से सुख मिलेगा। १८ वर्ष की आयु में
विवाह होगा। २६, ३८ तथा ५२ वें वर्ष में भाग्योदय होगा। इसे मुकदमों में सफलता मिलेगी, परन्तु कर्म-
क्षेत्र में राजदोष के साथ बाधायें आयेंगी। जीवन के १, ११, २३, ३७, ४२, ५३, ५८ व ६७ वें वर्ष हानि तथा
अपमृत्युकारक होंगे। हीरा-पन्ना धारण करने तथा शिवजी का पूजन करने से कल्याण एवं कष्ट-निवारण होगा।

यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में वर्णसंकर-वैश्य होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः स्त्री-भोगी धनी, वाहनादि से युक्त, सुन्दरी स्त्री से युक्त तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच॥ कुण्डल्यां जायमानोऽस्यां भविष्यं तस्य किं पिताः। इत्याकर्ण्य भृगुः शीघ्रं ईप्सितं प्रत्यभाषत ॥ भृगु उवाच॥ वत्सास्यां जायते योऽपि रक्तपित्तविकारवान्। साहसिकः विनीतश्च धीमान् राज्यप्रतिष्ठितः॥ भूमिलाभान्वितः दीनः अल्पादी वाहनैर्युतः। ऋणकर्तारिजेताश्च धनिपस्तेन व्याकुल ॥ चलधीः शत्रुभीतोऽपि जेष्यति तान् कारणम्। कलहेन युतश्चैवं तेजोराशिः भविष्यति॥

चं. २
१२ शु.
के. ३
१
सू. मं. बु.
११ श.
४
१०
५
७
९ गु. रा.
६
८

वैवाहिकश्च भोगोऽस्य कुगण्या विंश संख्यके। परंनात्यधिकं धिया जेष्यति सर्व वैरिणाम् ॥ चतुर्विंशे भवेदस्य भाग्यस्योदयमादितः। नवमीमार्गशीर्षस्य कृष्णस्यावधिरन्तिमा ॥ त्रयोषष्ठितमे वर्षे जीवने घातकानि च। प्रथमं नवमं तद्वत् अष्टमं द्वादशं तथा॥ नवपञ्चाशतं वर्षं आविंशश्चाष्टत्रिंशतम्। कार्तिकेयार्चनञ्चास्मै गोमेधस्यापि धारणम् ॥ सिद्धिदं भविता नूनं क्षत्रियः पूर्वजन्मनः। विप्रेव क्षत्रियायाञ्च जन्मचाग्रे भविष्यति ॥ यदि चन्द्रोऽस्य कुण्डल्यां लग्नेस्यात् सप्तमेऽथवा। द्वितीये दशमे वापि चतुर्थे च तदा भवेत् ॥ सौम्यः बन्धु धनैर्युक्तः स्त्रीयुत राज्येवसम्मतः। जीवने सन्ततिरस्य नाशयेष्यति निश्चितम् ॥ काठिन्येन सुतश्चैकः तिष्ठेत् जीवन सेवकः। इत्येवास्ति फलं वत्स अत्रोत्पन्नस्य देहिनः॥

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा कीजिए। यह सुनकर भृगुजी बोले- हे वत्स! सुनो, यह जातक साहसी, विनीत, बुद्धिमान्, राज्य

द्वारा धन तथा सम्मान प्राप्त करने वाला, पित्त-विकार एवं रक्त-विकार युक्त, भूमिलाभ पाने वाला, सबकी सहायता करने वाला, चंचल-चित्तवाला, अधिक भोजन करने वाला, कलही, ऋणी, सुन्दर वस्त्राभूषण धारण करने वाला, राजमान्य तथा शत्रुजयी होगा। यह सुप्रसन्न, शत्रुओं से भय पाने वाला, परन्तु उन पर विजय भी पाने वाला, तेजस्वी तथा व्याकुल-चित्त वाला होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दर, परन्तु रुग्ण स्त्री के साथ होगा, वह भी अधिक समय तक जीवित नहीं रहेगी। यह अपने शत्रुओं पर बुद्धिमानी से विजय पाएगा। इसके जीवन के १, ८, ९, १२, २२, ३८ तथा ५९ वें वर्ष अपमृत्यु कारक एवं हानिप्रद रहेंगे। स्वामि कार्तिकेय का पूजन तथा गोमेद धारण करने से अरिष्ट-शान्त होंगे तथा लाभ होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण द्वारा क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, धनी बन्धु-बान्धवों से युक्त, श्रीयुक्त तथा राज्य द्वारा सम्मानित होगा। इसकी सन्तानें नष्ट होती रहेंगी तथा कठिनाई से केवल एक पुत्र ही जीवित बचेगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक उवाच॥ कृपया वर्णनं तात कुर्वस्यां जातकस्यत्वम्। जायमानस्य जीवस्य भृगुरुत्तरमब्रवीत ॥ भृगु उवाच॥ जाणिजो ऽयं भवेत् तात धनिय: सुख संयुत:। राजपाप्मितश्च मान्यो ऽपि बान्धवै श्चैष सेवित: ॥ पर सेवारत: धीयात् कर्मशील: स्वभावत:। दुष्ट: कलह सम्पन्न: चलधीश्च वृकोदर: ॥ निर्दय: ऋणकर्त्ता च विनीतो ऽपि गृहात् भवेत्। भूमि वाहन सम्पन्न: प्रसाधन व्ययी स्वयम् ॥ शत्रुजित् व्यसने सक्त: विहितकर्म संच्युत:। प्रसन्नो हेयकर्मी च दीनो परनिन्दकस्तथा ॥ अपमानी स्वजात्या उन्नत्यानन्दितो ऽपि च। तेजस्वी व्याकुलो भीत: चिन्तितो ऽस्थिर धी युत: ॥ सन्तत्या शुक्र दोषेण प्राय: चिन्ता समन्वित: नैकविंशे विवाहो ऽस्य व्यवसायात् समुन्नति: ॥ परं विवेक शून्याच्च राजपापराध सम्भव:। राजदण्ड-

भृ० सं० ६४३

भा० टी०

-स्त्वुनास्मै च जीवने परमावधिः ॥ मध्यमे नवषष्ठ्याख्ये आद्रे च द्वितिया तिथिः । कृष्णपक्षस्य जीवास्मै तृतीयं नवमं तथा ॥ द्वादशञ्चाष्ट विंशं वै चतुः त्रिंशात संख्यकम् । षट्पञ्चाशात श्चैक-चत्वारिंशात सं-ख्यकम् ॥ त्रिषष्ठीं हानिदं सर्व प्रवालं धारयेत तथा । धनापारिष्ट कालेऽपि भैरवार्चन माचरेत ॥ वैश्यो वैश्यश्च स्यादेष यदि चन्द्रोऽस्य संभवेत् । लग्ने तृतीये षष्ठेषु अष्टमे तु भविष्यति ॥ चौरः स्त्रीणां तथैवायं साहसेन समन्वितः । भीतः शत्रुभिरेवैवं शुक्रदोषेण संयुतः ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे सर्वज्ञ ! इस कुण्डली का फलादेश कहिए । भृगु जी बोले- हे पुत्र ! सुनो । यह जातक, व्यवसायी, धनी, सुखी, स्वजनों से सुख पाने वाला, रा-ज्याश्रित, राजमान्य, राज्य से प्रतिष्ठा पाने वाला, हिम्मती, सबका सहायक, दुष्ट स्वभाव वाला, चंचल चित्त, बहुभोगी, कलही, दयाहीन, ऋणी, विनयी, गृह-धन-वाहनादि से युक्त, ठाठ-बाट में अधिक खर्च करने वाला, शत्रुजित, व्यसनी, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, सुप्रसन्न, चाण्डालों से कर्म करने वाला, पर-निन्दक, कुमार्ग-गामी, जातीय उन्नति से प्रसन्न होने वाला, दीन, शत्रुओं से भय पाने वाला, परन्तु उनपर विजय पाने वाला, अपशब्द बोलने वाला, तेजस्वी, हस्त-पीड़ा युक्त, चिन्तित, व्याकुल, घबराहट से ग्रस्त तथा शुक्रदोष के कारण सन्तान की ओर से पीड़ित रहने वाला होगा । इसका विवाह १९ वर्ष की आयु में तथा भाग्योदय २१, ३०, ४२ एवं ५३ वें वर्ष में होगा । व्यवसाय में लाभ होगा, परन्तु विवेक-हीनता से राज्यापराध सम्भव है । फिर भी राजदण्ड नहीं होगा । इसकी आयु ६८ वर्ष की होगी तथा भाद्रपद कृष्णा २ मंगलवार को इसकी मृत्यु होगी। सम्भव है [illegible] ३, ५, ११, २८, [illegible] तथा ६३ वें वर्ष [illegible] अपमृत्यु

मं. बु. १ | १२ सू. शु. | ११ श.
२ | | १०
३ के. | | गु. रा. ९
४ | ६ | ८
चं. ५ | | ७

कारक सिद्ध होंगे। धन लाभार्थ मूँगा धारण करना तथा अरिष्ट-निवारणार्थ श्रीभैरव का पूजन करना हित-कर रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः स्त्री-लम्पट, साहसी, शत्रुओं से भीत तथा शुक्रदोषी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकालज्ञ भविष्यं किं अस्यां यो जायते जनः। वद त्वं कृपयामह्यं भृगु एव-मुदीरितम्॥ भृगु उवाच॥ जिज्ञासो जायमानोऽस्यां भागी भवति मध्यमः। तनुनाक्रोध युक्तश्च

२ बु.	१ सू. मं.	१२ शु.
३ के.	४	११ श.
५	१०	९ गु. रा.
६	७ चं.	८

प्रभावेण समन्वितः॥ गोधूम सदृशं वर्णं अल्पादी वीर्यदूषितः। विद्या विवेक सम्पन्नः कृषिकर्म पटुस्तथा॥ मध्यमं एव वित्तेष सत्यवान् कटुभाषकः। शास्त्रधर्मविदश्चायं वार्द्धक्ये चार्थ संग्रही॥ योगैश्वर्यस्य वृद्धयर्थं व्ययशीलोऽपि सञ्चयम्। राज्यात्ले वकत्वे नैव कुर्यात् धर्मे क्वचित् पृथक्॥ नीरोगः शोभनः किन्तु मुखदन्तार्ति वानपि। भार्याप्रियः गृहात् भूमि वाहनादि समन्वितः। श्रमशीलश्च मध्यायौ स्त्री वियोगी तथात्मजाः। पञ्चस्थे को भवेदस्य सेवको द्वित्रि योगिकः॥ नैकविंशेऽथवा वर्षे पञ्चविंशे विवाहितः। भवेदेष परं भाग्यं उदेष्यत्येकविंशते॥ त्रिचत्वारिंशते चाब्दे द्वात्रिंशतेऽपि वैरिणः। प्रबलास्युः मृत्यादेष वर्षे च पञ्च षष्ठिके॥ दशम्यां श्रावणे शुक्ले जीवने नेष्टकारकम्। सप्तदशं चतुर्विंशं सप्तमं प्रथमं तथा॥ अष्टपञ्चाशतं तद्वत् षड्चत्वारिंशतात्मकम्। नवत्रिंशञ्च मूंगेति माणिक्यं चैव धारयेत्॥ व्रतं भौमस्य सिद्धयर्थं कपिरेव पुराऽभवत्। द्विजश्चाग्रे भवेदेष धर्म कर्म विधानतः॥ द्वितीये कादशे चन्द्रः तृतीये सप्तमेऽथवा। चतुर्थे द्वादशे तिष्ठित् फलं तस्य भवेदिदम्॥ धनिकोऽपि व्ययी भूयात् श्रमयुत मातृ पूजकः। पतिरेक

भृ० सं० ३२३

स्त्रियः तातः उभयोरेव भविष्यति ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे त्रिकालज्ञ ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले- हे इच्छुक! सुनो, यह जातक प्रतापी, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, क्रोधी, गेंहुऐं रँग का, मध्यम क़द वाला, अल्पभोगी, वीर्य-दोषी, विद्या- विवेक- सम्पन्न, सामान्य-धनी, ऋण लेकर काम-चलाने वाला, सत्यप्रिय, कटुवादी, शास्त्रज्ञ, धार्मिक, वृद्धावस्था में धन-लाभ पाने वाला, कृपण, परन्तु भोगों एवं ठाठ-बाट में धन खर्च करने वाला, राज्य कर्मचारी तथा राज्य से धन-लाभ करने में निपुण, कभी-कभी धर्म-कर्म में उदासीन, सुन्दर, नीरोग, मुख-दन्त रोगी, स्त्री-प्रिय, उद्यमी, साहसी, पर-निन्दक, गृह-भूमि-वाहनादि से युक्त, मध्यमायु में स्त्री-वियोगी तथा पाँच पुत्रों का पिता, परन्तु एक ही पुत्र द्वारा सेवा प्राप्त करने वाला, होगा। इसके दो विवाह भी हो सकते हैं। विवाह १८ तथा २५ वर्ष की आयु में होंगे। विरोधी प्रबल रहेंगे। भाग्योदय २१, ३२ तथा ४३ वें वर्ष में होगा। आयु ६५ वर्ष की होगी। श्रावण शुक्ला दशमी शनि वार की रात्रि के समय इसकी मृत्यु सम्भव है। जीवन के १, ८, १७, २४, ३८, ४६ तथा ५८ वें वर्ष हानि एवं अपमृत्यु कारक सिद्ध होंगे। मूँगा अथवा माणिक्य धारण करने तथा मंगल का व्रत एवं पूजन आदि करने से अरिष्ट-निवारण में सहायता मिलेगी तथा अभिलाषाऐं पूर्ण होंगी। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, एकादश अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी, उद्यमी तथा साहसी, मातृभक्त, गृह-भूमि से सुखी, स्त्री युक्त तथा एक ही स्त्री का पति, पुत्र एवं कन्यावान्, खर्चीला तथा धन-लोलुप होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच।। प्रभो मे उच्यतां भावं अस्यां जातस्य प्राणिनः। इत्यमाकर्ण्य शुक्रं स वर्णयामास तत्फलम् ।। भृगु उवाच।। सौभाग्येन प्रतापेण युक्तोऽयं धार्मिक स्तथा। सुपत्निकः सुसंतत्याः

भा० टी०

पिता सौम्यः परं सुताः॥ नश्यन्ति सत्यवाग् गुह्यः योजनानवकर्मणे:। प्रवीणः कीर्तिमान् क्रुद्ध राजमान्यश्च यौवने॥ धनवान् मध्यमः कीर्त्याः लोभाद्धर्म प्रचारकः॥ भाग्ये कौटुम्बिकं विघ्नं धीरोवीरश्च स्त्रीप्रियः। व्यवसायपरो भूयात् परं राज्येन संयुतः। यांत्रिको योजकोवास्यात् स्वस्थो दृशार्त आदितः॥ विचारवांच-लो बुद्ध्या एकविंशे भविष्यति। विवाहश्चास्य भाग्यस्य उदयं षण्णत्रिंशते॥ षड्पञ्चाशते तद्वत् द्विनप-ञ्चाशते तथा। षड्त्रिंशेऽस्ति वैरीणां प्राबल्यं सततं स्थिरम्॥ कूटेन तान्जयेद्देश हानिकष्ट प्रदायकम्। सप्तमं नवमं वर्षे नवविंशेक षष्ठिके॥ त्रिचत्वारिंश तञ्चाब्दं पञ्चपञ्चशतं क्वचित्। अष्टादशं तथैवास्य जीवनान्तं तु निश्चितम्॥ द्वादश्यां श्रावणे शुक्ले वर्षे त्र्योग सप्ततौ। आदित्यार्चनं तद्वत् नीलमस्यास्ति धारणम्॥ श्रेयसे सर्वथा चास्मै सेवकोऽन्य विरोधिनः। एक पुत्रस्तथान्येच क्षत्रियोऽस्तु त्वरा परम्॥ भवत्वेष द्विजश्चाग्रे चन्द्रोऽस्यां यदि संभवेत्। तृतीये पञ्चमे लग्ने षष्ठे वा दशमे क्वचित्॥ अष्टमे स्यात्तदा भूयात् श्रमसाहस संयुतः। सौम्यः सत्कर्मकर्ता च पुत्रवान् वैरिनाशकः॥ जलात् प्राप्स्य-ति भीतिञ्च राजमान्यो भविष्यति। परं राज्यापराधश्च क्वचित् कुर्यादसौधिया॥

भाव	ग्रह
१	सू. मं. शु.
२	बु.
३	के.
४	
५	चं.
६	
७	
८	
९	गु. रा.
१०	
११	श.
१२	

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस जातक की कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जातक प्रतापी, सौभाग्य शाली; परमसुन्दरी, धार्मिक एवं सुयोग्य स्त्री का पति; उत्तम सन्तान का पिता, परन्तु नष्ट-सन्तति युक्त होगा। यह सत्यवादी, गुप्तयोजनाएं बनाने तथा नवीन कार्य करने में तत्पर, राजमान्य, क्रोधी, उग्रस्वभावी, सामान्य-धनी, मध्यमायु में धन लाभ पाने वाला; धार्मिक परन्तु यश की इच्छा से धर्म-कर्म करने वाला, भाग्योदय में विघ्न पाने वाला, पूर्ण पण्डित, विद्या-सम्पन्न, विवेकी, चंचलवृत्ति वाला, कुटुम्ब से विरोध पाने वाला, धीर, वीर, गम्भीर,

चेष्टावान्, स्त्रियों का प्रिय, व्यवसायी, राज्य से सम्बन्धित, यान्त्रिक, स्वस्थ, दृष्टि-दोषी एवं विचारवान् होगा। विवाह २१ वर्ष की आयु में तथा भाग्योदय २४,३६,४८ एवं ५६ वर्ष की आयु में होगा। विरोधी प्रबल बने रहेंगे, उनपर गुप्त उपायों से विजय प्राप्त करेगा। इसके जीवन के ७, ९, १८, २९, ४३, ५५ तथा ६१ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। श्रावण शुक्ला १२ शुक्रवार को मध्याह्न में, ६७ वर्ष की आयु में, इसकी मृत्यु होना सम्भव है। नीलम धारण तथा सूर्य-पूजन लाभकारी रहेगा। एक पुत्र सेवा करेगा। चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, षष्ठ, अष्टम अथवा दशमभाव में हो तो जातक परम सुन्दर, उद्यमी, साहसी, सत्कर्मकर्त्ता, पुत्रवान्, विरोधियों पर विजयी, जल से हानि पाने वाला राजमान्य तथा पदा-कदा राज्याधिकारी होगा। यह फल क्रमशः समझना चाहिए। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
१	सू. बु.
२	शु. मं.
३	के.
४	चं.
५	
६	
७	
८	
९	गु. रा.
१०	
११	श.
१२	

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णितं जीवनं तात अस्यां कुण्डलिजस्य मे। ततो भृगुरुवाचैवं श्रूयतां पुत्र ते मनः। भृगुरुवाच॥ अस्यां यो जायते वत्स विद्वान् भाति नीतिवान्। नम्रः धार्मिको वीरः धीरः शान्तश्च वाक्‌पटुः॥ सत्यवादी दीर्घकायः गौरः स्वस्थश्च तेजवान्। दिव्यकर्मणि चातुर्यं विलासे व्यय कारकः॥ उदारो विंशवर्षीयो पत्नीं प्राप्स्यति सुन्दरीम्। धार्मिकीं गृह भूमेश्च वाहनाद्या समन्वितः॥ स्वार्जितात् पैतृकादेव धनेशः सर्वप्रीतिदः। विलासादालसीं स्वल्पः सेवकावस्य द्वौ सुतौ॥ कर्मदाक्षाहृती वास्यात् भाग्यस्यास्ति वर्द्धनम्। षड्चत्वारिंशते वर्षे सामान्यं त्वस्य जन्मनः॥ सावधानं वरोदेव विद्युतो जन्मतोऽपि च। अष्टषष्ठितमे वर्षे पौष शुक्लाष्टमी तिथौ॥ जीवनस्यावधिरस्य वैश्यश्च पूर्वजन्मनः। वैश्य एव भवेदग्रे पुष्पराग स्य धारणम्॥ अनुष्ठानञ्च सूर्यस्य सर्वथा सिद्धिदायकम्। चन्द्रोऽस्य यदि लग्नेश द्वितीये पञ्चमेऽथवा।

मृ० सं० ३८३ भा० टी०

चतुर्थे सप्तमे वास्यात् क्रमशः एव भविष्यति । स्त्रीचौर कामुकश्चैवं धनेशः पुत्रवान्नपि ॥ स्त्रीणां प्रियस्तथा राज्यात् सम्बन्धेन युतो भवेत् । अरिष्टं जीवने वर्षे पञ्चमे कादशे तथा । पञ्चादशाष्ट विंशे च व ण्णपञ्चाशतं क्वचित् । नव पञ्चाशतं तद्धदपमृत्युकरं सदा ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे पुत्र! सुनो, यह जातक परम विद्वान्, प्रत्येक नीति का ज्ञाता, धीर, वीर, गम्भीर, शान्त, सत्यवक्ता, वाक्चतुर, गौर वर्ण, लम्बे क़द वाला, विवेकी, दिव्य-शरीर, स्वस्थ, नीरोग, तेजस्वी, प्रतापी, चतुराई से काम करने वाला, साहसी, उदारचेता, विलासी, ठाठ-बाट से रहने वाला, गृह-भूमि-वाहनादि से युक्त, पैतृक-सम्पत्ति का लाभ पाने वाला, स्वयं धन कमाने वाला, सर्वप्रिय, विलासी होने के कारण सामान्य आलसी तथा नष्ट-सन्तति वाला होगा। २० वर्ष की आयु में इसका विवाह परम सुन्दरी तथा धार्मिक विचारों वाली स्त्री के साथ होगा। इसके दो पुत्र सेवा करने वाले होंगे। राजा के समान धनी यह जातक अपनी सूझ-बूझ से यथेष्ट धन उपार्जित करेगा। यह धार्मिक भी होगा। इसका भाग्योदय ४६ वर्ष की आयु में होना चाहिए। सामान्य भाग्योदय जन्मजात ही है। इसे बिजली तथा पानी से सावधान रहना चाहिए, अन्यथा इनके कारण किसी समय भय अथवा कष्ट हो सकता है। इसकी आयु ६८ वर्ष की होगी। पौष शुक्ला अष्टमी गुरुवार को मध्याह्नकाल में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी यह वैश्य ही होगा। इसे पुखराज धारण करने से लाभ होगा तथा सूर्य देव का पूजन-अनुष्ठान अरिष्ट-निवारक सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम और दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः स्त्री-लम्पट, कामी, धनी, लक्षाधीश, मातृ-पितृभक्त, पुत्रवान्, स्त्रियों को प्रिय तथा राज्य से सम्बन्धित रहेगा। जीवन के ५, ११, १५, २८, ४४ तथा ५९ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे।। इति शुभम्।।

भृ० सं० ७६३

भा० टी०

ॐ शुक्र उवाच ।। ब्रूहि मे भाविनं देव अस्यां जातस्य देहिनः । तथा शुक्र वचः श्रुत्वा कथयामास तत्पिता ।। भृगु उवाच ।। सुवस्त्रैरावृतो नित्यं जलाद्भीतिः पशुप्रियः । स्वगृहे ऽल्पसुखापन्नः परगेहेषु वत्स्यति ।। गुणज्ञैः सहवासो ऽस्य गुणज्ञः शत्रुभीतियुत । बहुपत्निरतश्चैवं कष्टं प्राप्स्यति पुत्रतः ।। भ्रातृवैरात्मजैः हृष्टः गृह-भूधनवाहनैः । युक्तः प्रसाधने जीविः ग्रामेशः सर्वमानितः ।। कविः विमुखश्चैव दुष्कर्मकृतिवान् भवेत् । दीनो ऽपि दुर्वचोभाषी भयचिन्ताकुलः सदा ।। एकविंशे विवाहो ऽस्य रक्तरुजकन्यया सह । भाग्योदयस्य वर्षञ्चे इदमेवोदरपीडितः ।। भार्यास्या त्रयो पुत्राः सुनाम्नं यान्तु वैरिणः । सबलाश्चास्य योगो ऽस्ति दीक्षकस्योत्तमस्य हि जीवनावधिरस्यास्ति श्रावण शुक्लसप्तमी । सप्तनासीतितमे वर्षे जीवने नेष्टकारकम् । चतुस्त्रिंश त्रयोविंशे षण्णपञ्चाशतं तथा । षडपञ्चाशतं तद्वत् सप्तातिञ्चाष्टषष्ठिकम् ।। पूर्वस्यां क्षत्रियो आसीत् तीर्थमृत्योश्च धार्मिकात् । अन्ते मोक्षं प्रयात्येष गोमेदञ्चापदौ वहेत् ।। मृत्युञ्जयाभिषेकञ्च श्रेयसे सर्वदा शुभम् । यदि चन्द्रो ऽस्य लग्ने वा तृतीये पञ्चमे ऽथवा ।। अष्टमे स्यात् क्रमशो ऽयं भविता बुद्धिमान् तथा । भाग्यवान्नात्मजैर्हीनो ऽपत्नीको जलभीतिवान् ।।

(कुण्डली: ३ के. ; २ सू. मं. बु. ; १ शु. ; चं. ४ ; १२ ; ५ ; ११ श. ; ६ ; ८ ; १० ; ७ ; ९ गु. रा.)

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे तात ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा कीजिए । भृगुजी बोले - हे शुक्र ! यह जातक उत्तम वस्त्र धारण करने वाला, पशुओं से सुख तथा जल से भय पाने वाला, अपने घर में अल्प-सुख पाने वाला, पराये घर में रहने वाला, शत्रुओं से भयभीत, पुत्र द्वारा कष्ट पाने वाला, गुण-ग्राहक गुणी जनों से प्रीति रखने वाला, अनेक स्त्रियों के साथ भोग करने वाला, सदैव धनी, भाई-पुत्रों वाला, विनीत, गृह-भूमि-धन-वाहनादि से युक्त, ग्राम का अधिपति, सर्वत्र सम्मान पाने वाला, कवि, सब का प्रेमी, शत्रुजित, व्यसनी,

विहित कर्म से पराङ्मुख, सुप्रसन्न, कुकर्मी, पर-निन्दक, कुमार्गी, दुर्व्यसनी एवं भय, चिन्ता तथा व्याकुलता से युक्त होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में रक्त-विकार वाली स्त्री के साथ होगा। इसी वर्ष में भाग्योदय भी होगा। स्त्री को उदर-विकार रहेगा। इसके तीन पुत्र बड़े सुपात्र तथा योग्य होंगे। विरोधी प्रबल रहेंगे। यह शासकीय सेवा में कोई उच्चपद भी प्राप्त कर सकता है। इसकी पूर्णायु ७३ वर्ष की है। श्रावण शुक्ला सप्तमी सोमवार को सायंकाल इसकी मृत्यु होना संभव है। इसके जीवन के २३, ३४, ४४, ५६, ६८ तथा ७०वें वर्ष हानिकारक एवं अपमृत्युकारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा इस जन्म में अपनी धार्मिकता के कारण किसी तीर्थक्षेत्र में प्राण त्यागकर मोक्ष प्राप्त करेगा। अरिष्ट निवारणार्थ गोमेद धारण करना तथा महामृत्युंजय का पाठ एवं अभिषेक लाभकारी रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, पंचम, सप्तम अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः बुद्धिमान्, भाग्यशाली, सन्ततिहीन, स्त्री-हीन तथा जल से हानि पाने वाला होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णयन्तु फलादेशं अस्यां जातस्य देहिनः। शुक्रोऽब्रवीत् भृगुं तद्वत् प्रपच्छत् प्रत्युत्तरं भृगुः॥ भृगु उवाच॥ शिष्य यो लभते जन्म अस्मिन् ग्रहमण्डले ध्रुवम्। पुष्पशायी सुवस्त्राणि धारयेत्पशु पालकः॥ पशूनां वारिणीतोऽपि जात्वेव सुखमाप्नुयात्। शत्रूणां भय संयुक्तः परगेहस्थितः सदा॥ गुणज्ञान् पूजयेन्नित्यं गुणज्ञोऽनेक पत्निकः। विनीतो धनवान् भ्रातृ सुखभाक् पुत्र-पीड़ितः॥ वैभवं वाहनाभरणैः युक्तः बहु कलत्रवान्। सुतोत्सवेन सम्पन्नः पुष्पगन्धप्रियस्तथा॥ कृषकः शत्रुजिच्चैवं स्वल्पशत्रुः पराङ्मुखः। पुरस्तात्कर्मणोऽनिन्द्य कर्मवृत्ति कुसङ्गतः॥ व्यवसायो भवेद्नृपः राज्येचैव पदोन्नतिम्। मुक्त्या ज्येष्ठपति शत्रूञ्च आश्विन कृष्णस्याष्टमी॥ द्विसप्ततितमे वर्षे देहान्तं तीर्थपूजनात्। अपमृत्युकरं चाब्दं द्वितीयमष्टत्रिंशतम्॥ एकादशं चतुर्विंशं अष्टममष्ट षष्ठिकम्।

द्विपञ्चाशतञ्चापि जीवनोन्नति हेतवे ॥ धारयेन्नीलमं कुर्यात् शनैश्च सततं व्रतम् । हनुमतोऽर्चनं तद्वत् योगी विप्रः पुराऽभवः ॥ योगभ्रष्टाच्च मानुष्यं प्राप्तवेष वैकुण्ठगः। चतुर्थैकादशे लग्ने अष्टमे यदि चन्द्रमा॥ भवेदेव तदा सौम्यः स्त्रीणां प्रीतोऽप्यपत्यवान् । श्वास कासादिकाणश्च गृहभूमिपति स्तथा ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे नाथ! आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे शिष्य! सुनो, यह जातक पुष्पशय्या पर शयन करने वाला, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, पशु-पालक, जल से भय पाने वाला, पुत्र से दुःखी, गुणी, गुणियों का सम्मान करने वाला, अनेक स्त्री भोगी, धनी, भाइयों से सुखी, अत्यन्त विनीत, धन-वाहनादि से युक्त, आभूषणों से युक्त, बहु कलत्र-पुत्र वान्, पुष्प-गन्धादि का प्रेमी, कृषि-कर्म विशारद, विरल शत्रुओं से युक्त, शत्रुजित्, व्यसनी, विहित कर्म से पराङ्मुख, प्रसन्न, कुकर्मी, निन्दाशील, कुसंगति शील तथा दीन-स्वभाव का होता है । इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में गेहुँए रंग तथा मध्यम कद वाली, उदर-विकार ग्रस्ता स्त्री के साथ होगा । इसके तीन पुत्र सेवा करेंगे। व्यवसाय में हानि तथा शासकीय सेवा में उन्नति प्राप्त होगी । विरोधियों पर युक्ति पूर्वक सफलता मिलेगी। इसकी आयु ७२ वर्ष की होगी। आश्विन कृष्णा अष्टमी को सायंकाल किसी तीर्थ क्षेत्र में इसकी मृत्यु होना संभव है। जीवन में २, ८, ११, १४, ३८, ४२ तथा ६८ वें वर्ष हानि कारक रहेंगे । यह जातक पूर्व जन्म में योगी था। योग-भ्रष्ट होने के कारण यह ब्राह्मण वर्तमान योनि को प्राप्त हुआ है । अब यह वैकुण्ठ लाभ करेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः सौम्य, स्त्रियों प्रिय, स्त्रीयुक्त, श्वास-कास से ग्रस्त तथा गृह-भूमि का स्वामी होगा । उन्नति के लिए नीलम धारण तथा शनिव्रत शुभ है।

ॐ शुक्र उवाच ।। आधारेणास्य कुण्डल्या: जातकस्य फलोदयं । अस्या: ब्रूहि पित: मह्यं तदा भृगु मुदाहरत् ।। भृगु उवाच ।। अस्यां कुण्डल्यां जातो यो ऽपि हे वत्स मानव: । शृणु तस्य भविष्यत्वं संत्रस्त: सो ऽस्ति वारिण: ।। पशुलाभेन सम्पन्न: वासो प्रदर्शनात्मक: । सुशय्यां लभते पुत्रैरार्तो ऽरि भीतिवानपि ।। भ्रातृ-भि: सुखमाप्नोति बहिर्वासो ऽल्प सौख्यवान् । गुणढ्यो गुणिभिर्युक्त: स्त्रीभोगी च सुदुर्बल: ।। धनेशो ऽपि च दीनो ऽयं मिथ्या पाखण्डमाचरेत् । दुःखभाक् सर्वतो शत्रून् जेति दुष्कर्म कारक: ।। प्रसन्नात्मापि कर्तव्यात् विमुख: निन्दक: सदा । अस्ति द्विपत्नि योगो ऽस्यां प्रथमाष्टादशे तथा ।। त्रयोविंशे द्वितीयो ऽस्ति सुन्दर्या धार्मिका सह । तदैवास्य त्रयोविंशे त्रिचत्वारिंशते ऽपि च ।। सप्तत्रिंशे ऽस्ति भाग्यस्य उदयं जीवने भवेत् । द्वितीयमष्टमं षष्ठ द्वाविंश च द्वात्रिंशतम् ।। नैक पञ्चाशतं तद्वत् षड्पञ्चाशतं महत् । घातकं जीवने चायो: पित्तवायु विकारत: गृहैव पूर्णताभूयात् एकसप्तति संख्यके । वर्षायौ कार्तिके कृष्णे पञ्चम्यां वर्तते ध्रुवम् ।। कन्यायोगो ऽधिक श्चैवं धारयेदेव मुक्तिवान् । व्रतं सोमस्य शम्भो-श्च पूजनं सिद्धिदायकम् ।। आसीद्विप्रस्तथा ऽग्रेय पशु: स्यादस्य चन्द्रमा: । द्वितीये पञ्चमे लग्ने चतुर्थे नवमे यदि ।। भवेच्चेदेव संभूयात् विलासी शोभन स्तथा । पुत्रवान् पितृभक्तश्च धनेश: भाग्यवानपि ।।

३ के.	२ सू. बु. मं. शु.	१
४		१२
५		११ श.
६	८ गु.	१० चं.
७		९ रा.

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली के आधार पर जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले – हे पुत्र! सुनो। यह जातक जल से भय पाने वाला, पशु-लाभ प्राप्त करने वाला, ठाठ-बाट से रहने वाला, सुन्दर शय्या पर शयन करने वाला, पुत्र की ओर से दुःखी, शत्रुओं से भीत, पराये घर में रहने वाला, अल्प-सुखी, भाइयों से सुख पाने वाला, धनी, स्त्री-भोगी, गुणी, गुणियों से

भृ० सं० ८२३

भा० टी०

युक्त, दुर्बल शरीर वाला, मिथ्यावादी, पाखण्डी, घर तथा वन में दुःखी, कृषि-कर्म को करने वाला, गन्धादि का प्रेमी, स्त्री भोगी, शत्रुजित्, विहित-कर्म पराङ्मुख, सुप्रसन्न, दुष्टकर्मी, निन्दक, कलही, शत्रु से भीत तथा द्विभार्या योग वाला होता है। इसका पहला विवाह १८ वर्ष की आयु में तथा दूसरा २३ वर्ष की आयु में होगा। पत्नी सुन्दर तथा पतिव्रता होगी, उसी के कारण इसका भाग्योदय २३, ३७ तथा ४३ वें वर्ष में होगा। जीवन के २, ६, ८, २२, ३२, वें तथा ५६ वें वर्ष हानिकारक है। ७१ वर्ष की आयु में पित्त-वायु-विकार अथवा मस्तिष्क-रोग से कार्तिक कृष्णा पंचमी बुधवार को मध्यरात्रि में, अपने ही घर पर इसकी मृत्यु होना सम्भव है। मोती पहिनना, सोमवार का व्रत तथा शिवार्चन लाभकारी रहेगा। कन्याएें अधिक होंगी। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में पशु होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम अथवा नवम भाव में हो तो जातक क्रमशः विलासी, सुन्दर, धनी, पितृभक्त, पुत्रवान् तथा भाग्यशाली होगा॥ इति शुभम्॥

४ | मं. बु. शु. | २ | ३ | सू. के. | १ | ५ | ६ | १२ | चं. ७ | ८ गु. | ९ रा. | १० | ११ श.

ॐ शुक्र उवाच ॥ त्रिकालज्ञ कथयां च्येत् जीवनमेव जातकः। जायतेयोऽपि कुण्डल्यां अस्यां भावस्वमे स्फुटम्॥ भृगुरुवाच॥ गणितज्ञः सुशीलश्च सुवक्ता ख्यातिवान् भवेत्। कीर्ति विनय सम्पन्नः परोपकारकारकः॥ स्वगृहे-स्त्यल्पवासो ऽस्य परगेहे वसेत् सदा। गुणज्ञः आत्मजैः ख्यातः शत्रुभिरपि पीडितः॥ प्रीतिः गुणीषु भार्याणां भोक्ताः परिजनैः सुखी। सततं धन सम्पन्नः मिथ्या पाखण्ड पोषकः॥ दुर्बलश्च वने खिन्नः शत्रुजित् पुष्प प्रीतिदः। कर्तव्यच्युत् प्रसन्नात्मा धने प्रीतो ऽस्य सम्भवः॥ विवाहो ऽस्य परामेव जारपत्न्या-रपत्यवान्। द्वाविंशेऽष्टविंशायौ भाग्यस्योदयमायुषि॥ मध्यमे पत्नि नाशो ऽस्य सन्तत्यानैव सौख्य वान्। द्वासीतितम वर्षायौ आषाढ शुक्ल षष्ठमी। जीवनस्यावधिर्नूनं दुष्कर्मण्यास्य प्रागपि। त्रिचत्वारि

-शते वर्षे अष्ट पञ्चाशेत ऽथवा ॥ त्रिषष्ठि संख्यके वर्षे वातान्धकारणान्मृयात । पुष्परागं वहेदेव आदित्य -चार्चयेत् सदा ॥ शूद्रोऽभूत् पूर्वकाले च प्रेतश्चाग्रिम जन्मनि । यदि चन्द्रोऽस्य लग्ने स्यात् द्वितीये पञ्चमे ऽथवा ॥ नवमे वा क्रमादेष विवेकी शोभनस्तथा । धनवानात्मजैर्युक्तः धार्मिकः मान संयुतः ॥

भावार्थः शुकने कहा - हे त्रिकालज्ञ ! आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुनकर भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक गणितज्ञ, उत्तम शील-स्वभाव वाला, श्रेष्ठ वार्तालाप करने वाला, कीर्तिवान्, विनयी, परोपकारी, अपने घर में अल्प-सुखी, पर-घर में निवास करने वाला, शत्रुओं से भय पाने वाला, पुत्र-पक्ष से कष्ट पाने वाला, गुणग्राहक, गुणीजनों से प्रीति रखने वाला, अनेक स्त्रियों से भोग करने वाला, धनी, गृहस्दस्यों से सुखी, वन में दुःख पाने वाला, पाखण्डी, मिथ्यावादी, दुर्बल शरीर वाला, गौरवयुक्त, पुष्पादि का प्रेमी, शत्रुजित्, विहित-कर्म से पराङ्मुख, निन्दक तथा धन का उपभोग करने वाला होगा, इसका विवाह होना सम्भव नहीं है, परन्तु यह जार-स्त्री से सम्बन्ध स्थापित कर, उसी से सन्तान उत्पन्न करे-गा । सन्तान से इसे सुख नहीं मिलेगा । स्त्री की मध्यमायु में मृत्यु हो जाएगी । इसकी आयु ८२ वर्ष होगी । भाग्योदय २२ तथा २८ वें वर्ष में होगा । आषाढ़ शुक्ला षष्ठी रविवार को मध्याह्नकाल में इसकी मृत्यु होना सम्भव है । कुकर्मों के कारण इसे ४३, ५८ अथवा ६३ वर्ष की आयु में भी वायु-रोग से पीड़ित होकर, मृत्यु को प्राप्त होने की सम्भावना है । यह अन्धा भी हो सकता है । पुखराज धारण करने तथा सूर्यदेव का पूजनानुष्ठा-न करने से इसके सङ्कट दूर हो सकेंगे । यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में प्रेत योनि प्राप्त करेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम अथवा नवम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सुन्दर, धनी, पुत्रवान्, धर्म-प्रेमी तथा समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त करने वाला बन सकेगा । यही इस कुण्डली का फलादेश है ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ वर्णयत्वस्य जीवस्य भविष्यं कृपया प्रभो । शुक्रोक्तं भृगुराकर्ण्य प्रत्युवाच तदीप्सितम् ॥
भृगु उवाच ॥ अस्यां जातो जनस्तात ज्योतिर्विद् शील संयुतः । सुवक्ता कीर्तिमान् ख्यातः सर्वेषां हित साधकः ॥
विग्रहो ऽस्य कुटुम्बाच्च आत्मजैः सुखमाप्नुयात् । बान्धवैश्चापि लक्ष्मीवान् देशाटनप्रियस्तथा ॥ बहुपत्निवश
श्चायं गुणवान् गुणपूजकः । दुर्बलश्च धनाहीनः पाखण्डासत्य योजकः ॥ सर्वशास्त्र विदश्चायं भाषणे च पटुस्तथा । श्रे-
-ष्ठः कर्मसु शत्रूणांजेता कर्त्तव्यविच्युतः ॥ प्रसन्नात्मा च तेजस्वी निन्दकः नवविंशते । चतुःविंशे विवाहो ऽस्य
भाग्योदय पञ्चवर्तते ॥ अष्टविंशैकविंशे च सम्बन्धश्चान्य स्त्रीष्वपि । द्वादशी मार्गशीर्षस्य शुक्लस्य परमावधिः ॥

४	३ सू. मं. शु. के.	२ बु.	१
५	६ चं.	१२	
७	९ रा.	११ श.	
८ गु.		१०	

सप्तासीतिः संख्यायाः वर्षायौ जीवने तथा । अपमृत्युकरं वर्षं तृतीयं नवमं क्वचित् ।
द्वादशे नव त्रिंशाख्यं षडविंश षष्ठि संख्यकम् । यौवने भूकम्पाच्च मरणंचास्य सम्भवम्
ब्राह्मणः पूर्वकालस्य ब्राह्मणो ऽग्रिम जन्मनः । कुर्यात् गुरोः व्रतञ्चैवं गोमेध पुरव-
-राजयोः ॥ कुर्यात् धारणञ्चास्यां चन्द्रः द्वितीय सप्तमे । चतुर्थे दशमे वास्यात् धनिप्
आत्मनां प्रियः ॥ भर्ताचण्ड स्वभावस्थाः राजमान्यो ऽपि संभवेत् । जीवने च द्वयोरेव
पुत्रयोः सुखमाप्नुयात् ॥

भावार्थ। शुक्र ने कहा – हे प्रभो ! आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। यह सुनकर भृगुजी बोले – हे तात! यह जातक ज्योतिषी, शीलवान्, सुन्दर बातें करने वाला, विख्यात, भ्रमणशील, विनयी, सबका हितैषी, कुटुम्बियों से कलह करने वाला, पुत्रादिकों से सुख पाने वाला, भाइयों से सुखी, धनी, अनेक स्त्री भोगी, गुणी जनों का प्रेमी, गुणी, धन-हानि के योग वाला, कमजोर, मिथ्याभाषी, पाखण्डी, वन में दुःख पाने वाला, शास्त्रज्ञ, व्याख्यान देने में कुशल, श्रेष्ठकर्मा, उत्तम भोजन करने वाला, शत्रुजित, विहित कर्मों से पराङ्मुख, प्रसन्न हृदय, निन्दक तथा तेजस्वी होगा। इसका विवाह १९ तथा

२४ वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय २१ तथा २८ वें वर्ष में होगा। यह पर-स्त्रियों के सम्पर्क में भी रहेगा। इसकी आयु ८७ वर्ष की होगी। मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी रविवार को सायंकाल इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के ३, ८, १२, २६, ३८ तथा ६३ वें वर्ष कष्टदायक रहेंगे। मध्यमायु में भूकम्प के कारण अपमृत्यु भी हो सकती है। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण ही होगा। गोमेद अथवा पुखराज धारण करना तथा गुरुवार का व्रत कल्याणकारी एवं अरिष्ट-नाशक सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः पूर्णधनी, कुटुम्ब-प्रिय, कुलटा-स्त्री का पति तथा राजमान्य होगा। इसे अपने जीवन में दो पुत्रों द्वारा सुख प्राप्त होगा॥ इति शुभम्॥

४ शु.	३ सू. बु. मं. के.	२	१
५	६	१२	
चं. ७	९ रा.	११ श.	
८ गु.		१०	

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां योजायेत प्राणी भविष्यं तस्य कीदृशम्। शुक्रोऽपृच्छत् ततश्चैवं भृगुणेदं प्रबोधितम्॥ भृगु उवाच॥ जन्मलब्धवतश्चास्यां सर्वेषां हितकामुकः। विश्रुतः कीर्तिसम्पन्नः विनीतः शीलवानपि॥ स्वगृहे विग्रहश्चास्य गणनाशास्त्रपण्डितः। दूराटनप्रियो गेहादात्मजैश्च सुखान्वितः॥ धनहीनः गृहात्प्रीतः सौम्यः मातृसुखावृतः। दुर्बलाङ्गोऽसत्यवादी वंचको वनदुःखितः॥ असत्कर्त्ता च दीनोऽपं सुबन्धुभिश्च व्यावृतः। सत्कर्मरुचिरेवास्य प्रसन्नः कर्मणाच्युतः॥ विवाहिकोऽस्ययोगोऽस्ति एकविंशे विधुरो भवेत्। त्रिचत्वारिंशते पत्न्याः त्रयोविंशेऽष्टविंशते॥ चतुःत्रिंशे च भाग्यस्याभ्युदयमस्यैक पुत्रकः सेवको यत्न जातोश्च वार्द्धक्ये योगविच्युतः॥ अष्टसप्तति वर्षायौ माघशुक्लाच सप्तमी। जीवनावधिरस्यास्ति वनैतच्च भविष्यति॥ पूर्वजन्मनि क्षात्रोऽपं योगभ्रष्टात्पुनः द्विजः। भूत्वामोक्षं प्रपास्येत जीवने सप्तमाष्टमे॥ अष्टादशं तृतीयञ्च नवपञ्चाशतं तथा। त्रिपञ्चाशतं तद्वत् नवविंशति संख्यकम्॥ त्रिसप्ततिं चतुषष्ठिं घातकं परमं सदा। बृहस्य व्रत संयुक्तं वरुणमेव पूजयेत्॥ धारयेत् पुखरा-

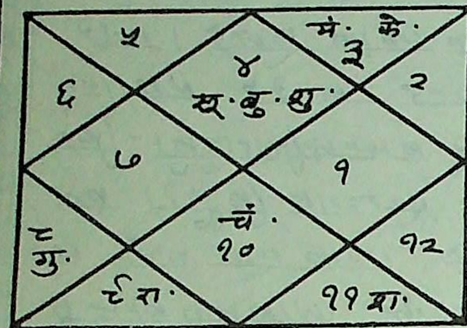
जन्च पन्नकं श्रेयसे महत्। अस्यां चन्द्राः स्थितो भृगात् लग्ने वा पञ्चमेऽथवा ॥ द्वितीयं नवमे तद्वत् दशमेऽथ भविष्यति। लक्षाधीशश्च सौम्यो वा पुत्रवान् धार्मिको महान् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले- हे वत्स! यह जातक सब का हितैषी, विनयी, कीर्तिमान्, प्रसिद्ध, शीलवान्, गणितज्ञ, कुटुम्बियों से निरन्तर कलह करने वाला, दूरस्थान की यात्रा करने वाला, पुत्रादिकों से सुख पाने वाला, प्रियवादी, माता से सुख पानेवाला, सुन्दर वेषधारी, गृहस्थी से सुखी, धन-हीन, दुर्बल शरीर वाला, मिथ्यावादी, ढोंगी, वन में दुःख पाने वाला, सर्वजन प्रिय, शत्रुजित्, सुप्रसन्न, विहित-कर्मों से पराङ्‌मुख, कुकर्मी, दीन-स्वभाव, एवं हितैषी बान्धवों से पृथक होता है। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होगा तथा ४३ वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग भी सम्भव है। भाग्योदय २३, २८ तथा ३४ वें वर्ष में होगा। उपाय द्वारा केवल एक ही पुत्र जीवित रह कर इसकी सेवा करेगा। यह जातक वृद्धावस्था में सन्यास ग्रहण करके योग-भ्रष्ट भी होगा। इसके जीवन की परमावधि ७८ वर्ष है। माघ शुक्ला सप्तमी बुधवार को मध्याह्न के समय इस की मृत्यु होना सम्भव है। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म के ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर स्वर्गादि भोग सुख प्राप्त करेगा। इसके जीवन के ३, ७, ८, १८, २९, ४१, ५३, ६४ एवं ७३ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं हानिप्रद हैं। इसे पन्नाधारण करना लाभप्रद रहेगा। बुधवार का व्रत रखते हुए वरुणदेव का पूजन करना अरिष्ट-नाशक सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, नवम अथवा दशम भाव में हो तो उसके अनुसार यह जातक क्रमशः परमसुन्दर, लक्षाधीश, बहुपुत्रवान्, परमधार्मिक तथा राजतुल्य धनी एवं प्रभावशाली होगा। यही इस जन्म कुण्डली के फलादेश का सारांश है ॥ इति शुभम् ॥

भृ० सं० ६५४

भा० टी०

ॐ शुक्र उवाच॥ कथ्यतां तातजीवस्य अस्यां यो जायते नरः। भविष्यं कृपया पूर्वं तच्छ्रुत्वा भृगुरुक्तवान्॥ भृगु उवाच॥ वत्स प्राणिरसौ क्रूरः पितुः वैरिस्तथात्मजैः। आनन्दितोऽपि चात्मीयैः कलहेनास्ति संयुतः॥ मातुः पितुः मृदुर्वाण्या सदनादानन्दितो सदा। अनृतवाक् तथा पूज्यः पाखण्डेमैव दुर्बलः॥ सुकर्ममति योक्ताऽपं स्वाधीने स्थापयेत्परान्। रिपुञ्जयःप्रसन्नात्मा भ्रष्टो विहित कर्मणः॥ कुपथगः स्वजात्याश्च हितेच्छुः हस्तयोः शुचः। पुत्रचतुष्टयं द्वे कन्येऽपत्ये वैवाहिकः स्तथा॥ योगोविंशेऽस्य पत्न्याच जठरेणातिया सह। भाग्यं मातृदयं नूनं चतुःविंशाष्ट त्रिंशयोः॥ त्रिपञ्चाशेऽपि यान्त्वन्तं वैरिणेऽस्य स्वयं व्ययी। विलासैश्वर्य साधयेषु द्रव्यलुब्धः सदावसेत्॥ पुत्राश्च योगतापन्नाः आयोश्चचरमातिथिः। ध्रुवं त्रिषष्ठे वर्षायौ कार्तिके शुक्लसप्तमी॥ आघातात्द्वायुर्वै कृत्या भवेद् मृत्युश्च जीवने सप्तमे नवमं वर्षे सप्तदशैक षष्ठके॥ षड्पञ्चाशत संख्यायाः नवविंशञ्च घातकम्। शते व्रतञ्चपूजापि धारणं हीरकस्य च॥ सर्वथायुक्त मेवास्यै वैश्ये वैश्यत्व माप्नुयात्। यदि स्याच्चन्द्रमा अस्यां तृतीये सप्तमेऽथवा॥ चतुर्थैकादशे लग्ने दशमे चेद्भवेदसौ। स्त्री प्रियः श्रमशीलश्च भाग्यवान् व्यभिचारयुत॥



भावार्थः शुक्र ने कहा—हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले—हे पुत्र! सुनो, यह जातक क्रूर स्वभाव वाला, पिता से विरोध रखने वाला, पूर्ण धनी, पुत्रों की ओर से सुखी, कुटुम्बियों से कलह करने वाला, प्रियवादी, माता से सुख पाने वाला, सुन्दर वेषधारी, अपने घर में सदा आनन्दित रहने वाला, मिथ्यावादी, पाखण्डी, कमजोर धन की हानि पाने वाला, उत्तमकामों में बुद्धि लगाने वाला, सबको वश में करने वाला, शत्रुजित, विहित कर्मों से पराङ्मुख, जाति-हितैषी, कुमार्गी तथा हाथ में पीड़ा पाने वाला होता है। इसके चार पुत्र और दो कन्याएं होंगी। इसका विवाह उदर विकार वाली तथा क्रोधी-स्वभाव की स्त्री के साथ २० वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय के

वर्ष २४, ३८ तथा ५३ रहेंगे। इसके विरोधी स्वयं परास्त होते रहेंगे। यह ऐश्वर्य तथा विलास में धन अधिक खर्च करेगा। धन की तृष्णा इसे बनी ही रहेगी। इसके सभी पुत्र योग्य तथा सुपात्र होंगे। आयु ६३ वर्ष होगी। कार्तिक शुक्ला सप्तमी मंगलवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में वायु-विकार अथवा चोट के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के ७, ९, १७, २९, ५६ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं हानिप्रद रहेंगे। हीरा धारण करने तथा शनि का व्रत करने से कष्टों का निवारण होगा तथा उत्तम लाभ प्राप्त होगा। यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, दशम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः स्त्रियों का प्रिय, उद्यमी एवं भाग्यवान्, पूर्णसुखी, व्यभिचारी, साहसी तथा पूर्ण धनी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ फलं वदतु मे तात अस्मिन् यो ग्रहमण्डले। जायते जातको तस्य भविष्यस्य सुविस्तरम्॥ भृगु उवाच॥ अस्मिन् जातः पितुः वैरिः धनिपः क्रूरभाववान्। हीनात्मकः निवासश्च परगेहेऽस्य दुर्मतिः॥ अरिंजितादि तैः भीतिः स्त्रीजितश्च कलहस्तदा। मृदुवागनृतं ब्रूयात् प्रदर्शनि प्रियः सदा॥ सुकर्म चिन्तकः गेहं प्रसन्न मनसाऽपि च। विपणगः स्वबन्धून्यः क्लेशदः तनुमध्यमः॥ नातिगौरः विवाहश्च चतुः विंशे परं तथा। वियोगो यौवने नूनं षड्विंशे भाग्यवर्द्धनम्॥ तथोत्कर्षपि कर्षञ्च जीवने बहुसंख्यके। आत्मजैर्विमितोऽप्येष योग्या स्यादस्य सन्ततिः॥ एकपुत्रेण सेव्योऽपं देहान्तस्यावधिः ध्रुवम्। सप्तषष्ठितमे वर्षे श्रावणस्य पराष्टमी। घातकं काल एतस्मै चतुर्थ्यै चैको न त्रिंशते। उदरे रक्त दोषस्यात् मृत्युकाले तथाऽपि वै॥ भाग्यं तु मुत्तमञ्चास्य नीलमं धारयेत् व्रतम्। रवेः भू भ्यार्चनं मुक्तं श्रेयसे पूर्व जन्मनः॥ वैश्योऽपं वृषभो भूयात् विक्रमात् चन्द्रमा यदि। द्वितीयं द्वादशे लग्ने चतुर्थेऽष्टम पञ्चयोः॥ फलं तदाक्रमादित्यं धनेशः जलभीतिवात्। गौरोऽस्त्र प्रियश्चापं कौटुम्बानन्दभाग सदा॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो। यह जातक धनी, पिता का विरोधी, क्रूर स्वभाववाला, पराये घर में रहने वाला, हीनभाव युक्त, दुष्टबुद्धि, शत्रुओं से भय पाने वाला; घरमें प्रसन्न रहने वाला, ठाठ-बाट का शौकीन, स्त्री जित, स्त्री से कलह करनेवाला, माता से सुख पाने वाला; मृदुभाषी, परन्तु झूठ बोलने वाला, ढोंगी, दुर्बल-शरीर, उत्तम कामों का विचारक, सर्वप्रिय, गुणी, शत्रु जित, विहित-कर्म से पराङ्मुख, कुमार्गी, बान्धवों को कष्टदायक एवं सदैव प्रसन्न बना रहनेवाला होगा। इसका कद मध्यम तथा वर्ण गेहुँआ होगा। २४ वर्ष की आयु में विवाह होगा, परन्तु मध्यमायु में ही स्त्री-वियोग भी हो जाएगा। इसका भाग्योदय २६ वर्ष की आयु में होगा। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आयेंगे। यह अपने पुत्रों के विरुद्ध चलेगा। सन्तान योग्य तथा सुपात्र होगी। इसकी आयु ६७ वर्ष होगी। श्रावण शुक्ला अष्टमी रविवार को इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन में ४, ८, १८, २८, ४२, ५६ तथा ६३वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टदायक रहेंगे। मृत्यु रक्त-विकार अथवा उदर-विकार के कारण होगी। मूँगा और नीलम धारण करना शुभ फलदायक रहेगा। पृथ्वी-पूजन तथा रविवार का व्रत करने से अरिष्ट दूर होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में कर्म-विपाक से वृषभ योनि को प्राप्त होगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा लग्न, द्वितीय, चतुर्थ अथवा षष्ठ, अष्टम और द्वादश भावमें हो तो जातक क्रमशः सुन्दर, गौरवर्ण, धनी, कुटुम्ब-सुखी, यात्रा करनेवाला तथा जल से हानि पाने वाला होगा॥ इतिशुभम्॥

५ | ३ के. | ४ सू. मं. बु. शु. | ६ | २ | ७ चं. | १ | ८ गु. | १० | १२ | ९ रा. | ११ श.

ॐ शुक्र उवाच॥ कथ्यतां मे फलादेशं जातकस्यास्य विस्तृतम्। अस्यां जातस्य कुण्डल्यां शुक्रं भृगुरभाषत॥ भृगु उवाच॥ क्रूरः पितृविरोधी च श्रीयुत् परगृहे वसेत्। हीन भावेन संयुक्तः दुर्मतिः शत्रुभिर्जितः॥ अनृतवाक् स्त्रियाद्रोहः बन्धुभिः वैरभावना। स्त्रियाप्रीतो दरिद्रश्च स्त्रीणां प्रियः सदा सुखी॥ सम्पन्न,

पत्नियोगेन सन्तुष्टः व्यसनैर्वृतः। विहित कर्मणोदूरं निन्दकः हेयकारकः॥ जातिप्रियः कुमार्गस्थः हस्तार्तः व्याकुलःसदा वैरिणो वहुरस्यस्युः समं जयं पराजयौ॥ विवाहो विंशते वर्षे चतुर्विंशाष्ट त्रिंशयोः। अस्यभाग्योदयं भूयात् सन्ततिः पूर्णतां वहेत्॥ विवादश्चाग्रता हेतोः सन्तत्याः सेवकः सुतः। प्रवासिनः सुताश्चान्ये अष्टषष्ठ्याञ्च पूर्णता॥ चैत्र शुक्ल चतुर्थ्यां वै आयोः हेयानि जीवने। चतुर्थे नवमञ्चैवं एकादशं चतुर्दशे॥ अष्टविंश त्रिषष्ठिञ्च द्विपञ्चाशत संख्यकम्। षड् चत्वारिंशतं सर्वं क्षत्रियः पूर्व जन्मनः॥ कीदृश्चाग्निमे भूयात् चन्द्रमा यदि संभवेत्। द्वितीये पञ्चमे लग्ने सप्तमे नवमेऽथवा॥ एकादशे क्रमादेष भवेत सौम्यो धनाधिपः। विद्वान् सत्कर्म दक्षश्च भाग्यवान् शुभ जीवने॥ वस्तूनामस्य वाणिज्ये लाभोऽस्ति परमः सदा। इत्येवास्ति फलादेशं अस्या जातस्य प्राणिनः॥



भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे प्रभो! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहें। भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक क्रूर-स्वभाव, पिता से विरोध करने वाला, धनी, पराये घर में रहने वाला, हीनभावना से युक्त, दुष्ट बुद्धि, शत्रुओं से भय पाने वाला, स्त्री-जित्, स्त्रियों से प्रेम करने वाला। अपनी स्त्री से कलह करने वाला, मिथ्यावादी। भाई-बन्धुओं से वैर रखने वाला, दुर्बल शरीर वाला, दरिद्र, पाखंडी, वनमें दुःख भोगने वाला; स्त्री द्वारा धन, मान एवं सुख प्राप्त करनेवाला, शत्रुजित्, व्यसनी, सन्तोषी, कुमार्गगामी, जाति-प्रेमी, दान, विहित कर्म से पराङ्मुख, चाण्डाल जैसे कर्म करने वाला, विवादी, कलही, धनभोगी, तेजस्वी, हाथ में पीड़ा पाने वाला तथा भय, व्याकुलता, घबराहट आदि से युक्त होगा। इसके विरोधी अधिक होंगे, उनपर यह कभी-कभी विजय भी पाता रहेगा। इसका एक पुत्र सेवा करेगा तथा अन्य पुत्र परदेशवासी होंगे। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा तथा भाग्योदय २४ एवं ३८

वें वर्ष में होगा। सन्तान सुयोग्य तथा सुखी होगी। ६८ वर्ष की आयु में चैत्र शुक्ला चतुर्थी मंगलवार को इसकी मृत्यु रात के समय होना सम्भव है। अपने उग्रस्वभाव के कारण यह अपनी सन्तानों का भी विरोध करता रहेगा। इसके जीवन के ४, ६, ११, १४, २८, ४६, ५२ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु कारक तथा हानिप्रद रहेंगे। यह पूर्वजन्म में उग्रकर्मा क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में कीट-योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, सप्तम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, शान्त, पूर्णधनी, विद्वान्, सत्कर्मी, स्त्री-प्रिय, भाग्यवान् और धर्मात्मा तथा श्वेत वस्तु के व्यवसाय से लाभ पानेवाला होगा। इति शुभम् ॥

४ मं.	
५ सू. बु. शु.	
६	
७	
८ गु.	
९ रा.	
१०	
११ श.	
१२	
१	
२ चं.	
३ के.	

ॐ शुक्र उवाच ॥ अस्यां यो जायते प्राणिः श्रोतुमिच्छामि तत्फलम्। विस्तृतं तस्य भावस्व फलादेशं ममाग्रतः ॥ भृगु उवाच ॥ स्थिरधीः कीर्तिसम्पन्नः राजसेवी पराक्रमी। परोपकारकः स्त्रीजित् तथाभेदोऽपि दैन्यवान् ॥ क्षुद्रबुद्धिः मृषाभाषी कृशकायश्च निन्दकः। स्त्रीप्रियः धनहीनश्च सन्तुष्टः पतितो धनी ॥ व्यसनी जातिलाभेच्छः दूरे विहित कर्मणः। चिन्तितो व्याकुलश्चैव विविदत्सुस्तु दुर्वचः ॥ कलही यौवनापन्नां प्राप्स्येत् भार्या त्रिविंशते प्रयत्नेन तथा कष्टात् सुतश्चैको भविष्यति ॥ सेविष्येत स एवैनं भाग्योदय कारकम्। त्रिचत्वारिंशतं वर्षं षड्पञ्चाशत संख्यकम् ॥ एक त्रिंशञ्च मृत्युः स्यात् एक सप्तति संख्यकै ॥ आषाढ़ पूर्व पञ्चम्यां भवेत् जीवन घातकम् ॥ दशमञ्चैकादशं वर्षं अष्टविंशाष्ट त्रिंशते। द्विपञ्चाशत संख्यायाः एकषष्ठिञ्च सप्ततिम् ॥ धारयेच्छ्रेयसे नूनं गोमेधं नीलमं तथा। गजाननार्चनं कुर्यात् चतुर्थीनां व्रतं सदा ॥ केवलं कृष्णपक्षस्य वैश्यो हीनो पुराऽभवत्। वैश्य एव पुनर्भूयात् चन्द्रमाः संस्थितो भवेत् ॥ यदि लग्ने चतुर्थे वा पञ्चमे सप्तमेऽथवा। दशमेतु क्रमादेष विवेकी मातृदुर्मुखः ॥ सन्तत्या रहितश्चैवं भार्यास्य व्यभिचारिणी। राजेवधन

सम्पन्नः पूज्योऽपि संभविष्यति ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक स्थिर-बुद्धि, अधिक परिश्रमी, पराक्रमी, यशस्वी, राजसेवी, परोपकारी, अपने घर में न रहनेवाला, अत्यन्त विनम्र, शत्रुओं का विरोधी, स्त्री-जित, अपनी स्त्री से कलह करने वाला, दुःख भोगी, स्त्री-प्रेमी, मिथ्या-वादी, वन में दुःख पाने वाला। पाखण्डी, दुर्बल, धन-हीन, सन्तोषी, स्त्री-पक्ष से धन, मान तथा सुख पानेवाला, व्यसनी, विहित-कर्म न करने वाला, सुप्रसन्न, कभी व्याकुल, चिन्तित और हाथ में पीड़ा पाने वाला, तेजस्वी, कुमार्गी, जाति-हितैषी, पर-निन्दक तथा कभी-कभी अपशब्दों का प्रयोग करने वाला होगा। इसका विवाह युवती तथा कलह कारिणी स्त्री के साथ २३ वर्ष की आयु में होगा। कठिनाई तथा उपायों द्वारा इसे केवल एक पुत्र की प्राप्ति होगी। वही पुत्र इसकी सेवा भी करेगा। इसका भाग्योदय ३१, ४३ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। आयु की परमावधि ७१ वर्ष है। आषाढ़ कृष्ण पंचमी सोमवार को सायंकाल इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के १०, ११, २८, ३८, ५२, ६१ तथा ७० वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। गोमेद तथा नीलम धारण करना एवं श्रीगजानन गणेश का पूजन-अनुष्ठान इसके लिए लाभप्रद रहेगा। प्रत्येक मास कृष्णपक्ष की चतुर्थी का व्रत करना हितकर रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में दीन वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः विवेकी, मातृ-विरोधी, सन्तति-हीन, व्यभिचारिणी-स्त्री का पति तथा राजा के समान धनी अथवा पूज्य होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ श्रावयन्तु फलं तात अस्यां जातस्य देहिनः। श्रुत्वा भार्गव प्रोक्तं तत भृगुणेदमुदीरितम्॥ भृगु उवाच॥ उपकारी भवत्येष स्थिरधीः विग्रहः स्त्रियः। दुर्मतिश्शत्रुजित् वीरः दीनो रिपु भयान्वितः

भृ० सं० ६३४

भा० टी०

परेषां गृहवास्तव्यः मधुवाक् लेखने पटुः। सुखवान् सुन्दरीणाञ्च प्रेयः द्रव्याय चिन्तितः॥ दुःखभाग् शोभितः पत्न्या प्रीतस्तीर्थाटने सदा। आडम्बरप्रियो वक्ता प्रसन्नात्मा च निन्दकः॥ स्थित कर्मविरुद्धश्च शत्रुजितमतिपूजकः। विकलस्तेजसाऽपन्नः कटुवाक् विग्रहान्वितः॥ विमतिं प्राप्नुयात् पत्निं द्वाविंशेऽष्टादशेऽथवा। भाग्योदयमस्मिन्नेव सुतश्चैको हि सेवकः॥ वैरिणोऽस्य दृढाः नूनं आयोश्चावधिरन्तिमा। नवषष्ठितमे वर्षे फाल्गुन नवमी तिथौ॥ कृष्णपक्षस्य धर्मेण गृहेव जीवने भवेत्। अनिष्टं नवमं तद्वत् तृतीयञ्च चतुर्थकम्॥ सप्तदशाष्टविंशे च नवत्रिंशं त्रिषष्ठिकम्। द्विपञ्चाशत संख्याकं पुष्परागस्य धारणम्॥ गुरोः पूजाव्रतञ्चास्मै शुभदं सततं तथा। क्षत्रियो पूर्वकालस्य मोक्षं प्राप्स्यति चाग्रिमे॥ यदि सोमोऽस्य लग्ने स्यात् द्वितीये सप्तमेऽथवा। दशमे चेद् तदा भाव्यः सौम्यो धीर स्वभाववान्॥ धीरः शान्तश्च वित्तेऽपि मध्यमश्च स्त्रिलम्पटः। सर्वसम्मानितश्चापि गृहमण्डल दर्शनात्॥

६ बु॰ शु॰
४ मं॰
५ सू॰ चं॰
३ के॰
७
८ गु॰
२
९ रा॰
११ श॰
१
१०
१२

भावार्थः शुक्र ने कहा — हे प्रभो! मैं इस कुण्डली का फलादेश सुनना चाहता हूँ। भृगुजी बोले — हे वत्स! यह जातक परोपकारी, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि वाला, स्त्री से कलह करने वाला, स्त्री-जित्, शत्रुओं से भीत, दुष्टमति, अत्यन्त दीन, पराये घर में रहने वाला, श्रेष्ठ वचन बोलने में प्रवीण, चतुर, उत्तम लेखक, सुन्दरी स्त्रियों से प्रेम करनेवाला, सुखी, धनी, धन की ओर से चिन्तित रहने वाला, तीर्थयात्री, अधिक बोलनेवाला, प्रसन्न-चित्त, व्यसनी, विहित-कर्मों का विरोधी, शत्रुजित्, जाति वालों से मिलकर चलने वाला, कटु-शब्दवादी, पर-निन्दक, तेजस्वी तथा चिन्तायुक्त होगा। इसका विवाह १८ अथवा २२ वर्ष की आयु में अपने से विपरीत-मति वाली स्त्री के साथ होगा। इसके केवल एक पुत्र सुख तथा सेवा देने वाला होगा। इसकी परमायु ६९ वर्ष है।

फाल्गुन कृष्णा ९ रविवार को धार्मिक कृत्य करते हुए इसकी मृत्यु घर पर ही होना सम्भव है। इसके जीवन के ३, ४, ९, १७, २८, ३९, ५२ तथा ६३ वें वर्ष हानिप्रद तथा अपमृत्यु कारक रहेंगे। पुखराज धारण करने तथा गुरु पूजन करने एवं गुरुवार का व्रत रखने से इसके अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ मिलेगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा इसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर आवागमन से मुक्त हो जाएगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, गम्भीर तथा शान्त स्वभाव वाला, सामान्य धनी, स्त्री-लम्पट तथा सर्वत्र सम्मान पाने वाला होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जातकस्यास्य कुण्डल्याः निज्जे किं भाविनं वद। एवं शुक्रवचः श्रुत्वा भृगुणैव प्रचोदितम्॥ भृगु उवाच॥ अस्यां यो लभते जीवं गृहोधनमवाप्नु-यात्। सङ्गीतस्य प्रियश्चैवं महत्वेन न तान्वितः॥ सुसाहस्यरिजेता च गृहस्थात् च सुखी सदा। स्त्रीभिः प्रीतिः मृदुवाण्या पटुश्च लेखने ऽप्यसौ॥ मृषावादी शरीरेण कृशः वित्ताय चिन्तितः। कविश्रेष्ठः क्रमात् द्रव्यं अर्जयेत् व्ययकारकः॥ सुव-स्य गन्धमालासु स्त्रीमुदः तीर्थ दर्शकः। शत्रुत्रस्तः कुमार्गस्थः परनिन्दारतः सदा॥ दीनभावान् वहेत् जात्याः संशकः हस्तपीड़ितः। व्याकुलश्चेतसां ऽप्येव धनभोग-रतोर्भवेत्॥ धार्मिकीं सुन्दरीं पत्नीं प्राप्नुयात् विंशते परम्। भाग्योदयस्य वर्षाणि द्वाविंशच्चाष्टत्रिंशतम्॥ षड्पञ्चाशसंख्याकं स्वतः नश्यन्ति वैरिणः। विलम्बेनात्मजावाप्तिः सुतौ सेवां करिष्यतः॥ मार्गशीर्षस्य शुक्ले ऽस्य चतुर्दश्यां तिथौ भवेत्। चतुरसीति वर्षायौ जीवने परमावधिः॥ सन्निपाताद्युक्तदोषात् तृतीयं नवमं तथा। एकादशाष्टविंशे च द्विचत्वारिंश संख्यकम्॥ नैकपञ्चाशतं तद्वत् अष्टपञ्चाशतं सदा। अपमृत्युहिताय्यास्मै धारयेत् विपदां मुखे॥ पुखराजं तथोन्नत्यै पन्नकं गुरुपूजनम्। उपादेयञ्च पूर्वे ऽपं.

७ भु.	६ सू. बु.	५ मं.	४
८ गु.	९ रा.	३ के.	
१०	१२ चं.	२	१
११ श.			

पतङ्गो ऽभूच्च भाविनः ॥ ब्राह्मणोऽयं भवेच्चन्द्रो ऽस्पलग्ने पञ्चमेऽथवा । द्वितीयं सप्तमं चैव नवमेकादशेऽथवा ॥ तदाभूयादसौ नूनं दुष्प्रियः पुत्रवान्नपि । धनेशः स्त्रीप्रियः शुभ्रवस्तूनां व्यवसायवान् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनाने की कृपा करें। भृगुजी बोले— हे वत्स! सुनो, यह जातक राजा से धन पाने वाला, सङ्गीत-प्रेमी, महत्वपूर्ण, विनयी, शत्रुजित, साहसी, अपनी गृहस्थी से सुखी, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, सदैव आनन्दित, तेज लिखने वाला, चतुर, मृदुभाषी, परन्तु मिथ्यावादी, धन के लिए चिन्तित, दुर्बल शरीर वाला, कविश्रेष्ठ, प्रयत्न पूर्वक धन कमाने वाला, सुन्दर वस्त्र सुगन्ध, माला आदि में धन खर्च करने वाला, तीर्थयात्री, स्त्री पुत्र, वाचाल, व्यसनी, विहित-कर्म पराङ्मुख, शत्रुओं से भयभीत, कुमार्गगामी, पर-निन्दक, जाति-प्रशंसक, दीनभावापन्न तथा हाथ में पीड़ा पाने वाला एवं व्याकुल चित्त वाला होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में परम सुन्दरी, धार्मिक तथा सुलक्षणा स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २२, ३८ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। इसके शत्रु स्वयं ही नष्ट तथा परास्त होंगे। सन्तान कुछ विलम्ब से प्राप्त होगी। इसके दो पुत्र सेवा करेंगे। इसकी परमायु ८४ वर्ष है। मार्गशीर्ष शुक्ला १४ शनिवार को मध्यरात्रि में रक्तदोष तथा सन्निपात के कारण घर पर ही इसकी मृत्यु होगी। इसके जीवन में ३, ५, ११, २८, ४२, ४९ तथा ५८ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं हानिप्रद रहेंगे। संकट-निवारणार्थ पुरश्चरण एवं उन्नति के लिए पन्ना धारण करना शुभ रहेगा। गुरुवार का व्रत तथा गुरु-पूजन मनोभिलाषाओं की पूर्ति में सहायक होगा। यह जातक पूर्वजन्म में पतङ्ग योनि में था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः कुकर्मी, पुत्रवान्, स्त्री-प्रिय और भाग्यशाली तथा श्वेत वस्तु का व्यवसाय करने वाला होगा। इस कुण्डली का यही फलादेश है। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ त्रिकालज्ञ फलादेशं अस्य जातस्य भाषताम् । अथालोच्य भृगुश्चेतां कुण्डली व्याजहार वै ॥
भृगु उवाच ॥ महन्महत्वमाप्नोति गीतप्रीतश्च संभवेत् । जातकोऽयं नृपात् द्रव्यं लभते सन्तत: सुखम् ॥ शत्रुजित्
विनयी मिथ्याभाषक: दुर्मतिस्तथा । बान्धवै: वैरयुक्तश्च स्त्रीषु स्नेहं करोत्यसौ ॥ क्षीणकाय: भजेद्धानिं द्रव्येण
कुविनायक: । पुष्पगन्धप्रियश्चैवं क्रमाद्द्रव्येश योगवान् ॥ व्यसनानांमुखं कर्मोपस्थिता द्विमुख: सदा । कुचेष्टस्य
मुदोनित्यं चेतसा दीन व्याकुलौ ॥ तेजस्वी भोग सम्पन्न: जात्यानन्दे रतो भवेत् । करार्त: शत्रुहन्ताच द्वाविं-
शेऽब्द विवाहित: ॥ सुन्दर्या कन्यया शाकं भाग्यं यातूदयाय वै । एक विंशेऽष्ट विंशेऽब्द् चत्वारिंशेऽस्य पुत्रका: ॥

७ शु.		मे. बु. ५	
८ गु.	६ सू.		४
९ रा.		३ के.	
१०	१२		२
११ श.		१ चं.	

न्यूना: कन्याश्च संख्याया अधिका: सेवक: सुत: । आयोश्चावधि अस्यास्ति
चतु: सप्तति संख्यके ॥ वर्षे शुक्लस्य षष्ठी च श्रावणस्याऽपि जीवने । अष्टा
-दशं तृतीयश्च अष्टमे पंचत्रिंशतम् ॥ नैक पञ्चाशतं तद्वत् अष्ट पञ्चाशतं
क्वचित् । द्वि सप्ततिञ्च हान्यर्थं अकाले मृत्युदायकम् ॥ अरिष्टे पूजयेन्नि-
-त्यं हनुमन्तं तथा वहेत् । नीलमं क्षत्रियश्चासीत् पूर्वस्यां वर्णसंकर: ॥ भवि-
-ष्यति वसेच्चन्द्रोऽस्यां तृतीय चतुर्थयो: । षष्ठेऽष्टमे वास्यात् फलं इदं तस्या-
स्ति निश्चितम् ॥ धनियोऽस्यादय मातु: वैरिश्चाटन कारक: । वातरोगेण ग्रस्त-
-श्च सत्यं वच्मि तवान्तिकम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा — हे मुने! आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवनफलादेश कहने की कृपा करें।
यह सुनकर भृगुजी बोले — हे जिज्ञासु! सुनो। यह जातक अत्यन्त महत्वपाने वाला, गीति-वाद्य-प्रिय, राजा
से धन पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, साहसी, शत्रुजयी, विनयी, मिथ्यावादी, बन्धु-बान्धवों से
शत्रुता रखने वाला, हीन बुद्धि, स्त्री-प्रेमी, दु:ख पाने वाला, पाखण्डी, दुर्बल शरीर वाला, धन-हानि पाने

वाला, उत्तम वस्त्र तथा सुगन्ध आदि का प्रेमी, उद्यम द्वारा धनी, प्रियवादी, कवि, व्यसनी, विहित-कर्म-विरोधी, प्रसन्नचित्तवाला, दीनभावापन्न, कुचाली, जाति-प्रेमी, पर-निन्दक, चिन्तित, व्याकुल, तेजस्वी, धनी तथा हाथमें पीड़ा का अनुभव करने वाला, शत्रु नाशक होता है। इसका विवाह २२ वर्ष की आयुमें सुन्दरी स्त्री के साथ होगा। २१,२८,४६ वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा। पुत्रकम तथा कन्यायें अधिक होंगी। केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। परमायु ७४ वर्ष है। श्रावण शुक्ला षष्ठी, रविवार को मध्य दिन में इसकी मृत्यु होना संभव है। जीवन में ३, ८, १८, ३५, ३८, ५८ तथा ७२ वें वर्ष हानिकारक तथा अपमृत्युकारक सिद्ध होंगे। नीलम धारण तथा श्रीहनुमत्-भजन कल्याणकर सिद्ध होगा। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में वर्ण-संकर होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा अष्टमभाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, भ्रातृ-विरोधी, यात्री एवं श्वासरोगी होगा॥ इतिशुभम्॥

भाव	ग्रह
६	सू. बु. शु.
७	चं.
५	मं.
८	गु.
४	
९	रा.
३	के.
१०	
१२	
२	
११	श.
१	

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां कुण्डलि जातस्य फलादेशं वदस्वमे। शुक्रस्योक्तं निशम्यैवं तत्पिता प्रत्युवाच ह॥ भृगुउवाच॥ भूयाद्द्रव्यं लभेदेष मृदुवाक्यात्मकं तथा। सङ्गीत श्रोतु कामोऽयं महन्महत्वभाग् भवेत्॥ जायात्मजादिभिस्तुष्टः शत्रुजित् वित्तयान्वितः। सुन्दरीणां प्रियश्चायं साहसी सततं सुखी॥ लेखने प्रवलो दीनः मृदुश्चन्द्रतभाषकः॥ क्षीणकायः प्रयत्नेन धनवान् भूषितः स्त्रियाः॥ तीर्थाटनी प्रसन्नात्मा विमुखः जातकर्मणः। शत्रुपक्षात् भयापन्नः विपथस्थश्च चिन्तितः आकुलस्तेजसापन्नः करार्तिः धनभाजकः। अष्टादशे विवाहश्च वियोगः स्याच्च यौवने॥ चत्वारिंशत वर्षे च भाग्योदयस्य संभवेत्। एकविंशचतुः त्रिंशं षणणपञ्चाशतं खलुः॥ चैत्र कृष्ण तृतीयायां शस्त्रघातेन वा भवेत्। रक्तदोषेण देहान्तं सामान्ये नास्य घातकम्॥ पञ्चमं सप्तविंशञ्च द्विचत्वारिंशतं क्वचित्। त्रिपञ्चाशत संख्यायाः पञ्चषष्ठ्या

तमकं तथा ॥ पञ्चदशश्च पूर्णायु: अष्टषष्ठ्यां भविष्यति । प्रवालं धारयेत् रत्नं भौमस्यार्चन पूजने ॥ आसीद् वैश्य पुनश्चापं वैश्यं जन्मनि जायताम् ॥ एक एव सुतश्चैनं सेवयेत् जीवने ध्रुवम् ॥ तनये द्वादशे लग्ने द्वितीये सप्तमे ऽथवा । दशमे यदि चन्द्र: स्यात् व्ययशीलश्च शोभन: ॥ धनाधीश: स्त्रियश्चौर: पितु: प्रतिमुखा सदा इत्येवास्ति फलं तात अस्या कुण्डलिजस्य वै ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो, यह जातक राजा से धन पाने वाला, मधुर वचन बोलने वाला, सङ्गीत-प्रिय, महत्व प्राप्त करने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, परम साहसी, शत्रुजयी, विनयी, सुन्दर स्त्रियों का प्रेमी, सदैव सुख भोगने वाला, तीव्र लेखन-शक्ति-सम्पन्न, वाकपटु, परन्तु मिथ्याभाषी, पाखण्डी, दुर्बल शरीर वाला, दरिद्रता मिटाने के लिए प्रयत्न पूर्वक धनोपार्जन करने वाला, स्त्री मुक्त, तीर्थाटनी, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, व्यसनी, दुष्कर्मी, दीनभावापन्न, शत्रुपक्ष से भय पानेवाला, कुचाली, चाण्डाल-कर्म करने वाला तथा भय, चिन्ता आदि से व्याकुल रहने वाला होगा। इसे हाथ की पीड़ा भी होगी । इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में होगा। तथा ४६ वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग का दु:ख भी प्राप्त होगा। भाग्योदय २१, ३४ तथा ४४ वें वर्ष में होगा । आयु ६८ वर्ष की होगी तथा चैत्र कृष्णा तृतीय सोमवार को प्रात: रक्तविकार अथवा शस्त्राघात से इसकी मृत्यु होना संभव है । जीवन के ५, १५, २७, ४२, ५३ तथा ६५ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। मूँगा धारण करने तथा मंगलवार का व्रत और मंगलग्रह का पूजन करने से अरिष्ट एवं संकटों के निवारण में सफलता मिलेगी । यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इसका केवल एक पुत्र सेवा करेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, सप्तम, दशम अथवा द्वादशभाव में होतो यह जातक क्रमश: रूपवान्, धनी, स्त्री-लम्पट, पितृ-विरोधी एवं खर्चीला होगा। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ अत्र यो जायते व्यक्ति: भविष्यं तस्य कीदृशम् । इत्याकर्ण्यात्मन: सूनो: वचस्तात् भृगुरब्रवीत्
भृगु उवाच ॥ वत्स भीतो नृपादेष विरोध्यं कुरुते सदा । प्रवीण: कलहे कुर्यात् परेषां कर्म सौख्यवान् ॥ स्त्री पुत्रै:
शत्रुजिन्नम्र: मधुवाक् धनवान्नपि । प्रवीण: लेखने स्त्रीषूत्तमासु स्नेह संयुत: ॥ दुर्बलोऽनृतवादी च हिंस्रकोनि-
-न्दकोऽपि च । निषिद्द कर्मण: कर्त्ता प्रसन्न: जातिपोषक: ॥ विवादात् कलहे वृत्ति: तेजस्वी हस्तपीड़ित: ।
व्याकुल: सर्वथा भूयात् द्वाविंशैष विवाहित: ॥ भाग्यस्योदय कालश्च त्रयो त्रिंशाष्ट विंशयो । सन्तत्याश्चिन्तितो
नित्यं काठिन्यात् पुत्र एक वै ॥ कुलकलंक रूपेण नाशयेत् सर्व वंशजम् । आषाढ़ कृष्ण सप्तम्यां वर्षेऽष्टषष्ठि
संख्यके ॥ रुजात् श्वास गृहैवास्य जीवनान्तं भविष्यति । सप्तममष्टत्रिंशञ्च नैक
पञ्चाशतं तथा ॥ सप्तदशं त्रिषष्ठिञ्च षड् पञ्चाशतं क्वचित् । वर्षाणामानिव-
-र्तन्ते हान्यै तथापमृत्यवे ॥ अत्युत्तमं भवेदस्मै आशुतोषार्चनं तथा । धारणं
हीरकस्यैवं शूद्र आसीत्पुरा परम् ॥ प्रेत योनिं भजेदग्रे चन्द्रश्चास्यां स्थितो भ-
वेत् । लग्नेऽष्टमे चतुर्थे वा द्वितीयं षष्ठयोरपि ॥ तदाशान्तश्च दीन: स्यात्
शत्रुभि: प्राप्नुयात् भयम् । धनवानधिको नास्ति इत्येवास्यसुजीवनम् ॥

शु. ८ गु.
६ कु.
९ रा.
७ सू.
५ मं.
१०
४
११ श.
१
३ के.
चं. १२
2

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस जन्म कुण्डली का फलादेश है?
भृगुजी ने यह सुनकर कहा - हे वत्स! इस कुण्डली वाला जातक राजा से भय पाने वाला, विरोधी, कलही, पर-कर्म करने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, साहसी, शत्रुजित्, विनयी, मधुरभाषी, परन्तु मिथ्यावादी, लेखन-शक्ति में प्रवीण, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, धन-हीन, दुर्बल शरीरवाला, पाखण्डी, व्यसनी, दु:ख पाने वाला, जीव-हिंसक, सर्व-निन्दक, निषिद्द-कर्म करने वाला, कुमार्गी, अपनी जाति का हितैषी, शत्रु से भय पाने वाला, विवादी, धन-भोगी, तेजस्वी, हाथ की पीड़ा से युक्त तथा चिन्ता एवं व्याकु-

-लता से युक्त होता है। इसे सन्तान-पक्ष से विशेष चिन्ता बनी रहेगी। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में तथा भाग्योदय २८ और ३३ वें वर्ष में होगा। सन्तान कठिनाई से होगी तथा एक कुल-कलंकी पुत्र सबकुछ नष्ट कर देगा। इसकी परमायु ६८ वर्ष है। आषाढ़ कृष्णा सप्तमी रविवार को मध्याह्न काल में, श्वास रोग के कारण, इसकी मृत्यु घर पर ही होना सम्भव है। आयु के ७, १७, ३८, ४७, ५६ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। शिवजी का पूजन एवं हीरा धारण करने से लाभ होगा तथा सङ्कट-निवारण होगा। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगली बार प्रेतयोनि में जन्म लेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ अथवा अष्टम भाव में होतो यह जातक क्रमशः शान्त, निर्धन, सुखी, शत्रुओं से भय पाने वाला तथा सामान्य-धनी होगा॥ ॥ इति शुभम्॥

८ शु.	७ सू.	६ बु.
९ गु. रा.		५ मं.
१०	४	
११ श.	१	३ के.
चं. १२		२

ॐ शुक उवाच॥ श्रोष्यामहं फलादेशं अस्यां जातस्य प्राणिनः। तस्मात् वद-स्व मे तात विस्तारेणीप्सितं मया॥ भृगु उवाच॥ ग्रहेस्वेषु प्रजातोयं राक्षः भयान्वितो ऽस्ति सः। पापात्मा कलहे दक्षः परकार्य रतः सदा॥ सुसाहसी रिपु-णाञ्चजेता स्त्रीपुत्रभिर्मुदः। चतुरो विनयापन्नः मृदुभाषी च हिंसकः॥ सुदक्षो लेखने स्त्रीषु श्रेष्ठासु स्नेह कारकः। गृह भू वाहनै श्चैवं वित्तेनापि समन्वितः॥ कर्मणो सर्वेषां नित्यको मुक्तः स्वाभरेणै च दुर्वचः। निषिद्ध कर्मणां कर्ता व्यसनी विहितात् क्वचित्॥ कर्मणो धनवान् नहि सर्वदा॥ बन्धुभ्यः भयदः भोगी विमुखो दीनः शत्रुभिः भयवान् भवेत्। परं स्यात् नाशकस्तेषां धनवान् नहि सर्वदा॥ अष्टादशे ऽस्य योगो ऽस्ति विवाहस्य करार्त्तः व्याकुलः सदा। क्षत्रियः पूर्वकालस्य पिशाचश्चाग्रिमे भवेत्॥ अष्टादशे ऽस्य योगो ऽस्ति विवाहस्य परं भवेत्। द्वेन पञ्चाशते वर्षे भाग्यस्यास्य महोदयम्॥ संतप्तो ऽतीव सन्तत्या पुत्रसन्ताप कारणात्। जीवने सप्तमे वर्षे दशांशेकस्तु विंशतम्। त्रिपञ्चाशत संख्या पञ्च षष्ठिमे वर्षे ऽतो जलोदरतः भवेत्॥

कं नवत्रिंशच्च घातकम् ॥ माणिक्यं धारयेदेष आदित्यं पूजयेत् तथा । पाठमादित्यहृदयः चन्द्रमा यदि पञ्चमे ॥ द्वितीये सप्तमे चैवं तृतीये दशमे तदा । निर्धनो धीरगम्भीरो स्त्रीलुब्धः सुकृतो भवेत् ॥

भावार्थः शुक ने कहा – हे तात ! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे वत्स ! सुनो, इस कुण्डली वाला जातक राजा से भय पाने वाला, सब का विरोधी, पापी, कलह करने मे कुशल, पर-कर्म करने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, साहसी, शत्रुजयी, विनयी, मृदुभाषी, चतुर, लेखन-कला-प्रवीण, सुखी, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, गृह-भूमि-धन-वाहनादि से सम्पन्न, उत्तम आभूषणों से युक्त, जीव-हिंसक, निन्दक, व्यसनी, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, सुप्रसन्न, चाण्डाल-कर्म करने वाला, शत्रु से भय पाने वाला, परन्तु शत्रुओं का नाश करने वाला, दुर्वचनी, धनलोभी, तेजस्वी, हितकारी, स्वबन्धुओं को हानि पहुँचाने वाला, हाथ की पीड़ा से युक्त तथा चिन्ता एवं व्याकुलता से घिरा रहने वाला होगा । यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में पिशाच होगा । इसका विवाह १८ वर्ष की आयु मे तथा भाग्योदय ४८ वर्ष की आयु मे होगा । इसकी सन्तानें मलिन तथा दुष्ट-बुद्धि होंगी । वृद्धावस्था में कुछ सद्बुद्धि पाकर यह धर्म-कर्म भी करेगा । इसकी सन्तानें ही इसे विशेष कष्ट देंगी । यह पुत्र-सन्ताप में, जलोदर रोग से पीड़ित होकर ६५ वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त होगा । इसके जीवन के ७, १०, २१, ३९ तथा ५३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानि कारक सिद्ध होंगे । इसे कष्ट-निवारणार्थ माणिक्य धारण करना चाहिए तथा श्रीसूर्य देव का पूजन एवं 'आदित्यहृदय स्तोत्र' का पाठ करना चाहिए । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, तृतीय, पंचम, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो उसके प्रभाव से यह जातक क्रमशः निर्धन, धीर, गम्भीर, उद्यमी, विवेकी, पर-स्त्री-लोलुप, प्रतापी तथा सत्कर्म करने वाला व्यवसायी होगा । इस जन्म कुण्डली के जातक का यही जीवन-फलादेश है । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ वर्जपन्त्वस्य जीवस्य फलादेशं हि भाविनम् । श्रोतु मिच्छामि सर्वज्ञ: वदतां कृपयामम ॥ मनुष्योऽपं नृपाद् भीत: वैरि: स्यात्सर्वप्राणिनाम् । पर कर्मणि दत्तश्च पापात्मा कलहे पटु: ॥ ॥भृगु उवाच॥ मनुष्योऽपं नृपाद् भीत: वैरि: स्यात्सर्वप्राणिनाम् । पर कर्मणि दत्तश्च पापात्मा कलहे पटु: ॥ भूषितोत्तमवस्त्रै सुखवानात्मजै: पत्न्या साहस्यरिञ्जयस्तथा । मृषाभाषी व्ययी नम्र: काष्ठाश्मादि कलापटु: ॥ कर्तव्ये विमुखस्तिष्ठेत् हृष्टात्मा श्च गृहात् भूवाहनान्वित: । जीवहिंस्र परेषाञ्च निन्दको गर्ह्यकारक: ॥ एकोनविंशते वर्षे धार्मिकीं सुन्दरीं भजेत् । पलिं सर्व सेवक: । द्रव्योपभोगकर्त्ता च तथापशब्द भाषक: ॥ चतु:विंशे चतु:त्रिंशे भूयात्पुत्राधिकाश्चेत । वृत्यैव मलिनाश्चै भाग्योदयञ्चास्य षट्पञ्चाशते तथा ॥ त्रिषष्ठि संख्यके । व्य: अस्य सेवां करिष्यति ॥ आश्विन कृष्ण सप्तम्यां वर्षे

- ८ शु.
- ७ सू. बु.
- ६
- ९ गु. रा.
- ५ मं.
- १०
- ४
- ११ श.
- १ चं.
- ३ के.
- १२
- २

आंत्रशोथाद् रक्तदोषात् मरणञ्चास्य सम्भवेत् ॥ जीवनेञ्चास्य वर्षाणि तृतीयं सप्तमं तथा । सप्तदशं त्रयोत्रिंशं नैक पञ्चाशतं क्वचित् ॥ षट्पञ्चाशतञ्चा -पि स्त्री वियोगश्च यौवने । अरिष्टे धारयेत् मुक्तां गौर्यार्चनञ्च कारयेत् ॥ उग्र कर्त्ताऽभवच्छूद्र: गर्दभो मरणोत्तरम् । अस्याञ्चन्द्रोऽस्ति लग्ने चेत् द्वितीये सप्तमेऽथवा ॥ चतुर्थाष्टमयो: भूयात् दरिद्रोऽपि धनाधिप: । गृहभूमिपति श्चैवं मान्योऽप्येष भविष्यति ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे सर्वज्ञ! मैं इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनना चाहता हूँ । आप कृपाकर के कहिए । यह सुनकर भृगुजी बोले- हे प्रिय! सुनो, यह जातक राजा से भय पाने वाला, सब का विरोधी, पाप-कर्म करने वाला, कलही, पर-कर्म-कर्त्ता, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, साहसी, शत्रुजित्, विनयी, मिथ्यावादी, अपव्ययी, कुशल कारीगर, बुरे कामों में मन लगानेवा-ला, अधिक बोलने वाला, व्यसनी, उत्तम वस्त्रादि धारण करने वाला, गृह-भूमि-धन-वाहनादि से

युक्त। जीव हिंसक, निषिद्ध कर्म कर्त्ता, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, प्रसन्न रहने वाला, दीन स्वभाव का, शत्रु से भयपा-ने वाला, दुर्वचनी, तेजस्वी तथा हस्त-पीड़ा से युक्त होगा। इसका विवाह गेहुँऐं रँग वाली सुन्दरी तथा धार्मिक स्त्री के साथ १९ वर्ष की आयु में होगा एवं भाग्योदय २४, ३४ तथा ५६ वर्ष की आयु में होगा। इसके पुत्रों की संख्या अधिक होगी और वे प्रायः म्लेच्छ वृत्ति के होंगे। केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। आयु की परमावधि ६३ वर्ष है। मार्गशीर्ष कृष्णा सप्तमी को इसकी मृत्यु सम्भव है। रक्त-विकार अथवा आन्त्रशोथ के कारण मृत्यु होगी। मध्यमायु में स्त्री-वियोग होगा। अरिष्ट निवारणार्थ गौरी-पूजन एवं मोती धारण श्रेष्ठ रहेगा। यह पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में इसे गर्दभ योनि प्राप्त होगी। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम और अष्टम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सत्कर्म कर्त्ता, दरिद्र, गृह-भूमि का स्वामी, धनी तथा मानी होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ जीवनस्य फलादेश कथ्यतामस्य देहिनः ॥ शुक्रस्याकर्ण्य वागेवं भृगुर्णेतत् प्रचोदितम् ॥ भृगु उवाच ॥ जिज्ञासो योऽत्र सं-जातः परकर्त्तास्ति पाठकः। पापात्मा सुहृदां सेवी बहुभिः सुखमाप्नुयात् ॥ रा-ज्यात् भीतः कलादक्षः स्त्रीणामुत्सवमोदितः। वाचालो व्यसनी वस्त्रैः शुभैर्युक्तश्च हिंसकः ॥ निषिद्ध कर्मणां कर्त्ता परनिन्दारतोऽपि च। भूधन वाहनैर्युक्तः प्रसन्नात्मा पराङ्मुखः ॥ कर्तव्यात् शत्रुजेता च दीनश्चिन्ताकुलस्तथा। हस्तार्तिः तेज सम्पन्नः बन्धुकष्टप्रदो भवेत् ॥ अर्शरोग-युतं चैवं स्वभावेन कटु वदुः। पत्निं विंशति वर्षीयो प्राप्स्यत्येव ग्रहोदयम् ॥ नवविंशेऽष्टत्रिंशेऽष्ट पञ्चाशते भविष्यति। गृहभूम्यात्मजनानाञ्च सुखं पूर्णं भविष्यति ॥ योगा विवेक शीलाश्च सन्त-तिं भविताऽस्य वै। रक्तदोषात् गृहेनास्य वर्षे षडषष्ठि संख्यके ॥ पराबाढ चतुर्थ्याञ्च योगोस्य

जीवनान्तक:। चतुर्दशं तृतीयञ्च सप्तमं षोडशन्तथा॥ नैक पञ्चाशतं तद्वत् अष्टपञ्चाशतं तथा। षड्त्रिंशपञ्चविंशञ्च घातकं जीवने ध्रुवम्॥ अस्मै इन्द्राक्षि प्रयोग: प्रवालरत्न धारणम्। हितावहं सदा नूनं शूद्र आसी-त्पुरा परम्॥ प्राप्स्येदेषमधोमक्ष्या: योनिं यदि चन्द्रमा भवेत्। तृतीये पञ्चमे षष्ठे सप्तमे नवमे तदा। विद्या पुत्रस्त्रिभिर्युक्त: क्षीणभाग्य: क्षमान्वित:। इत्येदं वर्तते सर्वं अस्या जीवबलाबलम्॥

भावार्थ: शुक्रने कहा- हेनाथ! मैं इस कुण्डली का फलादेश जानने का इच्छुक हूँ। कृपापूर्वक बताइये। यह सुनकर भृगुजी बोले- हे वत्स! सुनो, यह जातक पर-कर्म करने वाला, पापी, विरोधी, रा-ज्य से भय पाने वाला, मित्रों का सम्मान करने वाला, अनेक लोगों से सुख पाने वाला, पठन-पाठन का प्रेमी, स्त्रियों के उत्सवों में सम्मिलित होने वाला, शिल्पी, व्यसनी, अधिक वाचाल, दुष्कर्म-कर्त्ता; धन, भूमि-वाहनादि का सुख पाने वाला, सुन्दर आभरणों से युक्त, सब का निन्दक, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, जीव-हिंसक, सुप्रसन्न, शत्रुजयी, दीनभावापन्न, शत्रुओं से भय पाने वाला, हाथ में पीड़ा वाला, तेजस्वी, बान्धवों के लिए हानिकारक तथा चिन्ता-व्याकुलता आदि से युक्त होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में अत्यन्त कटु-स्वभाव तथा अर्शरोग वाली स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २८,३२ तथा ५८ वर्ष की आयु में होगा। गृह-भूमि तथा पुत्रों का पूर्ण सुख मिलेगा। सन्तानें योग्य तथा विवेकवान् होंगी। आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी मंगलवार को, ६६ वर्ष की आयु में, रक्त-दोष के कारण घर पर ही इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे ३,७,१४,१६,२६,३२,४८ तथा ५८ वें वर्ष अरिष्ट कारक सिद्ध होंगे। इन्द्राक्षी प्रयोग तथा मूँगा धारण करने से संकटों का निवारण होगा। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में मधुमक्खी की योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम अथवा नवमभाव में हो तो यह जातक क्रमश: उद्यमी और साहसी, पुत्रवान् तथा विद्यावान्, यात्रा करने वाला, सुन्दरी स्त्रीयुक्त तथा भाग्यहीन होगा॥ इति

ॐ शुक्र उवाच ॥ नाथास्यां जायते योऽपि कुण्डल्यां तस्य प्राणिनः । फलादेशं भविष्यस्य किमास्ति कृपयोच्यताम् ॥ भृगु उवाच ॥ श्रावकः जातकोऽयं वै परकर्मरतस्तथा । विरुद्धस्चैव सर्वेभ्यः भयग्रस्तोऽस्ति राज्यतः ॥ परकार्यं करत्येवं स्त्रीपुरुषैः सुखं वहेत् । सुहृदां संगतः श्रेष्ठैः कर्मभिः विमुखो वसेत् ॥ क्षमाशीलः दुःखापन्नः व्ययी स्वाभरणेषु स्यात् । पैतृकेणास्ति सम्पन्नः स्त्रीपुत्रैश्चमुदः सदा ॥ मन्त्रिणो नायको भूयात् शीलवान् कविताप्रियः । कर्त्तव्यविमुखश्चैवं शत्रुजेताऽपि तैः भयम् ॥ दुर्वचनैरसौ कुर्यात् कलहं धनभाग्भवेत् । द्विभार्या योगतः विंशे प्रथमोऽस्तु परे पुनः ॥ पट्कुत्वात् प्रथमस्यास्य चतुर्विंशेऽपरो भवेत् । सुन्दर्यैव विवाहश्च भाग्यवृद्धिश्च सम्भवेत् ॥ षड्विंशतमे वर्षे षण्णपञ्चाशतेऽपि च । चैत्रं परतृतीयायां वर्षे पञ्चषष्ठ्यात्मके ॥ जीवनस्यान्तमस्यास्ति जीवनैर्वस्य पञ्चमम् । तृतीयं शोडषं वर्षं सप्तममष्टविंशतम् ॥ द्विचत्वारिंशतं वर्षं षडपञ्चाशतं क्वचित् । सर्वथा घातकं तस्मात् भद्रकालीं प्रपूजयेत् ॥ धारयेल्लशुने रत्नं मुक्त्वैव यमयातनाम् । अस्याच्चन्द्रो भवेल्लग्ने चतुर्थे दशमेऽष्टमे ॥ ततः सत्कर्मकर्त्तास्यात् मातृभक्तः जलात् भयम् । भीतो राज्येऽपि सम्मान्यः प्रभावी सुख संयुतः ॥

८ बु.	७ सू.	६ मं.
९ गु. शु. रा.		५
१०		४
११ श.		३ के.
१२	१	२ चं.

भावार्थ: शुक्रने कहा - हे नाथ! मैं इस कुण्डली वाले जातक के जीवन का भविष्य-फल जानना चाहता हूँ, सो आप कृपा पूर्वक कहिए। भृगुजी बोले - हे श्रावक! यह जातक पाप-कर्म करने वाला, पराये-कर्म में संलग्न, सबका विरोधी, राज्य से भय पाने वाला, स्त्री-पुरुषों से सुख पाने वाला, मित्रों का प्रेमी, अच्छे कर्मों से विमुख, क्षमाशील, दुःखी, खर्चीला, धन आभूषणादि से युक्त, पैतृक-सम्पत्ति से सम्पन्न, स्त्री तथा पुत्र से सुख पाने वाला, राज्यमन्त्री, नायक, शीलवान, कविता-प्रेमी, कर्तव्य-विमुख, शत्रुजयी तथा शत्रुओं से भय पाने वाला, दुर्वचन बोलने वाला, कलही,

धनी, द्विभार्यायोग कालाख्यं कर्तव्य-विमुख होगा। इसका पहला विवाह २० वर्ष की आयु में होगा, परन्तु स्त्री पंगु हो जाएगी। दूसरा विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २६ और ४४ वें वर्ष में होगा। आयु की परमावधि ६५ वर्ष है। चैत्र शुक्ल तृतीया रविवार को सायंकाल मस्तिष्क-विकार के कारण इसकी मृत्यु होना संभव है। इसे काली का पूजन तथा लहसुनियां धारण करना शुभ रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में, नरक भोगने के बाद वृक्षयोनि में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, अष्टम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सत्कर्म करने वाला, मातृ-भक्त, जलयात्रा करने वाला, राजमान्य और प्रभावशाली तथा पूर्ण सुखी होगा॥ इति शुभम्॥

गु. शु. रा. ९ | ८ सू. बु. | ७ | ६ मं.
१० | ११ श. | ५ | चं. ४
१२ | २ | १ | ३ के.

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकालज्ञ किमस्यास्ति भविष्यं वद मे पितः। जातकस्यास्य जातस्य तदा भृगुरुवाच ह॥ भृगु उवाच॥ शृणु शिष्य मनुष्योऽयं कृपणो कलहप्रियः। विंशत्याग्निभिः त्रस्तः पित्रोर्वैरिरनुन्नतः॥ सुहृदां सेवकः सौख्यं सैवं प्राप्नोति दुःखभाक्। सुकर्मविमुखो युक्तः भूवाहनधनैस्तथा॥ प्रसाधनप्रियश्चैवं श्रमशीलो स्वभाववान्। काव्ये रुचिः स्त्रिया पुत्रैः धनमाप्नोतु शत्रुजित्॥ प्रसन्नात्मा कुकर्माणि करोत्येव रिपुञ्जयः। कर्त्ता च विरतेः सर्वान् सेवते बन्धुकष्टदः॥ म्लेच्छयोगात् कुसङ्गात् च धनं प्राप्स्यति सन्ततिः। क्षुद्रत्वात्तु रतश्चास्य नक्षत्येव पुनः स्वयं॥ वार्द्धक्ये दुःखितो भूत्वा नैक सप्ताति संख्यके। द्वादश्यां शुक्लपक्षस्य श्रावणे च जलोदरात्॥ व्रणविकारतो मृत्युं प्राप्त्वा नारक्य भाजकः। पशुश्च संभवेत्पश्चात् परं पूर्वं द्विजोऽभवत्॥ किन्तु गुरोपराधाच्चं स्त-स्योऽस्पति मागतः। अष्टादशे विवाहश्चैक चत्वारिंशते भवेत्॥ वियोगो जीवने वर्षे चतुर्थे षष्ठ षोडशे। सप्तत्रिंशं त्रयोषष्ठिं अष्टपञ्चाशतं क्वचित्॥ वर्षे पञ्चनपञ्चाशं अपमृत्युकरं सदा। विपत्काले शुभ-

न्चास्मै काल भैरव पूजनम् ।। माणिक्यं धारयेत्तद्वत् यद्यस्यां चन्द्रमा: भवेत् । द्वितीये नवमे षष्ठे एकादशेऽथवा तदा ।। क्रमशोऽयं भवेद्धनवान् भाग्यवान् धार्मिकस्तथा । शत्रुभि: भीति सम्पन्न: वैभववान् सुपुत्रक: ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे त्रिकालज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले - हे तात! सुनो । यह जातक अत्यन्त कृपण; विष, शस्त्र तथा अग्नि से भय पाने वाला, माता-पिता का विरोधी, सबसे सुख पाकर भी उन्नति न कर पाने वाला, मित्रों का आदर करने वाला, परिश्रमी, दु:खी, श्रेष्ठ-कर्मों से विमुख, साज-सज्जा का शौकीन; धन-वाहन एवं भूमि का लाभ पाने वाला, काव्य-प्रेमी, शत्रुजयी, स्त्री तथा पुत्रों से धन पाने वाला, व्यसनी, कुकर्मी, बान्धवों को हानि पहुँचाने वाला तथा अन्य लोगों का हित करने वाला एवं सदैव प्रसन्न बना रहने वाला होगा । इसे म्लेच्छ-सङ्ग तथा कुकर्मों से ही धन का लाभ होगा, परन्तु इसकी नीच सन्तान इसके सामने ही इसके धन को नष्ट कर देगी यह वृद्धावस्था में दु:खी होगा । ६९ वर्ष की आयु में श्रावण शुक्ला द्वादशी सोमवार को जलोदर अथवा व्रण-विकार से, घर पर ही इसकी मृत्यु होना सम्भव है । मृत्यु के बाद यह नरकगामी होगा। बाद में पशुयोनि में जन्म लेगा । पूर्व जन्म में यह जातक ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था, परन्तु तब गुरु का अपराध करने के कारण इसे वर्तमान स्थिति प्राप्त हुई है । इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में होगा तथा ४१ वर्ष की आयु में इसे पत्नी-वियोग का कष्ट उठाना पड़ेगा। इसके जीवन के ४, ६, १६, ३७, ४५, ५८ और ६३ वें वर्ष कष्ट एवं अपमृत्युकारक हैं । संकट-निवारणार्थ इसे कालभैरव का पूजन-अनुष्ठान तथा माणिक्य धारण करना लाभकर रहेगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, षष्ठ, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमश: पूर्णधनी, शत्रुओं से भय तथा हानि पाने वाला, भाग्यशाली धर्मात्मा, वैभवसम्पन्न तथा सुपात्र पुत्रों का पिता होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ॥ अस्यां या जायते व्यक्तिः तस्याः किं भाविनं वद । शुक्रस्येत्थं वचः श्रुत्वा पित्रा पुत्रः प्रबोधितः ॥ भृगुरुवाच ॥ अस्यां या जायते वत्स व्यक्तिः सा नोन्नतिं भजेत् । माता पित्राश्च वैरिः वै शस्त्राग्नि विषभीतियुत् ॥ मित्राणामादरं कुर्यात् सततं कलहान्वितः । विभववान् कुलस्यास्ति पालकश्चाश्मकाष्टयोः ॥ कलापटुः सुखापन्नः स्त्रीभिः प्रसाधन प्रियः । वृद्धाभोगी भयग्रस्तः क्षीणकायश्च चिन्तितः ॥ कवीश्वरेषु प्रीतिः स्यात् नास्तत्र्यो विजनस्य च । आनन्दानुभवं कुर्यात् कर्त्तव्यादिसुखस्तथा ॥ शत्रुजिद्दीन दुष्टौ च हस्तपीड़ित व्याकुलौ । प्राप्नुयात् सुन्दरी भेव पत्नित्वैनैकविंशते ॥ वड्पश्चाशते भूयात् वियोगोऽस्य तया सह । नैकविंशे तमे वर्षे त्रिचत्वारिंशतेऽपि च ॥ भविताषड्विंशेच भाग्येऽस्य परमोदयम् । पातोत्पानेऽस्य कार्येस्युः पितुः रोधोऽपि संभवेत ॥ अष्टषष्टितमे वर्षे दशम्यां कार्तिकस्य च । शुक्लपक्षस्य रात्रौ वै जीवनान्तावधिः ध्रुवम् ॥ पतनं वायुदोषे च स्यातां मरण कारणम् । चतुर्थमष्टविंशञ्च अष्टमं षोडशं तथा ॥ त्रिचत्वारिंशतं वर्षे चतुपञ्चाशतं क्वचित् । चतुस्त्रिंशं तथा षष्ठिं जीवनापकर्ष कारणम् ॥ जड़ो लता स्वरूपेण भूयादग्रिम जन्मनि । वैश्यश्च पूर्व कालस्य चन्द्रश्चेदत्र संभवेत ॥ पञ्चमे सप्तमे लग्ने नवमे वा तदा भवेत् । सुक्रियः परमः शान्तः धार्मिकः भाग्यवान्नपि ॥

गु. बु. रा. ९ | ७ | ८ सू. | ६ मं. | १० शु. | ११ श. | ५ | १२ | ४ | १ | २ चं. | ३ के

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का भविष्य कहें । पुत्र के वचन सुन कर भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक उन्नति न पानेवाला, माता-पिता का विरोधी, विष, अग्नि और शस्त्र से भय पाने वाला, निरन्तर कलह करने वाला, मित्रों का आदर करने वाला, वैभवयुक्त, कुल-पालक, कारीगरी में कुशल, [illegible] प्रकार से सुखी, वृद्धा-स्त्री

से भोग करने वाला, दुर्बल शरीर, अधिक चिन्ता करने वाला, काव्य-प्रेमी, एकान्त सेवी, सुप्रसन्न, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, शत्रुजित, दीनभावापन्न, दुष्कर्मी, हाथ की पीड़ा से युक्त, भय, चिन्ता एवं घबराहट से युक्त तथा पुत्र की ओर से व्याकुल रहने वाला होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में परमसुन्दरी स्त्री के साथ होगा तथा ५६ वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग भी होगा। १८, २६ तथा ४३ वर्ष की आयु में भाग्योदय होगा। व्यवसाय में बहुत उतार-चढ़ाव आयेंगे। पिता से विरोध रहेगा। कार्तिक शुक्ला दशमी बुधवार को मधु राशि में वायु-विकार अथवा ऊँचाई से गिरने के कारण, ६८ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे ४, ८, १६, २६, ३४, ४३, ५४ तथा ६० वें वर्ष में कष्ट एवं अपमृत्यु का भय होगा। यह पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में जड़ लता योनि में उत्पन्न होगा। माणिक्य धारण तथा नारायणोपासना हितकर रहेगी। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, पंचम, सप्तम अथवा नवम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम शान्त और सत्कर्मी, विवेकी, श्वेत वस्तु का व्यवसायी तथा धार्मिक और भाग्यशाली होगा।। इति शुभम्।।

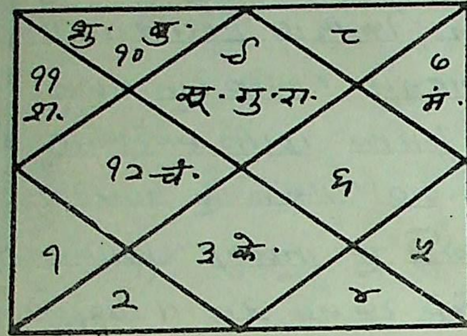
भाव	राशि	ग्रह
1	९	सू. रा. गु.
2	१०	बु. शु.
3	११	श.
4	१२	
5	१	
6	२	
7	३	के.
8	४	
9	५	चं.
10	६	मं.
11	७	
12	८	

ॐ शुक उवाच।। योऽस्यां च जायमानोऽस्ति भाविनं श्रोतुकामतः। पृच्छाम्यहं फलादेशं तस्य मे कृपया वद।। भृगु उवाच।। वत्सैवं स्वजनैः क्रुद्धः धीमान् मित्र हितेच्छुकः। धन वान्नपि सन्तुष्टः स्त्रीभिः प्रीतोऽरि दुःखितः।। निर्बलोऽल्प कर्ता च परेषामेव सुसज्जितः। गृहभूवाहनैश्चैवं दुःखेणाऽपि सुसंयुतः।। एकान्तोवास कर्ता च वृतोऽपि चिन्तया सदा। कविश्रेष्ठेषु प्रीतिर्वै प्रसन्नः व्यसने रतः।। सम्मुखस्थं परित्यज्य दीनो दुष्कर्म कारकः। अपशब्दैः वृथा कुर्यात् कलहं धन भाजकः।। विद्यया च धिया राज्ये मानं प्राप्स्यति निश्चितम्। अपुष्ययाविवाहश्च त्रयोविंशे भविष्यति।। श्वसुरालय लाभोऽपि अस्यास्त्यटने रुचिः। शिक्षिता सन्ततिर्योग्या द्वौ सुतौ सेवकौ सदा।। दशम्यां कृष्णपक्षेस्य फाल्गुनस्य द्विसद्वतौ। वर्षायौ जीवनस्यान्तं अश्मर्या संभविष्यति।। जीवने नवमं

वर्षे तृतीयं नैक विंशतम् । त्रिचत्वारिं शतञ्चाब्दं एकपञ्चाशतं क्वचित् ।। षड्त्रिंशं सप्तषष्ठिञ्च घातकं सर्वथा स्फुटम् । गणपते उच्छिष्टस्य प्रयोगो ऽस्मै शुभं सदा ।। नीलमेत्यस्य रत्नस्य पुखराजस्य धारणम् । पूर्वस्यां ब्राह्मणश्चायं भाविनः वर्णसंकर ।। अस्याञ्चेच्चन्द्रमाः तिष्ठेत् तृतीये पञ्चमे ऽष्टमे । द्वादशे वा भवेदेष शान्तश्चोद्यमकारकः ।। सुसाहसी वयी कार्ये कुत्सिते पुत्रवान्नापि । साहसी प्रबलाभश्च जलाद्धानिर्भविष्यति ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवनफलादेश कहने की कृपा कीजिए।। यह सुनकर भृगुजी बोले- हे वत्स! सुनो, यह जातक स्वजनों से क्रुद्ध, बुद्धिमान्, धनी, मित्र-प्रेमी, सन्तोषी, स्त्रियों से सुखी, शत्रुओं से भय पाने वाला, बलहीन, अल्पकामी, पराया-काम करने वाला; गृह-धन-वाहनादि से युक्त, ठाठ-बाट से रहने वाला, एकान्तसेवी, वृद्धा-स्त्री का भोग करने वाला, चिन्तित, अच्छे कवियों से प्रेम रखने वाला, व्यसनी, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, दीनभावापन्न, दुष्टकर्म करने वाला, उपाय द्वारा शत्रुओं पर विजय पाने वाला, अपशब्दों का प्रयोग करने वाला, कलही, धन योगी तथा अपनी विद्या और बुद्धि के बल पर राज्य-सम्मान प्राप्त कर, धन-लाभ करने वाला होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में अप्रुष्पा-स्त्री के साथ होगा। इसे ससुराल-पक्ष से लाभ होगा। इसकी सन्तानें सुशिक्षित तथा योग्य होंगी। यह देशाटन करेगा तथा इसे दो पुत्रों का सुख प्राप्त होगा। इसकी परमायु ७२ वर्ष है। फाल्गुन कृष्णा दशमी बुधवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में पथरी रोग के कारण इसकी मृत्यु सम्भावित है। इसके जीवन में ३, ९, १८, ३६, ४३, ५१ तथा ६७ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं हानिप्रद रहेंगे। उच्छिष्ट गणपति के प्रयोग तथा पुखराज एवं मूंगा धारण करने से इसे लाभ होगा। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में वर्णसंकर होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, पंचम, अष्टम अथवा द्वादशभाव में हो तो जातक उपयोगी, शान्त तथा साहसी पुत्रवान्, अनायास धन लाभ, जल से हानि, खर्चीला तथा कुत्सित कर्मों में धन कमाने वाला होगा।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ॥ अस्यां जातस्य जीवस्य पूर्वं किं जीवने फलम् । श्रोतुमिच्छाम्यहं तात कृपया वर्ण्यताम् स्फुटम् ॥ भृगु उवाच ॥ जातोऽस्यां सुहृदां प्रेयः सन्तुष्टो धनवान् भवेत् । स्वजनैः कोपयुक्तश्च बहुद्रव्य व्ययी सदा ॥ अङ्गहीनस्तप्तदेहः स्त्रीपक्षेण सदादुःखी । परकार्यं करोत्येष स्वल्पं तत्कुरुतेऽबलः ॥ वाहनधनभूमिभिः युक्तोऽरिभिः भयान्वितः । शोभनाभरणापन्नः वृद्धयारमते क्वचित् ॥ भीतः दौर्बल्य संयुक्तः चिन्तको विजने रतः । सुकविषु रुचिर्भूयात् विहितं कुरुते नवै ॥ शत्रुञ्जयोऽप्यसौ तेषां नाशकः क्षुद्र कर्तृकः । दीनः शत्रुभिरार्तश्च सर्वेषांहित वाहकः ॥ बान्धवाहित कर्ता च सुशिक्षिताश्च सन्ततिः । परं पितुः विरोधाच्च सेवकौ द्वौ भविष्यतः ॥ तथापि



विपरीतञ्च हृदयं सन्ततौ भवेत् । उपायेनारि जेताऽसौ पश्चात् त एव शंसकः ॥ नवषष्ठितमे वर्षे वैशाखस्य चतुर्दशी । शुक्लस्य वधिरस्यास्ति तच्चतुर्थेऽथवा जले ॥ जीवने घातकञ्चास्मै तृतीयञ्च चतुर्दशम् । नवत्रिंश त्रयोविंशं द्वेन पञ्चाशतं तथा ॥ हनुमन्तञ्च लाभाय पूजयेत् धार्मिकाणि वै । विचाराणि नहि स्त्रिवो नास्तिकोऽयं भविष्यति ॥ शूद्रोऽयं धार्मिकः पूर्वं परं कर्म विपाकतः । सर्वोऽयं चाग्रिमे भूयात् यदि चन्द्रोऽस्य संभवेत् ॥ द्वितीये नवमे लग्ने चतुर्थे वैष भाविनः । सौम्यः लक्षाधिपो भोगी मातृभक्तः सदा सुखी ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे तात ! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवन - फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे वत्स ! यह जातक सन्तोषी, मित्रों का हितैषी, महाधनी, अत्यन्त बुद्धिमान्, स्वजनों के कोप से युक्त, अधिक धन खर्च करने वाला, अङ्गहीन, संतप्त - शरीर, स्त्री - पक्ष से दुःखी, पर - कार्य - रत, बलहीन, शत्रुओं से भयभीत, धन - भूमि - वाहनादि से युक्त, सुन्दर आभरणों से युक्त, वृद्धा - स्त्री का भोगी, भयभीत, दुर्बल, चिन्तित, श्रेष्ठ कवियों से प्रेम रखनेवाला, एकान्तवासी, विहित - कर्म से पराङ्मुख, शत्रुओं पर विजय पाने वाला,

शत्रु-नाशक, चाण्डाल-कर्म करनेवाला, दीन, शत्रुओं से भयभीत, तेजस्वी, सर्वहितैषी एवं अपने बान्धवों को हानि पहुँचाने वाला होता है। इसकी सन्तान बुद्धिमान, सुशिक्षित, परन्तु पिता से विरोध करने वाली होती है। केवल दो पुत्र ही इसकी सेवा करेंगे, पुत्रों की ओर से इसका हृदय सन्तप्त बना रहेगा। यह उपायों द्वारा विरोधियों पर विजय प्राप्त करेगा और बाद में वे इसकी प्रशंसा भी करेंगे। परमायु ६८ वर्ष होगी। वैशाख शुक्ला चतुर्दशी गुरुवार को मध्याह्न में, तीर्थ क्षेत्र में जल अथवा सर्प के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसका विवाह सदैव रोगिणी रहनेवाली स्त्री के साथ २१ वर्ष की आयु में होगा। इसके जीवन के ३, १३, २३, ३८, ४८ तथा ६३ वें वर्ष हानिकर रहेंगे। पन्ना धारण करने हनुमत्-भजन से लाभ होगा। यह प्रायः नास्तिक विचारों का होगा। यह जातक पूर्वजन्म में धार्मिक शूद्र था, अगले जन्म में इसे सर्प योनि प्राप्त होगी। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ अथवा नवम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परमहंस और भोगी, लक्ष्मीश, मातृ-भक्त तथा पूर्ण सुखी एवं सौभाग्यशाली होगा।। इति शुभम्।।

भाव	ग्रह
९	सू. गु. रा.
१०	बु.
८	
११	शु. श.
७	मं.
१२	
६	चं.
३	के.
१	
५	
२	
४	

ॐ शुक्र उवाच।। वृत्तान्तं तस्य जीवस्य जायते गृहमण्डले। योऽस्मिन् मे ब्रूहि सर्वज्ञ श्रोतुमिच्छामि विस्तृतम्।। भृगु उवाच।। धीमानतीव मित्राणां हितेच्छुः धनवान् तथा। कुपितः स्वजनैः तुष्टः स्त्रीपक्षात् खिन्नचेतसः।। अङ्गहीनोऽरिभिः क्षीणः शक्तिवान् उत्तमाभरणं प्रीतिः रहितोऽप्येष तैः परम्। भोगेसु मनसारूढ़ धनवाहनैः। भूम्या च सुखसंयुक्तः परेचाल्पस्य कारकः।। निषिद्धात् विमुखश्चैवं लीनो विहितकर्मसु। शत्रुजेता परं तैश्च भीतोऽपि हस्तपीड़ितः।। व्याकुलो अनालस्यं सुकर्मसु।। संभवेत् भीत्योद्वेलिताश्चिन्तितः सदा। भाग्योदये बहवश्चास्य विडम्बनाः समुत्थिताः।। सामान्येन नवत्रिंशषट्चत्वारिंशे तु भवेत्। भाग्योदयं विवाहश्च एकविंशेऽस्य निश्चितम्।। मध्यमस्तनुना पत्निः सामान्या धार्मिका च सा। व्यपत्रपास्य चिकित्साभिः धनी योग्याऽस्तु सन्ततिः।। परमेकोहि सेविष्येत् मृत्युश्चाष्टषष्ठिके। वर्षे कार्तिक

मासस्य चतुर्दश्यां भविष्यति ॥ जलोदरेण शुक्लस्य वीर्यदोषाच्च सम्भवा । शत्रवोऽप्रबला: सन्तु उत्तमः श्वसुरालयः ॥ जीवने पञ्चमं वर्षं अष्टादशञ्च त्रिंशतम् । त्रिचत्वारिंशत्तद्वत् षट्पञ्चाशतं क्वचित् ॥ द्विषष्ठिञ्चाष्टमं वर्षं पातकं सर्वथा तथा । पूर्वजन्मनि शूद्रोऽयं आसीद्वैश्यश्च भाविन: ॥ वीरभद्रार्चनं कुर्यात् धारयेत् पन्नकं शुभम् । यद्यमचन्द्रमास्तिष्ठेत् चतुर्थे सप्तमेऽथवा । दशमे द्वादशे वर्षे भूमि लाभोऽस्तु विपत्निकः । पितुः वैरिस्तथालस्यं करोति भ्रमणे रुचि: ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन – फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुन कर भृगुजी बोले – हे पुत्र ! सुनो, यह जातक बड़ा बुद्धिमान्, मित्रों का हितैषी, धनी, स्वजनों से कोपयुक्त, संतोषी, स्त्री-पक्ष से दुःख पानेवाला, धन खर्च करने वाला, अङ्गहीन, शत्रुओं से बल-हीन, पर-कार्यकर्ता, अल्प कार्य कर्त्ता, धन-भूमि-वाहनादि से सुखी, उत्तम वस्त्राभूषणों का प्रेमी, परन्तु उनका भोग न कर पाने वाला, अच्छे कामों में आलस्य न करने वाला, निषिद्ध-कर्म करने से विमुख, विहित-कर्मों में तल्लीन, शत्रुजयी, परन्तु उनसे भय पाने वाला, दीनभावापन्न, वायु-पीड़ा युक्त एवं भय, घबराहट तथा चिन्तायुक्त होता है । भाग्योदय में अनेक बाधाएं आती हैं । इसका भाग्योदय २६ और ४६ वर्ष की आयु में होगा । विवाह २१ वर्ष की आयु में मध्यम क़द वाली स्त्री से होगा । वह सामान्यवर्ण की तथा धार्मिक विचारों की होगी । चिकित्सा में धन खर्च होता रहेगा । सन्तान योग्य तथा धनी होगी, परन्तु केवल १ पुत्र ही सेवा करेगा । इसकी मृत्यु ६८ वर्ष की आयु में, कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी शनिवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, जलोदर रोग अथवा वीर्य दोष के कारण होना सम्भव है । श्वसुराल-पक्ष उत्तम रहेगा । शत्रु प्रबल नहीं हो सकेंगे । जीवन के ५, ८, १८, ३०, ४३, ५६ तथा ६२ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे । यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में वैश्य होगा । वीरभद्र का पूजन तथा पन्ना धारण करना हितकर रहेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि चतुर्थ, सप्तम, दशम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः गृह-भूमि का लाभ पाने वाला, स्त्री-हीन, आलसी, पितृ-विरोधी तथा निरन्तर भ्रमणशील होता है ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ फलादेशं प्रभो मह्यं कथ्यतां तस्य प्राणिनः । कुण्डल्यां जायमानोऽस्यां कृपया परया तदा ॥ भृगुउवाच क्रोधनो भवति प्राणिः योऽस्यां जायेत सुतः । बुद्धिमान् धन सम्पन्नः मित्राणां च हितावहः ॥ सन्तुष्टश्चास्त्रियाखिन्नः व्ययशीलोऽल्प कारकः । त्रस्तोऽरिभिः सुवस्त्रैश्च युक्तो भूवाहनैर्धनैः ॥ श्रेष्ठ कर्मसु चालस्यं निषिद्धेषु प्रवृत्तिवान् । वस्त्रैराभूषणैःहीनः नासक्तः भोग कर्मसु ॥ विनंतः शील सम्पन्नः वैभवेणास्ति संयुतः । परोपकारदक्षस्च दीनोऽरिनाशक-स्तथा ॥ कटु सत्यवदो न्यायप्रियः स्त्रीपक्षतः सदा । दुःखितो व्ययशीलश्च तस्याश्चिकित्सय कर्मसु ॥ सुयोग्याः पञ्च पुत्राः स्युः परं द्वावेव सेवकौ । विवाहो नैक विंशे स्यात् षष्ठापञ्चाशेत भवेत् ॥ तयाशाक्तं वियोगोऽस्य सप्तविंशे-क विंशते । त्रिपञ्चाशात संख्यायाः अष्टत्रिंशेऽपि संख्यके ॥ भाग्यस्योऽभ्युदयं ञ्चाथें वर्षैक सप्ततौ तथा । मार्गशीर्षस्य शुक्लस्य नवम्यां परमावधि ॥ जलहान्याऽथवा रोगात् जीवने कष्टदायकम् । प्रथमं पञ्चमं वर्षं शोडषं नवविंशतम् ॥ द्विनपञ्चाश-त ञ्चैवं अष्ट पञ्चाशतं क्वचित् । नवषष्ठिं तथैवायं पुरवराजञ्च धारयेत् ॥ कुर्यात श्रीपूजनं सिद्धयै उग्रः क्रूरश्च ब्राह्मणः । आसीत्पुरा पुनः विप्र भविता चन्द्रमा यदि ॥ द्वितीय पञ्चमे स्थाने नवमे द्वादशे तदा । विद्वान् धनपतिः धर्मे सौभाग्यञ्च वि-वेकवान् ॥

१० बु.
९
सू. गु. रा.
८
शु. ११
७ मं.
श. १२
६
१
३ के.
चं. ५
२
४

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे पुत्र ! इस कुण्डली वाला जातक स्वजन-विरोधी, बुद्धिमान्, अतिधनी, मित्रों का हितैषी, सन्तोषी, स्त्री-पक्ष से दुःखी, धन खर्च करने वाला, अल्पकामी, शत्रुओं से भय पाने वाला, सुन्दर आभूषणों से युक्त, भूमि-धन-वाहन को प्राप्त करने वाला, निषिद्ध-कर्म कर्ता, शुभकर्म करने में आलसी, गुणग्राही, परोपकारी, दीनभावापन्न, शत्रु-नाशक, कटु सत्यवादी, न्याय-प्रिय तथा स्त्री की ओर से सदा दुःखी रहने वाला होगा । स्त्री की चिकित्सा में धन खर्च करता रहेगा । इसके

पाँच पुत्र सुपात्र होंगे। जिनमें से दो इसकी सेवा करेंगे। इसका विवाह १९ वर्ष की आयु में होगा तथा ४४ वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग होगा। भाग्योदय २१, २८, ३८ तथा ५३ वें वर्ष में होगा। परमायु ७१ वर्ष होगी। मार्गशीर्ष शुक्ला नवमी गुरुवार को मध्याह्न के समय जल-विकार अथवा जल के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के १, ५, १६, २९, ४८, ५८ तथा ६९ वें वर्ष हानिकर रहेंगे। पुखराज धारण तथा लक्ष्मी-पूजन करने से हित-साधन होगा। यह जातक पूर्व जन्म में उग्र क्रूरकर्मा ब्राह्मण तथा तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पुण्यात्मा, विद्वान्, सौभाग्यशाली और धर्मात्मा तथा अविवेकी होगा॥ इतिशुभम्॥

शु. श. ११	१० सू. बु.	रा. गु. ९
१२ चं.		८
१		७ मं.
२	४	६
३ के.		५

ॐ शुक्र उवाच॥ श्रोतुमिच्छाम्यहं नाथ अस्यां जातस्य जीवनम्। किं फलादेशम-
-स्यास्ति कुण्डल्या ब्रूहि विस्तृतम्॥ भृगुउवाच॥ भ्रमणेरुचिरस्यास्ति कुटुम्बात् वैर
संयुतः। वैभवोत्सववित्तैश्च हीनो सन्ताप देहवान्॥ चिन्तितः पतितो भीतो ऽरिभिश्च
परकार्यकृत्। बुद्धिमान् धनभूमिभ्यां वाहनेनापि शोभितः॥ श्रेष्ठाभरणं युक्तो ऽयं
भोगेष्व रुचिकारकः। आलस्यञ्च सत्कार्येषु वसनी शत्रुञ्जयी भवेत्॥ दीनभाव
समापन्नः प्रसन्नस्तेजसा वृतः। बन्धुभ्यः कष्टदो भूयात् द्वाविंशे ऽन्यं भविष्यति॥
सुन्दर्या स्वदरेणाऽपि रुग्णया च विवाहितः। एकविंशाष्ट त्रिंशञ्च अष्टपञ्चाशतं
सदा॥ भाग्यास्यास्याभिवृद्ध्याब्दं विद्यया धनवान् भवेत्। तेनैव ख्यातिवान् लोके परं पुत्रेण दुःखितः॥ राज-
-द्वारि जयेन्नित्यं शिरोवेदनया तथा। भाद्रपद कृष्णपञ्चम्यां वर्षे ऽष्टषष्ठि संख्यके॥ मृत्युरस्यास्ति यात्रायां
कष्टञ्च धनन्यूनता। जीवने घातकञ्चाब्दं प्रथमं सप्तमं तथा॥ सप्तदशं त्रिषष्ठिञ्च द्विचत्वारिंशतं
क्वचित्। अष्टपञ्चाशत संख्यायाः वर्षञ्च नैक त्रिंशतम्॥ नृसिंहस्य हि लक्ष्म्याश्च करोत्वर्चन पूजनम्। मूँगे
-ति रत्नकं तद्वत् धारयेत् श्रेयसे सदा॥ ज्ञानवान् क्षत्रियः पूर्वं जायात्वञ्चाग्रिमे व्रजेत्। यदि स्यच्चन्द्रमा

अस्यां तृतीये पञ्चमेऽष्टमे। लाभस्थाने कुमार भूयात् श्रमवान् कर्तव्य पालकः। विद्वान् पुत्रेणयुक्तश्च विद्युज्जल सुभीतिवान्॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली का फलादेश सुनने की मेरी इच्छा है सो आप कहिए। भृगु जी बोले - हे वत्स! सुनो, यह जातक भ्रमणशील, कुटुम्बियों का विरोधी, धनहीन, उत्सव-रहित, ऐश्वर्य हीन, संतप्त शरीर वाला, स्त्री की ओर से दुःखी, शत्रुओं से भय पाने वाला, दूसरों का काम करने वाला, भूमि-वाहनादि से युक्त, अल्पभोगी, सत्कार्य करने में आलस्य करने वाला, निषिद्ध कर्म कर्त्ता, विहित कर्मों से पराङ्मुख, शत्रुजयी, व्यसनी, प्रसन्न चित्त, दीनभावापन्न, तेजस्वी तथा सबका हितैषी होगा। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में प्रदर रोग वाली स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २१, ३८ तथा ५८ वर्ष की आयु में होगा। यह विद्याद्वारा धनोपार्जन करेगा तथा सर्वत्र ख्याति एवं सम्मान पायेगा, परन्तु पुत्र की ओर से सदैव दुःखी बना रहेगा। इसे मुकद्दमों में विजय प्राप्त होती रहेगी। इसकी परमायु ६८ वर्ष है। भाद्रपद कृष्णा पंचमी रविवार को सायं काल मस्तक-पीड़ा के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के १, ७, १७, २८, ४२, ५६ तथा ६३ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। इसे यात्रा में प्राप्त कष्ट भोगना पड़ेगा तथा धन का अभाव रहेगा। कष्ट-निवारण एवं मनोभिलाषा पूर्ति के हेतु मूँगा धारण करना तथा नृसिंह-लक्ष्मी का पूजन करना हितकर सिद्ध होगा। यह जातक पूर्वजन्म में ज्ञानी क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में स्त्री योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी एवं कर्तव्य परायण, विद्वान् तथा पुत्रवान्, जल अथवा बिजली से हानि पाने वाला तथा अल्प लाभ प्राप्त करने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ कृपया जीवनस्यास्य वृत्तान्तं तात मे वद। भविष्यं श्रोतुकामोऽस्मि अस्यां

जातस्य विस्तृतम् ॥ भृगु उवाच ॥ जिज्ञासो यो ऽ त्र जातोऽस्ति भ्रमणं स करोति वै । कुटुम्बात् वैरयुक्तश्च दरिद्रो ऽपि गतोत्सवः ॥ विभुतया ऽस्तिहीनोऽपं अङ्गहीनश्च निर्बलः । व्ययीशत्रुभिरार्तश्च स्वल्पं करोति शत्रुजित् ॥ गृहभूम्यां धनैर्युक्तः वस्त्राभूषण संयुतः । राजेव वैभवापन्नः शत्रूंजित्वा धनार्जयेत् ॥ प्रसन्नो विहितादेव कर्मणो विमुखो वसेत् । नीचकर्मसुदक्षश्च दीनोभावैश्च विग्रहम् ॥ कलहेन करोत्येव विवाहंनास्ति सम्भवः । भवेदपि न जीवेत् सा विद्यायाः विद्यते स्थलम् ॥ राजनीतिपटुश्चैव तथावृद्धिः भविष्यति । वैरिणः सर्वदा सन्तु परं ग्रहैश्च तान् जयेत् ॥ द्वात्रिंशञ्च त्रयोविंश त्रिचत्वारिंशतं तथा । उदयामास्य भाग्यस्य मृत्युश्चास्य भवि-

-ष्यति ॥ अष्टपञ्चाशेत वर्षे द्वादश्यां निश्चितं तथा । मार्गशीर्षे शुक्लपक्षे मूर्च्छया चातुरालये ॥ राजनीत्यान्विताचास्य धार्मिकी संस्थिता स्थितिः । जीवने सप्तमं वर्षं अष्टादशञ्च त्रिंशतम् ॥ षड्चत्वारिंशतं वर्षं तृतीयञ्चाति घातकम् । राजनीत्यां स्वतन्त्रश्च नवरत्न गजाननम् ॥ पूजयेत् हीरकं तद्वत् पन्नकञ्चैव धारयेत् । क्षत्रियोऽभूतपुराऽग्रे च क्षुद्रकर्म द्विजो भवेत् ॥ अस्यां लग्ने चतुर्थे वा सप्तमे दशमे यदि । चन्द्रस्ति षष्ठेत्तदा सौम्यः धीरः शान्तश्च पत्नियुत् ॥

११ श०
१० सू० बु०
रा० ९ गु०
१२ शु०
८
१ चं०
७ मं०
२
४
६
३ के०
५

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे प्रभो ! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले – हे जिज्ञासु ! सुनो, यह जातक नित्य भ्रमणशील, कुटुम्बियों से वैर रखने वाला, ऐश्वर्य-हीन, अङ्गहीन, निर्बल, खर्चीला, शत्रुओं से भयभीत तथा अल्प कार्य करने वाला, शत्रुजित्, गृह-भूमि एवं धन-वाहन से युक्त, वस्त्राभूषण से युक्त, राजा से विभव पाने वाला, शत्रुओं को जीत कर धन कमाने वाला, प्रसन्न, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, नीच-कर्म मे दक्ष, दीन भावापन्न, झगड़ालू, कलही, तथा पत्नी-विहीन होगा । यदि विवाह हुआ भी तो पत्नी जीवित नहीं रह सकेगी । इसका विद्या-पक्ष उत्तम रहेगा

तथा राजनीति में सक्रिय भाग लेकर भाग्योन्नति करेगा, परन्तु अन्त में इसके पास धन-संचित नहीं रह सकेगा। इसके विरोधी प्रबल बने रहेंगे, परन्तु यह अपने गुप्त उपायों द्वारा उन्हें पराजित करता रहेगा। इसका भाग्योदय 23, 32 एवं ४3 वें वर्ष में होगा तथा मृत्यु केवल ५८ वर्ष की आयु में, मार्गशीर्ष शुक्ला १२ शनिवार को मध्यरात्रि में चिकित्सालय के भीतर मूर्च्छा रोग के कारण होना सम्भव है। जीवन के 3, ७, १८, 30 तथा ४६ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। उन्नति के लिए नवरत्न गणपति का अनुष्ठान तथा हीरा एवं पन्ना धारण करना शुभ रहेगा। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में म्लेच्छ वृत्ति वाला ब्राह्मण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परमसुन्दर शान्त और गम्भीर, पूर्ण सुखी व माता-पिता का भक्त, स्त्री युक्त तथा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा ॥ इति शुभम् ॥

भाव	ग्रह
११	सू. श.
१२	शु.
१०	बु.
९	गु. रा.
१	
२	
८	
५	
3	के.
७	मं.
४	
६	चं.

ॐ शुक्र उवाच ॥ सर्वज्ञ: योऽपि जातोऽस्ति एतस्मिन् ग्रहमण्डले। फलादेशं भविष्यस्य वर्ण्यतां तस्य विस्तरम् ॥ भृगु उवाच ॥ पुत्रात्र जायमानः स्यात् शठो दुर्भावनायुतः। सुहृद्धीनो दयापाश्च मलिनाम्बर धारकः ॥ भग्नाङ्गो धीसुखापन्नः महद्विस्तदेहवान्। निर्बलः बुद्धिहीनश्च अल्पकार्यस्य कर्तृकः ॥ परेषां कार्यकर्ता च रुचिराभरणे प्रुवै। गृहपतिः रिपूञ्जित्वा धनं प्राप्यासि कर्मणि ॥ उपस्थिते रुचिर्नास्ति प्रसन्नः नृपवच्छ्रियाम्। स्वभावेऽप्यस्ति दीनोऽसौ तेजस्वी हेय कारकः ॥ स्वार्जित स्योपभोक्ता च नष्ट सन्ततिवानपि। पितृणाञ्च प्रतापेणानैक सेवक पुत्रवान् ॥ श्यामांच रोगिणी भार्या नैक विंशे व प्राप्स्यति। एकदैवास्य भाग्यस्य नैकत्रिंशे समुन्नतिः ॥ सहसामानसेनैव रोगेण जीवनं त्यजेत्। श्रावण कृष्ण षष्ठ्याञ्च वर्षेऽष्ट षष्ठि संख्यके ॥ जीवनस्यास्य वर्षाणि तृतीयं पञ्चमं तथा। दशमं नैकविंशञ्च त्रयोत्रिंशं त्रिषष्ठिकम् नैक षष्ठि तथा पञ्च-चत्वारिंशत संख्यकम्। अपमृत्यु कराण्यस्यै जीवनोन्नति हेतवे ॥ नीलम धारयेत्

कुर्यात् व्रतंशनिश्च पूजनम् । हनुमंतः पुराचासीत् अस्पर्शो ऽग्रिम जन्मन: ।। पिशाच: सम्भवेदस्यां चन्द्रमा: यदि पञ्चमे । द्वितीयैकादशैऽष्टे च तदैष सम्भवेत्पुन: ।। विद्वान: सुकृतस्तद्वत् विविधार्थस्य भाजक: । देशाटन प्रियो भीत: शास्त्रेण पयसा ऽपि च ।।

भावार्थ! शुक्र ने कहा - हे प्रभु! इस कुण्डली का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक शठ, सबसे दुर्भाव रखने वाला, मित्र-विहीन, मलिन-वेषधारी, दयाहीन, अड़ियल, बड़े लोगों से संतप्तशरीर युक्त, अल्प कार्य करने वाला, पर-कार्य-रत, सुन्दर वस्त्राभूषणों का प्रेमी, गृह का सुख पाने वाला, शत्रुओं को पराजित कर उनसे धन प्राप्त करने वाला, शत्रुजयी, दीन स्वभाव वाला, राजासे वैभव प्राप्त करने वाला, विहित-कर्म-पराङ्मुख, तेजस्वी तथा अपने धन का उपभोग करने वाला होगा । इसकी सन्तानें जन्म ले-लेकर मरती रहेंगी । पूर्वजों के पुण्य-प्रताप से केवल एक पुत्र योग्य होगा, जो अन्त तक इसकी सेवा करेगा । १९ वर्ष की आयु में इसका विवाह श्याम वर्णा एवं रोगग्रस्ता कन्या के साथ होगा । इसका भाग्योदय केवल एकबार २९ वर्ष की आयु में होगा । आयु ६८ वर्ष की होगी । श्रावण कृष्णा षष्ठी मंगलवार को प्रातःकाल आकस्मिक-मानसिक रोग के कारण घर पर ही इसकी मृत्यु होना संभव है । इसके जीवन के ३, ५, १०, २१, ३३, ४५, ५९ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे । अरिष्ट-नाश के लिए नीलम धारण करना तथा शनिवार का व्रत रखते हुए हनुमान जी का पूजन करना लाभप्रद रहेगा । यह जातक पूर्वजन्म में अस्पृश्य कुल में उत्पन्न हुआ था तथा अगले जन्म में पिशाच योनि ग्रहण करेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम तथा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनवान् एवं भ्रमणशील, विद्वान् तथा सत्कर्म करने वाला, जल एवं शस्त्र से हानि पाने वाला, विविधार्थ लाभी एवं पुत्रवान् होगा । इस कुण्डली का यही फलादेश है ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ॥ तस्य जीवस्य किं तात भविष्यं जीवनं तथा । जायतेऽस्मिन् गृहे क्षेत्रे योऽपि जीवः वदस्वमे ॥ भृगु उवाच ॥ सर्वैर्दुर्भावना युक्तः शठो मलिन धारकः । निर्दय सुहृदैः शून्यः स्त्रीपक्षेण च दुःखितः ॥ दुर्व्यापव्यय शीलोऽपं भ्रष्टाङ्गो वाहनैः युतः । सुस्त्रिभिः प्रीति युक्तश्च गेहे कलह धारकः ॥ अहंकारस्तु सम्पन्नः धर्महीनोऽपराक्रमी । धनवैभववान् त्रस्तोऽरिभिः वस्त्रैः शुभैर्वृतः ॥ वस्त्राभूषणवान् राज्ञः शत्रुजेता च तैर्धनम् । प्राप्नोत्येष प्रसन्नश्च कर्तव्याच्च पराङ्मुखः ॥ रुग्णः श्चौरः प्रगल्भश्च राज्येण वंचितस्तथा । वाण्या कटुः कुटुम्बेन वैरिःमुखेन पीड़ितः ॥ बहुविवाह योगोऽस्यां कुण्डल्यां परिदृश्यते । तस्मादेकोन विंशे च त्रयोविंशाब्दु विंशयो ॥ विवाहोऽस्ति

१२ शु.	११ सू. श. बु.	१०	९ गु.
१	२ के.	मं. रा. ८	७
३	चं. ५	४	६

परं भार्या नौकाऽपि जीवनं वहेत् । पुत्रत्रयञ्च योगास्त अब्दे सप्तषष्ठि संख्यके, नवम्यां चैत्र कृष्णस्य सन्निपातेन यास्वितः । अष्टादशं तृतीयञ्च चतुःत्रिंशं तथा-ष्टमम् ॥ चतुर्पञ्चाशतं तद्वत् त्रिषष्ठिं जीवने महत् । घातक ञ्चोदयं भूयात् आयुस्य सप्तत्रिंशते ॥ द्विन पञ्चाशतेऽप्यस्मै धारणं नीलमस्य च । गणनाथ प्रवालस्य प्रभोगं हितसाधकम् ॥ पूर्वस्यां शूद्रयोन्यांञ्च विहगोऽग्रिम जीवने । तथा चन्द्रोऽयतिष्ठेत चतुर्थे सप्तमेऽथवा ॥ लग्ने च दशमे स्थाने क्रमशः सुखमय्यमः । हीन वैभववान् पत्न्या युक्तः सौम्यो भविष्यति ॥

भावार्थ! शुक्र ने कहा – हे पिता! जिस जातक की यह कुण्डली है, उसका भविष्य-फल कहने की कृपा करें, भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक सबके प्रति दुर्भावना रखने वाला, शठ, मलिनवेषी, निर्दय, मित्र-विहीन, स्त्री-पक्ष से दुःखी, धन का अपव्ययी, विकलाङ्ग, वाहन-सम्पन्न, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रीति रखने वाला तथा घर में कलह करने वाला, अहंकारी, धर्महीन, पराक्रमहीन, धन-वैभव युक्त होते हुए भी शत्रुओं के कारण दुःखी, शुभ वस्त्र भूषण धारण करने वाला, राजा से आदर पाने वाला, शत्रुओं को जीत कर उनका धन

लेलेने वाला, सुखी, सुप्रसन्न, विहित-कर्मों से पराङ्मुख, प्रगल्भ, रोगी, चोर, पापी तथा राज्यसे द्विविधा एवं धोखा पाने वाला; मुखरोगी, कुटुम्ब-विरोधी तथा कटु-वादी होता है। इसके अनेक विवाह होंगे, जो क्रमशः १८, २३ तथा २६ वर्ष की आयु में संभव है, परन्तु एक भी स्त्री जीवित नहीं रहेगी। तीन पुत्र सुयोग्य तथा सुपात्र होंगे। इस की पूर्णायु ६७ वर्ष की है। चैत्र कृष्णा नवमी रविवार को प्रातः काल सन्निपात के कारण इसकी मृत्यु होना संभव है। इसके जीवन के ३, ८, १८, ३४, ५४ तथा ६३ वें वर्ष हानिकर रहेंगे। ३७ तथा ४८ वें वर्ष में भाग्योदय होगा। इसे नीलम धारण करना चाहिए तथा प्रवालगणपति का पूजन करना चाहिए। यह पूर्वजन्म में शूद्र था तथा भविष्य में पक्षी योनि ग्रहण करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि चतुर्थ, सप्तम, दशम एवं लग्न में हो तो यह जातक क्रमशः सामान्य सुखी, स्त्री युक्त, वैभव-विहीन तथा दुःखी होगा॥ इति॥

१ शु०	१२	११ सू० बु० श०
१०	९ गु०	२ के०
८ मं० रा०	३ चं०	५
७	४	६

ॐ शुक्र उवाच॥ ग्रहाणामण्डलेऽस्मिन् यो जायते तस्य भाविनम्। कीदृशं भाग्यं तात तदा भृगुरुवाच ह॥ भृगु उवाच॥ दयाहीनः सुखापन्नः मलिनाम्बरवान्नसौ। शठो दुर्भावना पूर्णः मित्रहीनश्च सुस्त्रिभिः॥ प्रीति युक्तस्तथा पूर्वैः भूम्याचै वाहनैरपि। संयुक्तः शत्रुभिस्त्रस्तः शस्त्राग्निभ्यां भयान्वितः॥ सुखवान् पत्निपुत्रैश्च निर्बुद्धः सर्वतोजयी। धनपरा कुमैश्चैव हीनो धर्माच्च शोभनैः॥ आवृतो हि गृहे कुर्यात् कलहं कवितारकः। ग्रामाधिपः प्रसन्नात्मा विमुखो मुख कर्मणः॥ दौर्बल्यं प्राप्नुयाच्चैवं मायिकः भीतिवान् सदा। द्विभार्या योगतश्चास्य सप्तदशैक विंशयोः। विवाहो संभवेतान्त्या परैव धार्मिका तथा। सुन्दरीं संभवेत् पत्निः सुतश्चैको हि सेवकः॥ भाग्योदयस्य वर्षञ्च नैक पञ्चाशतं तथा। चतुर्विंशं सप्तत्रिंशं आयोरस्त्यन्तिमावधिः॥ दशम्याषाढ़मासस्याब्दे सप्तषष्ठित संख्यके। अन्यावास्त्रस्य घातेन जीवनं पञ्चमं तथा॥ द्वितीयं नैक त्रिंशञ्च द्वात्रिंशैकादशे क्वचित्। द्विन पञ्चाशतं वर्षं षट्पञ्चाशत संख्यकम्॥ अपमृत्यु

करैन्नित्यं भाग्योदयाय प्राप्नुयात् । अवसरञ्च धर्मस्य स्थितिर्भाग्योदये स्थिता ॥ मूंगेति हीरके रत्ने धारयेत् श्रेयसे सदा घण्टा कर्णानुष्ठानञ्च कीटः पूर्वस्य जन्मनः । अग्रिमैब भवेच्छूद्रः चन्द्रश्चेत् पञ्चमेऽष्टमे । द्वितीयैकादशे स्यात् सौम्यः स्वस्थश्च पुत्रवान् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा— हे पिता! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले— हे पुत्र! सुनो, यह जातक सुखी, दयाहीन, मलिन वेषी, मित्रशून्य, दुर्भावना से पूर्ण, शठ, सुन्दरी स्त्रियों से प्रेम करने वाला, धन-गृह-वाहन आदि से युक्त, शत्रुओं से दुःख पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, सर्वत्र विजयी, बुद्धिहीन, अधर्मी, पराक्रमहीन, अहंकारी, गृह-कलह-कर्त्ता, ग्रामाधिपति, कवि, प्रसन्न विहित-कर्म-पराङ्मुख, शत्रुजयी, कायर एवं मायावी होगा। इसके द्विभार्या योग है। पहला विवाह १७ वर्ष की आयु में तथा दूसरा २१ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा धर्मात्मा स्त्री के साथ होगा। केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। भाग्योदय २४, ३७ तथा ४९ वर्ष की आयु में होगा। पूर्णायु ६७ वर्ष की है। आषाढ़ मास के कृष्ण पक्ष की दशमी मंगलवार को मध्याह्न में शस्त्राघात अथवा अग्निकाण्ड से इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के २, ५, ११, २९, ३२, ४८ तथा ५६ वें वर्ष हानि एवं अपमृत्युकारक सिद्ध होंगे। भाग्योदय के अनेक अवसर प्राप्त होंगे तथा धार्मिक स्थिति भाग्योदय पर निर्भर करेगी। इसे मूंगा धारण करना चाहिए तथा घण्टाकर्ण का अनुष्ठान करना चाहिए। ये दोनों कष्ट-निवारक तथा लाभकर सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में कीटयोनि में था तथा अगले जन्म में यह शूद्रवर्ण में उत्पन्न मनुष्य होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनवान्, कन्या, पुत्र, स्वस्थ एवं नीरोग तथा बहुपुत्रवान् होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ कुण्डल्यां जायते ऽस्यां यो तस्य किं भाविनं पितः। श्रोतु कामो ऽस्मि तत्

यद्वै विस्तारेण खलूच्यताम् ॥ भृगु उवाच ॥ व्यापारेण धनाधीशः स्वजनैर्भयं प्राप्नुयात् । सुखञ्चापि सुखी शस्त्रात् विषदग्न्याश्च भीतियुत् ॥ विजयी सर्वतश्चैवं स्त्रीपुत्रैः सुखमाप्नुयात् । रक्षकः परद्रव्यस्य पूजको ब्रह्मदेवयोः ॥ सुन्दरीष्वस्य प्रीतिश्च धीहीनः परसेवकः । अङ्गात् रहितश्चैवं क्रुद्धः क्षीणमनोरथः ॥ शत्रुशून्यश्च सर्वत्र आदरेण समन्वितः । ग्रामेशः वाहनैर्युक्तः व्यवहारे पटुस्तथा ॥ विनयी प्राप्नुयादेव गुणान् रुग्णश्च वंशतः । विरोधीऽस्य प्रगल्भश्च परोपकारकरो भवेत् ॥ जलदग्न्याश्च प्राणानां भयश्चैव विवाहितः । सुन्दर्या शीलवत्या हि विंशे वर्षे भविष्यति ॥ भाग्योत्कर्षं कराण्यस्मै वर्षा द्वाविंशतं तथा । त्रयोत्रिंशनवत्रिंशं त्रिपञ्चाशत संख्यकम् ॥ जीवनस्यावधिर्नूनं सप्तनासीति संख्यके । वर्षे कार्तिक शुक्लस्य द्वादश्यां शल्य कर्मणा ॥ जीवन स्याष्ट विंशञ्च पञ्चैकादश संख्यके । त्रिचत्वारिंशतं चाब्दं षट् पञ्चाशत संख्यकम् ॥ सप्तषष्ठिञ्च कष्टाय महदस्ति च धारयेत् । हीरकं पुखराजञ्च लोहिताक्षस्य शंकरम् ॥ पूजयेत् पूर्वकालस्य क्षत्रियः ब्राह्मणः पुनः । भूत्वा मोक्षं व्रजेदेव चन्द्रमा नवमे भवेत् ॥ तृतीये द्वादशेषष्ठे क्रमशः श्रमशीलवान् । स्वस्थो वैरिजयश्चायं धर्महीनोऽपि जायते ॥

१ शु.
१२ सू. बु. श.
११ चं.
२ के.
१० गु.
३
९
४
६
८ रा. मं.
५
७

भावार्थ: शुक्र ने कहा– हे तात! आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा कीजिए। भृगुजी बोले– हे पुत्र! यह जातक व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करने वाला, सुखी, स्वजनों से भयपाने वाला, सर्वत्र विजयी, स्त्री पुत्रादि का सुख पाने वाला; शस्त्र, विष तथा अग्नि से भय पानेवाला, पराये धन का रक्षक, देव-ब्राह्मणों का पूजक, सुन्दरी स्त्रियों से प्रेम करने वाला, बुद्धिहीन, पराया-सेवक, अङ्गहीन, क्रोधी, क्षीण मनोरथ, शत्रु-रहित, सर्वत्र आदर पाने वाला, ग्रामाधिपति, वाहन युक्त, व्यवहार-कुशल, विनयी, गुणी, वंशानुगत रोग का रोगी और कुटुम्ब-विरोधी परोपकारी

तथा जल और अग्नि से प्राणहानि का भय पाने वाला होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दरी, सुशीला तथा धार्मिक कन्या से होगा। भाग्योदय २२, ३३, ३८ एवं ५३ वें वर्ष में होगा। परमायु ७३ वर्ष है। कार्तिक शुक्ला द्वादशी गुरुवार को सायंकाल शल्य-क्रिया के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के ५, ११, २८, ४३, ५६ तथा ६७ वें वर्ष हानि एवं अपमृत्युकारक रहेंगे। हीरा तथा पुखराज धारण करने एवं जोतिताम्र शंकर का पूजन-अनुष्ठान करने से अरिष्ट दूर होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होकर मोक्ष प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः उत्साही, साहसी, विरोधियों पर विजय पाने वाला और स्वस्थ तथा अधार्मिक होगा॥ इति शुभम्॥

१ बु. शु.	१२ सू. श.	११
२ के.		१० गु.
३ चं.		९
४	६	८ रा. मं.
५		७

ॐ शुक्र उवाच॥ हे सर्वज्ञ फलादेशं वर्ण्यतां तस्य प्राणिन:। अस्यां यो जायमानोऽस्ति कुण्डल्यां मे वदस्व तत्॥ भृगु उवाच॥ योऽत्र जातोऽस्ति मे शिष्य आत्मीयैः सुखदुःखभाक्। व्यापारेणार्जयेत् वित्तं सर्वत्र लभते जयम्॥ अग्निनाभयवान्नेष चलश्चास्थिरधी भवेत्। वृकोदरः दयाहीनः ऋणवान् परसेवकः॥ क्रोधनोऽनद्भुतः क्षीणः ग्रामेशः सर्वपूजितः। नास्य मनोरथे सिद्धिः काव्यकारो नतः सदा। अभावो वैरिणाञ्चास्मै गुणवैभववान् भवेत्। कुशलो व्यवहारस्य कातरो क्षीणदैहिकः॥ मायोपेतः प्रवंच्योऽपि राज्येन सुखपीड़ितः कटुवाण्याशया युक्तः वित्तस्य श्वसुरालयात्॥ वसेत् तमैव वा भूयात् विवाहोऽष्टादशे सह। कन्यया धार्मिका चैवं शिक्षिता च भविष्यति॥ भवेद्भाग्योदयाद्यस्य षड्विंशाष्ट त्रिंशते। जण्ण पञ्चाशतञ्चापि धनवाहनभोगवान्॥ सोपेक्षया चरिष्यन्ति कृत्यानि धार्मिकानि च। फाल्गुन कृष्णदशम्यां तु चतुरसीति संख्यके॥ वहिस्थ जलपात्रायां जीवनान्तं भविष्यति। जीवने प्रथमं वर्षं सप्तमं द्वादशं तथा॥ चतुःपञ्चाशते पञ्च चत्वारिंशत

संख्यकम् । त्रिसप्तति महानिष्टं विप्रश्चैष पुराऽभवत् ।। कर्मविपाकतश्चाग्रे सम्भवेद्वर्णसंकर: । सौख्यं प्राप्स्यति पुत्राणां विद्यायाश्चास्य सन्तति: ।। सुयोग्या शिक्षिता भूयात् पन्नकं हीरके वहेत् । स्तोत्रं गुरुपादुकायां च विधिवत् पूजनार्चनम् ।। कुर्यात् श्रेयसे लोके चन्द्रो लग्नचतुर्थयो: । सप्तमे दशमे वास्यात् सौम्य उत्साह संयुत: ।। माता पित्रो भवेद् वैरि: बहुस्त्रीणां पतिस्तथा । राज्यमान्योऽपि जायेत ग्रहमण्डल मीदृशम् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने का अनुग्रह करें। भृगुजी बोले – हे तात! सुनो, यह जातक स्वजनों से सुख-दुख पाने वाला, व्यवसाय से धन कमाने वाला, सर्वत्र विजयी, अग्नि से भय पाने वाला, चंचल बुद्धि वाला, वृकोदर, दयाहीन, ऋणी, पर-सेवक, क्रोधी, अल्प कामी, ग्रामाधिपति, सर्वपूज्य, मनोरथ सिद्धि न पाने वाला, कवि, विनयी, शत्रु-रहित, गुणी, वैभवशाली, व्यवहार-कुशल, कातर, क्षीण देह, मायावी, राज्य से धोखा खाने वाला, मुख-रोगी, कटुवादी, श्वसुराल से धन पाने वाला अथवा श्वसुराल में रहने वाला होगा। इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में धार्मिक एवं सुशिक्षिता कन्या के साथ होगा। भाग्योदय २६, ३८ तथा ४४ वें वर्ष में होगा। धन एवं वाहनादि का सुख रहेगा तथा धार्मिक कृत्यों का सम्पादन भी करेगा, परन्तु उदासीन रहते हुए। पूर्णायु ८४ वर्ष होगी। फाल्गुन कृष्णा दशमी रविवार को, घर से बाहर, जलयात्रा के समय इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के १, ८, १२, २८, ४५, ५४ तथा ७३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टकारक रहेंगे। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था, अब अगले जन्म में वर्ण संकर होगा। विद्या और पुत्रों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। सन्तान योग्य तथा सुशिक्षित होगी। पन्ना तथा हीरा धारण करने एवं गुरु पादुका स्तोत्र का पाठ एवं पूजनानुष्ठान करने से संकट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमश: परमसुन्दर और उत्साही, मातृ-पितृ विरोधी, बहुस्त्रीभोगी तथा राजमान्य होगा।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ॥ फलं किमस्यास्ति वदस्व मे पित: यो जायेतऽस्मिन् ग्रहमण्डले वै । निशम्य शुक्रं विशदं भविष्यं भृगुणात्मज: स्वस्य तदा प्रबोधित: ॥ भृगु उवाच ॥ एतास्मिन्जातको जात: साहसिकश्च देहवान् । युक्तोरक्त विकारेण पित्तेनापि भविष्यति ॥ भूमिलाभेन युक्तश्च सदा हित प्रसाधक: । बुद्धिमान्नपि भीतोऽपं भगिन शस्त्रविषै: सदा ॥ सुखं प्राप्नोति स्त्री पुत्रै: सर्वत्र विजयान्वित: । चंचला चित्त वृत्तिश्च बह्वादी ऋणवान्नपि ॥ दयावान् परक-र्ता वै क्रोधवान् भयवान् भवेत् । ग्रामाधिपो धनाधीश: मानमाप्नोति सर्वत: ॥ क्षीणकामी गुणग्राही काव्यकारोऽपि शत्रुवान् । व्यवहारे पटु: रुग्ण: प्रगल्भ कातरस्तथा ॥ वंचित: स्यान्नृपेणायं मुखरोगेण पीड़ित: । दुर्वचोऽयं कुटु-म्बेन विरोधश्च विवाहित: ॥ अष्टादशे भवेत् भाग्यमुदेष्यत्यष्ट त्रिंशते । द्विचत्वारिंशते वर्षे चतु: विंशेऽपि सन्ततौ ॥ पुत्राधिक्यं सुतश्चैक: सैविष्ये ज्जीवने भवेत् । मृत्युरसाध्यरोगेण वर्षे षड्षष्ठि संख्यके ॥ कार्तिके कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्याञ्च नैष्टदम् । प्रथमं सप्तमं चाब्दं सप्तदशाष्ट त्रिंशते ॥ द्विपञ्चाशत संख्यांक त्रिषष्ठि सप्तविंशतम् । माणिक्यं पुखराजञ्च गुरुग्रहस्य पूजनम् ॥ बृहस्पते: व्रतञ्चास्मै शुभमेव भविष्यति । वाणिज: पूर्व योन्याञ्च भूत्वा ब्राह्मणदेहवान् ॥ स्वर्गसु-खमवाप्स्येत् द्वितीयं पञ्चमे यदि । एकादशेऽष्टमे चन्द्र: स्थितस्त्वेष च सम्भवेत् ॥ धनवान् पुत्रवान् विद्यायुक्त: जलाद् भयान्वित: । भोगवान्नपि संभूयात् इत्येवास्य फलं सुत ॥

२ के.	१	१२ श.
३	सू. बु. शु.	११
४		१० गु.
५ चं.	७	९
६		८ मं. रा.

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले – हे वत्स! सुनो, यह जातक साहसी, रक्त-विकार युक्त, पित्त-विकारी, भूमि लाभ पाने वाला, सदैव हित करने वाला, बुद्धिमान्, अग्नि-शस्त्र-विष से भय पाने वाला, स्त्री-पुत्र का सुख पाने वाला, सर्वत्र विजयी, चंचल चित्त वृत्ति वाला, अधिक भोजन करने वाला, ऋणी, दयावान, परोपकारी, क्रोधी, भय युक्त, ग्रामपति,

धनी, सर्वत्र आदर पाने वाला, कवि, शत्रु-रहित, अल्पकामी, गुणग्राही, व्यवहार-कुशल, रोगी, प्रगल्भ, कातर राज्य से धोखा पाने वाला, मुख-रोगी, कुटुम्ब-विरोधीएवंदुर्वचनी होगा। इसका विवाह १८ वर्ष की आयुमें तथा भाग्योदय २४, ३८ एवं ४२ वर्ष की आयु में होगा। सन्तानों में पुत्र अधिक होंगे तथा एक पुत्र इसकी सेवा करेगा। परमायु ६६ वर्ष की होगी। कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी शनिवार को सायंकाल असाध्य-मुख रोग से इसकी मृत्यु होगी। इसके जीवन के १, ८, १८, २८, ३८, ५२ तथा ६३ वें वर्ष हानिकर रहेंगे। माणिक्य तथा पुखराज धारणकरने एवं गुरु ग्रह के पूजनानुष्ठान तथा गुरुवार का व्रत करनेसे अरिष्ट दूर होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था एवं अगले जन्म में ब्राह्मण होकर स्वर्ग प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः अल्पधनी, पुत्रवान् और विद्यावान्, जलसे हानि पाने वाला तथा भोगवान् होगा॥ इति शुभम्॥

२ के.
चं. ३
१ सू. बु.
शु. श. १२
११
४
१० गु.
५
७
९
६
८ मं. रा.

ॐ शुक्र उवाच॥ एतस्मिन् लभते योऽपि जन्म हि ग्रहमण्डले। फलादेशं भविष्यस्य किन्तस्यास्ति समुच्यताम्॥ भृगु उवाच॥ अस्यां या जायेत व्यक्तिः गृहस्वा-मी भविष्यति। रक्तपित्त विकारेण युक्तास्याच्च हितावहः॥ अग्निना विषशस्त्राभ्यां भीता स्त्री पुत्र सेविता। क्रोधयुक्ता च सर्वत्र जयं प्राप्स्यति चंचला॥ वृकोदरा ऋणी भीता राज्ञा प्राप्नोति वैभवम्। शत्रुजित धनलाभाय व्यवहार शील संयुता॥ परोपकारिणी वृत्तिः प्रग-ल्भा तनुना कृशा। राज्येण वंचिता भूयात् विमतिश्च कुटुम्बतः॥ निराहत वचो भाषी पुत्राः स्युरधिकापरम्। योग्येषु तेषु पुत्रौ द्वौ सेवकौ राजकार्य सौ॥ गुह्यतमेन यत्नेन प्रभावं स्थापयेत् सदा। अष्टादेश विवाहस्याद भाग्यं यातूदयं तथा॥ पञ्चपञ्चाशते वर्षे त्रिंविंशे पञ्चत्रिंशते। गलगण्डस्य रोगे णाब्दे सप्तषष्ठि संख्यके। एकादश्यां कृष्ण पक्षे माघस्य जीवनं त्यजेत्। कष्टदानि च वर्षाणि जीवने सप्तमं तथा॥ तृतीयमैक षष्ठि म्च

द्वाविंश नवत्रिंशतम् । षडपञ्चाशतं वर्षे पुखराजञ्च हीरकम् ॥ धारयेत् श्रेयसे कुर्यात् व्रतं शुक्रस्य पूजनम् ॥ शुक्रग्रह-
पुरासीच्च क्षत्रियोऽपि वृको भवेत् ॥ अग्रिमे जीवनेऽस्याञ्च चन्द्रमास्तृतीय षष्ठयो: । नवमे द्वादशे वास्ति क्रमशोऽयं
भविष्यति ॥ धार्मिको भाग्यवान् रोगैः हीनो पर्यटन प्रिय: । उदार उद्यमी हानिं जलाच्छीतेन सोरुज: ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली में जन्म लेनेवाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बो-
ले – हे जिज्ञासु ! सुनो, यह जातक गृहाधिपति, रक्त-पित्त-विकारी, हिंदू, साहसी, बुद्धिमान् ; अग्नि, विष एवं
शस्त्र से भय पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि का सुख पाने वाला, सर्वत्र विजयी, क्रोधी, चंचल चित्त वाला, बहुभोजी,
कलही, ऋणी, पर-कार्य कर्ता, भयभीत, राजा से वैभव तथा धन पाने वाला, शत्रुजित्, सुखी, व्यवहार-कुशल,
परोपकारी, कायर, प्रगल्भ, दुर्बल शरीर वाला, राज्य से चोरखा खाने वाला, कुटुम्ब-विरोधी एवं सुवचन-रहित
होगा । इसके पुत्रों की संख्या अधिक होगी, जिसमें से दो इसकी सेवा करेंगे । मुकद्दमे के मामलों में यह बड़े
गुप्त उपायों का आश्रय लेकर प्रभाव स्थापित करेगा । इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में तथा भाग्योदय २३, ३५,
एवं ५५ वर्ष की आयु में होगा । आयु की परमावधि ६७ वर्ष है । माघ कृष्णा ११ रविवार को मध्याह्न में, गलगण्ड
रोग द्वारा इसकी मृत्यु घर में ही होना सम्भव है । इसके जीवन के ३, ७, २२, ३८, ५६ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु
एवं हानिकारक रहेंगे । हीरा तथा पुखराज धारण करने, शुक्र ग्रह का पूजनानुष्ठान करने तथा शुक्रवार का व्रत
करने से इसके अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा । यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म
में वृक योनि प्राप्त करेगा, जिसमें जीवहिंसा कर नरकगामी बनेगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ
नवम एवं द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमश: धार्मिक, यात्रा प्रेमी और स्वस्थ, भाग्यवान्, नीरोग, परम
उदार एवं उद्यमी एवं जल से भय प्राप्त कर्त्ता तथा शीतरोगी होगा । इस कुण्डली का फलादेश यही है, जो मैंने
तुम्हें बताया है । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ जीवनस्य फलादेश अस्यां कुण्डलिजस्य मे । सर्वज्ञ वर्ण्यतां स्पष्टं तदा भृगुः समब्रवीत ॥ भृगुरुवाच । वत्स रुधिरपित्ताभ्यां विकृत देह संयुतः । भूम्याधिपो हितेच्छुश्च पुनर्जन्मापि प्राप्नुयात ॥ धीमान् साहसिकश्चैवं पितुः भक्ता स्थिरो धिया । कोमलाङ्गश्च भीतोऽयं पापाच्च बहुरोमयुत ॥ लम्बकेशी तथा गौरः नीतिज्ञः वाहनै युतः । वर्जितः परदाराभिः धार्मिको निर्बलो दुःखी ॥ निर्मलो मनसा चैवं वामनः परनिन्दकः । किंकर्तव्यविमूढश्च राजयेनैव विरोधवान् ॥ कुटुम्बेनादराद्धीनात् वचो वक्ता च चिंशते । वर्षे भवेद्विवाहश्च सुन्दर्या किन्तु रुग्णया ॥ प्रदरस्य च श्वेतस्य भाग्यस्योदय कारकम् । नवदशं चतुर्विंशं नवत्रिंशश्च सम्भवेत् ॥ पुत्र पुत्र्यादिनां संख्या तथापि दीपकोभवेत् । कुलस्य विद्यया तद्वत् तेजसास्यस्य सेवकः ॥ सैश्वर्येण मनुष्योऽयं व्ययीस्याद्दैनिकोयवै । योग्या पत्निः सुपात्रा च मूत्ररोगेण जीवनम् ॥ पञ्चषष्ठितमे वर्षे नवम्यां चन्द्रवासरे । वैशाख शुक्लपक्षस्य अन्तायास्यति निश्चितम् ॥ द्वितीये द्वादशञ्चाष्ट चत्वारिंशत संख्यकम् । द्वाविंशमेक षष्ठिञ्च षट्पञ्चाशतं सदा । अमृत्युश्च तथा हान्यै वर्तन्ते जीवने वहेत् । नीलमं पुखराजञ्च शनैश्चैवं हनूमतः ॥ व्रतञ्च पूजनं युक्तमासीद्राजा प्रतापवान् । वैश्यो भवतु चन्द्रश्चेत चतुर्थे सप्तमे भवेत् ॥ लग्ने दशमे वास्यात सौम्यः शान्तश्च सौख्यवान् । धीरो राज्येण मान्यश्च राजेव सुन्दरी बहेत् ॥

बु. के. २ | १ सू. | शु. श. ११ | ३ | ११ | ४ चं. | १० गु. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८ मं. रा.

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे वत्स! सुनो, यह जातक रक्त-पित्त-विकारी, भूम्याधिपति, हितकारी, बुद्धिमान, साहसी, पुनर्जन्म लेने वाला, पितृभक्त, स्थिर-मति, पाप से डरने वाला, कोमलाङ्ग, अधिक रोम वाला, लम्बे केशों वाला, गौराङ्ग, वाहनादि से युक्त, नीतिज्ञ, परस्त्रियों से दूर रहने वाला, धार्मिक, निष्कपट, बलहीन, छोटे

क़द वाला, दुःखी, दुर्बल, कायर, धनी, राज्य से द्विविधा पाने वाला, कुटुम्बियों का विरोधी तथा श्रेष्ठ वचन न बोलने वाला होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दर परन्तु श्वेतप्रदर की रोगिणी स्त्री के साथ होगा। इसका भाग्योदय १७,२४ तथा ३२ वर्ष की आयु में होगा। इसके पुत्र-पुत्रियों की संख्या प्रायः समान होगी, उनमें एक तेजस्वी तथा प्रतापी पुत्र विद्वान् तथा कुलदीपक होकर इसकी पूर्ण सेवा करेगा। यह ऐश्वर्यशाली जीवन बितायेगा तथा ठाठ-बाट में धन खर्च करेगा। पत्नी योग्य तथा सुपात्र होगी। ६२ वर्ष की आयु में वीर्य अथवा मूत्र-विकार से वैशाख शुक्ला नवमी सोमवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, धार्मिक चिन्तन करते हुए, अपने घर में ही इसकी मृत्यु होना संभव है। जीवन के २,१२,२२,४८,५६ तथा ६१ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। पुखराज एवं नीलम धारण करने तथा हनुमान् जी का पूजनानुष्ठान करने से संकट दूर होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में प्रतापी राजा था तथा अगले जन्म में वैश्य कुल में जन्म लेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर, शान्त, गंभीर, मातृभक्त, पूर्ण सुखी, राज्य द्वारा सम्मानित, सुन्दरी स्त्री युक्त, व्यवसायी तथा राजतुल्य होगा ॥ इति शुभम् ॥

३ चं.	१ बु.	शु.
४	२ सू. के.	१२ श.
५		११
६	८ मं. रा.	१० गु.
७		९

ॐ शुक्र उवाच ॥ कुण्डल्यां जायते यो ऽस्यां फलं तस्यास्ति जीवने। भविष्यस्य पितः मह्यं वदस्व की दृशं तदा ॥ भृगु उवाच ॥ यो ऽत्र जायते वत्स स्त्रीकुलै दुःखितः सदैव। अतिदीनः शरीरेण दुर्बलः रक्तचक्षुवान् ॥ ताम्र सम्बन्धि वस्तुभिः लाभवान् धातुदूषितः। प्रवासी च ऋणेच्छुस्यात् चौरो हि कृषकः पटुः ॥ क्षमावान् कान्ति सम्पन्नः हृष्टः पुष्टः सुबुद्धिमान्। विशालपाण्डितश्चापि वाहनानि च संयुतः। धार्मिको धनवान् रुग्णो भवेत् मलिन वाससः। वामनः पापकृत्येषु रतः कातरता युतः। मायिकः धनिपो राज्यात् वंचना प्राप्नुयात् परम्। प्रगल्भो मुखरोगेण युक्ता ऽसम्मान्य भाषकः। कुटुम्बेन विवादश्च द्विभार्या योगवान्नपि। प्रथमो विंशवर्षायौ द्वाविंशौ वा परो भवेत् ॥ परं स्याच्चादि पूर्वस्य दुष्टा च कलहान्विता। तदा

नास्ति द्वितीयस्य योगो पूर्वस्य जारजा ॥ उपेक्षया विलम्बात् वै धार्मिकेषु च कर्मसु । सप्तत्रिंशे तथाव्यस्य त्रयो पञ्चाशते भवेत् ।। भाग्योदयश्च नष्टास्युः त्रयो पुत्राश्च कन्यका । प्रथमत्वेन जायेत्तु कलंकित कुलं भवेत् ॥ कष्टादिको भवेत् पुत्रः शिवं देशाटने ऽस्य वै । एकादश्यां भवेत् मृत्यु, माघ शुक्ले च पीड़या ॥ एकसप्ततिवर्षायै वक्षस्य जीवने ऽशुभम् । अष्टादशं द्वितीयश्च नैकपञ्चाशतं तथा ॥ चतुस्त्रिंशाष्टमे वर्षे द्विषष्ठिं सप्तति वदेत् । मूंगेति रत्न गोमेदे बुद्धस्य व्रत माचरेत ॥ शिवस्याराधनं श्रेष्ठं शूद्रः पूर्वे च भाविनः । धुधुंदरेति भार्यायां द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे ॥ एकादशे हि चन्द्रोऽस्यां धनवान् पुत्रवान् भवेत् । जलात् मृत्युमवाप्नोति विविधार्थस्य भौमिकः ॥

भावार्थ : शुक्र ने कहा - हे पिता! अब इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक पुत्र और स्त्री से दुःखी, दुर्बल शरीर वाला, अत्यन्त दीन, लालनेत्रों वाला, बुरे केशों वाला, तांबे के व्यवसाय से लाभ कमाने वाला, धातु-विकारी, परदेशवासी, ऋणी, चोर, क्षमावान्, कृषि-कर्म में निपुण, सुखी, कान्तिमान्, सुन्दर, बुद्धिमान्, विशाल पण्डित, पवित्र, वाहनादि से युक्त, धार्मिक, रोगी, मलिनवेषी, छोटे क़द वाला, पापी, कुत्र-त्र्न, कायर, मायावी, धाती, राज्य से द्विविधा एवं धोखा पाने वाला, मुख-रोगी, कुटुम्ब-विरोधी, सम्मानजनक शब्दों का उच्चारण न करने वाला तथा द्विभार्या योग वाला होता है। इसका पहला विवाह 20 वर्ष की आयु में तथा दूसरा 22 वर्ष की आयु में होगा यदि पहली स्त्री कलहकारिणी, दुष्टा तथा दुर्भगा हो तो दूसरा विवाह नहीं होगा। पहली पत्नी दुराचारिणी होगी। भाग्योदय कुछ विलम्ब से, 37 और 53 वर्ष की आयु में होगा। तीन पुत्र उत्पन्न होकर नष्ट हो जाएंगे। प्रथम सन्तान यदि कन्या हो तो वह जीवित रहेगी तथा कुल को कलंकित भी करेगी। बड़ी कठिनाई तथा उपाय द्वारा एक पुत्र प्राप्त होगा। इसे देशाटन काफी लाभप्रद रहेगा। आयु 71 वर्ष की है। माघ शुक्ला एकादशी रविवार को प्रातः काल बाहु-पीड़ा के कारण घर पर ही इसकी मृत्यु होना संभव है। इसके जीवन के 2, 8, 18, 34, 48, 62 तथा 70 वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। इसे

मूँगा तथा गोमेद धारण करने, बुधवार का व्रत रखने तथा शंकर का आराधन करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा शुभफल प्राप्त होगा। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में छछूंदर की योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनवान, पुत्रवान, जल में मृत्यु पाने वाला, पूर्ण सुखी तथा विविधार्थ भोगी होगा। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ तस्यास्ति किं त्रिकालज्ञ: जायमानस्य कुण्डलीम् । अस्यां फलं भविष्यस्य कृपया भावतां द्रुतम् ॥ भृगु उवाच ॥ प्रियवक्ता गुरो: भक्त: कृतघ्नो गुणवान् धनी । वीर: सर्वप्रियश्चैव लुब्धक: शिष्य श्रूयताम् ॥ रक्ताक्षो ऽप्यति दीनो ऽसौ गार्हस्थ्या दुःखित: सदा । तथा विवदति शास्त्रेभ्य: बिभेत्येव धनव्ययी ॥ हृष्ट पुष्टश्च धी युक्त: अङ्ग, अङ्ग स्त्रियार्दित: । मृदुरल्प: पवित्रश्च पंडित: शीलसंयुत: ॥ दीर्घदेही सुखापन्न: सत्यवादी च धार्मिक: । राजेवधनसम्पन्न: नयज्ञ: मनसा रत: ॥ स्वामी पञ्चगणानां स्यात् कौतुके हीन हृष्टिद: । जानौ कष्टायितश्चैव राजमान्यो ऽन्न संग्रही ॥ सुखार्तश्च कुटुम्बेन विरोधो ऽपि द्वयो: पति: । अष्टादशे विवाहश्च प्रथमो ऽस्य परो भवेत् ॥ नैकविंशे ऽस्य पूर्वस्य भार्यास्याद् व्यभिचारिणी । सन्तत्या दुःखितो घोर स्तस्या योगो ऽपि नैव हि ॥ कथंचिद्यादि सा जाता परेण पुरुषेण वै । भाग्य वृद्धिश्चतुर्विंशे अष्टविंशे ऽपि मृत्युवान् ॥ स्त्रियावियोग दैवाद्वा जीवितस्तु मरिष्यति । द्विसप्ततितमे वर्षे ज्येष्ठस्य शुक्लैकादशौ ॥ हृद्रोगेण शुभे कार्ये अन्यान्यपमृत्युहेतवे । द्वितीयं द्वादशं तद्वत् अष्टत्रिंश त्रिषष्ठिकम् ॥ नैकपञ्चाशतञ्चाब्दं एक सप्तति संख्यकम् । पैतृकं प्राप्नुयात् द्रव्यं पितृभक्तश्च धारयेत् ॥ गोमेधं श्रेयसे युक्तं त्रिपुर सुन्दर्यास्तथा । बुद्धस्य व्रतपूजेति शूद्रो ऽयं धार्मिक: पुरा ॥ [illegible] तृतीयं नवमे षष्ठे द्वादशे [illegible] क्रमादयम् ॥

३	२ सू० के०	१ बु० शु०
४ चं०		१२ श०
५		११
६	८ रा०	१० गु०
७ मं०		९

साहसिकस्य भाग्येन युक्तः नीरोग दैहिकः । श्रमशीलोऽटने प्रीतिः इत्येवास्य फलं सुत ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे त्रिकालज्ञ ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक गुरु-भक्त, प्रियवादी, गुणी, कृती, धनी, कृपण, वीर, सर्वप्रिय, दीन भावापन्न, लाल नेत्रों वाला, गृहस्थी की ओर से दुःखी, अग्नि, विष एवं शस्त्र से भय पाने वाला, धन व्ययी, अङ्ग-विहीन, स्त्री-पक्ष से दुःखी, हृष्ट-पुष्ट, बुद्धिमान्, महापण्डित, शीलवान्, अल्प कोमल, पवित्र, सत्यवादी, विशाल शरीर वाला, सुख भोगी, राजा के समान धनी, वाहनादि से युक्त, नीतिज्ञ, पर-स्त्री-विहीन, धार्मिक, मन-ही-मन कार्य में रत रहने वाला, चेष्टा-कुशल, पंचों का स्वामी, रोगी, आँख में कष्ट पाने वाला, कायर, राज्य से सम्मान पाने वाला, अन्न-संग्रही, मुख-रोगी तथा कुटुम्ब-विरोधी होगा । इसके द्विभार्या योग है । पहला विवाह १८ वर्ष की आयु में तथा दूसरा १९ वर्ष की आयु में होगा । दूसरी स्त्री व्यभिचारिणी एवं पति-वञ्चक होगी । यह सन्तान की ओर से खिन्न-चित्त रहेगा । इसके औरस सन्तान होना असंभव है । पर-पुरुषजात सन्तति होगी । भाग्योदय २४ वर्ष की आयु में होगा । २८ वर्ष की आयु में स्त्री द्वारा विष देने के कारण अपमृत्यु का योग उपस्थित होगा । यदि किसी कारणवश जीवन बच गया तो ६२ वर्ष की परमायु प्राप्त करेगा । ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी, बुधवार के प्रातःकाल घर पर ही धार्मिक-कृत्य सम्पादन करते हुए इसकी मृत्यु होना सम्भव है । यह मनुष्य पितृ-भक्त तथा पैतृक-धन का लाभ करने वाला होगा । मृत्यु हृदय रोग से होगी । जीवन के २, १२, ३८, ४५, ६३ और ७१ वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे । गोमेद धारण करने तथा बुधवार का व्रत रखने से लाभ होगा । यह जातक पूर्वजन्म में धार्मिक शूद्र था तथा अगले जन्म में विपुल वैभवसम्पन्न ब्राह्मण होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी, साहसी और भाग्यवान्, नीरोग, भाग्यशाली तथा यात्रा-प्रेमी होगा ॥ इति ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ अस्यां यो जायते देव कुण्डल्यां तस्य मे वद। भविष्यस्य फलं सर्वं ततो भृगु: प्रबोधयात् ॥
भृगु उवाच ॥ अत्रजातो भवेत् तात गुरुभक्त: शुभावृत:। रक्तेनवस्तुना लाभ: स्त्रियाखिन्नो धनव्ययी ॥ पापाद्भीत:
स्थिरो बुद्ध्या कोमलाङ्ग: सरोमयुत्। रत्न वाहन सम्पन्न: गौरो धार्मिक चित्तकौ ॥ वामन: पण्डितश्चेष्टां करोत्येव
च कातर:। मुखार्तः राज्यतश्चैव वञ्चित: मनसारत: ॥ कर्मसु दुर्बल: कुर्यात् विरोध: स्वं कुटुम्बत:।
बृपाद्रित वचश्चैवं मस्तके व्रण संयुत: ॥ प्राप्नुयादेक विंशेऽपं मस्तिष्कोदर पीड़िताम्। पत्नि तथापि
दौर्बल्यं स्त्री पक्षस्य भविष्यति ॥ सन्ततौ वर्तते संख्या पुत्राणामधिका परम्। सेवकश्चास्य पुत्रैक: भा-

३	२ सू. बु. के.	१ शु.	१२ श.
४	५	११ चं.	
६	७ मं.	८ रा.	९
		१० गु.	

-ग्यलाभे विलम्बवान् ॥ तथापि पञ्चत्रिंशञ्च नवत्रिंशं च निश्चितम्। षड्-
पञ्चाशतं वर्षं सामान्याद् भाग्यवर्द्धकम् ॥ आश्विन शुक्लस्याष्टम्यां नैकसप्तति
संख्यके। उदरविकारत: मृत्यु: जेष्ठत्यारि विरोधिना ॥ दश सप्तदशे वर्षे
द्वितीयमष्टविंशतम्। पञ्चत्रिंशं चतुःषष्ठिं त्रिपञ्चाशत संख्यकम् ॥ हात्या-
मपमृत्युहेतोश्च गोमेध पुखराजयो:। धारणम् शिवद्द्त्वर्षं बुद्धस्य व्रत
माचरेत् ॥ श्रीसूक्तेन लक्ष्म्याञ्च पूजनं शुभदायकम्। क्षत्रियेणौ षड्भुडायां
पुराजातश्च भाविन:। मुमुक्षु: द्विज देहेन चन्द्रश्चेदत्र सम्भवेत्। चतुर्थे
सप्तमे लग्ने दशमे स्यात्तदा भवेत् ॥ आत्मतुष्ट: सुखी पूर्णं स्त्री लुब्ध: साहसी भवेत्। विबधे चित्तवृ-
-त्तिस्यात् राजदण्डस्य भाजक: ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा– हे प्रभो! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें।
भृगुजी बोले – हे शिष्य! इस कुण्डली वाला जातक उत्तमवस्त्रधारी, गुरु-भक्त, लाल-वस्तु के व्यव-
-साय से धन कमाने वाला, धनव्ययी, स्त्री-पक्ष से दु:खी, पितृ-भक्त, स्थिर-बुद्धि, पाप से डरने वाला,

कोमल शरीर वाला, अधिक रोमवाला, गौरवर्ण, वाहन एवं रत्नादि से युक्त, नीतिज्ञ, पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला, धार्मिक, बड़ा पण्डित, चेष्टावान्, रोगी, छोटे क़द वाला, दुःखी, दुर्बल, डरपोक, धनी, राज्य से धोखा पाने वाला, मुख-रोगी, कुटुम्ब-विरोधी, सम्मानपूर्ण वचन बोलने वाला तथा मस्तक पर चोट अथवा व्रण-चिह्न युक्त होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में उदर तथा मस्तिष्क रोग पीड़िता स्त्री के साथ होगा। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी। केवल एक ही पुत्र योग्य तथा सेवा करने वाला होगा। भाग्योदय २५, ३१ और ५६ वर्ष की आयु में कुछ बाधाओं के साथ होगा। विरोधी पराजित होते रहेंगे। आश्विन शुक्ला अष्टमी बुधवार को मध्यरात्रि में, उदर विकार के कारण, ६१ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। जीवन के २, १०, १७, २८, ३५, ५३ तथा ६४ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। यात्रा में जल से भय रहेगा। पुखराज तथा गोमेद धारण करना, बुधवार का व्रत तथा श्रीसूक्त द्वारा लक्ष्मी का पूजनानुष्ठान हितकर सिद्ध होगा। यह पूर्व जन्म में शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होकर मोक्ष प्राप्त करेगा, इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः आत्म सन्तुष्ट और साहसी, पूर्ण सुखी, स्त्री-लोलुप तथा राजदण्डभागी होगा॥ इति शुभम्॥

- ३ सू०
- ४ चं०
- २ बु० के०
- १ शु०
- ५
- ६
- १२ श०
- ७ मं०
- ९
- ११
- ८ रा०
- १० गु०

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्मिन् जातस्य जीवस्य भविष्यं कीदृशं पितः। ग्रहाणां मण्डले तूर्णं श्रावय कृपया मम॥ भृगु उवाच॥ वत्सैष अभिमानी वै दानी बन्धु प्रियो धनी। कामुकः मन्दकर्ता च शत्रुनष्टोऽस्ति पुत्रवान्॥ कष्टदः बन्धुभिश्चैव व्ययशीलोऽपि प्रीतियुत्। सहिष्णुरङ्गहीनश्च श्रेष्ठैः सन्तप्त देहवान्॥ स्पर्धी: पितृभक्तश्च स्त्रियार्तः वपुः कोमलः। दीर्घकेशयुतश्चैवं रत्नवाहन संयुतम्॥ मंदिरं गुणसम्पन्नः नीत्यापि वर्जितः स्त्रीभिः। मनसा कार्य कर्तृत्वं विद्वान् धर्मे मतिर्धुचिः॥ वमनः वपुषा चैवं सरुजः दुर्बलस्तनुः। जीवने विप्रशस्त्राभ्यां भयमस्मै विवाहितः॥ प्रथमन्तु त्रयोविंशे वियोगः सप्तविंशते।

भृ० सं० ६०३

भा० टी०

परं सद्यैव पत्न्यां प्राप्स्यति भीतिपुत्तया ॥ विलासे व्यय कर्ता ऽसौ धनस्य राजसेवया । भाग्योदय श्चतुः त्रिंशे पञ्च पञ्चाशेत तथा ॥ एकविंशे भवेदस्य गुदरोगेण सम्भवेत । त्रिंसप्तति च वर्षायौ ज्येष्ठे च शुक्लैकादशे ॥ मृत्यु-श्चैवं व्रजेत मुक्तिं आस्मिन्ने वर्जितेन वै । जीवने दशमं वर्षं अष्टमष्टादशे तथा ॥ द्वात्रिंशं नैक पञ्चाशं नैक षष्ठिं सप्तषष्ठिकम् । घातकं परमं तस्मात पन्नकं पुखराजयो : ॥ धारणं च शुभायास्मै गुरुगौर्यार्चनं तथा । कदल्या पूजनं कुर्यात चन्द्रःस्यादत्र पञ्चमे ॥ द्वितीये कादशे तद्वत अष्टमे पुत्रवुद्धवान । विदेशगः जलाद्दानिः वीर्य दुष्ट श्च भोगवान ॥ कन्यानां वर्तते संख्याधिकापत्नेन पुत्रकः । स एव सेवको भूयात इत्येव फलमादितः ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले - हे वत्स ! सुनो, यह जातक अभिमानी, दानी भोगी, धनी, धीरे काम करने वाला, शत्रु-नाशक, मित्र-हितैषी, भाइयों को हानि पहुँचाने वाला, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, धैर्यवान, सहिष्णु, अधिक खर्चीला, अङ्गहीन, स्त्री-पक्ष से दुःखी, पिता का भक्त, स्थिर बुद्धि, कोमल-शरीर, अधिक रोम, लम्बे केशों वाला, वाहन एवं रत्नों से सम्पन्न, गौरवर्ण, नीतिज्ञ, पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला, धार्मिक, विद्वान, चेष्टावान, छोटे क़द वाला तथा रोगी होगा । इसे विष तथा शस्त्र से भय उत्पन्न होगा । इसका पहला विवाह २३ वर्ष की आयु में होकर २८वें वर्ष में स्त्री-वियोग होगा, उसके कुछ दिनों बाद ही इसका दूसरा विवाह हो जाएगा, परन्तु उस पत्नी से भय रहेगा । यह भोग-वि-लासादि में अधिक धन खर्च करेगा । इसका भाग्योदय राजकीय कामों से २१, ३४ तथा ५५ वर्ष की आयु में होगा । गुदा रोग के कारण ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी सोमवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, घर पर ही, ७३ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना सम्भव है । जीवन के ८, १०, १८, ३२, ४९ तथा ६७ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे । यह जातक इसी जन्म में मोक्ष-लाभ करेगा, अतः इसका पुनर्जन्म नहीं होगा । पुखराज तथा पन्ना धारण करने, गुरुवार का व्रत रखने एवं केले का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे । यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय,

पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी तथा विदेशगामी, पुत्रवान् और विवेकी, जल से हानि पाने वाला तथा वीर्य-दोषी एवं अनेक भोग-ऐश्वर्यवान् होगा। इसके कन्याएं अधिक होंगी। उपाय द्वारा केवल एक पुत्र प्राप्त होगा, जो इसकी सेवा करेगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जीवनस्यास्य वृत्तान्तं वर्ण्यतां तात विस्तरम्। अस्यां कुण्डलि जातस्य तदा भृगुर्प्रोचे-दयत्॥ भृगु उवाच॥ स्त्रीषु प्रीतिकरो धीरः स्त्रीपुत्रादिकमाप्नुयात्। मानी मित्रहितेच्छुः स निर्बन्धुः शत्रुजिद्गुणी दुराग्रही स्त्रियार्त्तश्च व्ययी मलिन चेतसः। स्वेच्छयाशुभकर्त्ताऽसौ परस्त्रीवर्जितस्तथा॥ नीतिज्ञः वाहनापन्नः मन्दिरं प्राप्नुयाच्छुभम्। मनसैव करोत्येष पंडितः ब्रह्मचेष्टितः॥ वामनोऽति रुजो रुग्णः जानौ व्रणेन संयुतः प्रगल्भः आधिकश्चैवं हिंसकः विहगादिनाम्। मुख-रुग्णः कुटुम्बेन वैरः वैवाहिकस्य वै। योगो क्षीणोऽस्ति कुण्डल्याः सम्यग् मेले-न जीवनम्॥ पत्न्याः द्विभार्य योगो वा द्वाविंशो धार्मिक्या सह। साधारणतया भूयात् विवाहश्च सुताधिकाः॥ परं तेनास्तिकाः सन्तु एको हि पितृसेवकः। विवादेषु जयेत् सर्वं भाग्येऽस्य पतनं तथा॥ उत्थानं राजसेवायां सामान्ये नोद-यं भवेत्। षट्त्रिंशे त्रयोविंशेऽष्टैक सप्तति संख्यके॥ आषाढ़ शुक्लपक्षस्य दशम्यां जीवनं त्यजेत्। द्वितीयं सप्तमं वर्षं दशमे नवत्रिंशतम्॥ त्रिषष्ठिमष्टत्रिंशञ्च सप्तषष्ठिं द्वि-पञ्चाशतम्। अशुभं जीवने चास्मै पुखराजस्य धारणम्॥ व्रतं रवेस्तथा विष्णोः मृत्युञ्जयस्य पूजनम्। लहसुनियमित्यस्ति शुभदं पूर्वजन्मनः॥ आसीत् क्षत्रियो विद्वान् स्वर्ग भुक्त्वान्तरं भवेत्। यदि चन्द्रोऽस्ति षष्ठेऽस्यां तृतीये नवमेऽथवा॥ द्वादशे तु भवेदेष भ्रमशील! सुसाहसी। धीरो रुग्णो जलाद् भीतः भाग्यवान् पर्यटने रुचिः॥

भाव	ग्रह
४	
३	सू. बु.
२	के.
१	शु.
५	चं.
६	
१२	श.
७	मं.
९	
११	
८	रा.
१०	गु.

भावार्थ! शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक स्त्री-प्रेमी, धैर्यवान्, स्त्री-पुत्रवान्, बन्धु-हीन, मित्र-हितैषी, अभिमानी, धीरे काम करने वाला, रोगी, धनी, शत्रुजित, धन खर्च करने वाला, अङ्गहीन, स्त्री-पक्ष से दुःखी, हठी, चित्तशुद्धि रहित, सुखी, स्वेच्छा से शुभ कर्म करनेवाला, धार्मिक, पर-स्त्री से दूर रहने वाला, नीतिज्ञ, सुन्दर भवन वाला, वाहना-दि से सम्पन्न, पंडित, रोगी, ठिंगने शरीर वाला, जाँघ पे व्रण-चिह्न वाला, पक्षियों आदि का हिंसक, मायावी, प्रगल्भ, राज्य से छिविधा पाने वाला, मुख-रोगी तथा कुटुम्ब-विरोधी होता है। वैवाहिक योग कमजोर है। कुण्डली-मेलापक ठीक होने पर ही पत्नी जीवित रह सकेगी, अन्यथा द्विभार्या योग बनेगा। सामान्यतः इसका विवाह 22 वर्ष की आयु में धार्मिक विचारों वाली स्त्री के साथ होगा। सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी, परन्तु वे सभी क्रोधी और नास्तिक होंगे। केवल एक पुत्र ही पितृभक्त होगा। वही सेवा करेगा। मुकद्दमों में तथा विरोधियों पर सदैव विजय प्राप्त होगी। राजकीय-सेवा द्वारा भाग्योदय होगा। भाग्य-वृद्धि में अनेक उतार-चढ़ाव आयेंगे। भाग्योदय 23 एवं 36 वें वर्ष में होगा। पूर्णायु 71 वर्ष की होगी। आ-षाढ़ शुक्ला दशमी को मध्यरात्रि के समय धार्मिक-चिन्तन करते हुए घर में ही मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के 2, 7, 10, 28, 38, 52, 63 तथा 67 वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकर सिद्ध होंगे। पुखराज एवं लहसुनियां धारण करने तथा रविवार का व्रत रखने के साथ ही मृत्युंजय विष्णु का अनुष्ठान करने तथा महामृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ करने से संकट-निवारण में सहायता मिलेगी तथा मनोकामनाएँ पूर्ण होंगी। यह जातक पूर्व जन्म में विद्वान् क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में उत्पन्न होने से पूर्व यह बहुकाल तक स्वर्गादि के सुखों का उपभोग करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी, साहसी, गम्भीर, रोगी और जल से भय पाने वाला, भाग्यवान्-धर्मात्मा तथा देशाटन-प्रिय होगा। इति॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ साम्प्रतं जायमानस्य अस्यां सर्वज्ञ ब्रूहि मे। भविष्यस्य फलं सर्वं तच्छ्रुत्वा भृगुरुक्तवान् ॥ भृगु उवाच ॥ शत्रुजेता धनाधीशः धीरवीरौ व्ययी सदा। स्त्रीषु प्रीतिस्तथा हीनः बन्धुभिः मित्रपोषकः ॥ परिजनैर्वृतो युक्तो वाहनैः कृष्णमानसः। स्वेच्छया शुभकर्ताऽसौ भार्याखिन्नश्च धार्मिकः ॥ चिन्तयेत् परवित्तञ्च स्वर्णरजतयोः स्वयं। व्यापारेण धनापन्नः गुणवान् दुर्बलस्तथा ॥ वाचालः सरुजश्चैवं वामनं कातरोऽपि च। मायिकोऽन्तधनापन्नः कुटुम्बेन विरोधितः ॥ विलासे भोग कार्येषु व्ययं कुर्यात् विवाहितः। विंशत्या विंश वर्षायौ त्रयोविंशाष्ट त्रिंशते ॥ चतुःपञ्चाशेत वर्षे भाग्यं वृद्धिं प्रयास्यति। आश्विन कृष्णपक्षस्य त्रयोदश्याञ्च जीवनं ॥ चतुःसप्तति वर्षायौ अन्तं यास्यति निश्चितम्। सन्तत्याश्चिन्तितो भूयात् कष्टैर्नैकोऽस्ति सम्भवः ॥ द्वितीयं पञ्चमं वर्षं पञ्चादशाष्ट विंशते। षण्णपञ्चाशतं नैक षष्ठिञ्च नैक सप्ततिम् ॥ जातकं मृत्यु हेतुश्च भूंगेति पुरवराजयोः। श्रेयसे धारणं युक्तं गौर्या भौमस्य वर्तते ॥ व्रतं लाभाय पूर्वस्यां विद्वान् धार्मिक क्षत्रियः। आसीज्जडोऽग्निर्भूयात् चन्द्रश्चास्य समवेक्षयि ॥ चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे त्वेव शोभनः। स्त्रीप्रियः मातृवैरिश्च राजेव कुशलोऽपि च ॥

४	३ सू. बु.	शु. के. २	
५	६	१२ श.	१
७ मं.	९ चं.	११	
८ रा.		१० गु.	

भावार्थ! शुक्र ने कहा - हे प्रभो! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे जिज्ञासु! इस कुण्डली वाला जातक शत्रुजयी, धनी, धीमी गति से काम करने वाला, धीर-वीर, स्त्री-प्रेमी, बन्धु-विहीन, मित्रों का हितैषी, अधिक खर्च करने वाला, स्त्री-पक्ष से दुःखी, हठी, सम्बन्धियों से युक्त, अशुद्ध चित्त वाला, स्वेच्छा से शुभ कर्म करने वाला, वाहनादि से युक्त, सुन्दर घर वाला, नीतिज्ञ, गुणी, परस्त्रियों से सम्बन्ध न रखने वाला, चाँदी तथा सीसे के व्यवसाय से धन कमाने वाला, दुर्बल शरीर, अधिक बोलने वाला, रोगी, छोटे कद वाला, कायर, मायावी, कुटुम्ब-विरोधी तथा भोग-विलास में

धनखर्च करने वाला होगा। इसकी स्त्री पढ़ी-लिखी तथा विदुषी होगी। विवाह बीस वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय २३, ३८ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। मुकद्दमे में तथा विरोधियों पर इसे विजय प्राप्त होगी। देशाटन से लाभ होगा। आय का साधन उत्तम रहेगा। राजदण्ड का योग भी है। परमायु ७४ वर्ष होगी। आश्विन कृष्णा त्रयोदशी शनिवार को रात्रि के चतुर्थ प्रहर में धर्म-चिन्तन करते हुए मृत्यु होना सम्भव है। सन्तान की ओर से मन चिन्तित बना रहेगा। अत्यन्त कठिनाई से एक पुत्र प्राप्त होना सम्भव है। इसके जीवन के २, ५, १५, २८, ४४, ५९ तथा ६९ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिप्रद रहेंगे। मूँगा तथा पुखराज धारण करना एवं मंगल-गौरी का व्रत लाभदायक रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में विद्वान् तथा धार्मिक क्षत्रिय था और अगले जन्म में जड़ योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर, स्त्री-प्रेमी, पूर्ण सुखी, मातृ-विरोधी, कुशल-व्यवसायी और स्त्री-जित् तथा राजतुल्य होगा ॥ इति शुभम् ॥

भाव	ग्रह
३ (लग्न)	सू.
२	शु. के.
१	चं.
१२	श.
११	
१०	गु.
९	
८	रा.
७	मं.
६	
५	
४	बु.

ॐ शुक्र उवाच ॥ करोतु वर्णनं तात अस्यां यो जायते जनः। भविष्यस्य फलस्यैवं तस्य मे साम्प्रतं मुहुः ॥ भृगु उवाच ॥ जिज्ञासो जातको योऽत्र लभते जन्म भूयताम्। हितं इच्छति मित्राणां स्त्रीप्रियः बन्धुकष्टदः ॥ दाता भोक्ता ऽभिमानी च महद्धिस्तप्तदेहवान्। सरलो धनसम्पन्नः निर्लज्जः दुर्बलस्तनुः ॥ बाल्ये रुग्णस्तथापन्नः नीत्यागुणैश्च धार्मिकः। वणिजः शुभभाग्यानां स्तेनैव धनिपस्तथा ॥ व्रणजानुः मुखार्तश्च वामनः मायिकः क्वचित्। राज्येण वंचितश्चैवं चिन्तितः धनहेतवे ॥ राजबन्धन योगोऽपि जयेच्छत्रून् अयो भवेत्। सन्तत्यापीड़ितः गेहात् भूमिहीनो विवाहितः ॥ सप्तदशस्य वर्षायौ द्वाविंशेचाष्टत्रिंशते। एकपंचाशते वर्षे भाग्योदय मण्डले ॥ आयोः सीमास्ति सप्तत्याः दृश्यतेऽभावो भवेच्चेद्वर्णसंकरः। एकसप्तति वर्षे ऽस्य वैशाख कृष्णद्वादशी ॥ आयोः सीमास्ति

भृ० सं० ७१३

गेहैव उदरशूलेन निश्चितम् । तत्रैव दशमं वर्षं अष्टादशं द्वित्रिंशतम् ॥ तृतीयं सप्तषष्ठिश्च अष्टपञ्चाशतं तथा । त्रिनपञ्चाशतं सर्वं जीवने घातकं ध्रुवम् ॥ नीलमं धारयेच्चैवं शनौ पूजनमाचरेत् । जीवने शुभदे-तोश्च क्षत्रियः पूर्वजन्मनः ॥ म्लेच्छसंगाद् भवेत् म्लेच्छः अग्रिमे चन्द्रमाः यदि । द्वितीये पञ्चमे तद्वत् एकादशे ऽष्टमे स्थितः ॥ तदा सामान्यवित्तेशः जलाद्धानिमवाप्स्यति । पुत्रवान् पाण्डुरुग्णश्च विवेकी वैभवान्वितः ॥

भा० टी०

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे नाथ! आप इस जातक का जीवन-फलादेश कहें । भृगुजी बोले – हे शिष्य! यह जातक मित्र-हितैषी, स्त्री-प्रेमी, बन्धुओं के लिए हानिकारक, दानी, भोगी, अभिमानी, बड़े लोगों से संतप्त शरीर वाला, धनी, सरल, लज्जा-विहीन, दुर्बल शरीर वाला, बाल्यावस्था में रोगी, नीतिज्ञ, गुणी, धार्मिक, श्वेत रंग की धातु के व्यवसाय से धन कमाने वाला, अधिक वाचाल, ठिंगने शरीर का, जांघ में फोड़ा आदि के कष्ट वाला, कपट, मायावी, राज्य से धोखा पाने वाला, मुख-रोगी, आय के लिए चिन्तित, राज्य द्वारा बन्धन पाने वाला, अधिक धनव्ययी, शत्रुजित, सन्तान की ओर से पीड़ित तथा गृह-भूमि-विहीन होगा। विवाह १७ वर्ष की आयु में तथा भाग्योदय २२, ३८ एवं ६१ वर्ष की आयु में होगा । सन्तान-प्राप्ति कठिन है, यदि होगी भी तो वह वर्णसंकर होगी । आयु ७१ वर्ष की होगी । वैशाख कृष्ण द्वादशी मंगलवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में उदरशूल के कारण घर पर ही इसकी मृत्यु होना सम्भव है । इसके जीवन के ३, १०, १८, ३२, ४७, ५८ तथा ६७वें वर्ष अपमृत्युकारक तथा हानिकारक रहेंगे । नीलम धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा शनि-देव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट-निवारण एवं मनोकामना-सिद्धि में सफलता प्राप्त होगी । यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में म्लेच्छ जाति में जन्म लेगा । इस जन्मकुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः सामान्यधनी और जल से हानि पाने वाला, पुत्रवान और विवेकी, पाण्डुरोगी तथा वैभव-सम्पन्न होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जातकस्यास्य कुण्डल्यां जायमानस्य जीवनम्। त्रिकालज्ञ किमस्यां वै कृपया भाषतां मम॥ भृगु उवाच॥ भोगवान् भविता शिष्य धार्मिकानां प्रियस्तथा। मिष्ठान्ने प्रीतिरस्यास्ति सौभाग्यवान् धनाधिपः॥ बान्धवानां प्रियश्चैवं संगीतज्ञः गिरामृदुः। विषाग्निशस्त्र भीतेऽयं राज्ञः प्रियश्च दुर्बलः॥ पत्न्यात्मजैः सुखी जान्चा क्षीणश्च विजयी सदा। निर्लज्जः सरलो रुग्णः वाल्ये रत्नैश्च वाहनैः॥ शोभनं मन्दिरं प्राप्स्येत् गुणनीति समन्वितः। विलासी परमः स्त्री-व्यापारस्वशुभ्र धातूनां धनिको धार्मिकस्तथा॥ वस्त्राधिकः प्रगल्भश्च वामनो मायिको भवेत्। स्वार्थाद्धर्म करश्चैवमष्टादशे च प्राप्याणां प्रियश्चैकस्य स्यात्पिता॥ सुपुत्रस्य जयेद्युक्त्या वैरिणः राजसम्मतः। काव्य संगीतयोः प्रीतिः स्त्रीणात्वति॥ रुग्णां गर्भाशयेनैष पत्निं विद्याविवेकयुत्। द्विचत्वारिंशते वर्षे चतुःस्य विशेषतः॥ भाग्योदयं भवेदस्य नैकविंशे षड्विंशते। सप्तत्रिंशं चतुर्विंशं पञ्चाशते तथा॥ जीवनस्य तृतीयं वै द्विपञ्चाशतं क्वचित्। आद्यशुक्ल नवमैकादशेऽपि च॥ घातकं परमं भूयात् आयोन्यास्यास्ति पूर्णता। मुक्तां मूंगेति रत्नञ्च धारयेत् शुभ हेतवे। व्रतं चतुर्दश्यां वर्षे षड्षष्ठि संख्यके॥ तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे यदि चन्द्रमाः। बुद्धस्य राहोश्च अनुष्ठानञ्च श्रेयसे॥ निरोगः न्याय प्रीतश्च वाणिज्ये हानि भाक् भवेत्॥

५ | ४ सू. बु. | ३ | २ के शु. | ६ | ७ | १ | मं. रा. ८ | १० | ९ गु. | ११ | १२ श.

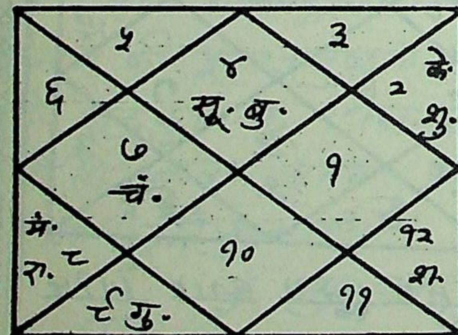
भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले – हे शिष्य! यह जातक भोगी, धार्मिक जनों का प्रिय, मिष्ठान्नादि का भोजन करने वाला, सौभाग्यवान्, बन्धु-प्रिय, मधुर भाषी, सङ्गीत-प्रिय, बहुत धनी, राजा का प्रिय; विष, अग्नि एवं शस्त्र से भय पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, सर्वत्र विजयी, सरलस्वभावी, निर्लज्ज, क्षीण जाँघों वाला, दुर्बल शरीर वाला, वाहनादि से युक्त, रत्न एवं श्वेतधातु के व्यवसाय से अधिक धन कमाने वाला होगा, एवं भवनादि से सम्पन्न, नीतिज्ञ, गुणी, धार्मिक तथा

यह जातक अधिक वाचाल, सामान्य क़द वाला, रोगी, प्रगल्भ तथा मायावी होगा। यह अत्यन्त विलासी, स्त्री-प्रेमी केवल एक सुपात्र एवं योग्य पुत्र का पिता, ऐश्वर्यवान्, राज्य द्वारा सम्मानित, विरोधियों पर युक्ति से विजय पाने वाला, स्वार्थवश धर्म-कर्म करने वाला तथा गर्भाशय सम्बन्धी रोग से युक्त स्त्री का पति होगा। इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में होगा। विद्वान्, विवेकी तथा कर्मनिष्ठ होगा। स्त्रियों के गीत-वाद्य में विशेष अभिरुचि रहेगी। इसका भाग्योदय १८, २६, ४२ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। जीवन के ३, ८, ११, २४, ३७, ५२ तथा ६२ वें वर्ष अपमृत्यु कारक एवं हानिप्रद सिद्ध होंगे। परमायु ६६ वर्ष की होगी। अगहन शुक्ला चतुर्दशी मंगलवार को मध्याह्न के समय इसकी मृत्यु होना सम्भव है। मोती तथा मूँगा धारण करने एवं राहु का अनुष्ठान तथा बुधवार का व्रत करने से लाभ होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में वैश्य-कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः आलसी और साहसी, नीरोग तथा न्याय-प्रिय, भाग्यवान् एवं व्यवसाय में हानि उठाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ प्रभो जीवनस्यास्ति कीदृशं योऽय जायते। भाषस्व कृपया सर्वं अस्यां कुण्-लिजस्य मे॥ भृगुउवाच॥ वत्स-धर्मेण संगच्छेत् मिष्ठान्नादी सुभाग्यवान्। गायने वादने दक्षः राजमान्योऽर्थवान् परम्॥ अग्निना विषशस्त्रैश्च भयं प्राप्स्यति दुर्बलः। मृदुर्वाण्या तथा बन्धुप्रियो लज्जागतस्तथा॥ राजेवधन सम्पन्नः कृपणो स्त्रीप्रियः क्वचित्। सरलः गुणवान् श्रेष्ठः पञ्चगणाधिपो सदा॥ जानोव्रणं सरोगश्च मृतवत्साञ्च धार्मिकीम्। सदोषां प्राप्नुयाद्भार्यां वर्षे त्रिविंशते तदा॥ भाग्योदयञ्च तस्यास्ति वै षण्णचत्वारिंशते। सप्तत्रिंशत संख्यायाः वर्षेऽप्यास्मिन् च वर्तते॥ आलस्यमुग्रता सन्तु वैरिणः प्रबलाः परम्। नास्यारिष्टं भवेत्किंचित् दैनन्दिने विडम्बना॥ अपमृत्युकरं तद्वत् हान्यै चतुर्दशं तथा। चतुर्थं नवविंशञ्च द्वेन पञ्चाशतं क्वचित्। द्विपञ्चाशत संख्याकं त्रिषष्ठ्याञ्चास्य मृत्यवे। षष्ठ्याब्द कृष्णस्य शिश्नरोगस्य

कारणम् ॥ पुत्रापचिन्तितश्चैव वार्द्धक्ये ऽवाप्य पुत्रकम् । तदाशक्त्या पुनर्देहं मानवस्यैव प्राप्स्यति ॥ ब्राह्मणः पूर्वयोन्यान्च अविवेकी तदाभवत् । चन्द्रमाः यदि लग्ने ऽस्य चतुर्थे सप्तमे ऽथवा ॥ दशमे स्यात्तु भवेदेव शोभनो मातृभक्तिवान् राजेव साहसिकश्चैवं वाणिजः शुभ्रवस्तुनः ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे वत्स ! सुनो, यह जातक मिष्ठान्न-प्रेमी, धर्मात्मा, श्रेष्ठ भाग्यवान्, भ्रातृ-प्रिय, मृदुभाषी, संगीत-प्रवीण, धनी, राजमान्य, विष, अग्नि तथा शस्त्र से भय पाने वाला, गार्हस्थ्य-सुख-सम्पन्न, सर्वत्र विजयी, बाल्यावस्था में रोगी, दुर्बल शरीर वाला,



लज्जाहीन, सरलस्वभावी, राजा के समान धनी, पण्डित, कृपण, स्त्रियों को प्रिय, गुणी, अधिक बोलने वाला, प्रख्यातयश, मुख-रोग-पीड़ित, छोटे क़द वाला, जाँघ में फोड़ा या व्रण-चिह्न वाला, दुःखी, राज्य से धोखा खाने वाला, अन्न-धनादि का प्राप्तकर्ता, मुख-रोग-पीड़ित एवं कुटुम्ब से विरोध पाने वाला होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में धार्मिक-विचारों वाली, स्वार्थी तथा मृतवत्सा-स्त्री के साथ होगा, तभी इसका भाग्योदय भी होगा । वर्ष ३७ तथा ४४ भाग्योदयकारक रहेंगे । स्वभाव में उग्रता के साथ आलस्य भी रहेगा । विरोधी प्रबल रहेंगे, परन्तु इसका अनिष्ट नहीं होगा। दैनिक आय अच्छी रहेगी, किन्तु कुछ परेशानियाँ आती रहेंगी । जीवन में अपमृत्यु एवं हानि का भय वर्ष ४, १४, २७, ४८, ५२ और ६३ वें वर्ष में होगा । आषाढ़ कृष्णा षष्ठी रविवार को प्रातःकाल अण्डकोषादि रोग के कारण धार्मिक-स्थिति में इसकी मृत्यु सम्भावित है । पुत्र की ओर से अधिक चिन्ता रहेगी तथा वृद्धावस्था में पुत्र प्राप्ति होगी । यह पिछले जन्म में अविवेकी ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी मनुष्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक शोभन, सुन्दर, मातृभक्त, श्वेत वस्तु का व्यवसायी तथा राजमान्य होगा॥इति

ॐ शुक्र उवाच॥ भाव्यं किं जायमानस्य अस्यां तात वदस्व मे। कुण्डल्यां विस्तृतं तद्धदुक्तवानात्मजं शृणु॥ भृगु उवाच॥ राजमान्यः धनाधीशः गानविद्यापटुः सुतः। धर्मगत मृदुवाणी भाग्यवान् विजयी सदा॥ जायात्मजैः सुखापन्नः भयं विवा-तिन शस्त्रतः। क्षीणबुद्धिः मृषाभाषी बन्धुवैरिः कलत्रवान्॥ सुमुखः स्त्रीषु प्रीतिश्च ब्राह्मणनामुपासकः। तथैव गुरु विप्राणां पूतोनतश्च भूपतिः॥ गृहैव वाहनैः द्रव्यैः शोभितो भागिनेयकः। व्याख्याता शास्त्रविद् विद्याकलासुपारगोः भवेत्॥ सामान्यं दैनिकं भूयात् जीवनं मुखपीड़ितः। म्लेच्छभाषाविदश्चैवं राजनीत्यां पटुस्तथा॥ चिकित्सको महान् राज्ये तस्मै पर्यटने रतः। क्रोधो ऽभिमान युक्तोऽपि विवेकवान् परं स्त्रियां॥ नाधिका प्रीति रस्या वै गर्भस्य रुग्णया स्त्रिया। पञ्चविंशे विवाहो ऽस्ति द्वाविंशतत्रिंत्रिंशयोः॥ द्वापञ्चा-शत वर्षायौ भाग्यं पातुदयं ध्रुवम्। सन्तत्याश्चिन्तितश्चैव तिस्रः कन्याः सुपुत्रकम्॥ म्लेच्छयोगाद वाप्नोति जीवने पञ्चमं तथा। नवमं नैकविंशञ्च सप्तत्रिंशैक षष्ठि-कम्॥ चतुः पञ्चाशतं वर्षं घातकं परमं तथा। अष्टम्यां माघशुक्लस्य मूत्रकृच्छ्रेण वर्तते॥ मृत्युरस्या वहेत् हस्ते हीरकं पुखराजकौ। चण्डिकायाः शनैश्चैव पूजनं व्रतमाचरेत्॥ पूर्वस्यां क्षत्रियो क्रूरः शूद्रश्चाग्रिम जन्मतः। द्वितीये पञ्चमे तद्वत् एकादशे ऽष्टमे यदि॥ चन्द्रश्चेद् पुत्रवान् दुष्ट जलेन ग्राप्यतत्त्ववित्॥

- ५ बु.
- ४ सू.
- ३ शु.
- २ के.
- ६
- ७
- १
- ८ मं. रा.
- १०
- १२ श.
- ९ गु.
- ११ चं.

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे वत्स! इस कुण्डली में जन्म लेने वाला जातक राजमान्य, धनी, सङ्गीत-प्रिय, मिष्टभाषी, सौभाग्यवान्, धर्म-सङ्गति करने वाला, मिष्ठान्नभोजी, सर्वत्र विजयी, स्त्री-पुत्रादिकों से सुखी; शस्त्र-अग्नि आदि से भय पाने वाला, मिथ्यावादी, हीनबुद्धि, बन्धु-विरोधी, स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, सुन्दर मुख वाला; देव गुरु तथा ब्राह्मणों का भक्त, पवित्र, विनीत, गृह-भूमि-धन-वाहनादि से युक्त, नेत्ररोगी, विद्वान्, गुणी,

व्यवहार-कुशल, राजनीतिज्ञ अथवा राज्यमें उच्च चिकित्सक के पद पर आसीन होगा। यह निरन्तर प्रगतिशील बना रहेगा तथा परोपकारी एवं मुख-रोगी होगा। दैनिक आय सामान्य रहेगी। यह म्लेच्छ भाषा का जानकार होगा। स्वभाव में क्रोध, अभिमान तथा उग्रता के साथ विवेक भी बना रहेगा। स्त्री से भलीभाँति पटरी नहीं बैठेगी। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में गर्भाशय की रोगिणी सुन्दरी स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २२, ३३ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। सन्तान की चिन्ता बनी रहेगी। तीन कन्यायें तथा एक सुयोग्य, सेवापात्र, परन्तु म्लेच्छ सम्पर्की पुत्र की प्राप्ति सम्भव है। इसके जीवन के ५, ८, १८, ३७, ५४ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकर सिद्ध होंगे। पूर्णायु की समाप्ति माघ शुक्ला अष्टमी सोमवार को सायंकाल मूत्रकृच्छ्र रोग से होना संभव है। हीरा तथा पुखराज धारण करना संकट-नाशक तथा लाभकारी रहेगा। शनिवार का व्रत तथा मंगल-चण्डी की पूजा अनुष्ठान हितकर सिद्ध होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्रूरकर्मा क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में शूद्र कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः आद्र-ऊर्मी, पुत्रवान्, जल अथवा वीर्यदोष से हानि पाने वाला एवं पुरातत्त्व वेत्ता होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ फलादेशं हितस्यास्ति योऽस्यां जायते जनः। किं भविष्यस्य भाषस्व कृपया मे पितः स्फुटम्॥ भृगु उवाच॥ भोगादि सेवने दक्षः सन्तात्यावल्प संख्यकः। पराक्रम युतः वित्ते क्षीणा यौवन व्याधिवान्॥ चलधीः पुत्रकश्चैकः जलमृत्युञ्च लप्स्यते। अल्पायुर्निर्धनः सौम्यः देवानाञ्चास्तुपासकः॥ गुरूणां ब्राह्मणानाञ्च राजेव वैभवान्वितः। भागिनेयोत्तमस्यैव मानुषः स्त्रीप्रियस्तथा॥ शोभना मरणैर्युक्तः नयनार्तिश्च वामनः। पतिरेव गणानां वै पञ्चानां कातरः सदा॥ प्रगल्भो दुर्बलश्चाग्रेः कौटुम्बिक मतान्तरम्। धीरो विवेकशीलश्च मुखपीड़ा युतस्तथा॥ द्विशो विवाह योगोऽस्य वियोगः षडविंशते।

द्वाविंशश्च चतुस्त्रिंशं द्विचत्वारिंशतं तथा ॥ भाग्योदयकरं वर्षं संग्रहिण्या च जीवनम् । मार्गशीर्षे परे पक्षेऽब्दे त्रि-पञ्चाशते गृहात् ॥ त्यजेद्दूरं शुभञ्चास्मै वटुक भैरव पूजनम् । धारणं नीलमस्यैवं हीरकस्यापि जीवने ॥ द्वितीयं द्वादशं वर्षं पञ्चविंशञ्च षष्ठकम् । त्रिनपञ्चाशञ्चाब्दं अपकर्ष करं सदा ॥ शूद्रोऽयं पूर्व योन्याञ्च वैधव्यं पतिवञ्चनात् । शुभ्माणाद्धि भविष्ये ऽपि स्त्री एव चन्द्रमा: यदि ॥ स्थित: षष्ठे तृतीये वा नवमे द्वादशे यदि । तदा साहसिकश्चैवं जलाद्धानिमवाप्स्यति ॥ भ्रमशीलो विदेशेषु वाणिज्यं कुरुते ध्रुवम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा– हे तात! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले– हे पुत्र! यह जातक अधिक भोगी, शत्रुनाशक, छोटे पेट वाला, कम सन्तान वाला, उत्साही, पराक्रमी, धन-हीन, युवावस्था में व्याधि-युक्त, एक पुत्र पाने वाला, अन्य स्त्री वाला, चपल-बुद्धि, जल से भय पाने वाला, अल्पायु, सुन्दर; देवता, गुरु एवं ब्राह्मणों का भक्त, पवित्र राजा के समान ऐश्वर्यवान्, कृपण, स्त्रियों को प्रिय, उत्तम भानजे वाला, नेत्र-रोगी, मधुभाषी, सुन्दर वस्त्रधारण करने वाला, प्रमुख पञ्च, छोटे कद वाला, दुर्बल, प्रगल्भ, कायर, दु:खी, मुख-रोगी तथा कुटुम्ब-विरोधी होगा। यह स्वभाव से उग्र होने के साथ ही गम्भीर भी होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में तथा स्त्री-वियोग २६ वें वर्ष में होगा। संग्रहणी रोग के कारण ५३ वर्ष की आयु में, घर से बाहर, मार्गशीर्ष शुक्ला द्वितीया को मध्याह्न के समय इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसे नीलम तथा हीरा धारण करना एवं बटुक भैरव का अनुष्ठान करना उत्तम रहेगा। इसके जीवन के २, ६, १२, २५ तथा ५० वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। यह पूर्वजन्म में शूद्रा-स्त्री था तथा पति-वंचना के अपराध में इसको इस जन्म में विधुर जीवन बिताना होगा। अगले जन्म में यह पुन: स्त्रीत्व प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ,

भाव	ग्रह
५ (लग्न)	सू. बु.
४	
३	शु.
२	के.
१	
१२	श.
११	
१०	
९	गु.
८	मं. रा.
७	चं.
६	

नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक कृशः उद्यमी और साहसी, जलसे हानि पाने वाला, दीर्घायु और धार्मिक तथा विदेशों में व्यापार करने वाला होगा । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ श्रोतुमिच्छाम्यहं भावितं वै ग्रहाणां महन्मण्डलेऽस्मिन् प्रजातः । जनो योऽपि तस्यैव पूर्णं वदस्व भृगुश्चात्मपुत्रं सदैवं जगाद ॥ भृगुरुवाच ॥ पराक्रमी स्थिरो बुद्ध्या कीर्तिं प्राप्स्यति राज्यतः । सम्मानितोऽथवा तत्र आश्रितः सर्वतो जयी ॥ अग्न्यादिभिः भयापन्नः पत्निपुत्रैश्च सौख्यवान् । अनृतवाग्मतिः क्षुद्रः बान्धवैः वैर संयुतः ॥ दुःखभागति नम्रश्च वासे वैभव गुम्फितः । गुणवान् मधुरावाणी सुशीलो व्यवहारवित् ॥ परेषामुपकारञ्च करोत्येष तथा वदेत् । सम्यवचांसि योगेऽस्य द्वयो पत्न्योः भविष्यति ॥ सप्तदशे विवाहान्ते त्रयोविंशे वियोग युत् । षड्मासन्तरं प्राप्स्येत द्वितीयां व्यभिचारिणीम् ॥ तथा कलह कर्तृत्वात् परभार्यारतोऽप्यसौ । शिक्षिता सन्ततिश्चास्य योग्यापि जीविका कृते ॥ बहिर्भ्रमणशीला च राजबन्धस्य यौगिकः । गृहभूमि सुखञ्चापि भाग्योत्कर्षोपि जीवने ॥ नैकविंशाष्ट विंशेवं षड्पञ्चाशत संख्यकम् । नवत्रिंशञ्च पूर्णायुः नैक सप्तति संख्यके ॥ वर्षे माघे कृष्णपक्षे सप्तम्यां वर्तते गृहे । एकादशे द्वितीयञ्च पञ्चषष्ठ्यैक त्रिंशते ॥ दिन पञ्चाशतं तद्वत् नैक षष्ठिञ्च जीवने । अपमृत्युकरञ्चास्मै हीरकस्यास्ति धारणम् ॥ गुरूणां पादुकां स्तोत्रं शुभदं व्रतधारणम् । ब्राह्मणोऽयं पुराऽभूच्च योनिः प्राथमिकी पुनः ॥ यथास्य चन्द्रमास्तिष्ठेत् चतुर्थे सप्तमे तथा । लग्ने च द्वादशे भाग्यः स्त्री-चौरः मातृदोषकः ॥ कुटुम्बवान् स्निग्धः स्नेहः विक्रेता शुभ्रवस्तुनः । इति वत्सफलं सर्वं जातकस्यास्य विद्यते ॥

६ | ५ | ४ शु. | ३
७ | सू. बु. | २ के.
रा. मं. ८ | ११ चं. | १
९ गु. | १० | १२ श.

भावार्थः शुक्र ने कहा — इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले — हे पुत्र! यह जातक स्थिर-बुद्धि, पराक्रमी, अधिक कीर्ति पाने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित अथवा राज्याश्रयी,

परोपकारी, अग्नि आदि से भय पाने वाला, मिथ्यावादी, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त, सर्वत्र विजयी, हीनमति, बन्धु-विरोधी, स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, दुःखी, अत्यन्त विनीत, अधिक वैभवशाली, वाहनादि से युक्त, ऐश्वर्य पूर्ण जीवन बिताने वाला, गुणी, सबको वश में करने वाला, मृदुभाषी, व्यवहार-कुशल, उपकारी, रोगी, दुर्बलशरीर वाला, सत्कार युक्त वचन बोलने वाला तथा द्विभार्या योग वाला होगा। इसका पहला विवाह १७ वर्ष की आयु में होकर २३ वें वर्ष में स्त्री-वियोग होगा, तत्पश्चात् ६ मास बाद ही दूसरी दुराचारिणी एवं कलहकारिणी स्त्री प्राप्त होगी। अन्य स्त्रियों से भी इसके सम्बन्ध रहेंगे। सन्तानें सुयोग्य, सुपात्र तथा शिक्षित होंगी। इसे आजीविकोपार्जन के लिए बाहर भ्रमण करना पड़ेगा। राज्यबन्धन का योग भी है। गृह तथा भूमि का सुख रहेगा। इसका भाग्योदय १९, २८, ३९ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। पूर्णायु ६९ वर्ष की होगी। माघ कृष्णा सप्तमी शुक्रवार को प्रातः काल अपने ही घर में, अश्मरी रोग के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। वर्ष २, ११, ३१, ४८, ५८ तथा ६५ अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। हीरा धारण करने तथा गुरु-पादुका स्तोत्र का अनुष्ठान एवं व्रत करने से इसके संकट-निवारण में सहायता मिलेगी तथा मनोका--मनाओं की पूर्ति होगी। यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था तथा भविष्य में प्रमथ योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा स्त्री-प्रेमी, पूर्णकुटुम्बी एवं मातृ-द्वेषी, स्त्री-लम्पट तथा शुभ्र धातुओं (चाँदी, राँगा आदि) का व्यवसायी एवं राजमान्य होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ वदस्व मे जीवनमस्य तस्य जातोऽस्ति योऽस्मिन् ग्रहमण्डलेन वै। फलं भविष्यस्य पितः समस्तं निशम्य सूनुः भृगुणा मुदीरितम् ॥ भृगुउवाच ॥ शास्त्रेषु दक्षः सौभाग्य शीलः गुणान्वितः सौम्य रति प्रियो सः। योगेरतः स्वात्मजनानुसेवकः जात्योन्नति श्चेच्छति पुष्ट देही ॥ विलास

युद्धचतुजितश्च रुग्णः श्रेष्ठोऽपि कार्येषु स्थितः कुभाग । भाग्येनहीनोऽपि युतोहि बान्धवैः वेषेण सौम्यः कृपणोऽपि शीलवान् ॥ विद्याप्रवीणः गुरुभक्तियुक्तः देवं द्विजानां समुपासकश्च । पत्निप्रियश्चास्य सुताधिकाः स्युः कृशः शरीरेण सुकामुकोऽपि ॥ स्वस्थः प्रगल्भः ननु वंचितश्च राज्येण वैलासिक वृत्ति युक्तः । स्त्रियारिवृद्धिश्च परे जयेतान् स्त्रिभिर्मवेदस्य महद्धिः योगः ॥ द्विनैकविंशेऽस्य विवाह योगः मासस्थदोषेण युत स्त्रिया सह । वहूनि सन्त्यस्य विडम्बनानि वाणिज्य भाग्योदय राजकार्ये ॥ तथापि षड्त्रिंशतमैकविंशे भाग्योदयं स्यात्तु पितुश्चमातुः । भक्तश्च गेहेन हि वाहनैर्युतः कौटुम्बिकं प्राप्स्यति सौख्य भावम् ॥ भूयादभावोऽस्य सुतात्मजानां

७ चं.	६ सू.	५ बु. शु.
८ रा.	९ मं. गु.	४
१०	३	
११	१२ श.	२ के.
	१	

मृत्युश्च वर्षे नन्चैक सप्ततौ । मासेस्तु ज्येष्ठस्य च पञ्चमप्रांतियौ चिकित्सया शल्यक्रिया प्रभावात् ॥ द्वितीयं पञ्चमं वर्षं द्वादशं चाष्ट विंशतम् । द्वात्रिंशञ्चाष्ट षष्ठिञ्च षडपञ्चाशतं तथा ॥ अपकर्षकरञ्चैवं जीवने पन्नकं तथा । नीलंम धारयेत् तद्वतसुपूजयेत्पितृश्वरान् ॥ व्रतं बुद्धस्य कुर्याच्चं पूर्वस्यां क्षयियोऽभवत् गुल्मकश्चाग्निमे देहे यदि चन्द्रोऽथ सम्भवेत् ॥ द्वितीये पंचमे स्थाने अष्टमेकादशे तदा । जलभीतः सुत भार्यैः युक्तश्च वहुवाच विद् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा — हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुनकर भृगुजी बोले — हे पुत्र ! यह जातक शास्त्रज्ञ, सौभाग्यशाली, गुणी, सुन्दर, सुरतप्रिय, योगशील, स्वजनों का हितैषी, सजातीयों को आनन्द देनेवाला, दुर्बल-स्त्री वाला, विलासी, शत्रुजित, श्रेष्ठ कर्म करनेवाला, दृढ़ अंगोंवाला, पीतवर्ण, बन्धु-बान्धव युक्त, भाग्य में किंचित् कमी वाला, कुचाली, विकल चित्तवाला, सुन्दर वेष वाला, शीलवान्, विद्वान्, देव-पूजक, गुरु-भक्त, ब्राह्मणों का सत्कार करने वाला, पवित्र, कृपण, स्त्री प्रिय, स्त्री-पूजक, अधिक कन्या-सन्तति वाला, कामकलाविद्, पाप कर्म करने वाला, प्रगल्भ

तथा राज्य से धोखा खाने वाला होगा। यह भोग-विलास में अधिक खर्च करेगा। स्त्री के कारण शत्रु-वृद्धि होगी, परन्तु शत्रुओं पर विजय पाता रहेगा। अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखेगा। 19 वर्ष की आयु में मासिक धर्म में विकार वाली कुलटा-स्त्री के साथ इसका विवाह होगा। भाग्योदय, राज्यकार्य एवं व्यवसाय में अनेक बाधायें आयेंगी। परन्तु 21 तथा 36 वें वर्ष में भाग्योदय होगा। यह माता-पिता का भक्त, गृह-वाहनादि से सम्पन्न, एवं उत्तम कुटुम्ब वाला होगा। सन्तान का अभाव रहेगा। परमायु 71 वर्ष होगी। ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी सोमवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, अपने घर पर ही शल्य-चिकित्सा के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। इसके जीवन के 2, 5, 12, 28, 32, 56 तथा 68 वें वर्ष हानिकारक रहेंगे। पन्ना तथा नीलम धारण करने, बुधवार का व्रत रखने एवं पितृश्वरों का अनुष्ठान तथा गयाश्राद्ध आदि करने से इसके सङ्कट दूर होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में गुह्यक योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सामान्य धनी, अनेक भाषाओं का ज्ञाता, जल से भय एवं हानि पाने वाला, पुत्रवान् तथा ऐश्वर्यशाली होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्ण्यतां मे त्रिकालज्ञ तस्य जीवस्य जीवनम्। अस्यां यो जन्मते जन्म तन्नि-
-शम्योक्तवान् भृगुः॥ भृगु उवाच॥ वंचनां द्विविधां राज्यादेव प्राप्नोति श्रूयताम्। कुटुम्बेन विवा-
-दोऽस्य धनान्नयोः विनाशकम्॥ प्राप्नुयात्सुखरुग्णोऽयं प्रगल्भश्चौर दुर्बलौ। कातरो धनवान् पञ्च-
-गणानां पतिरात्मनः॥ जामातृणां भवेदेव पूजकः वामनस्तथा। दुर्मतिः गुणवान् रुग्णः स्त्रीणां प्रियोऽरिभि-
भयम्॥ पीलिये निरुजापन्नः कामुकीनां पतिः परम्। योगाभ्यास रतो विद्वान् वन्धु मुत विकलः प्रियः॥
आत्मीयानाञ्च स्वस्थोऽपि शत्रुञ्जयः पराक्रमी। पुत्रोः भक्तः सुलाभश्च गृहभूम्योश्च संभवेत्॥
सम्मानितश्च राज्येन उच्चतमेन हीनता। राजनीत्यां विवेकेन युक्तोऽयमागल भाबकः॥ विवाहश्च चतुर्वि-

-शे उदरपीडिता च सा। धनभाग्योदयं प्राय: सामान्यं चिन्तितो भवेत् ॥ सन्तत्यै षडषष्ठ्याख्ये वर्षे भाग्योदयं क्वचित्। श्रावणे शुक्लपञ्चम्यां चतुरसीति संख्यके ॥ मृत्यु: पुनर्जन्म नास्त्येवैष ब्राह्मण: तु पुरा। क्षात्रेण सं-युतश्चन्द्रः स्यादत्र द्वादशे तथा ॥ तृतीये नवमे षष्ठेऽत्रोनीरोगयुत भवेत्। स्त्रीचौरो भाग्यवान् भीत: जलाच्च नीलमं वहेत् ॥ हीरकञ्चापि सूर्यस्य श्रेयसे पूजनं सदा। घातकं जीवने चाब्दं पञ्चमैकादशे क्वचित् ॥ द्वात्रिंशं प्रथमं तद्वत् पञ्च सप्तति संख्यकम्। द्विन पञ्चाशतं वर्षं त्रिषष्ठिमपि तादृशम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले – हे पुत्र! सुनो

६ सू. बु.
७
८ रा.
९ मं. गु.
१०
११ चं.
१२ श.
१
२ के.
३
४
५ शु.

यह जातक राज्य से हिंसित एवं धोखा खाने वाला; धन-अन्नादि का नाश करने वाला, मुख-रोग से पीड़ित, कुटुम्ब-विरोधी, श्रेष्ठ-वचन न बोलने वाला, रोगी, पापी, पागल, चोर, दुर्बल, कायर, धनी, पंचों में प्रधान, छोटे कद वाला, दु:खी, जाँघ में फोड़ा आदि के कारण कष्ट पाने वाला, जमातओं को पूजने वाला, स्त्री-भोगी, जीव-हिंसक, शत्रु-कुल के वध करने वाला, पीलिया रोग ग्रस्त, भोगी, कुमार्गी, विकल-चित्तवाला, विद्वान्, योगाभ्यासी, भाग्यहीन, माता-पिता का भक्त, गृह-भूमि के लाभ वाला, नीरोग, शत्रुजयी, हीन-उद्यमी तथा राज्य-सम्मान पाने वाला, आंग्लभाषा का विद्वान् होगा। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में उदर-विकार वाली तथा सन्तान-हीना स्त्री के साथ होगा। सन्तान के लिए चिन्तित बना रहेगा। भाग्योदय वृद्धावस्था में, ६६वें वर्ष में संभव है। आयु ८४ वर्ष की होगी। श्रावण शुक्ला पंचमी की रात्रि के चतुर्थ प्रहर में भगवद्भक्ति करते हुए इसकी मृत्यु होना सम्भव है। यह जातक पूर्वजन्म में क्षात्रधर्म युक्त ब्राह्मण था तथा इस जन्म के बाद यह मुक्ति प्राप्त करलेगा, अत: पुनर्जन्म नहीं होगा। हीरा एवं नीलम धारण, शान्ति

का व्रत एवं सूर्यानुष्ठान इसके लिए लाभकारी रहेंगे। इस जन्म कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः आलसी, क्रूर स्वभाव वाला, नीरोग तथा विरोधी, भाग्यवान् एवं धार्मिक तथा स्त्री लम्पट और जल से हानि पाने वाला होगा। इसके जीवन में १, ५, १६, ३२, ४८, ६३ तथा ७५ वें वर्ष हानि एवं अपमृत्यु कारक सिद्ध होंगे॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णितं क्रियतां तस्य धाऽस्यां वै जन्म लक्ष्यते। कुण्डल्यां सदया तात ततः भृगु रवोचत:॥ भृगु उवाच॥ शोभनो बुद्धिमान् वत्स सुकर्म जीविकां वहेत्। सर्वैर्मान्यो धनाधीशः सर्वकला विशारद:॥ वंचितः स्त्रीविलासेन सामान्योदर देहवान्। कपिलाक्षः जलाद्भीतः चलः शत्रु भयान्वित:॥ स्वस्थो वाल्यात् प्रियः स्त्रीणां कृपणो जीवहिंसकः जान्वा कलहायितश्चैवं चाण्डाल कर्म कारकः॥ पापात्मा कातरो रुग्णः चौरः प्रागल्भ्य संयुतः। गताशः राज्यतो रुग्णो मुखे ना शौच भाजकः॥ धनस्यास्मै सुखं पूर्ण कुपुत्र एव सन्ततौ। विलासकः गुरोः भक्तः कुटुम्बेन पराङ्मुखः॥ उग्रो नीचः दुःखभोक्ता स्वार्जित पैतृक स्य च। गृहमूलाभहीनश्चं शस्त्राणि भय कम्पितः॥ वार्द्धक्ये धार्मिकत्वाच्च पूजयेत् गुरु ब्राह्मणान्। देवान्नाप्यस्ये तार्थो: पञ्चषष्ठ्याञ्च पूर्णता॥ वैशाख शुक्ल पक्षां वै तीर्थे स्यात्तेन प्राप्नुयात्। मोक्षं आ-ग्योदयाया स्यैक चत्वारिंशात् तथा॥ चतुः पञ्चाशतं वर्षं त्रयोविंशञ्च ज्येष्यति। शत्रून् परं भवेद् वृद्धिः वैरिणां जीवने ऽशुभम्॥ द्वाविंशं द्वादशं वर्षं द्वितीयमष्टत्रिंशतम्। एक वर्णिं विवाहश्च विंशो धार्मिक कन्यया। आदित्य हृदय स्यास्मै पूजनं सिद्धिदायकम्। रवेः व्रतञ्च कुर्यात्तु नीलमं धारयेत् सदा॥ चन्द्रोऽस्य यदि सतिष्ठेत् चतुर्थे सप्तमेऽथवा। लग्न दशमयो: भूपात् स्त्री चौरः स्त्रीजितश्च वै॥ विशेषहृश्च

मं० रा० ८	७ र०	बु० शु० ६
९ गु०	१० चं० / ४	५
११	१	३
१२ श०		२ के०

भृ० सं० ७२३

भा० टी०

नेत्राणां कुटुम्बेण विरोधवान् । राजतुल्यो भवेदेष इत्येव भाविनं फलम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक श्रेष्ठ बुद्धिमान्, अच्छे कार्यों से आजीविकोपार्जन करने वाला, विद्वान्, समस्त कलाओं में निष्णात, धनी, सर्वत्र सम्मान पाने वाला, स्त्री-विलास-सुख से रहित, चंचल, सामान्य पेट तथा शरीर वाला, कपिल वर्ण नेत्रों वाला, जल से भय पाने वाला, शत्रुओं से भयभीत, कृपण, सुखी, स्त्रियों का प्रिय, बाल्यावस्था से ही स्वस्थ, पण्डित, जीव-हिंसक, रोगी, जाँघ में कष्ट पाने वाला, चाण्डाल तुल्य कर्म करने वाला, कायर, चौर वृत्ति वाला, उन्मत्त, राज्य से निराशा पाने वाला, कुटुम्ब-विरोधी, मुख-रोग-पीड़ित तथा श्रेष्ठ वचन न बोलने वाला होगा। इसे केवल एक पुत्र की प्राप्ति होगी। यह स्वभाव से उग्र, नीच, पापकर्म-परायण तथा पैतृक धन का भोगी होगा। भोग-विलासादि में धन खर्च करेगा, परन्तु स्वयं भी धनोपार्जन करेगा। जीवन के उत्तरार्द्ध में इसकी धर्म की ओर रुचि बढ़ेगी तथा यह गुरु, ब्राह्मण एवं देवभक्त बनेगा। इसे अग्नि तथा शस्त्र से भय होगा। भाग्योदय २३, ४१ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। शत्रुओं पर विजय मिलेगी, परन्तु विरोधी भी बढ़ेंगे। पूर्णायु ६५ वर्ष की होगी। वैशाख शुक्ल षष्ठी रविवार को मध्याह्न में किसी तीर्थ-स्थान में एकाकी मृत्यु होने से इसे परमपद प्राप्त होगा। जीवन के २, १२, २२, ३८ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा धार्मिक-विचारों वाली स्त्री के साथ होगा। रविवार का व्रत, आदित्यहृदय का अनुष्ठान तथा नीलम धारण करना अरिष्ट-नाशक एवं शुभदायक सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा स्त्री-लम्पट, कुटुम्ब-विरोधी, स्त्री-जित, नेत्र-विशेषज्ञ एवं राजतुल्य होगा। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ अत्र यो जायमानोऽस्ति ग्रहमण्डल संस्थित: । भविष्यं वद मे तस्य कथं स: जीवनं वहेत् ॥

भृगु उवाच ॥ वत्सैष संतत: भीत: राज्यात् सर्व विरोधित: । पापात्मा कलहे दक्ष: परसेवारतस्तथा ॥ धनवान् वाहनैर्युक्त: शत्रुभिर्दु:खितो भृशाम् । भवेत श्रेष्ठ पत्निभि: सम्बन्धोऽस्य कलापटु: ॥ दुष्कर्म प्रवृतिर्ष्यात् वाचालो व्यसनी नत: । गृहभूमि धनाधीश: वासे प्रदर्शनात्मक: ॥ व्यवहार पटुस्तीर्थ यात्रां करोति भूषित: । स्त्रिया वैभव सम्पन्न: मायिकश्चौर कर्मवान् ॥ गुणग्राही कुटुम्बेन विवादी मद संयुत: । विवेकशील पत्न्या वै विवाहाऽब्देऽस्य विंशते ॥ नाशतां सन्तति यातु एको दुश्चरितान्वित: । सुतोऽस्य सेवमानोऽपि एनं दु:खे निपातयेत् ॥ भाग्योदयस्य वर्षञ्च अष्ट विंशंत्रिंशतम् । एक पञ्चाशतं तद्वत् चतु: पञ्चाशतं क्वचित् ॥ स्वर्णादिकं सुखं भुक्त्वा वैकुण्ठं यातु मानवात् । शूद्रोऽयं पूर्व जन्मश्च मुक्तानीलम धारणम् ॥ पयोव्रतञ्च सिद्धचर्य जीवनस्य त्रयोदशम् । द्वितीयं पञ्चविंशञ्च एकषष्ठमष्टत्रिंशतम् ॥ सप्तपञ्चाशतं वर्षे अपमृत्युकरं सदा । द्वितीये पञ्चमे चन्द्र: एकादशाष्टमेऽथवा ॥ स्थित: स्यात्तु तदा हीन: धनेन परिवारत: । सुपुत्रक जलाद् भीत: राज्याच्च धनवान् युत: ॥

८ रा.	७ सू. बु.	६ शु.
९ मं. गु.	४	५ चं.
१०	१	३
११	१२ श.	२ के.

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! कृपया इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। यह सुन कर भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक राज्य से निरन्तर भय पाने वाला, सब का विरोधी, पापी, कलह-कुशल, पर-कर्म करने वाला, धनी, वाहनादि से युक्त, शत्रुओं से दु:खी रहने वाला, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, सुखी, मिथ्यावादी, अधिक खर्चीला, कारीगरी में कुशल, कुकर्मों में मन लगाने वाला, अधिक बोलने वाला, व्यसनी, विनीत, गृह-भूमि-धन आदि का लाभ पाने वाला, ठाठ-बाट से रहने वाला, तीर्थ यात्री, स्त्री युक्त, व्यवहार-कुशल, गुणग्राही, परोपकारी, मायावी, चोरी

करने में कुशल एवं कुटुम्ब-विरोधी होगा। यह आत्माभिमानी, अहंकारी, पर-निन्दक तथा वैभवयुक्त भी होगा।
२० वर्ष की आयु में इसका विवाह सुन्दर एवं विवेकशीला स्त्री के साथ होगा। अनेक सन्तानें नष्ट होंगी।
केवल एक दुश्चरित्र पुत्र बचेगा, वही इसकी सेवा करेगा और कष्ट भी देगा। भाग्योदय २८, ३९, ५१
तथा ५४ वर्ष की आयु में होगा। ६८ वर्ष की पूर्णायु होगी। कार्तिक कृष्णा द्वादशी गुरुवार को अपराह्न में
भगवद्-चिन्तन करते हुए इसकी मृत्यु होगी, जिसके फलस्वरूप यह स्वर्गादि के सुखों का दीर्घकालतक उप-
भोग करने के बाद पुनः मनुष्य योनि धारण करेगा। पूर्व जन्म में यह धर्मात्मा शूद्र था। मोती तथा नीलम

- ८ रा.
- ९ गु.
- ७ सू. बु.
- ६ शु.
- ५
- १० मं.
- ४
- ११
- १
- ३ चं.
- १२ श.
- २ के.

धारण करना तथा पयोव्रत का साधन हितकर रहेगा। जीवन के २, १३, २५,
३८, ५७ तथा ६१वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं हानिकर रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा
यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः
धनहीन एवं कुटुम्ब-विरोधी, सुपुत्रवान्, जल अथवा जलोदर रोग से हानि पाने
वाला, सर्व राज्य से धन-लाभ तथा सम्मान पाने वाला होगा। इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ भविष्यस्य फलादेशं मनुष्यस्यास्य जीवने। कीदृशं
वदतां तात श्रोतुमिच्छामि मूलतः॥ भृगुरुवाच॥ नाशकोऽन्न धनानां सः
दुर्मतिर्दुर्बलश्चापि; वामनो जन्मतः
मुखरोगेण पीडितः। रुग्णः दुष्कृत्य संलग्न सदा राजेव श्रीपतिः
जितेन्द्रियः कुलख्याता स्त्रीणा उच्चैर्हासिहार-
क्षमः। पुत्रोऽपि लुब्धकः स्त्रीणां प्रियश्चंचल चेतसः॥ मद्यदुष्टा गृहे भूम्याः वाहनानाञ्च पितृणाम्। सुखं-
कः। कृषिजीवी तथा भक्ताः महतां क्रोधसंयुतः॥ पतिव्रतां विवेकेन युक्तां भार्यामवाप्स्यति। एकविंशतमे वर्षे
पूर्णे वर्षे राज्ये उपेक्षा बन्धयोगवान्॥ षड्विंशे वर्षे त्रिंशे वर्षे पञ्चा-
सुन्दरी परमां परम्॥ सन्तत्या चिन्तितः नित्यं आत्मजोपाय सम्भवः।

भृ० सं० ३२३

-शते ऽपि च ॥ भाग्योदयं कृते सन्त्याब्दे सप्तषष्ठि संख्यके । वैशाखकृष्णपक्षस्य नवम्यां जीवनं त्यजेत् ॥
जले नैव परं तच्च तथैव धार्मिक कारणात् । मोक्षं दास्यति जीवाय साम्यान्यतो ऽस्य जीवने ॥ अष्टाविंशं
त्रिषष्ठिमञ्च द्वितीयं षष्ठ संख्यकम् । द्विचत्वारिंशतं वर्षं अष्टपञ्चाशतं तथा ॥ एकादशञ्च हान्यै वै
आसीच्छूद्रश्च धार्मिकः । पुरा भौमव्रतं कुर्यात् माणिक्यं श्रेयसे वहेत् ॥ सौमश्चेदय संतिष्ठेत् तृतीये
नवमे तथा । षष्ठे चैकादशे स्थाने तदैव क्रमशो भवेत् ॥ धार्मिक: कर्तव्यशील: भाग्यैश्वर्ययुतस्तथा ।
यात्रां वैदेशिकीं कुर्यात् ऐश्वर्ये व्ययकारकः ॥

भा० टी०

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे तात! अब इस कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले- हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक मुखरोगी, अन्न-धन आदि का नाशक, रोगी, पापी, दुष्ट-बुद्धि, दुर्बल अङ्गों वाला, छोटे कद वाला, जन्म से ही समर्थ, पण्डित, राजतुल्य धनी, लोभी, स्त्रियों को प्रिय, चंचल-चित्त वाला, मध्यम दृष्टि वाला, इन्द्रियजित्, कुल की जय करने वाला, भूमि से आजीविका अर्जित करने वाला, क्रोधी, ब्राह्मण तथा सज्जनों का भक्त एवं सामान्यतः सुखी जीवन बिताने वाला होगा। इसे गृह, भूमि, वाहन तथा माता-पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होगा, परन्तु राज्य के सम्बन्ध में उदासी-नता एवं बन्धन योग है। इसका विवाह 27 वर्ष की आयु में परम सुन्दरी, विवेकी तथा पतिपरायणा स्त्री के साथ होगा। सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहेगी। उपाय द्वारा ही पुत्र प्राप्ति सम्भव है। भाग्योदय वर्ष २६, ३६ तथा ५६ में होगा। जीवनावधि ६७ वर्ष है। वैशाख मास के कृष्णपक्ष की नवमी तिथि तथा रविवार के दिन मध्याह्न काल में जल के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। तीर्थस्थान में धार्मिक-कृत्य करते हुए मृत्यु होने के कारण इसे मोक्ष प्राप्त होगी। जीवन के २, ६, ११, २८, ४२, ५८ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानि कारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्वजन्म

मे धर्मात्मा शूद्र था । मंगलवार का व्रत तथा माणिक्य धारण करना इसके लिए लाभकारी सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः परम धार्मिक और कर्तव्य-परायण, विदेश-यात्री, भाग्यवान् एवं ऐश्वर्य-सज्जा में धनखर्च करने वाला होगा ।।इतिशुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच ।। पितः किं जीवनं तस्य भविष्यस्य भविष्यति । योऽस्मिन् गृहकुलोत्पन्नः कृ-पया वर्ण्यतां मम ।। भृगु उवाच।। तातऽस्यो जायते जीवः भीतिं प्राप्स्यति राज्यतः। परैः शाकं विवादः स्यात् पापकृत् कलहप्रियः ।। बुद्धिविक्रमशीलश्च परोपकारकारकः । स्त्रीभिः सुखमवाप्नोति धनेनापि क्षमान्वितः।।

- कु. रा. ८
- ७ सू. शु.
- ६
- ५ चं.
- ९
- १०
- ४
- मं. गु.
- ११
- १
- ३
- १२ श.
- २ के.

प्रातिकूल्येन भीतोऽयं स्वालीयानां धियाहतः । कृपणो अङ्गहीनश्च सुकर्म विमुखः सदा ।। काव्यकारः सुवस्त्रैश्च गन्धैश्चापि सुशोभितः । कविश्रेष्ठश्च नम्रोऽपि कातरः सरुजो भवेत् ।। रूपवत्या शरीरेणं मध्यपास्यापि संभवेत् । नाष्टत्रिंशतमे वर्षे विवाहः सन्ततिस्तथा ।। विलम्बेनाप्युपायैश्च पुत्रश्चैकोहि प्राप्स्यति । भा-ग्योदयाय वर्षाणि चैक पञ्चाशतं तथा।। द्वात्रिंशाच्च चतुर्विंश धनस्यास्थिति रुत्तमा ।मातुः पितुः गृहे भूम्याः वाहनं पैतृकादिकम्।। पूर्णं सुखं सदा सन्तु वैरिणः प्रबला भवेत् । असाध्येनास्य रोगेण मार्गशीर्षे चतुर्दशी।। शुक्ल-स्य सप्त षष्ठ्यारव्ये वर्षे गेहे भविष्यति। जीवने सप्तमं तद्वत् एकादशैक विंशते ।। द्वितीयं षट्त्रिंशच्च अष्ट पञ्चाशतं क्वचित् । त्रयोषष्ठिश्च हान्यै वै शनैश्च व्रतमाचरेत् ।। तथैव नीलमं धृत्वा हनुमत्पू-जनं शुभम् । वैश्यो वैश्यः पुनर्भूयात् कुण्डल्यामत्र चन्द्रमाः।। द्वितीयैकादशे चाष्टे पञ्चमे चेद्भवि-ष्यति । दरिद्रो विवेकशीलश्च सहसा धन प्राप्नुयात्।। विद्वान् भ्रमणशीलोऽपि पुत्रवान् जलभीति युत् । इति वत्स यथा तथ्यं भविष्यमत जन्मनः।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे महात्मन् ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक राज्य से भय पाने वाला, सब का विरोधी, पापी, कलही, पर-कर्म कर्त्ता, संग्राम में पराक्रम दिखाने वाला, स्त्रियों से सुख पाने वाला, स्वजनों की प्रतिकूलता से अधिक भय पाने वाला, धन-वैभव से सुखी, कृपण स्वभाव, श्रेष्ठ कर्मों से विमुख, अधिक परिश्रमी, दुःख पाने वाला, बुद्धिहीन, काम-रहित, क्रोधी, विफल मनोरथ, सुन्दर वस्त्र-गन्धादि से सुशोभित, प्रियभाषी, कविश्रेष्ठ कविताकार, विनयी, रोगी तथा कायर स्वभाव का होगा। इसका विवाह अत्यन्त सुन्दर गेहुँए रंग की कन्या के साथ २२ वर्ष की आयु में होगा। सन्तान कुछ विलम्ब से होगी। उपाय द्वारा केवल एक पुत्र प्राप्त होगा। भाग्योदय २४, ३२ तथा ४९ वें वर्ष में होगा। धन की स्थिति श्रेष्ठ रहेगी। माता-पिता, गृह, भूमि, वाहन तथा पैतृक-धन का सुख भी मिलेगा। विरोधी भी प्रबल बने रहेंगे। ६७ वर्ष की आयु में मार्गशीर्ष शुक्ला चतुर्दशी शनिवार को इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के २, ७, ११, २१, ३६, ४८ तथा ६३ वें वर्ष अनिष्ट एवं अपमृत्युकारक रहेंगे। शनिवार का व्रत करने, हनुमान् जी का पूजनानुष्ठान करने तथा नीलम धारण करने से मनोरथों की पूर्ति होगी एवं अनिष्ट दूर होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में भी वैश्य ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्र-मा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः दरिद्र, विद्वान् और विवेकी, भ्रमणशील तथा अनायास धन पानेवाला एवं जल से हानि पाने वाला और पुत्रवान् होगा॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ भविष्यास्य जीवस्य भाषस्व महाप्रभो फलं तात मैत्तन्म नीका मदीया। निशम्यो क्ता प्रश्नं भृगुस्तत्र मुख्यं फलं सर्वमेवं स्वसूनुं जगाद ॥ भृगु उवाच॥ सुवीरश्च धर्मेण

युक्तः कुलेशः सुबुद्धिस्तथा पोषकः प्राणिनाञ्च । गुदादि रुजैः संयुतापातकष्टैः सुभीतस्तथा निर्धनः वृद्ध देही ॥ कुलस्य जयकर्ताऽपि जितेन्द्रियश्च नीतिमान् । कृषिकर्मकरः क्रुद्धः स्त्रीणाञ्च मोहने पटुः ॥ सत्यवाग् द्विजभक्तश्च आशुमृत्युं गमिष्यति । सेवकोऽतिथिनामेव रत्नवाहन संयुतम् ॥ मन्दिरञ्चास्य सम्भूयात् परदारा-भिवर्जितः । पुत्रवान् धार्मिको जातः सुवंशे शोभनं तनुः ॥ ज्ञानी कष्टं तथा स्त्रीणां स्वामी राज्येन वंचितः । सुन्दर्यानेक विंशाब्दे विवाह औषधौ हि सा ॥ जीविष्यति च चत्वारः पुत्राः स्युः तिस्र कन्यकाः । सर्वे सम्पासु योग्याः वै द्वाविंशेचाष्ट त्रिंशते ॥ द्विपञ्चाशत वर्षायौ भाग्यं यातूदयं ध्रुवम् । राजसेवा च तत्रापि पदोच्चं प्राप्नुयात् स्थितिः ॥ भ्रमणस्यास्य जीवान्तं वर्षे द्विसप्ततौ गृहे । वैशाख स्या-न्तिमे चाह्ने हृद् रोगेण संभवेत् ॥ अपमृत्युकरं वर्षं षड्विंशाष्ट त्रिंशते । नैक पञ्चाशतं तद्वत् एक सप्तति संख्यकम् ॥ जीवने परमं पूर्वं शूद्रोऽपि ब्राह्मणो भवेत् । यद्यत्रचन्द्रमास्तिष्ठेत् तृतीये नवमेऽथवा ॥ द्वादशेऽष्टे भये चैवं साहसिकः श्रमान्वितः धार्मिकश्च विलासी वै जलाग्नि भय संयुतः ॥

९
८ रा. सू. बु.
७ शु.
मं. गु. १०
६
११
५
१२ श.
चं. ४
२ के.
१
३

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे तात! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का भविष्य फलादेश बताने की कृपा करें । भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जा-तक बड़ा वीर, धर्मात्मा, पण्डित, कुल में प्रधान, बुद्धिमान, सब का पालन करने वाला, अर्श आदि गुदा रोग का रोगी, दुर्घटना से भय पाने वाला, जितेन्द्रिय, धन-हीन, अपने कुल की जय जयकार कराने वाला, स्त्रियों को सम्मोहित करने वाला, वृद्ध जैसे शरीर वाला, भूमि से आजीविकोपार्जन करने वाला, क्रोधी, ब्राह्मण-भक्त, सामान्य कद वाला, सत्यवादी, शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होने वाला, अतिथि-सेवक, वाहनादि से युक्त, रत्नभूषित गृह युक्त, नीति-गुणज्ञ, परस्त्रियों से दूर रहने वाला, धर्मात्मा

पुत्रवान्, कुलीन, सुन्दर, प्रसन्न, सुखी, जाँघ में कष्ट युक्त, कायर तथा राज्य से चोरका खाने वाला होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में सुन्दरी स्त्री से होगा, परन्तु वह सदैव औषध-सेवन पर निर्भर तथा जीवित रहेगी। ४ पुत्र तथा २ कन्याएँ होंगी। सभी सन्तानें सुयोग्य तथा सुसभ्य होंगी। भाग्योदय २२, ३८ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। राज्य कर्मचारी का पद भी मिलेगा। यह श्रमणशील रहेगा। मृत्यु ७२ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला १५ को मध्यदिन में घर पर हो, मस्तिष्क अथवा हृदयरोग के कारण होना संभव है। जीवन के २६, ३८, ४९ तथा ७१ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। इस

मं. / गु. १०	९ बु.	८ सू. शु. रा.
११		७ / ६
१२ श.	२ के.	५
१		३ / ४

कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी, व्यवसायी तथा परमधार्मिक, नीरोग तथा जल एवं अग्नि से भय पाने वाला, भाग्यशाली तथा अधिक विलासी एवं धन-व्ययी होगा॥ इति॥

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकालज्ञ कथं यास्येत् जीवनं तस्य देहिनः। ग्रहाणां संकुलेऽस्मिन् यो जीवनं लभते वद॥ भृगु उवाच॥ शिष्य संजायते योऽत्र रोगैः युक्तोऽपि पापकृत्। प्रगल्भो दुर्बलश्चौरः कातरो धनवान्नपि॥ असद्भाषी विभाग्न्यस्त्रैः भीतः मातुः पितुः मतम्। भिन्नं गोन्नति कर्ताऽपं मायिकोऽन्नस्य नाशकः। संग्रामे विक्रमापन्नः स्त्रीभिः सौख्यमवाप्स्यति। स्वजनैः भीतिवान्नैव विघ्नश्चास्य मनोरथे। अधिष्ठाता कुलस्यैव कलासु पाटवं सदा। अनङ्गरहितश्चैवं क्रुद्धः क्षीणमनोरथः॥ निन्दकः हिंसको युक्तः व्यसनैः गुणसंयुतः। कृशोदरी सुगौराङ्गीं भार्यां प्राप्स्यति रोगिणीम्॥ चतुर्विंशतमे वर्षे पुत्राः स्युरधिकाः परम्। म्लेच्छविद्याविदस्ते स्युः नास्तिकाः सेवकौ तथा॥ द्वावेवास्य त्रयोविंशे षट् पञ्चाशते क्वचित्। नवत्रिंशेऽस्य भाग्यस्य उदयश्चास्ति जीवनम्॥

एकादश्याञ्च कृष्णस्य आषाढ़स्यास्य नश्यति। त्रयोसप्तति संख्याया: वर्षे जठर पीड़या ।। जीवने नेष्ट वर्षाणि पञ्चमं सप्तमं तथा। सप्तदशं द्वितीयञ्च द्विचत्वारिं शतालकम्। नवषष्ठिं सप्तत्रिंशं राज्ये सन्मान्य संस्थित: । पदे तेनैव भाग्यस्य उदये परिवारत: ।। व्ययाधिक्यान्न संभूयात् द्रव्य संग्रह वान्नयम्। पूर्वजन्मनि शूद्रोऽयं आसीद्धर्म परायण: ।। अस्मिञ्चान्तिम वर्षेषु धर्म प्रीत्या व्रजेदसौ। मौक्षं माणिक्य रत्नञ्च धारयेल्लशुनेत्यपि ।। यदि चन्द्रोऽत्र लग्ने वा चतुर्थे सप्तमेऽथवा। दशमे पति चौरोऽयं कृपण: शुक्ल जीवित:।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे स्वामी! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। यह सुनकर भृगु जी बोले- हे शिष्य! सुनो, यह जातक रोगी, पापी, पुगल्भ, चोर, दुर्बल शरीर वाला, कायर, मायावी, राज्य से द्विविधा पाने वाला, अन्न आदि के नाश वाला, मुख-रोगी, धनी, कुटुम्ब-विरोधी, श्रेष्ठ वचन न बोलने वाला, कृपण, कलही; विष, शस्त्र एवं अग्नि से भय पाने वाला, माता-पिता का विरोधी, उन्नति प्राप्त करने वाला, संग्राम में पराक्रम दिखाने वाला, स्त्रियों से सुख पाने वाला, स्वजनों से भय पाने वाला, धन-वैभव-सम्पन्न, विनम्र, कुल-पालक, कारीगर, अल्पकामी, क्रोधी, विफल-मनोरथ, जीव-हिंसक, सर्वत्र निन्दित, निषिद्ध-कर्म-कर्त्ता, तथा व्यसनी होगा। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में अत्यन्त गौरवर्ण, कृशोदरी तथा वाचाल कन्या के साथ होगा, जो सदैव रुग्णा बनी रहेगी। पुत्रों की संख्या अधिक होगी, परन्तु वे सभी म्लेच्छ विद्या में पारङ्गत तथा नास्तिक होंगे। दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे। भाग्योदय २३, ३७ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। आयु ७३ वर्ष की होगी, आषाढ़ कृष्णा एकादशी शुक्रवार को उदर-व्रण के कारण, मध्याह्न काल में घर पर ही इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन के २, ५, ७, १७, ३७, ४२, ५८ तथा ६९ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टप्रद रहेंगे। राज्य में सम्मानित पद पर रहते हुए यश एवं अर्थ-लाभ के योग भी उपस्थित होंगे। गृहस्थी के कामों में धन अधिक व्यय होगा, अत: अर्थ-संचय अधिक नहीं हो पाएगा। यह जातक पूर्व जन्म में धर्मात्मा शूद्र था तथा इस जन्म में अन्त

समय में भगवत्-चिन्तन के कारण मोक्ष-लाभ करेगा। माणिक्य तथा लहसुनियाँ धारण करने, शुक्रवार को व्रत रखने तथा गणपति का पूजनानुष्ठान करते रहने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम कृपण तथा कुत्सित, पूर्ण कुटुम्बवान्, स्त्री-लम्पट तथा श्वेत-वस्तु का व्यवसायी एवं पण्डित होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ प्रभो किं जीवनं तस्य यो ऽत्र जन्म हि लप्स्यते। कृपया वर्ण्यतां सद्य भविष्यं मे सुविस्तृतम्॥ भृगु उवाच॥ शीलहीनश्च तश्चैव विद्वत्सेवी कुमार्गगः। सदा रुग्णश्च वाचालः स्त्याभागेन निर्गतः॥ जितेन्द्रियः प्रवासस्थः कुलजेता स्त्रि मोहकः। भूम्यार्जि द्विजभक्तश्च कदाचिद्धनमर्जयेत्॥ सवाहनः श्रमापन्नः नीतिवान् गुणवानपि। परभार्या विरक्तश्च सुधार्मिको विशालदृक्॥ मांसप्रियस्तथा राज्ये सेवकः मृत्युमाप्स्यति। चतुर्थायौ दुर्बलाङ्गः वामनमाधिको ऽपि च॥ कुटुम्बाद्विमतश्चायं आननार्तश्च प्राप्नुयात्। कुलघ्नीं व्यभिचारेण युक्तां भार्यञ्च जारजाम्॥ पुत्राः स्युरधिकाः किन्तु तेषां न जीवनाधिकम्। स्वपत्युस्त्वैक एवास्तु सचैवास्यास्ति सेवकः॥ चतुर्विंश तथा व्यस्य विवाहो नव त्रिंशते। वियोगो जीवने वर्षे द्वितीयमष्टविंशतम्॥ नवत्रिंशाष्टमे वर्षे पञ्चादशं त्रिषष्ठिकम्। षट् पञ्चाशतञ्चापि घातकं परमं भवेत्॥ परमावधिरस्यास्ति वर्षे सप्तति संख्यके। शूलेनचोदरस्यास्य वैशाख शुक्ल त्रयोदशी॥ आसीच्चधूडश्च वैकुण्ठं प्राप्नुयादिति चन्द्रमाः। अस्याञ्चेद्यदि संतिष्ठेत् द्वितीयैकादशे ऽष्टमे॥ पञ्चमेतुभवेदेव धनेशः पुत्रवानपि। भोक्ता च विविधार्थानां जलाद्धानिमवाप्स्यति॥ गोमेदं धारयेदेव गुरोः व्रतञ्च पूजनं। श्रेयसे जीवने चास्मै शुक्रवासरसो व्रतम्॥ इत्येवास्य भविष्यं वै विस्तारेण प्रचोदितम्॥

(कुण्डली)
९ बु. | ७ चं. | म. गु. १० | ८ सू. रा. शु. | ६ | ११ | ५ | श. १२ | २ के. | ४ | १ | ३

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने का कष्ट करें। यह सुन कर भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जातक अत्यधिक चंचल, शील-रहित, विद्वानों का सेवक, रोगी, बातूनी, भाग्यहीन, रति-हीन, बुरे चाल-चलन वाला, परदेशवासी, जितेन्द्रिय, धन-हीन, कुलजपी, स्त्री-मोहक, भूमिद्वारा जीविकोपार्जन करने वाला, क्रोधी, ब्राह्मणों का भक्त, सामान्य क़द वाला, कभी-कभी धन लाभ पाने वाला, उद्यमी, वाहन एवं सुन्दर गृह सम्पन्न, नीतिज्ञ, गुणवान्, परस्त्रियों से दूर रहने वाला, धर्मात्मा, राज्याश्रयी, मांसप्रिय, बड़े नेत्रों वाला, चतुर्थावस्था में मृत्यु पाने वाला, दुर्बल शरीर, मायावी, मुख-रोग पीड़ित तथा कुटुम्ब-विरोधी होगा। इसकी स्त्री कुलटा तथा व्यभिचारिणी होगी। विवाह २४ वर्ष की आयु में होगा तथा ३८ वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग हो जाएगा। जारज-पुत्रों की वृद्धि होगी, परन्तु वे अधिक समय तक जीवित नहीं रहेंगे। केवल एक औरस-पुत्र ही जीवित रहेगा, जो इसकी सेवा करेगा। जीवन के २, ८, १५, २८, ३८, ५६ तथा ६३ वें वर्ष हानि एवं अपमृत्यु कारक रहेंगे। आयु की परमावधि ७० वर्ष है। वैशाख शुक्ला त्रयोदशी मंगलवार को मध्यरात्रि में, उत्तरदिशा की ओर किसी तीर्थ-स्थान में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा इसी जन्म में इसे वैकुण्ठ की प्राप्ति होगी। गोमेद धारण करना और गुरुवार का व्रत रखना एवं गुरु-भक्ति का अनुष्ठान इसके लिए लिए लाभप्रद एवं अरिष्ट-निवारक सिद्ध होगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी, पुत्रवान्, जल से हानि पाने वाला तथा विविधार्थलाभी होगा॥ इति शुभम्।

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां या जायमानास्ति व्यक्ति तस्या च कीदृशम्। भविष्यं कथयन्वेतत् श्रुत्वा भृगुस्त्वमब्रवीत्॥ भृगुउवाच॥ मानवोऽयं सदा भूयात् नीति-धर्म परायण:। कुलीनः बुद्धिमानोऽप्या

त्मीयानां कोपभाजन: ।। सर्वेषां पालकश्चैवं धनाढ्यं सुहृदाञ्च वै । हितेच्छु: विनयाद्हीन: तुष्टो ऽपि रुग्णदेहवान् ।।
बहुयत्नेन पुत्रञ्च प्राप्नुयात् वैभवान्वित: । शिल्पपटुश्च भार्याणां सुखं प्राप्स्यति भीतिमान् । जीवहिंस्र: मनोकामं
क्षीणं मस्यास्ति निन्दक: । व्यसन्यपि पटुश्चैव व्यवहारे ऽपि दुर्बल: ।। निषिद्ध कर्मणां कर्त्ता असद्भाषण भाषक: । पति
व्रतां सुरूपाश्च प्राप्नुयान्नैक विंशते ।। दैनन्दिने विलासे वा व्ययाधिक्यं भविष्यति । आर्षमार्गस्य क्षीणोऽपि तुष्ट: सर्व-
त्र सम्मत: ।। अन्या: भयञ्च भाग्यस्योदयं विंशाष्ट त्रिंशयो: । अष्टपञ्चाशते चापि पूर्णायुश्च भविष्यति ।। एक
सप्तति वर्षायौ माघस्यैकादशौ तिथौ । कृष्णपक्षस्य तीर्थैव यस्माद त्रैव मुक्तिवान् ।। यद्यप्यस्य जन्मनस्य कर्मनैतत्

१० गु.	९ सू. बु.	शु. रा. ८	७
११ मं.	१२ श.	६	
चं. १	३	५	
२ के.	४		

दृशं परम् । पूर्व संचिततो पातवे तां गतिं चिन्तितो भवेत् ।। सन्तत्या हरिवंशस्य
पारायणञ्च कारयेत् । सन्तत्यै जीवनस्याष्टं प्रथमे पञ्च त्रिंशतम् ।। सप्तदश त्रि-
पञ्चाशं नवषष्ठिञ्च नैष्टदम् । नीलमं धारयेदेष शनै: व्रतञ्च श्रेयसे ।। प्रत्यंगरेत्य
नुष्ठानं यदि चन्द्रो ऽत्र सम्भवेत् । तृतीये पञ्चमे षष्ठे नवमे द्वादशे ऽथवा ।।
क्रमान्तस्य फलं नूनं उद्यमे नौत्सुक्य संयुतम् । पुत्रवान् धार्मिक: पूर्ण: दीनो अहिंस-
-क स्तथा ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस जन्म कुण्डली का फलादेश कहिए।
भृगुजी बोले - हे जिज्ञासु! इस कुण्डली वाला जातक नीतिज्ञ, धर्मात्मा, सद्बुद्धि, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न, सबका
पालन करने वाला, स्वजनों से कोप पाने वाला, अधिक धनी, मित्रों का हितैषी, सन्तोषी, विनय से रहित,
रोगी, कुल-पालक, वैभवशाली, कारीगरी में निपुण, स्त्रियों से सुख पाने वाला, अल्पकामी, भयभीत,
क्रोधी, हीन-मनोरथ, कलही, जीव-हिंसक, निषिद्धकर्म-कर्त्ता, सबका निन्दक, व्यसनी, व्यवहार-कुशल,
रोगी, दुर्बल [illegible] बातों से रहित होगा। इसका विवाह १९ वर्ष की आयु में पति-

दैनिक जीवन में ठाठ-बाट एवं भोग-विलास में इसका खर्च अधिक बना
परायणा, सुन्दरी कन्या के साथ होगा। किन्तु सर्वत्र सम्मान प्राप्त होगा तथा आत्म-सन्तोष बना रहेगा। अग्नि से भय प्रा-
रहेगा। आमदनी कम रहेगी। आयु की पूर्णावधि ७१ वर्ष है। माघ कृष्णा एकादशी रविवार
-प्त होगा। भाग्योदय २०, ३८ तथा ५८ वें वर्ष में होगा।
को प्रात: काल किसी तीर्थ-स्थान में इसकी मृत्यु होगी, जिसके कारण इसी जन्म में इसे मोक्ष-लाभ होगा। पूर्वजन्म
में यह जातक धर्मात्मा ब्राह्मण था। सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहेगी। सन्तान प्राप्ति के लिए हरिवंशपुरा-
-ण का पारायण करना उचित है। इसके जीवन के १, ८, १७, ३५, ५३ तथा ६४ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानि-
कारक रहेंगे। नीलम धारण करना, शनिवार को व्रत रखना तथा प्रत्यङ्गिरा-विधान का अनुष्ठान करना लाभ-
प्रद एवं अरिष्ट-निवारक रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, पंचम, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव
में हो तो यह जातक क्रमश: उद्यमी और उत्साही, पुत्रवान्, पूर्ण धार्मिक तथा अहिंसक एवं दरिद्र होगा।
इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच।। कुर्वन्त्वस्य सुविस्तारं वर्णनं जीवनस्य वै। अस्यां जातस्य जीवस्य कृपया
परमापित:।। भृगु उवाच।। बान्धवानां हितेच्छु: वै निन्द्यकेशी धनाधिप:। बाल्ये रुग्ण: युवाकाले
धीर: रूपेण भूषित:।। देव ब्राह्मणयोरस्यानुरक्ति: श्रमवान्नपि। नीतिज्ञ: वाहनैर्युक्त: परस्त्रीवर्जित
स्तथा।। धार्मिको निर्मलस्त्रीर्धैरत: स्वार्जित भाग्यवान्। दुर्बलाङ्ग: कदाचिच्च नास्तिकाचारवान्नपि।।
कातरो मायिक: राज्यात् पंच्यमान: कुटुम्बत:। विमतो धनलाभाय नैतिकान्यपि कारयेत्।। सुन्दरीं परमां
भार्यां स्वस्थान्चैवं कृशोदरीम्। प्राप्स्यत्येषहि वर्षीयौ द्वाविंशस्य च सन्ततौ।। पञ्चपुत्राश्च तेष्वस्य योग्यौ द्वौ
कुलदीपकौ। सेवकावपि तावेव विरोधपरीञ्च जेष्यति।। धनाभावञ्च वृद्धिर्वा कर्मणैव भविष्यति। नैकष-
-ष्ठ्यन्मयुर्लिङ्गे निरूपञ्चाशते ऽपि च।। भाग्यत्यस्योदयं भाग्यं वर्षे द्वासीति संख्यके। योगश्चास्यास्ति

मृत्योर्वा बाढ शुक्ल त्रयोदशौ ॥ तीर्थे भगवतोध्यानात् पुनर्जन्म न विद्यते । द्वितीयं सप्तमं वर्षं त्रयोत्रिंश त्रिषष्ठिकम् । नव त्रिंशैक पञ्चाशं द्विसप्तत्येक षष्ठिकम् । अपमृत्युकरं तद्वत् वेदविद् ब्राह्मणः पुरा ॥ आसीच्च पुरवराजं वै धार येद्दि गुरोः व्रतम् । गुरुशाप विमुक्त्यार्थं अनुष्ठानञ्च कारयेत् ॥ चन्द्रमा अत्र लग्ने वा चतुर्थे सप्तमे तथा । दशमेस्था त्तदा भूयात् सुरूपः पत्निनां प्रियः ॥ सुखी प्रदर रोगिण्याः पतिर्वौर्बधि शुक्लयोः । विक्रेता राजमान्योऽपि स्वभा- वेण गतोप्यसौ ॥ निर्माणं कारयेदेष धार्मिकस्य स्थलस्य वै । जीवने कुत्रचिन्नूनं इत्येव ग्रह दर्शनम् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे पिता ! अब इस कुण्डली का फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे पुत्र ! सुनो, इस कुण्डलीवाला जातक सत्यवादी, निन्दित केशोंवाला, बान्धवों का हितैषी, देवता, एवं ब्राह्मणों का भक्त, बाल्यावस्था में रोगी, युवावस्था में धैर्यवान्, बहुत धनी, दीर्घायु, स्वरूपवान्, राजतुल्य, स्त्रीयुक्त, क्रोधी, धन-धान्य सम्पन्न, उद्यमी, वाहनादि से युक्त, नीतिज्ञ, पर-स्त्रियों से दूर रहने वाला, धर्मात्मा, तीर्थ-प्रेमी, निर्मल शरीर वाला, सुखी, पवित्र, अपने बाहुबल से भाग्यशाली, उत्साही, छोटे क़द वाला, दुर्बल अङ्गों वाला, कायर, मायावी, राज्य से धोखा पाने वाला तथा कुटुम्ब का विरोधी होगा । यह कभी - कभी नास्तिकों जैसे काम भी करेगा । धन-प्राप्ति के लिए अनै- तिक कार्य करने में भी इसे संकोच न होगा । इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में परमसुन्दरी, कृशोदरी, पीतस्तनी, स्वस्थ एवं कर्तव्यपरायण कन्या के साथ होगा । सन्तानों में ४ पुत्र होंगे, जिनमें से दो बहुत सुयोग्य एवं कुल-दीपक होने के साथ ही पिता की सेवा भी करेंगे । शत्रु, विरोधियों तथा विवादों आदि में विजय मिलती रहेगी । जब कभी व्यवसाय में भी उतार - चढ़ाव आते रहेंगे । भाग्योदय २८, ४८ तथा ५९ वर्ष की आयु में होगा । स्वभाव में परोपकारिता की भावना कम रहने पर भी इसके द्वारा किसी धार्मिक - स्थल का निर्माण

(कुण्डली)

१० गु. | ९ सू. बु. शु. | ८ रा.
११ मं. | | ७
१२ श. | | ६ चं.
१ | ३ | ५
२ के. | | ४

होना सम्भव है। इसकी पूर्णायु ८२ वर्ष है। आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी सोमवार को प्रातः काल किसी तीर्थ-क्षेत्रमें अथवा भगवद्-चिन्तन करते समय मृत्यु होना सम्भव है। इसी कारण इसे पुनर्जन्म नहीं लेना होगा। पूर्वजन्म में यह जातक वेदवेत्ता ब्राह्मण था। इसके जीवन के २, ७, १७, ३३, ३८, ४१, ६१, ६३ तथा ७२ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिप्रद रहेंगे। पुखराज धारण करने, गुरुवार को व्रत रखने तथा गुरु शाप-विमोचन अनुष्ठान करना लाभप्रद रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा स्त्रियों का प्रिय, पूर्णकुटुम्बी और सुखी, उदररोगिणी स्त्री का पति और श्वेत वस्तु अथवा औषधियों का व्यवसायी तथा राजमान्य अथवा राजबन्धन युक्त होगा॥ इति शुभम्॥

११ मं. | ९ बु. | १२ श. | १० सू. गु. शु. | ८ रा. | १ | ७ | २ के. | ४ | ६ | ३ | ५ चं.

ॐ शुक्र उवाच॥ जीवनस्य फलादेशं वर्णयतां तस्य प्राणिनः। जातोयोऽस्मिन् ग्रहक्षेत्रे विस्तारेण हि मे पितः॥ भृगु उवाच॥ लुब्धकः कर्मशीलश्च बहुसन्ततिवान् भवेत्। होमकर्म करोत्येष आलस्येन युतो मृदुः॥ दानेशीलेन संयुक्तः मानी पूतोऽपि वामनः। नृत्यगीत रुचिरस्य नृपादप्यधिको मतः॥ वार्द्धक्ये रुग्णतापन्नः स्त्रीवान् देवपूजकः। पण्डितः क्रोधयुक्तोऽपि रत्नवाहन संयुतम्॥ मन्दिरञ्चास्य नीत्यां वै गुणेष्वपि पटुस्तथा। वान्धवा अङ्गहीनास्युः धार्मिकः फलभाक् नृपात्॥ व्ययस्यैश्वर्य भोगेषु वैरिणः प्रबलाः सदा। परं प्रत्यक्षरूपेण निष्क्रियास्ते त्रयः सुताः॥ सेवकाः नैक विंशो वै भार्यां प्राप्स्यति सुन्दरीम्। यस्याः वै कर्मणा सौख्यं चिरं प्राप्स्यति निश्चितम्॥ भाग्योदये बहून्य स्य व्यवधानानि जीवने। अष्टाविंशं त्रिपञ्चाशं द्विचत्वारिंश संख्यकम्॥ भाग्योदयापवर्तन्ते स्वभावे क्रोध उग्रता। विवेक शान्त्यपि स्यातां गुह्यैः स्वकर्म साधकः॥ अमावास्याञ्च माघस्याब्दे सप्त षष्ठि संख्यके। वीय [illegible] ह्यज्ञे [illegible] ष्टिके॥ आदौ वर्षं तृतीयञ्च दशमष्टादशेऽपि च। त्रयोत्रिंशके

षष्ठिञ्च त्रिन पञ्चाशतात्मकम् ॥ जीवने घातकं ह्यास्मै ब्राह्मणः पूर्वजन्मनः । शूद्रो योन्यो प्रविष्टश्च सप्त-
-म्याः व्रतमाचरेत् ॥ उच्छिष्ट गणपत्युश्च प्रयोगः धारणं शुभम् । पुखराजस्य चन्द्रस्यात् द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे
एकादशेऽपि भूयाद्वै धन विवेक संयुतः । जलाद् भीतः दरिद्रश्च गृहाणामीदृशं फलम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने का अनुग्रह करें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जातक नीच कर्म करने वाला, अधिक सन्ततिवान्, लोभी, आलसी, उद्यमी, तीव्र स्वभाव वाला, सुखभोगी, दानी, शीलवान्, अभिमानी, छोटे कद वाला, पवित्र, नृत्य-गीतादि का अनुरागी, राजा द्वारा पूज्य, वृद्धावस्था में रोगी, देव-पूजक, स्त्रीवान्, पंडित, क्रोधी, वाहन एवं रत्नवान्, गृह युक्त, नीतिज्ञ, पर-स्त्रियों से अलग रहने वाला, धार्मिक, अनुगृहीत, बन्धु युक्त, भोगी, पंचों में प्रमुख तथा ऐश्वर्य एवं ठाठ-बाट में अधिक खर्च करने वाला होगा। विरोधी प्रबल रहेंगे, परन्तु वे इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में परम सुन्दरी एवं धार्मिक स्त्री के साथ होगा, जिसके कर्म-बल पर यह दीर्घकाल तक सुख भोगेगा। भाग्योदय तथा कर्म क्षेत्र में बड़ी-बड़ी बाधाएं आएंगी, फिर भी वर्ष २८, ४२ तथा ५३ में इसका भाग्योदय होगा। स्वभाव में विवेक एवं उग्रता तथा क्रोध एवं शान्ति का मिश्रण रहेगा। यह गुप्त योजनाओं द्वारा अपनी योजनाओं को पूरा करेगा। मृत्यु ६८ वर्ष की आयु में, माघ कृष्णा अमावस्या मंगलवार को सायंकाल, वीर्य दोष के कारण घर में ही होना सम्भव है। इसे अग्नि और विद्युत् से भय रहेगा तथा दाईं जाँघ पर चोट आदि का चिह्न होगा। इसके जीवन के ३, १०, १८, ३३, ४८ तथा ६१वें वर्ष हानिकर रहेंगे। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में शूद्र होगा। सप्तमी का व्रत, पुखराज धारण तथा उच्छिष्ट गणपति का प्रयोग लाभकारी रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, विवेकी, जल से भीत तथा दरिद्री होगा। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ त्रिकालज्ञ किमस्यां स्यो लभते जन्म देहवान् । भविष्यं तस्य मे ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि मूलतः ॥भृगु उवाच ॥ दीर्घकायः पत्निपुत्रैः क्लेशयुक्तः पराक्रमी । वातपित्तरुजापन्नः समो देशान्तरेऽटने ॥ भ्रातृपीडा युतश्चैवं स्वार्जितेनैव संयुतः । धर्मात्मा बुद्धि सम्पन्नः तापसो उपहासकः ॥ सोमयाजी विपद् गङ्गा स्नातो वा वंशदी-पकः । गुणैः मान्यः सुवस्त्रैश्च युक्तः दिव्य शरीरवान् ॥ सुकृतश्च चिराशावान् मुक्तिधाती सुविघ्नवान् । सेर्ष्य म्लेच्छैर्धनापन्नः धूर्त मित्रमनर्थकृत् ॥ स्वमत्यापीडितश्चैवं कर्तव्यवान् अपि कर्मकृत् । कुसंगादात्म कार्येषु साफल्यं प्राप्स्यते तथा ॥ नष्टापत्यैक विंशेन शोभना धर्म से रता । मिलिष्यत्यात्मनाधिक्यं परं द्वावेव जीवितौ ॥

मे० श० १२	११	१० सू० गु० शु०	बु० ९	८ रा०
१	७	४	६	५
२ के०	३ चं०			

द्वाविंशतैक षष्ठ्याञ्च नैक पञ्चाशतेऽपि च । भाग्यं यावद्पञ्चास्या वादस्य शुक्ल द्वादशी ॥ सप्तषष्ठितमे वर्षे आयोरवधिरन्तिमा । जीवनस्य चतुर्थञ्च स-प्तमैकादशे तथा ॥ चतुर्दशं त्रिषष्ठिञ्च द्विपञ्चाशतं क्वचित् । सप्तविंशञ्च नेष्टाय आसीद्विप्र पुरा परम् ॥ भविता प्रेत योन्याञ्च मूंगा पन्नक धारणम् । मङ्गला चण्डिका पूजा भौम व्रतञ्च श्रेयसे ॥ यदि चन्द्रोऽत्र षष्ठे वा तृतीये द्वादशेऽथवा । नवमे चेत्तदा भूयात् स्वस्थो रुची च धार्मिकः ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फला-देश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले – हे पुत्र ! सुनो, यह जातक लम्बे शरीरवाला, स्त्री-पुत्रादि से क्लेश पाने वाला, वातपित्त रोग से पीड़ित, देशान्तरों में भ्रमण करने वाला, पराक्रमी, स्वभुजोपार्जित धन से सम्पन्न, धर्मात्मा, बुद्धि सम्पन्न, तपस्वी, उपहास युक्त, सोमयज्ञ अथवा गङ्गा-स्नान करने वाला, कुल दीपक, गुणी, सम्मानित, सुवस्त्रवान्, दिव्य शरीरवाला, पुण्यात्मा, आशावादी, मुक्ति-उपासक, विघ्न पाने वाला, ईर्ष्यालु, म्लेच्छों से धन पाने वाला, अभिमानी, धूर्तों का मित्र, अनर्थकर्त्ता, धनापहारी,

स्वबुद्धि से पीड़ित, कर्तव्यवान्, कर्मशील एवं कुसङ्गति से अपने काम में असफलता पाने वाला होगा। इसको २१ वर्ष की आयु में सुन्दर, धार्मिक विचारों वाली तथा नष्ट-सन्तति वाली पत्नी प्राप्त होगी। वह उदर-पीड़िता भी होगी। सन्तानें बहुत होंगी, परन्तु केवल दो सन्तानें ही जीवित बचेंगी। भाग्योदय ३२, ४५ तथा ६१ वें वर्ष में होगा। इसकी मृत्यु आषाढ़ शुक्ला द्वादशी शनिवार को हृदय-रोग के कारण, ६८ वर्ष की आयु में घर पर ही होना संभव है। इसे ४, ८, ११, १४, २८, ४८ तथा ६३ वें वर्ष हानिप्रद रहेंगे। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में प्रेत योनि को प्राप्त करेगा। मूँगा तथा पन्ना धारण करने, मंगलवार का व्रत रखने तथा मङ्गलचण्डी का पूजन करने से लाभ होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी, नीरोग तथा जल से भय पाने वाला, धार्मिक एवं अधिक खर्चीला होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
११	
१०	सू. बु. गु. शु.
९	
१२	मं. श.
८	रा.
१	
७	चं.
२	के.
४	
६	
३	
५	

ॐ शुक्र उवाच॥ कथं यास्यति जीवस्य जीवनं तस्य यो लभेत्। अस्यां च जन्मकुण्डल्यां भाषस्व विस्तृतं पितः॥ भृगु उवाच॥ वत्स यो जायतेऽस्यां वै बहुसन्ततिवान् तथा। आलस्येन युतो लुब्धः कुटुम्बेन मतान्तरम्॥ दुर्मतिर्व्यसनैर्युक्तः निर्दयो भयदं वपुः। बुद्धिहीनोऽरि भीतश्च बहुरापत्तिवानपि॥ बलहीनोऽल्पकामी च पर कार्यं करोति वै। चिन्तितः वृद्धपारक्त गुणग्राही कविप्रियः॥ प्रगल्भः कातरश्चौरः मायावी च भयान्वितः। यात्रायां सहसा पातात् पयसश्च विवाहितः॥ सुन्दर्यां चैकविंशे स्यात् मित्रवंशस्य कन्यया। सन्तता वपि बाधिवार्ते दुष्टेऽस्य भविष्यतः। विलोक्य वृद्धपा वेति सम्बन्धात् पृथक् स्थास्यति पत्नितः॥ सन्तता वपि बाधिवार्ते ... पैतृकस्यास्त्य भावोऽस्मै परं स्वार्जित पुष्यतः। धनवान् कृपणो भूः पितृ कार्याणि संतापयिष्यतः स्वयम्॥ पैतृकस्यास्त्य भावोऽस्मै ... द्विनपञ्चाशते वर्षे चतुः त्रिंशेऽपि वैरिणः। प्रबला: भाग्यवृद्धै च -पात् स्वल्पवयस्योऽयं भवेत्॥

विघ्नाति क्लेश संयुतम् ।। जीवनञ्चास्य सामान्यं पञ्चषष्ठितमे भवेत् । वर्षे चैत्रकृष्ण षष्ठ्यां मधुमेहेन जीवने
चतुर्थे नवमं पञ्च विंशाष्ट त्रिंशते तथा । द्वापञ्चाशैक षष्ठ्यारवेः सर्पदंशाप मृत्यवे ।। नीलमं पुखराजञ्च धारये-
च्छनि पूजनम् । शनेः व्रतञ्च सिद्ध्यर्थं चाण्डालः पूर्व जन्मनः ।। चाण्डाल एव भूयाच्च यत्र चन्द्रमाः भवेत् ।
चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमेतु भविष्यति ।। शोभनः स्त्रीप्रिय श्चैवं परिवारेण पूरितः । स्त्रीलम्पटो विवेकी च
सुकर्म कारको भवेत् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें।
यह सुनकर भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक अधिक सन्ततिवान्, लोभी, आलसी, भ्रमणशील, कुटुम्बियों का वि-
रोधी, धनेच्छुक, व्यसनी, दुष्ट-बुद्धि, दयाहीन, विकराल शरीरवाला, अनेक प्रकार की विपत्तियों से घिरा हुआ,
बुद्धिहीन, शत्रु से भयभीत, बलहीन, अल्पकामी, पर-कार्य-कर्त्ता, क्रोधी, वृद्धा-स्त्री-भोगी, चिन्तातुर, कवि-
-यों का प्रेमी, एकान्तवासी, विनयी, व्यवहार-कुशल, रोगी, पापी, उपकारी, धनी, चाण्डाल-कर्म करनेवाला,
प्रगल्भ, चोर, कायर तथा मायावी होगा। यात्रा में इसे जल तथा आकस्मिक संकटों का भय रहेगा। इसका
विवाह 21 वर्ष की आयु में अपने मित्र अथवा मित्रवंश की सुन्दरी कन्या के साथ होगा। अथवा स्वकुटुम्ब की
किसी वृद्धा-स्त्री से अवांछनीय-प्रेम सम्बन्ध रखने के कारण यह अपनी पत्नी से अलग-सा रहेगा। इसके
केवल दो सन्तानें होंगी, जो अत्यधिक दुष्ट होंगी तथा इसके कुकृत्यों पर आगे चलकर इसे स्वयं ही सताएंगी।
पैतृक-धन का अभाव रहेगा, परन्तु यह स्वोपार्जित एवं कृपणता से संचित धन के द्वारा धनी होगा। इसका
भाग्योदय ३४ तथा ४८ वें वर्ष में होगा। विरोधी प्रबल रहेंगे। भाग्योदय में अनेक विघ्न भी आएंगे। सा-
-मान्यतः जीवन क्लेशपूर्ण बना रहेगा। इसकी मृत्यु ६५ वर्ष की आयु में चैत्रकृष्णा षष्ठी रविवार को सायं-
काल घर में ही अथवा परदेश में, मधुमेह रोग के कारण होना सम्भव है। इसके जीवन के ४, ९, 13,

२५, ३८, ५२ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु, सर्पदंश एवं हानिकारक रहेंगे। पुखराज तथा नीलम धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा शनिदेव का पूजन करने से अरिष्ट दूर होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में चाण्डाल था तथा अगले जन्म में भी चाण्डाल ही होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम और दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः विवेकी और सुन्दर, पूर्णकुटुम्बी, स्त्रीजनों का प्रिय और स्त्री-लम्पट तथा सुवेषी और उत्तम कर्मनिष्ठ होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्ण्यतां तात जीवस्य अस्यां जातस्य जीवनम्। इति शुक्र वचः श्रुत्वा भृगुणोक्तं तदुत्तरम्। भृगु उवाच॥ मित्रैः परिवृतः बुद्ध्या स्थिरोऽन्य पत्नि कामुकः। सौख्यवान् कोमलाङ्गश्च धनेशो राज्य सेवकः। गुणज्ञः भोग क्षीणश्च दुर्बलः स्त्री मनोहरः। चपलो जाति वर्गस्य पोषकः परवित्त धीः॥ चलेन्द्रियश्चलाबुद्धिरस्य चण्ड सुखे रतः। महतां हितचिन्ताऽस्मै स्वार्जितेन धनाधिपः। वाचलो वाहनैर्युक्तः गुणवान् धर्म नीतिवान्। यान्त्रिको दर्शनीयश्च वामनो जीव हिंसुकः॥ मद्यपी निन्दनीयश्च मतः मातुः विरोधवान्। बहिःप्रतिष्ठितश्चैवं आयादु व्ययो ऽस्य वैभवे॥ सन्तत्या चिन्तितोऽप्येष योग्यश्चैकोऽपि पुत्रकः। पञ्चानाञ्च भयानां वा प्राप्तिरस्मै च प्राप्स्यति॥ सुन्दरी कलहा पत्नीं भयो विंशे व पत्निकम्। प्रबलावैरिणोऽप्यस्य प्रत्यक्षं नैव घातकाः॥ आषाढ शुक्लस्याष्टम्यां नैक सप्तति संख्यके। एक सप्तति संख्यायां माघस्य दशमी तिथौ। कृष्ण स्यो बधि योगस्य व्यत्ययेन भविष्यति। तृतीयमष्टविंशञ्च षष्ठ त्रिषष्ठि संख्यके॥ त्रिपञ्चाशाष्ट षष्ठ्याख्ये अग्नि भीत्यैच घातकम्। द्वेन पञ्चाशतं वर्षं षड्पञ्चाशत संख्यकम्॥ अष्ट विंशञ्च वृद्ध्यर्थं भाग्यस्यास्य विनिश्चितम्। गुरु गृहानुष्ठानञ्च श्रेयसे ऽभ्युदयाय वै। द्वितीये पञ्चमे स्थाने अष्टमैकादशे ऽथवा। भवे चेत् श्रमशीलश्च

- १
- १२ श॰ मं॰
- ११ सू॰ शु॰
- १० बु॰ गु॰
- ९
- २ के॰
- ८ रा॰
- ३ चं॰
- ५
- ७
- ४
- ६

भृ० सं० ६८३

भा० टी०

पुत्रवान् जलभीतियुत् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! अब इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए। भृगु जी बोले-हे पुत्र! सुनो, यह जातक अनेक मित्रों से युक्त, स्थिर चित्त, पर-स्त्री-रत, कोमलाङ्ग, अत्यन्त सुखी, महाधनी, राज्य-कर्मचारी, भोग-हीन, गुणज्ञ, दुर्बलशरीरवाला, स्त्री-मोहक, चपल, सजातीयों को प्रसन्नतादायक, परधनेच्छुक, चंचल इन्द्रियों वाला, बुद्धिमान्, कर्मकर्त्ता, श्रेष्ठजनों का हितैषी, स्वभुजोपार्जित धन का स्वामी, वाहनादि से युक्त, वाचाल, नीतिज्ञ, धार्मिक, गुणी, धार्मिक, सुन्दर, हास्य-वदन, ठिंगने कद वाला, सुदर्शन, जीव-हिंसक, मद्यपी, अहंकारी, मातृ-विरोधी तथा व्यग्र चित्तवाला होगा। बाह्य-जगत् में इसकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी। ऐश्वर्य एवं भोग में अधिक खर्च करेगा तथा घर-बार से रहेगा। सन्तान की ओर से विशेष चिन्ता रहेगी। कठिनाई से केवल एक योग्य तथा सुपात्र सन्तान होगी अथवा पाँच या तीन पुत्र होंगे। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में परम सुन्दरी परन्तु कलह-कारिणी स्त्री के साथ होगा। शत्रु तथा विरोधी प्रबल रहेंगे, परन्तु इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। इसकी मृत्यु ६९ अथवा ७१ वर्ष की आयु में आषाढ़ शुक्ला अष्टमी रविवार को अथवा माघ कृष्णा दशमी मंगलवार को औषध-प्रयोग में व्यतिक्रम द्वारा घर में ही होना सम्भव है। इसके जीवन के ३, ६, २८, २३, ६३ तथा ६८ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अग्निभय के अथवा हानिप्रद रहेंगे। भाग्योदय २६, ४८ तथा ५६ वें वर्ष में होगा, यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में शूद्र कुल में उत्पन्न होगा अथवा म्लेच्छ योनिप्राप्त करेगा। मंगलवार का व्रत रखने, पुखराज धारण करने तथा गुरु ग्रह का पूजनानुष्ठान करते रहने से संकट दूर होंगे तथा मनोभिलाषाओं की पूर्ति होगी। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी, जल से हानि पाने वाला, पुत्रवान् तथा उद्यमी और धनी होगा। इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ वर्णनं क्रियतां तस्य यो ऽस्मिन् जातो ऽस्ति मण्डले । ग्रहाणां कृपया तात विस्तारेण ममाग्रतः ॥ भृगु उवाच ॥ दुर्नीति शठो भूपात् धनाधीशो ऽपि निर्दयः । दुर्मतिः वत्स जातो ऽस्यां कुण्डल्यां विकलाङ्गवान् ॥ व्यसनी मित्रहीनश्च मलिनाम्बर धारकः । यात्रा लाभश्च युक्त्यापि हीनश्च विपदां कुलम् ॥ धर्मात्पराक्रमाद्हीनः शत्रुत्रस्तश्च कामुकः । भयक्रोध समापन्नः परेषां कार्यकारकः ॥ अमनोरथ शीलो ऽयं व्यवहार विशारदः । परोपकार कर्त्ता च सुन्दरीणामुपासकः ॥ प्रवासी पितृवित्तस्य नाशकः व्यग्रभाववान् । परभार्यारतश्चैव मृत्युयोगो ऽस्ति चैकधा ॥ विवाहो ऽसम्भवो ऽप्यस्य द्वाविंशे वा भविष्यति । पुत्र त्रयं तथा सद्य वियोगो ऽस्मै स्त्रियो भवेत् ॥

शु. मं. 12	11 सू. बु. शु.	गु. 10
चं. 1		9
2 के		8 रा.
3	5	7
4		6

सन्ततिरेक एवैनं सेविष्यत्यस्य वैरिणः । प्रभावेन हताः स्युश्च धार्मिके कुत्सिते ऽथवा ॥ द्रव्यं यात्वस्य भाग्यस्योदयं स्यादष्ट त्रिंशते । षष्ठ पञ्चाशते तद्वत् अष्ट पञ्चाशते ऽपि च ॥ अग्नि शस्त्र प्रहाराम्भोक सपाति संख्यके । द्वादशांशे-षष्ठ कृष्णस्य प्राणान् त्यक्षति निश्चितम् ॥ द्वितीयं षष्ठ त्रिंविंशे दशमञ्च नवत्रिंश-तम् । अष्ट पञ्चाशतं तद्वत् नवषष्ठिञ्च नेष्टदम् ॥ जीवते पूर्व योन्यान्च वैश्यः कीटश्च भाविवि । रुद्रस्यैव व्रतं कुर्यात् माणिक्यं धारयेत् तथा ॥ आदित्य स्यार्चनं तद्वत् श्रेयसे परमं यदि । चन्द्रो ऽत्र नवमे षष्ठे तृतीये द्वादशे ऽथवा ॥ भवेच्च सरलः स्वस्थः सामान्यश्च स्वभावतः । धार्मिको भाग्य सम्पन्नः सुतीर्थेष्वटने प्रियः ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले – हे तात ! यह जातक महाधनी, अत्यन्त शठ, दुर्भावना युक्त, मित्र-विहीन, मलिनवेषी, दयाहीन, सुखी, व्यसनी, दुष्ट-बुद्धि, विकल-शरीर, यात्रा से लाभ पाने वाला, अनेक विपत्तियों से घिरा रहने वाला, गृह कलह कर्त्ता, अहंकारी, पराक्रमहीन, धर्महीन, शत्रुओं से दुःखी, पराया काम करने वाला,

कामी, भयभुक्त, क्रोधी, मनोरथहीन, सामान्य वस्त्राभूषण युक्त, आलसी, व्यवहार-कुशल, गुणग्राही, उपकार करने वाला, सुन्दर-स्त्री-भोगी, मित्र-सुख एवं मातृ-सुख से वञ्चित, पितृधन-नाशक, घर के बाहर रहने वाला, उग्र स्वभाव एवं अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होगा। एक स्त्री के द्वारा इसे प्राण-हानि की सम्भावना भी रहेगी। इसका विवाह होना प्रथम तो असम्भव ही है, यदि हुआ भी तो २२ वर्ष की आयु में होगा तथा तीन पुत्रों को जन्म देने के बाद इसकी स्त्री की मृत्यु हो जाएगी। केवल एक सन्तान ही इसकी सेवा करेगी। इसके विरोधी इससे सदैव दबे रहेंगे। इसका धन धार्मिक कृत्यों में व्यय होगा अथवा फिर खोटे कामों में खर्च होगा। भाग्योदय ३८, ४४ तथा ५८वें वर्ष में होगा। इसकी मृत्यु ७१ वर्ष की आयु में ज्येष्ठमास के कृष्णपक्ष की द्वादशी तिथि, रविवार को प्रातःकाल शस्त्र-प्रहार अथवा अग्नि-प्रकोप से होना सम्भव है। इसके जीवन के २, ६, १०, २३, ३७, ५८ तथा ६९वें वर्ष नेष्ट तथा अपमृत्युकारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में कीट-योनि में उत्पन्न होगा। बुधवार का व्रत, सूर्यदेव का पूजनानुष्ठान एवं माणिक्य धारण ये सब मनोरथदायक, लाभकारी तथा अरिष्ट-निवारक सिद्ध होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः सरल तथा सामान्य स्वभाव वाला, नीरोग, परमधार्मिक तथा भाग्यवान् एवं उत्तम तीर्थयात्री होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ सर्वज्ञ उच्यतां तस्य फलादेशं हि जायते। कुण्डल्यामत्र यो सच्च विस्तृतं भावितं त्वदा॥ भृगु उवाच॥ भोगक्षीणो धनाधीशः गुणज्ञो राजसेवकः। चलामूर्तिः स्त्रियाणाञ्च मोहकः दुर्बलं वपुः॥ शठो दुर्भावना युक्तः अमित्रं मलिनाम्बरः। निर्दयं बाल्यकाले च उदर दन्त पीड़ितः॥ पापात्मा कृष्णवर्णश्च निन्दको नीच सङ्गतः। साहसिकः कुदेही च वामनो जानु पीड़ितः॥ परस्त्री द्रव्य कामी वै कृतघ्नो दानवान्नपि। ब्रजभक्तश्च देवानां पूजको रोगसंयुतः॥ कातरः मातुजिज्जीव हिंसकश्चान्तनाशकः। विम-

-तोऽस्य कुटुम्बेन महच्चौरोऽपि संभवेत् । प्रभावो व्यापकश्चास्य धनमपि परं नहि । यो क्तातस्य विवाहश्चा-स्यादपि श्रेष्ठया सह ॥ विंशवर्षे भवेन्नूनं भाग्यं च सप्तविंशते । द्विनपञ्चाशतेऽप्यस्यैवादयं यास्यति सून-वः ॥ अस्मादपि धनाढ्याश्च योग्याश्च प्रथमस्य वै । सुतस्यमरणात्कष्टं महदस्मै भविष्यति ॥ निष्प्रभाः वैरिणः किन्तु राजबन्धन्व वर्तते । योगी परं दण्डभागं मोक्ष्यतोऽथ गृहाद् वहिः ॥ वैशाख शुक्ल द्वादश्यांवर्षेऽष्टषष्ठि संख्यके । मृत्युः स्याज्जीवने वर्षे सप्तमं दशमं तथा । तृतीयाष्टादशे चैवं द्विनपञ्चाशतं क्वचित् । त्रिपञ्चाशं त्रिषष्ठिश्चैकत्रिंशं हानिकारकम् ॥ प्रतापी राज्यभ्रष्टश्च क्षत्रियोऽपं पुराऽभवत् । अग्रिमे शुक्रश्चन्द्रः यदि लग्न चतुर्थयोः ॥ सप्तमे दशमे वास्तु शान्तः सौम्यो विवेकवान् । स्त्री-णां प्रियः गृहेभूपः राजबन्धनयौगिकः ॥

- शु· श· बु· १२
- १० गु·
- मं· १
- ११ सू·
- ९
- २ के·
- ८ रा·
- ३
- ५ चं·
- ७
- ४
- ६

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए। भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो, यह जातक धनी, राज्य कर्मचारी, भोग-हीन, गुणाढ्य, दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों को मोहित करने वाला, चपल, जाति-हितैषी, शठ, दुर्भाग्ययुक्त, मित्र विहीन, मलिन वेषी, दया-रहित, सुखी, बाल्यावस्था में उदर एवं दन्त-रोगी, निन्दक, पापी, कृष्णवर्ण, चंचल-चित्त, नीच-संगति में रहने वाला, कुचाल-चालक, राजमान्य, साहसी, सबका सहायक, विकल, पर-स्त्री के न का इच्छुक, व्यसन-रहित, कृतघ्न, ब्राह्मणों का भक्त, देव-पूजक, उत्तम स्त्रियों का प्रेमी, रोगी, कपटी, दानी, सुन्दर शरीर वाला, छोटे कद वाला, जाँघ में कष्ट युक्त, जीव-हिंसक, शत्रुजित्, कायर, अन्न आदि का नाशक तथा कुटुम्ब-विरोधी होगा। आगे चलकर यह डाकू अथवा लुटेरा भी बन सकता है। यह अत्यन्त प्रभावशाली होगा तथा प्रचुर धन संग्रह करेगा, परन्तु उस धन का उपभोग नहीं कर पायेगा। इसका विवाह

२० वर्ष की आयु मे इससे भी अधिक योग्य, शूर-वीर तथा साहसी महिला के साथ होगा। भाग्योदय २७ तथा ४८ वें वर्ष में होगा। इसके पुत्र अधिक धनी तथा योग्य होंगे। पहले पुत्र की मृत्यु का इसे महान् कष्ट होगा। इस के विरोधी सदैव दबे रहेंगे। राज्य-बन्धन का भी योग है, परन्तु सम्भवतः यह दण्ड से बच जाएगा। इसकी मृत्यु अनायास ही घर से बाहर, ६८ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला द्वादशी शनिवार को मध्याह्न कालमे, शस्त्राघात से होना संभव है। जीवन के ३, ७, १०, १८, ३१, ४८, ५२ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक हैं। यह पूर्वजन्म मे राज्यभ्रष्ट प्रतापी क्षत्रिय था, अगले जन्म में शूकर योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा

१ मं.	१२	११	१० गु.
२ के.	सू. बु. शु. श.		
३		९	
४ चं.	६		८ रा.
५		७	

यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो जातक क्रमशः परमशान्त, सुन्दर और विवेकी, पूर्ण कुटुम्बी तथा गृह-भूमि युक्त, स्त्रियों को प्रिय तथा व्यवसायी एवं राज्यबल्लभ पाने वाला तथा कुकर्मी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकाल वर्णनं तस्य क्रियतां तात यो लभेत्। अस्यां वै जन्मकुण्डल्यां विस्तारेण तथा कथन्॥ भृगुउवाच॥ रत्नैः स्वर्णैर्मुक्ताश्च कामे चधुरति दुर्बलः। चिरायाचिन्तितो मूढोऽन्यस्त्री विलासक स्तथा॥ दुर्मनो वत्स भू-यात्स धातु वैकृति संयुतः। कुरूपः ऋणकामी वै प्रवासी धार्मिकः भवेत्॥ क्षमा वान् लुब्धकोऽप्युग्रः कृतघ्नो वाहनैर्युतः। रत्नमन्दिर युक्ताश्च कौटुम्बिकेन चिन्तितः। पञ्चगणपति विद्वान् वामनः पक्षि नाशकः। देवतीर्थानुरागी च शत्रुजित् द्रव्य भोगवान्॥ कापट्ये निरतः वातु पीड़ितः वंश पालकः। विलासिन्यस्य भार्यास्मै चतुर्विंशे मिलिष्यति॥ पैतृकमवाप्य तन्नष्ट्वा पुनः सञ्चय कारकः। न चतुर्भ्यो सुतानां वै संख्या न्यूनं तथापि ते॥ सेवकाः पंडिता श्चैवं वैरिणोऽस्य प्रभाविताः। पृथक् परं कुटुम्ब श्च विरोधे नैव तिष्ठति॥ भाग्यं षट् विंशते वर्षे चतुर्पञ्चाशतेऽपि च। अष्टत्रिंशेऽस्य यास्येच्च वृद्धि

हान्यै च सर्वथा ।। वर्जितं जीवने वर्षे एकादशैक त्रिंशतम् । चतुर्थैकपञ्चाशं अष्टपञ्चाशतं तथा ।। अष्टषष्ठ्यैकसप्तत्यौ शूद्रोऽयं पूर्व जन्मनः । हरिणश्चाग्रिमे जन्मे पुखराजस्य धारणम् ।। गोपूजनं शुभायास्मै शनेः व्रतञ्च तादृशम् । चन्द्रमाः पञ्चमे स्थाने द्वितीये कादशेऽथवा । अष्टमे यदि भूपा है धनवान् मांत्रिको भवेत् । विवेकी सुकृतश्चैव जलाग्नि भीतिवान्नपि ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस कुण्डली का फलादेश कहिए । भृगुजी बोले - हे वत्स ! यह जातक रत्न एवं स्वर्णादि से पूर्ण, कामेच्छु, अत्यन्त दुर्बल, दीर्घकालिक चिन्तित, जड़मति, पर-स्त्री-विलासी, पक्षि-हन्ता, दुष्ट हृदय, कुरूप, धातु-विकारी, परदेशवासी, सदैव ऋण प्राप्ति का इच्छुक, क्षमावान्, कुटुम्ब से दुःखी, लोभी, विवादी, अत्यन्त विकल, परधनेच्छुक, कृतघ्न; वाहन, रत्न, भवन आदि से युक्त, नीतिज्ञ, धार्मिक, रोगी, कपटी, बलहीन, मलीन, प्रमुख पंच, छोटे कद वाला, प्रगल्भ, विद्वान्, गुणी, देवतीर्थानुरागी, कुटुम्ब-पालक, धनभोगी, शत्रुजित, ऐश्वर्यशाली, तेजस्वी, भुजाओं में पीड़ा वाला एवं व्याकुल चित्त वाला होगा, इसकी पत्नी अत्यन्त सुन्दरी तथा विलासिनी होगी । विवाह २४ वर्ष की आयु में होगा । पैतृक-धन प्राप्त होने पर यह उसे नष्ट कर देगा, तत्पश्चात् स्वभुजोपार्जित धन का संचय करेगा । पुत्रों की संख्या ५ से कम नहीं होगी, वे सभी योग्य, पण्डित तथा आज्ञाकारी और इसकी सेवा करने वाले होंगे । शत्रु सदा प्रभावित एवं पराजित बने रहेंगे, परन्तु कुटुम्बियों के विरोध के कारण इसे गृह-हीन होना पड़ेगा । इसका भाग्योदय २६, ३८ तथा ५४ वर्ष की आयु में होगा । मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में कार्तिक कृष्णा चतुर्थी शनिवार को होना संभव है । जीवन के ४, ११, ३१, ४१, ५८, ६८ तथा ७१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे । यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में हरिण योनि को प्राप्त होगा । शनिवार का व्रत, पुखराज धारण एवं गाय का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा अन्य लाभ प्राप्त होंगे । इस कुण्डली में चन्द्रमा

यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनी और यात्री; विवेकी तथा सत्कर्मशील विद्वान् एवं धर्मात्मा; जल अथवा अग्नि से भय पानेवाला तथा शीत रोगी होगा। इति शुभम्।

ॐ शुक्र उवाच ॥ विभो भविष्यमस्यास्ति कुण्डल्यां योऽत्र जायते। कीदृशं विस्तृतं ब्रूहि तदा भृगुस्तामब्रवीत् ॥ भृगुरुवाच ॥ अस्यां जातो जनः तात व्यापार व्यवसाययोः। धनं प्राप्स्यति नित्यैव स्वजनानां हितेच्छुकः ॥ भीतोऽपितैः महत्वञ्च लभते से वया तथा। वञ्चको निन्दको वाचि कटुश्च कुत्सितोऽपि वै ॥ वृकोदरोऽपि पाषाणः दन्तो दरेण पीड़ितः। गृहवाहन युक्तोऽपं मायिको दुर्बलस्तथा ॥ काव्य सङ्गीतयो प्रीतिः प्रणेता राज्य वंचिता। व्यवहार कुशलो जेता शत्रूणां रोगसंयुतः ॥ आद्य सप्तदशे भूयात् त्रयोविंशैव द्वे भार्ये प्राप्नुते वाहे जगत्येव च सम्मतः। हीनसन्तति योगोऽपि चापरः ॥ भाग्योदयेन वर्तन्ते पतिश्च प्रथमा शुभा। शतचण्डी प्रेतशान्तिकम्। नाशमेष्यति सन्ततिः ॥ भाग्योदयस्य वृद्धिश्च सन्तत्यै विधानं वा कारयेत् प्राप्नुयात्तदा ॥ यत्नेन पुत्रमेकं वै रंगेति पुरवराजयोः। धारणञ्च व्रतं कुर्यात् भौमस्य श्रेयसे सदा ॥ वैरिषु जयमाप्नोतु त्रिपञ्चाशाष्टत्रिंशते। त्रिषष्ठिं भाग्य वृद्ध्यर्थं वर्षाण्यन्यानि मृत्यवे ॥ सहसा विष वृद्धया वा शस्त्रघातेन फाल्गुने। चतुःसप्तति वर्षायौ वर्तते कृष्ण सप्तमी ॥ शूद्र कर्मा क्षत्रियोऽपं पूर्व भाविनि मर्कटः द्वितीयं द्वादशं वर्षं द्वाविंशमेक सप्ततिम् ॥ त्रिषष्ठिं द्विनपञ्चाशं जीवने घातकानिवै, यस्यास्य चन्द्रमास्तिष्ठेत् तृतीय षष्ठयो स्तथा ॥ नवमे द्वादशे क्रमशो धार्मिकः श्रमवान् भवेत्। स्वस्थो भाग्येन हीनश्च वैभवे व्यय साधकः ॥

मं. बु. सु. १	१२	११ गु.
२ के.	सू. श.	१०
३		९
४	६	८ रा.
५ चं.		७

[illegible] इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें।

भृ० सं० ६२०

भा० टी०

भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जातक व्यापार-व्यवसाय द्वारा अधिक धनी, सुखी, स्वजनों का काम करने वाला तथा उनसे भयभीत भी रहने वाला, राज्य द्वारा धन, मान तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, स्वाभिमानी, कपटी, निन्दक, खोटे तथा कटुवाक्य बोलने वाला, अधिक भोजन करने वाला, लम्बोदर, दाँत और उदर संबंधी पीड़ा से युक्त, साहसी, निर्दय, कठोर, शत्रुजयी, रोगी, गृह-वाहनादि से सम्पन्न, वैभवशाली, मायावी, दुर्बल, राज्य से धोखा पाने वाला अथवा राजदण्ड प्राप्तकर्त्ता, काव्य-सर्जक अथवा काव्य-सङ्गीत-प्रेमी, व्यवहार-कुशल, द्विभार्या योगवाला तथा वाह्य-जगत् में सम्मान पाने वाला होगा। इसका पहला विवाह १८ वर्ष तथा दूसरा विवाह २३ वर्ष की आयु में होगा। तभी भाग्योदय भी होगा। स्त्री पहली तथा ससुराल दूसरी अच्छी मिलेगी। सन्तान-हीन होने का योग भी है। कई सन्तानें नष्ट होंगी। भाग्यवृद्धि विशेष होगी। धन का पूर्णसुख रहेगा। सन्तान-प्राप्ति के लिए शतचण्डी विधान अथवा प्रेत-शान्ति प्रयोग करना आवश्यक है। बड़ी कठिनाई से एक सुयोग्य पुत्र प्राप्त होगा। पुखराज तथा मूँगा धारण करने, मंगलवार का व्रत रखने तथा मंगलग्रह का पूजन-अनुष्ठानादि करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। विरोधियों पर सदैव सफलता मिलती रहेगी। भाग्योदय के अन्य वर्ष ३८, ५३ तथा ६३ भी होंगे। मृत्यु अनायास ही होगी। शस्त्राघात के विषवर्द्धन के कारण ७४ वर्ष की आयु में फाल्गुन कृष्ण सप्तमी रविवार को मध्याह्न काल में मृत्यु होना सम्भव है। यह जातक पूर्वजन्म में उग्रकर्मा क्षत्रिय था। इसने क्षुद्रवत् आचरण किया था। अगले जन्म में इसे मर्कट-योनि प्राप्त होगी। इसके जीवन के २, १२, २२, ४८, ६३ तथा ७१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः परमधार्मिक तथा उद्यमी, सुन्दरस्वरूप, भाग्यहीन एवं दरिद्री-कुकर्मी तथा वैभव-विलास में अधिक धन खर्च करने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां जातस्य कुण्डल्यां फलादेश सुवर्ण्यताम्। भविष्यस्य पितः मत्स्यं तदा भृगु प्रबोधयत्॥ भृगु उवाच॥ साहसिकोऽत्र जातो वै रक्तरुग्णञ्च पैत्रिकः। विकृतिवान् हितेच्छुश्च बुद्धिमान् मानसंयुतः॥ धनवान् शोभनः क्रुद्धः बन्धुनष्टा धराधीतः। पराक्रमयुतः राज्ये सम्मतश्चलनिर्दयी॥ चिन्त्यपदार्थयुक्तश्च ऋणवान् कृपणोऽधिकम्। अति दन्तोदरत्रस्तः कृपणो वाहनाधिपः॥ काव्यकारोऽरिहीनश्च गुणहृः उपकारकः। वहुप्राप्नोति हानिञ्च वातरुग्णश्च नाशकः॥ धान्यस्य च कुटुम्बेन वैरः पत्न्याः हि चिन्तितः। औषध्या जीविता सास्यात् राज्ये उच्चोऽपि योगवान्॥ पदभ्रष्टश्च ग्रामेशः षडविंशे विवाहितः।

कुण्डली:
- १: सू. मं. शु. बु.
- २: के.
- ३
- ४: चं.
- ५
- ६
- ७
- ८: रा.
- ९
- १०
- ११: गु.
- १२: श.

सुन्दर्याऽरि विवादाभ्यां जयं प्राप्स्यति निश्चितम्॥ भाग्योदयं भवेत् पञ्चचत्वारिंशत संख्यके। नवविंशे त्रयोत्रिंशे सन्तत्या योग उत्तमः॥ आज्ञानुवर्तिनो पुत्राः पञ्चस्युः द्वौहि सेवकौ। विसूचिकोदराभ्यां वा वर्षेऽष्ट षष्ठि संख्यके॥ आषाढस्य द्वितीयायां शुक्लस्य यान्वितः ध्रुवम्। स्त्रियाहि धार्मिकं कुर्यात् जीवने प्रथमं तथा॥ त्रिपञ्चाशत्तब्दे च अष्टादशैक षष्ठिके। चतुःत्रिंशाब्दमृत्युं वै ब्राह्मणः पूर्वजन्मनः॥ ब्राह्मण एव भूयाच्च लक्ष्मुनेति च रत्नकम्। धार्येच्च पयोधस्य व्रतं शिवाय जीवने॥ चन्द्रोऽस्य सप्तमे लग्ने चतुर्थैकादशे यदि। स्याचेद् भवेदसौ सौम्यः स्त्रीप्रियश्च कुटुम्बवान्॥ वणिजः गृह भूपश्च राज्ये सम्मानितः सदा। विक्रेता शुभवस्तूनां तेनैव लाभसंयुतः॥

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहें। यह सुनकर भृगुजी बोले- हे पुत्र। यह जातक साहस-कर्म-कर्त्ता, रक्तरोग-रोगी, पित्त-विकारी, भूपति, सबका हितैषी, बुद्धिमान्, साहसी, सम्मानित, धनी, सुन्दर, क्रोधी, बन्धु-नाशक, पराक्रमी, राज्यद्वारा

सम्मानित, चंचल चित्तवाला, बहुभोजी, कलहप्रिय, निर्दय, ऋणी, चिन्तित, पदार्थवान्, रोगी, कृपण, निन्दक, दन्त व उदर रोगी, वाहनादि से युक्त, ग्रामाधिपति, सर्वत्र सम्मानित, कवि, शत्रुहीन, व्यवहार-कुशल, गुणग्राही, उपकारी, वैभववान्, वायुरोगी, अनेक बार हानि उठाने वाला, धान्य-नाशक तथा कुटुम्ब-विरोधी होगा। स्त्री के सम्बन्ध में सदैव चिन्तित बना रहेगा। औषध के बल पर ही इसकी स्त्री जीवित रह पायेगी। राज्य में उच्चपद अथवा सम्मान प्राप्त होगा, परन्तु राजकर्मचारी-पद से भ्रष्ट होने का योग भी है। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में सुन्दरी स्त्री के साथ होगा। शत्रु पर और मुकद्दमों में सदैव विजयी होगा। भाग्योदय २८, ३३ तथा ४५ वें वर्ष में होगा। सन्तान योग उत्तम है। पाँच सन्तानें योग्य तथा आज्ञानुवर्तिनी होंगी, उनमें दो पुत्र समीप रहकर सेवा करेंगे। ६८ वर्ष की आयु में उदरशूल अथवा विशूचिका रोग के कारण, अपने ही घर में, आषाढ़ शुक्ला द्वितीया सोमवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में इसकी मृत्यु होना सम्भव है। स्त्री के सहयोग से धार्मिक-कृत्य सम्पादित होंगे। इसके जीवन के १, ६, १८, ३४, ५३ तथा ६१ वें वर्ष अरिष्ट एवं हानिकारक होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण ही होगा। लहसुनियाँ धारण करने, प्रदोष व्रत एवं भगवान् शंकर का पूजन करना लाभप्रद तथा अरिष्ट-नाशक सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः अत्यन्त सुन्दर तथा स्त्री-प्रेमी, पूर्ण कुटुम्बी एवं गृह-भूमि का स्वामी, कुशल-व्यापारी तथा श्वेत-वस्तु के क्रय-विक्रय से लाभ प्राप्त करने वाला एवं राज्य में सम्मान प्राप्त करने वाला होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ भण्यते भाविनं तात अस्यां जातस्य देहिनः। तच्छ्रुत्वा भविष्यं तस्य भृगुणैव [illegible] युक्तो ऽयं स्त्री पुत्रैश्च दुःखिता। पित्तरोगेण

संत्रस्तः हानिभाक् क्वचिद्भवेत् ॥ देशाटन प्रियो लुब्धः विवादेषु जयं लभेत् । सुबुद्धिः लेखको दिव्य
देहवान् रोग संयुतः ॥ स्वर्णरजतवित्तेशः पुत्रवान् पितृसेवकः । बलवान् सज्जनैश्चैवं संगतः श्रेष्ठपति
भिः ॥ रमते सुखमाप्नोति शुभैः कार्यैर्हि यागतः । स्वल्पाक्षी वै विदेशेषु प्रीतिस्त्यारि नाशकः । पद्मस्य
फल भोक्तायं रक्तगुल्मेण वातलः । रुग्णो वा पैतृकादीनः राज्य पण्डित सम्मतः ॥ धान्य नष्टा कुटुम्बेन
वैरश्चास्य परःप्रियः । विख्यायाः पूर्ण योगोऽस्य मातौ वैवाहिकस्य वै ॥ योगोऽष्टादश वर्षीयौ सहसा
धन यौगिकः । सन्ततिः वकुरस्यास्ति शिथिलाप्यस्य वैरिणी ॥ भाग्यञ्चास्य चतुः त्रिंशे द्वाविंशे द्वादशे

के. मं. 2	1 सू. बु. शु.	12 श.
3	4	11 गु.
चं. 5	7	10
6	रा.	9

तथा । जड्पञ्चाशेऽपि पञ्चाशे उदयं यास्यति ज्येष्यति ॥ राजद्वार विवादांश्च
शत्रूनपि यदा कदा । कुसंगात् चौर्यतो वास्यात् द्रव्यनाशः सुतस्तथा ॥ एकोऽहि
सेवको भूयात् माघशुक्लाष्टमी भवेत् । अवधिः मरणस्यास्मै वर्षीयौ सप्तषष्ठि
के । जीवने चान्य वर्षाणि द्वितीयमष्टमं तथा । अष्टादशं चतुः विंशं नवत्रिंशं
त्रिषष्ठिकम् ॥ अष्टपञ्चाशतं नित्यं घातकानि पुराऽभवत् । ब्राह्मणोऽगेऽच
वैश्योऽयं भूत्वा मोक्षं गमिष्यति ॥ लशुनेति च मूँगेति रत्नयोः धारणं तथा ।
भौमव्रत विधानञ्च प्रेयसेच्चन्द्रमा यदि ॥ द्वितीये पञ्चमे स्थाने अष्टमैकादशे
स्थितः । स्याच्चेदेव धनाधीशः रुग्णो जलकृतैः भवेत् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस जन्मकुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे तात!
इस कुण्डलीवाला जातक उज्ज्वल वर्ण वाला, स्त्री-पुत्रादि से दुःखी, पित्तरोग से पीड़ित, देशाटनी, कभी-
कभी हानि तथा लाभ पाने वाला, कुटुम्बियों से दुःख पाने वाला, लोभी, विवाद-विजयी, श्रेष्ठ बुद्धिमान्,
लेखक, सुन्दर, रोगी, स्वर्ण-धन आदि से युक्त, पितृ-सेवक, पुत्रवान्, अत्यन्त बलवान्, सत्पुरुषों का

संगी, उत्तम स्त्रियों का भोगी, अच्छे कामों से सुख पाने वाला, लज्जाहीन, छोटे नेत्रों वाला, विदेश-प्रे-
मी, शत्रु-नाशक, पद-फल-भोगी, वात अथवा रक्तगुल्म रोगी, पितृ-धन से रहित, राज्य एवं पंडितों से
सम्मानित, धान्य-नाशक, कुटुम्ब-विरोधी, अभिमानी तथा पराये लोगों का प्रेमी होगा। विद्या का पूर्ण
योग है। इसका विवाह परमसुन्दरी परन्तु कृपण स्त्री के साथ १८ वर्ष की आयु में होगा। जीवन में अनाया-
-स धन लाभ के अनेक अवसर आयेंगे। सन्तानें अधिक तथा सुशिक्षित होंगी, परन्तु वे इसके विरुद्ध रहेंगी,
भाग्योदय १२, २२, ३४, ५३ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। शत्रुओं पर तथा मुकद्दमें सदैव विजय प्राप्त होगी,
यदा-कदा कुसंग तथा चोरी के कारण धन-हानि भी होगी। केवल एक पुत्र इसकी सेवा करेगा। ६७ वर्ष
की आयु में माघ शुक्ला अष्टमी शुक्रवार की मध्यरात्रि में, धातु क्षीणता के कारण, अपने ही घर में इस
की मृत्यु होना सम्भव है। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में वैश्य के घर में
उत्पन्न होकर मोक्ष प्राप्त करेगा। मूँगा तथा लहसुनियाँ धारण करते तथा मंगलवार का व्रत रखने
से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ होगा। इसके जीवन के २, ८, १८, २४, ३८, ५८ तथा ६३ वें वर्ष
अपमृत्यु एवं अरिष्ट प्रद रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादशभाव
में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी तथा यात्रा करने वाला, विवेकी एवं विद्या-सम्पन्न, व्रणरोगी
अथवा जलोदर रोगी तथा दीर्घायु और धन लाभ करने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक उवाच॥ कथितं तस्य मे तात वर्णनं यो हि जायते। अस्मिन् ग्रहमण्डले स्पष्टं
भविष्यस्य फलस्य वै॥ भृगु उवाच॥ अभिमानेन युक्तोऽपि रूपवानपि क्रोधन:। भ्रातृणां नाशकश्चै-
वं पराक्रमेण चान्वित:॥ व्याधितो बाल्यकालेऽपि नेत्रार्त: हेय सेवक:। गार्हस्थ्य रहितो भ्रान्त: हीनो
भवति पुत्रकै:॥ प्रवासी धातुवैकल्या युक्तश्चौर: क्षमान्वित:। मत्तचित्त: पटुश्चैवं कृष्यां दुर्बलदेह-

वान् ॥ सुबुद्धिः पण्डितः श्रेष्ठः शीलहीनोऽल्पकोमलः । सत्यवादी कुलस्यैवं विकृतिवान् धर्मसंस्थितः ॥ वणिजः शुभ्रधातूनां वाचालो गुणवानपि । चतुर्दशैकविंशे वा विवाहोऽस्य भविष्यति ॥ यतस्त्रः सन्ततौ पुत्रः सेवकः संभविष्यति । पुरस्तादस्य न श्चेद्वै वंशमस्य शनैः शनैः ॥ परमुखं समाश्रित्य गार्हस्थ्याद्विमुखः स्थितः । धर्म्यं सम्पादयन् कर्म धनं नीत्वा भविष्यति ॥ भाग्यं यातृदयञ्चास्य जन्मना पञ्चविंशते । पञ्चदशे नवत्रिंशे षट्पञ्चाशतेऽपि वै ॥ वह्निमृत्युर्भवेदस्य अतिसारेण व्याधिना । नैकसप्तति वर्षीयौ ज्येष्ठे शुक्लस्य द्वादशी ॥ तृतीये दशमे वर्षे अष्टाविंशे त्रिषष्ठिकम् । द्विचत्वारिंशतं तद्वत् चतुःपञ्चाशते सदा ॥ घातकं जीवने पूर्वं मैत्र्योऽपि शांकरस्यवै । निर्माल्यभक्षणाद्घातात् दुःखानि शलभोऽगमे ॥ सर्वदा श्रेयसे चास्मै नीलमः पुखराजयोः । धारणं सोमवासश्च व्रते शम्भोश्च पूजनम् ॥ भवने द्वादशे षष्ठे तृतीये नवमे यदि । चन्द्रोऽसितश्चेत्तदा ब्रूयात् पापात्मा धर्मधारकः ॥

- २ मं. के. बु.
- १ सू. शु.
- १२ श.
- ३
- ११ गु.
- ४
- १०
- ५
- ७
- ९
- ६ चं.
- ८ रा.

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे स्वामी! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे जिज्ञासु! यह जातक अत्यन्त अभिमानी, सुन्दर, क्रोधी, भ्रातृ-नाशक, पराक्रमी, अन्यों को प्रिय, बाल्यावस्था में रोगी, नेत्र-रोगी, नीच-सेवक, गृहस्थी से रहित, भाग्यशाली, भ्रमित, पुत्र-पौत्रादि से हीन, धातुरोगी, परदेशवासी, ऋणी, जोर, क्षमाशील, कृषि-कर्म-कुशल, मग्नचित्त, दुर्बल, सुखभोगी, कान्तिमान्, महापण्डित, शील-रहित, अल्प कोमल, सत्यवादी, कुल को हानि पहुँचाने वाला, धर्म-कर्म करने वाला, पराया धन जाने वाला, चाँदी तथा सीसे का व्यवसायी, गुणी, अधिक वाचाल एवं पंचों में प्रमुख होगा। इसका विवाह १४ अथवा २१ वर्ष की आयु में होगा। चार सन्तानें होंगी, जिनमें केवल एक पुत्र इसकी सेवा करेगा। धीरे-धीरे

इसकी स्त्री, पुत्र, कुटुम्बी आदि इसके सामने ही नष्ट हो जाएंगे, तब यह गृह-विहीन तथा परमुखापेक्षी होकर धर्म-कर्म करता हुआ, धन को साथ लेकर भ्रमण करेगा। इसका भाग्योदय १५, २५, ३९ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। इसकी मृत्यु घर से बाहर अर्द्ध-कम्प के साथ अतिसार रोग के कारण ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी सोमवार को ६९ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। जीवन के ३, १०, २८, ४२, ५४ तथा ६३ वें वर्ष अरिष्ट, हानि एवं मृत्युकारक सिद्ध होंगे। यह पूर्वजन्म में वैश्य था तथा शिव-निर्माल्य भक्षण के अपराध से इस जन्म में दुखी होकर मृत्यु प्राप्त कर, अगले जन्म में शलभ योनि को प्राप्त होगा। पुखराज तथा नीलम धारण करने, सोमवार का व्रत रखने तथा ईश्वर (शंकर) आराधन से अरिष्ट निवारण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी-उत्साही-कुटुम्बवान्, नीरोग, भाग्यशाली तथा धर्मात्मा एवं महापापी होगा। ॥ इति शुभम् ॥

(कुण्डली: ३; शु. २ सू. के. मे.; १ बु.; श. १२; ४; ५; ११ गु.; ६; ७; ८ रा.; ९; १०)

ॐ शुक्र उवाच ॥ वर्णनं मे त्रिकालज्ञ अस्यां जातस्य प्राणिनः। क्रियतां नाथ सुस्पष्टं भृगोरुत्तरमीदृशम् ॥ भृगु उवाच ॥ द्विजवादी गुरोर्भक्तः कुलज्ञः गुणवान्नपि। अत्र जातो भवेद्वत्स: शीशः वीरश्च लुब्धकः ॥ दुःखित: पत्निपुत्रैश्च सर्वप्रियोऽर्द्ध दुर्बलः। रक्ताक्षः कर्कशाकेशाः भवन्त्यस्यैव देहिनः ॥ तामस्यवणिजोऽल्पञ्च सुखं प्राप्नोति भोजनम्। शुभं करोति नम्रश्च शत्रुभीतश्च संभवेत् ॥ अन्यगेहे गुणग्राही सर्वज्ञश्चतुरस्तथा। परोपकार कुर्याच्च दत्तकत्वं व्रजेत् सुतम् ॥ नवदशैक विंशे वा विवाहश्च कुरूपया। कलहान्तारित्याशांक भविष्यत्यस्य दोवन: ॥ सन्तत्याः पत्निरस्य स्यात् अल्पवीर्येण वंचिता। योगोनास्त्यस्य सन्तत्या भविता चेन्नाशमेष्यति ॥ उपायेन भवेदस्य कन्यास्य वेश संस्थितम्। त्रयोविंशेऽष्ट त्रिंशेऽस्य बहुच-

(वारि) भाते ऽपि च ।। भाग्योदयं भवेन्नूनं धार्मिका स्थितिरुत्तमा । द्वितीयं द्वादशं वर्षं द्वाविंशं नव षष्ठिकम् ।। चतुःत्रिंशत संख्याकं द्वेन पञ्चाशतं तथा । षड् पञ्चाशत ञ्चापि जीवने घातकं परम् ।। वातातिसार रोगाभ्यां चतुः सप्तति संख्यके । वर्षे पौषस्य शुक्ले वै दशम्यां हि मरिष्यति ।। पूर्वे शुक्रः तपस्वी वै आसीदग्रे च ब्राह्मणः । गोपालसनाति तद्व्रत पूजयेत् नीलमस्य वै ॥ धारणं श्रेयसे चैवं शनैश्चरव्रतं तथा । चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे वास्य चन्द्रमा ।। स्थितो यदि भवेदेव शोभनो धार्मिक स्तथा । स्त्रीणां प्रियः सुखापन्नः कर्मठश्च विलासकः ।। रोगाज्जलविद्युते मृत्युः इत्येवास्य फलं सुत ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे महात्मन् ! आप इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुनकर भृगुजी बोले - हे पुत्र ! सुनो, यह जातक गुरु-भक्त, प्रियभाषी, महागुणी, कृती, धनी, कृपण, वीर, सर्वप्रिय, पुत्र तथा स्त्री की ओर से दुःखी, दुर्बल शरीर वाला, लाल नेत्रों वाला, बुरे केशों वाला, ताँबे का व्यवसाय करने वाला, अल्प सुखी, परगृहवासी, शत्रुओं से भय पाने वाला, गुणग्राहक, गुणीजनों से प्रीति करने वाला, अनेक स्त्री भोगी, रोगी, उदर-पीड़ा युक्त, विद्वान, समस्त कलाओं में निपुण, अत्यन्त चतुर, व्याख्यान दाता, श्रेष्ठ कार्य कर्ता, सुन्दर भोजन करने वाला, विनयी, व्यवहार-कुशल तथा परोपकारी होगा । यह अपने घर में दत्तक पुत्र के रूप में दूसरे पिता का पुत्र बनेगा । इसका विवाह १८ अथवा २१ वर्ष की आयु में अत्यन्त कुरूपा तथा कलहकारिणी स्त्री के साथ होगा । अल्पवीर्य होने के कारण इसकी स्त्री सन्तान-सुख से वंचित रहेगी । प्रथम तो सन्तान होना संभव ही नहीं है, यदि हो भी जाय तो वह नष्ट हो जाएगी । उपाय द्वारा केवल एक कन्या की प्राप्ति होगी, जो पुत्र-पौत्रवती बनेगी । इसका भाग्योदय २३, ३८, ४६ वें वर्ष में होगा । धार्मिक-स्थिति उत्तम रहेगी । इसके विरोधी इसकी अकारण-निन्दा करेंगे इसके जीवन के २, १२, २२, ३४, ४८, ५६ तथा ६७ वें वर्ष

अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। वायु-विकार तथा अतिसार रोग के कारण इसकी मृत्यु पौष शुक्ला दशमी शनिवार को मध्याह्न में, अपने घर पर ही, ७४ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा और इसका पहले जन्म का स्थान बनारस होगा। यन्नाचरणको ते बुधवार का व्रत रखने तथा सन्तानगोपाल स्तोत्र का पाठ एवं प्रयोग करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर और विलासी, पूर्णसुखी, मोतीफलासे मृत्यु पाने वाला अथवा स्त्रियों को प्रिय तथा पूर्णधार्मिक एवं कर्मनिष्ठ होगा॥ इति शुभम्॥

शु. मं. 3	सू. बु. के. 2	1
4		12 श.
5		11 गु.
6	8 रा.	10
7		9 चं.

ॐ शुक उवाच॥ त्रिकालज्ञ किमस्यां वै जन्मयो लभते जनः। कुण्डल्यां वद तां स्पष्टं इत्याकर्ण्यात्मनः सुतम्॥ भृगु उवाच॥ तमुवाच भृगुः वत्सः गच्छ युत पुष्पमिस्ताया। शय्यायां शयनं तद्वत् शोभनाभरणैः युतः॥ भवत्यत्र समुत्पन्न जलाद्भीतः कुटुम्बतः। खिन्नः सौख्येन संयुक्तः पुत्रादिभिः सुखान्वितः॥ कुलाङ्गार: धनाधीशः बहुपत्नि विलासकः। मातुलो मोहयुक्तस्य धर्मे स्थितः प्रपञ्चकः॥ मायिकः सरुजश्चैवं विक्रमवान्नपि कातरः। दुर्भाषी गुरुभक्ताश्च सर्वप्रियोऽपि लुब्धकः॥ समान्यथा स्त्रिया भूयात् द्वाविंशेऽब्दे विवाहितः। स्थूलावातविकारेण जायास्य नष्ट सन्ततिः॥ धर्मं चरेत्सदै काठिन्येन सुतौ योग्यौ परं बन्धु विवादकौ। पापात्मा पत्निरस्यास्ति अस्यैव पुरतः मृयात्॥ त्रयोविंशेऽष्टत्रिंशे च षण्णव- -वैव तदान्ये व्यर्थ निन्दकाः। कुटुम्बस्य सुखं पूर्णं भाग्योदयं भविष्यति॥ वैशाखस्य द्वितीय च द्वादशं नवविंशतम् षष्ठ्यां गृहे स्थितः। मरणंत्वष्टीत्यायौ पञ्चम्यां कृष्ण पाक्षिके। वैशाखस्य द्वितीय च द्वादशं नवविंशतम्। सप्त त्रि[illegible] सरलकम्॥ त्रिसप्ततिश्च हान्यैवं जीवने ऽस्य सुनिश्चितम्।

विहगश्चाग्रिमेभूयात् शूद्रश्चपूर्वजन्मनः ॥ मूंगेति धारणं तद्वत् शने व्रतञ्च शुजनम् ॥ शुभञ्चास्मै तथा चन्द्र
पक्षस्थो पञ्चमे ऽष्टमे । द्वितीयैकादशेवास्यात्सुविवेकी तु मध्यमः । धनवान् पयसो हानिः विद्याहीनश्च
पुत्रवान् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे त्रिकालज्ञ ! आप इस जातक का जीवन-फलादेश कहें । भृगुजी बोले-
हे वत्स ! इस कुण्डली वाला जातक उत्तम सुगन्ध, पुष्प-शय्या, उत्तम वस्त्र एवं सुखों से युक्त, जल से भीत,
कुटुम्बियों से कलह करने वाला, यात्रा से लाभ पाने वाला, पुत्रादिकों से सुख पाने वाला, गुणग्राही, अने
-क स्त्रियों का भोगी, धनी, कुल का विनाशक, सभी धर्मों को मानने वाला, मोहयुक्त भांजे का मामा, नेत्र
रोगी, मृदुभाषी, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, दीर्घायु, प्रपञ्ची, अधिक पराक्रमी, रोगी, कायर, मायावी
श्रेष्ठ वचनों से रहित, गुरु-भक्त, कृपण तथा सर्व-प्रिय होगा । इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सामान्य
वर्ण वाली स्त्री के साथ होगा । इसकी स्त्री वायु-विकार से ग्रस्त तथा स्थूल शरीर वाली होगी । अनेक
सन्तानें नष्ट होंगी । केवल दो पुत्र कठिनाई से बचेंगे, जो योग्य तथा सुपात्र होंगे, परन्तु उनमें पर-
स्पर प्रेम नहीं रहेगा । स्त्री पापकर्म-रता होगी, जो इसके सामने ही मर जाएगी । उसके बाद यह धार्मिक
कृत्यों में विशेष रुचि लेने लगेगा । इसकी मृत्यु अपने ही घर में वात-पित्त विकार से, वैशाख कृष्णा
पञ्चमी शुक्रवार को मध्यरात्रि में, ८० वर्ष की आयु में होना संभव है । लोग अकारण ही इसकी निंदा
करेंगे । धन तथा कुटुम्ब का सुख अच्छा बना रहेगा । भाग्योदय २३, ३८ तथा ५४ वें वर्ष में होगा ।
इसके जीवन के २, १२, २९, ३७, ५८, ७३ तथा ७५ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अनिष्टकारक सिद्ध होंगे । यह
पूर्व जन्म मे शूद्र था तथा अगले जन्म में पक्षी योनि प्राप्त करेगा । मूँगा धारण करने, शनिवार का व्रत
रखने तथा शनि का अनुष्ठान करने से इसे लाभ होगा तथा अरिष्ट दूर होंगे । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि

द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो जातक क्रमशः सामान्यधनी, विवेकी, परन्तु विद्याहीन, जलसे हानि पाने वाला तथा पुत्रवान् होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ फलादेशं भविष्यस्य ब्रूहि मे तात विस्तृतम्। अस्यां जातस्य जीवस्य तदा भृगु प्रबोधयत॥ भृगु उवाच॥ अभिमानेन सम्पन्नः दानी भ्रातृ-प्रियः सदा। अत्रोत्पन्नः जनो भूयात् धीशः मन्देन कारकः॥ कामुको गणितज्ञश्च शत्रुहन्तानतस्तथा। शीलवान् कीर्तिवानेवं वक्तृतायां पटुः सुतैः। सुखं प्राप्स्यति दूरस्य यात्रां करोति बन्धुभिः। सौख्यवान् पत्निभिरेव रमते राज्य संश्रितः॥

भाव	ग्रह
१	
२	बु. के.
३	सू. मं.
४	शु.
५	
६	
७	
८	रा.
९	
१०	
११	गु.
१२	श.

स्त्रियैव सुसम्पन्नः शत्रुभिः हित साधकः॥ दैनिके व्ययशीलश्च राजद्वारेपि शत्रुघ्न॥ जयं प्राप्स्यति सर्वत्र द्व्यवस्था विवाहितः। अष्टादशे भवेदेव सन्ततौ सुचतुष्टयम्॥ पृथक् वासञ्च कृत्वाते सेविष्यन्तो सुशिक्षिताः। वर्षाण्यस्य च वृद्धयर्थं भाग्यस्य नवमं तथा॥ नैक विंशाष्ट त्रिंशञ्च अष्ट पञ्चाशतं तथा। नैक पञ्चाशतं भूयात् जीवने ऽन्य त्रयोदशम्॥ द्वित्रिशञ्च चतुःविंशं षट्-चत्वारिंशतं तथा। तृतीयञ्चत्रयोषष्ठिं नेष्टं मृत्यो ऽक्तेतपिवै। अतः परं लभेत् प्राणाः नाष्टासीतितमे भवेत्। नवम्यां माघ शुक्लस्य मृत्यु श्चाप्यात कारणात्॥ क्षत्रियः पूर्व योन्यावै जायसो ऽग्रिम जन्मनः। एकादशी व्रतञ्चैवं भक्तिः नारायणस्य च॥ धारणं हीरकस्यैवं श्रेयसे ऽस्मै भविष्यति। तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे यदि चन्द्रमा॥ संस्थित श्चेत्तदा भूयात् मुमुक्षुः धार्मिक स्तथा। रुग्णः सदा दरिद्रश्च भाग्यवान् व्ययकारकः॥

भावार्थः शुक्रने कहा — हे तात! आप इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें शुक्र के यह वचन सुनकर भृगुजी बोले — हे पुत्र! जिस जातक की यह कुण्डली है, वह

बड़ा आत्ममानी, बन्धु-प्रिय, दानी, भोगी, धनी, कामी, धीरे-धीरे काम करने वाला, शत्रुनाशक, मणितल्ल, उत्तम शीलवान्, सुभाषी, विख्यात, कीर्तिमान्, विनयी, सबका हितैषी, कुटुम्बियों से कलह करने वाला, दूर देशों की यात्रा करने वाला, पुत्रादि से सुखी, गुणग्राही, गुणीजनों से प्रेम रखने वाला, अनेक स्त्रियों का भोगी, भाइयों से सुख पाने वाला, राजप्रिय, ब्राह्मण-प्रिय, आलस्य के कारण धर्म-कर्म में ढिलाई रखने वाला; स्त्री द्वारा धन, मान तथा सुख पाने वाला, शत्रुओं द्वारा भी हित एवं सन्तोष प्राप्त कर्ता, तथा वैभव शाली होगा। इसके दैनिक जीवन में खर्च अधिक बना रहेगा। इसे अपने शत्रुओं पर तथा मामले-मुकद्दमों में सदैव विजय प्राप्त होती रहेगी। इसका विवाह 18 वर्ष की आयु में गेंहुए रंगवाली तथा धन-सम्पन्ना स्त्री के साथ होगा। सन्तानों में से 4 पुत्र सुयोग्य तथा सुशिक्षित होंगे और वे सभी अलग-अलग रहते हुए भी इसकी सेवा करते रहेंगे। इसका भाग्योदय 9, 19, 38, 49 तथा 58 वें वर्ष में होगा। इसके जीवन के 3, 13, 24, 32, 46 तथा 63 वें वर्ष अपमृत्यु कारक एवं हानिप्रद रहेंगे। यदि इन वर्षों से बचाव हो जाय तो यह जातक 72 वर्ष की आयु प्राप्त करेगा तथा माघ शुक्ला नवमी गुरुवार को मध्याह्न के समय इसकी मृत्यु होगी-ऐसी सम्भावना है। मृत्यु का कारण शरीर में चोट का लगना होगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में जलचर योनि को प्राप्त करेगा। एकादशी का व्रत करने के साथ ही श्रीनारायण की निरन्तर भक्ति एवं पूजनानुष्ठान करने तथा हीरा धारण करने से इसके अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम धार्मिक और उत्साही तथा मोक्ष पाने वाला; सर्वदा रोगी और दरिद्र; भाग्यवान् तथा अधिक खर्च करने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ उत्पन्नो योऽत्र जीवोऽस्ति भविष्यं तस्य कीदृशम् । श्रोतुमिच्छाम्यहं तात विस्ता-
रेण वदस्व मे ॥ भृगु उवाच ॥ सुहृदां हितकर्त्ता च बान्धवैः दुःखित स्तथा । आर्यतेजश्च युक्तोऽपि
धनेशः धैर्यवान्नपि ॥ सहिष्णुरटने प्रीतिः स्त्रीषु प्रीतिश्च दुर्बलः । सुखी सम्बन्धि सम्पन्नः दुर्मनः
इच्छया रतः ॥ धर्म कर्मसु वंशस्य पालकः मृदुभाषकः । बाल्ये मातृवियुक्तश्च शनैः सौख्यमवाप्स्य-
-ति ॥ शत्रुञ्जयश्च राजेव वैभवैश्च संयुतः । सुकर्मव्ययशीलोऽयं पटुः गुह्येन्द्रि नेत्रयोः ॥ विकारेणा-
-न्वितः कुर्यात् धर्मस्थानस्य निर्मितम् । व्यापारेण धनाधीशः त्रिभिः योगैश्च पुत्रवान् ॥ विंशेऽपे

४ शु.	३ सू. बु. मं.	२ के.
५	१	
६	१२ श.	
७	९ चं.	११ गु.
८ रा.	१०	

सुविनीतां वै सुरूपां पत्निमाप्नुयात् । कुलीनां वैरिणश्चास्मै ख्यातिं दास्यति
निश्चितम् ॥ द्वात्रिंशैकपञ्चाशे अष्टपञ्चाशतेऽपि च । भाग्योदयं
भवेदस्य पितृसुखं परं न हि ॥ मातृसुखं जनन्या वै व्याभिचार्यं प्रयास्य-
-ते । द्वादशं सप्तमं वर्षं त्रिपञ्चाशाष्टविंशते ॥ षट्चत्वारिंश तञ्चापि
घातकं जीवने ध्रुवम् । तीर्थेऽष्टषष्ठि वर्षायौ मृत्युश्चास्य भविष्यति ॥
आषाढ कृष्ण पक्षस्य एकादश्यां तथा पुरा । प्रबुद्धो क्षत्रियश्चासीत् आ-
-त्मजश्चाग्रिमे भवेत् । पूजयेद् गणराजं च चतुर्थ्यां व्रतमाचरेत् । शि-
-वाय नीलमं तद्वत् धारयेत् जीवने सदा ॥ कुण्डल्यामत्र चन्द्रश्चेत् चतुर्थे सप्तमेऽथवा । लग्ने
च दशमे स्थाने यदि स्यादेष भाविनः ॥ स्त्रीप्रियः सुखसम्पन्नः स्त्रीजित् कामुकस्तथा । राजतु-
-ल्यं भवेच्चैवं फलमस्यास्ति निश्चितम् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा — हे महात्मन् ! आप त्रिकालदर्शी हैं । कृपया इस कुण्डली
वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने का कष्ट करें । यह सुनकर भृगुजी बोले — हे वत्स! सुनो,

भृ० सं० ८३३

भा० टी०

यह जातक अपने भाइयों की ओर से दुःखी, मित्रों का हितैषी, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, धनी, धैर्यवान्, सहिष्णु, अधिक विल-
-पी, स्त्रियों में प्रीति रखने वाला, दुर्बल शरीर वाला, सुखी, सम्बन्धियों से युक्त, चित्त-शुद्धि से रहित, अपनी इच्छानुसार
धर्म-कर्म करनेवाला, प्रियभाषी, सुन्दर, श्रेष्ठ वस्त्राभूषण धारण करने वाला, सुन्दर स्त्री का अभिलाषी, बाल्यावस्था में
ही मातृ-हीन, धीरे-धीरे सुख में वृद्धि करनेवाला, विजयी, शत्रुजयी, वीर्यवान् राजा के समान वैभवशाली, अच्छे कामों
में धन खर्च करने वाला, गुप्तेन्द्रिय एवं नेत्र सम्बन्धी रोग से पीड़ित तथा किसी धर्म-स्थल का निर्माण कराने वाला
होगा। यह व्यवसाय द्वारा यथेष्ट धनोपार्जन करेगा। इसे तीन सुयोग्य तथा सेवाव्रती पुत्र प्राप्त होंगे। इसका विवाह
बीस वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दर, धार्मिक विचारों वाली तथा अच्छे परिवार वाली कन्या के साथ होगा। विरोध
तथा मुकद्दमों से इसकी ख्याति में वृद्धि होगी। इसका भाग्योदय ३२, ४९ तथा ५८ वें वर्ष में होगा। पिता का पूर्ण तथा
माता का अल्प सुख प्राप्त होगा। इसके जीवन के ७, १२, २८, ४६ तथा ५३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अनिष्टकारक रहेंगे।
यदि माता जीवित रही तो वह व्यभिचारिणी होकर इसे छोड़कर चली जाएगी। इसकी मृत्यु आषाढ़ कृष्णा एकादशी सोमवार
को मध्याह्न के समय, ६८ वर्ष की आयु में किसी तीर्थ क्षेत्र में होना सम्भव है। यह जातक पूर्वजन्म में प्रबुद्ध तथा
धार्मिक-क्षत्रिय था एवं अगले जन्म में ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होगा। नीलम धारण करने, चतुर्थी का व्रत करने
तथा गणपति का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि
लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो यह जातक क्रमशः स्त्री-प्रिय, पूर्ण सुखी, स्त्रीजित् तथा
कामी एवं राजतुल्य होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ करोति धारणं योऽस्यां जीवनं तद् वदस्व वै। भविष्यं विस्तृतं तस्य श्रोतु-
मिच्छाम्यहं पिता॥ भृगु उवाच॥ वत्स गणित शास्त्रस्य प्रौढो भवति पण्डितः। शील कीर्ति समापन्नः विनयी सर्व
सेवकः॥ कुटुम्बेन विवादोऽस्य यात्रायामर्थ सिद्धयः। पुत्रादिकैः सुखापन्नः प्रवासी राज सेवकः॥ स्त्री-

कामुक: धियायुक्त: स्वभार्जित कृपणस्तथा। दन्तैस्तथोदरेणैव पीड़ित: ब्राह्मणप्रिय:॥ नम्र बान्धव संयुक्त: आलस्याद्धर्म कर्मसु:। सालस्य: सर्वजित नम्र: श्रेष्ठ कर्म रतोधिया॥ सुभाषी बाल्यत: युक्त: माता पित्रा शनै: शनै:। सौख्यं प्राप्नोति युद्धे च जयी स्यान्न्यूनजीवक:॥ विवाहश्चास्य विंशाब्दे सुन्दर्या प्रदरेण वै। रुग्णया सह संभूयात सन्तत्या: सुखमुत्तमम्॥ सेवको एक पुत्रश्च चतुर्विंशेष्ट त्रिंशते। द्वेन पञ्चाशते भाग्यमुदयं यात्वस्य निश्चितम्॥ पराजिताशत्रवश्च जीवने च त्रयोदशम्। द्वात्रिंशञ्च त्रयोविंशं नैक पञ्चाशतं तथा। षड्पञ्चाशतं वर्षं घातकञ्चापमृत्यवे। बुद्ध ग्रहस्य सप्तम्या: व्रतानुष्ठानमुत्तमम्॥ लहसुनैति रत्नस्य धारणं जीवने शुभम्। विद्वानासीत क्षत्रियो ऽयं ब्राह्मणोऽग्रिम जन्मन:॥ यदि सोमस्थितश्चास्यां द्वितीये पञ्चमे ऽष्टमे। एकादशे तदा धनवान विद्वान यात्रार्थ साधक:॥

बु. शु. ४	३ सू. मे.	२ के.
५		१
६		१२ श.
चं. ७	९	११ गु.
८ रा.		१०

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक श्रेष्ठ गणितज्ञ, उत्तमशीलवान, श्रेष्ठ वार्ताकार, प्रसिद्ध, विनयी, सर्वहितैषी, कुटुम्बियों से कलह करने वाला, यात्रा से लाभ पाने वाला, पुत्रादि का सुखभोगी, राजसेवक, परदेशवासी, स्त्री-भोगी, बुद्धिमान, स्वभार्जित, उदार, रोगी, कृपण, दन्त तथा उदर-पीड़ा से युक्त, ब्राह्मणों का प्रेमी, विनम्र, बन्धु-बान्धवों से युक्त, धर्म-कर्म में आलस्य करने वाला, धीरे-धीरे सुख में वृद्धि पानेवाला, सुभाषी, सर्व-प्रिय, बाल्यावस्था में माता-पिता से वियोग पाने वाला, युद्धजयी तथा न्यून आजीविका वाला होता है। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में प्रदर-रोगिणी स्त्री के साथ होगा। एकपुत्र इसकी सेवा करेगा। भाग्योदय २४, ३६ तथा ४८ वर्ष की आयु में होगा। सन्तान-सुख उत्तम रहेगा। इसके जीवन के १३, २३, ३२

४८ तथा ५६ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६८ वर्ष की आयु में, फाल्गुन शुक्ल दशमी मंगल बार को किसी तीर्थक्षेत्र में होना सम्भव है। लहसुनियाँ धारण करने तथा बुध ग्रह का अनुष्ठान एवं सप्तमी का व्रत रखने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ होगा। यह जातक पूर्व जन्म में विद्वान् क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमश: पूर्णधनी, विद्वान्, जलसे भय पाने वाला तथा यात्रा से लाभ प्राप्त करने वाला होगा॥ इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां च जन्म कुण्डल्यां जायते योऽपि जातक:। भविष्यस्य फलं मह्यं उच्यतां तस्य विस्तृतम्॥ भृगु उवाच॥ उच्चकाय: स्त्रिया पुत्रै खिन्नरुग्णश्च बहुविध्नम्। देशान्तरे ऽटने दक्ष: तलोत्थान पतनात्मक:॥ ऐश्वर्यै बान्धवै: प्रीत: मानी शत्रु विनाशक:। मन्द माचरते कार्यं दाती भोगी धनाधिप:॥ जड़मति: दरिद्रश्च दीनानां सेवकस्तथा। पराधीन: परस्त्रीणां लुब्धक: सरलो हिया॥ रहित: क्षीणजानुश्च दुर्बल: राजवत् धनिक्। कुलाङ्गारश्च कन्यानां पिता वैलासिको तथा॥ पञ्चगणपति: पुत्रौ द्वावेव सेवकौ तथा। धार्मिक्यास्य विवाहश्च स्त्रिया विशे भविष्यति॥ सुयोग्या सन्ततिश्चास्य भाग्यं यातूदयं सदा। षड् त्रिंशे चतु:विंशे चतु: पञ्चाशते ऽपि वै॥ जीवने पातकान्यस्मै चतुर्थ प्रथमं तथा। दशमे षट्विंशञ्च द्विचत्वारिशतं क्वचित्॥ एकषष्ठिञ्च हान्यै वै वर्षे द्वासीति संख्यके। आषाढ़ शुक्ल दशम्यां मृत्यु: रक्तविकारत:॥ क्षत्रियोऽयं पुरासीद् मकरोऽग्रिम जन्मन:। श्रेयसे परमञ्चास्मै मूंगेति रत्नधारणम्॥ भौमव्रतविधानञ्च चन्द्रश्चेदत्र संभवेत्। द्वितीये पञ्चमे स्थाने अष्टमैकादशे ऽथवा॥ तदैव भाविनश्चैवं जलात् भीतश्च श्रीपति:। बहुपुत्रयुत: पूर्ण: वैभवो नापि नास्तिक:॥

भाव	राशि	ग्रह
1	३	सू.
2	४	मं. बु.
3	५	शु.
4	६	
5	७	
6	८	रा.
7	९	
8	१०	चं.
9	११	गु.
10	१२	श.
11	१	
12	२	के.

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस जन्मकुण्डली का फलादेश सुनने की मेरी इच्छा है, सो कृपाकर कहिए।
भृगुजी बोले - हे तात! यह जातक लम्बे शरीर वाला, स्त्री-पुत्रादि की ओर से दुःखी, अनेक रोगों से ग्रस्त, देशान्तरों में भ्रमण करने वाला, घटते-बढ़ते ऐश्वर्यवाला, अभिमानी, बन्धु-प्रिय, शत्रु-नाशक, धीमी गति से काम करने वाला, भोगी, कामी, धनी, जड़बुद्धि, अत्यन्त दीन, देशान्तरों में भ्रमण करने वाला, नीचों की सेवा में अनुरक्त, परवश, पर-स्त्री-लोलुप, सरल स्वभाव का, लज्जामुक्त, क्षीण जाँघ एवं दुर्बल शरीर वाला, बाल्यावस्था में रोगी, राजतुल्य वैभवयुक्त, कुल-विनाशक, अधिक कन्याओं का पिता, गुणी, नायक, विलासवती स्त्री से युक्त, पश्चात पंच एवं दो पुत्रों का पिता होगा, जो इसकी सेवा करेंगे। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में धार्मिक-विचार, परन्तु उग्र-स्वभाव वाली स्त्री से होगा। सन्तान सुयोग्य तथा बुद्धिमान् होगी। इसका भाग्योदय २४, ३६ एवं ५४ वें वर्ष में होगा। इसके जीवन के १, ४, १०, २६, ७२ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। मृत्यु ८२ वर्ष की आयु में, रक्त-पित्त विकार के कारण, आषाढ़ शुक्ला दशमी रविवार को प्रातःकाल अपने ही घर में होना सम्भव है। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में मकर योनि ग्रहण करेगा। मूँगा धारण करने तथा मंगलवार का व्रत एवं मंगल ग्रह का पूजनानुष्ठान करना संकट-निवारक एवं लाभकारक सिद्ध होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः जलसे भय पाने वाला, परन्तु धन-सम्पन्न, अधिक पुत्रों वाला, पूर्ण वैभव युक्त तथा नास्तिक एवं विद्वान्, विवेकी तथा कीर्ति प्रतिष्ठा युक्त होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ फलादेशं प्रभोतस्य वर्ण्यतां योऽत्र जायते। कृपया परमां श्रोतुमिच्छामि भाविनं तदा॥ भृगु उवाच॥ जिह्लासोऽत्र कुण्डल्यां वै लब्धजन्मा सुभौगिकः। धर्मीणाञ्च प्रियोऽनेकैः विहर्ता भाग्य संयुतः॥ मिष्ठान्नभुक् धनेशश्च पुहृवीरोऽल्पबुद्धिमान्। गीतवादनयोः प्रीतिः राजप्रीतोऽति

दैन्यवान् ॥ मधुरवाग् पराधीनः दीनसेवारतस्तथा। देशाटनं करोत्येष परस्त्री मोहितो भवेत् ॥ लज्जाहीनः
भवत्येषः जानुदुःखेन पीड़ितः। दुर्बलाङ्गोऽपि बाल्ये च रुग्णोऽथवा विनाशकः॥ धर्ममार्गे प्रवृत्तिश्च कन्यानां
वर्तते पिता। विलासवति पत्न्याश्च पतिः सामान्य देहवान् ॥ त्रयोविंशैक विंशे वा सामान्यया सकोचना।
सहास्यास्ति विवाहश्च भाग्योन्नतिः तथैवस्यात्। षण्णपञ्चाशतं वर्षे अष्टपञ्चाशतं तथा। भाग्योदयाय
वर्षे च सन्तत्याश्चिन्तितः सदा। उपायेनैक स्वास्य सन्ततौ सेवकः स्तथा। नास्तिकश्च विचारेण वंश
वृद्धिं करिष्यति ॥ धनं परस्त्रिया प्राप्नोत् कर्माणि स्वेच्छिकानि वै। जीवने विंश संख्याके चतुर्थेञ्च
चतुर्दशम् ॥ त्रिचत्वारिंशतं वर्षे षड्पञ्चाशत संख्यकम्। त्रयोषष्ठिं विधाता
-य षड् षष्ठ्यां कृष्णसप्तमी॥ कृष्णस्य च विकारेण रोगेणास्य मरिष्यति। सरुग्णं
-श्च शरीरेण आसीच्छूद्रः पुरा तथा ॥ ब्राह्मणः सम्भवेत् तूष्णीं स्थास्यन्ति रिपवः
सदा। गुरुपादुकानुष्ठानं लाभार्थैष गुरोः व्रतम् ॥ धारणं पुखराजस्य श्रेयसे चन्द्र-
माः यदि। तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे वा भविष्यति॥ अकर्मण्य भवेदेष आलस्ये
-नापि संयुतः। धार्मिकैश्वर्यापन्नः विलासे व्यय कारकः॥

(जन्मकुण्डली)
- ४ सू. मं. बु.
- ५ शु.
- ६ चं.
- ७
- ८ रा.
- ९
- १०
- ११ गु.
- १२ श.
- १
- २ के.
- ३

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे प्रभु! मैं इस जन्मकुण्डली वाले जातक का
जीवन-फलादेश सुनने का इच्छुक हूँ, सो कृपा कर कहिए। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक भोगी, धार्मिक
जनों का प्रेमी, मिष्ठान्नभोजी, सौभाग्यशाली, बन्धु-प्रिय, अनेक लोगों में विहार करने वाला, मधुरभाषी,
सङ्गीत-प्रेमी, युद्ध-कुशल, लज्जा-रहित, जाँघ में कष्ट पाने वाला, दुर्बलशरीर वाला, बाल्यावस्था में
रोगी, कुल-कलङ्की, धर्ममार्ग पर चलने वाला, अनेक कन्याओं का पिता, गुणी, विलासवती स्त्री का पति,
एवं सामान्य क़द वाला होगा। इसका विवाह सामान्यवर्ण एवं क्रोधी स्वभाववाली स्त्री के साथ २३

वर्ष की आयु में होगा। स्त्री-पक्ष द्वारा भाग्योन्नति का भी योग है। भाग्योदय ४४ तथा ५८ वें वर्ष में होगा। सन्तान की ओर से चिन्ता बनी रहेगी। अनेक उपायों द्वारा केवल एक पुत्र की प्राप्ति होगी, जो सेवा भी करेगा, परन्तु वह नास्तिक विचारों का तथा स्वकुटुम्ब की वृद्धि करने वाला होगा। इसे पर-स्त्री से भी धन प्राप्त होगा। इसके जीवन के ४, १४, २८, ४३, ५६ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं नेष्ट रहेंगे। माघ कृष्णा सप्तमी सोमवार को मध्याह्न काल में, अपने ही घर में, जल-विकारी रोग के कारण, ६६ वर्ष की आयु में इसकी मृत्यु होना संभव है। मृत्यु के समय धार्मिक-चिन्तन में लीन रहेगा। यह पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा।

पुखराज धारण, गुरुवार का व्रत तथा गुरु-पादुका-पूजन से अरिष्ट शान्त होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो जातक क्रमशः आलसी, नीरोग, धार्मिक तथा भोग-विलास में खर्च करनेवाला होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
४	सू. मं.
५	बु.
६	शु.
३	
२	के.
१	
७	
१२	श.
१०	
८	रा.
९	
११	गु.

ॐ शुक्र उवाच॥ देहस्य धारणं योऽपि करोत्यस्यां जनो यदा। भविष्यञ्च त्रिकालज्ञः वद मे तस्य कीदृशम्॥ भृगु उवाच॥ शिव्यात्र लभते जन्म कुण्डल्यां मानवो भवेत्। क्रूरः पितुः विरुद्धश्च शीघ्रः परगृहे वसेत्॥ कुमतिरत दीनश्च शत्रुभीतः स्त्रिया सह। कलहश्च मृषाभाषी बन्धुद्वेषी रति स्त्रियाम्॥ तीर्थाटनप्रियश्चाति वाचा पापकर्मरतो रुग्णः निन्दकः कृपणो दुःखी। पीड़ितः उदरेणैव दन्तैश्च पतिभूषितम्॥ परधनं ह्रियतैनेन सीमोल्लंघनमाप्नुयात्। पतिश्चैलः गुणकामुकः। व्यवहारे पटुश्चैवं हृदये नास्ति शुद्धता॥ द्वेन पञ्चाशते चाब्दे द्विषष्ठ्यां षड्त्रिंशते। भाग्योदयाय विघ्नानि आलकविंश वर्षे भाग्योदय भविष्यति॥ रक्तप्रदर रोगेण ग्रस्ता पत्नि: भविष्यति स्यञ्चाकर्मण्यता। चिन्तितोऽयञ्च सन्तत्या सुत एकोऽस्ति यत्नतः। चतुर्दशं चतुर्थञ्च सप्तमञ्चाष्टविंशतम्॥ त्रिपञ्चाशाष्ट प्रबलारिष्टयोऽप्यस्य नागच्छन्त्यस्य सम्मुखम्।

त्रिंशच्च एकषष्ठि हि जीवने । घातकं परमञ्चास्मै वर्षे षडषष्ठि संख्यके ॥ वैशाख कृष्णपक्षस्य एकादश्या-
मितः व्रजेत् । क्षत्रियो ऽयं मभूत्पूर्व स्वागिमे वृषभो भवेत् ॥ मूंगेति पुखराजे वै रत्नाम्पां मङ्गलस्य च । व्रतं हनुमत
पूजा युक्तास्मै जीवने ध्रुवम् ॥ कुण्डल्याञ्चन्द्रमा श्चेद्वै चतुर्थे सप्तमे ऽथवा । लग्ने वा द्वादशे भूयात् राजेव स्त्री
प्रियो भवेत् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली के ग्रहों का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले- हे पुत्र इस कुण्डली वाला जातक क्रूर स्वभाव का, पितृ-विरोधी, धनी, पराये घर में रहने वाला, अत्यन्त दीन, दुष्ट, शत्रुओं से भयभीत, स्त्री-जित, स्त्री से कलह करने वाला, मिथ्यावादी, बन्धुद्वेषी, परस्त्रियों से प्रेम करने वाला, रोगी, दुःखी, कृपण, पापी, निन्दक, उदर-पीड़ा अथवा दन्त-रोग से युक्त, तीर्थाटनी, स्त्रीयुक्त, अधिक बो-लने वाला, कुशल व्यवहारी, गुणीजनों का भक्त तथा वैभवशाली होगा, परन्तु इसका हृदय पवित्र नहीं होगा। यह सदैव पराया-धन हड़पने की चेष्टा करता रहेगा। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सुन्दर, सामा-न्य वर्ण की तथा सीमोल्लंघिनी स्त्री के साथ होगा। इसका भाग्योदय ३६, ४२ तथा ६२ वें वर्ष में होगा। भाग्योदय में आलस्य तथा अकर्मण्यता बाधक रहेंगे। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी। केवल एक पुत्र कठिनाई से प्राप्त होगा। शत्रु एवं विरोधी प्रबल रहेंगे, परन्तु वे सामना नहीं करेंगे। स्त्री को रक्त प्रदर की बीमारी रहेगी। इसके जीवन में ४, ७, १४, २८, ३८, ५३ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकर रहेंगे। इसकी मृत्यु ६६ वर्ष की आयु में वैशाख कृष्णा एकादशी बुधवार को मध्याह्न काल में, सामान्य रोग के कारण किसी तीर्थ-क्षेत्र में सरलता से होना संभव है। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में वृषभ योनि प्राप्त करेगा। पुखराज तथा मूँगा धारण करने, मंगल का व्रत रखने तथा हनुमानजी का पूजन अनुष्ठान करने से अरिष्ट-निवारण एवं सौभाग्य वृद्धि में सहायता मिलेगी। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि

लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम दुःखी तथा स्त्रीभोगी, पूर्ण सुखी, स्त्रियों को प्रिय तथा राजतुल्य होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अभवद्यस्य जन्मास्यां कुण्डल्यां तस्य विस्तृतम्। वक्तुमिच्छामि जीवस्य भविष्यमुच्यतां प्रभो॥ भृगु उवाच॥ उच्चकायोऽस्य वत्सस्यात् वातपित्तादिभिस्स्वयम्। ग्रस्तो देशान्तरं याति ऐश्वर्य वृद्धिकारकः॥ लौहाग्निभयं तथा दण्डात् भीतः विघ्नञ्च प्राप्नुयम्। स्वकार्ये चेतसा खिन्नः श्रमेण पुरुषार्थवान्॥ लेखनेनार्जये द्रव्यं रुग्णोऽसाधयश्च बुद्धिमान्। राज्ञः प्रियो द्विजानाञ्च प्रियो दिव्यशरीरवान्॥ कातरो

५ चं. | ४ सू. बु. मं. | ३ | २ के. | ६ शु. | ७ | १ | ८ रा. | १० | १२ श. | ९ | ११ गु.

धर्मकार्येषु सालस्यश्च मनोरथे। अपूर्णः योगशास्त्री वै राजसः मित्र दुःखितः॥ सामान्यया विवाहश्च त्रयोविंशेऽस्य सम्भवेत्। सन्तत्याचिन्तितः पुत्रः यत्नेनैकश्च कन्यकाः॥ अधिकाः सन्तति प्राप्तुं पूजयेत्पितृणां तथा। मगधे पुत्रतोऽप्यस्य मनश्चिन्ता भविष्यति॥ तस्याङ्गनं व्रजेदेष तीर्थेष्वटन् क्वचित्स्वयम्। त्रिषष्ठितम वर्षायौ श्रावणैकादशी तिथौ॥ शुक्लपक्षस्य वै कुण्ठ यास्यत्येष हि जीवने। चतुर्थे दशमे वर्षे पञ्चविंशे त्रयोदशम्॥ षट्पञ्चाशाष्ट त्रिंशे वै कष्टायापमृत्युं कृते। नैकविंशे द्विपंचाशे षण्णपञ्चाशेतऽपि च॥ भाग्योदये भवेदस्य जीवने नीलमं वहेत्। व्रतं भौमस्य पूजा च हनुमतोऽपि च श्रेयसे॥ सोमश्चेदत्र संतिष्ठेत् द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे। एकादशे क्रमादेष वै भवेण च संयुतः॥ पुत्रहीनोऽर्थलाभश्च सहसास्मै भविष्यति। पुत्रवान्नापि भूयाद्वै इत्येवास्य भविष्यतम्॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनने की मेरी इच्छा है, सो कृपा करके कहिए। यह सुनकर भृगुजी बोले - हे वत्स! सुनो, इस कुण्डली वाला जातक

ऊँचे शरीर वाला, वात-पित्तादि से पीड़ित, देशान्तरों में भ्रमण करने वाला, ऐश्वर्य में कमी लाने वाला, लोहा, अग्नि आदि से भय पाने वाला, स्व-कार्य में विघ्न पाने वाला, चित्त में क्लेश युक्त, उद्यम तथा पुरुषार्थ से लाभ पाने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, लेखन-कार्य से आजीविकोपार्जन करने वाला, दिव्य-शरीर, कठिन-रोगी, राज्य प्रिय, ब्राह्मण-प्रेमी, विनम्र, बन्धु-बान्धवों से युक्त, धर्म-कर्म में आलसी, स्त्रियों से प्रेम न करने वाला, अपूर्ण मनोरथी, योगाभ्यासी, रजोगुणी तथा मित्रों की ओर से दुःखी रहने वाला होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सामान्यवर्ण तथा कलहकारिणी स्त्री के साथ होगा। सन्तान की ओर से यह चिन्तित बना रहेगा। कन्याएं अधिक होंगी। उपायों द्वारा केवल एक पुत्र की प्राप्ति सम्भव है। सन्तान-प्राप्ति के लिए पितृश्वरों का गया-श्राद्ध करना उचित रहेगा। पुत्र के अपराधों के कारण भविष्य में जातक का मन खिन्न तथा उदासीन हो जाएगा, जिसके कारण यह गृह त्याग कर वनवासी भी बन सकता है। इसकी मृत्यु ६३ वर्ष की आयु में, श्रावण शुक्ला एकादशी सोमवार को अनायास ही तीर्थ-यात्रा करते समय होना सम्भव है। मृत्यु के बाद यह वैकुण्ठवासी होगा। इसके जीवन के ४, १०, १३, २५, ३८ तथा ५६ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टकारक रहेंगे। भाग्योदय १७, ४४ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। नीलम धारण करने, मंगलवार का व्रत रखने तथा हनुमान् जी का पूजन करने से लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनी, पुत्रहीन, अनायास धन प्राप्त करने वाला तथा पुत्रवान् होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच।। पितः ब्रूहि फलादेशं अस्यां जातस्य देहिनः। श्रोतुमिच्छामि सर्वं तत् तदा भृगु जगाद वै।। भृगु उवाच।। भोगवान् शत्रुहन्ता च लब्धदेरोऽल्प सन्ततिः। भवत्येष सुतैः खिन्नः वीरश्चोत्साह संयुतः निर्धनो यौवने रुग्णः एक पुत्र पिता तथा। परगृहे वसेदन्य पत्निवान् धननाशकः।। चलश्री ब्राह्मणानां च

कृपायुक्तो विलासक: । भयरूपं रिपूणां वै विभूतिवान् मृषावद: ॥ प्रसाधनप्रिय: स्त्रीषु रुचिहीनोऽति शोभन: ॥ द्वाविंशे रोगिणी भार्या कोमलाङ्गीमवाप्स्यति ॥ चत्वारश्चास्य पुत्रास्ते सेवका: धार्मिकस्तथा । पित्रो: भक्ता: सुतश्चैक: कीर्तिमस्य प्रसारयन् ॥ विवर्द्धयन् प्रतिष्ठाञ्च तोषञ्चास्मै प्रदास्यति । यात्रायामग्नि भीतिश्च शस्त्र भूस्खलनस्य वै ॥ धनोत्तमा स्थिति: अस्य नाशयेत् जीवने तथा । त्रिचत्वारिंशते वर्षे त्रिपञ्चाशाष्ट विंशयो: । एकषष्ठ्याञ्च भाग्यस्य वृद्धिरायोश्च पूर्णता । वैशाखस्य त्रयोदश्यां शुक्लपक्षे गृहे भवेत् । अश्मर्या मूत्ररोगेण वर्षेऽष्ट षष्ठि संख्यके । जीवनेऽचान्य वर्षाणि चतुर्थं द्वादशं तथा । चतुर्विंशं नवत्रिंशं द्वेन पञ्चाशतं क्वचित् । अष्टपञ्चाशतञ्चापि घातका नीतिनिश्चितम् ॥ क्षत्रियो धार्मिक: पूर्व आसीद्विप्रो भविष्यति । शनिव्रतमनुष्ठानं मूंगेति रत्न धारणम् ॥ श्रेयसे सर्वदा चास्मै चन्द्रस्तृतीय षष्ठयो: । नवमे द्वादशे भूयात् भाग्यवान् यात्रिको भवेत् ॥

भाव	ग्रह
५	सू.
६	शु.
७	चं.
४	मं. बु.
३	
८	रा.
२	के.
९	
११	गु.
१	
१०	
१२	श.

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले – हे पुत्र! सुनो, यह जातक महाभोगी, शत्रु-नाशक, छोटे पेट वाला, अल्पसन्ततिवान्, उत्साही, बड़ा पराक्रमी, धन-हीन, युवावस्था में रोगी, एक पुत्रवाला, परस्त्री प्रेमी, परगृहवासी, क्रूर, चपलबुद्धि, दुष्टकर्म करने वाला, धन-नाशक, शत्रुओं के लिए भयस्वरूप, विभूतिवान्, स्त्रियों से कम प्रेम रखने वाला, अत्यन्त सुन्दर, ऐश्वर्यमय जीवन बिताने वाला, रुग्णा-स्त्री वाला, अत्यन्त सुन्दर, सुभाषी तथा कृपण होगा। इसकी स्त्री कोमलाङ्गी, चतुर तथा धार्मिक स्वभाव की होगी। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में होगा। सन्तानों में चार पुत्र होंगे, जो सभी शिक्षित, दयालु, धार्मिक तथा माता-पिता के भक्त होंगे। धन की स्थिति अच्छी रहेगी। यात्रा में अग्नि तथा शस्त्र का भय रहेगा। भूस्खलन का भय भी हो सकता है। इसका भाग्योदय २८, ४३, ५३ तथा

६१ वें वर्ष में होगा। पूर्णायु ६८ वर्ष की होगी। वैशाख शुक्ला त्रयोदशी रविवार को मध्याह्न में, अपने ही घर में अश्मरी अथवा मूत्र-रोग के कारण इसकी मृत्यु होना सम्भव है। मृत्यु के समय यह जातक भगवच्चिन्तन करता रहेगा। जीवन के ४, १२, २४, ३८, ४८ तथा ५८ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। यह जातक पूर्वजन्म में धर्मात्मा क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। मूँगा धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा शनिदेव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट-निवारण एवं मनोभिलाषा पूर्ति में सहायता मिलेगी। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी तथा भाग्यवान्, स्वस्थ, धार्मिक एवं परम सुन्दर तथा यात्रा में सुख पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

(कुण्डली: ५ सू. मं.; ६; ४ बु.; ३; ७ शु.; ८ रा. चं.; २ के.; ९; ११ गु.; १; १०; १२ श.)

ॐ शुक्र उवाच॥ जीवनस्य च वृत्तान्तऽस्यां जातस्य पितः वद। विस्तृतं श्रोतुकामोऽस्मि भृगुणोक्तं तदा स्फुटम्॥ भृगु उवाच॥ लम्बोदरोऽरिजेता च अल्पापत्योऽपि भोगवान्। पुत्राणां दुःखभाग् भूयात् निर्धनः एकपुत्रवान्॥ यौवने व्याधिग्रस्तोऽयं परगृहे वसेत्तथा। कुहूयाचलो विलासी वै दुष्कृतो दुर्मनोऽपि च॥ पापात्मा हि स्वभावेन सरलोऽति दुःखितो ह्रिया। रहितः क्षीणजानुश्च कुलघ्नः दुर्बलस्तनुः॥ स्त्रीणां पतिकुलीनश्च प्रगल्भश्चौर कातरो। गार्हस्थ्यास्यास्य धर्मस्यास्यात विडम्बना पुते॥ विपत्स्वेव धर्मकार्यं कारयेत् षड्विंशते। विवाहश्च भवेदस्य नान्यथा कुत्रचिद्भवेत्॥ परभार्यासु सम्पर्कः स्यादस्य नैव सन्ततिः। भवेच्चेदति दुष्टा वै येनास्य हृदयं तपेत्॥ सप्तत्रिंशैकविंशेऽस्य भाग्योदयाय निश्चितम्। तृतीयञ्चतुर्थञ्चाष्टं द्वादशं पञ्च विंशतम्॥ षण्ण पञ्चाशतं नैक षष्ठिं जीवन घातकम्। नवषष्ठितमे वर्षे पाण्डुरोगेण फाल्गुने॥ पञ्चम्यां कृष्णपक्षस्य मृत्युश्चास्य भविष्यति। [illegible]

भौमस्य बुद्धस्यानुष्ठानं पन्नकस्य च ॥ धारणं यदि चन्द्रोऽस्यां चतुर्थे सप्तमेऽथवा । दशमलग्नपो: भूयात् तदैव क्रमश: भवेत् ॥ पुत्रोऽपि व्यभिचारिण्या: निर्वंशो व्यवसायवान् । सुखवान् स्त्रीऽपि: राज्यात् भी-तिवान् नृपवद् भवेत् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले मनुष्य का जीवन-फलादेश कहिए। भृगुजी बोले – हे पुत्र! सुनो, यह जातक भोगी, शत्रु-नाशक, छोटे पेट वाला, अल्प संततिवान्, उत्साही, बड़ा पराक्रमी, पुत्रों का दु:ख भोगने वाला, धनहीन, युवावस्था में व्याधि युक्त, केवल एक पुत्र वाला, अन्य स्त्री वाला अथवा परगृहवासी, चपलबुद्धि, विलासी, दुष्ट कर्म करने वाला, बुरे हृदय वाला, पापी, अत्यन्त दु:खी, सरल-स्वभाव, लज्जाहीन, क्षीण जाँघ वाला, दुर्बलशरीर वाला, बाल्यावस्था में भी रोगी, कुल-विनाशक, उत्तम कुल वाली स्त्रियों का स्वामी, प्रमुख पंच, छोटे कद वाला, पक्षी आदि जीवों का हिंसक, प्र-गल्भ, चोर तथा कायर होगा। इसका गार्हस्थ्य जीवन एवं धार्मिक-जीवन अत्यन्त विडम्बना पूर्ण रहेगा विपत्ति के समय धर्म-कर्म केवल दिखावे के लिए करेगा। इसका विवाह २६ वर्ष की आयु में होगा अथवा नहीं होगा। पर-स्त्री इसके सम्पर्क में रहेगी। सन्तान का होना प्रथम तो असम्भव ही है, यदि होगी तो वह अत्यन्त दुष्ट और दुश्चरित्र होगी, जिसके कारण इसका हृदय जीवनभर सन्तप्त बना रहेगा। इस का भाग्योदय २१ तथा ३८ वें वर्ष में होगा। जीवन के ३, ४, ८, १२, २२, ४४ तथा ५९ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्टकारक सिद्ध होंगे। इसकी मृत्यु अपने ही घर में, पाण्डुरोग के कारण, फाल्गुन कृष्णा पंचमी शुक्रवार को ६९ वर्ष की आयु में, अत्यन्त कष्ट के साथ होना संभव है। यह पूर्व जन्म में व्याधा तथा मृत्यु के बाद दीर्घकाल तक नरकवास कर, म्लेच्छयोनि में जन्म लेगा। मंगलवार का व्रत रखना, बुध ग्रह का पूजा-नुष्ठान करना तथा पन्ना धारण करना शुभ फलदायक एवं अरिष्ट निवारक रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्र

मा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो यह जातक क्रमशः सुखी, सुन्दर और स्त्री-प्रिय; व्यभिचारिणी माता का पुत्र एवं कुटुम्बहीन; स्त्री तथा व्यवसाय से सम्पन्न एवं राजतुल्य तथा राज्य से भय पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ तस्य जीवस्य भाव्यं यत् भविष्ये योऽत्र जायते। कुण्डल्यां विस्तृतं ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि निश्चितम्॥ भृगु उवाच॥ अस्यां जातो भवेत् शिष्य स्थिरधी कीर्तिवानपि। अतिवीरो नृपसेवी स्त्रीपुत्रैः सुखमाप्नुयात्॥ साहसिको मृषाभाषी बुद्धिहीनश्च कामुकः। बन्धुभिः वैर संयुक्तः परकार्यं करोति वै॥ भीतः क्रुद्धो मनोभावेऽपूर्णः प्रदर्शने रुचिः। कवीशः मृदुभाषी तु व्यवहारे पटुस्तथा। कुशीलाभिः रमेच्चैवं व्याकुलोद्वेग मानसः। वातरुग्णः स्त्रियाश्चाकं सुन्दर्या धार्मिक्या भवेत्॥ विंशवर्षे परं पश्चात् त्रिन पञ्चाशते तथा। वियोगादन्य भार्याः वै द्वयञ्चास्य गृहस्तिनाम्॥ अल्पोप्युत्तम सौख्यञ्च सन्तत्याः सेवकौ सुतौ। धियाशत्रूञ्जयेदेष सर्वत्र संसितः स्वयम्॥ पराक्रमोद्यमाभ्यां हि भाग्यवृद्धिर्भविष्यति। अष्टादशेऽष्ट विंशेष्ट चत्वारिंशत संख्यके॥ वर्षे चान्यानि वर्षाणि प्रथमं सप्तमं तथा। एकादशैकविंशेच्च नैक पञ्चाशतं क्वचित्॥ अष्टात्रिंशाष्ट पञ्चाशत्त्रिषष्ठिं घातकानि वै। वार्द्धक्ये शीघ्रकोपत्वं यात्येष गृहभूपतिः॥ आषाढ शुक्ल पक्षस्य नवम्यामेक सप्ततौ। वर्षायौ नूतने कार्ये तीर्थेऽस्य मरणं ध्रुवम्॥ बुद्धिमान् शूद्र आसीच्च भविष्ये वृषली पतिः। श्रीपूजनं तथार्कस्य व्रतं श्चेष्टञ्च चारयेत्॥ लशुनेति च रत्नं वै जीवने शिव हेतवो द्वितीये पञ्चमे चन्द्र अष्टमैकादशे यदि। स्थितश्चेत भवेदेष सुकृतः शोभनस्तथा॥ सुपुत्रवान्नपि कार्पण्ये दक्षः विपुलभयं लभेत्। विविधार्थाञ्च प्राप्नोति इति वत्सास्य जीवनम्॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें।
भृगुजी बोले - हे शुक्र, सुनो, यह जातक स्थिर-बुद्धि वाला, अधिक पराक्रमी, विशेष कीर्ति पाने वाला, राजसेवी, अल्प-उपकारी, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त, अत्यन्त साहसी, शत्रुजयी, विनयी, मिथ्यावादी, हीन बुद्धि, बन्धु-बान्धवों से शत्रुता रखने वाला, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, पराया काम करने वाला, भययुक्त, क्रोधी, विफल-मनोरथ, ठाठबाट से रहने वाला, प्रियभाषी, उत्तम कार्य करने वाला, कवि-श्रेष्ठ, व्यवहार-कुशल, गुणग्राहक, कुटिल तथा कुशीला स्त्रियों का प्रेमी, व्याकुल-चित्त, उद्वेगी तथा वातरोगी होगा। इस का विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा धार्मिक-स्त्री के साथ होगा, परन्तु ४७ वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग अर्थात् विधुर हो जाने का भी योग है। बाद में अन्य स्त्रियाँ इसके धन का उपभोग करेंगी। सन्तान-सुख अल्प तथा उत्तम रहेगा। दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे। शत्रुओं पर तथा मुकद्दमों में बुद्धिमानी से काम लेकर विजयी होगा। अपने उद्यम तथा पराक्रम की सफलता के लिए सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त करेगा। इसका भाग्योदय १८, २८ तथा ४६ वर्ष की आयु में होगा। इसके जीवन के १, ७, ११, २१, ३८, ४९, ५८ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। वृद्धावस्था में स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाएगा। गृह तथा भूमि का सुख रहेगा। इसकी मृत्यु आषाढ़ शुक्ला नवमी बुधवार को मध्याह्न के समय किसी तीर्थ-क्षेत्र में किसी नवीन-निर्माण की योजना कराते समय, ७१ वर्ष की आयु में होना संभव है। यह जातक पूर्व जन्म में बुद्धिमान् शूद्र था तथा अगले जन्म में वृषलीपति होगा एवं नरक की यातना भोगेगा। लहसुनियाँ धारण करने, रविवार का व्रत रखने तथा लक्ष्मी का पूजनानुष्ठान करने से लाभ तथा अरिष्ट-निवारण होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी और सत्कर्म करने वाला; स्वस्थ तथा सुन्दर पुत्रों से युक्त,

परमकृपण तथा जल-विद्युत से भय पाने वाला एवं विविधार्थ लाभ पाने वाला होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ।। जातकस्य भविष्यं मे भाषस्व नाथ जायते । अस्यां यो जन्मकुण्डल्यां श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः ।। भृगु उवाच ।। शास्त्रज्ञः गुणवान् वत्स सुरूपः सुरतिप्रियः । बुद्धिमान् योगशीलश्च जातकोऽयं भविष्यति ।। स्वजनानां हितं कुर्यात् जात्यालाभेन मोदते । दुर्बलां पत्निमाप्नोति शत्रुजिच्च विलासकः । सुकर्मा दृढदेहश्च स्त्रीविद्यायां विशारदः । मिथ्यापवाद कर्ता च धननष्टा कलत्रवान् ।। देवगुरु द्विजानां वै भक्तः क्लेशेन निर्गतः । सुवंशजः सुभार्यावान् नैकविंशे विवाहितः ।। शिक्षितया सहायं नु पुत्रसंख्याधिकाः भवेत् । अंगल विदश्च धर्मान्ते विमुखाः तिष्ठन्तु केवलम् ।। सेवकः एक एवास्य पुत्रोऽन्ये ख्याति दायकाः । संशान्ति वैरिण श्चैनं वार्द्धक्ये सर्व सौख्यवान् ।। धार्मिकं दैनिकेवास्य व्ययाधिक्यं भविष्यति । त्रिषष्ठिश्च त्रयोविंश षड्चत्वारिंशतं तथा ।। भाग्योदयाय वर्तन्ते वर्षाण्यन्यानि जीवने । तृतीयं प्रथमं चैव एकादशाष्ट त्रिंशते ।। नैक पञ्चाशतश्चैक बष्टिं नेष्टाय सर्वदा । चैत्र शुक्ल तृतीयायां वर्षैकासीति संख्यके ।। गृहे उदररोगेण मृत्युश्चास्य भविष्यति । जलाग्नि भय संयुक्तः मूंगेति रत्नकं वहेत् ।। गुरोः व्रतं गुरोः भक्तिनिष्ठया श्रेयसे भवेत् । धार्मिकोऽयं पुरासीच्च क्षत्रियो ब्राह्मणोऽग्रिमे ।। चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे यदि चन्द्रमाः । पतिश्च व्यभिचारिण्याः राजमान्योऽति सौख्यवान् ।।

(कुण्डली: ६ सू. ; ७ शु. रा. ; ५ मं. बु. ; ८ ; ४ ; ९ ; ३ ; १० ; १२ श. ; २ ; ११ गु. ; १ के.)

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे नाथ ! इस कुण्डली वाले जातक का भविष्य सुनने की मेरी इच्छा है, उसे कृपाकर कहिए । भृगुजी बोले – हे वत्स ! यह जातक शास्त्रज्ञ, गुणवान्, सुन्दर, सुरतिप्रिय, बुद्धिमान्, योगाभ्यासी, स्वजनों का हितैषी, सजातीयों को लाभ होने पर प्रसन्न होने वाला, दुर्बल पत्नी वाला,

शत्रुजयी, विलासी, श्रेष्ठ कर्म करने वाला, दृढ़ शरीर वाला, स्त्रियों को वशीभूत करने में निपुण, मिथ्यापवादी, धन नष्ट कर्ता, पत्नीयुक्त, पुत्रवान्, देवता, गुरु एवं ब्राह्मणों का भक्त, क्लेश-रहित, श्रेष्ठ कुल में उत्प-न्न, सुन्दरी पत्नी वाला होगा। इसका विवाह १६ वर्ष की आयु में सुशिक्षिता एवं पतिपरायणा कन्या के साथ होगा। पुत्रों की संख्या अधिक होगी तथा सभी पुत्र आंग्लभाषा विद् एवं धर्म-विमुख होंगे। केवल एक पुत्र इसकी सेवा करेगा। पुत्रों के द्वारा इसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। विरोधीजन भी इसकी प्रशंसा करेंगे वृद्धावस्था में इसे धन, स्वास्थ्य आदि के सभी सुख प्राप्त रहेंगे। दैनिक खर्चे तथा धार्मिक कृत्यों में धन अधिक व्यय होगा। इसका भाग्योदय २३, ४६ तथा ६३ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ३, ११, ३८, ४८ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं हानिप्रद रहेंगे। इसकी मृत्यु ८१ वर्ष की आयु में चैत्र शुक्ला तृतीया शनिवार को मध्यरात्रि में, उदर रोग के कारण, घर में ही होना संभव है। इसे अग्नि तथा जल से भय रहेगा। मूँगा धारण करने, गुरुवार का व्रत करने तथा गुरु की भक्ति करने से अरिष्ट शान्त होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। इस कुण्डली में चन्द्र-मा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर और विलासी तथा साहसी; गृह-भूमि-वाहन एवं कुटुम्ब युक्त; स्त्री-लम्पट अथवा व्यभिचारिणी-स्त्री का पति एवं राज्यद्वारा सम्मान पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ भविष्यं मे त्रिकालज्ञ वदतां तस्य देहिनः। कुण्डल्यां जायते योऽस्यां श्रोतुमिच्छामि मूलतः॥ भृगु उवाच॥ धनं प्राप्नोति राज्याद्वै मृदुभाषी भविष्यति। संगीते रुचिरस्यास्ति महत्वमिच्छतीति सः॥ जायापत्यैः सुखापन्नः साहसिकोऽरिजित्तथा। पाटवं लेखने दक्षः सततं सुखमाप्नुयात्॥ उत्तमाभिः रमिच्चैवं पीड़ितश्च दन्तोदरैः। सुगन्ध वस्त्र युक्तोऽयं सुकविः धनवान्नपि॥ वित्ततो व्यवहारे च कुशलः

भृ० सं० २८१

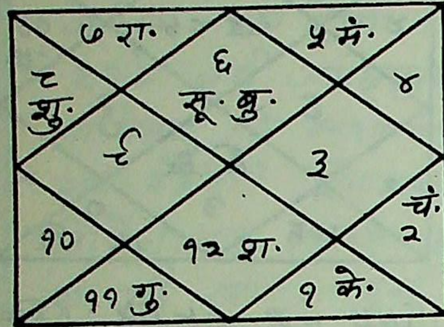
भा० टी०

गुणग्राहक:। उपकारं करोत्येष वैभवेन समन्वित:॥ विद्या बुद्धि विवेकेष्वनूप: धनस्य संग्रह:। प्रमादाद्धानिरस्यास्ति साफल्यं वैरिणां प्रति॥ विचारधर्मयो: स्वार्थात् श्रेष्ठता सम्भविष्यति। उदररुग्णयाशाके शीलवत्या द्विविंशते॥ भविष्यति विवाहोऽस्य भविता भाग्यवर्द्धनम्। द्विचत्वारिंशते वर्षे चतु: पञ्चाशेतऽपि च॥ षड्विंशे विदेशस्य यात्रा योगोऽपि वर्तते। पुत्राधिकाश्च सर्वे ते प्रवासिन: सहायका:॥ केवलमेक पुत्रेण विरोध: सततं भवेत। देहावसान कालोऽस्याद्वे द्विसप्तति संख्यके॥ नवम्यां भाद्रकृष्णस्य वातरोगेण संभवेत। प्रबुद्ध: क्षत्रिय: पूर्वे पतङ्गो भविता तथा॥ धारणं श्रेयसे कुर्यात मूंगेति पुखराजयो:। नवम्याञ्च व्रतं तद्वत विश्वेदेवेति पूजनम्॥ कुण्डल्यामत्र सोमश्चेत द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे। एकादशेऽपि संतिष्ठेत क्रमादेज भविष्यति॥ सामान्यधन सम्पन्न: जलविद्युत भीतिवान्। विद्वान सुपात्र पुत्राणां पिता चैव फलं स्फुटम्॥

शु० रा० ७
५ मं०
६
८
४
सू० बु०
९
३
चं० १०
१२ श०
२
११ गु०
१ के०

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे त्रिकालज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का भविष्य कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक राज्य से धन पाने वाला, मृदुभाषी, संगीत-प्रेमी, महत्वशाली, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, अत्यन्त साहसी, शत्रुजयी, विनयी, चतुर, लेखन-कला-प्रवीण, निरन्तर सुखी, श्रेष्ठ स्त्रियों का भोगी, दन्त-पीड़ा तथा उदर-पीड़ा से युक्त, उत्तम वस्त्र, सुगन्ध एवं पुष्पमाला आदि धारण करने वाला, धनी, श्रेष्ठ कवि, विचारवान्, व्यवहार-कुशल, गुणग्राही, उपकारी तथा वैभवशाली होगा। विद्या, बुद्धि एवं विवेक के साथ इसके पास धन का श्रेष्ठ संग्रह रहेगा, परन्तु कभी-कभी अपने आलस्यवश ही अपनी हानि भी कर बैठेगा। विरोधियों पर तथा मुकद्दमों में इसे सदैव सफलता प्राप्त होगी। विचारों में श्रेष्ठता तथा कर्म [illegible] उदार-

रोगिणी स्त्री के साथ २२ वर्ष की आयु में होगा । भाग्योदय २६, ४२ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। विदेश-यात्रा का योग भी बनेगा । सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक होगी, वे सभी परदेशवासी होकर इसकी सहायता करेंगे। केवल एक पुत्र से इसका निरन्तर विरोध चलेगा । इसकी मृत्यु ७२ वर्ष की आयु में, भाद्रपद कृष्णा नवमी रविवार को मध्याह्न कालमें, वायु-विकार से, अपने घर पर ही होना सम्भव है। यह पूर्वजन्ममें प्रबुद्ध क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में पतङ्ग योनि प्राप्त करेगा। मूँगा तथा पुखराज धारण करने, नवमी का व्रत रखने तथा विश्वे देवा का पूजन करने से लाभ होगा तथा अरिष्ट दूर होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में



हो तो जातक क्रमशः सामान्य-धनी, विद्वान्, जल तथा विद्युत् से भय पाने वाला एवं सुपात्र पुत्रों का पिता होगा ।। इति शुभम् ।।

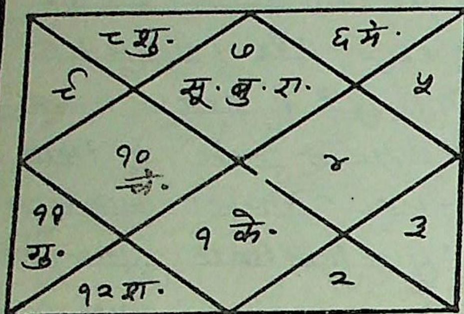
ॐ शुक्र उवाच ।। जनकः किं भविष्ये ऽस्मिन् ग्रहक्षेत्रे भविष्यति । विस्तारेणोच्यतां मह्यं जन्मयो लभते जनः ।। भृगु उवाच ।। वत्स सोच्चवपुः पत्नि पुत्रैः क्लेशेन संयुतः । ऐश्वर्येऽस्य क्वचिद् वृद्धिः क्वचि दासश्च संभवेत् ।। शत्रुकुल भयापन्नः नृपवक्षीपतिस्तथा । वातपित्त रुजश्चास्मै देशान्तराटनेरतः ।। धर्मस्थः मांसभोजीवै विशालाक्षोऽपि वामनः । सुबुद्धिश्च चतुर्थीयौ मृत्युं प्राप्नोति लेखकः ।। दिव्यवपुः धनस्यार्थं पोषको विमतः स्त्रिभिः । चमूपतिः शत्रुनष्टा कातरो बान्धवैः युतः ।। रुग्णमातुः सुतश्चैवं स्ववार्जित द्रव्यवान् दुराग्रही विवेकी वै राज्यमान्यः रिपूञ्जयेत् ।। युक्त्यानायासलाभोऽस्मै द्यूतक्रीडाविधानतः । चतुर्थे दशमे वर्षे यच्चैष जीवितोऽवसत् ।। अष्टादशे तदाप्नोतु विवाहे ऽन्ये जैन रताम् । पुत्रेषु भौमवेवांस्य सेवकौ नेष्टकारम् ।। त्रिचत्वारिंशतवर्षे योगो वैदेशिकस्य च । भाग्योदयं त्रयोविंशे षण्णपञ्चाशते ऽपि वै ।। पञ्चत्रिंशेऽष्ट पञ्चाशे भविता मृत्यु हेतवे । नवसप्ततमे वर्षे पौष कृष्णस्यपञ्चमी

नवदशं चतुः त्रिंशं नैकषष्ठिं त्रिषष्ठिकम्। घातकानि च वर्षाणि शूद्रोऽयं पूर्वजन्मनः ।। भविता जलपक्षी
चारिष्टे नीलम धारणम्। प्रदोषस्य व्रतं शम्भोः उपासनाति श्रेयसे ।। तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे यदि चन्द्रमा
निर्वंशो भाग्यवान् भूयात् यात्रा हानिः व्ययाधिकम् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगु जी बोले हे पुत्र! यह जातक उच्च शरीर वाला, स्त्री-पुत्रादि से क्लेश पाने वाला, वात तथा पित्त रोगी, देशान्तरों में भ्रमण करने वाला, ऐश्वर्य में कभी कमी और कभी अधिकता प्राप्त करने वाला, शत्रु-कुल से भयभीत, कुल-विकारी, धर्ममार्गी, राज्यकर्मचारी, मांस-प्रेमी, विशाल नेत्रों वाला, चौपेयन में छुलुपाने वाला, श्रेष्ठबुद्धि, लेखन का कार्य करने वाला, सुन्दर, धन-रक्षक, स्त्रियों के प्रति अनासक्त, बन्धु-बान्धवों से युक्त, सेनापति, शत्रु-नाशक, मामा के सुख से रहित तथा रुग्णा माता का पुत्र होगा। यह स्वभुजोपार्जित द्रव्य का कम खर्च तथा अधिक संचय करेगा। हठी और विवेकी होगी। राज्य से सम्मान प्राप्त करेगा। विरोधियों पर युक्ति द्वारा सफलता प्राप्त करेगा। द्यूत-क्रीड़ा से अनायास लाभ भी पायेगा। यदि यह ४ तथा १० वर्ष की आयु के बाद जीवित रहे इसका विवाह १८ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा पर-पुरुष में प्रीति रखनेवाली स्त्री के साथ होगा। इसके दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे। विदेश-यात्रायें होगी। ४३ वाँ वर्ष नेष्ट है। भाग्योदय २३, ३२, ४४ तथा ५८ वें वर्ष में होगा। इसकी मृत्यु पौष कृष्णा पंचमी सोमवार को प्रातःकाल रक्तदोष के कारण अपने घर पर ही, ६९ वर्ष की आयु में होना संभव है। जीवन में १९, ३४, ५९ तथा ६३ वें वर्ष अरिष्ट एवं अपमृत्यु कारक होंगे। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में जलपक्षी की योनि प्राप्त करेगा। अरिष्ट एवं विपत्ति निवारणार्थ नीलम तथा पुखराज धारण, प्रदोष व्रत एवं शंकर की उपासना करना श्रेयस्कर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादशभाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और

साहसी, स्वस्थ तथा कुटुम्ब-हीन, भाग्यवान् और धार्मिक तथा अहिंसक, यात्रा में कष्ट पाने वाला एवं आमदनी से अधिक खर्च करने वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ योऽस्यां च लभते जन्म कुण्डल्यां तस्य भाविनम् । श्रोतुमिच्छाम्यहं तात कृपया वदतां स्फुटम् ॥ भृगु उवाच ॥ सुबुद्धिः वत्स भूयाद्वै सुकर्मणैव जीवितः । विद्वान् भवति सर्वज्ञः धनेशः सर्व पूजितः ॥ राज्यभय समापन्नः विरोध भावना युतः । सुहृदां सेवकः स्त्रीणामुत्सवे सुखमाप्नुयात् ॥ पठनं पाठनम्याञ्च युक्तो ऽधिक व्ययंकरः । कलागुरुश्च वाचालः कल्पनाशील लेखकः ॥ निन्दकः सुमुखो वस्त्रैः शोभनैरावृतः सदा । सुभार्या कामुको वीरः पशुद्रव्य समाप्नुयात् ॥ रोगिणी सततं भार्या औषध्या जीवनं वहन् । सप्तदशतमे वर्षे प्राप्स्यति भाग्य वर्द्धनम् ॥ नवत्रिंशेऽष्ट त्रिंशेद्वि पञ्चाशते भविष्यति । सर्वे योग्याश्च पुत्राः वै कीर्त्या वर्द्धन हेतवः ॥ धार्मिके राजकार्ये च व्ययो ऽस्य शत्रवः सदा । तूर्णिं स्थास्यन्ति सर्वत्र जयं प्राप्स्यति नीरुजः ॥ स्वास्थ्य वैकृति हेतोश्च जीवने ऽष्टादशं तथा । द्वात्रिंश च्चाष्टमं वर्षं बष्टैकषष्ठि संख्यके ॥ षट्पञ्चाशतं सर्व घातकं परमं भवेत् । शूद्रकर्मा क्षत्रियो ऽयं पुरासीद् भाविनो गजः ॥ पित्रोः गृह धरा लाभः मध्यमः श्रीवणास्थितिः । राजकार्ये वहेद्रत्ने मूंगेति लशुनेतथा ॥ एकादशी व्रतं तद्वत् नारायणार्चनं शुभम् । कुण्डल्यामत्र चन्द्रश्चेत् चतुर्थे सप्तमे तथा ॥ लग्ने च दशमे भूयात् स्त्री प्रियः वंशवान्नपि, स्त्री चोरः लम्पटश्चापि राजमान्य सुकर्मवान् ॥



भावार्थ: शुक्र ने कहा — हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनने की मेरी इच्छा है, उसे कृपापूर्वक कहिए। यह सुनकर भृगुजी बोले — हे पुत्र! सुनो, इस कुण्डली वाला जातक

श्रेष्ठ बुद्धिमान्, शुभकर्मों से अपनी आजीविका चलाने वाला, बड़ा विद्वान्, समस्त कलाओं का ज्ञाता, महाधनी, सर्वपूजित, राज्य से भय पाने वाला, विरोधी बातों से युक्त, कलही, पराया काम करने वाला, मित्रों का सत्कार करने वाला, अन्य लोगों से सुख पाने वाला, पठन-पाठन का अभ्यासी, स्त्रियों के उत्सव में सुख पाने वाला, अधिक खर्चीला, कला-कुशल, वाचाल, व्यसनी, काल्पनिक अथवा लेखक, निन्दक, सुन्दर मुख वाला, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, सुन्दरी-स्त्री का अभिलाषी, पराक्रमी एवं पशु-धन प्राप्तकर्त्ता होगा। इसके सभी पुत्र योग्य तथा शिक्षित होंगे। स्त्री सदैव रोगिणी रहेगी तथा औषध के बल पर ही जीवित रहेगी। इसका विवाह १८ अथवा १९ वर्ष की आयु में एवं भाग्योदय २८, ३९ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। इसके पुत्र कीर्ति को बढ़ायेंगे तथा इसकी सेवा करने वाले एवं आज्ञाकारी रहेंगे। धर्म तथा राजकीय कार्यों में धन खर्च होगा। शत्रु दबे रहेंगे तथा इस पर सदैव विजय प्राप्त होगी। यदा-कदा शरीर में पीड़ा के कारण ६, ८, १८, ३२, ५६ तथा ६१ वें वर्ष अरिष्टकारक रहेंगे। सामान्यतः शरीर नीरोग बना रहेगा। यह व्यक्ति पूर्वजन्म में शूद्र-कर्म करने वाला क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में हाथी की योनि प्राप्त करेगा। गृह, भूमि तथा माता-पिता का सुख मध्यम रहेगा। राजकीय कार्यों में सङ्कटापन्न स्थिति बनी रहेगी। लटकुनियाँ तथा मूँगा धारण करने, एकादशीव्रत एवं श्रीनारायण का पूजन-अनुष्ठान करने से लाभ होगा तथा संकट दूर होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो जातक क्रमशः स्त्री-प्रेमी, माता-पिता का भक्त एवं कुटुम्बवान्, स्त्री-हीन तथा स्त्री-लम्पट एवं राजमान्य तथा उत्तम कर्म करने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जातकस्यात्र जातस्य वृत्तं त्रिकाल सम्भवम्। श्रोतुमिच्छामि भाषस्व कृपया परमामुदा॥ भृगु उवाच॥ वंचितोऽयं विलासेन चपलश्चसमंवपुः। व्ययशीलोऽतिवीरश्च मृषापवाद संयुतः॥ पश्यतोहर भीतश्चातिथि सेवारतस्तथा। सत्यवादी कुलघ्नश्च राजेव धन संयुतः॥ विद्या-

-लाक्षश्च दीर्घायुः सरुजो वामनः सदा। जानौ कष्टं कुशीलाया स्त्रियां भोगी रिपुञ्जयी ॥ वातरुग्णः स्वभावेन स्वाभिमानी सक्रोधनः। शिरस्याघात चिह्नं वै दुरात्मा गृहभूपतिः॥ राज्याद् भीतः परित्यक्तः यात्रा हानि प्रमादतः सन्तत्यादुःखिताश्चास्य रोगिण्या वै विवाहितः॥ सप्तदशे भवेदेष रक्तदोषेण पुत्रकम्। विहायात्र चतुर्विंशे वि-योगो भविता तथा॥ पश्चात् गृहे समादाय दौर्भाग्या वर्णसंकराम्। सन्ततिं प्राप्नुयान्नूनं प्रथमः सेवको भवेत्॥ नैकपञ्चाशते वर्षे द्वात्रिंशद्वट् पञ्चाशेषा। भाग्योदयं भवेदस्य प्रथमं सप्तमं तथा॥ सप्तविंशाष्ट त्रिंशञ्च एक पञ्चाशतात्मकम्। नवषष्ठिं त्रयो षष्ठिं परमं घातकं भवेत्॥ त्रिसप्ततितमे वर्षे गृहमुक्त्वा च तीर्थषु। अष्टम्यां कार्तिके मासे शुक्ले मृत्युं व्रजिष्यति॥ स्वर्गलाभोऽवसानेऽस्मै धार्मिकस्थिति सम्भवात्। दुष्टशूद्रः पुरा किन्तु सेवा कृता महात्मनः॥ कुंभेति नीलमंकुर्यात् धारणं पूर्णिमाव्रतम्। सत्यनारायणास्यास्मै सिद्धिदं श्रेयसेऽपि च॥ चन्द्रो यदि भवेल्लग्ने द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे। एकादशेऽथवा भूयात् निर्धनो यो-ग्य पुत्रकः॥ धनवान्नाविकश्चैवे विविधार्थस्य भाजकः। विवेकी धार्मिकश्चा-पि इति ते वत्स चोत्तरम्॥

बु. शु. ८	७ सू. रा.	६ मं.	चं. ५
९	१०	४	
११ गु.	१ के.	३	
१२ श.		२	

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस जन्मकुण्डली का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे वत्स! यह जातक विलास-सुख से रहित, चंचल, समान शरीर वाला, धन-व्ययी, अत्यन्त पराक्रमी, मिथ्यापवादी, चोरों से भय पाने वाला, कलहयुक्त, सत्यभाषी, अतिथि-सत्कार करने वाला, राजतुल्यधनी, कुल-विकारी, धर्मच्युत, राज्य-सेवक, मांसभक्षी, विशाल नेत्रों वाला, दीर्घायु, रोगी, छोटे कद वाला, जाँघ में कष्ट युक्त, कुशीला-स्त्रियों का भोगी, उद्योगी, वातरोग-पीड़ित, स्वभा-व से क्रोधी, अधिक स्वाभिमानी, मुख या मस्तक पर चोट के चिह्न वाला, शत्रुजयी, दुरात्मा, गृह तथा भूमि

से युक्त, शीत-पित्त से दुःखी, राज्य से भय पाने वाला, माता द्वारा परित्यक्त, पुरुषार्थ में आलस्य के कारण हानि उठाने वाला तथा सन्तान की ओर से दुःखी होगा। इसका विवाह १७ वर्ष की आयु में रोगिणी स्त्री के साथ होगा। वात एवं रक्त विकार के कारण इसकी स्त्री एक पुत्र को छोड़कर, २४ वर्ष की आयु में ही इसे विधुर बना कर, मर जाएगी। तदुपरान्त यह दुर्भगा-स्त्री को अपने घर में रखकर उससे वर्ण-संकर सन्तान उत्पन्न करेगा, जो आगे चल कर इसे कष्ट देगी। अन्त में पहली स्त्री का पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। इसका भाग्योदय ३२, ४४ तथा ५६ वें वर्ष में होगा तथा १, ७, २७, ३८, ५१, ६३ तथा ६४ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्ट कारक सिद्ध होंगे। इसकी मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में, किसी तीर्थ क्षेत्र में, कार्तिक शुक्ला अष्टमी बुधवार को ब्राह्ममुहूर्त में भगवत्-चिन्तन करते हुए होगी, जिसके कारण इसे स्वर्ग प्राप्त होगा। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था, परन्तु इसने एक महात्मा की निष्ठापूर्वक सेवा की थी, इसी कारण इसे भविष्य में सद्गति प्राप्त होगी। नीलम तथा मूँगा धारण करने, पूर्णिमा का व्रत एवं सत्यनारायण का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः निर्धन; विवेकी-धार्मिक तथा सुयोग्य पुत्रों का पिता; धनवान् और नास्तिक तथा विविध प्रकार के लाभ पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ भाषस्व तात तस्यैव भविष्यं योऽत्र संभवेत्। कृपया परया पूर्ण श्रोतुमिच्छामि विस्तृतम्॥ भृगु उवाच॥ अतीव शक्ति-सम्पन्नः धार्मिकः पण्डितस्तथा। कुलपतिश्चलः धीमान् शीलवान् विदुषाञ्चरः॥ युद्धहतः प्रवासी च पुत्रवाञ्च कलत्रवान्। श्रुतिश्रोता ऽरिभिश्चैवं सेव्योऽयं दग्धमानसः॥ देवव्याकरणादौ चाश्रद्धास्य व्याकुलो हिया। क्रीड़ादिषु सुखापन्नः कुक्षपार्श्व प्रपीड़ितः॥ स्वाभिमानयुतः भूयात् दैनन्दिने व्ययोऽधिकः। कौटुम्बिकं सुखं पूर्ण सुन्दरीं शीलसंयुताम्॥ जायां प्राप्स्यति विंशाब्दे चतुः

त्रिंशे वियोगवान् । आत्मजाः नास्तिकाः सर्वे स्वस्थं देहं प्रतापवान् ॥ द्वात्रिंशते त्रयो विंशे षट्चत्वारिंशतेऽपि वै । भाग्योदयं भवेदस्य जीवने प्रथमाष्टमे । तृतीयं द्वादशं वर्षं षड्विंशाष्ट त्रिंशते । त्रिन पञ्चाशतं तद्वत् द्वि-पञ्चाशत संख्यकम् ॥ नवदशञ्च ह्यन्यै वै नेष्टान्यपि भवन्ति नु । फाल्गुनस्य त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे रणाजिरे ॥ त्रिन पञ्चाशते मृत्युः पुनर्जन्म न विद्यते । तथापि क्षत्रियो भूयात् क्षत्रियः पूर्व जन्मनः ॥ गुरोः व्रतं तथा मुक्तां धारयेत्पूजनं गुरोः । श्रेयसे वर्तते लग्ने चतुर्थे सप्तमेऽथवा ॥ दशमे यदि चन्द्रोऽस्ति दुराचारी स्त्रियोहरः । स्त्रीणां प्रियो वणिक् श्रेष्ठः राजतुल्यो भविष्यति ॥

९ बु.	८ सू.	शु. रा. ७
१०		६ मं.
११ गु.	५	
१२ श.		४
१ के.	२ चं.	३

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे तात! इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जातक बड़ा शक्तिशाली, धर्मात्मा, पण्डित, अपने कुल में प्रधान, बुद्धिमान, सबका पालक, अल्पमना चंचल, शील-रहित, विद्वानों का सेवक, संग्राम में वीरगति पाने वाला, परदेशवासी, पुत्रवान्, धन-स्त्री-पुत्रादि से युक्त, वाहनादि से युक्त, वेदमन्त्रों का श्रोता, शत्रुओं से सेवित, मन-ही-मन जलने वाला, क्रीड़ा तथा उत्तम कार्यों से सुखी, देवता एवं व्याकरण में अश्रद्धा रखने वाला, पसलीमें पीड़ा का अनुभव करने वाला, अशान्त-चित्त तथा विफल-मनोरथ होगा। यह स्वाभिमानी, आमदनी की अपेक्षा अधिक खर्च करने वाला तथा कुटुम्ब एवं सन्तान से सुखी होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा शीलवती कन्या के साथ होगा, जो ३४ वर्ष की आयु में इसे विधुर बनाकर मर जायेगी। इसके सभी पुत्र नास्तिक विचारों के होंगे। शरीरतः स्वस्थ रहेगा तथा पराक्रम एवं प्रताप श्रेष्ठ बना रहेगा। भाग्योदय २३, ३२ तथा ४६ वें वर्ष में होगा। जीवन में १, ३, ८, १२, १९, २६, ३८, ४० तथा ५२वें वर्ष अरिष्ट एवं अपमृत्यु कारक होंगे। आयु की परमावधि ६८ वर्ष है। फाल्गुन कृष्णा त्रयो-

भृ० सं० ७८७

भा० टी०

-दशी रविवार को मध्याह्न कालमें इसकी मृत्यु होना संभव है। ४८वें वर्ष में भी संग्राम-क्षेत्र में इसकी मृत्यु हो सकती है। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में भी क्षत्रिय होगा। युद्ध-क्षेत्र में मृत्यु होनेपर इसका पुनर्जन्म नहीं होगा। विपत्ति-निवारणार्थ गुरुवार का व्रत, गुरु-पूजन तथा मोती धारण करना लाभप्रद रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभावमें हो तो यह जातक क्रमशः स्त्री-लम्पट और दुराचारी; पूर्ण सुखी; सुन्दरी-स्त्री युक्त व्यवसायी तथा सुन्दरियों का प्रिय एवं राजतुल्य होगा॥ इति॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जीवनस्यास्य किं वृत्तं अस्यां यो लभते जनः। कुण्डल्यां विस्तृतं ब्रूहि श्रोतुमिच्छाम्यहं पितः॥ भृगु उवाच॥ चंचलः शीलहीनोऽयं विदुषां सेवको धनी। मतिश्रेष्ठः प्रकृत्या च दुष्टोऽरूपस्त्रियः पतिः॥ वंशविस्तार हेतुश्च धर्मेच्छुः वै सुवेशवान्। स्त्रीणां भर्ता सुकायश्च कापट्यमनुवर्तते॥ पञ्चगणपतिः रुग्णः वामनो जानुदुःखितः। निर्बलः परदाराभिः सम्बन्धोऽस्य प्रकामुकः॥ भगचुम्बनशीलोऽयं विवाहो विंशते भवेत्। षड्विंशे स्त्रीवियोगश्च परे सेविष्यतेऽथवा वैरिणः प्रबलाः सैश्च प्राणनाशोऽपि सम्भवः। व्ययोऽधिकं सुतौ द्वौ च जारजावस्य कष्टदौ॥ चिन्तिता चरमावस्था भाग्योदयस्य विद्यते। एकत्रिंशैकविंशे वै केन पञ्चाशतं सदा॥ प्रथमं सप्तमं तद्वत् तृतीयाष्टादशे तथा। चतुःत्रिंशैकषष्ठ्याख्ये षट्चत्वारिंशते क्वचित्॥ नवपञ्चाशतं सर्वं जीवनेनेष्टदायकं। अष्टम्याणाद् शुक्लस्याब्देक सप्तति संख्यके। मरणस्यावधिः गेहे हीरकं धारयेद् व्रतम्। शुक्रस्य पूजनं गौर्याः सर्वदाश्रेयसे ध्रुवम्॥ क्षत्रियः पूर्वकालस्य शूद्रश्चाग्रिम जन्मनः। चन्द्रश्चे यदि संतिष्ठेत् द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे॥ एकादशेऽथवा भूपाद् देशाटनप्रियो धनी। स्वस्थ ऐश्वर्य सम्पन्नः जलाद् भीतोऽस्ति वंशतः॥

(कुण्डली)
- ८ सू.
- ९ बु.
- १०
- ११ गु.
- १२ श.
- १ के.
- २
- ३
- ४
- ५ चं.
- ६
- ७ मं. शु. रा.

भावार्थ: शुक्र ने कहा— हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनने की मेरी इच्छा है, उसे कृपा पूर्वक कहिए। भृगुजी बोले— हे पुत्र! सुनो, यह जातक चंचल स्वभाव वाला, शील-रहित, विद्वानों का सेवक, परदेशवासी, चपल-मति, दुष्ट-प्रकृति एवं कुरूपा-स्त्री का पति, धन-कलत्रवान्, उद्यमी, राजतुल्य धनी, अपने कुल का विकारी, धर्म-मार्ग का इच्छुक, उत्तम वंश में उत्पन्न स्त्रियों के साथ विहार करने वाला, सुन्दर शरीर वाला, प्रसन्न, सुखी, कपटी, मलीन, प्रमुख पंच, रोगी, छोटे क़द वाला, जाँघ में कष्ट पाने वाला एवं विषयी-प्रकृति का होगा। यह पर-स्त्रियों से अनुचित-सम्बन्ध रखेगा। भग-चुम्बनशील भी होगा। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा, परन्तु २६ वर्ष की आयु में ही इसकी स्त्री या तो मर जाएगी अथवा किसी अन्य पुरुष के पास चली जाएगी। विरोधी प्रबल होंगे, जिसके कारण इसे हानियाँ उठानी पड़ेंगी। जीवन-हानि भी हो सकती है। आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। पुत्र केवल दो होंगे। वे भी जारज-सन्तान होंगे और सदैव इसके विपरीत चल कर, इसे कष्ट देते रहेंगे। अन्तिम अवस्था अत्यन्त कष्टपूर्ण रहेगी। इसका भाग्योदय २१, ३१ तथा ४८ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ३, ७, १८, ३४, ४६, ५९ तथा ६१ वें वर्ष अरिष्ट एवं अपमृत्युकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु घर पर ही, आषाढ़ शुक्ला अष्टमी रविवार को मध्याह्न के समय ७१ वर्ष की आयु में होना संभव है। हीरा धारण करने, शुक्रवार का व्रत रखने गौरी का पूजन करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में शूद्र होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनी एवं परदेशयात्री और कुटुम्ब से विरोध पाने वाला; विवेकी तथा विद्या-सम्पन्न; नीरोग तथा जल से भय पाने वाला; ऐश्वर्यवान् तथा सुपात्र पुत्रों का पिता एवं भोगी होगा। इति शुभम्॥

उँ शुक्र उवाच ॥ फलादेशं प्रभो मह्यं कथ्यतामस्य देहिनः। जातोऽस्त्यस्याञ्च कुण्डल्यां श्रोतुमिच्छामि तत्त्वतः।
भृगु उवाच ॥ कलहेऽपं प्रवीणः स्याज्जातको लुब्धकोऽपि वै। विषाग्निशस्त्र संत्रस्तः पित्रोः वैरिः व्ययी सदा॥
स्त्रियाखिन्नः महद्भिश्च संतप्तो विमुखो भवेत्। सुकर्मणः श्रमाधीशः दुर्मतिः निर्धनो शुभैः॥ वस्त्रादिभिः व्यया-
पन्नः एकदा बहु द्रव्यवान्। निन्दकः पीडितश्चैवं उदरेण कवीश्वरः॥ प्राप्नुयादभिन्नधी पत्नीं गुणेच्छः
व्यवहारिकः। एक विंशे विवाहः स्यात् द्वात्रिंशेच्च वियोगवान्॥ वाणिज्यं सर्वथा नास्ति उन्नतिः राजसेवया,
व्यभिचाररतस्तद्वत् व्यसन्यरि विरोधिषु॥ विवेकेन जयञ्चास्य सुतौ योग्यौ च सेवकः। व्यक्तिवान् वाणि

९	८ सू. बु.	मं. रा. गु. ७
चं. १०		६
११ गु.	५	
१२ श.	२	४
१ के.		३

गल्भश्च भाग्योदयञ्च विंशते॥ द्वे न पञ्चाशते ऽप्यस्य चतुः त्रिंशे भविष्यति।
प्रथमेकादशे तद्वत् नवत्रिंशं षड्विंशतम्॥ अष्टपञ्चाशतं वर्षे त्रिनपञ्चाशतं
तथा। त्रयोषष्ठिञ्च जीवाय नेष्टं च कृष्ण पञ्चमी॥ मार्गशीर्षस्य स्यादस्मै
जीवनावधिरन्तिमा। नवषष्ठितमे वर्षे मूंगा गोमेधयोस्तथा॥ धारणञ्च
प्रदोष स्य व्रतं शङ्कर पूजनम्। विपन्नष्टं भवेदस्मै यदि चन्द्रोऽत्र संभवेत्॥
तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे सुसहासिकः। रुग्णोमस्तिष्कतोऽप्येष भाग्यवान्
धार्मिको भवेत्॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस जन्म कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले-
हे पुत्र! यह जातक लोभी, कलही, अग्नि-विष-शस्त्र आदि से भय पाने वाला, माता-पिता का विरोधी,
अवनति पाने वाला, अधिक खर्चीला, अङ्ग-हीन, बड़े जनों से सन्तप्त, रोगी, दुष्टमति, धनहीन, निन्दक,
उदरपीड़ा युक्त, स्त्री-पक्ष से दुःखी, अच्छे कर्मों से विमुख, अधिक परिश्रमी, सुन्दर वस्त्र तथा शौक-मौज
के कामों में धन खर्च करनेवाला, एक बार विपुल धन पाने वाला; प्रियभाषी, काव्य-निर्माता, कविश्रेष्ठ,

भृ० सं० ७३८

भा० टी०

व्यवहार-कुशल एवं गुणग्राही होगा। इसकी पत्नी सदैव इसके विपरीत चलेगी। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में कलहकारिणी स्त्री के साथ होगा तथा ३२ वर्ष की आयु में स्त्री से वियोग भी हो जाएगा। इसे व्यवसाय नहीं करना चाहिए। राज्यकर्मचारी पद ही इसके लिए उन्नतिदायक रहेगा। यह अधिक व्यभिचारी होगा, व्यसनी भी होगा। शत्रुओं तथा विरोधियों पर विवेक पूर्वक सफलता प्राप्त करेगा। इसके दो सुयोग्य तथा सुपात्र पुत्र होंगे, जो इसकी भली भाँति सेवा करेंगे। इसकी वाणी में प्रगल्भता रहेगी। भाग्योदय २०, ३४ तथा ४८ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ११, २६, ३९, ४७, ५८ और ६३ वें वर्ष अपमृत्यु तथा हानिकारक सिद्ध होंगे। इसकी मृत्यु ६९ वर्ष की आयु में, मार्गशीर्ष कृष्ण पंचमी मंगलवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, घर पर ही होना सम्भव है। मूँगा तथा गोमेध धारण करने, प्रदोषव्रत रखने एवं भगवान् शंकर का पूजनाभिषेक करने से अरिष्ट एवं आपत्तियों का निवारण होगा। यह जातक पूर्व जन्म में बुद्धिमान् क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में भील होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी; रोगी और हानि उठाने वाला; परम धार्मिक और सौभाग्यशाली तथा दरिद्र, चोर एवं मस्तिष्क-रोगी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ देहं यो लभतेऽस्मिन् वै ग्रहक्षेत्रे वदस्व तत्। भविष्यं तस्य जीवस्य कृपया श्रावयन्तु मे॥ भृगु उवाच॥ नीतिज्ञो धर्म सर्वज्ञः बुद्धिमान् श्रेष्ठ वंशजः। सर्वेषां पालकः सत्ये भाषते धर्म वर्द्धकः॥ देवब्राह्मणयोः प्रीतिः बालरुग्णो धनाधिपः। यौवने धैर्यवान् भीतः सुरूपो दीर्घजीवनम्॥ चपलो दुष्ट भार्यायाः पतिश्च शोभनस्तथा। धर्ममार्गेऽस्य वृत्तिश्च स्त्रीणां पतिः सुवंशजः॥ अतिथि सेवकः पञ्च गणेशः दुर्जनैः भयम्। वाणिज्ये राज्य योगेन विघ्नात् हानिर्भविष्यति॥ तथापि धर्म धैर्याभ्यां मभावो नास्ति विक्रये। मादकानां तथा शुक्ल वस्तूनां

मृ० सं० ०३०

भा० टी०

लाभ वर्द्धनम् ॥ विद्याहीनो ऽपि संभूयो ऽयं विवेकेन जनैः सदा । आश्विनस्य त्रयोदश्यां वर्षेऽष्टषष्ठि सं-ख्यके ॥ कृष्णपक्षे सुतानाञ्च सेवा पूर्व भजिष्यति । तदा भगवतो ध्यानात् पुनर्जन्म न विद्यते ॥ त्रयोवि-शे विवाहश्च भाग्योदयञ्च सम्भवेत् । त्रयोविंशाष्ट विंशेच अष्टत्रिंशे ऽपि जीवने ॥ अष्टादशाष्ट वर्षे च प्रथमञ्चत्रिवष्ठिकम् । नैकषष्ठिं द्वित्रिंशञ्च द्वैन पञ्चाशतं सदा ॥ जातकं वर्तते पूर्व क्षत्रियो धार्मिको ऽभवत् । एकादशी व्रतं विष्णोः पूजनं धारणं तथा ॥ पन्नकस्य शुभायास्मै चन्द्रश्चेयदि सप्तके चतुर्थे दशमे लग्ने स्त्रीप्रियः राजसम्मतः ॥

१०	८ बु.	मं. ७ मु. रा.
गु. ११	९ सू.	
१२ श.	६	
के. १	३ चं.	५
२		४

भावार्थ- शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस जन्मकुण्डली का जीवन-फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे वत्स! यह जातक श्रेष्ठ नीतिज्ञ, धर्मात्मा, बुद्धिमान्, उत्तम कुलवा-ला, सबका पालक, सत्यवक्ता, स्वकुल का हितू, देवता तथा ब्राह्मणों में अनुरक्त, बाल्यावस्था में रोगी, युवावस्था में धैर्यवान्, महाधनी, दीर्घायु, सुन्दर, चपलमति, दुष्टा एवं कुरूपा-स्त्री का पति, अतिथि-सेवी, पुत्रवान्, उत्तम कुल में उत्पन्न स्त्रि-यों का स्वामी, छोटे क़द वाला, प्रसन्नमुख, सुखी, पंचों में प्रधान तथा दुष्ट जनों से भयभीत रहने वाला होगा। इसे विद्याध्ययन तथा राजकीय कार्यों में अनेक विरोध एवं व्यवधानों के कारण पूर्ण सफलता प्राप्त न होगी, परन्तु अनुभव एवं विवेक तथा श्वेत रंग की वस्तुओं अथवा मादक-द्रव्यों के व्यापार से इसे पर्याप्त लाभ होगा। पुत्र एवं कन्या समान संख्या में होंगे। इसकी मृत्यु ६८ वर्ष की आयु में, आश्विन कृष्णा द्वादशी गुरुवार को रात्रि के द्वितीयप्रहर में भगवच्चिन्तन करते हुए, अपने ही घर में होना सम्भव है। इसका पुनर्जन्म नहीं होगा। विवाह २३वें वर्ष में तथा भाग्योदय २३, २८ एवं ३८वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ८, १८, ३२, ४८, ५९ तथा ६२वें

वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्ट कारक रहेंगे। पूर्वजन्म में यह धर्मात्मा क्षत्रिय था। पन्ना धारण करने, एकादशी का व्रत रखने तथा विष्णु भगवान का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परमसुन्दर एवं स्त्री प्रिय, पूर्ण सुखी, स्त्री-प्रिय तथा राजमान्य होगा ॥ इतिशुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ वर्ण्यतां जातकस्यास्य भविष्यं कृपया प्रभो। श्रोष्याम्यहं कथं याच्येत् कृपया परया तदा ॥ भृगु उवाच ॥ व्यवहारे सुशीलस्यात् विनम्रः शिष्य हिंसुकः। गुणग्राही परे चाऽन्योपकारं कुरुते धनी ॥ वैभवेणापि संयुक्तः निषिद्ध कर्मकारकः। कुलस्य पालकः स्त्रीभिः सुखं प्राप्नोति पैतृकम् ॥ प्राप्त्वा द्रव्यं भुजैश्चापि द्रव्य संचयकारकः। अङ्गहीनः सुसन्तप्तः वपुसा कृपणस्तथा ॥ धर्मे प्रीतिः विवाहश्च एकविंशे भविष्यति। भाग्योदयस्य वर्षाणि षड्विंशाष्ट पञ्चाशतम् ॥ चत्वारिंशे कमस्यास्ति स्वस्यो भार्या च सुन्दरी। सन्तत्याश्चिन्तितोऽप्येष सुतश्चैकोऽस्ति सेवकः ॥ वादेशनुषु प्राप्नोति विजयं जीवनेऽशुभम्। प्रथमं सप्तमं वर्षं चतुर्विंशन्नवत्रिंशतम् ॥ त्रिचत्वारिंशतञ्चाब्दं त्रिपञ्चाशत संख्यकम्। षट् पञ्चाशतञ्चाब्दे त्रिसप्तति संख्यके ॥ कार्तिकस्य द्वितीयायां मृत्युश्च धर्म चिन्तने। अतः मोक्षं प्रयात्येष क्षत्रियो ज्ञानवान् पुरा ॥ शुक्रव्रतं गणेशस्य पूजनं हीरकस्य च। धारणं श्रेयदञ्चास्मै चन्द्रश्चेद् नवमे भवेत् ॥ तृतीये द्वादशे षष्ठे भविता सुसहासिकः। विवादेधन लाभश्च भाग्यवान् जलभीतियुत् ॥ विदेशे ष्वटनं कुर्यात् व्ययशीलो भविष्यति। धार्मिकः परमश्चैवं वर्तते तस्य भाविनम् ॥

भाव	ग्रह
९ (लग्न)	सू. बु.
१०	—
११	गु.
१२	श.
१	के.
२	—
३	—
४	—
५	चं.
६	—
७	मं. रा.
८	शु.

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे प्रभो! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए।

भृगुजी बोले - हे जिज्ञासु ! यह जातक विनयी, व्यवहार में सुशील, गुण-ग्राहक, उपकारी, वैभव-सम्पन्न, कलही, जीव-हिंसक, निषिद्ध कर्म कर्त्ता, धनी, रोगी, कृपण, उदर-रोगी, विनम्र स्वभाव वाला, कुल-पालक, कला-कुशल, स्त्रियों से सुख पाने वाला, शौक-मौज में धन खर्च करने वाला, अङ्ग-हीन, सन्तप्त-शरीर वाला, अधिक क्रोधी मित्रों का हितैषी तथा संतोषी होगा। पैतृक-सम्पत्ति के लाभ के साथ ही यह स्वभुजोपार्जित धन का भी पर्याप्त संचय करेगा। कठिनाइयों के साथ राजसमाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। धर्म-कर्म में प्रीति रखेगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होगा तथा भाग्योदय २६, ४१ एवं ५८ वें वर्ष में होगा। शरीर स्वस्थ एवं नीरोग रहेगा। स्त्री सुन्दर तथा धार्मिक विचारों की होगी। सन्तान की ओर से चिन्तित रहेगा। केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। शत्रु पर तथा विवादों में सदैव विजय प्राप्त करेगा। इसके जीवन के १, ८, ११, २४, २९, ४३, ५३ एवं ५६ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में कार्तिक शुक्ला द्वितीया को धार्मिक-चिन्तन करते हुए होगी, अतः इसका पुनर्जन्म नहीं होगा। यह जातक पूर्व जन्म में ज्ञानी क्षत्रिय था। हीरा धारण करने, शुक्रवार का व्रत रखने तथा गणपति का पूजन करने से अरिष्ट शांत होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी, मुकद्दमे द्वारा धन प्राप्त करने वाला और विदेश यात्री; भाग्यवान् तथा परम धार्मिक एवं खर्चीला तथा जल से भय पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जन्म यो ऽत्र लभेत्तात: ग्रहमण्डल संग्रहे। भविष्यं याति तस्यात्रो कीदृशं वद सन्मुखम्॥ भृगु उवाच॥ जिज्ञासो ऽत्र जनो जात: योऽपि क्रोधेन संयुत:। भक्ति स्वजनै: सार्कं धीमान् क्षीण सुहृत् सखा। व्ययशीलो ऽधिकस्तुष्ट: महद्भिस्तप्त देहवान्। अङ्गहीन: स्त्रिया खिन्न: विमुखश्च सुकर्मण:॥ पापात्मा निन्दको नम्र: भवत्येवाधि पीड़ित:। जठरेण तथा दन्तै: दुःखितो हिंस्रक: पटु:॥ व्यवहार

निषिद्धानां कर्त्ता वैभव संयुत: । सुवेशो नैष सम्बद्ध: गुणेच्छु: सर्वपालक: ॥ स्वाभिमानेन क्रोधेन विवेकेनापि संयुत: स्वभावो वर्तते चास्य सन्तत्या चिन्तितोऽपि च ॥ सुताधिका: सुतश्चैक: सेवकोऽपि भविष्यति । बृहद् कुलं तथा तेन विवादोऽस्य स्वतोऽरय: ॥ निपातमन संक्रोशं तूष्णीं स्थास्यन्ति जेष्यति । विवादेषु राजद्वार प्रसाधने व्ययी भवेत् ॥ विवाहश्चत्रयोविंशे वियोगश्च तया सह । षट्चत्वारिंशते चाब्दे भाग्योदयस्य हेतवे ॥ त्रयोविंशाष्ट त्रिंशश्च सप्तपञ्चाशतं सदा । प्रथमाष्टम वर्षेऽस्य तृतीयश्चैक त्रिंशतम् ॥ नैकविंशं त्रयोविंशे द्विचत्वारिंशतं तथा । चतु: पञ्चाशतञ्चापि जीवनाघात दायकम् ॥ चतु: सप्तति वर्षायौ वैशाख कृष्णस्याष्टमी । मृत्यवे च भवेदस्मै पन्नकं धारयेत् सदा ॥ व्रतं बुद्धस्य पूजा च कुर्याद-शिवतियो: कृते । श्रेयसे जीवने चन्द्र: द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे ॥ एकादशेऽस्ति पद्मस्य प्रवासी सुकृतो विद: धनेश: पूर्व गन्धर्व: ब्राह्मणश्च भविष्यति ॥

१० चं.	बु. शु. ८	७ मं. रा.	
११ गु.	९ सू.		
१२ श.	६		
१ के.	३	५	
२	४		

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस जन्मकुण्डली का फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक स्वजनों से कोपयुक्त, बड़ा बुद्धिमान्, महाधनी, मित्रों का हित, पूर्ण सन्तोषी, अधिक खर्चीला, अङ्गहीन, बड़े जनों से सेतप्तशरीर वाला, स्त्री-पक्ष से दु:खी, श्रेष्ठकार्यों से विमुख, अधिक परिश्रमी, नेत्र-दु:ख पाने वाला, रोगी, पापी, निकले दाँत और पेट के रोगों से पीड़ित, कलही, जीव-हिंसक, निषिद्ध कर्म करने वाला, व्यसनी, विनयी, व्यवहार-कुशल, गुण ग्राहक, वैभवशाली, नीतिज्ञ, श्रेष्ठकुल से सम्बद्ध, सब का पालक, क्रोधी तथा विवेकयुक्त स्वाभिमानी होगा। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी । पुत्रों की संख्या अधिक होगी, परन्तु केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा । कुटुम्ब बड़ा होगा, परन्तु कुटुम्बियों से मतभेद बना रहेगा। शत्रु सदैव दबे रहेंगे । मुकदमों में सफलता प्राप्त होगी । [illegible] इसका खर्च अधिक होगा । इसका विवाह २३ वर्ष की आयु

मे होगा तथा ४६ वें वर्ष में ही पत्नी का वियोग भी हो जाएगा। भाग्योदय २३, ३८ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ३, ८, १९, ३१, ४२, ५४ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्ट कारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ७४ वर्ष की आयु में, वैशाख कृष्णा अष्टमी शनिवार को मध्याह्न के समय होना सम्भव है। पन्ना धारण करने, बुधवार का व्रत रखने तथा अश्विनीकुमारों का पूजन करने से लाभ होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो जातक क्रमशः धनी और परदेशयात्री; विद्वान् और सत्कर्म करने वाला; अनायास धनका लाभ पाने वाला एवं पूर्ण धनी होगा। यह जातक पूर्वजन्म में गन्धर्व था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण शरीर प्राप्त करेगा॥ इति शुभम्॥

११ गु. | ९ बु. | १० सू. | ८ शु. | १२ श. | १ के. | मं. रा. ७ | २ | ४ चं. | ६ | ३ | ५

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकालज्ञ: त्रिकालस्य भविष्यं तस्य वर्ण्यताम्। योऽस्यां जन्मकुण्डल्यां लभते जन्म सुनिश्चितम्॥ भृगु उवाच॥ अत्र जातो भवेत्पुत्र: क्षुद्रकर्त्ता इति लुब्धक:। बहुसन्तातिवान्नैव आलस्यो श्रम संयुत:॥ कुटुम्बेन विरोधश्च पर्यटन प्रियस्तथा। नातिधनी हितेच्छुभि: बान्धवै: संयुत: सदा॥ विमुतोत्सव हीनोऽयं राज्यमान्योऽङ्गनासु वै। नूतनास्वपि प्रीतिश्चातिनम्रो ऽल्प सुखान्वित:॥ हिंस्रको दन्त रुग्णश्च कृपणो निन्दकस्तथा। सुशिल्पी पालकश्चैवं वंशस्य धन वर्द्धनम्॥ यदा कदैव धार्मिका चतुर्विंशे विवाहित:। भवेद्भाग्यस्य वृद्धिश्च षोडशेऽपि द्वित्रिंशते॥ द्विन पञ्चाशते भूपात् यात्रा वैदेशिकी शुभा। स्वस्थवपु: द्विषान्नित्यं पराजयं भविष्यति॥ सन्तौ हि सुताधिक्यं किन्तु द्रविण सेवकौ। विद्वांसश्च भवेयुस्ते स्वयञ्च पण्डितो महान्॥ जीवनेऽष्टम वर्षे वै प्रथमामष्टविंशताम्। चतुर्दशाष्ट पञ्चाशे षड् षष्ठ्यष्ट विंशते॥ घातकानि भवन्त्यस्मै क्षत्रिय: पूर्वकालिक:। ब्राह्मणोऽयं भवेदग्रे मृत्यु श्वासस्य पीडया॥ तीर्थे फाल्गुन कृष्णे ऽस्य दशम्यां सप्तषष्ठिके। वर्षे भवति चन्द्रश्चेत् चतुर्थे

सप्तमे तथा ॥ लग्ने च दशमे वा स्यात् सुरूपश्च निर्वंशक: । बहुस्त्रीभिश्च सम्बन्ध: वाणिज: शुक्ल वस्तुत: ॥
तेन लाभ नृपेणासौ मान्य: स्यात् पन्नकं वहेत् । वरुणार्च्चन पूजावै शुभाय द्वादशी व्रतम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस जातक का जीवन-फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे वत्स! सुनो, यह जातक नीचकर्म करनेवाला, अधिक सन्तानों वाला, अत्यन्त कृपण, आलसी, नष्ट उद्यमी, भ्रमणशील, कुटुम्ब विरोधी, अल्पधनी, उत्सव एवं विभुता-रहित, हितैषी मित्रों वाला, राज्य से सुखी, विनम्र, कुल पालक, राज्य से सम्मान पाने वाला, नवीन स्त्रियों के वैभव से प्रीति रखने वाला, स्त्रियों से सुख पाने वाला, कला कुशल, रोगी, दन्तरोगी, जीवहिंसक, निन्दक, व्यसनी, कभी-कभी धन पाने वाला एवं गुणग्राही होगा, इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा धार्मिक स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय १६, ३२ तथा ४८ वें वर्ष में होगा । विदेश-यात्रा का योग भी है, उससे लाभ भी होगा। शरीर स्वस्थ रहेगा तथा विरोधी हार मानते रहेंगे । पुत्रों की संख्या अधिक होगी । वे सभी योग्य तथा विद्वान् होंगे, परन्तु केवल दो पुत्र ही इसके पास रहते हुए इसकी सेवा करेंगे । यह स्वयं भी शिक्षित तथा विद्वान् होगा । इसके जीवन के १, ८, १४, २८, ४१, ५८ तथा ६६ वें वर्ष अपमृत्यु कारक एवं हानिप्रद रहेंगे । यह व्यक्ति पूर्व जन्म में उग्रकर्मा क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में विद्या-सम्पन्न ब्राह्मण होगा । इसकी मृत्यु ६७ वर्ष की आयु में फाल्गुन शुक्ला दशमी रविवार को प्रात: काल हृदय-रोग अथवा श्वास-पीड़ा के कारण किसी तीर्थ-क्षेत्र में होना सम्भव है । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमश: सुन्दर स्त्रियों का भोगी और रूपवान्; कुटुम्ब-विरोधी और गृह-विहीन; अनेक स्त्रियों का प्रेमी और स्त्री-प्रिय तथा श्वेत रंग की वस्तुओं के व्यवसाय से लाभ पाने वाला तथा राज्य द्वारा सम्मानित होगा। पन्ना धारण करना, द्वादशी का व्रत रखना तथा वरुण-पूजन करना हितकर रहेगा । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ।। तात तस्य फलादेशं वर्ण्यतां योऽत्र जायते । कुण्डल्यां कृपया मह्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं तत ।।
भृगु उवाच ।। तीव्रो गुणी सुखी भूयात् दानवानपि योजन: । जायते जन्म कुण्डल्यां यस्यां मानी मृदु:गिरा ।। रतोऽयं नृत्यगीतादौ रुचिवान् नीलवर्णिक: । वार्द्धक्ये रोग संयुक्त: पुज्यश्चास्याप्यु भाग् भवेत् ।। सकलत्र सुरूपश्च देवगुरु सेवकस्तथा । ब्राह्मणानाञ्च राजेव धनवान् वंशघातक: ।। धर्मस्थश्च विशालाक्ष: पञ्चगणपति: भवेत् । वामन: जानुत्रस्तश्च मांसभोजी सुदुर्बल: ।। धार्मिकी सुन्दरी पत्नी प्राप्स्यत्येष अष्टादशे । एकविंशेऽथवा भाग्यं नैकविंशेऽष्ट त्रिंशते ।। द्विन पञ्चाशते वर्षे उदयं यातु निश्चितम् । स्वस्थोऽपि रोगग्रस्तोऽयं द्विपञ्चाशस्य चान्तरम् ।।

११ गु०		९ बु०
१२ श०	१० सू०	८ मं० शु०
१ के०		७ रा०
२ चं०	४	६
३		५

वैरिणोऽभावोऽस्मै वै कुटुम्बात् तप्त हृद भवेत् । विद्वांसो नास्तिका पुत्रा: षट् ते त्वेको हि सेवक: ।। राज्यमानस्तु स्वल्पोऽस्मै राज्यं सेवन् धनार्जयेत् । सुकर्मव्याप्शीलोऽयं जीवने सप्तत्रिंशतम् ।।द्वाविंशं नैक पञ्चाशं हान्यै मृत्यु कराणि वै । माघ शुक्ल चतुर्दश्यां तीर्थे तद्वद् गृहेऽथवा ।। नैक षष्ठ्यां भवेत् मृत्यु: शिरोरोगेण धारयेत् । रविवासर व्रतं पाठमादित्य हृदयस्य वै ।। माणिक्यञ्चापि लाभाय गजोऽयं पूर्व जन्मन: । भविता वैश्य वंशे च यदि चन्द्रोऽस्तु पञ्चमे ।। द्वितीयैकादशे तद्वत् अष्टमे वैव सम्भवेत् । कृपणो धनवान् भीत: जलाद्भयवान् विवेकवान् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे तात! इस जन्मकुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहें । भृगुजी बोले- हे वत्स ! यह जातक तीव्र स्वभाव का, गुणी, सुखभोगी, दानी, अभिमानी, मृदुल, पवित्र, नृत्य-गीतादि का प्रेमी, क्लेश-रहित, नीलवर्ण, वृद्धावस्था में रोगी, अल्पायु, पुत्र-कलत्रवान्, सुन्दर मुखवाला, धर्म-कर्म में रत, राज्यसेवक, ब्राह्मणों का भक्त, राजतुल्य धनी, कुल-विकारी, छोटे कदवाला, जाँघ में कष्ट पाने वाला, विशाल नेत्रों वाला, मांसाहारी, पचास वर्ष की आयु तक दुर्बल शरीर वाला होगा। धार्मिक विचार या अथवा

२१ वर्ष की आयु में सुन्दर, धार्मिक तथा गुणवती कन्या के साथ होगा। भाग्योदय १९, २६, ३८ तथा ४८ वें वर्ष में होगा। शरीर प्राय: स्वस्थ रहेगा, परन्तु ५२ वर्ष की आयु के बाद बीमारी बनी रहेगी। विरोधी कोई न होगा, केवल कुटुम्बियों का विरोध ही हृदय को सन्तप्त करता रहेगा। पुत्र ६ होंगे, जो सभी विद्वान् तथा नास्तिक होंगे। केवल एक पुत्र धर्मात्मा तथा पितृ-भक्त होगा। राज्य के किसी पद पर नौकरी करते हुए सामान्य धन-संचय होगा तथा धन का खर्च उत्तम कार्यों में होगा। जीवन के २२, ३७ एवं ४९ वें वर्ष अपमृत्युकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु किसी तीर्थ जैसे स्थान में अथवा अपने ही घर में ५९ वर्ष की आयु में, माघ शुक्ला चतुर्दशी, मंगलवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में होना संभव है। माणिक्य, धारण, रविवार का व्रत तथा आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ लाभकारी रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में हाथी की योनि में था तथा भविष्य में वैश्य होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमश: धनी, विद्वान्, जल से भय पाने वाला तथा अल्प लाभ पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
१० (लग्न)	सू. बु.
११	गु.
१२	श.
१	के.
२	
३	
४	
५	
६	चं.
७	रा.
८	मं.
९	शु.

ॐ शुक्र उवाच॥ जीवस्य तस्य किं भाव्यं योऽस्यां जातोऽस्ति वर्ण्यताम्। कु-ण्डल्या तात सम्पूर्ण श्रोतुमिच्छाम्यहं तत:॥ भृगु उवाच॥ वत्सास्यां जन्म कुण्डल्यां जातो भवति निर्धन:। भ्रमणे रुचिवान् वैरि: कुटुम्बस्य निरुत्सव:॥ शस्त्राग्नि विष संत्रस्त: स्त्री पुत्रै: सुखभाग् भवेत्॥ सर्व जयोऽपि शत्रुभ्य: भीत: बुद्ध्या बलेन च॥ रहित: कृपणो दन्तो: उदरेण प्रपीड़ित:। निन्दको विनतो दक्ष: व्यवहार गुणग्राहक:॥ पूर्ण वैभव सम्पन्न: सदा रुग्णाति चिन्तिता। परं रूपवती भार्या चतुर्विंशे मिलि-ष्यति॥ सप्तत्रिंशेऽष्टविंशे च डापञ्चाशे भवेत् ध्रुवम्। अस्य भाग्योदयं व्याप्त: चिन्तया सन्तते: सदा॥ वीर्य दोषेण सन्तत्या अभावोऽस्मै भविष्यति। शत्रु विरोधिन स्यास्ति जयं गुह्यं विवेकत:॥ क्रोधेनैव

विवेकाद्वै गतकार्याणि साधयेत्। धनाभावेऽपि कार्यस्य नवरोधोऽस्ति सेवक:॥ राजस्य भवेदेव परं नास्ति प्रतिष्ठित:। परोक्षे शुक्लवस्तूनां व्यापारे लाभवान् परम्॥ अत्यासक्त्या भवेद्धानि: जीवने सप्तमे तथा। सप्त दशे तृतीयञ्च त्रिषष्ठिश्चैक त्रिंशतम्॥ द्विन पञ्चाशतं हान्यै नेष्टं वास्मै भवन्तु वै। मूँगेति हीरके रत्ने धारयेत्पूर्णिमा व्रतम्॥ अर्यमापितृश्वराणां पूजनं श्रेयसे सदा। शृणु: शूद्र: पुराऽभूद्वै क्षत्रियवंशजो भवेत्॥ नवम्यां कृष्ण वैशाखे वर्षेऽष्ट षष्ठि संख्यके। मधुमेहेन मृत्युश्च तृतीये द्वादशे तथा॥ षष्ठे च नवमे चन्द्र पक्षस्यास्ति भविष्यति। श्रमवान् धार्मिक: स्वस्थ: शिश्वर्यै व्यय कारक:॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले – हे वत्स! सुन, यह जातक भ्रमणकर्ता, स्वकुटुम्ब-विरोधी, धनहीन, उत्सव-रहित; विष, अग्नि तथा शस्त्र से भय पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि के सुख से मुक्त, सर्वजयी, शत्रुओं से भीत, बुद्धि तथा बल हीन, अल्पकामी, पर-सेवक, कृपण, पर-निंदक, दन्त तथा उदर रोगी, शीलशील स्वभाव वाला, विनयी, व्यवहार-कुशल, गुणग्राहक, उपकारी तथा वैभव सम्पन्न होगा। यह कामक्रोधी भी होगा। इसका २४ वर्ष की आयु में सुन्दरी, परन्तु खिन्न मन तथा सदैव रोगिणी बनी रहने वाली स्त्री के साथ होगा। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी अथवा संतान होगी ही नहीं। भाग्योदय २८, ३६ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। शत्रुओं तथा विरोधियों बुद्धि, विवेक एवं गुप्त उपायों द्वारा सदैव सफलता प्राप्त करेगा। स्वभाव में क्रोध के साथ विवेक भी रहेगा, अत: बिगड़े कार्य बन जायेंगे। धन की कमी रहने पर भी सब काम चलते रहेंगे। राजकीय सेवा में कोई उच्चपद प्राप्त नहीं होगा। श्वेत वस्तु के व्यवसाय से लाभ का योग प्राप्त होगा, परन्तु अधिक आसक्ति के कारण हानि भी होगी। जीवन के ३, ७, १७, ३१, ४८ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। मूँगा धारण करने, अथवा हीरा पहनने, पूर्णिमा का व्रत करने तथा अर्यमा पितृश्वरों का पूजन करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा

लाभ प्राप्त होगा। यह पूर्व जन्म में शान्त स्वभाव का शूद्र था तथा अगले जन्ममें क्षत्रिय होगा। इसकी मृत्यु ६८ वर्ष की आयुमें वैशाख कृष्णा नवमी सोमवार को, रात्रि के द्वितीय प्रहर में, मधुमेह रोग के कारण अपने घरमें ही होना सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी; स्वस्थ और सुन्दर; धार्मिक परन्तु भाग्यहीन तथा ऐश्वर्यादि में अधिक खर्च करने वाला होगा॥ इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रैकालिकं फलं ब्रूहि अस्यां कुण्डलिजस्य वै। जातकस्य हि सर्वज्ञ पृच्छामि श्रोतु कामतः॥

भृगु उवाच॥ स्थिर मनो वृतः मित्रैः परभार्यारतस्तथा। कोमलाङ्ग सुखापन्नः धनवान् जातको भवेत्॥ गुणज्ञो दुर्बलः स्त्रीणां मनोहरश्चलस्तथा। जाति वर्गस्य मोदस्य सयत्नः मंगलप्रियः॥ अधि-कारिषु मुख्यो ऽयं श्यामः स्त्रीणां प्रियः क्वचित्। तीर्थयात्रां करोत्येष वंशस्य हित साधकः॥ धर्मेच्छुश्च विशालाक्षः देवब्राह्मण सेवकः। स्वाश्रितो वामनश्चैवं उत्साहेन समन्वितः॥ प्रतिष्ठितो ऽस्ति राज्ये वा राजतुल्यः स्वयं भवेत्। पैतृक द्रव्य लाभश्च कुटुम्बेन मता न्तरम्॥ विवाहः क्रूरया शाके परं विवेक मुक्तया। षड् विंशतमे वर्षे भवतु भाग्यवर्द्धनम्॥ सप्तत्रिंशैक विंशैवं त्रयोपञ्चाशते भवेत्। विलम्बेनापत्ययोगो ऽस्य प्रथमं नष्टतां व्रजेत्॥ पुत्राणाञ्चाधिका संख्या परमेको हि सेवकः। पराक्रमेण शत्रून् वै जेष्यत्येष प्रथक् वसेत्॥ प्राप्तः गृहादसौ वर्षे तृतीयञ्च त्रयोदशम्। प्रथम-न्नैक विंशञ्च द्विपञ्चाशाष्ट त्रिंशतम्॥ त्रयोषष्ठिं विघातायं जीवनेऽस्य भविष्यति। धीमानुग्रश्च शूद्रो ऽयं आसीत्पूर्व कपोतकः॥ भविष्यैष भवेत्पुत्राः नास्य कीर्ति विस्तारकाः। पूजां हनुमतः कुर्यात् व्रतं शनैश्च श्रेयसे॥ मूंगेति नीलमे रत्ने धारयेत् शुभहेतवे। एक सप्तति वर्षायो वस्ति रोगेण सम्भवेत्॥ भाद्र शुक्ल त्रयोदश्यां मृत्युः गेहैव चन्द्रमाः। चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे वा भविष्यति॥ तदा सौम्यो भवेदेष कृपणो

१२ श.	११ सू. बु. गु.	१०
१ के.		९ शु.
२ चं.		८ मं.
३	५	७ रा.
४		६

वंश पूरित: । राज्य बन्धन योगो ऽस्य स्त्रीजिदित्येव विस्तृतम् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे त्रिकालज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे वत्स! सुनो, यह जातक स्थिर-चित्त वाला, अधिक मित्रों वाला, पर-स्त्री रत, कोमलाङ्ग, अत्यन्त सुखी, बड़ा धनी, राज्यकर्मचारी, गुणज्ञ, दुर्बल शरीर वाला, स्त्रियों के मन को मोहने वाला, चपल, जातिवर्ग को प्रसन्नता दायक, मुख्याधिकारी, बड़ा पराक्रमी, बुद्धिमान्, स्व-वंश हितैषी, स्त्रियों को प्रिय, सुन्दर, श्यामवर्ण, विशालनेत्रों वाला, धर्म-मार्ग का प्रेमी, तीर्थ-यात्री, देवता तथा ब्राह्मणों का भक्त, स्वभुजाश्रयी, अत्यन्त उत्साही तथा छोटे क़द वाला होगा। इसे पैतृक-सम्पत्ति का लाभ होगा तथा कुटुम्ब से विरोध भी रहेगा। राज्य में बड़ा पद अथवा सम्मान प्राप्त होगा। इसका विवाह क्रूर-स्वभाव, परन्तु विवेकयुता स्त्री के साथ २६ वर्ष की आयु होगा। भाग्योदय २१, ३८ तथा ५३ वें वर्ष में होगा। सन्तान कुछ विलम्ब से होगी। प्रथम सन्तान नष्ट होगी। पुत्रों की संख्या अधिक होगी, परन्तु केवल एक ही पुत्र सेवा करेगा। शत्रुओं पर अपने पराक्रम से सदैव विजय पायेगा। अपने जन्म-स्थान से अलग रहकर जीवन बिताना पड़ेगा। इसके पुत्र इसकी कीर्ति को स्थिर नहीं रख सकेंगे। इसके जीवन के १, ३, १३, १८, ३८, ५२ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। यह पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में कपोत योनि ग्रहण करेगा। मूँगा तथा नीलम धारण करना, शनिवार को व्रत रखना तथा हनुमानजी का पूजन करना लाभप्रद रहेगा। इसकी मृत्यु ७१ वर्ष की आयु में, भाद्रपद शुक्ला त्रयोदशी, सोमवार को, मध्याह्न काल में, वस्ति-पीड़ा के कारण घर में ही होना सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमश: परम सुन्दर और कृपण; पूर्ण कुटुम्बी और सुखी; स्त्री-जित तथा राज्य द्वारा बन्धन प्राप्त करने वाला होगा।

इस कुण्डली का यही फलादेश है ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ।। नाथ किं तस्य जीवस्य त्रैकालिकं फलं वद । योऽस्यां जातोऽस्ति कुण्डल्यां श्रोतुमिच्छामि मूलतः ।। भृगु उवाच ।। धूर्तो भवत्यसौ प्राणी: दुर्भावना युतः सदा । सुहृद्हीनः दयाहीनः विषाग्निशस्त्र पीड़ितः ।। सुखवान् पत्नि पुत्रैश्च जयं सर्वत्र प्राप्नुयात् । ब्रह्मभक्तश्च देवानां पूजकः दुर्मतिः व्ययी ।। सुस्त्रीषु प्रीतिवान्नेष वृद्धया रमते क्वचित् । रुग्ण उदरतश्चैवं दुर्बलश्चिन्तितोऽधिकम् । कवीश्वरेषु प्रीतिश्च विजनेषु च वत्स्यति । सुशीलो व्यवहारे च बुद्ध्यां वाणौ च दीर्घता ।। अधार्मिकीं परोक्षे चोदारां भार्यां च प्राप्नुयात् । पञ्चविंशतमे वर्षे मन्दश्री दुर्बलोऽपि च ।। सन्ततिश्च विलम्बेन भविताऽस्य हि द्वौ सुतौ । प्राप्स्यत्येष स्वयं प्रज्ञा विलक्षणा भविष्यति ।। वैरिणः प्रबलाः राज्ये माने वा राजसंसदि । प्रतिष्ठितश्च भाग्यस्य वृद्धिरस्य भविष्यति ।। अष्टविंशे तथा पञ्चचत्वारिंशत संख्यके । क्षीणदन्तश्च मध्याधौ स्वस्थश्च जीवने वसेत् ।। प्रथमं सप्तमं नैक चत्वारिंश द्वित्रिंशतम् सप्तदश चतुःषष्ठि त्रिपञ्चाशञ्च जीवने ।। घातकं परमञ्चास्मै तपस्वी ब्राह्मणः पुरा । आसीदेष भवेदग्रे वर्णसंकर मानवः ।। हीरकं धारयेच्छम्भोः पूजनं दशमीतिथौ व्रतं लाभाय चन्द्रोऽस्यां द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे ।। एकादशे तदाभूयात् धनेशः पुत्रवान्नपि । जलाद्भीतश्च भोक्ता वै ऐश्वर्याणां विवेकवान् ।।

श. बु. १२
११ सू. गु.
१० शु.
९
१ के.
२
८ मं.
३ चं.
५
७ रा.
४
६

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे नाथ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन- फलादेश कहिए । भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो, यह जातक धूर्त, दुर्भावी, मित्र-हीन, मलिनवेषी, दया-हीन, सुखी; विष, अग्नि तथा शस्त्र से भय पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि से सुखी, सर्वत्र विजयी, पूरधनेच्छुक, ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रीति करनेवाला, रोगी, दुष्टमति, धनहीन, कृपण, पर-निन्दक, उदर एवं दन्त रोगी, वृद्धा-स्त्री से रमण करने वाला, व्ययी, दुर्बल, अधिक चिन्तित, कवियों से प्रेम करने वाला, एकान्तवासी, व्यवहार-कुश

-ल तथा बुद्धि एवं वाणी में विशेषता रखने वाला होगा। इसका विवाह अधार्मिक, परन्तु उदार स्त्री के साथ २५वर्ष की आयु में होगा। सन्तान विलम्बसे तथा दुर्बल, मतिमन्द एवं हीन होगी। केवल दो पुत्र होंगे। स्वयं की बुद्धि विचक्षण रहेगी। विरोधी प्रबल रहेंगे। राजसम्मान मिलेगा तथा राजकीय व्यक्तियों में अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी। भाग्योदय २८ तथा ३६वें वर्ष में होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। दाँत मध्यमायु में ही नष्ट हो जायेंगे। जीवन के १, ८, १८, ३२, ३९, ५३ तथा ६४वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्ट कारक रहेंगे। यह पूर्वजन्म में तपस्वी ब्राह्मण था। तथा अगले जन्म में वर्णसंकर मनुष्य होगा। हीरा धारण, एकादशी व्रत तथा शङ्कर-पूजन से अरिष्ट दूर होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पुण्यधनी, विवेकी तथा कुलवान्; जलसे भय पानेवाला एवं ऐश्वर्यादि का भोगी होगा ॥ इतिशुभम् ॥

१ के. १२ ११ गु.
२ सू. बु. श. १० शु.
३ ९ मं.
४. ६ ८
५ ७ रा.

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकालज्ञ भविष्यं वै तस्य जीवस्य कीदृशम्। योऽस्यां हि जन्मकुण्डल्यां लभते जन्म वर्ण्यताम्॥ भृगु उवाच॥ रत्नैः स्वर्णेन पूर्णोऽयं जातको संभविष्यति। कामनाल्पोऽतिदीनाढ्यः जडश्चचिन्तितश्चिरात्॥ कामुकश्चान्य पत्निभिः रमेत पक्षिहिंसकः। कुरूपो दुर्मनो रुग्णः पीतनेत्र करान्वितः॥ बहुकुटुम्ब युक्तोऽयं विकलोऽपि सुवेष्टितः। शीलविद्या प्रवीणश्च कृतघ्नः कुलनाशकः॥ वीरवेषश्च राज्यार्थे पञ्चगणपतिस्तथा। लघुवपुः स्थितिः राज्ये शोभनापि पदच्युतः॥ वैरिभि सततं भीत· पादमुख प्रपीडितः। सुन्दर्या रुग्णया साकं विंशे विवाहितो भवेत्॥ नवत्रिंशे वियोगः स्यात् अन्यस्याश्चपतिर्पुनः। सुताः सुताः समश्चास्य वैमत्यञ्च सुतैः सदा॥ एकश्च सेवकः पुत्रः दुर्बला द्रव्य संस्थितिः। नवदशे द्वित्रिंशे च द्विन पञ्चाशतेऽपि वै॥ भाग्योदयं भवेदस्य विषशस्त्र भयान्वितः। प्रथमं द्वादशं तद्वत् सप्तदशैक त्रिंशतम्॥ अष्टपञ्चाशतश्चैकं चत्वारिंशं त्रिषष्ठिकम्। नेष्टाय भवन्त्वस्मै शूद्रोऽयं शर्वकालिकः॥

पिशाचश्चाग्रिमे भूयात् पुखराजस्य धारणम्। गुरुव्रतं गुरोः शापात् मुक्त्यर्थं भुजनं शुभम्॥ नवम्यां माघकृष्णस्यनैके सप्तति संख्यके। वर्षे यत्र चन्द्रो ऽस्ति तृतीये नवमे तथा॥ षष्ठे च द्वादशे वर्षे क्रमवान् अल्पश्च लिप्सया। सन्ततिवानपि भीतश्च जलाद्वातात् विलासकः॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे सर्वज्ञ ! इस कुण्डली का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे वत्स ! यह जातक रत्न और स्वर्ण से परिपूर्ण, अल्प कामना युक्त, दुर्बल शरीर वाला, अधिक देर तक चिन्तन करने वाला, जड़मति, अधिक कामी, अन्य स्त्रियों से रमण करने वाला, पक्षिहन्ता, दुष्टचित्त, कुत्सित रूप वाला, रोगी, पीले नेत्रों वाला, पीले वर्ण के शरीर वाला, शील तथा विद्या में कुशल, सुन्दर वेष बनाये रखने वाला, परधनेच्छुक, कृतघ्न, कुल-विकारी, समरवेषी, पंचक्षुधान तथा छोटे कद वाला होगा। राज्य में इसे अच्छी स्थिति प्राप्त होगी, परन्तु बाद में पदच्युत भी होना पड़ेगा। विरोधी इसे चैन नहीं लेने देंगे। इसका विवाह सुन्दरी, परन्तु रुग्णा स्त्री के साथ २० वर्ष की आयु में होगा तथा ३६ वर्ष की आयु में ही स्त्री-वियोगभी हो जायगा। मुख तथा पाँवों में पीड़ा बनी रहेगी। पुत्र तथा कन्याओं की संख्या समान रहेगी। पुत्रों से मतभेद रहेगा। केवल एक पुत्र ही सेवा करेगा। भाग्योदय १८, ३२ तथा ४८ वे वर्ष में होगा। विष, अग्नि तथा शस्त्र से भय भी हो सकता है। इसके जीवन के १, १२, १७, ३१, ४१, ५८ तथा ६३ वे वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्ट कारक रहेंगे। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में पिशाच होगा। पुखराज धारण करने, गुरुवार का व्रत रखने तथा गुरुशाप-विमोचन का अनुष्ठान करने से संकटों के दूर होने में सहायता मिलेगी। इसकी मृत्यु ६६ वर्ष की आयु में माघ कृष्णा नवमी गुरुवार को अचेतावस्था में ही होना सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी-साहसी, विद्या तथा सन्तान से न्यून; जल अथवा श्वास रोग से भय पाने वाला एवं विलासी होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ।। पितस्तस्य किं जीवनं यो ऽत्र जायेत् अत: श्रोतुमिच्छाम्यहं ब्रूहि तन्मे । सुतास्यात्मनो वाच एवं निशम्य भृगुस्तामुवाचात्मन: सुनुमित्यम् ।। भृगु उवाच ।। रत्न स्वर्ण प्रपूर्णो ऽयं जातको भूयते ध्रुवम् । अल्पेच्छ: दुर्बलश्च दुर्बलश्च चिरचिन्ता जड़ो भवेत् ।। परभार्या विलासेच्छु: द्विजहिंसक दुर्मति: । अति रुग्ण: कुरूपश्च पीतदेहेन संयुत भाग्यहीनो जनैर्वृत: व्यग्रो दुर्जन बन्धु युत् । शीलविद्या प्रवीणो ऽयं पञ्चगणपतिस्तथा।। वामनो जानुदृष्टी च भोगवान् युदृ वेषवान् । राज्यवंचक वृत्या ऽप्यमात्य तोषं गणिष्यति ।। प्रबला: वैरिणश्चास्य परं ते ऽपि प्रभाविता: । त्रय: पुत्रा: भवन्त्वस्य सेवकश्चैक एव वै ।। विवाहश्च त्रयोविंशे बुद्धिमतया च रुग्णया । भाग्योदयं चतुस्त्रिंशे द्विचत्वारिंशते

१ के.	११ गु.	१२ सू. श्रा. बु.	शु. १०
२	३	९ मं	८
४	५	६ चं.	७ रा.

तथा।। अष्ट पञ्चाशते वर्षे वाणिज्यं राज्यत: शुभम् । धनञ्चमध्यमं धर्मे ऽप्रवृत्तिरस्य वाच्यवै: ।। हानिरस्यै तथा वर्षे सप्तमं द्वादशं क्वचित् । चतुर्विंश त्रिषष्ठिश्च द्विपञ्चाशात संख्यकम् ।। षट्त्रिंशं प्रथमञ्चापि जीवने घातकं महत् । आषाढ़ शुक्ल दशम्यां भय: सप्ताति संख्यके ।। वर्षे मृत्यु: भवेदस्य वातरोगेण जन्मन: । पूर्वस्य शूद्र आसीद्वै आभीरश्च भविष्यति ।। लहसुनेति रत्नस्य पुखराजस्य धारणम् । पूजनश्च महालक्ष्म्या: सप्तम्याश्च व्रतं सदा ।। जीवने श्रेयसे चास्मै चन्द्रश्चेद् सप्तमे ऽथ वा । चतुर्थे दशमे लग्ने तदैव संभविष्यति ।। स्त्रीणां प्रिय: सुरूपश्च सुकृत: पूर्ण वंशवान् । राजेव राज्यतो वाऽयं सम्मानार्हति निश्चितम् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस जन्मकुण्डली वाले जातक का जीवन फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक स्वर्ण एवं रत्नों से परिपूर्ण, अल्पकामी, दुर्बल, चिर-चिन्ता युक्त, जड़बुद्धि, पर-स्त्री गामी, पक्षिहन्ता, दुष्ट-हृदय, कुत्सित स्वरूप, विकल, रोगी, पीले नेत्र एवं शरीरवाला, भाग्यहीन, कुचाली, विकल, सुन्दर वेष बनाये रखने वाला, शील तथा विद्या में प्रवीण, अव्यसनी, अपने कुल का विकारी, दोष

युक्त भाइयों वाला, युद्धवेषी, प्रधान पंच, छोटे कद वाला, जाँघ में कष्ट पाने वाला, राज्य को धोखा देने की प्रवृत्ति वाला, तथा अपने प्रबल विरोधियों पर प्रभाव रखने वाला होगा। इसकी पहली सन्तान नष्ट हो जाएगी। कुल तीन पुत्र होंगे, जिनमें से एक इसकी सेवा करेगा। इसका विवाह बुद्धिमान् तथा रुग्णा स्त्री के साथ २३ वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय ३४, ४२ तथा ५८ वें वर्ष में होगा। व्यवसाय करना लाभकर रहेगा, राज्य की सेवा करना अहितकर रहेगा। आर्थिक-स्थिति मध्यम श्रेणी की होगी। धर्म-कर्म नहीं करेगा, भाई-बन्धुओं से हानि प्राप्त होगी। इसके जीवन के १, ७, १२, २४, ३६, ५२ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में आषाढ़ शुक्ला दशमी गुरुवार को मध्यरात्रि होना सम्भव है। मृत्यु का कारण वात रोग होगा। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में आभीर कुल में उत्पन्न होगा। पुखराज तथा लहसुनियाँ धारण करने, सप्तमी का व्रत रखने तथा श्रीमहालक्ष्मी देवी का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा सत्कर्म करने वाला; पूर्ण कुटुम्बी और सुखी; पर-स्त्री-प्रेमी तथा राजतुल्य अथवा राज्य से सम्मान पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्मिन् तात गृहे क्षेत्रे योऽपि गृह्णाति जीवनम्। भाषस्व विस्तृतं मह्यं भविष्यं तस्य देहिनः॥ भृगुरुवाच॥ वत्स दुर्बलकायोऽयं जातो कष्टश्च तस्य वै। रुग्णः पञ्चगणेशोऽपि वीरवेषाश्च निर्धनः॥ वंशाढ्यः व्यसनैः हीनः विद्याशील विशारदः। विकलो दुष्कृतः सौम्यः अग्निहोत्ररतः सदा॥ हास्यप्रियोऽति सौख्येण सम्पन्नो पीतवर्णकः। पशु बलिं प्रदात्वेव परभार्यारतोऽपि च॥ चिन्तितः कामना पूर्णः रत्नस्वर्णादिभिर्युतः। दैनिके दर्शनार्थं वै वाहनञ्च स्थापितं गुरुम्॥ व्ययशीलो भवेत्तस्मिन्

नाति यात्राकरोऽन्यथा। हानिस्तत्रावधानञ्च राजकर्मसु धारयेत्॥ परभार्यासु सम्पर्कात् वैरिणो प्रबला: स्थिता:। औषध्या: लौह वाणिज्यात् लाभोऽस्य नाति द्रव्यवान्॥ विवाहश्च चतुर्विंशे भाग्योदयाय वर्तते, नैक विंशं द्विपञ्चाशं सप्तत्रिंशञ्च सन्तति:॥ काठिन्येनाति वायोश्च पृष्ठे पादेषु वैकृति:। कन्याभ्यां वै तयो: वंशात् दौहित्रं पुत्र दत्तकम्॥ स्थापनस्यापि योगोऽस्य वंशस्था: वैरिणस्तथा। प्रबला:हानि दास्युस्ते जीवने प्रथमं तथा॥ तृतीयं सप्तमं वर्षं सप्तदशं द्विर्त्रिंशतम् एकषष्ठ्याष्ट पञ्चाशे भविष्य न्त्यापदां कृते॥ पूजनं भैरवस्यास्मै व्रतं शुक्रस्य धारणम्। हीरकस्यास्ति श्रेयार्थं मृत्युश्चास्य भविष्य -ति॥ पीड्या मस्तिकस्यैव मुदरस्य च कार्तिके। अष्टम्यां शुक्लपक्षस्य चतु: सप्तति संख्यके:॥ आसीच्छूद्र: पुनर्भूयात् वानर श्वन्दुमायदि। द्वितीये पञ्चमे स्थाने एकादशेऽष्टमेऽथवा॥ कुमेशोल्प धनेशश्च पुत्रवान् विद्यायुत:। भोगी च विविधानां वै भोगानां जलभीतिवान्॥

१ के॰ | १२ सू॰ बु॰ श॰ | ११ शु॰ गु॰ | २ | १० | ३ | ९ मं॰ | ६ | ४ चं॰ | ५ | ७ रा॰ | ८

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली का फलादेश कहें। भृगु जी बोले - हे वत्स! यह जातक दुर्बल शरीर, जाँघ में कष्ट वाला, सामान्य कद वाला, रोगी, धनहीन, विद्या एवं शील में कुशल, विकल, कुचाली, बहु कुटु-म्बवान्, अग्निहोत्रादि करने वाला, सुन्दर शरीर वाला, सामान्य-सुखी, हास्य-प्रिय, दर्शनीय, पीतवर्ण, पशुबलि कारक, परस्त्री-सेवी, चिन्तित, कामना युक्त एवं रत्न- स्वर्ण वाला होगा। दैनिक जीवन में ठाठ-बाट से रहते हुए अपने वाह्य-प्रभाव को स्थिर बनाये रहेगा। खर्च अधिक करेगा। अधिक यात्रा के कारण जीवन की हानि होना संभव है। अन्य स्त्री से सम्पर्क के कारण इसके विरोधी प्रबल बने रहेंगे। औषध अथवा लोहे के व्यापार से इसे लाभ होगा। इसका विवाह २४ वर्ष की आयु में होगा। भाग्योदय

१९, ३८ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। सन्तान होना कठिन रहेगा। पीठ तथा पाँवों में वात-विकार रहेगा। २ कन्यायें होंगी तथा दौहित्र को दत्तक-पुत्र के रूप में गोद लेगा। कुटुम्बियों से मतभेद बना रहेगा और वे छलपूर्वक हानि पहुँचाने का प्रयत्न करते रहेंगे। इसके जीवन के १, ३, ८, १८, ३२, ५८ तथा ६१वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टकारक रहेंगे। शुक्रवार का व्रत, हीरा धारण तथा भैरव-पूजन विपत्ति-निवारणार्थ हितकर रहेंगे। इसकी मृत्यु ७४ वर्ष की आयु में कार्तिक शुक्ला अष्टमी रविवार को प्रातः काल अपने ही घर में, मस्तिष्क अथवा उदर-विकार के कारण होना सम्भव है। यह पूर्वजन्म में उग्र कर्मा शूद्र था तथा अगले जन्म में वानर योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः सामान्य धनी, पुत्रवान् एवं विद्या सम्पन्न, जलसे हानि पाने वाला तथा विविधार्थ भोगी होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
१	सू. के.
२	
३	चं.
४	
५	
६	
७	रा.
८	
९	मं.
१०	
११	शु.
१२	श. गु. बु.

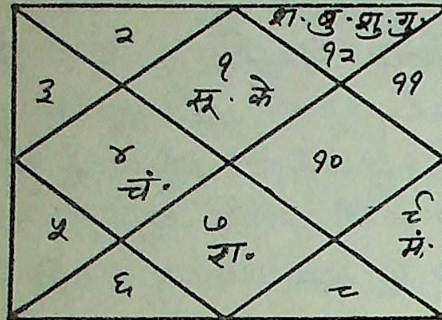
ॐ शुक्र उवाच॥ देहे यो धारयेदस्मिन् ग्रहाणां मण्डले जनः। जीवने तस्य भावस्व भविष्यं सम्मुखं मम॥ भृगु उवाच॥ धीशो मानी तथा क्रुद्धः बन्धु नष्टा पराक्रमी। शोभनो भाग्यवान् भ्रान्तः क्षुद्राणां सेवकः क्वचित्॥ शत्रुत्रस्तः प्रसन्नात्मा श्रेष्ठाभिः प्रीतिमान् भवेत्। ब्रह्मभक्तोऽर्चकश्चैवं देवानां वाहनैर्युतः। न्यायाधीशो विनम्रश्च आलस्यं श्रेष्ठ कर्मसु। परोपकारी गुणवान् सुस्थानवास कारकः॥ सुन्दर्यां किन्तु रोगिण्यां विंश वर्षे विवाहितः। आसक्तान्येऽस्य भार्यास्यात् परं तस्यामयं रतः॥ आयाद् व्ययं विशेषञ्च सुखं कौटुम्बिकं महत्। पित्रोरपि परं विघ्नं भाग्योदये पतिष्यति॥ षट्पञ्चाशं चतुस्त्रिंशं षट्चत्वारिं प्राप्तं तथा। भाग्योदयाय वर्तन्ते पुत्र एको हि सेवकः॥ कीर्तिविस्तारयेच्चास्य जीवने शत्रु नाशकः। अति सूक्ष्म धनस्यास्ति प्रथमं सप्तमं तथा॥ सप्तदशैक त्रिंशञ्च सप्तविंश त्रिषष्ठिकम्। त्रिपञ्चाशं महदस्ति

घातकं जीवने व्रजेत् ।। आषाढ़ कृष्ण पञ्चम्यां पञ्चषष्ठितमे गृहे । वायुवीर्य विकाराभ्यां शूद्रो ऽपि पूर्वकालिकः ।। अग्रिमे प्रेत योन्यां वै गोमेधं धारयेत् तथा । गुरोः व्रतं शनैः पूजां श्रेयसे चास्ति सर्वदा ।। तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे चन्द्रमा यदि । स्थितस्तदा भवेदेष क्रुग्णः साहसिकस्तथा ।। भाग्यवान् धार्मिकश्चैवं स्त्रीणां प्रियो भविष्यति । निर्विशञ्च प्रदेशेषव भ्रमणशील सदा भवेत् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस ग्रहस्थिति में जन्म लेने वाले मनुष्य का जीवन-फलादेश कहें। भृगुजी बोले- हे वत्स! यह जातक घोरमानी, धनी, सुन्दर, अत्यन्त क्रोधी, बन्धु-विनाशक, महापराक्रमी, दूसरों को प्रिय, बाल्यावस्था में व्याधियुक्त, नेत्ररोगी, नीचजनों का सेवक, गृहस्थी से रहित, भाग्यशाली, भ्रमित, वाहनादि से युक्त, शत्रुओं से दुखी, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रेम करने वाला, सुखभोगी, पराये धन का रक्षक, ब्राह्मण एवं देवताओं का पूजक, न्यायाधिकारी, सुन्दर, उत्तम स्थान में रहने वाला, प्रसन्न चित्त, उत्तम कार्य करने में आलसी तथा विनयी होगा । यह व्यवहार-कुशल, गुणग्राहक तथा उपकारी भी होगा । इसका विवाह २० वर्ष की आयु में सुन्दर, परन्तु रोगिणी स्त्री के साथ होगा । इसकी स्त्री पर-पुरुष से प्रेम करेगी और वह उस पर पूर्णरूप से आसक्त रहेगा । आय की अपेक्षा खर्च अधिक करेगा । माता, पिता एवं कुटुम्बियों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा । भाग्योदय में बाधाएं आती रहेंगी । सामान्यतः इसका भाग्योदय ३४, ४६ तथा ५६ वें वर्ष में होगा । केवल एक पुत्र ही सुपात्र एवं इसकी सेवा करने वाला तथा पिता से भी अधिक प्रतापी होगा । शत्रु हमेशा दबे रहेंगे । वाद-विवाद में विजय मिलती रहेगी । राज्य से सम्मान पाना कठिन होगा । जीवन के १, ७, १७, २७, ३१, ४१, ५३ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे । इसकी मृत्यु आषाढ़ कृष्णा पंचमी शनिवार को वीर्य एवं वायुदोष के कारण ६५ वर्ष की आयु में, घर पर ही होना संभव है। मृत्यु रात्रि के द्वितीय प्रहर में होगी । यह पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगली बार प्रेत योनि प्राप्त करेगा । गोमेद धारण

गुरुवार के व्रत तथा शनिदेव के पूजन से अरिष्ट शान्त होंगे । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी तथा साहसी; रोगी एवं स्त्री-प्रिय; भाग्यवान् और धार्मिक तथा परदेश यात्री एवं कुटुम्बहीन होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच ।। भविष्यं फणितस्तस्य उच्यतां विस्तृतम् प्रभो । कुण्डल्यां योऽत्र जातोऽस्ति श्रोतुमिच्छामि भाविनम् ।। भृगु उवाच ।। वत्स सोऽति दुःखापन्नः पुत्र पौत्रादिभिस्तथा । रक्तपित्त विकाराभ्यां ग्रस्तो भूमि धनाधिपः ।। बुद्धिमान् वाहनैर्युक्तः सुपत्निषु रुचिर्भवेत् । रक्षकः परवित्तस्य ब्रह्म देव प्रपूजकः ।। परामर्शक राज्यस्य सुवपुः दानदायकः । राज्याद् वैभव सम्पन्नः प्रसन्नः शत्रुजित्तथा ।। गुणानां ग्राहकश्चैवं व्यवहारेऽपि शीलवान् । विवाहोऽसंभवश्चास्य विंशे वा संभवेत् परम् ।। षड्मासैव तथा भूयात् वियोगो वा परं वहेत् । देवरेण सहास्याश्च पापः सम्बन्ध सम्भवः ।। उपायेन सुतश्चैकः नान्यथा सन्ततिर्भवेत् । वाणिज्ये नहि लाभोऽस्मै राजसेवां करोत्वसौ ।। स्वस्थोऽपि कष्टदा यात्रा मातृसौख्यञ्च शत्रवः । प्रबलाः द्रव्य संयोगो नाधिको भाग्यवर्द्धनम् ।। षट् त्रिंशे त्रयो षष्ठ्यां द्वि पञ्चाशे च संभवेत् । प्रथमञ्चाष्टमं वर्षं द्वात्रिंशं नव त्रिंशतम् ।। सप्तदशाष्टपञ्चाशे षड् चत्वारिंशति तथा । चतुः षष्ठिं सदा भूयात् नेष्टं कष्ट प्रदायकम् ।। दशम्यां मार्गशीर्षस्य शुक्लेऽब्दे सप्तषष्ठिके । मूत्रदोषाच्च मार्गे वा मृत्युरस्य भविष्यति ।। पूर्व जन्मनि भिल्लोऽयं मत्कुणञ्च भविष्यति, हीरकं नीलकं धृत्वा गौर्यर्चार्चन पूजनैः ।। एकादशी व्रतञ्चास्मै सर्वदा सिद्धि दायकम् । चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे यदि चन्द्रमाः ।। भवेदस्यां सुरूपोऽयं विवेकी वंश पूरितः । स्त्रीणां भोक्ता नृपान्मानं लभते राजतुल्यताम् ।।



भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे त्रिकालज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक पुत्र-पौत्रादि की ओर से दुखी, साहसी, रक्त-पित्त-विकारी, भूमिपति, हिन्दू, अत्यन्त बुद्धिमान्, बड़ा धनी, वाहनादि से युक्त, शत्रुओं से दुखी, श्रेष्ठ स्त्रियों से प्रीति करने वाला, सुखी, पराये धन का रक्षक, ब्राह्मण-भक्त, देवताओं का पूजक, राज्य का सलाहकार, सुन्दर शरीर, दानी, उत्तम स्थान में रहने वाला, प्रसन्नचित्त, राज्य से वैभव पाने वाला, शत्रुजयी, विनयी, व्यवहार-कुशल, सुशील, गुणग्राहक, परोपकारी एवं विविध भोगों का भोगी होगा। इसका विवाह होना कठिन है। यदि हुआ तो २० वर्ष की आयु में होगा तथा ६ मास बाद ही पत्नी से या तो वियोग हो जाएगा अथवा वह किसी अन्य पुरुष के घर चली जाएगी। ऐसे जातक की स्त्री प्रायः अपने देवर से भी प्रेम कर सकती है। सन्तान या तो होगी ही नहीं अथवा कठिनाई एवं उपायों द्वारा केवल एक पुत्र होगा। व्यवसाय में हानि होगी। राजकीय-सेवा में लाभ होगा। शरीर स्वस्थ रहेगा, परन्तु यात्रा में कष्ट होगा। गृहस्थी का खर्च अधिक रहेगा। शत्रु प्रबल रहेंगे। माता का पूर्ण सुख रहेगा। धन-संग्रह की शक्ति अल्प रहेगी। इसका भाग्योदय ३६, ४२ तथा ६३ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ८, १७, ३२, ३९, ४६, ५८ तथा ६४ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्टकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी गुरुवार को मध्याह्न काल में, मूत्र-विकार के कारण कहीं मार्ग में ही, ६७ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। यह जातक पूर्वजन्म में भील था तथा अगले जन्म में मच्छर की योनि प्राप्त करेगा। हीरा तथा नीलम धारण करने, एकादशी का व्रत रखने तथा गौरी देवी का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा विवेकी; पूर्ण कुटुम्बवान् एवं सुखी; अनेक स्त्रियों का भोगी एवं राजतुल्य अथवा राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला होगा। इस जन्मकुण्डली का यही फलादेश है॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ श्रोतुमिच्छाम्यहं भावं अस्यां कुण्डलिजस्य वै । त्रिकालज्ञ त्रिकालस्य कृपतां तस्य वर्णनम् ॥ भृगु उवाच ॥ गुरोः भक्तो भवेदेष गुणवान् मृदुभाषकः । लुब्धको धनवान् वीरः स्त्रीपुत्रैः दुःखितो भृशम् ॥ दीनः सर्वप्रियश्चैवं रक्ताक्षं केशकर्कशः । ताम्रविक्रयतो लाभः कुलदीपः जितेन्द्रियः ॥ स्त्रीणां मनोहरो लाभः भूम्या दृढ शरीरवान् । विप्रश्रेष्ठ जनानां वै भक्तः हृद्रोग संयुतः ॥ विकलो व्यसनाद्दूरं कृतज्ञो मनसा रतः । कुशलवान् चेष्टया पन्नः पण्डितो दुर्बलस्तथा ॥ लाभान्वितो ऽपि वाणिज्ये बृहत्कुलाद् सम्भवम् । द्रव्यस्य संग्रही भाग्यं विवाहेन विवर्द्धयेत् ॥ चतुःविंशतमे वर्षे श्रेष्ठञ्च श्वसुरालयः । वैरिणो जायमानाश्च प्रभावेणास्थिराः स्थिते ॥ चिन्तितो ऽप्येष सन्तत्याः भविष्यन्त्यात्मजाः परम् । सेवका नैव केचिद्वै वैफल्यं राजकर्मसु ॥ जीवने प्रथमे वर्षे नवमे सप्तमं तथा । नैकविंशाष्ट त्रिंशेच षट्पञ्चाशाष्ट षष्ठिके ॥ द्विचत्वारिंशतञ्चापि अपमृत्यु कराणि वै । सुशीला धार्मिकी पत्नी भविष्यत्यस्य मृत्यवे ॥ वैशाखस्यानिमाहे वै त्रयो सप्तति संख्यके । वर्षे भगवतो भक्तौ पूर्वजन्मनि क्षत्रियः ॥ विप्रवंशे भवेदग्रे नीलमं पञ्चकं तथा । बहुधुक्र व्रतञ्चैवं मंगलचण्डिका कृते अनुष्ठानं शुभायास्यै यदि चन्द्रोऽत्र पञ्चमे । द्वितीयं चाष्टमे स्थाने स्थितश्चेत्सं भविष्यति ॥ मध्यमः धन सम्पत्तौ जलाद् भीतश्च पण्डितः । तीर्थे मृत्युस्तथा पूर्णः धनी वैश्वर्यवान्नपि ॥

३	बु· शु· के· श· १
४	गु· १२
२ सू·	११
५	
चं· ६	१० मं·
८	
७ रा·	९

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे त्रिकालज्ञ! आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन- फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे तात! यह जातक गुरु-भक्त, प्रियभाषी, परमगुणी, बड़ा धनी, अधिक कृपण, बलवान्, सर्वप्रिय, स्त्री-पुत्रादि की ओर से दुःखी, दीनस्वभावी, लालनेत्र तथा अशोभन केशों वाला, ताँबे के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, जितेन्द्रिय, अपने कुल की वृद्धि करने वाला, स्त्रियों का मन हरने वाला,

विकल, सामान्य कद वाला, क्रोधी, ब्राह्मण तथा श्रेष्ठ जनों का भक्त, व्यसन-रहित, कृतज्ञ, हृदय-रोगी, उचित दान करने में पराङ्मुख, भूमि लाभ वाला, मन-ही-मन चिन्तन करने वाला, महापण्डित, ब्राह्मण के समान चेष्टावान्, अल्पगति युक्त तथा दुर्बल शरीर वाला होगा। यदा-कदा व्यवसाय में श्रेष्ठ लाभ भी होता रहेगा, परन्तु पारिवारिक व्यय की वृद्धि के कारण धन-संचय कम हो पाएगा। इसका भाग्योदय विवाह के साथ ही २४ वें वर्ष में होगा। श्वसुराल-पक्ष श्रेष्ठ रहेगा। विरोधी उत्पन्न तो होंगे, परन्तु इसके प्रभाव के समक्ष कोई ठहर नहीं सकेगा। सन्तान की ओर से प्रायः चिन्ता बनी रहेगी। समाज एवं राज्य के कामों में सफलता कम मिलेगी। इसके जीवन के १, ७, ९, १४, ३८, ४२, ५६ तथा ६८ वें वर्ष अरिष्ट कारक सिद्ध होंगे। पुत्रों में से कोई पास रह कर सेवा नहीं करेगा। स्त्री परम सुन्दर, धर्मात्मा तथा शीलवती होगी। इसकी मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में, वैशाख शुक्ला १५ सोमवार को अपराह्न काल में, भगवच्चिन्तन करते हुए, घर में ही होना सम्भव है। यह मनुष्य पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। नीलम तथा पन्ना धारण करने, शुक्रवार का व्रत रखने एवं मङ्गलचण्डी का अनुष्ठान करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सामान्य धनी एवं जल से भय पाने वाला; विद्वान् और विवेकी; तीर्थ में मृत्यु पाने वाला, पूर्ण धनी तथा विविधार्थ भोगी होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच।। कुण्डल्या मत्र देहे यो प्राप्नोति तस्य जीवनम्। वर्णितां विस्तृतं मह्यं कौतुमिच्छाम्यहं प्रभो।। भृगु उवाच।। देहे योऽस्यां जनो वत्स लभते पुण्यशालिनः। सुतवस्त्रैरावृतो मोदः पशुभिः सुखमाप्नुयात्।। युद्धे वीरः जलाद् भीतः स्त्रीभिः सुखी भयान्वितः। आत्मीयैः वैभवापन्नः गुणिनैः संगतः सदा।। स्त्रीणां भोगी सुतैश्चैवं मातृभिः सुखमाप्नुयात्। परामर्शक आदर्शः बाहुः श्रेष्ठ वपुस्तथा।। सुस्थाने वसते दानी वाहनैः सर्वदा युतः। ग्राम्याधिपश्च पूज्योऽयं सर्वत्र कवि दुर्बलौ।। स्वाभिमानी पितु

भक्त: मातुश्च क्षणिको रुषा । धार्मिक: शत्रुहन्ता च चतुःविंशे भविष्यति ॥ भाग्योदयं विवाहेन अन्ये चाष्टत्रिंशतम् । द्विचत्वारिंशतञ्चापि भाग्योदयाय सुन्दरी ॥ पतिभक्ता सुवस्त्रैश्च वृताभार्या भविष्यति । पुत्राणामधिका संख्या सर्वेते शिक्षितास्तथा ॥ पितृभक्ताश्च स्वात्मायां तोषं नानुभविष्यति । पैतृकीं सम्पदाञ्चैव प्राप्स्यति जीवनेऽशुभम् । द्वितीयं प्रथमं वर्षं अष्ट पञ्चाशतं तथा । सप्तदशं चतुःत्रिंशं सप्तमं षडषष्ठिकम् ॥ षड्चत्वारिंशतञ्चापि तीर्थे मृत्युर्भविष्यति । तृतीयायां शुक्लपक्षे ऽब्दे नवषष्ठि संख्यके ॥ फाल्गुने क्षत्रिय: पूर्व आसीद्विप्रो भविष्यति । नीलमं धारयेत्पूजां आञ्जनेयस्य कारयेत् ॥ शनेः व्रतञ्च लाभाय कुण्डल्यामस्य चन्द्रमा: । तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे यदि सम्भवेत् ॥ धार्मिक: श्रमशीलश्च बाल्ये रुग्णश्च भाग्यवान् । दरिद्रश्चालसी भूपात् इत्येवास्य फलं सुत ॥

भाव	ग्रह
३	
२	सू. बु.
१	शु. श. के.
१२	गु.
४	चं.
११	
५	
१०	मं.
८	
६	
७	रा.
९	

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस जन्मकुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक सुगन्ध-पुष्पशय्या और उत्तम वस्त्रों का प्रेमी, पशुओं से सुख पाने वाला, जलसे भय पाने वाला, संग्राम में पराक्रमी, स्त्रियों से सुखी स्वजनों से प्रतिकूल तथा उनसे भयभुक्त, धनी, गुणग्राही, गुणीजनों से प्रेम करने वाला, अनेक स्त्रियों का भोगी, बन्धु-पुत्रादि से सुखी, राज्य का सलाहकार, उत्तम वाहनादि से सम्पन्न, सुन्दर, श्रेष्ठ गृहवासी, प्रसन्नचित्त, ग्रामाधिपति, शत्रुहीन, सर्वत्र आदरणीय, कविता तथा दुर्बल शरीर वाला होगा। यह माता-पिता का भक्त, स्वाभिमानी तथा विवेकी, क्षण-क्रोधी, परमधार्मिक तथा शत्रुजयी होगा। । इसका भाग्योदय २४ वर्ष की आयु में गेहुंए रंग वाली परमधार्मिक तथा सुन्दर, सुशीला एवं पतिपरायणा तथा सुशिक्षिता कन्या के साथ होगा। विवाह के साथ ही भाग्योदय भी होगा। इसके पुत्र अधिक होंगे और वे सभी सुयोग्य, सुशिक्षित तथा पितृ-भक्त होंगे। इसके मनमें सदैव असन्तोष बना रहेगा। पैतृक-धन तथा

चल-अचल सम्पत्ति का लाभ होगा। इसके जीवन के १. २. ७. १७. ३४. ४६, ५८ तथा ६६ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अनिष्ट कारक रहेंगे। इसकी मृत्यु किसी तीर्थ क्षेत्र में, रक्तदोष के कारण, फाल्गुन शुक्ला तृतीया बुधवार को, ८८ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। यह पूर्वजन्म में ज्ञानी क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर मोक्षप्राप्ति के लिए प्रयत्न करेगा। इसे नीलम धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा हनुमानजी का पूजन करने से सदैव लाभ होगा तथा अरिष्ट दूर होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उत्तम धर्मात्मा, साहसी तथा उद्यमी; बाल्यावस्था में रोगी, भाग्यवान् एवं दरिद्र तथा आलसी होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
१	श० के०
२	सू० बु० शु०
३	
४	
५	चं०
६	
७	रा०
८	
९	
१०	मं०
११	
१२	गु०

ॐ शुक्र उवाच॥ पितः वदस्व मे सर्वं कुण्डल्यामत्र संस्थितम्। भविष्यं प्राणिनस्तस्य योऽस्यां गृह्णाति जीवनम्॥ भृगु उवाच॥ अत्र जातः सुखी भूयात् पशुभिः दुर्बलस्तनुः। सुवस्त्रै भूषितः प्रीतिः प्रदर्शनप्रिया सदा॥ रक्ताक्षस्ताम्रवाणिज्यात् लाभोऽस्त्यस्य जितेन्द्रियः। वेशोद्धारकरश्चैव स्त्रीणाञ्चैव मनोहरः॥ कृष्यश्च जीवने वृत्तिः अति क्रुद्धः पितुस्तथा। भक्तश्च ब्राह्मणानां वै कोमलाङ्गः सरोगवान् विक्रेता श्वेत धातूनां परं प्रत्यञ्च प्राप्नुयात्। वाचालोऽगतियुक्तश्च क्रोधेनैव विवेकवान्॥ त्रयोविंशे विवाहः स्यात् पुत्रमेकमवाप्य वै। नवविंशे तथाशाकं वियोगोऽस्य भविष्यति॥ विवाहेनास्य भाग्यस्योदयं स्याच्चतुः त्रिंशते। षड्चत्वारिंशते ऽप्यस्य पितुः मातामहस्य च॥ पुत्रश्च सम्पदाधीशः कीर्तिविस्तारकारकम्। परं पुत्रेण नास्त्यस्यै तोषञ्चाभावलक्षणम्॥ शत्रूणां राजमान्यस्य दुःखं साधारणं भवेत्। धातुषु रक्त शुभ्रेषु लाभोऽस्य बहु दृश्यते॥ जीवने सप्तमं वर्षं प्रथमं नैकविंशतम्। त्रयोदशाष्टत्रिंशे च त्रयोपञ्चाशतं तथा॥ चतुः षष्ठिञ्च हान्यै वै वर्षेऽष्ट षष्ठि संख्यके।

आंत्र रोगेण [illegible] धार-

-येन्नित्यं लहसुनेति रत्नकम् ।। नीलमञ्चापि चन्द्रोऽस्यां चतुर्थे सप्तमे तथा। लग्ने वा दशमे स्थाने तदैव संभवि-
ष्यति ।। सौम्यः स्त्रियो वियोगी वै पूर्णवंशान्वितः सुखी। राजतुल्यः पुरा वैश्यः ब्राह्मणश्च भविष्यति ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा — हे पिता! इस जातक का जीवन-फलादेश कहें। भृगुजी बोले- हे जिज्ञासु! यह जातक पशुओं का सुख पाने वाला, दुर्बल शरीर वाला, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला, जितेन्द्रिय, ठाठ-बाट से रहने वाला, लाल नेत्रों वाला, ताँबे के व्यवसाय से लाभ पाने वाला, जितेन्द्रिय, कुल की जय करने वाला, स्त्रियों का मन हरने वाला, भूमि से आजीविका प्राप्त करने वाला, अत्यन्त क्रोधी, ब्राह्मण-भक्त, पितृ-भक्त, निष्पाप, कोमल शरीर वाला, अधिक रोम वाला, लम्बे केशों वाला, अधिक गौर वर्ण, हृदय-रोगी, दान करने में पराङ्मुख, परधन प्राप्त कर्ता, चाँदी एवं सीसे का व्यापारी, गुणी, अधिक वाचाल, अल्पगति युक्त, क्रोधी होने के साथ ही विवेकी, तथा वंश का उद्धार करने वाला होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होगा तथा १ पुत्र को जन्म देने के बाद २९ वर्ष की आयु में स्त्री की मृत्यु भी हो जाएगी। विवाह के साथ ही इसका भाग्योदय भी होगा। भाग्योदय के अन्य वर्ष ३४, ४६ भी होंगे। इसका पुत्र अपने पिता तथा नाना — दोनों की सम्पत्ति का अधिकारी होकर कीर्ति विस्तार करेगा, परन्तु पुत्र के द्वारा इसे सन्तोष प्राप्त नहीं होगा। राज्य-सम्मान तथा शत्रुओं का अभाव रहेगा। धन की स्थिति सामान्य रहेगी। ताँबे तथा श्वेत वस्तुओं के व्यवसाय से अच्छा लाभ होगा। इसके जीवन के १, ७, १३, १९, ३८, ५३ तथा ६४ वें वर्ष अपमृत्युकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६८ वर्ष की आयु में, श्रावण शुक्ला त्रयोदशी सोमवार को रात्रि के तीसरे प्रहर में आत्मशोथ के कारण होना सम्भव है। नीलम तथा लहसुनियाँ धारण एवं बुधवार का व्रत तथा कुबेर-पूजन इसके लिए अरिष्ट-निवारक एवं लाभकर रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा स्त्री-वियोगी, पूर्णकुटुम्बी एवं सुखी; पर-स्त्री भोगी तथा राजतुल्य होगा। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रिकालस्य फलादेशं वर्ण्यतां तस्य देहिनाः। अस्यां कुण्डलिजस्यैवं श्रुत्वा भृगुरुदाहरत्॥
भृगु उवाच॥ अस्यां जातोऽस्ति देहेशः मानी मातृप्रियः परम्। धनवान् भोग संलग्नः दानी मन्देन कारकः॥ मृदुवाग् वैभवा-
कामुकः शत्रुहन्ता च शीलवान् भाषणे पटुः। नतः ख्यातः सुवीरश्च स्त्रीभिः सौख्य संयुतः॥ सुस्थानं वसते पूर्णः पुत्रकलत्र
पन्नः आत्मीयैः प्रीतिमाप्नुयात्। सुवेषः गृह सौख्यञ्च सुवपुः चेतसा मुदः॥ सुशीला पतिभक्ता च मृदुवाणैकविंशते। मिलिष्यति
गौरवैः। पुष्पगन्धप्रियः स्त्रीणां भोगी स्त्री सुन्दरी तथा॥ नष्टापत्यो ऽप्युपापेन सुतश्चैकोहि जीवितः। सुरूपः शिक्षितो भोगी नता-
विवाहान्ते सर्वतः वृद्धितां व्रजेत्॥ धनसञ्चयवानेष पैतृकात्स्वार्जितादपि। द्विपञ्चाशगष्टत्रिंश
स्तिष्ठन्तु शत्रवः॥ धार्मिको दर्शनार्थं हि बहुभागीः धनार्जने। दीर्घ
ञ्चभाग्योदयाय निश्चिते॥ चतुर्दशं चतुर्थञ्च त्रिपञ्चाशं त्रिष-
कुटुम्बवान् किन्तु विवादस्तेन जीवने॥ चतुरसीति वर्षायौ
ष्ठिकम्। द्विचत्वारिंशतञ्चापि नेष्टं चास्मै विघातकम्॥ वणिज्यो
वैशाख कृष्णपञ्चमी। शिरो वा हृदयस्यास्ति पीड़या जीवनावधिः॥
धनवान् भूयात् क्षत्रियः पूर्वजन्मनः। पन्नकं धारयेत् पूजां शनैश्च द्वादश्या
व्रतम्॥ शिवाय सर्वदा चास्मै कुण्डल्यामत्र स्याद्यदि। द्वितीये पञ्चमे चन्द्रः एका
देशेऽष्टमेऽथवा॥ कोट्याधीशस्तदा भूयात् विद्वान् धार्मिकस्तथा। जलाग्निभय सम्पन्नः भाग्योदयाय
विघ्नवान्॥

चं. ४	सू. बु. ३ (लग्न)	२ शु.
५		१ के. श.
६		१२ गु.
७ रा.		११
८	९	१० मं.

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे प्रभो! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहें।
भृगुजी बोले - हे तात! यह जातक बड़ा अभिमानी, भाइयों को प्रिय, दानी, अधिक भोगी, महाधनी,
कामी, धीमी गति से कार्य करने वाला, गणितज्ञ, शत्रु-नाशक, शीलवान्, श्रेष्ठ वार्ताकार, विख्यात कीर्तिवान्

विनीत, हितकारी, महापराक्रमी, स्त्रियों से सुख पाने वाला, स्वजनों से भयभीत, धन-वैभव सम्पन्न, प्रियभाषी, मातृ-सुख से पूर्ण, सुन्दर वेष वाला, गृहस्थी से सुखी, राज्य का सहायक, सुन्दर शरीर वाला, अच्छे स्थान में निवास करने वाला, प्रसन्नचित्त, कलत्र-पुत्रादि के उत्सव से युक्त, गन्ध-पुष्पादि का प्रेमी एवं अनेक स्त्रियों के साथ भोग करने वाला होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में धार्मिक, सुशीला, मृदुभाषिणी तथा पतिपरायणा कन्या के साथ होगा। विवाहोपरान्त ही इसके भाग्य, धन, विद्या, गृह, भूमि आदि की निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। इसकी कई सन्तानें नष्ट होंगी। कठिनाई एवं उपायोपरान्त केवल एक पुत्र जीवित रहेगा, जो सुन्दर, शिक्षित, तथा सुयोग्य होगा। शत्रु सदैव दबे रहेंगे। यह पैतृक एवं स्वोपार्जित धन का संचय करेगा। भाग्योदय ३८ तथा ४२ वें वर्ष में होगा। धार्मिक प्रवृत्ति कम तथा दिखावे भर के लिए ही होगी। अनेक स्रोतों से धन का आगमन होता रहेगा। कुटुम्ब बड़ा होगा और उससे मतभेद भी रहेंगे। इसके जीवन के १, ८, १४, ४२, ५३ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में धनी वैश्य होगा। पन्ना धारण करने, द्वादशी का व्रत रखने तथा शनि का पूजन करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ होगा। इसकी मृत्यु ८४ वर्ष की आयु में वैशाख कृष्णा पंचमी शुक्रवार को मध्याह्न में, मस्तिष्क-पीड़ा अथवा हृदय-पीड़ा के कारण अपने घर में ही होना संभव है। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः कोट्याधीश; विद्वान् और धर्मात्मा; जल अथवा अग्नि से भय पाने वाला तथा भाग्योदय में विलम्ब पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जायमानस्य जीवस्य फलादेशं सुवर्ण्यताम्। कुण्डल्यां योऽपि जीवोऽस्यां तस्य तात श्रृणोम्यहम्॥ भृगु उवाच॥ मातृहीनश्च मित्राणां हितेच्छुः धनवान् भवेत्। अस्यां जातो जनः श्लाघ्य सहिष्णुः धनवान्नपि॥ जितेन्द्रियः प्रियः स्त्रीणां वृद्धवत् देहवान् हि या। रहितः सरलश्चैवं क्षीणजानुश्च दुर्बलः॥

स्त्रीणां धनेऽनुरक्तोऽयं दानकर्म पराङ्मुखः। बाल्ये रुग्णोऽतिवाचालः मन्दधीर्ह्यभिमानयुतः॥ शत्रुनष्टा च भोगेस्वतिरुचिः धनवान् तथा। निर्धनोऽपीति योगोऽस्ति कदाचित्सर्वथा ऋणी॥ श्वसुरालयवास्तव्यः स्वगृहापेक्षयासदा। सुन्दरी धार्मिकी किन्तु नष्टापत्यवतीं वहेत॥ भार्या षड्विंशते वर्षे ऽन्याभिश्च द्रव्यमाप्नुयात। स्वभावे चोग्रता स्यास्ति लाभो देशाटनाद्भवेत॥ पादो रक्तविकारश्च कुटुम्बाद्धिमतः सदा। उपायेन सुतश्चैकः सोऽपि वंशविधातकः॥ पुस्तकानाञ्च व्यापारे लाभोस्मै सप्तविंशतम्। द्विचत्वारिंशतं तद्वत् त्रिपञ्चाशत संख्यकम्॥ भाग्योदयकरञ्चास्मै घातकं प्रथमं तथा। चतुर्दशैकादशे वर्षे नवत्रिंशैक विंशते॥ षट्पञ्चाशाष्ट षष्ठ्यारव्ये समाजे च प्रतिष्ठितः। विरोधिनः परोक्षैव घातका एक सप्ततौ॥ चैत्रशुक्ल द्वितीयायां मृत्युश्चौराग्नि पीडया॥ क्षयिपः पूर्वकालस्य धर्मावाद्धनः पुनः॥ नीलमं धारयेच्चास्मोः अनुष्ठानं ध्रुतं तथा। प्रदोषस्य शिवाया स्मै चन्द्रश्चेन्नवमेऽथवा॥ तृतीये द्वादशे षष्ठे श्रमवान् जलभीतियुत। धार्मिको व्ययशीलश्च विस्तृतं फलमीदृशम्॥

चं. ५ | ४ बु. | ३ सू. | २ शु. | १ श. के. | १२ गु. | ११ | १० मं. | ९ | ८ | ७ रा. | ६

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक बन्धु-हीन, मित्रों का हितैषी, बड़ा धनी, धैर्यवान्, सहिष्णु, स्त्री-द्वेषी, परन्तु जितेन्द्रिय, क्षीण जंघा युक्त, दुर्बल शरीर, सरल स्वभाव, लज्जाविहीन, बाल्यावस्था में रोगी, दान से पराङ्मुख, स्त्रियों से धन को लेने वाला, गुणी, अधिक वाचाल, अल्पगति, घमण्डी, छोटे बालों वाला, शत्रुनाशक तथा भोगी होगा। इसकी आर्थिक-स्थिति में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। कभी धनी और कभी ऋणी होगा। यह पितृगृह की अपेक्षा श्वसुराल में अधिक रहेगा। इसकी स्त्री सुन्दरी, धार्मिक, परन्तु नष्ट-सन्तति वाली होगी। विवाह २६ वर्ष की आयु में होगा। अन्यस्त्रियों से भी इसका सम्बन्ध रहेगा और उनसे धन-लाभ भी सम्भव है। स्वभाव में कुछ उग्रता रहेगी। शरीर स्वस्थ

रहेगा। देशाटन से अधिक लाभ होगा। पाँवों में रक्त-विकार रहेगा। उपायों द्वारा केवल एक पुत्र प्राप्त होगा, जो म्लेच्छ वृत्ति का होगा तथा इसके नाम को कलङ्कित करेगा। कुटुम्ब से मतभेद रहेंगे। पुस्तकों के व्यवसाय से लाभ होगा, भाग्योदय २७, ४२, ५३ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ४, ११, २१, ३८, ५६ तथा ६८ वें वर्ष अपमृत्युकारक रहेंगे। समाज में प्रतिष्ठा रहेगी। विरोधी परोक्ष में हानि पहुँचायेंगे। इसकी मृत्यु ७१ वर्ष की आयु में चैत्रशुक्ला द्वितीया रविवार को मध्याह्न में अग्नि अथवा चोर की पीड़ा से अपने घर में ही होना संभव है। यह पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में धर्मभाव के कारण श्वान योनि प्राप्त करेगा। नीलम धारण, प्रदोष व्रत तथा शिवजी का अनुष्ठान लाभप्रद रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी-साहसी, जलसेवन पाने वाला, धार्मिक तथा अधिक खर्चीला होगा॥ इति [illegible]

भाव	ग्रह
१	श०, के०
२	
३	सू०, शु०
४	बु०
५	
६	चं०
७	रा०
८	
९	
१०	मं०
११	
१२	गु०

ॐ शुक्र उवाच॥ नाथ किं तस्य जीवस्य भविष्यमुच्यतां मुदा। जायते योऽत्र कुण्डल्यां श्रोतुकामोऽस्मि साम्प्रतम्॥ भृगुउवाच॥ प्राणी: योऽस्यां प्रजातोऽस्ति वत्स विद्या सुशोभित:। सर्वशास्त्र कला दक्ष: भाषणेऽपि पटुस्तथा॥ गुणवान् भोजने प्रीति: दीर्घकायोऽटने रत:॥ देशान्तरेषु रुग्णश्च वातपित्तादिभि: सदा॥ ऐश्वर्ये पतनोत्थाने लाभे हानिमवाप्स्यति। स्वभाजित स्वार्जितेनैव ख्यातो वैलासिक: सुखी॥ शोभनाङ्: सतां सङ्: दीर्घायु: स्थिरचेतसा:। काव्यसङ्गीतयो: मोद: मनसा यस्य चिन्तक:॥ प्रव्यामले सचिन्त्योऽयं सन्तत्या जीवने सुत:। दास्यति सुखमेकोहि नष्टापत्यो विवाहित:॥ द्विधा भवेत्पुरातस्य नैकविंशे भविष्यति। परोऽष्ट विंशते वर्षे साहसेन जयी सदा। सुवपु: रोगहीनश्चाष्ट-चत्वारिंशते तथा। चतु: त्रिंशाष्ट पञ्चाशे भाग्यस्यास्य वर्द्धनम्॥ जीवनेऽस्यान्य वर्षाणि चतुर्थ नैक त्रिंशातम्। द्वात्रिंशं सप्त पञ्चाशं प्रथमं षष्ठशोऽपि॥ अपमृत्युकराण्यस्मै षट्षष्ठिं त्रिसप्ततिम्। सभायाञ्च प्रतिष्ठास्य समाजेऽपि

प्रतिष्ठित:॥ नैकनवति वर्षायौ वैशाख शुक्ल पञ्चमी। अघोरवधिरन्त्यास्त्यश्मरी रोगेण ब्राह्मण:॥ भविता पूर्वकालस्य वैश्यो ऽयं धारयेत स्वयम्। पन्नं, नीलम ञ्चापि व्रतं बुद्धस्य पूजनम्॥ दक्षिणेशस्य चन्द्रोऽस्य चतुर्थे सप्तमे तथा। लग्ने वा दशमे ऽप्यस्य यदि स्यात्तु भवेत्तदा॥ शोभन: परम: स्त्रीणां प्रिय: वंश प्रपूरित:। पितु: शत्रु: स्त्रियश्चौर: राजेव शुभ लाभयुत॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे शुक्र! सुनो, यह जातक विद्वान्, समस्त शास्त्र एवं कलाओं में कुशल, बड़ा चतुर, व्याख्यानदाता, उत्तम कार्यकर्त्ता, सुस्वादु भोजन का प्रेमी, बड़ा गुणी, ऊँचे शरीर वाला, वात-पित्त रोगी, देशान्तरों में भ्रमण करने वाला, ऐश्वर्य में कभी कमी और कभी वृद्धि पाने वाला, लाभ की इच्छा से किए गए काम में हानि पाने वाला, बुद्धिमान्, स्वयं प्रसिद्ध होने वाला, सभाजित, उदार, विषयी, अत्यन्त तेजस्वी, बड़ा बलवान्, सुन्दर, सत्पुरुषों की स्तुति करने वाला दीर्घायु, स्थिर-चित्तवाला तथा रोग-रहित होगा। यह काव्य और सङ्गीत का प्रेमी तथा कोमल स्वभाव का होगा। धन की स्थिति अच्छी रहेगी। सन्तान की ओर से चिन्ता रहेगी। जीवन में केवल एक पुत्र द्वारा सुख पायेगा। अधिकांश सन्तानें नष्ट होंगी। इसका विवाह १९ तथा २८ वर्ष की आयु में दो बार होगा। साहस और परिश्रम द्वारा प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा। सभा और समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी। विरोधियों पर तथा मुकद्दमों में विजय प्राप्त करेगा। भाग्योदय ३४, ४८ तथा ५८ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ४, ६, २६, २९, ३२, ५७, ६६ तथा ७३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ८९ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला पंचमी गुरुवार को प्रात: काल पथरी रोग के कारण होना संभव है। यह पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। इसे पन्ना और नीलम धारण, बुधवार का व्रत तथा यमराज का पूजन करने से सदैव लाभ होगा तथा अरिष्ट दूर होंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमश: परम सुन्दर और

स्त्रियों का प्रेमी, पूर्ण कुटुम्बी, पितृ-द्वेषी, स्त्री-लम्पट तथा श्वेत वस्तु का व्यवसायी एवं राजा के समान धनी होगा॥ इति॥

ॐ शुक्र उवाच॥ भाषतां मे त्रिकालज्ञ फलं त्रैकालिकं मुदा। तस्य जीवस्य योऽस्यां वै कुण्डल्यां जायेत जन॥ भृगु उवाच॥ वत्स योऽत्र लभेज्जन्म भोगी भवति धार्मिकः। मिष्ठान्नादी प्रियश्चैव भ्रातृणां भाग्यवान्नपि॥ रुग्णश्च वातपित्ताभ्यां क्लिष्टः पुत्रैश्च पत्निभिः। दीर्घवपुः दिव्यदेहः शत्रुत्रस्तः विवादवान्॥ सुमीतलेरवनार्जिश्च सदा रुग्णो द्विजप्रियः। स्वबान्धवो विनम्रोऽपि आलस्यं धर्मकर्मसु॥ सद्भिः सह वसेच्छ्रेष्ठ स्त्रीणां भोगी सुखी सुकृत। सगर्वः बाल्यकालाद्वै पित्रोः त्यक्तः रणेजयी॥ दग्धचेता कदाचिच्च कष्टानामुपभोगवान्। सहसापाद्विपत्तीनां योगोऽप्यस्य मिलिष्यति॥ रक्तदुष्टा सुरूपा च पञ्चविंशति संख्यके। भार्याच्यास्मै परं तस्याः वाष्पाक्रोशेन निर्दहेत॥ हृदयमस्य सन्तप्ताः खेदमेवैष संवहेत। सुतश्चैकोऽपि वंशस्य वृद्धियोग्यो भविष्यति॥ उपेक्षा कुत्रचिद्धर्मे शत्रूंस्तु सर्वदा जयेत। तेन भाग्येऽस्य वृद्धिश्च प्रतिष्ठा चैक विंशते॥ चतुस्त्रिंशे त्रिपञ्चाशे षड्चत्वारिंशतेऽपि च। भाग्योदयं भवेदस्य जीवने सप्तमं तथा॥ चतुर्विंशं तृतीयञ्च सप्तपञ्चाशतं क्वचित। सप्तदशैक षष्ठ्यारव्ये नैक पञ्चाशतं बहुः॥ घातकं वर्तते भीतिः जलात मातुः पृथक् वसेत। वातपित्त विकारेण वर्षे पञ्च न सप्तती॥

भाव	राशि	ग्रह
लग्न	४	सू. बु. शु.
द्वितीय	५	
तृतीय	६	
चतुर्थ	७	रा.
पंचम	८	
षष्ठ	९	
सप्तम	१०	मं.
अष्टम	११	
नवम	१२	गु.
दशम	१	श. के.
एकादश	२	
द्वादश	३	चं.

आश्विन शुक्ल नवम्यां मृत्युरस्य पुराऽभवत। वैश्यश्चाग्निम योन्याञ्च पत्नि भोगान्महर्षयः॥ नीलमं पन्नकं धृत्वा गणेशस्यास्ति पूजनम्। चतुर्थौ वृतमाध्यन्तं श्रेयसे जीवने यदि॥ द्वितीयैकादशे चन्द्रः पञ्चमे वाष्टमे तदा। विद्याविनय वित्तेशः विषवारिभयं व्रजेत॥

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे पिता! इस जन्म कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे वत्स! यह जातक अधिक भोगी, धर्मवान्, धर्मात्माओं का प्रिय, मिष्ठान्न प्रेमी, सौभाग्यशाली, बन्धु-प्रिय, लम्बे

कटका, पुत्र-स्त्री आदि से कष्ट पाने वाला, वात-पित्त-रोगी, देशान्तरों में भ्रमणशील, सामान्य ऐश्वर्यवान्, वाद-विवादी, शत्रुओं से कष्ट का अनुभव करने वाला, श्रेष्ठ बुद्धिमान्, लेखन-कार्य से जीविकोपार्जन करने वाला, सुन्दर चिर-रोगी, राज्यप्रिय, ब्राह्मण-प्रिय, विनम्र, बन्धु-बान्धव युक्त, धर्म-कर्म में आलसी, सत्पुरुषों का सङ्ग करनेवा-ला, श्रेष्ठ स्त्रियों का भोगी, उत्तम कार्यकर्ता, बाल्यावस्था में माता-पिता से वियोगी, अभिमानी, युद्धजयी, हृदय में चिन्तित रहनेवाला, यदा-कदा कष्ट भोगनेवाला तथा कभी दुर्घटना का शिकार होने वाला होगा। इसकी स्त्री सुन्दरी, परन्तु रक्त-विकार से युक्त होगी। विवाह २५ वें वर्ष में होगा। स्त्री की कटुवाणी से इसका हृदय सदैव संतप्त बना रहेगा। सन्तानें भी पीड़ा देती रहेंगी। केवल एक पुत्र ही सत्पात्र, कुलपालक तथा वंश-वृद्धि करने वाला प्राप्त होगा। विरोधियों पर सदैव विजय प्राप्त होगी। प्रतिष्ठा तथा भाग्योदय में वृद्धि होती रहेगी, भाग्योदय २१, ३४, ४६, तथा ५३ वें वर्ष में होगा। जीवन के ३, ७, १७, २४, ४९, ५७ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। यह जातक माता से अलग हो कर, दूसरे पिता के घर में भी जा सकता है। इसकी माता ३ वर्ष की आयु में ही इसे छोड़ जाएगी- ऐसी संभावना है। इसकी मृत्यु आश्विन शुक्ला नवमी शनिवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, वात-पित्त रोग के कारण, घर पर ही, ६५ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में परस्त्री-भोग के कारण महिष योनि को प्राप्त होगा। पन्ना धारण करने, चतुर्थी का व्रत रखने तथा गणेश जी का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी, विद्या-विनय-सम्पन्न; जल अथवा विष से भय पाने वाला, पुत्रवान् तथा विविध भोगों का भोगी होगा॥ इतिशुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ प्रभो वद भविष्यं मे तस्य जीवस्य यो भवेत्। अस्मिन् ग्रहमहत्संयोगे

शुभान् श्रावय विस्तृतम् ॥ भृगु उवाच ॥ सुखेन वंचितो वत्स संदिग्धः क्लेशयुत् सदा । वाराङ्गनारतश्चैवं मलि-नाम्बरधारकः ॥ निरानन्दोऽटने दक्षः दीर्घपादश्च बाहुवान् । युद्धे धृतिः धनैः हीनः शत्रुजित् निर्दयः ऋणी ॥ जना-नां स्वागतं कुर्यात् कुलश्रेष्ठः दृढ़ोवपुः । निरापत्यः स्वतन्त्रश्च मधुरवाग् प्रवासकः ॥ कीर्तिवान्मीश भक्तश्च प-ण्डितोऽपि विवादितः । पुण्यवानःजलाद्भीतः रोगिण्याः पतिरालसी ॥ गर्भाशय विकारिण्या त्रयो विंशे भविष्यति । विवाहोऽस्यच सुन्दर्या त्यक्त्वा राज्यपदं वहेत् ॥ जीवनं भ्रमणे नैव बहुवेश्यारतस्तदा । जन्मसिद्धोऽधिकारोऽस्य वैरिणाञ्च पराजये ॥ सामान्यः धार्मिके द्रव्ये भाग्यवृद्धिश्च संभवेत् । द्विचत्वारिंशते चतुःपञ्चाशेऽष्ट विंशते ॥ प्रथमं सप्तमं वर्षे सप्तदशैकविंशते । अष्टत्रिंशैक षष्ठ्यारव्ये षड्पञ्चा-शतं तथा ॥ अरिष्टायैव वर्तन्ते लहसुनेति च नीलमे । आदित्य हृदय स्यास्मै अनुष्ठानं व्रतं रवेः ॥ धेयसे सर्वदा वैश्यः पूर्वजन्मनि चाग्रिमे । क्लीबो जनो भवेच्चन्द्रः तृतीये नवमे तथा ॥ षष्ठे च द्वादशे तत्र श्रमवान् धार्मिकः परम् । जलाद् भीतोऽस्थिरचेता विद्वान् साहसिको भवेत् ॥ पौषकृष्ण चतुर्थ्याञ्चाब्दे सप्तषष्ठि संख्यके । विक्षिप्त्या सन्निपाताद्वा मृत्युश्चास्य सुनिश्चितम् ॥ इत्येव सुत सर्वञ्च भविष्यं तस्य देहिनः । आख्यातं तव संपृष्टे किमाग्रेऽस्ति वदस्वतत् ॥

चं. ६	५	४ सू. बु. शु.	३
७ रा.		१ श. के.	२
८	१०		१२ गु.
९ मं.		११	

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे सर्वज्ञ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले- हे जिज्ञासु! सुनो, यह जातक सुख-वंचित, क्लेशयुक्त, सन्देहशील, मलीन मन वाला, वेश्यागामी, आनन्द-रहित, भ्रमणशील, लम्बे हाथ-पाँव वाला, युद्ध में धैर्यवान्, धन-हीन, कठोर शरीर वाला, निर्दय, ऋणी, शत्रुजयी, सुन्दर, अतिथि-सेवी, सन्तान-रहित, स्वतन्त्र, दानी, सङ्गीत-प्रिय, मधुरभाषी, आलसी, उच्चपद पाने वाला, यशस्वी, ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, परोपकारी, पण्डित, स्नेही, परदेशवासी, विवादी, जल से भय पाने वाला, रुग्णा-स्त्री

का पति, अधिक खर्चीला तथा क्रोधी-स्वभाव का होगा। इसका विवाह सुन्दर, परन्तु गर्भाशय-विकार युक्त रोगिणी स्त्री के साथ २३ वर्ष की आयु में होगा। यह राज्यपद त्याग कर पर्यटन सम्बन्धी कार्य करेगा और उसीसे अपनी आजीविका चलाएगा। इसका अधिकांश समय परदेश में तथा वेश्याओं के साथ व्यतीत होगा। इसके घर में पुत्र का जन्म शल्य-चिकित्सा द्वारा होना सम्भव है, अन्यथा होगा ही नहीं। विरोधियों को निरन्तर पराजित करेगा। धन की स्थिति सामान्यत: अच्छी रहेगी। इसका भाग्योदय २८, ४२ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ७, १७, २१, ३८, ५६ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टकारक रहेंगे। नीलम और लहसुनियाँ धारण करने, रविवार का व्रत रखने तथा आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ एवं अनुष्ठान करने से सदैव लाभ होगा। यह पिछले जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में नपुंसक होगा। इसकी मृत्यु पौष कृष्णा चतुर्थी मंगलवार को प्रातः काल घर पर ही विक्षिप्तता अथवा सन्निपात रोग के कारण ६७ वर्ष की आयु में होना संभव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमश: उद्यमी और साहसी एवं धार्मिक; नीरोग परन्तु जल से भय पानेवाला, अस्थिर-चित्त और विद्वान् तथा अधिक खर्चीला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ पित: मह्यं फलादेशमुच्यतान्तस्य प्राणिन:। अस्मिन् योऽपि गृहे क्षेत्रे जायमानोऽस्ति देहवान् ॥ भृगु उवाच ॥ जिज्ञासो जायमानोऽत्र भोगवान् अति भूपताम्। लघुदेरोऽरि हन्ताऽल्प सन्तीवान् पराक्रमी ॥ यौवने व्याधियुक्तश्च निर्धनि मेक सूनुवान्। परभार्यो भोगश्च कुर्याद्वान्यगृहे वसेत् ॥ धीमान् शूर: हृढाङ्गश्च पाण्डु रुग्ण: सुरूपवान्। शील विद्यायुतश्चैवं निर्लज्ज: जानुपीड़ित: ॥ धर्महीनश्च योगी वै कुपत्निक: पितु: रिपु:। दैनिके च व्ययाधिक्यं मायादस्य तथोग्रता ॥ स्वभावे पञ्चविंशेऽस्य विवाहश्च द्विभिंशते। भयात मातवन्यगेहे वा सुतश्चैको भविष्यति ॥ वंचयिष्यति चैनं स: यथाकालेऽरि वंचित:।

निर्माता चैव शस्त्राणां मान्यो राज्यसभासु च ॥ वणिजः लौह वस्तूनां तेन भाग्योदयं भवेत् । नवविंशे द्वि पञ्चाशे षड् चत्वारिंशते तथा ॥ चतुर्थे सप्तमं वर्षे प्रथमैकपञ्चाशतम् । चतुःविंशैक त्रिंशेच्च हान्यैः नैष्टञ्च निश्चितम् ॥ नैकषष्ठ्यां हि तीर्थेऽस्य माघे मृत्युः भविष्यति । कृष्ण पक्षे चतुर्दश्यां भूकम्पेनाग्नि वंचनात् ॥ भृंगेति पुरवराजं वै एकादशी व्रतं शुभम् । विष्णुपूजाञ्च कुर्याद्वै श्रेयसे पूर्वजन्मन: ॥ क्षत्रियो भवेदग्रे कूष्माण्डो यदि चन्द्रमा । चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे वास्य सम्भवेत् ॥ शोभन: सुविचारज्ञ: गृहभूप: स्थिप: द्विप: । न्याये उच्चपदस्य श्च इति तेऽस्त्युत्तरं सुत: ॥

६	५ सू.	बु. शु. ४
७ रा.		३
८		२
९ मं.	११ चं.	१ श. के.
१०		१२ गु.

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश मुझसे कहिए। भृगुजी बोले - हे जिज्ञासु! सुनो, यह जातक अत्यन्त भोगी, छोटे पेट वाला, अल्प-संततिवान्, उत्साही, पराक्रमी, परगृह वासी, शूर, चपल, बुद्धिमान्, विजयी, विलासी, दृढ़शरीरवाला, पाण्डुरोगी, बहुकुटुम्बी, भाग्यहीन, कुचाली, विकल, सुन्दर वेष वाला, शील तथा विद्या में प्रवीण, लज्जाहीन, क्षीण जाँघ वाला, तीर्थयात्री, योगी, सामान्य-सुखी, उत्तम घर में रहने वाला, पाखण्डी, धर्म से हीन, पितृद्वेषी, घमण्डी, दुष्टा-स्त्री वाला एवं वीर्य-दोषी होगा। आमदनी की तुलना में खर्च अधिक रहेगा। स्वभाव में उग्रता रहेगी। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होगा तथा ३२ वर्ष की आयु में स्त्री की मृत्यु हो जायेगी अथवा वह दूसरे पुरुष के घर में चली जाएगी। केवल एक पुत्र होगा, जो इसके साथ छल करेगा। विरोधी अनेक होंगे और वे इसे हानि भी पहुँचाएंगे। सभा, राज्य आदि में सम्मान प्राप्त नहीं होगा। लोहे की वस्तु तथा शस्त्र निर्माण के व्यवसाय द्वारा इसका भाग्योदय २९, ४६ तथा ५२ वर्ष की आयु में होगा। इसके जीवन के १, ४, ७, २४, ३१ तथा ५१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। इसकी मृत्यु किसी तीर्थ में

माघ कृष्णा चतुर्दशी शनिवार को सायंकाल अग्नि-विस्फोट अथवा भूकम्प के कारण ५६ वर्ष की आयु में होगी। पुखराज एवं मूँगा धारण करने, एकादशी का व्रत रखने तथा विष्णु का पूजन-अर्चन करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में कूष्माण्ड योनि को प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर एवं उच्च विचारक; गृह-भूमि का स्वामी तथा पूर्ण कुटुम्बी; स्त्रीयुक्त तथा स्त्री-जित एवं राज्य में उच्च न्यायाधीश के पद पर प्रतिष्ठित होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रैकालिकं फलादेशं तस्यैव प्राणिनः मुदा। उच्यतां यो ऽत्र कुण्डल्यां लभते जन्म सत्वरम्॥ भृगु उवाच॥ स्थिर मतिः धनाधीशः राजसेवी यशोधनः। सानन्दः पत्नि प्रीतश्च कथा गायन निन्दकः॥ राजतुल्यः प्रवासी वै सुवपुः दानवान् परम्। स्त्री कामुकस्तथात्मीये: कलहश्च धर्म पालकः॥ आत्मीयानां विरोधेन वंचितः क्लेश निर्गतः। सहोदरैः धनापन्नः वातरुग्णो ऽरि नाशकः॥ श्रमशीलस्तपस्वी वै सन्तत्याधाल्प यत्नवान्। गृहस्थेऽति यदुं भार्यां शील सौन्दर्य शालिनीम्॥ षडविंशे ऽयमाप्नोति श्वसुरालयमागतः। प्राप्यमाप्नोति दयान्यां मुक्ता वा चौत्तमं परम्॥ विद्यासन्तति पक्षाभ्यां रहितो ऽप्येक पुत्रकः। सुखं स एव यच्छेद्वै वैरिणश्चाक्षमाः सदा॥ तथापि चिन्तितो नित्यं स्वस्य: भाग्योदयं भवेत्। षडविंशे नवत्रिंशो नैकपञ्चाशते ऽपि च॥ स्वभावे मार्दवं स्त्रीणां वासे नैसर्गिकं सुखम्। राज्ये मान्यस्तथा स्मै हि प्रथमं सप्तमं क्वचित्॥ अष्टादशाष्ट त्रिंशञ्च एकादशैक षष्ठिके। त्रिपञ्चाशतं वर्षं षडपञ्चाशतात्मकम्॥ जीवने घोर कष्टाय नीलमं पुखराजयोः। धारणं श्रेयसे पूजा चन्द्रस्य व्रतमुत्तमम्॥ चतुर्थ्यां: पूर्वकालस्य वैश्यो ऽयं शाल्मलेना भवेत्। एक सप्तति वर्षायौ तीर्थे मृत्युः भविष्यति॥ आषाढ शुक्लपक्षस्य दशम्यां चन्द्रमा यदि। द्वितीये पञ्चमे चैवं अष्टमैकादशे भवेत्॥ तदा लाभो ऽस्य यात्रायां पुत्रवान: धनाधिपः। राजनीतिविदश्चैवं

विद्वान् भीत: जलाद सौ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे ज्ञानी! इस जन्म कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे वत्स! यह जातक स्थिर मति, अधिक पराक्रमी, कीर्तिमान्, राजसेवी, परोपकारी, धन तथा वाहनादि से युक्त, श्रेष्ठ स्त्री प्रेमी, सदैव आनन्दित रहने वाला, परदेशवासी, कथा-गायन का निन्दक, स्त्री-भोगेच्छु, राजतुल्य, उत्तम शरीर वाला, धनी, दानी, स्त्री-पक्ष से धनवान्, सुखी, स्वजनों से कलह करने वाला, शत्रुओं का हितैषी, सन्तोषी, दुर्बल शरीर वाला, सर्वप्रिय, उद्यमी, क्लेशहीन, पुत्रेच्छुक, भाग्यशाली, भाइयों से भयभीत, वातरोगी, तपस्वी,

६ चं.
४ बु.
७ रा.
५ सू. शु.
३
८
२
९ मं.
११
१ श. के.
१०
१२ गु.

शत्रु-नाशक, अल्प-सन्ततिवान् तथा उत्साही होगा। इसकी स्त्री सुन्दरी, सुशील, एवं गृहकार्य में दक्ष होगी, जो इसे २६ वें वर्ष में प्राप्त होगी। यह ससुराल में जाकर रहेगा अथवा किसी पर-स्त्री के सम्पर्क द्वारा इसे उत्तम धन का लाभ होगा। विद्या तथा सन्तान-पक्ष में कमी रहेगी। केवल एक पुत्र ही इसे जीवन में सुख देगा। शरीर प्राय: स्वस्थ बना रहेगा। विरोधीजन इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे, फिर भी चिन्तायें बनी रहेंगी। भाग्योदय २६, ३९ एवं ४९ वर्ष की आयु में होगा। स्वभाव में स्त्रियों जैसी कोमलता रहेगी। ठाठ-बाट से रहना प्रिय होगा, राज्य से सम्मान प्राप्त होगा। जीवन के १, ७, ११, १८, ३८, ४७, ५६ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिप्रद रहेंगे। नीलम तथा पुखराज धारण करने, चतुर्थी का व्रत रखने तथा चन्द्रदेव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। यह पूर्व जन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण होगा। इसकी मृत्यु ७१ वर्ष की आयु में आषाढ़ शुक्ला दशमी रविवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में, किसी तीर्थ क्षेत्र में होना सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो

तो यह जातक क्रमशः यात्रा से लाभ पाने वाला, पुत्रवान् एवं विद्या-सम्पन्न, पूर्णधनी तथा जल से भय पाने वाला एवं राजनीतिज्ञ होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ शुक उवाच ।। प्राप्नोति जन्म कुण्डल्यामस्यां योऽपि शरीरवान् । जीवनं तस्य कथयांतु श्रोतुमिच्छामि भाग्तताम् ।। भृगुउवाच ।। बलवान् स्वाभिमानी वै आत्मविश्वासवान् भवेत् । दीर्घकायः सुरूपश्च गार्हस्थ्ये वीतचिन्तकः ।। अत्रजातो यशोमूर्तिः सन्तत्या सुखभाग् भवेत् । विद्यायां सफलं तात दीर्घायुः मृदुभाषकः ।। मातुः सुखमवाप्नोति स्त्रीभिः मान्यः विलासकः । व्यवहारे पटुश्चाल्प धार्मिकः बान्धवैः युतः ।। निन्दकः शत्रुजित् धीरः अधीरोऽपि यदा कदा । गुप्तनीतौ तथा युक्तौ दक्षः स्वार्थ प्रसाधकः जीवने सर्व जातीनां स्त्रीणां भोगं करिष्यति । तोलने कुशलस्तासां श्रमवान्नपि प्राप्नुयात् ।। भार्यामेष परासक्तामेकविंशे च वैभवे: । सम्पन्नोऽयं वाहनैश्च पतिः पितृगृहे वसेत् ।। स्वयमेव पुनस्तस्मात् गेहाल्लाभान्वितो भवेत् । पुत्रश्चैकोहि सन्तत्यां योग्यः सेवारतो परम् ।। राज्ये मान्यः समाजे चामान्यः भाग्योदयं क्वचित् चतुःत्रिंशे द्विपञ्चाशे षड्चत्वारिंशतेऽपि च ।। नवमं प्रथमं तद्वत् अष्टादशं त्रयोदशम् । त्रिंशञ्चपञ्च पञ्चाशं द्विचत्वारिंशतं तथा ।। त्रयो षष्ठिं हि नेष्टाय नीलमं धारयेद् व्रतम् । शनेः पूजाऽपि तस्यैव इष्ट साधयितुं सदा ।। चतुः सप्तति वर्षायौ वैशाखस्य त्रयोदशी । शुक्लपक्षस्य मृत्युं वै व्रणं रोगेण चाभवत् ।। शूद्रोऽयं चाग्रिमे काले भृगः स्यात् चन्द्रमाः यदि तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशेऽत्र भविष्यति ।। आलस्येनैव संयुक्तः दरिद्रः स्वस्थ आलसी । जलाद्भीतो व्यापन्नः यात्रया लाभ संयुतः ।।

स्थान	अंक	ग्रह
लग्न	५	सू. बु. शु.
द्वितीय	४	
तृतीय	३	
चतुर्थ	२	
पञ्चम	१	श. के.
षष्ठ	१२	गु.
सप्तम	११	
अष्टम	१०	चं.
नवम	९	मं.
दशम	८	
एकादश	७	रा.
द्वादश	६	

भावार्थः शुक्र ने कहा- हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें ।

भृगुजी बोले - हे पुत्र! सुनो, यह जातक बलवान्, स्वाभिमानी, आत्मबली, सुन्दर, प्रभावशाली, लम्बे कद वाला, गार्हस्थ्य-संचालन में लापरवाह, सन्तान से सुखी, सफल, विद्वान्, यशस्वी, मातृ-सहयोगी, कमखर्चीला, सम्मानित, विवेकी, उन्नतिशील, धनी, भोगी, दीर्घायु, मृदुभाषी, ठाठ-बाट में खर्च करने वाला, अच्छे-सम्पर्क वाला, पितृ-विरोधी, कुटुंब प्रेमी, स्त्री-पक्ष से सम्मानित, अल्प धार्मिक, भाई-बहनों से युक्त, स्वार्थ-साधक, परिश्रमी, शत्रुजित, पुरुषार्थी, धैर्यवान्, परन्तु कभी-कभी हिम्मत हार बैठने वाला, गुप्त युक्ति एवं शक्तियों का प्रयोग करने वाला, धर्म में बाधा युक्त तथा भाग्यशाली होगा। यह प्रत्येक जाति की स्त्रियों से भोग करने वाला तथा स्त्रियों को प्रसन्न करने में चतुर होगा। इसका विवाह २१ वर्ष की आयु में होगा तथा इसकी पत्नी पर-पुरुष-रता रहेगी। वैभव, गृह, भूमि वाहनादि का पर्याप्त सुख रहेगा। यह अपनी स्त्री को घर में रखते हुए भी नहीं रख सकेगा और उसका अधि-कांश समय अपने पीहर (नैहर) में ही व्यतीत होगा। श्वसुराल में इसका अच्छा सम्मान होगा तथा अन्त में वहाँ से लाभ भी प्राप्त होगा। सन्तानों में केवल एक ही पुत्र सुयोग्य तथा सेवाधिकारी होगा। समाज में सम्मान कम मिलेगा, परन्तु राज्य में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। इसका भाग्योदय ३४, ४६ तथा ५२ वर्ष की आयु में होगा। जीवन के १, ८, १३, १८, ३०, ४२, ५२ तथा ६२ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्ट कारक सिद्ध होंगे, नीलम धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा शनिदेव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। इसकी मृत्यु ७८ वर्ष की आयु में, वैशाख शुक्ला १३ सोमवार को मध्यरात्रि में, घर पर ही व्रण रोग के कारण होना संभव है। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में मृग योनि को प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः आलसी और दरिद्र तथा अङ्गहीन; स्वस्थ और नीरोग तथा जल से भय पाने वाला, सामान्य धार्मिक एवं खर्चीला तथा भाग्य द्वारा लाभ पाने वाला होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच॥ नाथ भाषस्व मे सर्वं प्राणिनस्तस्य जीवनम्। ग्रहाणां संकुलेऽस्मिन् यो प्राणान् वै लभे तदा॥ भृगु उवाच॥ अतिभोग समापन्नः जायमानोऽत्र जातकः। लघूदरोऽरिजेता च सोत्सुको वत्स संभवेत्॥ स्थिरधीः राजसेवी च परोपकारकारकः। युद्धजेता स्त्रियः सौख्यं आत्मीयैः प्रीति संयुतः॥ मृषावादी सुसम्पन्नः वैभवेन यशोधनः। व्याकुलो बाधवःक्लेशी सन्तुष्टोऽपि सुचिन्तितः॥ दुराचार युतः स्त्रीणां भोगी पापानुरञ्जितः। वृद्धतुल्यं शरीरेण वातरुग्णो जितेन्द्रियः॥ मध्यमो वपुसा भक्तः द्विजानां क्रोध संयुतः विवेकोऽपि सदैवास्मिन् क्षणिकः क्रोधशान्तयोः॥ कुद्रा किन्तु सुरूपा स्यै चतुःविंशे मिलिष्यति। भार्या सन्तति पक्षाद्वै दुःखं प्राप्स्यति सर्वदा॥ यत्नेन पितृ श्राद्धेन सुतश्चैको भविष्यति। सावचेतो भवेत्तस्मिन् स्वस्थः प्रायः द्विजाज्जयः॥ जयं राजविवादेषु मानं राजसमाजयोः। द्वात्रिंशञ्च द्विपञ्चाशं षड्चत्वारिंशतं तथा॥ भाग्योदयं करं वर्षं मूँगेति रत्नधारणम्। भौमव्रतानुष्ठानंश्च सविधं श्रेयसे सदा॥ सप्तमं सप्तत्रिंशञ्च सप्तदशं त्रिषष्ठिकम्। द्विपञ्चाशतं तद्वत् षड्पञ्चाश संख्यकम्॥ जीवने घातकम् नित्यं नैकसप्तति संख्यके। फाल्गुने प्रथमाह्नैव मानसिकेन रोगतः॥ मृत्युरस्यास्ति विप्रेषं पण्डितः पूर्वजन्मनः। कपोतश्चाग्निमे जन्मे कुण्डल्यामत्र चन्द्रमाः॥ चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे यदि संभवेत्। शोभनो राजतुल्यो ऽयं स्त्रीहरः शुक्लवस्तुजित्॥

७ रा.	६	५ सू. बु. शु.	४
८ चं.		२	३
९	११	१ के. श.	
	१० मं.	१२ गु.	

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे नाथ! आप इस कुण्डली वाले मनुष्य का जीवन-फलादेश कहें। यह सुनकर भृगुजी बोले – हे वत्स! सुनो, यह जातक अत्यन्त भोगी, शत्रु-नाशक, छोटे पेट वाला, अल्पसन्ततिवान्, महापराक्रमी, स्थिर-बुद्धि, यशस्वी, राजसेवी, परोपकारी, संग्रामजयी, स्त्रियों से सुखी, स्वजनों से प्रीत, धन-वैभव-सम्पन्न, मिथ्याभाषी, स्त्री-प्रेमी, दुःखी, राजपद प्राप्तकर्ता, सुन्दर, दानी, उत्तम स्थान में

रहने वाला, प्रसन्न चित्त, सन्तोषी, चिन्तित, पापानुरक्त, कुटिल तथा कुशीला स्त्री का भोगी, बान्धवों से क्लेश करने वाला, उद्वेगी, वातरोगी, स्त्रियों को मोहित करने वाला, वृद्धतुल्य शरीर वाला, भूम्याधिपति, क्रोधी, ब्राह्मण भक्त तथा सामान्य क़द वाला होगा। इसके स्वभाव में क्रोध के साथ विवेक भी रहेगा, अतः यह क्षण में रुष्ट तथा क्षण में तुष्ट दिखाई देगा। इसकी स्त्री कपटी, क्रोधी स्वभाव की, नीचवृत्ति की, परन्तु सुन्दर होगी। विवाह २४ वें वर्ष में होगा। सन्तान की ओर से प्रायः दुःखी रहेगा। अत्यन्त कठिनाई तथा पितृश्राद्ध प्रयोग से इसे एक पुत्र की प्राप्ति होना सम्भव है, जिसे सावधानी से रखना पड़ेगा। इसका शरीर प्रायः स्वस्थ रहेगा तथा शत्रु पराजित होंगे। मुकद्दमों में सदैव सफलता मिलती रहेगी। राज-समाज में सम्मान बना रहेगा। भाग्योदय ३२, ४६ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। मूँगा धारण करने तथा सविधि मंगल का व्रत एवं अनुष्ठान करने से सङ्कट-निवारण में सहायता मिलेगी। इसके जीवन के ७, १७, ३७, ४८, ५६ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६९ वर्ष की आयु में, फाल्गुन कृष्णा प्रतिपदा गुरुवार को सायंकाल मानसिक-रोग के कारण घर में ही होना सम्भव है। यह पूर्वजन्म में विद्वान् ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में कपोत योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर एवं आत्म सन्तोषी; गृह-भूमि पति एवं कुटुम्ब से सुखी; स्त्री-लम्पट तथा श्वेत रंग की वस्तुओं का व्यवसायी एवं वैभव-सम्पन्न तथा राजमान्य होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच।। वृत्तान्तमस्य जीवस्य ग्रहाणामत्र संकुले। जीवनस्य प्रजातस्य मे त्रिकालज्ञ वर्ण्यताम्।। भृगु उवाच।। वत्स शास्त्रेषु नैपुण्यं अस्याञ्जातस्य सम्भवेत्। सौभाग्यवान् गुणैश्चैवं युक्तो देहेन शोभनः।। धनवानल्प भाषी च नीरोगः सुरतः प्रियः। मातृपक्षाद्धनाधीशः शत्रुजिदात्मनां प्रियः।। योग शीलश्च जात्याःवै हितेच्छुश्च जितेन्द्रियः। दुर्बलाङ्ग्याः पतिः स्त्रीणां मोहकः भूमि जीवितः।।

विप्राणां महतां भक्तो ऽरिग्रस्तः मध्यमं वपुः । सुदर्शनो मृषावादी दुर्बलो धनरक्षकः ।। सुधी क्रुद्धो मृदुः वाण्यामुरु-रुग्णो यदाकदा । विद्या धी धन भूमीनां योगो ऽस्यायाति सोत्तमः ।। तथैव वैभवायापि राज्ये मानाप ता दृशम् । सुशीलां शिक्षितां भार्यां पतिभक्ता परं सदा ।। रुग्णां विंशतमे वर्षे प्राप्स्यत्येष संख्यया । कन्याः सन्त्वधिकाः पुत्र एकोहि वंश दीपकः ।। शत्रुहीनः भवेद्भाग्ये वर्द्धनं सप्तमे तथा । षड्चत्वारिंशते चाब्दे एकविंशाष्ट त्रिंशयोः ।। जीवनैकादशं वर्षं प्रथमञ्चाष्ट विंशतम् । द्विषष्ठिमेकत्रिंशञ्च नैक पञ्चाशता त्मकम् ।। सप्तसप्तति संख्याकं त्रिसप्ततिञ्च सर्वदा । नेष्टाय हानिदं वर्षं गोमेदस्य धारणम् ।। सप्त-

७ रा.	५		
८	६ सू.बु.शु.	४ चं.	
९		३	
१० मं.	१२ गु.	२	
११		१ के. श.	

म्यास्तु व्रतं पूजा श्रियः कल्याण कारकम् । श्रावणस्यान्तिमे चाह्ने चतुरसीति संख्यके शस्त्रघातेन केऽप्यद्धे देवस्य मरणं भवेत् । क्षत्रियो धार्मिकः पूर्वं योनिञ्च प्रथमां व्रजेत् चन्द्रो यदि द्वितीये वा पञ्चमैकादशे ऽष्टमे । सामान्यो ऽपं धने माने पुत्रवान् जल भीति युत् ।।

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे त्रिकालज्ञ । इस कुण्डली का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे वत्स ! इस कुण्डली वाला जातक शास्त्रज्ञ, सौभाग्यशाली, गुणवान्, सुन्दर, सुरत-प्रिय, अत्यन्त धनी, कमकोपनेवाला, मातृ-पक्ष से धन पाने वाला, नीरोग, शत्रुजित् योगशील, स्वजनों का हितैषी, सजातीयों का हितू, दुर्बल-स्त्री का पति, विलासी, सत्कर्मा, दृढ़ शरीर वाला, जितेन्द्रिय, कुलजयी, स्त्रियों को मोहित करनेवाला, भूमिधीवी, क्रोधी, बुद्धिमान्, सुन्दर, प्रियदर्शी, पण्डित, मन्दगामी, अभिमानी, राजतुल्य, मृदुभाषी, कभी-कभी मुरव-रोगी, मिथ्यावादी, सत्कारकर्त्ता, लघुकेशी, धन-रक्षक तथा दुष्ट-वशी होगा। इसे धन, विवेक, विद्या, बुद्धि, आचार-विचार, गृह, भूमि, सम्मान, वैभव, राज्य में प्रतिष्ठा आदि का उत्तम सुयोग प्राप्त होगा। इसकी पत्नी परम सुन्दरी, पति-परायणा, सुशिक्षिता,

सुशीला, धार्मिका, परन्तु प्राय: रुग्ण होगी। इसका विवाह २० वर्ष की आयु में होगा। सन्तानों में कन्याओं की संख्या अधिक रहेगी, परन्तु इसका एक ही पुत्र वंश-यश-विस्तारक, पितृभक्त तथा विनम्र होगा। शत्रु प्राय: नहीं रहेंगे। भाग्योदय ७, २१, ३८ तथा ५६ वें वर्ष में होगा। इसके जीवन के १, ११, २८, ३१, ४९, ६२, ७३ एवं ७७ वें वर्ष अरिष्ट एवं अपमृत्युकारक रहेंगे। गोमेद धारण करने, सप्तमी का व्रत रखने तथा लक्ष्मीजी का पूजन करने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। यह पूर्वजन्म में धार्मिक क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में प्रमथ योनि प्राप्त करके उत्तमभोग भोगेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमश: सामान्य-धनी, अधिक पुत्रों का पिता, जल अथवा विष से मृत्यु पानेवाला तथा सामान्य-प्रतिष्ठित होगा॥ इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
७	बु॰ शु॰ रा॰
८	चं॰
६	सू॰
५	
४	
९	
३	
१०	मं॰
१२	गु॰
२	
११	
१	श॰ के॰

ॐ शुक्र उवाच॥ त्रैकालिकं प्रभो ब्रूहि अस्यां जातस्य देहिन:। श्रोतुमिच्छाम्यहं भावं तदा भृगु उवाच वै॥ भृगु उवाच॥ व्ययशीलो भवेदेष परस्थानस्य वर्तक:। व्यग्रो भ्रमणशीलश्च दुर्बलोऽनुभवान्वित:॥ विद्या बुद्धि समायुक्त: सामान्यो व्यवसायिक:। सन्तत्या दु:खितो वीर: दीर्घायु: बन्धु संयुत:॥ विदेशाटन लाभोऽस्यै प्रसाधन प्रदर्शक:। भाग्योदयस्य कालेऽयं द्रव्यवान् पैतृकान्वित:॥ राजमान्य: सयत्नोऽयं सौम्य: सुपत्नि संयुत:। भूम्याधिप: सुरक्षश्च भाग्यवान् चिन्तित: क्वचित्॥ शत्रुपक्षात्भयापन्न: गुप्तरुग्णश्च वीर्यवान्। अतिश्रम करश्चैवं योगोऽपमृत्यु कारक:॥ कोपनं उदरेणासौ पीड़ित: पञ्च विंशते। सुशीलया च सुन्दर्या विवेक धर्म युक्तया॥ शाकं भवेद्विवाहश्च स्त्री पक्षो महदुत्तम:। त्रियञ्चाशाष्ट त्रिंशैव षड्चत्वारिंशतात्मकम्॥ भाग्योदयाय वर्तन्ते सन्ततौ यत्नतोऽथवा। शल्यक्रिया सहायेन सुतो वंशस्य दीपक:॥ प्रबला: शत्रव: किन्तु पुत्रपक्षे नैव घातका:। राज्ये विद्याप्रभावाभ्यां द्रव्यं किन्तु व्ययाय तत्॥ धार्मिकानि च कार्याणि सम्पादयन्

हि जीवने। द्वितीयं नवमञ्चाब्दं त्रयोदशाष्ट विंशते॥ सप्तपञ्चाशतं पञ्चचत्वारिंशत संख्यकम्। षडष्टि महच्चास्मै हान्यै चैवं भृगादसौ॥ सप्तपञ्चाशते वर्षे पुनर्जन्म न विद्यते। नीलमं धारयेच्चैवं शनेः पूजाप्तो शिवम्॥ क्षत्रियः पूर्व योन्यां वै कुम्भकारो भविष्यति। भेदे ब्रजेन मृत्युश्च त्रयो सप्तति संख्यके॥ आषाढ़स्य द्वितीयायां शुक्लस्य यदि चन्द्रमा। तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे नीचकारकः॥ नीरोगः भाग्यवान् धर्मी धात्रिकश्च वैदेशिकः। इति फलं त्वया पृष्ठं नाधिकञ्चाति वर्णिम्॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे प्रभो! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक अधिक खर्चीला, पराये स्थान को उपयोग में लेने वाला, दुर्बल शरीर का, भ्रमणशील, चिन्तित, अनुभवी, स्त्री-पक्ष से परेशान, सामान्य आजीविका वाला, सन्तान से कष्ट पाने वाला, शक्तिशाली, प्रभावशाली, भाई-बहिनों से युक्त, दीर्घायु, परदेस-भ्रमण से लाभ पाने वाला, नियम-साधक, ठाठ-बाट का प्रेमी, भाग्योदय वर्ष में धनी, पैतृक-सम्पत्तिवान्, कुटुम्बी, राज्य से सम्मानित, प्रयत्नशील, अत्यन्त सुन्दर, सुपत्नीयुक्त, मातृ-पक्ष से सुखी, भूम्याधिपति, गृहस्थ, भाग्यवान्, धर्म-कर्म में खर्च करने वाला, अत्यन्त चतुर, कभी-कभी चिन्तित, गुप्त-वेदना युक्त, भयभीत, गुप्तचर, धन-जन-प्रेमी, कठिन-कर्म करने वाला, अपमृत्यु-भोगी, उदर-रोगी, क्रोधी तथा शत्रु-पक्ष से भयभीत होगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दरी, विवेकशीला, धर्मशीला एवं पतिपरायणा-स्त्री के साथ होगा। तभी इसका भाग्योदय भी होगा। भाग्योदय के अन्य वर्ष ३८, ४६ तथा ५३ वें होंगे। स्त्री-पक्ष उन्नत तथा लाभप्रद रहेगा। सन्तान उपाय तथा शल्यक्रिया द्वारा प्राप्त होगी। एक पुत्र वंश एवं कीर्ति-विस्तारक होगा। शत्रु प्रबल रहेंगे, परन्तु वे इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकेंगे। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में विद्या, बुद्धि एवं विवेक द्वारा पर्याप्त धन का लाभ करेगा, किन्तु वह धन खर्च होता रहेगा। अनेक

धार्मिक कृत्यों का सम्पादन भी करेगा। जीवन के २, ८, १३, २८, ४५, ५७ तथा ६६ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्टकारक होंगे। यदि ५८ वर्ष की आयु में अपमृत्यु हुई तो पुनर्जन्म नहीं होगा। नीलम धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा शनिदेव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट शान्त होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अपमृत्यु के योग से बच गया तो अगले जन्म में कुम्भकार होगा। इसकी मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में आषाढ़ शुक्ला द्वितीया गुरुवार को मध्याह्न के समय व्रण-पीड़ा के कारण घर में होना ही सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः नीच और आलसी; स्वस्थ और नीरोग; भाग्यवान् और परम धार्मिक तथा विदेशयात्री होगा॥ इति शुभम्॥

८	७ सू·बु·शु·रा·	६
९		५
१० मं·		४ चं·
११	१ श·के·	३
१२ गु·		२

ॐ शुक्र उवाच॥ किं तस्यास्ति पितः ब्रूहि अस्यां यो जायते नरः। भविष्यं विस्तृतं श्रोतुमिच्छाम्यहं तदा ब्रवीत्॥ भृगु उवाच॥ पारतन्त्र्येण दुर्व्येशः निर्बलश्चाल्प शोभनः। व्यवसायोन्नतिं कुर्यात् सुगृहस्थः सुपत्निकः॥ पितुः सुख विहीनश्च मातृसुख समाप्नुयात्। भूम्याःपतिः गृहस्थश्च परे भाग्योन्नतिस्तथा॥ धर्मे व्ययं करोत्येव आदर्शः भगिनि वैमतम्। शक्तियुदुन्नतिं पश्येत् पितृणां राजसम्मतः। व्यापारे बुद्धिमान् यत्नशीलाल्लाभः कुटुम्बतः। वैमत्यमात्मशाख्या च युक्तः देहेन पीड़ितः॥ पुरातत्त्वविद् दीर्घायुः विवाहे सुन्दरीं परम्। औषध्या जीवितां सत्वं सप्तविंशे च प्राप्स्यति। भाग्योदयं तदास्य: द्विपञ्चाशात्ते त्रिंशयोः। अष्टपञ्चाशते ऽप्यस्य भवेन्नूनं भवेत्पुनः॥ वाणिज्यं यदि लौहस्य कुर्याद्दानि पुरा परम्। लाभो ऽस्मै च कुटुम्बेन वहिः मानो ऽस्य शीलतः॥ पुत्रैः वाहन भूमीभ्यां तुष्टो ऽयं वपुसा तनुः। सप्तमं दशमञ्चादिं पञ्चादशं त्रिषष्ठिकम्॥ चतुःविंशं चतुः त्रिंशं त्रिपञ्चाशञ्च नेष्टदम्। धारणं नीलमस्यास्मै पुखराजस्य श्रेयसे॥ ब्राह्मणः पूजनं तद्वत् शिवाय चाष्टमी व्रतम्। वैश्यः पुरा ऽभव

श्चाग्र ब्राह्मस्त्रीयैर्व सम्भव: ॥ आषाढ कृष्ण षष्ठ्यां वै उदरे शल्य कर्मणा । व्रणेन पञ्चपञ्चाशद्वर्षे मृत्युर्वास्य भविष्यति ॥ यदि चन्द्रो भवेल्लग्ने चतुर्थे सप्तमेऽथवा । दशमे चेत्तदा सौम्य: पितृभ्यां रहितस्तथा ॥ स्त्रीणां चौरश्च संतुष्ट: पितृसुखस्य शून्यता । राज्ये मानश्च वाणिज्यं रजतस्य करिष्यति ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे जनक ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक दुर्बलशरीर वाला, सामान्य सुन्दर, नौकरी द्वारा धनी, अल्पतेजस्वी, व्यवसाय से उन्नतिशील, सुन्दर स्त्री वाला, सुगृहस्थ, भूम्याधिपति, मातृ-सुखी, स्त्री-पक्ष से सुखी, पितृ-सुख रहित, स्वस्थानवासी, भाग्यवान्, शुभ कार्य में धन खर्च करने वाला, धर्म-पालक, परोक्ष-स्थान से भाग्योन्नति पाने वाला, स्त्री से सहयोग करने वाला, आदर्श-पथगामी, विजयी, पुरुषार्थी, बहिन से विरोध मानने वाला, शक्तिसम्पन्न, पितरोन्नति-दर्शक, राज्य द्वारा सम्मानित, व्यवसाय में वृद्धि प्राप्तकर्त्ता, परिश्रम से लाभ पाने वाला, कुटुम्ब से मतभेद रखने वाला, सम्मानित, आत्मबली, दीर्घायु, पुरातत्वज्ञ एवं शरीर में कष्ट पाने वाला होगा। इसका विवाह सुन्दर, परन्तु औषधियों के बल पर जीवित रहने वाली रुग्णा-स्त्री के साथ २८ वर्ष की आयु में होगा और तभी से इसका भाग्योदय भी आरम्भ होगा । वर्ष ३८, ५२ तथा ५८ वें में भी विशेष भाग्योदय होगा । यह जातक यदि लोहे की वस्तुओं का व्यवसाय करे तो आरम्भ में हानि होगी तथा बाद में यथेष्ट लाभ होगा । कुटुम्ब के अतिरिक्त बाह्य-क्षेत्र में इसकी व्यवहार-कुशलता के कारण कोई विरोधी नहीं होगा । गृह, भूमि तथा वाहनादि का उत्तम सुख मिलेगा । पुत्रों के व्यवहार से मन प्रसन्न बना रहेगा । शरीर की दुर्बलता अधिक कार्य करने में बाधक रहेगी । जीवन के १, ८, १०, १५, २८, ३४, ५३ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे । नीलम और पुखराज धारण करने, अष्टमी का व्रत रखने तथा ब्रह्माजी का पूजनानुष्ठान करते रहने से अरिष्ट दूर होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा । यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य था तथा

अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा। इसकी मृत्यु ६५ वर्ष की आयु में, पेट की शल्य-चिकित्सा अथवा व्रण रोग के कारण आषाढ़ कृष्णाषष्ठी बुधवार को रात्रि के तीसरे प्रहर में, घर पर ही होना संभव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः परम सुन्दर और आत्म सन्तोषी; मातृ-पितृ-हीन, स्त्री-लम्पट और चाँदी का व्यापारी तथा पितृ-सुख से पूर्ण एवं राज्य में उच्चपद पर प्रतिष्ठित होने वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ जीवनस्यास्य भाषस्व त्रैकालिकं फलं प्रभो। अस्यां कुण्डलिजातस्य पृच्छामि श्रोतुकामतः ॥ भृगु उवाच ॥ कामुको व्याकुलः स्त्रीभिः लज्जितः चिन्तितः पटुः जिज्ञासो धनवस्त्रैश्चाभूषणैरपि भूषितम् ॥ धीशोऽपि लुब्धकश्चैवं दीर्घायुः युद्धजिद्भवेत्। गृहेशो गौरवापन्नः निर्लज्जः कलहान्वितः ॥ कटुवाग्घल्पभाषी च कुशलो ह्यालसी महान्। कुद्दोऽपि योग्यपत्नीच्छुः दुर्बलश्चापि पापी वै ॥ कुटिलो निर्दयी दुष्टः कुरूपो व्ययवान् वृथा। धातुरुग्णया स्त्रिया युक्तः तप्तः पत्नि वियोग भाक् ॥ शत्रुजित् निन्दको लोके भोगी स्त्रीणां विवाहितः। त्रयोविंशे भवे देव सततं रुग्णया सह ॥ वियोगश्च तया शाकं त्रित्रिंशे प्रबलः द्विषः। परं जये दसोताल् वै वीर्यदोषश्च विद्यते ॥ सन्ततौ सेवकौ द्वौ हि सुखं प्राप्स्यति पैतृकम्। षड्विंशे षष्ठ षष्ठ्यां द्विचत्वारिंशतेऽपि च ॥ भाग्योदयं भवेदस्य प्रथमञ्चाष्टमन्तथा। द्वादशं नैक षष्ठिञ्च द्वाविंशञ्चैक त्रिंशतम्। द्विचत्वारिंशतञ्चाब्दं त्रिषष्ठिं घातकं सदा। आसीच्छूद्रो भवेदग्रे सर्पो नीलम धारणम् ॥ आदित्य हृदयस्यास्यै रवेः व्रतं सदा शुभम्। नवम्यामाश्विने शुक्ले वर्षे षड् षष्ठि संख्यके ॥ मृत्युदांत्रस्य शोथेना थवा जठर पीडया। चन्द्रश्चेत् पञ्चमे स्थाने द्वितीये कादशोऽष्टमे ॥ परैः जीवेद्धनैर्हीनः म्लेच्छभाषाविदस्त-

८ बु॰
७
६
९
सू॰ शु॰ रा॰
५
१० मं॰
४
११
श॰ के॰
३
१२ गु॰
१
२

धा। राजमान्य: जलाद्भीत: सहसा लाभमीपति:॥

भावार्थ: शुक्रने कहा - हे प्रभो! मैं इस कुण्डली का फल सुनना चाहता हूँ, उसे कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक चिन्तातुर, व्याकुल, अति कामी स्त्रियों से लज्जित, युद्धजयी, धनी, चतुर, कृपण, साहसी, धन-वस्त्र-आभूषणादि से युक्त, दानी, दीर्घायु, गौरवयुक्त, गृहाधिपति, राज्य से धन लाभ करने वाला, कलही, अल्पभाषी, निर्लज्ज, कटुभाषी, कलह से चिन्तित, आलसी, अपव्ययी, कार्य-कुशल, योग्य स्त्री का अभिलाषी, क्रोधी, दुर्बुद्धि, दुर्बल-शरीर एवं दुष्ट-स्वभाव, कुरूप, निर्दय, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, कुमार्गी, धातुरोगिणी स्त्री वाला, संतप्त, स्त्री-वियोगी, लोक-निन्दित, शत्रुजित, बहु-स्त्री-भोगी तथा असन्तुष्ट स्वभाव का होगा। इसका विवाह सदैव रुग्ण रहने वाली सुन्दरी स्त्री के साथ २३ वर्ष की आयु में होगा तथा ३३ वर्ष की आयु में ही स्त्री से वियोग भी हो जाएगा। इसके सम्पर्क में अनेक स्त्रियाँ आती रहेंगी। शत्रु सदैव प्रबल रहेंगे, परन्तु यह उन पर विजय भी पाता रहेगा। यह वीर्य-दोषी होगा। सन्तानों में केवल दो पुत्र ही इसकी सेवा करेंगे। माता, पिता, गृह, भूमि आदि का पूर्ण सुख रहेगा। भाग्योदय २६, ४२ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ८, १२, २२, ३१, ४८, ५९ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। यह जातक पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में सर्प योनि में उत्पन्न होगा। इसकी मृत्यु ६६ वर्ष की आयु में, आश्विन शुक्ला नवमी रविवार को मध्याह्न में, आँतों की बीमारी अथवा उदर-विकार के कारण अपने घर में ही होना सम्भव है। नीलम धारण करने, रविवार का व्रत रखने तथा आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ एवं सूर्यानुष्ठान करने से सदा लाभ होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पञ्चम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः [illegible] राज्य से

सम्मान पाने वाला होगा । इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ कुण्डल्यामत्र देहं यो लभते तस्य जीवनम् । कीदृशं यातु भावस्य कृपया तात निश्चितम् ॥
भृगु उवाच ॥ सुबुद्धिः सुकृतो भूयात् कलाविद् पण्डितो महान् । सर्वपूज्योऽत्र जातो वै स्त्रीसुख वञ्चितश्चलः ॥
कपिलाक्षो धनाधीशः पिङ्गकेशो जितेन्द्रियः । कुलनेता कुरूपश्च मध्योदरश्च दुर्बलः ॥ भूम्यार्जि सत्यवादी वै
द्विजश्रेष्ठेषु भक्तिमान् । हृद्रुग्णोऽतिथिनां भक्तः धार्मिको राजसेवकः ॥ विशालाक्षश्च दीर्घायुः मांसप्रियोऽ
ल्प गल्पकः । कुटिलापाः भवेद्भोक्ता बन्धुवान् क्लेशभागपि ॥ चिन्तितः पत्निपुत्रैश्च दुष्टभीतश्च व्याकुलः ।

बु. भृ. ८	७ सू. रा.	६	
९			५
१० मं.		४	
११	श. के. १		चं. ३
गु. १२		२	

वातरुग्णो विवाहश्चा सम्भवोऽस्य वसेत्पृथक् ॥ बन्धुभ्यश्च स्वतन्त्रोऽयं तथापि
हितचिन्तकः । स्त्रियः आगत्य सम्पर्के नाशयन्त्वस्य सम्पदाम् ॥ पराक्रमेऽस्य कौपि
ल्यं प्रबलाः सन्तु शत्रवः । धनलाभः परं भाग्यं षड्पञ्चाशैक त्रिंशयोः ॥ द्वेनपञ्चा
शते यातुदयं जीवन पावकम् । द्वादशाऽन्याष्टमश्चादिं चतुःविंशैक त्रिंशते ॥ चतुः
पञ्चाशैक षष्ठ्यारवे द्विचत्वारिंशतं तथा । चाण्डालः पूर्व कालस्य दंशकः सम्भवि
-ष्यति ॥ आषाढस्य द्वितीयायां शुक्लस्य विरसोऽथवा । हृद्रोगेण भवेन्मृत्युः
माणिक्यं धारयेत्तथा ॥ शनेः व्रतमनुष्ठानं विपदां नाशितुं ध्रुवम् । चन्द्रश्चेद
-त्र षष्ठेस्याह तृतीये नवमेऽथवा ॥ द्वादशेवासु पत्नेशः स्वस्थोः यात्रा पटुस्तथा । स्याभ्यासान्यः जलाद्रु-
गणः राजबन्धन यौगिकः ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे तात! इस कुण्डली वाले जातक के जीवन-फलादेश को कहने की
कृपा करें । भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक सुन्दर, बुद्धिमान्, अच्छे कामों से आजीविका कमाने वाला,
बड़ा विद्वान्, समस्त कलाओं से युक्त, महाधनी, सर्वपूज्य, स्त्री-सुख-वञ्चित, चंचल, सामान्य

उदर एवं शरीर वाला, कपिल नेत्र, पिंगल केश, कुरूप, जितेन्द्रिय, कुलपाली, स्त्री-मोहक, भूमि-जीविका युक्त, क्रोधी, ब्राह्मण तथा सत्पुरुषों का भक्त, सामान्य कद वाला, सत्यवादी, शुभ, अतिथि-सत्कारी, हृदय-रोगी, दान से पराङ्मुख, धर्मरत, राज्यसेवक, मांसप्रेमी, विशाल नेत्रों वाला, दीर्घायु, अल्पगतिवान्, दुर्बल, कुटिल तथा कुशील, स्त्री-भोगी, क्लेशी, दुष्टों से भयभीत, व्याकुल, स्त्री-पुत्रादि के लिए चिन्तित, उद्वेगी तथा वायुरोगी होगा। इसका विवाह होना कठिन रहेगा। यह अपने भाइयों से झगड़ा करके तथा पैतृक-सम्पत्ति में अपना भाग लेकर स्वतन्त्र रूपसे अलग रह कर काम करेगा, फिर भी उनका हित-चिन्तक बना रहेगा। अनेक स्त्रियाँ इसके सम्पर्क में आएँगी तथा इसके धन को हानि पहुँचाएँगी। इसकी मृत्यु के बाद कुटुम्बीजन ही इसकी सम्पत्ति के उत्तराधिकारी होंगे। पराक्रम में शिथिलता रहेगी। शत्रु प्रबल रहेंगे। धन पर्याप्त मात्रा में रहेगा। भाग्योदय ३१, ४८ तथा ५६ वर्ष की आयु में होगा। विद्या का अभाव रहेगा। इसके जीवन के १, ८, १२, २४, ३१, ४२, ५४ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु तथा हानिकारक रहेंगे। यह पूर्व जन्म में चाण्डाल था तथा अगले जन्म में दंशक जीव (बिच्छू आदि) की योनि प्राप्त करेगा। इसकी मृत्यु आषाढ़ शुक्ला द्वितीया सोमवार को प्रातःकाल मस्तिष्क अथवा हृदयरोग के कारण घर से बाहर ही होगी। माणिक्य धारण करने, शनिवार का व्रत रखने तथा शनि देव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट-निवारण में सहायता मिलेगी तथा लाभ प्राप्त होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी और साहसी; यात्रा-चतुर तथा स्वस्थ; जलोदर रोग से पीड़ित अथवा सभा में सम्मान पाने वाला एवं धर्मप्रेमी तथा राज्य-बन्धन पाने वाला होगा।। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ फलादेशं समाख्याहि पितस्तस्यैव देहिनः। उच्यतां विस्तरेणास्यां कुण्डल्यां जायते हि यः॥ भृगुउवाच॥ अत्र जातो जनो वत्स महावीरः सुधार्मिकः। पण्डितो बुद्धिमान् भूपात् कल-

सम्मान पाने वाला होगा । इति शुभम् ॥

-हेण समन्वितः ॥ विषाग्नि शस्त्रभीतोऽपं पित्रोः वैरिः धनाधिपः । उन्नत्पाः वंचितो राज्ये परामर्शकरो भवेत् ॥ स्वजनैः प्रतिकूलश्च श्रमशील: स्त्रियामुदः सौम्यः सुस्थानवासश्च मुदितः पत्नि सन्निभः ॥ शीलवान्नायको लीनः कवितास्वरिपीड़ितः । उद्विग्नो वातरुग्णश्च प्रदेशाटनतत्पर :॥ दीर्घायुः पूजितो लोकैः ग्रामेशो राजशंसितः । निर्लज्जोऽत्यल्पभाषी वै स्वतंत्रोऽपि दयायुतः ॥ राजविवाद साफल्यं रिपुष्वपि तथैव च । स्वार्जितेन धनाढ्योऽपं पैतृकापेक्षया भवेत् ॥ धर्मकार्येषु तीर्थेषु व्ययोद्व्यस्य सम्भवेत् । विद्या बुद्धि सुयोग्यानां पुत्राणां वर्तते महत् ॥ पञ्चविंशतमे प्राप्नुयात् सुन्दरीं तथा । पति परायणां भार्यां द्वावेव सेवकौ सुतौ ॥ आत्मतोष स्वकार्येषु भाग्योदयं भविष्यति । नव त्रिंशैक विंशे च त्रिपञ्चाशेऽपि जीवने ॥ प्रथमं सप्तमं वर्षं सप्तदशाष्टविंशतम् । द्वात्रिंशैको न षष्ठिं वै षड् षट्यैक पञ्चाशतम् ॥ नेष्टं ध्रुवं जलादग्न्याः भयोऽस्मै नैक सप्ततौ । चतुर्थ्यां फाल्गुने शुक्ले व्रण विशूचि रोगतः ॥ गृहे मृत्युः पुरासी द्वैश्वर्डोऽगे वधिको भवेत् । चन्द्र पूजा चतुर्थ्यां च व्रतं शुक्लञ्च धारणम् ॥ नीलमंसुरव राजस्थे चन्द्रो लग्न चतुर्थयोः । सप्तमे दशमे वास्तु चौरो धूर्तश्च स्त्रीप्रियः ॥ वणिजः शुक्ल वस्तूनां राजानं सदृशं सुखी । वंशहीनः सदामान्यः इत्येवन्त्रिविधं फलम् ॥

९ शु.
७ रा.
८ सू. बु.
१० मं.
६
चं. ११
५
१२ गु.
२
४
१ श. के.
३

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे पिता ! इस जन्मकुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें।
भृगुजी बोले - हे वत्स ! सुनो, यह जातक महाबली, धर्मवान्, पण्डित, कुल-प्रधान, बुद्धिमान्, सबका पालक, कलही, विष, शस्त्र एवं अग्नि से भय पाने वाला, माता-पिता का विरोधी, उन्नति-रहित, पराक्रमी, स्त्री-सुखी, स्वजनों से प्रतिकूल, धनी, परिश्रमी, राज्य का सलाहकार, सुन्दर शरीर वाला, दानी, अच्छे स्थान का निवासी, प्रसन्नचित्त, स्त्री-पुत्रादि से युक्त, शीलवान्, शत्रुओं से दुःखी, रोगी, विकल, उद्वेगी, वातरोग-पीड़ित, दुर्बल, परदेशयात्री, योग्यजनों से पूजित, दीर्घायु, ग्रामाधिपति, राज्यद्वारा पुरस्कृत, अल्पभाषी, निर्लज्ज, स्वतन्त्र, सभासद एवं

दयालु होगा। शत्रुओं पर तथा मुकद्दमों में सदैव सफलता प्राप्त करेगा। पैतृक-धन की अपेक्षा अपनी भुजाओं से भी धनोपार्जन कर, उसका संचय करेगा। इसका धन सत्कर्म तथा तीर्थयात्रा में व्यय होगा। विद्या, बुद्धि सम्पन्न, सुयोग्य तथा सत्पात्र पुत्र प्राप्त होंगे। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में परम सुन्दरी, विवेकयुता एवं पतिपरायणा स्त्री के साथ होगा। भाग्योदय २१, ३८ तथा ५३ वें वर्ष में होगा तथा जीवन के १, ८, १८, २८, ३२, ५१, ५८ एवं ६६ वें वर्ष अपमृत्यु तथा शरीर-पीड़ा-कारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६८ वें वर्ष में फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी गुरुवार को अपराह्न काल में व्रण अथवा विशूचिका रोग से होना सम्भव है। यह पिछले जन्म में क्षात्रधर्म युक्त शूद्र था तथा अगले जन्म में वणिक होगा।

९ शु.	८ सू. बु.	७ रा.
१० मं.	११	चं. ६
१२ गु.	५	४
१ के. श.	२	३

नीलम तथा पुखराज धारण, चतुर्थी व्रत एवं चन्द्रदेव का पूजनानुष्ठान हितकर रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः लम्पट, कुटुम्ब हीन, स्त्री-प्रेमी एवं राजतुल्य सुखी तथा सम्माननीय होगा। ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ त्रिकालज्ञ किमस्यास्ति अत्र जातस्य देहिनः। त्रैकालिकं फलं ब्रूहि श्रोतुमिच्छाम्यहं मुदा ॥ भृगु उवाच ॥ अस्यां जातो भवेत् वत्स पितुः मार्गप्रसारकः। वणिजो राजसम्मान्यः प्रभाववान् पराक्रमी ॥ सुरूपः गौरवापन्नः मतान्तरं स्त्रियः सदा। साहसिको ऽरिजेता वै पुरुषार्थेन लाभयुत् ॥ धार्मिको ऽल्पो ऽभिमानी च दीर्घायुः कष्टयत्तनुः। पुरातत्त्वविदश्चैवं विद्वान् विवेक संयुतः ॥ भाग्यवान् बुद्धिमान् भूपात् यशस्वी सर्वसम्मतः। स्त्रिया ग्रस्तो ऽति भाषी वै सर्वमान्यो व्ययाकरः ॥ भागिनपक्षस्य शत्रुश्च गुह्यशक्ति विचारवान्। मातु सुखेन सम्पन्न बन्धुभूम्यादि वंचितः ॥ गृहिण्यस्मै भयोविंशे अतिरूपवती परम्। जलप्रदररुग्णा वा मिलिष्यति तदावधिः ॥ भाग्योदयं भवेदग्रे चतुः पञ्चाशते तथा। षड्त्रिंशे ऽप्यति श्रेष्ठश्च श्वसुरालयमुत्तमम् आवाहूर्ध्वं सन्तत्याः सौख्यं शत्रुञ्जयेत् सदा। वाणिज्याद्धन लाभो ऽस्मै पुरुषार्थेन गौरववान् ॥ चतुर्दशं

सम्मान पाने वाला होगा । इति शुभम् ॥

चतुर्थे वै त्रिपञ्चाश त्रिजष्ठिके । नव षष्ठयाष्ट विंशे च द्विचत्वारिंशतं तथा ॥ प्रथमञ्च हानिदं नित्यं गल गण्डान्मरिष्यति । नवम्यां श्रावणे पूर्वेऽब्दे षण्णा सीति संख्यके ॥ ब्राह्मणः पूर्वकालस्य छुछुन्दरेति भाविनः। गोमेदं धारयेच्छुभो: साङ्गानुष्ठानमुत्तमम् ॥ व्रतं बुद्धस्य श्रेयार्थं यदि चन्द्रो ऽष्टमे ऽथवा । द्वितीयं पञ्चमे तद्वत् एकाद-शो ऽस्तु सम्भवेत् ॥ स्त्रीणां भोक्ता धनाधीशः षण्णां पिता ऽस्तु सूनुनाम् । औषध्याभय माप्नोति चिकित्सकोऽथवा भवेत् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे त्रिकालज्ञ ! इस जन्म कुण्डली वाले मनुष्य का फलादेश कहें । भृगुजी बोले - हे पुत्र ! यह जातक पिता का अनुगामी, व्यवसायी, राज्य द्वारा सम्मानित, गौरवयुक्त, प्रभावशाली, परा-क्रमी साहसी, शक्तिशाली, कष्ट-सहिष्णु, शत्रुजित, विजयी, पुरुषार्थी, अल्प धार्मिक, उन्नतिशील, विवेकी, धन लाभ पाने वाला, दीर्घायु, पुरातत्त्वज्ञ, स्त्री-पक्ष से दुःखी, विद्वान्, बुद्धिमान्, कुटुम्ब-रक्षित, अतिभाषी, भाग्यशाली, यशस्वी, सम्मानित, अधिक खर्चीला, अत्यन्त चतुर, मातृ-सुख युक्त, बन्धुयुक्त, भूम्यादि के सुख से रहित, बहिन-पक्ष का शत्रु, परिश्रम से सुखी, गुप्तशक्ति वाला, विचारवान् एवं परदेश में लाभ पाने वाला होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में अत्यन्त सुन्दरी, परन्तु उदर अथवा जलोदर रोग ग्रस्त स्त्री के साथ होगा, तभी इसी का भाग्योदय भी आरम्भ होगा। भाग्योदय के अन्य वर्ष ३६ तथा ५४ हैं । श्वसुराल-पक्ष उत्तम रहेगा । सन्तान का वृद्धावस्था तक उत्तम सुख रहेगा। शत्रु तथा विरोधियों पर विजय प्राप्त होगी। व्यवसाय द्वारा धन-वैभव की वृद्धि होगी। जीवन के १, ४, १४, २८, ४२, ५३, ६३ तथा ६८ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अङ्गपीड़ा कारक रहेंगे। इसकी मृत्यु श्रावण कृष्णा नवमी शनिवार को रात्रि के तीसरे प्रहर में गलगण्ड रोग के कारण ७४ वर्ष की आयु में होना सम्भव है। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में छछूँदर होगा। गोमेद धारण, बुधवार का व्रत तथा शिवजी का साङ्गोपाङ्ग अनुष्ठान लाभकारी सिद्ध होगा। इस कुण्डली में

चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः धनी, 6 पुत्रों का पिता, स्त्री-भोगी तथा सुन्दर एवं औषध-प्रयोग से भय पाने वाला, औषध-विक्रेता अथवा चिकित्सक होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच।। प्रभो त्रैकालिकं ब्रूहि फलं मे तस्य देहिनः। यो ऽस्यां वै जन्म कुण्डल्यां जन्म प्राप्नोति निश्चितम्।। भृगु उवाच।। व्ययशीलो भवेत्तात जातको ऽयं सुयुक्तिकः। बलवान् गुह्य मार्गस्य प्रवर्तो चतुरो बली।। शत्रु जितेषु प्रावल्यं धीरश्चापत्ति भागपि। मातामही गृहान्नास्मै लाभः स्त्रीपुत्र दुःखितः।। रुग्णो ऽयं वातपित्ताभ्यां राज्येन वस्त्र यू लभेत्। सुबुद्धिः लेखने दक्षः सूच्चदेहश्च रूपवान्।। सुवस्त्र पलि इच्छुश्च युद्धजिन्निर्भयः स्थिरः। दीनो ऽपि पशुलाभो ऽस्मै धार्मिकी नास्य संस्थितिः।। भवेच्चेत् स्वार्थ हितोश्च आर्द्रां गुह्यवतीं तथा। अर्थ पीड़ित भार्यां वै चतुर्विंशे समाप्नुयात्।। धनमानञ्च प्राप्नोति श्वसुरस्य गृहाद् ध्रुवम्। शत्रून् वैरिणो जित्वा त्रयोविंशाब्दे त्रिंशते।। एकपञ्चाशते सूयात् भाग्योदयश्च सन्ततिः। विद्याबुद्धि विवेकैश्च युक्ता वाणिज्य लाभयुत्।। राजतुल्यो ऽपि सम्मान्यः नास्ति द्रव्यस्य संग्रहः नवमैक चतुर्थञ्च त्रयोदशं द्विर्त्रिंशत्।। सप्तविंश त्रयोषष्ठिं द्विन पञ्चाशतं तथा। सप्तपञ्चाशतं नेष्टं लौहाद्दु पातकं सदा।। पञ्चसप्तति वर्षायौ आश्विन् कृष्ण सप्तमी। मुखरोगेण रक्तेन मृत्युवे ऽस्ति गृहैव नु।। त्वहसुनेति रत्नञ्च नीलमं धारयेत्तथा। हनुमत्पूजनं सूयात् श्रेयसे क्षत्रियः पुरा।। रजकः सम्भवेदग्रे चतुश्चेन्नवमे ऽथवा। तृतीये द्वादशे षष्ठे भवेत्तु भाग्यवान् महान्।।

9 शु.
7 रा.
चं. 10
8 सू. बु.
6
11 मं.
5
12
2
4
गु. 1
श. के.
3

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस शरीरधारी के फलादेश का वर्णन करें। भृगुजी बोले- हे शिष्य! यह जातक अधिक खर्चीला, चतुर, गुप्त-योजनाएं बनाने वाला, युक्तिवान्, बलवान् पक्ष से कमजोर [illegible] ,

अयोग्य होगा। स्वभाव में कुछ कठोरता एवं उग्रता के साथ दयालुता भी रहेगी। धार्मिक स्थिति सामान्य रहेगी। अल्प वीर्य होते हुए भी उद्यम शीलता बनी रहेगी तथा शत्रुओं का पराभव होगा। जीवन के १, ३, ४, ६, ८, ११, १८, ३२, ३५, ५६, ६१ तथा ७२ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अनिष्टप्रद रहेंगे। गृह-भूमि आदि का भी उपार्जन करेगा। आय के साधन अच्छे रहेंगे। व्यय विलासिता के कार्यों में अधिक होगा। लहसुनियां तथा पन्ना धारण करने, रविवार का व्रत रखने एवं मृत्युञ्जय का अनुष्ठान करने से लाभ होगा। इसकी मृत्यु ७६ वर्ष की आयु में चैत्र शुक्ला सप्तमी शनिवार को मध्य रात्रि में, रक्त-वमन अथवा पित्त-विकार के कारण घर में ही होना सम्भव है। यह पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में श्येन पक्षी की योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः उद्यमी, धनी, विद्या-बुद्धि-सम्पन्न, अग्नि अथवा विद्युत् से भय पाने वाला तथा पुत्रवान् होगा॥ इति शुभम्॥

१० बु.	९ सू. शु.	८
११		७ रा.
१२ मं. गु.	६	५ चं.
१ श. के.	३	४
२		

ॐ शुक्र उवाच॥ अस्यां जातस्य कुण्डल्यां जातकस्यास्ति किं फलम्। त्रैकालिकं प्रभो ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि निश्चितम्॥ भृगु उवाच॥ शिल्पज्ञ मानवो यो ऽपि कुण्डल्यां जन्म प्राप्नुते। प्रभाव भाग्य सम्पन्नः दीक्षको धर्मतत्परः॥ न्यायवान् श्रद्धयापन्नः सुन्दर्याः पति एव सः। वणिज सफलो गेहे प्रभाववान् व्यये स्थिरः॥ परस्थानाच्च सम्बद्धः श्रमाच्चतुरवाप्स्यति। भूमिहीनः सुखं नास्मै व्यापोर लाभवान्नसौ॥ मातृ सुखेन वंचो ऽयं सुवपुः सर्व सम्मतः। राज्योन्नतः विवेकी वै प्रयत्नेनैव पुत्रवान्॥ साफल्यं लौकिकऽऽयास्मै सोल्लासो मञ्जु संयुतः। विलासवान् सुखी तद्वत् श्रेष्ठो ऽस्य श्वसुरालयः॥ शक्तिमान् धनवान् क्रूरः शत्रुजित् गृह वैमतिः। स्त्रीजिच्च चिन्तितश्चैवं सन्तत्याः गुह्ययुक्तिवान्॥ उग्र तथा विवेको ऽपि भूयादस्मिन् प्रभावितः। भवत्वस्य समाजश्च वैभवेण विवाहितः॥ रूपवत्यासहायं स्यात् विंश वर्षे धनं लभेत्। श्वसुरालयतः योगो दत्तकत्वेन वत्स्यति॥ मातु

स्वगृहे भाग्यं त्रिचत्वारिंशते तथा । तृतीये च त्रयोविंशे चतुःपञ्चाशते व्रजेत् ॥ वर्द्धिष्णु जीवने ऽन्यानि प्रथमं सप्तमं क्वचित् । एकादशाष्टविंशे च षड्षष्टि सप्तत्रिंशते ॥ एक पञ्चाशतश्चापि नेष्टाय शत्रवः सदा । प्रत्यक्षे तु नताः सन्तु राजतुल्यो ऽस्ति वैभवे ॥ वीर्यदोषो ऽग्नि भीतिश्च विद्या पक्षो ऽस्ति दुर्बलः । सप्तसप्तति वर्षायौ दशम्यां कृष्ण श्रावणे ॥ भगवच्चिन्तने मृत्युः वातेन पिततः पुरा । आसीद्वैश्यः भवेत् काको ऽस्यां चन्द्रो यदि द्वादशे । तृतीये नवमे षष्ठे श्रमवान् धार्मिकस्तथा । यात्रा लाभश्च श्रेष्ठो ऽस्ति विचारेषु भविष्यति ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे पिता! इस जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो. यह जातक भाग्यशाली, प्रभावशाली. निरीक्षक. धर्मज्ञ. धर्मपालक. न्यायी. श्रद्धावान्, सुन्दरी स्त्री वाला, सफल व्यवसायी. गृहस्थी में प्रभाव रखने वाला. उचित खर्च करने वाला, पराये स्थान से सम्बन्धित, मातृ-सुख-हीन, प्रयत्न से पुत्रवान्. सामान्य विद्वान्. व्यवसाय से लाभ अर्जित करने वाला. सुन्दर शरीर वाला, सम्मानित. पिता का अनुयायी. राज्य से उन्नति पाने वाला, विवेकी. लौकिक सफलताएं पाने वाला, अच्छी ससुराल वाला, उल्लास पूर्ण, उमङ्गी, भूम्यादि को पाने वाला, सुखी. विलासी. दीर्घायु, पुरातत्त्वज्ञ, पिता से सुख पाने वाला. राज्य द्वारा प्रतिष्ठित, शक्तिशाली, धनवान्. कुटुम्ब से मतभेद रखने वाला. शत्रुजयी, सन्तान-पक्ष से कष्ट का अनुभव करने वाला. कपटी, चिन्तित. स्त्रीजित् एवं गुप्तयुक्तिवान् होगा । इसके स्वभाव में उग्रता के साथ विवेक का भी समन्वय रहेगा। अपने वैभव की सम्पन्नता से समाज के ऊपर प्रभाव रखने वाला होगा । इसका विवाह सुन्दरीरूप-यौवन सम्पन्ना स्त्री के साथ २० वर्ष की आयु में होगा । यह अपने मामा के यहाँ दत्तक रूप में भी रह सकता है । सन्तान गोपाल स्तोत्र के पाठ तथा उत्तम अनुष्ठान द्वारा केवल एक पुत्र की प्राप्ति सम्भव है । इसका भाग्योदय ३, २३, ४३ तथा ५४ वें वर्ष में होगा । इसके [illegible] ३४, ३७, ५१, ५४ तथा ६६ वें वर्ष अरिष्ट एवं अपमृत्यु कारक

रहेंगे। विरोधी लोग परोक्ष में ही रहेंगे, सामने आकर सभी नत-मस्तक हो जायेंगे। राजतुल्य वैभव, गृह, भूमि, वाहन, भृत्य आदि का सुन्दर योग बना रहेगा, परन्तु विद्या-पक्ष कमजोर रहेगा। वीर्य-दोष होगा तथा अग्नि से भय-प्राप्ति की संभावना रहेगी। इसकी मृत्यु ७८ वर्ष की आयु में श्रावण कृष्णा दशमी शुक्रवार को प्रातः काल भगवच्चिन्तन करते हुए घर में होना सम्भव है। मृत्यु का कारण वात-पित्त रोग हो सकता है। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य था तथा अगले जन्म में काक योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम एवं द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी, स्वस्थ, धार्मिक तथा यात्रा में कष्ट पाने वाला होगा॥ इति शुभम्॥

मे. गु. १२ / ११ शु.	१० सू.	९ बु. / ८
के. श. १		७ रा.
२ / ३	४ चं.	५ / ६

ॐ शुक उवाच॥ देहं गृह्णाति कुण्डल्यां अस्यां यः कोऽपि जातकः। फलं त्रैकालिकं तस्य श्रोतुमिच्छाम्यहं पितः॥ भृगु उवाच॥ वत्स संकट मुक्तोऽयं कदाचित् स्वास्थ्यमध्यमः। पुरातत्त्वविदश्चैवं दीर्घायुः तेजवान्नपि॥ पुरुषार्थी प्रभावी वै गृहभूमिपतिस्तथा। बन्धुभगिन प्रपूर्णोऽयं शत्रुजित् भाग्यवान् महत्। यशोधनो ऽल्प कौटुम्बी राज्ये मान्यः व्ययी बहुः। पैतृक शक्ति सम्पन्नः निश्चिन्तः सुसहासिकः॥ शत्रुभीतः स्त्रियाभिर्हानिः रूपवत्या स्त्रियःपतिः॥ प्रवासाल्लाभ संयुक्तः वाणिज्ये कष्टभाग् भवेत्। विवेकवान् धनाधीशः विद्याबुद्धि समन्वितः। स्विन्न सन्तति पश्चाच्च सामान्य आय दैनिके॥ विवाहः बहुविंशो ऽस्य सुन्दर्या योग्यया सह। परं वैमत्यतां यातु तया साकं धनं हरेत्॥ श्वसुरालय पक्षो ऽस्य पुत्राणां दुश्चरित्रता। चिन्तायाः विषयो भूपात् एक पुत्रो ऽस्य सेवकः। राजद्वार प्रतिष्ठा च शत्रूणाञ्च पराभवः। भाग्योदयं भवेदस्य चतुः पञ्चाशते तथा॥ द्वात्रिंशे नैक विंशेष ए चत्वारिंशे ऽन्य जीवने। तृतीयं सप्तमञ्चादिं द्वाविंशं द्वादशं तथा॥ षड्षष्ठ्यष्ट पञ्चाशे हेन पंचा

मृ० सं० ८८८ (margin) भा० टी० (margin)

शतं सदा। नेष्टं वाणिज्यलाभश्च सञ्चयोऽपि कुसन्ततिः॥ नश्यति तच्छुभञ्चास्मै मूँगेति पन्नकं धरेत्। मासान्तस्य व्रतं पूजा चन्द्रस्य पूर्वजन्मनः॥ क्षत्रियश्च भवेदग्रे नागयोन्यां मरिष्यति। मुरव रोगेण चाषाढ़े त्रयोदश्यां परे गृहे॥ यदि चन्द्रश्चतुर्थे वा दशमे सप्तमेऽथवा। लग्ने वा रूपवान् भूयात् स्त्रीणां प्रियश्च वाहनैः॥ मुक्तो यन्त्रैश्च वाणिज्ये कुशलश्च विडम्बितः। राज्ये प्राप्स्यति जीवोऽयं इत्येवास्य फलं सुत॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहिए। भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक सामान्य स्वास्थ्य का, दीर्घायु, यदा-कदा संकट पाने वाला, पुरातत्त्वज्ञ, प्रभावशाली, तेजस्वी, पुरुषार्थी, धर्म-पालक, यशस्वी, पितृ-भक्तिवान्, राजमान्य तथा राज्य द्वारा उन्नति पाने वाला, अच्छी आमदनी वाला, पराक्रमी, गृह-भूम्याधिपति, भाई-बहिनों से युक्त, शत्रुजित, साहसी, भाग्यवान्, लापरवाह, स्त्री-पक्ष से हानि पाने वाला, व्यवसाय में कष्ट पाने वाला, परिश्रमी, विवेकी, अल्पयशी, शत्रुओं से भयभीत, स्वार्थ-साधक, सुन्दरी-स्त्री का पति, लाभ पाने वाला, बुद्धिमान्, विद्वान्, सन्तान-पक्ष से दुःखी, सामान्य आयु एवं सामान्य दिनचर्या वाला होगा। इसका विवाह परमसुन्दरी, सुयोग्य एवं सुलक्षणा स्त्री के साथ २६ वर्ष की आयु में होगा, परन्तु उससे कुछ मतभेद बना रहेगा। ससुराल-पक्ष इसके धन का अपहरण करेगा। सन्तानों पुत्रों की दुश्चरित्रता सदैव चिन्ता का विषय बनी रहेगी। एक पुत्र जीवन में इसकी सेवा करेगा। समाज तथा रहेगी, शत्रुओं का पराभव होगा। भाग्योदय १८, ३२, ४६ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ३, ७, १२, २२, ४८, ५८ तथा ६६ वें वर्ष इसके लिए अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा। धन-संचय का योग है, परन्तु उसे कुपात्र सन्तान द्वारा नष्ट कर दिया जाएगा। मूँगा तथा पन्ना धारण करने, पूर्णिमा का व्रत रखने एवं चन्द्रदेव का पूजनानुष्ठान करने से अरिष्ट शमन होंगे। यह पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में नाग योनि पायेगा। इसकी मृत्यु ६६ वर्ष की आयु में आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी सोमवार को

मुख-रोग अथवा बाहुपीड़ा के कारण अपने ही घर में, भगवच्चिन्तन करते हुए होना संभव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः अल्पनासुन्दर और स्त्रीजनों का प्रिय, यन्त्रवाहन युक्त, स्त्री-प्रिय और कुशल व्यापारी तथा राज्य सम्मान में विडम्बना पाने वाले होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ वर्णितं जातकस्यास्यां कुण्डल्यां क्रियतां प्रभो। जायमानस्य सर्वं वै त्रैकालिकं त्रिकालवित्॥ भृगु उवाच॥ धीशीलः रूपवान् भूयात् जिज्ञासो सौख्यवान् सदा। अत्रजातो जनः ख्यातः कुटुम्बेनास्य वैमतम्॥ प्रतापवान् शुभं कुर्यात् राजतुल्यो दयान्वितः। क्रुद्धो व्यग्रः मृदुः वाण्या निर्लज्जश्चाल्पभाषकः॥ वृथा व्ययं करोत्येष तेजस्वी दुर्बलस्तनुः। गुह्य नेत्र रुजाभ्यां वै रुग्णः शत्रुञ्जयः सदा॥ स्त्रीवियोगी विशालाक्षः तृष्णाशोक समायुतः। लोकस्य निन्दकः सौम्यः मातुल सद्म वञ्चितः॥ अल्पवयस्क या शाकं विवाहोऽस्याष्ट विंशते। अष्टात्रिंशेऽस्य सन्तत्योत्पत्या सहैव सम्भवेत्॥ भाग्योदयं पुनश्चोग्र षड्पञ्चाशतेऽपि वै। पुत्रौ द्वावेव पत्न्या न पञ्च पञ्चाशते भवेत्॥ वियोगश्च तदा भूयात् सम्बन्धश्च दया सह। तृतीयं सप्तमञ्चादिं अष्टादशत्रिविंशते॥ नैक षष्ठिं त्रयःषष्ठिं द्विन पञ्चाशतं तथा। नव त्रिंशञ्च नेष्टाय सति पैतृक सम्पदौ॥ सञ्चयं नैव द्रव्यस्य नेत्ररोगेण पीड़ितः। अर्शादुग्रहैव वर्षायौ त्रिन सप्तति संख्यके॥ पौष शुक्ल तृतीयायां जीवनान्तं भविष्यति। अरिष्टे नीलमं धृत्वा प्रदोषे वाशनी व्रतम्॥ श्रेयसे शम्भुपूजा स्मै सर्वदा यदि चन्द्रमाः। भवेदेकादशे तद्वत् द्वितीये पञ्चमेऽष्टमे॥ धनेशो वारिभीतश्च विद्वान् विवेकवान् तथा। नाविकः स्वर्णकारो वा सुपुत्रकश्च निर्धनः॥

(कुण्डली)
११ बु० — ९ — ८
मं० गु० १२ — १० सू० शु० — ७
श० के० १ — रा० ७
चं० २ — ४ — ६
३ — ५

भावार्थ : शुक्र ने कहा- हे पिता ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले-
हे पुत्र! यह जातक धनी, शीलवान्, सुन्दर, वाहनयुक्त, सदा सुखी, लोक-विख्यात, कृपण, कुटुम्ब-विरोधी,
उत्पाती, क्रोधी, चिन्तित, अत्यन्त प्रतापी, राजतुल्य, शुभकर्म करने वाला, मधुरभाषी, दयालु, अल्पभाषी, निर्ल-
-ज्ज, कलह के कारण दुःखी, आलसी, अपव्ययी, तेजस्वी, दुर्बल शरीर वाला, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, शत्रु-
नाशक, गुप्तरोग तथा नेत्र रोग से पीड़ित, मामा के सुख से वंचित, धातुरोगी स्त्री से युक्त, स्त्री-वियोगी,
लोक-निन्दित, तृष्णायुक्त, शोकाकुल, विशाल नेत्रों वाला, सुन्दर, सुन्दर वस्त्र धारण करने वाला तथा शत्रुओं
एवं विरोधियों पर निरन्तर विजय पाने वाला होगा। जन्म के तीसरे वर्ष में ही इसके मामा की मृत्यु हो
जाना सम्भव है। इसका विवाह २८ वर्ष की आयु में सुन्दरी तथा अल्पवयस्का कन्या के साथ होगा।
३८ वर्ष की आयु में सन्तान-प्राप्ति के साथ ही इसका प्रथम भाग्योदय होगा, तत्पश्चात् ५६ वर्ष की आयु
में पुनः भाग्योदय होगा। इसके पुत्र केवल दो होंगे तथा ४५ वर्ष की आयु में स्त्री-वियोग हो जाएगा।
तत्पश्चात् किसी शूद्रा स्त्री के साथ इसका सम्बन्ध हो जाएगा। इसके जीवन के १, ३, ७, ११, १८, २३, ३९,
४८, ५९ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। पैतृक-धन सामान्य रूप से रहेगा, परन्तु स्व-
उपार्जित धन का अधिक संचय नहीं कर पायेगा। इसके दाँये नेत्र में पीड़ा होगी। इसकी मृत्यु अर्श
आदि गुप्त-रोग के कारण ६७ वर्ष की आयु में पौष शुक्ला तृतीया बुधवार की रात्रि के चतुर्थ प्रहर में
अपने ही घर में होना सम्भव है। उन्नति तथा अरिष्ट निवारणार्थ नीलम धारण, शनिवार अथवा प्रदोष
का व्रत तथा भगवान् शंकर का पूजनानुष्ठान लाभप्रद रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम,
अष्टम अथवा एकादशभाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्णधनी तथा जल से कष्ट पाने वाला, विद्वान्
एवं विवेकी तथा अनेक सुयोग्य पुत्रों का पिता, नाविक अथवा स्वर्णकार एवं धनहीन होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ कुण्डल्यामत्र जीवो यो जन्म गृह्णाति हे पित: । त्रैकालिकं फलादेशं श्रोतुमिच्छामि तस्य वै ॥ भृगुउवाच ॥ अत्र जातो भवेद्वत्स दुष्कृत: लुब्धको महान् । बहुसन्ततिवान्श्चैवं सुखी शीलेन संयुत: ॥ वामनो नृत्यगीतेषु प्रीति: स्यात् राजसम्मत: । दन्तजठर रुग्णोऽपं वार्द्धक्ये ऽप्यभिमान युत ॥ चल: कृष्णो धनेशश्च दुर्बलो वंश पोषक: । सुनेत्र: शोभन : स्त्रीणां प्रियो ऽल्प बल संयुत: ॥ कापट्येन युतश्चैवं दानाढ्ये विमुख: सदा । हृद् रुग्णो क्षीणकेशश्च कुशीलां यातु दुर्जनै: ॥ त्रस्त: स्त्री मृतुभिश्चैवं वातरुग्ण: प्रवासक: । प्रभापिता द्विषा : नित्यं पितु: स्नेहे ऽपि वैमति: ॥ पञ्चविंशे विवाहश्च सुशीलगुणयुक्तया । भार्या त्यक्ष्यति नूनं वै पाश्चात्य सन्तति प्रथम ॥ एकोऽहि सेवक: पुत्रो भाग्योदयश्च षोडषे, अष्टविंशे द्विपञ्चाशे जीवने घातकानि वै ॥ तृतीयं सप्तमञ्चादि षडत्रिंशैक षष्ठिके । द्वादशं षण्णषष्ठिञ्च मूंगा नीलम रत्नयो: ॥ धारणं पूजनं श्रेष्ठं ब्राह्मणश्चाष्टमी व्रतम् । वीर्य दोषेण मृत्युश्च षण्ण सप्तति संख्यके ॥ माघस्य षोडषे चाब्दे कुण्डल्यामत्र चन्द्रमा: । चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे यदि सम्भवेत् ॥ विवेकवान् सुरूपश्च मातु: सुखेन वञ्चित: । स्त्रीप्रिय: वणिज: श्रेष्ठ: दशमे यदि सम्भवेत् । विवेकवान् सुरूपश्च मातु: सुखेन वंचित: । स्त्रीप्रिय: वणिज: श्रेष्ठ: राज्ये योगोऽस्य वर्तते ॥ बन्धन विघ्नयोश्चैवं क्षत्रिय: पूर्वजन्मन: । ब्राह्मणश्च भवेद्ये इत्येव ते प्रश्नोत्तरम् ॥

(कुण्डली: लग्न १ — श. के. मं.; २; ३; ४ — चं.; ५; ६; ७ — रा.; ८; ९; १० — सू.; ११ — बु.; १२ — शु., गु.)

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – हे पुत्र! सुनो, यह जातक नीच कर्म करने वाला, अधिक सन्तानों वाला, अत्यन्त लोभी, आलसी, सुखभोगी, शीलवान्, अभिमानी, विनम्र, छोटे कद वाला, नृत्यगीतादि का प्रेमी, राज्यद्वारा

सम्मानित, वृद्धावस्था में रोगी, उदर तथा दन्त रोगी, निंदक, दुर्बल शरीर वाला, कृष्ण वर्ण, चंचलचित्त वाला, नीच प्रसङ्गी, कुचाली, वंश-हितैषी, धनी, स्त्री-प्रिय, सुन्दर, उत्तम नेत्रों वाला, कपटी, अल्पबली, मलिन, हृदयरोगी, दान-पराङ्मुख, अल्प-गति, अभिमानी, छोटे केशों वाला, कुशीला स्त्री-भोगी, दुष्टजनों से भयभीत, व्याकुल, स्त्री-पुत्रादि से चिन्तित, उद्वेगी एवं वायु-रोगी होगा। शत्रु और विरोधी इससे भयभीत बने रहेंगे। इसे अपना जन्मस्थान छोड़ कर अन्यत्र निवास करना पड़ेगा। पिता का पूर्ण सुख होते हुए भी यह पितृ-विरोधी होगा। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा शील गुणसम्पन्ना कन्या के साथ होगा। दो सन्तानों के जन्म के बाद इसे अपनी स्त्री छोड़ देनी पड़ेगी। केवल एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। भाग्योदय १६, २८ तथा ५२ वें वर्ष में होगा। जीवन के १, ३, ७, १२, ३६, ४७ तथा ६१ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। इसे मूँगा तथा नीलम धारण करने, अष्टमी का व्रत रखने तथा ब्रह्माजी का पूजनानुष्ठान करने से लाभ होगा तथा अरिष्ट दूर होंगे। इसकी मृत्यु वीर्य-दोष अथवा हृदय-रोग के कारण माघ शुक्ला प्रतिपदा सोमवार को मध्याह्न के समय, ६४ वर्ष की आयु में घर पर ही होना सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः सुन्दर और विवेकी; मातृ-सुख-वंचित; स्त्री-प्रिय और कुशल व्यापारी तथा राज्यसम्मान में विघ्न अथवा राज्यबन्धन पाने वाला होगा। यह जातक पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा।। इति शुभम्॥

ॐ शुक उवाच॥ वर्णयन्त्वस्य जीवस्य जायमानस्य मे पितः। कुण्डल्याश्चत्र भावं वै श्रोतुमिच्छामि फलतः॥ भृगु उवाच॥ अतिशाठो भवेद्वत्स: दुर्भावनायुत स्तथा। मलिनो मित्रहीनश्च निर्दयी राज्य प्रासित:॥ गृह कलह व्याकुल: निर्धन: [illegible]

श्वेतसामुद्र:॥ धर्महीनो ऽल्पवित्तेश: सुस्थाने वासकरो भवेत्। राज्याद्वैभवसम्पन्न: शत्रुजिद्दुर्बलस्तनु:॥स-
-ज्जनै: विषमो रक्त: पापेषु कार्यनाशक:। कुटिलाया: कुशीलाया: भोक्ता व्याकुलचित्तितौ॥ वातरुग्णस्तथा
सौस्यात् स्वाभिमानेन शस्त्रप:। विद्याविवेकयो: स्त्युत्या: नाभिरेवोन्नतिं व्रजेत्॥ विंशे वर्षे विवाहोऽस्य
परे च क्रोधना महत्। भाग्योदयश्च शक्त्या वै त्रयोविंशाष्टविंशयो:। नैकपञ्चाशते तद्वत् अष्टत्रिंशे
भविष्यति। शत्रून् जयेत्परं भीति: यात्रायां वारिणाथवा॥ नीरोगञ्च शरीरं नु विहाय वातपीडनम्। कष्टा-
पितो यथाकाले ऽपि दन्तोदर पीड़या॥ सन्ततौ म्लेच्छ वृत्तीनां योगोऽस्ति पञ्च सूनुनाम्। जीवेदेकादशा-
-ञ्चादिं ज्ञात्रिंशाब्द दृढं तथा॥ सप्तमञ्चैकषष्ठिं वै चतु: पञ्चाशतं महत्।
घातकं नेष्टदञ्चापि रत्ने च धारयेद्दसौ॥ लहसुनेतिचमूंगेति तृतीयाया: व्रतं
तथा। भवेन: पूजनं नित्यं श्रेयसे पूर्वजन्मन:॥ वैशष: भैरवश्च भाव्योऽयं
मृत्यु: षष्ठासप्ततौ। आषाढ़ कृष्ण पञ्चम्यां रक्तदोषेण सम्भवेत्॥ यदि-च-
-न्द्रोऽत्र कुण्डल्यां द्वितीये पञ्चमेऽष्टके। एकादशे तदा भूयात् सुपुत्राणां
पिता तथा॥ धनेशो मृत्युमाप्नोति चिकित्साशास्त्रतोऽथवा। औषधयासा-
-धनै: पूर्ण: पुत्र इत्यस्ति तत्फलम्॥

शु. गु. 12	11 सू. बु.	10
के. मं. 1 श.	2	8
चं. 3	5	6 रा.
4		6

भावार्थ: शुक ने कहा - हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनने की मेरी इच्छा है, सो कृपा कर कहिए। भृगुजी बोले - हे पुत्र! यह जातक महाशठ, मित्रहीन, मलिन वेशी, दयाहीन, सुखी, राज्य द्वारा प्रतिष्ठित, साहसी, गृह-कलही, अहंकारी, अल्पधनी, पराक्रमहीन, धर्मरहित, शत्रुओं से दु:खी, राज्य का सलाहकार, सुन्दर शरीर वाला, उत्तम स्थान में रहने वाला, प्रसन्नचित्त, राज्य से वैभव पाने वाला, शत्रुजित्, दुर्बल शरीर वाला, जन-विरोधी, चिन्तित,

कार्य-नाशक, स्वजनों का विरोधी, पापानुरक्त, कुटिला एवं कुशीला स्त्रियों का भोगी, व्याकुल, स्त्री
पुत्रादि से चिन्तित उद्वेगी तथा वातरोगी होगा। इसे क्रोध तथा स्वाभिमान के साथ ही विद्या तथा विवेक
की उत्तम शक्ति प्राप्त होगी और उसी के बल पर यह धीरे-धीरे उन्नति करेगा। इसका विवाह २५वीं
की आयु में सुन्दरी स्त्री के साथ होगा, परन्तु स्त्री इससे भी अधिक क्रोधी स्वभाव की होगी।
इसका भाग्योदय २३, २८, ३८ तथा ४७ वें वर्ष में होगा। भाग्योदय की उत्तम शक्ति प्राप्त रहेगी,
शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। यात्रा तथा जल से भय होगा एवं अपमृत्यु का योग भी उपस्थित
हो सकता है। वायु-विकार के अतिरिक्त शरीर प्रायः नीरोग बना रहेगा। कभी-कभी मुख एवं दन्त
पीड़ा से परेशान रहेगा। सन्तानों में कम-से-कम ५ पुत्र म्लेच्छवृत्ति के होंगे। जीवन के १, ६, ११, १८,
३२, ५४ तथा ६१वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक सिद्ध होंगे। मूँगा तथा लहसुनियाँ धारण करना,
तृतीया को व्रत रखना तथा इन्द्रदेव का पूजन करना लाभदायक रहेगा। यह जातक पूर्वजन्म में वैश्य
था तथा अगले जन्म में प्रेत योनि प्राप्त करेगा। इसकी मृत्यु ६७ वर्ष की आयु में आषाढ़ कृष्णा
पंचमी शनिवार को प्रातः काल, अपने ही घर में रक्त-विकार से होना संभव है। इस कुण्डली में
चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः पूर्णधनी, सुपात्रों
का पिता, औषध अथवा चिकित्सा द्वारा मृत्यु पाने वाला एवं अधिक आमदनी वाला होगा। इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ तस्य जीवस्य सर्वं हि त्रैकालिकं हि जीवनम्। वर्ण्यतां योऽत्र कुण्डल्यां लभते
जन्म विस्तृतम्॥ भृगु उवाच॥ जातोऽस्यां स्थिरधीः वत्स मित्रैर्वृतोऽन्यस्त्रीरतः। कोमलाङ्गो धनाढ्यो
-शः गुणज्ञो राजसेवकः॥ अतीव सुख सम्पन्नो दुर्बलः स्त्रीमनोहरः। चलो जाति हिलेच्छुश्च कृष्णवर्णोऽ
न्यनिन्दकः॥ बाल्ये उदरदन्तैश्च पीड़ितः विकलस्तथा। परद्रव्यमतश्चास्य पापकृत् कुत्सिता क्रिया॥

सुदूरं व्यसनेभ्यश्च निर्बलो दान वैमुखी । मृषाचारकरश्चैवं मन्दो ब्धर्काटने व्रजेत् ॥ कलही व्यपशीलश्च सहिष्णु कटु भाषक: । पति पुत्रैः पृथक् वास: रक्तदोषेण संयुत: ॥ सर्वै: सह विरोधो ऽस्य वाहनै: संयुत: सदा । शृङ्गार प्रियया शाक्तं सुन्दर्या षड्विंशते ॥ विवाहो ऽस्य भवेद्भाग्य ग्योविंशाष्ट त्रिशयो: । द्विपञ्चाशतमे वर्षे वृद्धिं गच्छतु वैरिण: ॥ निन्दकाश्च परोक्षैव चाचापां वारि भीतिवान् । कन्यायामधिका संख्या विद्या बुद्धि प्रयोगत: ॥ धनं यशा दृश्चासै पुत्रा: म्लेच्छाश्च नास्तिका: । त्रिनपञ्चाशते पत्न्या वियोग: सेवक: सुत: ॥ जीवने नीलमं श्रेष्ठं पार्थिवेश्वरपूजनम् । प्रदोषस्य व्रतं युक्तं जीवने कष्ट दायकम् ॥ सप्तमेक त्रिंशञ्च नैक पञ्चाशतं तथा । अष्टपञ्चाशतञ्चादि षड्षष्ठिं त्रितविंशतम् ॥ भविता हरिणश्चैवं क्षत्रियंपूर्व जन्मन: । भाद्रपद कृष्ण द्वादश्यां चतु:सप्तति संख्यके ॥ हृद्रोगेण मृत्युश्च कुण्डल्यां यदि चन्द्रमा: । तृतीये नवमे षष्ठे द्वादशे तु भविष्यति ॥ धार्मिकश्च क्षमाशील: स्वस्थश्च शोभने महत् । भाग्यहीनो धर्महीन: व्ययवान् भ्रमणे ऽपि च ॥

भाव	ग्रह
११	सू.
१२	बु. गु. शु.
१	मं. श. के.
२	
३	
४	चं.
५	
६	
७	रा.
८	
९	
१०	

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे त्रिकालज्ञ ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहें । भृगुजी बोले – हे वत्स ! सुनो, यह जातक स्थिरचित्त वाला, अधिक मित्रों वाला, पर-स्त्री में रत, कोमलाङ्ग, सुखी, बड़ा धनी, राजकर्मचारी, बाल्यावस्था में उदर तथा दन्त रोगी, निन्दक, कृष्णवर्ण, नीच-प्रसङ्गी, कुचाली, पाप स्वभावी, कपटी, बलहीन, अल्पगति, मद युक्त, धर्म भ्रमणशील, क्रोधी, कलही, स्त्री-मोहक, चपल, सजातीयों का हितैषी, परधनेच्छुक, व्यसन-रहित, हृदय रोग, दान देने में पराङ्मुख, कटुभाषी, आलसी, दुष्कर्म कर्त्ता, असहिष्णु, रक्त-विकारी, सबका विरोधी, स्त्री-पुत्रादि से पृथक तथा वाहन-सुख सम्पन्न होगा । इसका विवाह सुन्दरी तथा शृङ्गारप्रिया स्त्री के साथ २६ वर्ष की आयु में होगा । भाग्योदय २३, ३८ तथा ५२ वे वर्ष में होगा । विरोधी जन परोक्ष में

इसका कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगे, केवल परोक्ष में ही निन्दा करेंगे। कन्या सन्तानें अधिक होंगी। विद्या-बुद्धि द्वारा धनोपार्जन अच्छा रहेगा। यात्रा में जल से भय होगा। केवल १ पुत्र सेवा करेगा। इसको ४७ वर्ष की आयु में पत्नी-वियोग का कष्ट भोगना पड़ेगा। नीलम धारण करने, प्रदोष व्रत रखने तथा पार्थिव शिव का पूजन करने से सदैव लाभ होगा। जीवन के १, ७, १७, ३१, ४१, ५८ तथा ६६ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्ट कारक रहेंगे। यह पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में हरिण होगा। इसकी मृत्यु भाद्रपद कृष्णा द्वादशी सोमवार को प्रातःकाल हृदय अथवा श्वास रोग से होना संभव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और धार्मिक, स्वस्थ तथा सुखी, भाग्य एवं धर्महीन तथा भ्रमणशील एवं अधिक खर्च करने वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

भाव	ग्रह
१	शु० रा०(?) मं० के०
१२	बु० गु०
११	सू०
१०	
९	
२	
८	
३	
५	चं०
७	श०
४	
६	

ॐ शुक्र उवाच। तस्य जीवस्य सम्भाग्यं जीवनं वद तां पितः। कुण्डल्यां जायते यो ऽस्यां श्रोतुमिच्छाम्यहं मुदा ॥ भृगु उवाच ॥ अस्यां जातो भवेत् शिष्य तेजस्वी श्रमवानपि। वणिजः सफलः स्त्रीभिः साहसिकः प्रतिष्ठितः ॥ अग्नि बन्धु प्रपूर्णो ऽयं वीरो गृहस्थ चालकः। पैतृकाल्लाभ संयुक्तः राज्योन्नतो ऽरि पीड़ितः ॥ भाग्यवान् धार्मिकाणां वै पालकश्चिन्तितो महान्। दीर्घायु स्वविद्यावान् सन्तत्या च कष्टायितः। पुरातत्त्वविदो नाति दुराग्रही प्रमादितम्। यात्रासुखी नास्ति लाभः मातामही गृहात्सदा ॥ ईश भक्तो यशस्वी च राजमान्यश्च भाग्यवान्। भूम्याहितं विवाहेच्छा पुष्पया ऽस्य स्त्रिया सह ॥ सुन्दर्या च यथापत्यं चिकित्सान्ते द्विंत्रिंशते। नैकषष्ठ्यां त्रयोषष्ठ्यां षड्चत्वारिंशते तथा ॥ अष्टाविंशे च भाग्यस्यो दयं कन्या चतुष्टयम्। सुतश्चैको हि सेवायां धनभाग्य विवर्द्धनम् ॥ भूयाच्चराज्य सेवायां वार्द्धक्ये उन्नतिं व्रजेत्। कार्तिकस्य चतुर्दश्यां शुक्लस्येत गृहैव नु ॥ चतुर्थे सप्तमे लग्ने दशमे यदि चन्द्रमाः। तदा

शान्तः सुरूपश्च गृह भू वाहनैः पुतः।स्त्री जिच्च वणिजः श्रेष्ठो राज्यात् बन्धन यौगिकः ॥

भावार्थ: शुक्रने कहा- हे नाथ! इस कुण्डली में जन्म लेने वाले जातक का फलादेश कहिए। भृगुजी बोले - हे तात! यह जातक सामान्य सुन्दर, सामान्य स्वस्थ, प्रभावशाली, तेज स्वभाव का, परि-श्रमी, स्त्री-पक्ष से साहसी, सफल-व्यवसायी, गृहस्थ-संचालक, भाई-बहिनों से पूर्ण, बड़ा पराक्रमी, पितृ-स्थान से लाभ पाने वाला, राज्यसे उन्नति पाने वाला, व्यवसाय में तरक्की पाने वाला, प्रतिष्ठित, शत्रु-पक्ष से परेशान, ननसाल को हानि पहुँचाने वाला, भाग्यवान्, धर्म-पालक, अत्यन्त साहसी, अल्पविद्यावान्, सन्तान-पक्ष से कष्ट पाने वाला, सामान्यधनी, सामान्य गृहस्थ, सबका विरोधी, चिन्तित, दीर्घायु, सामान्य पुरातत्त्वज्ञ, हठी, सुन्दर आयु पाने वाला, प्रयत्नशील, मातृपक्ष तथा परिश्रम से लाभ पानेवाला, राजमान्य, सौभाग्यशाली, मातृ-सुखी, भूमि आदि से सम्पन्न, यशस्वी, ईश्वर में निष्ठा रखने वाला, श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाला एवं उत्साही होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दर, परन्तु अपुत्रा कन्या के साथ होगा। चिकित्सा के उपरान्त ही उससे सन्तान का लाभ ३२ वर्ष की आयु में हो सकेगा। भाग्योदय २८, ४६, ५८ तथा ६३ वें वर्ष में होगा। सन्तानों में चार कन्याएं तथा एक पुत्र होंगे। पुत्र जीवन भर इसकी सेवा करेगा, राज्यसेवा से धन तथा भाग्य की वृद्धि होगी। वृद्धावस्था में पुत्र द्वारा व्यवसाय का कार्य भी उन्नति प्रदान करेगा। जीवन के १, ३, ८, १८, ३३, ४६ तथा ६४ वें वर्ष अपमृत्यु एवं अरिष्टकारक रहेंगे। इसके जन्म के समय से ही ननसाल-पक्ष की हानि होने लगेगी। यह पूर्वजन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में दादुर (मेढ़क) की योनि प्राप्त करेगा। इसकी मृत्यु ७३ वर्ष की आयु में कार्तिक शुक्ला चतुर्दशी शनिवार को मध्यरात्रि में, पाण्डुरोग अथवा रक्त-विकार के कारण, अपने घर में ही होना सम्भव है। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशमभाव में हो तो यह जातक क्रमशः परमसुन्दर, शान्त और विवेकी, गृह-भूमि-वाहन एवं

कुटुम्ब से पूर्ण सुखी, स्त्री-जित् तथा अनेक स्त्रियों का भोगी और कुशल-व्यवसायी एवं राज्यकार्य से श्रेष्ठ तथा ख्याति पाने वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ त्रिकालज्ञं फलं तस्य जातकस्य वदस्व मे । अस्यां यो लभते जन्म कुण्डल्यां श्रोतुकामये ॥ भृगु उवाच ॥ अत्र जातो भवेत् पूर्णः रत्नैः स्वर्णेन दुर्बलः । चिन्तितो दीर्घकालाद्धै निर्मानश्च क्षुपीड़ितः ॥ व्ययशीलोऽल्पकामी वै दुष्टानां रक्षकस्तथा । रक्तदुष्टः सुतैः पत्न्या विमुखो शूद्रसङ्गतः ॥ दुर्गुणोऽपि सहिष्णुश्च निर्लज्जो कटुभाषकः । व्यर्थैव भ्रमणं कुर्यात् तेजस्वी चाल्पभावकः ॥ प्रतापी

शा. के. मं. शु. २ | १२ | ११ | २ | सू. बु. गु. | १० | ३ | ९ | चं. ४ | ६ | ८ | ५ | ७ रा.

धनवान् दाती सुरूपः निर्दयः कटुः । कामुकः परनारीणां भोक्ता च पक्षिहिंसकः ॥ बाल्ये दन्तोदराभ्यां वै पीड़ितः कृष्णतिदकौ ॥ हृद्रुग्णो विकलश्चैवं मनसा कार्यतत्परः ॥ कृतघ्नश्चेष्टितश्चैव आर्द्रयोनिवतीं वहेत् । विवाहे सुन्दरीं किन्तु चाब्दे द्वाविंश संख्यके ॥ तस्मादतीव यत्नेन द्वौ सुतौ नवत्रिंशते । स्त्रीवियोगो ऽष्टपञ्चाशे त्रिषष्ठ्यां पुत्रनाशनम् ॥ सन्तत्याश्च वियोगेन दुःखस्य दुर्वला स्थितिः ततो गृहस्य त्यागेन भिक्षुकः सम्भविष्यति ॥ मातकृष्णस्य पञ्चम्यां वर्षैके सप्ततौ मृयात् । भाग्योदयं चतुःविंशे नैकपञ्चाशते तथा ॥ द्वात्रिंशे जीवने नेष्टं तृतीये चैकत्रिंशतम् । सप्तदशाऽष्टमे चापि षड्पञ्चाशते तथा । षड्चत्वारिंशतं तद्वत् चतुःषष्ठिश्च धारयेत् । नीलमं पन्नकं विष्णोः पूजनञ्च व्रतं वहेत् ॥ एकदशाश्च श्रेयार्थं ब्राह्मणः पूर्वजन्मनः । कीटयोन्यां गजेन्द्रे यदि चन्द्रोऽत्र सम्भवेत् ॥ द्वितीये पञ्चमे चैवं एकादशेऽष्टमे ऽथवा । श्रमशीलो धनाधीशः विद्या बुद्धिं समुन्नतः ॥ सहसा मृत्युमापन्नः सन्तोषं चाप्नुयात् महत् । आयात्स्वस्य गृहस्थश्च सुखमाप्स्यति ॥

भावार्थ : शुक्र ने कहा- हे पिता! अब आप इस कुण्डली का फलादेश कहें। भृगुजी बोले- हे शुक्र! इस कुण्डली वाला जातक रत्न तथा स्वर्ण से पूर्ण, अल्प कामना युक्त, अत्यन्त दुर्बल, दीर्घ चिन्तित, नेत्र कष्टी, मातृ-रहित, अधिक खर्चीला, दुष्टों का रक्षक, दीर्घ-रोगी, कलही, रक्त-विकारी, सबका विरोधी, स्त्री-पुत्रादि से विमुख, नीचों की सङ्गति करने वाला, दुर्गुणी, असहिष्णु, दुःखी, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, अल्पभाषी, निर्लज्ज, कटुभाषी, कलही, चिन्तित, आलसी, तेजस्वी, धनी, दानी, सुन्दर मुखवाला, निर्दय, कुटिल बुद्धि, अतिकामी, पर-स्त्री-भोगी, पक्षिहन्ता, बाल्यावस्था में उदर-दन्त-रोगी, दान देने में पराङ्मुख, मन-ही मन चिन्तन करने वाला तथा चेष्टावान् होगा। इसका विवाह २२ वर्ष की आयु में सुन्दर तथा भद्र गुणवती स्त्री के साथ होगा, जिसके कारण सन्तानोत्पत्ति में कठिनाई आयेगी। उपाय एवं चिकित्सा द्वारा केवल दो पुत्रों की प्राप्ति सम्भव है। स्त्री से ३८ वर्ष की आयु में इसका वियोग हो जाएगा तथा ५८ एवं ६३ वर्ष की आयु में ज्ञाति-वियोग का दुःख भोगना होगा, जिसके कारण आर्थिक-स्थिति भी अत्यन्त दुर्बल हो जाएगी। इतना ही नहीं उस स्थिति में यह मनुष्य गृह त्याग कर, भिक्षुक वृत्ति से जीवन निर्वाह करता हुआ ७१ वर्ष की आयु में, किसी तीर्थ स्थान में मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। माघ कृष्णा पंचमी रविवार को सायंकाल इसकी मृत्यु होना सम्भव है। भाग्योदय २४, ३२ तथा ४८ वर्ष की आयु में होगा। इसके जीवन के १, ३, ८, ११, ३१, ४६, ५६ तथा ६४ वर्ष की आयु में कष्ट तथा अपमृत्यु का भय उपस्थित होगा। नीलम तथा पन्ना धारण करने, एकादशी का व्रत रखने तथा भगवान् विष्णु का पूजनानुष्ठान करना लाभप्रद रहेगा। यह पूर्वजन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में कीट योनि ग्रहण करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमशः उद्यमी और धनी; विद्या-बुद्धि तथा सन्तान सम्पन्न, पूर्ण सुखी तथा गृहस्थ, अकालमृत्यु पाने वाला एवं अच्छी आमदनी से सन्तुष्ट रहने वाला होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच ॥ फलादेशं त्रिकालज्ञ अस्यां जातस्य देहिनः । त्रैकालिकं समापृच्छ्य श्रोतुमिच्छामि निश्चितम् ॥ भृगु उवाच ॥ निर्धनोऽयं भवेज्जीवः कुटिलयारमेत्सदा । पापेरतस्तथा दुष्टैः भीतः स्त्रीपुत्र चिन्तितः ॥ आकुलो वातरुग्णश्च राज्ये प्रतिष्ठितः क्वचित् । हृष्टोऽयं स्वजनैः मान्यः अहंभावेन संयुतः ॥ प्रसन्न उत्तमे स्थाने वसेत् राज्यञ्च शास्ति वै । बुद्धिहीनः सुकामश्च सर्वमान्यश्च वाहनैः ॥ युक्तोऽयं कामकर्त्ता वै शत्रुजित् क्रोध संयुतः । व्ययशील श्च सुरतः तेजस्वी चाल्य भाजकः ॥ निर्लज्ज रालसी रुग्णः प्रसाधन प्रियोऽपि वै । विचारेषु पवित्रोऽयं लेखन्यां जीवनं वहेत् ॥ तथैव वैभवापन्नः वैरिणः सर्वदा जयेत् । परं कौटुम्बिकी चिन्ता निश्चिता नैव भू सुखम् ॥ वार्द्धक्ये धन लाभोऽस्मै भाग्योदयं भविष्यति । द्विनपञ्चाशते लब्ध चतुः त्रिंशोकविंशयोः ॥ नैक वर्षयां विवाहे श्च सप्तविंशे हि सुन्दरीम् । परं न कुटिलां लब्ध्वा त्रिन पञ्चाशते भवेत् ॥ विधुरः कन्यका वर्षचं सुत श्चैको हि सन्ततौ । अष्टादशाष्ट वर्षपारवे तृतीयमष्टमं तथा ॥ षड वर्षिं चतुः त्रिंशं द्विचत्वारिंशते तथा । कष्टदं नेष्टदं लब्ध धर्म सम्पादयन् भवेत् ॥ नैकसप्तति वर्षायौ वर्षचा परस्य भावणे । मृत्युश्च सन्निपातेन पुनर्जन्म न विद्यते ॥ पुरा क्षत्रिय वंशस्थः गोमेद नीलमे वहेत् । सुमुखश्चैव प्रजां वै चतुर्थश्च व्रतं सदा ॥ करोतु क्षेयसे चन्द्रः अस्यां स्याच्चादि द्वादशे । तृतीयं नवमे वर्षे तदैव भ्रमवान् महान् ॥ व्ययशीलोऽर्जने लीनः वाल्ये रुग्णः पुनः वरम् । आयुष्कि: धर्महीनः सर्वमेवं भविष्यति ॥

रा. के. मं. शु. १
१२ सू. गु.
११ बु.
२
१०
३
९
४
६
८
५ चं.
७ श.

भावार्थः शुक्र ने कहा — हे पिता! इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले हे जिज्ञासु! इस कुण्डली वाला जातक धनहीन, पापानुरक्त, कुटिला-स्त्री के साथ रमण करने वाला, दुष्टों से भयभीत, आकुल, स्त्री-पुत्रादिकों से चिन्तित, दुरोगी, वातरोगी, स्वजनों से सुखी, राज्य से

प्रतिष्ठा प्राप्त, धनी, मान्य, सबका सहायक, गृह-कलही, अहंकारी, धर्मात्मा, शत्रुओं से दुःखी, दुर्बुद्धि, राज्य का सलाहकार, सुन्दरशरीरवाला, दाता, उत्तम स्थान में रहने वाला, प्रसन्नचित्त, वाहनादि से युक्त, सबसे सम्मानित, कार्यकर्त्ता, शत्रुनाशक, दुर्बल शरीर वाला, व्यर्थ भ्रमण करने वाला, क्रोधी, कलही, नेत्र-कष्टी, अधिक खर्चीला, रोग-पीड़ित, तेजस्वी, राज्यप्रिय, स्वच्छ हृदय का, अल्पभाषी, निर्लज्ज, आलसी, ठाठ बाट का प्रेमी तथा सामान्य स्वरूप वाला होगा। इसकी विचारधारा परम पवित्र एवं विवेक पूर्ण होगी। यह लेखन-कार्य के बल पर अपनी आजीविका उपार्जित करेगा तथा भाग्य, धन एवं यश की वृद्धि करेगा। इसे अपने शत्रु तथा विरोधियों पर सदैव सफलता प्राप्त होगी, परन्तु कौटुम्बिक-क्लेश सदैव चिन्ता के विषय बने रहेंगे। गृह तथा भूमि का विशेष सुख नहीं रहेगा। वृद्धावस्था में आर्थिक-स्थिति उत्तम रहेगी। भाग्योदय २१, ३४, ४८ तथा ५९ वें वर्ष में होगा। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दरी परन्तु कुटिला-स्त्री के साथ होगा, जो इसे ४७ वर्ष की आयु में वियोगी बना देगी। सन्तानों में केवल एक पुत्र तथा दो कन्याएँ होंगी। इसके जीवन के ३, ८, १८, ३४, ४२, ५९, ६६ तथा ६८ वें वर्ष अपमृत्यु एवं कष्टकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६९ वर्ष की आयु में श्रावण शुक्ला षष्ठी गुरुवार को रात्रि के प्रथम प्रहर में हृदयरोग अथवा सन्निपात के कारण होगी। मृत्यु के समय भगवच्चिन्तन करते रहने तथा जीवन में धर्म कार्यों का सम्पादन करते रहने के कारण इसका पुनर्जन्म नहीं होगा। यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण था। गोमेद एवं नीलम धारण करना, चतुर्थी का व्रत तथा गणेश जी का पूजन सदैव लाभकारी रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय, षष्ठ, नवम अथवा द्वादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः पूर्ण उद्यमी और व्यवसायी, बाल्यावस्था में रोगी तथा बाद में स्वस्थ; भाग्यहीन और अधार्मिक तथा अधिक व्यय करने वाला होगा।। इति शुभम्।।

ॐ शुक्र उवाच।। पितः त्रैकालिकं तस्य फलादेशं विविच्यताम्। जातो ग्रहमण्डले ऽस्मिन् यो

तच्छ्रुत्वा भृगुरब्रवीत् ॥ भृगु उवाच ॥ प्रभाववान्परिजेताऽयं रक्तदोषेण दूषितः । स्त्रीपक्षात्कष्टमाप्नोति गार्हस्थ्ये च दुःखितः ॥ श्रमवान् वणिजः श्रेष्ठः सहोदर संयुतस्तथा । भाग्यवान् परमार्थी वै धार्मिको वंश पोषितः ॥ पितृपक्षोन्नतश्चास्य मातुः सुखेन गौरवम् । राजमान्योऽन्य देशी: वै सम्बन्धेन हितं वहेत् ॥ विवेकी व्ययशीलश्च व्यवहारेपटुस्तथा । कीर्तिमान् धैर्ययुक्तश्च विद्या बुद्धि महालयः ॥ पुरातत्त्वविदश्चैवं दीर्घायुः बलवान महान् । कृष्णया च चतुःविंशे परं नित्यञ्च रुग्णया । विवाहोऽस्य भवेच्छुद्धा गुरुदेवेषु सम्भवेत् । सेवकौ द्वौ सुतावास्य भाग्यञ्च नैक त्रिंशते ॥ चतुःपञ्चाशते चैक चत्वारिंशे विवर्द्धयेत् । शत्रुञ्जये

१ श.	१२	११ बु.
मं. शु. २	सू. के. गु.	१०
३		९ चं.
४	६ रा.	८
५		७

त्सवा लाभः विद्या बुद्धि प्रभावतः । वाणिज्ये लौह एवञ्च पुस्तकानां हि निश्चितम् । धन मान प्रतिष्ठानां वृद्धिस्याद्राज योगतः ॥ आदार्यञ्च स्वभावेऽस्य क्रोध दौर्बल्यतोऽपि वै । एकादशं चतुः त्रिंशं त्रिचत्वारिंशतं तथा ॥ त्रिषष्ठिं प्रथमं षष्ठ षड्पञ्चाशत संख्यकम् । अपमृत्यु कृते भयुः मृत्युश्च संभविष्यति ॥ पौष शुक्लस्य सप्तम्यां वर्षेऽष्ट षष्ठि संख्यके । लभतेनेति सुरत्नं वै पूर्णिमाया: व्रतं वहेत् । ब्रह्मासावित्रि पूजाश्च श्रेयसे सर्वदा शुभम् । पुराकृतोद्विषेनैव घातकश्च भविष्यति ॥ यदि चन्द्रोऽत्र कुण्डल्यां चतुर्थे सप्तमे तथा । लग्ने च दशमे भूपात् शोभनश्चास्थिरोधिपाः ॥ मातृ सुखेन हीनोऽयं पत्नि हीनश्च सम्भवेत् । भोक्ता स्त्रीणां धनैराढ्यं सम्पन्नो गृह वाहनैः ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा - हे प्रभो ! अब आप इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुनकर भृगुजी बोले - हे पुत्र ! सुनो, यह जातक अत्यन्त प्रभावशाली, शत्रुजयी, रक्त-विकार एवं रोग युक्त, परिश्रमी, स्त्री-पक्ष से कष्ट पाने वाला, सफल व्यापारी, गृहस्थ से दुःखी, अधिक पराक्रमी, धनवान, भाई-बहिन वाला, कुटुम्ब से सहयोग पाने वाला, भाग्यवान, पुरुषार्थी,

धर्म में श्रद्धा रखने वाला, पितृ-पक्ष से उन्नत, राज्य द्वारा सम्मानित, मातृ-सुख में हानि पाने वाला, भूमि आदि का इच्छुक, परदेश के सम्बन्ध से लाभ पाने वाला, विवेकी, अधिक खर्चीला, व्यवहार-कुशल, धैर्यवान्, सुन्दर शरीर वाला, राजमान्य, ख्याति प्राप्त, विद्वान्, बुद्धिमान्, सन्ततिवान्, धर्म-पालक, यशस्वी, दीर्घायु, पुरातत्त्वज्ञ, महाबली एवं दैनिक जीवन में प्रसन्न बना रहने वाला होगा। इसका विवाह कृष्णवर्णा, परन्तु रोगग्रस्ता स्त्री के साथ २४ वर्ष की आयु में होगा। यह ब्राह्मणों तथा गुरुदेव के चरणों में विशेष श्रद्धा रखेगा। इसकी सन्तानों में से दो पुत्र जीवनभर इसकी सेवा करेंगे। इसका भाग्योदय २८, ४१ तथा ५४ वें वर्ष में होगा। इसे शत्रु-पक्ष पर सदैव विजय प्राप्त होगी। विद्या-बुद्धि के सुन्दर संयोग के कारण इसे पुस्तक-लेखन कार्य अथवा लौह-वस्तुओं के व्यवसाय से श्रेष्ठ धन-लाभ की संभावना रहेगी। राजकीय व्यक्तियों से उत्तम सम्पर्क के कारण इसके धन तथा मान-प्रतिष्ठा में सदैव वृद्धि होती रहेगी। स्वभाव में सामान्य चिड़चिड़ेपन के साथ ही उदारता की भावना भी प्रबलवती रहेगी। इसके जीवन के १, ६, ११, ३४, ४३, ५८ तथा ६३ वें वर्ष अपमृत्यु एवं हानिकारक रहेंगे। इसकी मृत्यु ६८ वर्ष की आयु में, पौष शुक्ला सप्तमी बुधवार को, सामान्य श्लेष्मा-विकार के कारण अपराह्न के समय, घर में ही होना संभव है। लहसुनियाँ धारण करने, पूर्णिमा का व्रत रखने तथा ब्रह्मा-सावित्री का पूजन करने से सदैव लाभ होगा तथा संकट दूर होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण द्वारा उत्पन्न शूद्र था तथा अगले जन्म में चातक पक्षी की योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, सप्तम अथवा दशम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः परम सुन्दर तथा अस्थिर-मति वाला, मातृ-सुख से हीन, स्त्री-विहीन तथा अनेक स्त्रियों का भोगी एवं पूर्ण धनी तथा गृह-वाहनादि से युक्त होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच ॥ श्रोतुमिच्छाम्यहं तात अस्याः फलं महीतले । श्रुत्वा भार्गव वाणीं स गीष्पतिरुक्तवान् शृणु ॥ भृगुउवाच ॥ अस्यां ञ्जातो नरो नूनं क्रोधी कृपणः सुराप्रियः । शुष्को जारश्च दुर्बुद्धिः राज्यमान्यो दुर्जनैर्वृतः कृपणः स्त्री वियोगी च वार्द्धक्ये दुःखभाग् परम् । त्रयोविंशति वर्षेऽस्य योगो वैवाहिकस्तथा ॥ पुत्राधिक्यं च तैरस्य भूयात् कीर्तिप्रसारणम् । द्वौ पुत्रौ परमौभक्तौ स्नेह पात्रे सदास्य तौ ॥ मृत्युश्च उदरे रोगे एक सप्तति संख्यके । कार्तिक कृष्ण सप्तम्यां तिथौ रात्रौ भविष्यति ॥ पञ्चमैकादशे तद्वत् सप्तविंशाष्ट त्रिंशते । त्रिचत्वारिंशात ञ्चाब्दं षड् पञ्चाशत संख्यकम् ॥ अष्टषष्ठितमं वर्षं जीवनोत्कर्ष कारकम् । एवञ्चतुर्दशं वर्षं द्वादशामपि तादृशम् ॥ षड्विंशतमाब्द ञ्च त्रिपञ्चाशत संख्यकम् । नवपञ्चाशतञ्चैव जीवनकर्ष कारणम् ॥ शनैश्चर व्रतं युक्तं नीलमस्यापि धारणम् । स्त्रीयोगाय विपदं नष्टुं कुर्यात् सदार्चनम् ॥ गायत्र्याः जपनो सत्यं मार्गोऽयमेव श्रेयसः । पूर्व जन्मनि शूद्रोऽयं संपालश्चाग्रिमेभवेत् ॥ चन्द्रो लग्ने चतुर्थे वा पञ्चमैकादशेऽथवा । तिष्ठेच्चेत् सप्तमे शक्तः सर्वतः सौख्यवान् भवेत् ॥

३ बु.	२ सू.	१
के. शु. ४		१२
५ चं.		११ श.
६ मं.	८	१० रा.
७ गु.		९

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे पिता! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा कीजिए। शुक्र के यह वचन सुनकर महर्षि भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो, यह जातक परम तेजस्वी, क्रोधी, स्वाभिमानी, औषध अथवा लौह-यन्त्र विद्या में कुशल, कृपण, सुरापायी, पर-स्त्री-गामी, स्त्री एवं सन्तान से रहित, बड़ कुटुम्बी, माता-पिता का विरोधी, अपने दुष्कार्य एवं कृपणता द्वारा धन का संचय करने वाला, वृद्धावस्था में कष्ट पाने वाला, राज्याश्रित अथवा राज्य द्वारा सम्मानित, कुसङ्गी, दुर्जनों का साथी, दुर्बुद्धि एवं शुष्क तथा नीरस प्रकृति वाला होगा।

इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में होना संभव है। इसकी पत्नी या तो मर जाएगी अथवा वह इससे अलग रहेगी। यह जातक वृद्धावस्था में रोग-ग्रस्त रहेगा। इसका भाग्योदय ११ तथा २७ वें वर्ष में होगा। इसकी सन्तानों में पुत्रों की संख्या अधिक रहेगी। पुत्रों के द्वारा इसके यश की वृद्धि भी होगी। इसके दो पुत्र परम आज्ञाकारी तथा सेवानुवर्ती होंगे। जिनके ऊपर इसका विशेष स्नेह बना रहेगा। पुत्रों को भी यश मिलेगा। इसकी मृत्यु उदर-रोग के कारण कार्तिक कृष्णा सोमवार को रात्रि के तीसरे प्रहर में, ७१ वर्ष की आयु में, किसी तीर्थ-क्षेत्र में होना संभव है। इसके जीवन के ५, ११, २७, ३८, ४३, ५६ तथा ६८ वें वर्ष उत्तम रहेंगे। वर्ष ९, १२, १४, २६, ४७, ५३ तथा ५९ अपमृत्यु, हानि एवं कष्टकारक सिद्ध होंगे। संकटों से मुक्ति पाने के लिए शान्ति-मन्त्र का जप तथा अनुष्ठान करना उचित रहेगा। अरिष्ट तथा संकट-काल में तथा स्त्री-सुख के लिए ब्रह्मा-सावित्री का पूजन करना चाहिए। यह जातक पूर्व जन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में संथाल-कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम अथवा एकादश भाव में हो तो यह जातक क्रमशः सुखी, पुत्रवान्, स्त्रीवान्, शान्त तथा धनी होगा। ।। इति शुभम् ।।

इससे आगे जन्म कुण्डलियों का फलादेश केवल संस्कृत भाषा में उद्धृत किया गया है। इन ग्रहस्थितियों वाली जन्मकुण्डलियाँ चाहे किसी भी लग्न की क्यों न हों, उन सबका मुख्य फलादेश प्रायः एक जैसा ही बैठेगा। इन कुण्डलियों के विभिन्न लग्नों के स्वरूप 'कुण्डली खण्ड' में प्रदर्शित किए गए हैं, उनसे मिलान कर, यजमान की जन्मकुण्डलियों के फलादेश का वर्णन आगे दी गई कुण्डलियों के फलादेश के आधार पर करना चाहिए तथा फलादेश करते समय जातक प्रकरण, ग्रहदृष्टि प्रकरण एवं विविध योग प्रकरण में वर्णित सिद्धान्तों का भी उपयोग करना चाहिए।

ॐ शुक्र उवाच ॥ कुण्डल्यामत्र जीवो यो जन्म गृह्णाति हे पित: । त्रैकालिकं फलादेशं श्रोतुमि-
च्छामि तस्य वै ॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषा जन्मपत्रिका । वृषलग्नोदये जन्म स्थिते च भौम
देवतं ॥ विलग्ने कुजे दण्ड लोहाऽग्नि भीतिं स्तपे मानसं केशरी किं द्वितीयं । कलत्रादि घात: शिरोनेत्र पीड़ा
विपाके फलानां सदैवोपसर्ग: ॥ १-२॥ सुतस्थाने शनिर्देवो सहितं राहुनिश्चितम् ॥ शनौ पंचमे च प्रजाहेतु
दु:खं विभूतिश्चला तस्य बुद्धिर्नशुद्धा । रतिर्देवते शब्दशास्त्रेण तद्वत् कलिर्मित्रतो मन्मथ: क्रोड़ पीड़ा ॥३॥
यदा पञ्चमे राहु देवो प्रयाति: तदा सोदरे घात बालादि कष्टम् । स्वबुद्धिर्व्यथा सन्तति: स्वल्प पुत्रा: सदा
सोदरे वीर्य युक्तो नरोऽपि ॥ ४॥ सप्तमस्थाने निशानाथो सहितं गुरु
देवता ॥ भवेद्द्वादशं सप्तमे शीतरश्मि धनित्वं भवेदत्र वाणिज्यतोऽपि।
रतिस्त्रिं जने मिष्ट भुग्लुब्ध चेता: कृश: कृष्णपक्षे विपक्षां विभूत: ॥५॥ मति
स्तस्य बह्वी विभूतिश्च बह्वी रतिर्वैभवे भामिनीनां च बह्वी । गुरुर्वर्ग
कृद्यस्य जामित्र भावे सपिण्डादिकं खण्डकं दर्प एव ॥ ६॥ एकादशे शुक्र
देवो सहितं बुधनायक: । भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात् स्वरूपं मही-
-पं च कुर्याच्च सम्यक् । लसत्कीर्ति सत्यानुरागं गुणाढ्यं महाभोगमैश्वर्य
युक्तं सुशीलं ॥७॥ सुभाग्यं सुविद्याधिको दर्शनीय: सुगात्र: सुवस्त्र: सुतेजोऽपि तस्योदरे पीड्यते
सन्ततिर्दुर्भगाश्च शिखी लाभग: सर्वलाभं करोति ॥ ८॥ एतद्योग समुत्पन्नं बहुभागी च बालक: ।
उच्च वंश कले जन्म धनधान्यो न संशय: । गौरवर्ण विजानीयात् दिव्यरूपं सुकान्तिमान् । उत्पन्नं
बाल यत्कालं ज्येष्ठ भगनी न संशय: ॥ ९-१०॥ द्विमातृ योग प्राप्नोति भृगुवाक्यं न चान्यथा ।
ज्येष्ठ भ्रात भवेन्मृत्यु: कनिष्ठो मात्र जीवति: ॥ ११॥ भाग्यवान् लोकशाली च धन धान्य भविष्यति।

लोकं लक्षपति: ख्यातो बहु कीर्ति प्रतिष्ठया ॥१२॥ तात माता ति हर्ष च जीवनं सुफलं मम:। वाहनादि
सुखं ज्ञेयं लाभो भवति नान्यथा ॥१३॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे नेक पीडा च प्राप्यते। मातृ कष्ट विजानीयात्
मान कीर्ति विशेषत: ॥१४॥ गंगायमुनयोर्मध्ये जीववृद्धि दिने दिने। स्वरूप देह विजानीयात् मान वृद्धि दिने दिने
॥१५॥ कुलदीपं प्रजानीयात् सूयतो सुतमुत्तमम्। तृतीये सप्तमे वर्षे भूमि लाभं च तातकं ॥१६॥ महत्प्रा-
-प्ति महोत्साहो भाग्यवृद्धि दिने दिने। पत्नी योग विजानीयात् मंगलाचारकं तथा ॥१७॥ राजद्वार उपाधी
च शत्रुलोक पराजितम्। बहु शत्रु विजानीयात् बंधु कुल विरोधता ॥१८॥ गुप्त तात रिपू बंधु:
प्रत्यक्षो प्रीति दृष्टय:। व्रण व्याधि शरीरेण शीतलायां जगत्पते ॥१९॥ कनिष्ठो भ्रात उत्पन्नं दीर्घमायु-
र्न संशय:। वर्षे मासे सुखं प्राप्ति भाग्योदय दिने दिने ॥२०॥ नेक कष्ट विजानीयात् औषधी प्रतिश्रां-
तये। अष्टमे द्वादशे वर्षे मध्य गाथा च वर्णिते ॥२१॥ पत्नी योग विजानीयात् विवाहोत्सव मङ्गलं।
बहु मुद्रा व्ययं तात कीर्तिवान प्रतिष्ठया ॥२२॥ तात तेज प्रतापी च मम वाक्यं न चान्यथा। द्विविद्या
योग सम्पन्न हृस्व विद्या प्रतीतत: ॥२३॥ बुद्धिमान विशेषेण सुशीलं बाल दृष्टय:। किंहि काल महा
क्रोध सत्यो वचन भाषणं ॥२४॥ तातं च नेक पीडायां औषधी प्रतिश्रांतये। कनिष्ठो तिष्ट भ्रातायां
समुत्पन्नं न संशय: ॥२५॥ भूमि लाभ विजानीयात् व्यापारे धन वृद्धय:। वर्षे मासे सुखं प्राप्ति मध्य
च प्रीतिवान् ॥२६॥ त्रयोदश सप्त चन्द्रोऽपि मध्यान्तं कथा शृणु। नेक कष्ट विजानीयात् औष-
धी प्रतिश्रांतये ॥२७॥ शुभ कर्म धनं दानं विवाहोत्सव मङ्गलं। पत्नीयोग कनिष्ठो भ्रात मम वाक्यं
न चान्यथा ॥२८॥ महत्प्राप्ति महोत्साहो भाग्योदय दिने दिने। द्विरागमन सन्देहो पत्नी प्रीति कं
महत ॥२९॥ शत्रुपक्ष विरोध स्यात् तात चिन्ता च पुनयथा। पत्नी देह महत व्याधि: औषधी सेव-
-नं तृप्या ॥३०॥ वैद्योपाय कृतं सर्वं प्राण हानिर्न संशय:। अष्ट चन्द्रमिते वर्षे विंश वर्षोऽपि मध्यमा

॥३१॥ द्विभार्या योग माप्नोति भृगु वाक्यं न चान्यथा ॥३२॥ शुभकार्ये व्ययं द्रव्यं विवाहोत्सव मंगले । बहु
व्याधी न सन्देहो तात माता च चिन्तया ॥३३॥ द्विजन्मा योग प्राप्नोति पीड़ा कष्टं च न्यूनकं । नेत्रवार
महत् व्याधि: औषधी प्रतिपूर्णतये ॥३४॥ पत्नी गर्भ विजानीयात् अल्पजीवी च कन्यका । किंचिद्दिवसे गृहे
वासं प्राणहानिर्नसंशय: ॥३५॥ राजद्वारे विरोध स्यात् शत्रुपक्ष न संशय: । अन्य मासे सुखं प्राप्ति लाभं
प्रति दिने दिने ॥३६॥ चन्द्र नेत्र मिते वर्षे बाण नेत्र मिते तथा । पत्नी गर्भ माद्याय अल्पजीवी च सन्तति:॥
३७॥ इह जीव महाकष्टं मम वाक्यं च नान्यथा ॥३८॥ केन कर्म विपाकेन बहु कष्टी च जीवकं । अल्प
जीवी च संतानं सर्वं कथय मे प्रभो ॥ भृगुरुवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्वकृत पाप कारणं । राज-
वंश समुत्पन्ने वने आखेट कानम् ॥३९-४०॥ चित्रको चित्रणी संतत बाण विद्धोऽपि मृतप्रदा । चित्रो
शाप मुक्ते दत्वा अग्र जन्म पुन: पुन: ॥४१॥ भार्या सन्तति मृत्यु स्य महापीड़ा त्वया भवेत् ॥४२॥
शुक उवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च केन मन्त्रस्य जाप्यकम् । यीतो शाप विनश्यन्ति कृपयां
वद मे प्रभो ॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या मुद्रा युग्म प्रमाणकी । तन्मध्ये काम बीजं
च चित्रको मूर्तिकं लिखेत् । रक्त चंदन मिश्राणि गंगाजल श्च स्नानकं । वस्त्र भूषण दानेन
चित्रको शाप मुक्तये ॥४३-४५॥ इद दानं कृते संत पुत्रो सुख भविष्यति । प्रायश्चित्त न कर्तव्यं
संतति: सुख मध्यमा ॥४६॥ मन्त्रदान कृते संत बहु पुत्रो न संशय: । विंश वर्षे भवेत्तात पीड़ा
कठिन दारुणम् ॥४७॥ बहु कष्ट विजानीयात् नान्यथा वचनं मम ॥४८॥ शुक उवाच । किं दानं
कस्य पूजा च किं मंत्रं औषधी तथा । तात कष्ट विनश्यंति कृपया वद मे प्रभो ॥ भृगु उवाच ॥
त्रिधातो मूर्तिकं अंग अष्ट मुद्रा प्रमाणकं । कणिको रजतं ताम्र सम भागो चतुष्टय: ॥ गायत्री
लिखितं भक्त्या वीर्यमन्त्रश्च संयुतम् । रक्त चंदन मिश्राणिं गंगोदकश्च स्नानकं ॥४९-५१॥

ससंकल्पं ददेत् विप्र मृद्रूपा चिन्ता कारणं । महामृत्युंजयं जापं चन्द्रवाण सहस्रके ॥ ५२॥ दीर्घमायुर्न सन्देहो धन सन्तान वृद्धये । महत्प्राप्ति महोत्साहो लाभो भवति नान्यथा ॥ ५३॥ षट्नेत्र मिते वर्षे त्रिंश वर्षेऽपि मध्यमा। मातृकष्ट विजानीयात् औषधी प्रतिमोतये ॥ ५४॥ पत्नी गर्भ मादाय कन्या जन्म नसंशयः। मासे वर्षे सुखं प्राप्ति अयुवृद्धि दिने-दिने ॥ ५५॥ शरीरे सुख लाभश्च भूमिलाभ प्रतीततः। शत्रुवंश विरोधस्यात् गुप्तचिन्ता शरीरजं ॥ ५६॥ नेक कष्ट विजानीयात् औषधी प्रति शांतये। चन्द्र त्रिंश मिते वर्षे वाणत्रिंश मिते तथा । ग्रामप्राप्ति न संदेहो शुभ कार्ये धनं व्ययम् ॥ ५७-५८॥ विवाहादि कृते शुक्र लाभो भवति नान्यथा । मासे वर्षे सुखं लाभो आयुवृद्धि दिने दिने । पत्नीगर्भ मादाय पुत्रो जन्म प्रतीततः ॥ ५९-६०॥ महत्प्राप्ति महोत्साहं भाग्य वृद्धि दिने दिने । षट्त्रिंशमिते वर्षे चत्वारिंशके तथा । शत्रुपक्ष विरोधस्यात राजद्वार उपाधिकं ॥ ६१॥ धनः व्ययं न संदेहो रिपुलोके पराजितम् । पुत्रीजन्म विजानीयात् अल्पजीवी च बालकः ॥ ६२॥ पत्नीं च कष्ट मादाय दान मंत्र जपेत् ध्रुवम् । मृत्युंजय कृते जापं सर्वविघ्नो ऽपि शान्तये ॥ ६३॥ चन्द्रवेद मिते वर्षे वाण वेद मिते तथा । वाहनादि सुखं ज्ञेयं लाभो भवति नान्यथा ॥ ६४॥ धनभंग न संदेहो गुप्तचिन्ता शरीरजं । मातृकष्ट विजानीयात् प्राणहानि न संशयः ॥ ६५॥ कनिष्ठे भ्रातरं मृत्यु धनागम भवेत् क्वचित् । शुभकार्ये व्ययं द्रव्यः विवाहोत्सव मंगले ॥ ६६॥ पुत्रजन्म न सन्देहो भृगुणा परिभाषितः । आनन्दं मंगलान्यां मोदते भुविमण्डले ॥ ६७॥ षट्वेद मिते वर्षे शून्ये वाणके तथा। नेककष्ट शरीरेण औषधी सेवनं कृत ॥ ६८॥ महामृत्युंजयं जापं सर्वकष्ट विनाशनम् । लोके लक्षपतिः ख्यातो मम वाक्यं न चान्यथा ॥ ६९॥ अल्पजीवी च बालोऽयं धृत्पन्नं हि मृत्युदा । मासे वर्षे सुखं लाभः यशमानप्रतिष्ठया: ॥ ७०॥ चन्द्र वाणमिते वर्षे वाणे पंचमिते तथा । सर्वानन्द च

सम्प्राप्तिः नवीनो वाहनं सुखम् ॥ ७१ ॥ देह कष्ट विजानीयात् औषधिं प्रति शान्तये । सप्तान्न चकृते दानं भौम मन्त्रश्च जापक । सर्व कष्ट विनश्यन्ति ममवाक्यं न चान्यथा ॥ ७२-७३ ॥ रक्त चिन्ता शारीरेण वैरिणां भय प्राप्तये । बंधु कुल विरोध स्यात् राजद्वार उपाधिकम् ॥ ७४ ॥ धनः व्ययं न संदेहो वैरि लोक पराजितम् ॥ षट् बाण मिते वर्षे शून्य षष्ट मिते तथा । बहुलाभ विजानीयात् धन धान्य भविष्यति ॥ ७५-७६ ॥ शुभ कार्ये व्ययं द्रव्यः विवाहोत्सव मङ्गलैः । पुत्र पौत्र सुखी लोके जीवनं सफलं भवेत् ॥ ७७ ॥ भाग्य वृद्धि विशेषेण लोक ग्राम प्रतिष्ठया: । मासे वर्षे सुखं जातं मोदते धर-णी तले ॥ ७८ ॥ निर्बलं च शरीर स्यात् कृशाङ्ग तन दृष्टवान् । चन्द्र षष्टमिते वर्षे बाण वर्षमिते तथा ॥ ईश्वरं च महाभक्तिः दैव आराधनं कृतः । बहु कीर्ति च लोकेऽस्मिन् दास दासी सुखीन्नरः ॥ ७९-८० ॥ पुण्य दान कृते जीव नान्यथा वचनं ममः । नेक कष्ट विजानीयात् औषधी प्रतिशांतये ॥ ८१ ॥ षष्ट षष्ठे मिते वर्षे शून्यं सप्तमिते तथा । अल्प मृत्यु विजानीयात् औषधी प्रतिशांतये ॥ ॥ ८२ ॥ आनंद मंगलाचारं दास दासी सुखं महत् । भुविलोके च मध्यस्य जीवनं सफलं भवेत् ॥ ८३ ॥ चन्द्र सप्त मिते वर्षे सप्तो सप्तमे तथा । सर्वानन्दं च भोक्ताय नान्यथा वचनं मम ॥ इतिशुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेश यस्यैषां जन्मपत्रिका । तनुस्थाने सुराचार्यः जातको बुद्धिमान् भवेत् ॥ १ ॥ कुकुलंगुरौ लग्नगे देवपूज्ये सुवेषी नुसुखी दिव्य देहोऽल्प वीर्यः. माति भाविनी पारलौकी विचिन्त्या वसूनि व्ययं संबलेनःवृजन्ती ॥ २ ॥ धनस्थे शुक्रदेवोऽपि धनधान्यं गृहस्थितः ॥ सुखं-चारुभावं मनीषापिचोर्वी सुखं चारु-चारूणि वासोऽसि तस्य । कुटुम्बस्थितं पूर्व देवस्य पूज्यः कुटुम्बेन किम् चारु-चार्वांगि कामः ॥ ३-४ ॥ भ्रातृस्थे दिवानाथो सहितं चन्द्रपुत्रयोः ॥ तृतीये च[illegible] [illegible]

सद्यारिक्षय: संगरे ग्राम् नरेशात् ॥ वणिक् मित्रता पुण्य कृत धीत शीतो वासित्वं धिया दुर्वशाना मुपैति । विनीतो ऽतिभोगं भजेन्सन्यसेद्धा तृतीयोनुजैराश्रितोन्ते लतावान् ॥ ५-६॥ पंचमे सुतभावस्थ: शनि राहुश्च दृश्यते । बहु संतति विनश्यन्ति दान मात्रो ऽपि जीवित: ॥ ७॥ शनौ पंचमे च प्रजा हेतु दु:खं विभूतिश्चला तस्य बुद्धि र्नयुद्धा । रतिर्देविते शब्द शास्त्रेनुतद्धत् कलिर्मित्रतो मंत्रत: क्रोड़ पीड़ा ॥ ८॥ यदी पंचमे राहु तिष्ठन्ति जन्मे तदा सौदरे घात वातादि कष्टं । स्वबुद्धिर्वधा संतति: स्वल्प पुत्रा: सदासौ भवेद् दुर्वीर्य पुत्रो नरोऽपि ॥ ९॥ अष्टमे भूमिनाथो ऽयं दीर्घमायु प्रपच्छति ॥ शुभास्तस्य किं खेचरा कुर्युरन्ये विधाने ऽपि चेदष्टमे भूमि सूनु: । सखा किं न शत्रूयुते स्तत्कृतो ऽपि प्रयत्न: कृते भूपते चोपसर्गै: ॥ १०॥ लाभे केतु विजानीयात् बहुव्ययी च बालक: ॥ सुभाग्य: सुविद्याऽधिको दर्शनीय: सुगात्र: सुवस्त्र: सुतेजोऽपि तस्य । दरे पीड्यते सन्तति-दुर्भगा च शिखी लाभग: सर्व लाभं करोति ॥ ११॥ निशिनाथो व्ययस्थाने गुप्त चिन्ता शरीरजं ॥ शशी द्वादशे शत्रु नेत्रादि चिन्ता विचिन्त्य: सदा सद् व्ययो मंगलेन । पितृव्यादि मात्रादितोन्तविषादो न चाप्नोति कामं प्रयाल्प प्रयत्नं ॥ १२॥ यस्य जातस्य पत्रीस्यात् धन भागी भविष्यति । जैन धर्म विजानीयात् ग्रामाधीशो न संशय: ॥ अश्वारोही गजग्रामी चित्तवृत्तिं च शीलवान् । लोकं लक्ष. पति:ख्यातो मान कीर्ति विशेषत: ॥ १३-१४॥ द्विपिता योग सम्पन्न: इष्ट लाभं च जन्मत: । बहु दुग्धं च प्राप्नोति राजद्वारेण लभ्यते ॥ १५॥ संतत्कष्टी पित: दीर्घं इष्ट पुत्रं च लभ्यते । चतुर्भ्रात कनिष्ठोऽपि भगनी हीनत्वकं व्रजेत् ॥ १६॥ अर्द्धभागं च प्राप्नोति धन द्रव्यादि संपदा । वाहनादि सुखं ह्येवं राज्य योगं तु प्राप्नुयात् ॥ १७॥ द्विभार्यायोगप्राप्नोति बहुसंतान मृत्युदा । गुप्तचिंता शरीरेण पुत्रमृत्युं

६ गु॰ | ४ चं॰ | के॰ ३
रा॰ शु॰ ७ | ५ बृ॰
८ | २
रा॰ श॰ ९ | ११ | १
१० | १२ मं॰

च दृष्टय: ॥ १८॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे दंतव्याधि ज्वरादिकं । महत्प्रीति महोत्साहो धनवृद्धि दिने दिने । तृतीये पंचमे वर्षे बालक्रीड़ा किलोलकं ॥ १९ ॥ तात मातु महत्प्रीती चित्तं आनंदकं दृश: । मासे वर्षे सुखं प्राप्ति द्वादशे तु ज्वरादिकं ॥२०॥ नेक कष्ट विजानीयात् औषधीं प्रतिशान्तये । व्रण व्याधिशरीरेण शीतला कोपभाजनम् ॥२१॥ बहुविद्या योग सम्पन्न: महत्प्रीती च बालक: । आदौ च पठनं विद्या अन्त विद्या विसर्जनम् ॥२२॥ मासे वर्षे सुखं प्राप्ति त्रिशाला योग प्राप्नुयात् । पत्नी लाभ न सन्देहो भृगुणा परिभाषित: ॥२३॥ उत्तरे प्राप्स्यते पत्नी प्रथमे च विवाहके । लोके लक्षपति: ख्यातो जीवनं सुफलं भवेत् ॥२४॥ त्रयोदश अन विंशाय विद्या प्रीति च मध्यमा । वेद प्रात भवेद् योगं नान्यथा वचनं मम ॥२५॥ पत्नी गर्भ न संदेहो पुत्र जन्म भविष्यति । आनंद मंगलाचारं मोदते गृहमागता ॥ २६॥ गौरवर्ण सुत: तस्य कोमलं तनु सुन्दरम् । प्रपिता च महत् हर्ष प्राप्स्यते धरणीतले ॥ २७॥ अग्रमासे दुखं भूयात् पत्नी कष्ट विशेषत: । पूर्वजन्म प्रभावेण अल्प मृत्युर्न संशय: ॥२८॥ सर्व कल्याण प्राप्नोति पत्नी सुख विहाय च । पूर्वपाप प्रभावेण महाकष्ट भवेद् ध्रुवम् ॥२९॥ शुक्र उवाच ॥ केन कर्म विपाकेन पत्नी पुत्रं मृतिं भवेत् । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथ्यतां मुनि सत्तम: ॥३०॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथां सर्व पूर्व पापं च कारणम् । ग्वालवंश समुत्पन्नो गौवत्सं च मृत्युदा ॥३१॥ गो शापं च तदा दत्वा त्रिजन्मनि पुन: पुन: । पत्नी पुत्रश्च ग्वालोऽपं यौवने च मृतिं भवेत् ॥३२॥ ॥शुक्र उवाच ॥ किं जापं कस्य पूजा च किं दानं किमौषधं । किं मंत्र जपयेत् तस्य गौ शाप विनश्यति ॥३३॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या विंश मुद्रा प्रमाणकं । गोवत्स च लिखेन्मूर्तिं सर्वं च विधि पूर्वकम् ॥३४॥ रक्तचन्दन मिश्राणि गंगोदक सु स्नातकं । कलशं च घृतं मध्ये तस्य गुप्त प्रवेशयेत् ॥३५॥ कृत्वा तं गुप्तदानञ्च पुत्र जीवति निश्चयम् । वस्त्राभूषण रत्नैश्च कलशोपरि स्था-

स्थापयेत् ॥ ३६॥ अर्द्धरात्रिगते गुप्तं संकल्प्य ब्राह्मणं ददेत् । यं विप्र गृह्णते दानं लक्षमंत्रं जपेत्
यथा ॥ ३७॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं बटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय पत्नी पुत्रं रक्ष पूर्वपाप नष्टं कुरु
कुरु स्वाहा श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥ इतिमन्त्रः ॥ चन्द्र लक्ष प्रमाणेन गायत्री संस्मरण जपेत् । सर्वपाप
विनश्यंति सर्व कष्टोप शान्तये ॥ ३८॥ स्त्रीपुत्र यच दीर्घायुः स्वपते कष्ट न पश्यति । प्रायश्चित्ता न
कर्तव्यं सुतपत्नी च मृत्युदा ॥ ३९॥ त्रिंशोपपंचविंशाप्य प्रथमे स्त्री मृतिं भवेत् । द्विभार्या योग प्राप्नोति
निजग्रामे न संशयः ॥ पूर्व पापप्रभावेण उदरे कष्टवान् भवेत् । गुप्तचिन्ता शरीरेण तिष्ठति नान्य-
था भृगुः ॥ ४०-४१॥ द्वितीये गर्भकं तस्य सुतोत्पन्नं च जीवति । प्रायश्चित्त कृते सर्वैः पुत्र दीर्घा-
-युषी भवेत् ॥ ४२॥ वाहनादि सुखं ज्ञेयं धनधान्यो भविष्यति । महत्प्राप्ति र्महोत्साहो भृगुणा
परिभाषितः ॥ ४३॥ चन्द्रत्रिंशमिते वर्षे वाणत्रिंशमिते तथा । पितुः क्लेशा महत् चिन्ता पुत्रजन्म
न संशयः ॥ ४४॥ शुक्र उवाच ॥ किं जाप्यं कस्य पूजाऽपि किं दानं किमौषधं । किं मंत्रं यद्
जपेत् जातं पुत्र कष्ट न विद्यते ॥ ४५॥ भृगु उवाच ॥ ताम्रं च तुला कृत्वा दशांशो द्वेत यत्नतः ।
सुवर्ण शेष सामर्थ्यां संकल्प्यं अर्द्धरात्रिकम् ॥ ४६॥ गुप्त तुला कृते संत सर्व कष्टोपशान्तये । राम
लक्ष जपेत् विप्र गायत्री मूलमन्त्रकम् ॥ ४७॥ वज्ररत्न महादानं कृत्वा तु ज्येष्ठ पुत्रतः । दिने दिने
व्याधि नष्टो शरीरं सुखमाप्नुयात् ॥ ४८॥ चन्द्र वेद समारभ्य वाणवेद मिते तथा । महत्प्राप्ति
र्नसन्देहो वाहनादि सुखं महत् ॥ ४९॥ षष्ट वेदमिते वर्षे स्वरवाणेऽपि तथा । पूर्वदान कृते
संत पुत्रहर्ष विलोक्यते ॥ ५०॥ यदि दान न कर्तव्यं त्रिजन्मे सुतहानि च । धनवृद्धि भवेन्नित्यं
पुत्र सौख्य विनश्यति ॥ ५१॥ चन्द्रषष्ट मिते वर्षे शून्य सप्तमिते तथा । वाहनादि सुखं भुक्त्वा सर्व
काल जयी भवेत् ॥ ५२॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ।। मेष लग्नोदये जन्म सहजे सूर्य केतवे । ज्येष्ठभ्राता विजानीयात् सुखलाभं न दृश्यते ।। १ ।। सुखस्थे चन्द्र पुत्रो वा सहितं भृगु दृश्यते । दीर्घ सौख्यं विजानीयात् गौरवर्णोऽपि जातकः ।। २ ।। पंचमे भौमदेवस्य अल्प सन्ततिवान् भवेत् । बहु पुत्रस्य निधनं चिन्ता वंश विनाशक: ।। ३ ।। अष्टमस्थे शीतरश्मिन् बाल्यावस्था च रोगवान् । धर्मस्थे गुरु राहु: स्यात् बाल्ये च इष्ट मध्यमा ।। ४ ।। व्ययस्थाने शनिर्देवो बहु व्ययी च जातक: । इदं ग्रहाणां च स्थितिं बहुभागी भवेद् ध्रुवम् ।। ५ ।। गंगा यमुनयोर्मध्ये बालो जन्म लब्धवान् । अन्य स्थाने यदा जन्म ऐशान्ये दिशि वासकं ।। ६ ।। प्रथमं पित्रालय: पोगी पुत्रो

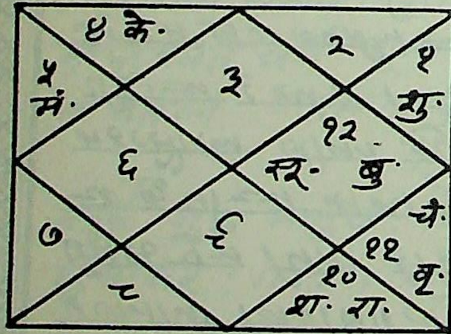
२
श-१२
१
११
सू. के. ३
शु. बु. ४
१०
५ मं.
७
रा. ९ बृ.
६
८ चं.

दृष्ट जातकं: । सर्वानंदं च प्राप्नोति कामदेवोऽपि श्रीयुता ।। ७ ।। अष्टमं वर्ष प्रारम्य भाग्योदय दिने दिने । महत्प्राप्ति महोत्साहो लाभो भवति नाऽन्यथा ।। ८ ।। सर्वानन्दं च सम्प्राप्य अग्रे वंश: विनश्यति ।। ९ ।। शुक्र उवाच ।। केन कर्म विपाकेन वंशहानि भवेत् प्रभु: । तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि साम्प्रतम् ।। १० ।। भृगु उवाच ।। शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्व पापं च कारणम् । शूद्र वंश समुत्पन्नो जातको पूर्वजन्मनि । गोवत्स मुखे ग्रासं आकृष्ट बलपूर्वकम् ।। ११-१२ ।। वत्स मृत्यु भवेत् यावत् गावो शाप प्रदत्तवान् । बट जन्म सुतं हानि: नान्यथा वचनं मम ।। १२ ।। शुक्र उवाच ।। किं जाप्यं कस्य पूजा च किं मंत्रं किमौषधिम् । किं दान कृते संत पूर्व शाप विनश्यते ।। १३ ।। भृगु उवाच ।। स्वर्णस्य प्रतिमा चैव युग्म मुद्रा प्रमाणकी । गोवत्स मूर्ति सहितं लिखेच्च रक्तचन्दनं ।। १४ ।। रजतपात्रे तथा धृत्वा गुप्त दान कृते सतं । संतान गोपाल मन्त्रं जपेल्लक्ष प्रमाणकम् ।। १५ ।। दानं दद्यात् सुविप्रेण गोशापं च शान्तये । एतद् कृते पुत्रलाभ भवत्येव विनिश्चितम् ।। १६ ।। प्रथमं च इदं जन्म युग्म पुत्र लभेत् ध्रुवम् । तत्पश्चात्

अन्य जन्मेन नरो भवति पुत्रवान् ॥१७॥ प्रायश्चित्त न कर्तव्यं बट् जक सुख हानि च। चित्त शुद्धि कृते दानं विकल्पो चित्तकं त्यजेत् ॥१८॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे दन्त व्याधा ज्वरादिकम्। मातृ पीड़ा भविष्यन्ति देह वृद्धि दिने दिने ॥१९॥ तृतीये सप्तमे वर्षे कृश्य व्याधि भवेत् पुनः। कृश्य देह विजा-तीपात मध्यभागी च दृश्यः ॥२०॥ अष्टमे द्वादशे वर्षे भाग्यवृद्धि विशेषतः। इष्टवस्तुं लभेन्नित्यं मम वाक्यं न चान्यथा ॥२१॥ त्रयोदश अष्टकं वर्षे पत्नी योग निश्चितम्। निजपत्नी च भोक्तारं पर स्त्रीणां भजेत् सदा ॥२२॥ ऊनविंश मिते वर्षे वाणनेत्र मिते तथा। भाग्यवृद्धि विशेषेण पुत्रजन्म न संशयः ॥२३॥ अल्पजीवी च बालोऽयं मात पिता च दुःखिता। युग्म वर्षे परे तस्य प्राणहानि न संशयः ॥२४॥ गृहनेत्र मिते वर्षे त्रिंश वर्षेऽपि मध्यमा। परस्त्री चित्त आसक्तं शत्रुपक्ष विरोधवान् ॥२५॥ प्राणहानि भयं तावत् बुद्बुदा भयं भवेत्। दशानेष्ट विजातीपात वज्रदानं च शांतये ॥२६॥ शुक्र उवाच॥ किं दानं कस्य पूजां च किं मंत्रस्य जापकं। शत्रुभयं च नष्टोऽपि राजदण्ड भवेच्च न ॥२७॥ भृगु उवाच॥ वज्रदान कृते संतः सर्वविघ्नोपशांतये। स्वर्णस्य प्रतिमा कार्य सप्तमाष प्रमाणकी। भौम मूर्तिश्च आकारं वीरमंत्रोऽपि संपुटं। यवचूर्ण कृते गुप्तं पुत्तलिकां विधीयते ॥२८-२९॥ शत्रुनाम लिखित्वा च लौहपत्रं समूर्तये। भूमिमध्य विनिक्षेप्य गुप्तं च मध्यरात्रिकम् ॥३०॥ वस्त्र आभूषणं दानं संकल्प्य ब्राह्मणं ददेत्। रक्षामन्त्र कृते जापं एकादश सहस्रकं॥ इदं यत्न न कर्तव्यं विपदा दारुणी भवेत्। प्राणभय विजातीपात शत्रुपक्ष विरोधतः॥ ३१-३२॥ दान मंत्र कृते संतः सर्वकष्टोऽपि शांतये। इदं यत्न न कर्तव्यं विपत्तिं प्राणनाशनम् ॥३३॥ चन्द्रराम मिते वर्षे नेत्रराममिते तथा। पुत्र जन्म न सन्देहो भाग्यवृद्धि दिने दिने ॥३४॥ रामत्रिंशमिते वर्षे वाणराम मिते तथा। पत्नी कष्ट भवेत् गुप्तं व्याधि शान्ति न दृश्यते ॥३५॥ शुक्र उवाच॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मंत्रं किमौषधीं। किं

जाप्य कृते नाथ: व्याधि नष्ट भवेद् ध्रुवम् ॥३६॥ भृगु उवाच॥ भौम दानं प्रवालं च गुड गोधूम ताम्रकं । रक्तवस्त्र कृते संत: व्याधिर्नष्ट भविष्यति ॥३७॥ छायापात्र कृते जीवे लौहपात्रस्य तैल पुत । पुत्र जन्म भविष्यन्ति सर्वविघ्न विनश्यति ॥३८॥ वाणवर्षश्च मध्यस्थे पुत्र कन्या च लभ्यते कुलवृद्धिर्न सन्देहो सत्यं सत्य वचं मम: ॥३९॥ पुत्र पौत्र समायुक्तो बहुलाभं च प्राप्स्यते । सर्वानंदं लभेत् जात: भृगुणा परिभाषितम् ॥४०॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच ॥ मथुपुत्र फलादेशं धनस्थे पुन्द्र नायक: । लोक



क्ष्यं धने दीर्घं जातो ऽपं च अपव्ययी ॥१॥ धनस्थ शिरवी व्यग्रता किं नरेशा हूते धान्य नाशो मुखे रोग कृच्च। कुटुम्बाद्विरोधो वच: सत्कृतं वा भवेत्स्वे गृहे सौम्यगेहे ऽति सौख्यं ॥२॥ तृतीयस्थे धरापुत्रो भ्रातृयोग विहीनकं। ज्येष्ठ भग्नी समुत्पन्नं गौरवर्णं न संशय: ॥३॥ कुलो वाहुवीर्यो कुतो वाहु लक्ष्मी स्तृतीयो न चेन्मंगलो मानवानाम्। सहोत्थ व्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहासं कथं स्यात् ॥४॥ अष्टमे च शनि: राहु: दीर्घमायुष्य निश्चितम् ॥ वियोगो जनानां स्वनोपाधिकानां विनाशो धनानां सको यस्य नस्यात् । शनौ रंध्रगे व्याधित: क्षुद्रदर्शी तदग्रे जन: कैतवं किं करोति ॥५॥ गुदे पीड्यते ऽर्शादिरोगैरवश्यं भयं वाहनोद: स्वदुव्यस्य रोध: । भवेदष्टमे राहुपुच्छे ऽर्क लाभ: सदा कीट कष्या ऽजगो युग्मगे तु ॥ ६॥ धर्मस्थे गुरुश्चन्द्र: गमनं तीर्थ निश्चितम्। देवप्रीति विशेषेण पश्चाते स्वर्गवासकं ॥ तपो भावगस्तारकेशो जनस्य प्रजाश्चद्विजा वंदितस्तं भवंति । भवत्येव भाग्याधिको पौत्रवादे: शरीरे ... ॥ ७ ॥ ...

-पते वल्लभो वल्लभा भूमिदेवाः। गुरौ धर्मगे बान्धवास्सुविनीताः सदा लस्यता धर्म वैगुण्यकारी॥९॥
कर्मस्थे च बुधः सूर्यो राज्य लाभ भविष्यति। सप्तं च दश वर्षाणि लब्धयेत् राज्य द्वारकम् ॥१०॥ वैश्य
वंश कुले जन्म गंगायां पश्चिमे तटे। पश्चाते जीविका संतः पश्चिमो गमनं तदा॥ ११॥ प्रपातो सु
भानुः यदा राज्य क्षेत्रे भ्रमः सिद्धिदो राज्य तुल्यो नरस्य। जनन्या स्तथा यातना मातनोति क्रमः संकुले
दुर्लभै र्विप्रियोगैः॥ १२॥ मितः संवदेन्नो मितं संलभेत प्रसादा दिवौकारि सौराजवृत्तिः। बुधे कर्मगे
प्रजनीयो विशेषात्पितुः संपदो नीतिदण्डाधिकारात् ॥ १३॥ एकादशे भृगुर्देवो लाभं प्रति दिने दिने।
ज्येष्ठ पुत्र पिता हीने माता जीवन चिन्तनं ॥१४॥ भृगुर्लाभगो लाभदो यस्य लग्नात् स्वरूपं महीपं
च कुर्याच्च सम्यक्। लसत्कीर्ति सत्यानुरागं गुणाढ्यं महाभोगमैश्वर्य युक्तं सुशीले ॥१५॥ तात मातु
महत्सौख्यं जीवनं सुफलं मम। धनव्ययी महत्ताते बाल वृद्धि दिने दिने ॥१६॥ प्रथमे तृतिये मासे मुख
पीड़ा च दृश्यते। द्वितिये तृतिये वर्षे दन्त पीड़ा ज्वरादिकम् ॥१७॥ पंचमे सप्तमे वर्षे कृशांगी च भवेन्नरः
अष्टमे व्रण व्याधिश्च मम वाक्यं च नान्यथा॥१८॥ सप्तमेकादशे वर्षे विद्यारंभ न संशयः। बहुविद्या
न प्राप्नोति कार्य मात्रं च सिद्ध्यति॥ १९॥ धनव्ययी शुभे कार्ये पत्नी लाभ न संशयः। द्वादशे षोडशे वर्षे
सूक्ष्म कष्टमुवाप्नुयात ॥२०॥ सप्तदशविंश वर्षाणि मध्यमां च कथा शृणु। तात मातु विरोधश्यात्
दीर्घ क्लेश शरीरजं ॥२१॥ राजद्वारे भवेल्लाभं तीर्थयात्रा करोति च। क्रूर गृह व्याधि स्यात् त्वेद
कार्यं विनश्यति ॥२२॥ कर्मगे च दिवानाथः तृतीये भूमिनन्दने। सर्व कार्य विनश्यंति धनस्थे बुध
नायकः ॥२३॥ प्रथमे च न्यून लाभोऽयं नीच कृत्यं करोति सः। धनस्थे धन हानिस्यात् गुप्त चिन्ता
च कष्टवान् ॥२४॥ शुक्र उवाच॥ किं दानं कस्य पूजा किं मंत्र किं तंत्र कृद् प्रभो। ग्रहपीड़ा विनश्यन्ति
कार्यसिद्धि भवेत् वदः॥ २५॥ भृगु उवाच॥ द्विभागो स्वर्ण ताम्रोऽपि पंचमुद्रा प्रमाणकम्। रविभौम

कृतवान् रक्तचंदनै: ॥ २६ ॥ ताम्रंच कलशं मध्ये मूर्ति: गुप्तं प्रवेशयेत् । मध्यरात्रिं च तं भाव्यं विप्रेण परि दीयते ॥ २७ ॥ एतत्कृत्वा भवेत् लाभं सर्वकष्ट विमुच्यते । सर्वं सुखमवाप्नोति मृषा न वचनं मम: ॥ २८ ॥ एक विंश प्रवेशेण पंचविंशो च मध्यमा । पत्नी गर्भवती भूत्वा पुत्र जन्म न संशय: ॥ २९ ॥ त्रिंश वर्षोऽपि चत्वारं लाभं प्रति दिने दिने । मंगलाचार द्रव्यं च जीव लाभो भवेत् सदा ॥ ३० ॥ धनलक्ष्मी शुभे कार्ये धनधान्यो भविष्यति । मासे वर्षे सुखं प्राप्ति भजनानंद सर्वदा ॥ ३१ ॥ रामपंचं च वर्षाणि शून्य षष्ठे च मध्यमा । बहु लाभ विजानीयात् पुत्रपौत्र सुखावहं ॥ ३२ ॥ लोक ग्राम प्रतिष्ठा वा भूमिलाभ सुनिश्चितम् । आनन्दं मोदते वृद्धि: लाभं प्रति दिने दिने ॥ ३३ ॥ लोकं लक्षपति: ख्यातो ग्रामाधीशो न संशय: । तत्पश्चात् भ्रमते बुद्धि: दानं कृत्वा भवेत् शुचि: ॥ ३४ ॥ राम सप्त मिते वर्षे शून्य अष्टे च मध्यम: । बहु दान यदा कुर्यात् आयुवृद्धि सुनिश्चितम् ॥ ३५ ॥ यदि दान न कर्तव्यं अल्पमृत्युश्च प्राप्यते ॥ ३६ ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ वृश्चिक लग्नोदये जन्म धनस्थे बुध शुक्रयो । सहजस्थे दिवानाथ चतुर्थे गुरु भानुज: ॥ १ ॥ पंचमेच लग्नेदु राहु: सहितं सौम्य चन्द्रमा । एकादशे केतु दृष्ट: द्वादशे च दिवाकर: ॥ २ ॥ सर्वग्रहा: वाम भागं आज्ञावस्था च सर्वदा । अनिमा गुप्त चिन्ताश्च भृगु वाक्यं न चान्यथा ॥ ३ ॥ तृतीये यदाऽधर्मणि: जन्मकाले प्रतापाधिकं विक्रमं चातनोति । तदासौ दरेस्तव्यते तीर्थ चारी सदा रिक्षय: संगरेषुं नरेशात् ॥ ४ ॥ यदा पंचमे यस्य नक्षत्र नाथो ददातीह संतोष सत्वो स्वमेव । मतिर्निर्मला रत्न लाभं च भूमीं कुसीदेन नानाप्रयो व्यावसायात् ॥ ५ ॥ कुजे पंचमे जाठ-राग्निर्बलेयान्नजातं न जातं निहंत्येक एव । तदानीमनल्पा मति: किल्विषोऽपि स्वयं दुग्ध वत् तप्यतें त: सदैव ॥ ६ ॥ धने बुद्धिमान्वो धने बाहु तेजा: समासंगतो भासने व्यास एव । पृथूदारता वक्ष

तद्बन्धुभैः स्यात् सदा भोग्यते भोग सुखमातनोति ॥ ७ ॥ गृहं भारत : श्रूयते वाजिहेला द्विजोवारितो वेद घोषोऽपि तद्वत् । एतस्पर्धिनः कुर्वते पारिचर्यं चतुर्थे गुरौ तप्तमंतर्गतं च ॥ ७ ॥ सुखं चारुभावं मनीषापि चोर्वी सुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य । कुटुम्बस्थितं पूर्व देवस्य पूज्यः कुटुंबेन किं चारु चार्वद्धि काम: ॥ ८ ॥ चतुर्थे हानिः पैत्रिकं यान्ति दूरं धनं मंदिरं बंधुवर्गापवादः । पितुश्चापि मातुश्च संतापकारी गृहे वाहने हानयो: वातरोगी ॥ ९ ॥ यदा पंचमे राहुदेवो प्रयाती तदा सौदरे घातवातादि कष्टं । स्वबुद्धिर्व्यथा संततिः स्वल्प पुत्राः सदासौ भवेद्दीर्घ युक्तो नरोऽपि ॥ १० ॥ सुभाग्यः सुविद्याधिको दर्शनीयः सुगात्रः सुवस्त्रः सुतेजोऽपि तस्य । दरे पीड्यते संततिर्दुर्भगाश्च शिखी लाभगः सर्वलाभं करोति ॥ ११ ॥ एवं ग्रह स्थिते जातः भाग्यवान् परिदृश्यते । वैश्य कर्म प्रवीण स्यात् धन धान्य भविष्यति ॥ १२ ॥ लोके लक्षपतिः ख्यातो मान कीर्ति विशेषतः । दीर्घ देही विजानीयात् प्रियवादी च बालकः ॥ १३ ॥ उत्पन्नं ज्येष्ठ भ्राता वा पश्चाते भ्रातृ नाशनं । भगिनी भ्रातृ मृत्युप्रदो जमेहं व्याधिवान् भवेत् ॥ १४ ॥ सुगुप्तं च धनंस्थित्वा मध्यमो धन-सम्पदा । पुत्री योग न सन्देहो पुत्रकष्टी न संशय: ॥ १५ ॥ नेत्र हानि विजानीयात् भृगुणा परिभाषितः । स्त्रीक्लेशं च महाचिन्ता गुप्त घोरं च दुःखवान् ॥ १६ ॥ लोके अप विशेषेण गृह्यते धन न्यूनता । धन संतान योगं च पश्चाते योग भङ्गतः ॥ १७ ॥ शुक्र उवाच ॥ केन कर्म विपाकेन धन संतान मध्यमा । पूर्वं सर्वमुवाप्नोति पश्चाते धन चिन्तया ॥ १८ ॥ पूर्व जन्म कथा तातः कथयस्व कृपां कुरु ॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथां सर्वं पूर्व पापस्य कारणम् । शूद्र जन्म समुत्पन्नो जातको पूर्वजन्मनि ॥ १९-२० ॥ गंगा स्नानं कृतं दानं अष्टो बुद्धि भविष्यति । विप्राणां निन्दको भूत्वा मुद्रा हरण कृतवान् ॥

बु० मु० ९ | ७ | ८ | ६ के० | सू० १० | ११ | श० बृ० | ५ | मे० रा० चं० १२ | २ | ४ | १ | ३

विप्रशाप सुखं दत्वा अग्रजन्म पुनः पुनः। नेत्रकष्टी च पुत्रो वा गुप्तचिन्ता शरीरजम् ॥२१-२२॥ शुक्र उवाच॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं साधनं करेत्। पूर्वपाप विनाशाय धन सन्तान वृद्धये॥ भृगु उवाच॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या चन्द्र मुद्रा प्रमाणकी। तन्मध्ये कामबीजं च विप्रपुत्रं च पूर्तये ॥२३-२४ रक्तचंदन संमिश्रय गंगाजलेन स्नानकम्। मुद्रा एकादशं गुप्तं खंडुवा मध्य प्रवेशकं। संकल्पं च ददेत् विप्र पूर्वकृत पापशान्तये। इह दान कृते संतः धनपुत्रान्वितो भवेत् ॥२५-२६॥ षट्रामामिते वर्षे चत्वारिंशके तथा। अल्पभय न संदेहो धनव्यय भविष्यति॥२७॥ शुभकार्ये व्ययं प्रोक्तं ऋण योगं च प्राप्यते। चतुर्वेद मिते वर्षे वाणवेद मिते तथा। पुत्री विवाह काले च व्ययाधिक भविष्यति॥२८-२९॥ देह कष्ट विजानीयात् मन्त्र दानं च शान्तये॥३०॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या माषाः सप्त प्रमाणकी। तन्मध्ये कामबीजं च मृत्युंजयं च जापकं॥३१॥ गुड गोधूम संकल्प्य श्रद्धया ब्राह्मणं ददेत्। इदं दान कृते संतः सर्व विघ्न विनश्यते॥३२॥ षष्ठ वेद मिते वर्षे शून्य वाण मिते तथा। महत्प्राप्तिर्महोत्साहो महालाभ च दृश्यते॥३३॥ वाहनादि सुखं लेयं जीवनं सफलं भवेत्॥३४॥ चन्द्र वाण मिते वर्षे पंचवाण मिते तथा। सर्वानन्दं च प्राप्नोति मानकीर्ति विशेषतः ॥३५॥ भूमिलाभ विजानीयात् गुप्तचिन्ता तु नाशवान्। गुप्तलाभं च दृश्यंते शत्रुहानि भवेत् सदा॥३६ षष्ठ वाण मिते वर्षे शून्य षष्ठ मिते तथा। महत्प्राप्ति महोत्साहो किं बहुना रोग पीडिता॥३७॥ अल्प सप्त तुलादानं सर्वकष्टोऽपि शांतये। मासे वर्षे सुखं लाभं आरोग्य लभते ध्रुवम्॥३८॥ चन्द्रषष्ठ मिते वर्षे वाण षष्ठ मिते तथा। नाना लाभ भवेत् जातः पुत्रपौत्र समन्विताः॥३९॥ आकस्मिकं द्रव्यलाभं सर्वानन्द भूतले। मानकीर्ति विशेषेण धनवृद्धिं न संशयः॥४०॥ पूर्वदान कृते संतः सर्वविघ्नोपशान्तये। पुण्यदान भवेत् प्रीतिः वैकुण्ठे वासरन्तिमा॥४१॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच ॥ कर्कलग्नोदये जन्म तनुस्थः निशिनायकः । गौरवर्ण विजातीयात
अति तेजो स्वरूपवान् ॥ १ ॥ धनुस्थे भौमदेवस्य धन धान्यो भविष्यति । गुप्तो धन गृहे भूत्वा मम वचनं
च नान्यथा ॥ २ ॥ सुखस्थे सूर्य देवश्च सहितो पुच्छनायकः । चन्द्रपुत्र समीपो वा गुप्त चिन्ता शरी-
रजं ॥ ३ ॥ लोके लक्षपतिः ख्यातो लाभं प्रति दिने दिने । प्रथिता सुखमाप्नोति तात सुखं न दृश्यते ॥ ४ ॥
माता च पालनं कृत्वा बंधु सुख विहीनकं । ज्येष्ठ भगिनी न संदेहो स्वामी सुख खंडिता ॥ ५ ॥ सुतस्थाने
भानिर्देवो सहिते शुक्र वासकं । वंश वृद्धि न दृश्यंते सुत चिन्ता विशेषतः ॥ ६ ॥ मानसी विविधा चिन्ता
भूपतां सुतमुत्तमम् । सप्तमेशो सुतस्थाने द्विभार्या योग दृश्यते ॥ ७ ॥

- ५ मं.
- ३
- ६
- ४ चं.
- २
- ७ बु. के. सू.
- १ रा.
- ८ श. शु.
- १०
- १२ बृ.
- ९
- ११

पंचमे शुक्र उच्चस्थे बुद्धिमान भवेन्नरः । प्रायश्चित्त कृते संतः पुत्रलाभो
न संशयः ॥ ८ ॥ धर्मस्थे गुरुर्देव कर्के उच्च दृष्टिवान् । नानालाभ
करं जातं रूपवान् भवते ध्रुवम् ॥ ९ ॥ कर्मे राहु विजातीयात् तातबुद्धि
विहीनकं । यस्य जातस्य पत्नीस्यात् सुशीलो बुद्धिमान् भवेत् ॥ १० ॥
सर्वलाभमुवाप्नोति अग्रे वंश विनश्यति । अल्पजीवी भवेत् पुत्रे चिन्ता
वृद्धि दिने दिने ॥ ११ ॥ शुक्र उवाच ॥ केन कर्म विपाकेन संततिः योग
खंडिता । पूर्वजन्म कथां ब्रूहि कृपया मे दयानिधे ॥ १२ ॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्व पापं
च कारणम् । क्षत्री वंश समुत्पन्नो आखेटं व्रजते वनः ॥ १३ ॥ मृगी मृगा सपुत्रं वा तत्र तिष्ठति
निर्भयं । क्षत्री चापकरं वाणी मृगीपुत्रं वधेत् तदा ॥ १४ ॥ मृग शाप मुखे दत्वा त्रिजन्मो सुतहीनकं ।
तेन शाप प्रभावेण पुत्रहर्षं न दृश्यते ॥ १५ ॥ शुक्र उवाच ॥ केनोपायेन चैतेषां शाप हानि भवेद् ध्रुवम् ।
तत्सर्वं कथयः देवः परोपकार हेतवे ॥ १६ ॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र वदिष्यामि अनुष्ठानं विधानतः

स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या राम मुद्रा प्रमाणकी। तन्मध्ये काम बीजं च वीर मंत्रोऽपि शुद्धकं॥ सप्तांगुल रजतपत्रं गंगोदक स्नान कृत्। मृगीमूर्ति सपुत्रो च रक्तचंदनयोर्लिखेत्॥१८-२०॥ ताम्र कलशयोर्मध्ये घृत मध्ये न्यसेत् तथा:। रजतस्य पंचपात्रे सहितं ददेत् द्विज:॥ दानोऽयं च महत्पुण्यं सर्व व्याधि विनाशनम्। पूर्वकृत पाप नश्यंते वांछा सिद्धि भवेद् ध्रुवम्॥२१-२२॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे मातृकष्ट भविष्यति। तात मृत्यु विजानीयात् पपिता पालकं भवेत्॥२३॥ नवमे कादशे वर्षे शरीरे व्याधि दृश्यते। द्वादशे षोडशे वर्षे सर्वानन्द वर्द्धते॥२४॥ तदनन्तर विवाहोऽयं पत्नी च प्रीतिवान् लभेत्। पत्नी गर्भ माद्याय पुत्र जन्म न संशय:॥२५॥ षष्ट नेत्र मिते वर्षे त्रिंश वर्षेऽपि मध्यमा। भूमि लाभ न संदेहो आनंदं धन वृद्धया:॥२६॥ प्रपिता देह कष्टोऽपि औषधी सेवनं वृथा। छत्रभंग विजानीयात् प्राण हानिर्न संशय:॥२७॥ चन्द्र त्रिंशमिते वर्षे वाणत्रिंश मिते तथा सर्व लाभमवाप्नोति नान्यथा वचनं मम॥२८॥ षष्टराम मिते वर्षे चत्वारिंश मध्यमा। प्रायश्चित्त न कर्तव्यं इष्ट पुत्र नशेत् ध्रुवम्॥२९॥ चन्द्र वाण मिते वर्षे शून्यं च षष्टके तथा। पुत्रस्य सुख माप्नोति पूर्वदान कृते सती॥३०॥ वाहनादि सुखं ज्ञेयं जीवनं सफलं भवेत्। चन्द्र षष्टमिते वर्षे सर्वानन्द प्रजायते॥ इति शुभम्॥

ॐ श्री भृगु उवाच॥ द्वितीये भार्गव: तिष्ठेत् सहजस्थे शनिश्चरे। सूर्य सूनु समायुक्तो चतुर्थे च दिवाकर:॥ चन्द्र सूनु सुतस्थाने सहितो पुच्छनायक:। षष्ठे निशापति: राहो एकादशे प्रतिष्ठितम्॥१-२॥ व्यय स्थाने सुराचार्य: यस्यैवं जन्म पत्रिका। शृणु तात फलादेशं सत्यं सत्य वचाम्यहम्॥३॥ लोकं लक्षपति: ख्यातो बहुसेवी भवेन्नर:। वाहनादि सुखं ज्ञेयं मंदिरो भूमि लाभवान्॥४ [illegible]

मानभङ्गं कदाचिन्नशांन्ता भवेतस्य चेत: ॥ ५॥ रिपौ राजते विग्रहेणाऽपि राजा जितास्तेपि भूयो विधौ संभवंती । तदग्रेरयोनि: प्रभाभूयसोऽपि प्रतापोज्ज्वलो मातृशीलेन तद्वत् ॥ ६॥ कुतो वाद्गु वीर्यं कुतो वाद्गु लक्ष्मी स्तृतीये न चेन्मंगलो मानवानाम् । सहोत्पव्यथा भण्यते केन तेषां तपश्चर्यया चोपहासं कथं स्यात् ॥ ७॥ व्ययस्यादिमे पुत्रगर्भो न तिष्ठे भवेत्तस्य मेधार्थ संपादयत्री । बुधो भण्यते पंचमे रोहिणेये किमच्छिद्यते कैतवस्याभिचारे ॥ ८॥ यश: कीदृशं सद्व्यये साभिमान: मति: कीदृशी वंचना चेत्परेषां । विधिं कीदृशोऽर्थस्य नाशो हि येन भयस्थे भवेपुर्व्यये यस्य जीव: ॥ ९॥ मुखं चारुभावं मनीषाऽपि चार्वी सुखं चारु चारूणि वासांसि तस्य । कुटुम्ब स्थित: पूर्व देवस्य पूज्य: कुटुंबेन किं चार्वंगिकाम: ॥ १०॥ तृतीये शनौ शीतले नैव चित्त: जन धुध्यमा ज्जायते युक्त भावी । अविघ्नं भवेत् कर्हिचिन्नैव भाग्यं दृढ़ाशो सुखी दुर्मुख: सत्कृतोऽपि ॥ ११॥ सुभाग्यस्तु विद्याधिको दर्शनीय: सुगात्र: सुवस्त्र: सुतेजोऽपि तस्य । दरे पीड्यते संतति: दुर्भगा च शिखी लाभग: सर्व लाभं करोति ॥ १२॥ यदा पंचमे केतुदेवो प्रयाति: तदासोदरे घात वातादि कष्टं । स्वबुद्धिर्व्यथा संतति: स्वल्पपुत्रा: सदा सौ भवेद् वीर्य युक्तो नरोऽपि ॥ १३॥ एतद् योग समुत्पन्नं धनधान्यो भविष्यति । ज्येष्ठ भगनी न संदेहो इष्टभ्रातो न संशय: ॥ १४॥ प्रथमं पुत्र दिता कष्टी रक्ष पुत्रो च पालनं । तत्पश्चाते पुत्र जन्म: सुफलं जीव मानत: ॥ १५॥ सर्व सौख्य विजानीयात् धन वृद्धि दिने दिने । व्यवहारे धन वृद्धिश्च कनिष्ठो भगिनी सह: ॥ १६॥ दशमे काद्शो वर्षे वात पीड़ा भविष्यति । औषधी सेवनं कृत्वा व्याधि वृद्धि दिने दिने ॥ १७॥ शिश्न जंघा तिलं हृदय चरणे रेखा च वाहन: ।

१२ शु. | १० श. | ११ | ९ रा. | मं. | श. १ | २ सू. | ८ | ५ | ७ | के. | बु. ३ | ४ चं. | ६

भृ० सं० उत्तर

भा० टी०

करमध्ये मीन रेखा शंख-चक्र कनिष्ठयो: ॥१८॥ द्वि भगनी योग सम्पन्न: वैधव्यं च द्वितीयके। द्वादशे षोडशे वर्षे सर्व सौख्य प्रतीतत: ॥१९॥ सप्तमे नव वर्षाणि विंश वर्षेऽपि मध्यमा। पुत्री जन्म विजानीयात् नान्यथा वचनं मम: ॥२०॥ त्रिंशद् विंश वर्षाणि पुत्र जन्म सुलब्धवान्। भाग्यवान् लोकशाली च प्रथमे धन प्राप्नुयात् ॥२१॥ सप्तमे दशमे वर्षे महाकष्टी च बालके:। महावज्र कृते दानं गुप्तं च मुख हीनकं ॥२२॥ ज्येष्ठ भगनी च पीड़ायां गुप्तचिन्ता शरीरजं। द्विविंश पंच वर्षाणि पुत्र जन्म प्रतीतत: ॥२३॥ जन्मे कुल विरोधस्यात् धन धान्यं न्यूनता। पश्चात् जन्म कन्यायां अल्पजीवी च सा भवेत् ॥२४॥ षष्ठ नेत्र मिते वर्षे अष्ट नेत्र मिते तथा। बहु शत्रु विरोधस्यात् धन नाशो न संशय: ॥२५॥ राजद्वारे महाघोरं शत्रूभय विशेषत:। नित्यं नव उपार्जितां धननाशो भविष्यति ॥२६॥ शुक्र उवाच ॥ केन कर्म विपाकेन कुलबंधु विरोधता। महाविपत्ति प्राप्नोति धन नाशो भविष्यति ॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्व पापं च कारणं। क्षत्री समुत्पन्नो राजमंत्री च जातक: ॥२७-२८॥ मंत्री अनर्थकं कृत्वा मुद्रा लोभेण क्षीयतां। असत्यं च धनं देयं सत्यवादी च निर्मुख: ॥२९॥ विप्र श्राप मुखं दत्वा मंत्री प्राण मम: दु:खी। यो क्लेश त्वं मया दत्वा सप्तजन्म लभेत् स्वयं ॥३०॥ शुक्र उवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मंत्रं किमौषधं। किं यत्न कृते संत विप्र श्रापो विनश्यति ॥३१॥ भृगु उवाच ॥ ताम्रं च तुला दानं दशांशो रजतं तथा। अर्द्ध राशि प्रमाणेन संकल्प्यं ब्राह्मणं ददेत् ॥३२॥ एतद् दान कृते संत सर्व कष्टं विनश्यति। इद दानं महत्पुण्यं न संदेहो कदाचन ॥३३॥ त्रयस्त्रिंशमिते वर्षे चत्वारिंशके तथा। नवीन कार्य कृत्वा च धन वृद्धि दिने दिने ॥३४॥ चत्वारिंश मिते वर्षे पंचाशत मिते तथा। मासे वर्षे सुखं प्राप्ति सर्व कष्टं विनश्यति ॥३५॥ पत्नी गर्भमादाय पुत्र जन्म न संशय:।

धन व्ययं शुभे कार्ये नान्यथा वचनं मम ॥३६॥ रामं च पंच वर्षाणि शून्य षष्ठमिते तथा। भाग्यवान् लोक शाली च मान कीर्ति विशेषत: ॥३७॥ राम षष्ठमिते वर्षे शून्यं च सप्तमे तथा। सर्व सौख्यमवाप्नोति पुत्र पौत्र मद्दल्लभेत् ॥३८॥ पूर्वदान कृते संत: सर्वानन्द प्राप्नुयात् ॥इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ बुध केतु युतो चन्द्र: पंचमे परिदृश्यते। षष्ठे च भृगु भानुस्यात् सहितं सूर्यनन्दन: ॥१॥ नवमे भूसुतो ख्यात: लाभे राहु गुरुस्तथा। धन धान्य युतो जात: विख्यातो भवते ध्रुवम् ॥२॥ रिपुध्वंसकृत् भास्करो यस्य षष्ठे तनोऽति व्ययं राजतो मित्रतो वा। कुले मातुला पच्चतुष्पादतो वा प्रपाणे निवादैर्विषादं करोति ॥३॥ यदा पंचमे यस्य नक्षत्रनाथो ददातीह संतोष संतोष्वमेव। मतिं निर्मलां रत्नलाभं च भूमिम् कुसीदेन नानाधयो व्यावसायात् ॥४॥ महोग्रा मति र्भाग्यवित्तं महोग्रं तपो भावगो मङ्गलस्तं करोति। भवेन्नोदिम: श्यालक: सोदरेवा कुतो विक्रमस्तुच्छ लाभो विपाके ॥५॥ व्ययस्थादिमे पुत्र गर्भेन तिष्ठेदभवेत्तस्य मेधार्थ संपादयित्री। बुधे भण्यते पंचमे रोहिरोये किपद्विष्यते कैतवस्याभिचारं ॥६॥ अपुत्र्यं च लाभेगुरौ किं न लभ्यं वदंत्यष्ट धीमंत मन्ये मुनीन्द्रा:। पितुर्भारभूतस्वांगजास्तत्र पंच परार्थ स्तद पौं न चेद्वैभवाय ॥७॥ सदा दानवेज्ये सुधासिक्त शत्रु: व्यय: भानुगे चोत्तमोत्तो भवे तां। विपद्येत संपादितं चापि कृत्यं तपेन्मंत्रत: पूज्य सौख्यं न धत्ते ॥८॥ अरेर्भूपते श्चौरतो भीतय: किं यदीनस्य पुत्रो भवेत्तस्य शत्रौ:। न युद्धे भवेत्सन्मुखस्तस्य योद्धा महिष्यादिके मातुलानां विनाशा ॥९॥ ... दृष्टैपीड्यते

Chart: 10, 11, 9, 8, 7 रा. बृ., 12 सू., 6, के. बु. 1 चं., 2, 3, 5 मं., 4, सू. श. शु.	

संततिः दुर्भगा च विरवी लाभगः सर्व लाभं करोति ॥२०॥ यदा पंचमे केतु देवो प्रयाति तदा सौदरेयात वातादि कष्टं । स्वबुद्धिर्वधा संततिः स्वल्प पुत्राः सदासौ भवेद्धीर्य पुस्तो मनुष्यः ॥२१॥ एतद्योग समुत्पन्नं श्रूयतां सुतमुत्तमं । जातकः सुख प्राप्नोति भाग्य वृद्धि दिने दिने ॥२२॥ गृह जन्म प्रकाशेन धन धान्यो भविष्यति । जन्मतः मातृपीडायां मोदते भुवि मण्डले ॥२३॥ बन्धु भाव विनश्यन्ति जातको हीन भ्रातृकः । भगनी सुख न सन्देहो भृगु वाक्यं न चान्यथा ॥ २४॥ भगनी भ्रात यदोत्पन्न अल्पजीवी भवेत् तदा । यौवने च इदं जातं धर्म कर्म विनश्यति ॥२५॥ मित्र प्रीति विशेषेण बुद्धिश्चित्त चलायमान् । ऋणयोग विजानीयात् मम वाक्यं न चान्यथा ॥२६॥ अष्टमे द्वादशे वर्षे विद्यायोगं च प्राप्नुयात् । सुपठेत् यावती विद्यां बुद्धिश्चित्त चलाचलं ॥२७॥ मित्रपक्ष विरोध्य स्यान्शत्रुणां च पराजयः । राजद्वारे भयं प्राप्ति पश्चाते विजयी भवेत् ॥२८॥ वस्र राम मिते वर्षे चत्वारिंशके तथा । भाग्यवृद्धि न सन्देहो आनन्दं भुविमण्डले ॥२९॥ चन्द्र वेद मिते वर्षे वाण वेद मिते तथा । भय कष्टं च प्राप्नोति अर्थ लाभं च मध्यमा ॥२०॥ वस्र वेद मिते वर्षे शून्य वाण मिते तथा । बहु लाभ न सन्देहो धनवृद्धि दिने दिने ॥२१॥ कष्ट व्याधि शरीरेण दानकृत्यं च शान्तये । षष्ठो षष्ठमितं वर्षे शून्ये च सप्तमे तथा । व्ययोधिक विजानीयात् सर्व सौख्यं तु लभ्यते ॥२२-२३॥ इति शुभम् ॥

इसके आगे पुनः जन्मकुण्डलियों का फलादेश भाषा-टीका सहित दिया जारहा है । इसमें विशिष्ट योगों का फलादेश तथा कष्ट-निवारणार्थ दान-एवं मन्त्र जप सहित जातक के पूर्व एवं भविष्यत जन्म का विस्तृत उल्लेख किया गया है ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ कर्के राहुः गुरुर्युक्तो मकरे केतुर्यदा भवेत्। मिथुने शनि यदा जन्मे मार्जारो योग उच्यते ॥ जन्माङ्गस्य फलादेशं कथयामि शृणुं मुने ॥ प्रथमे च द्वितीयाब्दे बाल वृद्धि दिने दिने। मातृदुग्ध न प्राप्तव्य शूतश्छायाश्च विह्वलः ॥१॥ किंचिद्दानादि मंत्रेण श्रेयो मानं सुखागमः। प्राप्ते वैश्वानरे वर्षे बाण वर्षेच मध्यमा ॥२॥ मङ्गलं जायते गेहे कुलकीर्त्ति च सत्तमा। विद्यारम्भ कृतो बालः क्रीडनेमति तत्परः ॥३॥ ऋतु वर्ष गते काव्यादि गांव्वेतु यथा क्रमः। दशनोद्भवति भवेत् व्याधि कृश देहे विरेचनम् ॥४॥ लेखनं पाठनं चैव क्रीडने मति नित्यशः। रुद्र वर्षेच संप्राप्ते चतुरैकाब्द मध्यमम् ॥५॥ विवाहो मंगलं कार्यं प्रतिष्ठेऽपितदंतरम् ॥६॥ विविधं भोगमैश्वर्यं नित्य नूतन वर्धनम्॥ गते पंचदशे वर्षे अष्टादश तथान्तरे। बहुविद्या न प्राप्यन्ते कार्यमात्रश्च लभ्यते ॥७॥ वस्त्रालं-कार शोभन्ते दास वाहन मोदित। नन्द सोमाब्दमारभ्य वह्नि विंशति मध्यगो ॥८॥ सर्वैश्वर्य समायुक्तो भोगयते बहुतत्परा। पत्नी गर्भान्वितो भूय पुण्य कर्मेण मोदित ॥९॥ पुत्र जन्म गृहे तस्य विविधं मंगलं गृहम्। अयत्ने विपरीतं हि हानि शोक विचिंतनम् ॥१०॥ वेद युग्म गते वर्षे व्योमराम यथा क्रमम्। विभवो वर्द्धते नित्यं प्रजावृद्धि महत्सुखम् ॥११॥ अकस्मा-ज्जायते खेदं विशेषो भय दारुणम्। ताम्रकुंभ घृतं दानं युक्त स्वर्ण यथाविधि ॥१२॥ तेन कष्ट विनश्यं-ति सद्य सौख्य लभेन्नरः। नृपद्वार महल्लाभं सुकीर्तिश्चापि मङ्गलम् ॥१३॥ शशित्रिंश गते वर्षे शर राम गतोऽपि वा। प्रतिष्ठा मानमधिकं कुलकीर्ति विशेषतः ॥१४॥ पुत्रजन्म भवेत्पश्चात् धर्म कीर्ति विवर्धनम्। अकस्माद्धन लाभं च भूषणं वाहनानि च ॥१५॥ शत्रुमित्र समौ भूयात् सदा यश विवर्धते। धनभङ्ग तदा ज्ञेयं वृद्ध मृत्यु भविष्यति ॥१६॥ रस त्रिंश गते वर्षे व्योम वेदाब्दगे

२
चं. शु. १२
१ सू. बु.
श. मं. ३
११
४ रा. गु.
१० के.
५
७
९
६
८

ऽपि वा । शरीरे दारुणं कष्टं वर्धते नात्र संशयः ॥१७॥ सर्वौषधीनि मंत्रेण दुर्गापाठ पुटीकृतः । कृत्वा सद्यः
सद्य सुखं लब्ध्वा सर्वरोग विनाशनम् ॥१८॥ लभञ्च विद्यावान् कार्यं धन सम्पत्समृद्धिवान् । चैक वेदा-
द् मारभ्य शरवेद गते ऽपि वा ॥१९॥ पुत्र कष्ट विजानीयात् पत्नी चिन्तातुरा भवेत् । स्वर्णमूर्ति प्र-
-दानेन घृतपात्र समन्विता ॥ सर्वकष्ट प्रणश्यंति धन प्राप्नोति नित्यशः । मान कीर्ति प्रवृद्धिः स्याद्यथा
लाभ तथा व्ययम् ॥२०-२१॥ रसवेद गते वर्षे शतार्ध वत्सरे यदि । राजद्वारेऽति मान्यं च पूर्व यात्रा
न संशयः ॥२२॥ वंश वृद्धि भवेत्पुत्र कीर्ति वृद्धि दिने दिने । पुत्र पौत्र सुखं सर्वं आनन्देन गते
ऽब्दं ॥२३॥ चिन्तामेकं समुत्पन्न कस्मिन्प्राणी न संशयः । चन्द्र वाण मिते वर्षे शरवाणमिते ऽपि
वा । धर्म कार्य रते नित्यं संध्या पूजा कथादिकम् । कफ वातोद्भवः रोगं देह पीडा प्रजायते ॥२४-२५॥
रसवाण गते वर्षे व्योम षष्टि गते ऽपि वा । भूमि लाभ महद्धनं रचना नूतने गृहम् ॥२६॥ भोगाश्च
वैभवो नित्यं वर्धते नाऽत्र संशयः । श्वास कास महाव्याधिं अजीर्णं नश्यति क्षुधा ॥२७॥ सप्तान्नच
तुलादानं कृत्वा सद्य सुखं लभेत् । शशि षष्ट गते वर्षे नाग षष्टि गते ऽपि वा । ईश्वराराधने प्रीतिः
भजनानन्द सर्वदा । श्वास कास महत्व्याधि दुर्बले रोग पीडनम् ॥२८-२९॥ नन्द षष्ट मिते वर्षे पंच
तत्त्व विलीयते । पुण्य कर्मे सुखं नित्यंमिति सत्य वचं मम ॥३०॥ पूर्व पापञ्च गाथा त्वं शृणु पुत्र
वदाम्यहम् । वैश्य वंश कुले जन्म व्यापारे च धनागमः ॥३१॥ त्रिय सर्प गृहे वास तात पुत्रोति
नागकं । द्रुप नाग गृहे दृष्ट्वा वैश्य यष्टि प्रहारकम् ॥३२॥ सर्प पुत्र द्रुपं मृत्यु अति क्रोध उपद्रवं ।
सर्पशाप सुखे दत्त्वा त्रिजन्मे सुत हानि च ॥३३॥ शुक उवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मंत्रं
कस्य जापकम् । सर्पशाप विनश्यंति कृपया कथयः प्रभो ॥३४॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा
चैव युग्म माष प्रमाणकम् । तन्मध्ये युग्म सर्पं च रक्तचंदन लिख्यते ॥३५॥ वस्त्राभूषण दानं

भृ० सं० ९३२ भा० टी०

च षट् रसान्नं ददेत्सुधी । सर्प शाप विनिर्मुक्तो पुत्रलाभ भविष्यति ॥३६॥ अन्य जन्मे सुपुण्येन भवेत् द्विजमहामतिः । मोक्ष प्राप्ति लभेनन्तो महाराष्ट्रोपि पूजिता ॥३७॥ इति शुभम् ॥

भावार्थः भृगुजीने कहा - कर्क राशि का राहु गुरु के साथ हो, मकर राशि का केतु तथा मिथुन राशि का शनि जिस जातक की जन्मकुण्डली में हो, उसे 'मार्जार' योग कहा जाता है। इस जन्मकुण्डली वाला बालक एक तथा दो वर्ष की आयु में दिन प्रतिदिन वृद्धि प्राप्त करेगा, परन्तु भूत-छाया से व्याकुल रहने के कारण माता के स्तनों में दूध नहीं रहेगा । दुग्ध दानादि करने से इस स्थिति में परिवर्तन आ सकता है। ३ से ५ वर्ष की आयु में घर में मंगलाचार हो तथा कुल की कीर्ति में वृद्धि हो, विद्यारंभ होने पर खेल में मन अधिक रमा रहेगा । ६ से १० दाँतों के निकलने तक परेशानी रहे। शरीर दुर्बल हो तथा दस्तों की बीमारी हो। पढ़ते-लिखते हुए भी खेल में मगन रहे । ११ से १४ वर्ष की आयु में प्रतिष्ठा बढ़े तथा अनेक प्रकार के भोग-ऐश्वर्यों की उपलब्धि हो । १५ से १८ वर्ष की आयु तक अधिक विद्या प्राप्त न हो । केवल कामकाज के योग्य ही विद्यालाभ हो। विवाह, पान, वस्त्र भूषण, दास एवं वाहन का सुख उपलब्ध हो । १९ से २३ वर्ष की आयु में पुण्य-कर्मों के प्रभाव से स्त्री गर्भवती हो । घर में पुत्र का जन्म तथा मंगल कार्य हों। अयत्न से हानि एवं शोक का भय उपस्थित हो । २४ से ३० वर्ष की आयु तक ऐश्वर्य-लाभ एवं पुत्र-सुख प्राप्त हो । किन्तु अचानक ही खेद तथा विशेष भय का सामना करना पड़े । इससे रक्षा एवं शान्ति के लिये ताँबे के कलश में घृत तथा स्वर्ण रखकर ब्राह्मण को गुप्त-दान करें । ऐसा करने से कष्ट दूर होंगे तथा सुख प्राप्त होगा । राजद्वार से विशेष लाभ होगा तथा यश-कीर्ति की वृद्धि होगी । ३१ से ३५ वर्ष की आयु तक सम्मान-लाभ हो तथा कुल की कीर्ति बढ़े । पुत्र का जन्म हो, धन, कीर्ति तथा

वस्त्राभूषणों का लाभ हो। शत्रु मित्र समान रहें। तदनन्तर धनभंग हो तथा कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। ३६ से ४० वर्ष की आयु तक शरीर में कष्ट-वृद्धि हो। दुर्गापाठ के मंत्रों द्वारा सब औषधियों को पुटीकृत करके सेवन करने से रोग नष्ट हो। धन-सम्पत्ति की वृद्धि हो। ३५ से ४० वर्ष की आयु में पुत्र को कष्ट हो तथा स्त्री भी चिन्तातुर हो। उस समय घृतभाण्ड में स्वर्णमूर्ति का दान करने से सब कष्टों से छुटकारा मिले। फिर धन-सम्पत्ति की वृद्धि हो। जैसी आमदनी हो, वैसा ही खर्च रहे। ४६ से ५० वर्ष की आयु में राजद्वार से लाभ तथा पूर्व दिशा की यात्रा हो, वंश वृद्धि हो तथा कीर्ति बढ़ती रहे। पुत्र सुख हो तथा आनन्दोत्सवों में धन खर्च हो। किसी एक प्राणी की ओर से चिन्ता बनी रहे। ५१ से ५५ वर्ष तक धर्म-कर्म में मन लगा रहे। सन्ध्या, पूजन, भजन आदि की व्यस्तता रहे। ५६ से ६० वर्ष की आयु में कफ-वात की पीड़ा हो, शरीर-कष्ट तथा श्वास रोग हो, क्षुधा कम लगे। तुलादान सातों अन्न का करने से शीघ्र लाभ हो। ६९ वर्ष की आयु में शरीर पंचतत्त्व में विलीन हो। हे पुत्र! यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ था और इसने व्यापार में बहुत धन कमाया था। इसके घर में तीन सर्प रहते थे, जिनमें दो पुत्र और एक पिता थे। इसने लाठी प्रहार से दोनों नागपुत्रों को मार डाला। तब उस नाग ने इसे देखकर, अत्यन्त क्रुद्ध हो, यह शाप दिया कि तुझे तीन जन्म तक पुत्र का सुख नहीं मिलेगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा – हे प्रभो! उस शाप की शान्ति का क्या उपाय है, सो कहिए। भृगुजी बोले – दो माशे प्रमाण स्वर्ण-पत्र पर लाल चंदन से दो सर्पों के चित्र अंकित कर, उसे वस्त्र, आभूषण एवं षट्रस व्यंजन तथा अन्न सहित किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान करदे तो सर्प के शाप से मुक्ति मिलेगी तथा जातक को पुत्र-सुख प्राप्त होगा। यह जातक अगले जन्म में बुद्धिमान् ब्राह्मण होगा तथा

सब सुखों को भोगने वाला, राजपूज्य एवं अन्तमें मोक्षगामी होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्म पत्रिका ॥ जन्माब्दे बालवृद्धिश्च तात मातृ सुखी भवेत् । द्वितीयेऽब्दे रुजं प्राप्य दंतबाधा ज्वरादिकम् ॥ १॥ व्रणपीड़ा तृतीयेऽब्दे चतुर्थे वह्निजे भयम् । अकस्माज्जायते कष्टं उच्चस्थे पतितोऽथवा ॥२॥ पंचमे सप्तमे वर्षे गृहे मंगलगायनम् । विद्यारंभोऽपि संजातः गुरु प्रीति करः खलु: ॥ ३॥ कष्टमेक समुत्पन्नो अल्पतुल्य भवेत् सुतः । मातृ चिन्तातुरो भूत्वा पिताऽपि शोचमाश्रयः ॥४॥ अष्टमात्षोडशे वर्षे यथा गाथा तथा शृणु । विद्या वृद्धि विजानीयात् मासे मासे दिने दिने ॥ ५॥ विवाहोत्सव संजातो मंगलं गृह मण्डले । नवनारि समारम्य गीतवाद्यं करोति च ॥ ६॥ मुनिर्चन्द्रमिते वर्षे यावद्बाण दृगं सुतः । द्विरागमन संजातो पत्निना सह मोदते ॥ ७॥ गर्भिणी सा भवेत्पुत्रः अल्पजीवी च बालकः । पुत्रेशे ग्रह पूजा च तथा गोपाल पूजने ॥ ८॥ संतति सौख्य विद्धेयो नान्योपाये विनिश्चितः । रस नेत्रमिते वर्षे यावद् व्योम त्रियाब्दके ॥ ९ ॥ वृद्ध मृत्युश्च संजातो तस्य कार्ये धनं व्ययम् । राजद्वाराद्धनं प्राप्ति मानवृद्धिस्तथैव च ॥ १०॥ पुत्र योग विजानीयात् गृहे मंगलगायनम् । शशि राम गते वर्षे रस राम गतेऽपि वा ॥ ११॥ पत्नी प्राप्ति विशेषेण अन्यत्रो प्रेम संभवः । लाभ कृत्य विशेषेण धन वृद्धि दिने दिने ॥ १२॥ नृपद्वारे महत्वाय्यं सुकीर्तिश्चापि मङ्गलं । अकस्माज्जायते खेदं विदेशे भय दारुणम् ॥ १३॥ महामृत्युं जपं जाप्यं आपदुद्धारणं तथा । तेन कष्ट विनश्यन्ति सद्यः सौख्य लभेन्नरः ॥ १४॥ मुनि वह्निमिते वर्षे वेद वेदाब्द मध्यमा । सुताभाग्य महत्वेन कुलदीपः प्रशंसितः ॥ १५॥ चिन्तयेद्बहु कार्याणि भाग्यवृद्धिमनन्दिता । राजदरे [illegible] अयसे [illegible] ॥ १६॥ [illegible] च [illegible] भूमि भवनोऽपि नूतनम् ।

४ रा. | 2
श. मं. ५ | श. ३ सू. बु. शु. | १
६ | १२
७ | ९ चं. | ११
८ | १० के.

ग्रामप्राप्ति विशेषेण आरामे च जलाशये ॥१७॥ शरचत्वारि वर्षाणि व्योमपञ्चाब्दके तथा। पौत्रजन्म महोत्साहो सर्वतोलाभ संभवः ॥१८॥ पुण्यकर्म विशेषेण चित्तवृत्ति सुगौरवम्। चौरभीति भवेद्राज्ञो धनहानि न दृश्यते ॥१९॥ सुदुग्धा महिषी गावं पुत्र कान्ता मनोहरः। शशिपंचाब्दमारभ्य शून्य षष्ठ यथाक्रमम् ॥ २०॥ सुभाग्य महतो पुण्यं पुत्रपौत्रमनन्दिता। शशि षष्ठगते वर्षे प्रपौत्रं जन्म दर्शयेत ॥२१॥ महत्कीर्त्याधिकारी च क्षुधान्धूनं ऽति निर्बल:। वायुकोप समाविष्टो रोगवृद्धिश्च केचित: ॥२२॥ शुंठिका लवणं श्यामं चूर्णं चापि हरीतकीम्। तेन कष्ट विनश्यंति पुनरायु विवर्धनम् ॥२३॥ युग्म षष्ठगते वर्षे नागषष्ठाब्दगे ऽपि वा। आश्विने कृष्ण पंचम्यां निधनं तस्य जायते ॥२४॥ पुनर्द्विज कुले जन्म दानमंत्र सुभक्तित:। विद्या विनय सम्पन्नो तेजस्वी शुचि धार्मिक: ॥२५॥ कृपा भगवते प्राप्तं सुपुण्यं मोक्ष साधनम्। एवमेव फलादेशं सत्यं सत्यं वचं मम: ॥२६॥ पूर्वजन्मऽच गाथा त्वं शृणु पुत्र वदाम्यहम्। शूद्र वंश कुले जन्म दीर्घं अर्घ कुरुस्तथा ॥२७॥ पापकर्मे धानं प्राप्ति उच्चस्थान न प्राप्नुये। कमठी च मृत्तिका भाण्ड हस्ते नित्यं च धारणम् ॥२८॥ बहुपक्षि वधो जीव: बारम्बार च भक्षणम्। विद्धं स च गृहं पक्षी शापकं भोजनं तथा ॥२९॥ दीर्घ पाप प्रभावेण पुत्र सुख विहीनकं ॥ शुक्रोवाच ॥ किं यत्नं च कर्तव्यं पक्षी शाप विनाशकं। पुत्र प्राप्ति भवेज्जात: वंशवृद्धि भविष्यति ॥ भृगु उवाच ॥ चतुर्लक्ष प्रमाणेन गायत्री मन्त्र जापक:। ब्राह्मणं भोजनं दानं कुर्वंतु विधिपूर्वक:। पक्षीणां अन्न दानं च पुत्र सौख्यं भविष्यति ॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। बालक के जन्म के समय से पिता के सम्मान में वृद्धि होगी। इस बालक को २ वर्ष की आयु में ज्वर तथा दन्त-पीड़ा, तीसरे वर्ष में व्रण, अतिभय तथा अकस्मात ऊँचाई से गिर कर चोट लगने की संभावना रहेगी। ५से

सात वर्ष की आयु में घर में मंगल कार्य होंगे तथा बालक विद्या पढ़ना आरंभ करेगा एवं गुरु-भक्त होगा। कोई सामान्य कष्ट भी होगा। माता-पिता चिन्ताकुल होंगे। ८ से १६ वर्ष की आयु अवधि में विद्या की वृद्धि, विवाहोत्सव तथा नवयौवनाओं द्वारा घर में मंगलगान होंगे। १७ से २५ वर्ष की आयु के बीच विवाह तथा गौना (द्विरागमन) होगा। फिर स्त्री गर्भवती होगी तथा अल्पजीवी बालक को जन्म देगी। पंचमेश ग्रह की पूजा तथा संतानगोपाल मन्त्र के जप से सन्तान-सुख प्राप्त होगा। २६ से ३० वर्ष की आयु में, घर में किसी वृद्ध की मृत्यु होगी। धन व्यय होगा। राजद्वार से धन-सम्मान की प्राप्ति होगी तथा पुत्र-लाभ का हर्ष होगा। ३१ से ३६ वर्ष की आयु में किसी पर-स्त्री से प्रेम होगा। धन की वृद्धि तथा अन्य अनेक लाभ होते रहेंगे। राजद्वार से लाभ तथा यश की वृद्धि होगी। फिर अकस्मात् दुःख तथा परदेश में भय की प्राप्ति होगी। कष्ट भी होगा। महामृत्युंजय अथवा आपदुद्धारण मंत्र का जप करने से सब कष्ट दूर होंगे तथा सुख प्राप्त होगा। ३७ से ४४ वर्ष की आयु में कुलदीपक पुत्र का लाभ होगा। अनेक कार्यों के उद्यमों से आनन्द की वृद्धि होगी तथा राजद्वार से विशेष लाभ मिलेगा। भूमि एवं नवीन गृह का लाभ होगा। बगीचा तथा कुँआ या जलाशय बनेगा। ४५ से ५० वर्ष की आयु में पौत्र का जन्म होगा तथा सब स्थानों से लाभ होगा। पुण्य-प्रभाव से चित्त की वृत्तियां बदलेंगी। किसी समय रात्रि में चोरों का घर में प्रवेश होगा, परन्तु धन-हानि नहीं होगी। दूध देने वाली गाय, भैंस, पुत्र आदि का सुख होगा। ५१ से ६० वर्ष की आयु में पुत्र की सन्तान (पौत्र) का लाभ पुनः होगा। ६१ वर्ष की आयु में प्रपौत्र का लाभ होगा। फिर वृद्धावस्था के कारण भूख में कमी तथा शरीर में दुर्बलता आयेगी। उस समय सोंठ, कालानमक तथा हड़ का सेवन करना हितकर रहेगा। ६२ से ६८ वर्ष की आयु

के बीच आश्विन कृष्णा पंचमी को देहावसान होना संभव है। यह जातक विद्या-विनय सम्पन्न, तेजस्वी तथा धनवान् होगा एवं प्रभु-कृपा से मोक्ष-प्राप्ति के साधन उपलब्ध करेगा। अब इसके पूर्व जन्म की कथा सुनो। पिछले जन्म में शूद्र-कुल में उत्पन्न होकर इसने अनेक पाप किए थे। पाप-कर्मों से धन कमाया तथा तीर-कमान से अनेक पक्षियों का वध कर, उनका मांस सेवन किया। उन पक्षियों के शाप के कारण इसके पुत्र-सुख में न्यूनता रहेगी। शुक्र बोले- किस उपाय से इनके पाप का प्रायश्चित्त हो सकता है? भृगुजी ने कहा- एक लाख गायत्री मन्त्र का जप करने, ब्राह्मणों को विधिपूर्वक दान देकर भोजन कराने तथा पक्षियों को दाना डालने से इसे पुत्र-सुख मिलेगा॥ इति शुभम्॥

- ८ — सू. चं. बु.
- ९ — शु.
- ७ — मं.
- १० — के.
- ६ — वृ.
- ११
- ५
- १२
- २
- ४ — रा.
- १
- ३ — श.

ॐ ॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं अस्यैवां जन्मकुण्डलीम्॥ मिथुने शनि, कर्के राहौ कन्यायां बृहस्पतिः। मकर राशिगते केतुः सात्त्विको योग उच्यते ॥१॥ प्रथमे च द्वितीयाब्दे सर्वानन्द प्रजायते। चतुर्थे च धनं वृद्धि गृहे मंगल मेव च ॥२॥ दशमो त्वतिजा व्याधि कुष्ठ देहे विरेचनम्। सर्व कष्ट विनश्यंति दान मात्रेण निश्चितम् ॥३॥ बालक्रीड़ा विशेषेण सर्वेषां मोदितो सदा। यथा देह प्रवर्धन्ते सुख संपत्समृद्धिवान् ॥४॥ प्राप्ते तु पंचमे वर्षे सप्तवर्षावधिः क्रमात्। लेखनं पाठनं चैव क्रीड़नं तु रतिं भवेत्। यद्गेहे मंगलं विविधान् कार्यं जायते नित्य नूतनम् ॥५॥ नंद वर्षाब्दगे जायते कष्टं रुजं विस्फोटकादयः ॥६॥ किंचिद्दान मात्रेण तत्सर्वं नश्यते ध्रुवम्॥ विविधान् भोगमैश्वर्यं चतुरैकाब्द मध्यमा ॥७॥ विवाहो मंगलं कार्यं प्रतिष्ठोऽपि विवर्द्धयेत्। विविधान् भोगमैश्वर्यं नित्य नूतन वर्द्धनम् ॥८॥ केचिज्जीव परं प्रीति मित्रैश्च रमते सदा। गते पंचदशे वर्षे

यौवन विह्वला ॥२०॥ लाभ कृत्य विशेषेण धन वृद्धि दिने दिने । पितृ सौख्यो ऽपि न्यूनं च निज कृत्येण
मोदिता ॥२१॥ युग्म नेत्र गते वर्षे ऋषि विंशाब्दगे ऽपि वा । नृपद्वारे महल्लाभं सुकीर्तिश्चापि मंगल
म् ॥२२॥ अकस्माज्जायते खेद: विशेषो भय दारुणम् । महामृत्युंजयो जाप्यं आपदुद्धारणं तथा ॥
२३॥ तेन कष्ट विनश्यन्ति सद्य: सौख्य: लभेन्नर: । सुत पुत्र समुत्पन्नो मङ्गलंहि दिने दिने ॥२४॥
पत्नी प्रीति विशेषेण अन्यस्त्री प्रेम संभव: । नागविंश गतेऽब्देतु शरविंश गते ऽपि वा ॥२५॥ पुण्य
कर्मेण भो वत्स मोदते भूति पुण्यवान् । चिन्ताचिन्ता विनश्यन्ति पुत्र पत्नीश्च क्रीड़या ॥२०॥ राजद्वारे
महल्लाभं भूपं ते भाग्य भाजनं । सुत भाग्य महत्वेन कुलदीप: प्रशंसित: ॥२१॥ ग्राम प्राप्ति विशेषे
-ण आरामे च जलाशये । चिन्तयेद्बहु कर्माणि भाग्यवृद्धि निरन्तरम् ॥२२॥ रस विंशमिते वर्षे यावच्च-
न्द्र युगस्तथा । महैश्वर्य महोत्साहो मान वृद्धि दिने दिने ॥२३॥ शत्रुमेक समुत्पन्न: स्वजाति वाऽन्य
जातय: । अग्रे मिष्ट प्रवक्ता च पृष्ठे शत्रुत्वमाचरेत् ॥२४॥ गृहे मंगल कार्यं च यात्रा भवति निश्चि-
तम् । तत्रापि धन लब्धं च मार्गे भय भवेत्सुत: ॥२५॥ चौरे च व्याघ्र सिंहे च अतिभे जय माप्नु
यात् । युग्म वेदाब्द मारभ्य वह्नि वाणमिते ऽपि वा ॥२६॥ ग्राम लब्धि भवेत्पुत्र प्रजा पालन तत्पर: । पुत्र
कष्ट न सन्देहो व्याकुलं च दिने दिने ॥२७॥ महामृत्युंजपं मन्त्र तथा गोदानमेव च । काञ्चनं भुवि
दानेन रोग नश्यन्ति नान्यथा ॥२८॥ वेद वाणगते वर्षे नंदपंच गते ऽपि वा । पुत्र पौत्र समायुक्ता मो-
-दते भुविमण्डले ॥२९॥ स्वर्ण गो भूमि दानेन तोष्यति ब्राह्मणान् सदा । विवाहादि व्ययं दीर्घं कुल-
कीर्ति प्रकाशक: ॥३०॥ लाभञ्च विविधान् कार्ये धन सम्पत्सवृद्धि च । शून्य षष्ठ गते वर्षे नाग षष्ठि
गते ऽपि वा । ईश्वराराधने प्रीति: भजनानन्द सर्वदा ॥३१॥ शरीरे दारुणं कष्टं निमग्नं धर्मचिन्तया ।
। औषधी सेवनं कृत्वा रोग शान्तिर्न दृश्यते ॥३२॥ नन्द षष्ठमिते वर्षे पंचतत्त्व विलीयते । अग्रजन्मे

सुपुण्येन नृपो द्विज महामति ॥३३॥ पूर्व जन्म कथा वत्स शृणु त्वं कथयाम्यहम् । आभीर कुले जन्म धन-धान्य समन्विता: ॥३४॥ धानो चंचलश्चित्तो बाणसंधानकं करेत् । हत्वा च मयूरो ऽपं हाहाकार करेत पित: ॥३५॥ मयूरी शाप दध्यात् त्वां पुत्र शोक लभेत् सदा । त्रिजन्मे च महाशोकं नान्यथा वचनं मम ॥३६॥ शुक उवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं जप कारयेत् । मयूरीशाप नश्यन्ति कृपया कथय: प्रभो ॥३७॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णपत्र त्रिपिं कृत्वा पुग्म माष प्रमाण के मयूर पुत्रमाकार: चिन्नते विधि पूर्वकम् ॥३८॥ वटरस दान सहितो गायत्री मूल मन्त्रकम् । चतुर्लक्ष प्रमाणेन सुदध्यात् द्विजमुत्तमै: । प्रायश्चित्त इदं कृत्वा शाप नष्ट भवेत् सुत: । सन्तानसुखमाप्नोति सर्वदा कुशलं भवेत् ॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र ! इस कुण्डली का फलादेश सुनो । मिथुन राशि में शनि कर्क मे राहु, कन्या राशि में गुरु तथा मकर राशि में केतु स्थित हों तो 'सात्विक योग' होता है । १ से ४ वर्ष की आयु तक इस बालक की दिन-प्रतिदिन वृद्धि होगी । घर में सब प्रकार के सुख तथा मंगलकार्य होंगे । दंत-पीड़ा तथा अतिसार रोग से शरीर कृश होगा । दानमन्त्र आदि उपायों से इन कष्टों से छुटकारा मिलेगा । बालक क्रीड़ा-प्रेमी तथा आनन्दी होगा । शरीर में व्रण, ज्वर आदि का कष्ट होने पर दान-मन्त्र आदि उपाय लाभकारी रहेंगे । आयु-वृद्धि के साथ ही आनन्द में भी वृद्धि होती रहेगी । ५ से १४ वर्ष की आयु में घर में विवाहादि मंगल कार्य होंगे । प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा अनेक प्रकार के भोग-ऐश्वर्य के पदार्थों में भी वृद्धि होती रहेगी । १५ से २१ वर्ष की आयुतक सर्व सुख प्राप्त होते रहेंगे । रूपयौवन विद्या-ला नवीना स्त्री प्राप्त होगी । लाभ के हेतु विशेष कार्य करने से निरन्तर धन की वृद्धि होगी । पिता का सुख कम होगा, परन्तु अपने ही कार्यों से आनन्द प्राप्त होगा । २२ से २७ वर्ष की आयु तक

राजद्वार से विशेष लाभ होगा। स्वकीर्ति में वृद्धि होगी तथा मंगलकार्य होंगे। फिर, अकस्मात् दुःख तथा विशेष भय प्राप्त होगा। महामृत्युंजय मंत्र अथवा आपदुद्धारण कवच का पाठ करने से कष्ट दूर होगा तथा सुख मिलेगा। कन्या तथा पुत्र की प्राप्ति होगी। अपनी स्त्री से विशेष प्रीति रहेगी तथा पर-स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध स्थापित होंगे। २८ से ३५ वर्ष की आयु तक पूर्व-पुण्यों के प्रताप से सब प्रकार के आनन्द सुलभ होंगे। चित्त की चिन्ता दूर होगी तथा स्त्री-क्रीड़ा का सुख मिलेगा। राजद्वार से लाभ तथा भाग्य की वृद्धि होगी। ग्राम, भूमि, भवन तथा जलाशय का लाभ होगा। आनन्द बना रहेगा। ३६ से ४१ वर्ष की आयु तक घर में बड़े उत्सव होंगे तथा सम्मान वृद्धि होगी। फिर एक सजातीय अथवा विजातीय ऐसा शत्रु उत्पन्न होगा, जो सामने तो मीठी वाणी बोलेगा तथा परोक्ष में हानि पहुँचाने की कुचेष्टाएं करेगा। इन्हीं दिनों कहीं की यात्रा तथा घर में मंगल कार्य होंगे। शत्रु कुछ बिगाड़ नहीं सकेगा। विदेश से धन-लाभ होगा, परन्तु मार्ग में चोर अथवा सिंह का भय उपस्थित होगा, उस पर विजय प्राप्त होगी। ४२ से ५३ वर्ष की आयु तक अनेक लाभ होंगे तथा कुटुम्ब का पालन-पोषण होगा। फिर पुत्र को कष्ट होने से व्याकुलता रहेगी। महामृत्युंजय मंत्र के जप, स्वर्ण, गौ तथा भूमि दान करने से पुत्र का कष्ट दूर होगा। स्वर्ण दानादि से ब्राह्मणों को सन्तुष्ट करना हितकर रहेगा। अनेक प्रकारों से धन-सम्पत्ति का लाभ होता रहेगा। ६० वर्ष की आयु में शरीर को रोग-पीड़ा होगी, क्षुधानष्ट होगी, श्वास-कास तथा अजीर्ण की व्याधियाँ उत्पन्न होंगी। इस समय सप्तधान्य का तुलादान करना हितकर रहेगा। वर्ष ६१ से ६८ तक ईश्वराराधन में चित्त लगेगा। शरीर में अधिक कष्ट होगा तथा चिन्ता रहेगी। ६९ वर्ष की आयु में [illegible] होगा [illegible]। अपने पुण्य कर्मों के प्रभाव से यह जातक अगले जन्म में

बुद्धिमान् ब्राह्मण होगा। अब इसके पूर्वजन्म का वृत्तान्त सुनो। पिछले जन्म में यह अहीर कुल में उत्प-
न्न हुआ था। एक समय धनुष-बाण लेकर वन में गया और वहाँ इसने मयूर-शावक का वध किया।
तब मयूरी ने इसे तीन जन्म तक पुत्र-सुख न मिलने का शाप दिया। यह सुनकर शुक्र ने पूछा- हे
पिता! किस उपाय से मयूरी का शाप नष्ट होगा? भृगुजी बोले- दो माशे प्रमाण स्वर्ण पत्र पर
मयूर-शावक का चित्र बनाकर, षट्रस सहित विधिपूर्वक ब्राह्मण को दान करने तथा गायत्रीमंत्र
का एक लाख की संख्या में जप करने से पूर्व-पाप से मुक्ति मिलेगी तथा पुत्र-सुख प्राप्त होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्मपत्रिका॥ धनु राशि

१० शु० | ८ मं० | ११ चं० | सू० बु० के० ९ | ७ | १२ | ६ वृ० | १ | श० रा० ३ | ५ | २ | ४

गते केतौ मिथुने राहुशनी यदा। कन्या गतो जीव सहजो योग कूपते॥१॥ जन्मतः
प्रथमे वर्षे जातो मंगल मोदितः। भूतच्छाया च दृश्यन्ते रुदन्तौ भय विह्वलौ॥२॥
द्वितीयाब्द तृतीये च दन्त व्याधा भवेत् क्वचित्। सुयत्ने मोदितो नित्यं बाल
क्रीड़ा मनोहरा॥३॥ मातृकष्ट विशेषेण तात लाभ धनं भवेत्। वेदाब्दे पंचमे
वर्षे शिशु क्रीड़ान्वितो भवत्॥४॥ तात मातु महत्सौख्यं मंगलं जायते कुले।
रस वर्षे गते तत्र नभ-चन्द्राब्द मध्यगे॥५॥ विद्यायोगोऽपि जायेत शिशु-
णां क्रीडते मतिः। व्रणं पीड़ा विशेषेण ज्वरार्तमुदरव्यथा॥६॥ सुयत्ने मङ्गलो नित्यं विद्याभ्यासे सु-
तत्परा। यथा देह प्रवर्धेत धन संपत्समृद्धिमान्॥७॥ प्राप्ते चैकादशे वर्षे तथा नन्द दशाब्दके। विवा-
हे मङ्गलं कार्यं कुल कीर्ति प्रकाशितम्॥८॥ लिप्य लेखन कार्येषु कुशलोऽपि तदन्तरे। व्यवहारे पदो-
लाभं धन वृद्धि दिने दिने॥९॥ संभवो दारुणं कष्टं सर्वशान्ति सुयत्नतः। विंश वर्षे गते बाणरस
युग्म गतेऽपि वा॥१०॥ सुता पुत्रान्वितो भूत्वा दास वाहन मोदितः। प्रतिष्ठा मानमधिकं कुलकीर्ति-

विशेषत: ॥२१॥ ऋषिनेत्र गते वर्षे राम वह्निमिते ऽब्दषु। गृहे मंगल कार्येषु पुत्रजन्म महोत्सवे। नवस्त्रीं च समागम्य शुभकार्यैः धनं व्यय:। धनभक् तदा लेय वृद्ध मृत्युर्न संशय: ॥२२॥ शत्रु मित्र समं स्यात् धन चिन्तातुरो भवेत्। दैवात् परनारीषु गुप्त प्रीति भवेत्तदा ॥२३॥ वेद वह्निमिते वर्षे नन्द वह्निमिते तथा। राजद्वारे ऽतिमानञ्च पूर्वयात्रा न संशय: ॥२४॥ व्यापारेच्चोत्तमं लाभं कीर्ति वृद्धि दिने दिने। मान कीर्ति प्रवृद्धिस्याद्धयालाभ तथा व्ययं ॥२५॥ व्योम वेद गते वर्षे रस वेदमिते तथा। वंशवृद्धि भवेत्पुत्र: कीर्ति वृद्धि दिने दिने ॥२६॥ पुत्र पौत्र सुखं सर्वं आनन्देन गते: व्ययं। चिन्तामेक समुत्पन्न: कस्मिन् प्राणी च निश्चितम् ॥२७॥ धर्मकार्य रते नित्यं संध्यापूजा जपादिकं। धनव्ययं सुकार्येषु विवाहे पुत्र कन्ययो: ॥२८॥ ऋषि वेद गते वर्षे शर वाणाब्दगे ऽपि वा। कफ वातोद्भव: रोगं देह पीड़ा प्रजायते॥ २९॥ औषधेन प्रशान्ति स्याद् आरोग्यं च लभेत् पुन:। दुःख सौख्य फलं भुक्त्वा महद्दान ददाति च ॥२०॥ विप्राणां सज्जनानां च अतिथीनां प्रपूजयेत्। रस वाण गते वर्षे व्योम षष्ठ गते ऽपि वा ॥२१॥ पुत्र कष्ट विजानीयात् दान धर्मेण शांतकृत्। नाना वैद्य समागम्य अन्य देशौषधिं लभेत् ॥२२॥ महादान प्रभावेण रोगशान्तिर्भविष्यति। शशि षष्ठ गते वर्षे दुर्बलं रोग पीड़िता ॥२३॥ श्वास कास महाव्याधि अजीर्ण नश्यति क्षुधा। ईश्वराराधने प्रीति भवन्ति: शान्तिदाय कम् ॥२४॥ कपाल षष्ठमिते वर्षे पंचतत्त्व विलीयते। अग्रजन्मे सुपुण्येन वैश्यो भवति निश्चितम् ॥२५॥ पूर्व जन्मस्य क्षत्री स्यात् रुद्र पूजा परायण:। गोदानं स्वर्णदानं च दत्तं तीर्थे द्विजन्मने ॥२६॥ तेन पुण्य प्रभावेण गुणवान् रूपवान् भवेत्। शूद्र घात कर: पूर्वे यत्किञ्चित् पापमोहित:। स च पाप प्रभावेण पुत्रसौख्यं न लभ्यते ॥२७॥ शुक्रोवाच॥ किं जाप्यं किं दान पुण्यं प्रायश्चित्त भवेत् प्रभो। तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व महामुने ॥२८॥ भृगु उवाच॥ ताम्रपत्र फलं रुद्र तन्मध्ये नवमण्डलम्।

भृ० सं० ८७४

शङ्ख चित्रं लिखेत्तत्र चन्दनेन यथाविधि:॥२९॥ षोडशेनोपचारेण पूजां कृत्वा तु भक्ति युत। अयुतार्द्धं जपेन्मन्त्र: पद्मनाभं त्रिबीजकम्॥३०॥ पीतासने समाविश्य पीतवस्त्रनिधाय च। जपं कृत्वा ददेद्दानं विप्राय च सश्रद्धया॥३१॥ एतद्दान प्रभावेण पुत्रवान् च भवेन्नर:। पूर्व पाप विनिर्मुक्त: अस्मिन् जन्मे सुखी भवेत्॥३२॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे शुक्र! इस जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो। यदि धनु राशि में केतु, मिथुन राशि में शनि और राहु तथा कन्या राशि में गुरु हों तो 'सहज' नामक योग होता है। इस जन्म कुण्डली वाले बालक के जन्म के समय पिता के घर में मंगलाचार हों। शैशवावस्था में यह जातक भूत की छाया से विकल होकर रोता रहे। तीसरे वर्ष में थोड़ी दन्तपीड़ा हो। माता को कष्ट तथा पिता को लाभ की चिन्ता रहे। चार-पाँच वर्ष की आयु में बालक क्रीड़ामग्न रहे। माता-पिता को सुख प्राप्त हो तथा घर में मंगल कार्य हों। ६ से १० वर्ष की आयु में विद्याध्ययन तथा खेल-कूद साथ-साथ चलें। व्रणपीड़ा तथा उदर व्यथा होना भी संभव है, जो कि उचित उपायों से दूर हो जायेगी। शरीर-वृद्धि के साथ-साथ घर में धन-सम्पत्ति की वृद्धि भी होती रहे॥ ११ से १९ वर्ष तक की आयु में विवाह होना संभव है। कुल कीर्ति में वृद्धि, विद्याभ्यास में कुशलता तथा राजद्वार में पद लाभ के योग प्रकट हों। दिन-दिन लाभ बढ़े। एक विशेष कष्ट होने पर उचित यत्न से शान्ति मिले। २० से २६ वर्ष की आयु में पुण्य-प्रभाव से पुत्र-कन्या से युक्त हो। सेवक, वाहन, मान-प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति हो। कुल कीर्ति में वृद्धि हो। २७ से ३३ वर्ष तक की आयु में घर में मंगल कार्य, पुत्रजन्मोत्सव आदि हों। नवीन नारियों के समागम तथा शुभकार्यों में धन खर्च हो। इसी अवधि में घर के किसी वृद्ध की मृत्यु हो, छत्र भङ्ग हो तथा शत्रु मित्र बराबर रहें। धन-चिन्ता हो तथा दैववश एक पर-स्त्री से

गुप्त-प्रेम भी हो। ३४ से ३८ वर्ष की आयु में राजद्वार में मान बढ़े तथा पूर्व दिशा की यात्रा हो। व्यवसाय द्वारा उत्तम लाभ प्राप्त हो तथा व्यय भी अधिक हो। ४० से ४५ वर्ष की आयु में पुत्र की वंश-वृद्धि हो तथा कीर्ति बढ़े। पुत्र-पौत्र का सुख हो। एक प्राणी की ओर से चिन्ता उत्पन्न हो एवं धर्म-कर्म संध्या-पूजनादि में चित्त लगे। पुत्र अथवा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। ४८ से ५५ वर्ष की आयु में कफ-वात से रोग हो। दुःख, सुख, भोग आदि को भोगता हुआ बहुत दान भी करे। साधु, ब्राह्मण तथा अतिथियों की सेवा करे। ५० से ६० वर्ष की आयु में पुत्र को कष्ट हो तथा दान-धर्म द्वारा शान्ति प्राप्त हो। अनेक वैद्यों के आगमन तथा विदेशी औषधियों के सेवन से भी रोग दूर न हो, परन्तु दान-पुण्य के प्रभाव से रोग शमन हो। ६१ वर्ष की आयु में स्वयं का शरीर रोग-पीड़ित हो। दुर्बलता, श्वास-कास, अजीर्ण, क्षुधा-नाश आदि कष्ट हों तो हरि-चिन्तन में मन अधिक लगे। ६८ वर्ष की आयु में देहान्त होना संभव है। अपने पुण्य कर्मों के प्रभाव से यह जातक अगले जन्म में वैश्य कुल में उत्पन्न होगा। अब इसके पूर्व जन्म की कथा सुनो। पिछले जन्म में यह क्षत्री वंश में उत्पन्न हुआ था तथा शिव-पूजन एवं दान-धर्म में तत्पर रहता था तथा तीर्थस्थल में ब्राह्मणों को दान दिया करता था, उस पुण्य के प्रभाव से यह इस जन्म में सुखी तथा गुणवान् हुआ। परन्तु पूर्वजन्म में एक समय इसने पाप-मोहित होकर एक शूद्र का वध कर दिया था, उसके प्रभाव से इसे पुत्र-सुख उपाय द्वारा ही प्राप्त होगा॥ शुक्र ने कहा- हे प्रभो! वह उपाय क्या है, यह मुझे बताने की कृपा करें॥ भृगुजी बोले- ग्यारह पल का ताँबे का कलश लेकर उसके मध्य में नवमण्डल की रचना कर, उसमें चन्दन द्वारा शूद्र का चित्र बनाये। फिर उसका यथाविधि षोडशोपचार पूजन कर, पीतवस्त्र धारण कर, पीतासन पर ही बैठकर त्रिविधि से पद्मनाभ मंत्र का ५०० की

संख्या में जप करे। फिर वह पात्र दक्षिणा सहित किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान करदे। इस दान के
प्रभाव से पुत्र का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। पूर्व पाप नष्ट होकर, इस जन्म में सुखी होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगुउवाच॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं यस्यैषां जन्मपत्रिका॥ मिथुने राहुशनी जीवो सिंहराशि-
र्यदा भवेत्। धनु राशिगते केतौ अमलं योग उच्यते॥१॥ प्रथमेब्दे ज्वरश्चेति द्वितीये उदरःव्यथा।
तृतीये च गुदा पीड़ा मातृपीड़ा प्रजायते॥२॥ चतुर्थाब्दे पंचमेवर्षे विद्यारंभ प्रजायते। गुरुः प्रसन्न
वक्ता च पाठयेत्प्रीति संयुतः॥ पूर्व पाठ विनिर्मुक्त अग्रे धावति बालकः। पितुराज्ञा भवेत्पूर्वे
तत्रैव धन लभ्यते॥३-४॥ नन्दात्षोडशो वर्षे विद्या वृद्धि दिने दिने। वि-
वाहोत्सव योगं च मंगलं गृहमण्डले॥५॥ सर्वसंपत्समृद्धिश्च स्वर्णो
रत्न संयुतम्। महर्घ वस्त्र लाभं च वाहनादि सुखं भवेत्॥६॥ मातृ
योग न सन्देहो तथा भगनी प्रजायते। मातृ कष्ट विजानीयात् उग्र
दानेन शाम्यति॥७॥ मुनि चन्द्र मिते वर्षे यावद्बाणदृगस्तथा। राजद्वारे
ऽतिमान्यं च पुरस्कार लभेत् महत्॥ रोगमेक शरीरेषु गुप्त व्याधि भवेत्
पुनः। अहर्निशि भवेत् चिन्ता शरीरं दुर्बलं भवेत्॥८-९॥ संभोग

१ शु. | १२ सू. बु. | ११ मं.
२ | ३ श. रा. चं. | ९ के. | १०
४ | ६ | ८
५ बृ. | ७

स्वल्पकालं च न तृप्यति वरानने। धन धान्य समायुक्तो भविष्यति न संशयः॥१०॥ सुसंतति
समयुक्ता: ममवाक्यं न संशयः। रस युग्म गते वर्षे मुनि वह्नि गते ऽपि वा॥११॥ पुत्रोत्सवगृहे
जातः अल्पजीवी सुतो भवेत्। पुत्रकष्ट न सन्देहो व्याकुलं च दिने दिने॥१२॥ पञ्चम
स्थानगे क्रूरोऽथवा क्रूरेण वीक्षिता। नष्ट संतति योगस्यात्कथ्यते मुनि सत्तमाः॥१३॥ नाग
वह्नि मिते वर्षे यावच्चन्द्र युगस्तथा। महैश्वर्य महोत्साहो मानवृद्धि दिने दिने॥१४॥ पुत्र

पौत्र विवाहञ्च कामिनी पुत्र जन्मयेत् । तथैव तस्य उद्वाहो धनः व्यय विशेषतः ॥ १५ ॥ पुत्रकष्ट
विजानीयात् दानधर्मेण शमयति । यदोच्च प्राप्नुयात् पुत्रः सौख्यं कीर्ति विवर्द्धनः ॥ १६ ॥ गृहे मङ्गलका-
र्यञ्च नृत्यगान मनोहरम् । नवनारि समागम्य शुभकार्ये धनं व्ययः ॥ १७ ॥ नेत्र वेद गते वर्षे नागे
युक्ता गतस्तथा। पुण्यकर्मप्रियो लोके किं सुसौख्यं न लभ्यते ॥ १८ ॥ ईश्वराराधने प्रीतिः दानादि
मति तत्परा। देवदर्शन तीर्थं च पवित्रं कारयेद्वपुः ॥ १९ ॥ प्रजा वृद्धि विशेषेण प्रकाशो विपणिभवा
नन्द वेद गते वर्षे शरवाणगतेऽपि वा ॥ २० ॥ नानाकार्य प्रबन्धैश्च ग्रामारामादि वाहनम् । प्रशंसा
जायते दीर्घः कोषे वित्तं नतादृशी ॥ २१ ॥ सर्वसौख्योऽपि भुञ्जीत साकल्यं जन्म मोदिता । आह्लाका-
-री सुतो भृत्यं चतुष्पादादि वाहनम् ॥ २२ ॥ रस वाणगते वर्षे शर षष्टा व्रगेऽपि वा । रामपुत्रो द्विक-
न्या च मोदते सर्वदा जनः ॥ २३ ॥ धनी सत्त्वी च तेजस्वी व्यापारे लाभलब्धवान् । अयत्ने
विपरीतं हि द्रव्य हानि भयं भवेत् ॥ २४ ॥ प्राप्यते विविधान् सौख्यान् सर्वलाभ समन्वितम् ।
रस षष्ट गते वर्षे कृशदेहं च दुर्बलः ॥ २५ ॥ सर्वेच्छा पूजयेत् पुण्यं निधानं पूर्व पक्षकैः । पुण्यप्रा-
-ज कुले जातं पापाच्च निधनो गृहे ॥ २६ ॥ पूर्वे वैश्य कुले जातो ज्ञानी परम धार्मिकः । तस्य पत्नी
विशालाक्षी चम्पावति पतिव्रता ॥ २७ ॥ क्रियते अन्न व्यापारो दुष्कालोऽच भवेत् तदा । विप्रपुत्र महादी-
-ने अन्न लब्धं न कारयेत् ॥ २८ ॥ वैश्योऽति क्रोध कृत्वा च तस्यैवां ताड्यते पुनः । तस्य यष्टि प्रहार-
-ण विप्रपुत्र मृतिं भवेत् ॥ २९ ॥ पुत्र मृत्यु विजानीयात् विप्रं शाप प्रदत्तवान् । त्रिजन्म सुत कष्टं
त्वां ना मृषा वचनं भवेत् ॥ ३० ॥ भृगुरुवाच ॥ किं दानं किं जपेन्मन्त्रं विप्र शाप निवारणैः । तत्सर्वं
कथय: स्वामिन् प्रायश्चित्त हेतुना ॥ ३१ ॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णं च प्रतिमा चैव अष्टमाष प्रमाणकम् ।
द्विजपुत्र [illegible] स्वर्ण [illegible] प्रवेशकं ।

श्रेष्ठ विप्रेण तं दानं कृत्वा शापविमुक्तये ॥ ३३ ॥ पुत्रलाभ न सन्देहो वंशवृद्धि दिने दिने ॥ ३४ ॥ इति ॥

भावार्थः भृगुजी बोले – हे पुत्र! इस कुण्डली का फलादेश सुनो। जिस जातक की जन्म कुण्डली में मिथुन राशि के राहु-शनि, सिंह के गुरु तथा धनु के केतु हों तो 'अमल योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला बालक अपनी आयु के प्रथम वर्ष में ज्वर-रोगी रहेगा। दूसरे वर्ष में उदर-पीड़ा, तीसरे में गुदा-पीड़ा तथा माता को कष्ट होगा। ४ से ८ वर्ष की आयु में बालक विद्याध्ययन आरंभ करेगा। इसकी बातों से गुरु प्रसन्न रहेंगे तथा यह प्रेम पूर्वक पढ़ेगा भी। पिछला पाठ भूल का अगला पढ़ेगा। इसके पिता पूर्व दिशा की यात्रा से धन-लाभ करेंगे। ९ से १६ वर्ष की आयु तक विद्या वृद्धि होगी। घर में विवाहोत्सव आदि मंगल कार्य होंगे तथा सम्पत्ति की वृद्धि होगी। रत्नाभूषणों का लाभ होगा। नवीन वस्त्र तथा वाहन का सुख होगा। भाई-बहिन का सुख होगा, माता को कष्ट होगा, परन्तु धन-दान से शान्ति मिलेगी। १७ से २५ वर्ष की आयु में राजद्वार से सम्मान एवं पुरस्कार की प्राप्ति होगी। इसी अवधि में शरीर में कोई गुप्त-रोग होगा, शरीर कृश बनेगा तथा सहवास के समय स्त्री की तृप्ति नहीं कर पायेगा। बाद में धन-धान्य का तथा श्रेष्ठ सन्तान का लाभ होगा। २६ से ३७ वर्ष की आयु में, घर में पुत्रोत्सव हों, परन्तु सन्तान अल्पजीवी होंगी। पुत्र-कष्ट के कारण चिन्तायें बढ़ेंगी। पंचमभाव में पापग्रह की स्थिति अथवा दृष्टि से सन्तान-नाशक योग बनता है। ३८ से ४१ वर्ष की आयु में उत्सव वृद्धि एवं यश-वृद्धि होगी। पुत्र-पौत्र के विवाह में अथवा पुत्रजन्मोत्सव के कार्य में धन का विशेष व्यय होगा। पुत्र को कुछ कष्ट होना भी संभव है, जो दान-धर्म करने से दूर हो जाएगा। उच्च-पद, मान-प्रतिष्ठा एवं धन-सम्पत्ति की वृद्धि के साथ घर में मंगलाचार होंगे। नवीन

स्त्रियों के समागम तथा शुभ-कार्य में धन खर्च होगा। ४२ से ४८ वर्ष की आयु में पुण्य-कर्म करने से सब प्रकार के सुख प्राप्त होंगे। ईश्वराराधन एवं दान-पुण्य में बुद्धि लगी रहेगी तीर्थ में देव-दर्शन कर, शरीर को पवित्रता प्राप्त होगी। सन्तान, प्रतिष्ठा एवं यश की वृद्धि होगी। ४९ से ५५ वर्ष की आयु में अनेक लाभ, ग्राम, उपवन, वाहन आदि का सुख मिलेगा। लोक में जितनी प्रतिष्ठा होगी यथार्थ में उतना कोष नहीं होगा। जीवन आनन्द से व्यतीत होगा। पुत्र आज्ञाकारी होंगे। सेवक, चौपाये तथा वाहनों का सुख मिलता रहेगा। ५६ से ६५ वर्ष की आयु में तीन पुत्रों का तथा कन्या का सुख स्थिर बना रहेगा। अयत्न से विपरीत फल होगा तथा धन-हानि होगी। व्यापार में लाभ होगा। ६६ वर्ष की आयु में पुण्य के प्रभाव से समस्त इच्छाऐं पूरी होकर, कृष्णपक्ष में मृत्यु होना संभव है। अपने पुण्य के कारण यह अगले जन्म में राजकुल में उत्पन्न होगा। हे वत्स! अब इसके पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनो। पिछले जन्म में यह वैश्य कुल में जन्मा था। क्षत्री तथा धर्मात्मा भी था। इसकी चम्पावती नामक पत्नी सुन्दर नेत्रों वाली थी। यह अन्न का व्यवसाय करता था। एक बार पृथ्वी पर भारी अकाल पड़ा। उस समय एक ब्राह्मण-पुत्र इसके पास अन्न की याचना करने के लिए पहुँचा। परन्तु उस समय इसकी बुद्धि ऐसी भ्रष्ट हुई कि इसने उस विप्र-बालक को अन्न न देकर, क्रोध में भरकर लाठी-प्रहार से मार डाला। अपने पुत्र की इस प्रकार मृत्यु देखकर ब्राह्मण ने यह शाप दिया कि तुझे भी सन्तान का सुख प्राप्त नहीं होगा। उस शाप के कारण इसे अपनी अनेक सन्तानों की मृत्यु का दुःख भोगना पड़ेगा। यह सुनकर शुक ने पूछा - हे पिता! उस शाप को दूर करने के लिए क्या प्रायश्चित्त करना उचि

-त है। यह आप मुझे सुनाने की कृपा करें। भृगुजी बोले- आठ माशा स्वर्ण की प्रतिमा बनवा कर, उसपर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे। फिर उसे गंगाजल से स्नान करवा कर, घृतपूरित पात्र में रखकर किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान करे तो इस उपाय से सन्तान-कष्ट दूर होगा तथा दीर्घजीवी पुत्रों की प्राप्ति होगी।। इति शुभम्।।

ॐ भृगुउवाच।। शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्म पत्रिका।। कन्याराशिगतो जीवो मिथुनस्थ भवेत् शनिः। कर्क राशि गते राहु मकरे च शिखी भवेत्। सात्विकी योग उत्पंनां अन्य वार्ता वदाम्यहम्।।१-२।। प्रथमाऽब्दे ह्रगं पीड़ा द्वितीये दंत पीड़नं। तृतीयाब्दे चतुर्थेऽपि च सहोदर तु संभवः।।३।। मातृपीड़ा भवेत् पुत्रः पिता चिन्तातुरो भवेत्। धन लाभ न सन्देहो भूमि लाभं तथैव च।।४।। प्राप्नोतु पंचमे वर्षे यावद्वर्ण ष्टमे भवेत्। पितुर्लाभ भवेत् एवं मंगलं गृहमागतम्।।५।। भ्रातृ योगो तथा भगनी विद्यारंभ शुभं भवेत्। व्रण रोग विजानीयात् औषधैः शान्ति जायते।।६।। धन धान्यादि लाभं च भवेत्पित्र दिने दिने। पितुर्धनं शुभं कार्ये व्ययं याति न संशयः।।७।। अष्टमे भवते कष्टं वातपित्तोद्भवे

३ श.	२ मं.	१ सू. बु.	१२ शु.
४ रा.			११ चं.
५	७	१० के.	९
६ वृ.	८		

शृणु। अष्टमेशं च पूजाश्च महामृत्युञ्जयं जपेत्।।८।। एनोपायेन भो पुत्रः सर्व रोग विनश्यति। अंकुवर्षात्समारभ्य यावत्षोडश वर्ष गे।।९।। गुप्त चिन्ता पितुश्चित्ते गुप्तखेदो तथैव च। सम्ब-न्ध योगो सम्प्राप्तः यथा लाभं तथा व्ययं।।१०।। वृद्ध मृत्यु भवेत् कश्चित् कुटुम्बेषु न संशयः। पुनर्व्याधि क्षयं याति धनवृद्धि दिने दिने। अपि शत्रुमेक समुत्पन्नं राजद्वारे जयं भवेत्।।११।। पूर्ण सौख्यं भवेत्पुत्र नान्यथा वचनं मम। पुत्रं वा यदि चतुर्दि... शर ... ।।१२।।

भृ० सं० ९१०

भा० टी०

वा कन्या लक्ष्मी रूप समुद्भवा ॥२३॥ धन धान्य समृद्धिं च मङ्गले च धनं व्ययं । ऋतु युग्म गते वर्षे शर वह्नि गतेऽपि च ॥२४॥ मान कीर्ति प्रवृद्धिस्यात् ज्ञानवृद्धि तथैव च । सुता सुत सुखं लाभं वर्द्धयन्ति दिने दिने ॥२५॥ तीर्थ यात्रा विजानीयात् दैवभक्ति समन्वितः । मन्दिरेक समारम्भ कूपा-रामसमन्वितः ॥२६॥ नाना भोग समायुक्ता नाना द्रव्य समाकुलः । गुदारिष्टं भवेद्देहे औषधेन विनश्यति ॥२७॥ रस वह्नि गते वर्षे शरवेदाऽब्दगेऽपि वा । कुशलं सर्व कार्येषु राजद्वारे धनागमः ॥२८ व्यापारेण भवेल्लाभं धनाढ्यं भवते नरः । भार्या अहय पतिभक्ता लक्ष्मी रूपा न संशयः ॥२९॥ धर्म कर्म समायुक्तः देवाराधन तत्परा । कन्या योग विशेषेण पुत्र यत्नेन जायते ॥२०॥ ऋतुवेदगते वर्षे शरबाणगतेऽपि वा । वाहनादि सुखं ज्ञेयं सर्व भोग्यं धनं लभेत् ॥२१॥ मान कीर्ति प्रवृद्धिश्च ज्ञान बुद्धिस्तथैव च । केचित्काले भवेत् चिन्ता पुनः शान्ति प्रजायते ॥२२॥ धन धान्य समृद्धिश्च मंगले च धनं व्ययं । रस बाण गते वर्षे वह्नि षष्ठगतेऽपि च ॥२३॥ शरीरे जायते पीड़ा औषधेन न शाम्यः । गायत्री मन्त्र जाप्येन लक्षमेकं सपादकं ॥२४॥ दशांशे हवनं कृत्वा तर्पयेन्नाद्दशांशके । सर्व रोग प्रशमनं ज्ञानवृद्धिस्तथैव च ॥२५॥ राजद्वारे भयं किंचित्पुनर्लब्धि न संशयः । वेद षष्ट गते वर्षे नन्द षष्टाब्दगेऽपि वा ॥२६॥ पुत्रपौत्र सुखं लाभं वर्द्धयन्ति दिने दिने । तीर्थ यात्रा विजानी-यात् दैवभक्ति समन्विता ॥२७॥ व्योम सप्तमिते वर्षे देहपीडा प्रजायते । श्वास कास समायुक्ता देहकम्प पुनर्भवेत् ॥२८॥ ईश्वराराधने प्रीतिः पंचतत्त्व विलीयते । अग्रजन्मे सुपुण्येन नृपो द्विज महामति ॥२९॥ मोक्षपात्र भवेत्तत्रः सर्वेषां च सुपूजितः । पूर्वजन्मस्य गाथां त्वं शृणु पुत्र महामते ॥३०॥ पूर्वे तीर्थेगुरौ भक्ति कृते चान्द्रायणादिकम् । अग्निहोत्रादिकं कर्म कृत्वा च तेन जन्मनि ॥३१॥ गौरश्चपल वक्ता च दाता भोक्ता सुखी नरः । धनी मानी गुणी शूरो नीतिज्ञो

भृ० सं० २२७

गुरु सेवक: ॥ 32॥ शोभनाङ्: विशालाक्षो वात पित्त समन्वित: । कन्या योग विशेषेण पुत्र यत्नेन जायते
॥ ३३॥ शुक्र उवाच॥ केनोपायेन भो तात: पुत्र लाभ भवेत् इमाम् । तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि कथयस्व
महामुने ॥ ३४॥ भृगुउवाच॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि येन वंश प्रवर्द्धति: । सुतेशो पूजनं कृत्वा जपेत्
गोपाल मन्त्रकम् ॥ ३५॥ अस्योपायेन लभते दीर्घजीवी च सन्तति: । पुत्र पौत्र समायुक्तो भविष्यति
न संशय: ॥ ३६॥ इति ॥

भा० टी०

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फलादेश
सुनो। जिस जातक की जन्म कुण्डली में कन्या राशि में गुरु, कर्क राशि में राहु, मिथुन राशि में शनि
तथा मकर राशि में केतु हो तो 'सात्विक योग' होता है। इस जन्मकुण्डली वाले जातक का जीवन फला-
-देश इस प्रकार है- प्रथम वर्ष में नेत्र-पीड़ा, द्वितीय वर्ष में दन्त-पीड़ा होगी तथा तीसरे अथवा
चौथे वर्ष में किसी भाई-बहिन का जन्म होगा। उसी समय माता को कष्ट तथा पिता को चिन्ता
होगी। ५ से ८ वर्ष की आयु में पिता को धन तथा भूमि का लाभ होगा। घर में मंगल कार्य हो।
भाई अथवा बहिन का जन्म हो। विद्यारंभ भी इसी अवधि में होगा। व्रण हो और वह औषधोप-
-चार से शमन हो। पिता को धन-धान्यादि का लाभ तथा शुभ कार्य में धन व्यय होगा। आठ
वर्ष की आयु में वात-पित्त प्रकोप से कष्ट भी होगा। अष्टमेश का पूजन तथा महामृत्युंजय मंत्र
का जप करने से रोग दूर होगा। ९ से १६ वर्ष की आयु में पिता के चित्त में गुप्त-चिन्ता
रहेगी तथा खेद होगा। जैसा लाभ, वैसा ही व्यय होता रहेगा। कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु
होगी। एक शत्रु उत्पन्न होगा। राजद्वार से विजय मिलेगी। फिर शत्रु का नाश होगा तथा
दिन-प्रति दिन धन की वृद्धि होगी। १७ से २५ वर्ष की आयु में विवाह तथा अन्य सब प्रकार

के सुख प्राप्त होंगे। पुत्र तथा लक्ष्मीरूपा कन्या की प्राप्ति होगी। धन-धान्य की वृद्धि तथा मांग-
-लिक कार्यों में व्यय होगा। २६ से ३५ वर्ष की आयु में मान-कीर्ति की वृद्धि होगी तथा ज्ञान
एवं बुद्धि में भी तीव्रता आयेगी। कन्या-पुत्र का सुख होगा। देवता की भक्ति से युक्त तीर्थ-
यात्रा होगी। मन्दिर, कूप अथवा उपवन बनायेगा। अनेक प्रकार के भोगों से युक्त होगा,
परन्तु इसी अवधि में शरीर में अरिष्ट होगा, जो औषध-सेवन से शान्त होगा। ३६ से
४५ वर्ष की आयु में सब कार्यों में सफलता तथा राजद्वार से धन का लाभ होगा। यह जातक
व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करेगा। स्त्री लक्ष्मी के समान पतिव्रता एवं सुन्दरी होगी। धर्म-
कर्म में तत्पर रहने के कारण पति-पत्नी सुख भोगेंगे। कन्याओं का योग अधिक है। पुत्र
प्रयत्न से होगा। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में वाहन-सुख प्राप्त होगा। गुप्त-धन प्राप्ति की
भी संभावना है। मान, कीर्ति, ज्ञान तथा प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। कुछ समय के लिए चिन्तायें
भी आयेंगी, परन्तु बाद में सब समस्यायें सुलझ कर शान्ति मिलेगी। धन-धान्य की वृद्धि
तथा मांगलिक कार्यों में खर्च होगा। ५६ से ६३ वर्ष की आयु में शरीर-पीड़ा होगी, जो औष-
-ध सेवन से शान्त न होगी। उस समय सवालक्ष गायत्री मन्त्र का जप करना अथवा कराना
चाहिए तथा दशांश हवन और हवन का दशांश तर्पण करना चाहिए। इससे रोग नष्ट होंगे
तथा धन, ज्ञान, बुद्धि की वृद्धि होगी। इसी अवधि में राजद्वार से भय प्राप्ति का भी योग है।
बाद में लाभ होगा। ६४ से ६९ वर्ष की आयु तक पुत्र-पौत्रों का सुख मिलेगा एवं दिन-दिन
लाभ बढ़ेगा। देवभक्ति युक्त तीर्थ-यात्रा होगी। ७० वर्ष की आयु में शरीर-पीड़ा होगी। श्वास-
कास [illegible] होगी। इसी अवधि में [illegible]

करते हुए मृत्यु होना संभव है। अगले जन्म में यह जातक अपने पुण्य-प्रताप से ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर बुद्धिमान्, राज्यपूज्य तथा मोक्षभागी होगा। यह पूर्व जन्म में गुरुभक्त ब्राह्मण था तथा इसने चान्द्रायणादि कठिन व्रत भी किये, जिसके प्रभाव से इस जन्म में यह सुन्दर, स्वरूपवान् तथा नीतिज्ञ हुआ है। परन्तु इसे पुत्र-सुख अल्प है। कन्या-सुख अधिक है, अतः पुत्र-सुख-प्राप्ति के लिए इसे पंचमेश का पूजन तथा सन्तानगोपाल मन्त्र का जप करना चाहिए। इससे अभीष्ट सिद्धि होगी॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ अस्य जन्म फलं पुत्र शृणु ब्रूयात् सविस्तरम्॥

७	६ सू. गु.
बु. शु. ५	४ रा.
८	३ मं. रा.
९ के.	१२ चं.
१०	२
११	१

कन्या जीवे धने केतुः मिथुने राहुर्यदा भवेत्। शनौ कर्कगते जन्मे सतां सतं वदाम्यहम्॥१॥ चन्द्र अल्प महाकष्टं ज्ञान प्रीतिश्च चिन्तनम्। मनेच्छा पूजितो वत्स अनुष्ठानं सुयत्नतः॥२॥ व्रणपीड़ा समुत्पन्नो निजाङ्गे नाऽत्र संशयः। सर्व कार्याणि सिद्ध्यन्ति पुत्र सुख विनश्यति॥३॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे दन्तरोगो ज्वरस्तथा। तृतीये व्रण व्याधिश्च मातृकष्ट न संशयः॥४॥ चतुर्थाब्दे च सम्प्राप्ते मातृपीड़ा पुनः पुनः। पंचमाब्द पर्यन्तं विद्यारंभं भवेत् शुभः॥५॥ पितुर्लाभ न सन्देहो भ्रातृयोगश्च जायते। किंचिद्दारिद्र्य संजातो तुलादानेन शान्तयः॥६॥ नवमांरि नवमाब्दे वर्षे गृहे मंगलगायनः। विवाहोत्सव सञ्जातो सुवस्त्रं भूषणं धनम्॥७॥ नवमादि विद्यावृद्धि विजानीयात् राजद्वारेऽति मानं च॥८॥ मुनिचन्द्र गते समागम्य गीतवाद्य मनोहरम्। विंश वर्ष यथाक्रमम्। गर्भयोग विजानीयात् बालजन्म भवेत्तात॥९॥ पत्नीरोग समुत्पन्नम् वर्षे विंश वर्ष यथाक्रमम्। ... पूजनं ... सर्वं ... पर॥१०॥ धन लाभ न सन्देहो मान

वृद्धि दिने दिने। चन्तु नेत्र समारभ्य यावदंकदृगास्तथा ॥११॥ दैवयोगेन मित्रैकं कस्मादागमनं भवेत्।
तेन सम्मति यो पुत्र: यात्रा कश्चित् पुरे भवेत् ॥१२॥ तस्माद्धन प्रवृद्धिस्यात् राजद्वारे विशेषत:। व्यो-
-म वह्नि गते वर्षे यावदंकत्रयं सुत: ॥१३॥ मणिमुक्ता प्रवालञ्च लभ्यते नाऽत्र संशय:। विवाहोत्स-
-व कार्येषु धन धान्य व्ययं भवेत् ॥१४॥ सुता पुत्र सुखं सर्वं धर्ममार्गे धन: व्ययम्। लाभंच
विविधान् कार्यान् धनसम्पत्समृद्धिवान् ॥१५॥ सिद्ध्यन्ति सर्व कार्याणि महालाभ प्रभावत:। शरी-
-रे दारुणं कष्टं निमग्नश्चिन्तनार्णवे ॥१६॥ औषधिं सेवनं कृत्वा रोगशान्ति भवेत् ध्रुवम्।
दिने मासे सुखं नित्यं मंगलंच महोत्सवे ॥१७॥ व्योम वेदमिते वर्षे नागे युग्मगतस्तत:। शत्रु-
-मेक समुत्पन्न: राजद्वारे उपाधय: ॥१८॥ परिणामे जयं प्राप्य शत्रुनाश न संशय:। ग्रामभूमि
भवेल्लाभं रत्नलाभं न संशय: ॥१९॥ अङ्क वेदाब्दगे वर्षे शरबाणगतेऽपि च। पुत्र पौत्र
सुखं लाभं वर्धयन्ति दिने दिने ॥20॥ सर्व रोग विनिर्मुक्त: देवाराधनमाचरेत्। तीर्थयात्रा
विजानीयात् देवभक्ति समन्वित: ॥21॥ श्रुति स्मृति रत: श्रीमान् धर्म मार्गे मति: स्थिर:।
रसबाणगते वर्षे ऋषिवह्नि गतेऽपि च ॥22॥ सर्व कर्म परित्याग देवार्चनि सदा करेत्।
विवाहादि व्ययो दीर्घ: कुल कीर्ति प्रकाशक: ॥23॥ पुत्र भाग्योदयं भूप साफल्यं सर्व वैभव:
पौत्र जन्म महोत्साहे जायते चान्यवत्सरे ॥24॥ नाग वह्नि गते वर्षे देह पीडा भविष्यति। श्वा-
-सकास समायुक्तो देहकष्ट पुनर्भवेत् ॥25॥ समीपे पुण्यतीर्थेषु देहत्याग न संशय:। नर्मदा
दक्षिणे पार्श्वे अमरावति च विश्रुत: ॥26॥ तद्गेहे च भवेज्जन्म देशादेशान्तरे व्रज: ॥27॥
शुक्र उवाच ॥ किं कर्मानुसारेण पुत्रसुख विनश्यति। पूर्वजन्म कथा तात कथयं मम भवान्ध्या: ॥28॥
भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्वपापञ्च कारणम्। यवन वंश कुले जन्म आनन्दं भूमिमण्डले

२९।। लोके लक्षपति: ख्यातो अति तेजो प्रतिष्ठया। बहुजीव वधं कृत्वा निजभक्षोपकारणम् ।।३०।।
तस्मिन् पाप प्रभावेण वंश वृद्धि न दृश्यते।। शुक उवाच।। किं दानं कस्य पूजा किं मन्त्र किं
जापकं तथा। प्रायश्चित्त भवेत् अस्य वंशवृद्धि भविष्यति।।३१-३२।। भृगु उवाच।। स्वर्ण-
-स्य प्रतिमा कार्या युग्म टंक प्रमाणकम्। विष्णु धेनु लिखेन्मूर्तिं शुद्धचित्तं च शान्तये।।३३।।
रक्त चंदन मिश्राणि गंगाजल च स्नानकं। संकल्पं स ददेत् विप्रं पूर्व पापं विनश्यति ।।३४।।
इति शुभम्।।

भावार्थ।। भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस जन्मकुण्डली का फलादेश सुनो।
कन्या राशि के गुरु, धनुराशि के केतु, मिथुन राशि के राहु तथा कर्क राशि के शनि जन्म के
समय हों तो जातक को यह फल मिलता है कि पहले तथा दूसरे वर्ष में दाँत एवं ज्वर की
पीड़ा होती है। ३ वर्ष की आयु में व्रण-व्याधि तथा माता को कष्ट, चार वर्ष की आयु में माता को
विशेष पीड़ा, ५ से ८ वर्ष की आयु में विद्यारम्भ तथा पिता को लाभ एवं भाई का जन्म होता
है। ९ से १६ वर्ष की आयु में घर में मंगलाचार हों, विवाहोत्सव एवं सुन्दर वस्त्राभूषणों में
पिता का धन खर्च हो। नवीन स्त्री का समागम तथा गीत-वाद्य हों। विद्या बुद्धि की वृद्धि हो।
राजद्वार में मान बढ़े। १७ से २० वर्ष की आयु में स्त्री गर्भवती हो तथा बालक का जन्म हो,
फिर स्त्री को रोग उत्पन्न होकर गर्भ नष्ट हो। महामृत्युंजय मंत्र का जप तथा शिवार्चन कर-
-ने से स्त्री का कष्ट दूर हो। धन लाभ तथा नित्य प्रति मान-वृद्धि हो। २१ से २९ वर्ष की आयु
में अचानक किसी मित्र का आगमन हो और उसकी सम्मति से किसी नगर की यात्रा हो, जहाँ
से धन का लाभ हो तथा राजद्वार से भी विशेष लाभ हो। ३० से ३९ वर्ष की आयु तक

मुक्ता-मणि आदि की प्राप्ति हो। कुल में विवाहोत्सव तथा अन्य मांगलिक कार्य हों, जिनमें धन खर्च हो। कन्या तथा पुत्र का सुख हो। धार्मिक कृत्यों में व्यय हो। अनेक प्रकार के कार्यों से लाभ भी हो। धन-सम्पत्ति की वृद्धि हो। सभी कार्य सिद्ध हों। दिन-दिन उत्सव तथा मङ्गल होते रहें। ४० से ४८ वर्ष की आयु अवधि में एक शत्रु उत्पन्न हो तथा राजद्वार से भी कोई परेशानी हो, परन्तु परिणाम में जय हो तथा शत्रु का नाश हो। ग्राम, भूमि तथा रत्न का लाभ हो। ४९ से ५५ वर्ष की आयु में पुत्र-पौत्रादि के सुख में वृद्धि हो। देवाराधन से रोग-मुक्ति हो। तीर्थयात्रा एवं देव-भक्ति के कार्य हों। धर्म-मार्ग में मति स्थिर हो तथा श्रुति-स्मृति में मन लगे। ५६ से ६७ वर्ष की आयु में सांसारिक-कर्मों को त्याग कर केवल देवार्चन में ही आसक्ति बनी रहे। सम्पूर्ण वैभव सफल हो। उत्साह की वृद्धि हो। ६८ वर्ष की आयु में शरीर-पीड़ा हो तथा किसी समीपवर्ती तीर्थस्थान में मृत्यु हो। अगले जन्म में यह जातक अमरावती के समीप नर्मदा नदी के दक्षिण भाग में जन्म लेकर देश-देशान्तरों में प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस पाप के कारण इसे पुत्र-सुख का अल्प लाभ होगा? भृगुजी बोले - हे तात! पहले यह यवन वंश में जन्मा था। यह बड़ा प्रसिद्ध, तेजस्वी, लक्षाधिपति तथा प्रतिष्ठित था, परन्तु इसने अपने खाने के लिए अनेक पक्षियों का वध किया, उसी पाप के प्रभाव से इसे सन्तान-सुख अल्प प्राप्त होगा। शुक्र बोले - हे प्रभो! किस मन्त्र का जप अथवा किस पूजा से इसका पाप नष्ट होगा? भृगुजी ने कहा — दो टंक प्रमाण स्वर्ण-प्रतिमा बनाकर उसमें विष्णु भगवान् की मूर्ति तथा गाय का चित्र लाल चंदन से बनाये फिर उसे गंगाजल से स्नान कराकर किसी ब्राह्मण को संकल्प करदे तो यह अपने पूर्व

जन्म के पाप से छूट जाएगा तथा इसे पर्याप्त सन्तान-सुख भी मिलेगा ।। इतिशुभम् ।।

ॐ भृगु उवाच ।। अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि फलादेशोऽस्य कुण्डलीम् ।। सावधानेन त्वं पुत्र शृणु सर्व मयोदितम् ।। १ ।। तुला राशि गते जीवे कर्क राशि गते शनौ । मिथुने राहुर्धने केतु: तामसो योग उच्यते ।। २ ।। आद्य वर्षे द्वितीये च मङ्गलं विविधोत्सवम् । मासे वर्षे सुखं जातं बाल क्रीड़ा तथा क्रमः ।। ३ ।। शरीरे कष्टमुत्पन्नो उपचारेण शांतये । तृतीये वेद वाणाब्दे श्रेयवृद्धिः सुयत्नतः ।। ४ ।। रसेऽब्दे शून्य चन्द्रे च शिशु वृद्धि पुनः पुनः । विद्याभ्यासरतो न्यूनं क्रीड़ने मति तत्परः ।। ५ ।। शशिसोममिते वर्षे तथांके चेन्दु मध्यमा । तात चिन्ता विशेषेण विवाहो मंगलं कुले ।। ६ ।। दान मन्त्र सुपुण्येन सर्वसौख्यान्वितो जनः । प्राप्ते तु विंश वर्षे च मार वाण तथान्तरे । ७ ।। सुता पुत्र समायुक्तो द्रव्य लाभ च मोदिता । श्रेयो माने प्रतिष्ठां च मोदते पुण्य वैभवा ।। ८ ।। अपत्ने मानसी चिन्ता विविधं क्लेश भाजनः । बट नेत्राब्दत्रिंशोच्च तथोरन्तर्महत्सुखम् ।। १० ।। धन धान्य सुतं लाभं कीर्तिवृद्धि दिने दिने । भूमिरत्नादि लाभञ्च मान वृद्धिर्नसंशयः ।। ११ ।। शशित्रिंशान्दमारभ्य यावद्वाण त्रयं सुतः । गृहे मङ्गलकार्यं च यात्रा कश्चित्पुरे भवेत् ।। १२ ।। तस्माद्धन प्रवृद्धिस्यात् राजद्वारे विशेषतः । कन्या पुत्र विवाहे च व्ययं भवति नान्यतम् ।। १३ ।। रस त्रिंशगते वर्षे मार वेदाऽब्द गेऽपि वा । सर्व सौख्य समायुक्तो भाग्यवान प्रशंसितः ।। १४ ।। मान कीर्ति विशेषेण महत्वोपद माप्नुयात् । सर्व चिन्ताविनिर्मुक्तो अपत्ने वात पीडितम् ।। १५ ।। सुता पुत्र समुत्पन्नो मंगलं हि दिने दिने । पत्नी प्रीति विशेषेण अन्यत्रो प्रेम सम्भवः ।। १६ ।। नवनारि प्रयत्नत्वं रूप यौवन विह्वल । लाभ

९ के.	बु. शु. सू. ८	७ वृ.	६
१०	११	५	
१२	२	४ श. मं.	
१ चं.		३ रा.	

कृत्यविशेषेण धनवृद्धि दिने दिने ॥१७॥ ऋतु वेद गते वर्षे मारवाण गतेऽपि च। नृपद्वारं महत्-
-लाभं सुकीर्तिश्चापि मङ्गलम् ॥१८॥ अकस्माज्जायते खेदं विदेशे भय दारुणम्। ताम्रकुंभघृतं
दानं गुप्त स्वर्ण यथाविधि ॥१९॥ तेन कष्ट विनश्यंति सद्यः सौख्य लभेन्नरः। रसवाणं
गतेऽब्दे तु वेद षष्ठ्योऽब्दगेऽपि च ॥२०॥ चित्त चिन्ता विनश्यन्ति पुत्र पत्निश्च क्रीड़या। व्यय
लाभ विशेषेण उद्वाहादि महोत्सवे ॥२१॥ कुटुम्बा महिषी गावं पुत्र कांता मनोहरा। महत्की-
र्त्याधिकारी च क्षुधान्नं तु निर्बल: ॥२२॥ सर्वरोग विनाशाय देवाराधनमाचरेत्। पुत्र पौत्र
सुखं लाभं वर्द्धयन्ति दिने दिने ॥२३॥ मार षष्ठ गते वर्षे नागषष्ठमिते तथा। तीर्थयात्रा विज्ञा-
-नीयात् देव भक्ति समन्विता ॥२४॥ श्वास कास समायुक्तो देहकष्ट पुनर्भवेत्। सर्व कर्म
परित्यज्य देवभक्ति च सौख्यदा ॥२५॥ अङ्क वष्टमिते वर्षे आयु पूर्णं सुयत्नतः। आश्विने
कृष्ण पंचम्यां निधनमस्य जायते ॥२६॥ पुनर्द्विज कुले जन्म दान मन्त्रं सुभक्तितः। विद्या
विनय सम्पन्नो तेजस्वी शुचि धार्मिकः ॥२७॥ ईश्वरं कृपयात्पुण्यम् प्राप्यते मोक्षसाध-
नम्। पूर्वजन्मस्य वृत्तान्तः कथ्यतेत्वं शृणुं मया ॥२८॥ पूर्वे तीर्थे द्विजोऽयं च बहुद्रव्य
समन्वितम्। विष्णु भक्तिरतो नित्यं अन्नदान कृतं महत् ॥२९॥ विनापराधयः कश्चिद्
वैश्यं हत्वा प्रभुः कवेः। प्रायश्चित्त परं तस्य घोर पाप विनश्यति ॥३०॥ सुवर्णपिण्ड दानं च
सपत्नं ब्रह्म देवताम्। ब्राह्मणाय विधिज्ञाय पूजिताय निवेदयेत् ॥३१॥ एतद्दान प्रभावेण सर्व
कार्याणि सिद्ध्येत्। पुत्र सौख्यं भवेल्लोके सर्वसुखमवाप्नुयात् ॥३२॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस जातक की कुण्डली का फलादेश
सुनो। यदि तुलाराशि में गुरु, कर्क राशि में शनि, मिथुन राशि में राहु तथा धनु राशि में केतु

हो तो 'तामस' नामक योग होता है। इस जातक के जन्म से दो वर्ष तक घर में अनेक प्रकार के
मङ्गल-उत्सव हों तथा बालक सुखी और क्रीड़ा-निमग्न बना रहेगा। शरीर में एक तरह का कष्ट
भी होगा, जो उपचार से शान्त हो जाएगा। ३ से ५ वर्ष तक सुयत्न से कल्याण होगा तथा १० वर्ष
की आयु तक बालक की वृद्धि होती रहेगी। विद्याध्ययन में कम तथा खेल-कूद में मन अधिक
लगेगा। ११ से १९ वर्ष की आयु में कुल में चिन्ता, विवाह तथा मंगल कार्यों के योग हैं। २० से २५ वर्ष
की आयु में जातक को कन्या तथा पुत्र की प्राप्ति हो। आनन्द तथा अन्य वस्तुओं का लाभ हो। मान-प्रति-
ष्ठा में वृद्धि हो। आनन्द-वैभव बढ़ें। अयत्न से चिन्ताएँ उत्पन्न हों। अनेक क्लेश प्राप्त हों। २६ से
३० वर्ष की आयु में विशेष सुख मिले। धन-धान्य पुत्रादि का लाभ हो। कीर्ति बढ़े। भूमि तथा
रत्न का लाभ हो। मान-वृद्धि हो। ३१ से ३५ वर्ष की आयु में घर में मंगल कार्य हों। धन-वृद्धि हो,
विशेष कर राजद्वार से लाभ हो। कन्या-पुत्र के विवाह में खर्च हो। ३६ से ४५ वर्ष तक सुख एवं
सौभाग्य की वृद्धि हो। सब चिन्ताओं का नाश हो। अयत्न करने पर वात-पीड़ा हो। कन्या तथा
पुत्रों का जन्म हो, पत्नी से प्रेम बढ़े। पर-स्त्री से भी प्रेम होना संभव है। नवीना स्त्रियों के
रूप-यौवन में विह्वल रहे। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में राजद्वार से विशेष लाभ हो तथा कीर्ति
बढ़े। फिर अचानक दुःख प्राप्त हो तथा विदेश में विशेष भय हो। ताँबे के कलश में घी
भर कर, उसमें गुप्त रूप से स्वर्ण रख कर यथाविधि ब्राह्मण को दान करने से कष्ट दूर
हो। ५६ से ६४ वर्षों की आयु में चिन्ता दूर हो तथा स्त्री-पुत्रों में रति रहे। लाभ से व्यय
अधिक रहे। विवाह आदि उत्सवों में धन खर्च हो। दुधारू पशुओं का सुख प्राप्त हो।
महान् कीर्ति मिले। सुख कम लगे तथा शरीर निर्बल हो। फिर रोग-मुक्ति हो। देवाराधन

करने से पुत्र एवं पौत्रों के सुख में वृद्धि हो। ६५ से ६८ वर्ष की आयु में देव-भक्ति तथा तीर्थ
यात्रा हो। श्वास-कास तथा शरीर-कष्ट आदि कष्ट हों। ६९ वर्ष की आयु में निधन होना
संभव है। आश्विन कृष्णा पंचमी को देहावसान हो। हे पुत्र! पुण्य-प्रभाव से यह जातक
अगले जन्म में ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हो कर विद्वान्, विनयी, तेजस्वी, पवित्र तथा धर्मात्मा
होगा एवं शुभ कर्मों के फलस्वरूप मोक्ष पायेगा। हे शुक्र! पूर्व जन्म में भी यह जातक एक
तीर्थ क्षेत्र का निवासी तथा परम धनवान् था। यह बड़ा दानी तथा विष्णु-भक्त था, परन्तु एक
बार इसने क्रोधावेश में एक निरपराध वैश्य को मारा था, उस पाप से इस जन्म में इसे
कुछ कष्ट भी उठाने पड़ेंगे। उस पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए इसे एक स्वर्ण-पत्र पर
ब्राह्मण का चित्र अंकित कर, विधि पूर्वक पूजन करने के उपरान्त किसी ब्राह्मण को दान
करना चाहिए। इस दान के प्रभाव से पूर्व-जन्म के पाप का प्रायश्चित्त हो जाएगा तथा
सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। धन, स्त्री, पुत्रादि का भी लाभ होगा।। इति शुभम्।।

ॐ भृगु उवाच। अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि फलादेशस्तु कुण्डलीम्। शृणु पुत्रश्च
जातोऽयं शुभाशुभ त्रिजन्मकम्।। मिथुने राहुशनिर्युक्तो तुला राशिर्गुरौ यदा। धनराशिर्गते केतुः
रजनी योग उच्यते।। प्रथमेऽब्दे हृगं पीड़ा द्वितीये दन्त पीडनम्। तृतीये च चतुर्थे वा भ्रातृभगनी
समुद्भवा।। १-३।। मातृ पीड़ा न सन्देहो पिता चिन्तातुरो भवेत्। धनलाभं भवेत् भूयः भूमिलाभं
तथैव च।। ४।। प्राप्तेतु पञ्चमे वर्षे यावद्वर्षाष्टमे सुते। विद्यारंभ कृतो बालः मंगलं भवने तथा।।
।। ५।। ज्वर रोग विजानीयात् औषधे शान्ति जायते। धन-धान्यादि लाभं च भवेत् भूरि दिने दिने।।
६।। अंक वर्षे समारभ्य द्वादश षोडश वर्षगे। गुप्तचिन्ता पितुश्चित्ते गुप्तखेदो तथैव च।। ७।।

परञ्च कीर्ति लाभं च धन लाभं न संशयः। किंचित्पीड़ा विजानीयात् पुनः शान्ति स्वयं भवेत् ॥८॥ ऋषिचन्द्राब्द वर्षेषु वेद युग्म तथैव च। पूर्वसञ्चितद्रव्यं तात उद्वाहेच व्ययं भवेत् ॥९॥ तथान्ये शुभ कार्येषु व्ययं बहुधनं भवेत्। वृद्धमृत्युर्भवेत् पुत्रः कुटुम्बेषु न संशयः ॥१०॥ शरयुग्मगते वर्षे युग्म वह्नि तथैव च। गर्भयोगं विजानीयात् दीर्घायुपुत्र संलभेत् ॥११॥ पञ्चमेषु गृहं दानं पूजनं मन्त्र जापकम्। पूर्ण स्त्रौख्यं भवेत्पुत्रः नान्यथा वचनं मम ॥१२॥ शत्रुमेकं समुत्पन्न राजद्वार जयं लभेत्। शत्रुक्षयं भवेत् पुत्रः धन वृद्धि दिने दिने ॥१३॥ गुण वह्निमिते वर्षे अङ्गराम गतेऽपि च। धन धान्य समृद्धिश्च मंगलश्च धनं व्ययः ॥१४॥ उद्वाहे गृह कृपादि द्रव्यं व्यय तथैव च। ऐहे वृद्ध भवेत्पीड़ा औषधेन न शांततिः ॥१५॥ राजद्वारे भयं किंचित्पुनः लब्धि न संशयः। वाहनादि सुखं सर्वं गोष्ठं धन समुद्भव ॥१६॥ व्योम वेदाब्दमारभ्य नागवेद गते तथा। मान कीर्ति प्रवृद्धिश्च ज्ञान वृद्धिस्तथैव च ॥१७॥ पुत्र पौत्र सुखं लाभं वर्द्धयन्ति दिने दिने। सर्वरोग विनिर्मुक्ता देवाराधनमाचरेत् ॥१८॥ मन्दिरेक समारम्भः कूपाराम समन्वितः। विवाहोत्सव कार्येषु धन धान्य व्ययं भवेत् ॥१९॥ वस्त्रं सहर्ष पात्रं च प्राप्तिर्भूषणमुत्तमम्। मणिमुक्ता प्रवालं च लभ्यते नात्र संशयः ॥२०॥ अङ्कवेदाब्दमारभ्य शरपंचमितेऽपि च। तत्रापि धन लाभश्च भूषणं वाहनादिकं ॥२१॥ दानं बहु प्रदातव्यं तस्मिन्देशे न संशयः। विप्र कन्या विवाहे च धनव्यय न संशयः ॥२२॥ रस पंचगते वर्षे वह्निषष्ठ गतेऽपि वा। पुत्र पौत्र सुखं सर्वं धर्ममार्गे धनव्ययम् ॥२३॥ कीर्ति सर्वत्र विख्यातं तस्मिन् देशे न चान्यथा। वेदषष्ठ

११	सू०	६ के०
१२	गु० १० चं० बु०	८
१		७ वृ०
२	४	६
३ शु० रा० मं०		५

गते वर्षे नागषष्ठ गते ऽपि च ॥२४॥ देव दर्शन तीर्थे च पवित्रीक्रियते वपु:। शरीरे कष्ट सम्पन्नो दीर्घचिन्तातुरो भवेत् ॥२५॥ पुण्यकर्मक्रियो जीवं सर्वदा सुखचेष्टितम्। अङ्क षष्ठ गते वर्षे महकष्टं प्रजायते ॥२६॥ श्वास कास समायुक्ता देह कम्प पुनर्भवेत्। समीपे पुण्य तीर्थेषु देहत्याग न संशय: ॥२७॥ शुक्रोवाच॥ यस्मिन्देशे भवेज्जन्म: तत्सर्वं कथय: प्रभो॥ भृगु उवाच॥ नर्मदा दक्षिणे पार्श्वे अमरावति चविश्रुतं। धनधान्य समायुक्ता नाना द्रव्येण संयुत:। तत्रैव जायते पुत्र: नान्यथा वचनं मम ॥२८-२९॥ पूर्वजन्मस्य वृत्तान्तं शृणुपुत्र वदाम्यहम्। शूद्रवंश कुले जन्म महापापी भवेत् तदा। बहुपक्षिवधो जीव: निज भोजन कोक्षया ॥३०-३१॥ महापाप प्रभावेण पुत्र सुखं विनश्यति॥ शुक्रोवाच॥ किं उपायं च कर्तव्यं पक्षीशापं विनश्यते ॥३२॥ भृगु उवाच॥ चतुलक्ष प्रमाणेन गायत्री मंत्र जापकं। ब्राह्मणं भोजनं दानं कुर्वन्ति विधिपूर्वकम्। एवं अनुष्ठान मात्रेण पुत्रसौख्यं भविष्यति ॥३३-३४॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब मैं इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहता हूँ, सुनो। इस जातक को आयु के प्रथम वर्ष में नेत्र पीड़ा तथा द्वितीय वर्ष में दन्त पीड़ा होगी। तीन तथा चार वर्ष की आयु में भाई अथवा बहिन का जन्म हो, माता को पीड़ा तथा पिता को चिन्ता के साथ ही धन-लाभ एवं भूमि लाभ हो। ५ से ८ वर्ष की आयु में विद्यारंभ तथा घर में मंगल-कार्य हों। व्रण की बीमारी हो जो औषधोपचार से शान्त हो। पिता को दिन-प्रतिदिन धन-धान्यादि का लाभ हो। ९ से १६ वर्ष की आयु में पिता के चित्त में गुप्त चिन्ता तथा खेद हो, परन्तु धन एवं कीर्ति में वृद्धि हो। कुछ शारीरिक-कष्ट भी हो, जो स्वयं ही शान्त हो जाय। १७ से २४ वर्ष की आयु में पिता का पूर्व-संचित धन विवाहादि

मंगल कार्यों में व्यय हो। उन्हीं दिनों कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। २५ से ३२ वर्ष की आयु में जातक की पत्नी गर्भवती हो, तथा दीर्घायु पुत्र का लाभ हो। पंचमेश ग्रह का पूजन तथा जप, दान कराने से पुत्र का पूर्ण सुख प्राप्त हो। एक शत्रु भी उत्पन्न हो। राजद्वार से विजय हो तथा शत्रु का नाश होकर दिन-दिन धन की वृद्धि हो। ३३ से ३९ वर्ष की अवधि में धन की वृद्धि हो तथा मंगल कार्यों में व्यय भी हो। विवाह, भवन, कूप, बगीचा आदि का निर्माण हो। घर में किसी वृद्ध को कष्ट हो जो औषधोपचार से दूर न हो सके। राजद्वार से पहले थोड़ा भय, बाद में लाभ हो। वाहन आदि के सुख तथा गुप्त-धन की प्राप्ति हो। ४० से ४८ वर्ष की आयु में मान-कीर्ति, ज्ञान तथा बुद्धि की वृद्धि हो। पुत्र-पौत्र का सुख प्राप्त हो। देवाराधन करते रहने से सब कष्ट-रोग दूर हों। कूप, उपवन सहित नवीन भवन का निर्माण हो। विवाहादि उत्सव कार्यों में धन-व्यय हो। रत्न, वस्त्र, आभूषणादि का लाभ हो। बहुत दान भी दे। ब्राह्मण की कन्या के विवाह में धन खर्च करे। ५६ से ६३ वर्ष की आयु में पुत्र-पौत्रादि का सुख हो तथा धर्म-कर्म में धन खर्च करने के कारण देश में सर्वत्र कीर्ति प्राप्त हो। फिर सब कामों को त्याग कर सदैव देवाराधन में लगा रहे। रात-दिन अहिंसा में प्रीति रहे। ६४ से ६८ वर्ष की आयु तक तीर्थों में देव-दर्शन कर, पुण्य अर्जित करे। फिर शरीर में कष्ट, श्वास, कास, कफ आदि की पीड़ा हो। चिन्तित रहे। ६९ वर्ष की आयु में विशेष कष्ट हो तथा किसी पुण्य क्षेत्र के निकट देह-त्याग करे। शुक्र ने पूछा - हे पिता! इस जातक का अगला जन्म कहाँ होगा? भृगुजी बोले- नर्मदा नदी के दक्षिण भाग में अमरावती के समीप इसका जन्म होगा और यह धन-धान्य से युक्त सुखी रहेगा।

हे पुत्र! अब तुम इसके पूर्व जन्म की कथा सुनो। पिछले जन्म में यह शूद्र कुल में जन्मा था। वहाँ इसने बड़े-बड़े पाप किये तथा अपने भोजन के लिए अनेक पक्षियों का वध किया। उस पाप के कारण इस जन्म में यह प्रायश्चित्त न करने पर पुत्र सुख से वंचित रहेगा। शुक्र ने पूछा- हे प्रभो! इसे क्या प्रायश्चित्त करना चाहिए, सो कहें। भृगुजी बोले- एक लाख गायत्री मंत्र का जप कराके ब्राह्मणों को दान दे तथा भोजन कराये तो इस अनुष्ठान से प्रायश्चित्त होकर इसके पाप नष्ट होंगे तथा पुत्र-सुख की प्राप्ति होगी॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगुरुवाच॥ अस्य जन्म फलादेशं शृणु पुत्र वदाम्यहम्॥

शु. रा. २	१	१२
३ श.	सू.	११
४ मं.		१०
५	७ बृ.	९
६		८ के.

तुलाराशि गते जीवे मिथुने शौरिर्यदा भवेत्। वृश्चिके केतु जन्माङ्के वृषे राहोर्फलं वदेत्॥१॥ प्रथमे क्षितिपे चेन्द दन्तरोग ज्वरस्तथा। तृतीये ज्वर व्याधिश्च मातृ-कष्ट न संशयः॥२॥ भ्रातृभगिनि भवेद्योगो पिता लाभ न संशयः। चतुर्थेऽब्दे च संप्राप्ते मातृपीड़ा प्रजायते॥३॥ औषधेन प्रशांतिस्याद कस्माद्धनमागतः। किंचित्कष्ट भवेद्देहे घृत दानेन शमयति॥४॥ पंचमादष्ट पर्यन्तं विद्यारम्भ भवेत्सुतः। पितृ-र्लाभो न सन्देहो भ्रातृयोगञ्च जायते॥५॥ किञ्चिद्दरिष्ट सञ्जातो तुलादानेन शान्तयः। नवमा षोडशो वर्षे गृहे मङ्गलगायनम्॥६॥ विवाहोत्सव सञ्जातो वस्त्राभूषणये व्ययम्। नव-नारि समागम्य गीतवाद्य मनोहरम्॥७॥ विद्यावृद्धि विजानीयात् राजद्वारेऽति मान च। ऋषि चन्द्र गते वर्षे वेदयुग्म गतेऽपि च॥८॥ राजद्वारेऽति मानञ्च धन लाभं न संशयः। गर्भयोग विजानीयात् बालजन्म भवेत्ततः॥९॥ पत्नी रोग समुत्पन्नो औषधीदानमेव च। महामृत्युञ्जयं जाप्यं शिवार्चनमतः परं॥१०॥ तेन रोग प्रशांतिस्यात्ततः सुखमुवाप्नुयात्। धन लाभ न सन्देहो मान वृद्धि दिने दिने॥११॥ शर युग्म

भा० टी०

मृ० सं० ९३२

गते वर्षे राम वह्नि गतेऽपि च। दैवयोगेन मित्रैकं कस्मादागमनं भवेत् ॥२२॥ तेन सार्द्धं भवेत्सौख्यं शुभ वार्ता प्रकाशकम्। तेन सम्मति भोः पुत्र यात्रा कश्चित्पुरे भवेत् ॥२३॥ तस्मादून प्रवृद्धिः स्याद्राजद्वारे विशेषतः। वेद राम गते वर्षे शर वेद गतेऽपि च ॥२४॥ प्रीतिं प्रजायते पुत्रः मृगाक्षी सुन्दरी स्त्रियाम्। श्रेष्ठ जाति कुलीनश्च पूर्ण यौवन संस्थिता ॥२५॥ तत्सकाशाद्भवेच्चैव तस्य चिन्ता दिने दिने। परञ्च धन-लब्धिस्याद्राजद्वारे न संशयः ॥२६॥ आज्ञानुज्ञानमात्रेण शत्रु मित्रत्व माप्नुयात्। किंवा सर्वेषु कार्येषु दासवज्जायते रिपुः ॥२७॥ रस वेद गते वर्षे शर बाण गतेऽपि च। सुत भाग्य महत्वेन कुलदीपः प्रशंसितः ॥ ॥२८॥ नृपद्वारे महत्मान्यः द्रव्य रत्नादि वेष्टितम्। लाभञ्च विविधो नित्यं भूमि मंदिर रत्नम् ॥२९॥ ग्रामलाभ विशेषेण आरामि च जलाशये। दासीदास समायुक्तो बहुल्याश्वादि वाहनम् ॥२०॥ रस पञ्च गते वर्षे युग्म षष्ठ गतेऽपि च। पौत्र जन्म महोत्साहो सर्वतो लाभ संभवः ॥२१॥ पुण्य कर्म विशेषेण चित्तवृत्ति सुगौरवम्। चौरभीतिर्भवेद्रात्रौ धन हानि न दृश्यते ॥२२॥ कुटुम्बा महिषी गावं पुत्र कान्ता मनोहरा। वह्नि षष्ठि गते वर्षे रस षष्ठि गतेऽपि च ॥२३॥ सुभाग्य महतो पुण्यं पुत्र पौत्रादि नन्दिता। महत्कीर्त्याधिकारी च क्षुधात्पूर्णं तु दुर्बला ॥२४॥ वायुकोप समाविष्टं रोगवृद्धिश्च कोपिता। आयुः पूर्ण नुयत्नतः। आर्द्रक-शुण्ठिका लवणं श्यामं चूर्णं वाऽपि हरीतकीम् ॥२५॥ नंद षष्ठमिते वर्षे आयुः पूर्ण नुयत्नतः। आर्द्रक-ते कृष्ण पञ्चम्यां निधनं अस्य जायते ॥२६॥ पुनर्द्विज कुले जन्म दान मन्त्रं सुभक्तितः। विद्या वितय सम्पन्नो तेजस्वी शुचि धार्मिकः ॥२७॥ ईश्वरं कृपयात्पुण्यम् प्राप्यते मोक्ष साधनम्। बाल्य सारश्च योगोऽयं सत्य सत्य वचं मम ॥२८॥ पूर्व जन्मस्य वृत्तान्तं कथयामि शृणुं सुत। गंगातट समुत्पन्नो शूद्र वंशे च धार्मिकः ॥२९॥ सर्व सौख्य समायुक्तो धनाधीशो च कीर्तिवान्। सगर्भा हरिणी तत्र निहतिं भक्ष्य लोभतः ॥३०॥ तेन पापानुसारेण कष्टं लब्धा पुनः पुनः। सन्तानस्य

भवेद्दुःखं अथवा भ्रातृजं भवेत् ॥ ३१॥ देहे वातप्रकोपश्च जायते च मुहुर्मुहुः। वातप्रकृतिको धीरः समवर्णसमन्वितः ॥३२॥ शुक्र उवाच ॥ किं दानं किं जाप्यं च तत्सर्वं ब्रूहि मे प्रभो। यस्य प्रभावमात्रेण सर्वकष्टं विनश्यते ॥ ३३॥ भृगु उवाच ॥ ताम्रपत्रं पलैस्त्रिंश तन्मध्ये नवमण्डलम्। पलत्रय सुवर्णस्य मृगी कृत्वा सवत्सकाम् ॥ ३४॥ तन्मध्ये च समास्थाप्य कुंकुमेनार्चयेत्तथा। तदग्रे चासने स्थित्वा सुतेशो सहजेशयोः ॥३५॥ पञ्चबीजाक्षरं मन्त्रं जपित्वा विधिपूर्वकं। ततो दानं प्रदातव्यमष्टपट्कञ्च हाटकम् ॥३६॥ रजतं द्विगुणं देयं हरिणी रूपसंयुतम्। एतद्दाना-नुसारेण पूर्वपापात्प्रमुच्यते॥३७॥ पुत्रभ्राता सुखं लब्ध्वा सर्वकष्टविवर्जितः। देहव्याधिविनि-मुक्तो यावज्जीवन्सुखं महत्॥ ३८॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा– हे शुक्र! अब तुम इस जातक की जन्म कुण्डली का फला-देश सुनो। तुलाराशि में गुरु, वृष में राहु, मिथुन में शनि तथा वृश्चिक में केतु होने पर 'चाल्यसार' योग होता है। इसके अनुसार इस जातक को पहले तथा दूसरे वर्ष में दन्त-रोग तथा ज्वर पीड़ा हो। तीसरे वर्ष में ज्वर-व्याधि तथा माता को कष्ट हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। उन्हीं दिनों पिता को अकस्मात् धन का लाभ भी हो। शरीर को थोड़ा सा कष्ट होगा, जो घृत दान करने से दूर होगा। ५ से ८ वर्ष की आयु में विद्यारम्भ तथा, पिता को लाभ तथा सहोदर प्राप्ति का योग है। कुछ अरिष्ट भी संभव है, जो तुलादान से दूर हो जाएगा। ९ से १६ वर्ष की आयु में घर में मंगलगान हों। विवाहोत्सव, वस्त्र-आभूषण आदि में पिता का धन खर्च हो। नवीन स्त्रियों का समागम हो। मनोहर गीत-वाद्य हों। विद्या तथा राजद्वार में सम्मान की वृद्धि हो। १७ से २८ वर्ष की आयु में राजद्वार में सम्मान हो तथा धन का लाभ हो। स्त्री गर्भवती हो तथा पुत्र का जन्म हो। स्त्री

को कोई बीमारी भी हो, जो औषधोपचार से दूर होगी। महामृत्युंजय मन्त्र का जप तथा शिवार्चन करना हितकर रहेगा। उससे रोग-शान्ति होकर, सुख प्राप्त होगा। इसी अवधि में धन तथा मान की वृद्धि हो। २५ से ३३ वर्ष की आयु में दैवात् एक मित्र का आगमन हो। उससे गुप्तवार्ता एवं सुख प्राप्त हो। उस मित्र की सम्मति से किसी नगर की यात्रा तथा धन का लाभ हो। ३४ से ४५ वर्ष की आयु में किसी मृगनयनी सुन्दरी स्त्री से प्रेम हो, उससे प्रेम के कारण एक शत्रु उत्पन्न हो, जिसकी चिन्ता बनी रहे। फिर राजद्वार से धन का लाभ हो तथा भगवती का अनुष्ठान करने से वह शत्रु मित्र बन जाय तथा सब कार्यों को दासवत् सम्पन्न करे। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में कुल-दीपक पुत्र के भाग्य की वृद्धि हो। राजद्वार से सम्मान तथा धन-रत्नादि का लाभ हो। अनेक प्रकार के लाभ, भूमि की उपलब्धि हो तथा नवीन भवन का निर्माण हो। बगीचा तथा जलाशय का निर्माण करावे। दास-दासी, चतुष्पद एवं वाहन का सुख उपलब्ध हो। ५६ से ६२ वर्ष की आयु में पौत्र का जन्म हो। महान् उत्सव हो। सब जगह से लाभ हो। पुण्य-कार्यों में अधिक चित्त लगे। किसी समय रात्रि में चोर का भय हो, परन्तु धन की हानि न हो। दूध देने वाली सुन्दर गाय, मनोहर स्त्री तथा पुत्र का सुख प्राप्त हो। ६३ से ६६ वर्ष की आयु में पुण्यसेभाग्यवृद्धि हो, पुत्र-पौत्रादि आनन्दित रहें, कीर्ति अधिक बढ़े। ६७ वा कम होकर, शरीर कृश हो। वायु कोप से क्लेश हो। उस समय सोंठ, काला नमक तथा हरड़ के सेवन से लाभ हो। ६९ वर्ष में आयु पूर्ण हो तथा आश्विन कृष्णा पंचमी को पंचतत्त्व अलग अलग हों। यह जातक अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न उत्पन्न होगा तथा दान, मन्त्र जप, भक्ति एवं पुण्य के प्रभाव से मोक्ष प्राप्त करेगा। हे पुत्र! पिछले जन्म में यह जीव

गंगातट पर शूद्र कुल में उत्पन्न हुआ था । यह गुणी तथा धनवान् था । एक बार इसने एक गर्भिणी स्त्री को मार कर भोजन किया, उस पाप के प्रभाव से यह दुःखी होगा तथा सन्तान अथवा भाई-भतीजे के संबंधमें कष्ट पायेगा। इसके शरीर में बारम्बार वात-पीड़ा होगी। शुक्र ने पूछा- किस दान तथा मंत्रसे कष्ट दूर होगा? भृगुजी बोले- तीस पल भारी ताँबे का पत्र बनवा कर, उसमें नव कुण्डल बनाये तथा तीन पल स्वर्ण की सवत्सा हरिणी बनवाकर उसे ताम्र पत्र पर स्थापित करे तथा यथाविधि पूजनादि करके, आसन पर बैठ पंच बीजाक्षर मंत्र का जप करे। फिर उस हरिणी तथा ताम्र पत्र को ९ पल चाँदी सहित किसी ब्राह्मण को दान करदे तो पापों का प्रायश्चित्त होकर सब कष्टों से छुटकारा मिलेगा तथा आनन्द की वृद्धि होगी।। इति शुभम्।।

- ३ चं. शु.
- मं. ४ श.
- २ सू. बु. रा.
- १
- १२
- ५
- ११
- ६ गु.
- ८ के.
- १०
- ७
- ९

ॐ भृगुरुवाच ।। शृणु वत्स फलादेशं अस्य जातस्य कुण्डलीम्।।
कन्या राशे गुरौर्यत्र वृषे राहु र्यदा भवेत्। वृश्चिके केतु कुण्डल्यां कर्के शनि तथैवच।।१।। प्रथमे त्रितियाब्दे च ज्वर स्वेद मुख स्मृतः। विशू-चिका विजानीयात् छायादानेन शांतति।।२।। तृतीयाब्दे च भो पुत्र: मातृपीड़ा समुद्भवः। औषधेन प्रणश्यन्ति भ्रातृयोग भवेत्पुनः।।३।। गृहे मङ्गलकार्ये च पितुर्लाभ न संशयः। प्राप्ते वेदमिते वर्षे पतनाच्च न संशयः ।।४।। व्रणपीड़ा भवेदङ्गे पितुश्शोक महद् भवेत्। परञ्च अर्थ लाभञ्च भूमिद्वाराद्धनागमः ।।५।। पञ्चमे द्वादशे वर्षे फलमेतुच्छुभः प्रदाः। भ्रातृभक्ति भवेद्योगा विद्याराभ्यास्तथैव च ।।६।। पितुर्यात्रा न सन्देहो राज कार्य विशेषतः। तत्राऽपि धन लाभञ्च शत्रुमेक समुद्भवा ।। तातद्रव्य समागम्य तथैव च व्ययं भवेत् ।।७-८।। गृहे मृत्यु भवेद् वृद्धः स्त्री वा पुरुषोऽपि वा।। ९।। वह्नि इन्दुगते वर्षे चन्द्रयुग्म तथैव च ।।

सुमङ्गलं महोत्सवोहो उद्वाहो नात्र संशयः । नवनारि समागम्य गृहे आनन्दमङ्गलम् ॥ २० ॥ प्रायश्चित्त सुयत्नेन पुत्रसौख्यं प्रजायते । राजद्वारे जयं प्राप्तः बहुधा सेन सेविता ॥ ११ ॥ महर्घ वस्त्र पात्रं च भूषणं मणिसंयुतम् । बहुद्रव्य व्ययं तत्र भविष्यति न संशयः ॥ १२ ॥ युग्म नेत्र गते वर्षे नन्दनेवाब्दगेऽपि च । जन्मोत्सव तथोद्वाहो भविष्यति न संशयः ॥ १३ ॥ नवनारि समागम्य गृहे मंगलगायनम् । भूमिलाभ मयोग्राम भविष्यति न संशयः ॥ १४ ॥ राजद्वारे प्रतिष्ठोऽपि मानकीर्ति महत् भवेत् । शरीरे जायते कष्टं उपचारेण शान्तये ॥ १५ ॥ त्रिंशवर्षाब्दमारभ्य शून्य चत्वारि मध्यगे । सुतापुत्र सुखं सर्वं राजते पूर्ण वैभवाः ॥ १६ ॥ मान कीर्ति महत्तेजो सर्वशत्रुरधोगता । आरामे राजते सौख्यं गृहनिर्माणनूतनम् ॥ १७ ॥ व्यापारो वर्द्धते नित्यं द्रव्य लाभ महत् भवेत् । विविधान् मंगलान् सर्वे विवाहादि महोत्सवे ॥ १८ ॥ ऋतु वह्नि गते वर्षे यावन्नन्द चतुः सुतः । विवाहोत्सव कार्येषु धन-धान्य व्ययं भवेत् ॥ १९ ॥ वस्त्रं महर्घ पात्रं च प्राप्ति भूषणमुत्तमम् । मणि मुक्तां प्रवालं च लभ्यते नात्र संशयः ॥ २० ॥ कस्मिन् देशे भवेद्भूपाला चन्द्र मित्रेण संयुतः । तत्रापि धन लाभश्च भूषणं वाहनादिकम् ॥ २१ ॥ दानं बहुप्रदातव्यं कस्मिन् देशे न संशयः । पुत्र पौत्र सुखं सर्वं धर्ममार्गे प्रवृत्ति च ॥ २२ ॥ विप्रकन्या विवाहेऽपि धन व्यय न संशयः । धर्मशाला सदावर्तं देवालये ददेत् सुखी ॥ २३ ॥ शताद्वे वत्सरे यातु नागबाण गतेऽपि च । नाना कार्य प्रबन्धैश्च यत्र तत्र प्रशंसितः ॥ २४ ॥ सर्वेच्छा पूजितो गेहे प्रजावृद्धि महत्पयि । यत्र दृष्टिगतं तत्र सर्वत्र सुख सम्पदा ॥ २५ ॥ सर्वकष्ट क्षयोनित्यं विलियंते च शत्रवाः । व्यापारो लाभ दो नित्यं दास वाहनजैरपि ॥ २६ ॥ ईश्वराराधने प्रीति सर्वत्र विजय प्रदा । विवाहो देव तीर्थे च पुण्य मार्ग व्ययो महत् ॥ २७ ॥ नन्द बाण गते वर्षे मुनिषष्ठ गतेऽपि वा । विविधं मंगलं कार्यं विवाहादि महोत्सवे ॥ २८ ॥ प्रकाशते कुलं तेन पुण्य कर्म महत्फलम् । पाप शान्ति सुखः सर्व

कुलकीर्ति प्रशंसित: ॥२९॥ ग्राम प्राप्ति विशेषेण पुत्रपौत्र महत्सुखम् । सर्वेषां पूजितो लोके स्वपत्ने शोक चिन्तनम् ॥३०॥ सप्तधान्य तुलादानं आपदुद्धारको जपेत् । तेन सम्यः सुखं प्राप्य आयुर्दीर्घो महत्यशः॥ ३१॥ नागषष्ठे भवेद्भाद्रपद कृष्णपक्ष च । अष्टमी रोहिणी भे च वृष राशि गते शशि ॥३२॥ गोदानं दुग्ध दानं च कृत्वा देह त्यजेत्सुत:। जायते चोत्तमे गेहे पुण्यात्सर्व सुखागम: ॥३३॥ एवं पुण्य परं तत्वं सर्व श्रेयस्करो सदा । एश्वर्य च महार्घ च भृगुणा परिभाषित: ॥३४॥ पूर्वजन्मनि वैश्यो ऽयं कटु पूजा परायण:। दैवाच्चौर्यादि दोषेण विप्रहत्या कृता पुरा ॥३५॥ तेन पापानुसारेण राजरोगस्य सम्भव: । क्षयी रोग ऽथवा श्वासी पुत्र दु:खं मुहुर्मुहु: ॥३६॥ शुक्र उवाच ॥ किं जपं कस्य पूजां च किं दानं कथ्यताम् प्रभो ॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या पञ्चटंक प्रमाणकम् ॥३७॥ पद्मनाभं लिखेन्मूर्ति: शुद्ध चित्तञ्च शान्तये । रक्तचन्दन मिश्राणि गंगाजल च स्नानकं ॥३८॥ संकल्प्यं च ददेत्विप्र: पूर्व पाप प्रमुच्यते । श्वास रोग विनश्यन्ति पुत्रसौख्यं प्रजायते ॥३९॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश सुनो, यदि कन्या राशि के गुरु, वृष राशि के राहु, वृश्चिक के केतु तथा कर्क राशि के शनि हों तो इन मुख्य ग्रहों के आधार पर जातक के जीवन में घटने वाली घटनाऐं इस प्रकार घटती हैं - प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में ज्वर तथा दन्त-पीड़ा हो। विशूचिका रोग हो। धर्मादान करने से रोग शान्त हो। तीसरे वर्ष में माता को पीड़ा हो जो औषधोपचार से शान्त हो। फिर घर में भाई का जन्म हो तथा मंगल कार्य हों एवं पिता को धन-लाभ हो। चार वर्ष की आयु में किसी ऊँचे स्थान से गिरने के कारण चोट लगे। शरीर में व्रण हो तथा पिता को विशेष चिन्ता हो। भूमि द्वारा धन का लाभ भी हो। ५ से १२ वर्ष की आयु तक विभिन्न शुभ फल प्राप्त हों। भाई तथा बहिन एवं

विद्या का लाभ हो ॥ एक शत्रु उत्पन्न हो। पिता को जैसा धन का लाभ हो, वैसा ही खर्च भी हो। १३ से २१ वर्ष की आयु में विवाह तथा मङ्गल कार्य हों। कुलबन्धु वर्ग एवं नवीन स्त्रियों का समागम हो। पूर्व पठित विद्या विस्मृत होजाय तथा आगे पुनः पढ़े। आठवीं वर्ष में थोड़ा कष्ट हो, जो घृतदान एवं महामृत्युञ्जय के जप से दूर हो। तत्पश्चात् घर में मंगल कार्य हों, भाई उत्पन्न हो। ८ से १६ वर्ष की आयु में पिता को विशेष धन लाभ हो। जैसा लाभ हो, वैसा ही व्यय भी रहे। नवीन स्त्रियों का समागम हो। १७ से २४ वर्ष की आयु में स्त्री गर्भवती हो तथा चित्त प्रसन्न रहे महान् ऐश्वर्य लाभ हो। सन्तान हो। स्त्री को प्रसूति रोग के कारण कष्ट उठाना पड़े। सौभाग्य सुंठी पाक तथा गोदुग्ध का रात्रि में सेवन तथा देवी का हवन-पूजन करने से कष्ट दूर हो। २८ से ३५ वर्ष तक धन का खूब लाभ हो। पुत्र का सम्बन्ध धनाढ्य घर से हो तथा घरमें कन्या का जन्म भी हो। कन्या रूपवती हो। किसी अन्य स्त्री से, जो स्वजातीय अथवा विजातीय हो, प्रीति हो। धन-धान्य में वृद्धि होती रहे। ३६ से ४१ वर्ष की आयु में विवाहोत्सव आदि माङ्गलिक कार्यों में धनखर्च हो। फिर बहुमूल्य वस्त्र, पात्र, आभूषण, मणि, मुक्ता, प्रवाल आदि प्राप्त हों। एक मित्र के साथ परदेश की यात्रा हो, वहाँ वस्त्र, धन आभूषणादि का लाभ हो। उसी देश में दान भी करे। पुत्र, पौत्रों के सुख से युक्त धर्म मार्ग में प्रवृत्ति हो। ब्राह्मणकी कन्या के विवाह में भी धन खर्च हो। मंदिर, धर्मशाला, सदावर्त आदि में भी धन का खर्च हो। ५० से ५८ वर्ष की आयु में अनेक कार्यों की व्यवस्था करे तथा सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त हो। समस्त इच्छायें पूर्ण हों कुटुम्ब की वृद्धि हो। सर्वत्र सुख-सम्पत्ति का लाभ हो। समस्त कष्ट दूर हों। कष्ट नष्ट हों। व्यवसाय में लाभ हो। विवाह देव, तीर्थ तथा पुण्य कर्मों में

मृ० सं० ९३०

भा० टी०

धन खर्च हो। ५९ से ६७ वर्ष की आयु तक अनेक प्रकार के मंगल कार्य विवाहादि महोत्सव हों, जिससे कुल की प्रतिष्ठा में वृद्धि हो। ग्राम (भूमि) का लाभ हो। पुत्र-पौत्र प्राप्त हों। समस्त सांसारिक इच्छाऐं पूर्ण हों। अयत्न से शोक तथा चिन्ता हो। सप्तधान्य का तुलादान एवं आपदुद्धारकमन्त्र का जप करने से शीघ्र सुख प्राप्त हो तथा कष्ट, चिन्ता एवं शोक दूर हों। ६८ वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र तथा वृष के चन्द्रमा में गोदान देकर शरीर का त्याग करे। फिर अगले जन्म में किसी उत्तम कुल को प्राप्त कर, सब प्रकार से सुखी बना रहे। पुण्य ही सदैव श्रेयस्कर बना रहेगा। हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह जीव वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ था तथा शिवजी का परम भक्त था। दैवयोग से एक बार इसने चोर समझ कर एक निरपराध ब्राह्मण की हत्या करदी। उस पाप के कारण इसे क्षय, श्वास आदि कोई राजरोग होगा तथा पुत्र सम्बन्धी दुःख भी बारम्बार प्राप्त होगा। यह सुन कर शुक्र ने कहा- हे प्रभो! इसके द्वारा पूर्व जन्म में हुए पापका प्रायश्चित्त किस मन्त्र के जप अथवा दान से होगा, यह मुझे बताने की कृपा करें। भृगुजी बोले- पांच टंक प्रमाण स्वर्णपत्र पर, लाल चन्दन द्वारा शुद्ध हृदय से ब्राह्मण की मूर्ति बनाये। फिर उसे गंगाजल से स्नान करावे। तत्पश्चात वह स्वर्ण पत्र किसी ब्राह्मण को दान करदे तो यह पूर्व जन्म के पाप से छूट जाएगा। इस प्रायश्चित्त को करने से इसे राजयक्ष्मा तथा श्वास रोग से मुक्ति मिलेगी तथा पुत्र-सुख भी प्राप्त होगा। अतः सुख-प्राप्ति के लिए यह प्रायश्चित अवश्य करना चाहिए॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं यत्सवं वदाम्यहम् ॥ कन्या जीवे वृषे राहुर्मिथुने शौरिर्यदा भवेत् । वृश्चिके केतु जन्माङ्के विद्या योग स उच्यते ॥१॥ प्रथमे द्वितियेऽब्दे च दन्त रोग ज्वरस्तथा । तृतीये व्रणव्याधिश्च मातृकष्ट न संशयः ॥२॥ चतुर्थाब्दे च सम्प्राप्ते मातृ पीड़ा प्रजायते । औषधेन प्रशांति स्यादकस्मादूनमागतः ॥३॥ पञ्चमादष्टपर्यन्तं शिशु वृद्धि दिने दिने । विद्याभ्यास रतो न्यूनं क्रीडने मति तत्परः ॥४॥ अङ्क वर्षे समारभ्य यावद् जोड्ड्र् श वर्षगे । विवाहो मङ्गलं कार्यं जायते नाऽत्र संशयः ॥ ५॥ महत्वमधिकं प्राप्य राजते सुरव संपदा । नारी भोगादि सर्वेषां भोगाभुक्तो यथेप्सितान् ॥ ॥६॥ प्रतिष्ठा मान विभवौ वर्धते सौरव्य कारणम् । अथले मानसी चिन्ता विविधं क्लेश भाजनं ॥७॥ ऋषि चन्द्र मिते वर्षे शर युग्म गतो ऽपि वा । सुता पुत्र सुरवः सर्वे नूतनो कार्य लाभदं ॥८॥ शरीरे कष्टसम्पन्नो दीर्घ चिन्तातुरो जनः । महादानादि मन्त्रेणं भगवद् भक्ति भावतः ॥९॥ श्रेयोमानं सुखी लोके सम्पदा संचयान्महान् । चिन्तये द्विविधं कार्यं सर्व कमार्थ सा-धकः ॥१०॥ ऋषि नेत्र गते वर्षे शर वह्नि गते ऽपि वा । भाग्यवृद्धि विशेषे-ण सफलं भवतु जीवनं ॥११॥ देवदर्शन तीर्थेषु पवित्री क्रियते वपुः । सुजनेभ्यो परं प्रीतिः सर्वेषां मानदो महान् ॥१२॥ भूमि प्राप्ति विशेषेण रचना गृह नूतनम् । धन पुत्रेषु नारीणां जायते विविधं सुरवम् ॥१३॥ पापशान्ति प्रयत्नेन सर्वसौरव्यागमो सदा । नानाभोग समायुक्तो पूर्णायुश्च सुरवप्रदा ॥१४॥ ऋतु वह्निगते वर्षे शर वेद गते ऽपि वा । पुत्रलब्धि विजा-नीयात गृहे मङ्गलगायनम् ॥१५॥ किंचिद्रोग समुत्पन्न वात जल्पेन पीड़िता । अति कष्ट भवेन्नित्यं अल्पत्वमुपनायते ॥१६॥ तस्य यत्न प्रकर्तव्यं यथापूर्व मुदाहृतः । शशिटङ्क सुवर्णञ्च तस्य मूर्ति

१२	११	१०	
१			९
२ रा.		८ के.	
३ गु. शु.	५ चं. मं.		७
४ सू. बु.		६ श.	

भृ० सं० ९०३ / भा० टी०

प्रकारयेत ॥१७॥ पूजयेत् सर्व उपचारं विष्णु स्मरण कारयेत् । दापयेत् ब्राह्मण: श्रेष्ठ: मन्त्र तन्त्र विशारद: ॥१८॥ एतत्पुण्य प्रभावेण अल्प नश्यंति नान्यथा । रस वेद गते वर्षे वेद वाणाब्द गेऽपि च ॥ पुण्य कर्म प्रभावेण सर्व सौख्यं च जायते ॥१९॥२०॥ मासे वर्षे सुखं जातं मनेच्छा बहुपूजिता ॥ २१॥ सुतापुत्र सुखं सर्वे नूतनो कार्य लाभदं । शरीरे कष्ट सम्पन्नो दीर्घ चिन्तातुरो जन: ॥ २१॥ महा-दानादि मन्त्रेण भगवद्भक्ति भावन: । श्रेयो मानं सुखी लोके सम्पदा संचयो महान् ॥२२॥ शर पंच गते वर्षे श्रेम षष्ठान्तरे यथा । देव दर्शन तीर्थ च पवित्री क्रियते वपु: ॥२३॥ भाग्यवृद्धि विशेषेण साफल्यं जीवनं भवेत् । शशि षष्ठ गते वर्षे रस षष्ठ गताब्दके ॥२४॥ मनेच्छा पूजिता: सर्वे ईश्वरं ध्यान तत्परम् ॥२५॥ मंगलंच महोत्साहो पौत्र जन्म सुखप्रदा । सर्वारिष्ट क्षयो नित्यं दानधर्मादि तत्पर: ॥२६॥ साधु सेवा रतो नित्यं विनयी धार्मिको भवेत् । ईश्वराराधने प्रीति: सर्वत्र सुख वर्धिनी ॥२७॥ स्वल्प श्रमेण सिद्ध्यन्ति महत्कार्याणि भूरिश: । आयुवृद्धि सुपुण्येन नग षष्ठाब्द जीवति ॥२८॥ पुत्र पौत्र सुखं लोके महद्भागी प्रशंसित: । पुनर्द्विज कुले श्रेष्ठं संभवो चाग्र जन्मनि ॥ सर्व सौख्याधिकारी च सुपुण्यात्परमं पदम् ॥२९-३०॥ पूर्वजन्मे भवेद्विद्वान् दाता भोक्ताविच-क्षण: । पूर्व पाद प्रहारेण मार्जारी गर्भ संयुत: ॥३१॥ मारिता तेन पापेन रोगी वाऽपुत्रको भवेत् ॥ शुक्र उवाच ॥ किं जाप्यं कस्य दानञ्च तत्सर्वं कथय: प्रभो ॥ भृगु उवाच ॥ सुतेशस्य त्रिवीजन्तु भौम मन्त्रं नवाक्षरं । लक्षत्रयं प्रजपेत्वै ततो दान समाचरेत् ॥३२-३४॥ मार्जारी सु सुरूपं च सौवर्ण पुत्र संयुतम् । पूजयित्वा च संमन्त्र्यं हेम पुष्पं प्रदापयेत् ॥३५॥ ततो दान प्रदातव्यं विप्रेभ्यो भक्ति पूर्वक: । एतद्दानोपचारेण पूर्व पापात्प्रमुच्यते ॥३६॥ पुत्र पौत्र सुनारीणां नहि दु:खं कदाचन । दानाभावे महद्दु:खं रोग पुत्र धनै रपि ॥३७॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। कन्याराशि में गुरु, वृष राशि में राहु, मिथुन राशि में शनि तथा वृश्चिक राशि में केतु हों तो 'विद्या योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले वाले जातक को अपनी आयु के प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में दन्त रोग एवं ज्वर, तीसरे वर्ष में व्रण-व्याधि तथा माता को कष्ट एवं चौथे वर्ष में पुनः माता को पीड़ा होगी। माता का कष्ट औषधोपचार से दूर होगा तथा पिता को अकस्मात् धन का लाभ होगा। पाँच से आठ वर्ष तक शरीर की दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो। ९ से १६ वर्ष की आयु में घर में मंगल कार्य हों, सुख-सम्पत्ति तथा महल की वृद्धि हो। इसके बाद ही स्त्री भोगादि सुख प्राप्त हों। सभी इच्छित आनंद मिलें तथा मान-प्रतिष्ठा एवं पराक्रम बढ़े। अयत्न से गुप्त मानसिक-चिन्ता तथा अनेक प्रकार के क्लेश हों। १७ से २५ वर्ष तक कन्या और पुत्र का सुख प्राप्त हो एवं नवीन लाभ के काम हों। इसी अवधि में कोई विशेष चिन्ता भी हो, उसे दूर करने के लिए दान, मन्त्र जप एवं भगवद्भजन हितकर रहेगा। अनेक उपायों तथा कार्यों द्वारा धन का लाभ हो। २६ से ३५ वर्ष की आयु में भाग्य की विशेष वृद्धि हो। जीवन सफल हो। तीर्थयात्रा तथा देव-दर्शन का लाभ हो। शरीर पवित्र हो, स्वजनों से प्रीति बढ़े, मानवृद्धि हो। भूमि-लाभ हो। नया मकान बने। धन, स्त्री, पुत्रादि के विविध सुख प्राप्त हों। पाप-शान्ति के उपाय करने पर सदैव सब प्रकार के सुखों का आगमन हो तथा अनेक प्रकार के भोगों से युक्त जीवन व्यतीत हो। ३६ से ४५ वर्ष की आयु में पुत्र-प्राप्ति हो। घर में मंगल-गायन हों। वात तथा उष्णता के रोग उत्पन्न होकर कुछ कष्ट उत्पन्न करें। उस समय एक टंक सोने के पत्र पर विष्णु की मूर्ति बनाकर उसका षोडशोपचार पूजन कर, किसी तन्त्र मन्त्र ज्ञाता ब्राह्मण को दान कर दे। इस पुण्य के प्रभाव

से अल्पायु योग का नाश हो। ४६ से ५४ वर्ष की आयु में पुण्य-कर्म के प्रभाव से सब प्रकार के सुख तथा मङ्गलों की प्राप्ति हो। प्रतिमास एवं प्रति वर्ष मन की इच्छाएें पूर्ण होती रहें। कन्या तथा पुत्र का आनन्द मिले। नवीन कार्यों में लाभ हो। इसके बाद शरीर में थोड़ा कष्ट होने पर चिन्ता अधिक रहे। महादान तथा भगवद्भक्ति के प्रभाव से शरीर सुखी हो तथा मानवृद्धि भी हो। सम्पत्ति का सञ्चय हो। ५५ से ६० वर्ष की आयु में तीर्थ में देव-दर्शन करके शरीर को पवित्र करे। भाग्य वृद्धि हो। जीवन सफल बने। ६१ से ६३ वर्ष की अवधि में मन की सभी इच्छाएें पूर्ण हों। ईश्वर के चरणों में मन लगे। पौत्र-सुख उपलब्ध हो। घर में मंगल महोत्सव हों। दान-धर्म में तत्पर रहने से अरिष्ट दूर हो। साधु-सेवा में बुद्धि लगे एवं विनय तथा धर्म में तत्पर रहते हुए ईश्वराराधन में प्रीति बढ़े। थोड़े श्रम से ही बड़े-बड़े कार्य सिद्ध होते रहें। पुत्र-पौत्रों का सुख एवं प्रशंसा की उपलब्धि होती रहे। ६८ वर्ष की आयु तक जीवन रहे। फिर अपने पुण्य कर्मों के प्रभाव से अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर सब सुखों का अधिकारी बने तथा धर्म संलग्न रहते हुए अन्त में परम पद को प्राप्त करे। हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह बड़ा विद्वान्, गुणवान्, धनी तथा रूप सम्पन्न कुलीन ब्राह्मण था, परन्तु एक बार इसके जूते की चोट से एक गर्भिणी बिल्ली की मृत्यु हो गई। उस पाप के कारण यह रोगी रहेगा तथा पुत्र-सुख में बाधाएें उत्पन्न होंगी। यह सुनकर शुक्र ने पूछा — हे प्रभो! इसे पाप से मुक्ति पाने के लिए क्या उपाय करना चाहिए, वह कहें। भृगुजी बोले — हे पुत्र! सर्वप्रथम तो यह त्रिबीज युक्त पंचमेश के मन्त्र का जाप कराये, फिर मंगल के नवाक्षर मन्त्र का जाप कराये। मन्त्र जाप तीन लाख की संख्या में होना चाहिए

फिर विधि पूर्वक दान करे। स्वर्णपत्र पर पुत्र-युक्त मार्जारी का चित्र लाल चन्दन से बनावे, फिर उसका मन्त्र सहित पूजन करे तथा थोड़ा सा स्वर्ण और साथ रख कर उस स्वर्णपत्र को भक्तिपूर्वक किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान करदे। इस उपाय से पुत्र-पौत्रों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा तथा सब दुःख दूर होंगे। दान न करने से धन एवं पुत्र से हीन तथा चिन्तित बने रहना निश्चित है॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्य जातस्य कुण्डलीम्॥ वृषराशि गते राहो कर्के शनि यदा भवेत्। वृश्चिके च गते केतुः तुलाराशि स्थिते गुरौ॥ प्रथमाऽब्दे ज्वरश्चैव द्वितीये मुख पीडनम्। तृतीये व्रण रोगी च तथा भ्रातृ समुद्भवेत् ॥१-२॥ पितुर्लाभं विजानीयात् ज्वरं पित्त समुद्भवम्। मातृपीड़ा भवेत्पुत्र तुलादानेन शमयति॥३॥ चतुर्थात् द्वादशे वर्षे विद्यारंभ तथैव च। किंचित्कष्ट भवेद्देहे पितुर्लाभं दिने दिने॥४॥ आयुस्थानपतिर्जाप्यं तथा दानं प्रकारयेत्। कृते शान्ति न संदेहो ततः सौख्यमवाप्नुयात्॥५॥ विद्यारंभसमायुक्ता गायने नाद विद्यया। मल्ल विद्या तथा शस्त्र शास्त्र विद्या प्रलभ्यते॥६॥

७	शु. मं. ६	५	बु. श. ४
वृ.	सू.		३
८ के.		२ रा.	
९	११		१ चं.
	१०	१२	

वह्नि चन्द्र मिते वर्षे व्योम नेत्र गतेऽपि च। मित्रमेकं भवेत्तस्य गुप्तवार्ता निवेदिता॥७॥ विवाहो मंगल कार्यं भवेत्तस्य न संशयः। नवनारि प्रसङ्गेन सन्तुष्टत्वं प्रजायते॥८॥ नाना भोगसमायुक्तो नाना द्रव्य समाकुलः। पुत्रगर्भं विजानीयात् अल्पजीवी न संशयः॥९॥ चन्द्र नेत्रमिते वर्षे तथैव पंचत्रिंशति। अथवा त्रिंश वर्षेषु अति लाभं न संशयः॥१०॥ पुत्रोत्सवं मंगलं च विदेशे गमनं भवेत्। सुते प्राप्तं... ॥११॥ पुत्र सौख्यमवाप्नोति नात्र कार्य विचारणा। तस्मा

त्सर्वं प्रयत्नेन सुतेशे पूजनं शुभं ॥ १२॥ गुप्त चिन्ता हृदे व्याप्ता केनाऽपि कथ्यप: पुमान्। गुप्तारिष्टं भवेद्दे हे औषधेन प्रशाम्यति ॥ १३॥ रस वह्नि समारम्भ यावन्नंद चतुःसुत: । विवाहोत्सव कार्येषु धन धान्य व्ययं भवेत् ॥ १४॥ सुता पुत्र सुखं सर्वं धर्ममार्गे प्रवृत्ति च । गुप्त शत्रु भयं क्लेशं धर्म कार्यश्च सिद्ध्यति ॥ १५॥ राजद्वारे प्रतिष्ठो ऽपि मान कीर्ति महद्यश: । शरीरे जायेत कष्टं उपचारेण शान्तये ॥ १६॥ छायापात्र तुलादानं सर्वारिष्ट निवारणम् । शताद्दे वत्सरे वर्षे ऋषि पंचगताब्द के ॥ १७॥ द्विपुत्रं चन्द्र कन्या च राजते पूर्ण वैभव: । मान कीर्ति महत्तेजो सर्वे शत्रुर्क्षयौगता ॥ १८ ॥ आरामे राजते सौख्यं रचना गृह नूतनम्। व्यापारो वर्द्धते नित्यं भूमि प्राप्ति विशेषत: ॥ १९ ॥ नाग पञ्चगते वर्षे वह्नि षष्ठिगते ऽपिवा पौत्रजन्म महोत्साहो व्ययो द्रव्य महद्यश: ॥ २० ॥ विविधं मंगलं कार्यं विवाहादि महोत्सवे । प्रकाशते कुलं तेन पुण्य कर्म महत्फलं ॥ २१ ॥ ईश्वराराधने प्रीति: चित्त शान्ति सुख प्रदा । यत्र दृष्टि गतं तत्र विजयो लाभमुत्तमम् ॥ २२ ॥ वेद षष्ठगते वर्षे नन्द षष्ठ गते ऽपि वा । पाप शान्ति: सुखा: सर्वे कुलकीर्ति प्रशंसित: ॥ २३ ॥ ग्राम प्राप्ति विशेषेण पुत्र पौत्र महत्सुखम् । व्योम सप्तगते वर्षे संभवो कष्ट दारुणम् ॥ २४ ॥ ईश्वर कृपयात्पुण्यं प्राप्स्यते सर्व वैभवम् । आषाढ शुक्ल पंचम्यां स्वगृहे निधनो जन: ॥ एतज्जन्म विलम्बेन अग्रजन्मे विनिश्चिता । जायेत चोत्तमे गेहे पुण्यात्सर्वं सुखागम: ॥ २५-२६ ॥ एवं पुण्यात्परं तत्त्वं सर्वं श्रेयस्करो सदा । अन्तकाले ध्रुवं याति वैकुण्ठे नान्यथा भवेत ॥ २७ ॥ पूर्वजन्म त्वसौ वैश्यो भिषक्कर्मानिसंरत: । विना शास्त्रं चिकित्सा च कृताते तेन जन्मनि ॥ २८ ॥ संतानस्य भवेद्दुःखमथवा रोग पीडनम् । रक्तवातोद्भवे दुःखं तेन पीडा मुहुर्मुहु: ॥ २९ ॥ शुक्रोवाच ॥ किंजाप्यं किं दान कृत्वा पापमुक्ति भवेत् प्रभो । तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि लोकाऽनुग्रहऽकांक्षया ॥ ३० ॥ भृगु उवाच ॥ कारयेत् ताम्र पात्रञ्च पल त्रिंश प्रमाणकं । यंत्रं त्रिकोणकं तत्र रक्तगंधेन निर्मिता ॥

ततो दानं प्रकुर्वीत श्रद्धा भक्ति समन्विता। एतद्दानानुसारेण पुत्रवान् रोग वर्जिता ॥ ३१-३२॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस जातक की जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। वृष राशि में राहु, कर्क राशि में शनि, तुला राशि में गुरु तथा वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक को आयु के प्रथम वर्ष में ज्वर, दूसरे वर्ष में मुखपीड़ा तथा तीसरे वर्ष में व्रण रोग होगा। साथ ही इसी अवधि में भाई का जन्म होना भी संभव है। हे पुत्र! माता को पीड़ा होने पर तुलादान करने से आरोग्य होगा। ४ से १२ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन तथा शरीर को कुछ कष्ट हो, परन्तु पिता को दिन-प्रतिदिन लाभ होगा। अष्टमेश का जप और पूजन कराना चाहिए तथा दान करना चाहिए। इससे कष्ट शान्त होगा तथा सुख मिलेगा। विद्या, संगीत, मल्ल विद्या एवं शस्त्र विद्या का लाभ होगा। १३ से २० वर्ष की आयु में एक मित्र से गुप्त वार्ता होगी, विवाह होगा एवं नवीन स्त्री के प्रसङ्ग से सन्तोष प्राप्त होगा। अनेक प्रकार के भोगों से युक्त होकर अनेक प्रकार के दुःखों की प्राप्ति होगी। स्त्री गर्भवती होगी तथा पुत्र का जन्म होगा। २१ से ३५ वर्ष की आयु में अथवा ३० वर्ष की आयु में विशेष लाभ होगा। पुत्रोत्सव तथा गृह में मङ्गल कार्य होंगे। पुत्र अल्पजीवी होगा तथा परदेश की यात्रा होगी। पंचमेश के मंत्र का जप एवं दान करने से पुत्र-सुख प्राप्त होगा, हृदय में किसी प्रकार की गुप्त-चिन्ता भी रहेगी। शरीर में गुप्त-कष्ट होगा, जो औषधोपचार से दूर होगा। ३६ से ४६ वर्ष की आयु में विवाहोत्सव आदि में धन खर्च होगा। कन्या तथा पुत्र का सुख प्राप्त हो तथा धर्म-मार्ग में प्रवृत्ति हो। गुप्त-शत्रु से भय हो तथा धर्म से कार्य-सिद्धि हो। राजद्वार में मान-प्रतिष्ठा एवं कीर्ति की वृद्धि हो। शरीर में कष्ट होने पर, औषधोपचार, [illegible] एवं तुलादान करने से सम्पूर्ण अरिष्ट दूर हों। ५० से ५६ वर्ष की आयु में

भृ० सं० ६०३

भा० टी०

दो पुत्र तथा एक कन्या का सुख रहे। पूर्ण वैभव का लाभ हो, सम्मान, कीर्ति तथा तेज की वृद्धि हो। शत्रु अधोगति को प्राप्त हो। उपवन तथा नवीन भवन का निर्माण हो। व्यवसाय की वृद्धि हो तथा भूमि-लाभ हो। ५८ से ६३ वर्ष की आयु में पौत्र जन्म का हर्ष हो, धन प्राप्त हो तथा यश मिले। घर में विवाहादि अनेक प्रकार के मांगलिक उत्सव हों। पुण्य कर्मों का श्रेष्ठ फल प्राप्त हो तथा स्वकुल में प्रतिष्ठा बढ़े। ईश्वराराधन में चित्त लगे, जिससे सुख एवं आनन्द का लाभ हो। जहाँ भी दृष्टि जाय, लाभ तथा हर्ष प्राप्त हो। ६४ से ६९ वर्ष की आयु में पाप-शान्ति से सुख मिले। प्रशंसा हो तथा पुत्र-पौत्रों का आनन्द मिले। ७० वर्ष की आयु में प्रभु-कृपा से सभी वैभव प्राप्त हों। श्रेष्ठ पुण्य तत्त्व के कारण सुख पूर्वक मृत्यु हो तथा अगले जन्म में किसी उत्तम कुल को प्राप्त हो। हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह जातक वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ था। यह गुणी, धनी तथा सेवकों से युक्त था। इसे चिकित्साशास्त्र का ज्ञान नहीं था और न उसका अध्ययन ही किया था, फिर भी यह चिकित्सा-कार्य करता था। उस अपराध के कारण इसे इस जन्म में सन्तान का दुःख अथवा शरीर-कष्ट होगा। रक्तवात के कारण यह बारम्बार दुःख प्राप्त करेगा। यह सुन कर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस मन्त्र के जप एवं किस दान के द्वारा इसका कष्ट दूर होगा, यह आप कृपा करके बताइए? भृगुजी बोले - तीस पल प्रमाण का ताँबे का पात्र लेकर, उस पर लाल चन्दन से त्रिकोण यन्त्र लिखे, फिर वह कलश किसी ब्राह्मण को दान कर दे तो पूर्व जन्मकृत पाप का प्रायश्चित्त हो जाएगा। इस दान के प्रभाव से इसे सन्तान-सुख मिलेगा और यह पुत्रवान् होगा तथा रोगों से भी मुक्ति प्राप्त करेगा। इति शुभम्॥

भृ० सं० ८७३

भा० टी०

भृ०
सं०
९४३ नु

ॐ भृगु उवाच। शृणु पुत्र कथा सर्वं अस्य जातस्य कुण्डलीम्॥ वृष राशि गतो राहुः कर्के भानुसुतं स्थितम्। वृश्चिके गुरु केतुश्च मार्जार योग उच्यते ॥१॥ योगेऽस्मिन् सुख संपत्तिः जायते नाऽत्र संशयः। गुणी मानी धनाढ्यश्च क्रोधी कुटिल कामवान् ॥२॥ पित्त प्रकृतिको धीरो बुद्धि चाञ्चल्य संयुतः। मातृ पितृ सुखं चाल्पं प्रवासे बहुधा मतिः॥३॥ आद्यं वर्षं द्वितीये च मासे मासे सुखागमः। तात लाभ प्रतिष्ठोऽपि किञ्चिच्चिन्तान्वितो भवेत् ॥४॥ शरीरे दारुणं कष्टं सर्वशान्ति सुयत्नतः। राम वर्षे गते काप्यः चतुर्थे पञ्चमेऽपि वा ॥५॥ बाल वृद्धि सुखं क्रीड़ा क्रीड़ने मति तत्परा। व्रण वात विकारेण ज्वरव्याधि भयप्रदा ॥६॥ छाया पात्रान्नदानेन कष्टशान्ति भवेत् ध्रुवम्। रसाब्दे नन्द वर्षे च तयोरन्त यथाक्रमम् ॥७॥ क्रीड़ने विविधो नित्यं विशुनां सङ्गमे मतिः। विद्यार-म्भ ततो कृत्वा व्यापन्नो भण्यते महत् ॥८॥ तामसी क्रोधवान् दीर्घः अकस्माज्जा-यते भयम्। दान मन्त्र सुपुण्येन भाग्य वृद्धि प्रतिष्ठितः ॥९॥ व्योमेन्दुप्रोड-षे वर्षे तन्मध्ये त्रिविधं सुखं। विवाहो मंगलं चापि मतिः कामं प्रवर्द्धयेत् ॥१०॥ कश्चिद् गुणी जनस्तस्य प्रीतिकारी सहायकः। श्रेयांसि बहुविघ्नानि रक्षितो सुखमिच्छति ॥११॥ कामक्रीडा मनोद्वेगं विह्वलो रूप मोहितः। लिप्यले-खन कार्येषु कुशला बुद्धिमान्नरः ॥१२॥ सुमित्रे परमं प्रीति धनी व्यापार कारकः। सर्वैश्वर्य समायुक्तो लाभ कृत्य विचिन्तनः॥१३॥ नगेन्दु वह्नि नेत्राब्दे भोगमैश्वर्यवर्द्धनम्। सज्जनानां सुसम्मानं साधुनां संगमे मतिः ॥१४॥ पुत्रलाभ सुखाविष्टो मानेन महता कृतः। सुता पुत्र सुखं सर्वं धनुदात्मजादयः ॥१५॥ स्वकरादौ रवौ तत्र प्रकाशो विपणी भवेत्। राजद्वारे पदोच्चं वा व्यापारो लाभदो महत् ॥१६॥ वेदनेत्रगते वर्षे युग वह्नि गतेऽपि वा। पुत्र कन्योत्सवे तस्य व्यय कीर्ति विवर्धनम् ॥१७॥ राजद्वारे प्रतिष्ठोऽपि मान

१०	सू. / बु. ६ मं.	श.गु.के. ८
११	१२	७
१	३	५ चं.
रा.२		४ शु.

भा०
टी०

कीर्ति महत् यश: । नाना कार्य प्रबंधश्च राजते सुख संपदा ॥ १८॥ शर वह्नि गते वर्षे रस वेदाब्दगेऽपि च । सुता सुत सुनारीणां प्राप्यते परमं सुखम् ॥ १९॥ प्रतिष्ठा मानमधिकं कुल कीर्ति प्रशंसित: । विवाहादि महोत्साहो जायते मङ्गलं कुले ॥२०॥ मान कीर्ति विशेषेण पुण्यतेजो महत् यश: । सर्वत्र माननीयोऽपि चित्त चिन्ता विनश्यति ॥ २१॥ भूमि प्राप्य महद्द्रव्य रचना गृह नूतनम् । लाभं च विविधो कार्यं धन संपत्समृद्धिवान् ॥ २२॥ ऋषि वेदाब्दगे काव्य शर बाण गताब्दके । पुत्रभाग्योदयं भूपं साफल्यं सर्व वैभवा: ॥२३॥ श्रेयो मान सुखं नित्यं रिपु राग विलीयते । पौत्र जन्म महोत्साहो जायते चान्यवत्सरे ॥२४॥ ईश्वराराधने प्रीति भजनानन्द सर्वदा । दान पुण्य महत्वेन सुकीर्ति ख्याति भूतले ॥२५॥ रस बाण गते वर्षे वेद षष्ठ गतेऽपि वा । मासे वर्षे सुखं सर्व मंगलं च महोत्सवे ॥२६॥ भोगाश्च वैभवो नित्यं वर्द्धते नाऽत्र संशय: । पुत्र काम भयं कष्टं स्वयमेव विनश्यति ॥२७॥ लाभं च विविधान् कार्ये धन संपत्समृद्धिमान् । श्वास कास महाव्याधिं अजीर्णं नश्यति: क्षुधा ॥२८॥ सर्वेच्छा सफली भूत्वा दासगृहादि वाहनम् । विवाहो देवतीर्थेषु पुण्यमार्गे व्ययो महत् ॥२९॥ बाण षष्ठ गते वर्षे नन्द षष्ठ गतेऽपि च । कीर्तिश्च निर्मली भूयात्कष्ट बाधा विनश्यति ॥३०॥ नाना कार्य प्रबंधैश्च यत्र तत्र प्रशंसित: । कार्यवृद्धि विशेषेण ईश्वराराधने रुचि: ॥३१॥ दानधर्मरतो नित्यं विस्तृतिं सर्व वैभवा । व्योम शताब्द मायुष्य पुनश्च निधनो वपु: ॥३२॥ अग्रजन्मे समुत्पन्नो द्विजगेहे सुकोविद: । पूर्वजन्मन्यसौ क्षत्री गुरौ मत्सरता कृता: ॥३३॥ दिवा संभोगनिरतो मद्यपानं तथैव च । मूत्रकृच्छ्रं भवेत्तस्य संतीतिर्वा सुखं नहि ॥३४॥ शुक्रो वाच ॥ किं दानं किं विधानं च प्रायश्चित्ता हेतवे । किं मन्त्रजाप किं कुर्यात् कृपया कथय: प्रभो: ॥३५॥ भृगु उवाच ॥ ताम्रपात्र पलं पंच तन्मध्ये नव मण्डलं । तत्र विष्णु स्वरूपञ्च चंदने वाथ कुंकुम ॥३६॥ पीतं श्वेत तथा धूम्रं

वस्त्रमल्योत्तरं प्राते । पञ्चप्रस्थं घृतं देयं तैलं च सप्त प्रस्थकम् ॥३७॥ एतद्दानोपचारेण पूर्वपापात्प्रमु-
च्यते । दानाभावे महद्दुःखं सप्तजन्मानि यावत् ॥३८॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले— हे पुत्र! अब इस जातक की जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो।
वृषराशि में राहु, कर्क में शनि तथा वृश्चिक राशि में गुरु और केतु हों तो 'मार्जार योग' होता है।
इस योग वाला जातक सुख-सम्पत्तिवान्, गुणी, मानी, धनी, क्रोधी, कुटिल तथा कामी होता है। वह
पित्त प्रकृति वाला, अधीर, चंचल बुद्धि वाला, माता-पिता का अल्प सुख पाने वाला तथा पापों में
विशेष रुचि रखने वाला होता है। इस जातक को पहली तथा दूसरी वर्ष में सुख प्राप्त होगा।
पिता को लाभ होगा, प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा चिन्ता-मुक्ति होगी। शरीर में दारुण कष्ट होने पर प्रयत्न
(उपाय-उपचारों) से शान्ति मिलेगी। तीसरी-चौथी वर्ष में शरीर-वृद्धि के साथ खेल कूद में
मन अधिक रहेगा। वातविकार से व्रण तथा भय देने वाला ज्वर होगा, जो छायापात्र के दान,
अन्नदान से दूर होगा। फिर सुख प्राप्त होगा। ६ से नौ वर्ष की आयु में बाल-क्रीड़ा में रति रहेगी।
विद्यारम्भ कराये जाने पर पढ़ने-लिखने में बहुत आपत्ति करेगा। अधिक क्रोधी होगा। फिर
किसी समय अकस्मात् ही भय उत्पन्न हो। दान, मन्त्र तथा पुण्य कर्मों से सुख तथा भाग्य की वृद्धि
होगी। प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। (ये सभी फल इस आयु में पिता को प्राप्त होंगे)। १० से १६ वर्ष की आयु
में अनेक प्रकार के सुख प्राप्त हों। काम में मन लगे। इसी समय एक गुणवान् व्यक्ति सम्पर्क
में आये। साथ ही अच्छे कामों में विघ्न भी पड़ें। कामातुरता, मनोद्वेग एवं मोह के कारण
विह्वलता के लक्षण प्रकट हों। पढ़ने-लिखने में मन लगे। बुद्धि की वृद्धि हो। किसी धनी सुन्दर
तथा व्यवसायी मित्र से अत्यधिक आत्मीयता के सम्बन्ध स्थापित हों। सम्पूर्ण ऐश्वर्यों से युक्त

लाभ प्राप्त हो। १७ से २३ वर्ष की आयु तक भोग-विलास के सुख में वृद्धि हो। सज्जन पुरुषों का सम्मान करे। साधु-समागम श्रेष्ठ बुद्धि प्राप्त हो। सम्मान बढ़े। पुत्र-पुत्री एवं धन का लाभ हो तथा स्त्री से सुख प्राप्त हो। गौरव, वाणिज्य, लाभ एवं सम्मान की वृद्धि हो। राजद्वार में उच्च पद प्राप्त हो। वाणिज्य से विशेष लाभ हो। २४ से ३४ वर्ष की आयु में पुत्र तथा पुत्री के जन्मोत्सव में धन खर्च हो। कीर्ति बढ़े। कुल का प्रकाश बढ़े। भोग द्वारा प्रजा की वृद्धि हो। दान-धर्म में मन लगा रहे। अनेक कार्यों का प्रबन्ध करे तथा यत्र-तत्र प्रशंसा प्राप्त हो। ३५ से ४५ वर्ष की आयु में स्त्री से विशेष सुख मिले तथा पुत्र एवं कन्या का लाभ हो। मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि हो। कुल में कोई विवाह आदि उत्सव हो। भूमि द्वारा विशेष धन प्राप्त हो। नया मकान बनवाये। अनेक प्रकार के कार्यों से लाभ हो तथा धन की वृद्धि हो। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में पुत्र के भाग्य की वृद्धि हो तथा समस्त वैभव सुलभ हो एवं जीवन सफल हो। शत्रु नष्ट हों तथा श्रेय एवं सम्मान की प्राप्ति हो। ईश्वराराधन में मन लगे। दान-पुण्य करने के कारण पृथ्वी पर यश फैले। ५६ से ६४ वर्ष की आयु में सब प्रकार के सुख मिलें। मंगल-उत्सव हों। पौत्र का जन्म हो वैभव की वृद्धि हो। इसी अवधि में पुत्र को भय तथा कष्ट भी हो तथा परिवार में एक जीव का नाश हो। धन-सम्पत्ति में निरन्तर वृद्धि होती रहे। फिर श्वास-कास तथा अजीर्ण की व्याधि हो। सम्पूर्ण इच्छाएँ सफल हों। सेवकों का तथा वाहन का सुख मिले। मकान का सुख भी प्राप्त हो। विवाह, तीर्थ यात्रा एवं पुण्य कार्यों में विशेष खर्च हो। ६५ से ६९ वर्ष की आयु तक विशेष वृद्धि हो। कष्ट तथा बाधाएँ नष्ट हों। यत्र-तत्र प्रशंसा हो। ईश्वर-भजन से सब प्रकार के आनन्द बढ़ते रहें। दान-धर्म में भी नित्य वृद्धि हो तथा वैभव का विस्तार बढ़े। ७० वर्ष की

आयु में शरीरान्त हो तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर सुख भोग करे। हे पुत्र! यह जीव पूर्व जन्म में क्षत्रिय था। इसने अपने गुरु से झूठ बोला, मद्य पान किया तथा दिन में स्त्री-सहवास किया उस पाप के प्रभाव से इसे मूत्रकृच्छ्र रोग होगा तथा सन्तान को कष्ट मिलेगा। शुक्र ने पूछा-हे प्रभो! पूर्वकृत पाप के विनाश का उपाय कहिए। भृगुजी बोले- पाँच पल का ताँबे का पात्र बनवाकर, उसके मध्य में नवमण्डल बनाये। फिर उसमें चन्दन अथवा रोली से विष्णु भगवान् का स्वरूप बनाकर, पीले, श्वेत तथा काले रंग के १०८ वस्त्र, पाँच प्रस्थ घी तथा सात प्रस्थ तैल सहित वह ताम्र कलश दान करे तो सब कष्टों से छूटकर सन्तति सुख प्राप्त होगा, अन्यथा सात जन्मों तक महा दुःख भोगना पड़ेगा। ॥इति शुभम्॥

भाव	ग्रह
१	
२	रा.
३	
४	चं. श.
५	मं.
६	
७	
८	बृ. के.
९	
१०	सू. बु.
११	शु.
१२	

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र फलादेशं पूर्व योगेनमन्तरम्॥ अष्टमे नवमे सप्ते द्वादशे च तथा वपुः। महत्कष्टं भवेत्तस्य जीवने संशयो भवेत्॥१॥ यदि जीवस्य सौ बाल: कुबेरस्य समो भवेत्। पितृ सौख्यं भवेदल्प मित्रबन्धु समन्विता॥२॥ प्रथमे क्षितिपेन्दे तु वह्नि वर्षे चतुर्थके। बालवृद्धि सुखं सर्वे गृहे मंगलमेव च॥३॥ दशनोत्पत्तिजा व्याधि कृश्यदेहे विरेचनम्। सर्वकार्य विनश्यन्ति दानमन्त्र सुयत्नत:॥४॥ बाल क्रीडा विशेषेण सर्वेषां मोदते सदा। यथा देह प्रवर्द्धन्तो सुख सम्पत्समृद्धिवान॥५॥ प्राप्ते तु पञ्चमे वर्षे सर्पवर्णावधि क्रमात्। मंगलं विविधं कार्यं जायते नित्य नूतनम्॥६॥ सर्व सौख्य समायुक्तो मोदते बहुतत्पर:। लेखनं पाठनं चैव क्रीडने मति तत्पर:॥७॥ अष्ट वर्षे भवेद्दुःखं संभवो पूर्व पापत:। तन्दान्त षोडशे वर्षे विवाहो जायते ध्रुवम्॥८॥ नारीणां प्रीति सम्पन्नो रमते चापि मोदित [illegible] वान।

भृ० सं० २८३

मान कीर्ति महोत्साहो स्वजनानन्दवर्द्धनः ॥२०॥ ऋषिचन्द्रमिते वर्षे शरनेत्र गताब्दके। तेजस्वी सुप्रतापी च
मजनानन्द सर्वदा ॥२१॥ साधूनां सङ्गमे प्रीति देवतीर्थालये मतिः। दम्पत्यो मोदते नित्यं सुतपुत्र धनादि-
कम् ॥२२॥ अकस्माच्च महल्लाभं व्ययोऽपि बहु साधिता। ऋषि नेत्रगते वर्षे शर वह्नि गतेऽपि च ॥२३॥
सर्वसौख्यागमो गेहे कष्ट चिन्ता विनश्यति। सर्वेशत्रुक्षयोयाति मित्राणां सुख वर्धनः ॥२४॥ पुत्र जन्म गृहे
तस्य मङ्गलेमहदागतः। व्यापारो लाभदो नित्यं नृपद्वारादृनागमः ॥२५॥ दान मन्त्र सुपुण्येन अल्पायुश्च
विनश्यति। सुता पुत्रान्वितो नित्य प्रजावृद्धि महोत्सवै ॥२६॥ रस वह्नि मिते वर्षे युग वेद गतेऽपि वा।
प्रीतिर्विश्वजनैश्चैव तथा च परसुन्दरी ॥२७॥ पुत्रं वा यदि वा कन्या लक्ष्मी रूपा समुद्भवा। राज-
द्वारेऽतिमानञ्च धन प्राप्तिस्तथैव च ॥२८॥ केचित्काले भवेच्चिन्ता पुनः शान्ति प्रजायते। धनधा-
न्य समृद्धिश्च मङ्गले च धनं व्ययः ॥२९॥ वाणवेद गते वर्षे वह्निवाणगतेऽपि च। वाहनादिसुखं
सर्व गोप्यं धन समुद्भवः ॥२०॥ मान कीर्ति प्रवृद्धिश्च ज्ञान वृद्धिस्तथैव च। शत्रुमेक समुत्पन्नो
राजद्वारे जयं भवेत् ॥२१॥ पुनः शत्रु क्षयं याति धनवृद्धि दिने दिने। महोत्साहो धनं शादि भूमि
द्वारादृनागमः ॥२२॥ पुत्र सम्बन्ध योगं च धनाढ्यगृह संभवेत्। परस्त्री संभवेत्प्रीति स्वकीयां
परकियाऽथवा ॥२३॥ वेद वाणगते वर्षे नेत्र षष्ठाब्दमध्यगे। पौत्रजन्म महोत्साहो सर्वतो लाभ
संभवः ॥२४॥ पुण्य कर्मणि भोवास मोदते भूतले पुमान्। धनी यशस्वी तेजस्वी व्यापारो लाभ-
दो महान् ॥२५॥ अपत्ने विपरीत्यं हि द्रव्यहानि भयं महत्। ईश्वराराधने प्रीति श्रेयो मानं सुभ-
स्थितः ॥२६॥ पुत्र भाग्योदयं भूयात् राजद्वारे धनागमः। भूमि प्राप्तिविशेषेण कारयेत्नूतनं गृहम् ॥
२७॥ आयु वृद्धि सुपुण्येन वह्नि षष्ठाब्द जीवती। नाचेदल्ये हृति भूयात् निष्फलं जन्म पत्रिका ॥२८॥
पुनरग्रे समुत्पन्नो द्विजगेहे परंतपः। पूर्व जन्मस्य गाथा एवं शृणु पुत्र वदाम्यहम् ॥२९॥ दैवाच्चौ-

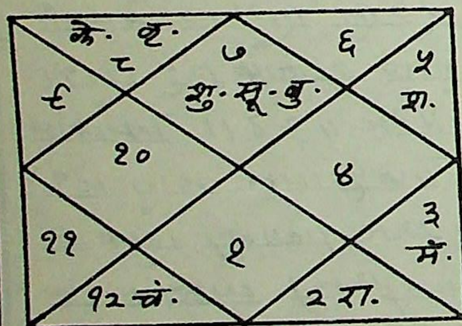
भा० टी०

यदि दोषेण विप्रहत्या कृतः पुरा। तेन पापानुसारेण राजरोग भविष्यति ॥३०॥ क्षयीरोगोऽथवा श्वासो सन्ततेर्वा सुखं नहि ॥ शुक्रोवाच। किं जाप्यं कस्य दानं च किं मन्त्रं कथय प्रभो ॥३१॥ भृगुरुवाच स्वर्णपात्रफलं पंचं तन्मध्ये पद्मनाभकम्। तदग्रे कलशं स्थाप्य नवकोणं च मण्डलम् ॥३२॥ चंदनेन प्रकर्तव्यं सूर्यादि ग्रह मण्डलम्। विप्रान्सं भोजयेत्पश्चाद्यथा शक्ति समन्विता ॥३३॥ एतद्दान प्रभावेण विप्रहत्या विमुक्तये। भवेत्सौख्यं च सन्तानं कास रोग प्रमुच्यति ॥३४॥ इति ॥

भावार्थः भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश सुनो। इसकी आयु के सातवें, आठवें, नवें तथा बारहवें वर्ष में महान् कष्ट होगा तथा जीवन के विषय में भी सन्देह रहेगा। यदि यह बालक जीवित बच जाय तो कुबेर के समान पराक्रमी होगा। पिता को अल्पसुख मिले तथा मित्र एवं बन्धुओं से युक्त हो। पहले, दूसरे, तीसरे तथा चौथे वर्ष में यह बालक सुखी रहेगा तथा घर में मंगल कार्य होंगे। दाँतों की व्याधि तथा अतिसार रोग से मुक्ति पाने के लिए इसके माता-पिता को दान एवं मन्त्र-जप करना चाहिए। बाल्यावस्था में खेल-कूद में विशेष रुचि रहेगी। जैसे-जैसे आयु बढ़ेगी, तैसे-तैसे घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी। ५ से ८ वर्ष की आयु में घर में नित्य नूतन मंगल हों तथा पढ़ने-लिखने एवं खेलने में मन लगे। आठ वर्ष की आयु में पूर्वजन्म के पाप के कारण अल्पमृत्यु होने की सम्भावना रहेगी। ९ से १६ वर्ष की आयु में सुख प्राप्त हो। पढ़ाई में मन लगे। स्त्रियों के प्रति प्रेम तथा आकर्षण हो। सुसंग से यश प्राप्त हो। १६ से २५ वर्ष की आयु में विवाह तथा भाग्योदय हो। सन्तान उत्पन्न हो। घर में महान् उत्सव तथा मङ्गलाचार हों। तेज वृद्धि हो। ईश्वराराधन में भी मन लगे। साधु-संत तथा देवता की सेवा हो। तीर्थ-यात्रा हो। पुत्र तथा धन का सुख प्राप्त हो। अकस्मात् ही धन का

विशेष लाभ भी हो। २६ से ३५ वर्ष की आयु में सब सुखों की प्राप्ति तथा वृद्धि हो। कष्ट एवं चिन्ता दूर हों। सभी शत्रु पराजित हों। मित्रों की ओर से सुख बढ़े। घर में पुत्र का जन्म हो। व्यवसाय में नित्य लाभ हो तथा राजद्वार से भी धनागम हो। दान, मन्त्र एवं पुण्य कर्मों से अल्पायु योग नष्ट हो। कन्या-पुत्रों से पूरा कुल की वृद्धि हो। महोत्सव हों। ३६ से ४४ वर्ष की आयु में किसी मनुष्य से प्रीति हो। अथवा किसी पर-स्त्री से प्रेम हो। पुत्र तथा कन्या का जन्म हो, राजद्वार में सम्मान बढ़े तथा धन का लाभ हो। कुछ समय चिन्ता का भी रहे। फिर शान्ति मिले। धन-धान्य की वृद्धि हो तथा माङ्गलिक कार्यों में धन खर्च हो। ४५ से ५३ वर्ष की आयु में वाहन का सुख हो तथा गुप्त-धन का लाभ हो। मान, कीर्ति, ज्ञान तथा बुद्धि की वृद्धि हो। एक शत्रु उत्पन्न हो, परन्तु राजद्वार से विजय मिले तथा शत्रु का नाश हो। दिन-प्रतिदिन धन बढ़े। महान् उत्सव हों, भूमि द्वारा धन लाभ हो। किसी धनी-कुल में पुत्र का सम्बन्ध हो। पर-स्त्री से प्रीति होना भी इसी काल में संभव है। वह स्त्री सजातीय अथवा विजातीय भी हो सकती है। ५४ से ६२ वर्ष की आयु में पौत्रजन्म का महान् हर्ष हो। सब जगह से लाभ हो। हे पुत्र! पुण्य-कर्मों के फलस्वरूप यह जातक पृथ्वी पर आनन्दोपभोग करेगा। धनी, यशस्वी, तेजस्वी तथा श्रेष्ठ व्यवसायी होगा। अयत्न से विपरीत फल प्राप्त होगा। द्रव्य-हानि तथा भय होगा। फिर ईश्वर-चिन्तन में मन लगेगा, पुत्र का भाग्योदय होगा तथा राजद्वार से धन-लाभ होगा। भूमि का लाभ विशेष रूप से होगा। नवीन गृह का निर्माण करायेगा। श्रेष्ठ पुण्य के प्रभाव से आयुवृद्धि होगी तथा ६३ वर्ष की आयु तक जीवित बना रहेगा। पुण्य न करने पर अल्प मृत्यु होगी। अगले जन्म में यह श्रेष्ठ तपस्वी ब्राह्मण होगा। अब इसके पिछले जन्म का हाल सुनो। पूर्व जन्म में यह

धार्मिक व्यक्ति था, परन्तु दैववशात् इसने चोरी के समय एक ब्राह्मण की हत्या करदी थी। उस पाप के कारण इसे यक्ष्मा अथवा श्वास रोग होगा। आयु में कमी आयेगी तथा सन्तान-सुख भी अल्प रहेगा। शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस मन्त्र के जप अथवा दान आदि से इसको पूर्वकृत पाप से मुक्ति मिल सकती है? भृगु जी बोले- पाँच पल वजनी स्वर्ण पत्र के मध्य में ब्रह्मा की मूर्ति अंकित करे तथा नवकोण मण्डल बना कर उसमें कलश स्थापित करे। फिर चन्दन द्वारा सूर्यादि ग्रहों का मण्डल बना कर, पूजा करे तथा ब्राह्मणों को भोजन करा कर, उन्हें यथाशक्ति दक्षिणा दे एवं स्वर्ण-पत्र किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान करदे तो पूर्वकृत पाप का प्रभाव क्षीण होकर आयुवृद्धि होगी, ब्रह्महत्या का प्रभाव छूट जाएगा, रोग दूर होगा तथा सन्तान-सुख की भी वृद्धि होगी॥ इतिशुभम्॥



ॐ भृगुरुवाच॥ अस्य कुण्ड०॥ जन्माङ्कस्य फलादेशं भृगुपुत्र वदाम्यहम्॥ सिंहराशि यदा शौरि वृषे राहु यदा भवेत्। वृश्चिके केतु जीवे च वीरवर्द्धन योगयो। एतद्योग प्रभावेण यस्य जन्मनि जायते। स भूपति भवेत् पृथ्वी धन ऐश्वर्य लब्धवान्॥१-३॥ आद्य वर्षे द्वितीये च मासे मासे सुखागमः। नाल लाभ प्रतिष्ठोऽपि किञ्चिन्चिन्तान्वितो भवेत्॥४॥ शरीरे दारुणो कष्टं सर्वशान्ति सुयत्नतः। राम वर्षे गते काव्यः चतुर्थे पंचमेऽपि वा॥५॥ बाल वृद्धि सुखं नित्यं क्रीड़ने मति तत्परः। सुयत्नतः। छायापात्रान्नदानेन कष्ट शान्ति सुयत्नतः। रसाब्दे नन्द व्रणवात विकारेण ज्वरतप्तो भयप्रदः॥६॥ विद्यारंभ महोत्साहो भगिनी योग संभवेत्। तावत्कालावधिर्वत्स व्रण वर्षे च तयोरन्तर्यथाक्रमा॥७॥ अल्प मृत्यु महत्स्वेदं द्वितीयो जन्म भण्यते। दानपुण्यादितो सौख्यं ईश्वरं बाधाहितो भयं॥८॥

भृ० सं० ३ २ २

भा० टी०

कृपया तदा ॥९॥ दिक वर्ष समारम्भ यावत्षोडश वर्षगे । उद्वाहो जायते तस्य स्त्रीप्राप्ति मनोहरः ॥१०॥ कामातुर प्रपीड्यन्तो चिन्तयेद्बहु नित्यशः । चिन्तयेन्नूतने कार्यं किंचिल्लाभ व्ययो तथा ॥११॥ विदेशो गमनं यात्रा मेलनं बन्धुभिस्सह: । ऋषि चन्द्रमिते वर्षे ऋतुनेत्र गतेऽपि वा ॥१२॥ सुता पुत्र प्रवर्द्धन्ते धन लाभ ततो भुवि । पत्नीदेहे तु कष्टं वै जीवनं लोक दुर्लभं ॥१३॥ छायापात्र महादानेरल्प मृत्यु निवारणं । बहुद्रव्य सुखं प्राप्य व्ययो याति तथैव च ॥१४॥ गुप्तचिन्ता विशेषेण रिपुभीतिस्तथैव च । नृपद्वारे जयं प्राप्त: हर्षवृद्धि दिने दिने ॥१५॥ नाग नेत्र गते वर्षे शर वह्नि गतेऽपि च । शरीरे कष्टमासन्न चिन्ताश्चिन्ता गरीयसी ॥१६॥ औषधी दान मंत्रेण सर्व कष्टं विनश्यति । संपदा संचयो नित्यं प्रकाशो विपणी भव ॥१७॥ सर्व कार्याणि सिद्ध्यन्ति लघु द्रव्य व्ययानि च । विस्ताराल्लाभतो सौख्यं पुत्र पौत्र धनादिकम् ॥१८॥ शुभ कार्ये व्ययो नित्यं महानन्द महोत्सवे । पुण्यदानादितो नित्यं सर्वोपद्रव नाशनम् ॥१९॥ ऋतुराम गते वर्षे यावद्बाण चतुर्थके । नाना कार्य प्रबन्धौ प्रच राजते सुख सम्पदा ॥२०॥ उद्वाहो देव कार्यादि व्ययं कीर्तिमहत्यशः । लाभं च विविधं कार्ये नृपद्वार दिशांतरे ॥२१॥ सुतासुत समायुक्तम् दम्पत्यो मोदते सदा । मंगलं विविधान् काव्य विख्यातो मतिमान्नरः ॥२२॥ रस वेद गते वर्षे शरबाण गताब्दके । भूमि लाभ विशेषेण ग्रामरामादि वाहनं ॥२३॥ साधुसेवारतो दानी देवतीर्थेषु सेवनम् मानकीर्ति विशेषेण वर्द्धयन्ति दिने दिने ॥२४॥ आरामवाटिका नव्यां विशेषो प्रीति वर्द्धनः । मोदते पुत्र पौत्राणां वाञ्छा पूर्ति भवेद् ध्रुवम् ॥२५॥ रस बाण गते वर्षे वेद षष्ठ गतेऽपि वा । ईश्वराराधने लिप्सो निज मृत्यु विचिन्तनम् ॥२६॥ सर्वेच्छा पूजितो लोके वैराग्यं मोक्ष कारणः । लोके प्रशंसते नित्यं तेजस्वी दीर्घ जीवनम् ॥२७॥ शर षष्ठाब्द मायुष्यं सर्व साफल्य वैभवाः । स्वल्पक्षये तनं त्यक्त्वा गतो सौ नन्दने वने ॥२८॥ पुनाग्रे राजगेहेऽपि जन्मयेत सुकर्मणा । पूर्वजन्मस्य वृत्तान्तं कथयामि शृणु सुतः ॥

२९॥ पूर्वजन्मन्यसौ वैश्यो विष्णुपूजा परायण:। हरेश्च मन्दिरं भग्न कृतन्ते नेह जन्मनि ॥३०॥ गुणवान् रूपवान् योगी मानवी धनवान्नर:। रुद्र निद्रा प्रभावेण सुदुःखं च प्रजायेत ॥३१॥ सन्तानं न भवेत्तस्य जातो वा न स जीवती। महायत्नं कृते पश्चाज्जातो देकस्तथा द्वयम् ॥३२॥ शुक्रो वाच ॥ किं जापं कस्य जापं च तत्सर्वं ब्रूहि मे प्रभो॥ भृगु उवाच॥ ताम्रपात्र पले पञ्च त्रिकोणेन समन्वितम्। लिखित्वा रुद्र मन्त्रं तु पंच बीजाक्षरं जपेत ॥३३-३४॥ ततो दान प्रदातव्यं तेन पापात्प्रमुच्यते। एतद्दानानुसारेण चिरजीवी भवेत्सुत:॥३५॥ वातव्याधि विनिर्मुक्त प्राप्यते सर्व सम्पतिम् ॥३६॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! अब इस जन्म कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहता हूँ, सुनो। सिंह राशि में शनि, वृष राशि में राहु तथा वृश्चिक राशि में गुरु और केतु हों तो 'वीरवर्द्धन योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक महावीर, राजा के समान धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। इस जातक के जन्म के बाद पहले तथा दूसरे वर्ष में सुख की वृद्धि हो। पिता को लाभ तथा प्रतिष्ठा मिले। कुछ चिन्ता भी हो। शरीर में कष्ट हो जो उचित प्रयत्न करने पर दूर हो। तीसरे, चौथे तथा पाँचवें वर्ष में बालक की शरीर-वृद्धि हो, नित्य सुख प्राप्त हो तथा क्रीड़ा में मन लगा रहे। व्रण, वात-विकार तथा भय देने वाला ज्वर भी हो। छायापात्र, अन्नदान तथा औषधोपचार आदि यत्नों से सब कष्ट दूर हों। ६ से ९ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन प्रारम्भ हो तथा बहुत सुख प्राप्त हो। इस आयु में व्रण आदि का कष्ट होना भी संभव है। साथ ही अल्प-मृत्यु का महान कष्ट भी हो सकता है, जो दान-पुण्यादि से टले तथा सुख प्राप्त हो। १० से १६ वर्ष की आयु में कामातुरता बढ़े तथा चित्त चंचल रहे। नवीन कार्यों का विचार हो। भाई-बन्धुओं से मिलाप तथा इनका सुख प्राप्त हो। इसके बाद १७ से २६ वर्ष की आयु में विवाह हो तथा कन्या एवं पुत्र की

भृ० सं० ९८३

भा० टी०

प्राप्ति हो। विदेश-गमन हो तथा धन का लाभ भी हो। इसी अवधिमें स्त्री के शरीर को कष्ट हो तथा संसार में जीवित रहना दुर्लभ दिखाई दे। उस समय छायापात्र महादान से उसकी अल्पमृत्यु का भय टले। धन की जैसी आय हो, वैसा ही व्यय भी हो। गुप्त-चिन्ता रहे, शत्रु का भय हो तथा अन्तमें राजद्वार से विजय हो और शत्रु पराभूत हो। २० से ३५ वर्ष की आयु में शरीर कष्ट तथा चिन्ता हो, औषधि, दान एवं मन्त्र से कष्ट का निवारण हो। सम्पत्ति का संचय हो। व्यापार में वृद्धि हो। सभी कार्य सिद्ध हों। थोड़ा धन खर्च भी हो। पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त हो। शुभ कार्यों में धन खर्च हो एवं पुण्य-दानादि से सभी उपद्रव शान्त हों। ३६ से ४५ वर्ष की आयु तक अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों की प्राप्ति हो तथा सुख मिलें। विवाह तथा देवपूजनादि में धन खर्च हो। राजद्वार से तथा देशान्तरों से लाभ हो। कन्या-पुत्र तथा स्त्री सहित आनन्दित बना रहे। अनेक प्रकार के मंगल कार्य हों तथा प्रसिद्धि मिले। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में ग्राम अथवा भूमि का लाभ हो, वाहन का सुख मिले, साधु-सेवा में बुद्धि लगे, तीर्थ यात्रा हो, दिन-प्रतिदिन सम्मान तथा कीर्ति की वृद्धि हो, उपवन तथा नदियों के प्रति विशेष प्रेम बढ़े। पुत्र-पौत्रों सहित आनन्द का लाभ हो तथा सभी आकांक्षायें पूरी हों। ५६ से ६४ वर्ष की आयु में ईश्वराराधन में विशेष रुचि हो। अपनी मृत्यु का चिन्तवन हो तथा सत्कर्मों में प्रवृत्ति हो। मोक्ष की ओर ले जाने वाला वैराग्य उत्पन्न हो संसार में सम्मान तथा तेजस्विता की वृद्धि हो। अन्त में, समस्त वैभव सफल होकर ६५ वर्ष की आयु में शरीर त्याग कर, देवलोक को प्राप्त हो। हे पुत्र! यह जीव पूर्व जन्म में विष्णुभक्त वैश्य था। इसने विष्णु-मन्दिर का निर्माण भी कराया था, उसी पुण्य के प्रभाव से यह इस जन्म में गुणी धनी तथा रूपवान् है, परन्तु इसने शिवजी की निन्दा की थी, उस पाप के कारण

इसे सन्तान सम्बन्धी दुःख प्राप्त होगा तथा अत्यधिक यत्न करने पर एक या दो सन्तानें ही रहेंगी। यह सुनकर शुक्र ने पूछा – हे प्रभो! इसके अपराध का प्रायश्चित्त क्या है? भृगुजी बोले – हे शुक्र! पाँच पल प्रमाण ताँबे के पात्र पर त्रिकोण बनाकर, उस पर रुद्र मन्त्र को लिखे तथा पंचबीजाक्षर मन्त्र का जप करके उसे दान करदे तो यह पूर्व जन्म के पाप से मुक्त होगा तथा व्याधि-मुक्ति एवं पुत्र-सुख प्राप्त करेगा। इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ जन्माङ्कस्य फलादेशं भृगुपुत्र वदाम्यहम्॥

बु. शु. ११ | १२ | १० सू. | ९ | ८ गु. | १ रा. | चं. के. ७ | २ | ४ श. | ६ | ३ | ५ मं.

अलि राशि गते जीवे तुले केतुर्यदा भवेत्। मेषे राहुर्शनौ कर्के भावुको योग उच्यते॥१-२॥ जन्म वर्षात् द्वितीये च दन्तबाधादि पीडनम्। ज्वरतापभवे देहे सुयत्नेन विनश्यति॥३॥ रामवर्ष समारम्भ यावत्स्यान्मुनि वत्सरे। तावत्कालावधि वत्स व्रणबाधादितो भयं॥४॥ अल्पमृत्यु महत्खेदं द्वितीयो जन्म भण्यते। दानपुण्यादितो सौख्यं ईश्वरीकृपया तदा॥५॥ तात लाभ न सन्देहो सर्वबाधाविनश्यति। विद्यारम्भ महोत्साहो भ्रातृयोगो ऽपि जायते॥६॥ लिप्य लेखन कार्येषु कुशलो ऽपि प्रकाशितः। अष्टमात् द्वादशे वर्षे तयोरन्तर्यथा-क्रमः॥७॥ धन भंगो विजानीयात् कुल कीर्ति महोत्सवे। विदेशो गमनं यात्रा मेलनं बन्धुभिस्सह॥८॥ रामचन्द्रगते वर्षे ऊनविंशे गते ऽपि च। उद्वाहो जायते तस्य पत्नी प्राप्ति मनोहरा॥९॥ कामातुरो प्रपीड्यन्ते चिन्तये बहु नित्यशः। शुभ कार्ये व्ययो नित्यं पुण्य तेज सुशोभिते॥१०॥ मान कीर्ति विशेषं च विख्याते मतिमान्नरः। सज्जनानां सु सन्मानी खलानां तप्यते सदा॥११॥ विंश वर्षगते काव्य नाग युग्मगते ऽपि च। नृपद्वारे जयं प्राप्य हर्ष वृद्धि महोत्सवे॥१२॥ आनन्दं मंगला-

चारं सुतासुत सुखांवह। बहुद्रव्य लभेत् नित्यं व्ययो घातितथैव च ॥१३॥ शरीरे कष्ट सम्पन्नो चित्त चिन्ता गरीयसी। औषधी दान मन्त्रेण सर्व कष्टं विनश्यति ॥१४॥ नन्द नेत्र गते वर्षे शरवह्नि गतेऽपि च। सम्पदा संचयो नित्यं प्रकामो विपणी भव:॥१५॥ नाना कार्य प्रवन्धैश्च सुखं सर्वत्र मेदिनी। आयुरेखा पितृहस्ते त्रुटिता युग्म रूपित:॥१६॥ राजसी तामसी चैव सात्विकी वृत्ति संयुत: पूर्व पापानुसारेण गुप्त बाधा विचिन्तनम् ॥१७॥ पत्नीदेहे तु कष्टं वै दान मन्त्रेण शान्तये। सुतासुत सुखं सर्वं प्रजावृद्धि धनान्विता ॥१८॥ राम वह्नि गते वर्षे शर वेद गतेऽपि च। लाभं च विविधो वत्स सुसंगात्पुण्य कर्मणि ॥१९॥ सुकार्ये च व्ययो दीर्घ: महोत्साहोऽपि मंगलम्। शरीरे कष्ट सम्पन्नो महादानेन शान्तये ॥२०॥ स्वकृत्य कुशलो दक्ष: मोदते धर्म तत्पर:। चित्त चिन्ता कदा काले लुप्यते ललनाजनै: ॥२१॥ स्वकार्य निरतो धीमान् नूतनो वार्तयान्वित:। द्विपुत्रो चतु कन्या च प्रसिद्धो मान वैभवा: ॥२२॥ ऋतु वेद गते वर्षे शर बाण गतेऽपि च। किंचिच्छोकेण पीड्यन्ते पुनरानन्द मङ्गलम् ॥२३॥ अपत्ने विविधा चिन्ता पूर्व पापेन दुःखिता। बाल्य मृत्युभयं घोरं सुधर्मे मोदवर्धनि: ॥२४॥ शुभ कार्ये व्ययो नित्य कुल कीर्ति कर: पुमान्। भाग्यवृद्धि विशेषेण विपाके लाभ वर्धनि: ॥२५॥ देव दर्शनि तीर्थे च पवित्री क्रियते वपु:। रस बाण गते वर्षे वेद षष्ठ गताब्दके ईश्वराराधने प्रीतौ वर्द्धते सुरव सम्पदा ॥२६॥ पुण्य कर्म प्रभावेण आयुर्वृद्धिस्तु भूतले। प्रसिद्धो भूमि भागे च मोदते बांधवैर्युतम् ॥२७॥ द्रव्य लाभ विशेषेण ऋण योगोऽपि न्यूनता। विवाहादि व्ययो दीर्घ: मान कीर्तिश्च सत्तमा: ॥ २८॥ शर षष्ठ गते वर्षे व्योम सप्ताब्द मध्यगे। पुत्र पौत्र प्रपौत्रं च सर्वे आज्ञा प्रपालक:॥२९॥ ईश्वराराधने लिप्त अग्रजन्मस्य चिन्तनम्। दान पुण्य प्रभावेण तीर्थ मन्दिर सेवनम् ॥३०॥ याचकान्नन्नदानेन तर्पयन्ति दिने दिने।

धनपुत्र सुखं च सर्व सौख्य यथा क्रमः ॥३१॥ चन्द्रस्य स्थितिमाधुं सुशीलो पुण्य तत्त्वतः । पुनर्वैश्य कुलोत्पन्नः धनी नामगुणी भवेत् ॥३२॥ सर्वेच्छा पूजितो लोके प्राप्यते नन्दनं वनम् । पूर्व जन्म भवेद् विप्र वेद वेदाङ्ग पारगः ॥३३॥ तेजस्वी च गुणी विद्वान् धर्म शास्त्र विशारदः । पट्टना नगरे वासं पुत्र नारि समन्वितः ॥३४॥ एकदा दैव योगेन अनुष्ठान रतः द्विजः । तदा आगमनं दृष्ट्वा दिव्य रूपा स्त्रियाः क्वचित् ॥३५॥ तस्य मोह वशं याति विस्मृतं मन्त्र देवयि । तद्दोषे अल्प मायाति महादानेन शान्तये ॥३६॥ त्रिमाशे स्वर्ण पत्रं च कारयेत् नवमण्डलम् । चन्दनेन लिखेत् पत्रं धर्ममूर्ति सदण्डकं ॥३७॥ घृत कुम्भ परिस्थाप्य रौप्य सिंहासने शुभे । वस्त्राभूषण संयुक्तं दापयेद्विप्र सादरं ॥३८॥ एतद्दान प्रभावेण आयुर्वृद्धि र्न संशयः । सर्व पाप विनिर्मुक्तो सर्वसौख्यमुवाप्नुयात् ॥३९॥ इति

भावार्थः भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश सुनो। वृश्चिक राशि में गुरु, तुला राशि में केतु, मेष राशि में राहु तथा कर्क राशि में शनि हों तो 'भावुक योग' होता है। इस योग वाले जातक को पहले तथा दूसरे वर्ष में दन्त पीड़ा तथा ज्वर हो, जो सुयत्न से शान्त हो। ३ से ७ वर्ष की आयु में व्रण व्याधि हो तथा अल्प मृत्यु जैसा कष्ट हो और उससे बचने पर दूसरा जन्म हुआ जैसा लगे। उस समय दान-पुण्यादि कृत्यों तथा ईश्वर की कृपा से ही कष्ट दूर होगा। इसी अवधि में पिता को लाभ हो तथा समस्त बाधाऐं दूर हों। विद्या-ध्ययन आरंभ हो तो बन्धु-जन का सुख प्राप्त हो। यह जातक लिखने-पढ़ने में कुशल तथा प्रकाशवान् होगा। ८ से १२ वर्ष की आयु में धननाश; हो अर्थात किसी घर के वृद्ध की मृत्यु हो। फिर विदेश-गमन एवं भाई-बन्धुओं से भेंट का सुअवसर मिले। १३ से १९ वर्ष की आयु में विवाह हो अथवा विवाह की चर्चा चले और बाद में विवाह हो। मनोहर पत्नी प्राप्त हो।

कामातुरता बढ़े। शुभ कार्य में व्यय हो। मान, प्रतिष्ठा तथा बुद्धि की वृद्धि हो। सज्जनों आदर मिले तथा दुर्जन ईर्ष्या करें। २० से २८ वर्ष की आयु में राजद्वार में विजय हो। आनन्द वृद्धि हो तथा पुत्र जन्म का सुख एवं मंगलाचार हों। धन की आमदनी खूब हो तथा वैसा ही खर्च भी हो। इसी अवधिमें शरीर में कष्ट तथा मन में चिन्ता हो। औषधोपचार, मन्त्र-जप एवं दानादि से सभी कष्ट दूर हों। २९ से ३५ वर्ष की आयु में सम्पत्ति में वृद्धि हो। अनेक प्रकार के कार्यों का प्रबन्ध हो, सर्वत्र सुख प्राप्त हो। आयु रेखा दो स्थानों पर टूटी हो। राजसी, तामसी तथा सात्विकी-तीनों प्रकार की वृत्तियों का समन्वयन रहे। पूर्वजन्म के पाप के कारण गुप्त-बाधा की चिन्ता हो तथा स्त्री को शारीरिक-कष्ट हो, जो दान-मन्त्रादि से दूर हो। कन्या-पुत्र का सुख हो तथा धन एवं प्रजा की वृद्धि हो। हे वत्स! ३६ से ४५ वर्ष की आयु में पुण्य-कर्म के प्रभाव से अनेक प्रकार के लाभ हों। मांगलिक महोत्सवों में धन खर्च हो। फिर शरीर में कष्ट उत्पन्न हो, जो महादान से दूर हो। यह जातक अपने कार्य-साधन में कुशल, धर्म तत्पर तथा आनन्द भोगने वाला होगा, किसी समय सन्तान सम्बन्धी चिन्ता हो। बुद्धिमानी से स्वपराक्रम में सफलता प्राप्त करे। दो पुत्र तथा एक कन्या का सुख प्राप्त हो। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में कुछ शोक तथा पीड़ा हो। फिर आनन्द की वृद्धि हो। अयत्न से दुःख हो तथा अल्प-मृत्यु का भय उपस्थित हो। सुधर्म से कष्ट दूर हों। शुभ कार्यों में धन खर्च करने से कीर्ति बढ़े, भाग्य की वृद्धि हो तथा लाभ हो। देव-दर्शन के निमित्त तीर्थ-यात्रा हो। बन्धु-बान्धवों सहित आनन्द का उपभोग करे। द्रव्य-लाभ हो, ऋण का भी थोड़ा योग उपस्थित होगा। विवाहादि कार्यों में धन खर्च हो तथा कीर्ति बढ़े। ६५ से ७० वर्ष की आयु में सब सुख प्राप्त हों तथा पुत्र-पौत्रादि आज्ञा का पालन करें। पुण्य-

कर्मों से ७० वर्ष की पूर्णायु प्राप्त हो। अगले जन्म में धनी वैश्य के घर में जन्म लेकर सुख भोगे तथा अन्त में देवलोक प्राप्त करे। हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह जातक ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था तथा वेद-वेदाङ्ग में निष्णात था। यह धर्म पुराण-शास्त्रों का ज्ञाता तथा व्यास तुल्य प्रतिष्ठित था। यह पटना नगर में स्त्री-पुत्र सहित रहता था। एक बार यह मन्त्र-जाप कर रहा था, उसी समय इसने एक दिव्य सुन्दरी स्त्री को देखा। मोहवश यह मन्त्र-जप भूल गया। उस अपराध के फल स्वरूप इसके जीवन में अल्पमृत्यु के अवसर उपस्थित होंगे। उस दोष की शान्ति के लिए तीन माशा वज़न के स्वर्णपत्र पर नवमण्डल बनाकर, उस पर धर्मराज की मूर्ति दण्ड सहित अंकित करे, फिर उसे घृत के कलश तथा चांदी के सिंहासन पर स्थापित कर, वस्त्राभूषण सहित किसी ब्राह्मण को आदर पूर्वक दान करे तो इसकी आयु वृद्धि होगी, इसमें सन्देह नहीं है॥ इति शुभम्॥

५ श. | ३ बु. | ६ मं. | ४ सू. | २ शु. | ७ के. | १ रा. | ८ बृ. | १० चं. | १२ | ९ | ११

ॐ भृगु उवाच॥ अस्य जन्म फलादेशं शृणु पुत्र वदाम्यहम्॥

सिंहे शौरि तुले केतु वृश्चिके च गते गुरौ। मेषे राहु भवेद्यस्य कामुको योग उच्यते॥१-२॥ कामुके सुख सम्पत्तिः जायेत नात्र संशयः। बहु कीर्ति भवेत्तस्य बहु भृत्यश्च सेवितः॥३॥ यदा जन्म भवेद् बालः तदा च मंगलं महत्। मातृपीडा विशेषेण पुनश्च मोदिते भुवि॥४॥ इन्दु नेत्रात् त्रिवर्षाणि शिव वृद्धि यथा क्रमः। गुप्त रोगेन पीड्यन्तो भूतश्छाया च विह्वलः॥५॥ छायापात्रान्नदानेन सद्यः सौख्यान्वितो शिशुः। वेद वर्ष समारम्भः नन्दवर्षान्तरे तथा॥६॥ तात मातु महामोदं शिशु वाक्य मति प्रियः। आद्यो विद्या समारम्भ पश्चाते च विसर्जनम्॥७॥ विशेषो मंगलं गेहे नव नारि समागमः। ततः भग्नी समायुक्तो मोदितं प्रीतिवत्स-रे॥८॥ [illegible]

९॥ अकस्माज्जायते कष्टं पुण्यकर्मेण शान्तये। पुनरन्ते महामोदं महद्भागी च बालकः ॥१०॥ दिक् वर्षे गते काव्य नागचन्द्र गतेऽपि वा। लिप्य लेखन कार्येषु कुशलेषु प्रकाशितः ॥११॥ पत्नी योगोऽपि दृश्य-न्तो मङ्गलं जायते गृहे। विवाहो मङ्गलं चापि मति कामं प्रवर्धते ॥१२॥ कश्चिद्गुणी जनस्तस्य प्रीतिकारी सहायकः। श्रेयांसि बहु विघ्नानि रक्षितो सुखमिच्छतः ॥१३॥ कामक्रीडा मनोद्वेगं विह्वलो रूप मोहिता। नन्द चन्द्रमिते वर्षे शर युग्म गतेऽपि च ॥१४॥ सज्जनानां सुसम्मानी साधुनां संगमे मतिः द्रव्य लाभ सुखाभिलिप्सो मानेन महताव्रतः ॥१५॥ सुता पुत्र सुखं सर्वं धनदारात्मजादयः। राजद्वारे पदोच्चं वा व्यापारो लाभदो महान् ॥१६॥ दिने दिने महत्तेजो धनी व्यापार कारकं। रसनेत्रगते वर्षे वेद वह्नि गतेऽपि च ॥१७॥ नाना कार्य प्रबन्धैश्च राजते सुख सम्पदा, उद्वाहो देव कार्यादि व्ययं कीर्ति महद्यशः ॥१८॥ लाभं च विविधो नित्यं नृपद्वारे दिशान्तरे। सुता पुत्र समायुक्तः दम्पत्यो मोदिते सदा ॥१९॥ आपत्तो दारुणं कष्टं पुण्यात् शान्ति भवेत् सदा। मनेच्छापूजितो नित्यं भोगान्भुक्तो यथेप्सितान् ॥२०॥ भूमि लाभ विशेषेण ग्रामरामादि वाहनं। साधु सेवारतो दानी देव तीर्थेषु सेवनम् ॥२१॥ शर वह्नि गते वर्षे रामवेद गतेऽपि च। सम्पदा संचयो नित्यं प्राप्यतेमान मुत्तमम् ॥२२॥ पुत्र कन्या विवाहार्थं धन व्यय न संशयः। महोत्साहो महत्प्राप्तिर्भविष्यति दिने दिने ॥२३॥ वृद्धमृत्यु कुटुम्बे च तस्मिन् व्यय महद्भवेत् ॥२४॥ धनधान्य समृद्धिश्च मंगलं गृहमेव च। पुत्रपौत्र धनैर्युक्त मोदते भुविमण्डले ॥२५॥ किंचित्खेद विजातीपाल श्वास कास समन्वितः। ब्रह्म भोज ततः कुर्यात् यथेच्छा भोजनं भवेत् ॥२६॥ सर्वरोग विनश्यन्ति सत्यं सत्यं वदाम्यऽहं। युग वेद गते वर्षे राम बाण गतेऽपि च। तीर्थ यात्रा न संदेहो दान पुण्य विशेषतः॥ साधु विप्र प्रसङ्गेन कथा वार्ता दिने दिने ॥२७-२८॥ नाना लाभ समायुक्तो पुत्रपौत्रादि कं सुखम्। धन धान्य समृद्धि

एच गृहाङ्गण प्रभृति: ॥२९॥ वेद बाण गते वर्षे चन्द्र षष्ठाब्दगेऽपि च। भूमि लाभ विशेषेण रचना गृह नूतनम् ॥३०॥ विवाहो मङ्गलं प्राप्य कुल जन्यु महोत्सवे। मान कीर्ति विशेषेण वर्द्धयन्ति दिने दिने ॥३१॥ ईश्वरं कृपयात्पुण्य सुस्थिरो सर्व वैभव:। पुत्र भाग्योदयं भूयात् राजद्वार धनागम: ॥३२॥ युग्म षष्ठाब्दगे वर्षे नन्द षष्ठ गतेऽपि च। भाग्यवृद्धि भवेन्नित्यं पुत्र पौत्र सुखं महत् ॥३३॥ मनेच्छा पूजितो सर्वे धन रत्नादि वेष्टिता। दान मन्त्र महत्पुण्य सर्वाभीष्ट फलप्रदा ॥३४॥ आयु वृद्धि सुपुण्येन व्योम सप्ताब्द जीवती। नोचेदल्पे मृतिं भूयात् निष्फलं जन्म पत्रिका ॥३५॥ पूर्वे सती सुगृहिणी त्यक्त्वाऽन्या गृहीतवान्। तेन पापानुसारेण सन्तानं नैव जायते ॥३६॥ जायते च प्रणस्येत नेत्ररोगेन पीडित: ॥ शुक्रो वाच॥ किं जाप्यं किं मन्त्र दानं प्रायश्चित्त हेतवे। तत्सर्वं कृपया ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि सादरम् ॥ ३७-३८॥ भृगु उवाच॥ ताम्रपात्र पलं त्रिंशत् घृतेन परिपूरितम्। सप्तान्नं प्रस्थ प्रस्थश्च विप्रे दान समाचरेत् ॥३९॥ एतद्दानोपचारेण सन्तति: प्राप्यते ध्रुवम्। अभावै-प्यन्त महाचिन्ता पुत्रैरपि धनैरपि ॥ ४०॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो। सिंह राशि में शनि, तुलाराशि में केतु, वृश्चिक राशि में गुरु तथा मेष राशि में राहु हो तो 'कामुक योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाला बालक सुख-सम्पत्तिवान्, विपुल कीर्तिमान् तथा अनेक सेवकों से युक्त होता है। इस जातक के जन्म-समय में घर में मंगल-कार्य हों, माता को आरंभ में कष्ट हो, परन्तु बाद में सुख प्राप्त हो। एक से तीन वर्ष तक बालक की यथाक्रम आयु वृद्धि हो। कभी गुप्त रोग की पीड़ा तथा कभी भूत-छाया का कष्ट भी हो। यह कष्ट छायापात्र एवं अन्नदान से दूर होगा तथा बालक सुखी रहेगा। ४ से ६ वर्ष तक की

भृ० सं० ८३३

आयु में बालक के माता-पिता आनन्दित बने रहें। इन्हीं दिनों विद्यारंभ हो। बालक आगे का पाठ पढ़े और पिछला भूलता चला जाय। घर में मंगल कार्य विशेषरूप से सम्पादित हों। नवीन स्त्रियों का आगमन हो। भाई तथा बहिन का जन्म हो। किसी समय व्रण, ज्वर, विस्फोट, जल से भय, अग्नि से भय अथवा किसी ऊँचे स्थान से गिर कर चोट लगने का भय भी उत्पन्न हो। अकस्मात कष्ट हो तथा दान-पुण्य करने से शान्ति हो। अन्त में विशेष आनन्द प्राप्त हो तथा बालक भाग्यशाली रहे। १० से १८ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन में मन लगे तथा प्रकाश बढ़े। स्त्री का योग इसी काल में संभव है। बुद्धि प्रबल हो। किसी गुणीजन से प्रेम हो, जो सहायक बने। अच्छे कार्य में विघ्न भी पड़ें। सुख की इच्छा बनी रहे और सुरक्षा भी हो। कामक्रीड़ा के लिए मन उद्वेलित हो तथा सौन्दर्य के प्रति आकर्षण बना रहे। १९ से २५ वर्ष की आयु तक विवाह निश्चित रूप से हो, सज्जनों को सम्मानित करे, सज्जनों एवं साधुओं की संगति में रहे, बुद्धि बढ़े, यश बढ़े तथा धन का लाभ हो। कन्या, पुत्र, स्त्री आदि का सुख प्राप्त होता रहे। राजद्वार में उच्च पद प्राप्त हो तथा व्यवसाय द्वारा धनी हो। २६ से ३४ वर्ष की आयु में अनेक कार्यों को कुशलतापूर्वक सम्पादित करे। सुख-सम्पत्ति प्राप्त हो। विवाह अथवा देव-कर्म में धन खर्च हो। यश एवं कीर्ति की वृद्धि हो। दिशान्तर से तथा राजद्वार से अनेक प्रकार के लाभ हों। कन्या, स्त्री तथा पुत्र सभी आनन्दित रहें। इसी अवधि में एक बार दारुण विपत्ति एवं कष्ट का सामना भी करना पड़े। पुण्य-कर्म द्वारा उससे मुक्ति मिले। मनोकामना पूर्ण हों तथा भोगों की उपलब्धि हो। भूमि का विशेष लाभ हो। बगीचा तथा वाहन का सुख भी मिले। साधु-सेवा में बुद्धि लगे [illegible]। ३५ से ४३ वर्ष की आयु

भा० टी०

तक सम्पत्ति का नित्य संचय हो। श्रेष्ठ सम्मान मिले। पुत्र प्राप्ति हो तथा माता चिन्तातुर हो। पुत्र अथवा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। दिन-दिन उत्साह बढ़े। कुटुम्ब में किसी वृद्ध पुरुष की मृत्यु हो। उसमें धन व्यय हो। घर में अन्य मंगल कार्य हों तथा धन-धान्य की वृद्धि होती रहे। पुत्र, पौत्र एवं द्रव्यादि से युक्त होकर पृथ्वी पर आनन्द का उपभोग करे। इसी अवधि में श्वास-कास का खेद भी हो। ब्राह्मणों को यथेच्छ-भोजन कराने पर रोग दूर हो। ४४ से ५३ वर्ष की आयु में दान-पुण्य तथा तीर्थयात्रा विशेष रूप से हो। साधु-ब्राह्मणों की संगति में रह कर हरि-कथा प्रसङ्गों का श्रवण हो। अनेक प्रकार के लाभ हों। नया मकान बने। धन से घर का आँगन भर जाय। कुल के बन्धुओं के यहाँ विवाहादि मंगल-उत्सव हों। मान-कीर्ति दिन-प्रतिदिन बढ़े। ईश्वर की कृपा तथा पुण्यों के प्रभाव से वैभव स्थिर बना रहे। पुत्र का भाग्योदय हो तथा राजद्वार से धन-लाभ हो। ६२ से ६९ वर्ष की आयु तक भाग्य वृद्धि होती रहे तथा पुत्र-पौत्रों का विशेष सुख प्राप्त हो। मन की सभी इच्छायें पूरी हों। धन-रत्न से परिपूर्ण बना रहे। दान-पुण्य तथा मन्त्र-जप के प्रभाव से सभी अभीष्ट फल प्राप्त हों। सुन्दर पुण्यों के कारण आयु-वृद्धि हो तथा ७० वर्ष तक जीवित बना रहे। दान-पुण्य न करने पर अल्प-मृत्यु का भय उपस्थित हो। दान-पुण्य के प्रभाव से यह जातक अगले जन्म में ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न होगा। हे शुक्र! अब इसके पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनो। पिछले जन्म में यह धनी-मानी वंश में उत्पन्न हुआ था, परन्तु इसने अपनी पतिव्रता स्त्री को त्याग कर पर-स्त्री को ग्रहण किया था, उस पाप के कारण इस जन्म में इसे सन्तान-सुख नहीं मिलेगा। सन्तान यदि जन्म लेगी भी तो मर जायेगी। यदि जीवित भी रही तो अल्पायु एवं नेत्र-रोगी होगी। यह सुनकर शुक्र ने कहा-हे

प्रभो! इसके पूर्व जन्म कृत पाप का प्रायश्चित्त किस उपाय से होगा, वह मुझे बताइये। भृगुजी बोले-
हे पुत्र! तीस पल भारी ताँबे के पात्र में घी भर कर, सातों प्रकार के अन्न सहित उसे किसी विद्वान
ब्राह्मण को दान करे तो पूर्वकृत पाप का दुष्प्रभाव दूर होगा तथा इस दान के प्रभाव से दीर्घजीवी
एवं स्वस्थ सन्तान की प्राप्ति होगी। दान न करने से पुत्र तथा धन की चिन्ता बनी रहेगी॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र कथा सर्वे यस्यैषा जन्म कुण्डली॥ प्रथमेब्दे ज्वरं पीड़ा
द्वितीये उदरस्मृता। तृतीये नेत्र रोगश्च भ्रातृ भगनीऽपि जायते॥ १-२॥ पितुर्लब्धि सदायात: मातृकष्ट
न संशय:। वेद वर्ष समारभ्य: यावत्सप्ताब्द भो सुत:॥३॥ व्रण व्याधि न सन्दे-
-हो विद्यारम्भ भवेत्तत:। नवां भूषणवस्त्राणि लभ्यते नात्र संशय:॥४॥
अग्रे विद्या च विस्मृत्य अग्रे धावति धावति। प्रान्तेतु अष्टमे वर्षे किंचि-
त्कष्टं न संशय:॥५॥ घृत दानेन शान्तिश्च तथा मृत्युंजयं जपात्। भ्रातृ
योग: तत: पुत्र: गृहे मंगलमेव च॥६॥ नन्द वर्ष समारभ्य नाग चन्द्र गतेऽ
पि वा। विद्या बुद्धि च प्राप्यन्ते राजद्वार परीक्षणम्॥७॥ पितुर्लाभ महैश्व-
-र्य वर्धयन्ति दिने दिने। महर्घ भूषणं वस्त्रं यान वृद्धिस्तथैव च॥८॥

६ बु.	५ सू. श.	४ शु.
के. चं. मं. ७		३
८ बृ.		२
९	११	१ रा.
१०		१२

विवाहादि महोत्साहो पितु द्रव्य व्ययं भवेत्। गृहे मङ्गलगानञ्च नवनारि समागम:॥९॥ नवचन्द्रमिते
वर्षे शरनेत्र गतेऽपि च। संततियोग सञ्जात: पितुर्कष्टंभवेत्यपि॥१०॥ माता सन्देह सन्तप्त:
भ्रातुमेक भवेत्यपि। महोत्साहो महैश्वर्य शुभ कार्ये धनं व्यय:॥ ११॥ कस्मिन् देशे भवेद्यात्रा
धन कीर्ति प्रवर्द्धन:। मित्रमेक भवेत्तत्र विद्यावान् शुभ लक्षण:॥१२॥ तदग्रे गुप्तवार्ता यां प्रकाश्य
-ति न. संशय:॥१३॥ पुत्रोत्सव महोत्साहं महत् धन व्ययं भवेत्॥ रस युग्म गते वर्षे वेद वह्नि गतेऽपि

च। महैश्वर्यं महालाभं मान कीर्ति विवर्द्धनम् ॥२४॥ कन्योद्भव सुपुत्रञ्चा विवाहादि व्ययं धनम् ।पात्राणि बहु रत्नानि भूषणानि तथैव च ॥ २५॥ धेनु पानं प्रदानं च आनन्देन व्ययं भवेत् । अरिष्टं जायतेपुत्र अल्पतुल्प प्रकष्टयेत ॥२६॥ औषधेन गतः रोगं सर्व कष्ट निवारणम् । शत्रुमेक समुत्पन्न स्वकुले पर कुलेऽपि वा ॥ २७॥ प्रत्यक्षे मिष्टवक्ता च परोक्षे शत्रुवच्चरेत । शत्रुविध्वंसनी देवी तस्यानुष्ठानमाचरेत ॥२८॥ शर वह्निगते वर्षे युग वेद गतेऽपि च। ग्राम भूमि भवेल्लाभं रत्नलाभं न संशयः ॥२९॥ राजद्वारे ऽति मानञ्च लक्ष्मी वृद्धि दिने दिने । अन्य कान्ता भवेत्प्रीतिः पूर्व कर्मानुसारतः ॥२०॥ तद्दिताय धनं वस्त्रं भूषणं रत्न संयुतम् । व्ययं भवति कालेन अग्रे व्याख्या भविष्यति ॥२१॥ वृद्धमृत्युं भवेद् गेहे छत्रभङ्गश्च जायते। पत्नी कष्ट विजानीयात् नान्यथा वचनं मम ॥२२॥ शरवेद गते वर्षे वह्नि वाणाब्दगेऽपि च। नाना रत्नं च वस्त्रं च धन वृद्धि न संशयः ॥२३॥ पुत्र जन्म न सन्देहो राजद्वारे प्रतिष्ठितः। गृहे मङ्गल कार्यं च भविष्यति दिने दिने ॥२४॥ राजकार्ये भवेद् यात्रा सेवकैर्वाहनैर्सह:। तत्रापि धन लब्धि स्यात् मान कीर्ति विशेषतः ॥२५॥ ईश्वराराधने प्रीतिः आनन्दं भुवि मण्डले। सर्वेच्छा पूजितं लोके भूमि प्राप्ति विशेषतः ॥२६॥ वेद वाण गते वर्षे युग्म षष्ठ गतेऽपि वा। तदान्ते जायते कष्टं ज्वरार्त्तमुदरव्यथा: ॥२७॥ स्वर्णमूर्ति प्रकर्तव्यं चन्द्र टंक प्रमाणकम्। संकल्पं दीयते विप्र मन्त्र जाप्य सुभक्तितः ॥२८॥ तत्र मन्त्रः॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कालाय कालाग्नि लोचनाय सर्व कष्ट हराय पूर्णायुरदायते नमः कं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ॥ वह्नि सप्त सहस्राणि जाप्यं रोग क्षयंगत:। बल वृद्धि करात् शीघ्रं नूतनं सौख्य संभवः॥ २९॥ मनेच्छा पूजितं लोके भूमिप्राप्ति विशेषतः। व्यापारे वृद्धिमाप्नोति नाना कार्य प्रबन्धकै: ॥३०॥ वह्नि षष्ठिगते वर्षे नन्द षष्ठ गतेऽपि च। विशेषोमंगलं कार्यं जायते [illegible] ॥३१॥ नाना कार्य प्रबन्धेषु च पति पत्न सुखी भवेत । [illegible]

माधुर्यं भुंजीतो पुण्य मानव: ॥३२॥ पुनरग्रे समुत्पन्नो नृपगेहे सुधार्मिकः। पूर्वजन्मत्यसौ वैश्यो ऽतिथि सेवा परायण: ॥३३॥ धन धान्य समायुक्तो दाता भोक्ता विचक्षण:। गवां च स्वादितं क्षेत्रं दृष्ट्वा क्रोध परायण: ॥३४॥ ताड़ितो यष्टिको तेन शब्दं कृत्वा मृतिर्गता। कुलघ्नो दु:ख युक्तश्च पुत्र दारा सुखं न हि ॥३५॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं किं मन्त्र जाप्यं प्रायश्चित्त भवेत् प्रभो। तत्सर्वं ब्रूहि लोकानां हितेरत त्वया सदा ॥३६॥ ताम्रपत्र पलं त्रिंश तन्मध्ये रस कोणकं। तस्योपरि लिखेन्मूर्ति: गो गायत्री प्रयत्न त:। पंचगव्येन प्रक्षाल्य तत: गंगोदकेन च। पीत वस्त्रेण संवेष्ट्य तत: प्राण प्रतिष्ठयेत् ॥३७-३८॥ रजत सिंहासने स्थाप्यं षोडशेन प्रपूजयेत्। मूर्त्यापि ब्राह्मणं दद्यात् सवस्त्रो भूषणादिकम् ॥३९॥ तेन पाप प्रणश्यन्ति पुत्र दारा सुखं भवेत्। नान्यथा दु:ख माप्नोति सत्यं सत्यं वचं मम:॥४०॥इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो।

इस जातक को प्रथम वर्ष में ज्वर-पीड़ा, दूसरे वर्ष में उदर-व्यथा एवं तीसरे वर्ष में नेत्र-रोग होगा तथा घर में भाई अथवा बहिन का जन्म भी होगा। ४ से ७ वर्ष की आयु में व्रण-व्याधि तथा विद्यारम्भ हो। नवीन वस्त्राभूषण प्राप्त हों। आगे विद्या पढ़े और पीछे पढ़ी हुई भूलता जाय। आठवीं वर्ष में कुछ कष्ट हो, जो घृत-दान से शान्त हो। मृत्युंजय मन्त्र का जाप भी हितकर रहेगा। भाई का जन्म हो तथा घर में मंगल-कार्य हो। ९ से १८ वर्ष की आयु में विद्या की वृद्धि तथा राजद्वार में परीक्षा हो। पिता को लाभ हो। दिन-प्रतिदिन ऐश्वर्य की वृद्धि हो। मूल्यवान् वस्त्राभूषण बनें। इसी अवधि में अथवा इसके कुछ समय बाद ही विवाह आदि महोत्सव हो, जिसमें पिता का धन खर्च हो। घर में मंगल-गान हों तथा नवीना स्त्री का आगमन हो। १९ से २५ वर्ष की अवधि में संतान हो तथा पिता को कष्ट भी हो। माता किसी सन्देह से तप्त हो। एक भ्राता भी उत्पन्न हो, जो

प्रत्यक्ष में मधुर भाषी तथा परोक्ष में शत्रुता का निर्वाह करने वाला हो। घर में शुभ कार्यों में धन खर्च हो तथा आनन्द-मङ्गल हों। किसी देश की यात्रा हो, जिससे धन तथा कीर्ति बढ़े। वहीं एक विद्वान तथा शुभगुणी मित्र मिले, जिसके सम्मुख गुप्त बातें प्रकट की जा सकें। पुत्रजन्मोत्सव में धन-धान्य का व्यय हो। घर में मांगलिक कार्य हों। स्त्री गर्भवती हो तथा पुत्र को जन्म दे। २६ से ३४ वर्ष की आयु तक ऐश्वर्य की वृद्धि हो। लाभ, मान तथा कीर्ति बढ़ें। एक कन्या का जन्म हो। एक अरिष्ट भी हो, जिसमें मृत्यु तुल्य कष्ट हो। औषधोपचार से रोग तथा सब कष्ट दूर हों। अपने ही कुल का अथवा पराये कुल का एक व्यक्ति शत्रु बने। उसके विनाश के लिए शत्रु-विध्वंसनी देवी का अनुष्ठान करना हितकर रहेगा। ३५ से ४४ वर्ष तक भूमि तथा रत्न लाभ, राजद्वार से सम्मान मिले। किसी पर-स्त्री से प्रेम हो, उसके लिए धन, रत्न, वस्त्र आभूषणादि का व्यय हो। इसी अवधिमें घर में किसी वृद्ध की मृत्यु हो, छत्रभङ्ग हो। स्त्री को कष्ट भी होगा। ४५ से ५३ वर्ष की अवधिमें अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों की वृद्धि हो। पुत्र का जन्म हो। राजद्वार में प्रतिष्ठा बढ़े। सेवक तथा सवारी का सुख मिले। राजकाज के हेतु यात्रा हो, उससे लाभ और कीर्ति मिले। ईश्वरा-राधन में प्रीति बढ़े, पृथ्वी पर समस्त आनन्द उपलब्ध हों। ५४ से ६२ वर्ष की आयु में ज्वर तथा उदर-व्यथा हो। उस समय एक टंक सोने की मूर्ति बनवाकर ब्राह्मण को संकल्प करे तथा मूल में लिखित मन्त्र का ७३००० की संख्या में जप करे। इससे सभी रोग तथा कष्ट दूर होंगे, इसी अवधि में मन की इच्छाएँ पूरी हों तथा भूमि का लाभ हो। अनेक कार्यों का प्रबन्ध हो। ६३ से ६६ वर्ष तक घर में नित्य मंगल होते रहें। पुण्य-प्रभाव से ७० वर्ष की आयु प्राप्त हो। आगे धार्मिक राजा के घर में जन्म ले। हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह जीव वैश्य वंश में उत्पन्न

हुआ था। यह अतिथियों की सेवा करता था। धन-धान्य से युक्त दानी, भोक्ता तथा विचक्षण बुद्धि वाला था। एक बार इसने एक गाय को घर में घुसकर अन्न खाते हुए देखा तो क्रुद्ध होकर लाठी-प्रहार से उसे मारडाला। उस गौ के शाप से इसे कष्ट होगा। इसके प्रायश्चित्त हेतु तीन पल ताँबे के पात्र में षट्कोण बनाकर गाय की मूर्ति लिखे। फिर उसे पंचगव्य से स्नान कराके चांदी के सिंहासन पर पीत वस्त्र में लपेटकर दान करे तो पाप नष्ट हो।

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं यस्यैषा जन्म पत्रिका॥ मेषे राहु धने जीव कर्के शौरि भवेद्यदि। तुला राशि गते केतु पुष्ययोगं स उच्यते॥ इन्दुनेत्रात् त्रिवर्षाणि शिव वृद्धि यथा क्रम:।

११ बु.
९ बृ.
१२ शु.
१० सू. चं.
८
१ रा.
७ के.
२
४ शा.
६
३
५ मं.

गुप्त रोगेण पीड्यन्ते भूतच्छाया च विह्वल:॥ १-३॥ महत्यो शंकया जातं तातमाताऽति चिन्तया। अष्टमेशो तदा पूज्य: उत्तरो पूतना तथा॥ ४॥ छायापायान्न दोते न सह्य: सौख्यान्वितो शिशु:। वेद वर्ष समारभ्य ग्याल वर्षान्तरे तथा॥ ५॥ तात मातु महामोदं शिशु वाक्यमति प्रिय:। आद्यौ विद्या समारम्भ पश्चात्तेन विस-र्जनम्॥ ६॥ विशेषो मङ्गलं गेहे नवनारि समागम:। तात भगनी समायुक्तो मोदितं प्रति वत्सरे॥ ७॥ नन्द वर्ष समारम्भ षोडशाब्दे तु यत्क्रमा। नवाम्बरं भूषणं च प्राप्यते मानमुत्तमम्॥ ८॥ शरीरे कष्ट सम्पन्नो उपचारेण शान्तये, विवाहो मङ्गलं कार्यं जायते च महोत्सवम्॥ ९॥ कुल कीर्ति विशेषेण मोदते मानमुत्तमम्। पूर्व पापप्रभा-वेण हानि चिन्ता रुजान्विता॥ १०॥ पत्नी प्राप्ति सुपुण्येन वाहनादि सुखोद्भव:। लेखनं पठनं स्वल्प: कार्यमात्रोऽपि मध्यम:॥ ११॥ बहुव्ययी विलासी च अतिकाम प्रवर्द्धयेत्। नाग चन्द्र गते वर्षे शरयुग्म गताब्दके॥ १२॥ धर्मक्षय करो योगं संभवो पूर्व पापत:। तात रोगेण पीड्यन्ते दौर्बल्यं गति मन्दत: ॥ १३॥ भोगा प्रचैभवो नित्यं वर्द्धते मोदितो जन:। कामबाण मनोद्वेगं चित्त चिन्ता च व्याकुल:॥ १४॥

सुता सुत सुखं लोके मान कीर्ति प्रकाशकः। यत्र दृष्टि गतं तत्र विजयो लाभ मुत्तमम् ॥१५॥ ऋतु नेत्रगते वर्षे शर वह्निगतेऽपि च। लाभं च विविधो वत्स सुसंगात्पुण्य कर्मणो ॥१६॥ सुकार्ये च व्यये दीर्घः महोत्साहोऽपि मङ्गलम्। शरीरे कष्ट सम्पन्नो महादानेन शान्तये ॥१७॥ स्वकुल कुशलादक्षः मोदते धर्मतत्परः। चाल्पमल्पु भयं घोरं सुधर्मे मोदवर्धनः ॥१८॥ भार्या गर्भवती ज्ञेया पुत्ररत्न मजीजनत्। प्रसिद्धो भूमि भागे च मोदते बांधवैर्युतम् ॥१९॥ धन रत्न सुता पुत्रं साफल्यं सर्व वैभवः। अयत्ने विविधं चिन्ता पूर्वपापेन दुःखितः ॥२०॥ ऋतुराम गते वर्षे वह्नि वेदाब्दगेऽपि च। राजद्वारे पदंप्राप्य परमोच्चं न संशयः ॥२१॥ वाहनात्पतनं ज्ञेयं न खेदो प्राप्यते क्वचित्। पूर्व यात्रा भवेत्पुत्र. प्रभुरा-शा न संशयः ॥२२॥ पत्नीखेद भवेत् कश्चिद् पुत्र जन्म समुद्भवः। उत्सवं गृहमध्ये च लाभवृद्धि दिने दिने ॥२३॥ कष्ट किञ्चिच्छरीरेषु चित्त व्याकुलतां व्रजेत्। दान पूजन होमेण शान्ति प्राप्नोति निश्चितम् ॥२४॥ तीर्थ यात्रा भवेत् पुत्रः तत्र दानं महत्यशः। पुत्र पौत्र समायुक्त मोदते भुवि-मण्डले ॥२५॥ युग वेद गते वर्षे शर बाण गतेऽपि च। कफ वातेन पीड्यन्ते औषधेन च शाम्यति॥ २६॥ धर्म मार्ग गतो चित्तं परोपकारं करोति च। तीर्थ यात्रा समारम्भ देशे पर्यटनं भवेत् ॥२७॥ महोत्साहो महैश्वर्य शुभ कार्ये धनं व्ययः। कस्मिन्देशे भवेद् यात्रा व्यापारं क्रियते तदा ॥२८॥ तत्रापि धनलब्धिश्च मान कीर्ति प्रवर्धनः। मित्रमेक भवेत्तत्र विद्यावान सुलक्षणः ॥२९॥ तदाग्रे गुप्तवा-र्तायां प्रकाशयति न संशयः। पुत्रोत्सव धनं धान्यं व्ययं याति पुनः पुनः ॥३०॥ रस बाण गते वर्षे वेद षष्ठाब्दगेऽपि च। शत्रुमेक समुत्पन्न राजद्वार उपाधयः ॥३१॥ परिणामे जयं प्राप्य शत्रु नाश न संशयः। ग्राम भूमि भवेल्लाभ रत्नलाभ भवेत् ध्रुवम् ॥३२॥ पुत्र पौत्र सुखं लाभ वर्धयं-ति दिने दिने। सर्व रोगः विनिर्मुक्त दैवाराधनमाचरेत् ॥३३॥ श्वास कास समायुक्त देहकम्प पुनर्भ

-वेत्। कफवातेन पीड्यन्ति औषधेन प्रशाम्यति ॥ ३४॥ शरषष्ठमिते वर्षे देवलोके स गच्छति ॥ वैशाखे कृष्णपक्षे च तृतीया भृगुवासरे ॥ ३५॥ प्रातःकालेच निर्याणं भविष्यति न संशयः। अग्रे वैश्य कुले जन्म धनकोषान्वितो भवेत् ॥ ३६॥ पूर्वे शूद्रो धनाढ्यश्च विप्रसेवापरायणः। निर्जले पथिके नं च जलदानं सदाकृतं ॥ ३७॥ कूपानां खननं चैव कृतं ते नेह जन्मनि। गुणी भोगी महामानी सर्वविद्या विचक्षणः ॥ ३८॥ पंचमे नवमे चेब्दे द्वादशेच तथा पुनः। महत्कष्टं भवेत्तस्य जीवने संशयो भवेत् ॥ ३९॥ यदि जीवत्य सौ लोके भूप तुल्यो न संशयः। षोडश वर्षात्परं सौख्यंमात्म वृद्धि बलेन च ॥ ४०॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। यदि मेष राशि में राहु, धनु राशि में गुरु, कर्क राशि में शनि तथा तुलाराशि में केतु हो तो 'पुष्पयोग' होता है। इस योग वाले जातक का शरीर १ से ३ वर्ष की आयु तक यथाक्रम वृद्धि को प्राप्त हो। कोई गुप्त रोग हो तथा भूत की छाया से भी भय लगे। माता-पिता विशेष शंकित रहें। उस समय अष्टमेश का पूजन तथा पूतना का उतारा कराने तथा छायापात्र एवं अन्नदान करनेसे इस बालक को सुख प्राप्त होगा। ४ से ८ वर्ष की आयु में माता-पिता को आनन्द प्राप्त हो। इसी अवधि में विद्यारम्भ हो, परन्तु बालक आगे की विद्या पढ़े और पीछे पढ़ी हुई भूलता भी चले। घर में कोई विशेष कार्य हो, नवीन स्त्रियों का आगमन हो, मंगलाचार हो। भाई-बहिन का जन्म हो और उनके साथ स्नेह में वृद्धि हो। ९ से १६ वर्ष की आयु में नवीन वस्त्राभूषणों का लाभ हो, कीर्ति बढ़े। शरीर में कभी कष्ट भी हो, परन्तु वह औषधोपचार से दूर हो जाय। इसके बाद विवाह आदि मंगल कार्य हों। कुल की कीर्ति बढ़े, अपने सम्मान की वृद्धि हो। पूर्व पापके प्रभाव से कुछ हानि भी हो। चिन्ता तथा रोग भी हो। फिर पुण्य के प्रभाव से स्त्री तथा वाहन

का सुख प्राप्त हो। पढ़ना-लिखना सामान्य ही रहे। अधिक खर्चीला तथा अधिक विलासी हो। १७ से २५ वर्ष की आयु में पूर्व पाप के कारण क्षय रोग होना संभव है। शरीर दुर्बल तथा गतिमन्द हो। उस समय दान-पुण्य करने से लाभ हो। पिता भी रोग-पीड़ित हो। वैभव की वृद्धि हो। कामाग्नि की पीड़ा मन को उद्वेलित करती रहे। चित्त में चिन्तायें रहें। फिर कन्या अथवा पुत्र का लाभ हो, सांसारिक कामों में मन लगे तथा कीर्ति की वृद्धि हो। जिधर भी दृष्टि जाय, वहीं लाभ हो। २६ से ३५ वर्ष की आयु में महोत्सव हों। सुसंगति तथा पुण्य-कर्म के प्रभाव से अनेक प्रकार के आनन्द प्राप्त हों। शुभ कार्यों में विशेष व्यय हो। फिर शरीर में कष्ट हो, जो महादान से शान्त हो। यह जातक अपने काम को करने में कुशल तथा धर्म में तत्पर होगा, परन्तु इसका अल्पायु योग भी है। धर्म में चित्त लगे। स्त्री गर्भवती हो तथा पुत्र को जन्म दे। पृथ्वी पर प्रसिद्धि प्राप्त हो। बन्धु-बान्धवों सहित आनन्द का उपभोग हो। धन, रत्न, कन्या, पुत्र आदि सभी ऐश्वर्य प्राप्त हों। अयत्न से अनेक प्रकार की चिन्तायें हों तथा पूर्व पाप के कारण दुःख प्राप्त हो। ३६ से ४३ वर्ष की आयु तक राजद्वार में उच्च पद प्राप्त हो। किसी वाहन से गिरे तथा थोड़ा कष्ट भी हो। फिर प्रभु की आज्ञा से पूर्व दिशा की यात्रा हो। स्त्री को थोड़ा कष्ट हो तथा पुत्र का जन्म भी हो। घर में उत्सव हो। दिन-दिन लाभ की वृद्धि हो। स्वयं के शरीर को भी कष्ट हो तथा चित्त में व्याकुलता रहे। दान, पूजन तथा होम से शान्ति मिले। फिर तीर्थ-यात्रा हो, वहाँ दान करने से यश प्राप्त हो। पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर पृथ्वी पर आनन्द का उपभोग करे। ४४ से ५२ वर्ष की आयु में कफ-वात की पीड़ा हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। धर्म-कर्म तथा परोपकार में चित्त लगे। तीर्थ-यात्रा एवं देशाटन हो। ऐश्वर्य वृद्धि हो। शुभ कार्यों

में धन खर्च हो। किसी देश की यात्रा हो। वहाँ व्यापार करे, जिससे धन का लाभ हो तथा कीर्ति बढ़े एक विद्वान् तथा शुभ लक्षणों वाला मित्र मिले। उससे गुप्त-वार्ता हो। फिर पुत्रोत्सव में धन खर्च हो। ५६ से ६४ वर्ष की आयु में एक शत्रु उत्पन्न हो। राजद्वार में उपाधि (मुकद्दमा आदि) हो, उस के परिणाम में विजय प्राप्त हो। शत्रु का नाश हो तथा रत्न-लाभ हो। पुत्र-पौत्रादि के सुख एवं लाभ की दिन-दिन वृद्धि हो। सब रोगों से छुटकारा मिले। देवाराधन में प्रवृत्ति हो। फिर श्वास कास तथा शरीर-कम्प की व्याधि हो। कफ-वात की पीड़ा हो जो औषधोपचार से शान्त हो। ६५ वर्ष की आयु में देवलोक वास हो। वैशाख मास के कृष्णपक्ष की तृतीया को शुक्रवार के दिन प्रातः काल मृत्यु होना संभावित है। अगले जन्म में वैश्य-कुल में उत्पन्न होकर सुख प्राप्त करे। हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह जीव शूद्र कुल में उत्पन्न धनाढ्य था। इसने ब्राह्मणों की बड़ी सेवा की थी तथा जिस मार्ग में जल नहीं था, वहाँ कुए खुदवा कर इसने प्यासे पथिकों के लिए जल दान का पुण्य अर्जित किया था। इसी कारण यह इस जन्म में भी गुणी, भोगी तथा विशेष कीर्ति पाने वाला होगा। यह सब विद्याओं में विचक्षण रहेगा। परन्तु अन्य जन्मों के पापों के फलस्वरूप यह अल्पायु होगा। इसके लिए पाँचवीं, नवीं तथा बारहवीं वर्ष घातक तथा विशेष कष्ट कारक रहेंगी। यदि इन वर्षों के बाद भी यह जीवित बना रहे राजतुल्य सुखों का उपभोग करेगा तथा १६ वर्ष की आयु के बाद अपने आत्मबल से विशेष आनन्द प्राप्त करेगा एवं उस फलादेश का अधिकारी होगा, जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। इसे दीर्घायु प्राप्ति के हेतु विशेष रूप से पुण्य-दान करने चाहिए [चूंकि इसकी बाल्यावस्था में ही अल्पमृत्यु के योग हैं, अतः इसके माता-पिता को ही दान पुण्य आदि शुभ कर्म करने चाहिए]॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच ॥ अस्य जातस्य यो भावि सर्व कर्म फला फलम्। तत्सर्वं शृणु भो पुत्र: सत्य सत्य वदाम्यहम् ॥ मेषे राहु तुले केतु सिंहे शौरि स्तथैव च। धनुराशि गते जीव शाश्वत् योग भविष्यति ॥ १-२ ॥ प्रथमे द्वितियेब्दे तु गृहे मंगल मोदिता। ज्वरो विरेचनं पीड्य: दशनो त्पतिजा रुजम् ॥ ३ ॥ मातृ दुग्ध न लभ्यंते कदाचिद्विकलो शिशु:। किंचिद्दानादि मन्त्रेण श्रेयो मानं सुयत्नत: ॥ ४ ॥ प्राप्यते चानिले वर्षे तथा वाणाब्द मध्यगे। तातप्रीति महोत्साहो गृहे मंगलमेव च ॥ ५ ॥ उरुवाधा समुत्पन्नो व्रणपीड़ा प्रजायते। छाया पात्रान्न दानेन रुजो नश्यति दारुणम् ॥ ६ ॥ ऋतु वर्षे सुसंप्राप्य: तथास्वा दिशि वत्सरे। मोदते मानमधिकं विद्याभ्यास सुखप्रदा: ॥ ७ ॥ चंचलत्चपलो धीमान् शिशूणां संगमेमुदा। प्राप्ते चैकादशे वर्षे तथा नन्द दशोऽपि वा ॥ ८ ॥ उद्वाहादि महोत्साहे पत्नीं प्राप्ति मनोहरां। देशान्तराद्गृहं प्राप्य: सर्वैमाण्डुरयोगत: ॥ ९ ॥ विंशवर्षाद्ब्दमारभ्य नागयुग्म तथान्तरे। सुतापुत्र समायुक्तो द्रव्य लाभं च मोदिता ॥ १० ॥ श्रेयो मानं प्रतिष्ठा च मोदते पुण्य वैभवा। अपत्ते मानसी चिन्ता विविधं क्लेश भाजन: ॥ ११ ॥ ज्वरेण पीड्यते देहो अजीर्ण नश्यति क्षुधा। औषधी सेवनं पुण्यं सर्व रोग विभंजनम् ॥ १२ ॥ नन्दनेत्रगते वर्षे शर वह्नि तथान्तरे। प्रतिष्ठा मानमधिकं कुल कीर्ति विशेषत: ॥ १३ ॥ विवाहादि महोत्साहो जायते मङ्गले कुले। दान मन्त्र महत्पुण्य रिपुरोग क्षयंकर: ॥ १४ ॥ धन वृद्धि भवेत् तत्र संपदा संचयो महान्। नाना कार्य प्रबन्धैश्च राजते सुख सम्पदा ॥ १५ ॥ सुता पुत्रान्वितो पुण्यात् दास वाहन मोदिता। मान कीर्ति विशेषेण पुण्यतेजो महत्यश: ॥ १६ ॥ सुयत्ने मोदितो नित्यं नात्र कार्य विचारणम्। सर्वत्रं माननीयोऽपि चित्त चिन्ता विनश्यति ॥ १७ ॥ ऋतु वह्नि गते वर्षे बाणवेद

बु. मं. चं. ७ के.	६ सू.	शु. श. ५
८		४
९ बृ.	३	
१०	१२	२
११		१ रा.

गताब्दके । सिद्ध्यन्ति सर्व कार्याणि बृहस्पत्याभ प्रभावतः ॥१८॥ शरीरे दारुणं कष्टं निमग्नश्चिन्तनार्णवे
औषधिं सेवनं कृत्वा रोग शान्तिर्न दृश्यते ॥१९॥ सर्वावाधाति मंत्रेण दुर्गा पाठपुटी कृतः । कृत्वा सद्य सुखं
लब्ध्वा सर्व रोग विनाशनं ॥२०॥ दिवे मासे सुखं नित्यं मंगलं च महोत्सवे। भूमि प्राप्य महद्रूपं रच-
-ना गृह नूतनम् ॥२१॥ भोगाश्च वैभवो नित्यं वर्द्धते नाऽत्र संशयः । रस वेद गते वर्षे वह्नि बाणाब्द गेऽपि
च ॥२२॥ पुत्र कामं भयं कष्टं स्वयमेव विनश्यति । विवाहादि व्ययो दीर्घः कुल कीर्ति प्रकाशकः ॥२३॥
लाभं च विविधो कार्यं धन सम्पत्समृद्धिमान् । पुत्र भाग्योदये भूपात् धनवान् पुत्रवान् भवेत् ॥२४॥
पुत्रजन्म महोत्साहो साफल्यं सर्व वैभवः । तावत्कालावधिर्नूनं मनेच्छा बहु पूजितः ॥२५॥ वेदबाण
गते वर्षे युग्म षष्ठ गताब्दके । कुशलं सर्वकार्येषु मानतीयो प्रशंसितः ॥२६॥ धनरात्म महत्तेजो
सुखाविष्टो महद्यशः । दान धर्मे महत्प्रीति ईश्वरं कृपया सुखं ॥२७॥ किंचिन्नेष्ट दशा ह्येषा
निवृत्तो पुण्य कर्मणः। देवदर्शनिजा प्रीती पवित्री क्रियते वपुः ॥२८॥ विवाहादि महोत्साहो देव
पुण्योत्सवे व्ययम् । पुत्रपौत्रादि संयुक्तो सुकीर्तिम् ख्याति भूतले ॥२९॥ मनेच्छा पूजितो नित्यं
ईश्वरं कृपया तदा। वह्नि षष्ठ गते वर्षे नन्द षष्ठ तथांतरे ॥३०॥ शरीरे दारुणोकष्टं निमग्नश्चि-
-न्तनार्णवे । पौत्र जन्म महोत्साहो जायते चान्यवत्सरे ॥३१॥ भूमि प्राप्य महद्रूपं रचना गृह नूतनम्।
व्योम सप्तगते वर्षे दुर्बलं रोग पीड़िता ॥३२॥ प्रवास कास महाव्याधि अजीर्ण नश्यति क्षुधा । आ-
-श्विने कृष्ण पंचम्यां पंचतत्वं विलीयते ॥३३॥ अग्रजन्मे सुपुण्येन भूयो द्विज महामतिः । मोक्ष
पात्र सुखाः सर्वे महाराष्ट्रेऽपि पूजित ॥३४॥ अल्प त्रय विजानीयात् बाल यौवन वृद्धयोः । त-
-स्योपाय प्रकर्तव्यं येन पूर्ण वयं भवेत् ॥३५॥ कांचनं पुरुषं ह्येयं राशि टंक प्रमाणकम्।
तस्ये [illegible] पूजितं [illegible] ॥३६॥ पूर्व काले [illegible] वेदवेदाङ्ग पारग ।

भुवनेश्वरी शु भक्तोऽयं पूजने हवने रत: ।।३७।। तेन कर्मविपाकेन इह जन्मे समुद्भव: । नृपो वा नृपतुल्यो वा राजते गृह मंत्रिणा ।।३८।। गुप्तरोग भवेदङ्गे येन नारीन तृप्यति । प्रमेह नाशकं चूर्णं गोदुग्धेन सह: पिबेत् ।।३९।। तेन रोग विनश्यन्ति शरीरं बलवान् भवेत् । सर्वेच्छा पूर्णपेत लोके अन्ते वैकुण्ठ गच्छति ।।४०।। इति ।।

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! इस जातक के भविष्य के विषय में सुनो। यदि सिंह राशि में शनि, तुला राशि में केतु, मेष राशि में राहु तथा धनुराशि में गुरु हो तो 'शाश्वत योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को पहले-दूसरे वर्ष में ज्वर, अतिसार तथा दन्त-पीड़ा होती है एवं घर में मंगल-आनन्द होते हैं। मातृदुग्ध न मिलने से बालक दु:खी होता है। कुछ दान करने तथा मन्त्र जप से माता के स्तनों में दूध उतरता है एवं आनन्द होता है। ३ से ५ वर्ष की आयु में पिता का प्रेम बढ़ता है। घर में उत्सव होता है। फिर जांघों में व्रण की पीड़ा होती है, जो छायापात्र तथा अन्नदान से दूर होती है। ६ से १० वर्ष की आयु में आनन्द तथा सम्मान की वृद्धि होगी। सुखदायक विद्या का अध्ययन आरंभ होगा। बुद्धि चंचल रहेगी तथा अन्य बालकों के साथ खेलने में रुचि रहेगी। ११ से १९ वर्ष की आयु में विवाहादि उत्सव तथा स्त्री की प्राप्ति हो। देशान्तर से धन का लाभ भी हो। २० से २८ वर्ष की आयु में पुत्र-लाभ हो। आनन्द, धन, मान, प्रतिष्ठा एवं वैभव का लाभ हो। अयत्न से मानसी चिन्ता हो, अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ें तथा शरीर ज्वर-पीड़ित हो, क्षुधा नष्ट हो। औषध-सेवन तथा दान-पुण्य से आरोग्य-लाभ हो। २९ से ३५ वर्ष में प्रतिष्ठा बढ़े, वंश-वृद्धि हो एवं घर में विवाह आदि मंगल कृत्य हों। दान-मन्त्र एवं पुण्य द्वारा रोग तथा शत्रु का नाश हो। धन की वृद्धि हो तथा सम्पत्ति का संचय भी हो। कन्या तथा पुत्र का लाभ हो। सेवक तथा सवारी का सुख प्राप्त हो।

पुण्य से मान, कीर्ति, यश एवं तेज की वृद्धि हो। सुयत्न से नित्य आनन्द हों। सब जगह प्रतिष्ठा मिले तथा चिन्ता दूर हो। ३६ से ४५ वर्ष की आयु में सभी कार्य सिद्ध हों। विशेष लाभ भी हो। फिर शरीर में कष्ट हो, चिन्ता हो। औषध-सेवन करने पर भी रोग शान्त न हो। तब 'सर्वाबाधा०' इस मन्त्र से दुर्गा पाठ को संपुटित करने से लाभ हो तथा रोग नष्ट होकर सुख प्राप्त हो। नित्य नये मंगल, महोत्सव हों। भूमि तथा धन की विशेष प्राप्ति हो। नया मकान बने, वैभव बढ़े। ४६ से ५३ वर्ष की आयु में काम-भय तथा कष्ट हो। विवाहादि कार्यों में धन खर्च हो, कुल-कीर्ति प्रकाशित हो। अनेक प्रकार के कार्यों से धन-लाभ हो। पुत्र का भाग्योदय हो। धनी तथा पुत्रवान् हो। दूसरे पुत्रों का जन्मोत्सव हो, वैभव सफल हो। मन की इच्छायें पूरी हों। ५४ से ६२ वर्ष की आयु में सब कार्यों में कुशलता तथा सम्मान प्राप्त हो। धन तथा आत्मिक-तेज की वृद्धि हो। सुख तथा यश बढ़े। दान-धर्म में विशेष प्रीति हो। कुछ अनिष्ट होने की संभावना भी है, जो दान-पुण्य से दूर होगी। ईश्वर-कृपा से सभी सुख प्राप्त हों। पौत्र आदि के विवाह का महोत्सव हो। देव-दर्शन में प्रीति बढ़े, तीर्थ-यात्रा हो। पुत्र-पौत्रादि से सुख मिले। ६३ से ६६ वर्ष की आयु तक शरीर में विशेष कष्ट हो, चिंता बढ़े। पौत्र-जन्म हो। भूमि प्राप्त हो। विशेष धन का लाभ हो तथा नया मकान बने। ७० वर्ष की आयु में शरीर रोग-पीड़ित हो। श्वास-कास की व्याधि, अजीर्ण तथा क्षुधा-नाश हो। आश्विन कृष्णा पंचमी को शरीर शान्त होकर पंचतत्त्व में विलीन हो। सुन्दर पुण्य-प्रताप से अगले जन्म में बुद्धिमान् ब्राह्मण हो तथा सब प्रकार से सुखी एवं राजाओं द्वारा पूजित होकर मोक्ष का पात्र बने। हे शुक्र! इसके बाल, युवा तथा वृद्धावस्था में तीन अल्पमृत्यु के योग हैं। उससे बचने के लिए एक टंक प्रमाण स्वर्ण की पुरुष मूर्ति

बनवा कर, उसमें मन्त्रों द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा करे तथा किसी ब्राह्मण को दान करदे। इस उपाय से पूर्णायु प्राप्त होगी। पूर्व जन्म में यह प्राणी वेद-वेदाङ्ग का ज्ञाता, ब्राह्मण कुल में ही उत्पन्न हुआ था। भुवनेश्वरी देवी के हवन-पूजन तथा जप में इसकी बुद्धि लगी रहती थी। उस पुण्य से यह इस जन्म में राजा अथवा नृपतुल्य ऐश्वर्य शाली होगा। परन्तु उससे भी पूर्व जन्म में हुए एक अपराध के कारण इसके शरीर में गुप्त-रोग भी होगा, अतः स्त्री को तृप्त नहीं कर सकेगा। इसके लिए गोदुग्ध के साथ प्रमेहनाशक चूर्ण का सेवन करना चाहिए। दान-पुण्य करते रहने से अल्पायु योगों का भय समाप्त होगा तथा यश वैभव की वृद्धि होगी॥ इति शुभम्॥

मे. बु. १०
११ चं.
९ बृ. सू.
८ शु.
७ के.
१२
६
१ रा.
३
५ श.
२
४

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र फलादेशं अस्य जातस्य कुण्डलीम्॥
प्रथमाब्दे द्वितीये च तृतीये च चतुर्थके। पंचमे सप्तमे यत्र गाथा शृणु प्रयत्नतः॥१-२॥ नेत्रोदर गुदापीड़ा मातृपीड़ा च जायते। पितुर्लाभ न सन्देहो वर्षे वर्षे दिने दिने॥३॥ विद्यारम्भ विजानीयात् धन धान्य समागमः। अष्टमात् षोडशे वर्षे विद्यावृद्धि दिने दिने॥४॥ राजद्वारे च सम्प्राप्ते उपहार न संशयः। नवीनो भूषणं वस्त्रं यान वृद्धि प्रजायते॥५॥ गिरिचन्द्रमिते वर्षे व्योम नेत्रमिते तथा। चतुर्विंशमितेऽब्देषु शृणु पुत्र फलमिदम्॥६॥ कान्ता सर्व सुखं भोग्यं नाना द्रव्य समाकुलः। चित्रशाला विशेषेण व्यतीतं समये सुतः॥६॥ पत्नीगर्भ समायुक्ता स्वल्पजीवी च बालकः। जायते नात्र सन्देहो अथवा गर्भनाशनम्॥७॥ शुक्रोवाच॥ केनोपायेन भो तात गर्भपूर्ण भविष्यति। चिरजीवी भवेद् बालं मातापितुश्च सेवकः॥८॥ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र मया वाक्यं येन पुत्र सुखं भवेत्। पंचमेशो ग्रहे पूजा कुर्यात् पुत्र प्रयत्नतः॥९॥ हवनादिकं च जापं च

पुत्र सौख्यमुवाप्नुयात्। सन्तानगोपाल जपं कृत्वा च यथाविधे। मूर्ति स्वर्णमयी कृत्वा ब्राह्मणं च ददेत् पुनः ॥ १०-११॥ बाण नेत्रमिते वर्षे वेद वह्नि मिते तथा। राजद्वारे ऽपि मानं च धन लाभस्तथैव च॥ ॥१२॥ उद्भवे गुप्त प्रीतिश्च कश्चिद्धि स्त्री विशेषतः। धन लाभं न सन्देहो राजद्वारे पुनः पुनः॥१३॥ भूम्योऽपि धन लब्धिश्च व्यवहारे न संशयः। गृहे मङ्गल कार्यं च स्त्री पीड़ा तथैव च॥१४॥ औषधेन प्रशमयंति त्र्यम्बकश्च विशेषतः। पुत्रजन्मोऽपि जानीयात् धर्मशीलः प्रतापवान्॥ १५॥ शर वह्नि गते वर्षे नेत्र वेदाब्द गेऽपि च। तीर्थयात्रा दान धर्मः तस्मिन् काले च संभवः॥१६॥ गृहे मंगल कार्यं च उत्सवं च दिने दिने। धन पुत्र सुखं ज्ञेयं दास दासीणि सेविता॥१७॥ एतत् काले भवेत् पुत्रः मान वृद्धि विशेषतः। अल्पमेकं न सन्देहो भविष्यति वरानन॥१८॥ तास्योपायं च कर्तव्यं मन्त्र यन्त्रौषधेन वा। वह्नि वेद गते वर्षे वेद पंच गतेऽपि च। दुःख सौख्य समे येन ज्ञान मार्ग रतः सदा। सात्विको वृत्ति संयुक्ता स्वजनेषु प्रबोधयः॥ १९-२०॥ विवाहादि व्ययो दीर्घः मान कीर्तिश्च सत्तमा। धनी यशस्वी तेजस्वी व्यापारे लाभकृत् महान्॥२१॥ भूमि प्राप्ति विशेषेण कारयेत् नूतनं गृहम्। ईश्वराराधने प्रीतिः श्रेयोमानं सुयत्नतः॥ २२॥ शरपंच गते वर्षे राम षष्ठ गताब्दके। भाग्य वृद्धि विशेषेण पुण्य कार्ये महत्यशः॥२३॥ द्रव्यलाभ विशेषेण ऋण योगेऽपि न्यूनतः। दास दासी सुखं नित्यं चतुष्पादादि वाहनम्॥२४॥ नाना कार्य प्रबंधैश्च राजते सुखसम्पदा। अयत्ने विपरीतंहि द्रव्य हानि भयं महत्॥२५॥ सुयत्ने जायते सौख्यं अयत्ने कार्य नाश भू। ईश्वराराधने प्रीतिः सर्वसिद्धि प्रदौ भवः॥२६॥ वेदषष्ठ गते वर्षे नागषष्ठगतेऽपि च। पुत्र पौत्र सुखं ज्ञेयं तीर्थादिक सेवनम्॥२७॥ ईश्वराराधने लिप्त अग्रजन्मस्य चिन्तनम्। अतः परे सुखं सर्वे नन्द षष्ठाब्दमायुषम्॥२८॥ पुण्यात्तु प्रशंसनीयोऽपि पुनर्जन्म महत्कुले। पूर्वजन्मन्यसौ विप्रो धनाढ्यो बहु भृत्यकः॥ २९॥ रुद्रपूजाकृतं

नित्यं बहुविद्या विशारद:। परद्रव्यापहारी च कृत कर्म च पापकं ॥३०॥ तस्य पाप प्रभावेण भवेत् रोगी पुनः पुनः जठराग्नि भवेत् मन्द: अर्श रोगोऽथवा भवेत् ॥३१॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा चं कथयस्व महामुने ॥ भृगुरुवाच॥ टंक सप्त प्रमाणं च स्वर्णमूर्तिं च कारयेत् । घृत मध्ये ततः धृत्वा श्रेष्ठ विप्राय दापयेत् ॥३२-३३॥ एतद्दान प्रभावेण पूर्व पापात्प्रमुच्यते ॥३४॥

ॐ भृगुजी बोले- हे शुक्र! अब इस जन्म कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनो। पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पाँचवें तथा सातवें वर्ष में क्रमशः नेत्र, उदर, दन्त तथा गुदा पीड़ा स्वयं को हो एवं माता को कष्ट हो। पिता को प्रति दिन, प्रति वर्ष लाभ हो। विद्यारम्भ हो, धनागम हो। ८ से १६ वर्ष की आयु तक विद्या-वृद्धि हो। राजद्वार से उपहार प्राप्त हो। फिर विवाहोत्सव हो तथा सुन्दर स्त्री प्राप्त हो। पत्नी चन्द्रमुखी तथा सर्वगुण सम्पन्ना मिले। नवीन वस्त्राभूषणों की वृद्धि हो तथा अधिकांश समय चित्रशाला में ही व्यतीत हो। १७ से २० वर्ष की आयु में सब प्रकार के सुखों तथा स्त्री-भोग की प्राप्ति हो। फिर स्त्री गर्भवती हो, परन्तु या तो गर्भ गिर जाय अथवा अल्पजीवी सन्तान का जन्म हो। यह सुन कर शुक्र ने पूछा- हे तात! किस उपाय से गर्भ पूर्ण होगा? बालक के चिरजीवी तथा माता-पिता के सेवक होने के विषय में बताइए। भृगुजी बोले- हे पुत्र! सुनो, पंचमेश ग्रह का यत्न पूर्वक पूजन करे तथा सन्तान गोपाल मन्त्र का जप कर, एक स्वर्ण की मूर्ति बना कर उसका पूजन करे तथा हवन करके वह मूर्ति किसी ब्राह्मण को दान करदे तो दीर्घजीवी पुत्र का सुख प्राप्त होगा। २५ से ३४ वर्ष की आयु में राजद्वार में मान वृद्धि हो तथा धन का लाभ हो। किसी अन्य स्त्री से गुप्त-प्रेम भी हो। घर में मंगल-कार्य हों। स्त्री को पीड़ा हो तथा त्र्यम्बक मन्त्र के जप से

एवं औषधोपचार से कष्ट दूर हो। फिर प्रतापी तथा धर्मात्मा पुत्र का लाभ हो। मान-वृद्धि एवं धन धान्य का आगमन हो। ३५ से ४२ वर्ष की आयु में तीर्थ-यात्रा, नित्य उत्सव तथा मंगल कार्य हों। धन, पुत्र एवं दास-दासियों का सुख रहे। पुनः स्त्री को कष्ट हो, जो औषध-सेवन से दूर हो। देश-देशान्तर में कीर्ति बढ़े। एक अल्प मृत्यु योग उपस्थित हो, जो मन्त्र, यंत्र एवं औषध से टले। ४३ से ५४ वर्ष की आयु में सुख-दुःख को समान समझते हुए ज्ञान-मार्ग में प्रवृत्ति हो। स्वजनों से प्रेम हो। सात्विकी वृत्ति रहे। विवाहादि में धन खर्च हो। धन, यश, तेज, सम्मान की प्राप्ति हो तथा व्यापार में लाभ हो। ईश्वराराधन में प्रीति हो। नवीन गृह का निर्माण हो। ५५ से ६३ वर्ष तक भाग्यवृद्धि हो। पुण्य कार्यों से यश मिले। सुयत्न से मान बढ़े। थोड़ा सा ऋण भी हो, जो बाद में चुक जाय। दास-दासी, चतुष्पद, वाहनादि का सुख प्राप्त हो। अनेक कार्यों का प्रबन्ध करे। अयत्न से विपरीत फल हो। द्रव्य-हानि तथा भय हो। सुयत्न से सुख प्राप्त हो। ईश्वराराधन से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो। ६४ से ६८ वर्ष की आयु में ज्ञान-मार्ग में चित्त रमे। पुत्र-पौत्रादि का पूर्ण सुख मिले। दान-पुण्य, देव-दर्शन, तीर्थ-सेवन आदि हों। अगले जन्म को सुधारने के लिए हरि-चिन्तन हो। ६९ वर्ष की पूर्णायु हो। अगली बार किसी बड़े कुल में जन्म हो। यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था। धनी तथा सेवकों से युक्त था। प्रतिदिन शिव-पूजन किया करता था। बड़ा विद्वान् भी था। परन्तु एक बार इसने पराये धन का अपहरण कर लिया, उस पाप के कारण इसे मंदाग्नि अथवा अर्शरोग होगा। यह सुन कर शुक्र ने पूछा- हे प्रभु! किस उपाय से उस अपराध का प्रायश्चित्त होगा? भृगुजी बोले- सात टंक स्वर्ण की प्रतिमा बनवा कर, उसे घृतपात्र के भीतर रखकर किसी ब्राह्मण को दान करे, तो पूर्वकृत पाप

का प्रायश्चित्त होकर रोग दूर होगा तथा सुख की प्राप्ति होगी ।। इति शुभम् ।।

ॐ भृगु उवाच ।। मकरे जीव तुले केतु सिंहे शनि यदा भवेत् । मेषराशिगते राहुः अनलो योग उच्यते ।। तेजस्वी च प्रतापी च शूरवीर महानरः । पत्नी प्रीति न सन्देहो बुद्धि चित्त चलायमान् ।। १-२।। पुत्र हेतु कृते यत्नं दुर्लभं सुत जीवनम् । पत्नी गुप्त महाक्लेशं सत्य सत्य वचं मम ।।३।। प्रथमे वेदे दृगं पीडा द्वितीये मुदरव्यथा । तृतीये मातु कष्टस्य भगिनी भ्रातृमुद्वहन् ।।४।। पितुर्लाभ न सन्देहो धनधान्य समागमः । राजद्वारे जयं चैव वाहनादि सुखं महत् ।।५।। चतुर्थे पंचमे वाऽपि तथा षष्ठे च सप्तमे । गृहे मंगलगानं च नवनारी समागमः ।।६।।

१२
११ सू. मे.
बु. वृ. शु. १०
१ रा.
९ चं.
२
८
३
५ श.
७ के.
४
६

पितुर्लाभं महत्मानं विद्यारंभ तथैव च । मातृपीडा न सन्देहो औषधेन प्रशम्यति ।।७।। अष्टमात् षोडशे वर्षे विद्यावृद्धि प्रजायते । विवाहो जायते तत्र गृहे मङ्गलगायनम् ।।८।। नवाभूषण वस्त्रं च रत्नानि विविधानि च । पाठशालाऽति मानञ्च पुरस्कार विशेषतः ।।९।। पुनर्लाभ न सन्देहो धनवृद्धि दिने दिने । द्विरागमन योगञ्च कान्ता प्रेम विवर्द्धनम् ।। १०।। गिरिचन्द्रमिते वर्षे यवत्पञ्चन्द्रगस्तथा । मनेच्छागामिनी नारी पति तोष करेत्सदा ।।११।। गर्भयुक्ता भवेन्नारी सन्तानमुपजायते । राजद्वारे सभामध्ये पदोच्चं प्राप्यति सुतः ।।१२।। न सुखं प्राप्यते लोके यावद्यत्नं न पापहं । तस्माद्यत्न प्रयत्नेन कुर्यात् सर्व सुखं लभेत् ।।१३।। शत्रुमेक समुत्पन्न राजकार्ये विरोधिनः । भयचिन्तातुरो भूत्वा नाना क्लेश समन्विता ।।१४।। ऋतु नेत्र गते वर्षे युग्म वह्नि गताब्दके । गृहे मङ्गल कार्यं च नृत्यगान मनोहरं।।१५।। नवनारि समागम्य शुभकार्यैः धनं व्ययः । दैवात् एक नारीषु गुप्त प्रीति च वर्द्धयेत् ।।१६।। नवाभूषणमर्थं च तदर्थे च व्ययं भवेत् । किञ्चित्भय भवेत् तत्र धनेन सोऽपि नश्यति ।।१७ ।।

भृ० सं० २५३

भा० टी०

धनभङ्गः तदा ज्ञेयः वृद्ध मृत्युर्न संशयः। पुत्रजन्म भवेत् तत्र धन चिन्तातुरो भवेत् ॥१८॥ राम वह्निगते
वर्षे चन्द्र वेदाब्दगेऽपि वा। पुत्रजन्म भवेत्पश्चाद्धर्म कीर्ति विवर्धनम् ॥१९॥ अकस्मादनलाभस्या
ध्यान वस्त्रश्च भूषणम्। व्यापारे चोत्तमो लाभं तथा राजानुकम्पया ॥२०॥ राजद्वारेऽति मानश्च पूर्व
यात्रा न संशयः। वंशवृद्धि भवेत्पुत्रः कीर्तिवृद्धि दिने दिने ॥२१॥ धन व्यये शुभे कार्ये विवाहे पुत्र पौत्र
कं। पुत्र कष्ट विजानीयात् पत्नी चिन्तातुरो भवेत् ॥२२॥ स्वर्णमूर्ति प्रदानेन घृतपात्र समन्वितः।
सर्व कष्ट प्रणश्यन्ति धन प्राप्नोति नित्यशः ॥२३॥ नेत्रवेदगते वर्षे शताब्दे वर्गगे यदि। मान कीर्ति
प्रवृद्धिश्च धपा लाभ तथा व्ययम् ॥२४॥ पुत्र पौत्र सुखं सर्वं आनन्देन गत व्ययं। कफवातोद्भवः
रोगं देह पीड़ा प्रजायते ॥२५॥ औषधेन प्रशान्तिस्याद्धन वृद्धि दिने दिने। चन्द्र बाण गते वर्षे नाग
पश्चागतेऽपि च ॥२६॥ दुःख सौख्य फलं भुक्त्वा महद्दान ददाति च। ब्राह्मणः साधुनां भक्तिः
अतिथीनां प्रपूजयेत् ॥२७॥ धनधान्य समायुक्तो पुत्र पौत्रादि संयुतम्। नन्दपञ्चगते वर्षे नाग
बस्वाब्दगेऽपि च ॥२८॥ देवदर्शन तीर्थेषु पवित्रं कारयेद्वपुः। याचकानन्नदानेन तर्पयश्च दिने
दिने ॥२९॥ कार्यभारं त्यजेत्सर्वं ईश्वरं ध्यान तत्परौ। सर्व सौख्योऽपि भुञ्जीत सफलं जन्मनोदिता
॥३०॥ नन्दषष्ठगते वर्षे अन्तकालमुपस्थिता। पञ्चतत्त्व पृथक् भूत्वा प्राप्येत गति शोभनम् ॥३१॥
पुनः द्वारावती ज्ञेयः क्षत्री वंश समुद्भवम्। तत्र सर्व सुखं भोक्त्वा यथाति परमं गतिम् ॥३२॥ शुक्र
उवाच ॥ केन कर्म विपाकेन पुत्र सौख्यं विनश्यति। पूर्वजन्मान्तरं तात गाथा कथय मम प्रति ॥३३॥
भृगुरुवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्व पापं च कारणः। राजपुत्र कुले जन्म लक्षेबधि भुविमण्डले ॥
हरिद्वारे रथारूढं तीर्थे गत्वा सबान्धवान्। मार्ग मध्ये वसेत् विप्र कावेरी तट पुण्यवान् ॥
३४-३५॥ वृष दीर्घ चरं मार्गे द्विजपुत्र मृतिं भवेत्। दृष्ट्वा मृतसुतं विप्र हाहाकार करोति च ॥३६॥

राजपुत्रं ददेत शापं अति क्रोधेन ब्राह्मणः। पुत्र मृत्यु महाशोकं सप्त जन्मं भवेत त्वया॥ शुक्रोवाच॥
किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं किं जापकं। विप्र शाप प्रणश्यंति पुत्र पौत्र सुखं भवेत॥३७-३८॥
भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र महादान वंशवृद्धि च कारयेत। स्वर्ण पत्र महाश्रेष्ठ कावेरी जल शुद्धये॥
३९॥ रक्तचन्दन मिश्राणि घृतपात्रं च गुप्तयः। गायत्री मन्त्रमजपेत चन्द्र लक्ष प्रमाणकम्॥४०॥
संकल्पयेत सुविप्रश्च तं पात्रं दक्षिणां सह। वस्त्राभूषण दानेन पूर्व पाप प्रणश्यति॥४१॥ इती॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! अब इस जन्मकुण्डली का फलादेश सुनो। मकर राशि में गुरु, तुलाराशि में केतु, सिंह राशि में शनि तथा मेष राशि में राहु हो तो 'अनल योग' होता है। इस योग वाला जातक तेजस्वी, प्रतापी, शूर-वीर, पत्नी से प्रेम करने वाला तथा चंचल चित्त वाला होता है। पुत्र के लिए प्रयत्न करने पर ही वह जीवित रह पाता है, अन्यथा इसके लिए पुत्र-सुख दुर्लभ है। इसकी पत्नी को भी कोई गुप्त क्लेश होता है। इसकी आयु के प्रथम वर्ष में नेत्र-पीड़ा, दूसरे में उदर-व्यथा तथा तीसरे में माता को कष्ट होगा। उसी अवधि में भाई अथवा बहिन का जन्म भी हो। पिता को धन का लाभ हो। पिता को राजद्वार से वाहनादि का सुख प्राप्त हो। चौथी से सातवीं वर्ष के बीच घर में मंगलोत्सव हों तथा नवीना स्त्रियों का आगमन हो। पिता को लाभ हो तथा सम्मान बढ़े। इसी अवधि में बालक पढ़ना आरंभ करे। पिछला पाठ भूलता रहे तथा अगला पढ़ता रहे। माता को पीड़ा हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। ८ से १६ वर्ष की आयु में विद्या की वृद्धि हो। तत्पश्चात विवाह हो तथा घर में मंगल-गान हों। नव वस्त्र, आभूषण तथा अन्य अनेक प्रकार की वस्तुएँ प्राप्त हों। पाठशाला में सम्मान बढ़े तथा पारितोषक प्राप्त हो। दिन-दिन धन की वृद्धि तथा लाभ हो। द्विरागमन हो। स्त्री से प्रेम बढ़े। १७ से

२५ वर्ष की आयु में मनोनुकूल पत्नी की सेवा एवं प्रेम से प्रसन्नता प्राप्त हो। फिर स्त्री गर्भवती हो और सन्तान का जन्म हो। राजद्वार तथा सभा में उच्चपद प्राप्त हो। जबतक पूर्वकृत पाप का प्रायश्चित्त न करेगा, तब तक सुख नहीं मिलेगा - यह स्मरण रखना चाहिए, अतः सुख एवं संता-न के लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। इसी अवधि में एक शत्रु उत्पन्न होकर विरोध करे। उस समय भय, चिन्ता, शोक तथा अनेक प्रकार के क्लेश हों। २६ से ३२ वर्ष की आयु में घरमें मंगलकृत्य हों। शुभ कार्यों में धन खर्च हो। दैवयोग से इसी अवधि में एक अन्य स्त्री से प्रेम बढ़े और उसके लिए नवीन वस्त्राभूषणों में धन व्यय हो। किंचित् भय भी उत्पन्न हो, जो धन व्यय करके शान्त हो जाय। फिर छत्रभङ्ग हो अर्थात् कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। ३३ से ४१ वर्ष की आयु में पुत्र का जन्म हो। व्यापार में उत्तम लाभ हो। राजद्वार में सम्मान बढ़े। आक-स्मिक रूप से भी धन का लाभ हो। धर्म तथा कीर्ति की वृद्धि हो तथा वस्त्राभूषणों का सुख प्राप्त हो। राजा से किसी प्रकार की कृपा प्राप्त हो। फिर पूर्व दिशा की यात्रा हो। यश तथा कीर्ति की वृद्धि हो। पुत्र के विवाहादि में धन खर्च हो। तत्पश्चात् पुत्र को कष्ट हो तथा स्त्री चिन्तातुर हो। घृतपात्र युक्त स्वर्ण-मूर्ति का दान करने से सब कष्ट दूर हों तथा नित्य धन का लाभ हो। ४२ से ५० वर्ष तक कीर्ति बढ़े। आमदनी के अनुसार खर्च भी हो। पुत्र-पौत्र सुखी हों। शरीर में कफ-वात का प्रकोप होने से पीड़ा हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। ५१ से ५८ वर्ष की आयु में दुःख-सुख भोग कर महादान करे। साधु-सज्जनों की भक्ति तथा अतिथि-पूजन करे। पुत्र पौत्रों से युक्त हो। ५९ से ६८ वर्ष की आयु तक देव-दर्शन, तीर्थ-यात्रा करे, याचकों को दान दे तथा ईश्वर भक्ति में तत्पर रहे। ६९ वीं वर्ष में शरीर त्याग करे। अगले जन्म में द्वारावती नगरी में क्षत्रियवंश

में उत्पन्न होकर सुख भोगे तथा अन्त में मोक्षगामी हो। हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह जातक लक्षाधिप देश का राजा था। एक बार यह रथ पर सवार हो, बन्धु-बान्धवों सहित हरिद्वार तीर्थ को जा रहा था। मार्ग में एक स्थान पर, कावेरी नदी के तट पर एक गुणवान् ब्राह्मण रहता था। उसका पुत्र इसके रथ से कुचल कर मर गया। तब ब्राह्मण ने इसे सात जन्मों तक पुत्र-सुख से वंचित रहने का शाप दिया। शुक बोले- हे प्रभो! अब प्रायश्चित्त का उपाय कहिए। भृगुजी ने कहा- हे पुत्र! एक स्वर्णपुत्र बनवाकर, उसे कावेरी के जल में धोकर, घृत पात्र में गुप्तरूप से रक्खे तथा लाल चंदन उसके ऊपर लगाये। फिर एक लाख गायत्री मंत्र का जप करवा कर, वह स्वर्णपुत्र घृतपात्र किसी विद्वान् ब्राह्मण को दान करके, उसे वस्त्राभूषण तथा दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे तो यह पूर्वकृत पाप से छूट कर, पुत्र-सुख प्राप्त करेगा॥ इति शुभम्॥

बु. शु. ६ के.
५ सू. प्रा.
४ मं.
७
३
८ चं.
२
९
११
१
१० बृ.
१२ रा.

ॐ भृगु उवाच॥ अस्य जातस्य कुण्डल्यां फलादेशं शृणु सुत। मीन राशि गते राहौ मकरे जीव संस्थितः। सिंह राशि गते शौरि कन्या केतु यदा भवेत्॥१॥ प्रथमे क्षितिपेब्दे च दन्तरोग ज्वरस्तथा। तृतीये व्रणव्याधिश्च मातृकष्ट नसंशयः॥२॥ चतुर्थेब्दे च सम्प्राप्ते मातृपीडा प्रजायते। औषधेन प्रणश्यन्ति अकस्माद् नमागतः॥३॥ पंचमाब्द पर्यन्ते विद्यारम्भ भवेत् सुत। विद्याभ्यास रतो बालः क्रीडने मति तत्परः॥४॥ मंगलं काम योगंच सुखवृद्धिलब्दन्तरे। तातं चिन्ता विशेषेण गुप्ता मातु प्रतप्यते॥५॥ श्रेयो मानं सुपुण्येन पूर्वपत्ने सुखस्थिता। जन्मवर्षाब्दमारभ्य शरचन्द्र गतेऽपि च॥६॥ व्रणपीड्य विशेषेण ज्वरार्तिमुदर व्यथा॥ सुपत्ने मंगले नित्ये विद्याभ्यासे सुतत्परः॥७॥ यथा देह प्रवर्द्धन्ते धन सम्पत्समृद्धिमान्। तात मातु महत्सौख्यं मंगलं जायते कुले॥८॥

पत्नीयोगोऽपि दृश्यन्ते विवाहादिव्ययोधनम् । नृपद्वारे पदं प्राप्य लाभवृद्धि दिने दिने ॥९॥ ऋतु
चन्द्र गते वर्षे वह्नि युग्म गताब्दके । सुतापुत्र सुनारीणां प्राप्यते परमं सुखम् ॥१०॥ प्रतिष्ठामानम-
-धिकं कुल कीर्ति विशेषतः । सर्वत्र माननीयोपि चित्त चिन्ता विनश्यति ॥११॥ द्रव्य लाभं व्ययं
चैव विदेशो रमते जनः । लाभवृद्धि क्रमेणैव धन दारात्मजादयः ॥१२॥ चित्तवृत्ति शुभाचारं सुशी-
-लो मतिमान्नरः । वेदनेत्र गते वर्षे गुण वह्नि गतेऽपि च ॥१३॥ सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठोऽपि तेजस्वी
भक्तिवत्सलः । शरीरे कष्ट सम्पन्नो महादानेन शान्तये ॥१४॥ अनुष्ठानं महादानं सद्य सौख्य
लभेन्नरः । शुभ कृत्य व्ययो दीर्घः मंगलं सुप्रतिष्ठितम् ॥१५॥ दास वाहन सौख्यं च साफल्यं
सर्व वैभवाः । द्विपुत्रं चन्द्र कन्या च धन वृद्धि दिने दिने ॥१६॥ मित्रपक्ष परं प्रीति द्रव्य सं-
-चय कारकम् । गुप्त शत्रु भयं किंचित् किंवा चौर विपक्षिणाम् ॥१७॥ सम्पदा वर्द्धितो नित्यं
सुता पुत्रे च मोदिता । नेत्र कष्ट शरीरे च औषधं प्रतिशान्तये ॥१८॥ भूमि लाभ विशेषेण
पुत्र भाग्योदयं महत् । वेद वह्नि गते वर्षे चन्द्र वेद गतेऽपि च । राजद्वारेऽति मानश्च लक्ष्मी
वृद्धि दिने दिने ॥१९-२०॥ अन्य कान्ता भवेत्प्रीति पूर्व कर्मानुसारतः । तद्धिताय धनं वस्त्रं भूषणं
रत्न संपुटम् ॥२१॥ व्ययं भवति कालेन अग्रे व्याख्या भविष्यति । वृद्ध मृत्युं भवेद्गेहे दुःखमत्र
कुच जायते ॥२२॥ पत्नीकष्ट विजानीयात् नान्यथा वचनं मम । औषधेन प्रणश्यंति चण्डीपाठेन
निश्चितम् ॥२३॥ गृहे मंगलकार्यं च भविष्यति दिने दिने । वर्षे वर्षे भवेत्सौख्यं राजद्वारे प्रतिष्ठितः
॥२४॥ नेत्रवेदगते वर्षे शताई वत्सरे तदा । सिद्ध्यंति सर्व कार्याणि बृहल्लाभ भवेत् सदा ॥
२५॥ विवाहादि व्ययो दीर्घः कुलकीर्ति प्रकाशकः । तदान्ते दारुणं कष्टं ज्वरार्त मुदरव्यथा ॥

२६॥ स्वर्णमूर्तिं प्रकल्प्या वह्नि टंक दशांगुलम् । संकल्पं दीयते विप्र मन्त्र जाप्यं सुभक्तितः ॥२७
तत्र मन्त्रः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं कं कालाय कालाग्नि लोचनाय सर्व कष्ट हराय पूर्णायु वरदायते नमः
कं क्लीं ह्रीं ऐं ॐ ॥ वह्नि सप्त सहस्राणि जाप्यं रोगक्षयंगतः । बालवृद्धि भवेत् नित्यं विविधानन्द
संभवः ॥२८॥ लाभं च विविधान् कार्यान् धन संपत्समृद्धिमान् । पुत्र पौत्र सुखं लाभं यश वृद्धि
दिने दिने ॥२६॥ चन्द्र पंच गते वर्षे नन्द तत्त्व गताब्दके । कन्या पुत्र विवाहे च व्ययं भवति नित्यशः
॥३०॥ राज द्वारे पदं प्राप्त परमोच्च न संशयः । वाहनात् पतनं ज्ञेयं नखी भय च प्राप्नये ॥३१॥
पूर्वयात्रा भवेत् पुत्र प्रभुराज्ञा न संशयः । पत्नी खेद भवेत् किंचित् पौत्र जन्म च संभवः ॥३२॥
व्योम षष्ठ गते वर्षे शर षष्ठ गतेऽपि च । धर्म मार्गे प्रवृत्तिस्यात् परोपकारकं भवेत् ॥३३॥ कफ
वातेन पीड्यन्ते औषधेन प्रशान्तति । पुत्रोत्सव धनं धान्यं व्ययं याति न संशयः ॥३४॥ महोत्साहो
भवेद्गेहे गीत वाद्यं च मङ्गलम् । भार्या कष्टान्वितः पुत्र वातरोगेण पीडिता ॥३५॥ ऋतु षष्ठ गते
वर्षे देवलोके स गच्छति । वैशाखे कृष्णपक्षे च तृतीयां भृगुवासरे ॥३६॥ अकस्मात् तत्र निर्याणं
प्राप्नयु सरितस्तटे । देवलोकेन पर्यंतं अग्रे वैश्य कुलं भवेत् ॥३७॥ दाता भोक्ता कृतज्ञश्च
बहुसेवी भवेन्नरः । देवभक्त न सन्देहो अन्ते मोक्ष गमिष्यति ॥३८॥ पूर्व गाथा च कथ्यं ते श्रृणु
पुत्र सधानकं । ब्रह्म वंश कुले जन्म कृषि कर्म परायणः ॥३६॥ गोवत्स तृण भक्षो वा रात्रिं
यष्टि प्रहारकं । वत्सोऽपि प्राण गमनं धेनु श्राप मुखं ददेत् ॥४०॥ प्राप्स्यते दारुणं दुःखं
अग्रजन्मश्च भोक्तया । पुत्र सुख विनश्यंति सप्त जन्म पुनः पुनः ॥४१॥ शुक्रोवाच ॥ किं
दानं कस्य पूजाय किं मन्त्रंश्च सुजापकम् । धेनु श्राप विनश्यन्ति कृपया कथय प्रभो ॥४२॥
भृगु उवाच ॥ स्वर्णप्रतिमां कृत्वा गंगोदक च चन्दनम् । गोवत्स च आकारं तण्डुलान् च

सुगोपयेत् ॥४३॥ संकल्पं च ददेत् विप्र मन्त्रोच्चारण पूर्वकम् । बटु मन्त्र कृते जापं पूर्वशापं विनश्यति ॥४४॥ तत्र मन्त्रः ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीबटुक भैरवाय आपदुद्धारणाय गो शापं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! अब इस जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो। इस कुण्डली में मीन का राहु मकर का गुरु, सिंह का शनि तथा कन्या राशि में केतु स्थित है। इन ग्रहों के कारण यह जातक प्रथम वर्ष में ज्वर रोगी तथा द्वितीय वर्ष में दन्त रोगी होगा। तीसरे वर्ष में व्रण-व्याधि हो तथा माता को कुछ कष्ट हो। इसी अवधि में भाई अथवा बहिन का लाभ तथा पिता को अर्थ-लाभ होगा। चौथे वर्ष में माता को कष्ट हो, जो औषधोपचार से दूर होगा तथा पिता को आकस्मिक धन का लाभ होगा। ५ से ८ वर्ष की आयु में विद्यारम्भ हो। खेल में बुद्धि अधिक रहे। घर में सुखदायक मांगलिक-कृत्य हो तथा किसी गुप्त-शत्रु के कारण पिता को चिन्ता हो। सुन्दर पुण्य-प्रभाव से कल्याण हो, सम्मान बढ़े तथा सुख स्थिर रहे। ९ से १५ वर्ष की आयु में व्रण पीड़ा, ज्वर तथा उदर-व्यथा हो जो उचित यत्न से दूर हो। विद्याभ्यास में वृद्धि हो। आयु-वृद्धि के साथ ही घर में धन-सम्पत्ति की वृद्धि भी होती रहे। माता-पिता को विशेष सुख प्राप्त हो। कुल में मंगल कार्य हो। विवाह हो। राज-द्वार से लाभ हो। फिर विवाह हो तथा २३ वर्ष की आयु तक कन्या अथवा पुत्र का सुख मिले, सर्वत्र सम्मान मिले। चिन्तायें दूर हों। क्रम से धन, स्त्री, पुत्र का हर्ष प्राप्त हो तथा शुभ आचरणों में मन लगे। २४ से ३३ वर्ष की आयु में प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, तेज की वृद्धि हो। इसी अवधि में शरीर में कष्ट भी हो जो महादान से दूर हो। अनुष्ठान से सुख प्राप्त हो।

मांगलिक कार्यों में विशेष व्यय हो तथा प्रतिष्ठा बढ़े। सेवक तथा सवारी का सुख प्राप्त हो। सभी पराक्रम सफल हों। दो पुत्र तथा एक कन्या का सुख हो। एक मित्र से विशेष प्रीति हो। धन का संचय हो। गुप्त-शत्रु से भय हो अथवा चोर से भय हो। सम्पत्ति की वृद्धि हो। इसी अवधि में नेत्रों में कष्ट हो, जो औषधोपचार से दूर हो। पुत्र के भाग्योदय से भूमि का लाभ हो। ३४ से ४२ वर्ष की आयु में राजद्वार में मान बढ़े तथा दिन-प्रतिदिन धन की वृद्धि हो। पूर्व कर्मानुसार किसी पर-स्त्री से प्रेम हो तथा उसके लिए धन, रत्न, वस्त्र आभूषण आदि का व्यय हो। अब आगे का वृत्तान्त सुनो। इसी अवधि में घर में किसी वृद्ध की मृत्यु हो तथा स्त्री को कष्ट हो। औषधोपचार तथा चण्डीपाठ से कष्ट दूर हो। फिर नित्य नये मंगल हों तथा राजद्वार में प्रतिष्ठा बढ़े। ४२ से ५० वर्ष की आयु में सभी मनोरथ पूर्ण हों। विवाहादि में विशेष खर्च हो तथा कुल की कीर्ति बढ़े। अन्त में दारुण कष्ट, ज्वर तथा उदर-व्यथा हो, उससे मुक्ति पाने के लिए ३ टंक प्रमाण ६ अंगुल की स्वर्णमूर्ति बनवा कर किसी ब्राह्मण को संकल्प करे तथा मन्त्र का (जो मूल में लिखा है) ७३००० हजार की संख्या में जप कराये। इससे रोग दूर होगा। बलवर्द्धक पाक का सेवन करे ताकि शरीर को शक्ति प्राप्त हो। अनेक प्रकार के कार्यों से धन की वृद्धि हो तथा पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त हो। ५१ से ५६ वर्ष की आयु में पुत्र तथा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। राजद्वार में उच्च पद प्राप्त हो। सवारी से गिरे अथवा किसी नखों वाले जन्तु से सुरक्षा हो। पूर्व दिशा की यात्रा हो। स्त्री को कुछ कष्ट हो तथा पौत्र का जन्म हो। ६० से ६५ वर्ष की आयु में धर्म-मार्ग में चित्त लगे। परोपकार हो। कफ वात की पीड़ा हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। पौत्रोत्सव में धन खर्च हो तथा

ध्वर में मंगलाचार हों। ६६ वर्ष की आयु में देवलोक प्राप्त हो। वैशाख कृष्णा तृतीया भृगुवार को अकस्मात ही निधन हो। आगे वैश्य कुल में जन्म हो, वहाँ दानी, भोगी तथा सेवकों से युक्त होकर भगवद् भजन करे। हे पुत्र! यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण वंश में उत्पन्न हुआ था तथा कृषि-कर्म करता था। एक बार कोई गाय का बछड़ा इसके खेत में तृण खाने पहुँचा तो इसने उसे लाठी-प्रहार से मार डाला, उससमय गाय ने इसे सात जन्म तक पुत्र-नष्ट होने का शाप दिया, अतः इसके पुत्र-सुख में कमी रहेगी। शुक्र ने पूछा-हे प्रभो उस पाप का प्रायश्चित्त बताइये। भृगुजी बोले- स्वर्ण पात्र को गंगाजल से धोकर, चंदन-चर्चित कर, उसमें बछड़ा सहित गौ की मूर्ति लिखे, फिर उसे चावलों से भरे कलश में गुप्त रूप से रख कर किसी ब्राह्मण को दान करदे तथा बटुक भैरव मन्त्र का जप करे तो पूर्वकृत पाप का प्रायश्चित्त होकर सन्तान-सुख प्राप्त होगा॥ इति शुभम्॥

१२ रा०	११ बु. सू. बृ.	१० शु.
१	२	९
८	७ चं.	४ श.
३	४	६ मं. के.

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्मकुण्डली। घट राशि गते जीवे कन्या राशि भवेत् शिखी। सिंह राशि गते शौरिः मीने च राहु संस्थितम्॥ जन्म वर्षा द्वितीये च दन्त बाधादि पीडनम्। ज्वर तपाभवेद्देहो स्वयत्नानि विनश्यति॥१-२॥ वह्नि वर्षाच्च वाणाब्दे बाल क्रीड़ा दिने दिने। शरीरे कष्टमुत्पन्नो उपचारेण शान्तये॥३॥ चंचलश्चपलो बालः भाग्यवृद्धि दिने दिने। रसेब्दे शून्य चन्द्रे च बाल क्रीड़ा सुतत्परः॥४॥ जात कष्ट विनष्टी च नैव रोगोपि प्राणहा। विद्याभ्यास रतो हीनं मंगलाचार संभवः॥५॥ नवाम्बरं भूषणं च प्राप्यते शोभितो शिशुः। सोम चन्द्राब्द नन्देन्दु सुख वृद्धि दिने दिने॥६॥ विवाहो मङ्गलं कार्यं अल्पायुः प्राप्यते स्त्रियः। यथा देह प्रवर्धेत धन सम्पत समृद्धिमान्

॥७॥ एकजीव परं प्रीति आसक्तं चिन्तनं सदा। कामक्रीड़ा सुखा: सर्वे भोग्यते बहुतत्परा ॥८॥ व्योम
युग्म गते वर्षे नाग नेत्राब्दगेऽपि च। गुप्त शत्रु विरोधश्च उत्पन्नो नैव जायते ॥९॥ प्रायश्चित्त
कृते काव्य: सर्वावस्था सुमोदिता। पुत्र जन्म महोत्साहो. तात मातं च हर्षित:॥१०॥ सर्व कष्ट विनश्यं-
-ति सुफले सुख वर्द्धन:। मानहानि भवेच्चिन्ता. सर्वोपद्रव नाशनम् ॥११॥ भाग्य वृद्धि भवेल्लोके सुख
स्तत्र प्रवर्द्धते। तुला पुत्र सुखं लोके धन धान्य प्रवर्द्धनम् ॥१२॥ नन्द युग्म गते वर्षे ऋषि वह्नि
गतेऽपि च। देवदर्शनजा प्रीति पवित्री क्रियते वपु: ॥१३॥ भूमि गृह नवीनोऽपि देव कार्ये धनव्य-
य:। पुनरन्ते महत्कष्टं संभवो पूर्व पापजं ॥१४॥ व्यापार विपणी भूय अन्यदेशाद्धनं लभेत्। धन
वृद्धि न सन्देहो व्यापारो लाभदो महान् ॥१५॥ कीर्तिश्च निर्मली भूयात्प्रजामित्रेण शोभिता। प्रसिद्ध
माननीयोऽपि आरामे प्रीति वर्द्धन: ॥१६॥ नागवह्निमिते वर्षे नेत्र वेद गतेऽपि च। मानवृद्धि भवेत्
पुत्र कीर्ति वृद्धि दिने दिने ॥१७॥ मूत्रकृच्छ्र प्रमेहादि किञ्चिद्रोग समुद्भव:। तेन वीर्य विनाशस्या-
-द्रोग कालेन तिष्ठति ॥१८॥ श्वास कास भवेत् पीड़ा श्लेष्माधिक्य न संशय:। पत्नी रोग विजानीयात्
औषधेन प्रशांतति ॥१९॥ पुत्र पौत्र सुखं प्राप्य दासीदासेन सेविता। धनधान्यादिकं ज्ञेयं मान-
वृद्धि दिने दिने ॥२०॥ वह्नि वेद गते वर्षे शशि वेदाब्दगेऽपि वा। शत्रुमेकं समुत्पन्न तस्य चिन्ता
हृदि स्थिता ॥२१॥ छत्रचिन्ता भवेत्तत्र विदेशे गमनं भवेत्। जपानुष्ठान कार्येण सर्व चिन्ता विनश्यति
॥२२॥ श्रुतिस्मृति पुराणानि ज्ञान गाथा विचारयेत्। परकार्य रतो नित्यं परोपकारं कुर्वति ॥२३॥ मन्दिरे
तीर्थ क्षेत्रेण धन व्ययं न संशय:। युग्म पंच गते वर्षे वह्नि षष्ठाब्दगेऽपि च ॥२४॥ वातश्लेष्मो
भवेद्रोग: वातेन देह पीडित:। मर्दने विषगर्भेण सर्व खेदं प्रणश्यति ॥२५॥ नाना भाँति सुखं प्राप्य
नाना धन समाकुल:। नाना वाहन संयुक्त: पुत्र पौत्रादि सेवित: ॥२६॥ वेद षष्ठगते वर्षे श्वास कासा-

दिपीडित:। श्रावणे सित पक्षे च पञ्चम्यां बुधवासरे ॥२७॥ अर्द्धचित्रोपरि मृत्युर्तुलाराशि निशाकर:। देहं त्यजति जातोऽयं विष्णु लोकं स गच्छति ॥२८॥ पुण्याद्राज कुले जन्म पापाच्च तु दरिद्रताम्। कर्माधीनो भवेत्सर्व: नित्यो वै कर्म कारणम् ॥२९॥ भृगु पुत्र कथा सर्व पूर्व पापश्च कारणम्। कुर्मी वंश भवेज्जन्म धनधान्य समृद्धिवान् ॥३०॥ दाता भोक्ता कृतज्ञश्च बहुसेवी नरो भवेत्। राजां मुद्रा ददेत् कुर्मी लक्ष्यो वृक्ष विनश्यति ॥३१॥ वृक्ष वास विहंगानां सर्वेषां स: विनश्यति। पक्षी शाप ददेत् दीर्घ पुत्र कष्ट भवेत् सदा ॥३२॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं कथय: प्रभो। पक्षी शाप विनिर्मुक्तो लभेत् पुत्र सुखं सदा ॥ भृगु उवाच ॥ चन्द्र लक्ष प्रमाणेन गायत्री मन्त्र जापकम्। पक्षी शाप विनिर्मुक्तो सुतासुत सुखं भवेत् ॥३३-३४॥ मन्त्र सन्तान गोपालं अर्द्धलक्ष प्रमाणकम्। अनुष्ठानं कृता सर्वै: दीर्घायु सुत लभ्यते ॥३५॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले– हे पुत्र! अब इस जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो। कुंभ राशि में गुरु, कन्या राशि में केतु, सिंह राशि में शनि तथा मीन राशि में राहु हो तो जातक को अपनी आयु के पहले तथा दूसरे वर्ष में दंतबाधादि की पीड़ा होती है। कभी ज्वर भी होता है। ये सब कष्ट उपचारों से दूर हो जाते हैं। ३ से ५ वर्ष की आयु में बालक्रीड़ा में निमग्न रहे। सामान्य कष्ट हों, परन्तु वे दूर होते रहें। प्राण-हानि का भय न हो। ६ से १० वर्ष की आयु में विद्याध्ययन हो। नवीन वस्त्राभूषणों की प्राप्ति हो। ११ से १९ वर्ष की आयु में घर में मांग-लिक कार्य हों। अल्पायु स्त्री की प्राप्ति हो। शरीर-वृद्धि के साथ ही सम्पत्ति की वृद्धि भी हो। एक जीव से विशेष प्रेम हो। उसके चिन्तवन में सदैव निमग्न बना रहे। कामक्रीड़ादि सब सुखों [illegible]

दे। प्रायश्चित्त करने से सब कष्ट दूर हों तथा सुख प्राप्त हो। पुत्र का जन्म हो। माता को आनन्द हो। सुख की वृद्धि हो। फिर मान-हानि की चिन्ता हो, तदुपरान्त सभी उपद्रव शान्त हों। सौभाग्य की वृद्धि हो। कन्या तथा पुत्र का सुख मिले। धन-धान्य बढ़ें। २९ से ३७ वर्ष तक देव-दर्शन में प्रीति हो। भूमि प्राप्त हो, नवीन गृह बने, देवकार्य में धन खर्च हो। फिर पूर्व पाप के कारण विशेष कष्ट होना संभव है। वाणिज्य-व्यवसाय तथा परदेश से धन का लाभ हो। धन की वृद्धि हो। निर्मल कीर्ति बढ़े। प्रजा तथा मित्रों से सुशोभित हो। प्रसिद्ध तथा सम्माननीय हो। बगीचों से प्रेम हो। ३८ से ४२ वर्ष की आयु में मान-कीर्ति की प्रतिदिन वृद्धि हो। मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह आदि रोगों का कुछ कष्ट हो, सहवास के समय स्तम्भन में कमी रहे। श्वास-कास की पीड़ा हो, कफ वृद्धि हो। स्त्री को रोग हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। पौत्र का सुख हो। दास-दासियों से सेवित रहे। धन-धान्य तथा सम्मान की वृद्धि हो। ४३ से ५१ वर्ष की आयु में एक शत्रु उत्पन्न हो, जिसके कारण हृदय में चिन्ता उत्पन्न हो। छत्रभङ्ग अर्थात् घर में किसी वृद्ध की मृत्यु की चिन्ता हो। परदेश-गमन हो। अनुष्ठान से सभी कष्ट दूर हों। श्रुति, स्मृति, पुराण आदि के पठन-पाठन में रुचि तथा ज्ञान-वृद्धि हो। परोपकार में मन लगे। मन्दिर, तीर्थ-यात्रा आदि में धन खर्च हो। ५२ से ६३ वर्ष की आयु तक कफ-वात रोग हो। वातरोग शरीर पीड़ित हो। विषगर्भ तैल का मर्दन करने से वह कष्ट दूर हो। अनेक प्रकार की सवारी, पुत्र, पौत्रादि का सुख मिले। अनेक प्रकारों से धन का आगमन हो। ६४ वर्ष की आयु में श्वास-कष्ट हो। श्रावणमास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि, आधी चिन्ता के बाद तुला राशि के चन्द्रमा में शरीर त्याग कर विष्णु लोक को प्राप्त हो। इस जन्म में पुण्य कर्म करेगा तो

अगले जन्म में राजकुल में और पाप कर्म करेगा तो दरिद्र वंश में उत्पन्न हो, क्योंकि कर्म ही कारण है। हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह कुर्मी वंश में उत्पन्न हुआ था तथा धनी, मानी, दानी, भोक्ता, कृतघ्न एवं सेवकों से युक्त था। इसने राजा को धन देकर एक जंगल खरीदा तथा उसके वृक्ष कटवा दिये। उन वृक्षों पर निवास करने वाले पक्षियों ने बेघर होकर, इसे संतान-सुख न मिलने का शाप दिया, उस शाप के कारण इसके पुत्र अल्पजीवी होंगे। यह सुनकर शुक्र ने पूछा-हे प्रभो! किस उपाय से इसको पूर्व कृत पाप नष्ट होकर, पुत्र-सुख प्राप्त होगा, यह बताइये। भृगुजी बोले— संतानगोपाल मंत्र का ५०००० की संख्या में जप कराने तथा विधिपूर्वक अनुष्ठान एवं दान करने से इसे दीर्घायु पुत्रों की प्राप्ति होगी तथा पक्षी-शाप दूर होगा॥ इति शुभम्॥

के. श. ६	५ सू. बु. शु.	४	३
मं. चं. ७			
८		२	
९	११ गु.		१
१०		१२ रा.	

ॐ भृगुरुवाच॥ अथान्यग्रं प्रवक्ष्यामि शृणु पुत्र फलाफलम्। जन्माङ्कं यस्य जातस्य तस्य किं जीवने भवेत्॥ कन्याराशिगते केतुर्शनियुक्तो यदा भवेत्। कुंभे जीवे तथा मीने राहुः तस्य फलं शृणु॥१-२॥ प्रथमे द्वितिये वर्षे बाल वृद्धि दिने दिने। मातृदुग्ध न लभ्यन्ते मूलच्छायाश्च विह्वलः॥३॥ किञ्चिद्दानादि मन्त्रेण श्रेयो मानं सुखागमः। प्राप्ते वैश्वानरे वर्षे वाणवर्षं च मध्यमा॥४॥ मंगलं जायते गेहे कुल कीर्तिश्च सत्तमा। अकस्माज्जायते कष्टं कृश्यदेहो विचिन्तनम्॥५॥ छायापात्रान्न दानेन श्रेयो मानं विनिश्चितः। ऋतुवर्षे गते काव्यादिगाब्दे तु यथाक्रमः॥६॥ भोगाश्च वैभवो नित्यं वर्द्धते नाऽत्र संशयः। विद्या प्राप्ति विशेषेण मान कीर्ति प्रवर्द्धनम्॥७॥ रुद्रवर्षे गते काव्य बद्र चन्द्राब्द गेऽपि वा। पत्नी योगं तदा ज्ञात्वा मंगलं जायते कुतो॥८॥ मानकीर्ति महोत्साहो सुखं सर्वत्र वर्तते। लेखनं पाठनो बालः मति नित्य विवर्धितः॥९॥ विविधो भूषणांवस्त्रं

प्राप्यते मानमुत्तमम्। ऋषि चन्द्रगते वर्षे शर युग्म गताब्दके ॥२०॥ यद्रोगं जायते देहो सुयत्नं सद्य प्रान्तये। अनुष्ठान महादानं सर्वारिष्ट क्षयंकरम् ॥२१॥ लिप्य लेखन कार्येषु कुशलो च भवेत्सुखी। मित्रैश्च रमते सौख्यं स्वस्वरूपोऽपि लुभ्यते ॥२२॥ पत्नी प्राप्ति सुखाः सर्वे पुत्र प्राप्तिर्धनं व्ययः। कुशलो सर्व कार्येषु यथा लाभ तथा व्ययं ॥२३॥ नाना कार्य प्रवन्धैश्च राजते पूर्ण वैभवः। जायते दारुणोकष्टं आपदुद्धारणं जपेत् ॥२४॥ ऋतु नेत्र गते वर्षे शर वह्नि गतेऽपि च। सुतासुत सुखं लोके संपदा संचयो महान् ॥२५॥ लाभं च विविधो कार्यः पाप शान्ति सुयत्नतः। चन्द्र जीव परं प्रीति गुप्त प्राप्तिश्च ते यदा ॥२६॥ भयभीतो हृदे गुप्तं जीवोऽयं परमं सुखम्। विवाहादि महोत्साहो देव पुण्योत्सवे व्ययम् ॥२७॥ सुजनेभ्यो महत्मान्यं तेजस्वी बंधु वत्सलः। द्विपुत्रो चन्द्र कन्या च सनेच्छा पूजितो सदा ॥२८॥ पूर्वे धनाधिकं कृत्वा नूतनं गृह चित्रकम्। राजतो वैभवः सर्वे यश साधन नित्यशः ॥२९॥ पूर्व यत्न कृते कार्यः सर्वे साफल्य वैभवः। प्रसिद्धो भूमि भागे च तेजस्वी दीर्घ जीवनः ॥२०॥ ऋतु वह्नि गते वर्षे चन्द्र वेद गतेऽपि च। किंचित्पीड़ा विजानीयात् श्वास कास समुद्भवः ॥२१॥ औषधेन प्रणश्यन्ति पुण्य दाने तथैव च। महर्घ भूषणं वस्त्रं वर्धयन्ति न संशयः ॥२२॥ लाभो नित्य नवीनश्च विवाहे च धनं व्ययः। किंचित्पीड़ा भवेत्पुत्रः दान पुण्येन नश्यति ॥२३॥ राजद्वारे भयं गुप्तं क्वचित् छत्रभयं भवेत्। मान वृद्धि सुकीर्तिश्च सौख्य वृद्धि दिने दिने ॥२४॥ ज्ञान मार्गे प्रवृत्तिश्च पुत्रादि भाग्य चिन्तनम्। परकार्ये परं प्रीति शुभ कर्मे व्ययं महत् ॥२५॥ नेत्र वेद गते वर्षे शशि पञ्चाब्दगेऽपि वा। तीर्थ यात्रा भवेत्पुत्रः महादान भवेत् ततः ॥२६॥ वृद्ध मृत्यु भवेत्कश्चित् धन व्यय न संशयः। राजद्वारे [illegible] भवेत्। विवाहो ति मानश्च वृद्धि [illegible]

मंगले कार्ये धनः व्ययं न संशयः ॥ २८॥ पत्नीरोग विजानीयात् महत्पुण्य करोत् तदा । औषधेन न शान्तिस्याद्विष्णुलोके स गच्छति ॥२९॥ युग्म पञ्च गते वर्षे नेत्र षष्टाब्दगे सुते । ज्ञानमार्गे प्रवृत्तिश्च पुत्रादि भाग्य चिन्तया ॥३०॥ तीर्थयात्रा भवेत्पुत्र महादान भवेत्ततः । प्रवास काले भवेत्पीड़ा श्लेष्माधिक्य न संशयः ॥३१॥ सर्व कर्म विनिर्मुक्त देव भक्तिरतः पुमान् । पञ्च पुत्रत्रयं कन्या भविष्यति न संशयः ॥३२॥ मित्रमेकं भवेत्तत्र तदाग्रे प्रतिभाष्यति । स्वधर्म प्रतिपालञ्च करिष्यति दिने दिने ॥३३॥ वह्नि षष्ठगते वर्षे नन्द षष्ठाब्द जीवनम् । श्लेष्मवातोद्भवे रोगः वातेन देह पीडितः ॥ ईश्वरं भक्ति भावेन श्रेयो मानं च सर्वदा॥ मनेच्छा पूजितो लोके धन रत्नानि वेष्टिता ॥३४-३५॥ पुत्र पौत्र प्रपौत्रं च सर्व सौख्य यथाक्रमः । अतोपरि सुखं सर्वे नन्द षष्ठाब्द मायुषम् ॥३६॥ आश्विने कृष्ण पक्षे च प्राणयात्रा भविष्यति । पुण्यात्प्रशंसनीयोऽपि पुनर्जन्म मट्कुले ॥३७॥ पूर्व जन्मस्य वृत्तान्त शृणु पुत्र वदाम्यहम् । सूर्यवंशे समुत्पन्नो बहुसेवी भवेत्तदा॥३८॥ अश्वपति गजारोही मानी च बहुविश्रुतः । तीर्थ यात्रा च गमने मार्गे मध्य उपद्रवम् ॥३९॥ अश्वारूढं गतं कश्चिद्दिवसे मध्यरात्रिकम्। हयस्य च पदाघातं ऋषिपुत्र मृतो भवेत् ॥४०॥ ततो शाप ऋषिं दत्वा सुतहानि त्रिजन्मकम् । तेन शाप प्रभावेण पुत्रसुख विनश्यति ॥४१॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं च जपेत् प्रभो । पूर्व पाप प्रणश्यन्ति वंशवृद्धि सदा भवेत् ॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या अङ्गुष्ठमात्र प्रमाणकम् ॥ ऋषिपुत्र लिखेन्मूर्ति संकल्पं ब्राह्मणं ददेत् ॥ ४२-४३॥ एतद्दान प्रभावेण सन्तान सुखमाप्नुयात् । पूर्व पाप विनश्यन्ति प्रायश्चित्तच भवेद् ध्रुवम् ॥४४॥ इति ॥

भावार्थः भृगुजी बोले - हे शुक्र! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो।

कन्या राशि में शनि और केतु, कुंभ राशि में गुरु तथा मीन राशि में राहु हो तो जातक की आयु के प्रथम तथा द्वितीय वर्ष में उसके शरीर की वृद्धि होती है, परन्तु उसे माँ का दुग्ध पीने को नहीं मिलता तथा किसी समय भूत-प्रेत की छाया का भय भी होता है। कुछ दान करने तथा मन्त्र जाप से इस क्लेश से छुटकारा मिलता है। तीन से पाँच वर्ष की आयु में घर में मंगल-कार्य हों तथा कुल की कीर्ति बढ़े। फिर अकस्मात् शारीरिक कष्ट हो तथा चिन्ता व्यापा हो, जो छाया पात्र एवं अन्न-दान से दूर हो। ६ से १० वर्ष की आयु तक नित्य वैभव एवं हर्ष की वृद्धि हो। उत्साह बढ़े तथा पढ़ने में मन लगे। ११ से १६ वर्ष की आयु में कुल में मांगलिक-कृत्य हों। अनेक प्रकार के वस्त्राभूषणों की प्राप्ति हो। १७ से २५ वर्ष की आयु में विवाह हो, फिर शरीर में रोग हो, जो सुयत्न से शान्त हो। अनुष्ठान एवं महादान से सब अरिष्ट दूर हों। भाग्य वृद्धि हो। मित्र का सुख मिले। स्वयं के स्वरूप पर मोह उत्पन्न हो। स्त्री-लाभ हो तथा अनेक प्रकार के सुखों की उपलब्धि हो। इसी अवधि में पुत्र-प्राप्ति हो। धन का व्यय हो। जैसा लाभ हो, वैसा ही खर्च भी रहे। अनेक प्रकार के कार्यों का प्रबन्ध हो। पूर्ण वैभव प्राप्त हो। एक विशेष कष्ट हो, उसकी शान्ति के लिये आपदुद्धारण मन्त्र का जप करना चाहिए। २६ से ३५ वर्ष में पुत्र तथा कन्या का जन्म हो, सुख मिले तथा धन खर्च हो। पाप शान्ति तथा सुयत्न से अनेक प्रकार के लाभ हों। एक जीव से विशेष रूप से गुप्त-प्रीति हो। फिर किसी कारणवश भय उत्पन्न हो तथा मन में गुप्त चिन्ता रहे। तदुपरान्त श्रेष्ठ सुख मिले। विवाहादि कार्यों में धन खर्च हो। पुण्योत्सव में व्यय हो। स्वजनों में विशेष सम्मान प्राप्त हो। तेजस्वी तथा बन्धु-वत्सल हो। पहले से अधिक धन की प्राप्ति हो। तथा चित्रवान् भवन का निर्माण कराये। यत्न करते रहने से सभी वैभव सफल हों। पृथ्वी

पर प्रसिद्धि प्राप्त हो। ३६ से ४१ वर्ष की आयु में श्वास-कास सम्बन्धी थोड़ा कष्ट हो। औषधोपचार एवं दान पुण्य से लाभ हो। विवाह कार्य में धन खर्च हो। फिर ज्ञान-मार्ग में प्रवृत्ति हो, परोपकार एवं शुभ कार्यों में धन का व्यय हो। ४२ से ५१ वर्ष की आयु में तीर्थ-यात्रा हो, वहाँ महादान करे। कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो तथा धन खर्च हो। राजद्वार में प्रतिदिन अधिक सम्मान बढ़े। शरीर में वीर्य की अधिकता रहे। पुत्र तथा कन्या का जन्म हो। विवाहादि मंगल कार्यों में धन का व्यय हो। फिर स्त्री को रोग हो। पुण्य-दान एवं औषधोपचार से भी रोग दूर न हो और वह विष्णुलोक को प्राप्त हो। ५२ से ६२ वर्ष की आयु में ज्ञान-मार्ग में प्रवृत्ति हो। पुत्र के भाग्य की चिन्ता हो। तीर्थाटन हो। श्वास-खांसी की पीड़ा तथा कफ की वृद्धि हो। सब कामों को छोड़कर हरि-चिन्तन में मन लगे। पाँच पुत्र तथा तीन कन्यायें हों। एक मित्र हो, जिसके आगे मन की गुप्त बातें भी कही जा सकें। धर्म का पालन हो। ६३ से ६९ वर्ष की आयु में वात रोग, शरीर-पीड़ा हो। ईश्वर की भक्ति रहे। मानवृद्धि हो। मन की समस्त इच्छायें पूर्ण हों। धन, रत्न, पुत्र, पौत्रादि का सुख मिले। ६९ वर्ष में आयु पूर्ण हो। आश्विन मास के कृष्णपक्ष में महाप्रस्थान हो। पुण्य कर्मों के प्रभाव से दुबारा किसी बड़े कुल में जन्म ले। हे पुत्र! यह जीव अपने पूर्व जन्म में सूर्य वंश में उत्पन्न क्षत्रिय था। अनेक मनुष्यों (सेवकों), हाथी, घोड़ों से युक्त वैभवशाली था। एक बार यह घोड़े पर चढ़कर किसी तीर्थ-यात्रा को जा रहा था कि मार्ग में इसके घोड़े की टाप से कुचल कर एक ऋषि-पुत्र की मृत्यु हो गई, उस समय ऋषि ने क्रोध में भरकर इसे तीन जन्मों तक पुत्र सुख से वंचित रहने का शाप दिया। उस शाप के कारण इसके

पुत्र-सुख में कमी रहेगी। यह सुन कर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस उपाय, मन्त्र-जप अथवा दान-पुण्य से इसे मुनि के शाप से मुक्ति मिल कर पुत्र-सुख प्राप्त हो सकता है, यह बताइए? भृगु जी बोले - हे प्रभु! अपनी सामर्थ्य एवं श्रद्धा के अनुसार एक स्वर्ण-पत्र बनवा कर, उस पर ऋषि-पुत्र की मूर्ति अंकित करके, किसी ब्राह्मण को दान करदे तो इससे सन्तान-सुख प्राप्त होगा तथा पूर्वकृत-पाप से मुक्ति मिलेगी ।। इति शुभम् ।।

ॐ भृगु उवाच ।। अथान्ययोगे प्रवक्ष्यामि फलादेशऽस्य कुण्डलीम्। त्रिजन्मस्यच वृत्तान्तं शृणु पुत्र यथाक्रमः ।।१।। षष्ठे राहुयुतो जीवः सिंहे केतुर्यदा भवेत्। कन्याराशि गते शौरिर्मान योग स उच्यते ।।२।। शुभखेटा शुभस्थाने क्रूर क्रूरस्यमेव च। वाम चिन्ता विशेषेण पुत्रानन्द न दृश्यते। सर्व सुखं च भोक्तव्यं पुत्ररहितोभवेत् सदा। पूर्व पाप प्रभावेण वंश वृद्धि विनश्यति ।।३-४।। प्रथमे द्वितियेब्दे च वंश वृद्धि यथा क्रमः। बालवृद्धिर्भवेन्नित्यं देह कष्टं यदा कदा ।।५।। पञ्चमे षष्ठमे वर्षे नन्दवर्षावधिस्ततः। विद्यारंभ कृतो कीडनं पठनाद्विभ्रमो मनः ।।६।। मंगलं काम योगोऽपि सुखप्रद तदन्तरे। दिक्वर्षान्तरे वत्स नन्द-चन्द्र गतोऽपिवा ।।७।। पत्नी प्राप्ति सुखंनित्यं मित्रैश्च रमते मुदा। रूप यौवन सम्पन्नो दृश्यते ललना जनैः ।।८।। नवभूषण वस्त्रञ्च बुद्धिवृद्धि दिने दिने। गृहे वृद्धिर्न सन्देहो सत्य सत्य वदाम्यहम् ।।९।। विंशवर्षाब्दगे वत्स नागयुग्म गतेऽपिवा। विद्या बुद्धिर्न संदेहो गणितेन विशेषतः ।।१०।। धनधान्य समृद्धिश्च दास दासेन सेविता। भार्यागर्भवती होय पुत्ररत्नमजायत ।।११।। पत्नी पीड़ा विजानीयात् उदररोग संभवः। नन्दयुग्मगतेवर्षे ऋषिराम गतेऽपिवा ।।१२।।

चं. १२ गु. मं.	११ शु. रा. सू. बु.	१०
१	२	९
३	५ के.	८
४	६ श.	७

भृ० सं० ३३७ भा० टी०

पुत्र कन्या समायुक्तो धन धान्य समन्विता। शत्रुमेक समुत्पन्न स्वकुले परकुलेऽपि च ॥२३॥ धेनुपान प्रदानञ्च आनन्देन व्ययं भवेत्। पात्राणि बहुवस्त्राणि भूषणानि तथैव च ॥२४॥ पुत्रपुत्री भवोद्वाहं धनधान्य व्ययं भवेत्। नाग रामगते वर्षे रस वेद गते ऽपि वा॥ २५॥ अरिष्टं जायते पुत्रः अल्प मृत्यु समं दुखम्। महैश्वर्य महालाभं मान कीर्तिं च वर्द्धयेत् ॥२६॥ कन्योद्भव सुपुत्रं च तथा पुत्र प्रपौजनम्। अकस्माज्जायते क्लेश उपद्रव महाभयं ॥२७॥ जीव चिन्ता भविष्यन्ति सत्य सत्य वचं मम। गुप्तपीडा विजानीयात् नवीनो सम्मतिः ततः ॥२८॥ ऋषि वेदाब्दगे वर्षे शरवाण गते ऽपि वा। परकान्ता भवेत्प्रीतिः पूर्व कर्मानुसारतः ॥ १९ ॥ तद्दिताय धनं वस्त्रं भूषणं रत्न संयुतम्। व्ययं भवति कालेन अग्रे आरव्या वदाम्यहम् ॥२०॥ गृहमेकं समारभ्य पुष्पोद्यान समन्वितम्। रसवाणगते वर्षे शरषष्ट गतेऽपि वा॥ २१॥ दाता भोक्ता कुतंहलश्च बहुसेवी नरो भवेत्। लोके लक्षपतिः ख्यातो पदवी उच्च प्राप्यते ॥ २२॥ धन धान्य समृद्धिश्च मंगलं गृहमेव च। किंचित् खेद विजानीयात् श्वास कास समन्वितः ॥२३॥ रस षष्ठ गते वर्षे व्योम सप्त गते ऽपि वा। पुत्र पौत्र धनैर्युक्तः मोदते भुवि मण्डले ॥२४॥ गोवत्सं प्रदातव्यं स्वर्ण शृङ्गी पयस्विनी। रौप्य क्षुरी ताम्र पृष्ठी पात्र वस्त्रादि संयुतः॥ २५॥ ब्रह्मभोज ततः कुर्यात् यथेच्छा भोजनं भवेत्। शशि सप्ताब्दमायुष्यं श्वास कासेन पीडितः ॥२६ ॥ ज्वरतप्त शरीरेऽप्यं दुर्बलो जायेत वपुः। अन्नदानं च कर्तव्यं मासे भाद्रपदे शुभे ॥ २७॥ कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां निर्याण ससुखं भवेत्। उच्च वंशे समुत्पन्नो सुपुण्यात् अग्र जन्मनि ॥२८॥ सुखाः सर्वे वणिक् वृत्तौ मनेच्छा सर्व पूजिता। राम भक्ति सुपुण्येन सर्वसौख्यमवाप्नुयात् ॥२९॥ शुक्रोवाच॥ किं कर्मानुसारेण पुत्रानन्द विनश्यति। पूर्व पाप कथा सर्वे कथ्यतां मुनि सत्तमः ॥३०॥ भृगुरुवाच ॥ शृणु पुत्र कथां सर्वं पूर्वजन्मस्य कारणम्। वैश्य वंशे समुत्पन्नो अति तेजो प्रतिष्ठया ॥३१॥ करोति मन्न व्यापारं

दुर्भिक्षं च तदा भवेत् । विप्रपुत्र समागत्य तदा च अन्न वांछया: ।। ३२ ।। वैश्य क्रोध महत् कृत्वा विप्र पुत्रं च ताडयेत् । यष्टि मुष्टि प्रहारेण द्विजपुत्र मृतिं भवेत् ।। ३३ ।। पुत्र मृत्यु दुखं विप्र दत्वाशाप तदामिदम् । पुत्रानन्द न भोक्तव्यं त्रिजन्मं च त्रिकालकम् ।। ३४ ।। शुक्रो वाच ।। किं यत्नं कुरुते तात पूर्व शाप विनश्यति । प्रायश्चित्त भवेत् सद्य: पुत्र सुखं प्रजायते ।। भृगुउवाच ।। स्वर्ण च प्रतिमा चैव अष्टमाष प्रमाणकं । द्विजपुत्रं लिखेन्मूर्ति: गंगाजलेतस्नानकं ।। ३५-३६ ।। ताम्रपात्र घृतं मध्ये स्वर्णमूर्ति प्रवेशकं । मध्यकाले सम्प्रदायां ब्राह्मणेन समर्पयेत् ।। एतद्दान प्रभावेण पाप नष्ट भवेद् ध्रुवम् । पुत्र प्राप्ति न सन्देहो वंश वृद्धि दिने दिने ।। ३७-३८ ।। इति ।।

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र ! अब इस जन्मकुण्डली वाले जातक का फला देश सुनो । यदि कुंभ राशि में गुरु और राहु, सिंह राशि में केतु तथा कन्या राशि में शनि हो तो मात योग' होता है । शुभ ग्रह शुभ स्थान में तथा पापग्रह पाप स्थान में होने से जातक को स्त्री की चिन्ता तथा पुत्र-सुख का अभाव रहता है । पूर्व पाप के कारण वंश - वृद्धि नहीं हो पाती । सब प्रकार के सुख रहने पर भी सन्तान का सुख प्राप्त नहीं होता । इस जातक की आयु के पहले, दूसरे तथा तीसरे वर्ष में शरीर - वृद्धि हो । कभी-कभी रोग-शोक भी हो । ५ से ९ वर्ष की आयु में विद्यारम्भ हो तथा खेलने में मन अधिक तथा पढ़ने में कम लगे । इसके बाद कल्याण हो । १० से १९ वर्ष की आयु में स्त्री-लाभ हो , नित्य सुख मिले , मित्रों के संग आनन्द हो । सौन्दर्य के प्रति आकर्षण हो । नवीन वस्त्राभूषण मिलें , वृद्धि हो , घर में मंगलाचार हों । २० से २८ वर्ष तक विद्या - बुद्धि की वृद्धि हो । गणित शास्त्र का विशेष ज्ञान हो । धन - धान्य की वृद्धि हो । दास - दासियों से सेवित रहे । स्त्री गर्भवती हो । पुत्र की प्राप्ति हो । फिर स्त्री को पीड़ा हो,

भृ० सं० ८०७३

भा० टी०

उदर रोग उत्पन्न हो। २९ से ३७ वर्ष की आयु में पुत्र तथा कन्या का लाभ हो। धन-धान्य से युक्त हो। फिर अपने ही कुल का अथवा पराये कुल का एक शत्रु उत्पन्न हो। गौ तथा वाहन का दान करे। मांगलिक कार्यों में धन खर्च हो। पात्र, वस्त्र, आभूषणों की प्राप्ति हो। पुत्र का विवाह हो। धन का आगमन तथा व्यय हो। ३८ से ४६ वर्ष की आयु में एक अरिष्ट हो तथा मृत्यु तुल्य कष्ट प्राप्त हो। फिर ऐश्वर्य बढ़े, मान-प्रतिष्ठा एवं कीर्ति का विस्तार हो, घर में कन्या अथवा पुत्र का जन्म हो। कुछ खर्च भी हो। फिर अकस्मात कोई उपद्रव उठ खड़ा हो। भय तथा क्लेश हो। एक जीव की चिन्ता हो। गुप्त-पीड़ा हो, नवीन सम्पत्ति प्राप्त हो। ४७ से ५५ वर्ष की आयु में पूर्वकर्मानुसार किसी पर-स्त्री से प्रेम हो और उसके लिए धन, वस्त्र, आभूषण आदि की व्यवस्था करनी पड़े। समयानुसार खर्च हो। अब आगे का वृत्तान्त सुनो। एक पुष्पवाटिका युक्त भवन का निर्माण कराये। ५६ से ६५ वर्ष की आयु तक दान करे, सुख भोगे तथा नौकरों से सेवित रहे। संसार में लखपती हो तथा उच्चपद एवं कीर्ति को प्राप्त करे। बछड़ा सहित दूध देने वाली गाय के सींग सोने से तथा खुर चाँदी से मढ़वाकर एवं पीठ पर ताम्रपात्र एवं वस्त्र रखकर दान करे। ब्राह्मणों को इच्छा-भोजन कराये। ७१ वर्ष की आयु में श्वास-कास की पीड़ा हो। शरीर में ज्वर रहे तथा दुर्बलता आये। उस समय अन्न दान करना चाहिए। भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी को महायात्रा हो। अगले जन्म में अपने पुण्यों के प्रभाव से प्रतिष्ठित कुल में उत्पन्न होकर वणिक्वृत्ति (व्यवसाय) करे तथा सब प्रकार के सुख भोगे। फिर राम-भक्ति तथा शुभकर्मों के प्रभाव से श्रेष्ठ गति एवं समस्त मंगलों को प्राप्त करे। हे पुत्र! यह जातक पूर्व जन्म में वैश्य कुल में जन्मा था तथा अत्यन्त धनी

था। अन्न का व्यवसाय करता था। एक बार अकाल पड़ने पर एक ब्राह्मण का पुत्र अन्न प्राप्त करने की इच्छा से इसके पास आया, परन्तु इसने उसे अन्न न देकर लाठी तथा घूंसों के प्रहार से मार डाला। तब उस बालक के पिता ने इसे तीन जन्मों तक पुत्र-सुख प्राप्त न होने का शाप दिया। उस विप्रशाप के प्रभाव से ही यह सन्तान-सुख से रहित होगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस उपाय से पूर्वकृत पाप का प्रायश्चित्त हो सकता है, सो कहिए। भृगुजी बोले- आठ माशे स्वर्ण की प्रतिमा पर ब्राह्मण पुत्र का चिह्न अंकित कर, उसे गंगाजल से स्नान कराये। फिर घृतपूर्ण ताँबे के पात्र में रखकर, मध्याह्न काल में उसे संकल्प कर किसी ब्राह्मण को दान कर दे तो यह शाप-मुक्त होकर पुत्र-सुख प्राप्त करेगा तथा इसके वंश की वृद्धि होगी॥ इति शुभम्॥

१२ सू. मं. बृ.
१ शु. बु.
११ रा.
२
१०
३
९ चं.
४
८
६ श.
५ के.
७

ॐ भृगु उवाच॥ भृगु पुत्र फलादेशं यस्यैषा जन्म कुण्डली॥

सिंह राशि गते केतुः कन्या शौरिर्यदा भवेत्। घट राशि गते राहु मीने जीव प्रतिष्ठिताम्॥१॥ अस्य खेटानुसारेण यस्य जन्म भवेत् सुतः। बालवृद्धि भवेल्लोके आदि क्रीड़ा यथा कुमम्॥२॥ द्वितीयके च वर्षेऽस्मिन् मासे मासे सुखागमः। तात लाभ प्रतिष्ठोऽपि किंचित् चिन्तान्वितो भवेत्॥३॥ राम वर्ष गते काव्य चतुर्थे पञ्चमेऽपि वा। बाल वृद्धि सुखं नित्यं क्रीड़ने मति तत्परा॥४॥ विद्यारम्भ ततो कृत्वा अकस्माज्जायते रुजम्। रसाब्दे नन्द वर्षे च यावद्वर्षं च द्वादशे॥५॥ ज्वर वात विकारेण ज्वरतप्तो भयप्रदा। छायापात्रान्नदानेन कष्ट शान्ति सुखागमः॥६॥ रामचन्द्र गते वर्षे शशिपुत्रगतोऽपि वा। विवाहो मंगलं चाऽपि मति कामं प्रवर्तते॥७॥ लिप्य लेखन कार्येषु कुशलं बुद्धिमा-

न्नरः। नवभूषण वस्त्रञ्च नव पानं तथैव च ॥८॥ नवनारी समागम्य धन धान्य समाकुलः।
प्रथमं गर्भ नश्यन्ति द्वितीयो बाल जीवनः ॥९॥ नेत्र युग्म गते वर्षे युग्म राम गतोऽपि वा। कीर्ति
मान विवृद्धिश्च पद प्राप्तो न संशयः ॥१०॥ स्वकुले शत्रु मेकञ्च भविष्यति न संशयः। अग्रेमि-
ष्ट प्रवक्ता च पृष्ठे शत्रु समाचरेत् ॥११॥ नवनारी भवेत्प्रीतिः स्व वा किंच पर स्त्रियः। दिवा
रात्रौ न तृप्तिस्येद् तस्य मूर्ति हृदे स्थिता ॥१२॥ वह्नि राम गते वर्षे शर वेदाब्द मध्यमा। बृहत्कीर्ति
महोत्साहो भूमि वृद्धि न संशयः ॥१३॥ सुता पुत्र समायुक्ता मंगलं गान मन्दिरे। तीर्थयात्रा भवि-
ष्यन्ति सकुटुम्बैः ससेवकैः ॥१४॥ पुत्र कन्या विवाहे च धन व्ययं न संशयः। शरीरे जायते
कष्टं उपचारेण शान्त्येत् ॥१५॥ रस वेद गते वर्षे शरबाण गतेऽपि वा। पुत्र पौत्र विवाहे च
धन व्ययं न संशयः ॥१६॥ कस्मिन्देशे भवेद् यात्रा रथाश्च गोधन स्मृतः। तस्यापि धन लाभंच
भूषणं वाहनादिकं ॥१७॥ वस्त्र महर्घ पात्रं च मणिरत्न सुवस्त्रकम्। लभ्यते विविधान्
द्रव्यं सत्यं सत्यं न संशयः ॥१८॥ दानं बहु प्रदातव्यं यश कीर्ति लभेत् महा। ऋतु बाण गते
वर्षे वेद षष्ठ गतेऽपि वा ॥१९॥ भूमि वृद्धि प्रजायन्ते धान्य वृद्धिर्न संशयः। विप्र कन्या विवाह
ऽपि धन वस्त्रं च दीयते ॥२०॥ महत्सौख्यं महल्लाभं महत्कीर्तिश्च सत्तमः। धनमैश्वर्यमतु-
-लम् यथा लाभ तथा व्ययम् ॥२१॥ शर षष्ठ गते वर्षे नाग षष्ठाब्द मध्यगे। साधुरेक समागम्य
वेद वेदाङ्ग पारगः ॥२२॥ तत्सङ्ग च दिवारात्रौ आत्म ज्ञानं विचारय। नन्द षष्ठाब्द मायुष्यं वैशा-
-खे शुक्ल पक्षयः ॥२३॥ अष्टम्यां रविवारे च मघा नक्षत्रमागत। गोभू सुवर्ण दानञ्च दत्वा
भूम्यासनं कृतः ॥२४॥ राज्य भोगाधिकारी च अग्र जन्मे पुनः पुनः। पुरे वै सदने दैव
तैलक्षे भवेत धर्मी ॥२५॥ धन धान्य समायुक्तो दास दासीनि सेवितः। स्त्रियो तु तस्य द्वे सन्ति

ज्येष्ठा भार्या च कर्कशा ॥२६॥ कनिष्ठा च गृहे तस्य गृहिणी धर्मचारिणी। त्यक्त्वा तं तैलकारो हि
यमलोकं च गच्छयत् ॥२७॥ पश्चात् स मर्कटो भूत्वा मृतो च जाह्नवी तटे। पुनश्च मानुषी
योनिः प्राप्तवान् शृणु भार्गव ॥२८॥ धनधान्य समायुक्तो गुणज्ञो ज्ञानवान्नपि। पूर्वपापकृतं
तेन सुतानन्द न प्राप्यते ॥२९॥ शुक्रो वाच ॥ किं यत्ने कुरुते तात पूर्व पाप विनश्यति। तत्सर्वं
विस्तराद् ब्रूहि लोकानुग्रह कांक्षया ॥३०॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णं च प्रतिमा चैव अष्टमाष प्रमा-
णकी। द्विस्त्रींश्च लिखेन्मूर्तिः गंगोदक च स्नानकं॥३१॥ प्रातः काले च तं मूर्तिं संकल्प्यं ब्राह्मणं
ददेत्। प्रायश्चित्ता भवेत् पुत्रः वंश वृद्धिर्न संशयः ॥३२॥ इति ॥

भावार्थः भृगुजी ने कहा- हे पुत्र! अब इस जातक की जन्मकुण्डली का
फलादेश सुनो। सिंह राशि में केतु, कन्या राशि में शनि, कुंभराशि में राहु तथा मीन राशि
में बृहस्पति हो तो जातक की प्रारंभिक अवस्था में शरीर-वृद्धि यथाक्रमसे होती है। पहले तथा
दूसरे वर्ष में प्रतिदिन एवं प्रतिमास सुख की प्राप्ति होती रहती है। पिता को धन लाभ तथा
प्रतिष्ठा मिले और कुछ चिन्ता भी हो। ३ से ५ वर्ष की आयु तक बालक की शारीरिक-वृद्धि हो
क्रीड़ा-मग्न रहे तथा नित्य नवीन सुख प्राप्त हो। ६ से ९ वर्ष की आयु में व्रण, ज्वर आदि का भय
हो। छायापात्र तथा अन्नदान से कष्ट दूर हो तथा सुख प्राप्त हो। १२ से २१ वर्ष की आयु में
विवाहादि मङ्गल कार्य हों तथा बुद्धि की वृद्धि हो। लिखने-पढ़ने में कुशलता प्राप्त हो। नवीन
वस्त्राभूषणों की प्राप्ति हो, धन-धान्य बढ़ें तथा स्त्री-समागम हो। फिर स्त्री के प्रथम गर्भ
का नाश हो तथा दूसरा बालक जीवित रहे। २२ से ३३ वर्ष की आयु में सम्मान-कीर्ति की
वृद्धि हो तथा उच्च-पद प्राप्त हो। अपने कुल का ही एक व्यक्ति शत्रु बने, जो मुँह पर तो

मीठे वचन बोले तथा परोक्ष में हानि पहुँचाने के लिए प्रयत्नशील रहे। किसी नवयौवना-स्त्री से प्रेम हो। उसकी मूर्ति हर समय हृदय में स्थित रहे तथा दिन-रात साथ रहने पर भी दुर्लिन हो। धन-धान्य की वृद्धि हो। ३३ से ४५ वर्ष की आयु तक कीर्ति का विस्तार हो, उत्साह बढ़े, भूमि का लाभ हो। घर में कन्या तथा पुत्र का जन्म हो। मंगल-गायन हों। कुटुम्ब तथा सेवकों सहित तीर्थ-यात्रा करे। विवाह में धन खर्च हो। फिर शरीर में कोई कष्ट हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में पुत्र तथा पौत्र के विवाह में धन खर्च हो। वस्त्र, द्रव्य, पात्र तथा उत्तम आभूषण एवं मणि, मुक्ता, प्रवाल आदि की प्राप्ति हो। किसी देश की यात्रा हो। वहाँ से आभूषण, धन एवं वाहन का लाभ हो। दान करे। ५६ से ६४ वर्ष की आयु में भूमि-लाभ हो, धन बढ़े। किसी ब्राह्मण-कन्या के विवाह में धन खर्च करे। सुख, कीर्ति बढ़े। जैसी आमदनी वैसा ही खर्च हो। ६५ से ६८ वर्ष की आयु में वेद-वेदाङ्ग में पारङ्गत एक साधु से समागम हो। उसकी संगति से आत्मज्ञान प्राप्त हो। फिर ६९ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार को मघा नक्षत्र में स्वर्ण दान कर, भूमि पर आसन लगाये तथा सिंह के चन्द्रमा में प्राण-त्याग करे। अगले जन्म में उच्च कुल में उत्पन्न हो, मन की सभी इच्छाएँ पूर्ण हों तथा राजभोग का अधिकार प्राप्त हो। हे पुत्र! पूर्वजन्म में इसने मदनपुर नामक स्थान में तेली के घर उत्पन्न होकर पर्याप्त धन-धान्य अर्जित किया था। इसके दो पत्नियाँ थीं। बड़ी स्त्री भ्रष्टा तथा कर्कशा थी। छोटी स्त्री धर्माचरण करने वाली थी। परन्तु इसने छोटी स्त्री को त्याग दिया। उस स्त्री-त्याग के पाप स्वरूप अन्त में यह नरक को प्राप्त हुआ। फिर जन्म हुआ और वहाँ गंगातट पर इसकी मृत्यु हुई। तत्प-

पश्चात् यह मनुष्य योनि में आया है। यह धन-धान्य से युक्त तो रहेगा, परन्तु इसे पुत्र-सुख प्राप्त नहीं होगा। शुक्र ने पूछा— हे प्रभो! किस उपाय से इसे पुत्र-सुख मिलेगा, वह कहें। भृगुजी बोले — आठ माशे स्वर्ण की प्रतिमा पर दो स्त्रियाँ अंकित कर, उन्हें गंगाजल से स्नान करा कर, प्रातः काल किसी ब्राह्मण को दान करे तो इसे पुत्र-सुख प्राप्त होगा तथा वंश-वृद्धि होगी- इसमें सन्देह नहीं है॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगुरुवाच॥ घट राशि गते राहु मेष राशि गते गुरुः। कन्या राशि गते शौरिः केतुः सिंहे च तिष्ठति। मान योग भवेत्तत्र भृगु पुत्र वदाम्यहम्। अस्य जातस्य जन्माद्यु फलादेशं यथावत॥१-२॥ जन्मतः प्रथमे वर्षे मंगलं सुखवर्द्धनम्। द्वित्रिवर्षान्तरो वत्स बालवृद्धि यथाक्रमः॥३॥ वेदाब्दे व्याल वर्षे च तयोर्मध्ये क्रमानुपात्। जायते विविधोत्साहे गृहे मंगल गायनं॥४॥ विद्यारंभो ऽपि इषपन्ते क्रीड़ने मति तत्परः। तात लाभ सुखं नित्यं यशो भूरि प्रतिष्ठिता॥५॥ शरीरे कष्ट सम्पन्नो अकस्माच्च भयागमः। ईश्वरी कृपया जीवः लभ्यते परमं सुखम्॥६॥ नन्दाब्दे नाग चन्द्रे च तयोर्मध्ये महत्सुखं। विवाहादि महोत्साहो मंगलं विविधैरपि॥७॥ भोगाश्च वैभवो नित्यं यशो भूरि प्रतिष्ठिता। ईश्वराराधने प्रीति जायते सुखमिच्छति॥८॥ लिपि लेखन कार्येषु कुशलो मान वर्धनः। लाभवृद्धिर्भवेल्लोके व्ययं च महतो तथा॥९॥ नन्द चन्द्र मिते वर्षे नागयुग्म गतोऽपि वा। संततिः सौख्य संजातो पितृकष्ट भवेत्यपि॥१०॥ माता सन्देह संतप्तः शत्रुभेक समुद्भवः। पूर्वपाप कृते दानं सर्व व्याधि विनाशनम्॥११॥ शत्रुभेतिष्ठतां याति धन सौख्य प्रवर्द्धनम्।

१ श.	१२ बु. सू. शु.	११ रा.
२		१०
३		९
४ चं.	६ गु.	८
५ के.		७ मं.

पुत्रोत्सव धनं धान्यं व्ययं याति न संशयः ॥२२॥ महोत्साहो भवेद्गेहे गीत वाद्यं च मङ्गलम् । अंध युग्म गते वर्षे नागराम गतेऽपि वा ॥२३॥ पत्नी गर्भ समायुक्त: संततिर्जायते ध्रुवम् । भार्याकष्टाच्चित पत्र वातरोगेण पीडित ॥२४॥ कस्मिन् तीर्थे भवेद्यात्रा सकुटुम्ब ससेवकैः । महादानं भवेत्तत्र सदावर्तस्तथैव च ॥२५॥ नन्द रामाब्दगे वर्षे भार वेद गतेऽपि वा । महत्सौख्यं महल्लाभं महत् कीर्तिश्च विस्तृत: ॥२६॥ पुत्र पौत्र विवाहे च अथवा देव मंदिरे । धन व्यय भवेत्पुत्र यथा लाभस्तथा व्ययम् ॥२७॥ कीर्ति देशे च विख्यातो उच्चपदवी च प्राप्तये । राजकार्य भवेद्यात्रा सेवकैर्वाहितै सह ॥२८॥ तत्रापि धनलब्धिं च मान कीर्ति प्रधानत: । वृद्ध मृत्यु भवेद्गेहे पत्र मङ्गल्च जायते ॥२९॥ पत्नी कष्ट विजानीयात् नान्यथा वचनं मम । ऋतु वेद गते वर्षे भार बाण गतेऽपि वा ॥२०॥ यद्रोगं जायते कष्टं पूर्व पुण्येन नश्यति ॥२१॥ वाहनं दासजं सौख्यं पुत्र आज्ञा प्रपालक: । कफ वातेन पीडा च श्वास कास तथैव च ॥२२॥ चण्डीपूजा समारम्भ मृत्युंजय तथैव च । एतद् यत्नेन भो शुक्र: सर्व रोग विनश्यति ॥२३॥ ऋतु बाणाब्दगे वर्ष नागषष्ठ गतेऽपि वा । पुत्र पौत्र समावृत्य: दासी दासेन सेवित: ॥२४॥ जन्म साफल्यमाप्नोति कुलतेन प्रकाशित: । पुण्याक्षये सुखं नित्यं ज्ञातव्यो सुखमिच्छति ॥२५॥ नागषष्ठाब्द मायुष्यं भाद्रपद कृष्ण पक्ष च । अष्टमी रोहिणी भे च वृष राशिगते शशि ॥२६॥ गोदानं द्रव्यदानं च कृत्वा देहत्यजेत् सुत । तेनैवोच्च कुले जातम् मने च्छा सर्वपूजिता ॥२७॥ राज्यभोगाधिकारी च अग्रजन्मे पुन: पुन: ॥२८॥ सर्व सौख्यं च द्दश्यन्ते पुत्र सुख विनश्यति । अति क्लेश महाचिन्ता पत्नी कष्ट विशेषत: ॥ २९॥ शुक्र उवाच ॥ केन कर्म विपाकेन सन्ततिं च विनश्यति । पूर्व जन्म कथा तात कथयेत् कृपया मम ॥ ३०॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्व पूर्व पापञ्च कारणम् । वैश्य वंशभवे

तु, जन्म धनधान्य समृद्धिवान् ॥ ३१॥ अथ सर्प गृहे वासं तात पुत्रोऽपि दारकं। गृहदेव कुरु रक्षा वैश्य यष्टि प्रहारकं ॥ ३२॥ नाग पुत्र दर्प मृत्यु: अति क्रोधो उपद्रवं। सर्व शाप मुखं दत्वा त्रिजन्म सुतहीनकं ॥ ३३॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं किं जापकं। सर्व शाप विनश्य-न्ति वैश्य पुत्रसुखं लभेत् ॥ ३४॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्य शशिमुद्रा प्रमाणकम् । तन्म-ध्ये कामबीजं च रक्त चन्दन लिख्यते ॥ ३५॥ वस्त्र आभूषणं दानं बहुरसान्नं च सुन्दरम् । संकल्पं च ददेत् विप्र गायत्री मन्त्र जापकम् ॥ ३६॥ एतद्दान प्रभावेण सर्प शाप विनश्यति। पुत्र सौख्य विजानीयात् पत्नी कष्टं च नाशयेत् ॥ ३७॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले — हे पुत्र! यदि कुंभ राशि में राहु, मेष में गुरु, कन्या में शनि तथा सिंह राशि में केतु हो तो 'मान योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक की जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। इस जातक के जन्म से एक वर्ष के भीत-र घर में मंगल-कार्य हो तथा सुख की वृद्धि हो। २ तथा ३ वर्ष की आयु में बालक का शारी-रिक विकास यथावत् हो। ४ से ८ वर्ष की आयु में विद्यारंभ हो तथा घर में मंगलाचार हों। कुछ शारीरिक-कष्ट भी हो तो खेल-कूद में रुचि बनी रहे। पिता को लाभ हो, मान-प्रतिष्ठा की वृद्धि हो। शरीर को थोड़ा कष्ट तथा अकस्मात् भय उत्पन्न हो, परन्तु फिर ईश्वर की कृपा से सुख प्राप्त हो। ९ से १८ वर्ष की आयु तक घर में अनेक प्रकार के मंगल तथा विवाहादि कार्य हों। नित्य नवीन सुख प्राप्त हों। सुखेच्छा से ईश्वराराधन में प्रवृत्ति हो। लिखने-पढ़ने में कुशल हो। मान तथा लाभ की वृद्धि हो। आमदनी बढ़े एवं तदनुरूप ही खर्च भी हो। १९ से २८ वर्ष की आयु के बीच पुत्र-लाभ हो। पिता

को शारीरिक-कष्ट हो। माता सन्देह से व्याकुल हो। एक शत्रु उत्पन्न हो। दान करने से पूर्व पाप तथा व्याधियों का नाश हो। शत्रु नष्ट हो। धन तथा सुख की वृद्धि हो। पुत्र के उत्सव में धन खर्च हो। गृह में मंगलाचार हों। उत्साह बढ़े। २९ से ३८ वर्ष की आयु में स्त्री पुनः गर्भवती हो, पुत्र का जन्म हो, साथ ही स्त्री वात रोग से पीड़ित भी हो। फिर कुटुम्ब तथा सेवकों सहित किसी तीर्थ की यात्रा हो, जहाँ खूब दान करने के कारण यश-वृद्धि हो। ३९ से ४५ वर्ष की आयु में अत्यधिक लाभ हो तथा सुख-कीर्ति का विस्तार हो। पुत्र, पौत्र के विवाह, मन्दिर-निर्माण आदि में धन खर्च हो। जैसा लाभ हो, वैसा ही व्यय भी रहे। देश में कीर्ति बढ़े। उच्च-पद प्राप्त हो। फिर किसी राजकीय काम से सेवकों तथा वाहन सहित यात्रा हो। वहाँ धन का लाभ हो। इसी अवधि में घर में किसी वृद्ध की मृत्यु हो, छत्रभङ्ग हो तथा स्त्री को भी कष्ट हो। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में होने वाला रोग पुण्य कर्मों से नष्ट हो। वाहन, दास तथा आज्ञा-पालक पुत्रों का सुख प्राप्त हो। ५६ से ६८ वर्ष की आयु तक कफ-वात, श्वास-कास के विकार हों जो चण्डीपाठ तथा महामृत्युञ्जय का जप करने से शान्त हों। पुण्यात्मय से नित्य सुख प्राप्त हो। ६८ वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा अष्टमी रोहिणी नक्षत्र वाले दिन, वृष के चन्द्रमा में गोदान एवं दुग्धदान देकर प्राण-विसर्जन करे। अगले जन्म में उच्च कुल में उत्पन्न होकर राजभोग का अधिकारी हो तथा सभी इच्छायें पूर्ण हों। इस जन्म में सभी सुख प्राप्त हों, परन्तु पुत्र का सुख न मिले। यह सुनकर शुक्र ने पूछा — हे प्रभो! किस पाप के कारण पुत्र-सुख नहीं होगा। यह मुझे बताने की कृपा करें। भृगुजी बोले — हे पुत्र! पूर्वजन्म में यह प्राणी

भृ० सं० ८२३

एक धनी वैश्य कुल में जन्मा था। इसके घर में तीन सर्प पिता-पुत्र रहते थे, जो इसकी रक्षा करते थे। परन्तु एक दिन इसने सर्प के दोनों पुत्रों को, जो खेल रहे थे, लाठी-प्रहार से मार डाला। उस समय उनके पिता सर्प ने इसे तीन जन्मों तक पुत्र-सुख से वंचित रहने का शाप दिया। उसी शाप के कारण इसे पुत्र-सुख नहीं मिलेगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा- हे प्रभो! किस उपाय से इसका पूर्वकृत पाप नष्ट होगा तथा पुत्र-सुख मिलेगा, वह मुझे बताइए। भृगु जी बोले- एक तोले स्वर्ण की प्रतिमा बना कर, उसके मध्य में रक्तचंदन से काम बीज लिखे। फिर वस्त्र, आभूषण तथा षट्रस व्यंजनों सहित वह प्रतिमा किसी ब्राह्मण को दान करदे तो इसके पूर्व पाप का प्रायश्चित्त होकर, पुत्र-सुख प्राप्त होगा ॥ इति शुभम् ॥

शु. चं. ७ (8 मं.)	६ / श.सू.बु.	५ / ४ के.
९	३	
१० रा.	१२ / ११	२ / १बृ.

ॐ भृगु उवाच ॥ अथान्यगे प्रवक्ष्यामि शृणु पुत्र सध्यानकम्। अस्य जातस्य जन्माङ्कं फलादेशं सुविस्तृतम् ॥१॥ कर्क राशि गते केतुः मेषे जीव यदा भवेत्। कन्याराशि स्थिते शौरिः मकरे राहु तिष्ठति ॥२॥ प्रथमेब्दे गुदा पीडा द्वितीये मुख पीडनम्। तृतीये व्रण व्याधिश्च चतुर्थे मातृखेदवान् ॥३॥ पंचमेब्दे पितुर्लाभं कीर्तिवृद्धि विशेषतः। विचारम्भ विजानीयात् नान्यथा वचनं मम ॥४॥ षष्ठे च सप्तमे वर्षे भूल्पचन्द्रादनन्तरम्। व्रणं विरेचने पीडा दशनोत्वाति जारुजम् ॥५॥ ज्वरेण तप्यते देहं दृश्यते दुर्बलो वपुः। लिप्य लेखन कार्येषु कुशलोपि तदन्तर ॥६॥ अष्टि चन्द्रगते वर्षे नन्द चन्द्राब्द मध्यगे। नव वस्त्र महर्लि च नव भूषण वाहनं ॥ विद्या वृद्धित्व जायेते अङ्क विद्या विशेषतः। विवाहोत्सव संजातः दृष्टे मङ्गल गायनं ॥७-८॥ विंशवर्षाब्दगे

भा० टी०

भृ० सं० २८३

भा० टी०

वत्स नन्द युग्म गतेऽपि वा । द्विरागमन योगं च पत्न्यो सह प्रमोदित: ॥९॥ धन धान्य समृद्धि
श्च दासी दासेन सेवित: । भार्या गर्भान्वितो भूयात् पुत्र जन्म भवेत् ध्रुवम् ॥१०॥ महादानानु-
रोधेन निज कृत्य फलं भजेत् । दम्पती सुखमेधन्ते धन पुत्रादितो सदा ॥११॥ त्रिंश वर्षे
गते काल शशि वेदगतेऽपि वा । लाभवृद्धिर्भवेल्लोके व्ययं च महतो भवेत् ॥१२॥
प्रायश्चित्तं सुयत्नेन सर्वारिष्ट क्षयो भव । काम क्रीड़ा मनोद्वेगं मोदते ललना जनै: ॥१३॥ दम्प
त्यो सौख्यजं नित्यं विविधो काम क्रीडनं । सुतारत्न मजायते मंगलं गृह नूतनम् ॥१४॥ युग्म
वेद गते वर्षे वह्नि वाणगतेऽपि वा । मनेच्छा पूजितो नित्यं सुखवृद्धि सदा भवेत् ॥१५॥ पत्नी
सौख्य वितश्चन्ति धनपुत्र सुखान्विता । देवदर्शन तीर्थं च पूतात्मा क्रियते सदा ॥१६॥ वेद
वाण गते वर्षे युग्म षट्गतेऽपि वा । जन्म साफल्य माप्नोति कुलं तेन प्रकाशित ॥१७॥ पुण्या-
श्रये सुखं नित्यं ज्ञातव्यो सुखमिच्छते । कफ वातेन पीड़ा च श्वास कास तथैव च ॥१८॥ वह्नि
वह्निगते वर्षे नन्द षष्टाब्द मध्यगे । गुप्त चिन्ताऽपि संजात: शरीरे दुर्बल भवेत् ॥१९॥
चण्डीपूजा समारम्भ मृत्युञ्जय तथैव च । पौत्र प्राप्तिर्भवेत्तत्र बहुलाभमवाप्नुयात् ॥२०॥ धन
धान्य समृद्धिश्च गृहछेन प्रपूरिता । व्योम सप्ताब्द मायुष्यं भाद्रे कृष्णाष्टमी भवेत् ॥२१॥ रोहि-
णी मे समायुक्ता वृष राशि गते शशी । गोदान द्रव्य दानं च कृत्वा देह त्यजेत् सुत: ॥२२॥
पुनर्विप्र कुले जन्म भविष्यति न संशय: । भुवनेश्वरी प्रभक्तश्च पूजने हवने रत: ॥२३॥ राज-
द्वारे ऽति मानश्च कीर्ति विख्याति भूतले । कुलश्वाली धनाढ्यश्च भाग्यवान् सुमित्रवान् ॥२४॥
पूर्व जन्मं च पापार्थं वामचिन्ता भवेत् महा । पुत्र लाभ न दृश्यन्ते ना मृषा वचनं मम ॥२५॥
शुक्रोवाच ॥ किं कर्मानुसारेण वंश वृद्धिर्न दृश्यते । पूर्व जन्म कथा सर्व कथ्यतां द्विजसत्तम ॥२६॥

भृगु उवाच ।। शृणु पुत्र कथा सर्व पूर्व जन्मानि कथ्यते । क्षत्री वंश समुत्पन्नो धनधान्य सुखी भवेत ।। २७ ।। निज स्थानाधिपति विप्र गृहभूमि उपाधिकम् । यष्टि मुष्टि प्रहारेण द्विज स्थानं च भस्मकम् ।।२८।। पुत्र पुत्रत्रयं कन्या गृहमध्ये मृतिं भवेत् । तेन पापप्रभावेण वंश वृद्धि विनश्यति ।।२९।। शुक्रोवाच ।। किं फलं दान मन्त्र स्य किं विधानेति जापकं । पूर्व पाप विनिर्मुक्ता: वंश वृद्धि प्रजायते ।। ३० ।। भृगुउवाच ।। स्थानदान कुरुं विप्र गायत्री मंत्र जापकम् । स्वर्णस्य प्रतिमा पत्रं द्विजपुत्रं च लिख्यते ।। सर्वदान विधानेन संकल्पं ब्राह्मणं ददेत् । द्विज सन्तुष्ट कर्तव्यं पूर्व पाप विनाशनम् ।। ३१-३२।। पुत्रलाभ न सन्देहो वंश वृद्धि दिने दिने । प्रायश्चित्त भवेत्सर्व सत्य सत्य वचं मम ।। ३३ ।। इति ।।

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे शुक्र ! यदि कर्क राशि में केतु, मेष राशि में बृहस्पति, कन्या राशि में शनि तथा मकर राशि में राहु हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाला बालक अपने जीवन के प्रथम वर्ष में गुदा – पीड़ा, द्वितीय वर्ष में मुख - पीड़ा एवं तृतीय वर्ष में व्रण- विस्फोटक की पीड़ा प्राप्त करता है । चौथी वर्ष में उसकी माता को दुःख होता है तथा पाँचवीं वर्ष में पिता को लाभ होता है एवं कीर्ति वृद्धि होती है । ६ से १० वर्ष तक की आयु में विद्यारंभ, व्रण, अतिसार, ज्वर, तथा शारीरिक दुर्बलता होती है । ११ से १९ वर्ष की आयु तक नवीन वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि का लाभ होता है । विद्या-वृद्धि होती है तथा अङ्कविद्या (गणित) का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है । २० से २९ वर्ष की आयु में विवाह, स्त्री-भोग, धन-धान्य की वृद्धि तथा सेवकों का सुख प्राप्त होता है । घर में मंगलगान होते हैं । स्त्री गर्भवती हो तथा पुत्र का जन्म हो । महादान करने से कर्मों का

भृ० सं० ८२३

शुभ फल प्राप्त हो। स्त्री, धन, पुत्र आदि का सुख प्राप्त हो। ३० से ४१ वर्ष तक सांसारिक-लाभ हों तथा धन वर्षा भी हो। प्रायश्चित्त से सब अरिष्ट दूर हों। सुयत्न करना भी आवश्यक है। कामोद्वेग के कारण मन चंचल रहे। बालकों को देख कर चित्त प्रसन्न हो। स्त्री का सुख मिले। कामक्रीड़ा हो। कन्या का जन्म हो तथा घर में नवीन मंगल हों। ४२ से ४४ वर्ष की आयु में मन की सभी इच्छाएँ पूरी हों। नया घर बने। परन्तु स्त्री की मृत्यु हो। धन तथा पुत्रों का सुख रहे। तीर्थ में देव-दर्शन कर, शरीर एवं आत्मा को पवित्र करे। ४५ से ६२ वर्ष की आयु में जन्म सफल हो। सुख की इच्छा से पुण्य-कर्म करे। नित्य सुख हो। अन्त में, कफ एवं वात पीड़ा का कष्ट भी हो। ६३ से ६९ वर्ष की आयु में गुप्त-चिन्ता हो। शरीर में दुर्बलता आये। भगवती की पूजा तथा मृत्युञ्जय मन्त्र का जाप करने से शान्ति मिले। विशेष लाभ हो। ७० वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा, अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र में वृष के चन्द्रमा के समय गोदान तथा द्रव्य-दान करके शरीर त्यागे। अगली बार ब्राह्मण-कुल में जन्म हो। भगवद्-भजन में मन लगे, राज्य में सम्मान प्राप्त हो। पृथ्वी पर यश फैले, कुल, मित्र एवं सौभाग्य से समृद्ध हो। हे पुत्र! पूर्व जन्म के पाप के कारण इसे वर्तमान जन्म में स्त्री सम्बन्धी दुःख होगा तथा सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। यह सुन कर शुक्र ने पूछा—हे प्रभो! किस पाप के कारण इसको ये दुःख होंगे, वह बताने की कृपा करें। भृगुजी बोले—हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ था तथा धन-धान्यादि से सुखी था। इसके मकान में एक ब्राह्मण परिवार किराये पर रहता था, एक बार इसने ब्राह्मण को मकान से निकालने के लिए उसके साथ मार-पीट की तथा

भा० टी०

मकान में आग लगा दी। जिसके कारण ब्राह्मण के दो पुत्र तथा तीन कन्याओं की मृत्यु हो गई। उसी पाप के कारण इसे पूर्वोक्त कष्ट होगा। शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इसके पाप का प्रायश्चित्त किस प्रकार हो सकता है, यह बतायें। भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह ब्राह्मण को एक मकान का दान करे तथा गायत्री मन्त्र का जप कराये। फिर स्वर्णपत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति अंकित कर, उसे भी ब्राह्मण को दान करदे तो इसका पूर्व पाप नष्ट होगा एवं पुत्र-सुख की प्राप्ति होगी, इसमें सन्देह नहीं है।। इति शुभम्।।

रा. मं. चं. १०	९	८
७ श.	६	बु. सू. शु. (८)
११	५	
१२	२	४ के.
१ गु.	३	

ॐ भृगु उवाच ।। अथान्यत्संप्रवक्ष्यामि फलादेशं च कुण्डलीम्। भृगुपुत्र कथा सर्वं त्रिजन्मस्य वदाम्यहम्।। १।। कर्कराशि गते केतुः तुलायां च गते शनौ। मकरे राहु मेषे च गुरु तस्य फलं भवेत्।।२।। प्रथमेब्दे ज्वरं पीड़ा द्वितीये उदरस्थला। तृतीये नेत्र रोगश्च भ्रातृ भगिन्यपि जायते।।३। चतुर्थे नहि भीतिस्तु उच्चस्थे पतितोऽथवा। पञ्चमे षष्ठमे सप्ते बाल वर्षे च नंदके।। विद्यारंभ समारम्भ क्रीडने मति तत्पर:। तात लाभ व्ययो दीर्घः क्रीड़ते विविधैस्तदा।। ४-५।। धावनात्पाद कष्टं च हृदे गुप्त भयं महत्। दिक वर्ष समारम्भ नन्दचन्दुमितेऽपि वा।। ६।। मंगलं जायते गेहे पत्नी योग सुयत्नतः। सर्व सौख्य समृद्धिश्च नारी भोगादि संयुतः।।७।। स्वकृत्यकुशलो धीमान् भाग्यवृद्धि दिने दिने। पत्नी सौख्य विशेषेण मोदते नाऽत्र संशयः।।८।। विंश वर्षाब्दगे वत्स नागयुग्म गतोऽपि वा। राजद्वारेति मानञ्च कीर्ति बुद्धि विशेषतः।।९।। पत्नी गर्भ न सन्देहो जायतः सर्व मानसम्। महोत्सवो महोत्साहो मंगलं जायते ध्रुवम्।। १०।। शत्रुभेद समुत्पन्न स्वकुले नात्र संशयः।

भा० टी०

नन्द नेत्रगते वर्षे नाग रामाब्दगेऽपि वा ॥ २१ ॥ संततिः रोग संजातः पत्नीकष्ट विनिश्चितम् । प्रसू-
ती रोगमुत्पन्न महाकष्टे प्रजायते ॥ २२ ॥ देव्या या पूजनं होमं कृते रोग विनश्यति । अन्य स्त्री
संभवेत्प्रीति स्वकीया परकियाऽथवा ॥ २३ ॥ नन्द रामाब्दगे वर्षे नागवेदमितेऽपि वा । राज्यकार्ये
भवेद्यात्रा अन्यदेशे न संशयः ॥ २४ ॥ तत्र मित्र भवेदेकं नित्यं प्रीति प्रवर्द्धनः । तत्रापि धन
लाभस्याच्चित्त तृप्तिर्न संशयः ॥ २५ ॥ धन धान्य समृद्धिश्च यथा लाभ तथा व्ययं । नवनारि
समागम्य महोत्साहो दिने दिने ॥ २६ ॥ नंद वेद मिते वर्षे शर बाण गतेऽपि वा । महोत्साहो धनं
प्राप्ति भूमि द्वारा धनागमः ॥ २७ ॥ कन्या जन्म विजातीयात् लक्ष्मी रूपा न संशयः । चन्द्रवद्
वृद्धिर्वा च मासे मासे दिने दिने ॥ २८ ॥ दास दासी प्रवृद्धिंच तथा वस्त्र सुभूषणम् । अन्यदेशे
भवेत्यात्रा तत्रापि धनमागतः ॥ २९ ॥ ऋतु बाणगते वर्षे नाग बाणगतेऽपि वा । दैव योगे महत्कष्टं
जातश्लेष्मेन पीडितम् ॥ ३० ॥ ब्राह्मणं भोजनं दद्यात् वस्त्र पात्र समन्वितः । साधु विप्र समागतः
धन गाया प्रचारयेत् ॥ ३१ ॥ नन्द षष्ठाब्दमायुष्ये अलि राशि गते रविः । गोदानं विप्र कर्तव्यं
विष्णु पञ्जर पाठयेत् ॥ ३२ ॥ पंचतत्व पृथक् भूत्वा देवलोक ततः परम् । पुनः द्विज कुले ह्येकं
संभवो याग्यजन्मनि ॥ ३३ ॥ सर्व सौख्याधिकारी च सुपुण्यात्परमं पदं ॥ ३४ ॥ सुख दुःखान्वितो जीवः
सर्वथा कर्म कारणः । पत्नीपुत्र महच्चिन्ता जायते नात्र संशयः ॥ ३५ ॥ शुक्रो वाच ॥ केन कर्मानु-
सारेण पुत्र सौख्य विनश्यति । तत्सर्वं विस्ताराद्ब्रूहि पूर्वजन्म कथा प्रभो ॥ ३६ ॥ भृगु उवाच ॥
शृणु पुत्र कथा सर्वे पूर्व पाप वदाम्यहम् । क्षत्री वंश समुत्पन्नः गमनं खेटानुसारणं ॥ ३७ ॥
मृगी पुत्र विलोकस्य शर चाप धृतं खलुम् । शर प्रहारेण त्वरिता मृगी पुत्र भवेत् मृतिं ॥ ३८ ॥
हाहाकार मृगं कृत्वा पुत्र शोकेऽति व्याकुलं । तदा शाप मृगं दत्वा त्रिजन्म सुत हानि च ॥ ३९

शुक्रोवाच॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं किं च जाप्यकम्। पूर्वशाप विनश्यंति पुत्रसौख्यं भविष्यति॥ ३०॥ भृगु उवाच॥ स्वर्णे च प्रतिमा कार्या: मृगमूर्ति त्रिपिःकृत:। ताम्रपात्र घृतं मध्ये गुप्त मूर्ति प्रवेशकं॥ ३१॥ अष्टमात्र ददेद्दानं अर्द्धराशि प्रमाणकम्। पूजयेत् सोपचारेण पुत्रसौख्यं भविष्यति॥३२॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा- यदि कर्क राशिमें केतु, तुला राशि में शनि, मकर राशि में राहु तथा मेष राशि में बृहस्पति हो तो ऐसी जन्मकुण्डली वाले जातक का फलादेश जो होगा वह मैं तुमसे कहता हूँ। पहले वर्ष में ज्वरपीड़ा, दूसरे वर्ष में उदर रोग, तीसरे वर्ष में नेत्र-रोग तथा भाई अथवा बहिन के जन्म का योग बनेगा। चार वर्ष की आयु में अग्निसे भय अथवा किसी ऊँचे स्थान से गिर कर चोट लगने का भय होगा। ५ से ९ वर्ष की आयुमें विद्यारंभ हो तथा क्रीड़ा में मन लगे। पिता को लाभ हो तथा खर्च भी बना रहे। दौड़तेसमय जातक के पाँव में चोट लगे। हृदय में गुप्त चिन्ता तथा भय हो। १० से १९ वर्ष की आयु तक घर में मंगल-कार्य हों। सुयत्न से पत्नी-प्राप्ति का योग बने। सभी सुखों की वृद्धि हो। नारी योग से पुत्र बुद्धिमान व्यक्ति बने। अपने कार्य में कुशल हो। दिन-दिन भाग्य की वृद्धि हो, स्त्री का सुख मिले तथा आनन्द हो। २० से २८ वर्ष की आयु में राजद्वार से सम्मान मिले, कीर्ति बढ़े, स्त्री गर्भवती हो, मन में आनन्द बढ़े, ऐश्वर्य तथा उत्साह की वृद्धि हो एवं मांगलिक कार्य हों। फिर अपने ही कुल का एक व्यक्ति शत्रु बन जाय। २९ से ३८ वर्ष तक सन्तान हो, स्त्री को प्रसूति रोग हो तथा देवी-पूजन एवं होम करनेतथा औषधोपचार से रोग दूर हो। ३९ से ४८ वर्ष तक की आयु में राजकाज के हेतु यात्रा

मृ० सं० १२३

भा० टी०

हो । परदेश में एक व्यक्ति से मित्रता हो, जिससे नित्य नई प्रीति बढ़े । वहाँ धन का लाभ हो । चित्त की तृप्ति न हो । धन-धान्य की वृद्धि हो । जैसी आमदनी हो, वैसा ही खर्च भी हो । किसी नवीन स्त्री के साथ समागम हो, दिन-दिन प्रेम की वृद्धि हो । ४६ से ५५ वर्ष की आयु तक उत्साह बढ़े, भूमि द्वारा धन का लाभ हो । घर में लक्ष्मी जैसी सुन्दर कन्या का जन्म हो, जो शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भाँति बढ़े । प्रतिदिन तथा प्रति मास दास, दासी, वस्त्र आ-भूषण आदि की वृद्धि हो । अन्य देशों की यात्रा से लाभ हो । ५६ से ६८ वर्ष की आयु में दैव-योग से वात-कफ-पीड़ा हो । ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र तथा पात्र दान करने से आराम मिले । फिर धन-धान्य से समृद्ध हो तथा धर्माचरण में प्रवृत्ति रहे । ६९ वर्ष की आयु में वृश्चिक के सूर्य होने पर, ब्राह्मण को गोदान करके, विष्णु सहस्रनाम के पाठ को सुनता हुआ परमगति को प्राप्त होकर देवलोक में जावे । फिर श्रेष्ठ ब्राह्मण के घर में जन्म लेकर सब सुखों को भोगे तथा अन्त में सुन्दर पुण्यकर्मों के प्रभाव से परमपद को प्राप्त करे । इस जन्म में पूर्व कर्मों के कारण सुख-दुःखों को भोगे तथा स्त्री-पुत्र की चिन्ता से चिन्तित बना रहे । यह सुनकर शुक्र ने कहा- हे प्रभो! किस पूर्व कर्म के अनुसार इसके पुत्र-सुख का विनाश होगा, वह मुझ से कहिए । भृगुजी बोले - हे शुक्र! यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्री था । एक बार यह मृगया के लिए, धनुष-बाण हाथ में लेकर वन में गया । वहाँ एक मृगी-पुत्र पर इसने अपना बाण छोड़ा, जिससे उसकी मृत्यु हो गई । उस समय हरिणी ने इसे तीन जन्मों तक पुत्र-सुख न मिलने का श्राप दिया उसी श्राप के कारण इसको पुत्र सम्बन्धी कष्ट होगा । तब शुक्र ने पूछा - हे प्रभो ! किस

मन्त्र के जप अथवा दान-पुण्य आदि से इसका पूर्वकृत पाप-दोष नष्ट हो सकेगा तथा पुत्र-सुख प्राप्त होगा, वह मुझे बताइये। भृगुजी बोले हे शुक्र! सुनो, मुद्रा प्रमाण स्वर्ण की एक प्रतिमा बनवाए तथा उस पर हरिण का चित्र अंकित करे। फिर एक ताँबे के पात्र में घृत भरकर, उसमें स्वर्ण-प्रतिमा को गुप्तरूप से रख कर, अर्द्धरात्रि के समय ब्राह्मण को दान करे तो जातक के पूर्व जन्म के पाप का प्रायश्चित्त होगा तथा इसे पुत्र-सुख की प्राप्ति होगी—इसमें कोई सन्देह नहीं है ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगुउवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेश यस्यैषा जन्मकुण्डली।

के. बु. ४	३	२ शु.
५	सू. मं.	१ गु.
६ रा.		१२
७ चं.	९	११
८		१० श.

त्रैकालिक फलादेशं सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ १ ॥ कन्या राशिगते शौरिः कर्के केतुर्यदा भवेत्। वृषराशिस्थिते जीवे मकरे राहु तिष्ठति ॥ २ ॥ प्रथमे द्वितीयेऽब्देषु गृहे मंगल मोदिता। प्राप्ते वह्नि वर्षे च तथा वाणाब्द मध्यगे ॥ ३ ॥ तात प्रीति महोत्साहो गृहे मंगलमेव च। विद्यारम्भ कृतो बालो हास्य क्रीड़ा मनोरमा ॥ ४ ॥ ऋतु वर्षे सुखं प्राप्तः तपस्या दिशि वत्सरे। चंचलश्चपलो धीमान् शिशूणां रमते मुदः ॥ ५ ॥ महर्षि भूषणो वस्त्रं प्राप्ते मानवर्द्धनः। विद्या बुद्धि सुयत्नेन मासे वर्षे महत्यपि ॥ ६ ॥ प्राप्ते चैकादशे वर्षे चन्द्र युग्म गतेऽपि वा। उद्वाहादि महोत्साहो पत्नीं प्राप्ति मनोहरं ॥ ७ ॥ पुण्य पत्नोपितां नित्यं मोदते बहु विस्तरम्। लिप्य लेखन कार्येषु कुशलोऽपि तदन्तरे ॥ ८ ॥ द्रव्य लाभ विशेषेण व्ययोऽपि तादृशी भवेत्। प्रशंसा यादृशी लोके क्रोधो वित्त न तादृशी ॥ ९ ॥ न सुखं लभते पूर्ण यावद्यत्न न पापहं। पुण्यात्सर्व सुखं नित्यं पापकर्माद्धधोगतः ॥ १० ॥ नेत्र युग्म गते वर्षे नन्द नेत्र गतेऽपि वा। पुत्र प्राप्तिर्न-

सन्देहो धन धान्य समन्विता ॥११॥ वृद्ध मृत्यु कुटुम्बे च तस्मिन् व्यय महद्भवेत्। धन धान्य समृ-
-द्धिश्च मंगलं गृहमेव च ॥१२॥ लघु पुत्र भवेत्कष्टं पत्नी चिन्तान्वितो भवेत्। नव वस्त्र महर्घं च
नव भूषण वाहनम् ॥१३॥ त्रिंश वर्षे गते काल नाग रामाब्द गेऽपि वा। महत्सौख्यं महल्लाभं महत्की-
र्तिश्च विस्तृत: ॥१४॥ पुत्र कन्या विवाहे च कूपारामे तथैव च। धन व्यय भवेत्पुत्र यथा लाभं तथा
व्ययम् ॥१५॥ साधुरेक समागम्य वेद वेदाङ्ग पारग:। तत्सत्सेङ्ग दिवारात्रौ आत्मज्ञानं विचारय: ॥१६॥
नन्दराम गते वर्षे नाग वेदाब्द गेऽपि वा। पत्नी गर्भ समायुक्ता संततिर्जायते ध्रुवम् ॥१७॥ भार्याकष्टा-
न्वित: तत्र वातरोगेण पीडिता। कस्मिन् तीर्थे भवेद्यात्रा सकुटुम्ब सुसेवकै: ॥१८॥ महादान
भवेत्तत्र: सदावर्तस्तथैव च। पुत्र कन्या भवेद्व्याहम् धन धान्य व्ययं भवेत् ॥१९॥ अरिष्टं
जायते पुत्र अल्प तुल्य प्रकाष्टयेत्। औषधेन गत: रोग: सर्व कष्ट निवारणं ॥२०॥ नन्दवेदमि-
ते वर्षे नाग बाण गतेऽपि वा। अकस्माच्च भयं क्लेशोपद्रवो च भयानकम् ॥२१॥ जीवचिन्ता
भविष्यन्ति भाग्योदय दिने दिने। मानसी विविधा चिन्ता प्राणंभय भविष्यति ॥२२॥ अल्पद्रव्य
भवेत्पुत्र बाल्यावस्था च यौवने। सुतदारादिकं सौख्यं कामी कामरत: सदा ॥२३॥ बाणबाण गते
वर्षे नन्द वह्नि गतेऽपि वा। महत्कीर्ति महल्लाभं भविष्यति दिने दिने ॥२४॥ शत्रुं विनश्यतां याति
धन सौख्य प्रवर्द्धन:। पत्नी मृत्युं विजानीयात् नान्यथा वचनं मम ॥२५॥ व्योम सप्ताब्द मायु
ष्यं वैशाखे शुक्ल पक्षये। अष्टम्यां रविवारेण मघा नक्षत्र मागता ॥२६॥ सिंह राशौ गते चन्द्रे
तन्नियाणि न संशय:। पुनर्द्विज कुले जन्म सम्भवेत् अग्र जन्मनि ॥२७॥ सर्वसौख्याधिका-
-री च सुपुण्यात्परमं पदम् ॥२८॥ वर्तमानेन भो पुत्र: सर्वानन्द प्रजायते। पूर्व पापश्च
शापार्थ पुत्र सौख्य विनश्यति॥ शुक्रोवाच ॥ केन कर्म विपाकेन पुत्र सौख्य विनश्यति।

पूर्वगाथा च जातेन कथ्यतां कृपया मम ॥२९-३०॥ भृगु उवाच ॥ भृगु पुत्र कथा सर्वं पूर्वपापस्य
कारणम् । क्षत्रिय वंशमुत्पन्नो राजयोगं च प्राप्नुये ॥३१॥ अश्वपति गजगामी बहुसेवी नरो भवेत् ।
परस्त्री च महाप्रीति कुमार्गी दुष्ट पापिनी ॥३२॥ द्विजपुत्रस्य पत्नीस्यात् तेन त्यक्त्वा कुभार्गिणी ।
राजद्वारे पतिं धृत्वा मिथ्यापवाद कारयेत् ॥३३॥ कारागार भवेत् पूर्वं पश्चात् मृत्यु भवेत् विभं ।
पूर्व पाप प्रभावेण पुत्रसौख्यं न लभ्यते ॥३४॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मंत्रस्य
जापकं । पूर्व शाप विनश्यन्ति तत्सर्वं ब्रूहि मे प्रभो ॥३५॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या
पंचटंक प्रमाणकम् । ततोपरि विष्णुचित्रं लिखितां विधिपूर्वकम् ॥३६॥ रक्त चंदन मिश्राणि गंगो-
दक सुस्नानकम् । ताम्रभाण्डे घृतं मध्ये तस्मिन् धृतिं प्रवेशनम् ॥३७॥ संकल्पं च ददेत् विप्र
गायत्री मन्त्र जापकम् । पूर्वशाप विनश्यन्ति पुत्र सौख्य भविष्यति ॥३८॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा- हे पुत्र! यदि कन्याराशि में शनि, कर्कराशि में
केतु, वृषराशि में गुरु तथा मकर राशि में राहु हो तो ऐसे योग में जन्म लेने वाले जातक को
अपनी आयु के पहले तथा दूसरे वर्ष में आनन्द-मंगल का लाभ होता है। ३ से ५ वर्ष की आयु में
पिता का प्रेम बढ़े, घर में मंगल कार्य हों तथा विद्यारम्भ हो। हास्य तथा क्रीड़ा में जातक निमग्न
बना रहे। ६ से १० वर्ष की आयु में चपलता रहे। बालकों के साथ क्रीड़ा करे। वस्त्राभूषणों
की प्राप्ति हो। विद्या एवं बुद्धि की वृद्धि होती रहे। ११ से २१ वर्ष की आयु में घर में उत्सव हों,
विवाह हो तथा मनोरमा स्त्री की प्राप्ति हो। पुण्य आदि यत्न करने से नित्य आनन्द लाभ
हो। पढ़ने-लिखने में कुशल हो। धन-लाभ हो, उसी के अनुरूप खर्च भी हो। लोगजितना
धनी समझे, उतना धन न हो। प्रतिष्ठा अधिक बनी रहे। जबतक पूर्वजन्म के पाप का

प्रायश्चित्त न किया जाय, तब तक पुत्र-सुख प्राप्त न हो। पुण्य से पाप नष्ट हो तथा निज सुख प्राप्त हो। २२ से २९ वर्ष की आयु तक पुत्र-लाभ हो तथा धन-धान्य से युक्त हो। कुटुम्ब में एक वृद्ध की मृत्यु हो, उसमें धन खर्च हो। फिर घर में मंगल कार्य हों। छोटे पुत्र को कष्ट हो, स्त्री की चिन्ता रहे। नवीन वस्त्राभूषण बनें। सवारी का सुख मिले। ३० से ३८ वर्ष तक विशेष लाभ तथा सुख प्राप्त हो एवं कीर्ति बढ़े। पुत्र-कन्या के विवाह में तथा कुँआ-बगीचा आदि बनवाने में धन खर्च हो। जैसी आमदनी हो, वैसा ही व्यय भी रहे। तत्पश्चात् एक वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता साधु-पुरुष से भेंट हो। उसकी सत्सङ्गति में रह कर आत्मज्ञान का चिन्तन करे। ३९ से ४८ वर्ष की आयु में स्त्री गर्भवती हो तथा पुत्र का जन्म हो। फिर स्त्री को कष्ट हो। वातरोग की पीड़ा हो। कुटुम्बीजनों तथा सेवकों सहित किसी तीर्थ की यात्रा करे, वहाँ महादान, सदावर्त्त आदि की व्यवस्था करे। पुत्र तथा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। पुत्र को अल्पमृत्यु तुल्य अरिष्ट हो। औषधोपचार से उसका रोग दूर हो। ४९ से ५७ वर्ष तक की आयु में अकस्मात् कोई उपद्रव उठ खड़ा हो, भय तथा क्लेश हो। फिर वह दूर भी हो जाय। भाग्यवृद्धि हो। कुछ गुप्त मानसिक चिन्तायें हों तथा प्राणों का भय हो। हे वत्स! इस जातक की दो अल्प हैं। बाल्यावस्था में तथा युवावस्था में। पुत्र तथा स्त्री का सुख प्राप्त हो। ५८ से ६९ वर्ष की आयु तक कीर्ति एवं लाभ मिले। शत्रु नष्ट हों। धन बढ़े। स्त्री की मृत्यु हो। ७० वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार, मघा नक्षत्र तथा सिंह के चन्द्रमा में स्वयं की मृत्यु हो। आगे ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर सब सुख भोगे तथा अन्त में अपने पुण्यों के प्रभाव से परम पद को प्राप्त करे। हे पुत्र! यह जातक अपने

वर्तमान जीवन में सब प्रकार के सुखों का उपभोग करेगा, परन्तु पूर्वजन्म में इसने जो पाप किया है, उसका प्रायश्चित्त जब तक नहीं करेगा, तब तक पुत्र-सुख प्राप्त नहीं कर सकेगा। यह सुन कर शुक्र ने कहा- हे प्रभो! इस जातक ने पूर्वजन्म में ऐसा कौन सा पाप किया था, जिसके कारण यह पुत्र-सुख से वंचित रहेगा, वह मुझे बताने की कृपा करें। यह सुन कर भृगुजी बोले- हे तात! पूर्वजन्म में यह राजयोग धारी क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ था। उस समय इसकी प्रीति एक ऐसी कुलटा, दुष्टा तथा पापिनी स्त्री से हुई, जो एक ब्राह्मण युवक की पत्नी थी। क्षत्रिय ने उस कुलटा को ब्राह्मण पुत्र से छीन कर अपनी पत्नी बना लिया। इसके बाद उस कुलटा ने राजदरबार में जाकर अपने पूर्वपति पर एक मिथ्या अभियोग लगाया, जिसके कारण उस ब्राह्मण-पुत्र को राजा ने कारागार में डाल दिया। फिर उस पापिनी ने षड्यन्त्र रच कर कारागार में पड़े उस ब्राह्मण युवक को विष दिलवा कर मरवा दिया। यह सब कृत्य पापी क्षत्रिय की सम्मति से, उसकी जानकारी में हुआ, अतः उस पाप के कारण इसे वर्तमान जन्म में पुत्र-सुख प्राप्त नहीं होगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा- हे प्रभो! किस मन्त्र के जप अथवा दान-पुण्य आदि उपायों के द्वारा इसे पूर्वजन्म के पाप से मुक्ति मिल सकती है तथा प्रायश्चित्त करके पुत्र-सुख प्राप्त हो सकता है, वह मुझसे कहने की कृपा करें? यह सुनकर भृगुजी बोले- हे पुत्र! मैं इसके पूर्वकृत पाप के प्रायश्चित्त का उपाय बतलाता हूँ, सुनो। पांच टंक भारी स्वर्णपत्र पर, लालचन्दन के द्वारा विधिपूर्वक ब्राह्मण का चित्र अंकित करे। फिर उसे गंगाजल से स्नान कराकर, घृत पूर्ण ताँबे के कलश में रखकर, किसी सुयोग्य ब्राह्मण को दान करदे तथा अपनी

भृ० सं० ६३३

भा० टी०

श्रद्धानुसार गायत्री मन्त्र का जप करे तो पूर्वजन्मकृत पाप का प्रायश्चित्त हो जायेगा तथा ब्राह्मण के शाप से मुक्त होकर, इसे पुत्र-सुख की प्राप्ति होगी ।। इति शुभम् ।।

ॐ भृगु उवाच ।। शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्मकुण्डली ।। १ ।। वृषराशि स्थिते जीवे कर्के केतुर्यदा भवेत् । तुलाराशि गते शौरिः मकरे राहु तिष्ठति ।। २ ।। जन्माद्यम् वह्नि वर्षान्त मन्द भाग्यस्य चिन्तनः । दशमे त्वतिजा व्याधिर्दृश्यते दुर्बलो वपुः ।। ३ ।। चतुर्थान्नवमेब्देषु विद्यारम्भ भवेत्सुतः । पितुर्लब्धि महोत्साहो गृहे मंगलमेव च ।। ४ ।। विद्याबुद्धि भवेत्पुत्रः पारितो-

२ बृ. | १ | शु. बु. चं. १२ | ११
३ | सू. मं. | ४ के. | १० रा.
५ | ७ श. | ९
६ | ८

-षञ्च लभ्यते । नवमाब्दे च प्रारभ्य यावत्पंचदशास्मृता ।। ५ ।। क्षयविद्या न सन्देहो तृतीये लघु संभवः । प्राप्यते षोडशे वर्षे वह्नि नेत्र गतेऽपि वा ।। ६ ।। अकस्माद्भुजमे कञ्ज धातुक्षीण न संशयः । विवाहादि महोत्साहो गृहे मंगल मेव च ।। संभोगे न च तिष्ठन्ति धार्याद्दमपि भो सुतः । पत्नी न तृप्यतां याति लज्जा भवति निश्चितम् ।। ७-८ ।। वेद युग्म गते वर्षे वह्नि रामाब्दगेऽपि वा । सुतयोग विजानीयात् तथा गर्भ प्रपातनं ।। ९ ।। पंचमेश ग्रहं पूज्य तथा गोदान कारयेत् । राजद्वा-रेति मानञ्च कार्यसिद्धि भवेद्ध्रुवम् ।। १० ।। शत्रुमेक समुत्पन्नः सहकार्ये न संशयः । नवबाल भवेत्प्रीतिः स्वकुले परकुलेऽथवा ।। ११ ।। वेद वह्नि गते वर्षे शर वेदाब्दगेऽपि वा । वृद्ध मृत्यु भवेद्गेहे बहु द्रव्य व्ययं भवेत् ।। १२ ।। गुप्तचिन्ता हृदे व्याप्ता न कस्यापि प्रकाशितः । पूर्व यात्रा भवेत् तत्र गुप्तचिन्ता प्रणश्यति ।। १३ ।। कार्यमेकं भवेत्पुत्रः मान कीर्ति प्रवर्द्धनम् । महोत्साहो भवेद्गेहे बहुलाभ दिने दिने ।। १४ ।। रुद्र वेद गते वर्षे शरबाण गतेऽपि वा । सुतापुत्रसमा-

पुक्तो भविष्यति न संशय: ॥२५॥ सुत कष्ट विजानीयात् अल्प तुल्य न संशय: । साधु वृत्ति रत: चिन्ता कफ वातेन पीड़िता ॥२६॥ धर्म कर्म समायुक्त मासि मासि गवादेत्। सुतपुत्री विवाहे च कामिनी सुखमेव च ॥२७॥ बहु द्रव्य व्ययं ज्ञेयं यथा लाभ तथा व्ययम्। रसवाण गतेब्दे तु वह्नि षष्ठ गतेऽपि वा ॥२८॥ तीर्थ यात्रा भवेत् पुत्र दान पुण्य महोत्सवम्। कान्तावाक्यानुगामी च कान्तापि भाग्यशालिनी ॥२९॥ पति प्रेमरता सा च पतिवर्द्धन तत्परा। वेद ब्राह्मण भक्तश्च भूमि द्वारा धनागमम् ॥२०॥ वेद षष्ट गते वर्षे नाग षष्ठ गतेऽपि वा। पौत्र जन्म भवेद्गेहे गृहे मंग-ल गायनम् ॥२१॥ सर्वसम्पत्सुवृद्धिश्च नान्यथा वचनं मम। कन्यादानेन बहुद्रव्यं दीयते नात्र संशय: ॥२२॥ अस्य कार्यस्य संसारे देशे कीर्ति भविष्यति। धर्म कार्य प्रवृत्तिस्याद्धर्म गाथा दिवानिशि ॥२३॥ नन्दषट्त्र्यब्द मायुष्यं वैशाखे शुक्ल पक्षयो। चतुर्दशी अर्क वारे स्वर्गलोकं च गच्छति ॥२४॥ पुनर्द्विजकुले जन्म सम्भवो चाग्र जन्मनि। सर्व सौख्याधिकारी च सुपुण्यात् लभते पदम् ॥२५॥ कारुण्य युक्ता स च देवभक्तो लोके प्रसिद्ध: पुरुषोत्तमाख्य: । निवर्ति तर्कै: परिसेव्यमान शास्त्रस्य वार्ता प्रति वासरेषु ॥२६॥ दत्तं च दानं बहु भूमि रत्नं तथा ऽश्वधेनुं प्रतिपूर्णिमायाम्। चान्द्रायणे बाधित कन्द भोजी द्विजार्चनं सम्यक् तत्र वास: ॥२७॥ समध्य देशे व्यवसच्च नूनं क्षात्रं क्रिया साधन तत्परश्च ॥२८॥ एकस्मिन्दिवसे विप्र राजदोषे-ण वै तदा। साध्वी च स्त्री गुणातीत तस्यै दण्ड: प्रदत्तवान् ॥२९॥ एवं स्वल्प तिथे काले बाहुजो मृत्युमाप्नुयात्। पुत्ररागत्य मेदिन्यां पाप पुण्य फलं शृणु ॥३०॥ विनष्य-ति जात पुत्रो दद्रु कुष्ट समन्वित: ॥ शुक्रो वाच ॥ केनोपायेन भो तात पुत्र सुख भविष्यति ॥३१॥ ... स्वर्णपल ... रक्त चंदन मिश्रितम्। कान्तामूर्ति लिखेत ... गाय-

त्री मन्त्र जापकम् ॥ ३२॥ पूर्णमास्याञ्च संकल्प्य ब्राह्मणेन ददेत्सुधी। पुत्र पौत्र सुखं लोके भवि-ष्यति न संशयः ॥३३॥ इति॥

भावार्थः भृगुजी ने कहा – हे पुत्र! अब इस जातक की जन्मकुण्डली का फलादेश सुनो। जिस जातक के जन्म के समय वृष राशि में गुरु, कर्क में केतु, तुला में शनि तथा मकर राशि में राहु हों, वह जन्म से ३ वर्ष की आयुतक मन्दभागी रहता है। दंत-पीड़ा तथा शरीर दुर्बल हो। ४ से ८ वर्ष की आयु में विद्यारम्भ हो, पिता को लाभ हो, घर में मंगलोत्सव हों तथा पारितोषक प्राप्त हो। ८ से १५ वर्ष की आयु में दो विद्याऐं प्राप्त हों, तीसरी विद्या कुछ कम रहेगी। १६ से २३ वर्ष की आयु में अचानक ही एक रोग हो। धातु क्षीणता हो। विवाह हो, घर में मंगलाचार हों, परन्तु मैथुन के समय एक घड़ी का भी स्तंभन न हो, जिसके कारण पत्नी अतृप्त रहे और स्वयं लज्जा का अनुभव हो। २४ से ३३ वर्ष की आयु में पुत्र हो अथवा गर्भपात हो। पंचमेश ग्रह का पूजन तथा दान करने से मनोकामना पूर्ण हो तथा सन्तान-सुख प्राप्त हो। राजद्वार में सम्मान बढ़े। कार्य सिद्ध हो। अपना ही एक सहकारी व्यक्ति शत्रु बन जाय। किसी अपने अथवा पराये कुल की नवयौवना स्त्री से प्रेम हो। ३४ से ४५ वर्ष की आयु में घर में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। हृदय में गुप्तचिन्ता रहे, जिसे किसी के सम्मुख प्रकट न कर सके। फिर पूर्व दिशा की यात्रा हो तथा गुप्त-चिन्ता दूर हो। हे पुत्र! एक विशेष काम पूरा हो तथा कीर्ति बढ़े। घर में नित्य उत्सव मंगल हों। ४६ से ५५ वर्ष की आयु तक कन्या तथा पुत्र से युक्त हो। पुत्र को अल्प मृत्यु जैसा कष्ट हो। साधु जैसी वृत्ति बने। कफ-वात की

पीड़ा हो। धर्म-कर्म करे। प्रतिमास गोदान आदि करे। पुत्र-पुत्री के विवाह में धन खर्च हो। आमदनी के अनुसार व्यय रहे। ५६ से ६३ वर्ष की आयु में तीर्थ-यात्रा एवं दान-पुण्य करे। स्त्री की बात मानने वाला हो तथा स्त्री भी भाग्यशालिनी, पति से प्रेम रखने वाली तथा धर्मात्मा हो। देवता तथा ब्राह्मणों में भक्ति हो। भूमि द्वारा धन का लाभ हो। ६४ से ६८ वर्ष की आयु में पौत्र-जन्म हो। मंगलगान हों, सब प्रकार की सम्पत्ति बढ़े। कन्यादान करे तथा उसमें धन खर्च करे। धर्म में प्रवृत्ति हो। ६९ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को महा यात्रा करे। फिर श्रेष्ठ ब्राह्मणकुल में जन्म ले, सब सुखों को भोगे तथा सुन्दर पुण्य के प्रभाव से परम-पद प्राप्त करे। हे पुत्र! वर्तमान जन्म में यह जातक सुपात्र, देवभक्त संसार में प्रसिद्ध, उत्तम पुरुषों द्वारा सेवित तथा शास्त्र चर्चा करने वाला होगा। पूर्वजन्म में यह मध्यप्रदेश में निवास करने वाला ब्राह्मण था। यह प्रत्येक पूर्णमासी को भूमि, अन्न, रत्न, अश्व, गो आदि का दान करता था, महाधनी था तथा क्रिया-साधन में सचेष्ट बना रहता था। एक बार उस ब्राह्मण को कोई राजदोष लगा। उस आवेश के कारण इसने अपनी पतिव्रता पत्नी को लाठी से मारा। कुछ समय बाद इसकी भी मृत्यु होगई। फिर इसने दूसरा जन्म लिया है। यह बुद्धिमान, गौरवर्ण, यशस्वी तथा प्रेमी स्वभाव का होगा परन्तु इसके पुत्र दाद, कुष्ठ आदि रोगों के शिकार बन कर मृत्यु को प्राप्त होंगे। यह सुनकर शुक्र ने पूछा - हे पिता! किस उपाय से इसे पुत्र-सुख प्राप्त हो सकता है? भृगुजी बोले- पांच पल भारी स्वर्णपत्र पर लाल चंदन से स्त्री का चित्र बना कर, यथानुसार गायत्री मन्त्र का जप कराये फिर पूर्णमासी के दिन किसी बुद्धिमान ब्राह्मण

को उसे दान करदे तो इससे पुत्र-पौत्र का सुख प्राप्त होगा - इसमें सन्देह नहीं है।। इति शुभम्।।

ॐ भृगु उवाच ।। जन्माङ्कस्य फलादेशं शृणु पुत्र वदाम्यहम् ।। कर्क राशि स्थिते केतु मिथुने जीव यदा भवेत्। तुलाराशि गते शौरि: मकरे राहु तिष्ठति ।। प्रथमे च द्वितीयेब्दे गृहे मंगल मोदिता। ज्वरो विरेचनं पीडा: दशनोत्थितजारुजाम् ।। १-३ ।। मातृदुग्धं न लभ्यते कदाचिद् विह्वलो शिशु। बालवृद्धि भवेन्नित्यं हृष्ट हास्य मनोहरा ।। ४ ।। प्राप्यते वह्नि गे वर्षे वेद नन्दाब्दगेऽपि वा। विद्यारंभकृतो बाल: मोदते बहु विस्तरात् ।। ५ ।। चञ्चलश्चपलो बाल: शिशूणां रमते मुदा,

६ बु.	५	के. शु. ४	३
७ श.	सू. मं.		वृ.
८ चं.		२	
९	११		१
१० रा.		१२	

मङ्गलं विविधोत्साहो सुखस्तत्र प्रवर्तते ।। ६ ।। दिक् वर्षान्तरे काव्य यथा पंचदशोऽपि वा। लिप्य लेखन कार्येषु विद्याभ्यास सुख प्रदा: ।। ७ ।। महर्घ भूषणो वस्त्रं प्राप्यते मान वर्द्धन:। रसचन्द्रमिते वर्षे बाणकुम्भ गतोऽपि वा ।। ८ ।। द्रव्य लाभ विशेषेण प्राप्नोति तादृशी भवेत्। प्रशंसा यादृशी लोके कोशे वित्तं न तादृशा: ।। ९ ।। उद्वाहादि महोत्साहो पत्नी प्राप्ति मनोहरा। भोगा प्र वैभवो नित्यं वर्द्धते नात्र संशय: ।। १० ।। धन धान्य समृद्धिश्च सुता पुत्र विवर्धनम्। नाना कार्य प्रवर्त्तैश्च राजेत पुण्य सम्पदा ।। ११ ।। ऋतु नेत्र गते वर्षे वेद वह्नि गतोऽपि वा। विद्या बुद्धि विशेषेण गणितज्ञो विशेषत: ।। १२ ।। राजद्वारे परीक्षा च मानवृद्धिश्च जायते। पत्नी पीड़ा विजानीयात् रोगं भवति निष्ठुर: ।। १३ ।। धनधान्य समृद्धिश्च दासीदासेन सेविता। भार्यागर्भान्वितो भूयात् पुत्ररत्नम जायते ।। १४ ।। बाण राम गते वर्षे वह्नि वेदाब्दगेऽपि वा। शत्रुमेक समुत्पन्न: स्वकुले पर कुलेऽथवा ।। १५ ।। कोऽपि स्त्री प्रीति [illegible] सुन्दरी च मृगाक्षिणी। मिष्टभाषी [illegible] च चपलश्च मनोहरा ।। १६ ।।

भृ० सं० ३३३

तच्चेष्टा हृदये व्याप्ता दिवारात्रौ न संशयः। राजद्वारे धनादिश्च तथा भूमि सकाशतः ॥१७॥ वेद वेदाब्दगे वर्षे रसवाणाब्दगे ऽपि वा। वृद्ध मृत्यु कुटुम्बेन तस्मिन् व्यय महद्भवेत् ॥१८॥ ज्ञाति बन्धु समागम्य लब्धु दीर्घ प्रतिष्ठितः। पत्नी कष्ट विजानीयात् चण्डयानुष्ठान कारयेत् ॥१९॥ नाना भोगरतः पुन्सः नाना द्रव्य समाकुलः। राज्यकार्य भवेद्यात्रा सेवकैर्वाहनैः सह ॥२०॥ तत्रापि धन लब्धिं च मान कीर्ति प्रवर्धनः। ऋषिवाण गते वर्षे वह्नि जलधिगते ऽपि वा ॥२१॥ नाना रत्नञ्च वस्त्रं च धान वृद्धि न संशयः। गुप्त द्रव्य लभेद्दीर्घः मनेच्छा पूर्णिता महान् ॥२२॥ सर्व सौख्य समृद्धिश्च नारीभोगाय संयुतः। भाग्यवृद्धि न सन्देहो मित्राणां सुख सम्भवः ॥२३॥ वेद षण्गते वर्षे चन्द्र सप्तगतेऽपि वा। भूमि प्राप्ति विशेषेण मनेच्छा सर्व पूर्जिता ॥२४॥ स्वेष्ट देवं परं पूज्य ज्ञानध्याने सुतत्परा। कार्य भारं परित्यज्य भजनानन्द सर्वदा ॥२५॥ नेत्र सप्ताब्दमायुष्यं मघानक्षत्रमागतः। गोभू सुवर्ण दानं च भूम्यासनलंकृतः ॥२६॥ सिंह राशि गते चन्द्रे तन्निर्याण न संशयः। पुनर्वैश्यकुले जन्म संभवो चाग्र जन्मनि ॥२७॥ सर्वसौख्याधिकारी च लभुण्याकरं पदम् ॥२८॥ पूर्वजन्मे भवेद् विप्रः वेद वेदाङ्ग पारगः। भुवनेश्वरी प्रभक्तश्च भजने हवने रतः॥ २९॥ नृपो वा नृप तुल्यो वा याजते गृह मन्त्रिणा। गुप्त रोगं भवेदंगे येन नारी न तृप्यति ॥३०॥ शिवशंकर ध्याते ऽयं रोगमुक्ति तदा भवेत्। न कश्चिद् क्षिपते पापः सत्य सत्य वचं मम ॥३१॥ इति

भावार्थः भृगुजी ने कहा— हे शुक्र! कर्क राशि में केतु, मिथुन में बृहस्पति, तुला में शनि तथा मकर राशि में राहु हो तो जातक के जन्म के पहले तथा दूसरे वर्ष में घर में आनन्द मंगल हों। कभी ज्वर, दस्त तथा दन्त-पीड़ा भी हो। माता के स्तनों में दूध न होने के कारण बालक विह्वल रहे। फिर क्रमशः शरीर की वृद्धि हो। मनोहर हास्य करता रहे। ३ से

भा० टी०

६ वर्ष की आयु में विद्यारंभ हो, चंचल स्वभाव हो, अन्य बालकों के साथ क्रीड़ामग्न रहे। अनेक प्रकार के सुखों तथा उत्साह की वृद्धि हो। १० से १५ वर्ष की आयु में पढ़ाई-लिखाई एवं सुख दायक विद्याओं के अभ्यास में मन लगे। आभूषण तथा वस्त्र मिलें। मान-वृद्धि हो। १६ से २५ वर्ष की आयु तक धन-लाभ हो तथा वैसा ही खर्च भी हो। जैसी प्रतिष्ठा हो अर्थात् लोग जितना धनी समझते हों, उतना धन न हो। विवाह हो, सुन्दर स्त्री की प्राप्ति हो। भोग तथा ऐश्वर्य बढ़ें, धन-धान्य की वृद्धि हो। पहले कन्या का जन्म हो, फिर पुत्र का जन्म हो। अनेक प्रकार के कार्यों का प्रबन्ध हो। पुण्य-प्रभाव से सम्पत्ति का लाभ हो। २६ से ३४ वर्ष की आयु तक विद्या-बुद्धि की विशेष वृद्धि हो। गणित शास्त्र का अच्छा ज्ञान प्राप्त हो। राजद्वार में परीक्षा हो तथा सम्मान बढ़े। स्त्री को पीड़ा तथा महाकष्ट हो, जो औषधोपचार एवं पुण्य-धर्म से दूर हो। धन-धान्य, दास-दासी की वृद्धि हो। फिर स्त्री गर्भवती हो तथा पुत्र का जन्म हो। ३५ से ४३ वर्ष की आयु में एक अपने ही कुल का अथवा पराये कुल का शत्रु उत्पन्न हो। साथ ही एक परस्त्री से प्रेम भी हो, जो कि सुन्दर, मृगनयनी, मधुरभाषिणी सुन्दर केशों वाली तथा मनोहर चेष्टाओं वाली हो। उसका ध्यान रात-दिन बना रहे। राजद्वार से धन मिले तथा भूमि का लाभ हो। ४४ से ५६ वर्ष की आयु में कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो, उसमें धन खर्च हो। स्वजाति बन्धुओं का आगमन हो। फिर स्त्री को कष्ट हो, जो भगवती के अनुष्ठान से दूर हो। अनेकों प्रकार के भोग प्राप्त हों। तत्पश्चात् राज-के कारण परदेश की यात्रा हो। वहाँ सेवक तथा सवारी सहित धन का लाभ हो। ५७ से ६३ वर्ष की आयु में अनेक प्रकार के वस्त्र, रत्न तथा धन का लाभ हो। गुप्त-

धन प्राप्त हो । इतना धन मिले कि धन की कामना ही तृप्त हो जाय । स्त्री के भाग्य से सभी सुख प्राप्त हों । मित्रों का सुख भी मिले । 68 से 71 वर्ष की आयु तक भूमि-लाभ हो तथा मन की सभी इच्छायें पूर्ण हों । इष्ट देव की पूजा में मन लगा रहे तथा ज्ञान-ध्यान की उन्नति हो । घर के काम-काजों से छुटकारा लेकर रात-दिन भजनानन्द में मगन बना रहे । 72 वर्ष की आयु में, मघा नक्षत्र में गौ, पृथ्वी तथा स्वर्ण का दान कर, पृथ्वी पर आसन लगा कर बैठ जाय तथा सिंह के चन्द्रमा में प्राण विसर्जन करे । इसके बाद अगला जन्म वैश्य कुल में हो । वहाँ सम्पूर्ण सुखों का उपभोग करे तथा अन्त में अपने सुपुण्यों के प्रभाव से परमपद को प्राप्त करे । हे शुक्र ! यह जीव पूर्व जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था । यह वेद-वेदाङ्ग का ज्ञाता तथा भुवनेश्वरी देवी का भक्त था । राजा अथवा राजा के समान धनी एवं सुखों का उपभोग करने वाला था । पूर्व जन्म के किसी अपराध के कारण इसके शरीर में कोई गुप्त रोग था, जिससे यह सहवास के समय अपनी पत्नी को सन्तुष्ट नहीं कर पाता था । तब इसने औषधोपचार किया तथा भगवती की आराधना के प्रभाव से इसका वह रोग दूर होगया । फिर यह आजीवन स्वस्थ रह कर सुखोपभोग करता रहा और अपने सद् कर्मों के प्रभाव से ही इसने वर्तमान योनि प्राप्त की है । इस जन्म में भी यह पुण्य कर्मों में लगा रहेगा, जिसके फलस्वरूप अगली बार उत्तम कुल में जन्म लेकर सुखोपभोग करेगा तथा अन्त में परम पद को प्राप्त होगा ॥ इति शुभम् ॥

भृ० सं० २००२

भा० टी०

ॐ भृगु उवाच ॥ अस्य जातः फलादेशं शृणु पुत्र वदाम्यहम् ॥ मकरे च स्थिते राहु
तुला राशि गते शनौ । कर्के केतु वृषे जीव वानरोयोग उच्यते ॥ १ ॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे बालवृद्धि
दिने दिने । दशनो त्वतिजा व्याधि पीड्यन्ते दुर्बलो वपुः ॥ २ ॥ वह्नि वर्षाच्च नन्दाब्दे बालक्रीड़ा दिने
दिने । विद्यारम्भ रतो हीनं मङ्गलाचार संभवः ॥ ३ ॥ नवाम्बरं भूषणञ्च प्राप्नोति शोभितो शिशुः ।
दिक् वर्षे गते काव्यः शशि युग्माब्दगेऽपि वा ॥ ४ ॥ विवाहो मंगले कार्यं अल्पायुर्प्राप्यते स्त्रियं ।
चन्द्रजीव भवेत् प्रीति आसक्तां चित्तनं सदा ॥ ५ ॥ कामक्रीड़ा सुखास्सर्वे भोग्यते बहुतत्परा ।

११ १० ९
मं. १२ शु.
सू. बु. रा.
१ बृ.
७ श.
८
२
४ के.
६
३
५ चं.

भाग्य वृद्धिर्नसन्देहो कष्ट पीड़ा विविल्लनम् ॥ ६ ॥ पुत्र जन्म महोत्साहो
सुपत्ने सुख वर्द्धनः । नेत्र युग्म गते वर्षे वह्नि रामाब्दगेऽपि वा ॥ ७ ॥
भाग्य वृद्धि भवेल्लोके सुखस्तत्र प्रवर्तते । चित्त चिन्ता वृहत्योपि दान
मन्त्रेण शान्तये ॥ ८ ॥ धन वृद्धिर्नसन्देहो व्यापारो लाभदो महत् ।
पुत्र सौख्य समृद्धिश्च सम्पदा संचयो महान् ॥ ९ ॥ वेद वह्नि गते
वर्षे राम वह्नि गतेऽपि वा । यद्रोगो जायते कष्टं सर्वं शान्ति सुपत्न-
तः ॥ १० ॥ नाना पुण्य रतो दीर्घ अनुजन्मस्य हेतवे । पुत्र कन्या विवाह
च धन व्ययं न संशयः ॥ ११ ॥ प्रतिष्ठा यादृशी लोके कोषे वित्तं न तादृशः । चन्द्रजीवयं
प्रीतिः गुप्त प्राप्तिश्च दृश्यते ॥ १२ ॥ शतार्द्ध वत्सरो मध्ये पुत्र भाग्योदयं महत् । सम्पदा
संचयो नित्यमारामे प्रीति वर्द्धनः ॥ १३ ॥ पूर्व पत्न कृते शुक्रः सर्व साफल्य वैभवा । ग्राम
लाभ सुखास्सर्वे भू गृह वाहनादिकम् ॥ १४ ॥ चन्द्र बाण गते वर्षे नेत्र पञ्चाब्दगेऽपि
वा । प्रसिद्धो भूमि भागे च तेजस्वी दीर्घजीविनः ॥ १५ ॥ धर्म मार्गे व्ययो सौख्यं

आरामे कूप मन्दिरे। राजद्वारे जपं प्राप्य विलीयंते च राजव:॥ २६॥ कफवातोद्भवो कष्टं पुन: शान्ति सुखप्रदा। सर्वारिष्ट हरं पुण्यं तपतेजो वलीयसी॥२७॥ जायते विविधं सौख्यं पुत्रपौत्र धनादि च। वह्नि षष्ठगते वर्षे व्योम सप्ताब्दगेऽपि वा॥ २८॥ दान मंत्र सुपुण्येन भाग्यवान धरातले। सर्व सौख्य समृद्धिश्च संपदा संचयो महान्॥२९॥ पुत्र पौत्र महाभागी कुलकीर्ति प्रशंसिता। चन्द्रसप्तमितमायु: प्राप्यते परमां गतिम्॥२०॥ आश्विनस्य तमो पक्षे निशायां निधनं भवेत्। पुन: पुण्याश्रयो भूप: भूमिपालक धार्मिक:॥२१॥ पूर्व पयस्विनी तीरे। चित्रनामं च ब्राह्मण:। सर्वसम्पद्युतो मानी बहुभार्यैश्च शोभित:॥२२॥ मन्त्रविद्या विवेकी च लोभात्कलुषित मानस:। धनं हृतं च शिष्यस्य न दत्तं मोह कारणात्॥२३॥ एवं निवसितस्तस्य बहु वर्षगताग. तै:। सविप्र: निधनं प्राप्य संसहायो द्विजोत्तम॥२४ शतजन्मान्तरे विप्र मनुष्यत्वं लभेत्ऽपुन:॥ शुक्रोवाच॥ केनो पायेन भो नाथ पूर्व पाप प्रमुच्यते॥२५॥ भृगु उवाच॥ यन्त्रं श्रीपद्मनाभस्य भूर्जपत्रं च लेखयेत्। रजतं द्विगुणं देयं वस्त्रमष्टोत्तरं शतं॥२६॥ नश्यन्ति व्याधय: सर्वे प्रायश्चित्त भवेद् ध्रुवम्। सर्वसौख्य मवाप्नोति सत्य सत्य वचं मम॥ २७॥इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। मकर राशि में राहु, तुलाराशि में शनि, कर्क राशि में केतु तथा वृष राशि में बृहस्पति हो तो 'वानर योग' होता है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक को अपनी आयु के पहले दो वर्षों में दाँतों की पीड़ा तथा शारीरिक दुर्बलता होती है। ३ से ९ वर्ष की आयुतक बाल-क्रीड़ा, विद्यारम्भ, नवीन वस्त्राभूषणों की प्राप्ति हो तथा घर में मङ्गलाचार हों। १० से

सं० १००४

२१ वर्ष की अवधिमें विवाह हो, विद्याध्ययन हो, अल्पायु (छोटी) स्त्री की प्राप्ति हो। एक जीव से विशेष प्रेम हो तथा रात-दिन उसी के ध्यान एवं चिन्तन में निमग्न रहे। काम-क्रीड़ा तथा सब प्रकार के सुख-भोग प्राप्त हों। भाग्य वृद्धि हो। इसी अवधिमें कुछ शारीरिक -पीड़ा भी हो। पुत्र का जन्म हो तथा सुयत्न से सुख बढ़ें। २२ से ३३ वर्ष की आयु में भाग्य वृद्धि हो, सुख मिले। चित्त को कुछ चिन्ता भी हो जो मन्त्र-जप एवं दान से शान्त हो। धन वृद्धि हो, व्यवसाय में लाभ हो। पुत्र का सुख हो। सम्पत्ति का संचय हो। ३४ से ४३ वर्ष तक जो रोग हों, वे सुयत्न से शान्त हों। दान-पुण्य में चित्त लगे। पुत्र अथवा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। जैसी लोक में प्रतिष्ठा हो, वैसा धन न हो। एक जीव से गुप्त-प्रेम बना रहे। ५० वर्ष की आयु में पुत्र का भाग्योदय हो। सम्पत्ति प्राप्त हो। बगीचों से प्रेम रहे। पूर्वजन्मकृत पाप का प्रायश्चित्त कर देने पर समस्त वैभव सफल हो। ग्राम-लाभ हो। सभी सुख मिलें। भूमि, मकान तथा सवारी का सुख प्राप्त हो। ५१ से ६२ वर्ष की आयु तक भूमण्डल में कीर्ति बढ़े, तेज की वृद्धि हो। धर्म-मार्ग में धन खर्च हो। राजद्वार में विजय प्राप्त हो। शत्रु अधोगति प्राप्त करें। फिर कफ-वात जनित कष्ट हो। फिर सुख और शान्ति मिले तथा सभी अरिष्ट दूर हों। तप एवं तेज की वृद्धि हो। अनेक प्रकार के सुख मिलें, ६३ से ७० वर्ष की आयु तक दान, मन्त्र एवं सुपुण्य के धरातल पर सौभाग्यशाली बने। सब सुखों की वृद्धि हो। पुत्र-पौत्र का लाभ हो। कुल की कीर्ति बढ़े। ७१ वर्ष की आयु में परमगति प्राप्त हो। आश्विन कृष्णपक्ष की रात्रि में निधन हो। फिर पुण्य के आश्रय से अगले जन्म में भूमिपालक राजा हो। हे गुरु! पूर्व जन्म में यह जीव तपस्विनी के

भा० टी०

भृ० सं० १००५

भा० टी०

तट पर ब्राह्मण वंश में जन्मा था। इसका नाम 'चित्र' था। यह समस्त सम्पत्तियों से युक्त तथा शास्त्रों में निष्णात था। मंत्र विद्या का जानकार था। इसने लोभ के वशीभूत होकर अपने शिष्य का धन हरण कर लिया। इस पाप के कारण मृत्यु के बाद सौ जन्मों तक यह विभिन्न योनियों में भटकता रहा और अब मनुष्य योनि में आया है। शुक्र ने पूछा- किस उपाय से इसके पाप का प्रायश्चित्त होगा? भृगुजी बोले- भोजपत्र पर श्रीपद्मनाभ यन्त्र लिखकर, उससे दोगुनी चाँदी तथा १०८ वस्त्र ब्राह्मण को दक्षिणा सहित दान करें तो सभी व्याधियाँ नष्ट होंगी॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच। शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्म कुण्डली॥१॥

6 | 5 | के.मं.शु. 4 | 3 वृ. | 7 श. | सू.बु. | 8 | 2 चं. | 9 | 11 रा. | 1 | 10 | 12

तुला राशि गते शौरिः मिथुने च बृहस्पतिः। कुंभराशि स्थिते राहु कर्के केतु यदा भवेत्॥२॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे वह्नि वर्षे चतुर्थके। मातृकष्टं विजानीयात् तात लाभं सुख प्रदा॥३॥ बाण संवत्सरे जातं तथाब्देषु दिगन्तरे। विद्यारम्भ महोत्साहो शिशु क्रीड़ा विमोहितं॥४॥ प्राप्ते चैकादश वर्षे वेदविंशगतेऽपि वा। पत्नी योग विजानीयात् मंगलाचार हर्षितः॥५॥ भयं कष्टमुपस्थत्य सर्वशान्ति सुयत्नतः। बारविंशगते वर्षे बाणत्रिंशगतेऽपि वा॥६॥ भोगं च महतो भूपात् धनमैश्वर्य वर्द्धनं। प्रजासुभोगवृद्धिश्च पुत्र कन्या समायुतं॥७॥ व्यापारो लाभदं नित्यं प्रकाशो विपणी भवः। भूमि लाभ विशेषेण पूर्व यात्रा सुखप्रदा॥८॥ षट्त्रिंशगते वर्षे नागवेदमितेऽपि वा। अयत्ने क्लेशितो नूनं नात्र किंचिद्विचारणम्॥९॥ पत्नी पुत्रात्मकष्टं च चिन्तयेद्बहु नित्यशः। नंदवेदमिते वर्षे शरबाणाब्दगे तथा॥१०॥ सर्वकार्येषु कुशलं साहसी च पराक्रमी। उद्वाहादि क्रियो नित्यं देवपुण्योत्सवे

तथा ॥ ११ ॥ षट्पञ्चाब्दमारभ्य वेद षष्टाब्द मध्यमा । निज कर्मानुसारेण लाभं च विविधो महान् ॥ १२ ॥ पत्नी देहे तु कष्टं वै व्याधि वृद्धि विचिन्तानं । शर षष्टमिते वर्षे पुनश्च महतो भयं ॥ १३ ॥ नाग षष्टाब्दमायुष्यं भाद्रे च निधनं भवेत् । सर्व पाप प्रमुच्येत अग्रजन्म भवेद् द्विज: ॥ १४ ॥ अस्मिन् योगे नरो जात: सपूर्वं ब्राह्मणोत्तमभूत् । धन धान्य समृद्धश्च शास्त्रवेत्ता जितेन्द्रिय: ॥ १५ ॥ गो मृता तस्य हस्तेन दैवयोगात्कथं च न । तेन पापेन मृत्वा सा गतश्च यम मन्दिरम् ॥ १६ ॥ नरका न्भुक्त्वा बहूनंब्दांश्चागतो धरणी तले । कैरच टुंट रुपेहि पापचिह्नं प्रदश्यते ॥ १७ ॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो । तुला राशि में शनि, मिथुन में बृहस्पति, कुंभ राशि में राहु तथा कर्क राशि में केतु हो तो जातक के जन्म से चार वर्ष तक माता को कष्ट एवं पिता को लाभ हो। ५ से १० वर्ष की आयु तक विद्या पढ़ना आरंभ करे । बालकों के साथ क्रीड़ा करे । ११ से २४ वर्ष की आयु में घर में आनन्द-मंगल हों तथा विवाह हो । किसी समय भय तथा कष्ट भी हो, जो सुयत्न से शान्त हो । २५ से ३५ वर्ष की आयु तक भाग्य एवं ऐश्वर्य की वृद्धि हो । पुत्र तथा कन्या का जन्म हो । व्यापार में लाभ हो । प्रताप बढ़े । भूमि लाभ हो तथा पूर्व दिशा की यात्रा सुखदायक रहे । ३६ से ४८ वर्ष की आयु में यदि यत्न न करे तो कष्ट प्राप्त हो । स्त्री, पुत्र तथा स्वयं को कष्ट हो । चिन्ता बनी रहे । ४९ से ५५ वर्ष की आयु में सब कामों में सफलता प्राप्त हो । साहस तथा पराक्रम की वृद्धि हो । विवाह, देवोत्सव एवं पुण्य कर्मों में धन खर्च हो । ५६ से ६४ वर्ष की आयु तक कर्मानुसार लाभ हो, स्त्री को बड़ा शारीरिक कष्ट हो और वह व्याधि अधिक बढ़े । ६५ वर्ष की आयु में भय हो तथा ६७ वर्ष की आयु में भाद्रपद मास में

निधन हो। फिर समस्त पापों से छूट कर, आगे ब्राह्मण कुल में जन्म ले। हे शुक्र! पूर्व जन्म में यह धन-धान्य से युक्त, शास्त्रज्ञ तथा जितेन्द्रिय ब्राह्मण था। दैवयोग से इसके हाथ से एक गाय की मृत्यु होगई। उस पाप के कारण यह यमलोक में गया। वहाँ बहुत समय बिताने के बाद अब वर्तमान मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ है। पूर्वकृत पाप के कारण इसके हाथ की एक रेखा टूटी हुई है [परन्तु अब यह पाप मुक्त हो चुका है, अतः इसका जीवन सुख पूर्वक बीतेगा] इति शुभम्।

भाव	ग्रह
५	मं. बु. चं. सू.
६	शु.
४	के. शु.
३	बृ.
७	
८	
२	
९	
११	
१	
१०	रा.
१२	

ॐ भृगु उवाच॥ अस्य जातस्य जन्माङ्कं फलादेशं शृणुं सुत॥१॥ मकरे तिष्ठते राहुः मिथुने च बृहस्पतिः। कर्के केतु भवेत् यस्य कन्यां शौरिः यदा भवेत्॥२॥ रोगार्तो प्रथमे वर्षे द्वितीये दंत पीडनम्। तृतीये वह्निभीतिस्तु उच्चस्थे पतितो ऽथवा॥३॥ व्रण वात विकारेण पीड़ितो चतुराब्दके। पंचमे षष्ठमे सप्ते व्याल वर्षे च नन्दके॥४॥ विद्याभ्यास समारम्भ क्रीडनेमति नित्यशः। तात लाभ व्ययं दीर्घ बालवृद्धि दिने दिने॥५॥ शून्य सोमगते वर्षे यावद्वेद निशाकरे। मङ्गलं जायते गेहो पत्नी योगं सुयत्नतः॥ प्राप्ते पञ्चदशे वर्षे वेद युग्म यथाक्रमात्। सर्व सौख्य समृद्धिश्च नारी भोगादि संयुतः॥६-७॥ पत्नी सौख्य विशेषेण मोदते नात्र संशयः। सुता पुत्र सुखं सर्वे राजते सर्व वैभवाः॥८॥ शरविंशतिके काव्यः राम रामान्तरो तथा। भाग्यवृद्धि विशेषेण राजद्वारे धनाप्तयः॥९॥ वेद त्रिंशगते वर्षे शरवेदाब्दगे तथा। नारी चिन्तान्वितो भूप न्यून कष्टं च शान्तये॥१०॥ भाग्यवृद्धि विशेषेण मित्राणां सुख संभवः। वाहनं दासजं सौख्यं दृश्यतेमानमुत्तमम्॥११॥ षट् वेदाब्दगे वर्षे नागवेदमिते ऽपि वा। अकस्मात्संभवं कष्टं भवेत्तो विचिन्तनम्॥

सप्तान्नं च तुला दानं छायापात्रं प्रदापयेत। एतद्दानोपचारेण सर्वकष्ट विनश्यति॥ १२-१३॥ नंद वेद मिते वर्षे शर वाणाब्दके तथा। पौत्र जन्म महोत्साहो मंगलं गान मंदिरे॥ १४॥ राजद्वारे जयं प्राप्य रिपवोपिक्षयं करः। बटवाणमिते वर्षे पञ्च वष्ट गतोऽपि वा॥ १५॥ भूमि प्राप्ति विशेषेण मनेच्छा सर्व पूजिता। तदान्ते संभवं कष्टं महादानेन शान्तये॥ १६॥ नागबष्ट मिते वर्षे निधनं तस्य जायते। सर्व पाप विमुच्यन्ते अग्र जन्म भवेद्विजः॥ १७॥ राजयोग सुखास्सर्वे प्राप्यते परमं पदम्॥ १८॥ पूर्वे अस्मिन् नरो जातः सर्व पूज्यो धनाधिपः। ब्राह्मण कोंकणे देशे शिव भक्ति परायणः॥ १९॥ एकस्मिन् समये विप्र गुरुस्तस्य समागतः। कृतवान्नादरं तस्य पापिष्टः पशु बुद्धिकः॥ २०॥ गुरुश्च एवं-विमुखो यातः शापं दत्वा सदारुणम्। आसप्त जन्म त्वं दुष्ट स्ववंश पतितो भव॥ २१॥ एवं-विमुखो यातः... पुनः स पंचितां प्राप्तो गतो हि यम शासनम्॥ २२॥ पुनर्जन्म पुनः हि-नवसत्तत्र बहु वर्ष गतागतं। पुनः स पंचितां प्राप्तो गतो हि यम शासनम्॥ २२॥ पुनर्जन्म पुनः मृत्युर्मृत्युर्जन्म पुनः पुनः। इदं तु सप्तमं जन्म पुत्र सौख्यो विवर्जितम्॥ २३॥ शुक्र उवाच॥ किं जाप्यं च किं दानं तत्सर्वं कथय: प्रभो॥ भृगु उवाच॥ स्वर्ण पत्र पलं पंच तन्मध्ये नव मण्डलं। ब्रह्म मूर्ति लिखेत्तत्र चन्दनेन प्रपूजयेत्॥ २४-२५॥ आचार्याय सुवर्णं च देयं संपूज्य गंधकैः। धनैश्वर्य सुतं सर्वं लभ्यते नात्र संशयः॥ २६॥ इति॥ एतद्दानो पचारेण पूर्व शापात् प्रमुच्यते।

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। मकर राशि में राहु, मिथुन में बृहस्पति, कर्क में केतु तथा कन्या राशि में शनि हो तो जातक अपनी आयु के प्रथम वर्ष में रोग-पीड़ित रहता है। दूसरे वर्ष में दन्त-पीड़ा होगी। तीसरे वर्ष में अग्नि से भय अथवा किसी ऊँचे स्थान से गिर कर चोट लगने का भय तथा चौथे वर्ष में व्रण अथवा वात-विकार से पीड़ित होगा। ५ से ६ वर्ष तक की आयु में विद्याभ्यास, क्रीड़ा में रुचि

पिता को लाभ तथा खर्च होगा एवं बालक की दिन-प्रतिदिन वृद्धि होगी। १० से १४ वर्ष की आयु में घर में विवाह आदि मंगल कार्य होंगे। १५ से २४ वर्ष की आयु में सब सुखों की प्राप्ति हो। स्त्री से विशेष सुख मिले। कन्या तथा पुत्र का सुख प्राप्त हो। २५ से ३३ वर्ष की आयु में भाग्य की विशेष वृद्धि हो तथा राजद्वार से धन का लाभ हो। ३४ से ४५ वर्ष की आयु में स्त्री को कुछ कष्ट हो, जो उचित उपचारों से दूर हो। शान्ति रहे। भाग्य-वृद्धि हो। मित्र का सुख मिले। सम्मान बढ़े। सेवक का सुख प्राप्त हो। ४६ से ४८ वर्ष की आयु में अकस्मात् कष्ट तथा भय हो। सप्त अन्न के दान तथा तुलादान से सब कष्ट दूर हों। ४९ से ५५ वर्ष तक पौत्र जन्म का उत्सव हो। राज्यद्वार से विजय मिले तथा शत्रुओं का क्षय हो। ५६ से ६५ वर्ष की आयु तक समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण हों। अन्त में, ६८ वर्ष की आयु में मृत्यु हो तथा सम्पूर्ण पापों से मुक्ति मिले। अगले जन्म में ब्राह्मण-कुल में उत्पन्न हो वहाँ राजसी सुख भोगने के उपरान्त परमपद प्राप्त करे। हे पुत्र! अब इसके पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनो। पूर्वजन्म में यह धन-धान्य से युक्त, शास्त्रज्ञ तथा जितेन्द्रिय ब्राह्मण था। एक बार जब यह शिवजी की पूजा कर रहा था, उसी समय इसके गुरु का वहाँ पहुँचना हुआ, परन्तु इसने उनका आदर नहीं किया। यह देख कर गुरु ने इसे शाप देते हुए कहा कि हे दुष्टबुद्धि! तुम्हे सात जन्मों तक पुत्र-सुख प्राप्त नहीं होगा। तत्पश्चात् यह बहुत दिनों तक जीवित रहने के बाद जब मृत्यु को प्राप्त हुआ तो यमलोक को गया। फिर बारम्बार जन्म लेकर पुत्र-सुख से हीन बना रहा। इस जन्म में भी यदि यह पूर्व पाप का प्रायश्चित न करेगा तो पुत्र-सुख नहीं पा सकेगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा— इसके प्रायश्चित्त का क्या उपाय है, वह बताइये।

भृगुजी बोले- हे शुक्र! पाँच पल स्वर्ण का पत्र तय्यार करवा के उसमें नव मण्डल बना कर ब्राह्मण की मूर्ति लिखकर पूजन करे, फिर उसे आचार्य को दान करदे तो यह पूर्व जन्म के गुरु-शाप से छूट कर पुत्र-सुख प्राप्त करेगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ भृगु उवाच ।। शृणु पुत्र फलादेशं तवाग्रे कथयाम्यहम् ।। कर्कराशि गते जीवे राहु युक्तो यदा भवेत् । मकर राशि गते केतु वृष राशि शनैश्चरः ।। आदि वर्षे द्वितीये च भूतच्छाया भयःप्रदा । वह्नि अष्टाब्द नन्दाब्दे विवाहारंभोऽथवा रुजम् ।। १-३ ।। शशिचन्द्राब्दगे वत्स युग्म नेत्र गतेऽपि वा । उद्वाहो जायते कष्टं कुल कीर्ति च वर्द्धयेत् ।। ४ ।। प्रजासु भोग वृद्धिश्च धन दारात्मजादयः । पत्नी भोग विलासी च भाग्योदय दिने दिने ।। ५ ।। वेदनेत्रमिते वर्षे वाण वह्नि मितेऽपि वा । सुतासुत सुखास्सर्वं सर्वत्र सुख सम्पदा ।। ६ ।। दम्पत्योरल्पजं कष्टं प्राप्यते च महद्भयं ।। ७ ।। ऋतु राम गते वर्षे नन्द वेदाब्दगेऽपि वा । व्यापारे च महल्लाभं दास वाहनजैः रपि ।। ८ ।। ईश्वराराधने प्रीति सर्वत्र विजय प्रदा । नाग वेद मिते वर्षे पावन्नेत्र रसाब्दके । ।। ९ ।। सर्वेच्छा सफली भूत्वा दासगेहादि वाहनम् ।। १० ।। विवाहो देव तीर्थे च पुण्यमां ग्यो भवेत् । वेद शास्त्र गते वर्षे पौत्र जन्म महोत्सवम् ।। वह्नि सप्ताब्द मायुष्यं पुनश्च निधनं वपु । अग्रजन्मे समुत्पन्नो द्विजगेहे सुकोविदः ।। सुप्रसिद्धं प्रशं सोऽपि पुण्येच्छा सर्वपूजितम् ।। ११-१३ ।। आसीज्जन्मा नरे चैव ब्रह्मदण्डी विशारदः सारस्वत इति ख्याते [illegible]

१ | १२ सू. बु. | ११ शु.
श. चं. २ | के. १०
मं. ३ | ९
रा. गु. ४ | ८
५ | ६ | ७

भूपास्तेन नमस्कृत: ॥ २५॥ द्रव्य सम्पादनं कृत्वा भूमौ निक्षिप्तवान् तथा। आयुष्यं च समाप्तिं सौ
गतप्राण भवेत् तदा ॥२६॥ पापात्पाप फलं भुक्त्वा योनि भुक्त्वा कष्टं च न। पुनरागत्य भुवने
पूर्व पुण्य प्रभावत: ॥२७॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। कर्क राशि में
राहु और बृहस्पति, मकर राशि में केतु तथा वृषराशि में शनैश्चर की स्थिति का यह
प्रभाव है कि यह जातक अपने जीवन के पहले तथा दूसरे वर्ष में भूत की बाधा से भयभीत
रहेगा। ३ से ९ वर्ष की आयु में विद्याध्ययन करेगा तथा बीमार भी होगा। ११ से २२ वर्ष की
आयु में कुछ कष्ट हो, विवाह हो, कुल की कीर्ति बढ़े, यत्र तत्र प्रशंसा हो तथा धन, स्त्री,
आत्मज एवं भोग-विलास का सुख प्राप्त हो। दिन-प्रतिदिन भाग्यवृद्धि हो। २४ से ३५ वर्ष
तक की आयु में पुत्र का सुख तथा सम्पत्ति का सुख मिले, परन्तु स्त्री को गर्भपात का
महाकष्ट तथा भय हो। ३६ से ४७ वर्ष की आयु तक नौकर, सवारी का सुख तथा व्यवसाय
में लाभ प्राप्त हो। ईश्वराराधन में प्रीति हो। सर्वत्र विजय हो। ४८ से ६२ वर्ष की आयु में
सभी इच्छायें पूर्ण हों। कुल में विवाह हो। देव-दर्शन, तीर्थ-यात्रा एवं पुण्य कार्य में धन खर्च
हो। ६३ से ७२ वर्ष की आयु में पौत्र-जन्म हो तथा सभी सुख प्राप्त हों। ७३ वर्ष की आयु में
मृत्यु हो। अगली बार ब्राह्मण कुल में जन्म ले, वहाँ प्रसिद्ध, यशस्वी तथा पूर्ण मनोरथ हो। हे पुत्र!
यह जातक पिछले जन्म में सरस्वती नदी के तट पर निवास करने वाला सारस्वत नाम से प्रसिद्ध
दण्डी सन्यासी था। यह शिवजी का आराधन करता रहता था। इसने अपने बहुत से शिष्य
बनाये तथा उनसे धन एकत्र कर, पृथ्वी में गाड़ता रहा। उस पाप के कारण जब इसकी मृत्यु

हुई तो यह यमलोक को गया। वहाँ अपने पापों का फल भोगने के बाद अनेक योनियों में जन्म लेकर, अब पूर्व पुण्य के प्रभावसे मनुष्य बन कर पृथ्वीतल पर आया है।। इति शुभम्।।

ॐ भृगु उवाच ।। अस्य जातस्य जन्माङ्ग फलादेश शृणु सुत: ।।१।। मीने जीव धने केतु: वृश्चिके च शनैश्चर:। मिथुने राहु तिष्ठन्ति बुधिमान् योग उच्यते ।।२।। प्रथमे द्वितिये वर्षे अङ्ग पीड़ा प्रजायते। तात लाभ न सन्देहो रमन्ते मोद नित्यश: ।।३।। तृतीयाब्दे दन्तपीड़ा तथा च व्रण पीडनं। पंच-मे सप्तमे वर्षे विद्यारंभ तथैव च ।।४।। अष्टमात् दिक् वर्षे च तातलाभ प्रदा दशा। त्रयोदशाष्टरुद्राब्दे विंश वर्षे च वर्द्धित: ।।५।। विवाहादि महोत्साहो पत्नी योगं सुयत्नत:। सुख सन्तान वृद्धिश्च पुनरंत्ये व्ययं महत् ।।६।। इन्दु नेत्र गते वर्षे युगने-त्राब्द मध्यगे। भाग्य वृद्धि विजानीयात् धनलाभ यश: प्रदा ।।७।। सुता सुत समायुक्तं दम्पत्यो मोदते सदा। वेद विंशे च त्रिंशाब्दे हर्षशोका-न्वितो गता ।।८।। नारी पुत्रात्मकं कष्टं अंजीतो नात्र संशय:। शशिवह्नि मिते वर्षे वेदवेदाब्दगे तथा ।।९।। अतिलाभ महत्सौख्यं प्राप्नुवंतौ सुभक्तित:। अन्योपाधिर्भवेत्तत्र राजद्वारे निवृत्तय: ।। शरवेदमिते वर्षे व्योमपञ्चाब्द मध्यमा। नाना कार्य महोत्साहो मासे वर्षे सुखं महत् ।। पत्नी कष्टान्वितो भूप कुक्षि पीड़ा भयप्रदा। आपत्तौ दारुणो कष्टं पुण्यात् शान्ति भवेत्तदा।। १०-१२।। शशिपंचगते वर्षे ऋतु बाणाब्दगे तथा। महोत्साहो गृहे तस्य पौत्र जन्म सुमङ्गलम् ।।१३।। नाना कार्य प्रबंधैश्च राजते सुख संपदा। उद्वाहो देव कार्यादि व्ययं कीर्ति महत्यश: ।।१४।। मुनि पंचगते वर्षे बाणषष्ट गतोऽपि वा। भूमि लाभ विशेषेण ग्राम रामादि वाहनं ।।१५।। साधुसेवा रतो दानी देव तीर्थेषु सेवनं। पुत्रपौत्र

८ श.	७	६	५
९ मं. के.		३ रा.	चं. ४
१०	१२ बृ.		२ शु.
	११	१ सू. बु.	

प्रपौत्रं च धन रत्नादि वेष्टितं ॥ १६॥ वेद सप्ताब्दमायुष्यं सत्य सत्य शृणु सुत। आश्विने कृष्ण पंचम्यां पञ्चतत्त्व विलीयते ॥ १७॥ जायते चोत्तमे वंशे पुण्यादग्र जन्मनि। मनेच्छा सर्व पूज्यन्ते नित्यं सौख्य समागमः ॥ १८॥ पूर्व जन्मे अयं जात मिथिलायां वसेत् सुखी। किंचिद् भूमिपतिस्तत्र योग्य दण्ड प्रतापवान् ॥ १९॥ विमोहेन तदा विप्रं कृतं कर्म जुगुप्सितम्। मार्गावरोधनं कृत्वा चौर कर्मणि तत्परा ॥ २०॥ परनिन्दाऽपवादश्च परहिंसा रतः सदा। एकस्मिन्समये विप्र साधवस्तत्रचागतः ॥ २१॥ साधूनां च प्रसङ्गेन कथां श्रुत्वा विशेषतः। पूर्व कर्म परित्यक्त सत्कर्म सु तपो रतः ॥ २२॥ गंगामध्ये मृतः सोऽपि गंधर्वनगरे गतः। गत वर्ष सहस्राणि पुनरागत्य भूतले ॥ २३॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो, मीन राशि में वृहस्पति, धनु राशि में केतु, वृश्चिक राशि में शनैश्चर तथा मिथुन राशि में राहु हो तो 'द्युतिमान योग' होता है। इस जातक को अपनी आयु के पहले तथा दूसरे वर्ष में अङ्ग पीड़ा होगी, पिता को लाभ होगा तथा नित्य मंगल होंगे। तीसरे वर्ष में दन्तपीड़ा तथा व्रण-पीड़ा होगी। ४ से ७ वर्ष में विद्यारंभ हो। ८ से १० वर्ष की आयु में पिता को लाभ हो। ११ से २० वर्ष की आयु में घर में आनन्द मंगल हों। विवाह हो, पत्नी-सुख मिले। अधिक खर्च हो। २१ से २३ वर्ष की आयु में भाग्य-वृद्धि हो। धन तथा यश का लाभ हो। कन्या, पुत्र तथा स्त्री का सुख मिले। २४ से ३० वर्ष की आयु में आनन्द हों। कभी थोड़ा दुःख भी हो। स्त्री और पुत्र को तथा स्वयं को भी कष्ट हो। ३१ से ४४ वर्ष की आयु तक विशेष लाभ हो। राजद्वार से सम्मानोपाधि प्राप्त हो। ४५ से ५० वर्ष की आयु में अनेक प्रकार के कार्य हों। घर में उत्साह रहे। नित्य सुयश प्राप्त हो। स्त्री को कुछ भयदायक पीड़ा हो। पुण्य से दारुण कष्ट

शान्त हो। ५१ से ५६ वर्ष की आयु में घर में महान् उत्सव हों। पौत्र का जन्म हो। कई काम बनें। राज्य से सम्पत्ति तथा सुख का लाभ हो। कुल में विवाह आदि हो। देव-कार्य में धन खर्च हो। ५७ से ६५ वर्ष की आयु में भूमि, भवन, बगीचा तथा वाहनादि का लाभ हो। साधु सेवा में चित्त लगे। तीर्थ में निवास हो। पुत्र, पौत्र, धन, रत्न आदि का सुख प्राप्त हो। ७४ वर्ष की आयु में पंचतत्त्व पृथक् हों अर्थात् मृत्यु प्राप्त करे। अपने पुण्य कर्मों के प्रभाव से अगले जन्म में उत्तम कुल को प्राप्त करे तथा वहाँ सुख का समागम रहे एवं मन की सभी इच्छाएँ पूर्ण हों। हे शुक्र! यह जीव अपने पूर्व जन्म में मिथिला नगर में उत्पन्न हुआ था। वहाँ यह भू-स्वामी तथा प्रतापी ब्राह्मण था, परन्तु मोहवश मार्ग में चलने वाले पथिकों को रोक कर उन्हें लूटने का काम किया करता था। चोरी, पर-निन्दा तथा हिंसा आदि पाप कर्म करने के कारण यह निन्दनीय बना। एक बार एक ज्ञानी साधु इसके पास आया। उसके सत्सङ्ग के कारण इसने अपने पाप कर्मों को त्याग दिया तथा पुण्य कर्म करने लगा। अन्त में, गंगा-तट पर इसकी मृत्यु हुई। मरणोपरान्त यह गंधर्व लोक में पहुँचा तथा वहाँ कुछ वर्षों तक निवास करने के उपरान्त अब भू-लोक में आया है [इस जन्म में पुण्य-कर्म करते रहने के कारण इसकी सभी कामनाएँ पूर्ण होंगी तथा सुख प्राप्त होगा]॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषां जन्म कुण्डली। त्रिजन्मस्य च वृत्तान्तं कथयामि त्वयां प्रति ॥ १॥ कर्कराशि गते राहु मकरे केतु संस्थित:। वृषे सूर्यसुत: दृष्ट्वा वृश्चिके च वृहस्पती ॥ २॥ गृहस्थिति भवेत्येषां दामिनी योग उच्यते। अस्य योग प्रभावेण जातकं सुखमाप्नुयात ॥ ३॥ जन्माद्यं वह्नि वर्षान्ते मध्यभाग्यस्य चिन्तनम्। दशनो त्वातिजा

व्याधि दृश्यते दुर्बलो वपु: ॥४॥ घुटिका सेवनं तत्र दान पुण्य सुखप्रदा । युग वर्ष गते शुक्र: तथा व्यालाब्द मध्यमा ॥५॥ बालश्च क्रीड़तो नित्यं गृहे शोक विवर्जित: । विद्यारम्भ कृतो बाल ; तात लाभ सुखप्रदा ॥६॥ चञ्चलश्चपलो बाल: दृष्टि हास्य मनोहरम् । नन्दाब्द नद चन्द्र च मातृ चिन्ताऽति पीडनम् ॥७॥ विवाहादि महोत्साहो मंगलं जायते गृहे । तात चिन्ता विशेषेण बाल वृद्धि दिने दिने ॥८॥ विंश वर्षाब्द गे वर्षे नाग युग्म गतोऽपि वा । विद्याप्राप्तिर्नदृश्यन्ते कार्यमात्रोऽपि न्यूनता ॥९॥ नव वस्त्र महर्घं च नव भूषण वाहनम् । सुता जन्म सुखं न्यूनं मातृप्राण हरी दशा ॥१०॥ छिभार्या योग संजात: श्रेष्ठ वंशोद्भवं भवेत् । नाना धन समागम्य नवनारि समागम: ॥११॥ नन्दयुग्म गते वर्षे नग राम गतेऽपि वा । राजद्वारे महत्मान्यम् विद्या वृद्धि दिने दिने ॥१२॥ स्वजने शत्रुतां याति दुर्जने मित्रता भवेत् । तत: सर्व सुखं प्राप्य चन्द्र वद्वर्द्धते सुधि: ॥१३॥ जन्मोत्सव मथोद्वाहम् भविष्यति न संशय: । नवनारि समागम्य गृहे मंगल गायनम् ॥१४॥ भूमि लाभमथो ग्राम भविष्यति न संशय: पुत्र जन्म भवेत्तस्याद्भुत दारात्मजा सुखम् ॥१५॥ नाग वह्नि मिते वर्षे नाग वेदाब्दगेऽपि वा । महैश्वर्य महोत्साहो धन धान्य समागम: ॥ ॥१६॥ शुभ कार्ये धनं धान्यं व्ययो याति न संशय: । पुत्र पुत्री विवाहे च विप्र कन्या तथैव च ॥१७॥ सदावर्त विशेषेण पुण्य तीर्थ न संशय: । धर्म मार्ग रत: पुंस: नान्यथा वचनं मम ॥ नाग वेद मिते वर्षे ऋतु बाण गतोऽपि वा । साधुरेक समागम्य वेद वेदाङ्ग पारग: ॥ तत्सत्सङ्गेऽति वारं च नित्य प्रीति प्रवर्तति: । कस्मिन् देशे भवेद्यात्रा स्वल्प दास समन्वित: ॥१८-२०॥ दैवयोगे भवेत्कष्टं वातशूल रुजेण पीडित: । गोदानं विप्र कर्तव्यं विष्णु पंजर पाठयेत् ॥२१॥ एतद्दान कृते सौख्यं सर्वो

चं. सू. ९	८ बृ.	७
बु. शु. के. १०		६
११		५ मं.
१२	२ श.	४ रा.
१		३

भृ० सं० १०४४

भा० टी०

रिष्ट निवारणम्। नगवाणगते वर्षे नाग बष्टाब्द गेऽपि वा ॥२२॥ कस्मिन्मन्त्र सदावर्त कस्मिन्वेद ध्वनि सुत:। कुमतित्व प्रजायन्ते धन व्ययं न संशय: ॥२३॥ कटु वाक्य वदेत्पुत्र: सर्वलज्जा प्रवर्जितम्। वृथा धन व्ययं याति पर नारि हिताय च ॥२४॥ नृपो ऽपि क्रोध संयुक्ता: दुष्टमित्र समावृत:। नन्दषष्ठ गते वर्षे युग्म सप्त गतोऽपि वा ॥२५॥ भगवद्भक्ति दानार्थं धन व्यय न संशय:। पुत्र पौत्र धनं धान्यं सर्वसम्पत्समन्वित: ॥२६॥ राजते इन्दुवद्भूमौ बहुदासेन सेवित:। साधु विप्र समावृत्य: धर्म गाथा प्रचारयेत ॥२७॥ वह्नि सप्ताब्द मायुष्यं अलिराशि गते रवि:। श्वास कासादि पीडन्तो पंचतत्व प्रथक् भवेत ॥२८॥ पुन: वैश्य कुले जन्म धनदारात्मजा सुखम्। श्रृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि पूर्व जन्मकथामिदम् ॥२९॥ विप्र जन्म भवेद् बाल: कृत नित्योचिता: क्रिया। सपाद लक्ष गायत्री जापहोम कृत स्तदा ॥३०॥ विप्रांश्च भोजनम् दानम् दत्वापि कृपयान्वित:। तस्य पत्नी विशालाक्षी सरोजवदना सती ॥३१॥ कुशला सर्व कार्येषु गृह धर्म परायणा:। एकस्मिन् दैवयोगेन चण्डिका पूजनम् कृतम् ॥३२॥ मुक्तकेशी शुभाचारा धौतवस्त्र समन्विता। एतत्स्वरूप सन्दृष्टा पतिकामातुरो भवेत ॥३३॥ आलिंगन तत: कृत्वा पूजा च व्रत विस्मृता। तेन कर्म विपाकेन उन्मतत्व प्रजायत: ॥३४॥ तस्य यत्न प्रवक्षामि एकाग्रेण श्रृणु: सुत:। पञ्च चन्द्र मिते गुञ्ची स्वर्णमादाय यत्नत: ॥३५॥ तस्य पत्र प्रकर्तव्यम् वर्तुलं अंगुलत्रयम्। तस्योपरि लिखेत्स्त्री च रोचनागरु कुङ्कुमै: ॥३६॥ चण्डिका मूर्ति संस्थाप्य वस्त्र रत्न संपुतै:। तस्य प्राण प्रतिष्ठा च षोडशोपचारकं कृतं ॥३७॥ अर्द्धरात्रौ ददेद्दानं ब्राह्मणं च सुभक्तित:। एतद्दानोपचारेण सुतदारा सुखं भवेत॥३८॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले— हे पुत्र! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। यह जातक अपनी आयु के पहले से तीसरे वर्ष तक मन्द भागी रहेगा। दन्त-पीड़ा तथा शारीरिक-दुर्बलता रहेगी। छोटी

आदि के सेवन तथा दान-पुण्य से सुख प्राप्त होगा। ४ से ८ वर्ष तक बालक्रीड़ाओं में रत रहेगा। घर में कोई शोक का कारण उपस्थित होगा। फिर विद्याध्ययन में रुचि तथा पिता को लाभ होगा। ९ से १९ वर्ष की आयु में माता को पीड़ा तथा चिन्ता, विवाहादि उत्सव, घर में मंगल-कार्य, पिता को चिन्ता आदि हों। २० से २८ वर्ष की आयु में विवाह, नूतन वस्त्राभूषण का सुख तथा वाहन सुख हो। विद्या-लाभ कम रहे। कन्या का जन्म हो तथा मां की मृत्यु होना संभव है। दो स्त्रियों का योग है। दोनों श्रेष्ठ वंश की हों। अनेक प्रकार से धन लाभ हो। २९ से ३७ वर्ष की आयु में राजद्वार से सम्मान-प्राप्ति, विद्या की वृद्धि तथा किसी अपने ही आद-मी से शत्रुता हो। दुर्जन से मित्रता हो। बाद में सुख मिले और श्रेष्ठ बुद्धि में वृद्धि हो। घर में किसी का जन्म और विवाहोत्सव हो। नवीन-स्त्री का समागम हो। भूमि अथवा ग्राम लाभ हो। फिर, पुत्र का जन्म हो एवं धन तथा स्त्री का सुख मिले। ३८ से ४७ वर्ष की आयु में धन-धान्य की वृद्धि हो। शुभ कार्यों में धन खर्च हो। पुत्र-पुत्री के विवाह, ब्राह्मण की कन्या के विवाह, तीर्थ-यात्रा, सदावर्त आदि पुण्य कार्यों में धन खर्च हो। ४८ से ५६ वर्ष की आयु में किसी वेद-वेदाङ्ग के ज्ञाता साधु की संगति हो। किसी देश की घोड़े से सेव-कों के साथ यात्रा भी हो। वात-पित्त का कष्ट हो। विष्णु सहस्रनाम के पाठ तथा ब्राह्मण को गोदान के प्रभाव से कष्ट दूर हो। ५७ से ६८ वर्ष की आयु में किसी मन्दिर में सदावर्त वितरण तथा वेद-पाठ कराये। पुत्र की कुमति से धन खर्च। कटु-वाक्य बोले। पर-स्त्री के लिए धन खर्च करे। राजा क्रुद्ध हो तथा किसी दुष्ट मित्र का समागम हो। ६९ से ७२ वर्ष की आयु में भगवद्भक्ति हो, दान-धर्म में धन खर्च हो। पुत्र-पौत्रादि का सुख प्राप्त हो। सेवकों से सेवित होकर इन्द्र तुल्य सुखोपभोग हो। साधु-ब्राह्मणों का समागम तथा धर्म-कथा का श्रवण-पाठ हो। ७३ वर्ष की आयु में वृश्चिक के स्पर्श से शरीर पंचत्व को प्राप्त हो। अगली बार वैश्य-कुल में जन्म लेकर धन, स्त्री, पुत्रादि का सुख भोगे।

हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह जीव ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था। यह शास्त्री, धर्मात्मा तथा विद्वान् था। इसने सवालक्ष गायत्री मंत्र का जप किया था। इसकी पत्नी परम सुन्दरी थी। एक बार उस धर्मपरायण ने चण्डिका पूजन किया। उस समय वह श्वेत वस्त्र एवं खुले केशों वाली जब पति के समक्ष पहुँची तो पति ने कामातुर होकर उसे आलिंगन बद्ध कर लिया तथा व्रत एवं पूजन को भूल गया। उस पाप के कारण यह उन्मत्त दशा को प्राप्त हुआ। उस पाप की प्रायश्चित्त करने हेतु इसे १५ रत्ती स्वर्ण का ३ अंगुल व्यास वाला पत्र बनवाकर, उस पर गोरोचन द्वारा स्त्री तथा चण्डिका देवी का चित्र अंकित कर, षोडशोपचार पूजन करके किसी ब्राह्मण को अर्द्धरात्रि के समय दान करना चाहिए। इसके प्रभाव से तुम्हें पुत्र तथा स्त्री का सुख प्राप्त होगा। ॥ इति शुभम् ॥

११ | १० | ९ श. | ८ | १२ के. | १ वृ. | ७ बु. | ४ मं. चं. | ६ रा. सू. | २ | ३ | ५ शु.

ॐ भृगु उवाच ॥ भृगु पुत्र फलादेशं यस्य जातस्य कुण्डलीम् ॥

मेषे जीव धने शौरिः कन्या राहु यदा भवेत् । मीन राशि स्थिते केतुः तदा सा वाजि योग मत ॥ आदि वर्षे ज्वरात्कष्टं द्वितीये दन्त पीडनम् । तृतीये वह्नि भीतिश्च ज्वर पीडा विरेचनम् ॥ १-३ ॥ वेद बाणश्च षष्टाब्दे बालवृद्धि यथाक्रमम् । धावनात्पादकष्टो ऽपि उच्चस्थे च पतत्पथः ॥ ४ ॥ अकस्माद्दारुणे कष्टं पुनरते सुमोदिता । लिप्य लेखन कार्येषु कुशलो ऽपि तदन्तरे ॥ ५ ॥ नगाब्दे विंश वर्षे च तयोर्मध्ये महत्सुखम् । विवाहादि महोत्साहो धन धान्य कार्य महत् ॥ ६ ॥ द्रव्य लाभ विशेषेण राजद्वारे प्रतिष्ठिता । शशि युग्म गते वर्षे शर वह्नि गतोऽपि वा ॥ ७ ॥ सुता पुत्र सुखं सर्वे भार्या च प्रियवादिनी । सिद्ध्यन्ति सर्व कार्याणि वृहल्लाभ प्रभावतः ॥ ८ ॥ शरीरे दारुणं कष्टम् निमग्नश्चिन्तनार्णवे । रस वह्नि गते वर्षे नग वेदाब्दगेऽपि च ॥ ९ ॥ भूमि प्राप्ति महद्दुःखं रचना गृह नूतनम् । लाभश्च विविधो कार्य धन

सम्पत्समृद्धिमान् ।।२०।। विवाहादि क्षयो दीर्घः कुल कीर्ति प्रकाशकः । पुत्रभाग्योदयं भूत्वा सकलं सर्व
वैभवाः ।।२१।। नाग वेद गते वर्षे शर वाणगतोऽपि वा । ईश्वराराधने प्रीति भजनानन्द सर्वदा ।।२६।।
पुण्य कर्मे सुखं नित्यमिति तत्त्व वचो मम ;। राजद्वारे जयं प्राप्य धन धान्य विवर्द्धनं ।।२७।। रस
वाण गतेब्देषु वह्नि षष्ठाब्दगेऽपि वा । मान कीर्ति विशेषेण व्यय लाभ महत्पपि ।।२८।। मङ्गलं जायते
गेहे मोदते च महोत्सवे । वेदषष्ठगेत वर्षे वह्नि सप्ताब्दगेऽपि वा ।।२९।। सर्वसौख्यान्वितो भूपं
ईश्वरे भक्ति तत्परः । वेद सप्ताब्दमायुष्यं श्रावणे निधनं भवेत् ।।२०।। अथाग्रे जन्मतो भूमौ द्विजवंश
प्रशंसितः । आसीज्जन्मान्तरे चैव वाराणस्यांच ब्राह्मणः ।।२१।। निमन्त्रित तदा पुत्र परिवारस्य पोषकः
। तस्य पत्नी महाभ्रष्टा गुप्ता पापमया करोत् ।।२२।। स विप्रा काम संयुक्ता परदाररतः सदा । एकस्मि-
न्दिवसे विप्र परदेश गतः सवै ।।२३।। तत्र दैवान्मृतः सोऽपि गतोऽसौ यमलोकके । नाना कर्मविपाक
पुत्र नाना नरकेषु संस्थिता ।।२४।। पश्चाच्च मानुषो जातः क्लमते सर्वदा तनुः । ताम्रपात्र पलान्विंश-
तन्मध्ये नव मण्डलम् ।।२५।। चन्दनेन प्रकर्तव्यम् तदग्रे कारयेज्जपम् । ततोदानं प्रकर्तव्यं पूर्व पापात्-
प्रमुच्यते ।।इति।।

भावार्थः भृगु जी ने कहा - हे पुत्र! अब इस जातक की जन्म कुण्डली का फलादेश
सुनो। यदि मेष राशि में गुरु, धनु में शनि, कन्या में राहु तथा मीन राशि में केतु हो तो वाजियोग
होता है। इस योग में जन्म लेने वाला जातक अपनी आयु के प्रथम वर्ष में ज्वर, द्वितीय में दन्त-
पीड़ा तथा तृतीय में अग्नि-भय, ज्वर तथा अतिसार रोग को भोगता है। ४ से ६ वर्ष की आयु में
क्रमशः शरीर-वृद्धि होती है। दौड़ने से पाँव में कष्ट होता है। किसी ऊँचे स्थान से गिरकर चोट
लगती है। आकस्मिक कष्ट [illegible]

विवाहादि मंगल कार्यों में धन खर्च हो, द्रव्य-लाभ हो, राजद्वार से प्रतिष्ठा मिले। २१ से ३५ वर्ष की आयु में पुत्र तथा कन्या का सुख मिले। पत्नी प्रियवादिनी हो। सभी कार्य सिद्ध हों। लाभ हो, प्रभाव बढ़े तथा शारीरिक-कष्ट एवं चिन्ता भी हो। ३६ से ४७ वर्ष की आयु में भूमि तथा धन का लाभ हो। नया मकान बने। अनेक लाभ हों, धन-सम्पत्ति की वृद्धि हो। कुटुम्ब में विवाहादि कार्यों में धन खर्च हो। कुल-कीर्ति का प्रकाश बढ़े। पुत्र का भाग्योदय हो। सब वैभव सफल हों। ४८ से ५५ वर्ष की आयु में ईश्वराराधन में मन लगे। पुण्य कार्यों से नित्य सुख प्राप्त हो। राजद्वार से विजय मिले, धन-धान्य की वृद्धि हो। ५६ से ६३ वर्ष तक मान, कीर्ति तथा लाभ की वृद्धि हो। व्यय भी हो। मंगल, उत्सव, आनन्द हो। ६४ से ७३ वर्ष की आयु तक सब प्रकार के सुख मिलें। ईश्वर भक्ति में तत्पर रहे। ७४ वर्ष की आयु हो। श्रावणमास में मृत्यु हो। अगली बार प्रतिष्ठित ब्राह्मण कुल में जन्म हो। हे शुक्र! यह जातक पूर्वजन्म में ब्राह्मण वंश में, काशी नगर में उत्पन्न हुआ था तथा शिव-निर्माल्य से अपना तथा अपने परिवार का भरण-पोषण करता रहता था। इसकी पत्नी महाभ्रष्टा तथा गुप्त रूप से पाप-कर्म करने वाली थी और यह स्वयं भी पर-स्त्रीगामी था। एक समय यह परदेश में गया। वहाँ इसकी मृत्यु हुई। तब यह यम लोक को प्राप्त हुआ। अनेक प्रकार के पापकर्मों में लिप्त रहने के कारण इसे अनेक नरकों में रह कर यातनाएं भोगनी पड़ी। तत्पश्चात् यह पुनः मनुष्य योनि में आया है। इसका शरीर कफ-रोग से ग्रस्त बना रहेगा। इसे अपने पूर्वजन्मकृत पापों से छुटकारा पाने के लिए ३० पल भारी तांबे के पात्र को लेकर, उसके मध्य में नवमण्डल का निर्माण करे। उसके सम्मुख बैठकर गायत्री मन्त्र का जप करे, फिर वह पात्र किसी ब्राह्मण को दान कर देना चाहिए।। इति शुभम्।।

ॐ भृगु उवाच ॥ मीनराशिगते राहु मकरे च बृहस्पतौ । कुंभे शौरिस्तथा केतौ कन्याराशि स्थितो भवेत् ॥ तदा च मल्लिका योगं भवत्येव न संशयः । अस्य जातस्य कुण्डल्यां फलादेश शृणु सुतः ॥१-२॥ प्रथमे क्षितिपे वर्षे वह्नि वर्षच्च पंचमे । दान मंत्र सुपुण्येन सर्वारिष्ट निवारणम् ॥३॥ ज्वर पीडा विनश्यन्ति दन्तबाधा च शान्तये । रसाब्दे द्वादशे वर्षे क्रीड़ने मति तत्परा ॥४॥ लेखनं पठनं चैव मातृकष्ट विशेषतः । विवाहो मंगलं कार्यं शुभकार्ये व्ययो महत् ॥५॥ रामचन्द्राब्दगे वर्षे व्योम नेत्र-ब्द मध्यगे । कामक्रीडा मनोद्वेगं नारीभोगेषु तत्परा ॥ अन्न सर्व सुखं ज्ञात्वा भाग्य वृद्धिश्च मध्यमा । संपदा संचयो दुर्घ धनी व्यापार कर्तृभिः ॥६-७॥ शशि नेत्र मिते वर्षे नागनेत्राब्दगे तथा । युग्म कन्या सुखं प्राप्य ईश्वरं भक्ति भावतः ॥८॥ कुलकीर्ति विशेषेण वृद्ध हस्तु भवेद् ध्रुवम् । द्रव्य प्राप्ति विशेषेण बहुानंद धरातले ॥९॥ नन्द युग्म गते वर्षे यावद्बाण गुणे ऽपि वा । मानतीयो प्रयत्नेन भृगुशास्त्र शृणोति वै ॥१०॥ तेन दान प्रदातव्यं पुत्रपुत्री सुखावह । पूर्व पापप्रमुच्येत पुनः शान्ति सुखप्रदा ॥११॥ धनदस्य महामन्त्रं जापितो वर्द्धते धनं । ऋतु वह्नि मिते वर्षे बाण वेदाब्द मध्यमा ॥१२॥ पुत्र पौत्र सुखं सर्वे दास वाहनजैरपि । पुण्य यात्रा रतो भूप तीर्थमन्दादि सेवनम् ॥१३॥ ईश्वराराधने प्रीति सुसंगानित्य संभवः । भूमिग्रामाधिकं प्राप्ति तेजस्वी सुप्रतिष्ठितम् ॥१४॥ संपदा संचयो नित्यं लाभो भवति गौरवः । धनधान्यानि वर्द्धन्ते प्रकाशो पुण्यजो महान् ॥१५॥ ऋतु वेद मिते वर्षे शरबाणाब्दगे तथा । भाग्ययोग स्तदा पूर्णं सर्वसंपत्स मृद्धिमान् ॥१६॥ अतः पर सुखं नित्यं यावत्शून्य रसाब्दके । इन्दु षष्ठगते वर्षे नागबाणगते ऽपि वा ॥१७॥ पुत्र पौत्र प्रपौत्रं च

(कुण्डली)
६ के.
५ बु.
४ सू.
३ गु
७
८ मं.
२
९
१
चं.
११ श.
१० बृ.
१२ रा.

वाग्धाप्रति सुपत्नत: । यथाकर्म वलीयंते तथैवो फलमाप्नुयात् ॥१८॥ दानपुण्यरतो दीर्घनिग्रजन्मस्य हेतवे । कर्माधीनं जगत्सर्वमितमे निश्चितं तत: ॥१९॥ नन्दषष्ठाब्दमायुष्यं आश्विने निधनं भवेत् । पुण्यात् द्विजकुले जन्म धनी धर्मी परंतप: ॥२०॥ पूर्वजन्मन्य सो वैश्यो गुर्जरेहितदावसन् । दामोदरेति विख्यातो सपत्नीक: सपुत्रक: ॥२१॥ शिवस्याराधने प्रीति: विरक्त: सत्यवागसौ । अहर्निशि जपान्कुर्वन् स्वेदवाग्रे स्थित: सदा ॥२२॥ ब्राह्मणेन महद्द्रव्यं तद्गृहे स्थापितं च यत् । न दत्तं तत्पुन स्तस्मै भुक्तं सर्वमशेषत: ॥२३॥ मृतो द्विजश्च तद्दुःखाद्धु काल गतागते: । पंचतत्व पृथक् वैश्यो भुक्त्वाच यम शासनम् ॥२४॥ पुत्र संतति हीनोऽत्र पूर्वपाप समन्वित: । निष्कृतिं परमां तस्य वक्ष्येऽहं पापनाशिनीम् ॥२५॥ पलमाने ब्रह्ममूर्ति: कार्यास्वर्णमयी शुभा । कदली पत्र संयुक्ता देयात् विप्राय धीमते ॥२६॥ एतद्दानोपचारेण पुत्र पौत्र समन्वित: । पापनाशकरा सर्वे भविष्यंत्यत्र जन्मनि ॥ भुक्त्वा पाप फलं पापात्पुण्यात्पुण्य फलं लभेत् ॥२७॥२८॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! यदि मीन राशि में राहु, मकर में बृहस्पति, कुंभमें शनि तथा कन्या राशि में केतु हो तो मल्लिका योग होता है। इस योग वाले जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो। यह जातक अपनी आयु के पहले वर्ष से पाँचवीं वर्ष तक ज्वर तथा दन्त-पीड़ा आदि का कष्ट भोगेगा, जो दान, मन्त्र एवं पुण्य कर्मों से दूर होगा। ६ से १२ वर्ष की आयु तो खेल में मन लगेगा। विद्यारंभ हो, माता को कष्ट हो तथा घर में मंगल कार्य हों, जिनमें पिता का धन खर्च हो। १३ से २० वर्ष की आयु में सब सुख मिले, भाग्य वृद्धि मध्यम हो, स्त्री-सुख प्राप्त हो। पूर्व सम्पत्ति का संचय तथा व्यवसाय में लाभ हो। २१ से २८ वर्ष की आयु में ईश्वर-भक्ति से व कलमों का सुख प्राप्त हो। कुल की कीर्ति बढ़े। घर में किसी एक व्यक्ति की मृत्यु

हो, धन तथा आनन्द का लाभ हो। २९ से ३५ वर्ष की आयु में भृगुशास्त्र दे, दान-पुण्य करे, पुत्रि-
यों का तथा पुत्रों का सुख प्राप्त हो तथा आनन्द की वृद्धि हो। पूर्वपाप से छूटे एवं कुबेर-मन्त्र
का जप करने से धन की वृद्धि हो। ३६ से ४५ वर्ष की आयु में पुत्र, पौत्र, दास एवं सवारी
का सुख प्राप्त हो। तीर्थयात्रा, मन्दिर सेवन, पुण्य कर्म, सत्संग एवं ईश्वराराधन में प्रीति हो।
भूमि अथवा ग्राम की प्राप्ति, प्रतिष्ठा की वृद्धि; सम्पत्ति एवं पुण्य की वृद्धि हो तथा तेजस्विता
बढ़े। ४६ से ५५ वर्ष तक पूर्णभाग्य-वृद्धि हो तथा समस्त सम्पत्तियां मिलें। ६० वर्ष की आयु
तक पूर्ण सुख भोगे। ६१ से ६८ वर्ष की आयु में पुत्र-पौत्र का सुख हो तथा मन की सभी
इच्छाएं पूर्ण हों। कर्मानुसार फल मिले। अगले जन्म के लिए दान-पुण्य करने में विशेष
रुचि हो। ६९ वर्ष की आयु में, आश्विन मास में निधन हो। पुण्य कर्मों के प्रभाव से
अगली बार ब्राह्मण कुल में जन्म ले और वहां धनी, तपस्वी तथा धर्मात्मा हो। हे पुत्र! यह
जातक पूर्वजन्म में गुर्जर देश में, ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था। तब इसका नाम दामोदर
था। इसकी स्त्री-पुत्र सहित शिवाराधन में प्रीति थी। यह सत्यवादी था तथा देवता के
समक्ष रात-दिन जप करता रहता था। एक बार एक ब्राह्मण ने इसके घर में अपना
बहुत सा धन अमानत के रूप में रखा, परन्तु वैश्य ने फिर वह धन ब्राह्मण को वापिस
नहीं किया। उसे स्वयं ही हड़प लिया, उस दुःख के कारण ब्राह्मण की मृत्यु हो गई। फिर
कुछ समय बाद जब वैश्य की भी मृत्यु हुई तो उसे यमलोक में जाना पड़ा और अब बहुत
समय बाद इसका वर्तमान जन्म हुआ है। पूर्वजन्म के पाप के कारण इसे सन्तान-सुख
विलम्ब से प्राप्त होगा, अतः मैं इसके लिए पाप-नाशक उपाय को कहता हूँ। यह एक

पल प्रमाण के स्वर्ण पत्र पर ब्राह्मण की मूर्ति अंकित कर, उसे केला के पत्र पर रखकर किसी ब्राह्मण को दान करे तो उस दान के प्रभाव से इसके पूर्वजन्म का पाप नष्ट हो जायगा तथा इसे सन्तान तथा अन्य सुखों की प्राप्ति होगी ।। इति शुभम् ।।

ॐ भृगुउवाच ।। शृणु पुत्र फलादेश जन्माङ्कस्य वदाम्यहम् ।। १ ।। मिथुने संस्थिते राहुः कन्यायां च बृहस्पतिः । वृश्चिके शनि केतु स्यात् धनुराशि गते यदा ।। २ ।। तदा हरिण योगस्यात् अस्य योग फलं शृणु । प्रथमें द्वितिये वर्षे दन्तपीड़ा कृशो वपुः ।। ३ ।। वह्नि वर्षाच्च नन्दाब्दे बाल क्रीड़ा दिने दिने । विद्यारम्भरतो हीनम् मंगलाचार संभवः ।। ४ ।। नवाम्बरं भूषणं च प्राप्यते शोभितो शिशुः । दिक् वर्ष गते काव्य शशि कुम्भाब्दगेऽपि वा ।। ५ ।। विवाहो मंगलं कार्यं अल्यायुर्प्राप्यते स्त्रियः । धनुजीव परं प्रीति आसक्तं चिन्तनं सदा ।। ६ ।। कामक्रीड़ा सुखान्सर्वे भोग्यते बहु तत्परा । भाग्यवृद्धि न सन्देहो कष्टपीड़ा विचिन्तनम् ।। ७ ।। पुत्रजन्म महोत्साहो सुपत्ने सुख वर्धनिः । नेत्र युग्म गते वर्षे वह्नि रामाब्दगेऽपि वा ।। ८ ।। भाग्य वृद्धि भवेल्लोके सुखस्तत्र प्रवर्तते । चित्त चिन्ता बृहत्यापि दान मंत्रेण शान्तये ।। ९ ।। धनवृद्धिर्नसन्देहो व्यापारो लाभदो महान् । पुत्र सौख्य समृद्धिश्च संपदा संचयो महान् ।। १० ।। वेद वह्नि गते वर्षे राम वेद गतोऽपि वा । यदोगो जायते कष्टं सर्वशान्ति सुफलतः ।। ११ ।। दान पुण्य रतो दीर्घः अग्रजन्मस्य हेतवे । पुत्र कन्या विवाहे च धन व्यय न संशयः ।। १२ ।। चन्द्र जीव परं प्रीति गुप्त प्रीति च दृश्यते ।। १३ ।। प्रा-प्रतिष्ठा यादृशी लोके कोपि वित्त न तादृशी । संपदा सञ्चयो नित्यमारामे प्रीति वर्द्धनः ।। पूर्वयत्न कृते शुक्र तावन्मि वत्सरो मध्ये पुत्र भाग्योदयं महत् ।

१	१२ मं.	११
२		१० शु. बु.
३ रा.		९ सू. के.
४ चं.	६ बृ.	८ श.
५		७

सर्व साफल्य वैभवम्। ग्राम लाभ सुखास्सर्व भूमि मंडादि वाहनम् ॥२४-२५॥ चन्द्र वाण गते वर्षे नेत्र बल्हाब्द गेऽपि वा। प्रसिद्धौ भूमि भागे च तेजस्वी दीर्घ जीवन: ॥२६॥ धर्म मार्गे व्ययो सौरव्य मारामे कूप मन्दिरे। सर्वारिष्ट राजद्वारे जयं प्राप्य विलीयन्ते च ग्रामच: ॥२७॥ कफ वातोद्‌भवं कष्टं पुन: शान्ति सुख प्रदा। वह्नि षष्ठ गते वर्षे हरं पुण्यं तप तेजो वलीयसी ॥२८॥ जायते विविधं सौरव्यं पुत्रपौत्र धनादिकम्। सर्व सौरव्य समृद्धिश्च सम्पदा व्योम सप्ताब्द गेऽपि वा ॥२९॥ दानमंत्र सुपुण्येन भाग्यवान धरातले। सप्त चन्द्र मिती मायु: प्राप्ते परलाकृतिम् सञ्चयो महान् ॥२०॥ पुत्र पौत्र महाभागी कुल कीर्ति प्रशंसिता। पुन: पुण्यात्मयो भूप: भूमिपालोऽति धार्मिक: ॥२१॥ आश्विनस्य तमो पक्षे निशायां निधनं भवेत। पूर्व पयस्विनी तीरे चित्र नामा च ब्राह्मण:। सर्व सम्पद्युतो मानी बहु भाग्यैश्च शोभित: ॥२३॥ ॥२२॥ मन्त्र विद्या विवेकी च लोभात्कुत्सित मानस:। धनं हृतं च शिष्यस्य न दत्तम् मोह कारणात् ॥२४॥ एवं निवसितं तत्र बहु वर्ष गतागतै:। स विप्र: पञ्चतां प्राप्त प्राप्तवान् च यमालयम् ॥२५॥ शतजन्मान्तरे सोऽयं मानुषत्वं गतोऽधुना ॥ शुक्र उवाच॥ केनोपायेन ऽयं पापं प्रमुच्यते वद प्रभो॥२६॥भृगु उवाच॥ रजतं द्विगुणं देयं वस्त्र मष्टोत्तरम् शतम् ॥२७॥ नवफल यन्त्र श्री पद्मनाभस्य भूर्जपत्रे च लेखयेत्। -त्ति व्याख्यय: सर्वे पूर्व पाप विनश्यति ॥२८॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा- हे पुत्र! मिथुन राशि में राहु, कन्या में वृहस्पति, वृश्चिक में शनि तथा धनुराशि में केतु हो तो हरिण योग होता है। इस योग उत्पन्न होने वाले जातक का फलादेश सुनो। पहले तथा दूसरे वर्ष में दन्त-पीड़ा तथा शारीरिक-दुर्बलता रहे। इससे ई वर्ष की आयु में खेल-कूद में मन लगे। १० से २१ वर्ष की आयु में घर में मंगलाचार हों, विवाह हो, अलङ्कार मिले, विवाह उत्सव, नवीनवस्त्राभूषणों की प्राप्ति तथा एक जीव से विशेष प्रेम हो।

भाग्य-वृद्धि, कष्ट तथा पीड़ा हो। पुत्र-जन्म तथा सब प्रकार के सुख प्राप्त हों। २२ से ३३ वर्ष तक लोक में भाग्य-वृद्धि हो तथा सुख मिले। चित्त में चिन्ता हो, जो दान-मन्त्रादि से शान्त हो। धन-वृद्धि हो। व्यवसाय में लाभ, पुत्र-लाभ तथा सम्पत्ति संचय हो। ३४ से ४३ वर्ष की आयु में रोग हो जो सुयत्न से शान्त हो। दान-पुण्य में मन लगे। अगले जन्म के लिए धर्म-कर्म करे। पुत्र अथवा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। लोक में जितनी प्रतिष्ठा हो, उतना धन पास में न हो। एक जीव से प्रीति हो, उससे प्राप्ति हो। ५० वें वर्ष में पुत्र का भाग्योदय हो। सम्पत्ति बढ़े, बगीचे में प्रेम रहे। पूर्व पाप का प्रायश्चित्त प्रयत्न करदेने पर सब प्रकार का लाभ हो। भूमि, भवन तथा वाहन का सुख मिले। ५१ से ६२ वर्ष की आयु में तेज बढ़े, धर्म-कर्म में धन खर्च हो। कूप, मन्दिर, बगीचा आदि के निर्माण में व्यय हो। राजद्वार में विजय मिले। शत्रु अधोगति को प्राप्त हों। फिर कफ-वात का कष्ट हो। पुन: शान्ति मिले। सब अरिष्ट दूर हों। तेज तथा बल की वृद्धि हो। अनेक प्रकार के सुख, पुत्र-पौत्र, धन आदि का लाभ हो। कुल की कीर्ति बढ़े। महाभाग्य-शाली हो। ७१ वर्ष की आयु में परमगति प्राप्त हो। अगले जन्म में पुण्य कर्मों के फल से राजा, धर्मात्मा, पृथ्वी पति हो। यह जीव पूर्व जन्म में पयस्विनी नदी के तट पर ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था। इसका नाम 'चित्र' था। यह समस्त सम्पत्तियों से समृद्ध तथा सब शास्त्रों का ज्ञाता था। मन्त्र-विद्या का जानकार था। एक बार इसने लोभ के वशीभूत होकर अपने शिष्य का धन अपहरण कर लिया। मृत्यु के बाद यह यमलोक गया। सौ जन्मों तक विभिन्न योनियों में भ्रमण करने के बाद अब इसे पुन: मनुष्य योनि प्राप्त हुई है। यह सुनकर शुक्र ने पूछा— हे प्रभो! इसके [illegible] जन्म के पाप का प्रायश्चित्त किस प्रकार हो सकेगा, वह कहें। भृगुजी

बोले- श्रीपद्मनाभ यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर द्विगुण चाँदी तथा १०८ वस्त्रों सहित ब्राह्मण को दान करे तो यह पूर्वकृत पाप से मुक्त हो जाएगा तथा सब व्याधियां नष्ट होंगी और सुख प्राप्त होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं सत्य सत्य वदाम्यहम् । सिंहराशिगते शौरि: कर्के च गुरु संस्थिते । मकरे राहु तिष्ठन्ति केतु: कर्के यदा भवेत् ॥ प्रथमेब्दे हृगं पीड़ा द्वितीये ज्वर मेव च। तृतीये व्रण पीड़ा च भ्रातृ योगञ्चतुर्थके ॥ १-३ ॥ पितुर्लाभ न सन्देहो भूमिद्वारा धनागमं । प्राप्ते बाण-मिते वर्षे विद्यारम्भ प्रजायते ॥ ४ ॥ सम्बन्ध द्वय योगं च मम वाक्य न संशय: । पितुर्लाभ भवेत्पुत्र राजकार्य धनागम: ॥ ५ ॥ देशान्तर भवेद्यात्रा नृप प्रीति प्रवर्द्धन: । षट् वर्ष समारम्भ यावत्पञ्चदशस्मृत: ॥ ६ ॥ विद्यावृद्धि भवेन्नित्यं महाकष्ट समुद्भव: अल्पो वा अल्पतुल्यो वा पिता चिन्तातुरो भवेत् ॥ ७ ॥ महामृत्युञ्जयो जाप्यं तेन अल्प विनश्यति । विवाह योगं संजातं धनधान्य महद् गृहे ॥ ८ ॥ पितुर्लाभ नसन्देहो गृहे मंगलगायनम् । विद्या वृद्धि प्रजायेत वर्षे वर्षे न संशय: ॥ ९ ॥ पारितोष भवेत्प्राप्ति द्वय विद्या न संशय: । वाहनं चाकरं वृद्धि मंद वृद्धिश्च जायते ॥ १० ॥ नाना रत्नञ्च वस्त्रञ्च धन वृद्धिर्न संशय: । षोडशेब्दे समारम्भ यावत्पञ्च युगास्तथा ॥ ११ ॥ वर्षे वर्षे भवेत्सौख्यं राजद्वारे प्रतिष्ठित: । पितुर्कष्ट न सन्देहो मातृ चिन्तातुरो भवेत् ॥ १२ ॥ द्वन्द्व: विजानीयात् चिन्ता शोक सागरम् । पुत्र जन्म न सन्देहो गृहे मंगलगायनम् ॥ १३ ॥ षट् विंश समारम्भ नेद वाहि तथान्तरे । राजद्वारेऽति मानञ्च लक्ष्मी वृद्धि दिने दिने ॥ १४ ॥ अन्य कान्ता भवेत्प्रीति पूर्व

मं. सू. ६	५ श.	बृ. के. ४
बु. शु. ७		३
८		२
९	११	१ चं.
१० रा.		१२

कर्मानुसारतः। तद्दिताप धानं वस्त्रं भूषणं रत्न संयुतम् ॥१५॥ व्ययं भवति कालेन अग्रे व्याख्या भविष्य
ति। मन्दमेकम् समारभ्य पुष्पवाटि समन्वितम् ॥१६॥ दान धर्मे सुखमनितणी भवेद् देवे सु पूजनम्।
चित्तोदगार सुभक्ता च मित्राणां प्रीति वर्द्धनः ॥१७॥ कार्ये च महतो भूत्वा प्राधान्यं जायते कुले।
दम्पती मोदते नित्यं सुतापुत्र धनादिजा ॥१८॥ बहुलाभ प्रभावेण मंगलं सर्वदा भव। मंगले
विविधो नित्यं कुले तेन प्रकाशिता ॥१९॥ रस वह्नि गते वर्षे शरवेद गतेऽपि च। सर्व सौख्यागमो
गेहे कष्ट चिन्ता विनश्यति ॥२०॥ सर्वे शत्रुरयो याति मित्राणां प्रीतिवर्धनः। सर्वोपि मान्दो
मान्यो सुप्रसिद्धो प्रशंसितः ॥२१॥ पुत्र जन्म गृहे तस्य मंगलं गृहमागता। व्यापारो लाभदं नित्यं
नृपद्वाराद्धनागमः ॥२२॥ रस वेद गते वर्षे शर पंच गतेऽपि वा। तावत्कालावधिः पुत्रः पूर्ण भा-
ग्योदयं भवेत् ॥२३॥ दान मन्त्र सुफलेन अल्पायुश्च विनश्यति। पुत्र पौत्रान्वितो नित्यं प्रजा
वृद्धि महोत्सवे ॥२४॥ पुण्य कर्म प्रभावेण सर्व सौख्य धरातले। अकस्माज्जायते शोकं द्रव्य लाभं च
मोदिता ॥२५॥ यथा श्रद्धा कृते दानं अन्तावस्था सुखप्रदा। रसबाणगते वर्षे शर षष्ठ गतेऽपि
वा ॥२६॥ द्रव्य लाभ व्ययो द्रव्यं तीर्थ मन्त्रादि सेवनम्। देव पुण्योत्सवे तस्य व्ययन् कीर्तिश्च
सत्तमा ॥२७॥ शरीरे जायते कष्टम् कृशदेहोऽपि दुर्बलम् ॥ नागषष्टमिते मायुः प्राणयात्रा भविष्य
ति ॥२८॥ स्वगृहे निधनं तस्य प्रशंसा पुण्यतो भुवि। पुनः क्षत्री कुले जातम् ध्यात्वा श्रीजगदी-
श्वरम् ॥२९॥ सर्व सौख्य समायुक्तो प्राप्यते परमा गतिः। पूर्वजन्म कथा पुत्रं शृणु येन वदाम्यहम् ॥
३०॥ क्षत्री वंश समुत्पन्न धन धान्य भविष्यति। लोके लक्षपति ख्यातो बहु सेवी भवेत् नरः ॥३१॥ निज
स्थान वसत् विप्र गृह भूमि उपाधिकम्। लष्टमुष्ट प्रहारेण द्विज स्थानं च भस्म कृत ॥३२॥ युग्म पुत्रश्च
कन्या गृह [illegible] पुत्र [illegible] प्रभावेण [illegible] विनाशनम् ॥३३॥ शुको वाच ॥ किं दानं

किं पतंच पूर्व पाप विमुक्तये ॥ भृगु उवाच ॥ स्नान दान कुरुं जीव गायत्री मन्त्र जापकम् ॥ स्वर्णरूप प्रतिमा कृत्वा द्विजसुत मूर्ति लिख्यते। सर्वदान विधाने च संकल्प्य ब्राह्मणं ददेत् ॥३४॥३५॥ द्विज संतुष्ट कर्तव्यं पूर्व पाप विनाशनम्। पुत्र सौख्यं न संदेहो वंश वृद्धि दिने दिने ॥३६॥ इति ॥

भावार्थ: भृगु जी बोले- अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। सिंहराशि में शान्ति, कर्क राशि में गुरु और केतु तथा मकरराशि में राहु हो तो जातक को अपने जीवन के पहले वर्ष में नेत्र-पीड़ा, दूसरे में ज्वर, तीसरे में व्रण पीड़ा होती है तथा चौथे वर्ष में भाई का योग होता है। पिता को लाभ, भूमि द्वारा धनागम हो। पाँचवें वर्ष में दो प्रकार की विद्याओं का अध्ययन आरंभ हो। पिता को राजकार्य से लाभ, देशान्तर की यात्रा तथा धनागम हो। ६ से १५ वर्ष की आयु में विद्या वृद्धि, अल्प तुल्य कष्ट तथा पिता को चिन्ता हो। महामृत्युंजय के जाप से अल्प दूर हो। विवाह में धन खर्च। सेवक, वाहन तथा मकान का सुख हो। १६ से २५ वर्ष में सुख, विवाह, राजद्वार में प्रतिष्ठा, माता को चिन्ता, पिता को कष्ट तथा धनभंग हो। पर-स्त्री से प्रीति हो और उसके लिए धन, वस्त्र, रत्नादि का व्यय हो। २६ से ३५ तक राजद्वार में सम्मान बढ़े, धन वृद्धि हो। इष्ट देव का पूजन, दान-धर्म से सुख मिले, मित्र से प्रीति बढ़े। कुल का प्रधान हो, अनेक प्रकार के मंगल हों। ३६ से ४५ तक सब प्रकार के सुख, चिन्ता पुष्प वाटिका तथा मकान का निर्माण हो। पुत्रजन्म, घर में मंगल तथा यश-वृद्धि हो। मंत्र तथा सुजान से शत्रु-ओं का विनाश, शत्रुओं की पराजय हो। ४६ से ५५ तक पूर्णभाग्योदय हो। ५६ से ६५ तक धन-लाभ तथा खर्च, -व्याधि योग का नाश हो। ६८ वर्ष में आयु पूर्ण हो। पूर्व जन्म में क्षत्रिय कुल में जन्म तीर्थ, मन्दिर आदि का सेवन तथा कीर्ति वृद्धि हो। यह जीव पूर्व जन्म में क्षत्रिय वंश में हो, वहाँ जगदीश्वर का पूजन करके, श्रेष्ठ गति प्राप्त करे। इसकी भूमि में एक ब्राह्मण मकान बनाकर रहने लगा। इससे उसे उत्पन्न हुआ था तथा बड़ा धनी था।

लाठी प्रहार से मार डाला तथा घर को आग लगाकर जला दिया। उसकी तीन कन्यायें तथा दो पुत्र भी मर गए। उस पाप के प्रभाव से इसकी वंश वृद्धि नहीं होगी। शुक्र ने पूछा - इसका प्रायश्चित्त बताने की कृपा करें। भृगुजी बोले - यह भूमि एवं मकान का दान करे, गायत्री मन्त्र का जप करे तथा एक स्वर्णपत्र पर ब्राह्मण तथा उसके पुत्र पुत्री के चित्र लिखकर, विधिपूर्वक किसी ब्राह्मण को दान करे और उसे सन्तुष्ट करे तो इसके पूर्वजन्म के पाप का प्रायश्चित्त हो सकेगा तथा वंश की वृद्धि भी होगी। इति शुभम्॥

ॐ भृगुरुवाच॥ अस्य जातस्य कुण्डल्यां फलादेशं शृणु सुत॥

४	३ के.	२
५	६ वृ. शु.	१
		१२ चं.
७ बु.	९ रा.	११ शु.
८ सू.		१० मं.

कन्यायां गुरु शौरिः स्यात् मिथुने केतु संस्थिते। धनु राशिगते राहुः तावद् फल वदाम्यहम्॥ प्रथमेऽब्दे ज्वरश्चैव द्वितीये मुख पीडनम्। तृतीये व्रणरोगी च तथा भ्रातृ समुद्भवेत्॥१-३॥ पितुर्लाभ विजानीयात् प्रजाधारे तथा कृषिः। मातृपीड़ा भवेत्पुत्र कुलदोषेन भ्रातातिः॥४॥ चतुर्थे द्वादशे वर्षे पितुर्लाभ भवेत् महा। किंचित्कष्टं भवेद्देहे विघ्नांश्च तथैव च॥५॥ पितुर्द्धन व्ययं पातः शुभ कार्ये न संशयः। भूमि लाभ न सन्देहो वाहनादि सुखं भवेत्॥६॥ वह्नि चन्द्र मिते वर्षे तथा व्योम दृगं सुतः। विद्या वृद्धि विजानीयात् पारितोषञ्च लभ्यते॥७॥ भूमि लाभ विशेषेण विवाहोऽपि तथैव च। तीर्थयात्रापि संजातः तत्र दान महद् भवेत्॥८॥ भ्रातृ कष्टोऽपि संभाव्य महामृत्युंजयं जपेत्। चन्द्र युग्मगते वर्षे माशि वह्नि गताब्दके॥९॥ महत्कीर्ति महल्लाभं महत्सौख्यं च विस्तृतः। सुता सुत सुखं लोके धनदारात्मजादयः॥१०॥ पुत्र कन्या विवाहेच्च कृपाराने तथैव च। धनं व्यय भवेत्पुत्रः यथा लाभ तथा

व्ययम् ॥ ११ ॥ साधुरेक समागम्य वेद वेदाङ्ग पारगः । तत्सत्सङ्गे दिवारात्रौ आत्मज्ञानं विचारयेत् ॥१२॥
नेत्र वह्नि गते वर्षे युग्म वेद गतोऽपि वा । धन वृद्धिर्न सन्देहो व्यापारो लाभदो महान् ॥ १३ ॥ सर्वैः शत्रु
रणो याति प्रतिष्ठा मानदो महान् । दान मंत्र सुपुण्येन सर्वारिष्ट निवारणम् ॥ १४ ॥ शरीरं कष्टस-
म्पन्नो चित्त चिन्ता गरीयसी । औषधी दान मंत्रेण सर्व कष्ट विनश्यति ॥ विवाहादि महोत्सवो
सुकीर्ति कुलवर्धनः । वह्नि वेद गते वर्षे युग्म पंच गतोऽपि वा ॥ १५-१६ ॥ पौत्रजन्म महोत्सवो
मंगलं विविधैरपि । नाना कार्य प्रबन्धैश्च सुखं सर्वत्र जायते ॥ १७ ॥ वह्नि पंच गते वर्षे इन्दु षट्
गताब्दकै । सर्व कार्याणि सिद्ध्यन्ति लघु द्रव्य व्ययानि च ॥ नेत्र षट्क गते वर्षे नाग षट् गतो
ऽपि वा । विस्तराल्लभते सौख्यं पुत्र पौत्र धनादिकम् ॥ १८-१९ ॥ पुण्यावहन्या सुखं नित्यं
नन्द षष्ठाब्द जीवनम् । आषाढे कृष्ण पक्षे च निधनं तस्य जायते ॥ २० ॥ स्वगृहे निधनं रूपा
न्याप्यते चोत्तमा गतिः । पुनरप्ये समुत्पन्न द्विजगेहे सदा सुखी ॥ २१ ॥ पूर्व पापं च कार्यार्थं अनु
वंश न दृश्यते ॥ शुक्रोवाच ॥ केनकर्मविपाकेन पुत्र सुख विनश्यति ॥ २२ ॥ भृगु उवाच ॥ पूर्वे
क्षत्रि कुलोत्पन्न बहु सेवी नरो भवेत् । परस्त्री च महाप्रीति कुमार्गी दुष्ट पापिनी । द्विज पुत्र यातं
त्याज्य सम्भवेत् अंकशायिनी । निज भर्तारं विषं दत्वा प्रेयसी कुलटा भवेत् ॥ २३-२४ ॥ तस्य
पाप प्रभावेण पुत्र सुखं विहीनकं ॥ शुक्रोवाच ॥ केनोपायेन तं पापं प्रायश्चित्त भवेद् ध्रुवम् ॥
तत्सर्वं कथय: स्वामिन् लोकानुग्रह कांक्षया ॥ भृगुरुवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या पंचरंक
प्रमाणकम् ॥ अथवा स्वर्णपत्रं च लिखेत द्विजपुत्रकम् ॥ रक्त चन्दन मिश्राणि गंगोदक च
स्नानकम् ॥ २५-२७ ॥ ताम्र कलशं घृतं मध्ये गुप्त द्रव्यं प्रवेशकं । संकल्पं च ददेत्
विप्र गायत्रीमंत्र जापकम् ॥ २८ ॥ एतद्दान प्रभावेण पुत्रपौत्रान्वितो भवेत् ॥ २९ ॥ इति ॥

भावार्थ! भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। इस जातक को प्रथम वर्ष में ज्वर। द्वितीय में सुख-पीड़ा, तृतीय में व्रण तथा अग्नि योग होगा। माता को पीड़ा हो, जो कुलदेवता से शान्त हो। ४ से १२ वर्ष की आयु में पिता को लाभ, विद्यारंभ, कुछ शारीरिक-कष्ट। १३ से २० वर्ष में विद्या वृद्धि, पारितोषिक - प्राप्ति, भूमि-लाभ, विवाह, तीर्थ यात्रा, माता को कष्ट, जो महामृत्युंजय के जप से दूर हो। २१ से ३१ तक कीर्ति, लाभ, सुख, स्त्री, पुत्र, कन्या आदि का सुख मिले। पुत्र कन्या के विवाह, कूप-उपवन आदि के निर्माण में धन खर्च हो। फिर एक साधु के सत्संग से आत्म चिन्तन करे। ३२ से ४२ वर्ष तक धन-वृद्धि हो, शत्रु पराजित हो, व्यवसाय में लाभ, विवाहादि मंगल कार्य हों, दान-पुण्य से अरिष्टों का नाश हो। शरीर में कष्ट हो, जो औषध सेवन तथा दानादि से दूर हो। ४३ से ५२ वर्ष में पौत्र-जन्म, अनेक प्रकार के उत्सव, सम्पत्ति-संचय, शुभ कार्य में व्यय। ५३ से ६१ तक सब कार्य सिद्ध हों, सर्वत्र सुख मिले। ६२ से ६८ तक धन, पुत्र पौत्रादि का सुख हो तथा भजन में आनन्द मिले। ६९ वर्ष की आयु में, आषाढ़ कृष्णपक्ष में अपने घर में ही निधन हो। अगले जन्म में तपस्वी ब्राह्मण के घर में जन्म लेकर मोक्ष का साधन करे। पूर्व जन्म में यह जीव क्षत्रिय कुल में उत्पन्न बड़ा धनी तथा ऐश्वर्यशाली था। परन्तु इसका प्रेम संबंध एक कुलटा स्त्री से हो गया, जो एक ब्राह्मण की पत्नी थी। उस कुलटा ने इसकी अंक-शायिनी बन कर अपने पति को मार डाला। उस पाप के प्रभाव से यह इस जन्म में पुत्र-सुख से रहित होगा। यह सुन कर शुक्र ने पूछा - इसके पूर्वजन्म कृत पाप के प्रायश्चित्त का उपाय बतायें। भृगुजी बोले— पांच टंक स्वर्ण की मूर्ति अथवा आधा स्वर्ण और आधे लालचंदन से एक ब्राह्मण की प्रतिमा का निर्माण कर, उसे गंगाजल से स्नान कराये। फिर उसे एक वर्ष तांबे के पात्र में गुप्त रूप से रख कर, गायत्री मन्त्र का जाप करके

किसी ब्राह्मण को दान करदे तो इस दान के प्रभाव से पुत्र-सुख प्राप्त होगा। इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र फलादेशं अस्य जातस्य कुण्डलीम्॥ प्रथमेऽब्दे नेत्रपीड़ा द्वितीये दन्तपीड़नम्। तृतीयेऽब्दे चतुर्थे वा भ्रातृभगिनी समुद्भवः॥१-२॥ मातृपीड़ा न सन्देहो पिता चिन्तातुरो भवेत्। बाण वर्षाब्दमारभ्य मुनि वर्षगतेऽपि वा॥३॥ धन धान्यादि लाभञ्च विद्यारंभो तथैव च। पितुर्धन शुभं कार्ये व्ययं याति न संशयः॥४॥ अष्टमेऽब्द भवेत्कष्टं वातपित्तोद्भवे सुत। नन्द वर्ष समारभ्य राशि युग्माब्दगेऽपि वा॥५॥ चौराद्ग्निजलं भीति पत्तनाद्वाहनादिकम्। मातृचिन्तातुरो ह्येवं भ्रातृकष्ट समन्वितः॥६॥ द्विभार्या योग संजातः श्रेष्ठवंशोद्भवं भवेत्। नव वस्त्रं महर्घञ्च नवभूषण वाहनम्॥७॥ विवाहादि महोत्साहो स्त्री सौख्यं प्रजायते। नेत्र युग्म गते वर्षे त्रिंश वर्षाब्दगेऽपि वा॥८॥ पुत्रजन्मभवे त्यस्यचद्गानन्दम् गान मन्दिरे। धर्ममार्ग रतः पुंसः नान्यथा वचनं मम॥९॥ साधुरेक समागत्य वेद वेदाङ्ग पारगः। दैवयोगे भवेत्कष्टं वातश्लेष्मेण पीड़ितः॥१०॥ चन्द्र रामाब्दगे काव्य व्योम वेदाब्दगेऽपि वा। सुता पुत्र सुखं सर्वं धनदारात्मजादिकम्॥११॥ कान्तागारे महोत्साहो भविष्यति दिने दिने। पुत्र पौत्र धनं धान्यं सर्व सम्पत्समन्वितः॥१२॥ चन्द्र वेद गते वर्षे शताई वत्सरे यदि। दैव योगेन मित्रेकं कस्मादागमनं भवेत्॥१३॥ महत्सौख्यं महल्लाभं महत्कीर्तिश्च विश्रुतः। पुत्र पुत्री विवाहेच धन व्ययं न संशयः॥१४॥ चन्द्र बाण गते वर्षे वह्नि षष्ठ्याब्दगेऽपि वा। चित्तेष्य दाल शास्त्रे च अन्यमन्ये प्रयाकं प्रयाकं॥१५॥ भूमिदेव समाहूय योगशान्ति प्रपाठयः। गोभू सुवर्ण दानञ्च दत्वा भूम्यासनं कृतः॥१६॥ सिंहराशि गते चन्द्र तन्निर्याण भाष्यते। पुनश्च

स्थान	ग्रह
१	चं
२	
३	
४	बु. बृ.
५	सू. मं.
६	शु. रा.
७	श.
८	
९	
१०	
११	
१२	के

जायते पुण्य राजगेहो सुकीर्तिमान् ॥ १७ ॥ पूर्वे मरुस्थले चैव नापितश्चैव धार्मिकः । तस्य पत्नी महादुष्टा पति वञ्चन तत्परा ॥ १८ ॥ परपुंसरता दुष्टा चञ्चला काम मोहिता । एकस्मिन्समये चैव दृष्ट्वा स्वीयां -स कोपतः ॥ १९ ॥ खड्गे नैव हनत्तांवै साघृता गद पीडिता । पापमाचरतम् तेन सुत दारा सुखं नहि ॥ २० ॥ तीर्थे तीर्थे पटनसोऽपि जगन्नाथे मृतस्तदा । पुनरागत्य बोधिन्यां मानसाः सुन्दरश्च सः ॥ २१ ॥ शुक्रो वा-च ॥ किं जाप्यं कस्य पूजा च किं दानञ्च किमौषधम् ॥ भृगु उवाच ॥ ताम्रपात्रं रुद्र पलम् तन्म-ध्ये हरिमन्दिरम् । चन्दनेन प्रकर्तव्यं शालग्रामस्य सन्निधौ ॥ २२-२३ ॥ जपेत्पञ्च सहस्राणि रुद्र मन्त्र नवत्रयम् । एतत्कृत्वा ततो दानम् दद्याद्दश्वं मनोहरम् ॥ २४ ॥ एतद्दान प्रभावेण पुत्रो भवति जीविति । सर्वसौख्यमुवाप्नोति सर्वारिष्ट निवारणम् ॥ २५ ॥ इति ॥

भावार्थः भृगुजी बोले — हे पुत्र! अब इस जातक की कुण्डली का फलादेश सुनो। पहले वर्ष में नेत्र-पीड़ा, दूसरे में दन्त-पीड़ा, तीसरे-चौथे में भाई-बहिन का योग, माता को पीड़ा तथा पिता को चिन्ता हो। ५ से ८ वीं वर्ष में धन-धान्य, विद्यारंभ, पिता का अच्छे कामों में धन खर्च हो। ८ वीं वर्ष में वात-पित्त से कष्ट, ९ से २१ वर्ष की आयु में चोर, अग्नि तथा जल से भय, सवारी से गिर कर चोट लगे, माता को चिन्ता, भाई को कष्ट हो। दो पत्नियों का योग, दोनों अच्छे कुल की हों। नवीन वस्त्र, आभूषण, वाहन आदि का सुख, नवीन-स्त्रियों का समागम हो। रात-दिन घर में मंगल-गान हो। राजद्वार से सम्मान मिले। दिन-दिन विद्या की वृद्धि, विवाह हो, स्त्री-सुख मिले। २२ से ३० वर्ष की आयु में पुत्र का जन्म हो। फिर एक वेदज्ञ साधु का समागम हो, जिस की संगति से आत्मज्ञान में रुचि बढ़े। ३१ से ४० तक पुत्र तथा कन्या का सुख। धन तथा स्त्री का सुख। ... मित्र से भेंट। विशेष सुख तथा लाभ। पुत्र या

पुत्री के विवाह में धन खर्च हो। कुटुम्बी तथा सेवकों सहित किसी तीर्थ की यात्रा हो। ११से ६३ तक
आत्मतत्त्व का चिन्तन। ६६ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार को पुत्र-पौत्रों सहित
ब्राह्मण को बुलवा कर योग शास्त्र का पठन कर; गौ, स्वर्ण तथा पृथ्वी दान कर, भूमि पर आसन
लगा, सिंह राशि के चन्द्रमा में प्राण त्याग करे। फिर पुण्य के प्रभाव से अगली बार यशस्वी
राजा के घर मे जन्म लेकर सर्वत्र विजयी हो तथा श्रेष्ठ गति प्राप्त करे। हे शुक्र! यह जीव
पिछले जन्म में मरुस्थल देश में धार्मिक नापित (नाई) के घर जन्मा था। इसकी पत्नी परम
चंचला, भ्रष्टा तथा पर-पुरुष गामिनी थी। एक समय इसने उस पापिनी को तलवार के प्रहार
से मार डाला। फिर तीर्थ यात्रा की। जगन्नाथ पुरी में इसकी मृत्यु हुई, अतः यह इन्द्रलोक को
गया। बादमें मृत्यु लोक में आकर इसने मनुष्य योनि पाई है। परन्तु स्त्री-हत्या के पाप के
कारण इसे सन्तान-सुख अल्प होगा। यह सुन कर शुक्र ने कहा- हे प्रभो! इसके प्रायश्चित्त
का उपाय कहिए। किस मन्त्र के जप अथवा दान आदि से यह पूर्वजन्म के पाप से मुक्त
हो सकेगा? भृगुजी बोले- ग्यारह पल भारी ताँबे का पात्र लेकर, उसके मध्यमें लाल
चंदन से हरि-मन्दिर अंकित करे, फिर शालग्राम शिला के समीप बैठ कर पाँच हजार की
संख्या में नवाक्षर रुद्रमन्त्र का जप करे। फिर उस ताम्र कलश को एक जोड़े सहित ब्राह्म-
ण को दान करदे। इस दान के प्रभाव से इसके पूर्व जन्म के पाप का प्रायश्चित्त हो
जाएगा तथा पुत्रादि भी जीवित रहेंगे। सब कष्टों से छुटकारा पाकर इसे सब प्रकार
के सुखों की प्राप्ति होगी- इसमें कोई सन्देह नहीं है। इस प्रकार भृगुजी ने इस जन्म कुण्ड-
ली का फलादेश शुक्र के प्रति वर्णन किया है॥ इति शुभम्॥

भृगु उवाच ।। शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषा जन्म कुण्डली ।। प्रथमे द्वितीये वर्षे बालवृद्धिश्च भूतले । दशने त्वतिजा व्याधि पीड्यते दुर्बली वपुः ।। १-२ ।। वह्नि वर्षाच्च नन्दाब्दे बाल क्रीडा दिने दिने । विद्यारंभरतो हीतम् मंगलाचार संभवः ।। ३ ।। नवाम्बरम् भूषणं च प्राप्यते शोभितो शिशुः । दिक् वर्ष गते काल शशि युग्माब्द गेऽपि वा ।। ४ ।। विवाहो मंगलं कार्यम् आत्मायुर्प्राप्यते स्थिरः । चन्द्र जीव परं प्रीति आसक्तं चिन्तनं सदा ।। ५ ।। कामक्रीडा सुखान्सर्वे भोग्यते बहु तत्परा । भाग्य वृद्धि न सन्देहो कष्ट पीडा विचिन्तनम् ।। ६ ।। पुत्र जन्म महोत्साहो सुयत्ने सुख वर्धयः । नेत्र युग्मगते वर्षे वह्नि रामाब्दगेऽपि वा ।। ७ ।। भाग्यवृद्धि भवेल्लोके सुखस्तत्र प्रवर्तते । चिन्ता चिन्ता वृहत्योपि दानमन्त्रेण शान्तये ।। ८ ।। धनवृद्धिर्न सन्देहो व्यापारो लाभदो महत् । पुत्रसौख्य समृद्धिश्च सम्पदा नित्य वर्द्धति ।। ९ ।। वेद वह्निगते वर्षे रामवेद गतेऽपि वा । यद्योगो जायते कष्टं सर्व शान्ति सुयत्नतः ।। १० ।। दान पुण्य रतो दीर्घः अनुजन्मस्य हेतवे । पुत्र कन्या विवाहे च धनव्यय न संशयः ।। ११ ।। चन्द्रजीव परं प्रीति शुष्क व्याधिश्च दृश्यते । शताद्दिभू वत्सरो मध्ये पुत्रभाग्योदयं महत् ।। १२ ।। पूर्व यत्न कृते कार्यः साफल्यं सर्व वैभवम् । ग्रामलाभ सुखास्सर्व भूमि मन्दुरादि वाहनम् ।। १३ ।। चन्द्र बाणगते वर्षे नेत्र षष्ठाब्दगेऽपि वा । प्रसिद्धौ भूमिभागे च तेजस्वी दीर्घजीवनः ।। १४ ।। धर्म मार्गे व्ययो सौख्यं आरामे कूप मंदिरे । राजद्वारे जयं प्राप्य विलीयन्ते च शत्रवः ।। १५ ।। कफ वातोद्भवो कष्टं पुनः शान्ति सुखप्रदः । सर्वारिष्ट हरं पुण्यं तपतेजो बलीयसी ।। १६ ।। जायते विविधं सौख्यं पुत्र पौत्र धनादिकम् । वह्नि षष्ठगते वर्षे व्योम सप्ताब्दगेऽपि वा ।। १७ ।। दान मन्त्र सुपुण्येन भाग्यवान धरातले । सर्व

रा. बु. ४ सू.	३	२ शु.	१
५ मं.		११	१२ चं.
६	७ बृ.	८	९ श.
			१० के.

सौख्य समृद्धिश्च सम्पदा संचयो महान् ।। १८ ।। पुत्र पौत्र महाभागी कुल कीर्ति प्रशंसित: । चतुस्सप्तमितीमायु
तदन्ते परमांगतिम् ।। १९ ।। आश्विनस्य तमो पक्षे निशायां निधनं भवेत् । पुनः पुण्य प्रयो भूपः भूमिपालो-
ति धार्मिक: ।। २० ।। पूर्व पयस्विनी तीरे निवसन्ति विवेकवान् । विप्र वंश समुद्भूतो बहुभाग्य
विशारद: ।। २१ ।। लोभात् शिल्प धनं हृत्वा यमलोके पतिष्यति । शतजन्मान्तर प्राप्यं योनि
मानवीकी इदं ।। भूर्जपत्र लिखेद् यन्त्रे श्री नामः स चन्दनं । लक्ष मन्त्राणि गायत्री जपं कृत्वा
यथाविधि: । स्वर्ण पंच पलं दद्यात् विप्राय च समं क्षमे । ततः सर्व सुखं प्राप्ति पूर्व पापं
विनश्यति ।। इति ।।

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र ! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो । इस जातक को पहले तथा दूसरे वर्ष में दन्त-पीड़ा तथा शारीरिक-कृशता हो । ३ से ९ वर्ष तक बाल-क्रीड़ा में मगन रहे, विद्यारंभ हो तथा नवीन वस्त्राभूषणों की प्राप्ति हो । १७ से २१ वर्ष की आयु में विवाह हो, नवीना स्त्री प्राप्त हो । एक जीव से विशेष आसक्ति हो तथा उसी के चिन्तवन में लगा रहे । कामक्रीड़ा तथा सुख-भोग में तत्पर रहे । भाग्य वृद्धि हो तथा कभी थोड़ा सा कष्ट भी हो । फिर पुत्र का जन्म हो । सुख बढ़े । २२ से ३३ वर्ष की आयु में भाग्य वृद्धि हो, सुख मिले चित्त को चिन्ता भी रहे, जो दान तथा मन्त्र से शान्त हो । व्यवसाय में लाभ हो तथा धन वृद्धि हो । ३४ से ४३ वर्ष की आयु में रोग हो, जो सुयत्न से दूर हो । दान-पुण्य में चित्त लगे । ५० वर्ष की आयु में पुत्र का भाग्योदय हो । बजीचों से पुत्र अथवा कन्या के विवाह में धन खर्च हो । प्रेम रहे, पूर्व जन्म कृत पाप का यत्न करदेने से समस्त वैभव सफल हो । ग्राम, भूमि, मकान सवारी का सुख मिले ... पृथ्वी पर यश, कीर्ति तथा तेज की वृद्धि हो । कृष्ण

बगीचा। मन्दिर आदि बनवाते तथा धर्म-कर्म में धन खर्च हो। राजद्वार में विजय प्राप्त हो। शत्रु अधोगति
को प्राप्त हों। फिर कफ-वात का कष्ट हो, परन्तु दान-पुण्य करने से सभी अरिष्ट दूर हों तथा अनेक प्रकार
सुख, पुत्र, पौत्र, धन आदि का लाभ हो। ६३ से ७० वर्ष की आयु में दान, मन्त्र-जप तथा सुपुण्यसे
सब सुखों की वृद्धि हो। धन का संचय हो। कुल-कीर्ति बढ़े तथा पुत्र-पौत्रादि यशस्वी बनें। ७१
वर्ष की आयु मे परमगति को प्राप्त हो। आश्विन कृष्णपक्ष की रात्रि में निधन हो। फिर पुण्यप्रभाव
से अगली बार यशस्वी कुल में जन्म लेकर धर्मात्मा राजा बने। हे पुत्र! अब मैं इसके पूर्व जन्म
का वृत्तान्त कहता हूँ, उसे सुनो। पूर्वकाल में यह पयस्विनी के तट पर निवास करने वाला विवे-
की ब्राह्मण था तथा अनेक शास्त्रों का ज्ञाता था। परन्तु एक बार लोभ के वशीभूत होकर इसने
अपने एक शिष्य के धन का अपहरण कर लिया, उस पाप के कारण यह मरणोपरान्त यमलोक
को प्राप्त हुआ। फिर सौ जन्मों तक विभिन्न योनियों मे भ्रमण करता रहा और अब मनुष्य
योनि को प्राप्त हुआ है। इसे अपने पूर्वजन्म कृत पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए भोजपत्र
के ऊपर श्रीयन्त्र को चन्दन से लिख कर, उसका यथा विधि पूजन कर, एक लाख गायत्री
मन्त्रों का जप करना चाहिए। फिर पाँच पल स्वर्ण भक्तियुक्त होकर किसी योग्य ब्राह्मण
को दान करना चाहिए। ऐसा करने से इसके पूर्व कृत पाप का प्रायश्चित्त हो जायेगा तथा
सब संकट दूर होकर, हर प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी।। इति शुभम्।।

ॐ भृगु उवाच।। शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषा जन्म कुण्डली। त्रिजन्मस्य च
वृत्तान्तं सत्यं सत्य वदाम्यहम्।। मेष राशि गते शौरि: वृश्चिके च बृहस्पति। मिथुने राहु
तिष्ठन्ति धने केतु. यदा भवेत्।। तदा सा द्युतिमान् योग कथ्यते ज्योतिरीश्वरा:। अस्य योग

कल वत्स सत्यसत्य वदाम्यहम् ॥ १-३॥ प्रथमे क्षितिपे वर्षे वह्नि वर्णाच्च पञ्चमे । दन्तबाधा ज्वरो पीडयं व्रण विस्फोटकादय: ॥ ४॥ रुदन्तो विह्वलो बाल: मातृदुग्ध न लभ्यते । गुप्त चिन्ता तदा गेहे भयभीतो यदा कदा ॥ ५॥ किंचिद्दानादि मन्त्रेण भगवद्भक्ति भावत: । श्रेयो मानं प्रतिष्ठा च मोदते नात्र संशय: ॥ ६॥ बाल्य मृत्यु भयं घोरं क्षितीजो जन्म मन्यते । पुनरानन्द संस्थाप्य प्रायश्चित्तम् सु यत्नत: ॥ ७॥ ऋतु वर्ष गते वत्स व्योम चन्द्रादनन्तरम् । बाल वृद्धि भवेन्नित्यं शुचौ पक्षे निशेशवत् ॥ ८॥ विद्यारम्भ ततो लोके जायते विविधोत्सवम् । शशिचन्द्रमिते वर्षे विंश वर्षाब्दगे ऽपि वा ॥ ९॥ विवाहो मङ्गलं दीर्घ कुलकीर्ति प्रशंसति: । पत्नी सौख्याञ्च सन्देहो दान मन्त्र महत्फलम् ॥ १०॥ भाग्य वृद्धि न सन्देहो सुख तंत्र गरीयसी । बुद्धि दीर्घ प्रतिष्ठा च कुसंगात्क्लेश संभव: ॥ ११॥ शशि युग्म गते वर्षे नन्द युग्माब्द गे ऽपि वा । पुत्र कन्या विजातीयात् पूजयन्ति मनोरथा: ॥ १२॥ कुल बन्धु विरोधेन चित्त चिन्तातुरो भवेत् । मित्राणां मेलनं प्रीति: पुण्य कर्म सुखप्रदा ॥ १३॥ त्रिंश वर्षाब्दगे वत्स व्योम वेदाब्दगे ऽपि वा । शरीरे जायते कष्टं स्वर्णदानात्तत: सुखम् ॥ १४॥ पुत्र कन्या सुखाविष्टो द्रव्यदारादि मोदिता । सर्वापत्तौ विनश्यन्ति दीर्घायुस्सुख सर्वदा ॥ १५॥ अयत्ने विविधं क्लेशं इति तत्त्वे ब्रवीमि ते । देवदर्शन तीर्थे च पवित्रं क्रियते वपु ॥ १६॥ याचकानन्न दानञ्च तर्पणञ्च दिने दिने । आज्ञाकारी सुतो भृत्यं चतुष्पादादि वाहनम् ॥ १७॥ शशि वेद गते वर्षे नन्द वेदाब्दगे ऽपि वा । विवाहादि महोत्साहो जायते नित्य नूतनम् ॥ १८॥ सर्वसौख्यो ऽपि भुंजीत सुफलं जन्म मोदिता । पुत्र पुत्री विवाहे च धर्म मार्गे धनं व्यय: ॥ १९॥ ग्रामभूमि प्रलब्धि स्यात्स्यो क

७ शु.	६	४ चं.
	५	३ रा.
८ सू. बु. बृ.	२	१ श.
९ मं. के.	११	
१०		१२

मातम् प्रवर्द्धते । आरोग्ये कूप मन्दे वा धन व्यय न संशय: ॥२०॥ पत्नीदेहमहत्कष्टं अल्पतुल्य न संशय: । रोग शान्ति न सन्देहो पुनर्जन्म समं भवेत् ॥२१॥ शताद्वे वत्सरे यावत् नन्द वाण गतेऽपि वा । धनभङ्गः तदा ह्येष वृद्ध मृत्यु न संशय: ॥२२॥ राजद्वारे सभामध्ये पदोच्चं प्राप्यते सुत: । मित्रमेकं भवेत्तत्र स्वल्प भावी विचारवान् ॥२३॥ कस्मिन्देशे भवेद् यात्रा राजकार्येति निश्चितम् । तत्रापि धन लाभस्याद्वाहनादि सुखं भवेत् ॥२४॥ व्योम बाणगते वर्षे नाग बाणाब्द गेऽपि वा । दु:ख सौख्य फलं भुक्त्वा महद्दान ददाति च ॥२५॥ नन्द बाणाब्द मायुष्यं अलि राशिगते रवि: । मकर राशिगते चन्द्रे देवलोके गमिष्यति ॥२६॥ अरावती पुरोह्येषा क्षत्री वंश समुद्भवम् । धनधान्य समायुक्ता पुत्र पौत्रादि संयुत: ॥२७॥ पूर्वे मणिपुरे रम्ये नर्मदा निकटे सदा । बाहुज: सर्व धर्मज्ञो विप्राणां परिशीलित: ॥२८॥ एकदा चन्द्रभोगस्तो ब्राह्मणाय ददौ धनम् । पुनर्लोभेनभो विप्र हतम् तेन धनं बलात् ॥२९॥ अयं संतति हीनश्च मध्ये रोग समाकुल: । रक्तावातोद्भवा पीड़ा राजरोग: प्रवर्तते ॥३०॥ चिन्ताय जायते तस्य सौख्यं वालं धनं सुतं । महामृत्युञ्जयौ जाप्यम् घृत स्वर्ण प्रदानत: । टंक सप्त प्रमाणञ्च स्वर्णमूर्तिश्च कारयेत् ॥३१॥ घृत मध्ये तत: धृत्वा श्रेष्ठ विप्राय दापयेत् । अस्मिन्दानेन भो पुत्र: धन दारात्मजा सुखम् ॥३२॥ इति

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र ! अब इस जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो । यह जातक अपनी आयु के १ से ५ वर्ष तक ज्वर-पीड़ा, व्रण आदि से कष्ट पायेगा । माता के स्तनों से पर्याप्त दूध न मिलने से रुदन करेगा । घर में गुप्त चिन्ता हो । भगवान् की भक्ति, दान-मंत्र से कल्याण हो, पिता को प्रतिष्ठा मिले तथा अल्पमृत्यु का भय दूर हो । प्रायश्चित्त करदेने से आनंद मिले तथा दूसरे जन्म जैसा सुख हो । ६ से १० वर्ष तक बालक की वृद्धि हो, विद्यारम्भ हो, अनेक उत्सव हो । ११ से २० वर्ष की आयु में कुल की कीर्ति बढ़े, विवाह हो, परन्तु पत्नी के सुख में

सन्देह हो। दान मंत्रादि से शुभ फल मिले। बुद्धि तथा प्रतिष्ठा बढ़े। कुसंगति से क्लेश हो। २१ से २८
वर्ष तक पुत्र कन्या का सुख प्राप्त हो। मनोरथ पूर्ण हो। कुल-बन्धुओं का विरोध होने से
चित्त चिन्तातुर रहे। मित्रों से प्रेम बढ़े। पुण्य-कर्म से सुख मिले। ३० से ४० वर्ष की आयु
में शरीर-कष्ट हो। स्वर्ण दान से सुख प्राप्त हो। पुत्र, कन्या, स्त्री तथा धन का सुख मिले। सब
विपत्तियां दूर हों। दीर्घायु हो। तीर्थ में देव-दर्शन करके शरीर को पवित्र करे तथा याचकों को अन्न
दे कर तृप्त करे। पुत्र तथा सेवक आज्ञाकारी हों। वाहन का सुख मिले। ४१ से ४८ वर्ष में, घर में
विवाह आदि मंगल कार्य हों (पुत्र अथवा पुत्री के विवाह में धन खर्च हो। स्त्री को मृत्यु
तुल्य कष्ट हो, फिर रोग शान्त हो। ५० से ५८ वर्ष तक कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। राज-
द्वार में उच्चपद प्राप्त हो। एक गंभीर मित्र मिले। राजकाज से किसी देश की यात्रा हो, वहां
धन का लाभ हो। वाहन का सुख मिले। ६० से ६८ वर्ष की आयु में सुख का फल भोगे, बड़ा
दान दे। ब्राह्मण साधु तथा अतिथि का पूजन करे। ६८ वर्ष की आयु में वृश्चिक के सूर्य तथा
मकर के चन्द्रमा में मृत्यु को प्राप्त हो। फिर द्वारावती में क्षत्रिय वंश में जन्म लेकर पुत्र
पौत्रादि से युक्त होकर सब सुख भोगेगा। हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह जीव नर्मदा नदी के
तटपर चिन्तामणि नामक नगर में जन्मा था। वहाँ 'बाहुज' नाम से प्रसिद्ध था। बहु शास्त्रज्ञ
था। एक बार इसने चन्द्रग्रहण के समय किसी ब्राह्मण को धन का दान दिया, परन्तु बाद में
लोभ के वशीभूत होकर उससे छीन लिया, उस पाप के कारण यह मध्यावस्था में रोगी तथा
सन्तान से रहित होगा। इसे एक राज रोग भी होगा तथा सुख पाने के लिए चिन्तित बना रहेगा,
यदि यह महामृत्युंजय का जप कराये तो राजरोग दूर होगा तथा सन्तान एवं धन का सुख

भी प्राप्त होगा। महामृत्युञ्जय के जप के अतिरिक्त घृत तथा सात टंक भारी स्वर्ण की मूर्ति बनवाकर, उसे घृत में रख कर, ब्राह्मण को दान करे तो इसे धन, पुत्र तथा स्त्री का पूर्ण सुख मिलेगा एवं सभी संकट दूर होंगे ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषा जन्मकुण्डली ॥१॥ कन्या शौरि: वृषे राहु मिथुने च बृहस्पति। वृश्चिके केतु यस्य स्यात् तस्य वृत्तान्त ईदृश: ॥२॥ आश्चर्यं क्षिती-ये च मासे मासे सुखागम:। रामवर्षे गते वत्स शर षष्ठ दिगन्तरे ॥३॥ विद्यारंभ कृतश्चापि क्रीडते मति तत्पर:। धावनात्पादकष्टञ्च उच्चस्थे पतितोऽथवा ॥४॥ शशि-चन्द्र गते वर्षे वह्नि नेत्र गतोऽपि वा। विवाहादि महोत्साहो मंगले सुख वर्द्धते॥ ५॥ गृहे द्रव्य व्ययो दीर्घ कुले वृद्ध महोत्सवे। धन पुत्र सुनारीणां प्राप्यते विविधं सुखम् ॥६॥ वेद युग्म गते वर्षे शर वह्नि गतोऽपि वा, सुता सुत सुखं सर्व लाभ वृद्धि सुखोदय: ॥ लाभञ्च विविधो कार्यम् जायते नित्य नूतनम्। ऋतु राम गते वर्षे शर वेदाब्दगेऽपि वा ॥७-८॥ कीर्तिश्च निर्मली भूता दान धर्मे मुदान्विता। ग्रामलाभ विशेषेण नूतनो मन्दु वाहनम् ॥९॥ रसवेद गते वर्षे षष्ठबाण गतोऽपि वा। यत्र दृष्टि गतं तत्र विजयो लाभ लाभमुत्तमम् ॥१०॥ बृहल्लाभ व्ययो दीर्घ: कुलं तेन प्रकाशितम्। ऋषि बाण गते वर्षे वेद षष्ठ गतेऽपि वा। ईश्वरं कृपया पुण्यं प्राप्यते सर्व वैभवा: ॥ ११-१२॥ ज्ञान ध्यान समुत्पन्नो क्रियते मोक्ष साधनम्। शर षष्ठ गते ब्देषु चन्द्र सप्ताब्द जीवनम् ॥१३॥ आषाढे शुक्ल पंचम्यां स्वगृहे निधनं भवेत्। जायते चोत्तमो गेहे पुण्यात्सर्व सुखागम: ॥१४॥ आसीज्जन्मान्तरे

श. मं. ६	५	सू. शु. बु. ४
७	के. चं. ८	२ रा.
३ वृ.	९	११
१	१०	१२

चैव ब्राह्मण: शिव पूजक: । परमानन्द विख्यात: पत्नी तस्य कलिंगनी ॥ २५ ॥ जीवानां घातने व्यग्र: परस्त्री रति लोलुप: । परापवाद निरतश्चात्मार्ये विनियोगिक: ॥ २६ ॥ एकस्मिन्दिवसे विप्र दैवाद् गङ्गा गङ्गा तटे गत: । समृत्वा त्रिदिवम् गत्वा पापाच्च नरकं गत: ॥ २७ ॥ पुनरागत्य मेदिन्यां किंचित्पुण्यप्रभाव त: ॥ शुक्रोवाच ॥ केन कर्म विपाकेन पूर्व पापात्प्रमुच्यते ॥ २८ ॥ पूर्वे जीव वधम् कृत्वा साध्वी स्त्री च कलङ्किता । इह जन्मनि तै: पापै: दु:खदा धन आत्मजा ॥ २९ ॥ ताम्र पात्रं पलं त्रिंशद् घृतेन परिपूरितम् । एतद्दानोपचारेण सन्तानं प्राप्यते ध्रुवम् ॥ ३० ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे शुक्र! कन्या राशि में शनि, वृष में राहु, मिथुन में गुरु तथा वृश्चिक राशि में केतु हो तो उसका फल इस प्रकार होगा। इस जातक को जन्म के पहले, दूसरे वर्ष में सुख प्राप्त हो। तीन से पाँच, छै तथा दसवीं वर्ष में विद्यारंभ हो, खेल में मन चंचल रहे। खेल-कूद में चोट लगे अथवा किसी ऊँचाई से गिर कर चोट लगे। ११ से २३ वर्ष तक विवाह आदि उत्सव हों तथा घर में सुख-वृद्धि मंगल कार्य हों। कुल में किसी वृद्ध की मृत्यु हो, जिसमें धन खर्च हो। धन, पुत्र, स्त्री आदि का सुख प्राप्त हो। २४ से ३५ वर्ष की आयु में कन्या तथा पुत्र का सुख हो। विशेष लाभ हो तथा सुख का उदय हो। अनेक प्रकार के लाभ हों। नित्य नये काम बनें। ३६ से ४५ वर्ष की आयु में निर्मल कीर्ति मिले। दान-धर्म हो तथा चित्त आनन्दित रहे। ग्राम अथवा भूमि का लाभ हो। मकान तथा सवारी का सुख प्राप्त हो। ४५ से ५६ वर्ष की आयु में सर्वत्र विजय एवं लाभ प्राप्त हो। अधिक लाभ तथा अधिक खर्च हो। कुल की कीर्ति बढ़े। ५७ से ६४ वर्ष की आयु तक ईश्वर की कृपा एवं पुण्य कर्मों के प्रभाव से सब प्रकार के वैभव प्राप्त हों। दान-धर्मात उत्पन्न हो। मोक्ष का साधन करे। ६५ से ७१ वर्ष की आयु हो। आषाढ़ शुक्लापंचमी

भृ० सं० ४०११

भा० टी०

को अपने घर में ही मृत्यु हो। अगले जन्म में उत्तम कुल में उत्पन्न होकर पुण्य कर्मों द्वारा सब प्रकार के सुखों को प्राप्त करे। हे शुक्र! यह जीव पूर्व जन्म में परमानन्द नामक शिवपूजक ब्राह्मण था। इसकी पत्नी का नाम कलिंगरी था। यह उग्र जीवघाती तथा पर-स्त्री-लोलुप था। स्वार्थ के लिए पर-अपवाद में लिप्त रहता था। एक बार दैवयोग से वह गंगाजी गया और वहीं उसकी मृत्यु होगई, अतः पहले स्वर्ग में गया। फिर पाप के प्रभाव से नरकगामी हुआ। तत्पश्चात् कुछ पुण्य के प्रभाव से यह मनुष्य बनकर पुनः मृत्युलोक में आया है, परन्तु इसे पूर्व पापों के कारण सन्तान-कष्ट रहेगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा- हे प्रभो! किस उपाय से यह पूर्वजन्म के पाप से मुक्त हो सकता है, वह कहें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! इसने पूर्व जन्म में जीवों का वध किया तथा स्त्री को कलंकित किया। उस पाप के कारण इस जन्म में धन तथा पुत्र के लिए दुःखी रहेगा। यदि यह ३० पल के ताँबे के पात्र में घृत भर कर दान करे तो इस दान के प्रभाव से धन तथा सन्तान का सुख प्राप्त होगा तथा पूर्वजन्मकृत् पाप का प्रायश्चित्त हो जाएगा। इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि फलादेशोऽस्य कुण्डलीम्। सिंहे शौरिः राहु मीने मिथुने च बृहस्पतिः। कन्यायांकेतु तिष्ठन्ति व्याल योग स उच्यते॥ १-२॥ प्रथमे द्वितियेब्देषु तृतीये च चतुर्थके। पञ्चमे सप्तमेब्देषु गाथा शृणु प्रयत्नतः॥ ३॥ नेत्ररोगोदरो पीड़ा मातृपीड़ा च जायते। पितुर्लाभ न सन्देहो वर्षे वर्षे दिने दिने॥ ४॥ विद्यारम्भ विजानीयात् तात सम्बन्ध योगकम्। अकस्मात् षोडशे वर्षे विद्या वृद्धि दिने दिने॥ ५॥ राजद्वारे च सम्प्राप्ते पारितोषक प्राप्यते। गिरि चन्द्रमिते वर्षे व्योमनेत्रमितेऽपि वा॥ ६॥ चतुर्विंशमितेब्देषु शृणु पुत्र फलमिदं।

नवीनो भूषणं वस्त्रं यान वृद्धि प्रजायते ॥७॥ पत्नीगर्भ समायुक्ता स्वल्प जीवी च बालकं । जायते नात्र सन्देहो अथवा गर्भपातनम् ॥८॥ राजद्वारेऽति मान्यञ्च धनलाभ तथैव च । उद्भवे गुप्तप्री-तिश्च कश्चिदस्त्री विशेषत: ॥९॥ तेनयाति भयं किंचिच्छत्रुमेकं समुद्भव: । बाणनेत्रमिते वर्षे वेद वह्नि तथैव च ॥१०॥ धन लाभं न सन्देहो राजद्वारे विशेषत: ॥११॥ भूम्यादि धन लब्धिश्च पुत्र सौख्य न संशय: ॥ गृह मंगल कार्यं च स्त्री पीड़ा न संशय: । देश देशान्तरे पुत्र कीर्ति तस्य विनिश्चितम् ॥१२॥ मान वृद्धि प्रजायन्ते धन धान्य समाकुल: । बाणराममिते वर्षे वेद वेदाब्द मध्यगे ॥१३॥ अल्प मेकं न सन्देहो भविष्यति वरानन: । तीर्थयात्रादि भो पुत्र: तस्मिन्काले च सम्भव: ॥१४॥ आरामे धर्मशालायां तथा देवालयेऽपि च । पाठ पूजन कार्येषु तथा गाथा पुराणयो ॥१५॥ बाणवेद गते वर्षे शरबाणमिते तथा । पुत्र पौत्र सुखं ज्ञेयं दासदासीश्च सेविता ॥१६॥ आलस्यं जायते देहे शुभ कार्ये धनं व्ययं । सर्व रोग प्रशांतिस्याद्धन लब्धि न संशय: ॥१७॥ पत्नीक्लेश समुत्पन्न मित्र क्लेशश्च जायते । तीर्थयात्रा परं पुण्यं दान धर्मरत: सदा ॥१८॥ ग्रामभूमि प्रलब्धिस्यात्लोकमानं प्रवर्धते । रसपञ्चमिते

२ | १ मं. | १२ रा. | ३ बृ. | ११ सू. | ४ | १० बु. | ५ श. | ७ चं. | ९ शु. | ६ के. | ८

वर्षे वह्नि बष्ठ गतेऽपि वा ॥१९॥ शत्रुमेक समुत्पन्न चित्त चिन्तातुरो भवेत् । धनु कार्यवि-नश्यन्ति क्षितिपे च समुद्भव: । [२]०॥ विदेशे गमनं चैव धन धान्य समृद्धय: । पुत्र कन्या विवाहे च धन व्यय विशेषत: ॥[२]१॥ मन: प्रसन्नतायाति सौख्यं वर्धति नित्यश: । वेद बह्नि समारम्भ यावन्नेत्र नगाब्द के ॥२२॥ भार्या कष्ट समुत्पन्नो देह त्यागो न संशय: । किंचित् व्या-कुलता याति योग माहात्म्येण नश्यति ॥२३॥ वेद सप्ताब्दमायुष्यं ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी । गुरुवार

समायुक्ता स्वाति नक्षत्र संयुता ॥ २४॥ तुले चन्द्र गत: पुत्र देह त्यागे न संशय: । हिमालयोत्तरे देशे विप्र वंशे न संशय: ॥२५॥ अग्नि होत्र कुले पुत्र नरनाथ भविष्यति ॥ २६॥ एवं गृह विचितं पुत्र भवत्येव सुखी नर: । पत्नी गर्भ च स्थित्वा तु अल्पजीवी च बालक: ॥ २७॥ आदौ हर्ष विजानीयात -पश्चाते शोक कूडनम् । सर्व सुखं च प्राप्नोति पुत्रं सुख विनश्यति ॥२८॥ शुक्रोवाच ॥ केन पाप प्रभा -वेण पुत्रं सुख विनश्यति । पूर्व जन्म कथा सर्वं कथयं च दयानिधे ॥ २९ ॥ भृगु उवाच ॥ क्षत्रीवंश समुत्पन्नो बहु सेवी नरो भवेत् । कोत्याधीश गजगामी बन्धु कुल विरोधता ॥ ३०॥ ज्येष्ठ भ्रातं च पुत्रो वा अर्द्धभागी च बालक: । तात मृत्यु भवेल्लोके सुमाता देव पूजनम् ॥३१॥ क्षत्रियं लोभ कृत्वा च भ्रता पुत्रं च मृत्युदा । माता च देव मंडस्य दीर्घ शाप सुखं ददेत् ॥३२॥ शुक्रोवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं किं च जापकम् । बन्धुवान सुखं प्राप्यं सर्व पापं च नष्टकम् ॥ ३३ ॥ भृगु उवाच ॥ स्व-र्णस्य प्रतिमा कार्या सप्तटंक प्रमाणकम् । नराकारो लिखेन्मूर्ति गंगाजल च स्नानकं । गायत्री मंत्रकं जापं अर्द्धलक्ष प्रमाणकम् । श्रेष्ठ विप्र ददेद्दानं सर्व पापं विनश्यति ॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे पुत्र! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। पहले वर्ष से सातवें वर्ष के बीच नेत्र-रोग, उदर-रोग, माता को पीड़ा, पिता को लाभ, विद्यारम्भ तथा भाई के सम्बन्ध का योग हो। ८ से १६ वर्ष की आयु में विद्या की उन्नति हो एवं राज्य से पारितो-षक मिले। १७ से २४ वर्ष की अवधि में नवीन वस्त्राभूषणों का सुख, विवाह, धन-लाभ, राज्य से सम्मान प्राप्ति हो। पत्नी गर्भवती हो, परन्तु गर्भपात की संभावना रहे। किसी परस्त्री से गुप्त-प्रेम हो, उसके कारण भय हो। एक शत्रु उत्पन्न हो। २५ से ३४ तक धन का लाभ हो, राज्य से तथा भूमि से धन लाभ हो। पुत्र-सुख हो, घर में मंगल कार्य हो। स्त्री को पीड़ा हो तथा देशान्तर में

मान-वृद्धि हो। ३५ से ४४ वर्ष में तीर्थ यात्रा हो। बगीचा अथवा जलाशय अथवा देवालय के निर्माण में धन खर्च हो। पूजा-पाठ कथा आदि से मन को शान्ति मिले। ४५ से ५५ वर्ष में शरीर में कुछ आलस्य रहे। पुत्रपौत्र तथा सेवकों से सुख मिले, रोग शान्त हों, धन-लाभ हो, स्त्री को क्लेश हो, मित्र की ओर से क्लेश मिले, तीर्थ-यात्रा हो, भूमि-लाभ हो, संसार में मान बढ़े। ५६ से ६३ वर्ष की आयु में एक शत्रु उत्पन्न हो, जिसके कारण एक कार्य की हानि तथा दूसरे की सिद्धि हो। पुत्र तथा कन्या के विवाह में धन खर्च हो, नित्य सुख मिले। ६४ से ७२ वर्ष की आयु में स्त्री को कष्ट हो तथा उसकी मृत्यु हो। ७४ वर्ष की आयु में ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी गुरुवार स्वाति नक्षत्र तथा तुला के चन्द्रमा में स्वयं देह-त्याग करे। अगले जन्म में, हिमालय के उत्तर भाग में अग्निहोत्र ब्राह्मण के कुल में जन्म हो तथा वहाँ राजा के समान सुख भोगे। इस कुण्डली वाला जातक पहले आनन्द भोगे। बाद में दुःखी हो। सब सुखों के होते हुए भी पुत्र-सुख न हो। स्त्री गर्भवती तो हो, परन्तु बालक थोड़े दिन ही जीवित रहे। शुक ने पूछा-हे प्रभो! किस पाप के कारण इसे पुत्र-सुख न होगा? भृगुजी बोले-हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ था तथा कोटयाधीश एवं हाथी की सवारी करने वाला था। इसके बड़े भाई का एक लड़का था। उसके पिता की मृत्यु हो गई। उसकी माता जिस समय देव-पूजन कर रहा था, उस समय इसने लोभ के वशीभूत होकर अपने भतीजे को मार डाला, उस समय उस बालक की माता ने इसे कठोर शाप दिया, उसी के कारण इसे पुत्र-सुख प्राप्त नहीं होगा। यह सुनकर शुक ने पूछा-हे तात! किस उपाय से इसका पाप नष्ट होकर पुत्र-सुख प्राप्त हो सकता है, वह कहिए। भृगुजी बोले- सात टंक प्रमाण स्वर्ण की प्रतिमा बनवा कर, उसे गंगाजल से स्नान कराये,

फिर ५१ हजार गायत्री मन्त्र का जप करके। उसे किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान करदे तो इसके पाप का प्रायश्चित्त हो जाएगा तथा पुत्र सुख की प्राप्ति होगी ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ अस्य जातस्य कुण्डल्यां फलादेशं शृणुं सुत ॥१॥ कन्यायां गुरु शौरि: स्यात् सिंहे केतु यदा भवेत् । कुंभ राशि स्थितो राहु काकली योग उच्यते ॥ प्रथमेऽब्दे हगं पीड़ा द्वितीये दन्त पीड़नम्। तृतीये च चतुर्थे वा मातृ भग्नी समुद्भवा ॥ २-३॥ मातृपीड़ान सन्देहो पिता चिन्तातुरो भवेत् । धन लाभ भवेत् भूरि: भूमि लाभस्तथैव च ॥४॥ प्राप्तेतु पंचमेवर्षे यावदष्टमे सुते: । धनधान्यादि लाभञ्च भूरि भूपात् दिने दिने ॥५॥ व्रणरोगो विजातीयात् विप्रात्श्च तथैव च । नंद वर्षाद्दिगे वत्स वेद चन्दु गतो ऽपि वा ॥ ६॥ गुप्त चिन्ता पितुश्चित्ते गुप्त खेद तथैव च। वृद्ध मृत्यु भवेत्पुत्र कुटुम्बेषु न संशय: ॥७॥ शर-चन्दु गते वर्षे शशि युग्म गतोऽपिवा। विवाहादि महोत्साहो जायते नात्र संशयम् ॥ ८॥ राजद्वारे ऽति मानंच धन प्राप्ति स्तथैव च। युग्म नेत्र गते वर्षे शशित्रिंश गते पिवा ॥ ९॥ पुत्र वा यदि वा कन्या लक्ष्मी रूपा समुद्भवा। धनधान्य समृद्धिश्च मङ्गले च धनं व्यय: ॥ १०॥ मान कीर्ति प्रवृद्धश्च ज्ञान बुद्धि स्तथैव च । वाहनादि सुखं सर्व गोप्यं धन समुद्भव: ॥११॥ युग्म राम गते वर्षे नेत्र वेद गतेऽपि वा। नाना वाहन संयुक्त: नानाद्रव्य समाकुला ॥१२॥ आरामे वाटिका कूपं तथा मन्दु शिवालये । कन्या पुत्र विवाहे च व्ययं भवति निश्चय: ॥१३॥ नन्द वह्नि गते वर्षे नाग वेद गतोऽपि वा । वृद्ध मृत्यु कुटुम्बे च धन व्यय महद्भवेत् ॥१४॥ कटमेकं विजातीयात् गौदानेन भवेत् सुखम्। वसु बाणाब्दगे

३	२ मे.	१ चं.
४	११	१२ सू. बु.
५ के.		११ रा. शु.
६ बृ. श.	८	१०
७		९

वर्षे नद षष्ठ गतेऽपि वा ॥१५॥ धन धान्य समृद्धिश्च मंगलं गृहमेव च। लघु पुत्र भवेत्कष्टं पत्नीचिन्तान्वितो भवेत् ॥ १६ ॥ पुत्र पौत्र धनैर्युक्त: मोदते भुविमण्डले। व्योम सप्ताब्द मायुष्यं मासिभाद्रपदे शुभम् ॥ १७ ॥ कृष्ण पक्ष त्रयोदश्यां निर्याणसमृदाहृतम्। पुण्याढ्यज कुले जातं पापान्यचतिधने गृहे ॥१८॥ आसीज्जन्मान्तरे चैव तपस्वी ब्राह्मण: किल:। धनंधरेऽति विख्यातो मदान्धो च धनाधिप: ॥१९॥ एकस्मिन्समये विप्र भाविनोऽर्थस्य वै बलात्। दण्डकारण्य निकटे तपश्चर्या यथा करोत् ॥२०॥ ब्राह्मणस्य सुतस्तत्र सर्वालंकारभूषित:। धन लोभाहृनस्तेन भाविनोऽर्थस्य वै बलात् ॥ तस्य माता पिता द्वौ च पुत्र स्नेहेन दु:खिता। अचिराच्च मृत: सोऽपि गतो वै यम शासनम् ॥ २१-२२ ॥ तेन कर्म विपाकेन नरके पाचितो भृशम्। पश्चात्मनुष्य मापन्नो व्रतदान प्रभावत: ॥२३॥ मृत: पुत्रो भवेदस्य जातो जात विनश्यति। कृत्वा स्वर्णमयी मूर्ति विप्र बालस्य शोभना ॥ २४ ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन संकल्पं ब्राह्मणं ददेत्। हत: श्रेयो भवेत्तस्य वंश वृद्धि न संशय: ॥२५॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले- हे शुक्र! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। इस जातक को १ से ४ वर्ष की आयु में नेत्र-रोग तथा दन्त पीड़ा होगी। भाई-बहिन का लाभ होगा, माता को पीड़ा तथा पिता को चिन्ता होगी। फिर धन लाभ तथा भूमि लाभ भी होगा। ५ से ८ वर्ष में धन-धान्य का लाभ हो, व्रण रोग तथा विद्यारंभ हो ९ से १४ वर्ष की आयु में पिता को गुप्त चिन्ता तथा खेद हो। कुटुम्ब में किसी वृद्ध की मृत्यु हो। १५ से २१ वर्ष की आयु में विवाह, राज्यसे सम्मान लाभ तथा धन प्राप्ति हो। २२ से ३१ वर्ष की आयु में पुत्र अथवा कन्या का जन्म हो। धन-धान्य की वृद्धि हो। मान-कीर्ति बढ़े। वाहनादि सुख तथा गुप्त-धन का लाभ हो। ३२ से ३८ वर्ष की आयु में वाहन, धन, बगीचा, कुआँ, मन्दिर शिवालय का [illegible]

भृ० सं० १०७०

भा० टी०

कष्टभी हो, जो गौदान से दूर हो। ४९ से ५७ वर्ष की आयु में धन-धान्य की वृद्धि, घर में मंगल-कार्य हों। छोटे पुत्र को कष्ट हो। पत्नी चिन्तित हो। पुत्र-पौत्रों के साथ सुखी रहे तथा पृथ्वी पर कीर्ति का विस्तार हो। ५८ से ६९ वर्ष की आयु में धन-धान्य की वृद्धि हो। छोटे पुत्र को कुछ कष्ट तथा पत्नी को चिन्ता हो। फिर कष्ट दूर हो तथा सब प्रकार से सुखी हो। ७० वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी को मृत्यु हो। पुण्य-कर्मों के प्रभाव से अगले जन्म में राजकुल में जन्म ले अन्यथा पाप-कर्म करने से निर्धन घर में जन्म होगा। हे पुत्र! अब इसके पूर्व जन्म का वृत्तान्त सुनो। पहले यह तपस्वी ब्राह्मण था तथा ध्वजाधर के नाम से प्रसिद्ध, घमण्डी तथा धनी था। एक समय यह दण्डकारण्य के समीप तपस्या कर रहा था, तभी वहां एक स्वर्णालंकार युक्त ब्राह्मण-पुत्र आ पहुँचा। इसने धन के लोभ से उस की हत्या करदी। तब उसके माता-पिताभी पुत्र-स्नेह के कारण उसे वियोग जन्य शोक से दुःखी होकर मर गये। कुछ दिनों बाद यह भी मृत्यु को प्राप्त होकर यमलोक में पहुंचा और अपने पाप-कर्म के कारण बहुत समय तक अनेक नरकों में रहा। तत्पश्चात् पूर्वकृत तपस्या के प्रभाव से इसने पुनः मनुष्य योनि में जन्म लिया है। परन्तु इसने जो पाप किया था, उसके प्रभाव से इसे सन्तान-सुख नहीं मिलेगा। प्रथम तो इसके मृत-पुत्र का ही जन्म होगा और यदि सजीव बालक का जन्म हुआ भी तो वह कुछ दिनों बाद मर जाएगा। अतः उस पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए इसे एक स्वर्ण निर्मित ब्राह्मण-पुत्र की मूर्ति तय्यार करवानी चाहिए तथा पूर्वोक्त विधि से अर्थात् ताँबे के कलश में भरे घृत के भीतर रख कर, उसे किसी ब्राह्मण को दान करदेना चाहिए। ऐसा करने पर ही इसकी वंश-वृद्धि होगी।। इति शुभम्।।

ॐ॥ शुक्र उवाच ॥ अस्याञ्जातस्य कुण्डल्यां भाषतां देव भाविनम्। तच्चकार्ण्य भृगुः शुक्रं वर्णयामास तत्फलम् ॥ भृगुरुवाच॥ धीरो वीरो मृदुर्वाणी परसेवारतः सदा। प्रवीणः कृपणः क्रुद्धः बालरुग्णश्च शोभनः॥ यौवने दन्तरुग्णोऽयं परद्रव्याक्षियोजकः। मनसा व्याकुलो नित्यं गार्हस्थ्यात् दुःखित सदा॥ राजभोगी यदा प्राप्स्येत् हास्यमिष्ठान्नयोः प्रियः। प्रतापी स्थितिवक्ता च कार्पण्यार्जित द्रव्यवान्॥ प्रवीणा सन्ततिः नष्टुं अस्याग्रैव च तद्धनम्। पञ्चकन्याः त्रयः पुत्राः रूपशीलयुता प्रिया॥ चिन्तितस्य स्वभावेन वसेदस्य प्रतापतः। शत्रवो नहि स्थास्यन्ति योजनास्यारिघातिनी॥ स्वाभिमानोऽभिमानत्वं गच्छेत् राजजयोत्तरम्। रक्तदोषेण पीडास्मिन् स्वार्जितेन धराधिप॥ रक्तस्रावती भार्या आपादागत हानितः। वसेद्दूरञ्च भाग्योऽस्य एकविंशैक त्रिंशते॥ नैक पञ्चाशते वर्षे जीवने हानिकारकम्। तृतीयं सप्तमञ्चैवं नवमाष्टादशन्तथा॥ दशमं शोडषं वर्षं द्विचत्वारिंशतं क्वचित्। द्विपञ्चाशत संख्यायाः अष्टविंशतिकंतथा अष्ट सप्तति वर्षस्यं सप्तम्यामर्कवासरे। मार्गशीर्षे सितेपक्षे अस्यास्य परमावधिः॥ यदि चन्द्रो भवेदस्यां वृषे कर्के च वृश्चिके। भाग्यवान् पुरुषार्थी च भाग्ये ऽति विडम्बितः॥ पिशाचः पूर्वकालस्य द्विजत्वञ्च प्रयास्मति। ॐ नमो वरुणायेति मंत्रस्य पूजनार्चनम्॥ कुर्याच्च विपदां हर्तुं चारयेदिष्ट सिद्धयै। मुक्तान्नीलमञ्चासौ ग्रहमण्डलमीदृशम्॥

भाव	ग्रह
१	
२	
३	
४	के.
५	
६	गु.
७	
८	
९	
१०	रा. चं.
११	बु. श. शु.
१२	सू. मं.

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे दयानिधे! इस कुण्डली वाले जातक का फल कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले – यह जातक गंभीर चेष्टा वाला, वीर, मधुरभाषी, श्रेष्ठ, क्रोधी, प्रवीण, कृपण, ज्ञानी, सेवाभावी तथा बन्धुप्रिय होगा। बाल्यावस्था में रोगी, मंद-दृष्टि, गृहस्थी से दुखी, मध्यमायु में दन्तरोगी तथा नीचों की संगति करने वाला होगा। यह परधन-लोभी, मानसिक रूप से व्याकुल, कभी-कभी राजाओं जैसा सुख भोगने वाला, सुन्दर, हास्यप्रेमी, मिष्ठान्न भोजी प्रतापी और स्पष्टवादी होगा। यह कृपणता से धन-संचय करेगा, पर उस धन को इसकी सन्तानें नष्ट कर देंगी। इसके तीन पुत्र, और पाँच कन्याएं होंगी। इसकी पत्नी विदुषी, सुन्दरी तथा सरल स्वभाव की होगी। परन्तु वह इस जातक के उग्र स्वभाव

के कारण सदा दुःखी बनी रहेगी। इसके प्रताप के सम्मुख शत्रु नहीं ठहर सकेंगे। यह विवादों में विजयी होगा। स्वउपार्जित धन से गृह-भूमि का लाभ होगा। इसके शरीर में रक्त-विकार एवं रक्तस्राव आदि के दोष बने रहेंगे। आकस्मिक-दुर्घटना से इसे सावधान रहना चाहिए। इसका भाग्योदय २१, ३१ तथा ४९ वें वर्ष में होगा। जीवन के ३, ७, ९, १०, १६, १८, २८, ४२ तथा ५२ वें वर्ष अनिष्टकारक रहेंगे। मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को मध्याह्न के समय ७८ वर्ष की आयु में मृत्यु होना संभव है। यह पूर्वजन्म में अन्तरिक्षवासी प्रतापी पिशाच था और अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर शुभ कर्म करेगा। विपत्ति के समय 'ॐ वरुणाय नमः' मन्त्र का जप तथा वरुणदेव का पूजन करना एवं मोती तथा नीलम धारण करना शुभ रहेगा। इस कुण्डली में यदि चन्द्रमा कर्क अथवा वृष राशि पर हो तो जातक बड़ा पुरुषार्थी एवं भाग्यवान् तथा श्रेष्ठ सन्तति वाला होगा। यदि वृश्चिक का चन्द्रमा हो तो भाग्योदय बड़ी कठिनाई से होगा। अन्य स्थानों में चन्द्रमा शुभ फलकारक रहेगा॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ फलादेशं किमस्यास्ति जातस्यास्यां दयानिधे। मार्गवस्योक्तिमाकर्ण्य भृगुरेवमवर्णयत्॥ भृगुरुवाच॥ क्षीणकामनया पूर्णः चिन्तकः दीर्घकालिकः। गायको बालरुग्णश्च सेवकः व्याकुलः सदा॥ चक्षुपीड़ायुतो दन्तैः रुग्णश्च पर-निन्दकः। रूपवान्नास्थिरः क्रोधी दुःशील: सत्यभाषकः॥ बुद्धिमान् वामनो जानौ सव्रणश्चाल्पशत्रवः। परोक्षनिन्दकाश्चास्य रोगमुक्तो न सर्वदा॥ विजयी राजद्वारेऽसौ न्यायार्थञ्च जनैर्वृतः। राजमान्य सभायाश्च स्त्रिया पुत्रद्वयं भ्रमात्॥ सेविष्यते तथा भाग्यमुदयेत् द्वाविंश संख्यके। सप्तत्रिंशत वर्षायौ त्रिपञ्चाशतेऽपि च॥ वर्षन्नेष्ट करन्नूनं द्वादशाष्टदशन्तथा त्रयोविंशात्मकञ्चाब्दं नवत्रिंशत संख्यकम्॥ षड्पञ्चाशतञ्चास्मै द्विसप्ततितमं सदा। पैतृकभूमिलाभोऽपि भवेदाया-दृकं व्ययः॥ तस्माञ्च व्याकुलो नित्यं ऋणजीवी भवेत् तदा। कस्याप्यापत्तिनाशाय पुष्परागस्य धारणम्॥ शुभं जन्म-नि पूर्वस्मिन् क्षत्रियश्चाग्रजन्मनः। म्लेच्छश्चापत्ति कालेऽस्मै शिवपूजेष्ट सिद्धये॥ यदि चन्द्र भवेदस्य तृतीये

भृ० सं० ४०८३

भा० टी०

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश बताने की कृपा करें। भृगुजी बोले - हे पुत्र! इस कुण्डली वाला जातक अल्पकामी, अधिक चिन्तनशील, गंभीर स्वभाव वाला, संगीत-निपुण, सेवा भावी, बाल्यावस्था में रोगी, नेत्र-पीड़ा युक्त, दन्तरोगी, पर-निन्दक, क्रोधी, चंचल, कुचाली, देखने में सुन्दर, शील-रहित, परन्तु सत्यवादी, बुद्धिमान्, छोटे कद वाला तथा जाँघ में व्रण-चिह्न वाला होता है। इसके विरोधी परोक्ष-निन्दक होंगे, परन्तु सामने कुछ नहीं कह सकेंगे यह कभी रोगी और कभी सुखी रहेगा तथा विवाद-विजयी होगा। अनेक लोग इसके पास न्याय कराने को आते रहेंगे। इसे अपनी स्त्री के कारण सभा एवं राज्य में सम्मान प्राप्त होगा। एक या दो पुत्र कठिनाई से होंगे, जो इसकी सेवा करेंगे

१
१२ सू. मं. बु.
शु. श. ११
रा. १०
२ चं.
३
९
४ के.
६ गु.
८
५
७

इसका भाग्योदय २२, ३० तथा ५३ वें वर्ष में होगा। इसके लिए १२, १८, २३, ३९, ५६ तथा ७२ वें वर्ष अपमृत्युकारक एवं नेष्ट सिद्ध होंगे। पैतृक गृह-भूमि का लाभ होगा, परन्तु आय से खर्च अधिक रहने के कारण सदैव व्याकुलता रहेगी। यह ऋण लेकर काम चलायेगा। इसकी परमायु ७७ अथवा ७८ वर्ष की होगी। माघ मास के शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को इसकी मृत्यु होना संभव है। विपत्ति-निवारण के लिए पुखराज धारण करना इसे शुभ रहेगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में म्लेच्छ वंश में उत्पन्न होगा। शिवजी का पूजन करते रहने से इसके अरिष्ट तथा संकट दूर होते रहेंगे। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि तृतीय भाव में हो तो जातक अत्यन्त भाग्यवान, परिश्रमी तथा साहसी होगा। यदि चन्द्रमा नवम भाव में हो तो जातक नीच वृत्ति का होगा। यदि पंचम भाव में चन्द्रमा हो तो सन्तानें बार-बार जन्म लेती और मरती रहेंगी। अन्य भावों में स्थित चन्द्रमा का फल तदनुसार समझना चाहिए। सप्तम भाव में गुरु होने के कारण इस जातक की पत्नी रूपवती तथा सती होगी और वह इसकी उन्नति में अत्यधिक सहायक सिद्ध होगी॥ इति शुभम्॥

भृ० सं० १०५९

भा० टी०

ॐ॥ शुक्र उवाच ॥ अस्यान्जातस्य जीवस्य भविष्य बोद्धु मिच्छत:। शुक्रस्य वचनं श्रुत्वा भृगु: वाणीमुदीरयेत् ॥ भृगुरुवाच ॥ शृणु तात: जातको ऽयं स्वाभिमानी विवेकवान् । नीत्या शत्रूञ्जयी तुष्ट: गौराङ्ग: नीतिवान्नपि ॥ वपुसा मध्यमो विद्वान् काव्य सङ्गीतयो: प्रिय: । दानशीलो मनस्वी च भाग्यवान्च धनाधिप: ॥ चिन्तित: आत्मजैस्तद्वत् बन्धुभिरपि दु:खित:। राजसेवी च शोधे ऽपि प्रवीणो व्यवसायवान् ॥ आननार्तश्च चक्षुर्भ्यां तथा क्षीण कुटुम्बवान् । सुन्दरी छिद्रदन्त्या च रुग्णोदरेण भार्यया ॥ विवाहो ऽस्ति त्रियोविंशे वीर्यदोषश्च स्वात्मन:। उपचारेण वीर्यस्य गोपालसन्तति शुभम् ॥ सन्त्वा त्मजाश्च भाविन्य: कालश्चोत्तमो दृश: । एकादशे त्रयोविंशे विंशैक नवत्रिंशतम् ॥ अष्टादशाष्टविंशे च पञ्चाशत चतुर्थकम् ॥ सप्तत्रिंशात्मकाब्द ञ्च त्रिनपंचाशतं क्वचित् ॥ जीवने घातकं मृत्यु: मनोवैकृति तो ऽथवा । मुखरोगेण रक्तस्यदोषेण फाल्गुने तथा ॥ कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां च वर्षे त्रिषष्ठि संख्यके ॥ हीरकं नीलमञ्चासौ सन्तत्यै भाग्य वृद्धये ॥ भौमार्चनं व्रत ञ्चास्मै विपत्कालस्य नाशनम् । चन्द्रस्यास्य द्वितीये वा पञ्चमे षष्ठ संख्यके ॥ द्वादशेचेद भवे देव धनी सन्ततिवान्नपि । रुग्णो व्ययी निर्गुणो ऽसौ द्विजो भूत्वा तरिष्यति

भाव	ग्रह
१	
२	शु०
३	सू० मं० बु०
४	के०
५	
६	गु०
७	चं०
८	
९	
१०	रा०
११	श०
१२	

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगु महाराज बोले – हे पुत्र। इस कुण्डली वाला जातक स्वाभिमानी, सत्यवादी, परमपुरुषार्थी, नीतिज्ञ, गौरवर्ण, मध्यम कद वाला, प्रतापी, विद्वान्, विवेकी, सङ्गीत तथा काव्य का प्रेमी, शत्रुओं पर अपनी नीतिज्ञता से विजय पाने वाला, दानी, सन्तोषी, ऐश्वर्यशाली, भाग्यवान्, धनी, सन्तान की ओर से चिन्तित, स्वयं अपने भाइयों से प्रेम रखने वाला, परन्तु भाइयों द्वारा दु:ख पाने वाला, मनस्वी, शोध कार्य में प्रवीण, राज्य-कर्मचारी, अन्य व्यवसायों को भी करने वाला, मुख-रोगी, मन्दनेत्र तथा अल्प कुटुम्ब वाला होता है। इसका विवाह २३ वर्ष की आयु में सुन्दर, दाँतों में छिद्र वाली तथा उदर-रोगिणी स्त्री के साथ होगा। यह

जातक वीर्य-दोषी होगा. अतः इसे इस दोष की चिकित्सा करते तथा सन्तानगोपाल स्तोत्र का पाठ करते रहने पर ही सन्तान की प्राप्ति हो सकेगी। इसके जीवन के ११, २१, २३, ३५, ४६ तथा ५४ वें वर्ष उत्तम रहेंगे तथा १५, १८, २८, ३७, ४८ तथा ५८ वें वर्ष कष्टकर सिद्ध होंगे। इसकी मृत्यु मानसिक-विकृति अथवा मुख द्वारा रक्तस्राव के कारण फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी रविवार को ६३ वर्ष की आयु में अपने घर पर ही होनी संभव है! हीरा और नीलम धारण करने से सन्तान-प्राप्ति तथा भाग्योन्नति होगी। संकट दूर करने के लिए मंगलव्रत तथा मंगल का पूजन हितकर रहेगा। यदि कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, पंचम, षष्ठ अथवा द्वादश भाव में हो तो यह क्रमशः धनी, सन्तानवान् तथा रोगी और खर्चीला होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ कृपयाजातकस्यास्याः फलादेश विविच्यताम्। ज्ञात्वा दैत्यगुरोः भावं श्री भृगुः प्रत्युदाहरत्॥ भृगुरुवाच॥ जातको ऽयं गुणग्राही चतुरो धार्मिकस्तथा। विद्वान् विवेकशीलश्च कलहशत्रुजित् सदा गीतप्रीतिः प्रतापी च सौम्यो नय विशारदः। स्वाभिमानी प्रवक्ता च नेत्रदोषेण संयुतः॥ रसिकः वणिजः पित्रो सेवकः दीर्घबाहुवान्। राजभीतो विलासी च धनग्राही च वीर्यवान्॥ पीड़ितो जठरेणासौ पत्निकः शुक्रदोषयुत् वृकोदरो च वाणिज्ये उद्दोलन प्रवर्तकः॥ उदार उग्रकर्ता ऽसौ सुखं प्राप्नोति सर्वदा। मतान्तरञ्च मातुर्वा स्वजनोः वैरिणः सदा॥ वाह्यं जीवनमेतस्य उत्तमं शान्ति संयुतम्। सन्तत्यां पुत्रकौ द्वौ च प्रयत्नेन भविष्यतः। वार्द्धक्ये सेवकौ तौ स्तां अन्यथा कन्यका त्रयम्। मतभिन्नश्च तै शाकं भूवाहन पुतो गृहात्। आयोरवधि वैशाखे अष्टम्यां शुक्लपक्षयो। अष्ट षष्ठि तमे वर्षे शुक्र दोषेण वर्तते॥ पूर्वं पत्नि मृयादस्य परं नाति वियोग भाक्। तृतीयं सप्तमं विंशञ्चषड्त्रिंश त्रयोदशम्। दिन पञ्चाशतं वर्षं पञ्च पञ्चाशतं तथा। त्रिषष्ठि संख्यकञ्चास्मै नैवोन्नति दायकम्॥ सप्तमष्टादशे वर्षे चतुःत्रिंशतविंशके। पञ्चाशतञ्च संख्याकं द्विपञ्चाशतं क्वचित्॥ नैक षष्ठ्येक षष्ठ्याख्ये जीवनोत्कर्ष कारकम्। स्वेच्छाचारिणि सूनुश्च पूर्वं भाविनि

विपुज:॥ कस्मिन्नप्यरिष्टेऽपं शन्नोदेवीति संजपेत्। नीलमं रजते धृत्वा अङ्गुल्यां धारयेत् स्वयम्॥ अस्ये न्दुश्चेच्चतुर्थे वा पञ्चमे सप्तमेऽपि वा। नवमैकादशे तिष्ठेत् धन कामी च मातृधी:॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! इस कुण्डली का फलादेश कहने का कष्ट करें। यह सुनकर भृगुऋषि बोले- हे पुत्र! यह जातक अत्यन्त चतुर, विद्वान्, विवेकी, परम धार्मिक, गुणग्राही, काव्य-सङ्गीत-प्रेमी, बहुविद्य, शत्रुजित, सुन्दर, प्रतापी, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, प्रिय-वक्ता, नीति-निपुण, नेत्र-दोष-युक्त, रसिक, व्यवसायी, माता-पिता का भक्त, गौरवर्ण, दीर्घवपु, राज्य से भय पाने वाला, स्त्री-प्रेमी, विलासी, धन-संचयी, उदर-रोगी, बलवान्, वीर्य-दोषी, सन्तान की ओर से दुःखी, व्यवसाय में उथल-पुथल करने वाला, बड़े पेट वाला, उग्रकर्मा, उदारचेत्ता तथा सुखी-जीवन बिताने वाला होगा। अपनी माता से इसका मतभेद रहेगा। स्वजन शत्रुता करेंगे। इसका वाह्य-जीवन श्रेष्ठ तथा सुख-शान्ति सम्पन्न होगा। सन्तानों में केवल एक या दो पुत्र ही उपाय द्वारा प्राप्त हो सकेंगे अन्यथा तीन कन्यायें रहेंगी। पुत्र वृद्धावस्था में सेवा करेंगे, परन्तु उनसे मतभेद बना रहेगा। गृह-भूमि-वाहन आदि का लाभ होगा। इसकी मृत्यु शुक्र-दोष के कारण ६८ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार को घर पर ही होगी, ऐसी संभावना है। इसके जीवन में ३, १३, २७, ३६, ४८, ५५ तथा ६३ वें वर्ष हानिकारक तथा ७, १८, २४, ३४, ४०, ५२, ५९ एवं ६१ वें वर्ष लाभकारी रहेंगे। यह पूर्व जन्म में स्वैरिणी-स्त्री का पुत्र था तथा अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा। अरिष्ट शान्ति के लिए 'ॐ शन्नो देवी०' इस मन्त्र का जप तथा चाँदी की अँगूठी में जड़वा कर नीलम धारण करना शुभ रहेगा। चन्द्रमा यदि चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, नवम अथवा एकादश भाव में हो तो जातक क्रमश: मातृभक्त, सन्तति-हीन, बहुस्त्री भोगी, भाग्यवान् तथा धनवान् होगा॥ इति,

५	के. ३ म	
गु. ६	सू. ४ बु. शु.	२
७		१
चं. ८	१० श. रा.	१२
९		११

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ श्रोतुमिच्छामि भाव्यं वै अस्यां जातस्य देहिनः। कृपया वदतां स्पष्टं भविष्ये तस्य जीवनम्॥ भृगु उवाच॥ अत्रयो लभते जन्म प्रतापी च पराक्रमी। वैरीन्नुत्पादयेत् स्वस्य तानैव शामते ऽपि च॥ ऐश्वर्यवान् पितुर्भक्तः धार्मिकः दीर्घ देहवान्। गौरः सौम्यः विकारेण युक्त पत्न्या पतिर्भवेत्॥ भोगी स्त्रीणां प्रवीणश्च योजनां प्रवर्तने। संगीत कलयो : प्रीतिः राजेव राज संमतः॥ कर्त्तव्यं कुरुते किञ्चित् आलस्येनैव संयुतः। अल्पायुः राजनीतिज्ञः वाग्बलानां प्रियो धनी॥ लोकाचार विदश्चापं व्ययशीलः प्रदर्शने। देशाटन प्रियः पुत्राः पञ्चैवेका च कन्यका॥ जीवने ऽनुभवे त्रुटिं प्रभावाद्वैरिणां तथा। योग्याः सेवकाः पुत्राः भार्यापि विदुषीं भवेत्॥ सुरा सुन्दरि प्रेयश्च स्वप्रलापेण कीर्तितः। अस्त्रशस्त्र प्रहारेण त्रिचत्वारिंशते गृहे॥ वर्षे कार्तिक कृष्णस्य अष्टम्यां मृत्यु माप्नुयात्। मातृवैयोगिक वर्षे तृतीयं जीवने सदा॥ चतुर्विंशैक विंशे च एकादशाष्ट विंशते। जीवने नेष्ट हेतूनि उत्तमानि च पञ्चमम्॥ सप्तदशे त्रयोविंशं द्वात्रिंश दशमं तथा। नवत्रिंश तथा किष्टे नीलम हीरके वहेत्॥ यमस्य पूजनं तद्वत् जीवने फलदायकम्। कन्यापतिं परित्यज्य चतुष्टं पुत्रकं तथा॥ गच्छेद् द्वितो ऽस्य पुत्रश्च कुटुम्बं परिचालयेत्। पुरा योगेण भ्रष्टोऽयं नृप आसीत् पुनः भवेत्॥ शूद्रकुले समुत्पन्नः प्रसिद्धिं प्राप्नुयात् सदा। चन्द्रश्चेदस्य लग्ने स्यात् तृतीये वाष्टमे भवेत्॥ चतुर्थे पत्नि जेता च भाग्यवान् गृह भूगतः। एवं फलं च कुण्डल्याः अस्याः वत्स सुविस्तृतम्॥

कुण्डली (भाव : ग्रह)
५ : सू. शु.
६ : बु.
४ : मं. के.
७ : गु.
३
८ : चं.
२
९
११
१
१० : श. रा.
१२

भावार्थः शुक्र ने पूछा - हे तात! आप इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहें। महर्षि भृगु बोले - हे पुत्र! यह जातक बड़ा प्रतापी, पराक्रमी, अपने विरोधियों को स्वयं जन्म देने वाला तथा उनका शमन करने वाला, ऐश्वर्यशाली, पितृभक्त, धर्मात्मा, गौरवर्ण, लम्बे कद वाला, अत्यन्त सुन्दर, अस्वस्थ स्त्री वाला, अनेक

स्त्रियों का भोगी, योजना-कुशल, संगीत-प्रेमी, राजतुल्य अथवा राज्य से सम्मान पाने वाला, कुछ आलसी, कर्तव्य-परायण, राजनीतिज्ञ, अल्पायु, धनी, बन्धु-बान्धवों को प्रेम करने वाला, व्यवहार-कुशल, चतुर, शान-शौकत में धन खर्च करनेवाला एवं यात्रा-प्रेमी होता है। इसे ५ पुत्र तथा एक कन्या की प्राप्ति होगी। विरोधियों के कारण इसके दैनिक-सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। इसके पुत्र सुयोग्य तथा सेवाभावी होंगे। स्त्री विदुषी तथा कुलीना होगी। यह सुरा-सुन्दरी का प्रेमी तथा प्रतापी भी होगा। कार्तिक कृष्णा ८ गुरुवार को, ४३ वर्ष की आयु में ही अस्त्र-शस्त्र के आघात से इसकी मृत्यु होना सम्भव है। जीवन का तीसरा वर्ष मातृ-वियोग-कारक होगा तथा ११, २१, २८ एवं ३४ वें वर्ष नेष्ट फलदायक रहेंगे। ५, १०, १७, २३, ३२ एवं ३९ वें वर्ष उत्तम सिद्ध होंगे। इसे नीलम तथा हीरा धारण करना हितकर रहेगा। अरिष्ट के समय यमराज का साङ्गोपाङ्ग पूजन करना उचित है। यह अपने पीछे विधवा-पत्नी, एक कन्या तथा चार पुत्रों को छोड़ेगा। यह पूर्व जन्म में योग-भ्रष्ट प्रतापी राजा था। अगले जन्म में शूद्र-कुल में उत्पन्न होगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः स्त्री-जित, भाग्यशाली, गृह-भूमि-हीन तथा मध्यमायु होगा ॥ इति शुभम्॥

ॐ ॥ शुक्र उवाच ॥ अस्यान्जातस्य भाव्यं श्रोतुमिच्छाम्यहं पितः। श्रुत्वेदं भृगुना तस्य फलमेव मुदाहृतम् ॥ भृगुरुवाच ॥ सौम्योऽयं रूप सम्पन्नः मानी घोर पराक्रमी। धनाढ्यः क्रोधयुक्तश्च बन्धुहीन परंप्रियः॥ स्वाभिमानी राजमान्यः पञ्चात्मज पिता भवेत्। भार्या रूपवती चास्य सम आय व्ययात्मकः॥ विद्वान् मातृविहीनश्च प्रभावी नित्य जीवने। धर्मधी वाक्पटुश्चास्य सुतौ सेवा करिष्यतः॥ सतां प्रियश्च भार्यायां प्रभावः परमावधिः। जीवनस्यास्य मध्ये ऽस्ति द्विषष्ठ्यैक षड्द्वयोः॥ आषाढ शुक्ल पंचम्यां जीवनोदय कारकम्। सप्तविंशतमं वर्षं सप्तत्रिंशत संख्यकम्॥ त्रिचत्वारिंशतञ्चैवं घातकं निम्नचाङ्कितम्। द्वाविंशैकान विंशेञ्च अष्ट विंशैक षष्ठिके॥ चतुपञ्चाशतञ्चाब्दं चतुर्विंशत संख्यकम्। घातकानि च भाग्याय देह पीडात्मकानि च॥ गुह्यास्य योजनांनेवं साफल्य

प्राप्नुयात् क्वचित् । विपत्कालाय मन्त्रं ॐ अग्निपूतं पुरोदधे॥ हवनं पूजनञ्चास्य कुर्यान्माणिक्य धारणम् ।चतुर्थे यदि कुण्डल्यां चन्द्रः स्यादादि तत्फलम् ॥ बन्धु हीनो भवेद्वास्य द्वितीये स्थिति सम्भवेत् । अनपेक्षित रूपेणपैतृकं द्रव्य माप्नुयात् ॥ अष्टमे यदि चन्द्रोऽस्य तदातस्यास्ति निश्चितम् । वातरोगी भवेद्नूनं ग्रहाणां योग ईदृशम् ॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले – हे पुत्र! यह जातक महा मानी, धनी, सुन्दर, क्रोधी, बन्धु-हीन, पराक्रमी, सर्वप्रिय, स्वाभिमानी, प्रतापी, राजाद्वारा सम्मानित, पाँच पुत्रों तथा सुन्दरी स्त्री वाला, आय-व्यय में समान, सभाजित, विद्वान, बहुज्ञ, अनुभवी, मातृ-सुख से वंचित, धर्म में प्रीति रखने वाला, वाक्-चतुर तथा दैनिक जीवन में चमत्कारी प्रभाव रखने वाला होगा । जीवन में दो पुत्र इसकी सेवा करेंगे । स्वास्थ्य उत्तम रहेगा । पाप-कर्म से डरेगा तथा श्रेष्ठजनों की संगति करेगा । यह स्त्री पर प्रभाव रखने वाला होगा । इसकी आयु ६१ अथवा ६२ वर्ष के लगभग होगी । आषाढ़ शुक्ला पंचमी गुरुवार को सायाह्न में इसकी मृत्यु होना संभव है । इसके भाग्योदय में निरन्तर रुकावटें आती रहेंगी । विरोधी-जन प्रबल बने रहेंगे । इसका भाग्योदय २७, ३७ तथा ४३वें वर्ष में होगा । जीवन के १९, २२, २८, ३४, ५४ तथा ६१वें वर्ष में अङ्गपीड़ा तथा अन्य प्रकार के घात आदि कष्ट होंगे । गुप्त-योजनाओं में सफलता नहीं मिलेगी । विपत्ति के समय 'ॐ अग्निदूतं पुरोदधे०' इस मन्त्र का जप एवं हवन तथा अग्निदेव का पूजन करना शुभ फलदायक रहेगा । माणिक्य को स्वर्ण की अँगूठी में जड़वा कर पहनना शुभसिद्ध होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि चतुर्थ भाव में हो तो जातक बन्धु-हीन होगा । द्वितीयभाव में हो तो पैतृक-धन की अनायास प्राप्ति होगी और यदि अष्टम भाव में हो तो जातक शीत-वात रोगी बना रहेगा ॥ इति शुभम् ॥

१ सू०
२
३
४ के०
५
६ गु०
७
८ चं०
९
१० रा०
११ शु० श०
१२ मं० बु०

ॐ॥ शुक्र उवाच ॥ अस्य कुण्डलिवान् तात भविष्यं कृपया वद । सुराचार्यो निशम्येतत् वर्णयामास तन्मन: ॥ भृगुरुवाच ॥ अस्मिन् लग्ने समुत्पन्न: दृढ उत्तेजनात्मक: । विद्या बुद्धि प्रयत्नश्च रूपवान् पत्निपीड़ित: ॥ गार्हस्थस्य प्रवीणोऽयंमात्मवान् मातृवञ्चित: । अग्रजाग्रज हीनश्च योग्यताहत शत्रुवान् ॥ स्वस्थ: पौरुष सम्पन्न: पित्रयोन्नति विघातक: । न्यायहा धर्मक्षीणश्च धन वृद्ध्यै सयत्नवान् ॥ मतभिन्न: कुटुम्बाच्चं पुंसि क्षयानुभावक: । धातुरोगी भवेदेव विमतश्च सपुत्रत: ॥ राजसेवी तथालस्यं विद्योन्नत्याञ्च स्वार्थवान् । पुत्र इयं भवेदस्य तिस्र: कन्यास्तथैरयम् ॥ उद्विग्नो राज सम्मानं प्राप्नुयात् गृहभूमित: । नैराश्यञ्च विवाहोऽस्य भूत्वा तस्या: परेप्सित: ॥

२ चं॰	१ सू॰ मं॰ बु॰	१२ शु॰
३		११ श॰
४ के॰		१० रा॰
५	७	९
६ गु॰		८

विवाह पञ्चविंशेऽस्य प्रमेह मधुमेहभ्याम् । माघ कृष्ण तु सप्तम्यां मृत्युर्द्विषष्ठि संख्यके ॥ वर्षे गेहे व पीड़ात: नेष्टं वर्ष मधोगतम् । त्रयोदशैकविंशेच्च सप्तदेशैक त्रिंशते ॥ द्वेतपञ्चाशतं वर्षं षट्पञ्चाशत संख्यकम् । तथेष्टानि च वर्षाणि सप्तदशाष्ट विंशते ॥ पंचविंशश्चतु:विंशं नवत्रिंशत संख्यकम् । त्रिनपञ्चाशताब्दञ्च त्रिपञ्चाशत वर्षकम् ॥ क्षत्रियोऽयं पुराचैव भविष्येऽपि भविष्यति । चन्द्रोऽस्यचेद् भवेल्लग्ने द्वितीये पञ्चमे तथा ॥ चतुर्थेष्टमयोस्तद्वत् नवम: षष्ठयो: क्वचित् । सप्तमे दशमे वा स्यात् क्रमशोऽस्य फलं भवेत् ॥ मातृसुख धनी योग: ससुत: पितृवंचक: । प्रवासी जलभीतश्च धार्मिक: व्यय संयुत: ॥ सुभार्यामाप्नुयात् तद्वत् विघ्नजित संभविष्यति । माणिक्यं धारयेत नित्यं मन्त्रञ्चेदं जपेत् धिया ॥ 'ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नम: ॥

भावार्थ: शुक्र ने पूछा - हे तात! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले - हे पुत्र ! इस कुण्डली वाला जातक सुन्दर, स्वस्थ, सुडौल, उत्तेजनात्मक बुद्धि युक्त, विद्वान्, स्वाभिमानी, गौरवर्ण, स्त्री-पक्ष से क्लेश पाने वाला, पुरुषार्थी, भाई-बहिनों की कमी पाने वाला, और अपनी

योग्यता से शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। यह धर्म मे न्यूनता रखने वाला, न्यायी, पिता की उन्नति में बाधक धनवृद्धि के लिए प्रयत्नशील, कुटुम्ब से मतभेद रखने वाला, अपव्ययी, पुंसत्वशक्ति में न्यूनता, वीर्यदोषी, राज्यकर्मचारी उन्नतिशील, विद्या की उन्नति में लापरवाह, अल्पसन्ततिवान्, सन्तति-विरोधी तथा स्वार्थी स्वभाव का होता है। इसे तीन कन्या तथा दो पुत्रों की प्राप्ति होगी। राज्य-सम्मान मिलने पर भी गृह-भूमि की कमी रहेगी। इसका विवाह २५ वर्ष की आयु में होगा, परन्तु पर-स्त्रियों से भी प्रेम-सम्बन्ध बना रहेगा। इसकी मृत्यु मधुमेह अथवा प्रमेह रोग के कारण माघ कृष्णा ८ रविवार को बासठ वर्ष की आयु में होना संभव है। इसके जीवन में १३, १७, २१, ३१, ४८ तथा ५६ वें वर्ष अङ्गाघात एवं देह-पीड़ाकारक रहेंगे तथा वर्ष १७, २४, २५, २८, ३९, ४७ तथा ५३ वें शुभ एवं उन्नतिकारक सिद्ध होंगे। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में भी क्षत्रिय ही होगा। इस कुण्डली मे चन्द्रमा यदि लग्न में हो तो माता का पूर्ण सुख तथा स्त्री-सुख की प्राप्ति होगी। द्वितीयभाव में हो तो धन-संग्रही, तृतीय में हो तो मनस्वी, चतुर्थ में हो तो मनोरंजक तथा पितृ-विरोधी, पंचम में हो तो संतान से सुख, षष्ठ में हो तो मातृ-विरोधी एवं रवर्चीला, सप्तम में हो तो सुन्दरी स्त्री वाला, अष्टम में हो तो परदेशवासी, तथा जल से भय, नवम में हो तो धर्मात्मा, दशम में हो तो उन्नति कारक, एकादशभाव में हो तो चेष्टावान् तथा द्वादशभाव में हो तो विघ्न बाधाओं पर विजय पाने वाला सिद्ध होगा। अरिष्ट निवारणार्थ "ॐ ह्रीं परब्रह्मणे नमः" इस मन्त्र का जप करनावमाणिस्य-धारण शुभ सिद्ध होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ भृगुसूनुरुवाचाग्रे नाथ मे वद भाविनम्। कुण्डल्यां जायमानस्य अस्यां भृगुस्तमब्रवीत् भृगुरुवाच॥ शृणु वत्स प्रतापी स वीरः स्वस्थश्च वामनः। उग्रो यथार्थवक्ता च सरुजो जठरेण च॥ द्विभार्यायोग वान्नेष चलः कार्योषधीप्रियः। कामुकः स्त्रीविहीनोऽयं आलोचितः सदारिभिः॥ कुलीनाऽस्य भवेत् भार्या सुशीलाऽपि पतिव्रता। नष्टापत्यः द्वयोरग्रे भयः पुत्राः द्विकन्यका॥ सेविष्यते न वैमत्यात् एवं पुत्रोऽस्य

कश्चन: । प्रवासैवं बहिर्देशार्जित द्रव्येण जीवनम् ॥ भाग्योदयेऽस्य विघ्नानि भविष्यन्तीह सर्वत: । विद्याबुद्धि विवेकैश्च परै स्वस्यं समाचरेत् ॥ सामान्यतोऽस्य भाग्यस्योदयं स्यात् सप्तत्रिंशते । त्रयोविंशति वर्षायौ निम्नेष्ट स्वनाशकम् ॥ पञ्चविंशत यैवास्मै सप्तदशतमं क्वचित् । द्विचत्वारि शतं वर्ष पञ्चाशन संख्यकम् ॥ अष्टपञ्चाशतारब्धे च्यैकोनविंशतिकं परं । द्विषष्ठितमे चाब्दे गृहैव रक्तदोषत: ॥ पौष कृष्ण चतुर्दश्यां योगो देह विनाशक: । जपेन्नित्यद्धिृतं मन्त्रं विपद्यरिष्ट कालयो: ॥ ॐ क्रौं क्रीं क्रूं स: भौमाय नमस्तथा । व्रतं भौमस्य धारयेत् ताम्रस्वर्णाङ्गुलीयकम् ॥ कुण्डल्यामस्य चन्द्रश्चेत् द्वितीयाष्टमयोस्तदा । धनाधीशोऽपि रुग्णश्च चोरो विस्फोटकस्तथा ॥ चतुर्थे सप्तमे लग्ने स्थित: स्याच्चुतदा सुखी । स्त्रीजित् भूयाच्च वाणिज्ये सफलोऽयं भविष्यति ॥

२	१२ बु.	शु.
३	१ सू. मं.	११ श.
४ के.		१० रा.
५	७ चं.	९
६ गु.		८

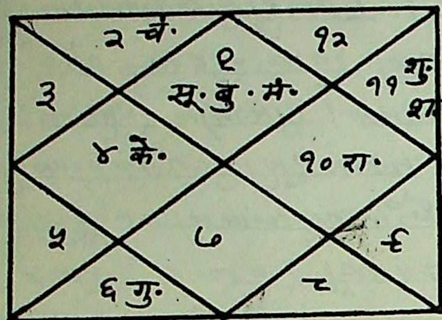
भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे प्रभो! आप इस कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगु जी बोले - हे वत्स! यह जातक अत्यन्त प्रतापी, योद्धा, स्वाभिमानी, नाटे कद तथा उत्तम स्वास्थ्य वाला, सुन्दर, विकारी, उग्र स्वभाव का, पिशुन, कटु-सत्यवादी, चंचल चित्तवाला, काव्य तथा औषधियों में प्रीति रखने वाला, स्त्री-विहीन, द्विभार्या योगवाला तथा तीव्र कामेच्छा से युक्त होता है। इसके विरोधी भी इसके सद्गुणों की प्रशंसा करते हैं। इसकी स्त्री पतिव्रता, सुन्दरी तथा बड़े कुल की होती है। पहली दो सन्तानें नष्ट हो जाएंगी, फिर तीन पुत्र तथा दो कन्याएं प्राप्त होंगी। इसका कोई पुत्र इसके स्वभाव से सहमत नहीं होता, अत: वे इसकी सेवा नहीं करेंगे। यह परदेश में रह कर जीविका उपार्जित करेगा। इसके भाग्योदय में हमेशा विघ्न उपस्थित होंगे। यह अपनी विद्या, बुद्धि और विवेक के द्वारा अपने व्यवहार को अच्छा बनाये रहेगा। इसका भाग्योदय २३ तथा ३७ वर्ष की आयु में होगा। इसके जीवन के १७, १९, २५, ४२, ५३ तथा ५८वें वर्ष हानिकारक सिद्ध होंगे। रक्तपित्त दोष के कारण ६२ वर्ष की आयु में पौषकृष्णा १४ को अपने घर में ही इसकी मृत्यु होना संभव है। संकट के समय 'ॐ क्रां क्रीं क्रूं स: भौमाय नम:' इस मन्त्र का जप अनुष्ठान तथा मंगलवार का व्रत करना

शुभ सिद्ध होगा। सोने और ताँबे से बनी अँगूठी धारण करना हितकर रहेगा। यह व्यक्ति पूर्वजन्म में शूद्र था तथा अगले जन्म में पशु योनि प्राप्त करेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, सुखी तथा व्रणरोगी होगा। यदि लग्न अथवा सप्तम में हो तो क्रमशः स्त्रीजित एवं व्यापार-कुशल होगा॥ इतिशुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ यदीयं कुण्डली ब्रूयात् कस्यचित् प्राणिनस्तदा। किं भविष्यं भवेत्तस्य शुक्रोऽपृच्छत् भृगुं क्वचित्॥ भृगुरुवाच॥ समीक्ष्य कुण्डलीं शुक्रं सुराचार्यः प्रचोदयात्। अस्यां जातो जनो वत्स सुरूपः सत्यपोषकः॥ ऐश्वर्यवान् प्रतापी च मेधावी स्त्रीप्रियः सदा। दुराग्रही कालस्नेही सुविचार्य प्रवर्तकः॥ उदार सरलश्चायं नरकाव्यं रचिष्यति। बान्धवैः विमतश्चास्य योगौ दौर्बल्य सन्ततिः॥ राजकीयश्च सम्बन्धः वेदान्ती गुणग्राहकः। प्रशंसितो जनैः सर्वैः स्वाभिमानाच्च माप्नुयात्॥ लोकहास्यं तथा लोके वसेत् सौख्येन सर्वदा। रूपशीलयुताप्यस्य आर्या स्याद्रक्तपीड़िता काठिन्याज्जीवितेष्वस्य भीत्वापत्येषु कश्चनः। करिष्यत्यस्य सेवाञ्च चातुर्वैष जातकः॥ परिजनैश्च रुद्धोऽपि परप्रीतो भविष्यति। ख्यातः स्यान्न्याय क्षेत्रेऽपं कालो भाग्योदयस्य च॥ विंशद्वाविंशयोश्चैवं चतुःत्रिंशत संख्यके। द्वापञ्चाशते चाब्दे विघ्नस्थान तथापि च॥ वात श्लेष्म विकारोऽपि सम्भवोऽस्मै कदाचन। जीवने निम्नवर्षाणि घातकानि सुनिश्चितम्॥ षड्विंशसप्तविंशाख्ये नवत्रिंशत संख्यकम्। त्रिपञ्चाशत वर्षेये द्विषष्ठितम संख्यके॥ रक्तशुक्रादि दोषाभ्यां गृहे शल्य चिकित्सया। पौष शुक्ल तृतीयायां त्रिषष्ठ्याब्द संख्यके॥ आयौ मृत्युश्च धारयेत् पन्नकं सिद्धि हेतवे। ॐ आं ईं ॐ सः शुक्राय नमः सदा॥ मन्त्रेदं जपेत चैवं चन्द्रस्यात् द्वितीयेऽष्टमे। चतुर्थे वा बन्धुद्वेषी जलात् भीतः सदा स्थितः॥ आसीच्च क्षत्रियो पूर्वं भविष्ये च भविष्यति। वर्णसंकरजीवोऽपं गृहस्थास्ति फलंइदम्॥

भावार्थः शुक्र ने कहा – हे प्रभो! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले- हे शुक्र! इस कुण्डली वाला जातक सत्यवक्ता, सत्यप्रिय, प्रतापी, ऐश्वर्यवान्, गेहुँआ रंगवाला, मेधावी, दूसरों के गुणों

का उपासक, स्वाभिमानी, हठी-स्वभाव, बुद्धिमान्, स्त्री-प्रेमी, श्रेष्ठ वक्ता, काव्य-सङ्गीत का प्रेमी, सरल-हृदय, उदार एवं नर-काव्य का रचयिता होगा। सन्तान पक्ष दुर्बल रहेगा, भाइयों से विरोध होगा। यह जातक राजकर्मचा-रियों से सम्बन्ध रखने वाला, वेदान्ती तथा गुणग्राहक होगा। सबलोग इसकी प्रशंसा करेंगे। स्वाभिमान की अधिकता के कारण इसे लोकापवाद भी मिलेगा। यह अपने द्वारा उपार्जित धन से ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करेगा तथा अपनी दुर्बलताओं को छिपाये रहेगा। इसकी पत्नी सुन्दरी, गुणवती, कुलीना तथा रक्त-विकार-पीड़िता होगी। तीन सन्तानें कठिनाई से जीवित बचेंगी, जिनमें एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा। यह विरोधियों से चतुराई के साथ काम नि-



कालेगा तथा कुटुम्बियों से विरोध एवं अन्य लोगों से स्नेह प्राप्त होगा। इसका भाग्योदय २०, २२, ३४ तथा ४८वें वर्ष में होगा, परन्तु उसमें बाधाएं भी आती रहेंगी। वात-श्लेष्मा के विकार के कारण यदा-कदा पीड़ित बना रहेगा। इसके जीवन में २६, २७, ३६, ५३ तथा ६२वें वर्ष अरिष्ट कारक हैं। इसकी मृत्यु रक्त-विकार में शुक्रदोष के कारण शल्य-चिकित्सा कराते समय ६३ वर्ष की आयु में पौष शुक्ला तृतीया को अपने ही घर में होने की सम्भावना है। संकट के समय 'ॐ आं ईं ऊं सः शुक्राय नमः' इस मन्त्र का जप तथा हवन करना अरिष्ट-नाशक सिद्ध होगा। यदि इस कुण्डली में चन्द्रमा द्वितीय, चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः धनी, बन्धु-विरोधी तथा जल से भय पाने वाला होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ था तथा अगले जन्म में वर्ण-संकर जाति में उत्पन्न होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ पुनः शुक्रोऽब्रवीन्नाथ अस्याज्जातस्य किं फलम्। तत् दृष्ट्वा भृगुनोक्तञ्च [illegible] जातको एवं बलाधीनः विद्यायामपि रतो प्रियः। महत्वाकांक्षिणमादिः

धनाधीशः पराक्रमी ॥ धार्मिको व्ययशीलश्च भोगैश्वर्य प्रसाधने । श्रेष्ठवक्ता तथोग्रश्च नयमार्ग विशारद : ॥ सन्तत्या दुःखितो नित्यं योगो ऽस्यां बहुपत्निक: । यौवने दन्तपीडैनं मुखस्यापि भविष्यति ॥ स्थापयेच्छत्रुणामग्रे चातुर्येणात्मगौरवम् । शुक्रदोषो भवेच्चैनं यशेषु: धर्मकर्म सु ॥ पूर्वात्मजस्य देहान्ते सुतौ कन्ये ऽस्य सम्भवा: । तेष्वेक एव सेविष्यदे-न मृत्यु: स्त्रियः पुरा ॥ माघकृष्णात्रयोदश्यां वर्षेस्य षण्णसप्तसौ । शल्य चिकित्सया गेहा दूरं मृत्यु: भविष्यति ॥ षट्पञ्चाशत-परं मध्ये ऽस्य नेष्टानि सप्तसप्तदशे तथा । एकविंशाष्टविंशे च द्वान पञ्चाशतं क्वचित् ॥ नैक पञ्चाशतं वर्ष सप्तत्रिंशत ञ्चाब्दं द्वात्रिंशततमं क्वचित् । उन्नत्यै च त्रयोविंश षड्विंशैक त्रिंशते ॥ ॐ भ्रूं हुं फटेति मन्त्रं जपेल्लक्षचतुष्टयम् । संख्यकम् । त्रिपञ्चाशत संख्यायाः जीवने विघ्ननाशकम् ॥ द्वितीये चाष्टमे स्थाने चतुर्थे यदि चन्द्रमा: । भवेत्तु श्रीपतिः प्रवाल रत्न संश्लिष्ट स्वर्णाङ्गुष्टिञ्च धारयेत् ॥ पूर्वजन्मन्ययं जीव: आसीत् क्षत्रिय वंशज: । कपोतञ्चाग्रिमे काले भविष्यतीति श्रेष्ठ: मातृहीनो ऽप शंकित: ॥ निश्चितम् ॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा – हे नाथ! जिस जातक की यह कुण्डली है, उसका फलादेश कहने की कृपा करें। भृगुजी बोले– 'हे वत्स! यह जातक मान-सम्मान का इच्छुक, विद्यावान्, कलाप्रेमी, सर्वप्रिय, पराक्रमी, कुटुम्बहीन, धनी, स्वोपार्जित धनी, धर्मात्मा, उग्रस्वभाव, भोग-विलास में धन खर्च करने वाला, श्रेष्ठवक्ता, राजनीतिज्ञ, गुप्त योजनाओं मे कुशल तथा सन्तान-पक्ष से दुःखी होगा। इसे द्विभार्या योग के साथ बहुस्त्री-गामी योग भी है। इसे मध्यमायु में मुख-रोग तथा दन्त-क्षय का कष्ट होगा। यह अपने विरोधियों तथा शत्रुओं को चतुराई से वश में करेगा, धर्म-कर्म यश की कामना से करेगा। इसे वीर्य-रोग होगा। इसकी पहली सन्तान नष्ट हो जाएगी। बाद में दो पुत्र तथा दो पुत्रियाँ जीवित रहेंगे। एक पुत्र इसकी सेवा करेगा। स्त्री की मृत्यु इससे पहले होगी। इसकी मृत्यु घर से बाहर [illegible] के समय माघ कृष्णा १३ रविवार के दिन होना सम्भव है। इसके जीवनमें

८, १७, २१, २८, ३२, ४८ तथा ५६वें वर्ष नेष्ट तथा २३, २६, ३१, ३७, ४९ और ५३वें वर्ष लाभकारक सिद्ध होंगे। विपत्ति एवं अरिष्ट के समय 'ॐ ग्रूँ हुँ फट्' इस मन्त्र का ४००००० की संख्या में जप करना शुभकरने वाला सिद्ध होगा। सोने की अँगूठी में मूँगा जड़वा कर पहिनना भी हितकर रहेगा। इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि द्वितीय, चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो तो जातक क्रमशः लक्षाधीश, मातृ-हीन तथा जल से कष्ट पानेवाला होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था तथा अगले जन्म में कपोतपक्षी की योनि प्राप्त करेगा॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ शुक्र उवाच॥ अस्या कुण्डलिजस्य त्वं वद भाग्यं मे कृपानिधे। इति शुक्र वचः श्रुत्वा भृगुनारब्धं तदा-शयम्॥ भृगु उवाच॥ सुव्रतः स्वाभिमानी च यत्नेनास्य सुताः त्रयः। प्रतिष्ठितो हि विद्वांश्च विवेक्युग्रपराक्रमी॥ आत्मनः पैतृकेनासौ द्रव्येण सुखमाप्नुयात्। शुभावृता विलासे च व्ययशीलः रिपुञ्जयः॥ स्वस्थोऽपि वदनार्तश्च कलाविद्या प्रियः सदा। राजकीयः जनैर्द्रव्यमर्जयेद्गुणपत्निकः॥ देशाटन प्रियोऽप्येष भाग्यो त्सर्गे विडम्बितः। पुत्राः योग्याः पितृभक्ताः धनलाभेऽप्य संग्रही॥ सन्तत्यापि भवेद् वृद्धिः भाग्यस्यास्य तथा स्वयम्। धर्म्यं सम्पादयन् कृत्यं नवत्याब्दञ्च पूरयन्॥ चैत्रशुक्ल त्रयोदश्यां तीर्थे मृत्युं प्रयास्यति। पूर्वं विप्रोऽयमासीच्च मोक्षं यास्यति विप्रतः॥ तथा पञ्चदशाब्दं वै पञ्चमं पञ्चविंशकम्। त्रिचत्वारिंशतं तद्वत् सप्तनासीति संख्यकम्॥ षड्सीतितमं वर्षं नास्मै इष्टकरं क्वचित्। सप्तादशं द्विषष्टिञ्च सप्तविंशैक त्रिंशकम्॥ द्विपंचाशत संख्यायाः द्विषष्ठ्येक षष्ठिकं। द्वासीति संख्यकं वर्षं जीवनोन्नतिकारकम्॥ साम्बसदाशिवस्यास्मै अभिषेकार्चनं शुभम्। विपन्नष्टुञ्च धारयेत् प्रवालपुखराजकम्॥ द्वितीये पञ्चमे लग्ने दशम्याष्टमयोः भवेत्। चन्द्रो यदि धनाधीशः गौरो जलभीतियुत् सुधी॥

६ गु. | ५ सू. बु. | मं. शु. के. ४ | ३ | ७ | ८ | २ | हे. चं. | ११ | १ | १० श. रा. | १२

भृ० सं० ३३०८

भा० टी०

भावार्थ: शुक्र ने कहा - हे कृपानिधे ! इस जातक की कुण्डली का फलादेश कहने की कृपा करें । यह सुनकर भृगुजी बोले- हे सुव्रत ! इस कुण्डली वाला जातक स्वाभिमानी, अधिकाधिक तीन पुत्रों वाला, विद्वान्, विवेकी, प्रतिष्ठित, उग्र कर्मा, प्रतापी, पराक्रमी, उत्साही, बुद्धिमान्, पैतृक तथा स्व-उपार्जित धन से पूर्ण सुखी, सुन्दर, सुवेशी, विलासी, ऐश्वर्यशाली, अधिक खर्चीला, गौरवर्णी, शत्रु तथा विरोधियों पर विजय पाने वाला, पूर्ण स्वस्थ, परन्तु मुख-रोगी, विद्या एवं कलाओं का प्रेमी, तथा राजकीय व्यक्तियों के सम्पर्क से धनोपार्जन करने वाला होगा । इसकी स्त्री प्रायः रोगिणी बनी रहेगी । इसे यात्रा में रुचि रहेगी । भाग्योदय में बाधाऐं आऐंगी । धन का श्रेष्ठ लाभ होगा, परन्तु उसका संग्रह नही हो पायेगा । इसके पुत्र सुयोग्य तथा पितृभक्त होंगे । सन्तान के द्वारा इसके भाग्य में वृद्धि होगी । इसकी मृत्यु चैत्र कृष्णा १३ शनिवार को ९० वर्ष की आयु मे होना सम्भव है । मृत्यु धार्मिक-कृत्य करते हुए किसी तीर्थ-क्षेत्र में होगी । यह जातक पूर्व जन्म में ब्राह्मण था तथा अगले जन्म में भी ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर मोक्ष का भागी बनेगा । इसके जीवन में ५, १५, २५, ४३, ७३ तथा ८६ वें वर्ष नेष्ट तथा १७, २७, ३१, ५२, ६२, ६८ तथा ८२ वें वर्ष लाभकारक सिद्ध होंगे । इसे अरिष्ट-निवारणार्थ प्रवाल तथा पुखराज धारण करना चाहिए एवं भगवान् साम्बसदाशिव का पूजनाभिषेक करना चाहिए । इससे विपत्ति दूर होकर उन्नति-लाभ होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, पंचम, अष्टम अथवा दशम भाव में हो तो जातक क्रमशः अतीव गौरवर्ण, धनी, स्वाध्यायी, जल से भय पाने वाला तथा राजा के समान सम्मान प्राप्त करने वाला होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ ॥ शुक्र उवाच ॥ वर्णयन्त्वस्य जीवस्य जीवनं मे दयानिधे ॥ श्रुत्वा शुक्रवचस्तस्मिन् क्षणे भृगुरवोचत ॥ भृगुरुवाच ॥ गुणग्राही कृतज्ञश्च गुरुभक्तः प्रियंवदः । गौराङ्गः बुद्धिमान् चैवं लुब्धको मुखपीड़ितः ॥ धीरः सर्व प्रियश्चायं विद्या व्यसन संयुतः । नयज्ञः सत्यवादी च भाग्यवान् राजसेवकः ॥ द्विभार्या योग युक्तश्च स्त्रियः [illegible] । [illegible] ॥ जन्मतश्च [illegible] प्रवीणा स्युः शल्यकर्मचिकित्सका

यान्त्रिकस्यापि योगोऽस्य विशालात्मक योजना: ।। मानमस्यै प्रदास्यन्ति शत्रून् गुप्तेन जेष्यति । धर्म कर्म सतां सेवा आदर्शमस्य जीवने ।। बान्धवा: वैपरीत्याच्च नश्यन्ति स्वयमेव ते । वैशाख कृष्ण द्वादश्यां द्विसप्तति संख्यके ।। वर्षे मृत्यु: भवेदस्य जीवनावधि अन्तिमा । तथा नेष्टानि वर्षाणि तृतीयञ्च त्रयोदशम् ।। अष्टादशाष्ट विंशेऽपि द्विचत्वारिंशतं क्वचित् । अष्टपञ्चाशताब्दञ्च द्विषष्ठ्यात्मक संख्यकम् ।। उत्तमान्येकविंशाख्यं शोडष पञ्चाष्ट षष्ठिके । द्विनपञ्चाशतं वर्ष एक त्रिंशत संख्यकम् ।। चतुर्नषष्ठि संख्याया विपन्नाशन हेतवे । ॐ विशाल नेत्रं स्वाहेति जपेच्च पञ्चलक्षकम् ।। जपं कुर्यात् तथा स्वर्णे नीलमेत्यपि शोभनम् । तृतीये सप्तमे लग्ने चन्द्रश्चेदस्य सम्भवेत् । भविष्यति च मेधावी विधुरोऽयं भविष्यति ।। पूर्वास्मिन् जन्म कालेतु सौ क्षत्रिय वंशजोऽभवत् । भवितात्रिम योनौ च ब्राह्मण: विप्र वंशज: ।।

3	2 सू. बु.	1 मं.
4 के.		12 शु.
5		11 श.
6 गु.	8 चं.	10 रा.
7		9

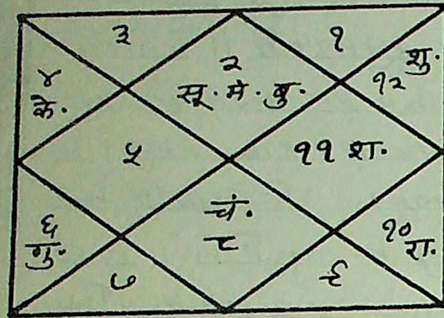
भावार्थ: शुक्रने कहा- हे तात ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-वृत्तान्त कहने की कृपा करें । तब भृगुजी बोले– हे शुक्र ! यह जातक गुरुभक्त, प्रियवादी, गुणग्राही, लोभी, तेजस्वी, गौरवर्ण, सुन्दर, मुख-रोगी, सत्यवादी, बुद्धिमान्, कृतह्न, गंभीर, विद्या-व्यसनी, कुशल राजनीतिज्ञ, सभाजित्, राजकर्मचारी, भाग्यवान् तथा सर्वप्रिय होगा । यह स्त्री की ओर से दु:खी रहेगा । इसका द्विभार्या-योग है । इसे पैतृक-सम्पत्ति के रूप चल- अचल सम्पत्ति का लाभ होगा, इसके पाँच कन्याएं तथा तीन पुत्र होंगे । यह जातक यान्त्रिक भी हो सकता है । बड़ी योजनाएं इसकी सम्मान-वृद्धि करेंगी । यह शत्रुओं पर गुप्तरूप से विजय प्राप्त करेगा । भाई-बन्धु इसका विरोध करके स्वयं नष्ट हो जायेंगे । यह धार्मिक कृत्य तथा सज्जनों की सेवा करेगा । इसकी मृत्यु वैशाख कृष्णा 12 मंगलवार को मध्याह्न के समय, 72 वर्ष की आयु में, किसी तीर्थक्षेत्र में होना संभव है । विपत्ति निवारणार्थ 'ॐ विशालनेत्रे स्वाहा-' इस मन्त्र का पाँच लाख जप तथा सोने-चाँदी की अंगूठी में पुखराज एवं नीलम धारण करना लाभकर रहेगा । पुत्र यथेष्ट सेवा करेंगे । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय अथवा

सप्तमभाव में हो तो यह व्यक्ति क्रमशः भविष्य द्रष्टा, मेधावी तथा विधुर होगा। यह जातक पूर्व जन्म में क्षत्रिय था और अगले जन्म में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होगा ॥इति शुभम्॥

ॐ ॥ शुक्र उवाच ॥ किं भवंति फलं तस्य अस्या योऽलभते ऽशव: । श्रोतु काम्योस्म्यहं तात तच्छ्रुत्वा भृगुरब्रवीत् भृगुरुवाच ॥ पति: सौभाग्यवत्या स: परं उदररोगिणी । कृपणो वामनश्चायं तेजस्वी बुद्धिमान्नपि ॥ विद्या व्यसनसम्पन्न: सङ्गीतस्य प्रिय: सदा। वाग्पटुश्चतुरोऽप्येष गृहभूमे हितेच्छुक:॥राज्याश्रयी प्रपञ्ची च पुरुषार्थी नयो पटु: । भाग्येन विश्रुतश्चास्य योग: कन्याधिकस्यवै॥ परं यत्नेन पुत्रश्च पुत्रौवा संभविष्यति: ॥ सन्तत्या विभवो ऽप्यस्य प्रदर्शनप्रिय: सदा ॥ चातुर्येण च नित्यस्य जीवनमेष संवहेत् । चैत्रशुक्लतृतीयायाञ्चाब्दे द्विसप्तति संख्यके ॥ सन्निपातेन रक्तस्य दोषान्मृत्यु: भविष्यति। जलयात्रा हितायास्य योगोऽच भुपेतरपि ॥ जीवने घातकान्यस्मै द्वितीयञ्चैक विंशकम् । त्रिपञ्चाशत संख्याया: एकादशैक त्रिंशते॥ वर्षञ्चोत्तममस्मैच अष्टादशञ्च शोभनम् । षड्विंशाष्ट षष्ठ्याख्ये एक पञ्चाशतं तथा॥ सप्तत्रिंशत संख्याया: मालिन्यं बान्धवै: सह । पराञ्जेष्यति नीत्या सौ नीलमेत्पस्य धारणम् ॥ युक्तामस्मै समुन्नत्यै जपं मृत्युञ्जयस्य च । पूर्वञ्चायं जन: जात: महात्मा क्षाच संयुत: ॥ हरिणञ्चाग्निमे देहे चन्द्रमा यदि सप्तमे । तृतीये दशमे लग्ने तदायं संभविष्यति ॥ स्त्रीणां जेता च सर्वत्र साहसी परमं तदा । भाग्येन हीन एवास्ति वर्णे गौर: स्फुटं सदा॥

भावार्थ: शुक्र ने कहा- हे नाथ! इस कुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले- हे पुत्र! यह जातक सौभाग्यशालिनी, परन्तु उदररोगिणी-स्त्री का पति होगा। यह स्वयं तेजस्वी, नाटे क़द वाला, बुद्धिमान्, सङ्गीत-प्रेमी, विद्या-व्यसनी, परम चतुर, भाग्यवान्, बातूनी, चतुर, गृह-भूमि युक्त, राज्याश्रया, नीतिवान्, पुरुषार्थी तथा प्रपंची होगा। सब लोग इसके भाग्य की सराहना करेंगे, इसके घर में कन्याओं की संख्या अधिक होगी तथा उपायों द्वारा एक या दो पुत्रों की प्राप्ति भी सम्भव है।

यह जातक अपनी सन्तानों से मतभेद रक्खेगा । यह ऐश्वर्यपूर्ण जीवन बिताने वाला, उत्तम वस्त्र धारण करने वाला, तथा दैनिक जीवन में बड़ी चतुराई से काम लेने वाला होगा । इसकी मृत्यु किसी तीर्थ-स्थान में रक्तदोष अथवा त्रिदोष के कारण चैत्र शुक्ला तृतीया, शनिवार को ७२ वर्ष की आयु में होना सम्भव है । इसका सेनापति बनना भी सम्भव है । इसके जीवन में २, ११, २१, ३१, ४७ तथा ५३ वें वर्ष हानिकारक रहेंगे तथा १६, १८, २६, ३७, ५१ एवं ६८ वें वर्ष उत्तम सिद्ध होंगे । इसका अपने भाई-बन्धुओं से मनमुटाव बना रहेगा । यह अपने विरोधियों पर नीति द्वारा विजय प्राप्त करेगा । विपत्ति निवारण के लिए सोने की अँगूठी में मूँगा जड़वा कर पहिनना तथा महा-

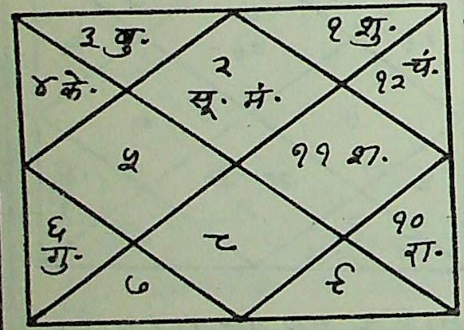


मृत्युञ्जय मन्त्र का जप करना लाभकर सिद्ध होगा । यह जातक पूर्व जन्म में क्षात्र-धर्म संयुक्त महात्मा था तथा अगले जन्म में यह मृग योनि में उत्पन्न होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, सप्तम तथा दशमभाव में हो तो जातक क्रमशः गौरवर्ण, साहसी, स्त्री-जित तथा भाग्यहीन होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ ।। शुक्र उवाच ।। भार्गव : उक्तवान् तात अस्याज्जातस्य जीवनम् । वर्ण्यतां कृपयामह्यं गीष्पतिश्चतदा ब्रवीत् ।। भृगुरुवाच ।। वैज्ञानिकोऽयं मेधावी संविद्यो वक्तृलेखकौ । राज्याश्रितश्च नीतिज्ञः शत्रुजिद्धनिकः परम् ।। पुरुषार्थी भवत्येष उदारश्चैव भाग्यवान् । रुग्णो नेत्रेण मानी च दौर्बल्यमस्य स्त्रीप्रियः ।। आप्त्वापि पैतृकी सम्पद् तुष्टोनैव भविष्यति । स्वार्जितेनैव वित्तेन गृहभू फलमाप्नुयात् ।। व्ययाधिक्यं तथा वृत्तिः यथार्थेनास्ति धार्मिकी । तर्कशीलोऽपि नम्रोऽयं द्विषष्ठ्याब्दस्य मध्यमे ।। वैशाख कृष्ण पञ्चम्यां म्लेच्छ स्त्री गमनात् स्वयम् । शस्त्राघातेन चाल्पायौ मृत्युं यास्यति योगतः ।। पञ्चात्मजेषु सेवाञ्चैक एवास्य करिष्यति । पञ्चाष्ट षड्विंशति चतुःपञ्चाशतं तथा ।। अष्टत्रिंशत संख्यायाः वर्ष जीवनघातकम् । तथोन्नति प्रदान्यस्मै अष्टादश त्रयोदशे ।। षष्ठ पञ्चशताब्दञ्च पञ्चपञ्चाशतं

स्वचित् । आपत्काले जपेन्मन्त्रं ॐ शं शनैश्चराय नमः ।। तद्वत् गोमेद मणिमप्ये धारयेत् सिद्धि हेतवे । शूद्रोऽयमुग्र-कर्मासीत् संकरश्च भविष्यति ।। अस्य सोमो भवेल्लग्ने द्वितीये सप्तमेऽथवा । तृतीयेकादशेवास्यात् क्रमशः फलमीदृशम् ।। बुद्धिमान भवेद्वाथं निर्धनः सुस्त्रियः पतिः । श्रमशीलो धनाढ्यश्च चन्द्रस्येद फलं सदा ।।

भावार्थः शुक्र ने कहा– हे प्रभो ! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें । भृगुजी बोले– हे शुक्र ! यह जातक वैज्ञानिक, परम मेधावी, विद्या-व्यसनी, लेखक, वक्ता, राजनीतिज्ञ, राज्याश्रित, शत्रुजयी, परमधनी, वाहनादि से युक्त, पुरुषार्थी, नेत्र-रोगी, भाग्यवान्, उदारचेत्ता तथा स्वाभिमानी होगा । स्त्री-प्रेम ही



इसकी सबसे बड़ी दुर्बलता होगी । पैतृक-सम्पत्ति पाकर भी इसे सन्तोष नहीं होगा एवं यह स्वोपार्जित धन से गृह-भूमि का लाभ भी प्राप्त करेगा । इसका खर्च अधिक रहेगा, यथार्थ-निर्णय के रूप में इसके विचार धार्मिक रहेंगे । यह बड़ों का सम्मान करेगा । ६२ वर्ष की आयु में, वैशाख कृष्णा ५ रविवार के दिन किसी म्लेच्छ-स्त्री के कारण शस्त्राघात द्वारा इसकी मृत्यु होने की सम्भावना है । इसके ५ पुत्र होंगे, परन्तु एक पुत्र ही इसकी सेवा करेगा । इसके जीवन में ५, ८, २६, ३८ तथा ५४ वें वर्ष नेष्ट तथा १३, १८, ३९, ४४ एवं ५७ वें वर्ष शुभ फलदायक सिद्ध होंगे । विपत्ति के समय सङ्कट-निवारण के लिए 'ॐ शं शनैश्चराय नमः'- इस मन्त्र का जपानुष्ठान तथा गोमेद मणि को धारण करना हितकर सिद्ध होगा । यह जातक पूर्व जन्म में उग्रकर्मा था तथा शूद्र वंश में उत्पन्न हुआ था । अगले जन्म में यह संकर-कुल में उत्पन्न होगा । इस कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, द्वितीय, तृतीय, सप्तम अथवा एकादशभाव में हो तो उसके अनुरूप यह जातक क्रमशः बुद्धिमान्, निर्धन, उद्यमी, सुन्दरी स्त्री से युक्त तथा धनवान् होगा ।। इति शुभम् ।।

भृ० सं० २००८ | भा० टी०

ॐ ॥ शुक्र उवाच ॥ अस्यां देव प्रजातस्य भविष्यमुच्यतां हि मे । इत्याकर्ण्य फलं तस्य भृगुणैव मुदीरितम् ॥ भृगुउवाच ॥ जीवो भवति भोगी स धार्मिकः व्याकुलात्मना । मिष्ठान्नमति बन्धूनां प्रियो ऽपि दुःखितो हि वै ॥ कलत्रैः दुःखितो लोके उपालम्भान्वितः सदा । धातुपाकाच्च नष्टस्त्रीः भार्यास्य भविता धनैः ॥ क्षीणः धूर्त कृतघ्नी च गुणकीर्ति विनाशकः । स्वजनानाम् अप्रियश्चाथ भाग्योदय पातको ऽपि च ॥ द्रव्ये सति व्ययी जेता मृषैव राजवन्दितः । नष्ट पलिक जीवो ऽयं वर्षे षड्षष्ठि संख्यके ॥ वैशाखान्ते क्षितीयायां शस्त्राघातेन नश्यति । घातकश्चास्य समयः चतुर्थे च चतुर्दशे ॥ चतुःपञ्चाशते वर्षे चतुर्विंशष्ट त्रिंशयोः । वर्षस्यापौ परं वृद्धे सप्तदशञ्चसप्तमम् ॥ सप्तविंशं नवत्रिंशं षड्पञ्चाशतात्मकम् । त्रयोपञ्चाशताकञ्च नैवस्थास्यति पैतृकी ॥ व्यभिचाराच्चमातुः स जारपुत्रो भविष्यति । राजद्वारि विवादानि भविष्यन्त्यस्य निश्चितम् ॥ पूर्वजन्मनि वर्णस्य संकरश्चाग्रिमे ऽप्यसौ । वानरः संभवेदेवं नश्यन्त्यस्यापि कन्यकाः ॥ एवं संतति गोपाले प्रयोगे चास्ति सम्भवः । योगो ऽस्य सन्ततेश्चन्द्रः यदि लग्ने तथैव च ॥ तृतीये सप्तमे षष्ठे नवमे स्यात्त्विदं फलम् । भाग्यवान् शत्रुजित् हन् स्त्रिया प्रीतिश्च धार्मिकः ॥ जपेत् विपत्काले ॐ कुविदंग कृतन्वतः । धारयेच्च प्रवालं वा पुष्परागं हिताय वै ॥

(कुण्डली: ४ सू. के. । ५ । ६ गु. । ३ मं. बु. शु. । २ । ७ । १ । ८ । १० रा. । १२ । ९ चं. । ११ श.)

भावार्थ: शुक्र ने पूछा - हे दयानिधे! इस कुण्डली वाले जातक का फलादेश कहने की कृपा करें। यह सुनकर भृगुजी बोले - हे तात! यह जातक भोगी, धर्मात्मा, लोकप्रिय, मिष्ठान्नप्रिय, बन्धु-प्रिय, परन्तु मित्रों से कष्ट पाने वाला, स्त्री-पुत्रादि की चिन्ता से युक्त, व्याकुल-चित्त, लोकापवाद पाने वाला, धातु पाक आदि से नष्ट स्त्री का पति, सन्तान-हीन, धूर्त, धनहानिवाला, गुण तथा कीर्ति नाशक, स्वजन-विरोधी, भाग्योदय में विघ्न पाने वाला, कृतघ्न, यदा-कदा धन पाकर उसका अपव्यय करनेवाला, विरोधियों पर विजय पाने वाला,

एवं मिथ्या अपवाद तथा राज-बन्धन पाने वाला होगा। इसकी स्त्री की मृत्यु पहले होगी। इसकी स्वयं की मृत्यु शस्त्राघात द्वारा ६६ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला द्वितीया रविवार को होना संभव है। इसके जीवन के ४, १४, २४, ३८ तथा ५४ वें वर्ष अधिक हानिकारक तथा ७, १७, २७, ३९, ५३ एवं ५६ वें वर्ष लाभदायक सिद्ध होंगे। पैतृक सम्पत्ति पाकर भी यह उसे स्थिर नहीं रख पायेगा। माता के व्यभिचारिणी होने के कारण यह जार-पिता का पुत्र होगा। इस पर मुकद्दमे चलते रहेंगे। यह पूर्व जन्म में भी वर्णसंकर था तथा अगले जन्म में मर्कट योनि को प्राप्त करेगा। उपाय करने पर इसे केवल एक ही सन्तान प्राप्त हो सकेगी। इसकी पुत्री नष्ट हो जाएगी। इसे सन्तान-प्राप्ति के लिए सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इसकी कुण्डली में चन्द्रमा यदि लग्न, तृतीय, षष्ठ, सप्तम अथवा नवम भाव में हो तो यह जातक क्रमशः विवेकी, भाग्यवान्, शत्रुजित, स्त्री-प्रेमी तथा धर्मात्मा होगा। इसे विपत्ति-काल में 'ॐ कुविदंग: कृतन्वतो०'— इस वैदिक मन्त्र के द्वारा कुबेर का साङ्गोपाङ्ग अनुष्ठान करना चाहिए तथा पुखराज एवं प्रवाल को धारण करना चाहिए, वह इसके लिए हितकर सिद्ध होगा॥ इति शुभम्॥

ॐ शुक्र उवाच॥ जन्मकाल समारभ्य यावज्जीवति भूतले। तावत्कालीय ज गाथा शृणु वत्स समासतः॥१॥ प्रथमे द्वितिये वर्षे बाल वृद्धि दिने-दिने। दशनोत्पत्तिजा व्याधि पीड्यते दुर्बली वपुः॥२॥ वह्नि वर्षाच्च वाणाब्दे बाल क्रीड़ा दिने दिने। शरीरे कष्ट सम्पन्नो उपचारेण शान्तये॥३॥ चञ्चलश्चपलो बालः भाग्यवृद्धि प्रजायते। विद्यारंभ कृतो बालः शरीरे सुख मासनुयात॥४॥ रसेन्द्रे शून्य चन्द्रे च बाल क्रीड़ा सुतत्परा। जात कष्ट विनष्टी च नैव रोगोऽपि [illegible] प्राणहा॥५॥ विद्याभ्यास रतो नूनं [illegible]

शिशुः ॥६॥ सोमचन्द्राब्द पञ्चेन्दु सुख वृद्धि दिने दिने। विवाहो मङ्गलं कार्य अल्पायु प्राप्यते स्त्रियः
॥७॥ यथादेह प्रवृद्धिति धन सम्पत्समृद्धिवान्। रसेन्दु विंश वर्षे च भाग्योदय न संशयः ॥८॥
चन्द्रजीव परं प्रीति आसक्तं चिन्तनम् सदा। कामक्रीड़ा सुखाः सर्वे भोग्यते बहु तत्परा ॥९॥
गुप्त शत्रु विरोधं च प्रत्यक्षो नैव जायते। शशि युग्म गते वर्षे पंच नेत्रान्तरे ॥१०॥ भाग्य
वृद्धि न सन्देहो कष्ट पीड़ा विचिन्तनम्। पुत्र जन्म महोत्साहो तात मातृश्च हर्षिते ॥११॥ सुता
सुत सुखं लोके सर्वारिष्ट विनश्यति। भाग्य वृद्धि भवेल्लोके सुखस्तत्र प्रवर्तते ॥१२॥ ऋतुविंश
गते वर्षे वेद वह्नि गतेऽपि वा। धन वृद्धिर्न सन्देहो व्यापारो लाभदो

३	२ सू. शु. बु. मं.	१ श.
४ चं.		१२
५ रा.		११
६	८	१० बृ.
७ के.		९

महान् ॥१३॥ देवदर्शने जा प्रीति पवित्री क्रियते वपुः। भूमिमन्द्र नवी-
-नोऽपि देवकार्ये धनं व्ययः ॥१४॥ पुत्र कन्या विवाहे च सुकीर्ति
ख्याति भूतले। दान मन्त्र सुपुण्येन सर्वारिष्ट निवारणम् ॥१५॥ अना
दरस्तु शत्रूणां मित्राणां मोदमाप्नुयात्। कीर्तिश्च निर्मली भूयात् प्रजा
न्मित्र सुमोदिता ॥१६॥ बाण वह्नि गते वर्षे युग वेद गतेऽपि वा।
नाना वाहन संयुक्तः नाना द्रव्य समाकुलः ॥१७॥ आरामे वाटिका
कूपं तथा मंद्र शिवालये। वृद्धित्वं जायते पुत्र वर्षे वर्षे न संशयः ॥१८॥ कन्या पुत्र विवाहे
च व्ययं भवति नित्यशः। हस्त्यादि वाहने चैव धन धान्य व्ययं भवेत् ॥१९॥ बाण वेद गते
वर्षे रस बाण गताब्दके। पत्नीखेद भवेत्पुत्र पौत्र जन्म समुद्भवः ॥२०॥ उत्सवं गृहमध्ये च
लाभ वृद्धि दिने दिने। किंचित्कष्ट शरीरेषु चित्तं व्याकुलतां व्रजेत् ॥२१॥ दान पूजन होमेन शान्ति
प्राप्नोति निश्चितम्। तीर्थयात्राऽपि भो पुत्र तत्र दानं भवेत् महा ॥२२॥ पुत्रपौत्र समायुक्त मोदते

भुवि मण्डले । नाग बाण गते वर्षे नागषष्ठगतोऽपि वा ॥ २३॥ नाना धर्म समायुक्तः नानादुःख समाकुलः। कफ वातेन पीड्यन्ते औषधेन प्रशाम्यति ॥२४॥ तीर्थयात्रा समारम्भ देशे पर्यटनं भवेत्। नन्द षष्ठ गते वर्षे देवलोक स गच्छति ॥२५॥ वैशाखे कृष्ण पक्षे च तृतीया भृगुवासरे। कृत: क्षेत्र समायोगे वृश्चिके राशि मागत: ॥२६॥ प्रातः काले च निर्याणं भविष्यति न संशयः। पुनर्जन्म भवेत्तस्य वाराणस्या नराधिप: ॥२७॥ युवावस्था च प्राप्नोति आनन्दं भुवि मण्डले। वाम चिह्न विशेषेण पुत्र सौख्यं न दृश्यते ॥२८॥ पूर्वपाप प्रभावेण वंश वृद्धिर्विनश्यति। सर्वसौख्यं च भोक्तव्यं पुत्र सौख्यं न प्राप्स्यते ॥२९॥ शुक्रोवाच ॥ किं कर्मानुसारेण पुत्र सौख्यं विनश्यति। पूर्व जन्म कथा सर्वं कथयस्व महामुने ॥३०॥ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्वजन्मस्य जातकम्। वैश्य वंशे समुत्पन्नो अतितेजो प्रतिष्ठित: ॥३१॥ क्षुधातुरं विप्रपुत्रं आगतं अन्नकामये:। वैश्यं क्रोध कृत्वा तु ब्राह्मण पुत्रं च मृत्युदा ॥३२॥ पुत्र मृत्यु तत: दृष्ट्वा विप्र शाप महा ददेत्। त्रिजन्मं सन्ततिहीनं भवत्येव न संशय: ॥३३॥ शुक्र उवाच ॥ किं यत्नं कुरु भो तात पूर्व शाप निवारणे। तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि लोकाऽनुग्रह कांक्षया ॥३४॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्ण च प्रतिमा कार्या अष्ट टंक प्रमाणकम्। द्विजपुत्र लिखेन्मूर्ति गंगाजल च स्नानकं ॥३५॥ ताम्रपात्र घृतं मध्ये तन्मूर्ति सुगुप्तकम्। मध्यरात्रि प्रमाणं च संकल्प ब्राह्मणं ददेत् ॥३६॥ श्रेष्ठ विप्र कृतं दानं स दानो सुफलप्रदः॥ पुत्र प्राप्तिर्नसन्देहो पूर्व शाप विनश्यति ॥३७॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस जातक की जन्मकुण्डली का फलादेश कहता हूँ सुनो! एक से दो वर्ष की आयु में बालक के शरीर की दिन-प्रतिदिन वृद्धि हो। फिर दन्त-पीड़ा तथा शारीरिक-दुर्बलता का कष्ट हो। ३ से ५ वर्ष की आयु में खेल-कूद में रुचि रहे। शरीर में फोड़ा कष्ट

भी हो जो उपचार से शान्त हो। भाग्य-वृद्धि एवं विद्यारंभ हो। घर में मंगलाचार हो। ६ से १० वर्ष की आयु में विद्याभ्यास में वृद्धि हो। ११ से १५ वर्ष की आयु में सुख बढ़े। १६ से २० वर्ष की आयु में भाग्योदय, विवाह, धन-सम्पत्ति एवं वस्त्राभूषणों का लाभ हो। किसी एक जीव से विशेष प्रेम हो। काम-क्रीड़ा का सुख मिले तथा एक गुप्त-शत्रु भी हो, जो सामने न आये। २१ से २५ वर्ष तक भाग्यवृद्धि पुत्र तथा कन्या का लाभ हो। २६ से ३४ तक व्यवसाय में लाभ, भूमि-लाभ एवं यश प्राप्त हो। ३५ से ४२ वर्ष तक वाहन तथा अनेक प्रकार के सुख मिलें। ४५ से ५६ वर्ष की आयु में पौत्र-जन्म हो। शरीर को थोड़ा कष्ट हो जो दान-पूजन-होम से शान्त हो। तीर्थ यात्रा भी हो। ५७ से ५८ वर्ष तक धर्म-कर्म में धन खर्च हो। तीर्थ-यात्रा एवं देव-दर्शन हो। वात-कफ की पीड़ा भी हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। ९८ वर्ष की आयु में वैशाख कृष्णा तृतीया, भृगुवार, अनुराधा नक्षत्र तथा वृश्चिक के चन्द्रमा में प्रातः काल देह-त्याग करे। अगले जन्म में वाराणसी के समीप राजकुल में जन्म हो। हे शुक्र! इस जातक को सब प्रकार के सुख प्राप्त होंगे, परन्तु स्त्री तथा विशेष कर पुत्र की चिन्ता रहेगी तथा पुत्र-सुख बिना उपाय किये प्राप्त नहीं होगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! इसे पुत्र-सुख क्यों नहीं होगा, यह मुझे बताइये। भृगुजी बोले- हे वत्स! पूर्वजन्म में यह जीव धनी वैश्य-कुल में उत्पन्न हुआ था। एक बार एक ब्राह्मण का बालक अन्न की याचना करने के लिए इसके पास पहुँचा, परन्तु इसने क्रुद्ध होकर उसे मार डाला। उस समय उस विप्र पुत्र के पिता ने इसे तीन जन्मों तक पुत्र-सुख न मिलने का शाप दिया। उसी पाप के प्रभाव से इसे सन्तान-कष्ट रहेगा। शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! इस पाप का [illegible] है, [illegible] बताइये। भृगुजी बोले - आठ टंक भारी

स्वर्ण प्रतिमा बनवाकर उसपर ब्राह्मण-पुत्र की मूर्ति लिखे। फिर एक ताँबे के पात्रमें घृत भर कर,
उसमें स्वर्ण-प्रतिमा को रखकर, गुप्त रूपसे, आधीरात के समय किसी विद्वान् ब्राह्मणको दान
करदे तो इससे पूर्वकृत पाप का प्रायश्चित्त हो जाएगा तथा इसे पुत्र-सुख मिलेगा एवं वंशकी
वृद्धि होगी।। इति शुभम्।।

ॐ भृगु उवाच।। शृणु पुत्र फलादेशः यस्य जातस्य कुण्डली।।१।। प्रथमे द्वितीये
ऽब्दे च दन्तरोग ज्वरस्तथा। तृतीये व्रण व्याधिश्च मातृकष्ट न संशयः।।२।। भ्रातृभग्ने भवेद्योगो पिता

के. बु. ६	५ सू. शु. श.	४
चं. मं. ७		३
८		२
९	११ बृ.	१
१०		१२ रा.

सुखमवाप्नुयात्। चतुर्थेऽब्दे च संप्राप्ते मातृपीड़ा प्रजायते।।३।। औषधेन
प्रशान्तिस्याद् कस्मादृनमागतः। किंचित्कष्टं भवेद्देहे घृतदानेन शान्तिः।।४।।
पंचमाब्द पर्यन्तं विद्यारंभ भवेत्सुतः। पितुर्लाभ न सन्देहो भ्रातृयोगं च जा-
-यते।।५।। किंचिद्दरिष्ट संजातो तुलादानेन शांतये। महर्षि भूषणं वस्त्रं यान
वृद्धिस्तथैव च।।६।। नन्दवर्षे समारम्भ शर चन्द्राब्दगेऽपि च। संबंधोपिवि-
जातीयात् श्रेष्ठ वंश न संशयः।।७।। गृहे मंगल गानं च नवनारी समागम।
पितुर्लाभ महैश्वर्य वर्द्धयन्ति दिने दिने।।८।। रस चतुर्गते वर्षे वेदनेत्राब्दगे-
-पि वा। सुतासुत सुनारीणां प्राप्यते परमं सुखम्।।९।। प्रतिष्ठा मानवृद्धिं च कुलकीर्ति विशेषतः। सि-
द्ध्यन्ति सर्वकार्याणि बृहल्लाभ प्रभावतः।।१०।। शरपुत्रं गते वर्षे वेद वह्नि गतेऽपि च। संततियोग
संजातः जायाकष्ट भवेत्यपि।।११।। पुत्रकाम भयं कष्टं स्वतरेव विनश्यति। लाभं च विविधान्
कार्यन्ति धन सम्पत्समृद्धिमान्।।१२।। शरवह्नि गते वर्षे नेत्र वेदाब्दगेऽपि च। व्यापारे वृद्धि माप्नो-
-ति [illegible]।।१३।। विवाहे मंगलं कार्यं जायते गृह नूतनम्। पुत्रभाग्योदयं दीर्घ विलो-

पत्ते च भ्रात्रव:॥१४॥ गुण वेद गते वर्षे चन्द्र पंचाब्दगेऽपि च। भूमिप्राप्य महत्पुल्यं रचनागृहनूतनम्॥ ॥१५॥ पुत्रभाग्योदयं भूपात् साफल्यं सर्व वैभवम्। लाभं च विविधान् कार्य धन संपत्समृद्धिमान्॥ ॥१६॥ शरवह्नि गते वर्षे नेत्र वेदाब्दगेऽपि च। व्यापारो वृद्धिमाप्नोति नानाकार्य प्रबन्धके॥१७॥ गुण वेद गते वर्षे चन्द्र पंचाब्दगेऽपि च। श्रेयो मानं सुखं नित्यं रिपुरोग विलीयते॥१८॥ पुत्रभाग्योदयं भूपात् सफलं सर्व वैभवम्। भूमिलाभ विशेषेण रचना मन्दु नूतनम्॥१९॥ युग्म तत्त्वगते वर्षे वह्नि बष्ट गताब्दके। सर्वत्र लाभदो नित्यं वर्धते सुख नूतनम्॥२०॥ वेदषष्ठगते वर्षे देवलोक स गच्छति। वैशाखे कृष्णपक्षे च तृतीयां भृगुवासरे॥२१॥ प्रातःकाले च निर्याणं भविष्यति न संशय:। पुनरत्रै समुत्पन्नो नृपगेहे सुधार्मिक:॥२२॥ शृणु पुत्र कथा सर्वं पूर्व जन्मनि कथ्यते। क्षत्रीवंश समुत्पन्नो धनधान्य भविष्यति॥२३॥ तस्य स्थाने वसेत् विप्र तस्य गृह विनाशाकृत्। तेन पाप प्रभावेण वंश वृद्धिर्नजायते॥२४॥ शुक्रोवाच॥ किं यत्न दान मन्त्रस्य किं विधानेति जाप्यकम्। पूर्व शाप विनिर्मुक्तो पुत्र सौख्यं च प्राप्नुये॥२५॥ भृगु उवाच॥ स्थानदान कुरु जीव गायत्री मन्त्र जाप्यकम्। स्वर्णस्य प्रतिमा कार्य द्विजपुत्र विलिख्यपेत्॥२६॥ सर्वदान विधानेन संकल्पं ब्राह्मणं ददेत्। एतद्दान प्रभावेण पुत्र सौख्य सदा भवेत्॥२७॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस जन्मकुण्डली वाले जातक का जीवन-फलादेश सुनो। पहले तथा दूसरे वर्ष में दन्त-पीड़ा तथा ज्वर हो। तीसरे वर्ष में व्रण पीड़ा तथा माता को कष्ट हो एवं पिता को पुत्र अथवा पुत्री का लाभ हो। चौथे वर्ष में माता को पीड़ा हो, जो औषधोपचार से शान्त हो। ५ से ८ वर्ष में विद्यारम्भ, पिता को लाभ, भ्रातृयोग तथा कुछ अरिष्ट हो, जो तुलादान से शान्त हो। वस्त्राभूषणों का लाभ हो। ९ से १५ वर्ष की आयु में घर में मंगलाचार हो।

१६ से २४ वर्ष की आयु में विवाह तथा पुत्र-कन्या का सुख मिले। कुछ कष्ट भी हो, जो सुफल से शान्त हो। सब कार्य सिद्ध हों। २५ से ३४ वर्ष की आयु में सन्तान-व्याधि तथा स्त्री को कुछ कष्ट हो। भय एवं शत्रु पीड़ा हो, जो स्वतः शान्त भी हो जाय। अनेक प्रकार के लाभ हों। ३५ से ४२ वर्ष की आयु में व्यवसाय में वृद्धि हो। चिन्तातुर हो तथा सब प्रकार के सुख मिलें। ४३ से ५१ वर्ष की आयु में भूमि से धन-लाभ हो। नया मकान बने। भाग्योदय हो तथा सब प्रकार के आनन्दों की वृद्धि हो। ५२ से ६३ वर्ष की आयु में धार्मिक कृत्य, भजन, पूजन, दान, पुण्य, परोपकार, तीर्थयात्रा आदि से अपने जीवन को सफल करे। कफ-वात की पीड़ा भी हो, जो औषध-सेवन से शान्त हो। ६४ वर्ष की आयु में वैशाख कृष्णा तृतीया शुक्रवार को प्रातःकाल मृत्यु होना संभव है। हे पुत्र! अगले जन्म में यह जीव राजकुल में उत्पन्न होकर धर्म-कर्म में चित्त लगायेगा। पूर्वजन्म में यह क्षत्रिय-कुल में उत्पन्न हुआ था तथा धन-धान्य से पूर्ण था। इसकी भूमि पर एक ब्राह्मण अपना घर बनाकर रहता था। एक बार इसने उस ब्राह्मण का घर उजाड़ दिया तथा उसमें आग लगादी, जिसमें जलकर ब्राह्मण के पुत्र तथा पुत्रियों की मृत्यु होगई। उस समय ब्राह्मण ने इसे तीन जन्मों तक सन्तान-सुख से हीन होने का शाप दिया। उस शाप के प्रभाव से वर्तमान जन्म में इसे सन्तान-सुख नहीं मिलेगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा- हे प्रभो! किस उपाय द्वारा इसके पाप का प्रायश्चित्त होकर सन्तान सुख प्राप्त हो सकता है, वह बताइए? भृगुजी बोले- हे पुत्र! सर्व प्रथम तो इसे किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को मकान का दान करना चाहिए। फिर एक लाख की संख्या में गायत्री मन्त्र का जप करवा कर, एक स्वर्ण-पत्र पर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति अंकित कर, उसे विधि पूर्वक ब्राह्मण को संकल्प करदे। इस उपाय से पूर्वजन्मकृत पाप का

प्रायश्चित्त होकर इसे सन्तान-सुख प्राप्त होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि फलादेशं ऽस्य कुण्डलीम् ॥१॥ प्रथमे क्षितिपेऽब्देषु पंचमे सप्तमे तथा । नेत्ररोगोदरोपीड़ा पितुर्लाभ भवेत् सदा ॥२॥ विद्यारम्भ विजानीयात् भ्रातृ सम्बन्ध योगकम् । अष्टमात् षोडशे वर्षे विद्यावृद्धि दिने दिने ॥३॥ गिरि चन्द्रमिते वर्षे व्योम नेत्रमितेऽपि वा । चतुर्विंश मितेऽब्देषु सौख्य वृद्धि प्रजायते ॥४॥ पत्नी गर्भ समायुक्ता: स्वल्पजीवी च बालक: । जायते नात्र सन्देहो अथवा गर्भ पातनम् ॥५॥ उद्भवे बुध प्रीतिश्च कश्चिदस्त्री विशेषत: । तेन याति भयं किञ्चिच्छत्रुमेकं समुद्भव: ॥६॥ बाणनेत्रमिते वर्षे वेद वह्नि तथैव च । धनलाभं न सन्देहो राजद्वारे विशेषत: ॥७॥ गृहे मंगल कार्यं च स्त्री पीड़ा भवेत् पुन: । भूम्यापि धन लब्धिश्च पुत्रसौख्य न संशय: ॥८॥ बाण राममिते वर्षे वेद वेदाब्द मध्यगे । अल्पमेकं न सन्देहो भविष्यति वरानन: ॥९॥ बाणवेद गते वर्षे शरबाणमिते तथा । पुत्र पौत्र सुखं ह्येयं दास दासीश्च सेविता ॥१०॥ आलस्यं जायते देहे शुभ कार्ये धनं व्यय: । पत्नी क्लेश समुत्पन्न मित्र क्लेशश्च जायत: ॥११॥ रस पंच मिते वर्षे वह्नि षट्गतोऽपि वा । शत्रुमेकं समुत्पन्नो चित्त चिन्तातुरो भवेत् ॥१२॥ चन्द्र कार्य विनश्यन्ति द्वितीये च समुद्भव: । विदेशे गमनं चैव धन धान्य समुद्भव ॥१३॥ पुत्र कन्या विवाहे च धन व्यय विशेषत: । मन: प्रसन्नतां याति सौख्य वृद्धि न संशय: ॥१४॥ वेद षष्ठि समारम्भ यावन्नेत्र नगाब्दके । भार्या कष्ट समुत्पन्नो देहत्यागो न संशय: ॥१५॥ किंचित् व्याकुलतां याति योग शास्त्रेण नश्यति । वेद सप्ताब्दमायुष्यं ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी ॥१६॥

(कुण्डली)

- ६ शु०
- ५
- ४ मं०
- ७
- स० बु० गु० के०
- ३
- ८ चं०
- २
- ९
- ११ रा०
- १
- १०
- १२ बृ०

गुरुवार समायुक्त: स्वाति नक्षत्र संयुता। तुले चन्द्र गत: पुत्र: देह त्यागो न संशय:॥ १७॥ अग्रजन्म भवेत्विप्र: अग्निहोत्रकुले भृगु। हिमालयोत्तरे देशे सर्व संपद् समन्वित:॥ १८॥ पूर्वे तीर्थाटिने पुण्यं दीननां परिपोषणं। तेन पुण्य प्रभावेण गुण कीर्त्यान्वितो भवत्॥ १९॥ पंचमे सप्तमे चैवद्वाद-शैव चतुर्दशे। महत्कष्टं भवेत् अस्य जीवने संशयो भवेत्॥ २०॥ यदि जीवत्यसौ बालो पुत्र कष्ट भविष्यति॥ शुक्रोवाच॥ केन पाप प्रभावेण तत्सर्वं वद मे प्रभो॥ २१॥ भृगु उवाच॥ क्षत्री वंश भवेद् जन्म पूर्व कालं भृणु सुत:। ज्येष्ठ भ्रातश्च पुत्रोवा अर्धभागी च सो शिशु:॥ २२॥ तात मृत्यु भवेल्लोके सुमाता देव पूजनम्। क्षत्रियं लोभकं कृत्वा भ्रातृपुत्रश्च मारयेत्॥ २३॥ माता देवालये तिष्ठवा ततो शाप महा ददेत्। त्वयजन्मनि तं शापं पुत्रसौख्य विनश्यति॥ २४॥ शुक्रउवा-च॥ किं मन्त्रं कस्य पूजा च किं दानं किं च जापकम्। पूर्वपाप विनश्यंति तत्सर्वं कथय: प्रभो॥ २५॥ भृगु उवाच॥ स्वर्णस्य प्रतिमाकार्या सप्त टंक प्रमाणकम्। नराकारो लिखेन्मूर्ति गंगाजल च स्नानकम्॥ २६॥ गायत्री मंत्रकं जापं अर्द्ध लक्ष प्रमाणकम्। श्रेष्ठ विप्र ददेद्दानं सर्व पापं विनश्यते॥ २७॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस कुण्डली वाले जातक का जीवन फलादेश सुनो। १ से ७ वर्ष तक की आयु में नेत्र-रोग, उदर-पीड़ा, माता को कष्ट तथा पिता को लाभ हो। साथ ही भाई होने का योग भी है। ८ से १६ वर्ष की आयु तक विद्याध्ययन १७ से २४ वर्ष की आयु में विवाह, धन-लाभ, राजद्वार से लाभ तथा पुत्र-सुख प्राप्त हो। घर में मंगल-कार्य हो तथा यश एवं सम्मान बढ़े। २५ से ३४ वर्ष की आयु में भूमि द्वारा धन का लाभ हो। ३५ से ४४ वर्ष की आयु में तीर्थयात्रा हो एवं धर्म-कर्म की वृद्धि हो। ४५ से ५५ वर्ष की आयु में पौत्र-सुख हो। शरीर में कुछ आलस्य

रहे। पत्नी को कष्ट हो। मित्र की ओर से क्लेश हो। ५६ से ६३ वर्ष की आयु में एक शत्रु उत्पन्न हो। चित्त में चिन्ता रहे। एक काम बिगड़े तथा दूसरा बने। परदेश-गमन एवं पुत्र तथा कन्या के विवाह में धन खर्च हो। ६४ से ७२ वर्ष की आयु में स्त्री को कष्ट हो तथा उसकी मृत्यु हो। चित्त की व्याकुलता योग-साधन से दूर हो। ७४ वर्ष की आयु में ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी गुरुवार को स्वातिनक्षत्र तथा तुला के चन्द्रमा में शरीर-त्याग करे। अगले जन्म में हिमालय पर्वत के उत्तरी भाग में ब्राह्मणवंश के अग्निहोत्र कुल में जन्म हो तथा राजतुल्य सुखों का उपभोग करे। इस कुण्डली वाला जातक अन्य सब प्रकार से सुखी हो, परन्तु पुत्र-सुख में कमी रहे एवं स्त्री के विषय में भी चिन्ता बनी रहे। यह सुन कर शुक्र ने पूछा हे प्रभो! इसका कारण क्या है? भृगुजी बोले- हे शुक्र! पूर्वजन्म में यह जीव क्षत्रियवंश में उत्पन्न हुआ था। यह बड़ा ऐश्वर्यशाली था। इसके बड़े भाई का एक पुत्र था, जिसे इसने धन के लोभ में मार डाला। उससमय उसकी माता देवमन्दिर में बैठी पूजा कर रही थी, जब उसे पुत्र की मृत्यु का समाचार मिला, तो उसने इसे तीन जन्मों तक पुत्र-सुख से वंचित रहने का शाप दिया। उसी शाप के कारण इसे पुत्र-कष्ट होगा। शुक्र ने कहा- हे प्रभो! अब यह बताइये कि किस दान, मन्त्र जप तथा उपाय के द्वारा इसके पाप का प्रायश्चित्त हो कर पुत्र-सुख प्राप्त हो सकता है? भृगुजी बोले - सात टंक स्वर्ण की प्रतिमा बना कर, उसे गंगाजल से स्नान करावे। फिर ५१ हजार की संख्या में गायत्री मन्त्र का जप करे। तत्पश्चात् उस नराकार प्रतिमा का विधिवत् पूजन करके उसे किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान करदे तो इसके पूर्वकृत पाप का प्रायश्चित्त हो जायगा तथा इसे सन्तान-सुख की प्राप्ति भी होगी॥ इति शुभम्॥

ॐ भृगु उवाच॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि कलादेशं च कुण्डलीम्॥ १॥ जन्मतः प्रथमे वर्षे
मंगलं सुख वर्द्धनम्। अजाद्या वृश्चिके भानु वातरोगेण पीडिता॥ २॥ द्वित्रि वर्षान्तरे वत्सः बालवृद्धि
यथाक्रमः। व्रणं विरेचनं पीड्यः दशनोत्पत्तिजा रुजं॥ ३॥ वेदाब्दे व्याल वर्षे च अकस्माच्च भया
गमः। ईश्वरे कृपयाज्जीवः लभ्यते परमं सुखम्॥ ४॥ नंदाब्दे नाग चेन्दु च तयोर्मध्ये महत्सुखम्।
विद्या वित्त सम्पन्नो वर्द्धते सुख नूतनम्॥ ५॥ विवाहे महोत्साहो मंगलं विविधैरपि। अन
विंश गते वर्षे नवयुग्म गतेऽपि वा॥ कुल बन्धु विरोधेन क्लिश्यते चिन्तयान्विता। भाग्योदयं भवे

८ शु.	७ सू. चं. बु.	६ श.
९ मं.	१० रा. ४ के.	५
११	१ वृ.	३
१२		२

तस्य सुजनेभ्यो प्रशंसितः॥ ६-७॥ सुता जन्म प्रजायेत मंगलं गेह दूत
नं। दानमंच सुयत्नेन पुत्र सौख्य भवेद्ध्रुवम्॥ ८॥ नाग युग्म गतेकाव्य
नन्दवह्नि गतेऽपि वा। पुत्र लाभ विशेषेण भाग्य वृद्धि दिने दिने॥ ९॥
व्योम वेदगते वर्षे नग वेदाब्दगेऽपि वा। पुत्र कन्योत्सवे तस्य यशं
कीर्तिश्च सत्तमं॥ १०॥ मनेच्छा पूजितो नित्यं गेह नूतन सुन्दरम्। व्या-
पारो सिद्धिदाता च संपदा संचयो महान्॥ ११॥ नागवेदाब्दगे वत्स
वेद बाणगतेऽपि वा। पौत्र जन्म न सन्देहो गृहे मंगल गायनम्॥ १२॥
कफवातेन पीडा च श्वास कास तथैव च। विप्राणां भोजनं दानं पायसं शर्करान्वितः॥ १३॥
भोजयित्वा सप्रीतिश्च सर्व कार्य विनश्यति। पुत्र पौत्र समावृत्य दासी दासेन सेवितः॥ १४॥
धन धान्य समृद्धिश्च गृहाङ्गने प्रपूरितः। शरबाण गते वर्षे वह्नि षट् गतेऽपि वा॥ १५॥ ततः
सर्व सुखं प्राप्य चन्द्रवत् वर्द्धते सुधिः। नाना लाभ समायुक्तो देशे कीर्ति प्रवर्द्धमान्॥ १६॥
देवदर्शन तीर्थे च पूतात्मा क्रियते सदा। दान धर्म रतो नित्य अग्रजन्मस्य हेतवे॥ १७॥ वेद

षष्ठाब्दमायुष्य भाद्रपद कृष्णपक्ष च। अष्टमी रोहिणी भे च वृष राशि गते शशि:॥१८॥ गोदान दुग्ध दुग्धदानञ्च कृत्वा देह त्यजेत् सुत:। पुनर्वैश्यकुलोत्पन्न चन्दीनामगुणी भव॥१९॥ काश्मीर नगरे पूर्वं ब्राह्मण: शास्त्र वर्जित:। मल्लविद्यारतो नित्यं शौच कर्म विवर्जित॥२०॥ अभक्ष्यं भक्षितं तेना पेय पीतं द्विजोत्तम। अगम्या गमनं कृत्वा बहुवर्ष गतागतै:॥२१॥ आयुष्यस्तु समाप्तत्वात्कीट योनि समागत:। पश्चान्मनुष्यमापन्न किंचित्पुण्य प्रभावत:॥२२॥ गौराङ्गश्चंचलश्चैव सद्व्ययी च पराक्रमी। तेन योग प्रभावेण संतानोऽस्य न विद्यते॥२३॥ शुक्रोवाच॥ किं जाप्यं कस्य पूजा च किं दानं च किमौषधं॥ भृगु उवाच॥ ताम्रपात्र पलान्पंच तन्मध्येनवमण्डलम्। पञ्चबीजं नृसिंहस्य सहस्रंतु द्वयं जपेत्॥२४-२५॥ सन्तानार्थं च दातव्यं भोजनं पयसाघृतं। यदा न कुरते दानं तदा सुख न प्राप्स्यते॥२६॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी बोले - हे पुत्र! अब इस जातक की जन्म कुण्डली का फलादेश सुनो। जन्म के पहले वर्ष में घर में मंगल कार्य हों। मेष अथवा वृश्चिक के सूर्य में वातरोग की पीड़ा हो। दूसरे-तीसरे वर्ष में क्रमश: शारीरिक वृद्धि हो, व्रण, दन्त-पीड़ा, ज्वर आदि हों। ४ से ८ वर्ष की आयु में आकस्मिक भय हो। ९ से १७ वर्ष की आयु तक विशेष सुख रहे। पढ़ने-लिखने में मन लगे। घर में विवाहादि मंगल कार्य हों। १९ से २७ वर्ष की आयु में विवाह हो, कुल-बंधुओं से विरोध हो। एक कार्य अपनी ही मूर्खता से नष्ट हो। भाग्योदय हो। स्वजन प्रशंसा करें। उच्चपद मिले। कन्या का जन्म हो। दान, मन्त्र जप तथा तप बल से पुत्र-लाभ हो। २८ से ३९ वर्ष की आयु में भाग्य की निरन्तर वृद्धि हो। घर में मंगल कार्य हों। ४० से ४७ वर्ष की आयु में पुत्र तथा कन्या के उत्सव में धन खर्च हो। ऐश्वर्य तथा भोग की प्राप्ति हो,

सभी रोग-शोक पुण्य से नष्ट हों। नया घर बने। व्यवसाय में लाभ हो। ४८ से ५८ वर्ष की आयु में पौत्र-लाभ हो। घर में मंगलगान हों। वात-कफ तथा श्वास की पीड़ा हो। ब्राह्मण को भोजन, पायस तथा मिष्ठान्न भोजन कराने से सब कष्ट दूर हों। पुत्र, सेवक, वाहन, धन-धान्य आदि की वृद्धि का सुख प्राप्त हो। ५५ से ६३ वर्ष की आयु में सब प्रकार के सुख मिलें तथा देश में कीर्ति बढ़े। देशाटन, तीर्थयात्रा, देव-दर्शन, दान-पुण्य आदि के द्वारा पुण्य की वृद्धि हो तथा अगला जन्म सुधरे। ६४ वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा अष्टमी रोहिणी नक्षत्र में जब वृषराशि का चन्द्रमा हो, उस समय गोदान तथा धान्य-दान करके शरीर त्यागे। इस जन्म के पुण्यों के प्रभाव से अगली बार धनी वैश्य कुल में जन्म ले तथा समस्त आकांक्षाओं की पूर्ति हो। हे शुक्र! यह जीव पूर्व जन्म में, काश्मीर नगर में ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ था। वहाँ पर अभक्ष्य भक्षण करता तथा अपेय (मद्य आदि) पीता था। यह परस्त्रीगमन आदि अनेक पापकर्मों में लिप्त बना रहा। आयु समाप्त होने पर यह नरकगामी हुआ फिर कीट-योनि को प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् शेष बचे थोड़े से पुण्यों के प्रभाव से पुनः मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ है; वर्तमान योनि में इसके खर्च आदि भली प्रकार से चलेंगे और यह पराक्रमी भी होगा, परन्तु पूर्वजन्म के पापों के कारण इसे सन्तान-सुख नहीं मिलेगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस दान, मन्त्र-जप, पूजा, औषध आदि से उसके सन्तान हो सकेगी? भृगुजी बोले - पांच पल तांबे के पात्र लेकर, नव मंडल का निर्माण करे; उस पर ताम्रपात्र को स्थापित कर, नृसिंह पंचबीज मन्त्र का दो हजार की संख्या में जप कराये, फिर उसे सन्तान के अर्थ ब्राह्मण को दान करदे तथा घृत-दुग्ध का भोजन

न करावे एवं स्वयं भी उसी का भोजन करे। ऐसा करने से पूर्व पाप का प्रायश्चित्त होकर, सन्तान- सुख प्राप्त होगा, अन्यथा कष्ट प्राप्त होगा ।। इति शुभम् ।।

ॐ भृगु उवाच ।। शृणु पुत्र फलादेशं अस्य जातस्य कुण्डलीम् ।।१।। प्रथमे द्वितीयेऽब्दे च वह्नि वेद यथाक्रमात्। बाल वृद्धि भवेन्नित्यं रोग शोकं यदा कदा ।।२।। पंचमे षष्ठमे वर्षे नंद वर्षा च वर्द्धिता:। विद्यारंभ कृतो क्रीडनं पठनादिभ्रमो मन: ।।३।। मंगलं काम योगोऽपि सुखान्वितं तदनंतरे। दिक वर्षान्तरे वत्स नंद चन्द्र गतेऽपि वा ।।४।। पत्नी प्राप्ति सुखं नित्यं मित्रैश्च रमते मुदा। रूप यौवन सम्पन्नो दृश्यते ललना जनै: ।।५।। नव भूषण वस्त्रं च बुद्धि वृद्धि विशेषत:। विंश वर्षाब्दगे वत्स नाग युग्म गतेऽपि वा ।।६।। धन धान्य समृद्धिश्च दास दासेन सेवित:। भार्या गर्भवती ह्येषा पुत्र रत्न मजायत ।।७।। नन्द युग्म गते वर्षे ऋषि राम गतेऽपि वा। पुत्र कन्या समयुक्तो धन धान्य समन्वित: ।।८।। शत्रुमेक समुत्पन्नो स्व कुले पर कुलेऽपि वा। पुत्र पुत्री भवेद्दाह धन धान्य व्ययं भवेत् ।।९।। नागरामगते वर्षे रस वेद गतेऽपि वा। अरिष्टं जायते पुत्र अल्प मृत्यु प्रकष्टयेत् ।।१०।। अकस्मात् उपद्रवो वा भय क्लेश महानकं। कुक्षि पीड़ा विजानीयात् जीवचिन्ता तथैव च ।।११।। ऋषि वेदाब्दगे वर्षे शरबाण गतेऽपि वा। अग्र कान्ता भवेत्प्रीति पूर्व कर्मानुसारत: ।।१२।। तद्दितार्थ धनं वस्त्रं भूषणं रत्नसंयुतम्। अयं भवति कालेन रचना नूतनम् गृहम् ।।१३।। रस बाण गते वर्षे शर षष्ठ गतेऽपि वा। दाता भोक्ता कृतज्ञश्च बहुसेवी नरो भवेत् ।।१४।। रस षष्ठ गते वर्षे भोग सप्तगतेऽपि वा। पुत्र पौत्र धनैर्युक्त: मोदते भुवि मण्डले ।।१५।। गोवत्स च प्रदातव्यं स्वर्णशृंगी

बु. शु. ७ | ६ सू. चं. | ५ | ४ श. | गु. ८ | ९ मं. रा. | ३ के. | १० | १२ | २ | ११ | १

पयस्विनी । रौप्यक्षुरौ ताम्रपृष्ठी पात्र वस्त्रादि संयुता: ॥१६॥ ब्रह्मभोज तत: कुर्यात् यथेच्छा भोजनंभवेत्
शशि सप्ताब्दमायुष्यं श्वासकाहेन पीडनम् ॥ १७॥ ज्वरतप्त शरीरोऽयं दुर्बलो जायते वपु: । अन्न
दानं च कर्तव्यं मासि भाद्रपदे शुभ: ॥१८॥ कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां निर्याण संभवं भवेत् । उच्चगेहे
समुत्पन्नो सुपुण्यात् अनुजन्मनि ॥ १९॥ सुखवासस्सर्वे वणिक् वृत्तौ मनेच्छा बहु भूजिता । रामभक्तो
सुपुण्येन सर्व सौख्यं च प्राप्यते ॥ २०॥ सर्व सुखं च भोक्तानं सुत सौख्यं न दृश्यते । पूर्व पाप
प्रभावेण वंश वृद्धि विनश्यति ॥ २१॥ शुक्र उवाच ॥ किं कर्मानुसारेण पुत्र सौख्यं न जायते । तत्सर्वं श्रोतु
मिच्छामि कृपया कथय: प्रभो ॥२२॥ भृगु उवाच ॥ पूर्वे वैश्य कुले जन्म अति तेजो प्रतिष्ठया ।
अन्न व्यापार कृत्वा स: दुष्कालो भुवि दृतवान् ॥ २३॥ क्षुधातुरं ब्रह्मपुत्रं अन्न लब्धिं च
वांछया । समागतोसि वैश्योऽयं ताडयन्ति सक्रोधकं ॥ २४॥ द्विजपुत्र मृतं याति तदा सा पितरं
भृगु । शापं दत्त्वाऽति वैश्योऽयं पुत्र सौख्य विहीनकं ॥ २५॥ शुक्र उवाच ॥ किं यत्नं कुरुते तात
पूर्व शाप निवारणम् । तत्सर्वं विस्तराद् ब्रूहि श्रोतुमिच्छामि सादरम् ॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णं च
प्रतिमा कार्या पंचटंक प्रमाणकम् । द्विजपुत्र लिखेन्मूर्तिं गंगाजलं च स्नानकं । ताम्रपात्रं घृतं
मध्ये तन्मूर्तिं च प्रवेशकं । मध्यकाल प्रमाणं च संकल्प्यं ब्राह्मणं ददेत् ॥ अस्य दान प्रभावे-
-ण सर्व पाप विनश्यति । पुत्र सौख्य भवेत्जातं वंश वृद्धि दिने दिने ॥ इति ॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा – हे पुत्र! अब इस जातक की जन्मकुण्डली का फलादेश
सुनो। पहली से चौथी वर्ष तक बालक की शरीर-वृद्धि यथाक्रम से हो । कभी रोग-शोक भी हो।
५ से ९ वर्ष की आयु तक विद्यारंभ हो । १० से १९ वर्ष की आयु में नित्यसुख प्राप्त हो । फिर विवा-
ह हो । घर में वृद्धि हो । २० से २८ वर्ष की आयु में विद्या-बुद्धि बढ़े । गणित का विशेष

प्राप्त हो। स्त्री गर्भवती हो। स्त्री को कष्ट हो। २६ से ३० वर्ष की आयु में पुत्र तथा कन्या का लाभ हो एवं धन धान्य से युक्त हो। एक गुप्त शत्रु उत्पन्न हो, जो अपने ही अथवा पराये कुल का हो। पुत्र का विवाह हो, जिसमें धन खर्च हो। ३८ से ४६ वर्ष की आयु में एक अरिष्ट हो। फिर ऐश्वर्य मान-कीर्ति की वृद्धि हो। कन्या तथा पुत्र हो। अकस्मात् कोई भय अथवा उपद्रव हो। गृह पीड़ा भी हो। ४७ से ५५ वर्ष की आयु में किसी पर-स्त्री से प्रेम हो, उसके लिए धन, वस्त्र आदि का व्यय हो। नया मकान बने। ५६ से ६५ वर्ष की आयु में सुख मिले। वाहन, सेवक, धन, ऐश्वर्य आदि की उपलब्धि हो। ६६ से ७० वर्ष की आयु में सम्पूर्ण आनन्द मिले। सोने के सींग, चाँदी के खुर तथा तांबे की पीठ युक्त गौ का दान करने से सब कष्ट दूर हों। ब्राह्मण को इच्छा-भोजन कराये। ७१ वर्ष की आयु में श्वास कष्ट हो तथा भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को महायात्रा हो। पुण्य-प्रभाव से अगले जन्म में वणिक् कुल में उत्पन्न हो तथा रामभक्ति से सभी मनोकामनाओं को प्राप्त करे। वर्तमान में इस जातक को स्त्री के लिए चिन्तित रहना पड़े तथा पुत्र-सुख प्राप्त न हो। यह सुनकर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! इसका कारण बताइये। भृगुजी बोले - हे शुक्र! पूर्व जन्म में यह धनी वैश्य था तथा अन्न का व्यवसाय करता था। एक बार पृथ्वी पर अकाल पड़ा। उस समय एक ब्राह्मण-पुत्र इसके पास अन्न की याचना करने आया, इसने उसे अन्न तो दिया नहीं; अपितु क्रुद्ध होकर इतना मारा कि उसकी मृत्यु हो गई। उस समय उसके पिता ने दुःखी होकर इसे पुत्र-सुख से रहित होने का शाप दिया। उसी शाप के प्रभाव से इसे सन्तान-कष्ट होगा। यह सुनकर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस उपाय से इसके पाप का प्रायश्चित्त हो सकता है, वह कहिए। भृगुजी बोले - हे वत्स! पांच टंक भारी सोने

भा० टी०

सं० भृ० ११०२

की प्रतिमा बनवाकर, उस पर ब्राह्मण के पुत्र का चित्र अंकित करे। तत्पश्चात् एक ताँबे के पात्र में
घृत भर कर, उसमें उस प्रतिमा को गुप्त रूप से रखकर अर्धरात्रि के समय किसी विद्वान् ब्राह्मण
को दान करदे तो इसके पूर्व पाप का प्रायश्चित्त होकर, पुत्र-सुख प्राप्त होगा तथा वंश की वृद्धि
होगी॥ इति शुभम्॥

ॐ॥ श्रीभृगु उवाच॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि फलादेशश्च कुण्डलीम्॥१॥

जन्मतः प्रथमे वर्षे मंगलं सुख वर्द्धनम्। त्रित्रि वर्षान्तरे वत्स बालवृद्धि यथाक्रमात्॥२॥ वेदाब्दे व्याल
वर्षे च तयोर्मध्ये यथाक्रमः। जायते विविधोत्साहो मंगलगान मन्दिरे॥३॥ वि-
द्यारम्भोऽपि दृश्यन्ते क्लिश्यते क्रीडने मतिः। तात लाभ सुखं नित्यं यशं
भूरि प्रतिष्ठितः॥४॥ विंश वर्षे गते वत्स नाग युग्म गतेऽपि वा। पदोच्चं
लभते धीमान् नाना कार्य प्रबन्धकैः॥ विवाहादि महोत्साहो व्ययञ्च महतो
महान्। भाग्योदयं भवेत्तस्य स्वजनेभ्यो प्रशंसितम्॥५-६॥ नन्द युग्म
गते वर्षे नाग रामाब्दगेऽपि वा। नृपद्वारे प्रतिष्ठोपि रिपु तस्य विनिर्मु-
खम्॥७॥ पुत्र कन्या समायुक्तो धन धान्य विवर्धनम्। भोगैश्वर्य

के.बु.मं. ३ | २ सू. | १ शु. | १२ | चं. ४ वृ. | ५ | ११ | ६ | ८ | १० | ७ श. | ९ रा.

सम्पन्नो भूयसे भाग्य भाजन॥८॥ नन्दराम गते वर्षे बाणवेद गतेऽपि वा। पुत्र कन्या विवाहे च
धन व्यय न संशयः॥९॥ भूमि लाभ विशेषेण मनेच्छा सर्व पूजिता। षड्योगे जायते कष्टं पूर्ण
पुण्येन नरपति॥१०॥ रसवेद समारभ्य यावद्बाण शर स्मृता। शरीरेषु महापीड़ा कफवात सम-
न्विता॥११॥ कस्मिन्तीर्थे भवेद्यात्रा सकुटुम्ब ससेवकैः। महादान भवेत्तत्र यथालाभस्तथा
व्ययम्॥१२॥ रस बाणाब्द मारभ्य यवद्बाण रस स्मृता। चिन्तयेदात्मशास्त्रं च आत्मज्ञान विचारयेत्

॥१३॥ मानसी विविधा चिन्ता प्राणभय विनश्यति । अग्रवर्षे महालाभौ पदोच्चं च सुप्राप्तवान् ॥१४॥ ऋतुषष्ठ गते वर्षे पत्नी प्राणहरी दशा । लाभं च विविधो ह्येयं शुभकार्यं व्ययं महत् ॥१५॥ नागजन्माब्द मायुष्यं वैशाखे शुक्लपक्षय। अष्टम्यां रविवारे च मयानन्तमागता ॥१६॥ गोभूसुवर्ण दानञ्च दत्वा भूम्यासनं कृत: । प्राप्तेत्वर्धनिशा पुत्र: सिंह राशि गते शशि ॥१७॥ पञ्चतत्त्व प्रथक् त्वा प्राणयात्रा भविष्यति । अग्रे ब्रह्मकुले जन्म भविष्यति न संशय: ॥१८॥ पूर्वे दाक्षिण्य देशे च बाहुजोन्य वसन्तादा। धन धान्य समृद्धस्तु दान धर्म रत: सदा ॥१९॥ सुरेति समाख्यातं पत्नी तस्य मनोरमा। धर्मशीला गुणाढ्या च पति सेवा परायणा ॥२०॥ एकस्मिन्समये वत्स सगर्भा सा बभूवह। पुष्पाराम ततो गत्वा सखीनां परिवेष्टित: ॥२१॥ नारुगी चोरिता तत्र गर्भलोभेन वै तया । बाहुजेन कृतो यस्माद्रोगो मृत्या तु गर्भिणी ॥२२॥ ततो यमपुरे प्राप्तौ दंपती च तदानघ। पूर्व पाप प्रभावेण व्रण रोगेण पीडित। ॥२३॥ तस्य यत्न प्रवक्ष्यामि शृणु पुत्र स सावधान् । सप्तचतुमिते गुंची स्वर्णमादाय भो सुत: ॥२४॥ तस्य पत्र प्रकर्तव्यं शंखचक्र गदादय: । तस्योपरि गर्भिणी मूर्ति रक्त चंदन कुंकुमे ॥२५॥ तस्य प्राण प्रतिष्ठा च षोडशोपचारकं कृतम् । वस्त्राभूषण संयुक्तं ब्राह्मणेन प्रदापयेत् ॥२६॥ तेन पुण्य प्रभावेण पूर्व पापात् प्रमुच्यते ॥२७॥

भावार्थ: भृगुजी बोले – हे पुत्र! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो। इस जातक के जन्म के प्रथम वर्ष में घर में मंगलाचार हों तथा सुख- वृद्धि हो। दूसरे- तीसरे वर्ष में बालक की शरीर-वृद्धि हो। चार से आठवें वर्ष में विद्यारंभ हो, मंगलगान हों तथा घर में मंगल हो। पिता को लाभ हो। अकस्मात् भय भी हो। ९ से १५ वर्ष तक बहुत सुख मिले। कुल- बंधुओं से विरोध हो, बुद्धिमानी से सभी कार्य सिद्ध हों। २० से २८ वर्ष तक विवाह, उच्च पद- प्राप्ति, धनागम तथा पुत्र- जन्म का सुख मिले। २९ से ३८ वर्ष तक

राजद्वार में प्रतिष्ठा, शत्रु पर विजय, धन-धान्य की वृद्धि तथा ऐश्वर्य प्राप्त हो। रोग से कष्ट हो, जो दान-पुण्य से दूर हों। ३९ से ४५ वर्ष में व्यवसाय में लाभ, धन की वृद्धि, पुत्र तथा कन्या के विवाह में खर्च एवं तीर्थ-यात्रा हो। ४६ से ५५ वर्ष तक कीर्ति एवं ऐश्वर्य की वृद्धि हो। पुत्र, पौत्र का विवाह हो। ५६ से ६५ वर्ष की आयु में आत्म-चिन्तन हो। खर्च अधिक रहे। हृदय में चिन्ता तथा क्लेश भी हो। भयभीत भी रहे। साधु-समागम तथा शास्त्राध्ययन भी हो। ६६ वर्ष की आयु में स्त्री की मृत्यु हो। शुभ कार्यों में धन खर्च हो तथा अनेक प्रकार के लाभ भी हों। ६७ वर्ष की आयु में वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार को मघा नक्षत्र में, अर्द्धरात्रि के समय गौ, पृथ्वी तथा स्वर्ण दान करने के बाद इस जातक की मृत्यु होना संभव है। अगले जन्म में यह जीव ब्राह्मणवंश में उत्पन्न होगा। हे शुक्र! पूर्व जन्म में यह जातक दक्षिण देश में उत्पन्न हुआ था और इसका नाम 'बाहुज' था। इसकी सुन्दरी तथा मनोरमा पत्नी का नाम 'सुरत' था। वह धर्मात्मा, गुणवती तथा पतिपरायणा थी। एक समय जब कि सुरत गर्भवती थी, तब बाहुज उसे अर्थात् अपनी पत्नी को साथ लेकर एक बगीचे में गया और वहाँ कुछ नारंगियों को चुराकर खाया। सुरत की कुछ सखियां भी उसके साथ थीं। उनके सामने ही बाहुज ने काम के वशीभूत होकर गर्भवती सुरत के साथ उस बगीचे में संभोग किया, जिसके कारण गर्भिणी की मृत्यु हो गई। अन्त में वह यमपुर को प्राप्त हुआ और बहुत समय बाद अब मनुष्य योनि में आया है। पूर्व जन्म के पाप के कारण यह व्रण रोग से पीड़ित रहेगा। अब मैं इसके पाप-निवारण का उपाय कहता हूँ, उसे ध्यान पूर्वक सुनो। सत्रह रत्ती स्वर्ण का पत्र लेकर उसके ऊपर शंख, चक्र, गदा तथा पद्म की आकृति बनाये फिर उसी के [illegible] षोडशोपचार

ऊपर लाल चन्दन द्वारा [illegible]

पूजन करे। फिर उसे वस्त्राभूषण सहित ब्राह्मण को दान करदे तो इससे पूर्व जन्म कृत पाप का प्रभाव दूर होगा तथा रोग से मुक्ति मिलेगी ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशः यस्यैषा जन्मकुण्डली ॥ १ ॥ प्रथमेऽब्दे ज्वरश्चैव द्वितीये मुख पीडनं। तृतीयेऽब्दे व्रणं पीड़ा तथा भ्रातृ समुद्भवेत् ॥ २ ॥ चतुर्थे द्वादशे वर्षे पितुर्लाभ दिने दिने। विद्यारंभ ततो कृत्वा क्रीड़ने माति तत्परा ॥ ३ ॥ वह्नि चन्द्रमिते वर्षे शशि युग्म गतोऽपि वा। विवाहो मंगलं चापि माति कामं प्रवर्धते ॥ ४ ॥ कामक्रीड़ा मनोद्वेगं विह्वलो रूप मोहिता। सुता जन्म सुखं सर्वं धन दारात्मजादयः ॥ ५ ॥ नेत्र युग्मगते वर्षे वह्नि राम गतोऽपि वा। रिपु रोग भयं चिन्ता पुण्यात्शांतिश्च सर्वदा ॥ ६ ॥ महामृत्युञ्जयो जाप्यं श्रेयो मानं विनिश्चिता। पूर्व यात्रा सुखोत्पन्न देवतीर्थे सुदर्शनम् ॥ ७ ॥ वेद राम गते वर्षे बाण वेद गतोऽपि वा। पुत्र कन्योत्सवे तस्य व्ययं कीर्तिश्च सत्तमा ॥ ८ ॥ बृहल्लाभं व्ययो दीर्घः कुलत्तेन प्रकाशिता। ग्राम प्राप्तिविशेषेण नूतनं गृह वाहनम् ॥ ९ ॥ रस वेद समारम्भ यावद्बाणशरस्मृतः। स्वदेहे च महत्कष्टम् कफ वात समन्वितम् ॥ १० ॥ कस्मिन् तीर्थे भवे यात्रा सकुटुम्ब ससेवकैः। महद्दान भवेत्तत्र सदावर्तस्तथैव च ॥ ११ ॥ पुत्र पुत्री विवाहे च कूपारोम तथैव च। धनव्यय भवेत् पुत्रः यथा लाभ तथा व्ययम् ॥ १४ ॥ रस षष्ठ गते वर्षे नन्द षष्ठाब्द जीवनम्। अकस्माच्च महा चिन्ता बहु व्ययं न संशयः ॥ १५ ॥ भयभीतो हृदे चिन्ता जीव क्लेश महानकम्। धन धान्य समृद्धिश्च पुत्र पौत्र समन्वितः ॥ १६ ॥ वैशाखे शुक्लपक्षे च अष्टम्यां रविवासरे। गो भू सुवर्ण दानं च कृत्वा भूम्यासनं कृतः ॥ १७ ॥ प्राप्तेत्वर्धनिशा पुत्रः मघानक्षत्रमागतः। सिंहराशि गते चन्द्रे तन्निर्याण

भाव (house)	अंक (sign)	ग्रह (planets)
top centre	६	सू. बु.
top left	७	
left upper	८	श. गु.
left centre	९	
left lower	१०	
bottom left	११	मं.
bottom centre	१२	चं.
bottom right	१	
right lower	२	के.
right centre	३	
right upper	४	शु.
top right	५	रा.

न संशय: ॥१८॥ पुण्याद्राज कुले जातं पापाच्च निधने गृहे। कर्माधीनो भवेत्सर्वा: नियो वै कर्म कारणम्॥१९॥ दीर्घजीवी भवेद् जात: विद्यावान विचक्षण:। अल्पत्रय विजानीयात् नान्यथा वचनं मम॥२०॥ बाल्यावस्थामवेदल्पं प्रथमं नात्र संशय:। द्वितीयोऽल्पं यौवने च किंचित्खेद प्रजायेत॥२१॥ तृतीयो प्रौढ़ संजात: बाधां भवति निश्चितम्॥ शुक्रोवाच॥ केन यत्नेन भो तात सर्व अल्प विनश्यति॥२२॥ भृगुरुवाच॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि येन अल्प विनश्यति। यदा यदा भवेदल्पं दानपुण्यं च कारयेत्॥२३॥ रुद्र टंक प्रमाणं च स्वर्णमादाय भो सुत:। तस्य पत्र प्रकर्तव्यं वर्तुलं चतुरांगुलम्॥२४॥ तस्योपरि लिखे मंत्रं बीजमंत्रं प्रयत्नत:। मूर्तीपि ब्राह्मणे दद्यात्सवस्त्रभूषणादिकम्॥२५॥ एतद्दानोपचारेण त्रिअल्पञ्च विनश्यति॥२६॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा– हे पुत्र! अब इस जातक की जन्मकुण्डली का फलादेश सुनो। पहले वर्ष में ज्वर, दूसरे में मुख-पीड़ा, तीसरे में व्रण-पीड़ा तथा भाई का लाभ हो। ४ से १२ वर्ष की आयु में विद्यारम्भ तथा पिता को लाभ हो। १३ से २१ वर्ष की आयु में बुद्धि बढ़े, विवाह हो तथा कामोद्वेग से मन विचलित हो। २२ से ३३ वर्ष की आयु में शत्रु, रोग, भय, चिन्ता की वृद्धि हो तथा दान-पुण्य से शान्ति हो। धन तथा स्त्री का सुख मिले। व्यवसाय में लाभ हो तथा उच्चपद प्राप्त हो। ३४ से ४५ वर्ष की आयु में कन्या के विवाहोत्सव में धन खर्च हो। कुल कीर्ति बढ़े। सन्तान तथा भोग का सुख प्राप्त हो। भूमि, वाहन तथा नये मकान का लाभ हो। ४६ से ५५ वर्ष की आयु में वात-कफ के प्रकोप का कष्ट हो। किसी तीर्थ की कुटुम्बियों तथा सेवकों के साथ यात्रा हो। वहाँ बड़ा दान करे तथा सदावर्त में धन खर्च हो। ५६ से ६५ वर्ष की आयु में अधिक सुख मिले, कीर्ति बढ़े, कुआँ, बगीचा आदि बनवाने में व्यय हो। लाभ के अनुसार ही खर्च भी हो। आत्मशास्त्र का चिन्तन हो।

भृ० सं० 8308

६६ से ६९ वर्ष की आयु में अकस्मात् कोई चिन्ता हो। हृदय में भय उत्पन्न हो। एक जीव का क्लेश हो। अधिक धन खर्च हो। फिर धन-धान्य की वृद्धि हो तथा पुत्र-पौत्रों का सुख प्राप्त हो। वैशाख शुक्ला अष्टमी रविवार को जौ, पृथ्वी तथा सुवर्ण का दान करके पृथ्वी पर आसन लगाये तथा अर्द्धरात्रि के समय मघा नक्षत्र एवं सिंह के चन्द्रमा में प्राण-त्याग करे। पुण्य-कर्मों के प्रभाव से अगली बार राजकुल में जन्म ले और यदि पाप-कर्म करे हों तो निर्धन कुल में उत्पन्न हो, क्योंकि अपने कर्म ही भावी जन्म के कारण बनते हैं। हे पुत्र! यह जातक विद्वान्, विचक्षण तथा बुद्धिमान होगा - इसमें सन्देह नहीं। परन्तु इसके जीवन में तीन बार अल्प-मृत्यु योग आयेंगे। पहली बार बाल्यावस्था, दूसरी बार युवावस्था में तथा तीसरी बार प्रौढ़ावस्था में - उस समय इसे महान् शारीरिक-कष्ट होगा। यह सुन कर शुक्र ने पूछा - हे प्रभो! किस उपाय से इसके अल्प-मृत्यु का कष्ट दूर होगा - वह बताने की कृपा करें। भृगुजी बोले- हे शुक्र! जब-जब अल्प का समय आये, तब-तब दान-पुण्य करना चाहिए। ग्यारह टंक प्रमाण स्वर्ण लेकर, उसका पत्र तय्यार करे। फिर उस गोल पत्र के ऊपर, जो चार अंगुल व्यास का हो, बीजमन्त्र लिखे तथा यथाविधि पूजन करके उसे किसी योग्य ब्राह्मण को दान करदे तो इस पुण्य के प्रभाव से तीनों अल्पों का कष्ट दूर होकर, सुख प्राप्त होगा ॥ इति शुभम् ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र प्रवक्ष्यामि फलादेशऽस्य कुण्डलीम् ॥ १ ॥ प्रथमे द्वितीये वर्षे वह्नि वर्बाच्च पंचमे। कष्ट पीड़ा विनश्यन्ति बालवृद्धि दिने दिने ॥ २ ॥ षष्ठमे सप्तमे वर्षे शून्य चन्द्रादनंतरम्। विद्यारंभ कृतो तत्र क्रीडते मति तत्परा ॥ ३ ॥ व्रण वात विकारेण क्लिश्यते

भा० टी०

पि वा। विवाह योग संजात: पितुर्लब्धि महद्धनम् ॥५॥ धन धान्य समृद्धिश्च यथा लाभ तथा व्ययम्। नवनारि समागम्य महोत्साह दिने दिने ॥६॥ विंशवर्षाब्दमारभ्य यावत्सप्त करस्तथा। राजद्वारेऽति मानं च कीर्ति बुद्धि विशेषत: ॥७॥ पत्नी गर्भ न सन्देहो जायते हर्ष मानस:। शत्रुमेक समुत्पन्न: स्वकुले नाऽत्र संशय: ॥८॥ तत्रमित्र भवेदेकं नित्य प्रीति प्रवर्द्धनम्। तत्रापि धन लाभस्याचिरा द्विजनिसंशय: ॥९॥ नाग युग्म गते वर्षे ऋतु वह्नि गतेऽपि वा। सर्व सौख्यान्वितो लोके पुण्य कर्म फलप्रदा ॥१०॥ देवदर्शन तीर्थे च सुपात्रा सुखदायिनी। कुलकीर्ति करो पुंस: माननीयो ऽप्यनन्त: ॥११॥ सुता सुत सुखं सर्वे धन-धान्य विवर्धितम्। नागरामगते वर्षे ऋतु वेद गतेऽपि वा ॥१२॥ नानाकार्य प्रवर्त्तेश्च राजते सुख सम्पदा। चिन्तये द्विविधं कार्यं व्यापारो लाभदो महान् ॥१३॥ प्रकाशते कुलं तेन विवाहो मंगलं गृहे। देवयात्रा सुतीर्थे च पूतात्मा मोक्ष साधनं ॥१४॥ नाग वेदाब्दमारभ्य रामबाण गतेपि वा। भूमिलाभ विशेषेण संपदा संचयो महान् ॥१५॥ शत्रु पक्ष विरोधेन अकस्माच्चात्यु पद्रवं। मासे वर्षे सुखं सर्वे श्रेयो मानं सुयत्नत: ॥१६॥ वेद बाण गते वर्षे नंद षष्ठगतेपि वा। पत्नी कष्ट समुत्पन्न: किंचिच्चिन्तातुरो भवेत् ॥१७॥ पौत्र प्राप्ति भवेत्तत्र बहुलाभमवाप्नुयात्। धन धान्य समृद्धिश्च गृहांगेन प्रपूरित: ॥१८॥ व्योम सप्त भवेदायु भाद्रपद कृष्ण पक्ष च। अष्टमी रोहिणी भे च वृष राशि गते शशि: ॥१९॥ पुत्र पौत्र समावृत्य: दासीदासेन सेवित:। गोदान ध्रुव दानं च कृत्वा देहत्यजेत्सुत: ॥२०॥ तेनवोच्च कुले जातं मनेच्छा सर्व पूजिता। राजभो-[illegible] ॥२१॥ पूर्वजन्मश्च गाथा त्वां कथ्यते शृणु भार्गव:। चित्रगुप्त

वृ. मं. ६
शु. रा. ७
५ सू. बु.
४
३
च. श.
२
९
११
१
के.
१०
१२

कुले जन्म बहुभागी प्रधानके ॥२२॥ राजद्वारे पदमुच्चं न्यायाधीशस्य प्राप्यये। धनी सुखी महाभोगी महालोभी भवेत्सुत: ॥२३॥ एकस्मिन् द्विज शूद्रश्च द्वन्द्वयुद्धमजायते। अपघात कृतं शूद्र मृत्वा विप्र गृहे गतम्। शूद्रपुत्र मृषावादी ब्राह्मणं दोष दत्तवान्। पितृहन्ता वदेत् विप्रं न्यायाधीशा समीपत: ॥२४-२५॥ न्यायाधीशो ऽपि भ्रष्टोऽस्ति उत्कोचात् धनं लभेत्। प्राणदण्ड ददेत् विप्रं शूद्रपक्षं समर्थक: ॥२६॥ विप्रपुत्र ददेत् शापं न्यायाधीशं त्रिजन्मत:। सर्व सौख्य भवेद्धानि वंशवृद्धिर्न जायते ॥२७॥ शुक्र उवाच ॥ किं दानं कस्य पूजा च किं मन्त्रं कस्य जापकं। ब्रह्मशाप प्रणश्यन्ति तत्सर्व कथय: प्रभो॥ भृगु उवाच॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या चन्द्रमुद्रा प्रमाणिकी। ब्रह्मपुत्र लिखेन्मूर्तिः गायत्री मन्त्र जापकम् ॥२८-२९॥ तन्दुलं च यथाशक्ति गुप्त मूर्ति प्रवेशकं। संकल्पं च ददेत् विप्रं एवं शाप विनश्यति ॥३०॥ इदं दानं कृते संत: पुत्र पौत्र सुखं लभेत् ॥३०॥ इति॥

भावार्थ: भृगुजी ने कहा- हे पुत्र! अब इस जन्मकुण्डली का फलादेश सुनो। पहले वर्ष से पाँचवें वर्ष तक कष्ट-पीड़ा का नाश हो तथा बालक के शरीर की यथाक्रम वृद्धि हो। ६ से १० वर्ष की आयु में क्रीड़ा में मन लगे। विद्यारंभ हो। बुद्धि चंचल रहे। ११ से १९ वर्ष तक पिता को धन लाभ हो। प्रतिदिन उत्साह बढ़े। २० से २७ वर्ष की आयु में विवाह हो, राजद्वार से सम्मान मिले। स्त्री गर्भवती हो। अपने कुल का ही कोई एक व्यक्ति शत्रु बने। एक मित्र भी मिले, जिससे प्रीति बढ़े तथा धन का लाभ हो। २८ से ३६ वर्ष की आयु में सब सुखभोग हों। तीर्थ यात्रा हो। कुल-कीर्ति बढ़े। एक कन्या तथा एक पुत्र का सुख मिले। धन-धान्य की वृद्धि हो। ३७ से ४६ वर्ष की आयु में सुख-सम्पत्ति बढ़े। घर में मंगल कार्य हों तथा देव-दर्शन एवं तीर्थ यात्रा द्वारा मन तथा शरीर को पवित्र करे। ४७ से ५३ वर्ष की आयु में भूमि

का लाभ हो। विदेश से धन मिले। शत्रु के विरोध से कुछ उपद्रव भी उठ खड़े हों। फिर सुख मिले। ५४ से ६६ वर्ष की आयु में स्त्री को कष्ट हो। पौत्र लाभ हो। पुत्र, पौत्र तथा सेवकों से सुख मिले। धन दान करे तथा ७० वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा अष्टमी, रोहिणीनक्षत्र में वृष के चन्द्रमा के समय शरीर-त्याग करे। फिर उच्च कुल में जन्म ले तथा राज्याधिकारी बने और समस्त इच्छाऐं पूरी हों। हे पुत्र! पूर्व जन्म में यह जीव चित्रगुप्त के कुल (कायस्थ जाति) में उत्पन्न हुआ था तथा महाधनी, ऐश्वर्यशाली, भोगी तथा परम लोभी था। यह राजकीय सेवा में न्यायाधीश के पद पर नियुक्त था। एक बार एक ब्राह्मण तथा एक शूद्र में परस्पर द्वन्द्व युद्ध हुआ। उसमें पराजित होकर शूद्र ने आत्म हत्या करली। परन्तु शूद्र के मिथ्यावादी पुत्र ने यह आरोप लगाया कि उसके पिता को ब्राह्मण ने मार डाला है। जब मामला न्यायालय में पहुँचा तो शूद्र के लड़के ने न्यायाधीश को रिश्वत देकर अपनी ओर मिला लिया तथा उस न्यायाधीश ने ब्राह्मण को प्राण दण्ड दे दिया। यह देख कर ब्राह्मण के पुत्र ने न्यायाधीश को यमपुर जाने तथा वंश नाश होने का शाप दिया। उस शाप के कारण वह न्यायाधीश यमपुर को गया और वहाँ बहुकाल तक नरक-यातना भोगने के पश्चात् पुनः मनुष्य योनि को प्राप्त हुआ है। यह सुन कर शुक्र ने पूछा-हे प्रभो! किस दान, मंत्र-जप, पूजा आदि से इसके पूर्वजन्म के पाप का प्रभाव नष्ट होगा, उसे बताइये। भृगु जी बोले- एक तोला प्रमाण स्वर्ण की प्रतिमा तय्यार करवा कर, उसके ऊपर ब्राह्मण के पुत्र की मूर्ति लिखे। फिर गायत्री मन्त्र का जप करवाये। तत्पश्चात् यथाशक्ति चावलों के भीतर उस स्वर्ण प्रतिमा को गुप्तरूप से रख कर किसी योग्य ब्राह्मण को दान करदे तो इस दान के प्रभाव से पूर्वकृत पाप का [illegible] होकर [illegible] की प्राप्ति होगी॥ इति ॥

ॐ भृगु उवाच ॥ शृणु पुत्र फलादेशं यस्यैषा जन्म कुण्डली ॥ १ ॥ जन्मतः प्रथमे वर्षे यावत्स्याद् वह्नि वत्सरे । तातमात सुखं नित्य गृहे मंगलमेव च ॥ २ ॥ चतुर्थे पंचमे वर्षे षष्ठ वर्षादि सप्तमे बाल क्रीड़ा रतो नित्य विद्याध्ययन तत्परः ॥ ३ ॥ अष्टमे द्वादशे वर्षे नाग चन्द्रमितेऽपि वा । पत्नी सौख्य समायुक्तो मंगलं च सदा भवेत् ॥ ४ ॥ नाग चन्द्रमिते वर्षे यावद्वह्नि दृगस्तथा । द्विरागमन योगश्च पत्न्या सह प्रमोदितः ॥ ५ ॥ धनधान्य समृद्धिश्च दासी दासैन सेविता । गर्भयोग गृहे जात भ्रातृयोगस्तथैव च ॥ ६ ॥ वेद युग्म गते वर्षे नाग वह्नि मिते तथा । पितु कष्ट विजानीयात् श्वास कासादि रोगकृत ॥ ७ ॥ वृद्ध मृत्यु कुटुम्बे च तस्मिन् व्यय महद् भवेत् । राजद्वारे धनाप्तिश्च तथा भूमि सकाशतः ॥ ८ ॥ नन्द वह्नि मिते वर्षे नाग वेद गतेऽपि वा । स्वेच्छाचारी सुखं प्राप्य लाभ योगोऽपि मध्यमम् ॥ ९ ॥ गुप्त प्रीतिश्च नारीणां निमग्नश्चिन्तनार्णवे । अयत्ने मानसी चिन्ता कार्य हानि भयप्रदा ॥ १० ॥ अङ्क वेदाब्दगे वत्स नाग बाण गतेऽपि वा । अकस्माज्जायते शोकं द्रव्य लाभं च न्यूनता ॥ ११ ॥ कष्ट व्याधि भवेन्नष्ट सुयत्ने सर्व मंगलम् । द्रव्य लाभ यशो दीर्घ तीर्थ मन्त्रादि सेवनम् ॥ १२ ॥ नाग बाणमिते वर्षे रस षष्ट गतेऽपि वा । देवपुण्योत्सवे तस्य व्यय कीर्तिश्च सत्तमः ॥ १३ ॥ शरीरे जायते कष्ट कृशश्च देहोऽपि दुर्बलः । नंद षष्ठ्याब्द मायुष्य मासि भाद्रपदं शुभम् ॥ १४ ॥ कृष्णपक्ष भयोदश्यां निर्याण सम्प्रदाहृतम् । पुनर्नृप कुले जातं ध्यात्वा श्री जगदीश्वरम् ॥ १५ ॥ सर्वसौख्य समायुक्तो प्राप्यते परमां गतिम् । भृगु पुत्र कथा सर्व पूर्व पापं च कथ्यते ॥ १६ ॥ क्षत्रिय वंश उत्पन्नो मृगयायां गते वनः । मृगी पुत्र वधेत् तत्र मृगी शाप महा ददेत् ॥ १७ ॥ सप्त जन्म भवेत्कष्टं पुत्र सौख्यं न जायते । तस्य शाप

४
३ सू. बु.
२ शु.
१ मं.
५ रा.
६
१२
९ बृ. श.
११ चं. के.
७
८
१०

प्रभावेण वंशवृद्धिर्जायते ॥ शुक्रोवाच ॥ किं दान कस्य पूजा च किं मंत्रं कस्य जापकं । पूर्व पाप विनश्यन्ति विस्तराद् वद मे प्रभो ॥ १८ - १९ ॥ भृगु उवाच ॥ स्वर्णस्य प्रतिमा कार्या मृगमूर्ति लिखेत् तदा । ताम्रपात्रघृतं मध्ये गुप्त मूर्ति प्रवेशकम् ॥ २० ॥ सुद्रामात्र ददेद्दानं अर्द्धरात्रि प्रमाणकम् । पूर्वपाप विनश्यन्ति सर्व सौख्य मुवाप्नुयात् ॥ २१ ॥ स्त्री पुत्रं धनं लाभं वंशवृद्धि दिने दिने । इदं दान प्रभावेण भवत्येव न संशयः ॥ २२ ॥

भावार्थः भृगुजी बोले - हे पुत्र ! अब इस कुण्डली का फलादेश सुनो । पहली वर्ष से तीसरे वर्ष तक इस जातक के घर में मंगल-कार्य हों । छायापात्र के दान से दन्त-पीड़ा, ज्वर आदि के कष्ट दूर हों । ४ से ७ वर्ष की आयु में बालक का विद्यारंभ हो तथा खेल में मन अधिक लगे । १२ से १७ वर्ष की आयु में कीर्ति बढ़े । पढ़ने-लिखने में कुशलता हो । धन-धान्य की वृद्धि हो । १८ से २३ वर्ष की आयु में विवाह तथा द्विरागमन हो । स्त्री गर्भवती हो । सन्तान का जन्म हो तथा भाई का जन्म होना भी संभव है । २४ से ३८ वर्ष की आयु में पिता को श्वास-कास का कष्ट हो । घर में किसी वृद्ध की मृत्यु हो । भूमि तथा राजद्वार से धन लाभ हो । पुत्र तथा कन्या के विवाह में धन खर्च हो । ३९ से ४८ वर्ष की आयु में इच्छित सुख प्राप्त हो । अयत्न से मानसिक - चिन्ता हो तथा कार्य-हानि एवं भय उपस्थित हो । सुयत्न से धन-लाभ, तीर्थ तथा मन्दिर सेवन हो । ४९ से ५७ वर्ष की आयु में आकस्मिक शोक हो । थोड़ा धन मिले, व्याधिकष्ट हो । ५८ से ६६ वर्ष की आयु में पुण्य कर्मों में खर्च हो, कीर्ति बढ़े तथा शरीर को कष्ट भी हो । ६९ वर्ष की आयु में भाद्रपद कृष्णा त्रयोदशी को प्राण-त्याग करे । अगली बार राजकुल में जन्म लेकर ईश्वराराधन करे तथा सब सुखों को भोग कर अन्त में परमगति प्राप्त करे । हे शुक्र ! पूर्वजन्म

में यह जीव क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुआ था। एक बार यह शिकार खेलने के लिए वन में गया और वहाँ इसने एक मृगी-पुत्र का वध किया। उस समय मृगी ने दुःखी होकर सात जन्मों तक संतान हीन रहने तथा कष्ट पाने का शाप दिया। उस पाप के प्रभाव से इसकी वंश-वृद्धि नहीं होगी। यह सुनकर शुक ने पूछा - हे प्रभो! किस उपाय से इसके पाप का प्रायश्चित्त होगा, वह कहिए? भृगुजी बोले- हे वत्स! यथाशक्ति प्रमाण एक स्वर्ण की प्रतिमा बनवाकर, उस पर हरिण का चित्र बनाये। फिर एक ताँबे के पात्र में घृत भर कर उसमें उस प्रतिमा को गुप्त रूप से रख कर किसी ब्राह्मण को दान करदे तो इसके पूर्व जन्म का पाप नष्ट हो जाएगा तथा सुख, स्त्री, पुत्र, धन का लाभ होगा और वंश-वृद्धि भी होगी॥ इति शुभम्॥

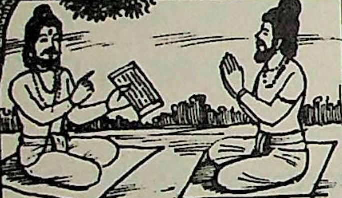
॥ इतिश्रीभृगुसंहिता महाशास्त्रे द्वादश खण्डस्समाप्तः॥

अथ श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रे द्वादश खण्डः

अरिष्ट एवं आयुर्दाय विचार के सम्बन्ध में सप्तम खण्ड में वर्णन किया जा चुका है। इस खण्ड में महर्षि पाराशर के मत से आयुर्दाय एवं मारक के सम्बन्ध में लिखा जा रहा है। आयु-साधन के विषय में महर्षि पाराशर ने पिण्डायु साधन, लग्नायु साधन के प्रकार, आयुर्दाय साधन के अन्य प्रकार मारक रुद्रग्रह, गौणरुद्रग्रह, ब्रह्मग्रह आदि के विचार तथा मारकभेद एवं मारकेशाश्रित राशि आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। ज्योतिषियों की जानकारी के लिए इस खण्ड में वही सब संकलित है।

अथ आयुर्दायविचारः पाराशर मेत ॥ समाहताभांशकलाविलिप्ता गजाभ्रचन्द्रैर्ग्रहपर्ययेभ्यः विकर्त्तनैः संविहृतावशेषे ऽब्दमासघस्रादिकमायुरेवम् ॥१॥ होरादायोप्येवमत्राधिवीर्यं लग्नं चेद्राशितुल्यैः स्तथाब्दैः युक्तं शेषं भागपूर्वाद्विनिघ्नं बाणैर्भक्तं मासपूर्वैर्युतं तत् ॥२॥ नीचे ऽस्तगे ऽर्द्धमरिभे त्रिलवं हरन्ति नास्तंगतौ शनिसितौ व्यपतो ऽत्रवामम्। सर्वार्धकत्रिकचतुर्थशरर्तुभागान्हरन्त्यशुभदाः शुभदास्तदर्धम् ॥३॥ एकस्थानस्थिताश्चेत्स्युर्द्वित्रयो गगनेचराः। तदा बलयुतः खेटो हरत्येकोन चापरे ॥४॥ वर्गोत्तमस्वर्क्षनवांशदृक्के द्विसंगुणं तत्सकलं विधेयम्। वक्रोच्चयोस्तत्त्रिगुणं विधेयं द्वित्रिगुणत्वे त्रिगुणं सकृच्च ॥५॥

टीका ॥ अब पाराशर के मतानुसार अंशायु-साधन की विधि का उल्लेख किया जाता है। ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला को १०८ से गुणा करके १२ से भाग देने पर शेष वर्ष, मास, दिन, घटी आदि ग्रह की आयु होती है ॥१॥ इसी प्रकार लग्न की भी आयु होती है, परन्तु यदि लग्न अधिक बलवान् हो तो लग्न-राशि के तुल्य वर्ष एवं शेष अंशादि को २ से गुणा करके ५ से भाग देने पर मास आदि आयु होती है ॥२॥ यदि ग्रह अपने नीच राशि में हो अथवा अस्त हो तो आयु का आधा; शत्रु की राशि में हो तो आयु का तीसरा भाग कम आयु देता है; परन्तु शनि-शुक्र अस्त होते हुए भी आधी हानि नहीं करते। बारहवें भाव से विलोम सम्पूर्ण, आधा, तृतीयांश, चतुर्थांश, पंचमांश और षष्ठांश पापग्रह अपने आयु की हानि करते हैं और शुभग्रह इन्हीं भावों में आधा हानि करते हैं अर्थात् बारहवें भाव में पापग्रह हो तो अपने सम्पूर्ण आयु की हानि, यदि ग्यारहवें भाव में हो तो आधा इत्यादि समझना चाहिए॥३॥ यदि एक ही स्थान में दो-तीन ग्रह बैठे हों तो उनमें जो बली हो, उसी के आयु का अपहरण होता है ॥४॥ जो ग्रह वर्गोत्तम नवांश, अपनी राशि अथवा नवांश अथवा द्रेष्काण में हो, उसकी सम्पूर्ण आयु को दूना कर देना चाहिए। जो ग्रह वक्री हो अथवा अपने उच्चराशि में हो तो उसकी आयु को









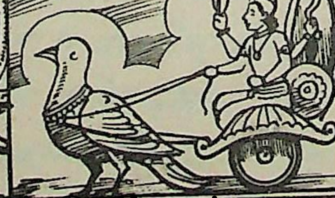
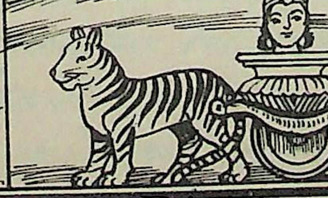
अथ श्रीभृगुसंहिता महाशास्त्रम्

द्वादश खण्डः भाषा टीका सहितम्

आयुर्दाय एवं मारकाध्यायः






तिगुना कर देना चाहिए। एक ही ग्रह की आयु को यदि द्विगुणित और त्रिगुणित करना हो तो केवल त्रिगुणित ही करना चाहिए ॥ ५॥ इति अंशायु साधनम् ॥

अथ पिण्डायु साधनम् ॥ नन्देन्दवो पंच यमाः शरक्ष्मा भास्कराश्च पंचेंदवः कुपक्षाः। नखाश्च रव्यादि मुखग्रहाणां पिण्डायुषोऽब्दाः निजोच्चगानाम् ॥१॥ कृत्येक भूपैक धृतयश्च नखपंचाश देव हि। सूर्यादीनां क्रमादब्दाः स्वोच्चे नैसर्गिके द्विज ॥२॥ स्वोच्च शुद्धो ग्रहः शोध्यः षड्भादूनो भमण्डलात्। षड्भाधिको यथास्थित एव लिप्तानिघ्नो निजाब्दैः ॥३॥ खाभ्ररसभूनेत्रैर्भक्ते प्राप्यते तु यत्फलम्। वर्षमासदिनादिकं तद्धि पिण्डायुः स्फुटं भवेत्। एवं क्रिया निसर्गेऽपि हानिवृद्धिस्तु पूर्ववत् ॥४॥

टीका ॥ अब पिण्डायु-साधन की विधि कहते हैं। सूर्यादि ग्रह अपनी उच्च राशि में हों तो पिण्डायु-साधन क्रम से १९, २५, १५, १२, १५, २१, २० सूर्यादि ग्रहों के वर्ष होते हैं ॥१॥ सूर्यादि ग्रह अपनी उच्च राशि में हों तो क्रम से २०, १, २, ९, १८, २०, ५० वर्ष नैसर्गिक आयु में होते हैं ॥२॥ जिस ग्रह की पिण्डायु या निसर्गायु-साधन करना हो, उसके राश्यादि को उसके परमोच्च राश्यादि में घटाकर, शेष ६ राशि से न्यून हो तो उसे १२ राशि में घटायें। यदि शेष ६ राशि से अधिक हो तो राश्यादि की कला बना कर, उसे ग्रह-वर्ष संख्या (पिण्डायु-साधन) में पिण्डायु-ग्रहवर्ष, निसर्गायु-साधन में नैसर्गिक-ग्रहवर्ष) से गुणा करें। तथा २१६०० से भाग देने पर लब्धि वर्ष, मास, दिनादि पिण्डायु अथवा निसर्गायु के होंगे ॥ ३--॥ इति ॥

अथ लग्नायु साधनम् ॥ राशीन् विहाय लग्नस्य लिप्तीकृत्य तथा द्विज। शैलऽयेन भक्ते च फलं वर्षादिकं च यत्। सबले लग्ने फलं स्वत्र पूर्वोक्त नैवमन्यथा हि ॥१॥ क्रूरे लग्न स्थिते विद्वन् लग्नस्यांश संख्यया। निघ्नं क्रूर ग्रहस्यायुः भक्ताष्टोत्तर शतेन च। लब्धं वर्षादिकं शोध्यं ग्रहस्यायुः स्फुटं भवेत्।

भा० टी०

टीका॥ अब लग्नायु-साधन के विषय में कहते हैं। यदि लग्न बलवान् हो तो लग्न की राशि को त्याग कर, अंशादि को कला बना कर २०० से भागदेने से वर्षादि फल होता है- इसी को लग्नायु कहा जाता है॥१॥ यदि लग्न में क्रूर ग्रह हो तो लग्न के नवमांश संख्या से उस ग्रह के आयु को गुणा करके १०८ से भाग देने पर लब्ध वर्षादि को उस ग्रह की आयु में घटाने से शेष ग्रह की स्पष्टायु होती है॥२॥

अथ आयु ग्रहणे विशेष ज्ञातव्यम्॥ अंशायुः सबले लग्ने सूर्ये ग्राह्यं तु पैण्डकम्। चन्द्रे नैसर्गिकं ग्राह्यं बलसाम्ये द्वयोस्तथा॥१॥ योगार्धमायुस्तत्र स्यादिति प्राहैः विनिश्चितम्। त्रयोप्येते बलाढ्य श्चेत्सर्वेषां योग त्र्यंशकः। आयुः ग्राह्यं तु सर्वेषामिति प्रोक्तं पुरातनैः॥२॥

टीका॥ अब आयु ग्रहण में विशेष रूप से ज्ञातव्य का उल्लेख किया जाता है॥ यदि लग्न बली हो तो अंशायु ही मुख्य आयु होती है। यदि सूर्य बली हो तो पिण्डायु और यदि चन्द्रमा बली हो तो निसर्गायु को प्रधान आयु समझना चाहिए॥१॥ यदि इनमें से दो समान बली हों तो दोनों के आयु का योगार्ध मुख्य आयु होगी। यदि तीनों समान बली हों तो तीनों के आयु योग का तृतीयांश स्पष्टायु होगी॥२॥

अथान्य आयु योगाः॥ लग्नेशाष्टमेशाभ्यां योगैक कथितो द्विज। द्वितीयं शनि चन्द्राभ्यां चिन्तनीयं सदा बुधः॥१॥ होरालग्न लग्नाभ्यां तृतीयं च विचिन्तयेत्। लग्नेन्दुमदने वापि चिन्तये- ल्लग्नचन्द्रुतः॥२॥ चरे चरे स्थितौ द्वौ च लग्नरंध्राधिपौ यदि। दीर्घायु योगो विज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तम॥ ३॥ स्थिर द्वंद्वे लग्ननाथो हि लग्नेशो द्वंद्वमे स्थिते। तदा दीर्घायुषो योगः संभवेद् गणितागणौः॥४॥ लग्ना- धीशो स्थिते द्वंद्वे स्थिरे रंध्राधिपेस्थिते। दीर्घायु योगो विज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तमः॥५॥ अथातः संप्रव- क्ष्यामि मध्यायुर्योगमुत्तमम्। चरे लग्नाधिपे विप्र स्थिरे रंध्रपती यदि॥६॥ तदा मध्यायुषं विद्याद् द्वौद्वंद्वे मध्यमायुषः। अधुनाल्पायुर्योगं च तवाग्रे कथयाम्यहम्॥७॥ लग्नाधीशश्चरे यस्य द्वंद्वमे

भ० सं० ११०४

रंध्रनायके । तस्याल्पायुर्महाभाग निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥८॥ स्थिरे स्थिरे स्थितौ द्वौ चेल्लग्नरंध्राधिपौ द्विज। अल्पायुस्तत्र विज्ञेयं सृष्टिकर्त्रा प्रणोदितम् ॥९॥ एक रूपत्व योगौ द्वौ तृतीयो भिन्न रूपकः । द्वयोर्योगेन संग्राह्यं न ग्राह्यं चैकरूपतः ॥१०॥ योगत्रयं त्रयं रूपं भिन्नं भिन्नं भवेद्द्विज । होरालग्नविलग्नाभ्यां प्राप्तायुर्योग निश्चितम् ॥११॥

टीका॥ अब आयु-ज्ञान के अन्य योगों का उल्लेख किया जारहा है॥ लग्नेश और अष्टमेश से पहला योग तथा शनि और चन्द्रमा से दूसरा योग बनता है॥१॥ होरा लग्न और जन्म लग्न से तीसरा योग बनता है। दूसरे योग में चन्द्रमा यदि जन्म लग्न अथवा सप्तमभाव में हो तो लग्न और चन्द्रमा से, अन्यथा शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये, उसे गृहण करना चाहिए॥२॥ यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों चर राशि में हों तो दीर्घायु योग बनता है॥३॥ यदि लग्नेश और अष्टमेश में से एक स्थिर तथा दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो भी दीर्घायु योग होता है॥४॥ यदि लग्नेश और अष्टमेश में से एक चर राशि में तथा दूसरा स्थिर राशि में हो तो मध्यमायु योग होता है॥५॥ यदि लग्नेश और अष्टमेश- दोनों ही द्विस्वभाव राशि में हों तो भी मध्यमायु योग होता है॥६॥ यदि लग्नेश और अष्टमेश में से एक चर राशि में तथा दूसरा द्विस्वभाव राशि में हो तो अल्पायु योग होता है॥७॥ यदि लग्नेश और अष्टमेश दोनों स्थिर राशि में हों तो भी अल्पायु योग होता है॥८॥ इसी प्रकार शनि-चन्द्रमा अथवा लग्न-चन्द्रमा अथवा होरालग्न तथा जन्म लग्न से भी आयु का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए॥९॥ यदि तीनों प्रकारों में से दो प्रकारों से एक आयु तथा तीसरे प्रकार से भिन्न आयु आती हो तो दो प्रकारों से आई हुई आयु को ही मान्यता देनी चाहिए॥१०॥ यदि तीनों प्रकारों से भिन्न आयु आती हो तो होरा-लग्न एवं जन्म-लग्न से जो आयु प्राप्त हो, उसी को ठीक समझना चाहिए॥११॥

अथ आयुर्वर्ग ख्यानम्।। रसाङ्कैर्गजाभेन्दुभिः शून्यमासैस्त्रिधा दीर्घमायुः कलौ सम्प्रदिष्टम्। चतुःषष्ठि वाह्वद्र्यशीति प्रमाणैर्मतं मध्यमायुर्नृणां वत्सरैः स्यात्।।१।। तथा द्वित्रिषड् बह्नि शून्याब्धि वर्षै र्वेदल्पमायुर्नराणां युगान्ते।।२।। योग त्रयेण दीर्घायुस्तदा ग्राह्यं खवेदकम्। योगद्वयेन संप्राप्ते ग्राह्यं षट्त्रिंशताब्दकम्।।३।। योगैकेन सदा ग्राह्यं द्वात्रिंशन्मिताब्दकम्। एवमल्पायुयोगे तु प्रोक्ताच्च विपरीतकम्।।४।। तथा लग्नेशाष्टमेशाभ्यां मध्यमायु समागते ग्राह्यं चत्वारिंशन्मितं वर्षं च द्विजसत्तम।।५।। लग्नेन्दुना वा चन्द्र-मन्दाभ्यां मध्यमायु समागते। खण्डं ग्राह्यं तदा विद्वन् षट्त्रिंशन्मिताब्दकम्।।६।। होरालग्न लग्नाभ्यां मध्यमायु समागते। ग्राह्यं तत्र सदा विप्र द्वात्रिंशन्मिताब्दकम्।।७।।

टीका।। अब आयु वर्ग के विषय में कहते हैं। कलियुग में ९०, १०८ तथा १२० वर्ष-ये तीन प्रकार की दीर्घायु होती हैं।।मध्यमायु ६४, ७२ तथा ८०-इन तीन प्रकारों की होती है।।१।। अल्पायु का प्रमाणभी ३२, ३६ तथा ४० वर्ष-यह तीन प्रकार का है।।२।। यदि तीन प्रकार से दीर्घायु आती हो तो ४० वर्ष का खण्ड और दो प्रकार से दीर्घायु होतो ३६ वर्ष का खण्ड लेना चाहिए।।३।। यदि एक प्रकार से दीर्घायु हो तो ३२ वर्ष का खण्ड लेना चाहिए। इसी प्रकार अल्पायु योग में इसके विपरीत अर्थात् तीन प्रकार से अल्पायु हो तो ३२ वर्ष, दो प्रकार से अल्पायु हो तो ३६ वर्ष तथा एक प्रकार से अल्पायु हो तो ४० वर्ष का खण्ड स्पष्टायु-साधन में लेना चाहिए।।४।। इसी प्रकार यदि लग्नेश-अष्टमेश से मध्यमायु हो तो ४० वर्ष का खण्ड लें।।५।। यदि लग्न-चन्द्र अथवा शनि-चन्द्र से मध्यमायु हो तो ३६ वर्ष का खण्ड लेना चाहिए।।६।। यदि होरालग्न तथा जन्म लग्न से मध्यमायु हो तो ३२ वर्ष का खण्ड लेना चाहिए।।७।।

अथ स्पष्टायु साधन प्रकार।। योग कारक खेटानां राशीन्त्यक्त्वांशकस्य च। योगकृत्वा भजेत्तत्र योगकारक संख्यया।।१।। लब्धघ्नं प्राप्तखण्डेन त्रिंशतातु विभाजितम्। लब्धं वर्षादिकं

यच्च प्राप्तखण्डे तु शोधयेत् ॥२॥ प्रोक्तं वर्णादिकमत्र स्पष्टायुः परिकीर्तितम्। एवं स्पष्टक्रिया प्रोक्ता ब्रह्मणा शंकरादिभिः ॥३॥ अथ योगत्रये विप्र शनि योगं करोति चेत्। एकएकादशाह्रासः कक्ष्याह्रासस्त्वयं क्रम-द ॥४॥ ततः फल विशेषार्थं गुणदोषौ वदाम्यहम्। गुणैः प्रपूरितः सौरिः कक्ष्यावृद्धिं करोति च ॥५॥ दोष युक्ता भवेद्धानिस्ताभ्यां निर्णय उच्यते। अल्पल्पायुर्भवेदल्पमल्पान्मध्यं प्रजायते ॥६॥ मध्यमाज्जायते दीर्घं कक्ष्यावृद्धेश्च लक्षणम्। एवं नीचारिगः सौरिः पापदृष्टिसमन्वितः ॥७॥ कक्ष्याह्रास कृतो विप्र त्रिभागेनायुहा-निकृत्। दीर्घाद्भवति मध्यायुर्मध्यादल्पायुरेव च ॥८॥ अल्पादल्पल्पकं याति बाल्ये निधन संभवः। लग्नेशे वापि होरेशे केवले शनि संयुते ॥९॥ पापर्क्षे पापयुक्ते वा पापदृष्टि समन्विते। कक्ष्याह्रासं न कुर्वीत विनानीचारि-गे द्विज ॥१०॥ एवं तुंगादि रहितः कक्ष्यावृद्धिं न कारयेत्। शुभर्क्षे शुभ संयुक्तो शुभदृष्टौ च तुंगगे ॥११॥ पापयोगेन रहिते कक्ष्यावृद्धिकरः शनिः। एवं नीचादि दोषेण कक्ष्याह्रासः प्रजायते ॥१२॥ गुरुणा स्थानसम्ब-न्धेप्येवं वृद्धि भविष्यति। लग्ने वा सप्तमे वापि तुंगादि गुण संयुते ॥१३॥ शुभर्क्षे शुभदृग्युक्ते कक्ष्यावृद्धिकरो गुरुः। जीवने संशयो यस्य अल्पायुर्वृद्धिकारकम् ॥१४॥ अल्पायुषि च मध्यायुर्मध्यायो दीर्घमायुषि। एवं भेदानुभेदेन कथयामि तवाग्रतः ॥१५॥ गुरुचन्द्रौ च कर्काङ्के बुध शुक्रौ च केन्द्रगौ। शेषे लाभ त्रिषष्ठस्थै श्चेदमितायुस्तदा भवेत् ॥१६॥ देवलोकांशके मन्दे भौमे पारावतांशके। गुरौ सिंहासने लग्ने जातो मुनिसमो भवेत् ॥१७॥ गोपुरांशे गुरौ केन्द्रे शुक्रे पारावतांशके त्रिकोणे कर्कटे लग्ने युगानां स तु जीवति ॥१८॥ चतु ष्टये शुभैर्युक्ते लग्नेशो शुभ संयुते। गुरुणा दृष्टि संयोगे पूर्णमायुस्तु जायते ॥१९॥ केन्द्रस्थिते च लग्नेशे गुरु शुक्र समन्विते। ताभ्यां निरीक्षिते वापि पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥२०॥ स्वोच्चस्थितैस्त्रिभिः खेटैर्लग्न रन्ध्रेश संयुतैः। रंध्रे पापविहीने च दीर्घमायुः समादिशेत् ॥२१॥ लयस्थितैस्त्रिभिः खेटैः स्वोच्चमित्रस्व-वर्गगैः। लग्नेशो बल संयुक्तो पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥२२॥ स्वोच्चस्थितेन केनापि खेचरेण समन्वितः। रंध्रना-

-यो शनिर्वापि पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ २३ ॥ त्रिषडायगताः पापाः शुभाः केन्द्र त्रिकोणगाः । लग्नेशो बलसंयुक्तः पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ २४ ॥ षट्सप्तरन्ध्रभावेषु संयुक्तेषु शुभेषु च । त्रिषडायेषु पापेषु पूर्णमायुर्विनिर्दिशेत् ॥ २५ ॥

टीका ॥ योग कारक ग्रहों की राशियों को छोड़ कर, शेष अंशादिकों का योग करने योग्य कारक ग्रहों की संख्या (१, २, ३ आदि) से भाग दें ॥ १ ॥ भाग देने पर लब्धि को आयु के अनुसार अल्पायु के प्राप्त खण्ड से गुणा करके, गुणन फल में ३० का भाग देने पर, लब्ध वर्षादि को दीर्घायु अथवा मध्यमायु के प्राप्त खण्डों में घटाने से शेष स्पष्टायु होती है। इस स्पष्ट क्रिया को ब्रह्मा, शङ्कर आदि ने कहा है ॥ २-३ ॥ हे प्रिय! यदि तीनों प्रकार के आयु-योगों में शनि योग करता हो तो कक्ष्या का ह्रास होता है ॥ ४ ॥ अतः उसके गुण-दोषों को कहा जाता है। गुणों से युक्त शनि कक्ष्या की वृद्धि करता है ॥ ५ ॥ यदि शनि दोष युक्त हो तो कक्ष्या की हानि करता है अर्थात् अत्यन्त अल्पायु हो तो अल्पायु और अल्पायु हो तो मध्यमायु करता है ॥ ६ ॥ यदि मध्यमायु हो तो दीर्घायु करता है। इसी प्रकार शनि अपनी नीच राशि या शत्रु राशि में पाप ग्रह से दृष्ट-युत हो तो कक्ष्या की हानि करता है अर्थात् दीर्घायु हो तो मध्यमायु, मध्यमायु हो तो अल्पायु और अल्पायु हो तो अत्यल्पायु करता है तथा बाल्यावस्था में ही मृत्यु देता है। यदि लग्नेश अथवा होरेश केवल शनि से युत हो, पापग्रह की राशि में अथवा पापग्रह से युत अथवा दृष्ट हो पर यदि नीच राशि अथवा शत्रु-राशि में न हो तो कक्ष्या का ह्रास नहीं करता ॥ ७-१० ॥ इसी प्रकार शनि उच्चादि से रहित हो तो कक्ष्या की वृद्धि नहीं करता। यदि शनि शुभग्रह की राशि में शुभग्रह से ~~युक्त~~ तथा दृष्ट होकर अपने उच्च में हो तथा पापग्रह के योग से रहित हो तो कक्ष्या की वृद्धि करता है। इसी प्रकार नीचादि दोष के कारण कक्ष्या का ह्रास होता है ॥ ११-१२ ॥ इसी प्रकार गुरु भी

स्थान-सम्बन्ध से आयु में वृद्धि करता है। यदि गुरु लग्न में अथवा सप्तमभाव में उच्चादि गुणों से युक्त हो, शुभ राशि में, शुभग्रह से दृष्ट और युक्त हो तो कक्ष्या की वृद्धि करता है और अल्पायु हो तो मध्यमायु, मध्यमायु हो तो दीर्घायु करता है। इस प्रकार भेदानुभेद से कक्ष्या के ह्रास-वृद्धि का वर्णन किया गया है॥ १३-१५॥ यदि जन्म लग्न कर्क हो और उसमें गुरु-चन्द्र स्थित हों, बुध और शुक्र केन्द्र में हों तथा शेष ग्रह एकादश तथा षष्ठ भाव में हों तो जातक की अमित आयु (जिसकी कोई सीमा न हो) होती है॥१६॥ यदि देवलोकांश में शनि हो, पारावतांश में मंगल हो तथा सिंहासनांश में होकर गुरु लग्न में बैठा हो तो जातक मुनियों जैसी आयु वाला होता है॥ १७॥ यदि गुरु गोपुरांश में होकर केन्द्र में बैठा हो, शुक्र पारावतांश में होकर त्रिकोण में बैठा हो तथा कर्क लग्न का जन्म हो तो जातक युगान्त पर्यन्त जीवित रहता है॥ १८॥ यदि केन्द्र में शुभग्रह हो और लग्नेश शुभ ग्रह हो तथा वह गुरु से दृष्ट भी हो तो जातक दीर्घायु होता है॥ १९॥ यदि लग्नेश केन्द्र में हो और वह गुरु-शुक्र से युक्त अथवा दृष्ट भी हो तो जातक पूर्णायु प्राप्त करता है॥ २०॥ यदि कोई भी तीन ग्रह अपनी उच्चराशि में होकर लग्नेश तथा अष्टमेश से युक्त हों तथा अष्टमभाव में कोई ग्रह न हो तो जातक दीर्घायु होता है॥ २१॥ यदि तीन ग्रह अपनी उच्च-राशि में, मित्र-राशि में अथवा अपने वर्ग में हों तथा लग्नेश बलवान् हो तो जातक पूर्णायु प्राप्त करता है॥ २२॥ यदि अपनी उच्च राशि स्थित किसी ग्रह से अष्टमेश अथवा शनि की युति हो तो जातक की पूर्णायु होती है॥२३॥ यदि तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में पापग्रह हों तथा केन्द्र और त्रिकोण में शुभग्रह हों, साथ ही लग्नेश बलवान् हो तो जातक पूर्णायु प्राप्त करता है॥ २४॥ यदि छठे, सातवें तथा आठवें भाव में शुभ ग्रह हों एवं तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में पापग्रह हों तो जातक पूर्णायु प्राप्त करता है॥ २५॥

मू० सं० ११४०

भा० टी०

अथ मृत्यु काल ज्ञानम्।। दीर्घे द्विसप्तति वर्षे तदूर्ध्वं चिन्तयेन्मृतिम्। षट्त्रिंशदब्दादूर्ध्वं च चिन्तयेन्मध्यमायुषि ।। १।। अथ स्पष्टं प्रवक्ष्यामि मलिने द्वार बाह्ययोः। नवांशे निधनं तस्य त्रिशूलि भाषितं पुरा ।।२।। द्वारद्वारेशयोर्विप्र मालिन्ये तन्नवांशके। जातस्य हि भवेन्मृत्युः सत्यमेव न संशयः ।।३।। पाकभोगद्वयेर्विप्र चिन्तनीयं प्रयत्नतः। स्वयं पापः पापदृष्टे पापखेट समन्विते। तन्नवांश दशाकाले निधनं च भवेद्ध्रुवम् ।।४।। अथवा योगायुर्दाय समाप्ति समयेष्वपि। प्रोक्ते मूलाश्रयीभूते चिन्तनीयं द्विजोत्तम ।।५।। खण्डे वा यदि पाकस्य बाह्यस्य मलिने यदि। दशा न हि समाप्येत तत्त्रिकोणाब्दके मृतिः ।।६।। अधुना सम्प्रवक्ष्यामि मृत्युयोगापवा-दकम्। शुभ दृष्ट्वा शुभे योगे शुभखेचर संयुते ।।७।। न च द्वारे न बाह्ये च द्वारेशे चोपलक्षिते। द्वार-शाश्रयनवांश युक्तौ च निधनं भवेत् ।।८।।

टीका ।। अब निधन समय की जानकारी के विषय में कहा जाता है।। दीर्घायु योग में ७२ वर्ष के बाद तथा मध्यमायु योग में ३६ वर्ष के बाद मृत्यु समय के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। द्वार-राशि तथा बाह्य-राशि के पापाक्रान्त होने से उसकी दशा में मृत्यु होती है।। अथवा द्वार-राशि या द्वारेश के पापाक्रान्त होने पर उसकी दशा में मृत्यु होती है।। दोनों दशाओं (दशा एवं अन्त--र्दशा) में अर्थात् द्वारेश स्वयं पापी हो अथवा पापग्रह से दृष्ट हो अथवा पापग्रह से युक्त हो तो उसकी दशा अथवा अन्तर्दशा में जातक की मृत्यु होती है।। अथवा योगज-आयु के समाप्ति के समय में, मृत्यु-काल के समीप वाली दशा में मृत्यु का विचार करना चाहिए।। अथवा बाह्य-राशि के मलिन होने के समय उसके खण्ड में यदि दशा समाप्त न हो सके तो उसके त्रिकोण-राशि के वर्ष में जातक की मृत्यु होती है। यदि द्वार-बाह्य राशि अथवा उनके स्वामी शुभ ग्रह से युक्त अथवा शुभ दृष्टि से युक्त हों तो द्वार-बाह्य राशि अथवा उनके स्वामियों की दशा अन्तर

में मृत्यु नहीं होती, परन्तु द्वारेश के आश्रयीभूत नवांश की दशा में मृत्यु होती है ॥ १-८॥

अथ आयुर्दाय ज्ञानस्य द्वितीय प्रकारः॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि प्रकारं वै द्वितीयकम्। यस्य विज्ञान मात्रेण आयुर्दा सूचको भवेत् ॥१॥ कारकात्तत्सप्तमाद्विप्र अष्टमेशौ तयोर्द्वयोः। मध्ये चैकोबली चिन्त्यः सोऽपि ह्यायुः प्रदायकः॥ २॥ केन्द्रादि त्रिकयोगेन दीर्घ मध्याल्पतायुषि। स विज्ञेया महाप्राज्ञ तदाग्रे प्रवदाम्यहम् ॥ ३॥ केन्द्रेस्थितेऽपि दीर्घायुर्मध्यायुः पणफरेस्थिते। आपोक्लिमे स्थिते त्वल्पमायुर्भवति निश्चितम् ॥ ४॥ लग्नात्तत्सप्तमाद्विप्र अष्टमेशौ तयोर्द्वयोः। ताभ्यां मध्ये बली चैकः स्थितः केन्द्रादि पूर्ववत्॥ दीर्घमध्याल्पभेदेन आयुर्निश्चित्य पूर्ववत् ॥ ५॥ पूर्ववद्धद्वखण्डस्य त्रैराशिक क्रमेण च। आयुर्दाय कृते स्पष्टं प्रवक्ष्यामि इदं वचः॥ ६॥ स्वस्मिन्सम बले खेटेऽन्यधिकेच बले द्विज। नवीर्यतायां दीर्घादि विपरीतायुषी भवेत् ॥ ७॥ दीर्घ मध्ये च वाल्पं-च स्वल्पं वा किंचिदेव च। विपरीतं योगभंगे सत्यमेव न संशयः॥ ८॥ अ

टीका। अब आयुर्दाय ज्ञान की दूसरी विधि कही जाती है, जिसके ज्ञान मात्र से मनुष्य की आयु जानी जा सकती है।। १।। आत्मकारक और उससे सातवाँ भाव — दोनों से जो अष्टमेश और दोनों अष्टमेशों में जो बली हो, वह यदि केन्द्र में हो तो जातक दीर्घायु होता है; यदि पणफर में हो तो मध्यमायु और यदि आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होता है।। २-३।। इसी प्रकार यदि लग्न और उससे सप्तम भाव — इन दोनों से जो अष्टमेश हों और उन दोनों अष्टमेशों में जो बली हो, वह यदि केन्द्र में हो तो दीर्घायु, पणफर में हो तो मध्यमायु और आपोक्लिम में हो तो अल्पायु होती है।। ४।। लग्न और सप्तम से जो अष्टमेश हों, उन दोनों में जो बली हो उसके केन्द्रादि में रहने से पूर्ववत् दीर्घ, मध्यम तथा अल्पायु का निर्णय करना चाहिए ॥ ५॥ इस प्रकार दीर्घ, मध्य आदि

में आयु का निर्णय करके पूर्वोक्त आयु को स्पष्ट करके इस प्रकार निर्णय करना चाहिए कि यदि आयुकारक ग्रह समानबली अथवा अल्पबली हों तो दीर्घादि विपरीत आयु होती है। दीर्घ, मध्य, अल्प अथवा, अत्यल्प आयु होती है। इस प्रकार योग भंग होने से विपरीत आयु होती है॥ ६-८॥

अथ अन्य प्रकार:॥ अथाग्रेऽनेकभेदानामायुषो निर्णय: कृत:। दीर्घादित्रयरूपेण इत्युक्तं ब्रह्मणोदितम्॥९॥ जन्मलग्नाष्टमेशौ द्वौ चिन्तयेज्जन्मपत्रिके। पंचमैकादशे विप्र दीर्घायुष्य प्रजायते॥१०॥ लाभे तृतीयगे वापि मध्यमायुर्विचिन्तयेत्। लाभे वित्ते त्रिकोणे वा ह्यायुरल्पं भवे-द्द्विज॥११॥ गतायुर्लाभगौ द्वौ चेज्जातकोऽपि न जीवति। एवं समस्तजन्तूनामीदृग्योगं विचिन्तयेत्॥१२॥

टीका॥ अब आयु ज्ञात करने का दूसरा प्रकार कहा जाता है, जिसे दीर्घादि तीन प्रकार से ब्रह्मा ने कहा है॥९॥ जन्मकुण्डली में लग्नेश तथा अष्टमेश यदि पंचम तथा एकादशभाव में हों तो दीर्घायु, एकादश तथा तृतीय भाव में हों तो मध्यमायु एवं एकादश, द्वितीय, पंचम तथा नवम भावों में हों तो अल्पायु समझें॥१०-११॥ यदि दोनों एकादशभाव में हों तो जातक गतायु होता है और जीवित नहीं रहता। इस प्रकार सभी प्राणियों के आयुर्दाय का निर्णय करना चाहिए॥१२॥

अथैवं भिन्नमार्गेण आयुर्दायं निरूप्यते। तनु तन्वीशतद्राशिपत्युर्भानां त्रिकोणके॥१३॥ अल्पमध्यचिरायुष्यं रूपवर्णप्रमाणत:। अष्टमेशादि योगेन निर्णयं कारयेद् ग्रह:॥१४॥ लग्नत्रिकोणगेऽल्पायुर्लग्नेशस्य त्रिकोणगे। मध्यमायुर्विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम॥१५॥ लग्नेशात्स्वीयराशौ तौ त्रिकोणे रंध्रनायके। दीर्घायुषि प्रदातव्यं पुरा शंभुप्रणोदितम्॥१६॥ तेषां मध्ये त्रिकोणानां विभागे च नवं क्रमम्। स्वल्पमध्यचिरायुष्यं यादृशादिकेन च॥१७॥ अल्पायुषस्त्रयो भेदास्त्रयस्थान

पृथक् पृथक्। विलग्नेशाष्टमेशादि लग्नस्थेपि द्विजोत्तम ॥ १८॥ द्वादशाब्द भवेदायुश्चतुर्विंशति पंचमे।
नवमे च षट्त्रिंशाब्दमित्येवं न तु संशयः ॥ १९॥ लग्नेश राशि कोणेषु लग्नरंध्राधिपा यदि। तत्र स्थिते
ष्टवेदाब्दं षष्ठ्यब्दं पंचमे स्थिते ॥ २०॥ नवमस्थे द्विसप्ताब्दं तन्नवैकमिदं मतम्। लग्नेशाश्रित राशीशात्त्रि-
कोणेषु स्थिते द्विज ॥२१॥ लग्नेशादष्टमेशादि त्रिभागं दीर्घमायुषि। लग्नस्थे चतुरशीतिः पंचमे षट्नवा-
त्मकः ॥२२॥ नवमेऽष्टोत्तरशतं वर्षेष्वायुर्विनिर्णयः। द्वादशाब्दानुपाते च ह्येतच्छम्भुप्रणोदितम् ॥२३॥
रविः कुजः शनी राहुर्मरणे बलिनः क्रमात्। विशेष दुर्बलं हित्वा ग्रहोयाद्बलिनः सुधीः ॥२४॥ केतुश्च
शनिवन्मृत्युनाथ सम्बद्धमादिशेत्। शनिना राहुणा वापि युक्ते सौम्ये रवीक्षिते ॥२५॥ पर्यायमेकं तन्मध्ये
एकराशौ मृतिं वदेत्। तयोस्तु शुभयोगेन तद्दशामृतिमादिशेत् ॥२६॥ भोग राशौ दुर्बले वा प्रबले च ग्रहे स्थि-
ते। तथापि निर्दिशेत्काले मरणं नात्र संशयः ॥२७॥ केतौ चैवासनस्थे च नाथे वाऽशुभवीक्षिते। केतोर्दशान्ते
मृत्युः स्याच्छुभदृष्टेन किंचन ॥ २८॥ तन्वधीशाष्टमेशाभ्यां योगेनायुः कृते द्विज। अष्टमेशस्यस्वोच्चस्थे
चर्पर्याब्द प्रमाणके ॥२९॥ अर्द्धाधिकाब्दं दत्वैव योजयेत्पूर्वमायुषि। एवं नाथान्तरीत्या च चरपर्यातिरिक्त-
कः ॥३०॥

टीका ॥ अब प्रकारान्तर से आयु-निर्णय के सम्बन्ध में बताया जाता है। लग्न,
लग्नेश और उनके राशीश्वरों से त्रिकोण में अल्प, मध्य एवं दीर्घायु वर्ष प्रमाण से होती है, इसमें
अष्टमेश आदि के योगों से निर्याणकर्ता ग्रह होता है ॥१३-१४॥ लग्नसे त्रिकोण में अल्पायु, लग्नेश से
त्रिकोण में मध्यमायु एवं लग्नेश अथवा जन्मराशीश अथवा अष्टमेश त्रिकोण में हो तो दीर्घायु होती
होती है ॥ १५-१६॥ यहाँ पर त्रिकोण के विभाग में नव का भेद कैसे हो? यहाँ प्रत्येक त्रिकोण में
अल्प, मध्य, दीर्घायु — बारह-बारह वर्ष का भेद होता है ॥ १७॥ अल्पायु के तीन भेद तीन स्थानों में

होते हैं। यदि लग्नेश, अष्टमेश लग्न में हों तो १२ वर्ष, पंचम भाव में हों तो २४ वर्ष एवं नवम भाव में हों
तो ३६ वर्ष की अल्पायु होती है ॥१८-१९॥ लग्नेश की राशि से त्रिकोण में लग्नेश-अष्टमेश हों तो तीन
भेद होते हैं। राशि में हों तो ४८ वर्ष, पंचम भाव में हों तो ६० वर्ष एवं नवमभाव में हों तो ७२ वर्ष की
मध्यमायु होती है। लग्नेश जिस राशि में हो उसके स्वामी से त्रिकोण में लग्नेश अष्टमेश हों तो दीर्घायु
के तीन भेद होते हैं ॥२०-२१॥ लग्नेश अष्टमेश के योग से दीर्घायु में भी तीन भेद होते हैं। यदि लग्न
में हों तो ८४ वर्ष, पंचम भाव में हों तो ९६ वर्ष और नवम भाव में हों तो १०८ वर्ष की दीर्घायु होती है।
यही १२ वर्ष के अनुपात से शिवजी ने कहा है॥ २२-२३॥ सूर्य, मंगल और शनि -और राहु— ये चारों प्रबल
मारक होते हैं, उनमें जो विशेष दुर्बल हों उन्हें छोड़कर प्रबल को ही लेना चाहिए॥ केतु भी शनि की
भाँति ही मारक होता है। शनि अथवा राहु के साथ शुभग्रह युक्त हो और उस पर सूर्य की दृष्टि हो
तो एक पर्याय के भीतर ही मृत्यु होती है। यदि दोनों शुभग्रह युक्त हों तो उनकी दशा में मृत्यु होती है
॥२४-२६॥ अन्तर्दशा की राशि दुर्बल हो अथवा प्रबल ग्रह से युक्त हो तो उसके समय में मृत्यु कहनी
चाहिए॥२७॥ यदि केतु अन्त्य में हो अथवा उस राशि के स्वामी पापग्रह से दृष्ट हो तो केतु की दशा में
मृत्यु होती है; परन्तु यदि वह शुभग्रह से दृष्ट हो तो कुछ नहीं होता॥२८॥ यदि लग्नेश-अष्टमेश से आयु
योग होता हो तथा अष्टमेश अपनी उच्च राशि में हो तो चर पर्याय के वर्ष में, आधे से अधिक वर्ष एवं
आयु में जोड़ कर विचार करना चाहिए। इस प्रकार राशि-स्वामी तक चर पर्याय में विचार करना चाहिए
॥२९-३०॥

मर्यादयापि यदायुरष्टमेशेन दीयते। तत्सर्वमर्धाधिक्ये च विधेयं द्विजोत्तम॥३१॥
एवं रन्ध्रपतिर्विप्र नीचराशिगतोऽपि च। तद्ग्रहेण दीयमानायुरर्द्धं च नाशयेत्॥३२॥ एवं रन्ध्रपतिर्विप्र

नीच खेटेन संयुतः । तद्ग्रहेण दीयमानमायुरर्द्धं विनश्यति ॥३३॥ एवं रन्ध्रपतिर्विप्र तुङ्गखेटेन संयुतः । तद्ग्रहेण दीयमानमायुरर्द्धं च वर्द्धते ॥३४॥ एवमुक्तंच विप्रेन्द्र परमायुर्विनिश्चितम् । लग्नेशाष्टमेशाभ्यां योगायुर्दायमाग-ते ॥३५॥ तेषु संस्कारमात्रेयमिदं पूर्वोक्तसंकथाम् । लग्नेशादायुरित्येवं तत्तद्योग कलात्मकम् ॥३६॥ संयुक्ताश्च ग्रहा उच्च नीचादि गुणदोषतः । वृद्धिह्रासावुक्तरीत्या कार्या वै सम्प्रदायतः ॥३७॥ छिद्र्यादि मृत्युयोगश्च प्रबलः पूर्व भाषितः । नैसर्गिकोऽपि वीर्याय तस्य पाके मृतिर्भवेत् ॥३८॥ रव्यारराहुमंदानां चतुः खेटान्तरे बली । तस्य योगा-नुसारेण जातकस्य मृतिंवदेत् ॥३९॥ अष्टमेशेन संयुक्तः शनि राहु, कुजो रविः । न वीक्ष्यंते ग्रहैर्वापि तस्य मृत्युं विनिर्दिशेत् ॥४०॥ एषां मध्येषु प्रबला सा तत्स्वामिकराशिगे । पाके मृत्युं विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ ४१॥ एषां चतुर्ग्रहाणांच मध्येचैको बलीक्वचित् । तस्य राशि दशाकाले मृतिस्थानं विनिर्दि-शेत् ॥४२॥ मृत्युस्थानाभिभूतायां सिद्धायां च महादशा । तत्तस्यापि क्रमेणैव तदंतर मृतिप्रदा ॥४३॥ शुभ ग्रहेण सम्बंधे शनि राहु कुजो रविः । तत्तत्स्वामि दशाकाले मरणं च विनिर्दिशेत् ॥४४॥ तदाश्रय राशि पाके मृत्युर्भवति निश्चितम् । निर्विशंकं महाप्राज्ञ पुरा शम्भु प्रणोदितम् ॥४५॥ सुख दुःखादि संब्रूयात् पाकरा-शी विचिंतयेत् । योगान्तरगता तत्तु तत्तद्वीर्यानुसारतः ॥४६॥ सबलायां सुखं ब्रूयाद् दुर्बला दुःखदायका । वैषम्येन फलं वाच्यं तथा मरणमेव च ॥४७॥ द्वादशे दशमे वापि संस्थिते पुच्छनायके । पापदृष्टे दशाप्राप्ते तदंतरगते मृतिः ॥४८॥ द्वादशे दशमे केतुः शुभग्रह निरीक्षितः । नायं योगो महाप्राज्ञ न कष्टं न च मृत्यु कृत् ॥४९॥ प्राणिनीत्युक्त्वा विप्रेन्द्र प्राणानयनमुच्यते । राश्यधीनं बलं ह्येषं तदुक्तं कथ्यतेऽधुना ॥५०॥

टीका ॥ मर्यादा के अनुसार अष्टमेश जिस आयु को देता हो, उसमें अर्धाधिक्य कर देना चाहिए ॥३१॥ इसी प्रकार अष्टमेश नीच राशि में हो तो उससे प्राप्त आयु का आधा ह्रास हो जाता है ॥३२॥ अथवा अष्टमेश किसी नीच राशि में स्थित ग्रह से युक्त हो तो भी प्राप्त आयु का आधा

ह्रास हो जाता है ॥ ३३ ॥ इसी प्रकार अष्टमेश उच्च ग्रह से युक्त हो तो उससे प्राप्त आयु का आधा बढ़ता है ॥ ३४ ॥ इस प्रकार आयु-निर्णय के विषय में कहा गया। लग्नेश-अष्टमेश के योग से आये हुए आयुर्दाय का यथोचित संस्कार करके जो फल उच्च-नीचादि के अनुसार प्राप्त हो, उसे आयु में जोड़ देना चाहिए तथा सम्प्रदाय के अनुसार ह्रास-वृद्धि भी कर देनी चाहिए ॥ ३५-३७ ॥ यदि पूर्वोक्त दो अथवा तीन प्रबल मृत्यु-योग हों तो नैसर्गिक योग कारक भी बलवान् होते हैं। उसी की दशा में मृत्यु कहनी चाहिए ॥ ३८ ॥ सूर्य, मंगल, राहु तथा शनि-इन चारों में जो भी बलवान् हो, उसी की दशा में मृत्यु होती है ॥ ३९ ॥ यदि शनि, राहु, मंगल और सूर्य में से कोई अष्टमेश से युक्त हो तथा अन्य ग्रहों से दृष्ट न हो तो उसी की दशा में मृत्यु होती है ॥ ४० ॥ इनमें जो प्रबल हो उसके स्वामी के राशि की दशा में निस्संदेह मृत्यु होती है ॥ ४१ ॥ इन चारों ग्रहों में कोई एक ग्रह बलवान् हो तो उस की राशि-दशा में मृत्यु होती है ॥ ४२ ॥ मृत्यु कारक ग्रह के निर्णयानुसार उसकी अन्तर्दशा में भी मृत्यु होती है ॥ ४३ ॥ यदि शनि, राहु, मंगल, सूर्य-ये शुभ ग्रह से सम्बन्धित हो तो भी इनकी दशा में मृत्यु होती है ॥ ४४ ॥ और उनके आश्रयभूत राशि की दशा में भी मृत्यु हो सकती है ॥ ४५ ॥ पाकेश्वर के अनुसार सुख-दुःखादि को उस ग्रह के योग और बल के आधार पर कहना चाहिए ॥ ४६ ॥ यदि बलवान हो तो सुख, यदि निर्बल हो तो दुःख और यदि वैषम्य हो तो मृत्यु होती है ॥ ४७ ॥ यदि केतु द्वादश अथवा दशमभाव में हो और वह पापग्रह से दृष्ट भी हो तो उसकी दशा एवं अन्तर्दशा में मृत्यु होती है ॥ ४८ ॥ यदि केतु द्वादश अथवा दशमभाव में हो तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो वह न तो कष्ट कारक होता है और न मृत्युकारक ही होता है ॥ ४९ ॥ पहले बल की चर्चा की जा चुकी है। अब उसके विचार के विषय में कहते हैं। राशि के अधीन ही बल का विचार होता है ॥ ५० ॥

मू० सं० ११४८

भा० टी०

अग्रहात्सग्रहो ज्यायान्सग्रहे त्वधिकग्रह:। साम्ये चरस्थिरद्वन्द्वा: क्रमात्स्युर्बलशालिन:
॥५१॥ अथ दीर्घादि योगेषु त्रिषु च द्विजसत्तम:। कक्षाह्रासकृते योगान्दर्शयामि तवाग्रत:॥ ५२॥ लग्नसप्त-
-मयोर्विप्र द्विर्द्वादशकयोरपि। षष्ठरंध्राधिपस्यापि जनुर्लग्ने विचिन्तयेत् ॥५३॥ पापाक्रान्ते पापयोगे पापमध्य
त्वमागते। कक्षाह्रासौ विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥५४॥ दीर्घस्य मध्यमा याता भवेदायुषि मध्यमे।
अल्पादल्पं च विज्ञेयं कक्षाह्रासस्य लक्षणम् ॥५५॥ कक्षाह्रासो यदार्थोऽपि पूर्ववञ्जायते ध्रुवम्। अथैवं
लग्नकुण्डल्यां पापयोग त्रिकोणके ॥५६॥ लग्नपंचम भाग्येषु पापयोगकृते द्विज। कक्षाह्रासो भवेद्विप्र नि-
र्विशंकं विधे: सुत ॥५७॥ अत्रास्मिन् कारके लग्ने चिन्तयेज्जनिलग्नवत्। कारकांशे द्यूनराशे: पापमध्यत्व
मेव हि ॥५८॥ एको योग: स विज्ञेय: कक्षाह्रासं च पूर्ववत्। अथैक कक्षाह्रासस्य चापवादं वदाम्यहम् ॥५९॥
एकस्य कक्षाह्रासं च विज्ञेये चान्यथा भवेत्। पूर्वच्छुभयोगेन कक्षावृद्धिर्भविष्यति ॥६०॥ जनुर्लग्ने कारके
च चिन्तयेत्पूर्ववद् द्विज। लग्ने द्यूने धने रिष्फे षष्ठे रन्ध्रे स्थलत्रये ॥६१॥ शुभखेट कृते योगे कक्षावृद्धिर्भ-
-वत्यपि। चिन्तयेत्पूर्ववद्विप्र त्रिकोणेषु स्थलद्वये ॥६२॥ जनुर्लग्नं कारकं च शुभयोगं करोति चेत्।
कक्षावृद्धिर्न संदेहो भविष्यति द्विजोत्तम ॥६३॥ कारके च त्रिकोणस्थे नीचस्था: पापखेचरा:। कक्षाह्रासो महा
प्राज्ञ द्वितयेन भविष्यति ॥६४॥ कारकांशात्त्रिकोणेषु शुभखेटे शुभस्थले। कक्षावृद्धिर्भवेत्तत्र न संदेहो
द्विजोत्तम ॥६५॥ कारके पापखेटाच्च अन्त्यगे पापसंयुते। कक्षाह्रासो भवेत्तत्र प्रणीते द्विजसत्तम ॥६६॥
कारके शुभसंयुक्ते स्वतुंगे शुभखेचरा:। कक्षावृद्धिर्भवेत्तत्र निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥६७॥ पापकारकजौ ह्रासो
वृद्धिर्वा कथिता द्विज। अथैव गुरुणा कक्षाह्रासवृद्धिं वदाम्यहम् ॥६८॥ वित्ते व्यये लग्न षष्ठे त्रिकोणे
पापयोर्द्विज। कक्षाह्रासो भवेत्तत्र पूर्ववद् द्विजसत्तम ॥६९॥ गुरौ नीचे स्वतुङ्गे च संयुक्ते ऽशुभखेचरै:।
कक्षाह्रासो भवेत्तत्र निर्विशंके द्विजोत्तम ॥७०॥ वित्तगे च गुरौ ज्ञेयं पूर्ववन्नियमं द्विज। प्रागुक्तार्थकृतेयं

च कक्षा सर्वाप्रकथ्यते ॥७१॥ तथैव शुभयोगेषु चापवादं वदाम्यहम्। उक्तस्थाने शुभैर्योगे पूर्णेन्दुशुक्रयोर्द्विज ॥७२॥ योगप्रकरणे कक्षाह्रासाय न तु वृद्धये। तत्रैकराशिवृद्धिश्च भवत्येव न संशयः ॥७३॥ पूर्ववच्चोक्तपापेषु शनिना योगकारकः। कक्षाह्रासश्च तत्रैव यत्रैको राशिह्रासकृत् ॥७४॥

टीका॥ अकेला होने की अपेक्षा किसी अन्य ग्रह के साथ वाला ग्रह बलवान् होता है। ग्रह युक्त ग्रह यदि समान ग्रहों से युक्त हो तो जो ग्रह संख्या में अधिक ग्रहों से युक्त हो, वह उसकी अपेक्षा अधिक बलवान् होगा। इसमें भी समानता हो तो चर राशिस्थ ग्रह की अपेक्षा स्थिर राशिवाला और उसकी अपेक्षा द्विस्वभाव राशि वाला ग्रह अधिक बलवान् होता है॥५१॥ अब दीर्घायु, मध्यमायु तथा अल्पायु योगों में कक्षा ह्रास के विषय में बताया जाता है॥५२॥ यदि लग्न, सप्तम, द्वितीय, द्वादश, षष्ठ और अष्टम – इन भावों के स्वामी पापाक्रान्त, पापग्रह से युक्त अथवा पापग्रह के मध्य में हों तो कक्षा का ह्रास होता है; अर्थात् दीर्घायु हो तो मध्यायु, मध्यायु हो तो अल्पायु और अल्पायु हो तो स्वल्पायु होती है। यही कक्षा ह्रास का लक्षण है॥५३–५५॥ कक्षा ह्रास से यथार्थ स्थिति में कमी आजाती है। इसी प्रकार लग्न कुण्डली में भी त्रिकोण में पापग्रह का योग होने पर कक्षा का ह्रास होता है॥५६॥ लग्न, पंचम और नवमभाव में पाप ग्रह का योग होने से कक्षा का ह्रास होता है॥५७॥ कारक लग्न से भी जन्म लग्न की भाँति ही विचार करना चाहिए। कारकांश से सप्तम भाव पापग्रहों के मध्य में हो तो भी कक्षा का ह्रास होता है॥५८॥ अब एक अपवाद के विषय में बताया जाता है, जिसमें शुभ योग होने से कक्षा वृद्धि होती है॥५९–६०॥ लग्न, सप्तम, द्वितीय, द्वादश और षष्ठ तथा अष्टम – इनमें से किन्हीं तीन स्थानों में शुभग्रह का योग हो तो कक्षा की वृद्धि होती है। इसी प्रकार दोनों त्रिकोणों में भी विचार करना चाहिए॥६१–६२॥ यदि जन्म लग्न और कारक शुभग्रह से योग करता हो तो भी कक्षा की वृद्धि होती है, इसमें सन्देह नहीं है॥६३॥ यदि कारक त्रिकोण में

हो तथा पाप ग्रह अपनी नीच राशि में हो तो दोनों से कक्षा का ह्रास होता है ॥६४॥ यदि कारकांश से त्रिकोण में शुभ राशि में शुभ ग्रह हों तो कक्षा में वृद्धि होती है ॥६५॥ यदि पापग्रह बारहवें भाव में कारक हो तथा पाप ग्रह से युक्त हो तो कक्षा का ह्रास होता है ॥६६॥ यदि कारक शुभग्रह से युक्त हो तथा शुभ ग्रह अपने उच्च में हो तो कक्षा की वृद्धि होती है ॥६७॥ इस प्रकार पापग्रह से उत्पन्न कक्षा की ह्रास-वृद्धि के विषय में कहा गया। अब गुरु से कक्षा की ह्रास-वृद्धि के विषय में बताया जाता है ॥६८॥ यदि गुरु से दूसरे, बारहवें, लग्न, छठे तथा त्रिकोण में पापग्रह हों तो पूर्ववत् कक्षा का ह्रास होता है ॥६९॥ यदि गुरु अपने नीच में अथवा अपनी उच्च राशि में पापग्रहों से युक्त हो तो कक्षा का ह्रास होता है ॥७०॥ यदि गुरु द्वितीयभाव में हो तो पूर्ववत् कक्षा की ह्रास-वृद्धि को समझना चाहिए। पूर्वोक्त कक्षा क्रम के लिए ही यह सब कहा गया है ॥७२॥ अब उक्त स्थानों में शुभग्रह के योग के अपवाद के विषय में कहा जाता है। यदि उक्त स्थानों में शुभग्रह का योग पूर्णचन्द्र-शुक्र का हो तो कक्षा का ह्रास ही होता है, वृद्धि नहीं होती। परन्तु एक राशि की वृद्धि अवश्य होती है ॥७३॥ यदि पूर्वोक्त पापग्रह योग में शनि योग करता हो तो वहाँ पर कक्षा ह्रास में एक राशि का ह्रास होता है ॥७४॥

अथ स्थिर दशायां मृत्यु समय ज्ञानम् ॥ अधुना सम्प्रवक्ष्यामि विशेषेण द्विजोत्तम। आलम्ब्य स्थिर दशायां योगान्निधन मेव च ॥७५॥ त्रिभिस्त्रिभिराशिभिरेकं खंडाश्चत्वार एव च। कस्मिन्खण्डे च निधनं तस्य योगं विचिन्तयेत् ॥७६॥ योग त्रयमहं वक्ष्ये दीर्घमध्याल्प भेदतः। चतुष्खण्डेषु यत्रायुरागतं तत्र चिन्तयेत् ॥७७॥ दीर्घायुर्योगवत्तत्तु यस्मिन्खण्डे समागते। तस्मिन्खण्डे च निधनं भवत्यपि न संशयः ॥७८॥ वक्ष्यमाण प्रकारेण मध्यमाल्पायुषि द्विज। निधनाख्य खण्डेषु लक्षणाक्रान्तया दशा ॥७९॥ तद्दशायां च निधनं भवत्येव द्विजोत्तम। कदाचिन्न मृतिस्तत्र क्लेश दुःख भयानि च ॥८०॥ भवंति

तत्र संस्कारं पुनरित्यं वदाम्यहम् । पापद्वयमध्यगते राशिपाके मृतिर्भवेत् ॥ ८१॥ लग्नाद्वाकारकाद्विप्र पापाक्रान्ते त्रिकोणके । द्वादशाष्टमराश्योरेवं पापाक्रान्तं भवेदपि ॥ ८२॥ तद्दशायां च निधनं जातकस्य न संशयः । खण्डे स्थिर दशायां च चिन्तनीयं प्रयत्नतः ॥ ८३॥ पापयोश्च त्रिकोणेषु द्वादशाष्टमराशिषु । पापाक्रान्ते तद्दशायां निधनं भवति ध्रुवम् ॥ ८४॥ शुभमध्ये मृतिर्नैव पापमध्ये मृतिर्भवेत् । भूयोऽपि निधनार्थाय राशिदोषं वदाम्यहम् ॥ ८५॥ द्वादशाष्टमपत्योश्च दृष्टौ क्षीणेन्दुशुक्रयोः । तद्दशायां च निधनं भवत्येव न संशयः ॥ ८६॥ क्षीणेन्दोः केवले दृष्टिः शुक्रदृष्टिश्च केवलम् । दृष्टिमात्रेण निधनं स्थिरदशायां विचिन्तयेत् ॥ ८७॥ मृत्युस्थाने तु या दृष्टिः पापमध्यर्क्षं पश्यति । तस्य दशां समालोक्य व्योमषष्ठाधिपाद्द्विज ॥ ८८॥ निरीक्षते नवांशेषु द्वयोः स्थाने द्विजोत्तम । तत्रैव निधनं ज्ञेयं भाषितं च तवाग्रके ॥ ८९॥ पूर्वोक्त निधनस्थाने महापाकं नरेष्वपि व्योमषष्ठाधिपौ विप्र तयोरंशे निरीक्षिते । राशेरंतर्दशाकाले निधनं भवति ध्रुवम् । अन्तर्दशायां रूपे द्वे निधनस्थानमेव च ॥ ९१॥ इति ॥

टीका ॥ अब स्थिर दशा के अनुसार, चारों खण्डों पर अवलम्बित मृत्यु-समय के विषय में बताया जाता है ॥ ७५॥ तीन-तीन राशियों के चार खण्ड होते हैं। किस खण्ड में मृत्यु होगी, इस का उल्लेख किया जाता है ॥ ७६॥ दीर्घायु, मध्यायु तथा अल्पायु के भेद चारों खण्डों में जहाँ समाप्त हों, उसी समय मृत्यु होगी—यह कहना चाहिए ॥ ७७-७८॥ इसी प्रकार मध्यायु तथा अल्पायु के खण्डों में जिस खण्ड की जिस दशा में मृत्यु का सन्देह हो, उसी खण्ड में मृत्यु होगी—यह कहना चाहिए ॥ ७९॥ यदि कदाचित् मृत्यु न हो तो उस समय क्लेश, दुःख तथा भय अवश्य होता है ॥ ८०॥ पापग्रहों के मध्य में स्थित राशि की दशा में मृत्यु होती है ॥ ८१॥ लग्न से, आत्मकारक से त्रिकोण में पापग्रह हों अथवा द्वादश, अष्टम राशि में पाप ग्रह हों तो उस राशि की दशा में मृत्यु कहनी चाहिए ॥

८२-८३॥ पापग्रह की राशि से त्रिकोण में अथवा बारहवीं, आठवीं राशि में पापग्रह हों तो उस राशि की दशा में मृत्यु होती है॥८४॥ शुभग्रह के मध्य की राशि में मृत्यु नहीं होती तथा पापग्रह के मध्य की राशि में मृत्यु होती है। अब निधन-राशि के दोष के विषय में बताया जाता है॥८५॥ द्वादश तथा अष्टम भाव के स्वामी क्षीण चन्द्र तथा शुक्र से दृष्ट हों तो उनकी दशा में मृत्यु होती है॥८६॥ केवल क्षीण चन्द्र तथा शुक्र की दृष्टि मात्र से स्थिर दशा में मृत्यु होती है॥८७॥ पापग्रह के मध्य में स्थित अष्टम स्थान को क्षीण चन्द्र, शुक्र अथवा दशमेश-षष्ठेश देखते हों तो इनकी दशा में अथवा दशमेश, षष्ठेश से दृष्ट अष्टमस्थ पापद्वय मध्य स्थित राशि की अन्तर्दशा में मृत्यु होती है॥८८-८९॥ पूर्वोक्त निधन स्थानों के समय महादशा में दशम तथा षष्ठ भावों के नवांशराशि के अन्तर में जातक की मृत्यु होती है॥९०-९१॥ इति॥

अथ मारक रुद्रग्रह ज्ञानम्॥ लग्न द्यूनाष्टमेशौ यौ तयोर्मध्ये च यो बली। प्राणीरुद्रः स विज्ञेयः निधनार्थे विचिन्त्यताम्॥१॥ तयोर्मध्ये बली चिन्त्यः शुभदृष्टेन संयुते। दुर्बलः सोऽपि गौणाख्यो रुद्रग्रह इतीर्यते॥२॥ तत्रैव प्राणिरुद्रस्य विशेषं गणयेत्फलम्। प्रवक्ष्यामि तवाग्रे च शृणुष्वं त्वं महामते॥३॥ शुभैर्युक्ते शुभैर्दृष्टे शुभसम्बन्धकारकः। प्राणीरुद्रः स विज्ञेयस्तत्सीमान्तमायु च॥४॥ रुद्रशूलान्तमायुश्च त्रिकोणान्ते तथा पुनः। लग्नान्ते पञ्चमान्ते च नवमान्ते त्रयस्थले॥५॥ चिन्तनीयं महाप्राज्ञ तत्तद्राशिदशान्तरे। अल्पमध्यं च दीर्घायुर्योगभेदा न संशयः॥६॥ तत्राल्पायुः समायोगे त्रिकोणमध्यमोत्तरे। आयुस्तत्रैव विज्ञेयं तदग्रे च क्रमेण च॥७॥ योगे मध्यायुषं प्राप्ते त्रिकोण मध्यमांतगे। आयुर्दायसमाप्तिश्च निर्विशंकं द्विजोत्तम॥८॥ दीर्घायुर्योगसंलब्धे त्रिकोणे नवमांतगे। दशान्तरे महाप्राज्ञ आयुर्दाय समाप्तये॥९॥ अथैवं लग्नद्यूनादि आरभ्य च दशाक्रमः। प्रवृत्तिर्जन्मतो ज्ञेया निर्विशंकं द्विजोत्तम॥१०॥ यत्र रुद्रग्रहस्यापि शुभदत्वं न भण्यते।

तत्र जीवस्य नष्टत्वान्नेदं फलमिति स्थिति: ॥ ११॥ अथैव रुद्रशूलांतमायुर्दायेति कारणे। योगेऽस्मिंश्च समुत्कर्षात्किंचिद्दर्शयति द्विज ॥ १२॥ प्राणी रुद्र शुभैर्दृष्टे पूर्वोक्त फलदायक:। शुभयोगे न संदेहो रुद्रशूलान्त मायुषि ॥ १३॥ स्थितएव फलं जन्म कथितं कारणांतरे। निरुक्ते शुभ संयोगे किं कीर्तयति भो द्विज ॥ १४ पूर्वमेव फलं साधो समुत्कृष्टे तदैव चेत्। सुतरां तदेव वक्तव्यं निर्विशंकं द्विजोत्तम ॥ १५॥ अनेन पूर्वयोगेन फलं किंचिद्धि न्यूनता। आप्योदितादुक्त कालात्पूर्वं पश्चान्मृतिर्यदि ॥ १६॥ निरुक्त योगश्च तदा ह्यपवादं वदाम्यहम्। रविं विहाय नितरां पापयोगो भवेद्द्विज ॥ १७॥ योगोऽयं निष्फलो वाच्य: पुराब्रह्मप्रणोदित:। इदं फलं न भवति योगेस्मिन्द्विजसत्तम ॥ १८॥ नाशयोगस्य वक्तव्यं फलं वापि भयंकरम्। अधुना सम्प्र-वक्ष्यामि गौणरुद्रस्य वै द्विज ॥ १९॥

टीका॥ अब रुद्रग्रह मारक के विषय में सुनो। लग्न तथा सप्तमेश से जो अष्टमेश हो, उन में जो बली हो, वही रुद्रग्रह होता है॥१॥ उस बलीग्रह को यदि किसी शुभग्रह की दृष्टि अथवा युति भी प्राप्त हो तो वह और भी बलवान होता है। अशुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट होने पर वह दुर्बल हो जाता है॥ २॥ परन्तु दुर्बल ग्रह भी रुद्र (मारक) हो सकता है। अब उसके सम्बन्ध में कहता हूँ॥ ३॥ यदि कारकग्रह शुभग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो अथवा सम्बन्ध करता हो तो वह रुद्र ग्रह होता है और उसी रुद्रशूलान्त तक मनुष्य की आयु होती है॥ ४॥ अथवा उसके त्रिकोण राशि तक आयु होती है। लग्नान्त, पंचमान्त एवं नवमान्त — इन तीनों को त्रिकोणान्त समझना चाहिए॥ ५॥ इन्हीं खण्डों में अल्पायु, मध्यमायु तथा दीर्घायु के भेदों को समझना उचित है। लग्न से पंचमान्त अल्पायु, नवमान्त तक मध्यमायु एवं इसके उपरान्त दीर्घायु समझनी चाहिए॥ ६-९॥ इसी भाँति लग्न-सप्तमादि से आरम्भ करके दशाक्रम के सम्बन्ध में जन्म से ही जानना चाहिए॥ १०॥ यदि रुद्र ग्रह का शुभत्व न हो, वहाँ जीव के नष्ट होने से सम्बन्धित उक्त फल नहीं

होता ॥ ११॥ इसी प्रकार रुद्र शूलान्त आयुर्दाय होने का कारण होता है । उस योग के सम्बन्ध में कहता हूँ ॥ १२॥ यदि रुद्रग्रह शुभदृष्ट हो तो प्राणी को पूर्वोक्त फल देता है और वह यदि शुभग्रह से दृष्ट हो तो रुद्र शूलान्त आयु होती है, इसमें सन्देह नहीं है ॥ १३॥ कारणान्तर से पूर्वोक्त फल होता है, परन्तु हे द्विजश्रेष्ठ! शुभ योग में कोई कारणान्तर नहीं होता ॥ १४ – १५॥ इसमें भी यदि पूर्वोक्त फल उत्कृष्ट हो तो वही होता है । यदि पूर्वोक्त फल में कोई न्यूनता हो तथा उससे पहले अथवा बाद में मृत्यु हो तो यह योग निष्फल होगा । सूर्य के अतिरिक्त अन्य पापग्रहों के योग से पाप-योग बनता है ॥ १६ – १७॥ हे विप्रसत्तम! परन्तु योग के नष्ट होने का फल भयंकर होता है । अब मैं 'गौणरुद्र' के विषय में बताता हूँ ॥ १८ – १९॥

अथ गुण प्रकर्षणानुसारेण गौणरुद्र फलम् ॥ गुणप्रकर्षेण फलं विशेषेण तवाग्रतः । गौणरुद्रे महाप्राज्ञ मन्दारेन्दु निरीक्षिते ॥ २०॥ अभावे शुभ योगस्य पापयोगोत्तरे तथा । शूलान्तात्फल विप्रेन्द्र आयुर्दायं भविष्यसि ॥ २१॥ शुभ दृष्टे वा शूलान्तात्परञ्चायुर्भवेदपि । योगद्वय परत्वेन योजनीयं न संशयः ॥ २२॥ एत योगद्वयं किञ्चिन्न्यूनतायामपि द्विज । नेदं फलं प्रवक्तव्यं मैत्रेय भाषितं पुरा ॥ २३॥ शुभ दृष्टि भवेच्चैव योगे च परपूर्ववत् । शुभदृष्टावसंत्यां च पापयोगाद्यभावतः ॥ २४॥ कृत एकोहि योगश्च पूर्वयोगजमेव च । अशुभ योगे शुभदृष्टौ योगोऽप्यमपरो द्विज ॥ २५॥ पापयोगैरभावे च शुभ दृष्टौ च संयुते । कैमुतिकाख्यन्यायेन सिद्धो योगस्तृतीयकः ॥ २६॥ पुरा प्रोवाच यच्छम्भुस्तत्वाग्रे कथयाम्यहम् । द्वितीय योजनायां तु शुभदृष्टि समन्विते ॥ २७॥ पापयोगस्य चाभावे योगः प्रथम उच्यते । पापयोगे महाप्राज्ञ शुभदृष्टे प्रभावके ॥ २८॥ द्वितीय योगपक्षेऽहं पूर्वस्मिन् द्विजसत्तम । पापयोगस्य चाभावे पापदृष्टि विवर्जितः ॥ २९॥ कैमुतिकाख्य न्यायेन तृतीयो योग उच्यते । अथैवं प्राणिरुद्रस्य ह्युक्ता पक्षांतरे कथा ॥ ३०॥ तत्रैव प्रथमे योगे शुभ दृष्टि विवर्जिते । शुभयोगादि योगश्च द्वितीयोक्तेन योगकृत ॥ ३१॥ तृतीयेन द्वयस्यापि योगभङ्

करोत्यपि । अधुनोक्त क्रमाभावे मंदादिदृष्टिमात्रतः ॥३२॥ एवं स्थिते सुयोगश्च निःशंकं प्रतिपाद्यते।
अशुभैः खेचरैर्दृष्टे पापयोग इति स्थितिः॥३३॥ शुभं योग विहीने च मन्दारेन्दु निरीक्षिते। तदायुः परतो
विप्र सम्मानादिति योजयेत्॥३४॥ प्रथमं द्वितिये संतः पापयोगैरभावतः। योगो भंगमपेक्षा च तृतीयोक्त-
मिदं वदेत्॥३५॥ पापदृष्टिमात्रमेवं योगनिर्वाहकारणे अपवादविहीनेन इत्येवोक्तं तृतीयके॥३६॥ रुद्राभ्यां
प्राणि गौणाभ्यां ताभ्यामाश्रितमेव च। गुणविशेषे आयुरन्तं वक्ष्यामीह महामते॥३७॥ गौणरुद्र शुभैर्योगे
शुभदृष्टि समन्विते। रुद्र शूलान्तमायुश्च योजनीयं द्विजोत्तम ॥३८॥ पूर्वोक्त प्राणिरुद्रेण द्वियोगप्राण-
-केन च। द्वाभ्यां शूलान्तमायुश्च तवाग्रे कथितं मया ॥३९॥

टीका ॥ अब गुण प्रकर्षण के अनुसार गौण रुद्र के फल को कहा जाता है। गौणरुद्र यदि शनि, मङ्गल, चन्द्रमा से दृष्ट हो; शुभग्रह का योग न हो, पापयोग भी न हो; अथवा पापयोग हो, अथवा मंगल, शनि, चन्द्रमा के साथ और भी शुभग्रहों की दृष्टि हो तो रुद्राश्रित राशि के अग्रिम राशि की दशा में मृत्यु होती है॥२०-२१॥ शुभग्रह के योग के अभाव में पापग्रह का योग हो तो दोनों योगों का, एक के बाद दूसरे का, विचार करना चाहिए॥२२॥ इन दोनों योगों के न्यून होने पर पूर्वोक्त फल नहीं होता॥२३॥ शुभदृष्टि होने तथा शुभग्रह की दृष्टि के अभाव में पापग्रहादि का योग न होने से एक योग होता है॥२४॥ पापग्रह के योग में शुभग्रह की दृष्टि होने पर दूसरा योग होता है॥ २५॥ पाप योग के अभाव में शुभ दृष्टि होने पर, कैमुतिक न्याय से तीसरा योग भी होता है॥२६॥ पूर्वकाल में शिवजी ने जो कुछ कहा है, वही मैं तुमसे कहता हूँ। पाप योग में यदि शुभ दृष्टि हो तो एक योग या पापग्रह के योग का अभाव हो तो प्रथमयोग तथा पापग्रह के योग में शुभ दृष्टि हो तो दूसरा योग अथवा पापयोग के अभाव में पाप दृष्टि के न होने पर कैमुतिक न्याय से तीसरा योग

होता है। इस प्रकार पक्षान्तर से प्राणीरुद्र का स्वरूप कहा गया है॥ २८-३०॥ प्रथम योग में शुभदृष्टि से रहित होने पर, शुभादि योग होने से द्वितीय योगमें तथा तीसरे में दूसरे के साथ योग होने पर एवं उक्त तीनों योगों के अभाव में शन्यादि की दृष्टि के भेद से निर्विशंक के विषय में सुनो॥३१-३२॥ अशुभ ग्रह की दृष्टि तथा पाप योग हो, शुभ योग से विहीन शनि, मंगल, चन्द्रमा से दृष्ट हो तो रुद्रशूल के बाद तक आयु होती है॥ ३३-३४॥ प्रथम द्वितीय योग में पापयोग के अभाव में योगभङ्ग होने से तीसरे योग की उत्पत्ति होती है॥३५॥ केवल पापग्रहमात्र की दृष्टि-योग होने के कारण तीसरा योग होता है॥३६॥ अब दोनों रुद्र, उनके आश्रित तथा गुण विशेष से आयु-निर्णय के विषय में कहता हूँ, सुनो॥३७॥ गौण रुद्र शुभ ग्रह से योग करता हो और शुभ दृष्टि से युक्त हो तो रुद्र शूलान्त आयु होती है॥३८॥ पूर्वोक्त प्राणिरुद्र के जो दो योग कहे गए हैं, उनमें दोनों रुद्रों के शूलान्त पर्यन्त आयु होती है॥३९॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि द्वयोर्निर्वाहकारणम्। तयोः रूपं भिन्नभिन्नं शृणुष्व मुनिसत्तम॥४०॥ प्राणिरुद्रे शुभैर्दृष्टे योगोऽयं द्विजसत्तम। शुभयोगेति का वार्त्ता शूलान्तायुर्विनिश्चितम्॥४१॥ गौणरुद्रे शुभैर्दृष्टे योगोऽयं क्लेशदायकः। रोगशोकभयं कर्त्ता मृत्युं नैवं करोति च॥४२॥ शुभयोगे महाप्राज्ञ योगोऽयं बलवत्तरः। तस्य शूलान्तमायुश्च निर्विशंकं न संशयः॥४३॥ उभौ रुद्रौ शुभैर्दृष्टौ यदा योगद्वयोरपि। शुभग्रहेण क्लेशश्च रुद्र शूलान्तमायुषि॥४४॥ प्राणी चाप्राणिरुद्राभ्यां कृतयोगद्वयेन च। तयोर्वा सम्प्रवक्ष्यामि तवाग्रे द्विजसत्तम॥४५॥ मार्त्तण्ड रहितो चान्यः पापयोग कृते द्विज। योगद्वयं न भवति पापयुक्तं द्वयोरपि॥४६॥ शुभ योगः शुभैर्दृष्टिरुभयेऽपि विना रविम्। पापयोग कृते विप्र भययोगो विनश्यति॥४७॥ शुभयोगः शुभैर्दृष्टिरभावे न भवत्यपि। यत्रायुः कथं चकुर्वन्त्वां च

द्विजोत्तम ॥४८॥ उभयोः पापयोगे च कश्चिद्रोगार्तिको भवेत् । क्लेशः शोको नृपाद्भीतिः देशपर्यटनं द्विज॥ ४९॥ शुभदृष्टेरभावे च शुभयोग विवर्जिते । पाप योग प्रभावेण मरणं सारणं ध्रुवम् ॥५०॥

टीका ॥ अब दोनों के निर्वाह कारण के विषय में सुनो । दोनों के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं ॥४०॥ प्राणिरुद्र शुभग्रहों से दृष्ट तथा युक्त हो तो रुद्र शूलान्त आयु होती है ॥ ४१॥ गौण रुद्र शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को रोग, शोक तथा भय की प्राप्ति होती है, परन्तु मृत्यु नहीं होती ॥ ४२॥ यदि इस योग में शुभयोग भी हो तो निश्चित रूप से इसके शूलान्त पर्यन्त आयु होती है ॥४३॥ दोनों रुद्र शुभग्रहों से दृष्ट तथा युक्त हों तो रुद्र शूलान्त आयु न होकर, केवल क्लेश मात्र होता है ॥ ४४॥ बलहीन अथवा बलवान रुद्रों से दोनों योगों में जो विशेषता आती है उसके सम्बन्ध में सुनो ॥ ४५॥ दोनों रुद्रों के दोनों योगों में सूर्य के अतिरिक्त अन्य पापग्रह योग करते हों तो दोनों योग नहीं होते ॥ ४६॥ शुभयोगएवंशुभग्रह से दृष्ट दोनों हों तो पापग्रह के योग से उत्पन्न भययोग निवृत्त हो जाता है ॥४७॥ शुभ योग अथवा शुभ दृष्टि के अभाव में भी कुछ नहीं होता ॥ ४८॥ यदि दोनों पाप योग करते हों तो कुछ रोग आदि होते हैं तथा क्लेश, शोक, राजभय एवं देशाटन की स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं ॥ ४९॥ शुभ दृष्टि के अभाव में, शुभयोग के बिना, पाप योग के प्रभाव से मृत्यु होती है ॥५०॥

शुभयोगदृष्ट्यभावे पापयोगे द्विजोत्तम । शुभवर्गौ पापवर्गौ तवाग्रे कथयाम्यहम् ॥ ५१॥ अर्कारमन्दफणिनः क्रमात्क्रूरा यथाक्रमम् । चन्द्रोऽपि क्रूर एवात्र क्वचिदङ्गारकाश्रयात् ॥ ५२॥ गुरुः कविशिखिज्ञाश्च यथापूर्वं शुभग्रहाः । क्रूरखेटा महापापा चार्काद्या उत्तरोत्तरम् ॥५३॥ क्रूराः क्रूरभगाश्चैव महत्क्रूरा भवन्ति च । शुभक्षेत्रगतैः क्रूरैः क्रूरता ह्युपशाम्यति ॥ ५४॥ गुर्वादयः शुभग्रहाः

यथापूर्वं बुधः कविः । कथितः केतु विज्ञेयः केतुतो वाक्पतिर्द्विज ॥५५॥ क्रमेणैव विजानीयाच्छुभखेटोत्तरोत्तरम् । यथापूर्वं क्रूरग्रहाः क्रूराश्रय समागते ॥५६॥ एवं क्रौर्यं समापन्नं क्रौर्यं तु शोभनाश्रयः । एवं गुर्वादि सौम्याश्च शुभाः श्रेयाति शोभनाः ॥५७॥ क्रूराश्रये सौम्यखेटाः सौम्यता नश्यते क्वचित् । एवमेवापरायुक्तिं कथयामि द्विजोत्तम ॥५८॥ प्रत्येकं शुभराशिस्थो उच्चस्थो वा बुधः शुभः । गुरू शुक्रौ च सौम्यस्थौ ततोऽन्येच शुभाः स्मृताः ॥५९॥ पूर्वस्मिन् पापयोगेन योगभंगद्वये द्विज । निरूपितं तवाग्रे च निर्विशंकं न संशयः ॥६०॥ योगद्वयेऽपि भंगार्थे पापदृष्टौ विशेषकम् । न दर्शयामि कदापि तवाग्रे कथयामि वै ॥६१॥ शुभग्रहाणामभावे मन्दारेन्दु निरीक्षिते । पापयोगे शुभैर्दृष्टे परतश्चायुषि द्विज ॥६२॥ प्रागिरुद्वेप्यगौणेन शुभयोग विवर्जिते । पापयोगेऽथवा दृष्टे तथा शुभनिरीक्षिते ॥६३॥ व्यापारतानुविज्ञेया पूर्ववद् द्विजसत्तम । अत्रोपपदपापाच्च राहोरप्युपलक्षणम् ॥६४॥ एवं सूर्यातिरिक्तोऽपि पापयोगस्तथैव च । तस्यैवेदानुवादाच्च राहोश्चोपवृंहणात् ॥६५॥ परिग्रह दर्शनाच्च परतो रुद्रपाश्रयात् । शुभस्थाने आयुरंतः शूलत्रयमलंघनात् ॥६६॥ न तु शूल दशायां च आयुरंतं द्विजोत्तम । एवं शूले चेत्तदन्तशूल रीत्येति बाधके ॥६७॥ पूर्वोक्त पापयोगेन शुभयोगेन दूषितः । कृतयोगद्वयस्यापि भंगार्थे च वदाम्यहम् ॥६८॥ शुभयोगेन वै विप्र पापयोगोऽति दुर्बलः । शुभदृष्टिकृतो योगः पापदृष्टे कथं क्षमः ॥६९॥ न भंजन समर्थश्च कोटि यत्ने कृते द्विज । शुभकृद्योगभंगार्थे पापयोगमपेक्षितम् ॥७०॥

टीका॥ अब शुभयोग दृष्टि वर्ग तथा पापयोग के सम्बन्ध में सुनो ॥ ५१॥ सूर्य, मङ्गल, शनि तथा राहु -ये यथाक्रम से क्रूर ग्रह माने गये हैं। कभी-कभी मंगल के संसर्ग से चन्द्रमा भी क्रूर ग्रह हो जाता है॥ ५२॥ गुरु, शुक्र, केतु और बुध- ये यथाक्रम से शुभग्रह हैं। सूर्यादि ग्रह उत्तरोत्तर क्रूर संज्ञक होते हैं ॥५३॥ क्रूरग्रह यदि क्रूर ग्रह की ही राशि में हों तो वे अत्यन्तक्रूर

होजाते हैं। परन्तु क्रूर ग्रह यदि शुभग्रह की राशि में हों तो उनकी क्रूरता शान्त होजाती है।। ५४।। गुरु
आदि शुभग्रह बुध से शुक्र तक यथा पूर्व बली होते हैं। शुक्र से केतु तथा केतु से गुरु क्रमशः उत्तरोत्तर
बलवान् होते हैं।। ५५।। इसी प्रकार क्रूर ग्रह क्रूर राशि में यथाक्रम से बलवान् होते हैं ।। ५६।। गुरु
आदि शुभग्रह शुभ राशि में अत्यधिक शुभप्रद होजाते हैं।। ५७।। कभी-कभी क्रूर ग्रह की राशि में गए
हुए शुभग्रह भी अपने शुभत्व को नष्ट कर देते हैं ।। ५८।। बुध प्रत्येक शुभ राशि में अथवा अपनी
उच्च राशि में शुभप्रद होता है तथा गुरु एवं शुक्र शुभ राशियों में अत्यन्त शुभप्रद होजाते हैं ।।५९।।
पूर्वोक्त पापग्रहों के योग से दोनों पूर्वोक्त योग भंग होजाते हैं ।।६०।। परन्तु दोनों योगों के भंग
होने में विशेष कर पाप-दृष्टि अपेक्षित है ।। ६१।। यदि शुभग्रहों की दृष्टि न हो, शनि, मंगल, चन्द्रमा
की दृष्टि हो अथवा पापग्रह का योग अथवा दृष्टि हो और शुभग्रह की भी दृष्टि हो तो पूर्ववत्
तारतम्य से फल का विचार करना चाहिए ।। ६२-६३।। इसी प्रकार उपपद तथा राहु के लक्षणों से
विचार करना चाहिए। इसी तरह सूर्य के अतिरिक्त अन्य पापग्रह के योग से भी विचार किया जाता है ।।
६४-६५।। इन परिग्रहों को देखते हुए रुद्रग्रह के आश्रय से शूलान्त पर्यन्त जातक की आयु होती है
।। ६६।। परन्तु शूल-दशा में मृत्यु न होकर, उसके अन्त में मृत्यु होती है ।। ६७।। अब इन दोनों योगों
के भंग होने के विषय में कहता हूँ। शुभग्रह का योग होने पर पापग्रह का योग दुर्बल होजाता है
एवं शुभदृष्टि होते हुए पापग्रह की दृष्टि असमर्थ होजाती है। शुभग्रह जनित योग-भंग के लिए
पापग्रह जनित योग होना आवश्यक है ।। ६८-७०।।

पापयोगो विनश्यति।। शुभदृष्टिकृते योगः पापयोगोऽपि भंजकः। शुभयोगे दृष्टिकृते
शुभयोगे दृष्टिकृते पापयोगोऽपि भंजकः। शुभदृष्टिकृते योगः पापयोगो विनश्यति।।
[illegible] पापमात्रस्य [illegible] वदेत् ।। ७२।।

द्वौ रुद्रौ पूर्ववक्ष्ये ऽहं यदि चैकत्र संस्थितौ। मिश्रमध्यमशूलर्क्षे शुभ मात्रे ऽन्तिमे मृतिः ॥७३॥ द्वयोः पापे च प्रथमे शूले मृत्युर्भवत्यपि। यद्येक रुद्रः पापी च द्वितीयः शुभ खेचरः ॥७४॥ मध्ये शूले मृतिर्विप्र निर्विशंकं भविष्यति। शुभग्रहद्वयं विप्र एकत्र यदि तिष्ठति ॥७५॥ अंतशूले मृतिर्ज्ञेया शूलिना भाषितं पुरा। एवं भेदानुभेदेन विख्यात् सर्वत्र बुद्धिमान् ॥७६॥ शूलक्षेत्रे च द्वौ रुद्रौ यदि पापोऽथवा शुभः। मिश्रग्रहोऽथ वा विप्र चिंतयेद्बलवत्तरः ॥७७॥ दीर्घायुरायु योगेन भंगाभावे द्विजोत्तम। मृत्युः शूल दशायां च पापयोगं विनारवि ॥७८॥ क्रूराश्च येषु क्षेत्रेषु शुभानाश्रयमेषु च। निर्माणमितरेषां तु शूलर्क्षे निर्दिशेदयम् ॥७९॥ शुभानामत्र पक्षे तु तथा क्रूराश्रयेषु च। तस्मिन् जातक शूलर्क्षे मृतिं ब्रूयान्न संशयः ॥८०॥ यच्च प्राणि रुद्र योगे यत्किंचिन्न्यूनता द्विज। तर्हि रुद्राश्रयं तच्च त्रिधा न परतोऽपि च ॥८१॥ रुद्राश्रयेऽपि चायुर्दा समाप्तिर्भवति ध्रुवम्। प्रायेण चिन्तयेद्विप्र पूर्वापर प्रयत्नतः ॥८२॥ यद्बाह्य प्राणि रुद्रस्य योगे पूर्णे भवत्यपि। रुद्रशूल परत्वेन आयुर्दाय समाप्तये ॥८३॥ रुद्राश्रयेण प्रायेण शूलमेकद्वयं त्रयम् उल्लंघनं कृतं विप्र यदि योग विशेषता ॥८४॥ तर्हि रुद्राश्रयेणैवं प्रायेणायुर्भवेद् ध्रुवम्। तावद्बलेन कथनं जीवनं जातकस्य च ॥८५॥ इत्युक्तं च प्रयाणे च पूर्वं रुद्राश्रयाद्द्विज। आयुर्योगसमाप्तिश्च कष्टयोगादि कारकम् ॥८६॥ रुद्राश्रयायुष्येवं च निरुक्तं चायुषि द्विज। किञ्चिद्विशेषरूपं च तवाग्रे दर्शयामि च ॥८७॥ मेषलग्ने विशेषेण आयुरुद्राश्रयांतके। कुष्ठरोगादि कुर्वीत पूर्णायुर्न समाप्यते ॥८८॥ इन्द्रराशौ स्थितौ रुद्रौ प्राणी गौणद्वये ऽपि वा। रुद्राश्रये तदन्ते वा आयुर्दायं भवत्यपि ॥८९॥ आयुर्वा योग भेदेन प्रथमे मध्यमोत्तमे। दर्शयामि तथाग्रे च कथां शंभुप्रचोदिताम् ॥९०॥

टीका॥ शुभ ग्रह का योग अथवा दृष्टि संबंध होने से पापयोग भङ्ग हो जाता है ॥७२॥ केवल पापयोग में दृष्टिमात्र ही हो तो प्रथम शूल में ही मृत्यु होजाती है ॥७२॥ पूर्वो

-क्त दोनों रुद्र यदि एक ही स्थान में हों तो मध्यम शूल में मृत्यु होती है ॥७३॥ यदि एक शूल पापी हो तथा दूसरा शुभ हो तो मध्य शूल में मृत्यु होती है ॥७४॥ यदि दो शुभग्रह एकसाथ हों, तो तीसरे शूल में मृत्यु होती है; इस प्रकार भेदानुभेद से सर्वत्र अन्तर समझ लेना चाहिए ॥७५-७६॥ यह विचार करना आवश्यक है कि यदि शूल के क्षेत्र में दोनों रुद्र हों तो वे पापी हैं, शुभ हैं अथवा मिश्र प्रभाव वाले हैं तथा उनमें कौन सा बलवान् है ॥७७-७८॥ हे द्विजश्रेष्ठ! दीर्घायु योग भंग होने के अभाव में, सूर्य के अतिरिक्त अन्य पापग्रहों का योग होने पर शूल-दशा में मृत्यु होती है ॥७८॥ क्रूर ग्रह जिस राशि में शुभग्रह के आश्रित हों तो उस पर विचार करके ही यह निर्णय अन्य ग्रहों के शूल के सम्बन्ध में कहना चाहिए ॥७९॥ शुभग्रहों के पक्ष (परवबारा) में, क्रूर ग्रहों के आश्रय में शूल-नक्षत्र में जातक की मृत्यु होती है ॥८०॥ यदि निर्बल रुद्र के योग में कुछ न्यूनता हो तो रुद्राश्रय के द्वारा मृत्यु का विचार करना चाहिए ॥८१॥ रुद्राश्रय में भी आयु की समाप्ति होती है, अतः सब बातों पर सावधानी से विचार करना उचित है ॥८२॥ यदि बाह्य प्राणीरुद्र के योग में आयु पूर्ण होती हो तो रुद्र शूलान्त आयु समझनी चाहिए ॥८३॥ रुद्राश्रय से प्रायः एक, दो तथा तीसरे शूल का उल्लंघन योग विशेष रूप से कहा गया है ॥८४॥ अतः रुद्राश्रय से आयु प्रमाण का हिसाब लगाकर उतने ही वर्षों तक उसका जीवन कहना चाहिए ॥८५॥ रुद्राश्रय योगों के सम्बन्ध में कहा गया। आयु योग की समाप्ति कष्ट योगादि कारक होती है ॥८६॥ रुद्राश्रय योग के सम्बन्ध में अब कुछ विशेष रूप से कहता हूँ ॥८७॥ मेष लग्न में रुद्राश्रयांत में कुष्ठ आदि रोग होता है तथा जातक पूर्णायु का भोग नहीं कर पाता ॥८८॥ मिथुन राशि में रुद्र स्थित हो तो रुद्राश्रय में अथवा उसके अन्त में आयु की समाप्ति होती है ॥८९॥ कर्क में जो अल्पायु, मध्यमायु तथा दीर्घायु योग

भृ० सं० ११३०

भा० टी०

बताये गये हैं। अब उनके सम्बन्ध में सुनो ॥ ६०॥

स्वल्पायुः प्रथमे शूले मध्यमायुर्द्वितीयके। दीर्घायुश्च तृतीयान्ते शूले च निधनं भवेत् ॥ ६१॥ ततो फल विशेषार्थं माहेश्वर ग्रहं द्विज। लक्षयन्ति तवाग्रे च तस्मादायुर्विनिश्चितम् ॥ ६२॥ चित्तपेत्कारके लग्ने ह्यष्टमेशो महेश्वरः। अथैवान्य प्रकारेण माहेश्वरं वदाम्यहम् ॥ ६३॥ कारके तुंग राशिस्थे स ग्रहो बलवत्तरः। रिष्फरन्ध्राधिपोर्मध्ये सोऽपि माहेश्वरो ग्रहः ॥ ६४॥ कारकाच्च ग्रहा भावे नाथो माहेश्वरो भवेत्। रिष्फरन्ध्राधिपौ विप्र बले सामान्यतां यदि ॥ ६५॥ द्वयं माहेश्वरं याता यथा रुद्रग्रहो द्वयम्। ताभ्यां च निर्णयार्थाय प्रकारान्ये वदाम्यहम् ॥ ६६॥ स्वकारकस्य योगश्चे द्राहु केतु रवीन्विना। माहेश्वरो भवत्येव विकल्पेन द्विजोत्तम ॥ ६७॥ कारकस्याष्टमे पापग्रहो माहेश्वरो भवेत्। रविचन्द्रौ च चान्द्रिश्च गुरुः शुक्र शनिस्तमः ॥ ६८॥ शिखिना गणनायांच यः षष्ठः कारकग्रहात्। सोऽपि माहेश्वरो ज्ञेयो नवभाग समुच्चयात् ॥ ६९॥

टीका॥ अल्पायु हो तो प्रथम शूल में, मध्यमायु हो तो द्वितीय शूल में एवं दीर्घायु हो तो तृतीय शूलान्त तक आयु होती है॥ ६१॥ हे द्विज! अब मैं ग्रह निर्णय के विषय में कहता हूँ, वह सुनो ॥ ६२॥ आत्मकारक से अष्टमेश महेश्वर ग्रह होता है। महेश्वर ग्रह के ज्ञान का अन्य प्रकार इस भाँति है कि आत्मकारक अपनी उच्चराशि में हो तो आत्मकारक से बारहवें तथा छठे भाव के स्वामियों में जो बलवान् हो वही महेश्वर ग्रह होता है॥ ६३-६५॥ यदि दोनों समान-बली हों तो दोनों ही माहेश्वर (मारक) होते हैं ॥ ६६॥ यदि आत्मकारक के साथ, सूर्य से रहित राहु अथवा केतु हों अथवा आत्मकारक से आठवें भाव में राहु-केतु हों, तो कारक से छठे भाव का स्वामी, सूर्य, चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र, शनि और केतु में से जो भी छठे हो, वही मारक होगा ॥ ६७-६९॥ इति॥

अथ ब्रह्मग्रह विचारम्॥ माहेश्वर ग्रहस्यापि ब्रह्मसाहित्यकेन च। ततो ब्रह्मग्रहं वक्ष्ये विशेषेण फलाय वै॥१॥ लग्नाद्वा सप्तमाद्वापि रिपुरंध्रव्ययाधिपा:। एतेषु बलवान्विप्र मेषादि विषमस्थिते ॥२॥ लग्न सप्तमयोर्मध्ये राशेश्च बलवान्भवेत्। उच्चैर पृष्ठभागाद्य संयोगो विद्यमानत:॥३॥ एतद् गुणत्रया-द् युक्त: सोऽपि ब्रह्मा ग्रह: स्मृत:। लग्नस्य पृष्ठभागं च द्यूनाल्लग्नावधिर्द्विज ॥४॥ सप्तमस्य पृष्ठ भागं षट् कलग्नादिकं द्विज। बलवान्विषमस्थोऽपि ब्रह्मा खेट: स उच्यते ॥५॥ ब्रह्मणा लक्षणाक्रांते बलवा-न्वापि पातयो:। शनिराहु रयो केतुर्यदि षष्ठो ग्रहो द्विज ॥६॥ रव्यादि गणनायां च शन्यादौ तृतीयोग्रह:। स्थानात्षष्ठराशिगे च षष्ठराश्याधिपो ऽथवा ॥७॥ सोऽपि ब्रह्मग्रहो ज्ञेयो निर्विशंकं द्विजोत्तम। बहुना ब्रह्मणाक्रांते को ग्रहो ग्राह्यमाणक:॥८॥ संदेहे निर्णयं चात्र तवाग्रे कथयामि च। द्विग्यादिक: ग्रहाणां च योगो ब्रह्मेति लक्षित: ॥९॥ योग: स्वजातियोग्राह्य: कारकं याति यो ग्रह:। बहूनामधिको भाम, सोऽपि ब्रह्म ग्रहोच्यते ॥१०॥ राहु र्ब्रह्मत्वयोगेन अधिकारी यदा भवेत्। विपरीतं विजानीयात्सर्वेषु न्यून भागकम् ॥११॥ इत्येक पापे पूर्वोक्तं ब्रह्मणा ग्रहकारकात्। रन्ध्राधीशो ऽष्टमस्थोवा जातप्राणैश्च वाक्यत:॥ ॥१२॥ द्वौ ब्रह्मा विपरीतार्थे ह्यथवा बहु ब्रह्मणा। सामान्य भागान्तरे हि कतमो ग्राह्य माणक:॥१३॥ सर्वे भाग समानास्तु अग्रहात्सग्रहो बली। इति न्यायेन विज्ञेयं बलवान् ब्रह्मणोच्यते ॥१४॥ ब्रह्मत्वेन प्रधानेन ब्रह्म-कार्यं करोत्यपि। स च ब्रह्मग्रहो ग्राह्य: पुरा शम्भु प्रचोदित:॥१५॥

टीका॥ माहेश्वरग्रह की भाँति ही ब्रह्मग्रह की भी परिचर्या आवश्यक है, अत: अब मैं ब्रह्मग्रह के विचार के विषय में कहता हूँ॥१॥ लग्न तथा सप्तम भाव – इन दोनों में जो बलवान् हो, उससे छठे, आठवें तथा बारहवें भाव के स्वामियों में जो बलवान् हो, वह यदि मेषादि विषम-राशियों में हो और लग्न अथवा सप्तमभाव के पृष्ठ भाग में उक्त तीनों गुणों से युक्त हो, तो

भा० टी०

उसे 'ब्रह्मग्रह' समझना चाहिए ॥ २-३ ॥ सप्तम से लग्न पर्यन्त ६ भाव लग्न के पृष्ठभाग होते हैं तथा लग्न से सप्तम भाव के भीतर के भाव सप्तम भाव के पृष्ठ भाग होते हैं ॥ ४-५ ॥ यदि शनि, राहु अथवा केतु ब्रह्म ग्रह के लक्षण से युक्त हों तो इनमें जो बलवान् हो, उससे षष्ठेश ब्रह्मा होगा ॥ ६ ॥ सूर्यादि की गणना से शनि आदि, शनि से तीसरा ग्रह, अपने स्थान से छठा ग्रह अथवा षष्ठेश - ये सब ब्रह्मा होते हैं। यदि अनेक ग्रह ब्रह्मा के लक्षण वाले हों तो वही ग्रह ब्रह्मा माना जाएगा, जो सबसे अधिक अंशों वाला हो ॥ ७-१० ॥ यदि राहु ब्रह्म पद का अधिकारी हो तो वहाँ विपरीत समझना चाहिए अर्थात् उस स्थिति में न्यूनांश वाला ग्रह ही ब्रह्मा होगा ॥ ११ ॥ अथवा आत्मकारक से अष्टमस्थ ग्रह अथवा अष्टमेश ब्रह्मा होता है ॥ १२ ॥ यदि पूर्वोक्त लक्षणों से युक्त दो ब्रह्मा हों तथा अंशों में सामान्य न्यूनाधिकता हो अथवा सभी ग्रह समान अंशों वाले हों तो उस स्थिति में जो ग्रह किसी अन्य ग्रह से युक्त हो, वही बलवान् होगा तथा उसी को ब्रह्मा मानना चाहिए ॥ १३-१५ ॥

अधुना सम्प्रवक्ष्यामि ब्रह्ममाहेश्वरस्य च। विशेषेण फलं सम्यक्तवाग्रे द्विजनंदन ॥ ब्रह्मग्रहाश्रितेशस्य दशादिः परिचिंतयेत्। माहेश्वरर्क्ष पर्यन्तं जातकस्यायुषि द्विज ॥ १६-१७ ॥ तत्तद्राशित्रिकोणेषु राशिरंतर्गते स्थितिः। चराच्च स्थिर पर्यन्त दशायां चिन्तयेद् बुधः ॥ १८ ॥ तथा महादशायां च आयुर्दायं विलोकयेत्। विंशोत्तर्यादिकं चैव यथान्यायेषु योजयेत् ॥ १९ ॥ माहेश्वरस्य यो राशि रष्टमेशाश्रयी द्विज, तत्तद्राशि त्रिकोणेषु राशावन्तर्गते स्थितिः ॥ २० ॥ अत्राब्द इति निर्देशात्तत्तद्राशि दशा क्रमः। अब्दो द्वादश धाभागे अंतरैकैकराशि च ॥ २१ ॥ षष्ठाष्टमेशौ भवतो मारकावष्टमेश्वरः। प्रायेण मारको राशि दशास्तत्र विशेषतः ॥ २२ ॥ षष्ठभे पापभूयिष्ठे षष्ठेशो मुख्य मारकः। षष्ठात् त्रिकोणगो वाऽपि मुख्यमारक इष्यते ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ षष्ठात् त्रिकोणस्य पुनर्दौर्बल्य विषये भवेत् ॥ २४ ॥ षष्ठे

बलयुते तस्य त्रिकोणे मृतिमादिशेत। षष्ठेशश्चेद्बलाढ्य: स्यात् तत्त्रिकोणे मृतिं वदेत् ॥२५॥ व्यवस्थेयं समस्तापि कारकादिदशास्वपि। बलिन: शुक्रशशिनोर्ग्राह्यं षष्ठाष्टमादिकम् ॥२६॥ इति॥

टीका॥ हे द्विजनन्दन! अब मैं शूल तथा माहेश्वर ग्रहों के फल के विषय में विशेष रूप से कहता हूँ॥ शूलग्रहाश्रित राशि की दशा बनायें तथा माहेश्वर ग्रह की राशि की दशा बनायें॥ शूल ग्रह की राशि दशा से माहेश्वर ग्रह की राशि पर्यन्त जातक की आयु होगी - यह समझना चाहिए ॥१६-१७॥ दशाओं की त्रिकोण राशियों की अन्तर्दशा में जातक की मृत्यु होती है। अत: चर से स्थिर राशि की दशा पर्यन्त यह विचार करना चाहिए॥१८॥ इसके अतिरिक्त विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा में भी आयु का विचार करना चाहिए॥१९॥ अथवा माहेश्वर ग्रह से अष्टमेश के आश्रयीभूत जो राशि हो, उस राशि से त्रिकोण राशि की अन्तर्दशा में जातक की मृत्यु होती है॥२०॥ यहाँ पर वर्ष दशाक्रम से लेना चाहिए तथा वर्ष में १२ का भाग देने से अन्तर्दशा का वर्ष होता है॥२१॥ षष्ठेश अष्टमेश मारक होते हैं, परन्तु प्राय: अष्टमेश ही मुख्य मारक होता है॥२२॥ यदि षष्ठ भाव में अधिक पापग्रह हों तो षष्ठेश ही मुख्य मारक होता है अथवा षष्ठेश से त्रिकोण राशि मारक होती है॥२३॥ यदि मध्यमायु हो तो छठी अथवा आठवीं दशा में मृत्यु होती है। यदि दीर्घायु और अल्पायु हो तो छठे से त्रिकोण की दशा में मृत्यु होगी॥२४॥ यदि छठा स्थान बली हो तो उसके त्रिकोण में मृत्यु होती है और यदि षष्ठेश बलवान् हो तो उसके त्रिकोण में मृत्यु होती है॥२५॥ यह व्यवस्था सभी कारक दशाओं में होती है। यदि शुक्र, चन्द्रमा बली हों तो छठे-आठवें को लेना चाहिए॥२६॥ इति॥

अथ मारक भेद कथनम्॥ त्रिविधाश्चायुषो योगा: स्वल्पायुर्मध्यमोत्तमा:। द्वात्रिं-शात्पूर्वमल्पायुर्मध्यमायुस्ततो भवेत्॥ चतु: षष्ठ्या: पुरस्तात्तु ततो दीर्घमुदाहृतम्॥१॥ उत्तमायु: शतादूर्ध्वं

ज्ञातव्यं मुनिसत्तम। चतुर्विंशति वर्षान्तमायुर्ज्ञातुं न शक्यते ॥२॥ जपहोम चिकित्साद्यैर्बालरक्षां तु कारयेत्। पितृदोषैर्मृताः केचित्केचिन्मातृग्रहैरपि ॥३॥ अपरे ऽरिष्ट योगाच्च त्रिविधा बालमृत्यवः। अल्पायुर्योग जातस्य विपत्तारां मृतिं वदेत् ॥४॥ जातस्य मध्यमायुष्ये प्रत्यरौ च मृतिर्भवेत्। दीर्घायुर्योग जातानां वधभेतु मृतिर्भवेत् ॥५॥ अष्टमर्क्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमस्थानं मारकस्थानमुच्यते ॥६॥ महामारक संज्ञौ तौ मांदि केतू इति स्मृतौ। जाया कुटुम्बकाधीशौ मारकावष्टमेश्वरौ ॥७॥ प्रायेण मारको राशि दशास्तत्रा विशेषतः। षष्ठभे पापभूयिष्ठे षष्ठेशो मुख्यमारकः ॥८॥ षष्ठ त्रिकोणगो वापि मुख्यकारक इष्यते। मध्यायुषि मृतिः षष्ठदशायामष्टमस्य वा ॥९॥ षष्ठात्त्रिकोणस्य पुनर्दीर्घाल्प विधया भवेत्। षष्ठे बलयुते तस्य त्रिकोणे मृतिमादिशेत् ॥१०॥ षष्ठेशश्चेद्बलाढ्यः स्यात्त्रिकोणे मृतिं वदेत्। एव स्थेयं समस्तापि कारकादि दशास्वपि ॥११॥ मारकेश दशाकाले मारकस्थस्य पापिनः। पाके पापयुजां पाके संभवे निधनं भवेत् ॥१२॥ असंभवे व्ययाधीशादशायां मरणं नृणाम्। अभावे व्ययभावेश सम्बंधिग्रहभुक्तिषु ॥ ॥१३॥ तदभावेऽष्टमेशस्य दशायां निधनं पुनः। मंदश्चेत्पापसंयुक्तो मारकग्रह योगतः ॥१४॥ तिरस्कृत्यग्रहान्सर्वान्निहंता पापकृच्छनिः। मारकग्रह सम्बन्धी पापकर्त्ता शनिस्तदा। तिरस्कृत्य ग्रहान्सर्वान्निहंता भवति ध्रुवम् ॥१५॥ एतद्दशांत भुक्त्यादौ विचार्यैव मृतिं वदेत्। षष्ठद्रेष्काणपश्चैव तथा वैनाशिकाधिपः ॥१६॥ विपत्तारा प्रत्यरीशौ वधभेशस्तथैव च। आद्यंतपौ च विज्ञेयौ चन्द्राक्रांतग्रहात्तथा ॥१७॥ दशाक्षिपेषु कालेषु मारको मरणप्रदः। दुष्टतारापतेः पाके निर्याणं कथितं बुधैः ॥१८॥

टीका॥ आयु योग तीन प्रकार के होते हैं। वे १-अल्पायु, २-मध्यमायु तथा ३-उत्तमायु अथवा दीर्घायु के नाम से प्रसिद्ध हैं। बत्तीस वर्ष तक की आयु अल्पायु कही जाती है। चौंसठ वर्ष तक की अवस्था को मध्यमायु कहते हैं। इसके बाद दीर्घायु होती है ॥१॥ सौ वर्ष तक दीर्घायु

और उसके ऊपर उत्तमायु होती है। जन्म से २४ वर्ष तक आयु का ज्ञान नहीं होता अर्थात् उक्त अवधि तक आयु के सम्बन्ध में विचार करके उसीपर निर्भर नहीं रहना चाहिए ॥२॥ चौबीस वर्ष की आयु तक जप, होम, चिकित्सा आदि उपायों से बालक की जीवन-रक्षा करनी चाहिए। क्योंकि उक्त आयु (अर्थात् २४ वर्ष के भीतर) की अवधिमें कोई पिता के ग्रहों के कारण, कोई माता के ग्रह के कारण और कोई अरिष्ट योग के कारणभीमर सकता है। इस प्रकार तीन तरह से बालकों की मृत्यु होती है। जिनकी अल्पा-यु होती है, उनकी 'विपत्तारा' की दशामें, जिनकी मध्यमायु का योग होता है, उनकी 'प्रत्यरि तारा' की दशा में तथा जिनका दीर्घायु योग हो, उनकी 'वध तारा' की दशा में मृत्यु होती है ॥३-५॥ जन्मलग्न से तीसरा तथा आठवाँ स्थान आयु का होता है तथा दूसरा एवं सातवाँ स्थान मारक होता है ॥६॥ मांदि और केतु महामारक होते हैं तथा सप्तम, द्वितीय एवं अष्टमभाव के स्वामी मारकेश होते हैं ॥७॥ प्रायः इन स्थानों की राशियाँ मारक होती हैं। छठे स्थान में अधिक पापग्रह हों तो षष्ठेश मुख्य मारक होता है। छठे से त्रिकोण भी मारक होता है। मध्यायु में छठी अथवा आठवीं दशा में मृत्यु होती है। दीर्घायु में षष्ठ से त्रिकोण की दशा में मृत्यु होती है। षष्ठभाव अथवा षष्ठेश बली हो तो उसके त्रिकोण की दशा में मृत्यु होती है ॥८-१०॥ यह व्यवस्था सम्पूर्ण मारक दशा के लिए है॥११॥ मारकेश की दशा में, मारक स्थान स्थित पापग्रह की अन्तर्दशा में मृत्यु होना संभव होता है ॥१२॥ यदि इनमें असंभव हो तो व्ययेश की दशा में मृत्यु होती है। इसके अभाव में व्ययेश के सम्बन्धीग्रह के अन्तर में मृत्यु हो सकती है॥१३॥ इसके अभाव में अष्टमेश की दशा में मृत्यु होगी। यदि शनि पापग्रह से युक्त हो और वह मारकेश के साथ योग करता हो तो सभी ग्रहों को छोड़कर वही मारक बन जाता है॥१४-१५॥ छठे द्रेष्काण (लग्न से बाईसवें द्रेष्काण) का स्वामी तथा तेईसवें नक्षत्र का स्वामी

विपत्तारा, प्रत्यरि तारा, वध तारा का स्वामी, चन्द्र राशि से द्वितीय, द्वादश का स्वामी — ये सब अपने - अपने दशाकाल में मारक होते हैं अथवा पूर्वोक्त दुष्ट ताराओं के स्वामी की दशा में जातक की मृत्यु होती है॥ १६ - १८॥

मारक ग्रहाश्रितो राशिर्मारकस्वामिनोऽथवा। तास्वां महादशाकाले विंशोत्तर्यां: स्थिरादिक: ॥१९॥ पापे मृत्यु विजानीयान्निर्विशंकं द्विजोत्तम। मारका बहव: खेटा यदि वीर्य समन्विता: ॥२०॥ तत्तद्दशान्तरे विप्र रोग कष्टादि संभव: । षष्ठाधिपदशायां च निधनं भवति ध्रुवम् ॥२१॥ न्यूनातिरिक्त भेदेन बहुखेटास्तु मारका: । दुर्बलाश्रयराशीशदशा स्वल्पार्तिदा भवेत् ॥२२॥ प्रबलस्य दशायां च महारोगार्त्तिमृत्युवत्। भयशोक मृताद्भीतिस्तस्कराग्निभयं भवेत् ॥२३॥ मारकस्य दशायां च महत्या निधनाश्रयी। भूतामंतर्दशामाह तवाग्रे कथयामि भो: ॥ २४॥ मारकग्रहाश्रयी भूत महापाके विचिंतयेत। कारकाच्च विलग्नाद्वा सप्तमाद्वा द्वितीयकम् ॥२५॥ षष्ठाष्टरिष्फनाथान्तमपहाराष्टके मृति: । तेषामंतर्दशाधीशास्तेषां मध्ये बलाढ्यक: ॥ २६॥ तदीयांतर्दशा काले निधनं भवति ध्रुवम्। अपरा पाप कालेतु रोग दु:खार्तिवान्द्विज ॥२७॥ इति ॥

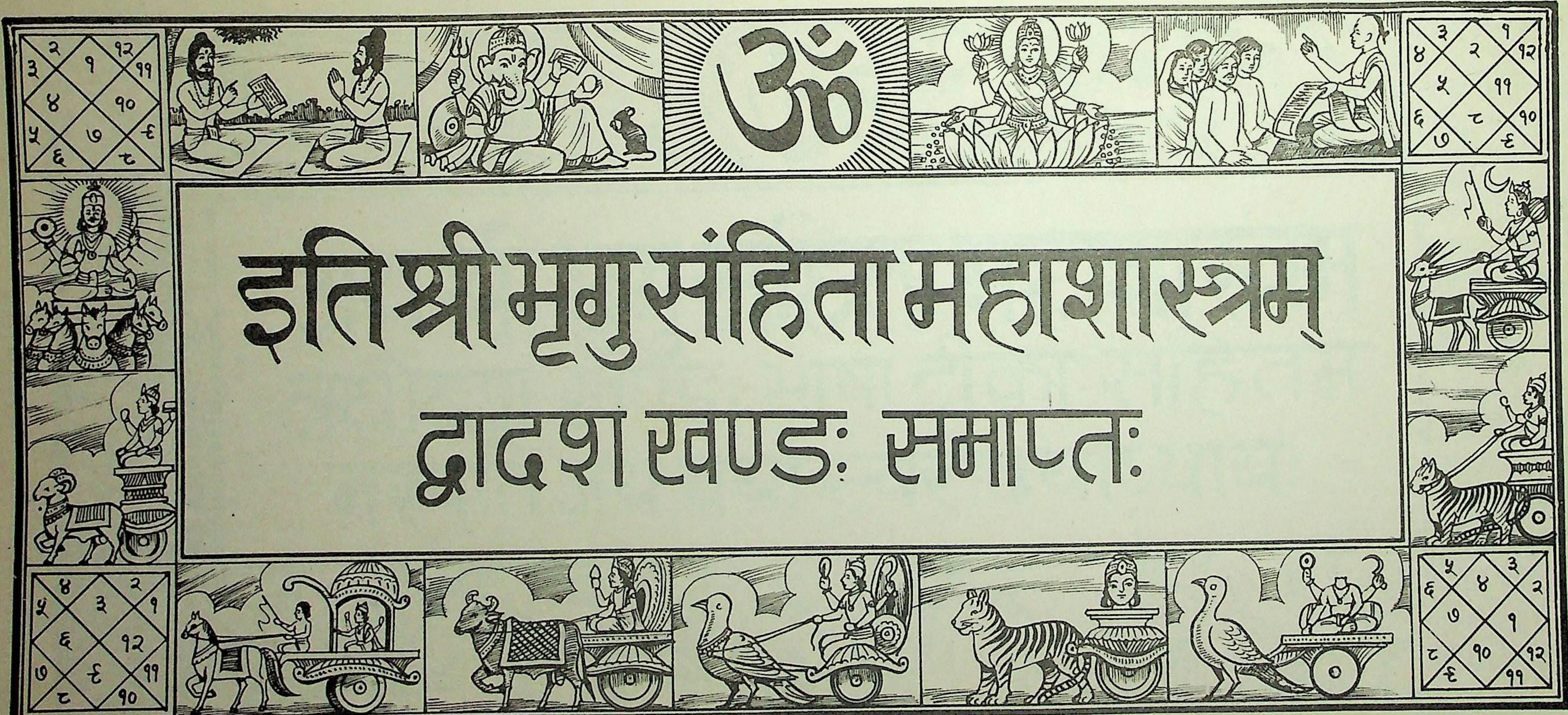
टीका ॥ मारकेश को आश्रित राशि अथवा मारकेश जिस भाव में बैठा हो, उस राशि की महादशा में, पापग्रह के अन्तर में विंशोत्तरी के अनुसार मृत्यु होती है ॥१९॥ यदि अनेक ग्रह बलवान् हों तो उनमें जो ग्रह सबसे बली होता है, वही मारक होता है, परन्तु उसकी दशा-अन्तरदशा के समय कष्टादि होते हैं तथा षष्ठेश की दशा में ही जातक की मृत्यु होती है ॥ २०-२१॥ न्यूनातिरिक्त अधिक मारक हों तो दुर्बल राशीश की दशा में अल्प कष्ट होता है। प्रबल की दशा में महारोग कष्ट तथा मृत्यु होती है एवं भय, शोक, मृत्यु-भय, चोर-भय, अग्नि-भय आदि होते हैं ॥२२-२४॥ मारकेश की आश्रित राशि के दशा-अन्तर्दशा काल में उपर्युक्त सभी बातों का विचार करना चाहिए। कारक से अथवा लग्न से,

और सप्तम से दूसरे, छठे, आठवें तथा बारहवें — इन आठों के स्वामियों की दशा आदि में मृत्यु कहनी चाहिए। इनमें भी बलवान् अन्तर्दशेश के समय में मृत्यु होती है तथा अन्य ग्रहों की अन्तर्दशा आदि में रोग, दुःख आदि होते हैं ॥ २५-२७ ॥ इति ॥

अथ अपमृत्यु काल ज्ञानम् ॥ शताधिके च जातोऽस्मिन्वधिरः षष्ठि संयुतो। कर्कि वृश्चिक मीनांशे तद्राशीशांशके तथा ॥ १ ॥ पातकेत्वोश्च शत्रुक्षगतयो रंशकेपुनः। एकादित्रिंशतैर्यावत्क्रमात्तास्तु सुभाजिताः ॥ २ ॥ आकाशपूर्णधृतयो निःशेषं लब्ध संख्यके। सदोषेऽतराशेतु जातस्यैतेऽपमृत्यवः ॥ ३ ॥

टीका ॥ कर्क, वृश्चिक और मीन के अंश में, इनके स्वामियों अर्थात् चन्द्र, मंगल, गुरु के नवांश में, पात में अथवा उच्च, शत्रु राशि में स्थित ग्रह के अंश में जो संख्या हो, उससे १ से लेकर ३०० तक, १८०० में भाग दें, जिससे निःशेष हो। जो लब्धि प्राप्त हो, वह यदि सदोष अर्थात् पापग्रह से युक्त हो तो जातक की लब्धि तुल्य वर्ष में अपमृत्यु होती है ॥ १-३ ॥ इति ॥

॥ इति आयुनिर्णय एवं मारक प्रकरण खण्ड समाप्तम् ॥


इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
द्वादश खण्डः समाप्तः


ॐ
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
त्रयोदश खण्डः भाषा टीका सहितम्
नरपति जय चर्या स्वरोदयाध्यायः

ॐ

अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम् त्रयोदश खण्डः

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ नरपतिजयचर्या स्वरोदयः ॥ अव्यक्तमव्ययं शान्तं नितान्तं योगिनां प्रिय-
-म् । सर्वानन्द स्वरूपं यत्तद्वन्दे ब्रह्म सर्वगम् ॥१॥ विविधविबुधवन्द्यां भारतीं वन्दमानः । प्रचुर चतुरभावं दातु
कामां जनेभ्यः । नरपतिरिति लोके ख्यातनामाभिधास्ये । नरपतिजयचर्यानामकं शास्त्रमेतत् ॥२॥ श्रुत्वादौ
यामलान्सप्त तथा युद्ध जयार्णवम् । कौमारीं कौशलं चैव योगिनी जाल संचरम् ॥३॥ रक्षोघ्नं च त्रिमुण्डं च
स्वरसिंह स्वरार्णवम् । भूवलं भैरवं नाम पटलं स्वरभैरवम् ॥४॥ तन्त्रं रणाह्वयं ख्यातं सिद्धान्तं जयपद्धतिम्।
पुस्तकेन्द्रं च ढौकं च श्रीदर्श ज्यौतिषं तथा ॥५॥ मन्त्र यन्त्राण्यनेकानि कूटयुद्धानि यानि च। तन्त्र युक्तिं च
विज्ञाय विज्ञानं बडवानले ॥६॥ एतेषां सर्वशास्त्राणां दृष्ट्वा सारो ऽहमात्मना । सारोद्धारं भणिष्यामि सर्वसत्त्वा-
नुकम्पया ॥७॥ पत्त्यश्वगज भूपालैः सम्पूर्णा यदि वाहिनी। तथापि भङ्गमायाति नृपो हीन स्वरोदयी॥८॥
तावत्तरन्ति ते धीरा दोर्भ्यामाहव सागरम् । यावत्पतन्ति नो चक्रे स्वरास्ते बडवानले ॥ ९॥ कथंचिद्विज-
-यी युद्धे स्वरज्ञेन विना नृपः । घुणवर्णोपमं तत्तु यथांध चटकग्रहः ॥१०॥ यस्यैको ऽपि गृहे नास्ति
स्वरशास्त्रस्य पारगः । रम्भास्तम्भोपमं राज्यं निश्चितं तस्य भूपतेः ॥११॥ स्वर शास्त्रे सदाभ्यासी सत्य

-वादी जितेन्द्रियः। तस्योदेशस्य यः कर्त्ता जयश्रीस्तं नृपं भजेत ॥ १२॥ दशैकेन शतं तैश्च सहस्रं शतसंख्य-
या। स्वरोदयबली राजा दशघ्नं हंति लीलया ॥ १३॥ पुष्पैरपि न योद्धव्यं यावद्दीन स्वरोदयः। स्वरोदयबले
प्राप्ते योद्धव्यं शास्त्रकोटिभिः ॥ १४॥ स्वरज्ञः शकुनज्ञश्च दैवज्ञो मन्त्रपारगः। केरलीवित्तया राज्ञां कीर्त्तितं
रत्नपंचकम् ॥ १५॥ स्वरचक्राणि चक्राणि भूबलानि बलानि च। ज्यौतिषं शकुनं चैव षडंगानिवदाम्यहम्
॥१६॥ यामलेषु च सर्वेषु यान्युक्तानि स्वरोदये। विंशतिः स्वरचक्राणि वक्ष्येऽहं तानि चाधुना ॥ १७॥
मात्रा वर्णो ग्रहो जीवो राशिर्भं पिण्डयोगकौ। द्वादशाब्दं तथाब्दं च अब्दार्धमृतु मासिकम् ॥ १८॥ पक्षाहर्ना-
डिकं चक्रं तिथिवारर्क्षयोगकम्। दिशि तत्त्वावधानं च दिन फलं च वदाम्यहम् ॥ १९॥

भावार्थ ॥ अब राजाओं को विजय प्रदान कराने वाले 'नरपतिजय-चर्या' नामक स्वरोदय शास्त्र का वर्णन किया जाता है। इस शास्त्र का ज्ञाता दैवज्ञ जिस राजा के राष्ट्र में नहीं होता, उसे युद्ध में विजय पाना कठिन होता है। सभी विषयों के २० प्रकार के स्वर-चक्र कहे गए हैं, जिनका इस शास्त्र में उल्लेख किया गया है ॥ १-१९॥

पूर्वमुक्तेषु शास्त्रेषु मया ज्ञातानि यानि च। चतुरशीति चक्राणि तेषां नामानि
वच्म्यहम् ॥२०॥ एकाशीति पदं चक्रं शतपदं नवांशकम्। छत्रं सिंहासनं चक्रं कूर्मं पञ्चविधं त्विदम् ॥
२१॥ भूदेश नगर क्षेत्रं गृह कूर्मं च पञ्चमम्। पद्मचक्रं फणीशाख्यं राहु कालानलं मतम् ॥ २२॥ सूर्यकाला-
नलं चक्रं चन्द्रकालानलं तथा। घोरकालानलं चक्रं शूलकालानलं मतम् ॥ २३॥ शशि सूर्य समायोगे चक्रं
कालानलं मतम्। संघट्टं सप्तमं ज्ञेयं सप्तकालानलानि च ॥ २४॥ तिथिर्वारं च नक्षत्रं त्रिधा चैव कुला-
कुलम्। कुम्भचक्रं द्विधा प्रोक्तं राशिनक्षत्र सम्भवम् ॥ २५॥ वर्ग प्रस्तारवेधं च त्रिधा तुंबुरुमेव च।
भूचरं खेचरं यान्यं नाडीचक्रं द्विधा मतम् ॥ २६॥ कालचक्रं फणिद्वंद्वं सूर्याख्यं चन्द्रजं तथा। कवि-

भा० टी० मू० सं० १९४०

भू० सं० ११७६

चक्रं द्विधा प्रोक्तं स्थानस्वाम्पृक्ष पूर्वकम् ॥ २७॥ खलकाख्यं द्विधा प्रोक्तं कृत्तिकास्थानभादिकम् । कोट चक्राष्टकं प्रोक्तं चतुरस्रादिभेदतः ॥ २८॥ गजमश्वं रथं व्यूहं कुन्तं खड्गं छुरिं धनुः । सौरिं सेवां नरं डिंभं पक्षिवर्गापवर्षणम् ॥ २९॥ सप्तरेखोद्भवं चक्रं पञ्चरेखेन्दुभास्करम् । त्रिविधं मातृकाचक्रं विज्ञेयं पृथेन तोरणे ॥ ३०॥ अहिलांगलबीजोपि वृषाख्यं सप्तनाडिकम् । चक्रं सांवत्सरस्थानं मासं चक्रं दिनाह्वयम् ॥ ३१॥ एतानि सर्व चक्राणि ज्ञात्वा युद्धं समाचरेत् । जयेदि न संदेहः शक्रतुल्यं च भूपतिम् ॥ ३२॥

भावार्थ ॥ पूर्वकालीन शास्त्रों में ८४ प्रकार के जो चक्र कहे गए हैं, उनके नामों का यहाँ उल्लेख किया गया है । इन सभी चक्रों का ज्ञान प्राप्त कर युद्ध करने वाला राजा विजयी होता है - इसमें सन्देह नहीं है ॥ २०-३२॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भूबलान्यभिधानतः । कविद्वन्द्वे तथा दुर्गे चतुरङ्गे महाहवे ॥ ३३॥ स्वरोदयैश्च चक्रैश्च शत्रुर्यत्र समो ऽधिकः । तत्र युद्धे बलं देयं भूबलैर्विजयार्थिनाम् ॥ ३४॥ तेषां नामान्यहं वक्ष्ये ख्याता ये ब्रह्मयामले । चतुरशीति संख्यानां यद्बलेन जयी रणे ॥ ३५॥ औड्री जालन्धरी पूर्णा कामा कोलैक वीरिका । शिलीन्ध्राश्च महामारी क्षेत्रपाली च वंशजा ॥ ३६॥ रुद्रकालानली प्रोक्ता कालेरवा निरामया । जयलक्ष्मीर्महालक्ष्मीर्जया विजयभैरवी ॥ ३७॥ बाला योगेश्वरी चण्डी माया भुंभुककर्त्तरी । शार्दूली सिंहिली तन्वी महामाया महेश्वरी ॥ ३८॥ देविकोटिः शिवा शक्तिर्धूम्रा माला वराटिका । त्रिमुण्डा मत्सरी धर्मामृत शिप्रा क्षयाक्षया ॥ ३९॥ दुर्मती प्रवरा गौरी काली नारहरी बला । खेचरी भूचरी गुह्या द्वादशी दृष्टिकेवला ॥ ४०॥ त्रैलोक्यविजया सौरी कराली वडवापरा । रौद्री च शिशुमातङ्गी चाभेद्या दहनी जिता ॥ ४१॥ बहुला नर्गभूमिश्च कपाली चानिलानला । चन्द्रार्कबिम्बभूमिश्च ग्रहराशि विलग्नगा ॥ ४२॥ राहुकालानली भूमिः स्वरभूमिर्द्विधा मता । रुद्रस्त्रि मासिकश्चैव राहुश्चाष्टविधस्तथा ॥ ४३॥ चन्द्रः सदाविधः

भा० टी०

सूर्यश्चतुर्धा योगिनी त्रिधा । कालचक्रं त्रिभेदं च तिथिनक्षत्रवारजम् ॥४४॥ इमानि भूबलान्यत्र ज्ञात्वा यः
प्रविशेद्रणे । अरयस्तस्य नश्यन्ति मेघा वातहता यथा ॥४५॥
भावार्थ॥ विजय प्राप्ति के इच्छुक राजा को औड्डी आदि नामों वाले भू-बल पर ध्यान
देने की आवश्यकता है ॥३४-४५॥
शत्रोः समाधिके नाम्नि स्वरैश्चक्रैश्च भूबलैः । स्थान सैन्याधिके शत्रौ बलविज्ञान
संपुते ॥४६॥ अभङ्गे चाप्य भेदे च असाध्ये दुर्जये रिपौ । जयोपायमहं वक्ष्ये मन्त्रयन्त्रादिकं बलम् ॥४७॥
रणाभिषेचनं दीक्षां रणार्चा रणकङ्कणम् । वीरपट्टं रणे पट्टं जयपट्टस्य बंधनम् ॥४८॥ मेखला कवचन्यासं
मुद्रा रक्षा च कञ्चुकम् । औषधं तिलकं तज्जा घुटिकाश्च कपर्दिका ॥४९॥ योगे घटित शस्त्राणि
शस्त्ररक्षां च मोटनम् । शस्त्रलेपाश्च विविधा बाणानां पिच्छबन्धनम् ॥५०॥ आसकं काहला ढक्का
मुरजं भस्मसाधनम् । मारणं मोहनं स्तम्भं विद्वेषोच्चाटनं वशम् ॥५१॥ पताका पिच्छकं यन्त्रं परविद्या
विनाशनम् । शान्तिकं निजसैन्यस्य कर्तव्यं जयकांक्षिभिः ॥५२॥ बलान्येतानि यो ज्ञात्वा संग्रामं कुरुते नरः
असाध्यस्तस्य नैवारित शक्रतुल्योऽपि भूपतिः ॥५३॥
भावार्थ॥ विजय-प्राप्ति के लिए मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र आदि के उपायों की जान
कारी प्राप्त करना आवश्यक है । स्व-सैन्य के सभी उपद्रवों के नाशक शान्ति-उपायों आदि के बलों को
जानकर युद्ध करने वाला मनुष्य इन्द्रतुल्य पराक्रमी राजा को भी परास्त कर देता है ॥४६-५३॥
गणितं व्यवहारं च होराज्ञानं परिस्फुटम् । त्रिस्कन्धं ज्योतिषं वक्ष्ये जयचर्यास्वरो-
दये ॥५४॥ ग्रहतिथ्याद्यानयनमुदयास्तौ च शीघ्रगौ । शत्रुमित्रसमाः खेटा राश्यधीशा बलाबलम् ॥५५॥
गोचरं च तथा वेधं दशास्वन्तर्दशा पुनः ॥५६॥
उच्चनीचादिकं ... दृष्टिस्थानानि यान्यपि ।

मू० सं० २४७०८

भा० टी०

वारफलं तथा सन्धिर्लत्ता वेधमुपग्रहम् । शुभाशुभ फलं वक्ष्ये तिथिधिष्ण्यगुणागुणम् ॥५७॥ चन्द्रतराबलं ज्ञेयं भद्रां चैव त्रिपुष्करम् । यमघण्टं यमदंष्ट्रं चक्रं चैवार्गलं तथा ॥५८॥ देवरक्षोनृणां भानि पार्श्वोर्ध्वाधोमुखानि च । बालं कुमारं तरुणं वृद्धमृत्युस्वरास्तथा ॥५९॥ कालवेलां तथा होरां यामार्धं कुलिकं तथा । वक्ष्ये वेधं च सिद्धं च शीघ्रं प्राणापहारिणीम् ॥६०॥ परिघं शूलधिष्ण्यं च वारयोगं च योगिनीम् । दिग्भद्रा कालपाशं च राहोरस्तं च भार्गवम् ॥६१॥ छायोत्पत्तिं त्रिधा वक्ष्ये त्रिषु सध्ये दिनाष्टगाम् । दिनमानं दिने भुक्तिं छायोदय प्रमाणकम् ॥६२॥ सिद्धछायात्रिषष्टिं च दुष्टभा सप्तविंशतिम् । लग्नोदयं स्वदेशीयं यंत्रतो लग्नसाधकम् ॥६३॥ लग्नमानं तथा होरा राशिदृक्कनवांशकम् । द्वादशांशं च त्रिंशांशमुदयास्तांश साधनम् ॥६४॥ लग्नाच्छुभाशुभं वक्ष्ये यात्रोद्वाहादिनिर्णयम् । देवतानां प्रतिष्ठां च दीक्षां यात्रा प्रवेशनम् ॥६५॥ वास्तुदीपार्थविन्यासो कालविंशोपकस्तथा । जलयोगोऽर्घकांडश्च वर्षमासाह निर्णयः ॥६६॥ तिथ्यादि: खेचराश्चन्द्रस्तत्कालोदयजः स्फुटम् । अवस्थानेष्टमुष्टिं च लूकभेदं वदाम्यहम् ॥६७॥ अङ्गस्पन्दानि सर्वाणि कालचिह्नानि यानि च । दुष्टारिष्टान्यहं वक्ष्ये तथा तेषां च शान्तिकम् ॥६८॥ दीपवत्तं विजानीयान्मोहान्धकार नाशनम् (२) ज्योतिषाङ्गमिदं सर्वं ये जानन्ति मनीषिणः (१) ॥६९॥ पोतकी पिङ्गला काको यक्षः शिवा क्रमेण च । पञ्चरत्नमिदं वक्ष्ये षष्ठाङ्गे शाकुने मते ॥७०॥

भावार्थ :- ज्योतिष शास्त्र के जिन अनेक भेदों का इन श्लोकों में उल्लेख किया गया है, उनका ज्ञान प्राप्त करके तदनुसार कार्य करना हितकर रहता है ॥५४-७०॥ इति शास्त्र संग्रहाध्यायः ॥

अथ मात्रास्वराऽध्यायः ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि ख्याता ये ब्रह्म यामले । मात्रादि भेद भिन्नानां स्वराणां षोडशोदयात् ॥१॥ मातृकायां पुरा प्रोक्ताः स्वरा षोडश संख्यया । तेषां द्वामन्तिमौ त्याज्यौ चत्वारश्च नपुंसकौ ॥२॥ शेषा दश स्वरास्तेषु स्यादेकैको द्विके द्विके । ज्ञेयास्तत्र

स्वरा आद्या ह्रस्वाः पञ्च स्वरोदये ॥३॥ लाभालाभं सुखं दुःखं जीवितं मरणं तथा । जयः पराजयश्चेति सर्वं ज्ञेयं स्वरोदये ॥४॥ स्वरादिमात्रिकोच्चारो मातृव्याप्तं जगत्त्रयम् । तस्मात्स्वरोद्भवं सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥५॥ अकाराद्याः स्वराः पञ्च ब्रह्माद्याः पञ्चदेवताः । निवृत्त्याद्याः कलाः पञ्च इच्छाद्याः शक्तिपञ्चकम् ॥६॥ मायाद्याश्चक्रभेदाश्च धराद्यं भूतपंचकम् । शब्दादिविषयास्ते च कामबाणा इतीरिताः ॥७॥ पिंडं पदं तथा रूपं रूपातीतं निरंजनम् । स्वरभेदस्थितं ज्ञानं ज्ञायते गुरुतः सदा ॥८॥ अकाराद्याः स्वराः पञ्च तेषामष्टविधास्त्वमी । मात्रा वर्णो ग्रहो जीवो राशिर्भं पिंडयोगकौ ॥९॥ प्रसुप्तो बुध्यते येन येनागच्छति शब्दितः । तन्नामाद्यवर्णो या मात्रा मात्रास्वरः स हि ॥१०॥

भावार्थ ॥ अकारादि १६ स्वर हैं । इनमें से अन्त के दो स्वरों- अं अः को त्यागदेना चाहिए, शेष में भी पाँच ही – अ इ उ ए तथा ओ – मुख्य स्वर हैं । इनके क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, सूर्य और चन्द्रमा स्वामी हैं । अकारादि स्वरों के उदयकाल में इन्हीं देवताओं का स्मरण करके कार्य करना चाहिए । इन्हीं स्वरों के उदयकाल में इच्छादि पाँच शक्तियाँ होती हैं । इन्हीं पाँच स्वरों के मायादि पाँच चक्रभेद हैं । इन्हीं के पाँच तत्त्व हैं तथा इन्हीं के पाँच कामबाण भी हैं । इनकी पाँच अवस्थायें हैं । इन पाँच स्वरों का भेद स्वरों में ही स्थित है, जिसे गुरुमुख से ही जाना जा सकता है ॥१-१०॥

अथ वर्णस्वरादि विचारम् ॥ कादिहान्तं लिखेद्वर्णान् स्वराधो ङञणोज्झितान् । तिर्यक्पंक्ति क्रमेणैव पञ्चत्रिंशत्प्रकोष्ठके ॥११॥ नरनामादिमो वर्णो यस्मात्स्वराधः स्थितः । स स्वरस्तस्य वर्णस्य वर्णस्वर इहोच्यते ॥१२॥ न प्रोक्ता ङञणा वर्णा नामदौ सन्ति ते नहि । चेद्भवन्ति तदा ज्ञेया गजडास्ते यथाक्रमम् ॥१३॥ यदि नाम्नि भवेद्वर्णः संयुक्ताक्षरलक्षणः । ग्राह्यस्तदादिमो वर्ण इत्युक्तं ब्रह्मयामले ॥१४॥ अथ ग्रह स्वराः ॥ अस्वरो मेषसिंहालिः इः कन्यायुग्म कर्कटाः । उकारस्य

धनुर्मीनावेस्वरस्य तुलावृषौ ॥ १५॥ ओकारे मृगकुम्भौ च राशीशाश्च गृहस्वराः । स्वराधःस्थापयेत्खेटा-
न् राशेर्यो यस्य नायकः ॥ १६॥ भौमशुक्रज्ञचन्द्रार्क बुधशुक्रारमंत्रिणः । सौरि सौरी तथा जीवो मेषादी
नामधीश्वराः ॥ १७॥ अथ जीव स्वरम् ॥ षोडशाक्षरोऽवर्गः स्यात्कादिवर्णास्तु पन्चकम् । चतुर्वर्गौ यशौ
वर्गौ संख्या वर्षेषु कीर्तिताः ॥ १८॥ नाम्नि वर्णस्वरा ग्राह्या वर्गाणां वर्णसंख्यया । पिण्डिताः पञ्चभिर्भक्ताः
शेषं जीवस्वरं विदुः ॥ १९॥ अथ राशि स्वरम् ॥ मेष वृषावकारे च मिथुनाद्याः षडंशकाः । मिथुनांश
त्रयं चैवमिकारे सिंहकर्कटौ ॥ २०॥ कन्या तुला उकारे च वृश्चिकाद्यास्त्रयोंऽशकाः । एकारे वृश्चिका-
न्त्यांशाश्चापः षट् च मृगादिमाः ॥ २१॥ अंशास्त्रयो मृगस्यान्त्याः कुम्भमीनौ तथौस्वरौ । एवं राशिस्वराः
प्रोक्ता नवांशैकक्रमोदयाः ॥ २२॥ अथ नक्षत्र स्वरम् ॥ अकारे सप्त ऋक्षाणि रेवत्यादि क्रमेण च । पन्च
पन्च इकारादावेवमृक्षस्वरोदयः ॥ २३॥ अथ पिण्डस्वरम् ॥ नाम्नि वर्ण स्वरात्संख्या संख्या मात्रा स्वरात्त-
-था । पिण्डे शरहृते शेषे पिण्डस्वर इहोच्यते ॥ २४॥ अथ योग स्वरम् ॥ मात्रादि स्वर भेदेन स्वरानु-
त्पाद्य नामतः । योगे शरहृते शेषे योगस्वर इहोच्यते ॥ २५॥ इति द्वितीय अध्याय: ॥

भावार्थ ॥ इन श्लोकों में वर्णस्वर, ग्रह स्वर, जीवस्वर, राशि स्वर, नक्षत्र स्वर,
पिण्डस्वर एवं योगस्वरों का उल्लेख किया गया है ॥ ११-२५॥

अथ द्वादशवार्षिकादि स्वराध्यायः ॥ प्रोक्ता नैसर्गिका ह्यष्टौ मात्राद्या नामजाः
स्वराः । एतेषामुदयान्वक्ष्ये द्वादशाब्दादिकालजान् ॥ १॥ प्रभवादि क्रमेणैषां स्वराणाम स्वरादिकम् । उदयो
द्वादशाब्दानामेकैकं द्वादशाब्दिकः ॥ २॥ अस्यान्तरोदये वर्षमेकं मासो दिन द्वयम् । लोकाब्धिनाडिकाः प्रोक्ता
अष्टत्रिंशत्पलानि च ॥ ३॥ प्रभवाद्यब्दमेकैक मुदयस्त्व स्वरादिकः । द्वादशाब्दस्य वर्षेना तद्भुक्तिर्वार्षिके स्वरे
॥ ४॥ अथ अयन स्वरम् ॥ अकारो दक्षिणे स्वामी इकारश्चोत्तरायणे । वर्णभुक्त्यर्धमानेन भोगः षाण्मासिक

स्वरे ॥५॥ अथ ऋतु स्वरम् ॥ अकारादि स्वराः पञ्च वसन्तादि क्रमोदया:। एकैकस्मिन्स्वरे प्रोक्ता द्विसप्तति दिनोदयाः ॥६॥ अथ मास स्वरम् ॥ नभस्य मार्गे वैशाखे अकारस्योदयो भवेत्। आश्विन श्रावणाषाढे इकारो नायकः स्मृतः ॥७॥ उकारश्चैत्र पौषे स्यादेकारो ज्येष्ठकार्तिके। ओकार उदयं याति माघफाल्गुनमासयोः ॥८॥ द्वे दिने ग्रबध्यो नाड्यो ह्यष्टत्रिंशत्पलानि च। अंतरोदय उक्तो ऽसावत्र वै मासिकस्वरे ॥९॥ अथ पञ्चस्वर चक्रम्। अस्वरः कृष्णपक्षेशः शुक्लपक्षेश इस्वरः। पक्षात्मिकान्तरे भुक्तिर्मासभुक्त्यर्धमानतः ॥१०॥ अथ दिनस्वर चक्रम् ॥ अकारादि क्रमान्नस्य नन्दादितिथिपञ्चकम्। दिनस्वरोदयो नित्यं स्वस्वतिथ्यादि जायते ॥ ११॥ तिथ्यादौ घटिकाः पञ्च पलानि सप्तविंशतिः। अन्तरोदय उक्तो ऽसौ दिनस्वरस्य सूरिभिः ॥१२॥ अथ घटीस्वर चक्रम् ॥ घटीस्वरो घटीपञ्च पलानां सप्तविंशतिः। अस्यान्तरोदयः प्रोक्तो घटिकार्धप्रमाणकः ॥ १३॥

भावार्थ॥ स्वरों का प्रभवादि द्वादश सम्वत्सरों के अनुसार बारह-बारह वर्ष का उदय होता है। संवत्सरों में पाँचों स्वर होते हैं। उत्तरायण का स्वामी इकार तथा दक्षिणायन का उकार होता है। छै ऋतुओं में वसन्त से क्रमशः अकारादि पाँच स्वरों का उदय होता है। भाद्रपद, मार्गशीर्ष तथा वैशाख में अकार, आश्विन, श्रावण तथा आषाढ़ में इकार, चैत्र तथा पौष मास में उकार, ज्येष्ठ तथा कार्तिक में एकार एवं फाल्गुन मास में ओकार स्वर का उदय होता है। कृष्णपक्ष में अकार तथा शुक्लपक्ष में इकार का उदय होता है। नन्दा तिथियों में अकार, भद्रा तिथियों में इकार, जया तिथियों में उकार, रिक्ता तिथियों में एकार तथा पूर्णा तिथियों में ओकार का उदय होता है। घटिका स्वर ५ घटी २७ पल के होते हैं ॥ १-१३॥

अथ द्वादशाब्दादीनामंतरोदय ॥ द्वादशाब्दादिनाड्यंताः स्वस्थानाच्च स्वकालतः। उदयन्ते पुनस्ते च ते चैकादशधा स्वराः ॥ १४॥ वर्षमास दिवा नाडी पलं चैव क्रमादिदम्। कालमानं

मृ० सं० ११८२

भा० टी०

मयाप्रोक्तं पञ्चधात्र स्वरोदये ॥२५॥ द्वादशाब्द स्वरादीनां भुक्तं पलनयं तु यत्। तद्भक्तं स्वस्वमानेन लब्धं शेषं द्विकं भवेत् ॥२६॥ लब्धे भुक्तस्वराज्ञेयाः शेषे चैवोदिताः स्वराः। अस्मिन् षष्ठ्या विभक्ते च भुक्तं स्यादुदितस्वराः ॥२७॥ अथ पञ्च बालाद्यवस्थानां बलमाह ॥ उदितस्यस्वरस्य स्युर्नामस्वरवशेन ताः। पञ्च बालादिकावस्थाः स्वस्वकालप्रमाणतः ॥२८॥ आद्यो बालः कुमारश्च युवा वृद्धो मृतस्तथा। निजावस्था स्वरूपेण फलदा नात्र संशयः ॥२९॥ किञ्चिल्लाभकरो बालः कुमारस्त्वर्धलाभदः। सर्वसिद्धिं युवाधत्ते वृद्धे हानिर्मृते क्षयः ॥२०॥ यात्रा युद्ध विवादेषु नष्टे दृष्टे रुजान्विते। बालस्वरो भवेद्दुष्टो विवाहादिशुभे शुभः ॥२१॥ सर्वेषु शुभकार्येषु यात्राकाले विशेषतः। कुमारः कुरुते सिद्धिं संग्रामे शत्रुतो जयः ॥२२॥ शुभाशुभेषु कार्येषु यंत्र मंत्रादि साधने। सर्वसिद्धिं युवा धत्ते यात्रा युद्धे विशेषतः ॥२३॥ दाने देवार्चने दीक्षा गुरुमन्त्र प्रकल्पने। वृद्धस्वरो भवेद्भव्यो रणे भङ्गो भयं गमे ॥२४॥ विवाहादि शुभं सर्वं संग्रामाद्यशुभं तथा। न कर्त्तव्यं नृभिः किञ्चज्जाते मृत्यु स्वरोदये ॥२५॥ मृतो बालस्तथा वृद्धः कुमारस्तारुणस्तथा। यथोत्तरबलाः सर्वे ज्ञातव्याः स्वरवेदिभिः ॥२६॥ यो यो यस्य पञ्चमे स्थाने स स्वरो मृत्युदायकः। तृतीये तु भवेद्वृद्धिः शेषा मध्यफलप्रदाः ॥२७॥ मृत्युर्दीनस्वरे नाम्नि जयो नाम्नि स्वराधिके। सम नाम्नि भवेत्साम्यं सन्धिर्जय पराजयौ ॥२८॥ एकस्वरे भवेत्साम्यं द्वितीयोऽर्धफलप्रदः। तृतीये तु फलं पूर्णं तुर्ये बन्ध पराभवम् ॥२९॥ शत्रोर्मृत्युस्वरे प्राप्ते यूनि प्राप्ते स्वकीयके। तत्काले प्रारभे युद्धं विजयो भवति ध्रुवम् ॥३०॥ तत्काले मात्रिको ग्राह्यो दिने वर्णस्वरस्तथा। पक्षे ग्रहस्वरो ज्ञेयो मासे जीव स्वरोदयः ॥३१॥ ऋतौ राशिस्वरश्चैको ग्राह्य षण्मासे धिष्ण्य संभवः। अब्दे पिण्डस्वरो ज्ञेयो योगे द्वादशवार्षिके ॥३२॥ सर्वकाले बली वर्णः सर्वव्यापी न संशयः। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वर्णे वीक्ष्य बलाबलम् ॥३३॥ यदा यदा हस्तिपदे

प्रविष्टा यथा हि नद्यः खलु सागरेषु । यथा हरेर्देहगताश्च जीवास्तथा स्वरा वर्णकलोदयास्ते ॥३४॥ साधनं मन्त्रयन्त्रस्य यात्रायोगं च सर्वदा । अधोमुखानि कार्याणि मात्रा स्वरबले कुरु ॥३५॥ वर्णस्वरबलात्सर्वं कर्त्तव्यं च शुभाशुभम् । सिद्ध्यं सर्वकालेषु युद्धकाले विशेषतः ॥३६॥ मारणं मोहनं स्तम्भं विद्वेषोच्चाटनं वशम् । विवादं विग्रहं घातं कुर्याद् ग्रहस्वरोदये ॥३७॥ भक्ष्यपानादिकं सर्वं वस्त्रालंकार भूषणम् । विद्यारम्भं विवाहं च कुर्याज्जीव स्वरोदये ॥३८॥ प्रासादाराम हर्म्याणि देवता स्थापनं तथा । राज्याभिषेचनं दीक्षा कर्त्तव्यं राशिके स्वरे ॥३९॥ शान्तिकं पौष्टिकं यात्रां प्रवेशं बीज वापनम् । स्त्रीविवाहस्तथा कर्त्तव्या भस्वरोदये ॥४०॥ शत्रूणां देश भङ्गञ्च कोट युद्धं च वेष्टनम् । सेनाध्यक्षस्तथा मन्त्री कर्त्तव्या पिण्डकोदये ॥४१॥ योगेन साध्यते योगं देहस्थं ज्ञान सम्भवम् । अर्णवं शाम्भवं चैव शाक्तेयं च तृतीयकम् ॥४२॥

भावार्थ ॥ आठों स्वरों के बलाबल का विचार करना चाहिए । इन स्वरों के उदय के लिए वर्ष, मास, दिन, नाड़ी और पल – ये पाँच प्रकार के समय कहे गए हैं । पाँचों स्वरों की बाल-वृद्धादि संज्ञा तथा उनके शुभाशुभ फल की स्थिति पर भी विचार करना चाहिए । मृत स्वर से बाल स्वर, बाल से वृद्ध, वृद्ध से कुमार तथा कुमार से युवा स्वर बली होता है । यात्रा, युद्ध, विवाहादि में इनका नियमानुसार विचार करना आवश्यक है । युद्ध के लिए युवा एवं बाल स्वर का विचार तथा मृत हीन, अधिक, विजय, सम आदि का विचार करना चाहिए । शत्रु के मृत्यु स्वरोदय के ज्ञान से युद्ध आरंभ करना चाहिए । तिथि में वर्णस्वर से, पक्षस्वर में ग्रहस्वर से, मास स्वर में जीव स्वर से, ऋतु स्वर में राशि स्वर से आदि-आदि विचार किया जाता है । मन्त्र, तन्त्र तथा यन्त्रादि के प्रयोग में भी स्वर-विचार आवश्यक है । विचार-क्रम श्लोकों में वर्णित है ॥ १४-४२॥

अथ तिथि वार नक्षत्र स्वर माह ॥ तिथिर्वारं च नक्षत्रं पृथक् पृथक् प्रमाणितम् ।
यत्तदेकत्र सम्मील्य कुर्याद्वर्णस्वरोदयम् ॥ ४३॥ यस्य नामादिमं वर्णं तिथिवारर्क्षजं मृतम् । तद्दिनं वर्जयेत्त-
-स्य हानिमृत्युकरं यतः ॥ ४४॥ अनेन स्वर योगेन शत्रूणां मारणादिकम् । मन्त्र यन्त्र क्रिया होमं विदध्यात्त-
द्दिने बुधः ॥ ४५॥ अथ बालादि स्वराणामवस्था संख्या माह ॥ बालस्वरादिकावस्था भानुसंख्या भवन्ति ताः ।
उदयन्ते क्रमेणैव स्वस्वभुक्ति प्रमाणतः ॥ ४६॥ घटिकाख्ये दिने पक्षे मासे ऋत्वयने तथा । वर्षे द्वादशवर्षे
-च अवस्था जायते स्वरे ॥ ४७॥ भपलानि घटी पञ्च सपादोऽर्धदिनद्वयम् । त्रुषट्कं पक्ष मासाब्दमव-
-स्था प्रमितिः क्रमात् ॥ ४८॥ भुक्तस्वर प्रमाणं तु स्वस्वभोगेन तद्भवेत् । गतावस्था गताङ्केन शेषं त-
-त्कालजा मता ॥ ४९॥ सुका च बाला शिशु हासिका च कुमारिका यौवन राज्यदा च । क्लेशा च निन्द्या
ज्वरिता प्रवासा मृता च बालस्वरजा अवस्था ॥ ५०॥ स्वस्था शुभा मोदनिहर्षवृद्धि महोदयाः शान्तिकरी
सदर्पा । मन्दा शमा शान्तगुणोदया च माङ्गल्यदा द्वादशधा कुमारे ॥ ५१॥ उत्साह वीर्योग्रजया कला
च सङ्कल्पयोगा च सकामतुष्टी । सुखा च सिद्धा च धनेश्वरी च शान्ताभिधा द्वादशधा युवाख्ये ॥ ५२॥
वैकल्यशोषा च तथा च मोघा च्युतेन्द्रिया दुःखितरात्रिनिन्दा । बुद्धिप्रभङ्गा च तथा च क्लिष्टा ज्वराकृ-
-ता द्वादशधा च वृद्धे ॥ ५३॥ छिन्ना च वंधारिपुघातकारी शोकामही ज्वालनकष्टदा च । वर्णाङ्किता भेद-
करी च दाहा मृत्युःक्षया द्वादश मृत्युजा इमाः ॥ ५४॥ एवं षष्टिरवस्थाः स्युरवस्था पञ्चके सदा । स-
-र्वासु तासु विज्ञेयं स्वनाम सदृशं फलम् ॥ ५५॥

भावार्थ॥ तिथि, वार, नक्षत्र के अनुसार वर्ण स्वर के ज्ञान से उसकी अवस्था
का ज्ञान प्राप्त करें । जिस दिन शत्रु का मृत-स्वर हो, उसी दिन मारण आदि करना चाहिए । पाँच
स्वरों में भी प्रत्येक की बारह अवस्थाएं होती हैं । इस प्रकार कुल १२×५ = ६० अवस्थाएं कही हैं ।

भा० सं०

भा० टी०

सात अवस्थाओं के नाम श्लोकों में वर्णित हैं ।। ४३-५५ ।।

अथ युद्धादिषु दिक् स्वर माह ।। पूर्वस्मिन्नस्वरः स्वामी इकारो दक्षिणे तथा । उकारो पश्चिमे ज्ञेयं ए सौम्ये मध्य ओ स्वरः ।। ५६ ।। यथ्यां दिश्युदयं याति स्वरस्तात्पञ्चमी दिशम् । वर्जयेत् सर्वकार्येषु यात्राकाले विशेषतः ।। ५७ ।। पृच्छते पृच्छकः स्थानुः स्वरस्तामितां दिशाम् । हानिर्मृत्युर्भयं भङ्गो जायते नात्र संशयः ।। ५८ ।। तिथ्यादावुदयं याति तिथिस्वराद्घटिकास्वरः । बाल स्वरादिका प्रश्ने फलं तस्य वदाम्यहम् ।। ५९ ।। तिथि भुक्तघटी संख्यां कृत्वा पलमयीं ततः । ऋक्षवह्नि हृते शेषे स्वरस्तात्काल सम्भवः ।। ६० ।। यमुद्दिश्य कृतः प्रश्नः फलं तस्य प्रजायते । यत्र नोद्दिश्यते किञ्चित् तत्र प्रष्टुः शुभाशुभम् ।। ६१ ।। बालोदये यदा पृच्छा लाभार्थे स्वल्पलाभदा । रुगार्ते चिररोगं च गमे हानिः क्षयं रणे ।। ६२ ।। कुमारोदय बेलायां लाभो भवति पुष्कलः । रुजो नाशो जयो युद्धे यात्रासर्वत्र सिद्धिदा ।। ६३ ।। युवोदये भवेद्राज्यं क्लेशच्छेदं च तत्क्षणात् । संग्रामे शत्रुहंता च यात्रा च सफला भवेत् ।। ६४ ।। वृद्धोदये ऽन्नलाभःस्यात् क्लेशिनां क्लेशवर्द्धनम् । संग्रामे भङ्गमायाति यात्रायां न निवर्त्तते ।। ६५ ।। मृतोदये यदा प्रष्टा पृच्छति स्वं प्रयोजनम् । तत्सर्वं मृत्युदं ज्ञेयं युद्धे मृत्युः सभङ्गकः ।। ६६ ।। ओज स्वराः पुमांस स्युः स्त्रियो युग्मे स्वरान् विदुः । स्वस्वस्वरोदये जाते पुंसां स्त्रीणां बलं भवेत् ।। ६७ ।। गर्भार्थे पुंस्वरे पुत्रः कन्या कन्यास्वरोदये । युग्मे युग्मं क्षयो नष्टे मातुर्मृत्युश्च संक्रमे ।। ६८ ।। धुनाडी स्वरयोः पुंसो पुंयुग्मं स्त्रीयुगं स्त्रियोः । तयोस्तु पुंस्त्रियोः पुंस्त्री युग्मं गर्भे विनिर्दिशेत् ।। ६९ ।।

भावार्थ ।। यात्रा की सफलता के लिए पूर्वादि क्रम से स्वर का विचार करना चाहिए । तिथि-स्वर एवं घटी-स्वर । स्त्री स्वर, पुरुष स्वर, उदय स्वर तथा अस्तमित स्वर - इन सब का विभिन्न विषयों के सम्बन्ध में सम्यक्-विचार करना चाहिए ।। ५६-६९ ।।

अथ नक्षत्रचरणवर्णवशात् फलम् ।। जन्मर्क्षे जन्मपादो यस्तद्वर्णे षोडशस्वरः ।
तेन नाडीस्वरो ज्ञेयः स्वभावः प्राणिनामपि ।।७०।। चपलः कातरो मूर्खः कृपणश्च जितेन्द्रियः । असत्यो
बहुभाषी च जातो बालस्वरोदये ।।७१।। व्यवसायी कलाभिज्ञः स्त्रीरतः सुभगः सदा । दीर्घायुर्विग्रही शूरः
कुमारोदय संभवः ।। ७२।। सर्वलक्षणसंपूर्णो राजा भवति धार्मिकः । सर्वकालं जयी युद्धे जीते युवोदये शिशुः
।।७३।। स्त्रीजितो धार्मिकः कामी विवेकी स्थिरसाहसः । सत्यवादी सदाचारः पुमान्वृद्धोदयोद्भवः ।।
७४।। क्लेशी समत्सरः क्रूरो निष्कर्मो विकलेन्द्रियः । सर्वकार्यालसो दुष्टो जन्मर्क्षस्य मृतोदये ।।७५।। कका-
रादिहकारांता पंचह्रस्वस्वरस्तथा । बलिनः स्युः सिते पक्षे शेषाः सर्वे सितेतरे ।।७६।। एकस्वरः पृथग्व-
-र्णः पक्षयोरुभयोर्यदि । तत्र पक्षबलं ग्राह्यं शुक्लकृष्ण विभेदतः ।।७७।। एकपक्षाक्षरे चैकः स्वरश्चेद्यो
धयोर्द्वयोः । शुक्ले गौरो परे कृष्णो युद्धे जयति निश्चितम् ।।७८।। यस्मिन्नेकस्वरे कृष्णौ गौरौ वा सुभ
-टौ यदि । स्वरासन्नाक्षरो ह्रस्वो दीर्घो दूराक्षरो जयी ।।७९।। प्रमाणनामवर्णैक्यं युद्धकारकयोर्यदि । तत्र
युद्धे बलं देयं यायिस्थायिविभेदतः ।।८०।। योधयोः सर्वभेदैक्ये स्वरे पूर्वनि कुमारके । यायी जयी तथा
स्थायी बालवृद्धांतिमस्वराः ।।८१।। आद्यतिथौ त्रयो वर्णा द्वौ द्वौ वै शेषयोर्यदि । एवं तिथित्रये ज्ञेया
वर्णसंख्या तिथिस्वरे ।।८२।। वर्णतिथ्यादितिथ्याख्या जन्महानिर्मृतिस्तथा । बीर्जन्मनि रुजा हानी मृतौ
मृत्युर्न संशयः ।।८३।।

भावार्थ ।। जन्म नक्षत्र के जिस चरणमें जन्म हो, उसके अनुसार जो वर्ण हो,
उसका जो स्वर हो, वह वर्ण-स्वर कहलाता है। वर्ण-स्वर के अनुसार, जिस स्वर के उदयकाल में जन्म
हो, उसके अनुरूप बालक के स्वभाव-गुण-चरित्र आदि के विषय में कहना चाहिए। ककारादि वर्ण,
अकारादि स्वर एवं दोनों योद्धाओं के कृष्ण-गौर वर्ण को समझ कर युद्धारम्भ के काल का निर्णय करना

चाहिए। जहाँ दोनों योद्धाओं के नामानुसार शुक्ल एवं कृष्णपक्ष के अनुसार एक ही बल हो, वहाँ युद्ध में पक्ष-बल ही ग्रहण करना चाहिए ॥ ८०-८३ ॥

स्वराद्दिनफलं वक्ष्ये पुंसां कर्म प्रकाशकम् ॥ ८४ ॥ योगपिण्डशरीरपूर्वाजीविश्वेदाक्षर स्वरान्। उत्पाद्य नामतश्चाष्टौ मात्रान्तान् स्थापयेत्क्रमात् ॥ ८५ ॥ तस्याधस्तात्लिखेच्चाष्टौ द्वादशाब्दादिकान्स्वरान्। स्वस्वभोगेन संयुक्तान् भोगश्चैकादशांशकः ॥ ८६ ॥ यथोत्तरबला योगादिमाः कालस्वरास्तथा। कालोदयस्वराश्चापि ज्ञातव्याः स्वरवेदिभिः ॥ ८७ ॥ अकारादिस्वरावस्थां संख्यां वेदप्रमाणिकाम्। विन्यस्य क्रमयोगेन ते च विंशोपकाः स्मृताः ॥ ८८ ॥ योगाद्द्वादशवर्षे स्युरवस्थाः पिण्डतोऽब्दके। भस्वरादयने ज्ञेया राशिस्वराहृतुस्वरे ॥ ८९ ॥ जीवान्मासस्वरेऽवस्था ग्रहात्पक्षस्वरे तथा। वर्णाद्दिनस्वरे ज्ञेया मात्रास्वराद्घटीस्वरे ॥ ९० ॥ द्वादशाब्दादिकः कालो यात्राकारादिकस्वरे। स्थितस्तत्र शुभो न स्यात्पञ्चावस्थाः शुभोऽपि च ॥ ९१ ॥ स्वरौ वृद्धान्तिमौ दुष्टौ बालस्वर्दलं तथा। शेषस्वार्द्धद्वयं भव्यमिति ज्ञेयाः शुभाशुभाः ॥ ९२ ॥ द्वादशवार्षिकाद्या ये स्वान्तरोदय संस्थिताः। ते शुभा एकतः स्थाप्या अशुभास्त्वन्यतः पृथक् ॥ ९३ ॥ शुभाशुभ स्वरूपस्य राशियुग्मस्य मध्यतः। एकस्मात्पातिते शेषे ज्ञेयं तद्दिनजं फलम् ॥ ९४ ॥ विंशत्या ताडिते शेषे चतुःषष्ट्या विभाजिते। लब्धा विंशोपकास्तत्र शुभाशुभ प्रकाशकाः ॥ ९५ ॥ योगे स्वकर्मतः पिण्डे शरीरादमे सुहृज्जनात्। राशौ स्वकुलतो जीवे स्ववित्ताद् गृहतो रिपोः ॥ ९६ ॥ वर्णे स्वस्वामिनोर्ह्येयं मात्रायां स्त्रीजनात्फलम्। एवं ज्ञात्वा वदेद्विद्वान् दिन फलस्य शुभाशुभम् ॥ ९७ ॥

भावार्थ ॥ स्वरों से दिन फल का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इसकी विधि उक्त श्लोकों में वर्णित है। उसी के आधार पर शुभ तथा अशुभ फल को कहना चाहिए ॥ ८४-९७ ॥

अथ स्वर प्रशंसा ॥ गुह्याद्गुह्यतरं सारमप्रकाश्यं प्रकाशितम् । इदं स्वरोदयज्ञानं ज्ञानिनां मस्तके स्थितम् । सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरं ज्ञानं सुबोध्यं सत्यप्रत्ययम् । आश्चर्यं नास्तिके लोके आधारमास्तिके जने ॥२॥ दुष्टे च दुर्जने क्षुद्रे ह्यसत्ये गुरुतल्पगे । हीने सत्वे दुराचारे स्वर ज्ञानं न दीयते ॥३॥ शान्ते शुद्धे सदाचारे गुरुभक्तैकमानसे । दृढचित्ते कृतज्ञे च देय एष स्वरोदयः ॥४॥ अथ हंसचारः ॥ अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि शरीरस्थं स्वरोदयम् । हंसचार स्वरूपेण येन ज्ञानं त्रिकालजम् ॥१॥ कुण्डलिनी महाशक्ति र्नाभिस्थाहि स्वरूपिणी। ततो दशोर्ध्वगा नाड्यो दश चाधोगतास्ततः ॥२॥ द्वे द्वे तिर्यग्गते नाड्यौ चतुर्विंशति संख्यया । कुण्डलिन्या महाशक्तेर्मूल मार्गा भवन्त्यमी ॥३॥ तेभ्यः सूक्ष्ममुखा नाड्यः शरीरस्याति पोषिकाः। शतानि सप्त जायन्ते सप्तोत्तराणि संख्यया ॥४॥ प्रधाना दशनाड्यस्तु दशवायुप्रवाहिकाः। नामानि नाडिकानां च वातानां च वदाम्यहम् ॥५॥ इडा पिङ्गला सुषुम्ना गांधारी हस्तिजिह्विका । पूषा यशा च अलम्बुषा च कुहुः शङ्खिनिका तथा ॥६॥ प्राणोऽपानः समानश्च उदानो व्यान एव च। नागः कूर्मः कृकलश्चैव देवदत्तो धनञ्जयः ॥७॥ प्रकटो वायु सञ्चारो लक्ष्यते देह मध्यतः। इडा पिङ्गला सुषुम्नाभिर्नाडीभिस्तिसृभिर्बुधैः ॥८॥ इडा नाडीस्थित श्चन्द्रः पिङ्गला भानुवाहिनी। सुषुम्ना शम्भुरूपेण शम्भुर्हंसस्वरूपकः ॥९॥ हकारो निर्गमे प्रोक्तः सकारस्तु प्रवेशने । हकारः शम्भुरूपेण सकारः शक्तिरुच्यते ॥शक्तिरूपस्थित श्चन्द्रो वामनाडी प्रवाहकः। दक्षनाडी प्रवाहे तु शिव रूपी दिवाकरः ॥१०॥ हकारो निर्गमे प्रोक्तः सकारोन्तः प्रवेशने । हकारः शंभुरूपस्थः सकारः शक्तिरुच्यते ॥११॥

भावार्थ ॥ यह सूक्ष्म से भी सूक्ष्म स्वरोदय ज्ञान सुबोध्य सत्य तथा नास्तिको आश्चर्यान्वित करने वाला एवं आस्तिकों को आधार स्वरूप है। इसे शान्त, सद्गुणी तथा गुरुभक्त को ही देना चाहिए॥ अब हंसचार के विषय में कहते हैं। कुण्डलिनी नामक महाशक्ति शरीरकी

सभी शक्तियों से बड़ी है। इससे सम्बद्ध १० नाड़ियाँ ऊपर की ओर तथा १० नीचे की ओर गई हैं। दो-दो नाड़ियाँ पार्श्व में हैं तथा ७०० सूक्ष्म नाड़ियाँ और भी हैं। इन इडा, पिङ्गला आदि १० मुख्य नाड़ियों के प्राण, अपान आदि नाम वाले १० वायु हैं। नाक के बाँये छिद्र में इडा तथा दाँये में पिंगला नाडी बहती है। वायु के निकलते समय हकार तथा अन्तः प्रवेश के समय सकार रहते हैं, अतः हकार शंभु स्वरूप तथा सकार शक्ति स्वरूप है ॥ १-४ ॥ १-११ ॥

एकैक घटिकाः पञ्च क्रमेणधोदयन्ति ताः। पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेवच ॥२२॥ मध्ये पृथ्वी अधश्चाप ऊर्ध्वं वहति चानलः। तिर्यग्वायुप्रवाहश्च नभो वहति संक्रमे ॥२३॥ घरा घेकैकतत्त्वस्य एकैकघटिकोदयः। अहोरात्रस्य मध्ये स्युस्तेन द्वादश संक्रमाः ॥२४॥ आदौ चन्द्रः सिते पक्षे भास्करस्तु सितेतरे। प्रतिपदादितो ह्यानि स्त्रीणि त्रीणि क्रमोदयः ॥२५॥ चन्द्रोदये यदा सूर्यश्चन्द्रः सूर्योदये यदा। अशुभं हानिरुद्वेगस्तद्दिने जायते ध्रुवम् ॥२६॥ शशाङ्कं चारयेद्रात्रौ दिवा चार्यो दिवाकरः इत्यभ्यासरतो नित्यं स योगी नात्र संशयः ॥२७॥ यात्राकाले विवाहे च वस्त्रालङ्कार भूषणे। शुभ कर्माणि सन्धौ च प्रवेशे च शशी शुभः ॥२८॥ विग्रहे द्यूतकुट्टेषु स्नानभोजनमैथुने। व्यवहारभये भङ्गे भानुनाडी प्रशस्यते ॥२९॥ होमश्च शान्तिकं चैव दिव्यौषधिरसायनम्। विद्यारम्भं स्थिरं कार्यं कर्तव्यं च निशाकरे ॥३०॥

भावार्थ॥ तीनो नाडियों में क्रमशः पाँच तत्त्वों का उदय होता है। शुक्लपक्ष में प्रतिपदा से तीन तिथियों में पहले चन्द्रस्वर तथा बाद की तीन तिथियों में सूर्य स्वर का उदय होता है। इस क्रम की पुनरावृत्ति होती रहती है। जिस दिन दाँये स्वर के स्थान पर बाँया स्वर तथा बाँये स्वर के स्थान पर दाँया [illegible] में

दक्षिण स्वर तथा स्थिर कार्यों में वाम स्वर शुभ होता है ॥ २२-२०॥

दूरयुद्धे जयी चन्द्रः समासन्ने दिवाकरः। वहन्नाडीपदेऽग्रे च कृते यात्राति सिद्धिदा॥२१॥ सूर्ये वहति चन्द्रे वा पूर्णपादं प्रचालयेत्। चन्द्रे समपदैर्यात्रा सूर्येऽसमपदैः क्रमात्॥२२॥ पृथ्वी जले शुभे तत्त्वे तेजो मिश्रफलोदयम्। हानिमृत्युकरौ पुंसामुभौ हि व्योममारुतौ॥२३॥ आपः श्वेताः क्षितिः पीता रक्तवर्णो हुताशनः। मारुतो नीलवर्णः स्यादाकाशो धूम्र एव च॥२४॥ योधद्वयकृते प्रश्ने पूर्णे च प्रथमो जयी। रिक्तासंस्थे द्वितीयस्तु जयी भवति नान्यथा॥२५॥ युद्धकाले यदा चन्द्रः स्थायी जयति निश्चितम्। यदा सूर्यप्रवाहश्च यायी च विजयी तथा॥२६॥ पार्थिवे सक्षतं युद्धं सन्धिर्भवति वारुणे। विजयो वह्नितत्त्वेन वायौ भङ्गो मृतिस्तु खे॥२७॥ पूर्णनाडीगतं पृष्ठे शून्यमङ्गं तदग्रतः। शून्यस्थाने कृतः शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः॥ २८॥ पूर्वोत्तरदिशोश्चन्द्रे भानौ पश्चिमयाम्ययोः। स्थितस्तत्र जयी युद्धे स्थायी योधः क्रमेण च॥२९॥ वामनाड्युदये चन्द्रः कर्तव्यो वामसम्मुखः। सूर्यवाहे तथा सूर्यः पृष्ठदक्षिणगो जयी॥३०॥ शयने वा प्रसङ्गे वा युवत्यालिङ्गनेऽपि वा। यः सूर्येण पिबेच्चन्द्रं स भवेन्मकरध्वजः॥३१॥ जीवने गृह्यते जीवो जीवो जीवस्य दीयते। जीवस्थानगतो जीवो बालाजीवांत कारकः॥३२॥ रात्र्यन्त याम वेलायां प्रसुप्ते कामिनी जने। ब्रह्मजीवं पिबेद्यस्तु बालाप्राणहरो नरः॥३३॥ अर्केन्दुयोगे पुन्नार्योस्तस्मिन्काले रते सति। तत्क्षणे दीयते चन्द्रो मोहमायाति कामिनी॥३४॥ चन्द्रचोर विं हन्ति सूर्ये बालां वशं नयेत्। सुषुम्नायां भवेन्मोक्ष एको देवस्त्रिधा स्थितः॥३५॥

भावार्थ॥ दूर से किये जाने वाले युद्ध में चन्द्रस्वर तथा समीप के युद्ध में सूर्य स्वर श्रेष्ठ होता है। विभिन्न तत्त्वों का विचार करना भी आवश्यक है। प्रश्न के समय पूर्णस्वर चले तो जिस योद्धा का नाम पहले लिया गया हो, उसकी विजय होगी। स्थायी योद्धा वाम स्वर के

समय तथा स्थायी योद्धा दक्षिण स्वर के समय युद्ध आरंभ करें तो दोनों विजयी होंगे। दिशा का ज्ञान उस समय की चन्द्र, सूर्य राशि के आधार पर करना चाहिए। तदनुसार उचित दिशा में खड़े होकर युद्ध करना चाहिए। स्त्री के साथ शयनालिङ्गन के समय भी स्वर-विचार आवश्यक है। जिस समय जो स्वर चले, उसके कार्यों को उसी स्वर के उदय में करना चाहिए। विशिष्ट विवरण श्लोकों में है॥ २९-३५॥

भुक्तमात्रे च मन्दाग्नौ स्त्रीणां वश्यार्थकर्मणि। शयनं सूर्यवाहेन कर्तव्यं सर्वदा बुधैः॥ ३६॥ श्रान्ते शोके विषार्ते च ज्वरिते मूर्च्छितेऽपि वा। सज्जनस्यापि बोधार्थं चन्द्रचारं प्रवाहयेत॥ ३७॥ ऊर्ध्वं वामाग्रतो दूतो ज्ञेयो वामपथे स्थितः। पृष्ठे दक्षे तथाधस्तात्सूर्यवाहगतो मतः॥ ३८॥ पूर्णनाडी स्थितो दूतो यत्पृच्छति शुभाशुभम्। तत्सर्वं सिद्धिमायाति शून्ये शून्यं न संशयः॥ ३९॥ पृथिव्यादित्रितत्त्वेन दिनमासाब्दकैः फलम्। शोभनं च तथा दुष्टं व्योममारुतवह्निभिः॥ ४०॥ प्रवास प्रवेश काले तु दूतो जल्पति वांछितम्। तत्सर्वं सिद्धिमायाति निर्गमे नास्ति सुन्दरम्॥ ४१॥ व्यवहारी खलो वादी द्विषद्दायादवञ्चकाः। कुपितः स्वामिचौराद्याः पूर्णस्थाः स्युर्भयङ्कराः॥ ४२॥ सूर्ये चेद्विषमान्वर्णान् समवर्णान्निशाकरे। वाहस्थो भाषते दूतस्तदा लाभोऽन्यथा नहि॥ ४३॥ आदौ शून्यगतः पृच्छेत्पश्चात्पूर्णे विशेद्यदि। तदा सर्वार्थसिद्धिः स्यादिति जानीहि निश्चितम्॥ ४४॥ गर्भप्रश्ने यदा दूतः पूर्णे पुत्रः प्रजायते। शून्ये कन्या युगे युग्मं गर्भपातश्च संक्रमे॥ ४५॥ आयाति वारुणे पांथस्तत्रैवास्ते सुखं क्षितौ। प्रयाति पवनेन्यत्र मृत इत्यनले वदेत्॥ ४६॥ उदयश्चन्द्रमार्गेण सूर्येणास्तमनं यदि। तदाऽति गुणसंघातं विपरीते च विघ्नता॥ ४७॥ पक्षतोऽतिक्रमाद्व्याधिर्द्विपक्षादिष्टनाशनम्। पक्षत्रयमतिक्रम्य जायते मरणं ध्रुवम्॥ ४८॥ वामे वा दक्षिणे वापि धराष्टाङ्गुलदीर्घिका। षोडशाङ्गुलमापः स्युस्तेजश्च चतुरङ्गुलम्॥ ४९॥ द्वादशाङ्गुल

दीर्घः स्याद्वायुर्व्योमाङ्गुलेन हि ॥ पृथ्वी पीता सितं वारि रक्तवर्णो धनञ्जयः । मारुतो नीलजीमूत आका-
-शो वर्णपञ्चकः ॥ ५०॥

भावार्थ ॥ दक्षिण स्वर के चलते समय भोजन, स्त्री-वशीकरण आदि कार्यों को करे । पूर्ण स्वर के उदय काल में किया गया प्रश्न सिद्धि दायक होता है । शून्य स्वर का प्रश्न शून्य फल देता है ॥ ३६-३९॥ प्रश्न के समय उदित तत्त्वों का विचार भी करना चाहिए । श्वास-प्रवेश के समय किए गए प्रश्न अभीष्ट दायक एवं निर्गम के समय किए गए असिद्धि दायक होते हैं ॥ ४०-४४॥ पूर्ण स्वर के उदय में प्रसव संबंधी प्रश्न करे तो पुत्र होगा - यह कहें । शून्य स्वरोदय के समय कन्या एवं संक्रम-काल में गर्भपात होगा - यह कहना चाहिए । तत्त्वों के उदय-अस्त का विचार रखते हुए प्रश्न का फल कहना चाहिए तथा तत्त्वों के वर्ण का ध्यान भी रखना चाहिए, जोकि श्लोकों में बताये गये हैं ॥ ४५-५०॥

पीतवर्णं चतुष्कोणं लमध्यं पृथिवीपुरम् । वमध्यं षड्दलाकारं श्वेतं वारुणमण्डलम् ॥ ५१॥ रेफयुक्तं त्रिकोणं च रक्ताभं वह्निमण्डलम् । अष्टपत्रं यमध्यस्थं हरितं वायुमण्डलम् ॥ ५२॥ हमध्यं वर्तुलाकारं धूम्राभं व्योममण्डलम् । पञ्चतत्त्वेषु भेदोऽयं कथितः पूर्वसूरिभिः ॥ ५३॥ मारणं मोहनं स्तम्भं विद्वेषोच्चाटनं वशम् । प्रेरणाकर्षणं क्षोभं भानुनाड्युदये कुरु ॥ ५४॥ शान्तिकं पौष्टिकं क्षेमं दिव्यौषधि रसायनम् । योगाभ्यासादि कर्माणि कर्तव्यानि निशाकरे ॥ ५५॥ चन्द्र सूर्य स्वराभ्यासं ये कुर्वन्ति सदा नराः । अतीतानागतं ज्ञानं तेषां हस्तगतं सदा ॥ ५६॥ इति द्वितीयोऽध्यायः ॥

भावार्थ ॥ इच्छित वस्तु अथवा मुष्टिगत वस्तु संबंधी प्रश्न को बताते समय जिस तत्त्व का उदय हो, उससे संबंधित रंग वाली वस्तु एवं आकार को कहना चाहिए । दक्षिण स्वर के उदय में मारण मोहनादि कर्म एवं वाम स्वर के उदय में शान्ति कर्म आदि करने चाहिए ॥ ५१-५६॥

मृ० सं० १२४७

भा० टी०

अथ सर्वतोभद्र चक्र प्रकरणम् ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि चक्रं त्रैलोक्य दीपकम् । विख्यातं सर्वतोभद्रं सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥१॥ ऊर्ध्वगा दश विन्यस्य तिर्यग्रेखास्तथा दश । एकाशीतिपदं चक्रं जायते नात्र संशयः ॥२॥ अकारादि स्वराः कोष्ठेष्वीशादिविदिशि क्रमात् । सृष्टिमार्गेण दातव्याः षोडशैवं चतुर्भम ॥३॥ कृत्तिकादीनि धिष्ण्यानि पूर्वाशादि लिखेत् क्रमात् । सप्त सप्त क्रमादेतान्यष्टाविंशति संख्यया ॥४॥ अवकहडादिषु प्राच्यां मटपरताश्च दक्षिणे । नयभजखाश्च वारुण्यां गसदचलास्तथोत्तरे ॥५॥ त्रय स्त्रयो वृषाद्याश्च पूर्वाशादिक्रमाद्बुधैः । राशयो द्वादशैवं तु मेषान्ताः सृष्टिमार्गतः ॥६॥ शेषेषु कोष्ठकेष्वेवं नन्दातिथि पञ्चकम् । वाराणां सप्तकं लेख्यं भौमाद्यं च क्रमेण वै ॥७॥ भौमादित्यौ च नन्दायां भद्रायां बुधशीतगू । जयायां च गुरुः प्रोक्तो रिक्तायां भार्गवस्तथा ॥८॥ पूर्णायां शनिवारश्च लेख्यं चक्रेत्र निश्चितम् । इत्येष सर्वतोभद्रविस्तारः कीर्तितो मया ॥९॥ ऊर्ध्वदृष्टी च भौमार्कौ केकरौ बुधभार्गवौ । समदृष्टी च जीवेन्दू शनि राहू स्वधोदृशौ ॥१०॥ नीचस्थितोर्ध्वदृष्टिश्च उच्चैरधो निरीक्षयेत् । समश्च पार्श्वतो दृष्टिस्त्रिधा दृष्टि प्रकथ्यते ॥११॥ शन्यर्क राहु केत्वाराः क्रूराः शेषाः शुभ ग्रहाः । क्रूरयुक्तो बुधः क्रूरः क्षीणचन्द्रस्तथैव च ॥१२॥ यस्मिन्नृक्षे स्थितः खेटस्ततो वेधत्रयं भवेत् । ग्रहदृष्टिवशेनात्र वामसम्मुख दक्षिणे ॥१३॥ भुक्तं भोग्यं तथा क्रान्तं विद्धं क्रूरग्रहेण च । शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥१४॥ वक्रगे दक्षिणा दृष्टिर्वामदृष्टिश्च शीघ्रगे । मध्यचारे तथा मध्या ज्ञेया भौमादिपञ्चके ॥१५॥

भावार्थ ॥ अब सर्वतोभद्र चक्र प्रकरण आरंभ होता है ॥ सर्वतोभद्र चक्र त्रिभुवन का दीपक एवं सद्यः प्राणियों के शुभाशुभ फल को कहने वाला है । दस खड़ी रेखा तथा दस आड़ी रेखाओं के लिखने से ८१ कोष्ठकों वाला चक्र बनता है । उन कोष्ठों में ईशानादि क्रमसे अकारादि

सोलह स्वरों को लिखें । स्वरों के आगे के कोष्ठ से कृत्तिका से आरंभ कर, सात-सात नक्षत्र पूर्वादि दिशाओं में लिखें । नक्षत्र पंक्ति के नीचे पूर्वादि दिशाओं में अवकहड आदि पाँच वर्णों को लिखें । नीचे के तीन कोष्ठों में पूर्वादि क्रम से वृषादि तीन-तीन राशियों को लिखें । श्लोकों के अनुसार सर्वतोभद्र का जो स्वरूप बनता है, उसे बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है ।। १-६ ।।

अ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	श्ले.	आ.
भ.	उ.	अ.	व.	क.	ह.	ड.	ऊ.	म.
अ.	ल.	लृ.	वृ.	मि.	क.	लॄ.	म.	पू.
रे	च.	मे	ओ.	१र. ६ मे.	औ	सिं	ट.	उ.
उ.	द.	मी.	४ बु. ८ १४	५ १० १४ शु.	२ च ७ १२ शु.	क.	प.	ह.
पू.	स.	कुं.	अ:	३ गु. ८ १३	अं.	तु.	र.	चि.
श.	ग.	रे.	म.	ध.	वृ.	ए.	त.	स्वा.
ध.	ऋ.	ख.	ज.	भ.	य.	न.	ऋ.	वि.
ई.	श्र	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्ये.	अ.	इ.

।। सर्वतोभद्र चक्रम् ।।

मंगल तथा सूर्य की ऊर्ध्वदृष्टि होती है । बुध तथा शुक्र की तिर्यग् दृष्टि होती है । गुरु और चन्द्रमा की सम दृष्टि होती है एवं शनि तथा राहु की अधोदृष्टि होती है । शनि, राहु तथा केतु और मंगल – ये क्रूर ग्रह हैं । शेष सभी शुभग्रह हैं । क्रूर ग्रह से युक्त बुध भी क्रूर होता है तथा क्षीणचन्द्रमा भी क्रूर ग्रह होता है । जिस नक्षत्र पर ग्रह रहता है, उस के दृष्टिवश से वाम, सम्मुख तथा दक्षिण – ये तीन प्रकार के वेध होते हैं । शेष श्लोकानुसार समझलें ।। १०-२५ ।।

सूर्यमुक्ता उदीयन्ते सूर्यग्रस्तास्तगामिनः । ग्रहाद् द्वितीयगे सूर्ये स्फुरद्बिम्बाः कुजादयः ।।२६।। समा तृतीयगे ज्ञेया मन्दा भानौ चतुर्थगे । वक्रा स्यात्पञ्चषष्ठेर्के ऽतिवक्राष्टसप्तमे ।। २७।। नवमे दशमे भानौ जायते कुटिला गतिः । द्वादशैकादशे सूर्ये भजते शीघ्रतां पुनः ।। अदृश्यतां पुनर्लोके व्रजन्त्यर्क गता ग्रहाः ।। २८।। राहुकेतू सदा वक्रौ शीघ्रगौ चन्द्र भास्करौ । गतेरेकस्वभावत्वादेषां दृष्टित्रयं सदा ।। २९।। क्रूरा वक्रा महाक्रूरा सौम्या वक्रा महाशुभाः । स्युः सहजस्वभावस्था; सौम्याः क्रूराश्च शीघ्रगाः ।।२०।।

मू० सं० ३२८४

भा० टी०

भावार्थ ॥ सूर्य से मुक्त ग्रह उदय होते हैं तथा सूर्य कालांश के अन्दर आने वाले ग्रह अस्त होते हैं। सूर्य से दूसरी राशि पर ग्रह शीघ्र गामी, तीसरे स्थान पर समगति, चौथे पर मंद गति; पाँचवें, छठे पर वक्र गति तथा सातवें-आठवें पर अति वक्र गति, नवें-दसवें में सहजगति तथा ग्यारहवें-बारहवें स्थान में शीघ्रगति होते हैं। राहु-केतु सदैव वक्रगति तथा सूर्य-चन्द्र सदैव शीघ्रगति ही होते हैं॥१६-२०॥

अवर्णादिस्वरौ द्वौ द्वावेकवेधे द्वयोर्व्यधः। स्वरयुक्तात्मनोर्वेधश्चानुस्वारविसर्गयोः॥२१॥ बवौ शसौ षखौ चैव ह्रेयौ ङ औ परस्परम्। एकेन द्वितयं शुभाशुभखगव्यधे ॥२२॥ थङढाः षणठाश्चैव धफढास्य झञास्तथा। एतत्त्रिकं त्रिकं विद्धं विद्धैः कपदमैः क्रमात्॥२३॥ थङछा रौद्रगे वेधे षणठा हस्तगे ग्रहे धफढाः पूर्वाषाढायां धभञा भाद्रउत्तरे॥२४॥ अवर्णादिस्वरद्वन्द्वे ष्वेकवेधे द्वयोर्व्यधः। युक्ता स्वरात्मके वेधे त्वनुस्वारविसर्गयोः॥२५॥ कोणस्थधिष्ण्ययोर्मध्ये अन्त्यादिपादगे ग्रहे। अस्वरादिचतुष्कस्य वेधः पूर्णातिथेः क्रमात्॥२६॥ एकादिक्रूरवेधेन फलं पुंसां प्रजापते। उद्वेगश्च भयं हानी रोगो मृत्यु क्रमेण च॥२७॥ ऋक्षे भ्रमोक्षरे हानिः स्वरे व्याधिर्भयं तिथौ। राशौविद्धे महाविघ्नं पञ्चविद्धो न जीवति॥२८॥ एक वेधे भयं युद्धे युग्म वेधे धनक्षयः। त्रिवेधेन भवेद्भङ्गो मृत्युर्वेधचतुष्टये॥२९॥ यथा दुष्टफलाः क्रूरास्तथा सौम्याः शुभप्रदाः। क्रूरयुक्ताः पुनः सौम्या ज्ञेयाः क्रूरफलप्रदाः॥३०॥ अर्कवेधे मनस्तापो द्रव्यहानिश्च भूसुते। रोगपीडाकरः सौरी राहुकेतू च विघ्नदौ॥३१॥ चन्द्रे मिश्रफलं पुंसां रतिलाभश्च भार्गवे। बुधवेधे भवेत्प्रज्ञा जीवः सर्वफलप्रदः॥३२॥ सौम्य पापग्रहो हन्यान्नाम्नो व्याधि धनक्षयः। वेधे वैनाशिकर्क्षस्य त्रिवेधे चायुषो भयम्॥३३॥ स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादोनं मित्रभे ग्रहे। अर्द्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहे स्थिते॥३४॥ इदं च सौम्य क्रूराणां बलं स्थानवशात्मकम्। एतदेव बलं बोध्यं सौम्ये क्रूरे विपर्ययात्॥३५॥ स्थानवेध समायोगे फलसंख्यं जायते बलम्। तत्सं-

एवं वेधप्रवस्तूनां फलं ज्ञेयं विचक्षणैः ॥३६॥ ग्रहाः क्रूरस्तथा सौम्या वक्रमार्गोच्चनीचगाः। स्थानं च वेधमित्येवं बलं ज्ञात्वा फलं वदेत् ॥३७॥ वक्रग्रहे फलं द्विघ्नं त्रिगुणं स्वोच्चसंस्थिते। स्वभावजं फलं शीघ्रे नीचस्थो निष्फलो ग्रहः ॥३८॥

भावार्थ ॥ अवर्गादि दो= दो स्वरों में एक का वेध होने से दोनों विद्ध होते हैं। कोणस्थ नक्षत्रों के अन्तिम और आदि चरण में ग्रह होने पर कोणस्थ स्वरों एवं मध्य स्थित पूर्णा तिथि का वेध होता है। यदि ग्रह अपनी राशि मे हो तो पूर्ण बली होता है। यदि ग्रह वक्री हो तो दूना फल, उच्च में हो तो तिगुना, शीघ्र गति हो तो स्वभावानुसार एवं नीच में हो तो आधा फल देता है इत्यादि। ॥२१-३८॥

तिथिराश्यंशनक्षत्रं विद्धं क्रूरग्रहेण यत्। सर्वेषु शुभकार्येषु वर्जयेत्तत्प्रयत्नतः ॥३९॥ न नन्दति विवाहे च यात्रायां न निवर्तते। न रोगान्मुच्यते रोगी वेधवेला कृतोद्यमाः ॥४०॥ रोगकाले भवेद्वेधः क्रूर खेचर सम्भवः। वक्रगत्या भवेन्मृत्युः शीघ्रे याप्या रुजान्वितः ॥४१॥ वेधस्थाने रणे भङ्गो दुर्गे खण्डः प्रजायते। कवि प्रवेशनं तत्र योधघातश्च तत्र वै ॥४२॥ यत्र पूर्वादि काष्ठायां वृषराश्यादिगो रविः। सा दिगस्तमिता ज्ञेया तिस्रः शेषाः सदोदिताः ॥४३॥ ईशानस्था स्वराः प्राच्यां ज्ञेया आग्नेयगा यमे। नैर्ऋत्यास्थास्तु वारुण्यां वायव्यां सौम्यगा मताः ॥४४॥ नक्षत्राणि स्वरा वर्णा राशयस्तिथयो दिशः ते सर्वेस्तंगता ज्ञेया यत्र भानुस्त्रिमासिकः ॥४५॥ नक्षत्रेस्ते रुजो वर्णे हानिः शोकः स्वरेस्तगे। राशौ विघ्नं तिथौ भीतिः पञ्चास्ते मरणं ध्रुवम् ॥४६॥ यात्रा युद्धं विवादश्च द्वारं प्रासाद हर्म्ययोः। न कर्तव्यं शुभं चान्यदस्ताशाभिमुखं नरैः ॥ ४७॥ अस्ताशायां स्थितं यस्य यदा नामाद्यमक्षरम्। तदा तु सर्वकार्येषु ज्ञेयो दैवहतो नरः ॥४८॥ कवौ कोटे तथा द्वन्द्वे चातुरंगे महाहवे। उद्यमोस्तंगतैर्योधैर्वर्जनीयो जयार्थिभिः ॥४९॥ नक्षत्राभ्युदिते पुष्टिर्वर्णे लाभः स्वरे सुखम्। राशौ जयस्थितौ तेजः पदाप्तिः पंचकोदये ॥५०॥

भावार्थ ॥ जो तिथि, राशि, अंश, नक्षत्र क्रूरग्रह से बिद्ध हो, उसे सभी शुभकार्यों में त्याग देना चाहिए। वेध स्थान में कोई भी कार्य करने से असफलता मिलती है। जिन राशि-दिशाओं में सूर्य रहता है, वे दिशाएं अस्त होती हैं। जिस दिशा में त्रैमासिक सूर्य हो, उस दिशा के नक्षत्र, स्वर, वर्ण, राशि, तिथि और दिशा अस्त हो जाते हैं ॥ ३९-४५॥ नक्षत्र अस्त हो तो रोग, वर्ण अस्त हो तो हानि, स्वर अस्त हो तो शोक, राशि अस्त हो तो विघ्न एवं तिथि अस्त हो तो भय होता है। उदित नक्षत्र, राशि आदि सुखद होते हैं ॥४६-५०॥

प्रश्नकाले भवेद्विद्धं यल्लग्नं क्रूरखेचरैः। तद्दुष्टं शोभनं सौम्यैर्मिश्रैर्मिश्रफलं मतम् ॥५१॥ ग्रहाभिन्नं तु यल्लग्नं फलं लग्नस्वभावतः। ज्ञातव्यं देशिकेन्द्रेण भाषितं यच्चरादिकम् ॥ क्रूरैरुभयतो विद्धा यस्याऽक्षर तिथिस्वराः। राशिर्धिष्ण्यं च पंचापि तस्य मृत्युर्न संशयः ॥ ५३॥ मण्डलं नगरं ग्रामो दुर्गं देवालयं पुरम्। क्रूरैरुभयतो विद्धं विनश्यति न संशयः ॥५४॥ कृत्तिकादित्रिकाद्ये मे क्रूरविद्धे च कूर्मतः। देशानाभिस्थदेशाद्या विनश्यंति यथाक्रमम् ॥ ५५॥ कृत्तिकायां तथा पुष्ये रेवत्यां च पुनर्वसौ। विद्धे सति क्रमोद्वेधो वर्णेषु ब्राह्मणादिषु ॥ ५६॥ तैलं भाण्डं रसो धान्यं गजाश्वादि चतुष्पदम्। सर्वं महर्घतां याति यत्र क्रूरो व्यवस्थितः ॥५७॥ क्रूरवेधसमायोगे यस्योपग्रहसम्भवः। तस्य मृत्युर्न सन्देहो रोगाद्वाथ रणेपि वा ॥५८॥ सूर्यभात्पञ्चमं धिष्ण्यं ज्ञेयं विद्युन्मुखाभिधम्। शूलं चाष्टमभं प्रोक्तं सन्निपातं चतुर्दशम् ॥ ५९॥ केतुरष्टादशे प्रोक्त उल्का स्यादेकविंशतौ। द्वाविंशतितमे कम्पस्त्रयोविंशे च वज्रकम् ॥ ६०॥ निर्घातश्च चतुर्विंशे उक्ता अष्टावुपग्रहाः। स्वस्थाने विघ्नदाः प्रोक्ताः सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ ६१॥ जन्मभं कर्म आधानं विनाशं सामुदायिकम्। सांघातिकमिदं धिष्ण्यं षट्कं सर्वजनीनकम् ॥ ६२॥ ज्ञातिदेशाभिषेकैश्च नवधिष्ण्यानि भूपतेः। वेधं ज्ञात्वा फलं ब्रूहि सौम्यैः क्रूरैः शुभाशुभम् ॥ ६३॥ जन्मभं जन्मनक्षत्रं दशमं कर्मसंज्ञकम्। एकोनविंशमाधानं त्रयोविंशं वि-

मं० सं० १९९३

भा० टी०

नाडीभम् ॥६४॥ अष्टादशं च नक्षत्रं सामुदायिक संज्ञकम् । सांघातिकं च विंशेयमृक्षं षोडशमत्र हि ॥६५॥ षट्त्रिंशं राज्यभं प्रोक्तं जातिनाम स्वजातिभम् । देशभं देशनामर्क्षं राज्यर्क्षमभिषेकभम् ॥६६॥ मृत्युः स्याज्जन्मभे विद्धे कर्मभे क्लेश एव च । आधानर्क्षे प्रवासः स्याद्विनाशे बंधुविग्रहः ॥६७॥ सामुदायिकभेऽनिष्टं हानिः सांघातिके तथा । जातिभे कुलनाशश्च बन्धनं चाभिषेकभे ॥६८॥ देशर्क्षे देशभङ्गश्च क्रूरैरेवं शुभैः शुभम् । उपग्रहसमायोगान्मृत्युर्भवति नान्यथा ॥६९॥ भयं भङ्गश्च घातश्च मृत्युर्भङ्गः पुरःस्थितैः । क्रूरैरेकादिपञ्चान्तैर्युधि वेधे फलं भवेत् ॥७०॥

भावार्थ ॥ प्रश्नकालिक लग्न यदि क्रूर ग्रह से बिद्द हो तो अशुभ फल होता है। शुभग्रह से बिद्द हो तो शुभ फल होता है। कृत्तिकादि तीन-तीन नक्षत्रों से कूर्मचक्र में कूर्म के ९ अंगों की कल्पना करके उसमें देश-विभाग करे। उसमें क्रूर ग्रह से बेध होने पर विनाश होता है। जिस का उपग्रह सम्बन्धी क्रूर ग्रह का बेध होता है, उसकी रोग या संग्राम से मृत्यु होती है। उपग्रह आठ हैं, जिनके नामों का श्लोकों में उल्लेख किया गया है। ये सभी कार्यों में अपने भोग काल तक सदैव विघ्न करते हैं। जन्म-नक्षत्र, कर्म, आधान, विनाश, सामुदायिक तथा सांघातिक - ये ६ नक्षत्र नाड़ी-संज्ञक सभी के लिए हैं। राजाओं के लिए जाति, देश तथा अभिषेक नक्षत्र सहित ९ नक्षत्र नाड़ी-संज्ञक कहे गए हैं। इनमें शुभग्रह तथा पापग्रह के बेध से शुभाशुभ फल होता है ॥५१-७०॥

तिथिमृक्षं स्वरं राशिं वर्णं चैव तु पञ्चकम् । यद्दिने विध्यते चन्द्रस्तद्दिने स्याच्छुभाशुभम् ॥७१॥ अथार्घ्यं सम्प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले । एकाशीतिपदे चक्रे ग्रहवेधाच्छुभाशुभम् ॥७२॥ देशः कालस्तथा पण्यमिति त्रीण्यर्घनिर्णयं । चिन्तनीयानि वेध्यानि सर्वकालं विचक्षणैः ॥७३॥ देशेषु मण्डलं स्यादिति देशाधिपोच्यते । वर्षं मासो दिनं चेति त्रिधा कालोऽपि कथ्य-

ते ॥ ७४ ॥ धातुर्मूलं च जीवश्च इति पण्यं त्रिधा मतम् । अथ त्रिकत्रिकस्यास्य वक्ष्यामि स्वामिखेच-
रान् ॥ ७५ ॥ देशेशा राहुमन्देज्या मण्डलस्वामिन: पुन: । केतुसूर्यसिता: स्थाननाथाश्चन्द्रश्चन्द्रजा: ॥ ७६ ॥
वर्षेशा राहुकेत्वार्की जीवो मासाधिप: पुन: । भौमार्किज्ञसिता ज्ञेयाश्चन्द्र: स्याद्दिवसाधिप: । ७७ ॥ धात्वी-
शा: सौरिपातारा जीवेशा ज्ञेन्दुसूर्य: । मूलेशा: केतुशुक्रार्की इति पण्याधिपा ग्रहा: ॥ ७८ ॥ पुंग्रहा राहुकेत्वर्क
जीवभूमिसुता मता: । स्त्रीग्रहौ शुक्रशशिनौ सौरिसौम्यौ नपुंसकौ ॥ ७९ ॥ सितेन्दू सितवर्णेशौ रक्ते
-शौ भौमभास्करौ । पीतौ सौम्यगुरू कृष्णा राहुकेत्वर्कजा मता: ॥ ८० ॥ ग्रहो वक्रोदये स्वांशे उदये च
बलाधिक: । देशादीनां स एकैक: स्वामी खेटस्तदा मत: ॥ ८१ ॥ वक्रोच्चग: स्वहर्म्येषु पूर्णवीर्यो ग्रहो
भवेत् । मेषो वृषो मृग: कन्या कर्कमीनतुलाधरा: ॥ ८२ ॥ आदित्यादिग्रहोच्चा: स्युर्नीचं यत्तस्य सप्तमम् ।
परमोच्चादिशो वामा अष्टाविंशास्तिथीन्द्रिया: ॥ ८३ ॥ सप्तविंशास्तथा विंशा: सूर्यादीनां तथांशका: ।
परमोच्चात्परं नीचमर्धचक्रान्तसंख्यया ॥ ८४ ॥ उच्चान्नीचाच्च यत्तुर्यं समं स्थानं तदुच्यते । तदग्रपृष्ठगे
खेटे बलं त्रैराशिकं मतं ॥ ८५ ॥ उच्चस्थे च बलं पूर्णं नीचांशस्थे बलं दलम् । स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादो
-नं मित्रभे गृहे ॥ ८६ ॥ अर्धं समगृहे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहस्थिते । त्रैराशिकवशाज्ज्ञेयमन्तरे तु बलं बुधै:
॥ ८७ ॥ एवं देशादिनाथा ये ग्रहवेधे व्यवस्थिता: । सुहृद: शत्रवो मध्याश्चिन्तनीया: प्रयत्नत: ॥ ८८
स्वमित्रसमशत्रूणां वेधे देशादिषु क्रमात् । शुभग्रह: शुभं धत्ते चतुस्त्रिद्व्येकपादकै: ॥ ८९ ॥
स्वमित्रसमशत्रूणां वेधे देशादिषु क्रमात् । दुष्टं दुष्टग्रह: कुर्यादेकद्वित्रिचतु:पदै: ॥ ९० ॥

भावार्थ ॥ तिथि, नक्षत्र, स्वर राशि और वर्ण – ये पाँचों जिस दिन पापग्रह
अथवा शुभग्रह से बिद्ध हों, उसी दिन यदि चन्द्रमा से भी बिद्ध हों तो शुभाशुभ फल होता है ॥ ७१ ॥
८१ पद वाले चक्र में ग्रहों के वेध से शुभाशुभ फल जानना चाहिए । देश, काल और बेधने वालीवस्तु

इन तीनों के वेध को देख कर वेध का फल निश्चित करना चाहिए। देश, मण्डल और स्थान - इस प्रकार से देश तीन तरह का होता है। वर्ष, मास और दिन - ये तीन भेद काल के हैं। इसी भाँति विक्रेय वस्तु के भी तीन भेद होते हैं ॥७२-७५॥ राहु, शनि और गुरु - ये देश के; केतु, सूर्य और शुक्र - ये मण्डल के तथा चन्द्रमा, मंगल और बुध ये स्थान के स्वामी हैं। ग्रहों के वर्ण, स्त्री-पुरुष भेदादि का उल्लेख श्लोकों में किया गया है ॥७६-८१॥ जब ग्रह वक्री अथवा अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में हो तो बली होता है। बली ग्रह शुभ तथा निर्बल ग्रह अशुभ फल देता है, इत्यादि ॥८२-९०॥

विद्धं पूर्णदृशा पश्यंस्तत्पादेन फलं ग्रहः। विद्धात्यन्यथा ज्ञेयं फलं दृष्ट्यानुमानतः ॥९१॥ वर्णादि स्वर राशीनां मेषाद्ये राशिमण्डले। ग्रहदृष्टिवशात्सोऽपि वेधो वर्णादिके मतः ॥९२॥ स्वर वर्णाः स्वचक्रोक्तास्तिथिवेधे च पीडिताः। तिथौ वर्णे च राशौ च स्वदृष्ट्या दृष्टिजं फलम् ॥९३॥ अशुभो वा शुभो वापि शुक्ले विध्येत्तिथिं ग्रहः। सर्वं निजफलं दत्ते कृष्णपक्षे तु तद्दलम् ॥९४॥ खेटस्य स्वांशके ज्ञेया पूर्णा दृष्टिः सदा बुधैः। दृष्टिहीने पुनर्वेधे न स्यात्किञ्चिच्छुभाशुभम् ॥९५॥ इत्येवं दृष्टिभेदेन निर्दिष्टं सकलं फलम्। वर्णादि पञ्चके विद्धग्रहो दत्ते शुभाशुभम् ॥९६॥ सौम्यः पूर्णदृशा पश्यन्विध्यन्वर्णादि पञ्चकम्। फलं विंशोपकाः पञ्च क्रूरस्तु चतुरो दिशेत् ॥९७॥ वेधो वर्णादिके यावत् स्थान वेधे च यावती। दृष्टिस्तदनुमानेन वाच्या विंशोपका बुधैः ॥९८॥ एवं विंशोपका यत्र सम्भवन्ति शुभाशुभाः। अन्योन्यं शोधयेत्तेषां शेषं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥९९॥ वर्तमानार्घविंशांश कल्पनां स्तेषु च क्रमात्। वर्तमानार्घके देया यात्या चैव शुभाशुभे ॥१००॥ देशध्वंसः प्रजापीडा नृपतिप्रवधस्तथा। यत्र दृष्टिश्च तत्र स्याद्दुर्भिक्षं मण्डले स्फुटम् ॥ १०१ ॥ अकालेऽपि फलं पुष्पं वृक्षाणां यत्र जायते। स्वजाति मांस भुक्तिश्च दुर्भिक्षं तत्र रौरवम् ॥१०२॥ परचक्रागमस्तत्र

विग्रहश्च स्वराजके। ऋतोर्विपर्ययो यत्र दुर्भिक्षं मण्डले भवेत् ॥२०३॥ भूमिकम्पो रजःपातो रक्तवृष्टिश्च जायते। देशे सर्वसुखो येते वेधादेवं वदे बुधः ॥२०४॥ वृक्षाणां जायते वृद्धिः स्वकाले फलपुष्पयोः। सुभिक्षं क्षेमारोग्यं च प्रजानां तत्र जायते ॥२०५॥ स्वचक्रं परचक्रं च न कदाचित्प्रजायते। बान्धवाः सुहृदस्तत्र शुभानां वेध संभवे ॥२०६॥ दीपो यथा गृहस्यान्तरुद्द्योतयति सर्वतः। तथेदं सर्वतोभद्रं चक्रं ज्ञानप्रकाशकम् ॥२०७॥ विना बलिं विना होमं कुमारीपूजनं विना। शुभग्रहं विना देवि चक्रराजं न वीक्षयेत् ॥२०८॥ अविचार्यतया पृच्छेत्पृच्छकः कथकस्तथा। द्वाविमौ विघ्नदौ प्रोक्तावत्र देवि न संशयः ॥२०९॥ जातकं च तिथिं राशिं विज्ञेयं नामतोज्ज्वलौ। अज्ञातजातकानां तु समस्तमभिधानतः ॥२१०॥ विस्तारेण मयाख्यातं यथोक्तं ब्रह्मयामले। न देयं यस्य कस्यापि चक्रमेतत्सुनिश्चितम् ॥२११॥ इति सर्वतोभद्र चक्रं समाप्तम् ॥

भावार्थ ॥ देशादि की नाम-राशि दृष्टि-फल के अनुसार ही फल देती है। चक्र में वर्णित स्वर, वर्ण आदि तिथि-वेध से पीड़ित होते हैं। तिथि, वर्ण तथा राशि में दृष्टि के अनुसार ही फल होता है। यदि ग्रह अपनी राशि तथा अंश में हो तो उसकी पूर्ण दृष्टि होती है ॥९१-९६॥ यदि शुभग्रह पूर्ण दृष्टि से वर्ण आदि पाँचों को वेध करते हों तो विंशोपक फल ५ और क्रूरग्रह वेध करता हो तो ४ विंशोपक फल होता है। वर्ण आदि के स्थान-भेद में जितनी दृष्टि हो, उसी के अनुमान से विंशोपक लेना चाहिए। धान्य आदि के भावों में भी नाम से विंशोपक लाकर उनका शुभाशुभ फल कहना चाहिए ॥९७-२००॥ जिस देश में अधिक क्रूर ग्रह का वेध और दृष्टि हो, वहाँ प्रजा को पीड़ा, दुर्भिक्ष आदि दुष्ट फल होते हैं। जहाँ ऋतु का विपर्यय हो वहाँ भी अनिष्ट होते हैं। जहाँ ऋतु के अनुकूल वृक्ष फूलें फलें वहाँ सुभिक्ष होता है तथा प्रजा सुख से रहती है ॥२०१-२११॥ इति सर्वतोभद्र चक्र प्रकरणम् ॥

अथ शतपद चक्र प्रकरणम् ।। चक्रं शतपदं वक्ष्ये भपादाक्षर संभवम् । नामादिवर्णतोज्ञेया ऋक्षराश्यंशकास्तथा ।।१।। तिर्यगूर्ध्वगता रेखा रुद्रसंख्या लिखेद्बुधः जायते कोष्ठकानां तु शतमेकं न संशयः ।।२।। न्यसेदवकहडादीनि रुद्रादि विदिशि क्रमात् । पञ्च पञ्च क्रमेणैव शुद्धवर्णान्नियोजयेत् ।।३।। पञ्च स्वर समायोगादेकैकं पञ्चधा कुरु । कुर्यात्कुपुभुदुस्थाने त्रीणि त्रीण्यक्षराणि च ।।४।। कुघङच्छ भवेत्स्तम्भे रौद्रे त्वीशानगोचरे । पुषणठ भवेत्स्तम्भे हस्ते आग्नेय संज्ञके ।।५।। ऋक्षे पूर्वाभुध फढं स्तम्भे नैर्ऋत्यगोचरे । दुथझञास्तथा वायौ स्तम्भ उत्तर भाद्रके ।। ६।। आर्द्रा हस्तस्तथाषाढ पूर्वोत्तरपदाभिधे । एवं स्तम्भ-चतुष्कं च ज्ञातव्यं स्वरवेदिभिः ।।७।। धिष्ण्यानि कृत्तिकादीनि प्रत्येकं चतुरक्षरैः । साभिजित्पंशकास्तस्य शतैकं द्वादशाधिकम् ।।८।। यद्दक्षांशक कोष्ठस्थः क्रूरः सौम्योपि वा ग्रहः । ततस्तद्वेधयेत्तिर्यक् पुंसो नामाद्यमक्षरम् ।। ९ ।। सौम्यवेधे शुभं ज्ञेयमशुभं पापखेचरैः । मिश्रैर्मिश्रफलं तत्र निर्वेधेन शुभाशुभम् ।। १०।। यदुक्तं सर्वतोभद्रे ग्रहोपग्रहवेधतः । शुभाशुभफलं सर्वं तदिहापि विचिन्तयेत् ।। ११।।

भावार्थ ।। अब नक्षत्र-चरणों के अक्षर से उत्पन्न शतपद नामक चक्र का उल्लेख किया जाता है ।। नाम के आदि वर्ण से नक्षत्र-राशि एवं अंश का ज्ञान प्राप्त करें । ग्यारह तिरछी तथा ग्यारह ऊर्ध्वाधर रेखाएं खींच कर १०० कोष्ठक का चक्र तय्यार करें । उनमें ईशान कोण से क्रमशः अवकहड, मटपरत, नयभजख तथा गसदचल — इन पाँच-पाँच वर्णों को लिखें । इन्हीं वर्णों में अइउएओ — इन पाँच स्वरों के संयोग से एक-एक के पाँच भेद करें । इस प्रकार अक्षरों के रखने से चक्र में चार स्तम्भ हो जाते हैं । कृत्तिकादि अभिजित् सहित चार-चार अक्षरों से युक्त भरणी पर्यन्त २८ नक्षत्र 112 अंशों के साथ होते हैं । जिस नक्षत्र के जिस अंश के कोष्ठ में पापग्रह अथवा शुभग्रह हो, वहाँ से पुरुष के अथवा देशादि के नाम के अक्षर से उत्पन्न नक्षत्र के अंश और नक्षत्र को तिर्यक् वेध करता है । शुभग्रह के वेधसे शुभ तथा अशुभग्रह के वेधसे अशुभ फल होता है ।

सर्वतोभद्र चक्र में ग्रह-उपग्रह के वेध से जो शुभाशुभ फल कहे हैं, वे सभी इसमें भी विचारणीय हैं ॥ १-११॥

अथ अंश चक्र प्रकरणम् ॥ अष्टाविंशोर्ध्वगा रेखा अष्टविंशति तिर्यगा:। अंशचक्रं भवत्येवं यदुक्तमादियामले ॥ १॥ कृत्तिकादीनि भान्यत्र पादाक्षर क्रमेण च। साभिजित्विन्यसेत्सर्वाण्यष्टाविंशति संख्यया ॥ २॥ यो ग्रहो यत्र ऋक्षांशे तं तत्रैव न्यसेद् बुध:। वेधयेत्सम्मुखं वर्णं क्रूरो वाथ शुभोपि वा ॥ ३॥ आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चाद्यिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम् ॥ ४॥ यस्य नामाक्षरं विद्धंमंशचक्रे ग्रहेण तु। क्रूरैरिष्टं शुभैर्हानिर्द्वयोर्द्वैर्मृत्युर्न संशय: ॥ ५॥ क्रूरो भयस्थिते वेधे मृत्युर्विघ्नं शुभाशुभै:। शुभोभयगते वेधे व्याधि: पीडा च बन्धनम् ॥ ६॥ वैधव्यं च विवाहे च यात्रायां न निवर्तते। रोगे मृत्यू रणे भङ्ग: क्रूरवेधे न संशय: ॥ ७॥ अद्रुम: सागरा नद्यो देवग्रामपुराणि च। क्रूरवेधे विनश्यन्ति नात्र कार्या विचारणा ॥ ८॥ चन्द्रऋक्षांशके वेधो भवेद्यद्यपरग्रहै:। तन्मासं तद्दिने वर्ज्यं सर्वदा शुभकर्मणि ॥ ९॥ इति अंशस्वर-चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ २८ तिरछी तथा २८ सीधी रेखा खींचने से अंश-चक्र बनता है। इस चक्रमें ईशान कोण की रेखा से, कृत्तिका से आरंभकर, अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों के चरणाक्षरों को रखना चाहिए। इस प्रकार जिस चरण पर जो ग्रह हो, उसे उसी नक्षत्र-चरण पर रखें तो वह अपने सामने वाले नक्षत्र-चरण का वेध करेगा। यदि शुभ ग्रह वेध करे तो हानि एवं दो-तीन पाप ग्रह वेध करें तो मृत्यु होती है। यदि एक रेखा स्थित दोनों के चरणों को क्रूरग्रह से वेध होता हो तो मृत्यु होती है। शुभ और पाप- दोनों ग्रह वेध करें तो विघ्न, दोनों शुभ ग्रह वेध करें तो व्याधि, बंधन और पीड़ा; केवल क्रूर ग्रह का ही वेध हो तो यात्री का न लौटना और रोगी की मृत्यु होजाना - यह कहना चाहिए। नाम-नक्षत्र को क्रूर ग्रह वेध करता हो तो नाश होता है। जिस नक्षत्र पर चन्द्रमा हो, उसभाग को भौमादि ग्रह वेध करते हों तो उस नक्षत्रांश एवं नक्षत्र को शुभ कार्य में त्याग देना चाहिए ॥ १-९॥ इति अंश-स्वर चक्र ॥

अथ चामर चक्राणि ॥ आदौ चक्रं समालिख्य छत्रत्रय सुशोभनम् । अश्विन्यादि न्यसेत्तत्र सप्तविंशति भानि च ॥१॥ अश्विनाद्यं मघाद्यं च मूलाद्यं च क्रमेण च । उत्तरे पूर्वदक्षे च एतच्छत्रत्रयं मतम् ॥२॥ प्रतीची मध्यरेखाग्रादीशानान्तं हयाधिपः । आग्नेयान्तं नराधीशास्तन्मध्ये च गजाधिपः ॥३॥ अन्येषां भूभृता मृक्षं यत्रच्छत्रे व्यवस्थितम् । तच्छत्रं तस्य भूपस्य शुभाशुभफलप्रदम् ॥४॥ चामरं कलशं वीणा छत्रं दण्डं पतद्ग्रहः । आसनं कीलकं रज्जुर्नव भेदाः प्रकीर्तिताः ॥५॥ छत्रत्रये स्थितः सौरिर्भगं तस्य विनिर्दिशेत् । फलं च चामरादीनां प्रत्येकं च वदाम्यहम् ॥६॥ चामरे चण्डता वायोरनावृष्टिश्च जायते । दुर्भिक्षं च भवेद्घोरं प्रजापीडा न संशयः ॥७॥ कलशस्थे भवेद्युद्धं रणे रोगे महद्भयम् । घातपातादिकं सर्वं जायते नात्र संशयः ॥८॥ वीणास्थेनार्कपुत्रेण पट्टराज्ञी विनश्यति । चलचित्तो भवेद्राजा भयभीता च मेदिनी ॥९॥ यदा क्रूरक्षत्रये सौरिश्छत्रे दण्डे पतद्ग्रहे । तदा तस्य भवेद्भङ्गश्छत्रस्यापि न संशयः ॥१०॥ आसनस्य भवेन्नाश आसनस्थे शनैश्चरे । युवराजक्षयः कीले बंधनं रज्जुसंस्थिते ॥११॥ सौम्ययुक्तोतिचारस्थः शनिरुक्तफलो नहि । वक्रगः क्रूरसंयुक्तः शनिरुक्तफलप्रदः ॥१२॥ शनि राहु कुजादित्या यदा जीवेन्दुसंयुताः । उत्तराधीशराष्ट्रां च निश्चितं छत्रभङ्गदाः ॥१३॥ क्रूरग्रह चतुष्कं च बुध चन्द्रेण संयुतम् । पूर्वच्छत्रविनाशाय कथितं पूर्वसूरिभिः ॥१४॥ एवं पापचतुष्कं च यदा शुक्रेन्दु संयुतम् । दक्षिणाधिपतेश्छत्रविनाशो भाषितो बुधैः ॥१५ एवमन्येषु राज्येषु यत्र यस्य च सम्भवः । उल्काग्रहसमायोगाच्छत्रभङ्गं विनिर्दिशेत् ॥१६॥ यथा दुष्टफलाः क्रूरास्तथा सौम्याः शुभप्रदाः । क्रूरयुक्तो बुधः क्रूरश्चन्द्रः शुभयुतः शुभः ॥१७॥ यथा दुष्टफलः सौरिस्तथा सौम्यफलो गुरुः । भौमह्नौ गुरु राहू च रविचन्द्रौ फले समौ ॥१८॥ यथा हानिकराः क्रूरास्तथा सौम्याः शुभङ्कराः । क्रूरयुक्तो भवेत् क्रूरश्चन्द्रः सौम्ययुतः शुभः ॥१९॥ सौम्य क्रूरा यदा छत्रे अष्टावेकत्र संस्थिताः । छत्रभङ्गो भवेत्तस्य परचक्रागमेन च ॥२०॥ अन्येषां भूभृतामृक्षं यत्र यत्र नृपत्रये। चामरा-

भा० टी०

अभिधानेन तस्य यन्नाम जायते ॥ २१ ॥ तत्तत्फलं तदा वाच्यमन्यदेशमहीपतेः । नृपतित्रयनाम्नैव न वाच्यं छत्रजं फलम् ॥ २२ ॥ भूपनामर्क्षगो राहुः केतुर्वा यदि संस्थितः । छत्रभङ्गो भवेत्तस्य विप्रदानेन भूपते ॥ २३ ॥ मृगयां साहसं यात्रां दुष्टाश्वगजवाहनम् । विग्रहं च त्यजेद्राजा छत्रस्थैः क्रूरखेचरैः ॥ २४ ॥ एवं ज्ञात्वा यदा राजा करोति ग्रहशान्तिकम् । यदुक्तं यामलेतंत्रे शान्तिः स्यात्तेन भूपते ॥ २५ ॥ इति छत्र चक्राणि ॥

भावार्थ ॥ अब चामर चक्र के विषय में कहते हैं। पहले तीन छत्र चक्र बना कर उसमें अश्विनी से रेवती तक नक्षत्रों को लिखें। जिस प्रकार आगे कहे गए कूर्मचक्र में पूर्वापर आदि रेखाओं में दिशा के विभाग से देशों का स्थापन किया है, उसी प्रकार पश्चिम से आरंभकर ईशान कोणस्थ देशों के स्वामी की संज्ञा हयाधिपति तथा अन्य कोणों से भी इसीप्रकार स्वामी गजाधिपति आदि की कल्पना कर, राजाओं के नाम के नक्षत्र जहाँ पर हों, उस चक्र से शुभाशुभ का विचार करना चाहिए। शनि, छत्र, दंड एवं पतद्ग्रह के नक्षत्रों में हो तो राजा का छत्रभंग होता है इत्यादि श्लोकों के अनुसार समझलें। यदि शनि शुभ ग्रह से युक्त अतिचारी हो तो पूर्वोक्त फल नहीं होता। यदि चार क्रूर ग्रह शुक्र तथा चन्द्रमा से युक्त हों तो दक्षिण दिशा में स्थित चक्र के राजा का नाश होता है। इसी तरह अन्य राजाओं का भी, जहाँ जिस चक्र में संभावना हो, नाश कहना चाहिए। जिस प्रकार क्रूर ग्रह दुष्ट फल देते हैं, उसी प्रकार शुभग्रह शुभफल देते हैं। जिस राजा के जन्म नक्षत्र पर शुभ-अशुभ ग्रह दोनों हों, उसके लिए शुभ फल होता है। अश्वपति, गजपति, नरपति नाम के तीनों चक्रों में जिस चामरादि खंड में अन्य राजाओं के नाम नक्षत्र एवं जन्म नक्षत्र पड़ें, उनकी वही संज्ञा होती है। उसी संज्ञा के अनुरूप उनका फल कहना चाहिए, केवल तीनों चक्रों के नाम से ही फल नहीं कहना चाहिए। दुष्ट फल को जानकर, यामलतंत्र में वर्णित विधान से ग्रह-शान्ति करने पर शुभ फल की प्राप्ति होती है ॥ १-२५ ॥ इति चामरछत्रचक्रवर्णनम् ॥

अथ सिंहासनचक्रम् ॥ इत्येवं सम्प्रवक्ष्यामि चक्रं सिंहासन त्रयम् । येन विज्ञानमात्रेण
क्रियते राज्यनिर्णयः ॥ १ ॥ सप्तविंशति नक्षत्रैरेकैकं च नवात्मकम् । अश्विनी मघामूलाद्यं पंचनाडीविभेदतः
॥ २ ॥ अश्विन्याद्युत्तरे भागे मघाद्यं पूर्वतः स्थितम् । मूलाद्यं दक्षिणे भागे ज्ञातव्यं नृपतित्रयम् ॥ ३ ॥ इतरेषु
च राज्येषु नृपनामर्क्षतो वदेत् । शुभाशुभमिदं सर्वं यस्य यत्र शनिस्थितः ॥ ४ ॥ नाडिकापञ्चवेधेन
एकैकस्यासनं भवेत् । आधारमासनं पट्टं सिंहं सिंहासनं तथा ॥ ५ ॥ आधारादिफलं सर्वमेकैकस्य वदा-
म्यहम् । ग्रहवेधवशाज्ज्ञेयं सौम्यक्रूरैः शुभाशुभम् ॥ ६ ॥ नृप आधार नाड्यृक्षे यदा पट्टेऽभिषेचितः । पराधीनगतं
राज्यं कुरुते नात्र संशयः ॥ ७ ॥ आसनस्थेन ऋक्षेण नीतियुक्तो भवेन्नृपः । प्रधानपुरुषादेशात्प्रजापालिकरो
भवेत् ॥ ८ ॥ पट्टऋक्षे यदा राजा चोपविष्टो यदासने । पूर्वराज्यस्थितेस्तुल्यां चिरं पालयते महीम् ॥ ९ ॥
सिंहरूपी भवेद्राजा सिंहऋक्षासने स्थितः । संग्रामस्य प्रियो नित्यमसाध्यो मन्त्रिणां सदा ॥ १० ॥ सिंहासन
गते ऋक्षे तेजस्वी भीषणाकृतिः । चलचित्तो भवेत् क्रोधी प्रजापीडाकरो नृपः ॥ ११ ॥ तत्कालेनुगते ऋक्षे
क्रूरनिर्वेध नाडिके । शुभावस्था शुभे लग्ने संस्थाप्यो नृप आसने ॥ १२ ॥ ईदृशे च समायोगे उपविष्टो
य आसने । उच्छिद्य शत्रुसङ्घातमेकच्छत्रं करोति सः ॥ १३ ॥ क्रूरग्रहस्य नाड्यां चेदुपविष्टो य आसने ।
बन्धनं भूमिनाशश्च तथा मृत्युश्च जायते ॥ १४ ॥ आधारऋक्षगः सौरिरनावृष्टिं करोति सः । दुर्भिक्षं
रौरवं घोरं प्रजामृत्युश्च जायते ॥ १५ ॥ आसने च यदा सौरिर्युद्धे भङ्गप्रदो भवेत् । अथवा व्याधिपीडा
च घातदुःखं च जायते ॥ १६ ॥ पट्टऋक्षे यदा सौरिः पट्टराज्ञी विनश्यति । प्रियो वाथ कुमारो वा
मंत्रिवर्गक्षयोपि वा ॥ १७ ॥ सिंहे सिंहासने वाथ यदा तिष्ठति सूर्यजः । तदा मृत्युर्न संदेहो यदि
शक्रसमो नृपः ॥ १८ ॥ शनि वाक्यार्कि माहेया यदा चन्द्रर्क्ष संयुताः । यस्यासनगता एते तदा तस्य
क्षयं कराः ॥ १९ ॥ क्रूरयुक्तोऽतिवक्रस्थः क्रूरनाडीगतोपि वा । आसने चन्द्रयोगेन कालरूपी शनै-

एचरः ॥२१॥ एवं शुभफलं दद्याद्देवमन्त्री न संशयः । करोति विपुलं राज्यं यस्यासनगतो भवेत् ॥२१॥
इति सिंहासनचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ अब तीन सिंहासन-चक्र के विषय में कहा जाता है. प्रत्येक सिंहासन-चक्र नौ-नौ नक्षत्रों के होते हैं, जिनमें पहला अश्विनी से, दूसरा मघा से तथा तीसरा मूल से रेवती तक नक्षत्रों का होता है। सिंहासन पाँच सीढ़ियों का होता है। सबसे नीचे की सीढ़ी की आधार संज्ञा, उससे ऊपर वाली की आसन, उससे ऊपर वाली की पट्ट, उससे ऊपर वाली की सिंह तथा सबसे ऊपर वाली की सिंहासन संज्ञा होती है। प्रत्येक आधारादि का शुभ तथा क्रूर ग्रह के वेध द्वारा शुभाशुभ फल कहना चाहिए। आधार स्थित नक्षत्र में राजा का राज्याभिषेक हो तो पराधीन रहकर राज्य करनेवाला, आसन में हो तो नीतिज्ञ तथा प्रजा में शान्ति-स्थापक, पट्ट में हो तो पृथ्वी का शासक, सिंह में हो तो पुत्र मित्र एवं मंत्रियों को असाध्य तथा सिंहासन में हो तो तेजस्वी, चंचलचित्त, क्रोधी तथा प्रजा को पीड़ा देने वाला होता है। राज्याभिषेक के समय का नक्षत्र ही चन्द्र नक्षत्र मानना चाहिए। वह क्रूर ग्रह के वेध से रहित हो तथा चन्द्रमा शुभ स्थिति में हो तो राज्याभिषेक करना चाहिए। ऐसा राजा प्राकृजयी तथा एकछत्र शासक होगा। क्रूर ग्रह की नाड़ी होने पर राज्य-नाश, बन्धन, मृत्यु आदि अशुभ फल होते हैं। आधार नक्षत्र पर शनि हो तो अनावृष्टि और प्रजा-पीड़ा, आसन पर हो तो युद्ध में पराजय अथवा क्लेश, पट्ट में हो तो पटरानी अथवा प्रिय कुमार अथवा मन्त्रियों का नाश एवं सिंह अथवा सिंहासन में हो तो इन्द्रतुल्य राजा की भी मृत्यु अवश्य होती है। यदि चन्द्र नक्षत्र पर शनि, राहु, सूर्य तथा मंगल एकत्र हों और आसन में हो तो राजा का नाश कहना। शनि क्रूरग्रह से मुक्त होकर अतिवक्री हो या क्रूरनाड़ी में गया हो तो कालरूप होता है। गुरु शोभन वर्ग आदि में होकर जिसके आसन में गया हो, उसके राज्य की वृद्धि होती है ॥ १-२१॥ इति॥

अथ कूर्मचक्रम् ॥ कूर्मचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं कोशलागमे। यस्य विज्ञानमात्रेण ज्ञायते देशविप्लवः ॥ १॥ यस्य शृङ्गैकदेशस्था देवास्त्रिंशत्कोटयः। सुमेरुः पृथिवीमध्ये श्रूयते दृश्यते न तु ॥२॥ तादृशाः पर्वताश्चाष्टौ सागरा द्वीपदिग्गजाः। सर्वे ते विधृता भूम्या सा धृता येन तं शृणु ॥३॥ दंष्ट्रया सा वराहेण विधृता सागरा धरा। मुस्ताखननतोयस्य शोभते मृत्तिकेव या ॥ ४॥ ईदृशोऽसौ महाकायो वराहः शेषमस्तके। तस्य चूडामणेरूर्ध्वं संस्थितो मशकोपमः ॥ ५॥ एवं विधः स शेषोऽपि कुण्डली भूमिसंस्थितः। कूर्मपृष्ठैकभागेन यज्ञतन्तुरिवाबभौ ॥ ६ ॥ वपुः स्कन्धः शिरः पुच्छनखांघ्रिप्रभृतीनि च। मानेन तस्य कूर्मस्य कथयामि प्रयत्नतः ॥ ७ ॥ शङ्कोः शतसहस्राणि योजनानि वपुःस्थितम् तदर्धेन भवेत्पुच्छं पुच्छार्धेन द्विकुक्षिकम्। ग्रीवा सायुतकोटीभिर्मस्तकं सप्तकोटिभिः ॥ ८॥ नेत्रयोरन्तरं तस्य कोटिरेकप्रमाणतः। मुखं कोटिद्वयं तस्य द्विगुणेन च पादयोः ॥ ९॥ अङ्गुलीनां नखाग्रेषु योजनान्ययुतावधि ॥ १०॥ एवं कूर्मप्रमाणं तु कथितं चादियामले। तस्योपरिस्थिता तत्र सप्तद्वीपयुता मही ॥ ११॥ कूर्माकारं लिखेच्चक्रं सर्वावयवसंयुतम्। पूर्वभागे मुखं तस्य पुच्छं पश्चिममण्डले ॥ १२॥ पूर्वापरं लिखेद्वेधं वेधं चोत्तरदक्षिणे। ईशानराक्षसे वेधं वेधमाग्नेयमारुते ॥ १३॥ नाभिशीर्षचतुष्पादकुक्षिपुच्छेषु संस्थितम्। तारात्रयांकिते तस्मिन् सौरिं यत्नेन चिन्तयेत् ॥ १४॥ अतिवृष्टिरनावृष्टिः शलभा मूषकाः शुकाः। स्वचक्रं परचक्रं च सप्तैता ईतयः स्मृताः ॥ १५॥ कृत्तिका रोहिणी सौम्यं कूर्मनाभिगतं त्रयम्। साकेतं मिथिला चम्पा कौशाम्बी कौशिकी तथा ॥ १६॥ अहिच्छत्रं गया विन्ध्यमन्तर्वेदी च मेखला। कान्यकुब्जं प्रयागश्च मध्यदेशो विनश्यति ॥ १७॥ रौद्रं पुनर्वसुः पुष्यं कूर्मस्य शिरसि स्थितम्। सगौडो हस्तिबन्धश्च पञ्चराष्ट्रं च कामरूः ॥ १८॥ चेरन्दी च तथा ज्ञेया मगधश्च तथैव च। रेवातटं च नेपालः पूर्वदेशो विनश्यति ॥ १९ ॥

भावार्थ॥ अब कूर्मचक्र के सम्बन्ध में कहते हैं। कूर्म का शरीर दश शंख योजन के बराबर होता है। इस कूर्म चक्र के ऊपर ही सातों द्वीप सहित पृथ्वी स्थित है। अन्य श्लोकों में कूर्म के विभिन्न अङ्गों के विस्तार का उल्लेख किया गया है। सभी अवयवों सहित कूर्म चक्र बनाये। कूर्म का मुख पूर्व दिशा में तथा पूँछ पश्चिम दिशा में रखनी चाहिए। इसमें श्लोक में वर्णित नियमानुसार नक्षत्रों को स्थापित करें। कूर्म चक्र द्वारा ग्रानि की स्थिति का विचार कर, सात प्रकार के भयों के संबंध में तथा विभिन्न देशों के शुभाशुभ के विषय में जानकारी प्राप्त की जाती है॥ १-१९॥

पूर्वाषाढाऽनलार्द्रा च त्रयाणां सम्मुखो व्यधः। मूले ब्रह्मादितीनां च वेधो गुविन्दुवज्रिणाम्॥ २०॥ आश्लेषा च मघा पूर्वा पादे आग्नेय गोचरे। अङ्ग वङ्ग कलिङ्गाश्च पूर्वजाश्चैव कोसलाः॥२१॥ डाहली च जयन्ती च तथा चैव सुलंजिका। उडियामं वराडं च अग्निदेशो विनश्यति॥२२॥ उत्तराहस्तचित्राश्च दक्षिणां कुक्षिमागताः। दर्दुरं च महेन्द्रं च वनवासं ससिंहलम्॥२३॥ तापी भीमरथी लङ्का त्रिकूटं मलयस्तथा। श्रीपर्वतश्च किष्किन्धा इति नश्यन्ति दक्षिणे॥२४॥ स्वाती विशाखा मैत्रं च कूर्मे नैर्ऋति गोचरे। नासिक्यं च सुराष्ट्रं च धृतमालवकं तथा॥२५॥ पर्यली च प्रकाशं च भृगुकच्छं च कोंकणम्। खेटापुरं च मोटेरं देशा नश्यन्ति तादृशाः॥२६॥ ज्येष्ठा मूलं तथाषाढा पुच्छे कूर्मस्य संस्थिताः। परावर्तं मरुत्कच्छमवंती पूर्वमालवम्॥२७॥ पारासरं बर्बरं च द्वीपं सौराष्ट्र सैंधवम्। जलस्थाश्च विनश्यंति स्त्रीराज्यं पुच्छपीडने॥२८॥ उत्तराषाढभत्रीणि पादे वायव्यगोचरे। गुर्जराढं यामुनं च मरुदेशं सरस्वती॥२९॥ जालंधरं वराटं च बालुकोदधिसंयुतम्। मेरुश्रृंगं विनश्यंति ये चान्ये कोणसंस्थिताः॥३०॥ नैपालं कीरकाश्मीरं गूंजनं खुरसानकम्॥३१॥ माथुरं म्लेच्छशतभादित्रयं चैव उत्तरां कुक्षिमाश्रितम्। देशश्च खशं केदारमंडलम्। हिमाश्रयाश्च नश्यंति देशा ये चोत्तराश्रिताः॥३२॥ रेवती अश्विनी याम्यं

पादे ईशानगोचरे गंगाद्वारं कुरुक्षेत्रं श्रीकंठं हस्तिनापुरम् ॥३३॥ अश्वचक्रैकपादाश्च गजकर्णास्तथैव च। विनश्यंति च ते सर्वे शनावीशानगोचरे ॥३४॥

भावार्थ॥ इन श्लोकों में यह बताया गया है कि कौन से नक्षत्र कूर्मचक्र के किस कोण में होने और वहाँ शनि के होने से कौन सा देश नष्ट होता है ॥२०—३४॥

सौरिः स्वदेशगो यत्र तत्र यत्नेन रक्षयेत्। परदेशस्थिते कुर्याद्विग्रहं पृथिवीपतिः ॥३५॥ यत्रस्थः पीडयेत्तत्र वेधस्थाने तथैव च। देशनामर्क्षगः सौरिर्भंगदाता न संशयः ॥३६॥ इति पृथ्वी कूर्मचक्रम् ॥

भावार्थ॥ यदि शनि अपने देश में वेध करता हो तो उस देश की प्रयत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। परदेश में वेध करता हो तो उस देश पर राजा को चढ़ाई करनी चाहिए। शनि जिस देश के नाम-नक्षत्र को वेध करता है, वह नष्ट हो जाता है॥३५-३६॥

अथ देशकूर्मः। पृथ्वीकूर्मः समाख्यातः कृत्तिकादियमांतकः। देशादिस्वस्वऋक्षादि वक्ष्ये कूर्मचतुष्टयम् ॥३७॥ पूर्ववच्चक्रमालिख्य देशनामर्क्षपूर्वकम्। देशकूर्मो भवेत्तत्र यत्र सौरिस्ततः क्षयः ॥३८॥ इति देशकूर्मः॥ नगरे नागरं धिष्ण्यं कृत्वादौ विलिखेत्ततः। सौरिस्थाने भवेद्दुष्टं वेधस्थाने तथैव च॥३९॥ इति द्वितीयकूर्मः॥ ग्राम कूर्मं समालिख्य ग्रामनामर्क्षपूर्वकम्। पूर्ववत्तत्रगः सौरिर्मध्यादौ भङ्गमादिशेत् ॥४०॥ इति नगर कूर्मचक्रम्॥ क्षेत्रजे क्षेत्रभान्यादौ कृत्वा कूर्मं यथास्थितम्। सौरिस्थाने विनाशः स्याज्जायते च महद्भयम्॥४१॥ इति क्षेत्र कूर्मचक्रम्॥

भावार्थ॥ कृत्तिका से भरणी नक्षत्र पृथ्वी-कूर्मचक्र होता है। नगरकूर्म में नगर के नक्षत्र को लिखना चाहिए। ग्राम के नक्षत्र से ग्राम कूर्म को लिखे। क्षेत्र के नक्षत्र से क्षेत्र कूर्म को

लिखे। जहाँ शनि हो, वहाँ नाश, विघ्न तथा भय समझना चाहिए॥ ३७—४१॥

अथ गृहकूर्मचक्रम्॥ गृहकूर्मं समालिख्य गृहद्वारमुखस्थितम्। गृहनामर्क्षपूर्वं तु कृत्वा वीक्ष्यं शुभाशुभम्॥४२॥ गृहमध्यगतः सौरिः शोकसंतापकारकः। द्वारे विद्युत्प्रदो ज्ञेयः पावके वह्निदायकः॥४३॥ ज्ञेयो मृत्युप्रदो याम्ये राक्षसे राक्षसाद् भयम्। वारुणे शुभदो ज्ञेयो वायव्ये शून्यताप्रदः॥४४॥ अर्थलाभप्रदः सौम्ये शांभवे सर्वसिद्धिदः। सौरिर्बलाधिको दुष्टः स्वल्पवीर्यः शुभावहः॥४५॥ समकालं पीडयेदत्र भानुजः कूर्मपञ्चकम्। तत्र स्थाने महाविघ्नं जायते नात्र संशयः॥४६॥ दुष्टस्थानगते मंदे कर्तव्यं तत्र शांतिकम्। यदुक्तं यामले तंत्रे सर्वविघ्नविनाशनम्॥४७॥ कूर्मचक्रं महाचक्रं कथितं चादियामले। त्रिकालविषयं ज्ञानं पाणिस्थं तेन जायते॥४८॥ इति कूर्मपंचचक्राणि॥

भावार्थ। अब गृहकूर्म-चक्र के विषय में कहते हैं॥ गृह के नाम-नक्षत्र से गृहद्वार में कूर्म के मुख की कल्पना कर चक्र तय्यार करें। इसमें शनि की स्थिति के अनुसार फल का विचार करना चाहिए। शनि दुष्ट स्थान में हो तो विघ्न-नाशक शान्ति-कर्म करना चाहिए॥४३-४८॥

अथपद्मचक्रम्॥ पद्माकारं लिखेच्चक्रमष्टपत्रं सुशोभनम्। कोष्ठकं नवमं मध्ये पद्मचक्रं प्रजायते॥१॥ कृत्तिकादीनि भान्यत्र त्रीणि त्रीणि यथाक्रमम्। मध्यकोष्ठादिरुद्रान्तं सप्तविंशति विन्यसेत्॥२॥ नवखंडा धरित्रीयं नवभागेषु संस्थिता। यत्र खण्डे स्थितः सौरिः खण्डं तच्च विनश्यति॥३॥ भद्राश्वः किंपुरुषं च हरिवर्षस्तथैव च। मेरुश्च दक्षिणे देशे खण्डोयमीरितस्त्रिभिः॥४॥ रम्यं हिरण्मयं चैव कुरुखण्डस्तथैव च। मेरुश्चोत्तरतश्चैव त्रिभिः प्रोक्तादियामले॥५॥ केतुमालश्च यो नाम खण्डो मेरुश्च वारुणे। भरतेषु च विख्यातो पूर्वदिङ्मेरुतः स्थितः॥६॥ इलावृतश्च नामानि खण्डोयं मेरुसंस्थितः। नवखण्डमिदं प्रोक्तं कथितं चादियामले॥७॥ इति पद्मचक्रम्॥

भावार्थ॥ अष्टपत्र एवं नवकोष्ठ का सुन्दर पद्म चक्र बनायें। सभी कोष्ठों में कृत्तिका से तीन-तीन नक्षत्र मध्यकोष्ठ से ईशानकोण तक लिखें। जहाँ शनि हो, वहाँ नाश होता है। श्लोक मे विभिन्न खण्डों के नामों का उल्लेख किया गया है॥ १-७॥

अथ सप्तद्वीप फणि-चक्रम्॥ कृत्तिकादि लिखेच्चक्रं सर्पाकारं फणीश्वरम्। सप्तनाडी समायुक्त तत्र वेधं विलोकयेत्॥१॥ नाड्येकैक समायोगे जम्बूद्वीपादि गण्यते। सप्तद्वीपा: क्रमेणैव तत्र सौरिं विचिन्तयेत्॥२॥ जम्बूद्वीपस्तथा शाक: कुश: क्रौञ्चश्च शाल्मल:। गोमेद: पुष्करद्वीप: पीड्यन्ते सौरिपीड-या॥३॥ इति सप्तद्वीप फणि चक्रम्॥

भावार्थ॥ कृत्तिका से सप्तनाडियों युक्त एक सर्पाकार चक्र लिख कर, उसमें वेध को देखे। जहाँ शनि हो, वहाँ पीड़ा होगी। जम्बू, शाक, क्रौंच, शाल्मली, गोमेद, कुश तथा पुष्कर-ये सात द्वीप हैं। शाक द्वीप के बाद कुशद्वीप कास्थान है॥ १-३॥ इति॥

अथ राहु कालानल-चक्रम्॥ अथात: सम्प्रवक्ष्यामि व्याख्याता ब्रह्मयामले। राहुकालानली यात्रा सद्य: प्रत्ययकारिणी॥१॥ ग्रह योगवशाद्यात्रा ज्योति:शास्त्रेषु भाषिता। या सा शुभेषु कार्येषु फलदा न तु संगरे॥२॥ यस्यच्छायाप्रभावेण छाद्येते शशिभास्करौ। तस्य राहो: प्रभावञ्चव-क्ष्येऽहं रणकर्मणि॥३॥ केचिन्मूर्खा वदन्त्येव ग्रहो राहुरकारणम्। यतो वर्षे दिने लग्ने आधिपत्यं न दृश्यते॥४॥ आधिपत्ये स्थिता ये च वर्षे मासे दिने तथा। ते चाधिकारिणो ज्ञेया राहुराजेति यामले॥५

भावार्थ॥ अब राहु कालानल चक्र के विषय में कहते हैं, जिससे यात्रा सिद्धि दायक होती है। राहु ग्रह नहीं है, क्योंकि वर्ष, मास, दिन किसी परभी उसका आधिपत्य नहीं है। जिस राहु का वर्ष, मास, दिन पर आधिपत्य है वह राजयामल में कहा गया है॥ १-५॥

वेदागमपुराणेषु व्याख्यातो राहुखेचरः । तस्य माहात्म्यमज्ञात्वा मिथ्या जल्पति स्वल्पवित् ॥६॥ दुष्टारिष्टेषु सर्वेषु जातकादिषु गण्यते । सद्यः प्रत्ययदो राहुः स कथं स्यादकारणम् ॥७॥ यः कालरूपो भ्रमति संहारेण महीतले । स वक्रदंष्ट्रया रौद्रो ज्ञेयो राहुर्नसंशयः ॥८॥ ग्रहा ग्रासभयाद्यस्य सृष्टिमार्गे भ्रमन्ति च । तस्य नामान्यहं वक्ष्ये मुखपुच्छक्रमेण च ॥९॥ राहुश्चैव तमः पातः स्वर्भानुः सिंहिकासुतः । दैत्यच्छाया शिरोवक्त्रं ग्रहारिश्च विधुन्तुदः ॥१०॥ पुच्छं केतुः शिखी सर्पो गुदं गुह्यं तटं मतम् । उत्पातो विषगर्भश्च धूम्ररूपो ग्रहान्तिमः ॥११॥ ऋक्षाधारगतो राहुः सर्परूपेण संस्थितः । तस्य चक्रं प्रवक्ष्यामि राहुकालानलात्मकम् ॥१२॥ शलाका सप्तकं चक्रमीशादौ कृत्तिकादिकम् । अष्टाविंशति नक्षत्रं साभिजित्सव्यमालिखेत् ॥१३॥ यत्रर्क्षे संस्थितो राहुर्वदनं तद्विनिर्दिशेत् । मुखात्पञ्चदशे ऋक्षे तस्य पुच्छं व्यवस्थितम् ॥१४॥ एकोत्तरशतं संख्या जायन्ते यत्र केतवः । व्याप्नुवन्ति जगत्सर्वं सह सार्कसमत्विषः ॥१५॥ राहुभुक्तानि ऋक्षाणि जीवपक्षे त्रयोदश । त्रयोदशैव भोग्यानि मृतपक्षः प्रकीर्तितः ॥१६॥ मृतपक्षे मुखं तस्य गुदं जीवाङ्गमध्यमम् । एवमङ्गद्वयो राहुर्ज्ञातव्यः स्वरपारगैः ॥१७॥ जीवपक्षे क्षपानाथे मृतपक्षे रवौ तथा । तस्मिन्काले शुभा यात्रा विपरीता तु हानिदा ॥१८॥ चन्द्रादित्यौ यदा युक्तौ जीवपक्षे व्यवस्थितौ । तत्र क्षेमं जयो लाभो यात्राकाले न संशयः ॥१९॥ मृतपक्षे यदा काले संस्थितौ शशिभास्करौ । तदा हानिर्भयं भङ्गो मृत्यू राज्ञं प्रजायेत ॥२०॥ जीवपक्षे स्थिते चन्द्रे कार्यं स्यादमृतोपमम् । मृतपक्षे मृतं ज्ञेयं यतश्चन्द्रबलाबलम् ॥२१॥ इति द्विधाङ्गराहुचक्रम् ॥

भावार्थ॥ राहु की गणना जातक ग्रंथों में अरिष्टके रूप में की जाती है। राहु के अनेक नाम हैं । इसकी पूँछ को 'केतु' कहते हैं । राहु के चक्र को 'राहुकालानल' कहा जाता है । सप्तशलाका में ईशानकोण से कृत्तिकादि २८ नक्षत्रों को लिखें । जिस नक्षत्र पर राहु हो, वहीं राहु का मुख होता है,

मुख से १५वें नक्षत्र पर राहु की पूँछ होती है। केतुओं की संख्या २०१ कही गई है। जिस नक्षत्र पर राहु हो, उससे पीछे के १३ नक्षत्रों की जीवपक्ष संज्ञा होती है। राहु का मुख मृतपक्ष में तथा पूँछ जीवपक्ष में समझनी चाहिए। जिस समय जीवपक्ष के नक्षत्रों में चन्द्रमा हो और मृतपक्ष के नक्षत्रों में सूर्य हो, उस समय यात्रा करने से शुभ फल की प्राप्ति होती है, अन्यथा हानि होती है। यदि यात्रा के समय चन्द्रमा और सूर्य दोनों जीवपक्षमें हों तो लाभ एवं मृतपक्ष में हों तो हानि होती है, क्योंकि सभी कार्यों में चन्द्र बल ही प्रधान माना गया है ॥ ६-२१॥ इति द्वियांग राहु चक्रम् ॥

अथ पञ्चाङ्ग राहुः॥ अथ पञ्चाङ्ग भेदेन राहुचक्रं वदाम्यहम्। मुखोदरौ गुदं पुच्छं कपालं तस्य पञ्चमम् ॥१॥ राहुः पातस्तमो बिम्बं संहारे वक्रगो ग्रहः। धूम्रपुच्छो ग्रहग्रासः सूर्याङ्कः केतुरुच्यते ॥२॥ मुखाद्यङ्गस्य नामानि फलं चापि वदाम्यहम्। भ्रमणाच्चन्द्रसूर्यस्य पञ्चाङ्गेषु विधुन्तुदः॥३॥ यत्रर्क्षे संस्थितो राहुस्तस्य नामानि वच्म्यहम्। गलितं कर्तरी जिह्वा चन्द्रगं वदनं तथा ॥४॥ राहुऋक्षाग्रतो यानि भुक्तभानि त्रयोदश। उदरं सम्पुटं जीवं कामाङ्गं जठरं च हृत् ॥५॥ इति द्वितीयाङ्गम् ॥ उदरादग्रनक्षत्रं यत्पञ्चदशमं मुखात्। गुदमुद्गिलितं गुह्यं केतुश्चन्द्राङ्ग कर्तरी ॥६॥ इति तृतीयाङ्गम् ॥ गुदभान्यगतो यानि ऋक्षाणि रससंख्यया। पुच्छं सूर्याङ्ग वज्राङ्गं पृष्ठो मृत्युः क्रमेण च ॥७॥ शेषाणि सप्तभान्यत्र मध्यस्थान्यास्य पुच्छयोः। कपालं मस्तकं शीर्षं रुद्राङ्गं भोग्य मण्डलम् ॥८॥ इति पञ्चमाङ्गम्

भावार्थ॥ पाँच अङ्गों के भेद से राहु चक्र इस प्रकार होता है— मुख, उदर, गुद, पुच्छ और कपाल — ये पहले पाँच अंग हैं। चन्द्र-सूर्य के भ्रमण से पाँचों अंगों के नक्षत्रों में राहु जहाँ हो, उसके गलित, कर्त्तरी, जिह्वा, चन्द्रग, वदन नाम हैं। राहु के नक्षत्र से आगे १३ भुक्त नक्षत्रों की उदर, संपुट, जीव, कामांग, जठर तथा हृदय संज्ञा है। गुदनक्षत्र से आगे ६ नक्षत्रों की पुच्छ,

सूर्याङ्ग: वज्रांग, पृष्ठ तथा मृत्यु संज्ञायें हैं। मुखपुच्छ के मध्य में ७ नक्षत्रों को कपाल, मस्तक, शीर्ष, रुद्राङ्ग तथा भोग्य मंडल कहते हैं॥१-८॥

स्थिर रूपस्थितो भानुश्चररूपश्च चन्द्रमा:। क्रमेणैकैक योगानां वक्ष्येहं योगपञ्चकम्॥९॥ राहुवक्त्रे स्थिते सूर्ये चन्द्रे कामाङ्गसंस्थिते। यायिनो विजयस्तत्र स्थायिनो भङ्गमाहवे॥१०॥ चण्डाङ्गसंस्थिते सूर्ये गुदे चन्द्रे समाश्रिते। अग्रयायी जयेद्युद्धे बलार्द्धं च क्षयं गते॥११॥ भास्करे गलिताङ्गस्थे चन्द्रे वजाङ्ग संस्थिते बलार्द्धं क्षयं याति किञ्चित्स्थायी जयी रणे॥१२॥ राहुनक्षत्रगो भानुश्चन्द्रो रुद्राङ्गगो रणे। स्थायिनो विजयो युद्धे यायिनो मृत्युमादिशेत्॥१३॥ यदाभवेतां चन्द्रार्कौ राहुवक्त्राङ्ग संस्थितौ। सैन्ययोश्च क्षयस्तत्र संदेहाद्यायिनो जय:॥१४॥ सविता जीवपक्षे च निशानाथो गुदे स्थित:। निर्दिष्ट: स्थायिनो भङ्गो यायिन: सक्षतो जय:॥१५॥ उदरस्थो यदा भानु: शशाङ्को वज्रमा-स्थित:। हेलया जीयते स्थायी यायी च म्रियते रणे॥१६॥ कामाङ्गस्थे दिवानाथे मस्तकस्थे निशाकरे। स्थायिनो विजयस्तत्र यायिनश्च कुलक्षय:॥१७॥ सम्पुटस्थो यदादित्यो जिह्वायां चन्द्रमा: स्थित:। स्थायी च भङ्गमायाति किञ्चिद्यायी जयी रणे॥१८॥ जठरस्थो यदा भानुश्चन्द्रस्तत्रैव संस्थित:। देवानपि जयेद्यायी किम्पुन: प्रतिमं बलम्॥१९॥ चन्द्राङ्गस्थो यदादित्य: सूर्याङ्गे चन्द्रमा: स्थित:। सम्पुटं भवेत्तत्र किञ्चिदागन्तुको जयी॥२०॥ गुदे तीक्ष्णांशु संयुक्ते कपालस्थोपि शीतगु:। यायी च भज्यते वश्यं स्थित: स्थायी जयं विना॥२१॥ गुदभे संस्थित: सूर्यो राहुभे संस्थित: शशी। यदा महाहवो घोर: किञ्चित्स्थायी जयी भवेत्॥२२॥ भानुक्षेत्रस्थितो भानू रुद्रक्षेत्रे च चन्द्रमा:। यायिनो मृत्युमाधत्ते जयलाभौ स्थितस्य च॥२३॥ सूर्याङ्गे च सहस्रांशुर्जिह्वायां शीतगु: स्थित:। यायिनश्च जयं दद्यात्स्थायिनो भङ्गमादिशेत्॥२४॥ पुच्छषट्के यदादित्यो जीवाङ्गे चन्द्रमा: स्थित:। यायी विजयते तत्र शक्रतुल्येपि

वैरिणि ॥२५॥ भास्करे राहु पृष्ठस्थे मृगाङ्के गुदमाश्रिते। समयुद्धं भवेत्तत्र किञ्चिद्यायी जयी भवेत् ॥२६॥ सूर्याचन्द्रमसौ यत्र वक्त्राङ्गे समुपस्थितौ। द्वयोस्तु बलयोस्तत्र वधो भवति निश्चितम् ॥२७॥ रुद्राङ्गस्थे दिवानाथे राहुजिह्वाङ्गतः शशी। स्थायिनस्तु जयस्तत्र भङ्गो भवति यायिनः ॥२८॥ कपाल संस्थिते सूर्ये सम्पुटस्थो यदा शशी। यायिना जीयते शत्रुरनायासेन नान्यथा ॥२९॥ मस्तकस्थे दिवानाथे रात्रिनाथे गुदस्थिते यायी च विजयी युद्धं स्थायिनश्च पराजयः ॥३०॥ राहुशीर्षस्थितो भानुर्भानुक्षेत्रे निशाकरः। अन्योन्य विग्रहो घोरो जायेत नरपालयोः ॥३१॥ यदा रुद्राङ्ग संयुक्तौ दिवानाथ निशाकरौ। बलद्वयं तदा याति शीघ्रतो यम मन्दिरम् ॥३२॥ इति पञ्चाङ्ग राहुकालानलम् ॥

भावार्थ॥ सूर्य स्थिर रूप तथा चन्द्रमा चर रूप है। इन दोनों के योग से पाँच योग होते हैं। राहु के मुख में सूर्य तथा चन्द्रमा कामाङ्ग में हो तो यायी (आक्रामक) की विजय होती है। यदि चन्द्रांग में सूर्य हो तथा तथा चन्द्रमा गुद में हो तो आगे चढ़ाई करने वाला विजयी होता है। सूर्य गिलितांग तथा चन्द्रमा गुद में हो तो दोनों का नाश होता है। राहु नक्षत्र से ७ नक्षत्रों में रुद्राङ्ग में सूर्य-चन्द्र हों तो स्थायी की विजय एवं यायी की मृत्यु होती है। यदि सूर्य-चन्द्र वक्त्राङ्ग में हों तो दोनों सेनाओं का नाश होता है तथा सन्देह से यायी का लाभ होता है। सूर्य जीवपक्ष में तथा चन्द्रमा गुद में हो तो स्थायी की हार होती है तथा यायी चोट खाकर विजयी होता है। संपुट में सूर्य तथा जिह्वा में चन्द्र हो तो स्थायी की हानि तथा यायी की कुछ विजय होती है। इसी भाँति सूर्य चन्द्र की स्थिति के आधार पर, श्लोकों में वर्णित नियमानुसार स्थायी एवं यायी की हार-जीत के बारे में समझना चाहिए। मस्तक में सूर्य तथा गुद में चन्द्रमा हो तो युद्ध में यायी की विजय तथा स्थायी की पराजय होती है। यदि दोनों सूर्य-चन्द्र रुद्राङ्ग में हों तो दोनों सेनाओं का शीघ्र नाश होता है इत्यादि॥ ९-३२॥ इति पञ्चाङ्ग राहुचक्रम ॥

मू० सं० १२१८

भा० टी०

अथ षडङ्गराहुः॥ अथ षडङ्गभेदेन राहुचक्रं वदाम्यहम्। मुखं हृदुदरं गुह्यं पुच्छं मस्तकमेव च॥१॥ मुखैकं हृदये सप्त षड् ऋक्षाणि तथोदरे ऋक्षैकं गुह्यगं तस्य षट् पुच्छे सप्तमस्तके॥२॥ मुखाद्यङ्गस्य नामानि फलं चापि वदाम्यहम्। यथोत्तरक्रमेणैव चन्द्रार्कभ्रमणेन च॥३॥ यत्र धिष्ण्ये स्थितो राहुस्तस्य धिष्ण्यं प्रकीर्तितम्। गलितं कर्तरी जिह्वा वज्राङ्गं वदनं तथा॥४॥ राहुऋक्षाग्रतः सप्तभानि युक्तानि यानि च। तानि सम्पुटसंज्ञानि कामाङ्गं हृदयं मतम्॥५॥ हृदयाग्रे स्थिता याश्च तारका रससंख्यया। कामाङ्गं जठरं जीवं सम्पुटोदरसंज्ञकाः॥६॥ उदराच्चैकनक्षत्रं मुखात्पञ्चदशं स्फुटम्। गुदमुद्गिलितं गुह्यं केतुश्चन्द्रार्ककर्तरी॥७॥ गुदऋक्षाग्रतो यानि धिष्ण्यानि ऋतुसंख्यया। पुच्छं सूर्याङ्गं वज्राङ्गं पृष्ठे मृत्युस्तथैव च॥८॥ शेषाणि सप्तभान्यत्र मध्यस्थान्यास्यपुच्छयोः। कपालं मस्तकं शीर्षं रुद्राङ्गं भोग्यमण्डलम्। एवं षडङ्गनामानि विज्ञेयानि विचक्षणैः॥९॥ स्थिररूप स्थितो भानुश्चररूपस्तु चन्द्रमाः। क्रमेणैकैकशोऽङ्गानां योगषट्कं वदाम्यहम्॥१०॥ राहुवक्त्रे स्थिते सूर्ये चन्द्रे हृदयसंस्थिते। यायिनो विजयस्तत्र स्थायिनो भङ्ग आहवे॥११॥ मुखाङ्गसंस्थिते सूर्ये चन्द्रे चोदरगे रणे। अग्रयायी जयेद्युद्धं हेलया नात्र संशयः॥१२॥ भास्करे गिलिताङ्गस्थे चन्द्रे केत्वङ्गसंस्थिते। स्थायी भङ्गं समायाति यायी जयति सक्षतः॥१३॥ राहुऋक्षस्थितो भानुश्चन्द्रे पुच्छाङ्गसंस्थिते। स्थायिनो विजयं युद्धं यायिनो मृत्युमादिशेत्॥१४॥ राहुजिह्वाङ्गते सूर्ये चन्द्रे रुद्राङ्गसंस्थिते। बलावर्ती भवेत्तत्र सैन्ययोरुभयोरपि॥१५॥ राहुऋक्षस्थितो भानुश्चन्द्रस्तत्रैव संस्थितः। न कश्चिज्जयमाप्नोति सैन्ययोरुभयोः क्षयः॥१६॥ इति मुखादियोगषट्कम्॥

भावार्थ॥ अब षडङ्गराहु के सम्बन्ध में बताया जाता है। मुख, हृदय, उदर, गुदा, पूँछ और मस्तक - इन ६ अङ्गों से षडङ्गराहुचक्र का विचार किया जाता है। प्रत्येक स्थान के नक्षत्रों के नाम तथा सूर्य-चन्द्रादि के प्रभाव को श्लोकानुसार समझलें॥१-१६॥

हृदयस्थे दिवानाथे जठरस्थे निशाकरे। निर्दिष्टः स्थायिनो मृत्युर्यायी जयति निर्व्र- णः ॥१७॥ हृदयस्थो यदा भानुः शशाङ्को गुदमाश्रितः। हेलया जयते यायी स्थायी च म्रियते रणे ॥१८॥ कामाङ्गस्थे दिवानाथे पुच्छषट्के निशाकरे। स्थायिनो विजयस्तत्र यायिनश्च पराजयः ॥१९॥ सम्पुटस्थो यदादित्यो रूप्राङ्गे चन्द्रमाः स्थितः। यायी च भङ्गमाप्नोति किञ्चित् स्थायी जयी रणे ॥२०॥ कामाङ्गस्थे दिवानाथे चन्द्रे राहुमुखस्थिते। संग्रामे विजयी स्थायी यायिनो भङ्गमादिशेत् ॥२१॥ हृदयाङ्गे यदा युक्तौ चन्द्रादित्यौ व्यवस्थितौ। दैत्यानपि जयेद्यायी किमुनर्मानवं बलम् ॥२२॥ इति हृदयादि योग षट्कम्॥

भावार्थ॥ यदि सूर्य हृदय के नक्षत्रों में तथा चन्द्रमा पेट के नक्षत्रों में हो तो स्थायी की मृत्यु एवं यायी की विजय होती है। हृदय में सूर्य तथा चन्द्रमा गुद नक्षत्र में हो तो यायी की विजय तथा स्थायी की मृत्यु होगी। कामांग में सूर्य तथा पुच्छ में चन्द्रमा हो तो स्थायी की विजय एवं यायी की पराजय एवं हृदय में सूर्य तथा चन्द्रमा मुख में हो तो भी यही फल होता है। इसी प्रकार अन्य फल भी समझलें॥ १७-२२॥

उदरस्थे दिवानाथे निशानाथे गुदस्थिते समं युद्धं भवेत् तत्र किञ्चिद्यायी जयी रणे॥२३॥ सम्पुटस्थो यदा भानुः पुच्छे भवति चन्द्रमाः। यायिभङ्गो जयी स्थायी तत्र कालेन संशयः ॥२४॥ कामाङ्गस्थः सहस्रांशुर्मस्तकस्थो निशाकरः। याता भङ्गमवाप्नोति स्थानवासी जये रणे॥ २५॥ मालाकुदरगे यत्र निशेशो राहु वक्त्रगः। अग्रयायी क्षयी तत्र स्थायी जयति नान्यथा॥ २६॥ स्वर्भा- नूदरगो भानुर्हृदये तारकाधिपः। अनायासेन संग्रामे यायिनो जयमादिशेत् ॥२७॥ उदराङ्गे यदा युक्तौ चन्द्रादित्यौ व्यवस्थितौ। तदा सन्धिर्न सन्देहः सैन्ययो रुभयोरपि॥२८॥ इत्युदरादि योगषट्कम्॥

भावार्थ। विभिन्न नक्षत्रों में तथा राहु के विभिन्न अङ्गों में सूर्य चन्द्र की स्थि- ति का यायी तथा स्थायी पर क्या प्रभाव होता है, इसके ६ योग श्लोकों में स्पष्ट किए गए हैं॥ २३-२८॥

भृ० सं० १२१८

भा० टी०

मू० सं० ४२७३

भा० टी०

केतुधिष्ण्यस्थिते सूर्ये चन्द्रे पुच्छाङ्गसंस्थिते। यायिभङ्गो जयी स्थायी भवितं ब्रह्म-यामले॥२९॥ गुदे तीक्ष्णांशु संयुक्ते कपालस्थे निशाकरे। यायी च भज्यते तत्र स्थायी जयति नान्यथा॥ ॥३०॥ गुदर्क्षसंस्थिते सूर्ये राहुऋक्षस्थितः शशी। महाहवो भवेद्घोरः किञ्चित् स्थायी जयी रणे॥ ३१॥ भानुरुद्गिलिते ऋक्षे शशभृत्सम्पुटे तदा। यायिनो विजयस्तत्र स्थायिनो भङ्गमादिशेत्॥३२॥ गुह्याङ्के वर्तते भानुर्जठरे रोहिणीपतिः। दण्डयित्वा रिपोः सैन्यं याताभ्येति निजालयम्॥३३॥ गुह्ये दिनकरो यत्र तत्र वै यामिनीकरः। समं युद्धं भवेत्तत्र किञ्चिदागन्तुके जयः॥३४॥ इति गुदादि योग षट्कम्॥

भावार्थ॥ इन श्लोकों में गुद नक्षत्रों में सूर्य तथा चन्द्रमा की विभिन्न स्थितियों के प्रभाव का फल कहा गया है॥२९॥३४॥

सूर्याङ्कस्थः सहस्रांशुर्जिह्वायां शीतगुः स्थितः। स्थायिनो विजयं विद्याद् या-यिनश्च पराभवः॥३५॥ पुच्छक्षेत्रे स्थिता भानू रुद्रक्षेत्रे तु चन्द्रमाः। यायिनो मृत्युमायान्ति जयलाभौ च स्थायिनः॥३६॥ पुच्छषट्के यदा भानुः कामाङ्के चन्द्रमाः स्थितः। यायी विजयते तत्र शक्रतुल्ये ऽपि वैरिणि॥३७॥ अंशुमाली भवेद् वज्रे जठरे तु सुधाकरः। आदत्ते ऽरिश्रियं जित्वा सर्वान्यायी रणाङ्गणे॥३८॥ भास्करे राहुपुच्छस्थे मृगाङ्के गुदमाश्रिते। समं युद्धं भवेत्तत्र किंचिद्यायी जयी भवेत्॥३९॥ सूर्याचन्द्रमसौ यत्र वज्राङ्के संस्थितौ यदा। सौम्ययोरुभयोस्तत्र वधो भवति निश्चि-तः॥४०॥ इति वज्राङ्क षट्कम्॥

भावार्थ॥ इन श्लोकों में पुच्छ नक्षत्रों में सूर्य तथा चन्द्रमा की विभिन्न स्थितियों के विभिन्न प्रभावों का वर्णन किया गया है। श्लोकों से अर्थ स्पष्ट करलें॥३५-४०॥

रुद्राङ्गस्थे दिवानाथे रुद्रजिह्वाङ्ग : शशी । स्थायिनस्तु जयस्तत्र भङ्गो भवति यायिन: ॥४१॥ राहुशीर्षस्थिते मित्रे शशाङ्के हृदि संस्थिते । विना युद्धेन गृह्णाति यायी करमरिश्रि-य: ॥४२॥ कपाल संस्थित: सूर्य: सम्पुटस्थो यदा शशी । यायिना जीयते शत्रु: स्थायिनो भङ्गमादिशेत् ॥ ४३॥ कपालसंस्थिते सूर्ये धिष्ण्यनाथे गुदस्थिते । यायिनो विजयो युद्धे स्थायिनस्तु पराजय: ॥४४॥ राहुशीर्षस्थितो भानु: पुच्छक्षेत्रे निशाकर: । अन्योन्यविग्रहं घोरं युद्धं भवति दारुणम् ॥४५॥ दिनेशो राहुरुद्राङ्गे चन्द्रस्तत्रैव संस्थित: । विनाशं कोशराष्ट्रस्य यायिनो मृत्युमादिशेत् ॥४६॥ इति कपाल योगषटकम् ॥

भावार्थ॥ रुद्रांग में सूर्य तथा राहु-नक्षत्र में चन्द्रमा हो तो स्थायी की विजय एवं यायी की हानि होती है। अन्य श्लोकों में शीर्षस्थान में सूर्य तथा विभिन्न स्थानों में चन्द्रमा के फल का वर्णन किया गया है, उसे समझलें ॥४१-४६॥

हृदयादीनि-चाङ्गानि जिह्वान्तानि क्रमेण-च । दशसंख्यान्यहं वक्ष्ये राहुचक्रस्य मध्यत: ॥१॥ पुष्पितं फलितं चैव निष्फलं झटितं गुदम् । राजसं तामसं वृद्धं मृतं जिह्वा क्रमेण च ॥२॥ पुष्पिते त्रीणि चत्वारि फलिते निष्फले त्रयम् । झटिते त्रीणि ऋक्षाणि गुदे चैकं भवेत्तथा ॥३॥ राजसे त्रीणि ऋक्षाणि तामसे च तथा त्रयम् । वृद्धे चतुष्टयं त्रीणि मृतौ चैकं तथा मुखे ॥४॥ त्रीणि पुष्पितऋक्षाणि क्षेमलाभकराणि-च । शत्रुभङ्गे भवेद् युद्धे यात्रा मासेन लाभदा ॥५॥ ततश्चत्वारि धिष्ण्यानि पक्षैकेन फलन्ति च । गजवाजि धनं देशं यायी तु लभते ध्रुवम् ॥६॥ अफलाख्यत्रिधि-ष्ण्येषु षण्मासे यायिनं प्रति । सन्धिं सेवां तथा देशं यायी प्राप्नोति निश्चितम् ॥७॥ फलं प्राप्नोति वर्षेण झटितैश्च त्रितारकै: । गोधनान्यरिवृन्दानां यायी लुण्ठति च ध्रुवम् ॥८॥ गुदऋक्षे जयंलक्ष्मीं

भा० टी०

पद्मिनीं प्रियवादिनीम्। रूपयौवन सम्पन्नां स्त्रियं प्राप्नोति निश्चितम्॥ ९॥ विग्रहस्य भवेद्वृद्धिर्युद्धे भङ्गस्तथैव च। रोगपीडा भवेद्धर्मं राजसाख्यैस्त्रितारकैः॥१०॥ हस्त्यश्वपुत्रमित्रादि देशकोशपरिग्रहाः। षड्भिर्मासैर्विनश्यंति याधिनस्तामसात्रये॥११॥ तामसोग्रे चतुष्के च तारका वृद्धसंज्ञकाः। सर्वनाशकराः प्रोक्ता मासैकेन न संशयः॥१२॥ ततस्त्रिमृत्युऋक्षाणि राज्ञां मृत्युकराणि च। अर्थनाशश्च युद्धं च पक्षैकेन फलं स्मृतम्॥२३॥ युद्धे भङ्गं महाभीति द्रव्यनाशं कुलक्षयम्। सद्यो मृत्युं लभेत्पापी राहुचक्रे सुनिश्चितम्॥२४॥ इति दशाङ्ग राहुकालानल शुभाशुभ फलम्॥

भावार्थ॥ हृदय से जिह्वा पर्यन्त (१) पुष्पित, (२) फलित, (३) निष्फल, (४) झटित, (५) युद्ध, (६) राजस, (७) तामस, (८) वृद्ध, (९) मृत और (१०) जिह्वा – इन दस अङ्गों वाला दशाङ्ग राहुचक्र होता है। जीवपक्ष के प्रथम ३ नक्षत्रों की पुष्पित, बाद के चार नक्षत्रों की फलित, उसके बाद तीन नक्षत्रों की निष्फल, उससे आगे के ३ नक्षत्रों की झटित, उसके बाद १ नक्षत्र की युद्ध, फिर ३ नक्षत्रों की राजस, फिर ३ तामस, फिर ४ नक्षत्रों की वृद्ध, फिर ३ नक्षत्रों की मृत और उसके बाद १ नक्षत्र की मुख संज्ञा है। इस राहुचक्र में युद्ध में भय, महाभय, द्रव्य की हानि, कुल का नाश तथा मृत्यु का फल विचारा जाता है, जो श्लोकों में वर्णित है॥ १-२४॥

युद्धकाले यदा शीघ्रं यात्रायोगो न लभ्यते। उत्पाद्यौ तौ तदा शीघ्रं तत्कालेन्दु दिवाकरौ॥ १॥ इष्टनाड्यो हता धिष्ण्यैः षष्टिभागावशेषके। अश्विन्यादीन्दुभुक्तेन फलं तत्काल चन्द्रमाः॥२॥ चन्द्रवत्साधयेदर्कमृक्षस्थं चेष्टकालिकम्। यतोऽहोरात्रमध्ये तौ विभ्रान्तौ धिष्ण्यमण्डले॥३॥ स्थिरचक्रे यथाप्रोक्तं चन्द्रादित्यफलाफलम्। परचक्रेऽप्यनेनैव प्रकारेण फलं वदेत्॥४॥ सर्वेषु शुभकार्येषु यात्राकाले विशेषतः। सर्वकाले शुभश्चन्द्रो ज्ञेयो हृदि गुदोदरे॥ ५॥ मुखपुच्छकपाल-

-स्पे ग्रामके राहुवक्त्रगे । बन्धनं हानिमृत्युश्च सर्वकार्येषु जायते ।।६।। गुदसम्पुटगे चन्द्रे विवाहे नन्द-न्ति द्वयम् । नैःस्वं विद्वेषवैधव्यं मुखे पुच्छे च मस्तके ।।७।। पुष्पिते फलिते धिष्ण्ये प्रश्नकाले ग्रामीशुभः । अफले झटिते मध्यो मृत्युः शेषाङ्के विधौ ।।८।। ऊर्ध्वं च खेचरं चक्रमधो भूचरमु-च्यते। उभयोः सन्निपातेन राहुकालानलं मतम् ।।९।। न लोभैर्न भयैः स्नेहैर्न देयं कार्यकारणैः । कालानलमिदं चक्रं गोपनीयं प्रयत्नतः ।।१०।। चिरकालस्थिते भक्ते सुपरीक्ष्य पुनः पुनः । तस्मिन्न शिष्ये प्रदातव्यं राहुकालानलात्मकम् ।।११।। इति राहुकालानलं चक्रम् समाप्तम् ।।

भावार्थ।। युद्ध के समय यदि शीघ्र ही यात्रा का योग प्राप्त न हो तात्कालिक चन्द्र एवं सूर्य का साधन करके योग का विचार करना चाहिए । चन्द्रमा की भाँति ही इष्ट कालिक सूर्य के नक्षत्र का भी साधन करना चाहिए। शेष बातें श्लोकानुसार समझलें। यह चक्र उसी शिष्य को देना चाहिए जो बहुत समय तक सेवा कर चुका हो।। १-११।।

अथ सूर्य कालानलम् ।। ऊर्ध्वगास्त्रित्रिशूलाग्रास्तिस्रस्तिर्यक् च संरुध्यताः द्वेद्वे नाड्यौ स्थिते कोणे शृङ्गयुग्मं तथैकया ।।१।। मध्ये त्रिशूलदण्डो यो भानुभाच्चं भमण्डलम् । साभिजि-च्च प्रदातव्यं सव्यमार्गेण सर्वदा ।।२।। नामऋक्षं स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्। अधो गतैस्त्रिनक्ष-त्रैरुद्वेगो वधबन्धनम् ।।३।। कोणाष्टके जयो लाभः कुक्षिषट्के तथा पुनः । शृङ्गयुग्मे रुजो भङ्गो मृत्युः शूलं त्रये स्फुटम् ।।४।। सूर्यभात् त्रिचतुःपञ्चरससप्ताष्टगोमिते । गतगम्यर्क्षके लाभजयौ शेषे रुजो मृतिः ।।५।। विवाहे विग्रहे युद्धे रोगार्ते गमने तथा। सूर्यकालानलं चक्रं ज्ञातव्यञ्च प्रयत्नतः ।।६।। रोगे च कुजनक्षत्रं दिनऋक्षं तु युद्धके । प्रयाणे कृत्तिकालेख्यमन्यत्रार्कं प्रदीयते ।। ७।। इति सूर्यकालानलं समाप्तम् ।।

भावार्थ ॥ ऊपर-नीचे तीन रेखाएं, जिनके अग्रभाग में त्रिशूल हो, खींचें, तथा तीन रेखाएं आड़ी खींचें। दो-दो नक्षत्र कोण में तथा एक-एक नक्षत्र दोनों शृंगों में रक्खें। मध्य त्रिशूल के नीचे से सूर्य के नक्षत्र से अभिजित सहित २८ नक्षत्रों को क्रमशः रक्खें। जहाँ नाम का नक्षत्र हो, उससे शुभाशुभ का विचार करें। अधः रेखा स्थित ३ नक्षत्रों में उद्वेग, वध और बंधन; कोण के आठ तथा मध्य के ६ नक्षत्रों में विजय और लाभ; दोनों शृंग के नक्षत्रों में रोग और हानि तथा त्रिशूल के ९ नक्षत्रों में नाम का नक्षत्र हो तो मृत्यु होती है। विवाह, विग्रह, युद्ध, रोग तथा यात्रा के संबंध में इस सूर्यकालानल नक्षत्र से विचार करना चाहिए ॥ १-५ ॥ इति सूर्यकालानलचक्रम् ॥

अथ चन्द्रकालानलचक्रम् ॥ चन्द्रकालानलं चक्रं व्योमाकारं लिखेत्ततः। चतुर्दिक्षु त्रिशूलानि मध्यभिन्नानि कारयेत् ॥ १ ॥ पूर्वत्रिशूलमध्यस्थं दिनऋक्षादि लिख्यते। त्रिशूले च बहिर्मध्ये मध्ये बहिस्त्रिशूलके ॥ २ ॥ नामऋक्षं स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्। त्रिशूले चक्रबाह्ये च चक्रमध्ये तथैव च ॥ ३ ॥ त्रिशूलेषु भवेन्मृत्युर्मध्यमं बहिरष्टके। लाभक्षेमौ जयः प्रज्ञा चन्द्रगर्भे न संशयः ॥ ४ ॥ वर्जनीयं प्रयत्नेन प्रथमाष्टत्रिपञ्चकम्। ऋक्षं द्वाविंशकं चात्र कालरूपं न संशयः ॥ ५ ॥ दिनभाद् द्वे त्रयं शैलास्त्रितयं च चतुर्दशात्। चन्द्रकालानले काले एकविंशतितस्त्रये ॥ ६ ॥ लाभालाभं सुखं दुःखं जयं चैव पराजयः। चन्द्रकालानले चक्रे ज्ञानं संशयवर्जितम् ॥ ७ ॥ चन्द्राष्टके जयो लाभो मध्यसूर्याष्टके मतः। राह्वष्टके भवेद् व्याधिर्मृत्युः केतुचतुष्टये ॥ ८ ॥ इति चन्द्रकालानलम् ॥

भावार्थ ॥ एक गोलाकार चक्र बनाकर चारों दिशाओं में मध्यभाग को वेधता हुआ त्रिशूल बनाएं। पूर्वदिशास्थित त्रिशूल के मध्यभाग से दिन-नक्षत्र से त्रिशूल, उसके बाहर मध्य तथा मध्य बाहर एवं त्रिशूल में क्रमशः २८ नक्षत्रों को स्थापित कर, जहाँ नाम का नक्षत्र हो, उससे शुभाशुभ फल का विचार

करें। विचार का फल श्लोकानुसार समझलें ॥ १-८॥

अथ घोर कालानलम् ॥ शलाका सप्तकं चक्रं लिखित्वा चन्द्रभादितः। त्रिषु त्रिषु च ऋक्षेषु नव सूर्यादयो ग्रहाः ॥१॥ यदङ्के नाम नक्षत्रं दिनऋक्षादि जायते। फलं तस्य प्रवक्ष्यामि एकैकस्य यथाक्रमम् ॥२॥ भानुना शोक सन्तापौ शशाङ्कः क्षेमलाभदः। भूसुतो मृत्युमाधत्ते बुधे प्रज्ञा प्रजायेत ॥३॥ जीवे लाभः शुभं शुक्रे सूर्यपुत्रे महद्भयम्। राहुणा घातपातं च केतौ मृत्युर्न संशयः ॥४॥ यात्रा जन्म विवाहेषु संग्रामे विग्रहेऽपि वा। घोरकालानलं चक्रं ज्ञात्वा कर्म समारभेत ॥५॥ इति घोर कालानलम् ॥

भावार्थ॥ सप्तशला का चक्र लिखकर ईशान कोण से चन्द्रमा के नक्षत्र से नक्षत्रों को स्थापित कर, तीन-तीन नक्षत्रों पर सूर्यादि ग्रहों को स्थापित कर श्लोकानुसार विचार करना चाहिए ॥१-५॥

अथ सप्तशलाका चक्रम् ॥ तीर्यगूर्ध्वगता रेखाः सप्तसंख्या लिखेद्बुधः। कृत्तिकादीनि भान्यत्र साभिजिति क्रमेण च ॥१॥ भुक्तं क्रान्तं तथा भोग्यं विद्धं क्रूरग्रहेण भम्। शुभाशुभेषु कार्येषु वर्जनीयं प्रयत्नतः ॥२॥ यस्याभिधान नक्षत्रं विद्धं क्रूरग्रहेण च। देशो ग्रामः पुरं सैन्यं नरो नारी विनश्यति ॥३॥ इति सप्तशलाकाचक्रम् ॥

भावार्थ॥ सात तिरछी तथा सात सीधी रेखाएं खींच कर दो-दो रेखाएं कोणों में खींचें। फिर ईशान कोण की रेखा के आगे से कृत्तिकादि २८ नक्षत्रों को लिख कर, शुभग्रह तथा पापग्रह से वेध किए जाते हुए नक्षत्र द्वारा शुभाशुभफल का विचार करना चाहिए॥१-३॥

अथ वक्रचन्द्र चक्रम् ॥ वक्रेन्दु सदृशं चक्रं त्रित्रिशूल समन्वितम्। मध्ये द्वादशभान्यत्र षट् षष्ठे नवशूलके ॥१॥ मध्यशूलस्य मध्यस्थं शशभृदृक्षमादितः। सव्येन गणयेच्चक्रं यावद्यो धस्य नामभम् ॥२॥ शृङ्गे मृत्युर्जयो मध्ये पृष्ठे भङ्गो महाहवे। चातुरङ्गे कलौ कीटे द्वन्द्वयुद्धे

विशेषत: ॥३॥ इति वक्रचन्द्र चक्रम् ॥

भावार्थ॥ अर्द्धचन्द्र (टेढ़े चन्द्रमा) के समान त्रिशूल युक्त चक्र बनाकर, उसके मध्य में १२, पीठ पर ६ तथा त्रिशूल पर ९ नक्षत्र लिखकर, चन्द्रनक्षत्र के मध्य के शूल से नक्षत्रों को रखकर सव्यमार्ग से योधा के नाम-नक्षत्र तक गिनें तथा श्लोकानुसार शुभाशुभफल का विचार करें ॥१-३॥

अथ चतुरङ्ग सूर्य चक्रम् ॥ रेखात्रयं त्रिशूलाग्रं तिर्यग्रेखाषडन्वितम् । एकैककोणगा-स्तत्र मध्यादौ भानुभादित: ॥१॥ अधस्त्रिके भवेन्मृत्युश्चतुर्भि: कोणगै: शुभम् । मध्यमा द्वादश प्रोक्ता नवर्क्षं भङ्गकारकम् ॥२॥ इति चतुरङ्ग सूर्य चक्रम् ॥

भावार्थ॥ तीन सीधी रेखाऐं, जिनके अग्रभाग में त्रिशूल हों खींचें तथा ६ रेखा तिरछी खींचें। एक-एक रेखा कोण में खींच कर मध्यरेखा के नीचे से सूर्य-नक्षत्र से नक्षत्रों का न्यास कर, श्लोकानुसार फलाफल का विचार करें ॥१-२॥

अथ प्रथम मातृका चक्रम् ॥ षोडशोर्ध्वगता रेखा: पञ्चरेखाश्च तिर्यगा: । को-ष्ठकानां भवेत्षष्टिस्तत्राङ्काक्षर योजना ॥१॥ पूर्णिमादिविलोमाङ्कान् लिखेत्प्रतिपदान्तकान् । तदधो मातृका-न् लिख्य ङञणान्त स्वरोज्झितान् ॥२॥ योध्ययोर्नाम वर्णाङ्कान् मात्राभेदेन संयुतान् । मुनिभिस्तु हरेद्भागं शेष-ज्ज्ञेयं बलाबलम् ॥३॥ मातृहीने भवेद्भङ्गो जयो मात्राधिके रणे । मातृकाया: प्रभेदोऽयं तस्माज्ज्ञेय: प्रयत्नत: ॥४॥ इति प्रथम मातृका चक्रम् ॥

भावार्थ॥ सोलह सीधी तथा पाँच तिरछी रेखाऐं खींचकर ६० कोष्ठक का चक्र बनायें, उसमें अंक तथा अक्षर की योजना कर, पूर्णिमा से प्रतिपदा पर्यन्त विलोम रीति से अंकों को लिखें और उसके नीचे मातृका को लिखें, जिसमें ङ. ञ. ण वर्ण न हों। योद्धाओं के नाम के वर्ण

तथा मात्राओं के ऊपर के अंकों को एकत्र कर ७ का भाग देने पर जो शेष बचे, उससे बलाबल का विचार करें। मात्रांक से जो न्यून हो उसकी पराजय तथा जिसका शेष अधिक हो, उसकी विजय होगी ॥ १-४॥

अथ द्वितीय मातृका चक्रम् ॥ द्वादशोर्ध्वगता रेखाः पञ्च रेखाश्च तिर्यगाः। मातृकां प्रस्तारे तत्र षडन्त्यस्वरवर्जितान् ॥१॥ कोष्ठकाधो लिखेदङ्कान् पञ्चयुग्मं त्रिकन्त्रिकम्। षडुद्धन्द्वमष्टकं त्रीणि नवकैकं तथैव च ॥२॥ नामवर्णस्य या संख्या मात्रासंख्या तथैव च। पिण्डिता नवभिर्भक्ता जयो मात्राधिके रणे ॥३॥ इति ॥

भावार्थ ॥ बारह खड़ी तथा पाँच तिरछी रेखाओं से चक्र बना कर श्लोकानुसार जय-विजय का विचार करना चाहिए ॥ १-३॥

अथ तृतीय मातृका चक्रम् ॥ मनुमार्तण्डदोर्बाणतिथ्यश्वरसदिग्गजाः। नवान्तास्तदधः स्थाप्याः पञ्चस्वरकरवादितः ॥१॥ ङ, ञणौनान् हकारान्तान् नवधा कोष्ठकक्रमैः। नाममात्राक्षराङ्कैक्यं सप्तशेषाधिके जयः ॥२॥ इति ॥

भावार्थ ॥ दस सीधी तथा छः तिरछी रेखा से ४५ कोष्ठ का चक्र बनाकर श्लोकानुसार योद्धा के नाम-वर्ण से जय-पराजय सम्बन्धी विचार करना चाहिए ॥ १-२॥ इति ॥

अथ चतुर्थ मातृका चक्रम् ॥ भुवनादित्यदोर्बाणतिथिवेदाश्ववदिक् रसान्। वसुनन्दादिकान् लिख्य षडान्त्योज्झितमातृकान् ॥ १॥ युन्नामवर्णमात्राणां स्वाङ्कैर्योगेष्टशेषिते। मात्राधिको जयी युद्धे मात्राहीनः पराजयी ॥२॥ इति ॥

भावार्थ ॥ बारह सीधी तथा छः तिरछी रेखाओं से ५५ कोष्ठ का चक्र बना कर श्लोकानुसार योद्धाओं के नाम के वर्ण-मात्रा अङ्कों से जय-पराजय का विचार करें ॥१-२॥ इति ॥

अथ आयचक्रम्॥ आयचक्रे द्वादशोर्ध्वा रेखाः षट् तिर्यगाश्रिताः। मनुनक्षत्र दस्रा ऽर्क तिथि षट् सागरा ऽन्वयः॥ १॥ अथ सप्तदशाष्टौ च रन्ध्रान्तं विलिखेत्क्रमात्। ततः स्वरानषण्ढांश्च ङञ णोज्झितान्॥२॥ अत्राक्षराद्यैः स्वैः स्वैः स्वैरङ्कैः सङ्कलितं भवेत्। वसुभिर्भाजिते शेषे आया ध्वजमुखादयः॥३॥ ध्वजो धूमोऽथ सिंहः श्वा सौरभेयः खरो गजः। ध्वांक्षश्चैते क्रमेणैव आयाष्टकमुदाहृतम्॥४॥ काकाद्बली श्वा च भवेत्सारमेयाच्च रासभः। बलवान् रासभादुक्षा वृषभादपि कुञ्जरः॥५॥ कुञ्जरादपि पञ्चास्यः सिंहादपि बली ध्वजः। ध्वजादपि बली धूम्रस्तथा जातिविशेषतः॥६॥ भाग हरेण शून्य-त्वादष्टमः परिगृह्यते। एकाद्यैः शेष भूताङ्कैर्ध्वजाद्याश्चाय चक्रभात्॥७॥ आयचक्रमिदं प्रोक्तं यत्नु-रैरपि दुर्लभम्। अत्र नामाक्षरादीनां युक्तिरन्या प्रदर्श्यते॥८॥ जयाजय परीक्षायां स्वरोदय परिश्रितान्। षोडशाद्यक्षर वर्गः स्यात्कादयः पञ्च वर्णकाः॥९॥ चतुश्चतुष्क वर्णौ च यशौ वर्गः प्रकीर्तिताः। नाम्नि वर्णात्स्वरात्संख्या वर्गवर्णवशाच्च सा॥१०॥

भावार्थ॥ बारह आड़ी तथा छः तिरछी रेखायें खींच कर ५५ कोष्ठका आय चक्र तय्यार कर, श्लोकानुसार अङ्क-अक्षर स्थापित कर आय सम्बन्धी विचार करना चाहिए॥ ६-१०॥

अथ विजय चक्रम्॥ अथ सारतरं वक्ष्ये लम्पटाचार्य भाषितम्। जयपराजयौ येन नामोच्चारणतः स्फुटौ॥१॥ लग्नालग्नविभेदेन घोषाघोष क्रमेण च। प्रवेशानिर्गमाभ्यां च क्रमाज्जय पराजयौ॥२॥ पवर्गश्चाप्युकारश्च लग्नाख्या नक्षरान् विदुः। उक्तवर्णान्यवर्णाः स्युरलग्नाः परिकीर्तिताः॥३॥ वर्गे त्रिचतुरा घोषाः पञ्चमाश्च स्वरास्तथा। आद्या द्वितीया वर्णानामघोषाः शषसैः सह॥४॥ वायुप्रवेश कालः स्यात् प्रवेशः श्वास निर्गमः। निर्गमाख्यस्ततो ज्ञेयो नामोच्चारणतो जयः॥५॥ इति विजय चक्रम्॥

मू० सं० ६३७४

भा० टी०

भावार्थ ।। यह चक्र केवल नामोच्चारण मात्र का है । लग्न वर्ण का अक्षर अथवा वायु-प्रवेश काल में प्रश्न हो तो विजय होती है । अन्य बातें श्लोकानुसार समझलें ।।१-५।। इति ।।

अथ तोरण चक्रम् ।। नाडी चतुष्टयं चक्रे लिखित्वा तोरणाकृति: । कृत्तिकादि न्यसेद्भानि प्रवेशे निर्गमे तथा ।।१।। स्तम्भमूले स्थितान्यष्टौ सिंहद्वारे तथाष्टकम् । मालायामष्टकं तत्र चतुर्धिष्ण्यानि तोरणे ।।२।। निर्गमे च यदा चन्द्रः प्रवेशे यदि भास्करः । तत्र काले शुभा यात्रा प्रवेशे विघ्नकारिका ।।३।। चन्द्रः प्रवेशऋक्षस्थो निर्गमस्थो दिवाकरः । वधबन्धनदा यात्रा प्रवेशे तत्र शोभना ।।४।। चन्द्रादित्यौ प्रवेशर्क्षे ह्यथवा निर्गमस्थितौ । मिश्रं फलं भवेत्तत्र प्रवेशे चाथ निर्गमे ।।५।। प्रवेशर्क्षेहि कर्तव्या भूभृतां राजपट्टिका । क्रूरग्रहयुतश्चन्द्रः प्रवेशे चाथ निर्गमे ।।६।। तद्दिने भूभुजां चैव निषिद्धा राजपट्टिका । शुभग्रहयुते चन्द्रे सिंहद्वारम संस्थिते ।। प्रवेशः पट्टबन्धश्च भूभुजां शोभनः स्मृतः ।।७।। स्तम्भे सौरिर्नृपं हन्ति सिंहे स्वपरविग्रहः । मालास्थिते चलं राज्यं तोरणे सर्वसिद्धयः ।।८।। इति तोरणचक्रम् ।।

भावार्थ ।। दोनों ओर चार रेखाओं से तोरण की आकृति बना कर, उसमें कृत्तिकादि चार-चार नक्षत्रों को प्रवेश तथा निर्गम संज्ञक मान कर, २८ नक्षत्रों को रखें तथा श्लोकानुसार उनके फलाफल के सम्बन्धमे विचार करें । शनि स्तंभ में हो तो राज्य का नाश, सिंह द्वार में हो तो शत्रु-नाश, माला में हो तो चलायमान राज्य एवं तोरण में हो तो समस्त सिद्धियाँ देता है ।। १-८ ।।

अथ शशिसूर्य कालानल चक्रम् ।। द्वादशारं लिखेच्चक्रं मेषादि द्वादशान्वितम् । क्षेत्र युग्मं च तत्रैव ज्ञेयं भास्कर चन्द्रयो: ।।१।। सिंहादि मकरान्तं च भानुक्षेत्रमुदाहृतम् । कुम्भादि कर्क पर्यन्तं चन्द्र क्षेत्रं तु संज्ञकं ।।२।। [illegible]

यत्तु चन्द्रक्षेत्रं विनिर्दिशेत ॥३॥ चन्द्रक्षेत्रगते सूर्ये चन्द्रे तत्रैव संस्थिते। यायिनो विजयो युद्धे स्थायिनो भङ्गमादिशेत ॥४॥ सूर्यक्षेत्रगते चन्द्रे सूर्ये तत्रैव संस्थिते। यायी भङ्गं समायाति स्थायिनो विजयी भवेत ॥५॥ सूर्ये सूर्यांग संयुक्ते चन्द्रे चन्द्राङ्ग संस्थिते। तदा काले भवेत्संधिर्युद्धं तस्य विपर्यये ॥६॥ व्यस्तगौ यदि चन्द्रार्कौ संहार: सैन्ययोर्द्वयो:। यात्रायां युद्ध काले च चक्रमेतद्विलोकयेत ॥७॥ इति शशिसूर्यकाला-नलचक्रम् ॥

भावार्थ॥ बारह कोष्ठों का एक चक्र लिख कर (जन्माङ्ग चक्र जैसा) उसमें मेषादि राशियों को लिख कर, चन्द्र-सूर्य के क्षेत्रों के आधार पर जय-पराजय के सम्बन्ध में विचार करना चाहिए। विशेष श्लोकों से समझ लें ॥१-७॥

अथ संघट्ट चक्रम् ॥ अश्विन्यादि लिखेच्चक्रं सप्तविंशति तारका:। त्रि-कोणं नवभिर्वेध: कर्तव्यस्तिर्यगाकृति: ॥१॥ अश्विनी रेवतीवेधो वेधश्चाश्विनि ज्येष्ठयो:। मघापौष्णये मघाश्लेषा आश्लेषामूलयोस्तथा ॥२॥ एवं संघट्टचक्रेस्मिन् कार्या ऋक्षगता ग्रहा:। भूपनामर्क्षसङ्घट्टे युद्धं भवति नान्यथा ॥३॥ यस्य भूपर्क्षसङ्घट्टे विद्धं भं यस्य भूपते:। तस्यापि भं यदा विद्धं तत्तद्युद्धं समादिशेत॥ ॥४॥ अश्विन्यादिकसङ्घट्टे भावि युद्धं समादिशेत। यदा कुत्रेति संग्रामो वाछि भाग्ये प्रजायते ॥५॥ त्रि-वेधे सौम्यवेधे च युद्धं नास्ति नरेशयो:। क्रूरवेधे भवेद्युद्धं तत्काले घोरदारुणम् ॥६॥ शनिभौमार्क पातानां शशिविद्धं तु यद्दिने। तद्दिने जायते युद्धं तत्काले घोरदारुणम् ॥७॥ शनिभौमार्क पातानां शशि विद्धं तु यद्दिने। घातपात समायोगे संग्रामं दारुणं भवेत ॥८॥ युद्धकांक्षी भवेद्राजा यस्य क्रूरसमं भवेत। युद्धद्वेषी भवेत्सौम्यैस्तद्द्वद्वे षविवर्जित: ॥९॥ सौम्य क्रूर विभागेन मित्रामित्र क्रमेण च। वक्राति-चार गत्या च युद्धमत्रास्ति नास्ति च ॥१०॥ आदित्यश्च यदा चन्द्र: एकरेखागतो यदि। तद्दिने जायते युद्धं

महाशास्त्रनिपीडनम् ॥११॥ कुजराहोर्यदा वेधश्चन्द्ररेखागु संस्थित: । तद्दिने चाग्निपातश्च लोहपातो न संशय: ॥१२॥ बुधशुक्रौ यदैकत्र तत्र चेत्संगत: शशी । तदा वृष्टिं विजानीयाद्विद्युत्पातं न संशय: ॥१३॥ इन्द्वर्कयाति राहूणामेकनाडी यदा भवेत् । तद्दिने दुर्दिनं ज्ञेयमभ्रच्छन्नं न संशय: ॥१४॥ राह्वर्ककुज सोमाश्च नाडीवेधगता यदि । कलहं तत्र जानीयादित्युक्तं चादियामले ॥१५॥ इति सङ्घट्टचक्रम् ॥

भावार्थ । नव त्रिकोण का तिरछी आकृति का एक चक्र बनाकर उसमें अश्विनी आदि नक्षत्रों का न्यास करने से तिरछा वेध होता है । इस संघट्टचक्र के अनुसार राजा के नाम-नक्षत्र से जय-पराजय, युद्ध आदि का श्लोकों में वर्णित रीति से विचार करना चाहिए ॥ १-१५॥

अथ गूढकालानलचक्रम् ॥ सप्तरेखा लिखेदूर्ध्वा: सप्ततिर्यक् तदा लिखेत् । साभिजिच्चन्द्रभाद्यन्तं षडङ्गं कल्पयेत्तत: ॥ १॥ दिनर्क्षाद्गण्यते चक्रं गूढं संपुट कर्तरि । दण्डं कपालं वज्रं च ज्ञातव्यं स्वरवेदिभि: ॥२॥ यस्मिन्नृक्षे स्थितश्चंद्रस्तत्रादौ त्रीणि गूढकम् । संपुटे नव भान्यत्र कर्तरी च ततस्त्रिभि: ॥३॥ दंडे धिष्ण्यानि च त्रीणि कपाले ऋक्ष सप्तकम् । वज्रांगे त्रीणि धिष्ण्यानि षडङ्गस्येति निर्णय: ॥४॥ यदंगे नामनक्षत्रं योधकारस्य जायते । वक्ष्ये शुभाशुभं चास्य गूढकालानले स्थितम् ॥५॥ गूढस्थे विभ्रमो युद्धे जयो भवति संपुटे । कर्तर्यां सक्षतं युद्धं दंडे भंगो न संशय: ॥६॥ कपालस्थे भवेन्मृत्युर्वज्रे तस्य महद्भयम् । गूढकालानलं चक्रमुक्तं वै चादियामले ॥७॥ इति गूढकालानलचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ सात रेखाएं सीधी तथा सात रेखाएं तिरछी खींच कर, अभिजित सहित २८ नक्षत्रों को क्रमश: लिखकर, उसमें ६ अंगों की कल्पना करें तथा दिन-नक्षत्र से गिनकर गूढ, संपुट, कर्त्तरी, दण्ड, कपाल और वज्र — इन ६ अङ्गों के जिस नक्षत्र पर चढ़ता हो, उसके द्वारा श्लोकों में कहे अनुसार युद्ध तथा जय-पराजय के विषय में विचार करना चाहिए ॥ १-७॥

मृ० सं० १२३०

भा० टी०

अथ कुलाकुलचक्रम् ॥ द्वितीया दशमी षष्ठी कुलाकुलमुदाहृतम् । विषमा अकुलाः सर्वाः शेषाश्च तिथयः कुलाः ॥१॥ रविचन्द्रौ गुरुः सौरिश्चत्वारो ह्यकुला मताः । भौमशुक्रौ कुलाख्यौ च बुधवारः कुलाकुलः ॥२॥ वारुणार्द्राभिजिन्मूलं कुलाकुलमुदीरितम् । कुलानि समधिष्ण्यानि शेषभान्यकुलानि तु ॥३॥ तिथौवारे च नक्षत्रे अकुले यायिनो जयः । कुलाख्ये स्थायिनो ज्ञेयः सन्धिश्चैव कुलाकुले ॥४॥ इति ॥

भावार्थ॥ दोनों पक्ष की द्वितीया, षष्ठी तथा दशमी तिथियां कुलाकुल संज्ञक, विषम तिथियाँ अकुल संज्ञक तथा शेष तिथियाँ कुल संज्ञक होती हैं। रवि, चन्द्र, गुरु तथा शनिवार अकुल संज्ञक मंगल तथा शुक्रवार कुल संज्ञक तथा बुधवार कुलाकुल संज्ञक होते हैं। शतभिषा, आर्द्रा अभिजित् और मूल — ये नक्षत्र कुलाकुल संज्ञक, सम नक्षत्र कुल संज्ञक तथा शेष नक्षत्र अकुल संज्ञक होते हैं। अकुल संज्ञक तिथि, वार एवं नक्षत्र में चढ़ाई, यात्रा अथवा युद्धारंभ करने वाले की विजय होती है। कुल संज्ञक में आरंभ करने पर घर में बैठे हुए (स्थायी) की विजय होती है तथा कुलाकुल में दोनों में संधि होजाती है ॥१-४॥

अथ कुम्भ चक्रम् ॥ कुम्भाकारं लिखेच्चक्रं तिर्यग्रेखासमन्वितम् । क्रमादूर्ध्वमधःस्थं च एकैकोत्तरमं लिखेत् ॥१॥ भानुभाद्विन्यसेत्तत्र रिक्तं पूर्णमिति क्रमात् । एवं राशीन्क्रमान्न्यस्य रिक्तापूर्णं प्रकल्पयेत् ॥२॥ रिक्ते रिक्ता भवेद्यात्रा पूर्णे यात्रा शुभावहा ॥३॥ इति ॥

भावार्थ॥ तिरछी रेखा से युक्त कुंभ का आकार बनाकर उस पर ऊपर नीचे क्रम से एकोत्तर नक्षत्रों को लिखें। सूर्य-नक्षत्र 'रिक्त' तथा दूसरा 'पूर्ण' संज्ञक होता है। इस प्रकार बारह राशियों के रिक्त तथा पूर्ण क्रम से ऊर्ध्वाधर स्थापित करें। रिक्त संज्ञक नक्षत्र में यात्रा रिक्त एवं पूर्ण संज्ञक नक्षत्रों में यात्रा पूर्ण होती है ॥१-३॥

अथ द्वितीय कुम्भचक्रम् ॥ पूर्वेऽज सिंहचापश्च विन्यसेत्कलशे क्रमात् ।

वृषेऽथ मकरः कन्या दक्षिणे विनिवेशयेत् ॥१॥ युग्मं कुम्भं तुला पश्चादुदक्कर्किझषालयः। चतुःखण्डं भवेदेतत्कलशानामथ क्रमात् ॥२॥ रिक्तं पूर्णं क्रमाज्ज्ञेयं कुम्भस्य विषमे समे। रिक्ते तु मरणं विद्याज्जयः पूर्णे न संशयः ॥३॥ सौम्ययुक्ते तु कलशे ध्रुवं शत्रुक्षयो भवेत्। कुम्भाकारमिदं चक्रं कथितं चादियामले ॥४॥ इति द्वितीय कुम्भ चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ पूर्व भाग में क्रमशः मेष, सिंह, धनु राशियों को, दक्षिण में वृष, कन्या एवं मकर को, पश्चिम में मिथुन, कुम्भ और तुला को तथा उत्तर में कर्क, मीन और वृश्चिक राशियों में लिखे विषम तथा सम राशियों को क्रमशः रिक्त तथा पूर्ण समझें। रिक्त राशियों में यात्रा करने से मृत्यु तथा पूर्ण में यात्रा करने से विजय तथा शुभ ग्रह से युक्त राशि में यात्रा करने से अवश्य विजय होती है ॥ १-४ ॥

अथ प्रस्तार चक्रम् ॥ त्रयोदशोर्ध्वगा रेखा दशैरेखाश्च तिर्यगाः। भवेयुः कोष्ठकास्तत्र संख्यायाश्चोत्तरं शतम् ॥१॥ मेषादि राशयो लेख्यास्तिर्यक् प्रथम पंक्तिषु। नवांश राशयश्चाधो नवधा सर्वराशिषु ॥२॥ कवर्गं नवधा लिख्य कोष्ठके प्रथमेऽष्टमे। द्वितीये सप्तमे चाधात्न्यसेदाद्यत्रिकोष्ठके ॥३॥ यशावर्गौ चतुर्थे तु अवर्गं पंचमे तथा। नवद्वादशके ताभ्याः शेषे याभ्या द्विकोष्ठके ॥४॥ चतुरक्षर संयोगादश्विन्यादिक्रमेण च। ज्ञेया नवांशका वर्णा मेषादौ राशिमण्डले ॥५॥ भौमं शुक्रं बुधं चन्द्रं भानुं सौम्यं सितं कुजम्। गुरुं सौरिं शनिं जीवं विदध्यात् कोष्ठकोपरि ॥६॥ कोष्ठाक्षरगतो ज्ञेयश्चन्द्रस्तत्काल सम्भवः। तदधीनं फलं सर्वं लाभालाभं जयाजयम् ॥७॥ इष्टनाड्यो हता धिष्ण्यैः षष्टिभागाप्तशेषके। अश्विन्यादिन्दुभुक्तेन युक्तस्तात्काल चन्द्रमाः ॥८॥ क्रूर क्षेत्रा क्षरे चन्द्रे न शुभं सर्वकर्मसु। शुभक्षेत्रे शुभं सर्वं प्रस्तारे चन्द्रनिर्णयः ॥९॥ अंशके नांशकं गुण्यं ध्रुवयुक्तं कृतं पुनः। स्वगुणैर्गणयेत्पश्चान्मूलांकैर्भाजयेत्ततः ॥१०॥ नाडी फलौ यशौ वर्गौ दिने वर्ग फलोदयः। कपक्षेण च मासेन स्वर्गेण त्रऋतुं

वदेत् । अपने तपवर्षेण फलं ब्रूयाद्विचक्षण: ॥११॥ चतुःस्था मुनय: सूर्या: सप्तनंदा गुणे पव: । मासा: शैला इना स्तत्त्वा राशीनां च ध्रुवा इमे ॥१२॥ एते राशि ध्रुवा: । गुणा: शैला युगा: पंच सप्त पंचा द्वयो युगा: । नागा बाणा रसा भूता मेषादेरंशका मता: ॥१३॥ तत्कालेन्द्वंशक कृतिं कृत्वा ध्रुवयुता तथा । स्वगुणै -र्गुणयेत्पश्चान्मूलांकैर्भाजयेत्सुधी: ॥१४॥ बष्टिर्बाणविधौ नेत्रे पक्षाग्न्यक्षिरविस्तथा । चन्द्रभूसुतबुधशुक्राणां गुरुह्नरविसौरिणाम् ॥१५॥ शैला नंदा रसा बाणा नदां शैला युगादश्वा । इना: सप्त रसा भूता मूलांकाश्च उदाहृता: ॥१६॥ अथ मूलांका: क्वचित् । यना: नखा शिवप्रकृति युग्मेषु दिक् रसाक्षि च । सार्धकौ वेद वेदाश्च वस्वक्षि युग्मपञ्च च ॥१७॥ रसांगा खाब्धिशानो मूलांका मुनिभाषिता: । प्राश्नांकस्य फलं श्रेष्ठं सर्वशास्त्रेषु भाषितम् ॥१८॥ इति प्रस्तारचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ तेरह रेखा सीधी तथा दश रेखा तिरछी खींचने से २०८ कोष्ठका चक्र बनता है । इसमें कवर्ग के अक्षरों को क्रमश: पहले तथा आठवें कोष्ठक में लिखने से ८ कोष्ठ में कवर्ग हो जाएगा । अन्य कोष्ठों में अक्षर लिखने की विधि श्लोकों में वर्णित है, तदनुसार लिखें । इससे मास, दिन आदि कार्य सिद्धि की अवधि का ज्ञान प्राप्त होता है । य वर्ग तथा श वर्ग नाड़ी में, अ वर्गादि दिन में, क वर्ग पक्ष में, च वर्ग, मास में; ट वर्ग ऋतु में त वर्ग अयन में तथा पवर्ग वर्ष में फल देते हैं । प्रश्न समय, विवाह, यात्रा, जन्म तथा संग्राम में चन्द्रमा का शुभ फल शास्त्रों में वर्णित है, उसे इस चक्र की सहायता से निर्णीत करें ॥११-१८॥

अथ दृष्टितुंबुरु चक्रम् ॥ प्रस्तारे द्वादशारे च ऋक्षाक्षरक्रमेण च । नवांशराशि मार्गेण चक्रं भवति तुंबुरुम् ॥१॥ यत्र मेषादि राशिस्थ स्तात्कालेन्दुः प्रजापते । ग्रहदृष्टिवशात्सर्वं ज्ञेयं तस्य शुभाशुभम् ॥२॥ त्रिदशे पंचमे धर्मे चतुर्थाष्टमसप्तमे । पादवृद्ध्या निरीक्षन्ते प्रयच्छन्ति तथा फलम् ॥३॥

ऊर्ध्वदृष्टी च भौमार्कौ केकरौ बुध भार्गवौ। समदृष्टी च जीवेन्दू शनिराहू त्वधोमुखौ॥४॥ मेषो वृषो मृगः कन्या कर्कमीन तुलास्तथा। आदित्यादि ग्रहेषूच्चा नीचा यस्तस्य सप्तमः॥५॥ परमोच्चादिशो रामा अष्टाविंशास्तिथीन्द्रियाः सप्तविंशास्तथा विंशाः सूर्यादीनां तथांशकाः॥६॥ परमोच्चात्परं नीचमर्धचक्रांत संख्यया। नीचस्थानात्क्रमेणोच्चः उक्तः सर्वत्र खेचरः॥७॥ उच्चान्नीचाच्च यत्तुर्यं समस्थानं तदुच्यते। उच्चनीचसमस्थाने चन्द्रं ज्ञात्वा फलं वदेत्॥८॥ उच्चस्थाने स्थितं चन्द्रं भौमादित्यौ प्रपश्यतः। समस्थाने च गुर्विन्दू नीचस्थं राहुसूर्यजौ॥९॥ बुध शुक्रौ त्रिकोणस्थं चन्द्रं तत्कालसंभवम्। अन्यत्रस्थं न पश्यंति जात्यन्धा इव खेचराः॥१०॥ सौम्य दृष्टिस्थिते चन्द्रे सर्वसौख्यं प्रजायते। क्रूरदृष्टिस्थिते पुंसां मृत्युर्हानिर्महद्भयम्॥११॥ एवं शुभयुते चन्द्रे सर्वसौख्यं प्रजायते। क्रूरैः क्रूर फलं तत्र मिश्रैर्मिश्रं न संशयः॥१२॥ रक्तं पीतं सितं कृष्णं चंद्रे वर्ण-चतुष्टयम्। ज्ञातव्यं च प्रयत्नेन प्रश्नकाले सदा बुधैः॥१३॥ रविर्भौमः सितः सौम्यो गुरुः सौरी शशी तमः। वर्गेशा अकवर्गा-दी ग्रहा ज्ञेया विचक्षणैः॥१४॥ स्यातां रवि कुजौ रक्तौ पीतौ जीव बुधौ ग्रहौ। शशि शुक्रौ सितौ वर्णौ कृष्णत्वं राहुमन्दयोः॥१५॥ यद्वर्गवर्णगश्चन्द्रस्तस्य स्वामी तु यो ग्रहः। तस्य वर्णेन वर्णत्वं शशांकस्य प्रजायते॥१६॥ रक्ते चन्द्रे भवेद्युद्धं कृष्णे मृत्युर्न संशयः। पीते शुभं विजानीयात्सिते शुभतरं फलम्॥१७॥ इति॥

भावार्थ॥ द्वादश पत्रात्मक प्रस्तार चक्र में नक्षत्रों के अक्षरों के क्रम से तुंबुरुचक्र होता है। इसमें विभिन्न ग्रहों की उच्च नीच स्थिति विभिन्न शुभाशुभ फल देती है। प्रश्न के समय इसे जानना आवश्यक है। विस्तृत अर्थ श्लोकों के आधार पर समझलें॥९-१७॥

अथ तुम्बुरावर्तचक्रम्॥ द्वादशारं लिखेच्चक्रं नाड्येकैका त्रिधा पुनः। पञ्चमे पञ्चमे स्थाने तिर्यग्वेधं तथा कुरु॥१॥ अष्टोत्तर शतं चैव नाडी संख्या प्रजायते। अंशाक्षराणि चक्रस्य नाडिकाग्रे तु विन्यसेत्॥२॥ क्रूरवेधाक्षरे चन्द्रो यदा तत्काल सम्भवः। तदा तस्य फलं वक्ष्ये विवाहादौ

शुभाशुभम् ॥३॥ विवाहे क्रूरवेधेन वैधव्यं च विशीलता। यात्रायां च भवेद्धानिर्मृत्युर्भंगो महाहवे ॥४॥ सर्व हानिकरा: क्रूरा ग्रहा: सौम्या: फलार्धदा:। द्व्यादिवेधो भवेद्यस्य मृत्युस्तस्य न संशय: ॥५॥ तत्कालेन्दुफलं सर्वं यदुक्तं रुद्रयामले। गोपितं सर्वशास्त्रेषु मया चात्र प्रकाशितम् ॥६॥ स्वरविवरविशेषैश्चक्रबन्धैस्तु भूम्या। विविधफलपताकामातृकाभेदरम्यम् ॥ नरपतिकविचन्द्र: सर्वशास्त्रेष्वधीती। नरपतिजयचर्याशास्त्रमेतच्चकार ॥७॥ इति तुंबुरावर्तचक्रं अंश कुण्डली चक्रम् ॥

भावार्थ॥ बारह रेखाओं का एक चक्र बनायें। एक-एक रेखा में पहले तीन भाग करने से १०८ नाडियां होंगी। इनमें प्रत्येक पाँचवीं से परस्पर वेध का विचार करना चाहिए। इस चक्र के नवमांश के अक्षरों को प्रत्येक के आगे लिखें। क्रूर ग्रह से विद्ध अक्षर पर तात्कालिक चन्द्रमा हो तो उसका फल विवाहादि में शुभ-अशुभ होता है। दो-तीन ग्रहों के वेधसे मृत्यु होती है इत्यादि समझलें॥ १-७॥

अथ राशितुम्बुरुचक्रम्॥ राशिचक्रं प्रवक्ष्यामि नृपाणां हितकाम्यया। रविजी-नस्तथा सौम्यस्तैश्चन्द्रे च समागते। जलपातो भवेत्सत्यमित्युक्तं विष्णुयामले ॥१॥ रविजीवस्तथा शुक्रस्तैश्चन्द्रे च समागते। वायुपातो भवेत्सत्यमित्युक्तं विष्णुयामले ॥२॥ रविजीवस्तथा सौरिस्तैश्चन्द्रे च समागते। अग्निपातो भवेत्सत्यमित्युक्तं शक्तियामले ॥३॥ रविर्भौमस्तथा राहुस्तैश्चन्द्रे च समागते। लोहपातो भवेद्घोरं इत्युक्तं रुद्रयामले ॥४॥ रवी राहुस्तथा केतुस्तैश्चन्द्रे च समागते। पाषाणपातोऽपि भवेदित्युक्तं भानुयामले ॥५॥ इति राशितुम्बुरुचक्रम्॥

भावार्थ॥ अब राशितुम्बुरुचक्र के विषय में कहा जाता है। सूर्य, बुध और गुरु का तात्कालिक चन्द्रमा से योग हो तो पानी गिरता है। रवि, गुरु शुक्र का चन्द्र से योग हो तो वायु चलती है। रवि, गुरु, शनि का चन्द्र से योग हो तो अग्नि भय होता है। रवि, मंगल और राहु का चन्द्रमा से योग हो

तो घोर लोहपात होता है। रवि, राहु तथा केतु का चन्द्रमा से योग हो तो पाषाण पात होता है ॥ १-५ ॥ इति ॥

अथ नाम साधनम् ॥ प्रथमे नवमे वेधो द्वितीये सप्तमे तथा। तृतीये पञ्चमे वेधो राशौ षष्ठचतुर्थके ॥ १ ॥ पञ्चमे पञ्चमे राशौ द्रेष्काणे च नवांशके। पंक्तियुक्त्या लिखेद्वर्णान्संख्यया ऽष्टोत्तरं शतम् ॥२॥ सर्पाकारो भवेद्वेधस्तेन नामानि साधयेत् ॥ ३ ॥ इति नाम साधनम् ॥

भावार्थ। द्रेष्काण तथा नवांश में पहले तथा नवें का, दूसरे तथा सातवें का, तीसरे एवं पाँचवें का, छठे तथा चौथे का वेध होता है। इस तरह पाँचवीं - पाँचवीं राशि का वेध होता है। पंक्ति क्रम से १०८ वर्णों के लिखने से सर्पाकार वेध होता है, अतः नाम का साधन करना चाहिए ॥ १-३ ॥

अथ तुम्बुरावर्ते प्रथम परिच्छेद ॥ अथान्यत्सम्प्रवक्ष्यामि तत्कालेन्दुपरिस्फुटम्। येन विज्ञायते सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥ १ ॥ लाभालाभौ सुखं दुःखं जीवितं मरणं तथा। जयं पराजयं सन्धिं समागम विनिर्णयः ॥२॥ लूका चिन्ता तथा मुष्टी राजावस्थादि कौतुकम्। एतत्सर्वं तथा चान्यज्ज्ञायते च परिस्फुटम् ॥३॥ शिलातले ऽम्बुसंशुद्धे वज्रलेपे समे ऽथवा। स्वबुद्ध्या सम्भूम्यां वा स्फुरत्यत्र यथामतिः ॥ ४ ॥ क्षिप्यते वलयाकारं चक्रं कर्कटकेन च। विभागः परिधौ पश्चात् क्षिप्येत् राशिमानतः ॥५॥ कुर्यात्तेषु समं भागं नवधा नवधा पुनः। एवं कृते भवन्तीह शतमष्टाधिकं गृहाः ॥ ६ ॥ द्वादशारं भवेच्चक्रं मेषादि द्वादशान्वितम्। अस्वराद्याः स्वरा देया राशिवेधा भवन्त्यमी ॥७॥ प्रस्तारचक्रलिखितान् वर्णान् राशिनवांशकात्। अन्योन्यं वेधयेद्वर्णान् सुमती रज्जुरेखया ॥ ८ ॥ एकद्वित्र्यादिकांलंकाल्लिखेद्वर्णानपि क्रमात्। प्रथमे नवमे वेधो द्वितीये सप्तमे तथा ॥ ९ ॥ तृतीये पञ्चमे राशौ राशौ षष्ठचतुर्थके। पञ्चमे पञ्चमे राशौ द्रेष्काणे च नवांशके ॥ १० ॥ अजवृषमिथुन कुलीराः पञ्चमनवमैः सहेन्द्राद्याः। त्रिकोणगाश्च प्रोक्ता मेष सिंह हयादिभिः ॥ ११ ॥ आद्य द्वि वह्नि तुर्यांशा नवाष्ट नग षण्मिताः। वेधयन्त स्त्रिकोणेतु पञ्चमं

पृ० सं० १२०२

भा० टी०

पञ्चमोऽशकः ॥२२॥ द्रेष्काणेऽप्यंशवेधोयं रज्जौ मुरजबन्धने। तुम्बुरे तुम्बुरावर्तौ विज्ञेयः स्वरपारगैः ॥२३
प्रथमेन तृतीयं तु तृतीयेनादिमं तथा। त्रिकोणे वेध्यते ऽन्योयं द्वितीयं समसप्तके ॥२४॥ आद्यतृतीयौ द्रेष्का-
णौ वेध्यन्तौ परस्परम्। त्रिकोणे च द्वितीयोऽपि द्वितयं समसप्तके ॥२५॥ प्रथमः पञ्चदशमे ऽन्योन्यं पञ्चमपूर्व-
योः। नवमादिमयो राश्योस्तृतीयश्च त्रिलिंशतिः ॥२६॥ द्वितीये कोनविंशौ च द्रेष्काणौ समसप्तके। द्रेष्काणबन्धवेधो
यं कथितश्चादियामले ॥२७॥ द्रेष्काणवेधः षट्त्रिंशदष्टोत्तरशताक्षरैः। चन्द्रवेधेन विज्ञेयं चौरनाम स्फुटं भवेत् ॥
२८॥ राशो मनः स्त्रीशयनासनेषु स्वप्नाद्यवस्था रसभोजनेषु। नपुंसकस्त्रीपुरुषाभिधाने चौरस्य नष्टस्य च चिन्ति
तस्य ॥२९॥ मूकस्य मुष्टेर्हृदयस्थितस्य धात्वादियोनित्रितयस्य नाम। परोक्षमन्त्रस्य महीपतीनां नामानि मुद्रावलि-
खनस्य चापि ॥२०॥ द्रेष्काणवृद्ध्या प्रवदंति नाम त्रिपंचसप्ताक्षरमोजराशौ। तदन्यराशौ द्विचतुर्थषष्ठे नामा
-क्षरं वै द्वितनौ द्विनाम ॥२१॥ वर्गोत्तमात्मीयनवांशराशौ नवांशनाथे द्विगुणोऽहि वर्णः। वक्रोच्चसंस्थे त्रिगुणो
ग्रहस्य त्रिघ्नोऽसकृद्द्वित्रिगुणत्वप्राप्ते ॥ २२॥ नीचास्तसंस्थस्य नवांशपस्य वर्णस्य लाभेऽपि वदंति हानिम्।
नामादि वर्णैः परिपाटिलब्धैस्त्रिपंच सप्त द्वि चतुर्थ षष्ठैः ॥२३॥ द्व्यक्षरं समचरांशकोदये त्र्यक्षरं विषमराशिसंस्थि
ते। नाम चास्य चतुरक्षरं स्थिरे निश्चयाद् समके षडक्षरम् ॥२४॥ आद्ये द्वितीये त्रिचतुःपदेषु वर्णाः क्रमेणैव
नियोजनीयाः। विलग्नतोयास्तनभःस्थलेभ्यः प्राप्ता यथानामनि दैवविद्भिः ॥२५॥ क्रूरक्षेत्रे गते चन्द्रे विप्रा-
च्चोरस्य संभवः। अवेधे सौम्यवेधे च नष्टं चौरविवर्जितम् ॥२६॥ यात्संख्याः खेचराः क्रूराश्चन्द्रवे-
धे व्यवस्थिताः। तत्संख्यास्तस्करा ज्ञेयाः सहायाश्चान्तराक्षरैः ॥२७॥ रूपे द्रेष्काणरूपेण तस्करस्य प्रजायते।
द्रेष्काणक्रमतो ज्ञेयाः कुग्रामध्य बलाधिकाः ॥२८॥ पंक्तियुक्त्या लिखेद्वर्णान् संख्यया ऽष्टोत्तरं शतम्। सर्पा-
कारो भवेद्वेधस्तेन नामानि साधयेत् ॥२९॥ उदयास्तमये द्रव्यं चौरनाम रसातले। दशमे च धनस्थान
मेवं नामत्रयं भवेत् ॥३०॥ वर्गांशकाच्च भूमानमष्टहस्तनिवर्तनम्। अर्धक्रोशं तथा क्रोशं द्विक्रोशं योजनादिकम्

//३१// दण्डाहः पक्षमासर्तुषण्मासाब्दाः शुभाधिके । वर्गाक्षरगते चन्द्रे वर्णश्चैकान्तर क्रमात् //३२// एतत्सर्वं मया-ख्यातमवस्थादिपरिस्फुटम् । येन ज्ञानेन सर्वाणि सत्यतां यान्ति भूतले । तत्कालचन्द्रजं ज्ञानं भणितं जन-हेतवे//३३//इति प्रथम परिच्छेदस्तुम्बुरावर्ते //

भावार्थ// समतल भूमि पर परकाल से वृत्ताकार चक्र बनाकर उसकी परिधि के समान १२ भाग करे । फिर प्रत्येक भाग के ९ समान भाग करे । इस प्रकार १०८ भाग होजायेंगे । यह द्वादशार चक्र मेषादि १२ राशियों से युक्त होता है । इसमें अवर्ग आदि स्वरों को देना चाहिए, जिससे राशियों का वेध होता है । इस प्रस्तार चक्र में लिखे वर्ण, राशि, नवांश परस्पर वेध का विचार रज्जुरेखा स्वरूप करना चाहिए । अन्य बातें श्लोकानुसार समझलें // इस चक्र से चन्द्रमा के वेध द्वारा चोर के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया जाता है//१-३३//

अथ वेध तुम्बुरावर्ते द्रेष्काणादि ज्ञानम् // अश्विन्यादीन्दु भुक्तानि भानि बध्दिहता-नि च । स्वभुक्त नाडी संयुक्तं द्विघ्नं नन्दयुतं त्रिधा //१// दिनेन्दोर्भुक्तभागादि जायते चेष्ट कालिकः । उदयादिष्टनाड्यस्तु षड्गुणास्तत्र योजयेत् //२// त्रिंशद्भागा परा पूर्वादिश्चन्द्रस्तत्काल सम्भवः // प्राग्वा-वत्सर्वखेटान् कुर्यात्तत्काल सम्भवान् । तत्कालराशिनक्षत्रे द्रेष्काणे च नवांशके //३// एताश्च द्वादशावस्था प्राशङ्क्यस्य दिने दिने । शुभाशुभेषु कार्येषु फलं नामानुसारतः //४// यथोत्तरबला ऽवस्था राशिद्रेष्काणजां-शकाः । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन भागावस्थां निरीक्षयेत् //५// नवांशका अमी भव्या हयकर्कितुलाझषाः । वृष सिंहोद्भवा मध्याः शेषाः स्युर्कृत्युदायकाः //६// स्वक्षेत्रे स्वांशकावस्था शुभदृष्टोथवा युता । शुभमध्यगत श्चन्द्रः सर्व कार्येषु शोभनः //७// शत्रुक्षेत्रांशनीचस्थः क्रूरदृष्टो ऽथवा युतः । क्रूरमध्यगतश्चन्द्रः सर्वहानि-करःस्मृतः //८// लग्नाम्बु सप्तमध्यस्थो भवेत्क्रूरगृहो विधोः । आत्मनो बन्धुवर्गस्य जायायाः कर्मणः क्रमात् विनाशो जायते शीघ्रं तद्वेला कर्म कारकः //९// एवं शुभगृहश्चन्द्राद्यदा भवति केन्द्रगः । आत्मबन्धुकलत्राणां

कर्मणश्च तदा जयः ॥२०॥ षष्ठाष्टमांश गाः सौम्याः पापाः केन्द्रान्त्यवित्तगाः । चन्द्रात्प्रपलनतस्त्याज्या अन्यत्रैव तु
शोभना ॥२१॥ चरराश्यंशके चन्द्रे यात्रा भवति निश्चितम् । स्थिरेषु तु भवेन्नैव द्विःस्वभावे विलम्बता ॥
२२॥ नवांशक क्रमेणैव ज्ञेया अक्षरजा ग्रहाः । तैश्च चन्द्राक्षरं विद्वं रज्जुवेधे निरीक्षयेत् ॥२३॥ राशिद्रेष्काण
धिष्ण्येंऽशे यस्य यस्याक्षरे स्थितिः । तस्य तस्य फलं वक्ष्ये शशिना रज्जुवेधतः ॥२४॥ राशितोऽत्र दिशो
ज्ञेया नक्षत्रात्स्थाननिर्णयः । द्रेष्काणैस्तस्करा ज्ञेया द्रव्यनाम नवांशकात् ॥२५॥ मूलमाग्नेयपितृभे द्विदैवतयमा-
द्वयम् । पूर्वात्रयं च नवकमधोमुखमिदं स्मृतम् ॥२६॥ पुष्यार्द्रा श्रवणो ब्राह्मं वसुभं शतभं तथा । उत्तरात्रित-
यं चैव व्योमास्यं नवकं त्विदम् ॥२७॥ पुनर्वसुर्मृगशिरः सार्पदैवतकं तथा । हस्तादीनि चतुष्काणि तिर्य-
क्पश्यन्ति सर्वदा ॥२८॥ कृष्णः पुमान् रक्तनेत्रो रौद्रः परशुशस्त्रभृत् । प्रथमः स्त्री दीर्घमुखी लोहि-
-ताम्बरधारिणी ॥२९॥ स्थूलोदरैकपादाच्च द्वितीयः समुदाहृतः ॥ मेषस्य पुरुषः क्रूरः कपिलो वसुरूपधृक् ।
दण्डहस्ता तृतीयस्तु द्रेष्काणः कथितो बुधैः ॥२०॥ कुञ्चितः कच केशास्त्री स्थूलोदर समन्विता । दीर्घपादा
वृषस्याद्यो द्वितीयः पुरुषाकृतिः ॥२१॥ कलाविद्धेदश कष्टकर्मणां कुशली स्मृतः । बृहत्कायस्तृतीयस्तु बृहत्पा-
-दो नरः स्मृतः ॥२२॥ स्त्रीरूपं मिथुनस्याद्यो रूप यौवनशालिनी । नित्यं रजस्वला वन्ध्यालङ्कारेण कृतादरा
॥२३॥ उद्यानस्थः पुमान् धन्वी द्वितीयः कवची स्मृतः । पुमांस्तृतीयो धन्वी च रत्नभूषणभूषितः ॥२४
कर्काद्य पुरुषो हस्ती सूकरस्य मुखः स्मृतः । मध्यस्त्री यौवनोपेता सामर्थारण्य संस्थिता ॥२५॥ सर्पास्यश्च
तृतीयस्तु पुरुषः सर्पचेष्टितः । सुवर्णाभरणो नौस्थद्रेष्काणः कथितो बुधैः ॥२६॥ सिंहाद्यः श्वा जम्बु-
कास्यो गृध्रास्यो शाल्मलीतरौ । द्वितीयः पुरुषो धन्वी नतनासः स्मृतो बुधैः ॥ नरऋक्षी तृतीयस्तु
चण्डकुञ्चित मूर्धजः ॥२७॥ गुरोः कुलं वांछित कन्यका स्त्री कन्या हृकाणः प्रथमः प्रदिष्टः ।
पुष्पप्रपूर्णेन घटेन पिण्ड्या नीलाम्बरैवं मुनिभिः प्रदिष्टः ॥२८॥ श्यामो द्वितीयः पुरुषो हृकाणो

विस्तीर्णवस्त्रो धृतलेखनीकः । धन्वी तृतीयो युवतिस्तु गौरी देवालये कुम्भदुकूलहस्ता ॥ २९॥ तौली तुलायां पुरुषो दृकाणो वीथ्यापणस्थः पुरुषो द्वितीयः । कुम्भः करे गृध्रमुखो बिभर्ति कन्दर्पमूर्तिः पुरुषस्तृतीयः ॥ ३०॥ स्थानच्युता सर्पनिबद्धपाला कान्ता विवस्त्रा प्रथमो दृकाणः । कीटस्य मध्ये युवती सुरूपा भर्तृक्षिता सर्पशरीरयष्टिः ॥ ३१॥ सा वांछति स्थान सुखं तृतीये स्ता दृकाणाश्चिपिटास्य युक्तः । धनुषः पुरुषो धन्वी प्रथमः स्याद् द्वितीयकः । गौरवर्णस्तृतीयस्तु दण्डी कूर्ची बृहत्पुमान् ॥ ३२॥ मृगादिमो रोमश गात्रयष्टिः स्थूलद्विजो रौद्रमुखो धनुष्मान् । द्वितीयकः श्यामललोहवर्णालङ्कारयुक्ता युवतिदृकाणः ॥ तृतीयकस्तस्य पुमान् सतूणो धन्वी तथा दीर्घमुखः प्रदिष्टः ॥ ३३॥ कुम्भाद्यः पुरुषो गृध्रतुल्यवक्त्रः सकम्बलः मध्यो रक्ताम्बरा जाया श्यामान्त्यो रोमकर्णधृक् ॥ ३४॥ मीनाद्यः पुरुषो नौस्थो गौराङ्गी वरस्थिता । भवस्तृतीयः पुरुषो नग्नः सर्पावृताङ्गकः ॥ ३५॥ इत्यादि स्वयमप्यूह्यं द्रव्यनाम नवांशकात् । ग्रहदृष्टिवशाद्वर्णाः संख्यामुक्ति प्रमाणतः ॥ ३६॥ जीवत्रयाद्विभिर्जीवं धातुपातालिभूसुतैः । मूलमादित्यशुक्राभ्यां मिश्रैर्मिश्रं विनिर्दिशेत् ॥ ३७॥ इति चन्द्रे ग्रहैर्दृष्टे कार्यो द्रव्यस्य निर्णयः । बलाधिकेन निर्देशः कर्तव्यो मिश्रिते ग्रहे ॥ ३८॥ सजीवं जीवचन्द्राभ्यां निर्जीवं बुधवीक्षणात् । धाम्याधाम्यं क्रमाद्विद्याद्धातुं पातालिभूसुतैः ॥ ३९॥ मूलमादित्यशुक्राभ्यां शुष्काशुष्कं क्रमेणं च । मिश्रं मिश्रैर्वदेद्द्रव्यं तत्कालेन्दुनिरीक्षणात् ॥ ४०॥ द्विपदः स्त्री तुलायुग्मे चापे कुम्भे पदोन्नितः । बलं घ्री मीनकर्कालि रोषाश्विंदौ चतुष्पदः ॥ ४१॥ चतुर्धा द्विपदा ज्ञेया देवनृयक्षराक्षसाः । एवं मेषादिके चन्द्रे ज्ञातव्यं च भूमत्रये ॥ ४२॥ मेषसिंह हये देवा वृषस्त्रीमकरे नराः । नृयुक्तुलाघटे यक्षाः कर्कालिझषभे सुराः ॥ ४३॥ अपदानेकपादाश्च द्विधा स्थलजलोद्भवाः । ते च राशि स्वभावेन ज्ञातव्या ये खगाः पयोः ॥ ४४॥ हेमं तारं च ताम्रं च वङ्गं नागारलोहकम् ।
रंगं कांस्यं [illegible]

पुष्पं फलं मूलं त्वचं त्रिंशांशके विधौ॥ जाति विप्राधिकारी स्त्री अन्त्यजास्तस्कराः क्रमात् ॥४६॥ सूर्यादि गृहगे चन्द्रे चिन्तितः पुरुषो भवेत्। सूर्यादिवेश्मगे चन्द्रे कुष्ठं लौहन लोहकम् ॥४७॥ मशकं तिलकस्फोटं चौरस्य च विनिर्दिशेत्। गौरो ऽतिगौरः श्यामश्च कृष्णो मर्कटसन्निभः ॥४८॥ चन्द्रे त्रिंशांशका वर्णा मानवानां विलोमतः। ग्रहदृष्टिकृता वर्णास्ते च वर्णाः पुरोदिताः॥ ज्ञातव्याः सर्ववस्तूनां मुष्टौ वा चिन्तितेपि वा ॥४९॥ इति वेधतुम्बुरावर्ते द्रेष्काणादि ज्ञानम् ॥

भावार्थ॥ प्रश्न के समय चन्द्रमा तथा अन्य ग्रहों का तात्कालिक साधन कर तात्कालिक राशि, नक्षत्र, द्रेष्काण तथा नवांश के आधार पर शुभ-अशुभ फलों का विचार करने की विधि, द्रेष्काणों के स्वरूप तथा सूर्यादि ग्रहों के अनुसार सब प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देने की विधि का वर्णन इन श्लोकों में किया गया है। रज्जुचक्र के इस विषय को श्लोकानुसार विस्तृत रूप में समझ लेना चाहिए ॥१-४९॥

अथ भूचर खेचर चक्रम्॥ अधःस्थं भूचरं चक्रमूर्ध्वचक्रं तु खेचरम्। स्थिरशीघ्रविभागेन स्थायी यायी बलं क्रमात् ॥१॥ मेषादिद्वादशारेषु वाममार्गेण भूचरम्। तस्योर्ध्वं खेचरं चक्रं सव्यमार्गेण विन्यसेत् ॥२॥ ये ग्रहा राहुमार्गस्था भूचक्रे ते व्यवस्थिताः। सूर्यमार्गेण ये लग्नाः खेचराः खेचरे स्थिताः ॥३॥ भूचक्रे संस्थितैः पापैः खे चक्रे सौम्यखेचरैः। यायिस्थायिबलं ज्ञेयं क्रमात्स्वरविचक्षणैः ॥४॥ सौम्याश्च भूचरे चक्रे क्रूराः खेचरगा यदा। संहारो जायते तत्र सैन्ययोरुभयोरपि ॥५॥ भूचरस्था ग्रहा यत्र दृश्यन्ते च शुभाशुभाः। यायी संहारमायाति स्थायी चाधिक्षयो जयी ॥६॥ खेचरे खेचराः सर्वे सौम्याः सौम्यगता यदा। स्थायिनो बलसंवर्तो यायी भवति सङ्क्षतः ॥७॥ खेचरे भूचरे चक्रे यदा मिश्राः शुभाशुभाः। तदा मिश्रफलं वाच्यं स्थायिनो

यायिनोऽपि वा ॥८॥ इति भूचर खेचर चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ अधःस्थित भूधर-चक्र तथा ऊर्ध्वस्थ खेचर चक्र होता है। द्वादशभाव चक्र के भीतर एक और द्वादशभाव चक्र बनाकर, उसमें ऊपर वालेको खेचर तथा भीतर वाले को भूचर कहते हैं। इसका स्थिर एवं शीघ्र विभाग करके स्थायी तथा यायी का बल-विचार किया जाता है। विधि श्लोकानुसार समझलें ॥१-८॥

अथ प्रथम पथ चक्रम् ॥ अश्विन्यादीनि धिष्ण्यानि पंक्तियुक्त्या लिखेद् बुधः। नाडी चतुष्टये वेधः सर्पाकार पथाख्यके ॥१॥ क्रूर वेधस्थिता नाडी तद्धिष्ण्येन युते दिने। यात्रा युद्धं न कर्त्तव्यं पथ चक्र फलं त्विदम् ॥२॥ इति प्रथम चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ चार नाडियों से युक्त सर्प के आकार का एक चक्र बना कर, उसमें अश्विनी आदि नक्षत्र पंक्ति से लिखें। जिस नाड़ी में क्रूर ग्रह वेध करता हो, उस के नक्षत्र वाले दिन में यात्रा तथा युद्ध नही करना चाहिए॥ इति ॥

अथ द्वितीय पथ चक्रम् ॥ पथ-चक्रं प्रवक्ष्यामि ख्यातं यद् ब्रह्मयामले। येन विज्ञान मात्रेण सद्यो यात्राफलं वदेत् ॥१॥ अश्विन्यादि लिखेच्चक्रं रेवत्यन्तं त्रिनाडिकम्। सर्पाकारे च ऋक्षाणि प्रत्येकं च वदाम्यहम् ॥२॥ अश्विन्यार्द्रा दितिर्ज्ञेया तथा चोत्तर फाल्गुनी। हस्तो ज्येष्ठा तथा मूलं शततभं पूर्वभाद्रकम् ॥३॥ प्रथमा नाडिका पश्चाद् भरणी मृगशीर्षके। पुष्यः सभाग्यश्चित्रा च मैत्रमापं च वासवम् ॥४॥ अहिर्बुध्न्यमिति ज्ञेया द्वितीया नाडिका बुधैः। तृतीया नाडिका ज्ञेया बह्नि ब्रह्मभुजङ्गमम् ॥५॥ मघा स्वाती द्विदैवत्यं विश्वं विष्णुश्च रेवती। ग्रह संयोगतो ज्ञेयमेतासु च शुभाशुभम् ॥६॥ यात्रिकं यत्तु नक्षत्रं नाड्यां यात्रादिभादितः। यावती तावती संख्या विज्ञेया दैवचिन्तकैः ॥८॥

भङ्गस्तत्र तु विज्ञेयो यत्रांशे पापखेचरैः । सौम्य संयोगतः सौख्यं विशेषेणापि तच्छृणु ॥ ९॥ त्रासः सूर्याद् भवेन्मृत्युः कुजात्सौराच्च बन्धनम् । राहु संयोगतो भङ्ग इति पाप विनिर्णयः ॥ १०॥ स्त्रियः समागम श्चन्द्रात्कलाविलासङ्गमो बुधात् । जीवेन धार्मिकैः शुक्रात्पण्डितै रुक्तमानतः ॥ ११॥ द्विघ्नं स्वक्षेत्र मित्रर्क्षे त्रिघ्नं चक्रे तथोच्चगे । यात्रायां सर्वदा चिन्त्यं पथचक्रमिदं बुधैः ॥ १२॥ इति द्वितीय पथचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ अब द्वितीय पथ चक्र के विषय में कहा जाता है । सर्पाकार त्रिनाडी चक्र में, प्रत्येक नाडी में अश्विनी आदि नक्षत्रों को लिखें । यात्रा करने वाले का जो यात्रा-नक्षत्र हो, वह जिस नाड़ी में हो, उसकी संख्या से गुण कर श्लोकानुसार शुभाशुभ फल कहना चाहिए । यदि ग्रह अपने मित्र के गृह में हो तो दूरी को दूना, उच्च अथवा वक्र हो तो तिगुना विचारना चाहिए ॥ १-१२ ॥ इति ॥

अथ खेचर भूचर चक्रम् ॥ खेचरं भूचरं वक्ष्ये मृगयासिद्धिदं नृणाम् । ऊर्ध्वं तु खेचरं चक्रमधो भूचरमुच्यते ॥ १॥ पापरिष्टकैर्योगैर्मृगया सिद्धिरुत्तमा । द्यूने हीनबलैः पापैर्युद्धयोगै र्बलान्वितैः ॥२॥ पञ्चाङ्ग संप्यै दुर्बैः स्याद्योगैः पापाद्यगोचरैः । विशेषाद् द्यून लग्नेशौ ह्येयौ हेतु वदामि तौ ॥ ३॥ सिद्धिर्योगे द्वयोः केन्द्रे क्लेशानर्थप्रदौ च तौ । पापांशगौ कुजहौ तु तल्लोपे मृगया नहि ॥ ४॥ शुभ सौम्यो लग्नपतिः सिद्धिः क्रूरो द्यूनपतिर्यदि । जलर्क्षे जलजैः खेटैर्जलैः स्यान्मृगया स्फुटम् ॥५॥ शु-भैर्लग्नगतैर्द्यूनं यावद्भिश्चेक्षितं ग्रहै । तत्संख्याः प्राणिनो वध्या वक्रोच्चस्थैस्त्रिसंगुणाः ॥ ६॥ कुशलं शुभ नक्षत्रे क्लेशोऽनर्थस्तथा शुभे । शुभपापेन विद्धं चेत्तदा दोषः प्रजायते ॥ ७॥ चन्द्रारखेटकयो र्मध्ये यावद्भान्यशुभग्रहैः । अधिष्ठितानि तत्संख्य प्राणिनां वधमादिशेत् ॥ ८॥ शुभयुक्तैश्च तत्संख्य प्राणिनां च पलायनम् । नक्षत्र जातिवज्जातिमाकृतिं वर्णसंस्थिताम् ॥ ९॥ पाप संयोगतो ब्रूयाद्राशिभिर्वा

भा० टी०

पु० सं० २०२८

यथाक्रमात् ।। द्विगुणं स्वांश मित्रांशे त्रकोच्चे त्रिगुणं वदेत् ।। ऋक्षपाद चतुष्के तु ग्रहयोगक्रमाद्वदेत्।
प्रहारं प्राणिनां जातं प्राक्पश्चात्पृष्ठ पार्श्वगम् ।। २० ।। छागौ तु कृत्तिकापुष्यौ सर्पभं रोहिणी मृगौ।
आर्द्रा मूले तथा श्वानौ मूषकौ पितृ वासवौ ।। २१ ।। सर्पादिती च मार्जारौ व्याघ्रौ चित्राविशाखके। अर्यमे
तोयभे गावौ मैत्रे शक्रे तथा मृगौ ।। २२ ।। हस्त स्वाती च महिषौ तुरङ्ग वश्विवारुणौ। मर्कटौ विष्णु
विश्वाख्यौ याम्यपौष्णे मतङ्गजौ ।। २३ ।। भगाहिर्बुध्न्य भे सिंहौ विज्ञेयौ दैव चिन्तकैः। पूभाद्राभिजितो
बभ्रुर्भानां जातिरितीरिता ।। २४ ।। अथवा गणयेद्धीमान्वक्ष्यमाण क्रमेण तु। तस्मिन्नहनि यो वारस्ति-
थिर्या तद्दिने तु तत् ।। २५ ।। एकीकृत्य भवेदेवं वर्गितं दलितं भजेत्। त्रिघ्नेन च शेषांकसंख्यया प्रा-
णिवधं दिशेत् ।। २६ ।। दले शेषे विजानीयाद्युद्धादेकः पलायते। वक्रितैरपि निर्देश्यं प्राणिनां ते पला-
यनम् ।। २७ ।। अथवापि तिथिर्वारं युक्तं कृत्वा तु वर्जितम्। दलितं चेष्टनाडीभिर्भक्तं शेषाङ्क संख्यया
प्राणिनां वधमादेश्यमाकृतिं राशि ऋक्षवत् ।। २८ ।। स्खलनं जन्मभे वाच्यं दुःखं चैव विपत्क्रमे। अनु
भेदाश्च निधने प्रत्यरौ पतनं दिशेत् ।। २९ ।। शेषे तु शोभनं वाच्यं फलं दैवविदा सदा। खेचरं भूचरं
प्रोक्तं नृपाणां मृगयार्थिनाम् ।। ३० ।। इति खेचर भूचर चक्रम् ।।

भावार्थ ।। आखेट (मृगया) सिद्धि के लिए खेचर-भूचर चक्र का विचार
किया जाता है। द्वादश भाव चक्र में ऊपर के ६ भाव खेचर तथा नीचे के ६ भाव भूचर कहे जाते हैं। पाप
ग्रहों से उत्पन्न अरिष्ट योग में यात्रा करने से मृगया की सिद्धि होती है। सप्तम में निर्बली ग्रह हों तथा
बली पापग्रह से उत्पन्न अरिष्ट योग में यात्रा करने से भी मृगया सिद्ध होती है। शेष श्लोकानुसार समझलें ।। १-३० ।।

अथ पञ्चाङ्गम् ।। अथ वक्ष्यामि पञ्चाङ्गं तात्कालिकमनुत्तमम्। येन
विलम्बकालेण याम् [illegible] फलं भवेत् ।। १ ।। वारादिकं पञ्चाङ्ग मुच्यते तत्र तच्छृणु। वारस्तिथिश्च ऋ-

क्षाणि योगश्च समुहूर्तकः ॥ २ ॥ वारादिकं हि पञ्चाङ्गं गतनाडीगुणाः क्रमात् । अष्टौ सविंशतिर्वारे तिथौ त्रिंशच्च भे तथा ॥ ३ ॥ ऋक्षाणि योगे भान्येवं मुहूर्ते तिथयो हताः । गतनाडी हता षष्ट्या भक्ता युक्ते स्वसंख्यया ॥ ४ ॥ अष्टाविंशत्तथा त्रिंशत्सप्तविंशत्तथा तिथिः । षष्टिभागे फलं लब्धं स्वस्वसंख्यायुतं भवेत् ॥ ५ ॥ इष्टकालिक पञ्चाङ्गम् वाराद्यैः शोधिते भवेत् । सामान्येन प्रमाणं स्यात्पंचाङ्गं यदि तत्रकिम् ॥ ६ ॥ शुभाशुभानि तत्रस्युरेकस्मिन्नपि वासरे । तस्मात्सूक्ष्ममिदं ज्ञेयमेकस्मिन्नपि वासरे ॥ ७ ॥ स्थूलवत्सर्वकार्याणि विधेयान्यत्र सर्वदा । वर्त्तमानं तु पञ्चाङ्गं तत्कालघटिका दलैः ॥ ८ ॥ युक्तं तत्कालपञ्चाङ्गं तदग्रे प्रत्ययो भवेत् ॥ ९ ॥ इति तात्कालिक तिथ्यादि पञ्चाङ्ग-चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ वार, तिथि, नक्षत्र, योग और मुहूर्त्त को 'पञ्चाङ्ग' कहते हैं। एक ही दिन में विचार कर, शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त करने के लिए पञ्चाङ्ग श्रेष्ठ साधन है। सब कार्य इसीके आधार पर करने चाहिए ॥ १-९ ॥ इति ॥

अथ नाडी चक्रम् ॥ अश्विन्यादि लिखेच्चक्रं सर्पाकारं त्रिनाडिकम् । तत्र वेधवशाज्ज्ञेयं विवाहादि शुभाशुभम् ॥ १ ॥ नाडीवेधेन नक्षत्राण्यश्विन्यार्द्रादि उत्तराः । हस्तेन्द्र मूलवारुण्याः पूर्वभाद्रपदा तथा ॥ २ ॥ याम्यं सौम्यं गुरुर्योनिश्चित्रा मित्र जलाह्वये । धनिष्ठा चोत्तराभाद्रा मध्य नाडी व्यवस्थिता ॥ ३ ॥ कृत्तिका रोहिणी सार्पं मघास्वाती विशाखिके । उषा च श्रवणं पूषा पृष्ठनाडी व्यवस्थिता ॥ ४ ॥ अश्व्यादिनाडी वेधर्क्षं षष्ठे च द्वितयं क्रमात् । याम्यादि तुर्यतुर्यं च कृत्तिकादि द्विषष्ठकम् ॥ ५ ॥ एवं निरीक्षयेद्वेधं कन्या मन्त्रे गुरौ सुरे । पण्यस्त्री स्वामि मित्रेषु देशे ग्रामे पुरे गृहे ॥ ६ ॥ एकनाडीस्थ ऋक्षाणि यदा स्युर्वरकन्ययोः । तदा वेधं विजानीयाद् गुर्वादिषु तथैव हि ॥ ७ ॥ प्रकटं यस्य जन्मर्क्षं तस्य जन्मर्क्षतो व्यधः । प्रनष्टं जन्मभं यस्य तस्य नामर्क्षतो भवेत् ॥ ८ ॥ द्वयोर्जन्मभयोर्वेधो

द्वयोर्नाम भयोस्तथा । जन्मनामर्क्षयोर्वेधो न कर्तव्यः कदाचन ॥९॥ एकनाडी स्थिता दुष्टा भर्तुश्चैव कुलाङ्गना तस्मान्नाडीव्यधो वीक्ष्यो विवाहे शुभमिच्छता ॥१०॥ हृन्नाडीवेधने भर्ता मध्यनाडीव्यधे द्वयम् । पृष्ठनाडी व्यधे कन्या म्रियते नात्र संशयः ॥११॥ समासन्ने व्यधे शीघ्रं दूरवेधे चिरेण तु । वेधान्तरभमानेन वेधे दुष्टं प्रजायते ॥१२॥ एकर्क्षं जायते यत्र विवाहे वरकन्ययोः । मूलवेधो भवेत्तत्र महादुष्टफलप्रदः ॥१३॥ एक नाडीस्थिता यत्र गुरुमन्त्राश्च देवताः । तत्र द्वेषं रुजं मृत्युं क्रमेण फलमादिशेत् ॥१४॥ प्रभुः पण्याङ्गना मित्रं देशं ग्रामं पुरं गृहम् । एकनाडीगता भव्या विरुद्धा वेधवर्जिताः ॥१५॥ क्रूरग्रहाक्रान्तनाड्यां यस्य जन्मर्क्षसम्भवः । तस्य मृत्युर्नसन्देहो यात्रा युद्धे रुग्दभवे ॥१६॥ द्व्यादिक्रूरव्यधो यस्य जन्मर्क्षेच त्रिनाडिके । हानिर्विघ्नं भयंक्लेशो जायते वेधबन्धनम् ॥१७॥ एवं सौम्यव्यधो यस्य जन्मर्क्षे प्रजायते । जयो लाभं सुखं तस्य जायते नात्र संशयः ॥१८॥ शुभाशुभग्रहैर्विद्धा यस्य जन्मर्क्ष नाडिका । तस्य मिश्रं फलं वाच्यं नाडीचक्रं स्वरज्ञकैः ॥१९॥ एकांशेन व्याधिमृत्युः स्वल्पं दुष्टं द्वितीयकम् । एतच्चक्रं समालिख्य अश्विन्याद्यं त्रिपंक्तितः ॥२०॥ वेधो द्वादश नाडीभिः कर्तव्यः पन्नगाकृतिः । आद्यांशेन चतुर्थांशं चतुर्थांशेन चादिमम् । द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम् ॥२१॥ एवं भांशव्यधो येषां जायते वरकन्ययोः । तेषां मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्पदुष्टदाः ॥२२॥ गुरुमन्त्राश्च देवाश्च वेधांशस्था न शोभनाः । अन्यांशकगता भव्या ज्ञातव्याः सर्वदा बुधैः ॥२३॥ प्रभुः पण्याङ्गनामित्रं देशं ग्रामं पुरं गृहम् । अंशवेधस्थितं भव्यं विरुद्धं वेधवर्जितम् ॥२४॥ एवं जानाति यश्चक्रं चक्रराजं त्रिनाडिकम् । तस्य पाणितले ज्ञानं सर्वदैव प्रतिष्ठितम् ॥२५॥ इति द्वादशनाडीचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ अश्विनी से सर्पाकार त्रिनाडी चक्र को लिखकर विवाहादि शुभकार्यों में वेध के विचार से शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। नक्षत्रों तथा नाडियों के सर्पाकार वेध की पूर्ण प्रक्रिया को श्लोकानुसार समझ लेना चाहिए ॥ ९-२५ ॥

अथ अहिबलयचक्रम् ॥ अहिचक्रं प्रवक्ष्यामि यथा सर्वहृभाषितम् । द्रव्यं शल्यं तथा शून्यं
येन जानन्ति साधकाः ॥१॥ निधिर्निवर्तनैकस्थः सम्भ्रान्तो यत्र भूतले । तत्र चक्रमिदं स्थाप्यं स्थानद्वारमुखास्थितम् ॥
२॥ ऊर्ध्वरेखाष्टकं लेख्यं तिर्यक् पञ्च तथैव च । अहिचक्रं भवत्येवमष्टाविंशति कोष्ठकम् ॥३॥ तत्र पौष्णाश्वि-
याम्यर्क्षं कृत्तिकापितृभाग्यकम् । उत्तराफाल्गुनी लेख्यं पूर्वपंक्त्यां भसप्तकम् ॥४॥ अहिर्बुध्न्याजपादर्क्षं शतभं
ब्राह्मं सार्पभम् । पुष्यं हस्तं समालेख्यं द्वितीयां पंक्तिमास्थितम् ॥५॥ विधिविष्णुधनिष्ठाख्यं सौम्यरौद्रपुनर्वसू
चित्राभं च तृतीयायां पंक्तौ धिष्ण्यस्य सप्तकम् ॥६॥ विश्वर्क्षं तोयभं मूलं ज्येष्ठा मैत्रविशाखिके । स्वाती
पंक्त्यां चतुर्थ्यां च कृत्वा चक्रं विलोकयेत् ॥७॥ एवं प्रजापते चक्रे प्रस्तारः पन्नगाकृतिः । द्वारशाखे मघा-
याम्ये द्वारस्था कृत्तिका मता ॥८॥ अश्वीशपूर्वाषाढादित्रिकं पञ्च चतुष्टयम् । रेवती पूर्वाभाद्रेन्दोर्भानि प्रोक्तानि
भास्वतः ॥९॥ उदयादिगता नाड्यो भग्नाः षष्ठ्या प्रशेषके । दिनेन्दुभुक्तियुक्तोऽसौ भवेत्तत्कालचन्द्रमाः ॥१०॥
चन्द्रवत्साधयेत्सूर्यमृक्षस्थं चेष्टकालिकम् । पश्चाद्विलोकयेत्तौ च स्वर्क्षे वा चान्यभे स्थितौ ॥११॥ चन्द्रऋक्षे यदा
केन्द्रे तत्रास्ति निश्चितं निधिः । भानुऋक्षे स्थितौ तौ चेत्तदा शल्यं च नान्यथा ॥१२॥ स्वस्वभे द्वितयं
ज्ञेयं नास्ति किञ्चिद्विपर्यये । नवांशकानुमानेन भूमानं तस्य कल्पयेत् ॥१३॥ स्थितं न लभते द्रव्यं चन्द्रे क्रूरग्र-
हान्विते ॥१४॥ पुष्टे चन्द्रे भवेन्मुद्रा क्षीणे चन्द्रेऽल्पको निधिः । ग्रहदृष्टिवशात्सोऽपि विज्ञेयो नवधा बुधैः ॥
१५॥ हेम तारं च ताम्रारं रत्नं कांस्यायसं त्रपु । नागं चन्द्रे विजानीयाद्भास्करादिग्रहेक्षिते ॥१६॥ मिश्रैर्मिश्रं
भवेद् द्रव्यं शून्यं दृष्टिविपर्यये । सर्वग्रहेक्षिते चन्द्रे निर्दिष्टोऽसौ महानिधिः ॥१७॥ शुभक्षेत्रगते चन्द्रे लाभः
स्यात्तत्रसंशयः । पापक्षेत्रे न लाभो हि विज्ञेयः स्वरपारगैः ॥१८॥ हेम तारं च ताम्रं च पाषाणं मृन्मयाय-
सम् । सूर्यादिग्रहगे चन्द्रे द्रव्यभाण्डं प्रजापते ॥१९॥ भुक्तराशिप्रमाणेन भूमानं कामिकैः करैः । नीचेद्विघ्नं
परं नीचे जलस्थोऽसौ भवेन्निधिः ॥२०॥ स्वोच्चस्थे भूर्ध्वगं द्रव्यं नवांशकक्रमेण च । परमोच्चे परे

तस्या दशगुणा वृद्धिः चतुर्वर्गेन्दु कुदैः मितिस्थमृक्षसंक्रमे ॥२१॥ चन्द्रांशभुक्तमानेन द्रव्यसंख्या विधीयते। बलक्रमात् ॥२२॥ अधिष्ठितं भवेद्द्रव्यं यत्र चन्द्रो ग्रहान्वितः। तदधिष्ठापको ज्ञेयो भास्करादिग्रहैः क्रमात्॥ २३॥ ग्रहो मुखे ग्रहश्चैव क्षेत्रपालं च मातृकाः। दीपेशं भीषणं रुद्रं यक्षं नागं विदुः क्रमात् ॥ २४॥ ग्रहे होमः प्रकर्तव्यो मुख्ये नारायणी बलिः। क्षेत्रपाले सुरामांसं मातृकायां महाबलिः॥२५॥ दीपेशे दीपजा पूजा भीषणे भीषणार्चनम्। रुद्रे च रुद्रजो जाप्यो यक्षे यक्षादिशान्तयः॥२६॥ नागे नागग्रहाः पूज्या गणनाथेन संयुताः। लक्ष्मीधरादितत्त्वानि सर्वकार्येषु पूजयेत् ॥२७॥ एवं कृते विधानेति निधिः साध्योपि सिध्यति। निधिप्राप्ता नरा लोके वन्दनीया न संशयः॥२८॥ पद्मासने चन्द्रातपेन ऐं क्लीं हूँ वदवद वाग्वादिनि स्वाहा ॥ इति अहिबल चक्रं समाप्तम् ॥

भावार्थ ॥ पृथ्वी के भीतर गड़े हुए धन, हड्डी तथा शून्य — इन पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए अहिबल चक्र का प्रयोग किया जाता है। आठ रेखा खड़ी तथा पाँच रेखा तिरछी लिखने पर २८ कोष्ठ का अहिचक्र बनता है। इसकी चारों पंक्तियों में अश्विन्यादि नक्षत्रों को श्लोकों में निर्देशित नियमानुसार लिख कर, तात्कालिक चन्द्र-नक्षत्र का ज्ञान प्राप्त कर, इष्ट कालिक सूर्य-नक्षत्र का साधन करें। फिर उनके आधार पर भूमिगर्भस्थ वस्तु का विचार करना चाहिए। अन्त में जो मन्त्र- ऐं क्लीं हूँ— दिया गया है, इसे रात्रि के समय पद्मासन से बैठ कर जप करने से निधि का लाभ होता है॥ १-२८॥

अथ लाङ्गल चक्रम् ॥ लाङ्गलं दण्डिका युक्तं योक्त्रद्वयसमन्वितम्। दण्डिकादि लिखेद्भानि दिनेशाक्रान्तभादितः॥१॥ दण्डिका हल युकानां द्विद्विस्थाने त्रिकं त्रिकम्। योक्त्रयोः पंचके तत्र गणना चक्रलाङ्गले ॥२॥ दण्डिस्थे तु गवां हानिर्युकस्थे स्वामिनो भयम्। लक्ष्मीलांगलयोक्त्रस्थे क्षेत्रवृद्धिर्न संशये॥३॥ इति लाङ्गल चक्रम् ॥

भावार्थ॥ यह चक्र हल, जुआ तथा दो खूँटे के साथ बनता है। सूर्य-नक्षत्रसे दिन-नक्षत्र तक क्रमशः सव्य मार्ग से दण्डिका, हल तथा जुआ में दो स्थानों में तीन-तीन तथा जुआ में पाँच-पाँच नक्षत्र रक्खें। १।२ दण्ड के नक्षत्र में हल चलाने से गौ की हानि, जुआ के नक्षत्र में स्वामी को भय तथा लांगल में हल चलाने से लक्ष्मी का लाभ होता है॥१-३॥ इति॥

अथ बीजोप्ति-चक्रम्॥ सूर्यभादुरगः स्थाप्यस्त्रिनाड्येकान्तरः क्रमात्। मुखे त्रीणि गले त्रीणि भानि द्वादश चोदरे॥१॥ पुच्छे तुर्यं बहिः पञ्च दिनभाच्च फलं वदेत्। वदने कुक्कले लिंबादगलकेऽङ्गारकस्तथा॥२॥ उदरे धान्यवृद्धिश्च पुच्छे धान्यक्षयो मतः। ईति रोगभयं बाह्ये चक्रे बीजोप्ति संज्ञके॥३॥ इति बीजोप्ति चक्रम्॥

भावार्थ॥ त्रिनाडी सर्पाकार चक्र में सूर्य-नक्षत्र से दिन-नक्षत्र तक गिनकर क्रमशः मुख मे ३, गले में ३, पेट मे १२, पूँछ मे ४ तथा बाहर ५ नक्षत्र रक्खें। यदि दिन-नक्षत्र मुख में पड़े तो रुई जैसा अन्न हो, गले में पड़े तो अग्नि से जले, पेट में हो तो अन्न-वृद्धि, पूँछ में हो तो अन्न की हानि एवं बाहर हो तो टिड्डी तथा रोगादि का भय समझना चाहिए॥१-३॥ इति॥

अथ वृषभचक्रम्॥ वृषचक्रं वृषाकारं सर्वावयवसंयुतम्। लिखित्वा विन्यसेद्भानि वृषनामर्क्षपूर्वकम्॥१॥ मुखाक्षि कर्णशीर्षेषु शृङ्गेस्कन्धे द्विकं द्विकम्। त्रीणि पृष्ठे त्रिकं पुच्छे द्वे द्वे पादोदरे न्यसेत्॥२॥ हल प्रवाह बीजोप्ति प्रारम्भादि दिनर्क्षके। यस्मिंशे सोस्थितश्चन्द्रस्तस्माद्वक्ष्ये शुभाशुभम्॥३॥ हानिर्वक्त्रगते सुखानि नयने कर्णे तु भिक्षाटनं शीर्षे स्याद्धृतिरत्र शृङ्गयुगले स्कन्धस्थिते शोभनम्। पृष्ठे राजभयं च पुच्छभगते पादे श्रमं हृत्सुखं चैवं चन्द्रभजं फलं प्रकटितं चक्रे वृषाख्ये नृणाम्॥४॥ इति वृषभ चक्रम्॥

भावार्थ॥ बैल के समान अवयवों सहित वृष चक्र बना कर वृष के नाम के नक्षत्र से दिन-नक्षत्र पर्यन्त गिनकर नक्षत्रों का न्यास करे। मुख, आँख, कान, सिर, सींग तथा कंधे पर दो दो नक्षत्र, पीठ पर ३, पूँछ पर २ तथा पाँव और पेट पर दो-दो नक्षत्र लिख कर, हलप्रवाह तथा बीजादि दिन के नक्षत्र से इष्टदिन पर्यन्त न्यास करे। जिस नक्षत्र के जिस अंश में चन्द्रमा हो, उससे श्लोकानुसार शुभाशुभ फल को कहे॥ १-४॥ इति॥

अथ सप्तनाडी चक्रम्॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि चक्रं यत् सप्तनाडिकम्। यस्य विज्ञान मात्रेण वृष्टिं जानंति साधका:॥१॥ कृत्तिकादि लिखेद्भानि साभिजिति क्रमेण च। सप्तनाडी त्र्यधस्तत्र कर्तव्या: पन्नगाकृति:॥२॥ ताराचतुष्कवेधेन नाडिकैका प्रजायते। तेषां नामान्यहं वक्ष्ये तथा चैव कलानि च॥३॥ कृत्तिका च विशाखा च मैत्राख्यं भरणी तथा। ऊर्ध्वगा शनिनाडी स्याच्चंडनाड्यभिधीयते॥४॥ रोहिणी स्वाति ज्येष्ठाश्विद्वितीया नाडिका मता। आदित्यप्रभवा नाडी वायुनाडी तथैव च॥५॥ सौम्यं चित्रा तथा मूलं पौष्णमृक्षं चतुर्थकम्। तृतीयांगारका नाडी। दहनाख्या तथैव च॥६॥ रौद्रं हस्तं तथा पूर्वाषाढा भाद्रा तथोत्तरा। चतुर्थी जीवनाडी स्यात्सौम्यनाडी प्रकीर्तिता॥७॥ पुनर्वसूत्तरा फल्गुन्युत्तराषाढतारका:। पूर्वभाद्रा च शुक्राख्या पंचमी नीरनाडिका॥८॥ पुष्यर्क्षं फल्गुनी पूर्वा अभिजिच्छततारका। षष्ठी नाडी च विज्ञेया बुधस्य जलनाडिका॥९॥ आश्लेषार्क्षं मघा कर्णधनिष्ठा च तथैव च। अमृताख्याहि विज्ञेया सप्तमी चन्द्रनाडिका॥१०॥ मध्यमार्गे स्थिता सौम्या नाडी तस्याग्रपृष्ठत:। सौम्ययाम्यगतं ज्ञेयं नाडिकानां त्रिकं त्रिकम्॥११॥ क्रूरा याम्यगता नाड्य: सौम्या: सौम्यदिगाश्रिता:। मध्यनाडी च मध्यस्था ग्रहरूप फलप्रदा॥१२॥ एकनाडी गताश्चेत्स्यु-द्ग्रहा: क्रूरा: शुभा यदि। ततो वेधफलं वाच्यं शुभं वा यदि वाशुभम्॥१३॥ ग्रहा: कुर्युर्महावातं गताश्चंडाख्यनाडिका। वायुनाडीगता वायुं दहन्यामति दाहका:॥१४॥ सौम्यनाडीगता मध्या नीरस्था मेघवाहका:।

जलाप्यां वृष्टिदश्चन्द्रोऽमृते चाप्यतिवृष्टिदाः ॥ १५॥ एकोऽप्येतत्फलं दत्ते स्वनाडीसंस्थितो ग्रहः । सुभूतः सर्वनाडीस्थो दत्ते नाड्युद्भवम्फलम् ॥ १६॥ प्रावृट्काले समायाते रौद्रऋक्षगते रवौ । नाडीवेध समायोगाज्जलयोगं वदाम्यहम् ॥ १७॥ यत्र नाडी स्थितश्चन्द्रस्तत्रस्थाः खेचरा यदि । क्रूर सौम्य विमिश्राश्च तद्दिने वृष्टिरुत्तमा॥ १८॥ एकऋक्ष समायुक्ताः जायेत यदि खेचराः। तत्रकाले महावृष्टिर्यावित्तस्यांशके शशी॥ १९॥ केवलैः सौम्य पापैर्वा ग्रहैर्विद्धो यदा शशी। तदातितुच्छं पानीयं दुर्दिनं तु भवेद् ध्रुवम् ॥ २०॥ यस्य ग्रहस्य नाडीस्थश्चन्द्रमास्तद् ग्रहेण चेत् । दृष्टो युक्तः करोत्यम्भो यदि क्षीणो न जायेत ॥२१॥ पीयूषनाडिगश्चन्द्रस्तत्र खेटाः शुभाशुभाः। द्विचतुःपञ्च पानीयं दिनान्येकत्रिसप्तकम् ॥ २२॥ एवं जलाख्य नाडीस्थे चन्द्रे मिश्रग्रहान्विते । दिनार्धं दिवसं पञ्चदिनानि जायते जलम् ॥ २३॥ नीरनाडिगते चन्द्रे तत्रस्थैः पूर्ववद् ग्रहैः। यामं दिनार्धकं त्रीणि दिनानि जायते जलम् ॥ २४॥ अमृतादि त्रये यत्र भवन्ति सर्वखेचराः। तत्र वृष्टिः क्रमाज्ज्ञेया धृत्यर्करस-वासरैः॥ २५॥ सौम्यनाडीगताः सर्वे वृष्टिदास्ते दिनत्रयम् । शोषनाड्यां महावातदुष्टवृष्टिप्रदा ग्रहाः॥२६॥ निर्जला जलदा नाडी भवेद्योगे शुभाधिके । क्रूराधिक समायोगे जलदोऽप्यम्बुदाहकः॥२७॥ याम्यनाडीस्थिताः क्रूरा अनावृष्टि प्रसूचकाः। शुभयुक्ता जलस्थास्ते अतिवृष्टिप्रदा ग्रहाः ॥२८॥ एकनाडी समारूढौ चन्द्र-माधरणीसुतौ । यदि तत्र भवेज्जीवस्तदा वारिमयी मही॥२९॥ बुध शुक्रौ यदैकत्र गुरुणा च समन्वितौ। चन्द्र योगे तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा ॥३०॥ जलयोगे समायाते यदा चन्द्रसितौ ग्रहौ। क्रूरैर्दृष्टौ युतौ वापि तदा मेघोऽल्पवृष्टिदः॥३१॥ उदयास्तमये मार्गे वक्रयुक्ते च संक्रमे। जलनाडीगताः खेटा महावृष्टिप्रदायकाः ॥३२॥ व्रजति यदि कुजः पतङ्गमार्गे घट एव भिन्नतले जलं ददाति। यदि भवति च भास्कराग्रगामी प्रलयघनानपि शोषितुं समर्थः ॥ ३३॥ इति सप्तनाडी चक्रम् ॥

भावार्थ॥ सप्तनाडी चक्र द्वारा वृष्टि (वर्षा) के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त किया जाता है

विभिन्न नाडियों, उनमें विभिन्न ग्रहों की स्थिति तथा प्रभावानुसार वर्षा के स्वरूपादि के विषय मे श्लोकों में कहे अनुसार समझलें ॥ १-३३॥

अथ समुद्रचक्रम् ॥ कृत्तिकादिलिखेच्चक्रं मेष संक्रान्तिवासरात् । दिनऋक्षं भवेद्यत्र तत्र वृष्टिफलाफलम् ॥१॥ अति वृष्टिः समुद्रे च तटे वृष्टिस्तु शोभना । सन्धौ च खण्डवृष्टिः स्यादनावृष्टिश्च पर्वते ॥ २॥ इति समुद्रचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ मेष संक्रान्ति के दिन जो नक्षत्र हो वहाँ से अभिजित् सहित २नक्षत्र समुद्रमें, २ तटप्रदेश में, १ पर्वत में तथा २ संधिमें एवं चारों दिशाओं में दो दो नक्षत्र लिखें । वृष्टि विचार के समय दिन-नक्षत्र समुद्र में हो तो अति वृष्टि, तट में हो तो शुभवृष्टि, संधिमें हो तो खण्डवृष्टि एवं पर्वत में हो तो अनावृष्टि होगी - यह समझना चाहिए ॥ १-२॥ इति॥

अथ स्त्रीपुं नक्षत्राणि ॥ आर्द्रादिदशकस्त्रीणां विशाखात्रि नपुंसकम् । मूला-च्चतुर्दशः पुंसां नक्षत्राणि क्रमाद्बुधैः ॥१॥ वायुर्नपुंसके भे च स्त्रीणां भे चाभ्रदर्शनम् । स्त्रीणां पुरुषसंयोगे वृष्टिर्भवति निश्चितम् ॥ २॥ इति स्त्री पुंनक्षत्राणि ॥

भावार्थ ॥ आर्द्रा से १०नक्षत्र स्त्री संज्ञक, विशाखा से ३ नपुंसक संज्ञक तथा मूल से १४ नक्षत्र पुरुष संज्ञक होते हैं । संक्रान्ति के दिन सूर्य-चन्द्र नपुंसक नक्षत्र में हों तो उस मास वायु अधिक चलेगी, स्त्री संज्ञक नक्षत्र में हों तो बादल घिरे रहेंगे एवं स्त्री-पुरुष का संयोग होतो अत्यधिक वर्षा होगी ॥ १-२॥ इति॥

अथ रविचन्द्र योग चक्रम् ॥ ऋक्षप्रवेशे यदि भास्करस्य चन्द्रे त्रिकोणे यदि केन्द्रगे वा जलेन ... ... स्थितो ... जलदा भवन्ति ॥ १॥ मत्स्य कुलीरे

मकरे बहूदकं कुम्भे वृषे चाजजलार्धमात्रम्। अलौ च तौली जलसंप्लमाहुः सिंहादिशेषा अजला भवन्ति ॥२॥ कृत्तिकादित्रयं ऋक्षमारुद्रात्पञ्चभिः सह। पूर्वाषाढाच्चतुष्कं च पूर्वभाद्रपदान्तिमे ॥३॥ इत्येव चन्द्रनक्षत्रं शेषं सूर्यस्य उच्यते। सूर्ये सूर्ये भवेद्वायुश्चन्द्रे-चन्द्रे न वर्षति ॥४॥ चन्द्रसूर्यसमायोगस्तदा वर्षति माधव: ॥५॥ इति चन्द्र सूर्य योग: ॥

भावार्थ ॥ सूर्य के नक्षत्र प्रवेश के समय यदि चन्द्रमा केन्द्र अथवा त्रिकोणमें तथा जलचर राशि में शुक्र द्वारा दृष्ट अथवा युत हो तो सम्पूर्ण मेघ पानी बरसाते हैं। मीन, मकर, कर्क राशिमें हों तो अतिवृष्टि, कुम्भ, वृष, धनु राशि में हों तो अर्द्धवृष्टि; वृश्चिक, तुला में हों तो स्वल्प वृष्टि एवं सिंहादि शेष राशियों में हों तो अनावृष्टि होती है। संक्रान्ति के समय दोनों सूर्य चन्द्र सूर्य-नक्षत्र में ही हों तो वायु, दोनों चन्द्र नक्षत्र में हों तो अनावृष्टि एवं चन्द्र सूर्य का योग हो तो वर्षा होती है ॥ २-५॥

अल्प वृष्टि योगा: ॥ तदनुग्रह योग: ॥ स्वाती पयोत्तरा रौद्रे प्राजापत्युत्तरासु च। यावत्तिष्ठति भूमीजस्तावदेव न वर्षति ॥१॥ इन्दौ शनौ गिरौ संस्थौ भानुर्वा भूमिनन्दन:। शिशोरिवायुर्वा जर्षे भूलोके भूतिदं भवेत् ॥२॥ कनकं पुरतो गच्छेद् भानुभार्गवयोरपि। तुषारवर्ष, पर्जन्यो वर्षेयु: खण्डमण्डलम् ॥३॥ जलराशिस्थिते चन्द्रे जामित्रे नवमे तथा। अर्कसूनुश्च भौमश्च अतिवृष्टिं च मुञ्चति ॥४॥ कुजाद्रौ रविजश्चैव शुक्रस्याग्रे सदा यदि। शुद्रोतिवायुर्दुर्भिक्षं जलनाशकरस्तथा ॥ ५॥ प्रावृषीन्दुसित: सप्तमराशिग: शुभवीक्षित:। मन्दत्रिकोण सप्तस्थो ... वृष्टिकृद् भवेत्। भृगो: सुते प्रविष्टश्च शीतरश्म्यंतरस्थित: ॥६॥ सौम्ये विशेषेण पतङ्गपुत्राच्चादि त्रिको... यदि केन्द्रगे वा। जलालयस्थे भृगुजेक्षिते वा मेघाश्च सम्पूर्ण जला भवन्ति ॥ ७॥ गुरौ चन्द्रे च जा... सितादर्काद् गुरावपि। जामित्रेऽर्कौ ग्रहा: सर्वे अनावृष्टिर्भवेत्तदा ॥ ॥८॥ अत्र च- वृष्टि: प्रीतकरो भृगुपुत्रा... प्तमराशिगत: शुभदृष्ट:। सूर्यसुतान्नवपञ्चमगो वा सप्तम...श्च

जलागमनाय॥ ९॥ पूर्वे स्वातित्रये भानौ पश्चिमे पितृपञ्चकम्। अनावृष्टिर्विजानीयाद्विपरीते प्रवर्षणम्॥१०॥
पुरोऽङ्गारमनावृष्टिः पुरो शुक्रप्रवर्षणम्। पुरो देवगुरौ वह्निः पुरो सौम्योधवानिलः॥११॥ ज्येष्ठमासि सितेपक्षे
रौद्रादि दशतारकाः। सजला निर्जला ज्ञेया निर्जला सजला भवेत्॥१२॥ इति वृष्टियोगफलम्॥

भावार्थ॥ स्वाति, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, आर्द्रा, रोहिणी तथा उत्तराफाल्गुनी में मंगल के रहने पर वर्षा नहीं होती। चन्द्र शनि पर्वत में हों, सूर्य मंगल हों तो भूलोकवासियों को ऐश्वर्य (श्रेष्ठ वर्षा) की प्राप्ति होती है इत्यादि अन्य बातें श्लोकानुसार समझलें॥१-१२॥

अथ शुक्रोदयास्त फलम्॥ आदित्ये बहुवातं च भूमिजे शत्रुपीडनम्। बुधे चैव तु दुर्भिक्षं शनिवारे महद्भयम्॥१॥ सोमे शुक्रे गुरौवापि सुभिक्षं जायते ध्रुवम्। उदयं भार्गवे चैत्रे वह्निराज व्यवस्थिते॥२॥ वैशाखे च भवेन्नाशो सर्वनाशं चतुष्पदम्। ज्येष्ठे च सजला पृथ्वी आषाढे जलशोषके॥३॥ श्रावणे कम्पिता भूमौ धनधान्यं नभस्यके॥ आश्विने कार्तिके मार्गे सहितं च प्रवर्तते॥४॥ पौषे चैव तथा माघे राष्ट्रभङ्गं विनिर्दिशेत्। फाल्गुने अल्पवृष्टिश्च उदयास्तभृगोः फलम्॥ इत्युदयास्तफलानि॥

भावार्थ॥ यदि शुक्र का उदय अथवा अस्त रविवार को हो तो अधिक वायु चले, भौमवार को हो तो शत्रु-पीड़ा, बुधवार को दुर्भिक्ष, शनिवार को भय एवं सोम, शुक्र, गुरुवार को हो तो सुभिक्ष होता है। अन्य श्लोकों में शुक्र के मासानुसार उदयास्त का फल कहा है॥ १-५॥ इति॥

अथ मेघद्वाराणि॥ भरण्याद्यष्ट ऋक्षाणि मेघद्वारं प्रकीर्तितम्। प्रभूतं वर्षते मेघः सुभिक्षं जायते ध्रुवम्॥ १॥ मघादि पञ्च ऋक्षाणि वायुद्वारं प्रकीर्तितम्। उन्नता चैव मेघाश्च न वर्षन्ति कदाचन॥२॥ स्वात्यादित्रीणि ऋक्षाणि धर्मद्वारं प्रकीर्तितम्। सुभिक्षं क्षेममारोग्यं बहुवृष्टि

श्च जायेत ॥३॥ ज्येष्ठादि पञ्च ऋक्षाणि रेतद्वारं प्रकीर्तितम् । उन्नता अल्पमेघाश्च अल्पसस्यश्च जायेत ॥४॥ धनिष्ठादि षड्क्षाणि हेमद्वारं प्रकीर्तितम् । सुभिक्षं जायते सर्वं मेघा वर्षन्ति ए ध्रुवम् ॥५॥ इति मेघद्वाराणि ॥

भावार्थ॥ भरणी से ८ नक्षत्र मेघद्वार संज्ञक होते हैं। इनमें संक्रान्ति हो तो अत्यधिक वर्षा होती है। मघा से ५ नक्षत्र वायु द्वार संज्ञक हैं, इनमें संक्रान्ति हो तो बड़े बादल उठें, पर बरसें नहीं। स्वाति से ३ नक्षत्र धर्मद्वार संज्ञक हैं, इनमें संक्रान्ति हो तो सुभिक्ष, श्रेष्ठ वर्षा हो। ज्येष्ठा से ६ नक्षत्र रेतद्वार संज्ञक हैं, इनमें संक्रान्ति हो तो अल्पवृष्टि हो। धनिष्ठा से ६ नक्षत्र हेमद्वार संज्ञक हैं, इनमें संक्रान्ति हो तो सुभिक्ष एवं सुवृष्टि होती है॥ १-५॥ इति॥

अथ वृष्टि लक्षणम्॥ अतिवातं च निर्वातमत्युष्णं शीतशीतलम्। अत्यभ्रं च निरभ्रं च षड्विधं मेघ लक्षणम् ॥१॥ यावत् काकोदरा मेघा यावत्सूर्यः शशी समः। यावन्नैर्ऋतिको वायुस्तावद्देवो न वर्षति ॥२॥ चित्रा स्वाति विशाखासु श्रवणेति जलं तथा। तदा स्तुत्यादिकं कृत्वा नदीतीरे उपासनात् ॥३॥ श्रवणे स्वाति पञ्चम्यामस्तं याति दिवाकरः। अवृष्टिर्यदि पर्जन्यो जलसादपि सर्वथा ॥४॥ उदयं सोमजो याति चास्तं याति भृगोः सुतः। श्रावणे चैत्र मासेतु तत्र पातं च दुर्लभम् ॥५॥ उत्तरा पूर्वसस्या च परसस्या च रेवती। अश्विनी सर्वसस्या च यदि वर्षति कृत्तिका ॥६॥ रेवती तोयनाशाय धान्यनाशाय चाश्विनी। भरणी सर्वनाशाय यदि वर्षति कृत्तिका ॥७॥ स्वाती ज्येष्ठा मघाद्रा च रोहिण्युत्तरमेव च। भूमिजस्तत्र चायाति ह्यनावृष्टिकरः स्मृतः ॥८॥ इति वृष्टि लक्षणम्॥

भावार्थ॥ अतिवात, निर्वात, अत्युष्ण, शीत शीतल, अत्यभ्र तथा निरभ्र - ये ६ प्रकार के मेघ होते हैं। किस मास में कौनसा नक्षत्र होने पर वृष्टि कम, अधिक अथवा नहीं होती, इसे

श्लोकानुसार समझलें ॥ १-८॥ इति॥

अथ कालदंष्ट्राचक्रम् ॥ नवोर्ध्वगानि धिष्ण्यानि नव तिर्यग्गतानि च । अधोगतानि धिष्ण्यानि नव चैवं विनिर्दिशेत् ॥ १॥ चतुर्नाडीगतो वेधो मध्ये ऋक्षत्रयोज्झितः । सर्पाकारस्य चक्रस्य कालचक्रं प्रजापते ॥२॥ त्रीणि मध्यगतर्क्षाणि तानि कालमुखानि तु । कोणस्थिते च द्वे धिष्ण्ये ते च दंष्ट्राद्वयं मतम् ॥३॥ दिनर्क्षमादितः कृत्वा नामर्क्षं यत्र संस्थितम् । मुखदंष्ट्रागते मृत्युः शुभमन्यत्र संस्थिते ॥४॥ ज्वरिते नष्टदृष्टे च विवाहे विग्रहे रणे । कालदंष्ट्रास्थगे मृत्युर्वामर्क्षे तु महद्भयम् ॥५॥ इति कालदंष्ट्रा-चक्रम् ॥

भावार्थ॥ नौ नक्षत्र ऊपर, नौ नक्षत्र तिरछी पंक्तिमें तथा नौ नक्षत्र अधोगत लिखने से, चार नाडी युक्त सर्पाकार कालदंष्ट्रा चक्र बनता है, जिसमें मध्य के ३ नक्षत्रों को छोड़कर वेध का विचार किया जाता है। शेष श्लोकानुसार समझलें ॥१-५॥ इति॥

अथ सूर्यफणि चक्रम् ॥ सप्तविंशति भान्यत्र पंक्तियुक्ता क्रमेण च । त्र्यन्तरे त्र्यन्तरे वेधः फणिचक्रं त्रिनाडिकम् ॥१॥ यत्र ऋक्षे स्थितो भानुस्तदादौ गणयेद् बुधः । नाम ऋक्षं स्थितं यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥२॥ कुर्यान्मृत्युं च रोगं च नाडीवेधगतं नृणाम् । वर्जयेत्सर्वकार्येषु युद्धकाले विशेषतः ॥३॥ निर्वेध ऋक्ष मध्यस्थं यस्य नाम प्रजापते । सिध्यन्ति सर्वकार्याणि संग्रामे विजयी भवेत् ॥४॥ इति सूर्यफणि-चक्रम् ॥

भावार्थ॥ २७ नक्षत्रों को पंक्तिमें लिखे । तीन तीन नक्षत्रों के बाद नाड़ी वेध होता है। जिस नक्षत्र में सूर्य हो वहाँ से नाम नक्षत्र तक गिन कर शुभाशुभ फलका विचार करना चाहिए। शेष श्लोकानुसार समझलें ॥ १-४॥ इति॥

अथ चन्द्र फणि चक्रम् ॥ सूर्ये फणीश्वरे चक्रे यदुक्तं च शुभाशुभम् । चन्द्रादौ तत्फलं सर्वं ज्ञेयं चन्द्रफणीश्वरे ॥ १ ॥ यदीन्दुर्जन्मनक्षत्रमेकनाड्यां स्थितं भवेत् । तदासौ जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम् ॥ २ ॥ इति चन्द्रफणीश्वर चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ सूर्य फणिचक्र की भाँति ही इस चक्र में भी शुभाशुभ समझलें। यदि चन्द्रमा तथा जन्म नक्षत्र एकही नाड़ी में हो तो मृत्यु होती है ॥ १-२ ॥ इति ॥

अथ कवि-चक्रम् ॥ हीन सैन्यः सदा स्थायी यायी सैन्याधिकः सदा । अबलस्य बलो पायं वक्ष्येहं कवि सङ्गरे ॥ १ ॥ प्रयाणे चोत्थपाणे निद्रायां मृगयां गते । शोकार्ते व्यसने प्राप्ते हीने सैन्ये विनायके ॥ २ ॥ अष्टधा कविकालस्तु कथितो दुर्बले नृपे। इटं युद्धं प्रकुर्वीत जयतीह न संशयः ॥ ३ ॥ कविः शिखी पिङ्गलिका कपोत्यर्कात्प्रवेशने । युद्धार्णवात्तु निर्याणे उल्लेखी चक्री बकी ॥ ४ ॥ कवियुद्धं यत्र धिष्ण्ये तदग्रर्क्षे त्रिपावकः । तदा भवेन्मार्गगमो मार्गरोधस्तु पृष्ठके ॥ ५ ॥ जीववारे ऽर्कभे शिख्यां समयुद्धस्तु जायते । स्यात्यां चार्केह्नि पिङ्गल्यां यायिनो वह्निजं भयम् ॥ ६ ॥ पुनर्वसौ भौमदिने कपोत्यां यायिनो मृतिः । युद्धार्णवायां मन्देह्नि वाह्निभे म्रियते गमी ॥ ७ ॥ वैश्वके चन्द्रेह्नि चोल्लेख्यां हयं त्यक्त्वा व्रजेद्गमी । चक्रयां वारुणेन्दोह्नि यायिनस्सैन्यपो मृतिः ॥ ८ ॥ बक्यां पुष्ये भृगुदिने यायी बन्धमवाप्नुयात् । सदोषामपि निर्दोषा मुल्लेखीं वर्ज्जयेत्कवौ ॥ ९ ॥ उदयास्तौ स्वरौ येषां जन्मस्थः सप्तमो विधुः । तद्दिने ते भटाः सर्वे वर्ज्जनीयाः कवौ रणे ॥ १० ॥ जन्मस्थः सप्तमश्चन्द्रः पञ्चमो नवमोपि वा । पुरस्य पुरनाथस्य तत्काले भङ्गमादिशेत् ॥ ११ ॥ चतुरस्रं त्रिनाडीकं कवि चक्रं लिखेद्भुवि । प्रवेशनिर्गमे भानि स्थानधिष्ण्यादि विन्यसेत् ॥ १२ ॥ यदि ग्रामोज्झिते स्थाने शत्रुसैन्यं व्यवस्थितम् । तत्र चक्रं समालेख्यं सेनाध्यक्षर्क्ष पूर्वकम् ॥ १३ ॥ त्रीणि त्रीणि प्रवेशे च ईशादौ विदिशि क्रमात् । निर्गमे तु चतुष्कं च पूर्वाशादि क्रमेण च ॥ १४ ॥ ईशादौ वाह्यतो

मध्यं मध्याद्वाह्यं तु पूर्वतः । प्रवेशो बाह्यतः कोणे मध्याद्दिक्षु विपर्ययः ॥२५॥ सौम्याः क्रूरग्रहास्तत्र प्रवेशे निर्गमे तथा । वक्रातिचार गत्वा च ज्ञात्वा कविरणं कुरु ॥२६॥ जीव पक्षे स्थिते चन्द्रे अकुलर्क्षे प्रवेशके । यातं कविरणे प्रोक्तं ज्ञात्वा प्रवेशनिर्गमौ ॥२७॥ उदितास्तस्वरो येषां जन्मऋक्षेन्दु संभवः । तद्दिने ते भटाः सर्वे वर्जनीयाः कवौ रणे ॥२८॥ क्रूरे शीघ्रे प्रवेशर्क्षे यत्र तत्र विशेषणम् । वक्रेस्ते निर्गमे सौम्ये तद्दिशानिर्गमं कुरु ॥२९॥ प्रवेशर्क्षे प्रवेशं च निर्गमे निर्गमस्तथा । भूबलं पृष्ठतः कृत्वा प्रोक्तः कविरणे जयः॥२०॥ इति कवि चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ कवि-संग्राम को 'डाक बोलना' कहते हैं । इन श्लोकों में कवि-संग्राम के लिए उपयुक्त समय, शुभग्रह, क्रूरग्रह आदि के ज्ञान का उल्लेख किया गया है । उसे यथावत् समझलें । प्रवेश के नक्षत्र में प्रवेश तथा निर्गम के नक्षत्र में निर्गम, भूमिबल को पीछे कर, कवि-संग्राम में विजय प्राप्त होती है ॥ १-२०॥

अथ खल चक्रम् ॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारं खलचक्रं लिखेद् बुधः । नन्दादितिथयो न्यस्य पूर्वद्वार क्रमेण च ॥१॥ पूर्वाशादि चतुष्केषु सप्त सप्तक्रमेण च । कृत्तिकादि लिखेन्मध्ये खले भान्यष्टविंशतिः ॥२॥ शनि चन्द्रौ कुजः सौम्यो भानु शुक्रौ गुरुस्तमः मध्ये बहिर्गता ज्ञेया अपसव्यादिशां क्रमात् ॥३॥ यद्दिने यद्दिशि स्युस्ते तिथिधिष्ण्यदिनाधिपाः । प्रवेशः खलकद्वारे कर्तव्यस्तद्दिशां सदा ॥४॥ खलकाभ्यन्तरे जालः शनिसूर्येज्यमङ्गलैः । बुधशुक्रेन्दुभिर्बाह्ये स्थायी यायी क्रमाज्जयी॥५॥ खलके मध्यनक्षत्रे यो ग्रहो यत्र संस्थितः । तत्र स्थानगते चन्द्रे फलं वक्ष्ये शुभाशुभम् ॥६॥ सूर्यस्थानगतः शूरो म्रियते चन्द्रमिश्रिते । भौमस्थाने महाक्रोधी बुधस्थाने महद्भयम् ॥७॥ गुरुस्थाने मतिस्थैर्यं भङ्गमायाति भार्गवे । शनिस्थाने क्षतं युद्धं राहुस्थे मरणं ध्रुवम् ॥८॥ वक्रस्थाने भवेद्भङ्ः

शीघ्र स्थाने च धावति । समाचारगते स्थायी क्षीणेन्द्राववगृहति ॥९॥ क्रूरे पृष्ठे जयो युद्धे सौम्ये पृष्ठे पराजयः । क्रूरे च सन्मुखे मृत्युर्जयः सौम्ये ऽग्र संस्थिते ॥१०॥ योधयोः पृष्ठगाः क्रूरा उभयोर्मृत्युकारकाः । सौम्याः सन्धि प्रदा युद्धे मिश्रामिश्र फलप्रदाः ॥११॥ दिननक्षत्रमारभ्य त्रिभिः सुप्तो द्विशेषके । शून्यैकशेषे ग्राह्यस्तु जागर्तीति विनिश्चितम् ॥१२॥ इति खलचक्रं समाप्तम् ॥

भावार्थ ॥ चार द्वार से युक्त चतुष्कोण खल चक्र में नन्दा आदि तिथियों को पूर्वद्वार से क्रमशः लिखकर, पूर्वादि दिशाओं में क्रमशः कृत्तिकादि सात-सात नक्षत्रों को खल चक्र के मध्य में लिखना चाहिए । दक्षिण क्रम से पूर्वोत्तर, पश्चिम-दक्षिण क्रम से ग्रहों का न्यासकर, जिस दिन जिस दिशा में तिथि-नक्षत्र-दिन के अधिपति हों, उसी दिशा से खल चक्र में प्रवेश कर युद्ध, जय-पराजय, सन्धि आदि के विषय में श्लोकानुसार विचार करना चाहिए ॥ १-१२॥इति ॥

अथ समचतुरस्रादि कोट चक्राणि ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कोटयुद्धस्य निर्णयम् । स्तोककारिः कुरुते यत्र भूरि सैन्य पराभवम् ॥१॥ यस्याश्रय बलादेव राज्यं कुर्वंति भूतले । विग्रहं चतुराशास्तु सीमास्थैः शत्रुभिः सह ॥२॥ विषमं दुर्गमं घोरं चक्रं भीरुभयावहम् । कपिशीर्षैस्तु शोभाढ्यं रौद्राट्टालक मण्डितम् ॥३॥ प्रतोली यस्य काला स्यात्परिखा कालरूपिणी । रणतूर्यकृताटोपं टिकुलीयंत्र यंत्रितम् ॥४॥ मुशलैर्मुद्गरैः पाशैः कुन्तखड्गैर्धनुःशरैः । संयुतैः सुभटैः शूरैरिति दुर्गं समादिशेत् ॥५॥ दुर्गस्थो दुर्गमः शत्रुरसाध्यो येन सिध्यति । कोट चक्रं प्रवक्ष्यामि विशेषाद्दष्टधा पुनः ॥६॥ प्रथमं मृन्मयं कोटं जलकोटं द्वितीयकम् । तृतीयं ग्राम कोटं च चतुर्थं गिरि गह्वरम् ॥७॥ पंचमं गिरिकोटं च षष्ठं कोटं च डामरम् । सप्तमं वक्रभूमिस्थं विषमाख्यं तथाष्टमम् ॥८॥ मृन्मये साधयेत् खंडिं जलस्थे बंध मोक्षणम् । ग्रामदुर्गे ऽग्निदाहं च प्रवेशं गह्वरे तथा ॥९॥ पर्वते स्थानभेदं च भूबलं

मू० सं० १२२८

भा० टी०

भूपडामरे । वक्राख्ये कविपोगं च विषमे स्थायियायिनाम् ॥२०॥ अतिदुर्गं कालकर्णं चक्रावर्तं च टिंपुरम् ।
तलावर्तं च पद्माख्यं यक्षभेदं शमाख्यकम् ॥२१॥ एतन्नामाष्टकं ज्ञेयं वर्गाष्टक क्रमेण च । यस्य वर्गस्य यो
भक्ष्यः स वर्गस्तस्य भंगदः ॥२२॥ अ-गरुड़ः क-मार्जारश्च सिंहश्च ट-श्वानीसुतः । त-सर्पश्च प-आखुश्च
य-मृगः श-अजात्मजः ॥२३॥ तार्क्ष्यस्य भक्ष्यो भुजगो बिडालस्य च मूषकः । सिंहस्य भक्ष्यो हरिणः शुनो भक्ष्य
स्त्वजात्मजः ॥२४॥ दुर्गवर्गस्य ये भक्ष्या वर्गास्तन्नामजा नराः । तद्दुर्गे ते रणे त्याज्या न कर्तव्या गणाधिपाः
॥२५॥ स्ववर्गात्पंचमे स्थाने खंडिभंगश्च जायते । अवर्गाद्यष्टकं ज्ञेयं पूर्वाद्यष्टदिशि क्रमात् ॥२६॥ कोटचक्रं
लिखेच्चादौ चतुरस्रं त्रिनाडिकम् । कृत्तिकादीनि धिष्ण्यानि साभिजिन्ति न्यसेद् बुधः ॥२७॥ बहिः कोटे च
मध्ये च दुर्गमध्ये बहिः पुनः । प्रवेशो निर्गमस्तत्र ज्ञातव्यः स्वरवेदिभिः ॥२८॥ बहिर्द्वादशभान्यत्र प्राकोर
तारकाष्टकम् । दुर्गमध्ये तथा चाष्टौ मध्ये स्तंभचतुष्टयम् ॥२९॥ कृत्तिका पुष्य सार्पे च मघा स्वाती
विशाखिके । अनुराधाभिजित्कर्णौ धनिष्ठाश्विय माह्वयम् ॥२०॥ ब्राह्मं पुनर्वसुर्भाग्यं चित्रा ज्येष्ठोत्तरा तथा ।
शातभं रेवती चैव प्राकोर तारकाष्टकम् ॥२१॥ मृगं रौद्रोत्तराहस्तं मूलमाषाढपूर्वकम् । पूर्वोत्तरा तथा भाद्रा
मध्ये ऋक्षाष्टकं त्विदम् ॥२२॥ पूर्वे रौद्रं यमे हस्तं पूर्वाषाढा च वारुणे । उत्तरे उत्तरा भाद्रा एतत्स्तंभ
चतुष्टयम् ॥२३॥ कृत्तिकाद्यं मघाद्यं च मैत्राद्यं वासवादिकम् । त्रीणि त्रीणि प्रवेशे च द्वादशान्यानि
निर्गमे ॥२४॥ कृत्तिकादिरयं न्यासः सुबोधार्थं प्रदर्शितः । दुर्भगादुगणना चात्र ग्रहैर्वाच्यं ततः फलम् ॥२५॥
दुर्गनामस्थितं वर्णं यद्वर्गादीरितं स्फुटम् । तदीशादि लिखेच्चक्रं क्रमात्स्वरविचक्षणाः ॥२६॥ चतुरस्रं चतु-
र्दीर्घं त्रिकोणं वृत्तदीर्घकम् । अर्धचन्द्रं तथा ज्ञेयं गोस्तनं धनुराकृतिः ॥२७॥ चतुरस्रे यथान्यासो भूमि
भाग क्रमेण च । प्रवेशनिर्गमस्तंभास्तथा वृत्तादि सप्तके ॥२८॥ दुर्गभित्तिविभागेन दातव्यं धिष्ण्यमंडलम् ।
तत्रस्थैः खेचरैः सर्वैः फलं वाच्यं यथोदितम् ॥२९॥ बाह्यभे मध्यभे चैव यत्रस्थाः क्रूरखेचराः ।

तत्रस्थाने कृते यत्ने हन्ति दुर्गं ससैन्यकम् ॥३०॥

भावार्थ॥ कोट-चक्र में पहला कोट मिट्टी से बना, दूसरा जल से, तीसरा ग्राम से, चौथा पर्वत-गुफा से, पाँचवाँ पर्वत से, छठा डामर पहाड़ का गड्ढा, सातवाँ टेढ़ी भूमि तथा आठवाँ ऊँचा-नीचा (विषम) बना होता है। पहले दुर्ग को खण्डन, दूसरे को जल-निष्कासन, तीसरे को अग्नि-दाह, चौथे को प्रवेश, पाँचवें को पत्थर काट कर, छठे को समतल बना कर, सातवें को कलि-युद्ध द्वारा तथा आठवें को स्थायी एवं यायी के अनुसार युद्ध करके विजय किया जाता है। इस चक्र में राशि एवं नक्षत्रों को प्रतिष्ठित करके श्लोकों में वर्णित नियमानुसार दुर्ग-भङ्ग करना चाहिए ॥१-३०॥

बुधशुक्रेन्दुजीवाश्च सदा सौम्यग्रहा मताः। शन्यर्कराहुमाहेयाः केतुः क्रूरग्रहा मताः ॥३१॥ त्रिःप्रकारो ग्रहे चारो वक्रशीघ्रसमो मतः। उच्चनीचसमास्ते च त्रिधा चक्रे भ्रमन्ति च ॥३२॥ ऊर्ध्व-चाधः समस्तिर्यग् दृष्टिभेदश्चतुर्विधः। स्वकं मित्रं समं शत्रुः स्थानभेदश्चतुर्विधः ॥३३॥ इज्यो भौमो भृगुर्यत्र बुधः पूर्वादिदिक्स्थितः। कुर्याद् भङ्गं वाऽथ भङ्क्ता क्रूरश्चन्द्रसमन्वितः ॥३४॥ सूर्यमुक्ता उदीयन्ते शीघ्रगाश्च द्वितीयगे। समास्तृतीयगे ज्ञेया मन्दा भानौ चतुर्थगे ॥३५॥ वक्राः पंचमषष्ठेऽर्के त्वतिवक्रास्सप्तमे। नवमे दशमे भानौ जायते कुटिला गतिः ॥३६॥ शीघ्रगाश्च भवन्त्येते द्वादशैकादशे तथा। राहुकेतू सदा वक्रौ रवीन्दू शीघ्रगौ सदा ॥३७॥ शीघ्रोऽतिचारगत्या च समश्च सममन्दयोः। वक्रातिवक्रकुटिला वक्रगत्या ग्रहा मताः ॥३८॥ क्रूरोऽतिक्रूरतां याति सौम्यो याति सुसौम्यताम्। वक्रचारे समुत्पन्ने शीघ्रेऽप्येवं विपर्ययः ॥३९॥ मेषो वृषो मृगः कन्या कर्कमीनतुलाः क्रमात्। आदित्यादिग्रहेषूच्चं नीचं यत्तस्य सप्तकम् ॥४०॥ उच्चनीचाच्च यत्तुर्यं समस्थानं तदुच्यते। उच्चस्थ [illegible] ॥४१॥ [illegible] के कहे

बुध भार्गवौ। समदृष्टी च जीवेन्दू शनिराहू तथोदृशौ ॥४२॥ सुहृदोर्केन्दु भौमेज्या एवं शुक्रज्ञभानुजाः
अन्योन्य वैरिणो ह्येते राहोः सर्वे च शत्रवः ॥४३॥ स्वक्षेत्रस्थे बलं पूर्णं पादोनं मित्रभे ग्रहे। अर्द्धं समगृ-
-हे ज्ञेयं पादं शत्रुगृहस्थिते ॥४४॥ क्रूरा गर्भे पुरं घ्नन्ति प्राकारे खंडिकारकाः। बहिःस्था वेष्टके सैन्यमृ-
-त्युदा नात्र संशयः ॥४५॥ क्रूरा गर्भे शुभा बाह्ये गृह्यते निश्चितं पुरम्। सौम्या मध्ये बहिः क्रूरा असा-
-ध्यं दुर्गमुच्यते ॥४६॥ क्रूरं चतुष्टयं मध्ये प्राकारे सौम्यखेचराः। भेदाद्भंगो भवेत्तत्र विना युद्धेन
गृह्यते ॥४७॥ प्राकारे संस्थिताः क्रूरा मध्ये सौम्यग्रहा यदि। दुर्गभंगे समुत्पन्ने भंगमायाति वेष्टकः
॥४८॥ मध्यनाडीस्थिताः सौम्याः क्रूरा बहिरवस्थिताः। सैन्यावर्तो बहिः शत्रोर्विना युद्धेन जायते॥
४९॥ प्राकारे पुरमध्ये च यदा क्रूरा अधिष्ठिताः। सौम्या बाह्ये तदा दुर्गमयत्नेनापि सिध्यति॥५०
सौम्या मध्ये च कोटे च बाह्ये पापग्रहा यदि। देवैर्ब्रह्मादिभिर्दुर्गं गृह्यते न कदाचन ॥५१॥ प्राकारे
बाह्यगाः क्रूराः सौम्या मध्यगता यदि। युद्धं प्राकारखंडिश्च पुरभंगो न विद्यते ॥५२॥ स्तंभान्तर
गता यस्य ग्रहाः सौम्याः शुभान्विताः। भवेद्युद्धस्तस्य कोटस्य न नाशो विद्यते क्वचित् ॥५३॥ यदि
साक्षादहं तत्र युद्धे चात्मगणान्वितः। तथापि न भयं विद्यादिति सत्यं वरानने ॥५४॥ स्तंभान्तरगता
यत्र रविराहुशनैश्चराः। भूमिपुत्रश्च तस्याशु नाशः कोटस्य निश्चितम् ॥५५॥ मयैव रक्षिते तत्र
युद्धे कोटे न संशयः। तथापि न भवेत्सम्यग् ग्रहदोषाद्वरानने ॥५६॥ सौम्या बाह्ये तथा कोटे
मध्ये क्रूरग्रहाः स्थिताः। स्थायं दुर्गं प्रपद्यन्ति वेष्टकाय ग्रहाधिपाः ॥५७॥ बाह्याभ्यन्तरगाः क्रूराः
प्राकारे शोभना ग्रहाः। रिपुद्वयं क्षयं याति विना युद्धेन निश्चितम् ॥५८॥ प्राकारस्था ग्रहाः क्रूरा
बहिर्मध्ये शुभाः स्थिताः। समं युद्धं भवेत्तत्र खंडिपातो दिने दिने ॥५९॥ सौम्याः क्रूरास्तथा चाष्टौ
[illegible] कुर्वन्ति संग्रामं तत्र दारुणम् ॥६०॥ गजाश्वरथभूपालाः
प्राकारे मध्य [illegible]

सामन्ता मण्डलेश्वरा.। भटा मर्दं प्रकुर्वन्ति सैन्ययोरुभयोरपि ॥६१॥ चापकुन्तगदापाशखड्गहस्तैर्महाभटैः अभग्नयोर्द्वयो राज्ञोः सैन्यावर्तः प्रजापते ॥६२॥ वाहिन्यो रक्तवाहिन्यो दुस्तराः प्रेतसंकुलाः। वसासृक्पंकलिप्तांगो यन्त्रमन्त्रावगुंठिता : ॥६३॥ गृध्रकाकशिवाश्येनडाकिनी प्रेत संकुला :। वेतालपालभूताप्या: पिशाचोरगराक्षसा : ॥६४॥ वेताल चपला भूता: पिशाचा: स्वेच्छया वृता :। ईदृशं च महायुद्धं तत्काले जायते ध्रुवम् ॥ न कश्चिद्विजयी युद्धे द्वयं याति यमालयम् ॥६५॥

भावार्थ॥ ग्रहों का शुभाशुभत्व, ग्रहों का संचार, ग्रहों की दृष्टि और गति पारस्परिक शत्रुता-मित्रता, क्रूरता-सौम्यता आदि विषयों का उल्लेख करते हुए श्लोकों में इन सबके आधार पर दुर्ग पर अधिकार करने से सम्बन्धित फलाफल वर्णन किया है। साथ ही युद्ध के विभिन्न रूपों पर भी प्रकाश डाला है, उसे समझलें ॥ ३१-६५॥

समसंख्या शुभाः क्रूरा बहिर्मध्ये यदा स्थिता :। तदा सन्धिं विजानीयात् सैन्ययोरुभयोरपि ॥६६॥ क्रूरैर्भंगो जयः सौम्यैर्मिश्रैर्मिश्रफलं मतम्। विचार्य कुरुते युद्धं कोटचक्रे स्वरोदयी॥६७॥ प्रवेशधिष्ण्यगे चन्द्रे जीवपक्षर्क्षसंस्थिते। निशीथे कवियुद्धं तु कर्तव्यं वाह्यसैन्यकैः ॥६८॥ निर्गमर्क्षस्थिते चन्द्रे दुर्गाभ्यन्तरगैर्नृपैः। कर्त्तव्यं कवियुद्धं च रात्रौ सुप्तं बहिर्जनैः ॥६९॥ प्रवेशनिर्गमाशुक्तौ सैन्ययोरुभयोर्निशि। कवौ कोटे जयो युद्धे विपरीते पराजयः ॥७०॥ गढाधीशाः स्मृताः सौम्या वेष्टाधीशास्तु पापकाः। क्षेत्रयुग्मे स्थिता ये ते ज्ञातव्याश्च प्रयत्नतः ॥७१॥ गढाधीशो भवेच्चन्द्रो वेष्टाधीशस्तु भास्करः। चन्द्र सूर्य विभागेन ज्ञातव्यं च बलाबलम् ॥७२॥ आशाधीशो भवेच्चन्द्रस्ताराधीशश्च भास्करः। चन्द्र सूर्य गतिं ज्ञात्वा पश्चाद्दिशस्तु कारयेत् ॥७३॥ वेष्टाधीशो भवेन्मध्ये गढाधीशस्तु बाह्यतः। स्वयं दुर्गं प्रयच्छंति वेष्टकाव गढाधिपा: ॥७४॥

भूबलं पृष्ठतः कृत्वा पुरः कृत्वा विचक्षणान्। वात पात दिशो हित्वा कविपुद्धं समारभेत् ॥७५॥
क्रूरो वक्री प्रवेशर्क्षे पुरमध्ये स्थितो यदा। तदा कोटविनाशाय कोटस्थो बाह्यभूपतेः॥७६॥

भावार्थ॥ इन श्लोकों में शुभग्रह एवं पापग्रह के भीतर अथवा बाहर रहने के प्रभाव का वर्णन किया गया है। गढ़ के स्वामी तथा कोट आदि की जय-पराजय के सम्बन्ध में लिखे अनुसार समझलें॥६६-७६॥

प्रवेशं वाह्यगे वक्रे सक्रूरे सैन्यविग्रहः। दुर्भिक्षं मृत्युभंगौ च बहिःसैन्यस्य जायते॥७७॥ निर्गमर्क्षे बहिःस्थे च क्रूरो वक्रं करोति चेत्। प्राकारस्य भवेद्भंगः प्राकारस्थे पुरस्य च॥७८॥ पुरभे निर्गमे वक्री कथंचित् क्रूर खेचरः। दुर्गं मुक्त्वा तदा काले दुर्गस्थः प्रपलायते॥७९॥ यथा क्रूरैस्तथा सौम्यैः फलं ग्राह्यं विपर्ययात्। मिश्रैर्मिश्रं विजानीयात् कोटचक्रे न संशयः॥८०॥ दुर्ग ग्रहे हिताः पापा वेष्टकानां पुरःस्थिताः। शुभग्रहाश्च बाह्यस्थाः शीघ्रा वा वक्रिणोऽथवा॥८१॥ पुरमध्ये हताः सौम्याः पापा बहिरवस्थिताः। गढाधिपस्य जयदाः फलमार्गान्निसर्गतः॥८२॥ उभयो विपरीतस्थाः पापाः सौम्याः पुरग्रहाः। भंगमृत्युस्तदा काले वर्जयन्ति पुरग्रहम्॥८३॥ पुरभंगप्रदान् योगान् ज्ञात्वा परपुरं व्रजेत्। यायी स्थायी च तं कालं दानोपायैः समं नयेत्॥८४॥ उच्चं नीचं समं स्थानं पुरावुक्तं पुनर्ग्रहे। ऊर्ध्वदृष्टिरधोदृष्टिः समतिर्यग्दृशौ पुनः॥८५॥ दुर्ग सैन्यं सदैवो-च्चैः प्राकारे मध्यबाह्यकम्। नीचस्थं वेष्टकं सैन्यं ज्ञातव्यं स्वरवेदिभिः॥८६॥ कोटं कोटाधिपं नीचे निघ्नन्तौ भौमभास्करौ। समस्थौ च पुरं सर्वमुच्चस्थौ निष्फलौ च तौ॥८७॥ प्राकारे वेष्टकान् घ्नन्ति उच्चस्थौ राहुसूर्यजौ। प्राकारस्थौ बहिःसैन्यं नीचस्थौ तौ तु निष्फलौ॥८८॥
समदृष्ट्या [illegible] ॥८९॥

ऊर्ध्वदृष्टिग्रहे कुर्याद्दृंकुली यन्त्र साधनम् । समे च साधयेत्खड्गिं रन्ध्रपातमधो मुखो ॥६०॥ दुर्गमध्ये गते सूर्ये जलशोषः प्रजापते । चन्द्रे भङ्गः कुजे दाहो बुधे बुद्धिबला नराः ॥६१॥ वाक्पतौ दुर्गमध्यस्थे सुभिक्षं प्रचुरं जलम् । चलचित्तनराः शुक्रे मृत्युरोगौ शनैश्चरे ॥६२॥ राहौ मध्यगते दुर्गे भेदभंगौ महद् भयम् । केतौ मध्यगते तत्र विषदानं गदाधिपे ॥६३॥ इत्युक्तं तु फलं मध्ये एवं बाह्यगतैर्ग्रहैः । उपग्रह समायोगादत्यंतं प्राण संशयः ॥६४॥ आकारादि स्वराः पंच पूर्वाद्यावाचतुष्टये । मध्यांताः सव्यमालिख्य अन्तस्थाः खेडिकारकाः ॥६५॥ दुर्गनाम्नः स्वरो यस्मिन् कालो वाऽस्तमितोऽपि वा । तद्दिने प्रारभेद्युद्धं दुर्गं सिध्यति नान्यथा ॥६६॥ दुर्गस्थो यदि मार्गस्थः स्त्रीपुमित्र समन्वितः । उपस्थितेऽपि तत्सर्वं भङ्गं कुर्याच्च वैरिणि ॥६७॥ एकार्गलविधानं तु कर्तव्यं दुर्गरक्षणे । भंजने यमराजाख्यमित्युक्तं ब्रह्मयामले ॥६८॥ इति कोटचक्राणि सम्पूर्णानि ॥

भावार्थ ॥ बाहर के प्रवेश नक्षत्रों यदि क्रूरग्रह वक्री हो तो सेना में दुर्भिक्ष, मृत्यु एवं पराजय होती है। पुरमध्य में शुभग्रह तथा बाहर पापग्रह हितकर होते हैं। भौम तथा सूर्य अपनी नीच राशि में होकर बाह्यनाडी में हों तो कोट तथा कोटाधिपति- दोनों का नाश करते हैं। दुर्ग के बाहर के ग्रहों का विचार करना भी आवश्यक है इत्यादि विषयों को श्लोकानुसार समझलें ॥७७-६८॥

अथ चातुरङ्ग सैन्य विवरणम् ॥ श्रुतं देव मया सर्वं युद्धशास्त्रमनेकधा । सूचनं चातुरंगस्य सविशेषं वद प्रभो ॥१॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ब्रह्मयामलनिर्मितम् । सारात्सारतरं सारं रहस्यमिदमद्भुतम् ॥२॥ यस्य विज्ञान मात्रेण दैवज्ञो लभते यशः । जयं ददाति भूपानां यस्यासौ मंडले स्थितः ॥३॥ पूजितव्यः सभूपालैर्दानमानार्घ पूर्वकम् । ममापि सदृशो देवि ज्ञातव्योऽसौ न चान्यथा ॥४॥ तेनाचार्येण देवेशि स्वसैन्यार्थे च शांतिकम् । पौष्टिकं च प्रकर्तव्यं रक्षामृत्युंजयादिकम् ॥५॥ शलाका

सप्तकं चक्रमीशादौ कृत्तिकादिकम्। साभिजित्सव्यमालिख्य मष्टाविंशति तारकम्॥६॥ कृत्तिकापित्र्यमैत्राख्यवसुभं च द्विदैवतम्। अहिपान्त्यश्रवो मैत्रं कोणभानि क्रमादिह॥७॥ मध्ये रौद्रं करश्चापि अहिर्बुध्न्यं ततो भयम्। परस्परं वेधगतं स्तंभर्क्षं सैन्ययोर्द्वयो:॥८॥ चातुरंगमिदं सैन्यं गजवाजिपदातय:। रथश्च चातुरंगानां राज्यमूलं चतुष्टयम्॥९॥ अश्वादि सप्तनागानां वाजिनां पुष्यसप्तकम्। स्वात्यादि सप्तपत्तीनां रथानामभिजिदादिकम्॥१०॥ वह्निभाच्छ्रवणे याम्ये वेधमाहुर्द्विदैवते। पित्र्यात्सार्पेऽच्युते याम्ये मैत्राद्धीशाहियाम्यभे॥११॥ वासवाच्चयुते सार्पे द्विदैवे वेधमादिशेत्। एवं वेधेषु सर्वेषु सुधीर्वेधं विचारयेत्॥१२॥ यस्मिन्धिष्ण्ये ग्रहो योऽस्ति तत्स्थितस्योस्त्ववग्रह:॥ रवेर्वह्निक्षय: कालो धिष्ण्ये स्यादष्टमेऽष्टमे॥ शिवामृत्यु कलि: सोमात्सर्पोऽसृकयोरक: कुजात्॥१३॥ सौम्याद्वायूल्बणा: क्रोधो जीवात् स्याद्विकच: कच:। ब्रह्माथ भार्गवो दैत्यो ग्रहाद् ग्रह उपग्रहा:॥१४॥ शनैश्चराच्चियगुप्त: काले केतुस्तथा यम:। राहो: शेषस्तथा शंख: कुलिकश्च तृतीयक:॥१५॥ क्रमात्केतोस्तु त्रिशिख: शिखी स्याद् धूमकेतुक:। रविर्यायी नृपो ज्ञेय: शनि: स्थानी महीपति:॥ रथी रथाधिप: सोम: केतुर्द्विरदनायक:॥१६॥ अश्वाध्यक्ष: सुरगुरु: पदातीशो महीसुत:। शनैश्चर स्यंदनेश, सैंहिकेयो गजाधिप:॥१७॥ भार्गवस्तुरगाधीश: पदात्यधिपतिर्बुध:। रविर्यायी नृपो यस्तु राज्यं गृहीतुमागत:॥१८॥ चन्द्र: शनि रथाधीशौ राहुकेतू गजाधिपौ। भौमचन्द्रौ पदातीशौ गुरुशुक्रौ हयाधिपौ॥१९॥ चरलग्ने चरांशे च शीघ्रगो बलसंयुत:। सेनां भिनत्त्यसौ खेट: शत्रुमार्गगवेषया॥२०॥

भावार्थ॥ विद्वान् आचार्य से अपनी सेना के लिए आठ प्रकार की शान्तियां, पौष्टिक शान्तियां तथा रक्षा मंत्र मृत्युंजय आदि का जप कराना चाहिए। सप्तशलाका चक्र बनाकर उसमें ईशानादि क्रमसे कृत्तिका से आरंभ कर, अभिजित् सहित २८ नक्षत्र सव्य मार्ग से लिखे। अन्य श्लोकों में विभिन्न नक्षत्र एवं ग्रहों के विचार तथा फल का उल्लेख किया गया है॥ १-२०॥

वक्रमंदगता: खेटा नरोहंति तदा चमूम् । अस्तगा: शत्रुगेहस्था ग्रहा मृत्युप्रदायका:
राहुशत्रुभिराक्रांतो रोधितो म्रियते गमे ॥२१॥ स्थिरराशिगता: खेटा: स्थिरांशकगता अपि । स्थायिनो बलमा-
पन्नं स्थिता जेष्यंति ते रिपून् ॥२२॥ द्विस्वभावगता ये च द्विस्वभावांशके ग्रहा: । समयुद्धं भवेत्तत्र भूमि
तस्य जयं वदेत् ॥२३॥ चर राशौ स्थिरांशस्थौ धावंतं प्रतिधावति । मित्रदृष्ट: समुदितो यो ग्रह: स जयी
भवेत् ॥२४॥ स्थिरलग्ने चरांशे यो धावेद्वीर: पराङ्मुखम् । द्विस्वभावे स्थिरांशस्थे स्थिरतामवगच्छति ॥२५॥
स्थिरलग्ने द्विमूर्त्यंशे व्यावृत्तस्य भवेन्मृति: । द्रेष्काणयोधतो मृत्युर्धारयेत्तं गतायुधम् ॥२६॥ मित्रभे मित्र
भावस्थे युक्तदृष्टेंशकोदये । बलवत्युदयेऽप्युच्चे नाथे विजयमादिशेत् ॥२७॥ अत्यरिद्वेषियुग्दृष्टे नीचस्थेऽस्तं
गते प्रिये । विबले मित्रदृग्धीने तस्य स्यात्संगरे वध: ॥२८॥ जन्माभिषेकभे यस्य पापग्रहयुते यदि । तदा
मृत्युमवाप्नोति संगरस्थो महीपति: ॥२९॥ सुरेज्यो भास्कर: सोमश्चांद्रिर्वर्णाधिपा: क्रमात् ॥३०॥ वर्णपे
नीचराशिस्थे ऽस्तंगते शत्रुवीक्षिते । शत्रुगेहस्थिते क्रांते रणे मृत्युमवाप्नुयात् ॥३१॥ भौमराह्वार्किकेतू
नामेतेषामप्युपग्रहा: । शूद्राद्यन्त्यस्य जातीनामधिपास्ते प्रकीर्तिता: ॥३२॥ अवनीशो दिनमणिस्तपस्वी
रोहिणीप्रिय: । स्वर्णकारस्तु भूपुत्रो ब्राह्मणो रोहिणीभव: ॥३३॥ श्रेष्ठी गुरु: कविर्वैश्यो वृषल: सूर्यनंद-
न: । सैंहिकेयो निषादश्च ध्वजि: केतु: स्मृतो बुधै: ॥३४॥ रविजा: क्षत्रवर्णा: स्यु: सोमजा वैश्यजा-
तय: । बुधजाता नष्टविप्रा भौमजा वह्निजीविन: ॥३५॥ बृहस्पत्युद्भवा विप्रा भृगुजा: कविगायका: ।
शूद्रादय: केतुजाता निषादा राहुसंभवा: । अंत्यजा: शनिसंभूता म्रतिं यांत्यधिपेऽस्तगे ॥३६॥ शीघ्रगा:
चरराशिस्था: आरोहंत्यग्रतो रिपुम् । शीघ्रगा: स्थिरराशिस्था: पालयंति निजां चमूम् ॥३७॥ शनौ नीचगते
पौरा रवौ नीचगतेऽध्वगा: । बंधनं शत्रुसंयुक्तं मृत्यु: शत्रुनिरीक्षिते । सक्षतौ शत्रुसंयुक्तौ परयुक्तौ भयं
नहि ॥३८॥ [illegible] संधिं विजानीयात्सेनयोरुभयोरपि ॥३९॥

योषिदंशगते चन्द्रे योषिद्ग्रहविलोकिते। योषिल्लग्नगते वापि तदा स्त्री सैन्यपालिका ॥४०॥

भावार्थ॥ जो वक्री अथवा मंदगति होता है, उसकी सेना शत्रु की सेना को ढूँढने नहीं जाती। जो ग्रह अस्त अथवा शत्रुक्षेत्री हो, उसकी सेना मृत्यु को प्राप्त होती है॥ वर्णयति अपनी नीच राशि में, अस्तंगत हो अथवा शत्रु से दृष्ट हो या शत्रुक्षेत्री या शत्रु से आक्रान्त हो तो संग्राम में मृत्यु होती है, इत्यादि श्लोकानुसार समझलें॥ २१-४०॥

ग्रहोऽश्चोपग्रहो वापि बलवाञ्छत्रुवीक्षितः। सेनामुखे बली शूरो रेखाविद्धं हनिष्यति॥ तस्यैव दापयेद्दीक्षां जयाख्यां जयवर्द्धिनीम् ॥४१॥ वक्रगे मित्रसंदृष्टे वाममार्गान्निवर्तते। अतिचारे मित्रदृष्टे मध्यमार्गान्निवर्तते॥४२॥ उच्चगो बलसंयुक्तः पुष्टो मित्रैर्विलोकितः। आगच्छेद्दक्षतो युद्धे निकृत्य परसैनिकम् ॥४३॥ अस्तगो दुर्बलः खेटः शत्रुग्रहनिरीक्षितः। तद्गृहांगं समाप्नोति शत्रुबंधनजं भयम्॥४४॥ भौमादिभिः खड्गपातः शुक्रेज्याद्यैस्तु कुंतजः। सोमसूर्यादिभिर्बाणान्मंदाद्यैर्मुद्गरोद्भवः॥४५॥ राह्वादिभिर्विषभयं केत्वाद्यैर्वचनाद्भयम्। बुधाद्यैः सर्वघातः स्यात्ततश्चोत्पादको बुधैः॥४६॥ गुरुशुक्रौ यत्र संस्थौ तत्र स्थाने पराजयः। तस्मात्तत्र प्रकुर्वीत स्वरहैर्द्विरक्षणम् ॥४७॥ चक्राण्युक्त्वा सर्वतोभद्रमुख्यान्युर्वीशानां भंगहेतूनि दुर्गे। मुख्यं संख्ये दुर्गमध्येऽपि सैन्ये, सेनानाथं वच्मि तत्तद्गुणांश्च॥४८॥ योबली स्याद्दशबलः षड्बली चेन्दुना बली। सेनामुखे स कर्तव्यस्तद्बलादखिलं बलम् ॥४९॥ यज्जन्मभे चन्द्रदिवाकरौ स्तो यस्यास्त बालस्थविराः क्षुराः स्युः। स देवसेनाधिपविक्रमोऽपि कार्यो न सेनाधिपतिस्तदानीम् ॥५०॥ शिशुर्ज्वरी रोगयुतः सुरापो भीरुस्तथा भीरुकुलोद्भवश्च। गुर्वार्यदेवद्विजनिन्दको यः कार्यो न सेनाधिपतिः स भूपः॥५१॥ सर्वतोभद्रचक्रादौ यस्य वेधो न विद्यते। तं वीरं कल्पयेत्तत्र चातुरंगे महाहवे॥५२॥ [illegible]। तस्यैव दापयेद्दीक्षां जयाख्यां जयवर्द्धिनीम् ॥५३॥

उच्चभूम्युत्तमं क्षेत्रं समभूमिस्तु मध्यमम् । निम्नभूरधमं क्षेत्रं त्रयस्तत्राधिदेवता: ॥५४॥ उच्चभूम्यधिपो राहु: समभूमेर्दिवाकर: । निम्नभूमीश्वरश्चन्द्रो यथा क्षेत्रं तथा फलम् ॥ ५५॥ आत्मसैन्यस्य देवेशि राहुक्षेत्रं प्रदापयेत् । उभयो: सेनयोर्मध्ये यत्र रेखाऽरुणप्रभा । दृश्यते तत्र भंगोस्ति सत्यमेतन्न चान्यथा ॥ ५६ ॥ बलाकाहंससंकाशं यत्सैन्यमुपलक्षितम् । तद्गच्छति यमस्यास्यं न भूय: संनिवर्तते ॥५७॥ काककोकिल वर्णाभं सैन्यं स्यादति दारुणम् । अदृश्यविग्रहैर्योधै: परसैन्यं निकृत्यते ॥ ५८॥ वीरा भीमोपमा: क्रुद्धा दृश्यन्ते नैव शत्रुभि: । भंगं कृत्वा क्षयं यान्ति सिंहा इव यथा मृगान् ॥ ५९॥ गुर्वार्यद्विजदेवपूजनरतिर्धर्मानुरक्त: शुचि: । स्वस्वामिन्यनुकूलवर्ति हृदय: शूरोऽथ वंशोद्भव: ॥ शूर: साहसिकोऽथ शास्त्रनिपुण: स्याच्छूरमान्यश्च य: । स नानारणहस्तिनां निगदितो जेता रणे विद्विषाम् ॥ ६०॥

भावार्थ ॥ ग्रह अथवा उपग्रह - दोनों में जो बली शत्रु से दृष्ट हो, उस ग्रह की सेना और उसका सेनानायक ग्रह जिस ग्रह का वेध करता हो, उसकी सेना को नष्ट कर देता है। जिसके जन्मनक्षत्र अथवा जन्म राशि पर चन्द्र-सूर्य हों और जिसका बाल, वृद्ध, मृत्यु स्वर अस्त हो, वह यदि इन्द्र ही क्यों न हो, तो भी उसे सेनापति नहीं बनाना चाहिए। अन्य श्लोकों में सेनापति की योग्यता - अयोग्यता तथा सेना एवं सैनिकों के पराक्रम के विषय में बताया गया है, उसे समझ लें ॥ ५२-६०॥

यायिन: स्थायिन: खेटा वेधरेखागता यदि । समसप्तगता वापि जायते दारुणो रण: ॥ केतुर्यायी सभृगुज: सिंहिकानन्दन: कुज: ॥ ६१॥ परस्परं सप्तमगा: क्रूरसौम्या यथाक्रम: । वेधरेखागता वापि चन्द्रयोगेऽति लोहदा: ॥६२॥ यद्यन्योऽभिमुखा: सर्वे शीघ्रगा यदि खेचरा: । विग्रहो जायते घोरस्तद्दिशास्थित भूभुजाम् ॥६३॥ शीघ्रा: सर्वे ग्रहा राज्ञां विरोध: स्याद् बुधं विना । यदा सर्वे वक्रगतास्तदा युद्धं सुदारुणम् ॥६४॥ यायिन: शीघ्रगा: सर्वे स्थायिनो वक्रगा यदि । यायी विजयते तत्राऽन्यथा स्था-

त्स्थायिनो जयः ॥६५॥ उत्तरस्था: स्थायिनश्चेद्यायिनो दक्षिणस्थिता:। यायिनो विजयस्तत्र व्यस्ता: स्थायि-जयप्रदा: ॥६६॥ कृत्तिका भरणी स्वाती नागवीथी प्रकीर्तिता। रोहिण्याद्यास्त्रिभास्तिस्रो गजैरावतकर्षभा: ॥६७॥ स्थायिनो मंदगा राज्ञां तदा युद्धं न जायते। पापा वक्रा: शुभा: शीघ्रास्तदा युद्धं सुदारुणम् ॥६८॥ मन्दारेज्या वक्रगता: स्थायिनो विजयप्रदा:। शुक्रो वक्रो गुरुः शीघ्रः स्थायिनां मृत्युकारक: ॥ विपरीतौ शुक्रगुरू यायिनां मृत्युकारकौ ॥६९॥ दूरादागच्छतो राज्ञां धिष्ण्ये धिष्ण्ये शतं वदेत्। मतांतरे तु दशकं योजनं तु दशान्तरे ॥७०॥ शत्रुपक्षस्थितै: सौम्यैर्मार्गरोधकरो भवेत्। एकरेखागतौ शत्रुमृत्युदौ शत्रुतोऽध्वनि ॥७१॥ यत्र रेखागते मित्रे मार्गे मित्रस्य संगम:। मित्राभ्यंतरगे शत्रौ मित्रत्वमुपजायते ॥ शत्रुमध्यगते मित्रे शत्रुत्वमु-पजायते ॥७२॥ शत्रुवर्णाधिपे नीचे दुर्बलेऽस्तंगतेऽपि वा। तथैव राष्ट्रपे नीचे राष्ट्रभंगो विचक्षणै: ॥७३॥ 'प्रथमहत: पुरुषश्चेदधोमुखो हंतुरभिमुख: पतति। हंतुः पराजयः स्यादजय: पतिते तथोत्ताने ॥७४॥ छत्रं ध्वजो नरः शस्त्रं गजो वाजी च यच्छिरा:। निपतेत्तत्र यत्सेना विजयं प्राप्नुयाद् ध्रुवम् ॥७५॥ पौर: प्राक्परतो यायी रविराक्रंदसंज्ञक:। मध्याह्ने रात्रिनाथश्च नित्यमाक्रंदसंज्ञक: ॥७६॥ इति चातुरङ्गम् ॥

भावार्थ:॥ केतु, शुक्र, राहु और भौम ये यायी ग्रह हैं तथा सूर्य, चन्द्र, बुध गुरु और शनि- ये स्थायी ग्रह हैं। यायी तथा स्थायी ग्रह सप्तशलात्मक चातुरंग चक्र में एक रेखा में हों अथवा द्वादशार चक्र में समकक्ष हों तो भीषण युद्ध होता है, इत्यादि०। पापग्रह बली हों तथा शुभग्रह शीघ्र गामी हों तो भी भीषण युद्ध होता है। शत्रु पक्ष स्थित शुभग्रह मार्ग का अवरोध करते हैं। छत्र, पताका, मनुष्य, शस्त्र, हाथी, घोड़ा, सिर- जिस सेना के सामने गिरे, उसकी विजय होती है। पूर्वाह्न में सूर्य पौर होता है, अपराह्न में यायी तथा मध्याह्न में आक्रन्द संज्ञक होता है। चन्द्रमा सदैव आक्रन्द संज्ञक होता है। अन्य बातें श्लोकानुसार समझें ॥ ६१-७६ तक॥

अथ गजचक्रम्॥ गजाकारं लिखेच्चक्रं सर्वावयवसंयुतम्। अष्टाविंशतिऋक्षाणि देयानि सृष्टिमार्गतः॥१॥ मुखे शुंडाग्रनेत्रे च कर्णशीर्षांघ्रिपुच्छके। द्विकं द्विकं च दातव्यं पृष्ठोदरे चतुश्चतु॥२॥ गजनामादि भान्यादौ वदनाद्गण्यते बुधैः। यत्र ऋक्षे स्थितः सौरिर्ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम्॥३॥ मुखे शुंडाग्र नेत्रे च सौरिभं मस्तकोदरे। युद्धकाले गजे यस्य जयस्तस्य न संशयः॥४॥ पादे पृष्ठे च पुच्छे च कर्णस्थे च शनैश्चरे। मृत्युर्भंगो रणे तस्य ऐरावतसमो यदि॥५॥ एतेषु दुष्टगात्रेषु यत्काले संस्थितः शनिः। तत्काले पट्टबन्धश्च वर्जनीयः प्रयत्नतः॥६॥ पृथिव्या भूषणं मेरुः शर्वर्या भूषणं शशी। नराणां भूषणं तिथ्या सैन्यानां भूषणं गजः॥७॥ शरतोमरचक्राद्यैर्गजस्कन्धे हता नराः। तत्क्षणात्स्वर्गमायांति तस्मात्स्वगोपिता गजाः॥८॥ नास्ति हस्तिसमो योद्धा नास्ति हस्तिसमः सखा। नास्ति हस्तिसमो बन्धुर्नास्ति हस्तिसमो रिपुः॥९॥ इति गजचक्रम्॥

भावार्थ॥ हाथी के सभी अवयवों सहित स्वरूप वाला चक्र बना कर, उसमें २८ नक्षत्रों को सृष्टि मार्ग से स्थापित करें। मुख, शुंडाग्र, नेत्र, कान, सिर, चरण तथा पूँछ में दो-दो नक्षत्र एवं पीठ तथा पेट में चार-चार नक्षत्र रक्खें। हाथी के नाम नक्षत्र से मुख से आरंभ दो नक्षत्रों का न्यास करें। जहाँ जिस अंग पर शनि हो, उससे श्लोकानुसार शुभाशुभफल ज्ञात करें॥ १-९॥ इति॥

अथ अश्वचक्रम्॥ अश्वाकारं लिखेच्चक्रं अश्वधिष्ण्यादितारकाः। वदनात्सृष्टिगा देया अष्टाविंशतिसंख्यया॥१॥ मुखाक्षिकर्णशीर्षेषु पुच्छांघ्रिषु युगं युगम्। पंच पञ्चोदरे पृष्ठे सौरिर्यत्र फलं ततः॥२॥ मुखाक्ष्युदरशीर्षस्थो यदा सौरिस्तुरंगमे। तदारिभंगमायाति रणे यत्र महाहवे॥३॥ कर्णांघ्रिपुच्छपृष्ठस्थो यदा यस्य हयस्य च। विभ्रमं भंगहानी च करोत्यश्वो पराजयः॥४॥ एतत्स्थानगतः सौरिर्यदा काले हयस्य च। पट्टबंधे गमे युद्धे वर्जयेत्तं हयं नृपः॥५॥ देशांतर

स्थिताश्चस्य रिपवः संति शंकिताः। तुरगायस्य भूपस्य विचरंति मही तले ॥६॥ मेदिनी तस्य यस्याश्वा इति वाक्यं विपश्चिताम्। सर्वाः श्रियो न राजन्ते विनाऽश्वेन महीभुजाम् ॥७॥ इति अश्व चक्रम् ॥

भावार्थ॥ घोड़े जैसी आकृति का चक्र बनाकर उसमें घोड़े के नाम के नक्षत्र से मुख से आरंभ कर, क्रमशः २८ नक्षत्रों को इस प्रकार लिखें — मुख, आँख, कान, सिर, पूँछ तथा चारों पाँवों में दो-दो नक्षत्र तथा पीठ एवं पेट में पाँच-पाँच नक्षत्र। जहाँ शनि हो, उससे श्लोकों में कहे अनुसार विचार करना चाहिए ॥१-७॥ इति ॥

अथ मुहूर्तविषये अश्वचक्रम् ॥ अश्वानां कर्म कर्तव्यं स्वातौ तिष्ये पुनर्वसौ। धनिष्ठाद्वितये हस्ते रेवती रोहिणीद्वये ॥१॥ सूर्यभात्स्थिर ऋक्षेषु मुखे रामा यशस्तथा। हृदये पञ्च लाभोयं पादे षष्ठश्च भंगदः ॥२॥ पुच्छे वेदा महाहानिः पृष्ठेऽब्धिर्मृत्युरादिशेत्। अश्वाकारं लिखेच्चक्रं पूर्वग्रंथानुसारतः ॥ स्कंधारम्यमुखस्यांतं सूर्य भात्साभिजिन्न्यसेत् ॥३॥ पञ्चादश्वस्य मैलैर्द बाणदभ्रक्रमेण च। जन्मनक्षत्र मारम्य गणयेत् चन्द्रभे विधिः ॥नवभिस्तु हरेद्भागं शेषं वाहनमुच्यते॥४॥ ग्रन्थान्तरे च ॥ अश्वाकारं लिखेच्चक्रं साभिजिद्भानि विन्यसेत्। स्कन्धे च सूर्यभात् पञ्च पृष्ठे च दशभं न्यसेत् ॥५॥ पुच्छे द्वौ दीयते प्राज्ञैश्चतुष्पादे चतुष्टयम्। उदरे पंच ऋक्षाणि मुखे द्वे तुरगस्य च ॥६॥ धनलाभो मुखे सम्यग् वाजिनश्यति चोदरे। चरणस्थे रणे भङ्गः पुच्छे पत्नी विनश्यति॥७॥ अर्थलाभो भवेत्पृष्ठे स्कन्धे स्कन्धपतिर्भवेत्। रासभो रत्नहंता च वाजी रत्नप्रदो भवेत् ॥८॥ हस्ते लक्ष्मी जयो दद्यान्मेषे च मरणप्रदः। जम्बुकश्चापुष्टं हांति सिंहे वैरं च गर्जनम् ॥९॥ काके वार्ता कलिश्चैव शिखिहंसौ शुभावहौ॥ १०॥ इति अश्वचक्रम् ॥

भावार्थ॥ मुहूर्त के सम्बन्ध में अश्वचक्र बनाने की विधि तथा ग्रंथान्तर

विधि का उल्लेख इन श्लोकों में किया गया है। युद्ध में जय पराजय के ज्ञान – हेतु इसका उपयोग किया जाता है॥ १- १०॥ इति॥

अथ रथ चक्रम्॥ रथचक्रंलिखेच्चादौ शकटाकृति शोभनम्। रथाग्रे त्रित्रिशूलं च चतुश्चक्रं त्रिनाडिकम्॥ १॥ भानुभं मध्यशूलाग्रे ततः सव्यगतानि तु। त्रीणि त्रीणि लिखेदेवं सप्तविंशति संख्यया॥ २॥ महारथिकभं यत्र तत्र वक्ष्ये शुभाशुभम्। शृंगे मृत्युर्जयिं चक्रे रथे संधिस्त्रिदंडके॥ ३॥ इति रथ चक्रम्॥

भावार्थ॥ रथ के आकार का चक्र बनाकर, उसके अग्रभाग में तीन त्रिशूल बनाये। चार पहिये हों। गाड़ी से बैलों के जोतने के स्थान तक तीन रेखाऐं हों। सूर्य-नक्षत्र मध्य के शूलाग्र में रखें, वहाँ से सव्य मार्ग से तीन-तीन नक्षत्र प्रत्येक स्थानों पर रखते हुए, कुल २७ नक्षत्र रखें। जहाँ महारथी का नक्षत्र हो, उससे शुभाशुभ फल कहना चाहिए। शूलाग्र में नक्षत्र हो तो विजय एवं तीन नाड़ियों में हो तो सन्धि होती है॥ १-३॥ इति॥

अथ व्यूह चक्रम्॥ व्यूह-चक्रं तथाष्टारं वृत्ताकारं त्रिनाडिकम्। दंडं चतुष्टयं बाह्ये कर्तव्यं च चतुर्दिशि॥ १॥ पूर्वदंडाग्रतो न्यस्य भानुभाद्यं भमण्डलम्। प्रवेशे निर्गमे चैव त्रीणि त्रीणि प्रदक्षिणम्॥ २॥ राशि संज्ञाष्टकं मध्ये तद्बाह्ये भानु संज्ञकम्। तृतीये राहु संज्ञं च केतुर्दण्डचतुष्टये॥ ३॥ चन्द्रर्क्षे विजयं लाभः सूर्यांगे मध्यमं फलम्। राहुऋक्षाष्टके विघ्नं मृत्युः केतुचतुष्टये॥ ४॥ एवमुक्त्वा चतुस्स्थाने यद्दिने यस्य नामभम्। तद्दिने तत्फलं तस्य सर्वकार्येषु सर्वदा॥ ५॥ इति व्यूह चक्रम्॥

भावार्थ॥ आठ रेखाओं युक्त वृत्ताकार, तीन नाड़ियों से युक्त, चार दण्ड चारों दिशामें बाहर निकलते हुए ... ... करें॥ १-५॥

अथ कुंत चक्रम् ॥ कुंताकारं लिखेच्चक्रं मूलदंडशिखान्वितम् । दिनभादि समारभ्य
कर्तव्यं नवकत्रयम् ॥१॥ नामभं नवके यत्र तत्र ज्ञेयं शुभाशुभम् । मूले मृत्युर्जयं दंडे शेषर्क्षे तुल्यता रणे
॥२॥ प्रभुभं यत्र नवके तत्र क्रूरैः फलं वदेत् । मूले मृत्युर्जयो दंडे शिखायां संगरो भवेत् । दण्डपुट्टेषु
सर्वेषु कुंतश्चिन्तयेद् बुधः ॥३॥ इति कुंतचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ कुन्त अर्थात् भाला के आकार का एक चक्र मूलदंड तथा शिखा
युक्त बनायें । दिन के नक्षत्र से नौ-नौ नक्षत्र तीनों स्थानों में कल्पित कर, जिस नवक में नाम का नक्षत्र
हो, उससे श्लोकानुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करें ॥ १-३ ॥ इति ॥

अथ खड्ग चक्रम् ॥ खड्ग चक्रं लिखेदादौ नवभेद समन्वितम् । योधधिष्ण्यं
समारभ्य त्रीणि त्रीणि लिखेद् बुधः ॥१॥ यवं वज्रं तथा मुष्टिः पालिका बंध धारयोः । खड्गं तीक्ष्णं
विजानीयान्नवांगानि विभेदतः ॥२॥ यवादौ यत्र बंधान्ता जायंते क्रूरखेचराः । मृत्युर्भंगो भयं युद्धे सौम्यै-
र्लाभो जयस्तथा ॥३॥ खड्गे धाराढ्ये तीक्ष्णे क्रूरैर्जयति संगरे । सौम्यैर्यत्र भवेद्भङ्गो मिश्रैर्मिश्र फलं ततः
॥४॥ इति खड्ग चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ नौ अंगों से युक्त खड्ग चक्र बना कर, योद्धा के नक्षत्र से तीन-तीन
नक्षत्र लिख कर, श्लोकानुसार जय-पराजय आदि का विचार करना चाहिए ॥ १-४ ॥ इति ॥

अथ छुरिका चक्रम् ॥ यथा खड्गं तथा विद्याच्छुरिकां तत्र निर्णयम् ।
क्रूर सौम्य विभागेन योधधिष्ण्यानि विन्यसेत् ॥१॥ इति छुरिका चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ खड्ग चक्र की भाँति ही छुरिका चक्र द्वारा योद्धा के नक्षत्र से नक्षत्रों
का न्यास कर, क्रूर सौम्य विभाग से फलाफल को जानना चाहिए ॥१॥ इति ॥

अथ चापचक्रम् ।। चापचक्रं समालिख्य गुण बाण समन्वितम् । शशिनक्षत्रतो भानि त्रीणि त्रीणि समालिखेत् ।। १ ।। त्रीणि बाणस्य मूले तु मध्ये मूर्ध्नि क्रमात्तथा । चापस्य मूलमध्योर्ध्वे त्रीणि त्रीणि तथा पुनः ।।२।। गुणे तु त्रीणि त्रीण्येव योध्यनक्षत्रतः फलम् । शरमूले भवेन्मृत्युर्मध्ये व्याधिः फले जयः ।।३।। गुणमध्ये भवेद्भंगश्चापमध्ये धनक्षयः । चापोर्ध्वे विजयो ज्ञेयो गुणोर्ध्वे लाभसंभृतः ।।४।। चापाग्रो विग्रहो मृत्युर्गुणाग्रेऽपि तथा फलम् । पापग्रहयुते नेष्टं विशेषेण तु नान्यथा ।।५।। सौम्य योगे जयं लाभं चापचक्रे समादिशेत् । शुभपापसमायोगे बलाधिक फलं स्फुटम् ।।६।। इति चापचक्रम् ।।

भावार्थ ।। गुण (रस्सी या डोरी) तथा बाण से युक्त धनुष (चाप) चक्र बनाकर उसमें चन्द्र-नक्षत्र अर्थात् दिन-नक्षत्र से तीन-तीन नक्षत्र लिखें। बाण के मूल में ३, मध्य में ३, नोक पर ३ नक्षत्रों का न्यास करें। दसवें नक्षत्र से ३ नक्षत्र मूल में, ३ मध्य में तथा ३ धनुष के ऊर्ध्वभाग में रखें। फिर १९ वें नक्षत्र से ३ नक्षत्र मौर्विका के आदि में, ३ मध्य में तथा ३ ऊर्ध्वभाग में रक्खें। तत्पश्चात् योद्धा के नक्षत्र जिस अङ्ग में हो उसके विषय में श्लोकानुसार फलाफल का विचार करें ।। १-६ ।। इति ।।

अथ अग्नि चक्रम् ।। अथातः सम्प्रवक्ष्यामि अग्नि चक्रं वरानने । होमे च शांतिके चैव चिन्तनीयं प्रयत्नतः ।। १ ।। सैका तिथिर्वारयुता कृताप्ता शेषे गुणे ऽभ्रे भुवि वह्नि वासः । सौरं पाप होमे शशि युग्मशेषे प्राणार्थनाशौ दिवि भूतले च ।।२।। त्रीणि त्रीणि भवेदृक्षे सूर्यऋक्षेष्वनुक्रमात् । आदित्ये च भवेच्छोकं बुधे चैव श्रिया सुखम् ।।३।। शुक्रे चैवार्थलाभश्च शनौ पीडा न संशयः । चन्द्रे लाभे विजानीयाद्भौमे च निधनं भवेत् ।।४।। गुरौ चैवार्थलाभश्च राहौ हानिश्च निश्चितम् । केतौ चैव भवेन्मृत्युरग्नि चक्रं वरानने ।।५।। रविभं दीयते पूर्वं गण्यते सृष्टि मार्गतः । शुभाशुभ फलं वक्ष्ये अग्निचक्रं सदा बुधैः ।।६।। इति अग्नि चक्रम् ।।

भावार्थ। अब शान्ति कर्म के लिए किये जाने वाले हवन में विचारार्थ अग्नि चक्र के विषय में कहा जाता है। वर्तमान तिथि में 1 जोड़ कर, वार-संख्या को जोड़ कर उसमें ४का भाग दें। यदि 3 अथवा 0 बचे तो अग्नि का वास भूमि में समझना चाहिए। उस दिन हवन करने से सुख प्राप्त होगा। यदि १ या २ शेष बचे तो क्रमश आकाश एवं भूतल में अग्नि का वास समझें। इसमें हवन करने से प्राण तथा धन का नाश होता है। शेष श्लोकानुसार समझलें ॥२-६॥ इति॥

अथ शनि-चक्रम्॥ शनि-चक्रं नराकारं लिखित्वा सौरिभादितः। नामऋक्षं यवेद्यत्र ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥१॥ मुखैकं दक्षदोस्तुर्यं षट्पादौ पंच हृत्करे। वामे तुर्यं त्रयं शीर्षे नेत्रे गुह्ये द्विकं द्विकम् ॥२॥ मुखे हानिर्जयो दक्षे भ्रमः पादे श्रियो हृदि। वामे शीर्षे यशं राज्यं नेत्रे सौख्यं मृतिर्गुदे ॥३॥ तुर्याष्टद्वादशे पक्षे यदा विघ्नकरः शनिः। तदा सौख्यं वपुः स्थाने हृच्छीर्षे नेत्र दक्षयोः ॥४॥ तृतीयैकादशे षष्ठे यदा सौख्यकरः शनिः तदा विघ्नं शरीरस्थे मुखगुह्यांघ्रिवामदोः ॥५॥ यस्य पीडाकरः सौरिस्तस्य चक्रमिदं स्फुटम्। लिखित्वा कृष्णद्रव्येण तैलमध्ये क्षिपेद् बुधः ॥६॥ निक्षिप्य भूमिमध्यस्थे कृष्णपुष्पैः प्रपूजयेत्। तुष्टिं याति न सन्देहः पीडां मुक्त्वा शनैश्चरः ॥७॥ यथोक्तं यामले तंत्रे सूनोः सूर्यस्य पूजनम्। यथोक्तविधिना सर्वं कर्तव्यं मंत्रपूजनम् ॥८॥ जपेत्प्रतिदिनं मंत्रं संख्ययाष्टोत्तरं शतम्। पूजयित्वा विधानेन ततः शान्तिं प्रपद्यति ॥९॥ इति शनि-चक्रम्॥

भावार्थ॥ मनुष्याकार शनि चक्र बना कर, उसमें शनि के नक्षत्र से नक्षत्रों को लिखकर, जहाँ नाम का नक्षत्र हो, उससे शुभाशुभ फल का विचार करना चाहिए। एक नक्षत्र मुखमें तथा दायें हाथ में ४, दोनों पाँवों में 3-3, नेत्र में २, गुह्य स्थान में २ नक्षत्र—इस क्रम से लिखकर [illegible]

मु० सं० १२८४

भा० टी०

अथ सेवा चक्रम् ॥ सेवाचक्रे सप्तशीर्षे सप्त पृष्ठे तथोदरे । पादयोः सप्त ऋक्षाणि साभिजित्तत्र विन्यसेत् ॥ १॥ स्वामिभाद् भृत्यभं गण्यं भृत्यभात् स्वामिभं ततः। निष्फलं पादपृष्ठस्थे सफलं मस्तकोदरे ॥२॥ इति सेवाचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ एक नराकार सेवा चक्र बना कर उसमें ७ नक्षत्र मस्तक पर, ७ पीठ पर ७ पेट में तथा ७ पाँवों में अभिजित् सहित २८ नक्षत्रों को लिखें। स्वामी के नक्षत्र से सेवक के नाम-नक्षत्र तक गिन कर नक्षत्रों पर विचार करे। यदि पाँव तथा पीठ में नक्षत्र पड़े तो निष्फल एवं मस्तक तथा पेट में पड़े तो सफल होता है ॥ १-२। इति ॥

अथ घात नर चक्रम् ॥ नरचक्रं नराकारमष्टावयव संयुतम् । येन विज्ञान मात्रेण क्रियते घात निर्णयः ॥ १॥ मुखैकं मस्तके त्रीणि हस्ते पादे चतुश्चतुः । हृदि पञ्च त्रिकं कण्ठे साभिजि-द्भानि विन्यसेत् ॥२॥ कृत्वा योध्यभमादौ तु मुखे मस्तक वामके। हस्त पादोदर ग्रीवा दक्ष हस्तांघ्रि गण्यते॥ ३॥ यत्रांगे भानुभौमार्कि राहवो धिष्ण्य संस्थिताः । तत्रं घातं विजानीयाच्चन्द्र योगे विशेषतः ॥४॥ ग्रह भुक्ति प्रमाणेन नवांशक क्रमेण च । प्रहारो जायते तत्र वक्रे द्विगुण संख्यया ॥५॥ निजभे त्वर्द्धघातं च पादोनं मित्रभे ग्रहे । उदासीने भवेत्सर्वं द्विगुणं शत्रुगे ग्रहे ॥ ६॥ द्विर्द्वादशो भानु चन्द्रौ त्रिरुद्रे शनि मंगलौ । शुक्रेन्दुजे वेद दृशौ पञ्चांके राहु वाक्पती ॥७॥ षडष्टके केतु शुक्रौ सपार्श्वे कंठ तीक्ष्णगू । नराशे र्लग्नत श्चैते ग्रहा घ्नंति रिपुं महत् ॥८॥ नाभिश्रोत्र मुखे चन्द्रः पृष्ठ कोष्ठे बुधस्तनौ । भौमार्को दंडहृद्दगंधे गुरूदरे गुदे भृगुः ॥ ९॥ बाहु कर्णे तथास्ये च स्वर्भानुः स्कन्ध कर्णयोः । कालः करतले यस्य बाहु कक्षांधराभवः ॥१०॥ केतुर्दंडे त्रिधाहंति मुखे शीर्षोदरे रविः । क्षिति वर्णैर्युता वेधा ग्रह घातस्य लक्षणम् ॥११॥ शत्रुभे मित्रघातेपि रिपुणा तस्य हीरया । क्रियते ऽरिः स्वके लग्ने शत्रु

घातेपि हन्यते ॥२२॥ एको ऽप्यनेकघातांश्च करोति भूबलोज्झितः। भूबलस्थे भटे खेटाः स्थिता घातं न कुर्वते ॥२३॥ यत्र यत्र स्थितो घातो यत्र यत्र स्थितो नहि। तत्फलं कथयिष्यामि ग्रहभूमिबलात्पुनः ॥२४॥ क्रूराघातं न कुर्वन्ति दक्षपृष्ठगता रणे। संमुखा वामगा एते योधांगे क्षतकारकाः ॥२५॥ दक्षिणांगगताः क्रूराः सौम्या वामांगसंस्थिताः। शिरश्छेदे समुत्पन्ने भटो धावति सम्मुखम् ॥२६॥ यस्य वामांगगाः क्रूराः सौम्या यस्य च दक्षिणे। तस्य भंगो रणे नूनं यदि शूरो महाभटः ॥२७॥ इति घात नर-चक्रम् ॥

भावार्थ॥ आठ अवयवों से युक्त नर चक्र बनाकर मुखमें १, मस्तकपर ३, दोनों हाथ तथा दोनों पाँवों में चार-चार, हृदय में ५ स्वकंठ में ३, नक्षत्र अभिजित् सहित लिखे। योधा के नाम नक्षत्र से मुखमें १, मस्तक में ३, बाँये हाथ में ४, बाँये पाँव में ४, पेट में ५, कंठ में ३, दाँये पाँव में ४ तथा दाँये हाथ में ४ नक्षत्र रक्खें। जिस अङ्ग के नक्षत्र में सूर्य, भौम, शनि एवं राहु स्थित हों, उस अंग में योद्धा को घात होगा। यदि उक्त ग्रहों के साथ चन्द्रमा भी हो तो विशेष घात होगा। अन्य बातें श्लोकानुसार समझलें। इस चक्र द्वारा घात संबंधी विचार किया जाता है। यह नराकार शनि चक्र योद्धाओं के घात के संबंध में प्रयुक्त किया जाना चाहिए ॥१-२७॥ इति॥

अथ डिंभ चक्रम् ॥ डिंभ चक्रे न्यसेद्भानि भानुभाद्द्वित्रि मस्तके। मुखे त्रीणि द्वयं स्कन्धे एकैकं बाहुहस्तयोः ॥१॥ पंच हृन्नाभि गुह्येषु एकैकं षट् च जानुनि। चरणाभ्यां तथैकैकं जन्मभं यत्र तत्फलम् ॥२॥ शीर्षस्थे धनलाभश्च वक्त्रे मिष्टान्न भोजनम्। स्कंधे चानी च बाहुभ्यां स्थानभ्रष्टो भवेन्नरः ॥३॥ पाणिभ्यां तस्करो लक्ष्मी हृद्यल्पायुश्च नाभिभे। गुह्ये कामी असौ जानौ स्त्रीकजीवी च पादयोः ॥ इति डिम्भ चक्रम् ॥

४४६३ सं० मु०

भा० टी०

भावार्थ॥ डिंभनक्षत्र भी नराकार बनाया जाता है। सूर्य के नक्षत्र से ३ नक्षत्र मस्तक पर, ३ मुख में, २ कंधे पर, एक-एक भुजा तथा हाथ में, ५ हृदय में, एक-एक नाभि तथा गुह्य स्थान में, ६ जांघों में तथा एक-एक चरणों में स्थापित करें। जहाँ जन्म नक्षत्र हो, वहाँ से फल कहना चाहिए। शेष श्लोकानुसार समझलें ॥१-४॥ इति॥

अथ पक्षि चक्रम्॥ चञ्चुमस्तक कण्ठेषु हृदयोदर पत्सु च। पक्षयोश्च त्रिकं चैव शशिभाद्विन्यसेद् बुधः॥१॥ चञ्चुस्थे नामभे मृत्युः शीर्षे कण्ठोदरे हृदि। विजयः क्षेमलाभश्च भंगदं पादपक्षयोः ॥२॥ इति पक्षिचक्रम्।

भावार्थ॥ चन्द्रमा के नक्षत्र से, पक्षी की आकृति वाले चक्र की चोंच, मस्तक, कंठ, हृदय, पेट, पाँव तथा दोनों पंखों पर तीन-तीन नक्षत्र लिखें। यदि चोंच में नाम का नक्षत्र हो तो मृत्यु; शिर, कंठ, पेट व हृदय में हो तो विजय और कुशल-लाभ एवं पाँव तथा पंख में हो तो हानि होती है ॥१-२॥इति॥

अथ वर्ग चक्रम्॥ अगरुडः कमार्जारश्च सिंहाख्यः शुनी सुतः। तः सर्पो मूषकः पश्च यो मृगः शास्त्वजात्मजः ॥१॥ वसु भूत रसा वेदा मुनि चन्द्राग्नि बाहवः। पूर्वादि क्रमतो ज्ञेया वर्गोपरि दिगष्टके ॥२॥ नाम्नि वर्गादि वर्णानामङ्काः कार्याः पृथक् पृथक्। पिण्डिता वसुभिर्भक्ता शेषमायोध्वजादिकः ॥३॥ शेषसंख्या ध्वजो धूमः सिंहश्वावृषरासभाः। गजध्वांक्षौ क्रमेणैव आया अष्टौ भवन्ति ते ॥४॥ ध्वांक्षश्वरासभवृषगजसिंहध्वजानलाः। यथोत्तर बला सर्वे ज्ञातव्याः स्वरपारगैः ॥५॥ भूमौ चोधे पुरे देशे मित्र नारी गृहेषु च। आयाधिके भवेल्लाभो न लाभो बलवर्जिते ॥६॥ इति वर्ग चक्रम्॥

भावार्थ॥ नौ कोष्ठकों वाला गरुड़ चक्र तय्यार करके, उसके द्वारा श्लोकानुसार लाभ हानि का विचार करना चाहिए। १-६॥ इति।

अथ आय-चक्रम्॥ ध्वजो धूमोथ सिंहः श्वा सौरभेयः खरो गजः। ध्वांक्ष-श्चेति क्रमेणैव आया अष्टौ दिगष्टके ॥१॥ प्रतिपदाद्युदीयन्ते तिथि भुक्ति प्रमाणतः। अहोरात्रे पुनः सर्वे यामभुक्त्या भ्रमन्ति च ॥२॥ आया वर्गाष्टके ज्ञेया दिगष्टक क्रमेण च। स्वोदये मूलुदं ज्ञेयं सर्व-कार्येषु सर्वदा ॥३॥ इति आय चक्रम्॥

भावार्थ॥ नौ कोष्ठकों वाला आय चक्र बना कर, श्लोकानुसार, जिस दिशा में अपना वर्ग और आय उदित हो, उस दिशा में अपने कार्यों को नहीं करना चाहिए ॥१-३॥ इति॥

अथ ग्राम-चक्रम्॥ ग्राम नक्षत्र मारभ्य कर्तुर्नक्षत्रं गण्यते। शिरः पञ्चार्थलाभं च मुखे त्रीण्यर्थनाशनम् ॥१॥ बाणा हृदि धनं धान्यं द्वौ पादौ षड् दरिद्रता। द्वौ गुह्ये भयं पीडा नाभौ चत्वारि सम्पदम् ॥२॥ पृष्ठैकं प्राणसन्देहो हस्ते चैकैकलाभदम्। जन्मराशिस्थितो ग्राम स्त्रिषट् सप्तमगोपि वा ॥३॥ सिद्धार्थश्च विनश्यन्ति आपत्यं च दिने दिने ॥४॥ चतुर्थश्चाष्टमो यश्च द्वितीयो वा यदा भवेत्। तत्र चोत्पद्यते द्रव्यं यत्र चैवं विनिर्दिशेत् ॥५॥ पञ्चमो नवमो ग्रामो द्वादशैकादशो दशे। महालाभो भवेत्तस्य प्रभवेच्च चिरायुषम् ॥६॥ अन्यच्च॥ पञ्चमो नवमो ग्रामो दशमैकादशःस्थितः। द्वितीये वसते नित्यं धनधान्यसमन्वितम् ॥७॥ चतुर्थश्चाष्टमो ग्रामो द्वादशोपि यदा भवेत्। तत्र चोपार्जितं द्रव्यं तत्रैवापि विनश्यति ॥८॥ इति ग्राम-चक्रम्॥

भावार्थ॥ ग्राम के नक्षत्र से गृहकर्त्ता के नक्षत्र तक गिन कर क्रम से ५ नक्षत्र सिर में स्थापित करें। इससे धन-लाभ। फिर ३ मुख में। इससे धन-नाश। फिर ५ हृदय में इससे धन-धान्य का लाभ। फिर दोनों पाँवों में ६ नक्षत्र। इससे दरिद्रता। फिर दो नक्षत्र गुह्य स्थान में। इसी प्रकार अन्य नक्षत्र श्लोकों में वर्णित स्थानों में स्थापित कर, तदनुसार ही फल समझलें ॥१-८॥

अथ पट्ट चक्रम्॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि विवाहे शोधयेद् बुधः। रवितारादि गणयन्ते चन्द्रभादि च यो न्यसेत् ॥१॥ त्रीणि त्रीणि क्रमेणैव फलं तस्य शुभाशुभम्। मध्येमृत्युस्त-था लक्ष्मीरंघ्रिविघ्नं तथैव च ॥२॥ सौभाग्यं विधवा वन्ध्या धनं पुत्रः क्रमेण च॥ त्रिऋक्षमर्का-दि कुलक्षयं च पूर्वार्धे लक्ष्मी मृति दुर्बलत्वम्। सौभाग्य वन्ध्या विधवा च नारी पुत्र प्रसूतिर्धन पट्टकाले ॥३॥ इति विवाह पट्ट चक्रम्॥

भावार्थ॥ विवाह पट्टचक्र में सूर्य-नक्षत्र से चन्द्रनक्षत्र तक गिनें। क्रमशः तीन-तीन नक्षत्रों का शुभ-अशुभ फल होता है। शेष श्लोकानुसार समझलें ॥ १-३॥ इति॥

अथ विरिंचि-चक्रम्॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि सद्यः प्रत्ययकारकम्। विरिंचि नाम विख्यातं यत्सुरैरपि दुर्लभम् ॥१॥ कृत्तिका चोत्तराफाल्गुन्युत्तराषाढ पूर्वकम्। पंक्तियुक्त्या लिखेद् भानि क्रमेण नवकत्रये॥२॥ वेधोऽपि कणगिस्तत्र कर्तव्यो नवकत्रये। क्रूरसौम्यग्रहैर्विद्धं ज्ञेयं तस्य शुभाशुभम् ॥३॥ जन्म सम्पद्विपत्क्षेम प्रत्यरिः साधको वधः। मैत्रादि मैत्रगास्तारा नवभेदा भवन्ति च ॥४॥ जन्मत्रयस्य वेधेन मृत्युः क्रूर ग्रहेण च। जयं लाभं शुभैस्तत्र मिश्रैर्मिश्रफलं विदुः॥ ५॥ जन्मत्रये स्थितः सौरिः क्षेमभे राहुभूमिजौ। मित्रातिमित्रगे सूर्ये जायते बधबन्धनम् ॥६॥ जन्मत्रये यदा जीवः क्षेमभे बुध भार्गवौ। मित्रातिमित्रगे चन्द्रे जयं लाभं सुखानि च ॥७॥ त्रि पञ्चसप्त तारासु रोगोत्पत्तिर्यदा तदा। चिररोगो मृतिस्तासु क्रूरविद्धासु जायते ॥८॥ इतिविरिंचिचक्रम्॥

भावार्थ॥ अब विरंचि चक्र के विषय में कहा जाता है। कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी तथा उत्तराषाढ़ को एक पंक्ति में लिखें। फिर क्रमशः एक-एक पंक्ति में नौ-नौ नक्षत्र लिखकर, तीनों नवकों में तिरछे-तिरछे वेधका श्लोकानुसार विचार कर, शुभाशुभ फल ज्ञात करलें॥ १-८॥ इति॥

अथ भास्वच्चक्रम् ॥ रेखात्रयं त्रिशूलाभं तिर्यग्रेखा समन्वितम् । एकैका कोणगा तत्र मध्याधो भानुभादितः ॥१॥ लिखेत्सव्यक्रमेणैव चक्रे भास्वति तारकाः । अधस्त्रये भवेन्मृत्युश्चतुर्भिः कोणगैः शुभम् ॥ द्वादश मध्यमाः प्रोक्ता ऊर्ध्वगा भस्मकारकाः ॥२॥ इति भास्वच्चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ त्रिशूल की भाँति तीन रेखायें खड़ी तथा तीन तिरछी लिखकर, उसमें सूर्य-नक्षत्र से एक-एक नक्षत्र कोण में तथा शेष मध्य एवं ऊपर-नीचे स्थापित करें । नीचे वाले नक्षत्र में मृत्यु, कोण वाले में शुभ, ऊपर वाले में मध्यम तथा और ऊपर वाले में अनिष्ट फल समझें ॥१-२॥

अथ श्येनचक्रम् ॥ श्येन चक्रं समालिख्य पक्षिरूपं सुशोभनम् । चंचवग्रे भानुभं कृत्वा अष्टाविंशति विन्यसेत् ॥१॥ ऋक्षैकं चञ्चुकोटिस्थं शीर्षे ग्रीवे त्रिकं त्रिकम् । पादपृष्ठे चतुष्कं च उदरे नव भानि च ॥२॥ नामऋक्षं स्थितं यस्य चंचवग्रे वधबन्धनम् । लाभो हृच्छीर्षग्रीवासु विरुद्धं पादपृष्ठयोः ॥३॥ इति श्येनचक्रम् ॥

भावार्थ ॥ पक्षी के आकार का श्येन चक्र बनाकर, सूर्य-नक्षत्र को चोंच के आगे लिख कर, २८ नक्षत्रों को क्रमशः लिखें तथा श्लोकानुसार फल समझलें ॥१-३॥ इति ॥

अथ संवत्सरचक्रम् ॥ चक्रं सांवत्सरं वक्ष्ये यदुक्तं कोशलागमे । येन विज्ञायते सम्यग्वर्षे वर्षे शुभाशुभम् ॥१॥ द्वादशारं लिखेच्चक्रं तत्र मेषादिराशयः । संस्थाप्याः क्रमयोगेन मीनान्ताः सव्यमार्गगाः ॥२॥ तत्र चक्रं समालेख्यं मेषादि राशिमार्गतः । प्रभवाब्दमेकैकं वृष्टिः पञ्चप्रवर्तनैः ॥३॥ एवं राशौ स्थितं यत्र वत्सरं वर्तमानजम् । तद्राशिस्थं फलं वीक्ष्य यत्किंचिद्वार्षिकं मतम् ॥४॥ चैत्रे या प्रतिपच्छुक्ला तस्याः काले प्रवेशजे । एतत्त्रिलोकयेच्चक्रं कालज्ञान विनिश्चितम् ॥५॥ तत्र सर्वान् ग्रहान्न्यस्य [illegible] रेखास्था [illegible] ॥६॥ वर्षे पञ्चगा

क्रूरा: सौम्याश्चिद्ग्रान्त्यवर्जिता:। ग्रहा रेखाप्रदा ज्ञेया मित्रमध्यगृहे स्थिता: ॥७॥ स्वर्क्षे द्विघ्नं फलं दत्ते स्वोच्चे विघ्नं तथैव च। फलार्धं शत्रुगेहस्थो नीचस्थो निष्फलो ग्रह: ॥८॥ एवं रेखाप्रमाणेन वर्षविंशोपका मता:। ज्ञात्वा दैशिकेन्द्रेण वर्षमध्ये प्रयत्नत: ॥९॥ एवं वर्षफलं प्रोक्तं चैत्रमासाद्यवासरात्। आषाढे कार्तिके प्येवं जलं धान्यं विचिन्तयेत् ॥१०॥ तत्र देशे पुरे ग्रामे फलं भिन्नं प्रदृश्यते। तस्मात्तत्कारणं वच्मि येन जानाति साधक: ॥११॥ देशादिराशिनाथस्य यो रेखादापको ग्रह:। मित्रोदासीनशत्रुत्वे फलं भिन्नं करोति स: ॥१२॥ मित्रे द्विघ्नं फलं दत्ते सम: सौम्यं करोति स:। शत्रु: सर्वहरो ज्ञेय: सर्वदा काल चिन्तकै: ॥१३॥ एवं विचार्य कर्तव्या कालविंशोपका बुधै:। यथा जलं यथा धान्यं स्वस्वकाले विचिन्तयेत् ॥१४॥ इति संवत्सर चक्रम् ॥

भावार्थ॥ बारह कोष्ठ वाले चक्र को बनाकर, उसमें मेष से मीन तक राशियों को सव्य मार्ग क्रम से लिखें। मेषादि राशि से प्रभव आदि संवत्सर को पाँच परिक्रमा में लिखें। जिस राशि में वर्तमान संवत्सर हो, उस राशि के वर्तमान फल को देखकर वार्षिक फल को कहें। शेष बातें श्लोकानुसार समझ लेनी चाहिए ॥१-१४॥ इति ॥

अथ स्थान बल चक्रम् ॥ स्थानचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं लम्पटागमे। येन विज्ञायते सम्यक् स्थाने स्थाने शुभाशुभम् ॥१॥ स्थान पीडाप्रभावेण राज्ञ: पीडा प्रजायते। तस्मादपीडिते स्थाने स्थातव्यं सर्वदा नृपै: ॥२॥ स्थान नामोद्भवं राशिं कृत्वादौ द्वादशारके। राशिमण्डलकं न्यस्य वाममार्गेण संस्थितम् ॥३॥ नव तत्र ग्रहा: स्थाप्या मासचन्द्रश्च राशिग:। तेषां विलोकनं वीक्ष्य स्थान राशिगतं तथा ॥४॥ तृतीयैकादशे पादं द्विपादे व्योमबन्धुगे। त्रिकोणे त्र्यंघ्रि मूर्धन्यस्ते पूर्णं पश्यन्ति खेचरा: ॥५॥ शन्यर्कराहुकेत्वारा:। पञ्च क्रूरग्रहा मता:। शेषं चतुष्टयं सौम्यं मासेन्दुश्चापि पञ्चम: ॥

एवं पञ्चग्रहा: क्रूरा: पञ्च सौम्यास्तथैव च। तेषां शुभाशुभां दृष्टि: पूर्णपादचतुष्टयम् । पञ्चमे नवमे तेषां पादोना विंशतिर्भवेत् ॥८॥ तत्र विंशोपका ज्ञेया: सौम्यक्रूरग्रहोद्भवा:। एवं प्रसाधयेद्दृष्टिं युग्मखेटै: शुभाशुभम् ॥९॥ बली स्तोकोनिता शेषा जायन्ते दृक् शुभाशुभा:। ते च विंशोपकास्तस्य स्थानस्य बल निर्णये ॥१०॥ एवं देशे पुरे ग्रामे बलं यत्र शुभाधिकम्। तत्रस्थाने स्थितो राजा दुष्टारिस्तैर्न पीड्यते ॥११॥ स्थान बल प्रभावेण स्वबलस्य बलोदय:। शत्रुसैन्यं क्षयं याति यावत्स्थाने शुभे स्थिते: ॥१२॥

इति स्थान बल चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ पहले स्थान के नाम से राशि बना कर, उसी को लग्न मान कर, द्वादश राशि चक्र में क्रमश: अन्य राशियों को स्थापित करें। उसमें ९ ग्रहों को यथास्थान स्थापित कर, मासिक चन्द्र को उनकी राशि में रखदे। फिर उनकी दृष्टियों को स्थान राशि पर देखकर, स्थान-बल को श्लोकानुसार करे। स्थान-बल के प्रभावसे अपने बल का उदय होता है। यदि शुभस्थान में रहे तो शत्रु की सेना नष्ट हो जाती है ॥ १-१२ ॥ इति ॥

अथ चन्द्र शृङ्गोन्नति चक्रम् ॥ मीनमेषोदये चन्द्र: सततं दक्षिणोन्नत:। उदग्युन्नत शेषे स्यात् समस्तु वृषकुम्भयो: ॥१॥ विड्वर: स्यात्समे चन्द्रे दुर्भिक्षं दक्षिणोन्नते। ईति रोगभयं शूले सुभिक्षं चोत्तरोन्नते ॥२॥ नारदीय संहितायाम् ॥ याम्य शृङ्गोन्नतश्चन्द्र: शुभदो मीनमेषयो:। सौम्य शृङ्गोन्नत: श्रेष्ठो नृयुग्मकरयोस्सदा ॥३॥ समोक्षघटयो: कर्किचापयो: शरसन्निभ:। चापवत् कीटहर्योस्तु शूलवत् तौलिकन्ययो: ॥४॥ विपरीतोदितश्चेन्दुर्दुर्भिक्षकलहप्रद:। यथोक्तोऽभ्युदित प्रचन्द्र: प्रतिमासं सुभिक्षकृत् ॥५॥ आषाढद्वय मूलेन्दु धिष्ण्यानां याम्यग: शशी। अग्निप्रदस्थोयच रवनसर्प विनाशकृत् ॥६॥ विशाखामैत्रयोर्याम्यपार्श्वग: पापकृच्छशी। मध्यम: पितृदैवत्यो द्विदैवतं

शुभोत्तरे ॥७॥ अप्राप्य पौष्णमादभुक्त षड्‌क्षाणि प्राग्वी शुभः । मध्यगो द्वादशार्द्राद्यामतीत्य नववासरान् ॥८॥ यमेन्दो हीशतोयेशमरुतश्चार्ध तारका : । ध्रुवादितिद्वि दैवत्य मध्यमाश्च पराः समाः ॥९॥ याम्य शृङ्गोन्नतः श्रेष्ठः सौम्यशृङ्गोन्नतः शुभः । शुक्ले पिपीलिकाकारे हानिर्वृद्धिर्यथार्थ कृत ॥१०॥ सुभिक्षकृद्विशालेन्दुरविशालोर्थ नाशनः । अधोमुखः शास्त्रभयं कलहो दण्डसन्निभे ॥११॥ कुजाद्यैर्निहते शृङ्गे मण्डले वा यथाक्रमात् । आयार्धवृष्टिनृपतिजनानां नाशकृच्छशी ॥१२॥ इति शृंगोन्नति चक्रम् ॥

भावार्थ ॥ यदि शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को मीन तथा मेष राशि पर चन्द्रमा हो तो दक्षिण शृंग उन्नत होता है। वृष तथा कुंभ राशि में हो तो सम शृंग होता है। अन्य राशियों पर उत्तर उन्नत शृंग होता है। सम शृंग चन्द्रमा हो तो विग्रह, दक्षिण उन्नत शृंग हो तो दुर्भिक्ष, त्रिशूलाकार शृंग हो तो टिड्डी, रोग आदि का भय तथा उत्तर शृंग उन्नत हो तो सुभिक्ष होता है ॥ नारद संहिता के अनुसार — मीन-मेष के चन्द्रमा का दक्षिण शृंग उन्नत हो तो शुभद, मिथुन-मकर के चन्द्र का सौम्य शृंग हो तो सुखद, वृष-कुंभ के चन्द्र का सम शृंग होता है। कर्क-धन के चन्द्रमा का बाण सदृश शृंग, वृश्चिक-धनु के चन्द्रमा का धनुष तथा कन्या-तुला के चन्द्र का शूल के समान शृंग होता है। इसके विपरीत चन्द्रोदय हो तो दुर्भिक्षकारक होता है। शेष सब बातें श्लोकानुसार समझलें ॥१-१२॥ इति ॥

एतानि सर्वचक्राणि ज्ञात्वा युद्धं समाचरेत् । जयेदिह न सन्देहः शक्रतुल्येपि वैरिणि ॥१॥ पञ्चावस्थास्वरूपं स्वरबलविमलं देहतत्त्वं प्रधानम्, राशीभे वेधहव्यं ग्रहवशफलदं स्थापि यापि प्रधानम् ॥ वर्गाद्याश्चैश्च वर्णैर्बलविधि सहितं मातृका भेदरम्यं । भूपादीनां जयार्थे नरपति रकरोत्स्वरवलप्रकाशम् ॥१-३॥ इति चक्र बलाध्याय स्तृतीये [illegible] ॥

अथ भूबलाध्यायः ॥ अथ वीरभूमिः ॥ चतुष्कोणं चतुर्द्वारं वीरभूमिं लिखेद् बुधः । वायव्याग्नेयकोणे तु रेखाया द्विदलान्वितम् ॥१॥ बहुना वीक्ष्यमाणेन नात्र तेषां प्रयोजनम् । कृत्तिकादि लिखेद् भानि सप्तसप्त क्रमेण च ॥२॥ चतुर्दिक्षु मध्य नक्षत्रं द्वारं तत्र नियोजयेत् । कोणे त्रयं त्रयं विद्याद्द्वेया ऋक्षगता ग्रहाः ॥३॥ विचिन्त्य केतवः पञ्च यत्र यत्र व्यवस्थिताः । पूर्वद्वारि शिवो याम्ये हस्तः पश्चाच्च वारुणाम् ॥४॥ उत्तरद्वार्यहिर्बुध्न्यो मध्यस्तम्भचतुष्टयम् । पूर्वादिदलमध्यस्थे मेषाद्राशीन्न्यसेत्क्रमात् ॥५॥ वर्गाष्टके क्रमाद्देयं नन्दाद्यास्तिथयस्तथा । सिंहादिषट्कके क्षेत्रे भानोः कुम्भादिषड्विधौ ॥६॥ सूर्याचन्द्रमसोर्मध्ये कालसूत्रमुदाहृतम् । आग्नेयाद्वातपर्यन्तं परिघाख्यं सदा भवेत् ॥७॥ शनि सूर्य दिने मध्ये कालः पूर्वदिशि स्थितः । शुक्रेन्दु बाह्यतो याम्ये मध्ये जीवारपश्चिमे ॥८॥ बुधे बाह्योत्तरे कालः कालभेद उदाहृतः । यामार्द्धं सूर्यदिवसे पूर्वे पश्चात्तु वायुगः ॥९॥ ततो दक्षिणमायाति ऐशान्यात्पश्चिमे ततः । आग्नेयामुत्तरे भागे ततो नैर्ऋत्यगो रवेः ॥१०॥ चन्द्रे वाते कुजे याम्ये बुधे रौद्रे गुरौ परे । दहने भार्गवे देयं शनिवारे तथोत्तरे ॥११॥ स्वाह्नि यामार्द्धया भुक्त्या स्वस्थानाद्रविवद् भ्रमः । कालकेतुश्च कालाग्निर्धूमकेतुः शिखी तथा ॥१२॥ विनाशकश्च पञ्चैते विषमा ब्रह्मणः सुताः । तिथिभे नवमे चैव तृतीये कृत्तिभे तथा ॥ त्रयोविंशतिभे चैव सूर्यभात्क्रमशः स्थिताः ॥१३॥ इति वीरभूमिः ॥

अथ यात्रा ॥ व्योमराम हता नाड्यो रामाष्टिविहृता तिथिः । तिथिस्तात्कालिकी ज्ञेया वर्तमान तिथि क्रमात् ॥१॥ उदिते स्वल्पलाभः स्याद्भ्रमिते बहुलाभकृत् । अमितो जयमाप्नोति सन्ध्याहानिरते क्षयः ॥२॥ तात्कालिकी तिथिर्यत्र तत्रोदयति योगिनी । सा सदा शुभदा वामे यात्राद्यूते रणाङ्गणे ॥३॥ इन्द्रोऽग्निरन्तको रक्षोऽम्भमरुद्धनद शूलिनी । दिक्षु भ्रमति तत्काले गिरिजास्वाष्ट सुतिथौ ॥४॥ रविः कुजो गुरुश्चान्द्रिः शुक्रसौरेन्दु राहवः । पूर्वाद्याः प्रहरार्द्धेन तुर्ये तुर्ये दिशि भ्रमः ॥५॥ शुक्रवार

क्रमादह्नि रात्रौ व्यत्ययतो भ्रमः। कृष्णपक्षे गतिर्वामा जयदः पृष्ठदक्षिणे ॥६॥ यस्यैवं राहुमाप्नोति जयं
विषमसङ्कटे। नैवात्र बलवान्कालो भूबलो नात्र योगिनी ॥७॥ एतस्य बलमाश्रित्य दुर्गभङ्गस्य वांछया।
प्रस्थितः क्षणमात्रेण दुर्गं गृह्णाति दुर्जयम् ॥ दुर्गस्था दुर्जया ये च न ते स्युः सम्मुखास्तदा ॥८॥ काल
क्षितिथिभिर्घातो यत्र योधस्य वर्तते। प्रवेशं कारयेत्तत्र दिशि यास्यां शुभग्रहाः ॥९॥ दक्षपृष्ठगताः
पापा क्षतदा न भवन्ति हि। सम्मुखं वामभागस्था भवन्ति क्षतदायकाः ॥१०॥ क्रूरास्तु दक्षिणे यस्य
शोभना वामभागगाः। तदा शूरो भवेद्योधो विपरीते तु भङ्गदाः ॥११॥ स्वमित्र सम शत्रूणां गृहे पा-
-पास्तु घातदाः। अर्धपादोन सम्पूर्ण द्विगुणं त्रिघ्न वक्रिमे ॥१२॥ चैत्रादयस्त्रिगुणिता मासास्तत्तिथि-
संयुताः। नवभक्ताः क्रमाज्ज्ञेया शेषा यात्रा नवैव तु ॥१३॥ निष्फला राक्षसी चैव साधारणी च हारि-
-णी। तारणी कालयुक्ता च महाबलवती तथा ॥१४॥ ऐन्द्री ऐरावती चेति क्रमात्तत्फलमुच्यते।
निष्फला कार्यहारिणी राक्षसी व्याधिदायिनी ॥१५॥ साधारणी सत्फलदा हारिणी मृत्युदायिनी ॥ तार
ण्यां सफलं कार्यं कालयुक्ता च कालदा ॥१६॥ महाबलायां लभते राज्यमैन्द्री च हानिदा। ऐरावती च
सफला गतस्य सफला क्रिया ॥१७॥ इति यात्रा ॥

अथ ओड्री भूमिः ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि भूबलानि समासतः। चतुर्विधेयं
संग्रामे येन स्याद्विजयी नृपः ॥१॥ चैत्राद्या ईशवायव्ये रक्षोऽग्नीन्दुधनाधिपे। वारुण्यां दक्षिणे रुद्रवायु
रक्षस्तथानिले ॥२॥ उड्रीभूमिरियं ख्याता प्रोक्ता या ब्रह्मयामले। चतुर्विधेयं संग्रामे जयदा पृष्ठ
पृष्ठदक्षिणे ॥ इति ओड्री भूमिः ॥

अथ जालन्धरी भूमिः ॥ वायुरुद्राग्निनैर्ऋत्ये याम्यतोयोत्तराध्वजे। प्रदि-
शि — अग्निरुद्रानिले रक्षे चैत्रादौ भ्रमणं भवेत् ॥२॥ एवं मासोदये यत्र तत्रस्था पृष्ठदक्षिणे।

मु० सं० १२८८

इयं जालन्धरी भूमिः संग्रामे जयदा भवेत् ॥ २॥ इति जालन्धरी भूमिः ॥

अथ पूर्णा भूमिः ॥ पूर्णाख्यां कथयिष्यामि पूर्णपीठाद्विनिर्गताम् । द्वन्द्वयुद्धेऽथवा
दुर्गे यामार्धं भुक्तिरत्र च ॥ १॥ पूर्वोत्तरे यमे शक्रे तोयान्तकोत्तरे जले। यथा दिने तथा रात्रौ पृष्ठदक्षि-
-णगो जयेत् ॥ २॥ इति पूर्णाभूमिः ॥

अथ कामाख्याभूमिः ॥ इन्द्रे यमे जले सौम्ये मेषादि भ्रमणं त्रयम् । रविसं-
क्रान्तितो मासा ज्ञातव्या यत्र संस्थिताः ॥ १॥ तत्स्थानाद् भ्रमणं सर्वं चतुर्नाडीदिगष्टके। पृष्ठ दक्षिणगा
युद्धे कामाख्याऽरिक्षयंकरी ॥ इति कामाख्या भूमिः ॥

अथ कोलापुरी भूमिः ॥ शक्रोत्तरे जले याम्ये चैत्रादौ भ्रमणत्रयम् । मासो-
दयगता यत्र तस्माच्च घटिका क्रमात् ॥ १॥ तत्राष्टनाडिका भुक्तिरुदयश्च पुनः पुनः। इयं कोला-
पुरी भूमिः पृष्ठदक्षिणगा शुभा ॥२॥ इति कोलापुरी भूमिः ॥

अथ एकवीरा भूमिः ॥ रुद्रे जलाग्नि सौम्ये च नैर्ऋत्येन्द्रानिले यमे।
ईशेऽम्बु पावके सौम्ये चैत्रादि भ्रमणं भवेत् ॥ १॥ एकवीरा महाभूमिः प्रोक्ता या चादियामले। पृष्ठ
दक्षिणगा युद्धे जयदा नात्र संशयः ॥ २॥ इति एकवीरा भूमिः ॥

अथ शिलिन्ध्रा भूमिः ॥ चैत्रादि पूर्वतो वामं भ्रमत् काष्ठाचतुष्टये। शिलिन्ध्रा-
ख्या महाभूमिर्जयदा पृष्ठदक्षिणे ॥ १॥ बुधश्च मङ्गलः सौरिर्विधुर्गुरुरिति क्रमात्। सर्वे ग्रहा एवमेव
रवि शुक्रौ च पश्चिमे ॥ २॥ इति शिलिन्ध्रा भूमिः ॥

अथ महामारी भूमिः ॥ चक्रे द्वादशपत्राख्ये मेषाद्या वाममार्गतः। यत्रस्थो
ऽर्कस्तत्र सप्ते भुक्तिः सार्धघटीद्वयम् ॥ १॥ महामारी समाख्याता सुबलानां बलोत्कटा। समरे जयदा

भा० टी०

प्रोक्ता पृष्ठदक्षिणसंस्थिता ॥२॥ इति महामारी भूमिः ॥

अथ क्षेत्रपाली भूमिः ॥ विलोमाः पूर्वतो मासाश्चैत्राद्या दिक्चतुष्टये । प्रहराः सव्यमार्गेण मासस्थानादि गण्यते ॥१॥ चातुरङ्के कलौ कोटे जयदा पृष्ठ दक्षिणे । क्षेत्रपाली महाभूमिर्भूबलानां बलोत्तमा ॥२॥ यद्बलाद्बलयुक्तानि भूबलान्यपराणि हि । एतद्बलेन रहिता वृथा चतुरशीतयः ॥३॥ इति क्षेत्रपाली भूमिः ॥

अथ वंशजा भूमिः ॥ पावके सौम्यनैर्ऋत्य इन्द्रवायुयमे हरे । जलाग्न्युत्तरनैर्ऋतो पूर्वे चैत्रादिमासतः ॥१॥ वंशजेयं महाभूमिर्दैत्यवंशजयङ्करी । दक्षपृष्ठगता युद्धे जयदा नात्र संशयः ॥२॥ इति वंशजा भूमिः ॥

अथ रुद्रभूमिः ॥ दानवानां वधार्थाय रुद्रो रुद्रेण चिन्तितः । तं रुद्रं च प्रवक्ष्यामि जयाय विजयार्थिनाम् ॥१॥ दशदोर्दण्डपञ्चास्यं त्रिनेत्रं च जटाधरम् । महाप्रेतासनारूढं त्रिशूलायुधधारिणीम् ॥२॥ ऐन्द्रे वायौ यमे रुद्रे वारुणेग्नीन्दुराक्षसे । प्राच्यन्तके जले सौम्ये चैत्रमासयं क्रमः ॥३॥ दिनं दिनार्धयामं च प्रहरार्धं तथागतः । एवं भुक्तिप्रमाणेन पृष्ठदक्षिणगो जयी ॥४॥ इति रुद्रभूमिः ॥

अथ कालाबली भूमिः ॥ सप्तरेखाङ्किते चक्रे रुद्रादौ मासभादितः । सव्यमार्गेण भं दत्त्वा चाष्टाविंशति संख्यया ॥१॥ मासर्क्षं दिनभं ज्ञात्वा तस्मात्तात्कालिकं च भम् । रेखायामुदयाद् भुक्तिः सपादघटिकाद्वयम् ॥२॥ मासर्क्षं मासनामर्क्षं दिने तु दिनभं तथा । नाडिकाभ्रमणाद्यत्र तत्र तत्काल संज्ञकः ॥३॥ मासेन्दो मासभानुः स्याद्दिनेन्दोर्दिनभास्करः । घटिकेन्दोर्घटीभानुस्त्रिपञ्चर्क्षे सदा भवेत् ॥४॥ दक्षपृष्ठे रविं कुर्याद् वाममग्रे निशाकरम् । जपेदिह न सन्देह एकोपि शतमाहवे ॥

मृ० सं० १२९० — भा० टी०

५॥ शक्तिरूपः स्थितश्चन्द्रः कालरूपी दिवाकरः। चन्द्रसूर्यान्तराले च कालरेखाऽभिधीयते ॥६॥
कवौ कोटे तथा ढुन्द्वे च्चातुरङ्गे महाहवे। लंघनीया न सा योधैः कालरेखाऽर्कसम्मुखा ॥७॥ इति काल
बली भूमिः ॥

अथ निरामया भूमिः ॥ पावकाद् द्वादशोरं च घटी पञ्चक्रमोदयः। उदयाद्वाममार्गेण भूमो
ज्ञेयो निरामये ॥१॥ पावकाद् द्वादशानां तु चैत्रादीनां क्रमोदयः। अग्निप्राग्रुद्रचन्द्रेषु वायुवारुणनैर्ऋते ॥२॥
यमाग्निपूर्वमादिषु मासे वाम भ्रमोदयः। पञ्च पञ्च घटीमानमासस्थान क्रमोदयः ॥३॥ यत्रोदयगता भूमिः
सा कार्या पृष्ठदक्षिणे। ततो जयमवाप्नोति संग्रामेऽपि चतुर्विधे ॥४॥ इति निरामया भूमिः ॥

अथ जयलक्ष्मी भूमिः ॥ वह्न्यादिकोणगा वामा मासा यामास्तु सव्यगाः। दक्षपृष्ठ
स्थिता युद्धे जयदा जयलक्ष्मिका ॥१॥ इति जयलक्ष्मी भूमिः ॥

अथ महालक्ष्मी भूमिः ॥ वारुणाद्वामगा मासाश्चैत्रादिदिक्चतुष्टये। उदयास्तेन मार्गेण
प्रहराद्दिगष्टके ॥१॥ महालक्ष्मीरियं ख्याता यथोक्ता ब्रह्मयामले। दक्षपृष्ठगता युद्धे तस्य भङ्गो न विद्यते
॥२॥ इति महालक्ष्मी भूमिः ॥

अथ जया भूमिः ॥ अपसव्यगता मासाः पूर्वादिक् चतुष्टये। दक्षपृष्ठे जया युद्धे जय
भूमिरियं मता ॥१॥ इति जया भूमिः ॥

अथ विजया भूमिः ॥ इन्द्र वह्नि जले सौम्ये नैर्ऋत्येन्द्रयमोत्तरे। इन्द्रवातान्तके रुद्रे
चैत्रमासाद्ययं क्रमः ॥१॥ एषा सा विजया भूमिर्युद्धे दक्षिणभागगा। जयदा नात्र सन्देहश्चातुरङ्गे महा
हवे ॥२॥ इति विजया भूमिः ॥

अथ भैरवी भूमिः ॥ षट्कोणमालिखेच्चक्रं पूर्वापरसमन्वितम्। षट्कं कर्कादिकं

प्राच्यां मकराद्ये च पश्चिमे॥ १॥ पूर्वाग्नि वायुरुद्रे च नैरृत्ये वरुणालये । घटी पञ्च प्रमाणेन कर्कादौ भ्रमणं भवेत् ॥२॥ तोयवाताग्नि नैरृत्ये धूलिनीन्दुदिशि क्रमात् । भ्रमो मृगादिगे षट्के प्रोक्ता भूमिश्च भैरवी ॥३॥ जयदा दक्षिणे भागे मृत्युदा वामभागके । सम्मुखे भङ्गदा युद्धे पृष्ठस्था सन्धिकारिका ॥४॥ इति

अथ बाला भूमिः॥ यत्रोदयगता बाला विशेषात्पृष्ठतो रणे। नश्यन्ति शत्रुसङ्घाताः सिंहादेव यथा मृगाः ॥१॥ अर्द्धयामोदया बाला सम्मुखी जयदा मता। तदूर्ध्वं वामगा श्रेष्ठा पृष्ठगा निश्चितं शुभा॥२॥ इति बाला भूमिः॥

अथ योगीश्वरी भूमिः॥ मेषादि विन्यसेच्चक्रं द्वादशारे ऽपसव्यतः। पूर्वाद्युदयतः सव्ये भ्रमः पञ्चघटीमितः॥१॥ एवं योगीश्वरी भूमिर्जयदा पृष्ठदक्षिणे। अहोरात्रेण सा सर्वं चक्रं क्रामति सर्वदा ॥२॥ इति योगीश्वरी भूमिः॥

अथ चण्डी भूमिः॥ इन्द्रनैरृत्य सोमाग्नि तोय रुद्रान्तकानिले। घटीद्वय प्रमाणेन दिनाद्यौ भ्रमणं क्रमात् ॥ १॥ एवमेवापराह्णेऽपि चण्डी भ्राम्यति सर्वदा। यस्य दक्षिणगा युद्धे तस्य भङ्गो न विद्यते॥२॥

अथ याम भूमिः॥ उदयात्पूर्वतः सव्ये यामे यामे दिगष्टके। यामे भूमिर्भ्रमत्येवं जयदा पृष्ठ दक्षिणे॥ १॥ इति याम भूमिः॥

अथ धुन्धुका भूमिः॥ ईशाद्या वामतो यान्ति यामार्धं ककुबष्टके । धुन्धुकाख्या भ्रमत्येवं जयदा वाम सम्मुखी ॥ १॥ इति धुन्धुका भूमिः॥

अथ कर्तरी भूमिः॥ कृत्वा त्रिरेखा मेषाद्यास्तिर्यग्गास्तु तथा पुनः। पूर्वरेखा दितो न्यस्य मेषाद्याः सव्यमार्गगाः॥१॥ यत्रराशौ स्थितश्चन्द्रस्तद्द्वन्द्वे क्रमतो रविः। रविः पृष्ठे शशी चाग्रे जयदा [illegible] कर्तरी स्थितिः॥

अथ शार्दूली भूमि:॥ चैत्राद्युत्तरतो मासा द्वादशैर च सृष्टिगा:। यत्रस्थास्तत्रतो यान्ति पञ्चपञ्च घटी: क्रमात्॥१॥ भङ्गदा पृष्ठगा प्रोक्ता मृत्युदा वामत: स्थिता। जयं ददाति दक्षागे शार्दूली समरे स्थिता॥२॥ इति शार्दूली भूमि:॥

अथ सिंहली भूमि:॥ वाममार्गेण पूर्वादि यामार्धं च दिगष्टके। वामाग्रे जयदा प्रोक्ता सिंहली समरे सदा॥ इति सिंहली भूमि:॥

अथ तन्वी भूमि:॥ तिथ्यादावुदयं याति नाडिका षट् प्रमाणत:। पूर्वयाम्योदके सौम्ये ब्रह्मस्थाने तथैव च॥१॥ तन्वी भूमिरियं ख्याता जयदा पृष्ठ दक्षिणे। ब्रह्मस्थाने देये मृत्यु: सैन्ययो रुभयोरपि॥२॥ इति तन्वी भूमि:॥

अथ महामाया भूमि:॥ चैत्राद्या: पूर्वतो मासा: सव्यकोष्ठचतुष्टये। पृष्ठदक्षिणगा भव्या महामाया त्वियं मता॥१॥ इति महामाया भूमि:॥

अथ माहेश्वरी भूमि:॥ दक्षिणमुदयं याति चैत्राद्यं दिक् चतुष्टये। जयदा पृष्ठदक्षस्था भूमिरेषा महेश्वरी॥१॥ इति माहेश्वरी भूमि:॥

अथ देव कोटि भूमि:॥ अर्धयामो भ्रमेत्सव्ये शक्रस्थानादिगष्टके। पृष्ठस्था जयदा युद्धे देवकोटिरियं मता॥१॥ इति देवकोटि भूमि:॥

अथ शिवा भूमि:॥ इन्द्वादितिथियुग्मं भुक्ति: सव्यमार्गे दिगष्टके। दक्षिणे जयदा प्रोक्ता शिवा भूमिर्महाहवे॥१॥ इति शिवा भूमि:॥

अथ शक्ति भूमि:॥ आदौ तिथि त्रयं रुद्रे त्रयं चैव जलोद्भवे। ततश्चैका यमायां ... तिथि ... ॥१॥ वायौ सौम्ये तथैकैका पूर्वस्यां तु तिथि त्रयम्। नैर्ऋत्यैका कृता

पृष्ठे शक्तिभूमिर्जयप्रदा ॥२॥ इति शक्ति भूमिः ॥

अथ धूम्रा भूमिः ॥ चैत्रादि वा युतो मासा संहारेण दिगष्टके। पुनः पश्चिमतः प्रोक्ताश्चतुर्दिक्षु क्रमेण च ॥१॥ पृष्ठ दक्षिणगा श्रेष्ठा भङ्गदा वाम सम्मुखी। इयं धूम्राभिधा भूमिः सर्वशत्रुभयङ्करी ॥२॥ इति॥

अथ माना भूमिः ॥ वह्नि शक्रोत्तरो वायौ यमे रुद्राम्बुपावके। नैर्ऋत्येन्दु यमे तोये चैत्रादि भ्रमणं ततः ॥१॥ पृष्ठस्था जयदा नित्यमन्यत्रैषा न शोभना। इयं मानाह्वया भूमि र्युद्ध काले महाबला ॥२॥ इति॥

अथ वाराटिका भूमिः ॥ चैत्रादिमासषट्के तु पूर्वभाग कृतोदया। शेषषट्के तु वारुण्यां पृष्ठे भव्या वराटिका ॥१॥ इति वराटिका भूमिः ॥

अथ त्रिमुण्डा भूमिः ॥ वह्नितः सव्यमार्गेण मासाश्चैत्रादि कोणगाः। पृष्ठ दक्षिणगा युद्धे त्रिमुण्डा जयदा मता ॥१॥ इति त्रिमुण्डा भूमिः ॥

अथ मत्सरी भूमिः ॥ वायुतः सव्यमार्गेण याम्यार्घ्य ककुभं प्रति। सन्मुखी वरदा प्रोक्ता मत्सरीयं महाहवे ॥१॥ इति मत्सरी भूमिः ॥

अथ धर्मा भूमिः ॥ पूर्वतः सृष्टि मार्गेण वेद संख्या परीक्रमात्॥ दक्षपृष्ठे स्थिता श्रेष्ठा धर्मा भूमिरियं मता ॥१॥ इति धर्मा भूमिः ॥

अथ मृता भूमिः ॥ द्वादशारेन्दुतः सव्ये चैत्रादिभ्रमणं क्रमात्। वामाग्रे संस्थिता युद्धे मृताख्या मृत्यु दायिका ॥१॥ इति मृताभूमिः ॥

अथ सृष्टि भूमिः ॥ इन्दुवायु यमे रुद्रे जलाग्नि शशि राक्षसे। याम्योदयाद्भवेद् भूमिः सृष्टिः पृष्ठे जयप्रदा ॥१॥ इति सृष्टि भूमिः।

अथ क्षयाक्षया भूमिः ॥ चैत्राद्या पूर्वतो मासा वामहस्तादिगष्टके। पुनर्मार्गादितो

प्रासाः प्रोक्ता : काष्ठाचतुष्टये ॥१॥ क्षपाभूमिर्जया देवं दक्षिणेन तथाऽक्षपा । क्षपा वामेऽक्षपा दक्षे जयदा नात्र संशयः ॥२॥ इति क्षपाक्षपाभूमिः ॥

अथ दुर्मती भूमिः ॥ तुर्यां तुर्यां दिशं याति वामं चैत्रादि पूर्वतः । समेर दक्षपृष्ठस्था दुर्मतीयं जयप्रदा ॥१॥ इति दुर्मती भूमिः ॥

अथ प्रहरा भूमिः ॥ पूर्वोत्तराग्निनैर्ऋत्ये यमे तोयानिले शिवे । प्रहरार्द्धोदया सा तु पृष्ठस्था प्रहरा भुवि ॥१॥ इति प्रहराभूमिः ॥

अथ गौरी काली भूमिः ॥ पूर्वोत्तरदिशोः शुक्ले कृष्णे पश्चिमयाम्ययोः । जयदा पृष्ठभागेन गौरी काली क्रमेण च ॥ अग्रस्था शुभदा गौरी काली पृष्ठे शुभावहा ॥१॥ इति गौरी काली भूमिः ॥

अथ नारहरी भूमिः ॥ वह्नितः सव्यमार्गेण यामभोगो दिगष्टके । नारहर्याख्यका भूमिर्जयदा पृष्ठ दक्षिणे ॥१॥ इति नारहरी भूमिः ॥

अथ बलाभूमिः ॥ पूर्वोत्तर जले याम्ये वह्नीशे वायुराक्षसे । यमेन्द्रे सौम्यतोये च चैत्रादिमास भोगगा ॥१॥ इयं भूमिर्बलाख्या सा सन्मुखी वामगा शुभा । भङ्गदा दक्षपृष्ठे च युद्धकाले न संशयः ॥२॥ इति बला भूमिः ॥

अथ भूचरी खेचरी भूमिः ॥ मेषादि द्वादशोरेच वाममार्गेण भूचरी । खेचरी दक्षमार्गेण भ्रमो भवति सर्वदा ॥१॥ चक्रस्था भूचरे चक्रे शीघ्राः खेचरगा ग्रहाः । भूचरा दक्षपृष्ठस्थाः खेचरा वामसन्मुखाः ॥२॥ भूचराः स्थापि जयदाः खेचराश्चैव यायिनः । सौम्यासौम्यविभागेन विज्ञाय कालमादिशेत् ॥३॥ इति ।

अथ गुह्याभूमिः ॥ पूर्वाह्ले पावके कोणे पराह्ले वायुगोचरम् । इयं गुह्याभिधा भूमिर्जयदा पृष्ठ दक्षिणे ॥१॥ इति गुह्या भूमिः ॥

अथ द्वादशी भूमिः ॥ पूर्वतो निवहन्मासा द्वादशोर च सृष्टिगाः । चैत्राद्या द्वादशी भूमि जयदा पृष्ठ दक्षिणे ॥१॥ इति द्वादशी भूमिः ॥

अथ भद्राभूमिः ॥ आग्नेयकोणतो वामं पूर्णिमादितिथि क्रमात् । सार्द्ध दिनत्रयं भद्रा वायव्ये सार्द्धपञ्चकम् ॥१॥ सम्मुखी वामगा वर्ज्या यात्रायां समरे तथा । पुरग्रामगृहादीनां प्रवेशे शुभमिच्छता ॥२॥ इति ॥

अथ केवला भूमिः ॥ इन्दु वह्नीश सौम्ये च नैर्ऋत्येन्दुयमे जले । तोये याम्योत्तरे वायौ मृग श्चैत्रादि मासतः ॥१॥ जयदा पृष्ठ दक्षस्था भंगदा वाम सम्मुखी । केवलेयं महाभूमिर्युद्धे चैवं चतुर्विधे ॥२॥ इति ॥

अथ त्रैलोक्य विजया भूमिः ॥ इन्दु चन्द्राग्नि नैर्ऋत्ययाम्याम्बु वायु रुद्रगा । नैर्ऋत्यामनिले सौम्ये रुद्रेन्द्राग्नियमाधिपे ॥२॥ इतिपदादि भ्रमत्येषा जयदा पृष्ठ दक्षिणे । त्रैलोक्य विजया भूमिर्भूबलानां बलोत्कटा ॥२॥ इति त्रैलोक्य विजया भूमिः ॥

अथ काल पाशाभूमिः ॥ वारेद्धः पूर्वदिग्भागे ततः सव्येन मन्दगः । यत्रस्थ स्तत्रकालः स्यात् पाशस्तस्य तु संमुखः ॥१॥ दक्षिणस्थः शुभः कालः पाशो वाम दिगाश्रयः । यात्रायां समरे श्रेष्ठस्ततोऽन्यत्र न शोभनः ॥२॥ इतिकालपाशा भूमिः ॥

अथ करालिका भूमिः ॥ चैत्राद्याः पूर्वतो मासा वामगा दिकुचतुष्टये । यत्र स्थास्तत्रतो याति यामार्द्धेन दिगष्टके ॥१॥ भङ्गदा पृष्ठदक्षे च जयदा वामसंमुखी । इयं करालिका भूमिः संग्रामे शत्रुनाशिनी ॥२॥ इति करालिका भूमिः ॥

अथ बडवा भूमिः ॥ मध्यबाह्य क्रमेणैव पूर्वतो वाममार्गगा । वामार्द्धमुदयं याति सर्वकालं दिगष्टके ॥१॥ ज्ञात्वोदया तु बाह्यानां मध्यस्थानां तु मध्यगा । यायिनां बाह्यगा देया स्थायिनां तु हि मध्यगा ॥ बडवेयं महाभूमिः शत्रूणां क्षय कारिणी ॥ इति बडवा भूमिः ॥

अथ अपराजिता भूमिः ॥ चैत्राद्याः पूर्वतो वामं भ्रमणं दिक्चतुष्टये। सम्मुखी जयदा प्रोक्ता भूमिरेषाऽपराजिता ॥१॥ इति अपराजिता भूमिः ॥

अथ रौद्री भूमिः ॥ नैऋत्यादि भ्रमो वामे तुर्ये तुर्ये दिगष्टके। चैत्रादिमासगा रौद्री जयदा पृष्ठ दक्षिणे ॥ इति रौद्री भूमिः ॥

अथ वामलोचना भूमिः ॥ उदयाद् पुदलं यावद्दक्षिणस्थो जयी भवेत्। तदूर्ध्वं चोत्तरस्थां तु भूरेषा वामलोचना ॥ अथ वामलोचना भूमिः ॥

अथ शिशु भूमिः ॥ चैत्राद्या पूर्वतो वामं भ्रमणं दिक्चतुष्टये। सम्मुखी जयदा प्रोक्ता शिशुभूमिरियं मता ॥१॥ इति शिशु भूमिः ॥

अथ मातङ्गी भूमिः ॥ कर्कादिरुड् विदिशो मकरा दग्निकोणतः। वामैकं सव्यमार्गेण मातंगी पृष्ठगा जयेत् ॥१॥ इति मातङ्गी भूमिः ॥

अथ अभेद्या भूमिः ॥ पूर्वतो वाममार्गेण घस्रः पंच दिगष्टके। अभेद्या जयदा प्रोक्ता सम्मुखी समरे सदा ॥२॥ इति अभेद्या भूमिः ॥

अथ दहनी भूमिः ॥ द्वादशारे घटी पञ्च पूर्वतो वाममार्गगा। जयदा वामपृष्ठस्था दहनी भूमिराहवे ॥१॥ इति दहनी भूमिः ॥

अथ जिता भूमिः ॥ वह्न्यादि चैत्रतो मासाः सव्यमार्गेण कोणगाः। पञ्चनाडी भ्रमन्त्येवं जिता पृष्ठे जयप्रदा ॥१॥ इति जिता भूमिः ॥

अथ वायुबला भूमिः ॥ द्वादशारेन्दुतो वामं चैत्रादौ पञ्च संस्थिताः। तत्रतो घटिकाः पञ्च सव्यमार्गेण निर्मिताः ॥१॥ जयदा दक्षिणे भागे मृत्युदाऽन्यत्र संस्थिता। प्रोक्ता वायुबला

भा० टी०

मं० सं० ३३८३

भूमिः स्वरशास्त्रे बलोत्कटा ॥ २॥ इति वायुबला भूमिः ॥

अथ वर्गकालानली भूमिः ॥ अष्टारे वाममार्गेण न्यसेद्वर्गाष्टकं क्रमात् । भ्रमणं सृष्टिमार्गेण यामार्द्धमुदयो भवेत् ॥ १॥ योधाना मोदिते वर्गे पृष्ठदक्षिणतः कृते । वर्गकालानली भूमिर्ज्ञेया युद्धे जयावहा ॥२॥

अथ कापालिका भूमिः ॥ दिनमध्यस्थनाड्येका कपालस्थे दिवाकरे । नशेद्यापी जये-त्स्थायी भूमिरेषा कपालिका ॥ १॥ इति कापालिका भूमिः ॥

अथ अनलानिला भूमिः ॥ पूर्वाह्ने पावके कोणेऽपराह्ने वायुकोणगा । जयदा दक्षपृष्ठस्था भूमिरेषाऽनलानिला ॥१॥ इति अनिलानिला भूमिः ॥

अथ चन्द्र सूर्य भूमिः ॥ दक्षपृष्ठे रविर्बिम्बं जयार्थं रणमूर्द्धनि । चन्द्रबिम्बं ततो रात्रौ पुरो वामे तु शोभनम् ॥१॥ इति चन्द्र सूर्य भूमिः ॥

अथ ग्रह भूमिः ॥ दक्षपृष्ठस्थिताः क्रूरा सौम्या वामाग्र संस्थिताः । संग्रामे जयदाः प्रोक्ता मिश्रामिश्र फलप्रदाः ॥ १॥ इति ग्रह भूमिः ॥

अथ राशि भूमिः ॥ भास्करो यत्र संतिष्ठेद् द्वादशारेऽपसव्यतः । राशिर्दक्षिणपृष्ठ-स्था संग्रामे जयदा मता ॥ १॥ इति राशि भूमिः ॥

अथ लग्न भूमिः ॥ सूर्यराश्यादितः सव्यलग्नं तत्काल संभवम् । पृष्ठदक्षिणगं कृत्वा जयेद्युद्धे न संशयः ॥ १॥ इति लग्न भूमिः ॥

अथ राहुकालानला भूमिः ॥ राहुकालानले चक्रे कृत्वा चन्द्रदिवाकरौ । वदनाद्यङ्गभे-देन कथयिष्यामि भूबलम् ॥ १॥ राहोर्मुखस्थितश्चन्द्रः पृष्ठभागे जयप्रदः । गुह्य सम्पुटगो युद्धे वामाग्रे -च जयावहः ॥ [illegible] पृष्ठ दक्षिणे ॥ ३॥

अथ स्वरभूमि:॥ अकाराद्या: स्वरा: पञ्च नन्दादितिथिषु क्रमात्। सव्यमार्गोदयास्ते च पञ्चस्थानेषु सर्वदा ॥१॥ ततस्तिथ्यादितो भुक्ति: प्रत्येकं रविनाडिका। दक्ष पृष्ठस्थिता शस्ता वामाग्रे मृत्युदायिका ॥२॥ मध्यभागोदये मृत्यु: सैन्ययो रुभयोरपि। किञ्चित्स्थायी जयी युद्धे स्वरभूमिरियं मता ॥३॥ इति स्वर भूमि:॥

अथ त्रिकालरुद्र भूमि:॥ चैत्रादि पूर्वत: सव्ये चतुर्दिक्षु त्रयं त्रयम्। त्रिकालरुद्रभूम्येषा जयदा पृष्ठदक्षिणे ॥१॥ इति त्रिकाल रुद्र भूमि:॥

अथ ऋक्ष राहु:॥ सप्तरेखाङ्किते चक्रे कृत्तिकादि न्यसेद् बुध:। धिष्ण्ये यत्रस्थितो राहुर्ऋक्षराहु: स उच्यते ॥१॥ इति ऋक्ष राहु:॥

अथ मास राहु:॥ द्वादशारेऽपसव्येन मासांश्चैत्रादिकान्न्यसेत्। वह्नमासस्थितो राहुर्मास राहु: स उच्यते ॥१॥ यस्मिन् राशौ राहुरस्ति तत्संख्याके मासि स्याच्च्या॥ इति मास राहु:॥

अथ पक्ष राहु:॥ पूर्वोत्तरगत: कृष्णे शुक्ले पश्चिम दक्षिणे। पक्षभुक्ति प्रमाणेन पक्ष राहुरयं मत:॥१॥ इति पक्ष राहु:॥

अथ दिन राहु:॥ त्रिंशद्दण्डाङ्किते चक्रे वह्नित: पूर्णिमादिकान्। तिथीन् विन्यस्य स्यादेवं दिनराहुरिहोच्यते ॥१॥ सप्तरेखाङ्किते चक्रे कोणरेखाद्वयाङ्किते। कृत्वा विलोम मार्गेण संस्थाप्यं तिथिमण्डलम् ॥२॥ पूर्णिमाद्यग्नि रेखातस्तिथि रेखा क्रमेण च। तिथिभोगभ्रमो राहुर्दिनराहु: स उच्यते ॥३॥ इति॥

अथ खण्ड राहु:॥ केन्द्र्यां कृष्णे तृतीयायां सप्तम्यां शूलिनो दिशि। दशम्यां धनदाशायां वायव्यां भूतवासरे ॥१॥ शुक्लपक्षे तु वारुण्यां चतुर्थ्यां समुदेत्यसौ। नैर्ऋत्ये च तथाष्टम्यां याम्यायां एकादश्यां [illegible] ॥२॥ आग्नेये पञ्चदश्यां च मास राहूदये सति। खण्डगत्या भ्रमत्येवं खण्ड

राहुस्तत्रोच्यते ॥ ३॥ इति खण्ड राहु ॥

अथ अर्द्धयाम राहुः ॥ इन्द्रवायुयमे रुद्रे तोयाग्निशशिराक्षसे । यामार्द्धमुदितो राहुर्भ्रमत्येवं दिगष्टके ॥ १॥ इति अर्द्धयाम राहुः ॥

अथ गूढार्धराहुः ॥ ईशानयमवातेन्द्र रक्षः सोमाग्नि वारुणे । पूर्वाह्णे ऽपि भ्रमत्येवमपराह्णे ऽप्ययं क्रमात् ॥ जलाग्नि सौम्य नैर्ऋत्ये शक्रानिलयमे हरे ॥ १॥ इति गूढार्ध राहुः ॥

अथ मुहूर्त राहुः ॥ पूर्वरात्रौ भ्रमत्येवं अपराह्णे ऽप्ययं क्रमात् । अह्नः पञ्चदशांशेन मुहूर्तः परिकीर्तितः ॥ एवं मुहूर्तको राहुर्ज्ञातव्यः स्वरवेदिभिः ॥ १॥ इति मुहूर्त राहुः ॥

अथ कुलिक राहुः ॥ रविः सोमः कुजः सौम्यो गुरुः शुक्रः शनिस्तमः । ऐन्द्रादीशान पर्यन्त मर्द्धयामभ्रमः स्मृतः ॥ १॥ अर्द्धयामोदयः खेटः स्थाप्यः प्राच्यां ततः शनिः । यत्रास्ते तद्दिशिक्षेपं बुधैः कुलिकजं तमः ॥ २॥ दिनवारोदयाज्ज्ञेया तुर्यतुर्यदिशि क्रमात् । ज्ञेयः कुलिकजो राहुः स्थाने यत्र शनैश्चरः ॥ ३॥ इति कुलिक राहुः ॥

अथाष्टविधराहुः ॥ सम्मुखी वामसंस्था वा यस्येयं राहुमण्डली । पराजयो भवेत्तस्य वादे द्यूते रणादिषु ॥ १॥ यस्य दक्षिणपृष्ठस्था ज्ञेया राहुपरम्परा । सहस्रं च शतेनापि परसैन्यं निकृन्तति ॥ २॥

अथ राशिचन्द्रः ॥ दिशि यस्यां स्थितश्चन्द्रः सव्यमार्गेण राशिगः । राशिचन्द्रः स विज्ञेयः सर्वदा स्वरवेदिभिः ॥ १॥ इति राशिचन्द्रः ॥

अथ उदयचन्द्रभूमिः ॥ सप्तसप्तशलाकाख्ये कृत्तिकादि समन्विते । शुक्लपक्षे द्वितीयायां यत्र भे ऽस्त्युदितः शशी ॥ १॥ इति उदयचन्द्रभूमिः ॥

अथ मासचन्द्रभूमिः ॥ चक्रे सप्तशलाकाख्ये वहन्मासर्क्षगः शशी । मासचन्द्रो

भवेदेवं ज्ञातव्यः स्वरवेदिभिः ॥ १॥ इतिमास चन्द्र भूमिः ॥

अथ पक्ष चन्द्र भूमिः ॥ पूर्वोत्तर गतः शुक्ले कृष्णे पश्चिमदक्षिणे । पक्षभुक्ति प्रमाणेन पक्षचन्द्र इहोच्यते ॥ १॥ इति पक्षचन्द्र भूमिः ॥

अथ दिन चन्द्र भूमिः ॥ चक्रे सप्तशलाकाख्ये रेन्द्वां मध्ये ऽर्कभं न्यसेत् । ततो वामेन चन्द्रर्क्षं दिनचन्द्र इहोच्यते ॥१॥ इति दिन चन्द्र भूमिः ॥

अथ तात्कालिक चन्द्रः । दिन ऋक्षात्तु सव्येन सपाद घटिकाद्वयम् । प्रतिनाड्यां भवेद्भुक्तिरेषस्तात्कालिकः शशी ॥ १॥ इति तात्कालिक चन्द्रः ॥

अथ सप्तविध चन्द्रः ॥ सप्तमो बिम्बरूपेण प्रत्यक्ष इह दृश्यते । वामाग्रे जयदश्चन्द्र एवं सप्तविधः स्मृतः ॥ १॥ इति सप्तविध चन्द्रः ॥

अथ अयन भानुः ॥ दक्षिणायनगो भानुर्जयदो याम्यपश्चिमे । उत्तरायण संस्थोपि जयदः शक्रसोमयोः ॥ १॥ इति अयन भानुः ॥

अथ दिनभानुस्तात्कालिको भानुश्च ॥ सप्तरेखाङ्किते चक्रे भानुभं यत्र संस्थितम् । दिनभानुर्भवेदेवं चन्द्रवच्चेष्टकालिकः ॥ इति दिनेष्ट कालिक सूर्यः ॥

अथ यामले सूर्यबिम्बभूः । प्रत्यक्षं दृश्यते यस्यां भानुबिम्बं दिशिस्थितम् । दक्षपृष्ठस्थिता एते कर्त्तव्या जयकाङ्क्षिभिः ॥१॥ इति यामले सूर्य बिम्बभूमिः ॥

अथ तिथि योगिनी ॥ पूर्वस्यामुदये ब्राह्मी प्रथमे नवमे तिथौ । माहेश्वरी चोत्तरस्यां द्वितीया दशमी तिथौ ॥ १॥ एकादश्यां तृतीयायां कौमारी वह्नि कोणगा । चतुर्थी द्वादशी प्रोक्ता वैष्णवी नैर्ऋती तथा ॥२॥ वाराही दक्षिणे भागे पञ्चमी च त्रयोदशी । षष्ठी चतुर्दशी चैव

इन्द्राणी पश्चिमे स्थिता ॥ ३॥ पूर्णिमायां च सप्तम्यां वायव्ये चण्डिकोदय: । नष्टचन्द्र दिनाष्टम्यां महालक्ष्मी शिवालये ॥ ४॥ इति तिथि योगिनी॥

अथ तत्काल योगिनी॥ यत्रोदयगता देवी ततो यामार्द्धभुक्तिदा। भ्रमन्ती तेन मार्गेण भवेत्तत्काल योगिनी ॥ ५॥ इति तत्काल योगिनी॥

अथ वार योगिनी चक्रम्॥ इन्दुचन्द्राग्निनैर्ऋत्ये याम्ये तोयानिले हरे। सूर्यादिषु च वारेषु वर्जयेद्वार योगिनीम् ॥६॥ दिक्स्थानां संमुखे दृष्टिर्विदिकुस्था वारुणे मता। कोणस्थानां च कोणे च तिथिदिक्षुदय: क्रमात् ॥७॥ जयदा पृष्ठदक्षस्था भङ्गदा वाम सम्मुखी। त्रिविधं योगिनी चक्रमित्युक्तं ब्रह्मयामले ॥८॥ इति वार योगिनी चक्रम्॥

अथ तिथि काल:॥ मध्यबाह्यक्रमेणैव वामे प्रतिपदादिषु। वर्तमाने तिथौ कालं वर्जयेदाश्रयद्वये॥१॥ इति तिथि काल:॥

अथ षट्त्रिंशत्काल:॥ षट्त्रिंशद्ध्रुवकं कृत्वा गताहानि च योजयेत्। अष्टशेषे भवेत्कालो जयद: पृष्ठ दक्षिणे॥ १॥ इती षट्त्रिंशत्काल:॥

अथ वार काल चक्रम्॥ शन्यर्क भौम जीवेषु मध्ये काल: एकीर्तित:। बाह्ये शुक्रेन्दु सौम्येषु वर्जनीय: सदा रणे॥ १॥ इति वार काल चक्रम्॥

अथ वायु चक्रम्॥ दक्षे पृष्ठे स्थितो वायुर्जयदो भवति ध्रुवम्। वामाग्रे भङ्गद: प्रोक्त: सर्वयुद्धेषु सर्वदा॥ इति वायु चक्रम्॥

अथ शारीर स्वरम्:॥ युद्धकाले यदा चन्द्र: स्थायी जयति निश्चितम्। यदा सूर्य प्रवाहस्तु यायी विजयते तदा॥१॥ पार्थिवे सक्षतं युद्धं सन्धिर्भवति वारुणे। विजयो वह्नितत्त्वेन

वायौ भङ्गो मृतिस्तु रवे ॥ २॥ पूर्णनाडीगतः पृष्ठे शून्यगं च तदग्रतः । शून्यस्थाने गतः शत्रुर्म्रियते नात्र संशयः ॥३॥ पूर्वोत्तरदिशोश्चन्द्र भानौ पश्चिमयाम्ययोः । स्थितस्तत्र जयी युद्धे स्थायी यायी क्रमेण च ॥ ४॥ वामनाड्युदये चन्द्रः कर्तव्यो वामसम्मुखम् । सूर्यवाहे तथा सूर्यः पृष्ठदक्षिणगो जयेत् ॥ ५॥ इति शारीरभूमिः ॥

अथ रुद्रकालः ॥ इन्दो वायुयमेशार्कं च हुतभुग् यक्षेशदैत्येश्वरौ, सूर्यादौ घटिका चतुष्कमुदये रौद्रो भ्रमन्सर्वदा । द्यूते कुक्कुट मेष हस्ति महिषी स्याद्द्वन्द्वयुद्धे जयोः, मृत्युः खेचर बाल वाद विजय पृष्ठे तु वामे जयः ॥ १॥ इति रुद्रकालः ॥

एतानि भूबलान्यत्र ज्ञातव्यान्युदितः क्रमात् । सन्निपाते विशेषेण भूमिमेलापको बली ॥१॥ मासाख्या च तुरङ्गाख्ये दिनाख्या कवि सङ्गरे । यामाख्या कोट संग्रामे सूक्ष्माख्या खलके रणे ॥२॥ मासे पक्षे दिने नाड्यां प्रयुक्तं भ्रमणं पुरा । यथा दिने तथा रात्रौ ज्ञातव्यं स्वरवेदिभिः ॥ तस्माद्वीक्ष्य प्रयत्नेन बलं देयं स्वरोदये ॥ ३॥ युद्धस्य प्राग्दिने सायं व्रतस्थः स्वरपारगः । भास्करस्य महामन्त्रं जपेदयुत संख्यया ॥ ४॥ दशांशं होमयेत्कुण्डे त्रिकोणे द्वादशाङ्गुले । अर्कस्य च शमीपुष्पैर्मधवाज्यार्कप-रिप्लुतैः ॥५॥ "ॐ. ह्रौं ह्रीं ह्रूँ सः सूर्याय नमः" इति मन्त्रः स्वाहान्तं होमयेत् ॥

युद्धारम्भे हयारूढः स्वरज्ञो दृढमानसः । पुनरेव जपेन्मन्त्रं शनकैः सूर्यसम्मुखम् ॥६॥ शुक्लवासोत्तरे कृत्वा ततः सूर्यं विलोकयेत् । यावच्च दृश्यते चिह्नं शुभं वा यदि वाऽशुभम् ॥७॥ सम्पूर्णतेजसा युक्ते व्यक्ते निकटवर्तिनि । श्वेते च कर्बुरे पीते सूर्ये यायी जयी भवेत् ॥८॥ खण्डिते खण्डसंयुक्ते छिन्ने भिन्ने च वक्रिते । धूम्रे कृष्णेऽरुणे सूर्ये स्थायी जयति सर्वदा ॥९॥ भूबलानि समाप्यन्ते चतुरशीति संख्यया । यदाश्रय बलादाशु शत्रुश्रीः करगामिनी ॥१०॥ अब्देऽप्यब्दार्द्धमासे निजदल सहिते वासरे चैत्र यामे, यामस्यार्द्धे मुहूर्ते भ्रमति च घटिका तद्दशाष्टकेऽपि । संग्रामे

चातुरङ्के कविरणखलके कोट युद्धे भटानां, निःसन्देहं जयार्थं नरपति गदितं भूबलं तच्च सारम् ।।११।।
इति भूबलाध्यायस्समाप्तम् ।।

अथ शान्त्यध्यायः ।। अथ मृत्युञ्जय यन्त्रः ।। पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि मन्त्र यन्त्रादिकं बलम् । यस्य प्रभावतो युद्धे दुर्बलस्य बलं भवेत् ।।१।। चतुरस्रं चतुर्द्वारं त्रिरेखं पद्मगर्भितम् । हस्तत्रय प्रमाणं च तण्डुलैर्मण्डलं लिखेत् ।।२।। सर्वलक्षण सम्पूर्णं सर्वावयव संयुतम् । मास भूमि प्रदेशे च गोमयेनोपलेपिते ।। पद्मपत्रे लिखेद्देवांश्चतुःषष्टि प्रमाणतः । एकैक पद्म पत्रेषु वसुसंख्या दले दले ।।३।। भैरवी भैरवा सिद्धिर्ग्रहा नागा उपग्रहाः । पीठोपपीठसंयुक्ता दिक्पालैश्च समन्विताः ।।४।। कर्णिकायां न्यसेद्देवं शिवं साङ्गं सहस्रकम् । प्रणवादिनमोन्तैश्च नाममन्त्रैस्ततोऽर्चयेत् ।।५।। मण्डलाग्रे लिखेत्पद्मं वीरं तत्र निवेशयेत् । तीर्थोदकान्वितैः कुम्भैः सदूर्वाक्षत पल्लवैः ।।६।। मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण शतवाराभिमन्त्रितैः । अभिषिञ्चेत्ततो वीरं शुभलग्ने स्वरोदयी ।।७।। "ॐ जूं सः" इति मृत्युञ्जय मन्त्रः ।। अभिषिक्तस्ततो वीरः संग्रामे विजयी भवेत् । शस्त्रैर्न भिद्यते तस्य शरीरं शत्रुचोदितैः ।।८।। एतन्मण्डल मध्यस्थोऽभिषिक्तः पुरुषो यदा । ततः प्रभृति युद्धेषु शत्रुं जयति सर्वदा ।।९।। राज्यभ्रष्टो लभेद्राज्यं क्षीणायुर्म्रियते न च । मुक्त्वा पीडां ग्रहाः सर्वे शान्तिं कुर्वन्ति सर्वदा ।।१०।। इति अभिषेक विधिः ।

अभिषेकात्परं पूजा कर्तव्या पूर्वमण्डले । मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण पूर्वोक्त विधिना ततः ।।११।। "ॐ जूं सः" पश्चात्समर्पयेन्मन्त्रं रणदीक्षा भवेदियम् । तया समन्वितो वीरस्त्रिदशैरपि दुर्जयः ।।१२।। इति रणदीक्षा ।। पूर्वोक्त मण्डल स्थाने पञ्च शस्त्राणि विन्यसेत् । पूजयेद्विधिवत्तानि ततो जागरण क्रिया ।।१३।। "ॐ खां खीं खूं खैं खौं खः रौद्रमूर्तये खड्गाय नमः" — इति खड्ग मन्त्रः ।। "ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः । ॐ भैरव पाय रक्षा क्षपाय फलकाय नमः । इति फलक मन्त्रः ।। "ॐ लां लीं लूं लैं लौं लः

इन्द्रायुधाय धनुषे नमः ।"—इति धनुर्मन्त्रः ॥ "ॐ आं ओं ऊं ऐं औं यः" ब्रह्मादि पञ्चदेवता मूर्त्तये पञ्च-
बाणाय नमः ।"—इति पञ्चबाण मन्त्रः ॥ "ॐ क्रां क्रीं क्रूं क्रैं क्रौं क्रः शूलिनो मूर्त्तये भैरवायुधाय कुन्तायनमः।"
—इति कुन्तमन्त्रः ॥ "ॐ अघोरेश्वरि चामुण्डे महाचामुण्डे द्रां द्रीं द्रूं द्रैं द्रौं द्रः भगवतीमूर्त्तये कात्यायनी
क्षुरिकायै नमः ।"—इति क्षुरिका मन्त्रः ॥ इति रणायुध पूजा विधिः ॥

धागौ मधुल भाग्नेयौ तद्धोम कृत डोरके । मृत्युञ्जयेन मन्त्रेणं दातव्यं ग्रन्थि सप्तकम् ।
एवं कृत विधानेन जायते रण कङ्कणम् । दक्षहस्त प्रबद्धेन युद्धे च विजयी भवेत् ॥२॥ इति रण कङ्कणम् ॥
कर्पूरं कुंकुमं चैव गोरोचन समन्वितम् । कोकिलाक्षस्य लेखिन्या श्वेत वस्त्रेऽति शोभने ॥३॥ ॐकार रूप
मध्यस्थे साध्यनाम पटे लिखेत् । तद्गर्भ हकारं च टकार परिवेष्टितम् ॥४॥ पृथ्वी सम्पुट मध्यस्थं
वर्गाष्टक पुतं ततः । क्रणवाद्यरिनामेट हुंफडन्तं दिगष्टके ॥५॥ मन्त्रमेतं शतं जप्त्वा पट्टे तन्मूर्ध्नि बन्धये-
-त् । भीरुं नयति वीरत्वं समरे च जयप्रदम् ॥६॥ इति वीर पट्ट विधिः ॥ पूर्वोक्तेन विधानेन रणपट्टमितो
लिखेत् । कृत्वा हनुमतो रूपं हृदि मन्त्रममुं लिखेत् ॥ "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हनुमते नमः"—
मन्त्रमध्ये लिखेन्नाम निजयोधस्य सम्भवम् । मूर्ध्नि बद्धेन तेनैव हनुमत्तुल्य विक्रमः ॥७॥ इति रण
पट्ट विधिः ॥ त्रिशूलं दक्षिणे हस्ते कपालं वामके तथा । भैरवं रूपं पूर्वद्रव्यैः समालिखेत् । त्रिपुराम-
न्त्रमाभ्यां ग्रथनेन तु वेष्टयेत् । मूर्ध्नि बद्धेन तेनैव त्रैलोक्यं जयति ध्रुवम् ॥८॥ "ऐं क्लीं सौं त्रिपु-
-रायै नमः"—इति त्रिपुरामन्त्रः ॥ इति जय पट्ट विधिः ॥

कन्याकर्तित सूत्रेण अष्टोत्तर गुणेन च । कर्तव्यो दोरकस्तेन स ग्रन्थिः कटिमानतः ॥
मृत्युञ्जयेन मन्त्रेण ग्रन्थयोऽष्टोत्तरं शतम् । कृत्वैवं मेखला जाता कटिबद्धारि नाशिनी ॥ "ॐ जूं सः"
इति मेखला मन्त्रः ॥ ब्रह्माणी कवचं कृत्वा यो योधः प्रविशेद्रणम् । प्रभवन्ति न तस्याङ्गे प्रहाराः शत्रुनो-

-दिता: ।। इति कवचम् ।। अनुलोम विलोमेन मन्त्रं मृत्युञ्जयं न्यसेत् । रक्षान्ते च षडङ्गेषु न्यासो ऽयं शत्रु-
तारण: ।। इति न्यास: ।। रसना घटिका ग्रस्ता अङ्गुष्ठोनामिका तले । एतन्मुद्रा प्रभावेण संग्रामे विजयी
भवेत् ।। इति मुद्रा ।। अष्टोत्तर सहस्रं च अघोरं मन्त्र मुत्तमम् । जपयित्वा ततो घोरं मन्त्रराजमनुत्तमम् ।।
पूर्वोक्तैरेव च द्रव्यैर्भूर्जपत्रे सुशोभने । लिखेन्मृत्युञ्जयं मन्त्रं तन्मध्ये वीरनामकम् ।। मृत्युञ्जयेन
मन्त्रेण ग्रथितं तच्च नामकम् । रक्षां कृत्वा करे बद्ध्वा संग्रामे विजयी भवेत् ।। "ॐ जूं स:" इतिरक्षा ।।
आरण्यफलकं मूलं पुष्पार्केण तु गृह्यते । कन्याकर्तित सूत्रेण शतघ्नेन तु दारकम् । ग्रन्थयेन्मृत्युञ्जयेन
प्रत्येकं च पृथक् पृथक् । अष्टोत्तरशते नैव जायते वीरकङ्कणम् ।। ९ ।। "ॐ कुमारि अवतर अवतर
हरबाणाग्रवासिनी त्रिपुरुषं सत्येन सर्वायुधं भञ्जय भञ्जय स्वाहा" इति मन्त्र: ।। अङ्कसंस्पेन तेनैव
दुर्जयैरस्त्रदर्शैरपि । स्तम्भयेत्सर्वशस्त्राणि सर्वशक्ति समन्वित: ।। १० ।। इति वीर कङ्कणम् ।।

अथौषध्य: ।। ईश्वरी ब्रह्मदण्डी च कुमारी वैष्णवी तथा । वाराही वज्रिणी चंडी
तथा रुद्रजटाभिधा ।। ११ ।। लाङ्गली सहदेवी च पाठा राजी पुनर्नवा । मुद्गरी भूतकेशी च सोमराजी
हनूजटा ।। १२ ।। श्वेता पराजिता गुञ्जा श्वेता च गिरिकर्णिका । क्षुद्रिका शङ्खिनी चैव विडङ्गी शरपुङ्खिका ।।
१३ ।। खर्जूरी केतकी ताडी पूगी स्यान्नारिकेलिका । अञ्जन: काञ्चनारश्च चम्पकी ऽश्मन्तक: कुहू: ।। १४ ।।
अपामार्गो ऽर्क भृङ्गौ च ब्रह्मवृक्षो वटस्तथा । शतमूली बलायुग्मं गोजिह्वोपल सारिका ।। १५ ।। अष्टलोह रसा
वज्रा हरिद्रा तालकं शिला । एताश्चौषधयो दिव्यं जयार्थं संग्रहेद् बुध: ।। १६ ।। सूर्येन्दु ग्रहणे प्राप्ते
दीपोत्सव दिनत्रये । पुष्पमूलार्क योगे च महानवमि वासरे ।। १७ ।। खादिरेण च कीलेन प्रोद्धरेत्ता महौषधी:
बलिपूजा विधानेन सर्वकर्मसु सिद्धिदा: ।। १८ ।।

तत्र मन्त्र: ।। येन त्वा खनते ब्रह्मा इन्द्रो विष्णुर्महेश्वर: । तेनाहं खनयिष्यामि तिष्ठ

तिष्ठ महौषधि ॥१९॥ तदोद्धृता कटीसूत्रं शिरःप्रभृतिषु स्थिता। त्रिदशैरप्यवध्यो ऽसौ युद्धे चैव चतुर्विधे ॥20॥ इति पामेले औषधयः॥

अथ तिलकम्॥ वज्री चण्डी च चक्री च त्रिशूली मुद्गरी तथा। देहस्था समरे पुंसां सर्वायुध निवारिणी ॥२१॥ गृहीतं पुष्य नक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम्। लेपमात्रेण वीराणां सर्व शस्त्रनिवारणम् ॥22॥ अञ्जनः काञ्चनारश्च चम्पको ऽश्मन्तकः कुटुः। लेपेन विजयी युद्धे वज्रदेहो भवेन्नरः॥ २३॥ खर्जूरी मुख मध्यस्था कटिबद्धा च केतकी। भुजदण्डस्थितस्तालः सर्वशस्त्र निवारणः॥२४॥ दक्षबाहुस्थितश्चार्को वामेन्दु हृदये धरा। रुद्रः पृष्ठस्थितो युद्धे वज्रदेहो भवेन्नरः॥ २५॥ त्रिलोह वेष्टितं कृत्वा रस वज्राभ संयुतम्। वक्त्रस्थं च करस्थं च सर्वायुध निवारणम् ॥२६॥ गिरिकर्णी शमी गुंजां श्वेतवर्णां समाहरेत्। चन्दनेनान्विताः सर्वास्तिलकेन जयी रणे ॥२७॥ अधःपुष्पी शिखा चैव श्वेता च गिरि कर्णिका। गोरोचन समायुक्तं तिलकं शत्रु मोहनम् ॥२८॥ कनकार्क वटो वह्निः बिन्दुः पंचमस्तथा। करोति तिलकं यस्तु पश्येत्तं पञ्चधा रिपुः ॥२९॥ कृष्णसर्पकपाले तु चिताहृत्तिकयान्वितम्। सितगुञ्जां वपेत्तत्र तस्या मूले समाहरेत् ॥३०॥ कृततिलकं भटं दृष्ट्वा पश्येत्स्वं श्वावृतं रिपुः। श्वगणैर्भक्ष्यमाणं तु पतितं च ततो भुवि ॥३१॥ छाया यस्य जले जाति संग्रात्यः कासमर्दकः। अनेन तिलकेनारिः कूपं वापीं प्रपश्यति॥३२॥ इति तिलकम्॥

अथ ढक्का॥ ब्रह्मदण्डी च कौमारी ईश्वरी वैष्णवी तथा। वाराही वज्रिणी चण्डी महालक्ष्मीस्तथैव च॥ ३३॥ एताश्चौषधयो दिव्यास्तथैता मातरः स्मृताः। हृदि गुल्के करे बद्धाः सर्वशस्त्र निवारिकाः॥३४॥ इति ढक्का॥

स्मादिभिर्युक्तः क्रियते पारदो रसः ॥३५॥ वज्राणां द्रावणं वक्ष्ये पारदस्य च बन्धनम् । लघुद्रावं च लोहेषु संयोगार्थं परस्परम् ॥३६॥ अस्थिशृंखल मध्यस्थं कृत्वा वज्रं निरुन्धितम् । जलभाण्डे विनिक्षिप्य स्वेदयेद्दिन सप्तकम् ॥३७॥ वह्निकारससंघृष्टं नष्टविषं तु पारदम् । ठिक्काकन्दस्य मध्यस्थं बन्धनार्थं तत्र पुटे ॥३८॥ रेतितं लोहचूर्णं तु टङ्कणेन तु भावितम् । लघुद्रावि भवेदेवं ताम्रपात्रे न संशयः ॥३९॥ सर्वांस्तानेकतः कृत्वा मुखमध्यस्थिता भवेत् । गुटिका जायते रम्या नाम्नी वज्राङ्गसुन्दरी ॥४०॥ मुखस्था सिद्धिदा प्रोक्ता जरामृत्युविनाशिनी । संग्रामे विजयी वीरो वज्रदेहो महाबलः ॥४१॥ सर्वलोकप्रियो नित्यं नारीणां वल्लभस्तथा । गुटिकेयं समाख्याता यथोक्ता प्रब्रयामहे ॥४२॥ इति गुटिका ॥

अथ सिंही ॥ सिंही व्याघ्री मृगी हंसी चतुर्थ्यैवं कपर्दिका । एतासां लक्षणं वक्ष्ये प्रभावं च यथाक्रमम् ॥१॥ सिंही सुवर्ण वर्णा च व्याघ्री धूम्रा सरेखिका । मृगी तत्र विजानीयात्पीतपृष्ठा सितोदरी ॥२॥ हंसी जलतरा श्वेता विदन्ता नातिदीर्घिका । एवं विशेषाद्विज्ञाय ततः कर्म समाचरेत् ॥३॥ औषधी सिंहिका नाम तस्य मूलस्य यो रसः । सिंही कपर्दिका मध्ये क्षेप्यस्तन्मूलसंयुतः ॥४॥ पिधाय वदनं तस्याः सिक्थेन च समन्वितः । अस्यां वक्त्रस्थितायां तु सिंहवज्जायते नरः ॥५॥ मदोन्मत्ता गजास्तस्य दर्शनेन पराङ्मुखाः । रणे राजबले द्यूते विवादे चापराजितः ॥६॥ इति सिंही ॥ अथ व्याघ्री ॥ व्याघ्री रसेन संघृष्टः पारदो मूल संयुतः । पूर्ववत्साधयेद्व्याघ्रीं फलं चैव तथा विधम् ॥७॥ इति व्याघ्री ॥ अथ मृगी ॥ मृगसूत्रेण सम्भिन्ना मृत्तिका रस संयुता । मृगधिष्ण्ये क्षिपेन्मृग्यां तस्याः फलमतः शृणु ॥८॥ मुखमध्ये स्थितायां च वशी भवति मानवः । रतिकाले मुखस्थायां बालाप्राणहरो नरः ॥९॥ इति मृगी ॥ अथ हंसी ॥ हंसपादी रसैर्घृष्टः पारदो मूल संयुतः । हंसीमध्ये क्षिपेद्धीमान् मुखस्था सर्वसिद्धिदा ॥१०॥

ग्रहाः पीडां न कुर्वन्ति दुष्टारिष्टं तथैव च। स्थावरं जङ्गमं चैव विषं नश्यति तत्क्षणात् ॥११॥ इति हंसी। इति कपर्दिका समाप्ता॥

अथ योगधारितशस्त्राणि ॥ अपामार्गरसेनैव यानि शस्त्राणि लेपयेत्। जायन्ते तानि संग्रामे वज्रसाराणि निश्चितम् ॥१॥ इति शस्त्ररक्षा॥ अथ शस्त्रमोटनम्॥ विद्युत्पातमृतास्थीनि पेषयेत्करकाम्बुना। अनेन लेपनं कुर्यात् संनाहफलकेऽपि वा ॥१॥ तत्र लग्नानि शस्त्राणि कुण्ठन्ति च नमन्ति च। न भिन्दन्ति शरीराणि पुष्पाणीव मृदूनि च ॥२॥ इति शस्त्रमोटनम्॥ अथ शस्त्रलेपः कृष्णसर्पशिरांस्यष्टौ विषं पञ्चपलानि च। छुछुन्दरीवसाष्टौ च तथा च गृहगोधिका ॥१॥ कृष्णस्य वृश्चिकस्याष्टौ कपिकच्छूः पलाष्टकम्। द्वे पले हरितालस्य कृकलासरसः पलम् ॥२॥ लाङ्गलीकरवीराभ्यां त्रीणि त्रीणि प्रकीर्तिताः। एतेषां शोधितं कल्कं भल्लातकसमायुतम् ॥३॥ सर्वविषमेव शस्त्राणां लेपोऽयं समुदाहृतः। विद्धान्तु तैर्ये मनुजास्त्यजन्ति जीवितं ध्रुवम् ॥४॥ रक्तकञ्चुकया नारी रक्तप्रावरणा च या। नरदारुसमायुक्ता पर्वतानपि साधयेत् ॥५॥ गृहीत्वा मक्षिकां नीलां षड्बिन्दुकीटकान्विताम्। शस्त्रलेपेन घाताद्धि जायन्ते कीटका व्रणे ॥६॥ इति शस्त्रलेपः।

अथ पैच्छिकविधि ॥ षड्विंशत्या चतुःषष्ठ्या शतेनाष्टोत्तरेण वा। मयूरोलूकपक्षाणां तन्मानं गृध्रपिच्छिका ॥१॥ गृ..णे मुष्टिपर्यन्तं रक्तसूत्रेण वेष्टयेत्। इष्टमन्त्रं जपेत्सत्यं सिद्धं रणेऽरिनाशनम् ॥२॥ विसर्गमूलजातेन गच्छ गच्छ परं ध्रुवम्। सर्वोच्चस्थानगो वीरः स्वसैन्यविजयावहः ॥ पैच्छिकस्य विधिश्चायं ब्रह्मयामलभाषितः ॥३॥ इति पैच्छिकविधिः॥ अथ तान्त्रिकविधिः लाङ्गली ब्रह्मदण्डी च कृष्णोन्मत्तरसान्विता। मर्दयित्वा विकं चर्म पश्चाद्यन्त्रं समालिखेत् ॥१॥ काकरक्तं तथा विष्ठा चिताङ्गारहलाहलम्। काकपिच्छस्य लेखिन्या लिखेद्यन्त्रं यथार्गलम् ॥२॥ मरुपबीजस्य मध्यस्थं शत्रुनाम ससैन्यकम्।

बाह्ये तु वायुबीजेन वेष्टयेत्त्रिगुणं पुनः ॥३॥ वायुमण्डलगं कृत्वा वायुबीजेन रञ्जिकाम्। द्वादशस्वरसंपुक्तं वेष्टयेत्सव्यमार्गतः ॥४॥ ताम्रकस्यास्य नादेन व्याकुलीभूतमानसाः। बलं मुक्त्वा महावीराः पलायन्तो महारणात् ॥५॥ इति ताम्रक विधिः॥ अथ काहल विधिः॥ हेमायस्त्रपुरौप्याणां समैर्भागैस्ततः पुनः। द्वादशांशेन ताम्रेण कारयेज्जयकाहलम् ॥१॥ काहलीं रससंलिप्तां वादयेत्तां रणाङ्गणे। श्रुत्वा नादं पुणश्यन्ति बलिष्ठा अपि शत्रवः ॥२॥ इति काहल विधिः॥ अथ ढक्का विधिः॥ ताम्रकस्य विधानं तु ढक्कायामपि कारयेत्। तथैव फलमप्युक्तं समराङ्गणभूमिषु ॥१॥ इति ढक्काविधिः॥ अथ मुरजविधिः॥ तुम्बिनी चित्रकं दण्डी कृष्णोन्मत्तरसान्विता। मार्जयेन्मौरजं चर्म सप्तवारान्पुटद्वयम् ॥१॥ दण्डीस-चित्रका दन्ती लज्जालुरससंपुता। पुटे विमर्दयेत्तेन जायते वाद्यभाजनम् ॥२॥ ब्राह्मी जाती कुमारी च विष्णुक्रान्ताभस्मोदकान्विता। इष्टमन्त्राभिजप्तं तु जयार्थं वाद्यभाजनम् ॥३॥ इति मुरज विधिः॥

अथ भस्माधानम्॥ अग्निहोत्रश्मशानान्त्यजातिगेहसमुद्भवम्। भस्मत्रितयमादाय कर्तव्यं तस्य कुट्टनम् ॥१॥ रक्तवृक्षमयं कार्यं मुसलोलूखलादिकम्। चतुरस्रे सपक्षे च द्वारहीने च मण्डले ॥२॥ स्थापयित्वोलूखले तत्र कुर्युस्तद्भस्मकुट्टनम्। चतुर्वर्णोद्भवाः कन्याश्चतुःषष्टि प्रमाणतः ॥३॥ चतुर्विंशति संख्या वा रासगीतेन संयुतम्। तं रासं सम्प्रवक्ष्यामि सर्वमन्त्रमयं शुभम् ॥४॥ "ॐ कालउकुरु रुकु सुसुहपंत डुडु सुत्तिडवं भराडभक्षितकरेन्त किं एहा एहिं किं पिछ एहिं मडइसुग्गड सुग्गड एहाएहं" — इति रासगीतम्॥ एतद्भस्मकृतां रेखां लंघयन्ति न वैरिणः। क्षिप्यते च रिपोः सैन्यं भङ्गमायाति तत्क्षणम् ॥१॥ इति भस्माधानम्॥ मारणे मोहने स्तम्भे विद्वेषोच्चाटने वशे। एकं यमार्गलं पञ्चभेदेन बहुधा स्थितम्॥

अथ [illegible] चक्रम्॥ [illegible] लिखेच्चक्रं [illegible] ह्रींमन्त्रं

मू० सं० १२८४

भा० टी०

च तद्वाह्ये यमश्लोकं च मध्यतः । "ॐ ह्रीं ष्ट्रीं विकटदंष्ट्रानने हुं फट् ।" उष्ट्रीमन्त्रमिमञ्जप्त्वा दश साहस्र संख्यया । मध्वाज्याक्तै रक्तपुष्पैः सहस्रं होमयेत्ततः ॥१॥ ततः सिद्धो भवेन्मन्त्रो यथेप्सितफलप्रदः। यस्य प्रभावमात्रेण शत्रवो यान्ति संक्षयम् ॥२॥ इत्युष्ट्री ॥ अथ यमश्लोकः ॥ "यमराजस्य यन्त्रं तु प्रोच्यमानं मया शृणु । यमराजसदोमेष यमेदारुण यो दयः ॥ यदयो निरयो क्षेपयक्ष्ये यक्ष निरामयः" ॥३॥ इति यमश्लोकः ॥ इमं यमश्लोकं द्वात्रिंशत्सहस्राणि जपेत् । घृतमधुररक्तपुष्पैः सहस्रकं होमयेत्। ततः सिद्धो भवति । मनसेप्सितानि कार्याणि करोति ॥ इति॥

अथ मारणविधिः ॥ चिताङ्गारं विषं रक्तं कृष्णोन्मत्तरसस्तथा । एतैर्न राख्य लेखिन्या यन्त्रं प्रेतपटे लिखेत् ॥१॥ साध्यनाम च तन्मध्ये हूं च राजिकया कृतम् । यमरूपमिदं साक्षान्महिषासनगं कुरु ॥२॥ कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां गन्तव्यं पितृमन्दिरे । नग्नो मुक्तशिखो भूत्वा मद्यमांसैः प्रपूजयेत् ॥३॥ क्षिप्तोच्छिष्टशरावेषु कृष्णसूत्रेण वेष्टयेत् । श्मशानभूमिमध्यस्थः सप्ताहान्मारयेद्रिपुम् ॥४॥ इति मारणविधिः ॥ अथ मोहनविधिः । रोचनां कुङ्कुमं चन्द्रं कृष्णोन्मत्तरसान्वितम् । रोहितोद्भव लेखिन्या भूर्जपत्रे लिखेदिदम् ॥१॥ साध्यनाम च तद्गर्भे बाह्ये चैकाररञ्जिकात्रहि मण्डलगं कृत्वा रक्तसूत्रेण वेष्टयेत् ॥२॥ सिक्थकेनावृतं कृत्वा सुराकुम्भे विनिक्षिपेत् । पूजयेद्रक्तपुष्पैश्च सप्ताहान्मोहयेद् ध्रुवम् ॥३॥ इति मोहनविधिः । अथ स्तम्भनम् ॥ शिलातालहारिद्राश्च मेषमूत्रसमन्विताः । कोकिलाक्षस्य लेखिन्या नीलरक्तपटे लिखेत् ॥१॥ साध्यनाम च तन्मध्ये रञ्जकाष्टं निवेशयेत् । पर्वताकृति यन्त्रं च शिलातल निवेशितम् ॥२॥ पूजयेत्पीतपुष्पैस्तु कुंकुमेन च वा पुनः । स्तंभनं देहमनसोः सप्ताहाज्जायते रिपोः ॥३॥ इति स्तम्भनम् ॥

अथ विद्वेषणविधिः ॥ काकविड् विषरक्तेन शतध्वजपुटे शुभे । काकपक्षस्य

लेखिन्या लिखेद्यन्त्रं स्वरोदयी॥ १॥ साध्यनाम लिखेत्तत्र चतुष्कोणेषु मध्यगम्। सविसर्ग खकारेण
त्रिरुच्चारेण रञ्जिका ॥२॥ उष्ट्रीरूढं कृतं यन्त्रं बद्धं काकगले ततः। सयन्त्रो वायसे मुक्तो ततस्तूच्चा-
टनं भवेत् ॥३॥ इति उच्चाटन विधिः॥ अथ वशीकरण विधिः॥ कालेयरोचना चन्द्रैर्लज्जालुगजवारिभिः।
मदनोद्भव लेखिन्या यन्त्रं भूर्जे लिखेदिदम् ॥१॥ साध्यनाम च तन्मध्ये क्लींकारं रञ्जिकान्वित-
म्। नराकृति कृतं यन्त्रं सिक्थकेन च वेष्टयेत् ॥२॥ त्रिमधुरे स्थापितं च रक्तपुष्पैश्च पूजित-
म्। सप्तरात्रेण तद्यन्त्रं वशीकरणमुत्तमम् ॥३॥ इति वशीकरणविधिः॥

एवं सर्वेषु कार्येषु विधिपूर्वं तु कारयेत्। ततस्तु सिध्यन्ते यन्त्र सत्य सत्य
न संशयः ॥१॥ हनूमन्तं कालरात्रिं महामारीं खगाधिपम्। भैरवं क्षेत्रपालं च फणीन्द्रं गणना-
यकम् ॥२॥ पताकायां लिखेदेतदष्टकं पूर्वसूचितम्। ततः सारतरं ज्ञात्वा प्रथमं विस्तराद्वदेत् ॥
३॥ आरण्य पलहीतूलं संगृहीतं शुभे दिने। कन्याकर्तित सूत्रेण दिते वस्त्रं विनिर्मितम् ॥४॥
सार्धहस्तत्रयं श्वेतं शोधं तत्र प्रदापयेत्। हरिद्रा हरितालेन शैलेयसंयुतेन वा ॥५॥ लिखेद्धनुमतो रूपं
पञ्चत्र्यङ्गुलमानकम्। दीर्घदन्तं करालाङ्गं दीर्घबाहु नखान्वितम् ॥६॥ वामहस्ते ध्वजं कुर्याद्दक्षिणे
मेरुपर्वतम्। वक्रभ्रुवं महारौद्रं जिह्वालाङ्गूल लोलितम् ॥७॥ रक्तवस्त्रं सकौपीनं शिखा मुकुटधारि-
णम्। हृत्पद्मे विन्यसेत्तस्य निजनाथार्चनामकम् ॥८॥ हनूमतो लिखेत्तत्र मूलमन्त्रं दलाष्टके।
मालामन्त्रेण तद्बाह्ये सप्तमार्गेण वेष्टयेत् ॥९॥ "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं हनूमते ऽयं मूलमन्त्रः।

ॐ वज्रकाय वज्रतुण्ड कपिल पिंगल ऊर्ध्वकेश महाबलपराक्रम रक्तमुख तडिज्जिह्व
महादंष्ट्रोत्कट कटकीकृतकपालिन् महादृढप्रहार लङ्केश्वर महासेतुबंधन शैलप्रवाह गगनचर एह्येहि
भगवन्महाबल सहस्रसूर्य समान रूप भैरवाज्ञापयति एह्येहि दीर्घलाङ्गूलेन अमुक शत्रुं वेष्टय वेष्टय

मञ्जय मञ्जय खं खं रे रे हुं फट्॥ इति माला मन्त्रः समाप्तः॥

अथ हनुमत्पताका॥ गात्रेषु दापयेद्रेफैश्चतुर्व्याप्ति प्रमाणकैः। षड्वर्णान्विन्यसे-
च्चापि रसनाग्रे छिरेखया॥१॥ स्तम्भिनी मोहिनी चैव शोषिणी भञ्जिनी तथा। गात्रेषु विन्यसेद्देवी
प्रणवादि नमोऽन्तगाः॥२॥ लकारं पर्वते दद्यात्पुच्छदण्डे बुकारकम्। चुकारं मुखमध्यस्थं हुङ्कारं चतदग्रतः
॥३॥ वदने मस्तके गुह्ये मूलमन्त्रं न्यसेद् बुधः। लांगूले मातृकां वापि क्षादिकात्प्रणवादिकम्॥४॥
मस्तकोपरि कर्तव्या मातरो ग्रह संपुताः। अष्टम्यां च चतुर्दश्यां प्रतिष्ठां कारयेत्ततः॥५॥ सुपर्वे चैव
नक्षत्रे चन्द्रताराबलान्विते। रक्ताम्बरधरो मन्त्री रक्तगन्धानुलेपनः॥६॥ रक्तपुष्पकृताटोपः सम्पत्स-
न्नद्दविग्रहः। उद्धरेदक्षतैः पद्ममष्टपत्रं सुशोभनम्॥७॥ स्तम्भिनी मोहिनी चैव शोषिणी भञ्जिनी
तथा। पूर्वादितश्चतुर्दिक्षु क्रमाद्देवीं निवेशयेत्॥८॥ उड्डीयानादिकान् पीठान् स्थापयेदीश कोणतः।
भैरवीं भैरवां सिद्धिं गुहा नागा दिशाधिपाः॥९॥ प्रत्येकं क्रमयोगेन न्यसेत्पत्राष्टके बुधः।
पूजा चैव क्रमेणैव कर्तव्या स्वरमण्डले॥१०॥ नानाप्रकार शोभाढ्ये कर्पूरागरु वासिते। चन्द्रोदयकृताटोपे
ध्वजाष्टक विभूषिते॥११॥ मण्डलस्यास्य मध्येषु कुर्यादूर्ध्वं ततः पटम्। स्नापयेत् पञ्चगव्येन दर्पणो-
-दरमध्यगम्॥१२॥ अग्नि मारुत बीजेन विदध्यादासने ततः। मूलमन्त्रं न्यसेन्मूर्ध्नि हनुदेवस्य मा-
न्त्रिकः॥१३॥ "ॐ हां हूं हनुमते नमः" इति मूल मन्त्रः॥ अङ्गेषु विन्यसेदस्य षट्स्वरान् दीर्घसंज्ञका-
न्। ककारादि क्षकारान्तान् स्तम्भिन्यादिषु विन्यसेत्॥१४॥ पञ्चोपचारमिश्रैश्च मद्यमांसाशनैस्त-
तः। पूजयेत्सकलान्देवान् प्रणवादि नमोऽन्तकान्॥१५॥ पूजां कृत्वा विधानेन ध्यानं कृत्वा विचक्षणः।
सुशोभन प्रयोगेन सिद्धिर्भवति सर्वदा॥१६॥ विचित्र वस्त्र संयुक्तं बाह्याभरण भूषितम्। रक्तवस्त्रं
महाभि [illegible] ॥१७॥ [illegible] रक्तपुष्पै

पूर्व होमं कृत्वा दशांशतः ॥१८॥ कुमारीभोजयेत्तत्र चतुष्षष्टिप्रमाणतः । आचार्य दक्षिणां दद्यान्नगरं ग्रामं खेटकम् ॥ १९ ॥ काष्ठपाषाण धातूनां पूजा या निर्मितापि च । प्रतिष्ठा क्रियते तत्र देशे ग्रामेपुरेऽपिवा ॥२०॥ न दुर्भिक्षं भवेत्तत्र न च व्याधिभयं भवेत् । परचक्रागमो नैव व्याधिभिश्च न पीड्यते ॥ २१॥ न पतत्यशनिस्तत्र न च रोग भयं भवेत् । डाकिनी भूत वेताला: पिशाचोरगराक्षसा: ॥२२॥ हनूमतः प्रभावेण विषपीडा न जायते । हनूमतः पताकेयं गजाश्वोपरि संस्थिता ॥ २३॥ धारिता सा प्रयत्नेन रिपुसैन्यस्य सन्मुखी । हनूमतः पताकेयं गजाश्वादीन् पराक्रमेत् ॥२४॥ तस्या दर्शनमात्रेण व्याकुलीभूत मानसा: । नश्यन्ति रिपवस्तस्य सिंहस्येव यथा मृगा: ॥२५॥ इति हनुमत्पताका: ॥

अथ हनुमद्रक्षाविधि: ॥ अथ रक्षां प्रवक्ष्यामि सर्वसिद्धि प्रदायिकाम् । स्तम्भिनीं शत्रुसैन्यस्य भूभुजादिवशङ्करीम् ॥ १॥ रोचना कुङ्कुमाभ्यां च भूर्जपत्रे सुशोभने ॥२॥ सुवर्णमपि लेखिन्यां यन्त्रमष्ट दलं लिखेत् । साध्यनाम च तन्मध्ये मूलमन्त्रं दलाष्टके ॥३॥ मालामन्त्रश्च तद्बाह्ये त्रिधा ह्रींकारवेष्टितम् । त्रिलोह वेष्टितं कृत्वा कटि बाहु शिर: स्थितम् ॥४॥ धारयेद्यस्त्विमां रक्षां तस्य विघ्नं न जायते । रणे राजकुले द्यूते व्यवहारे पराजये ॥५॥ शस्त्रं नाक्रमते तस्य वज्रदेहो महाबल: । उपसर्गादि दोषेषु विषे स्थावर जङ्गमे ॥६॥ न भयं विद्यते तस्य स्त्रीणां चैवातिवल्लभ: । तस्य पीडां न कुर्वन्ति ग्रहाश्चैव उपग्रहा: ॥७॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिन्न भयं तस्य विद्यते । जलजाग्नि भयं नास्ति व्याघ्र तस्करजं भयम् ॥८॥ ज्वरा: सर्वे प्रणश्यन्ति त्र्याहिकाद्या विशेषत: । इयं हनुमतो रक्षा सर्वोपद्रव नाशिनी ॥ ९॥ इति रक्षाविधि:

अथ हनुमत्पिच्छकविधि: ॥ पिच्छाकारं पटं कृत्वा पातकावद्विधानत: । चन्द्रार्कग्रहणे प्राप्ते हनुमन्तं लिखेत्तत: ॥१॥ मातृकाया जपेत्तत्र यावन्मुक्ति: प्रजायते । होमयेच्च दशांशेन तिलसर्पिपकादिभि: ॥२॥ युद्धकाले च तत्पिच्छं गजाश्वोपरि संस्थितम् । दर्शनं शत्रुसैन्यस्य भङ्गो भवति निश्चि-

-तम् ॥३॥ इति हनुमत्पिच्छक विधिः॥ अथ हनुमन्मन्त्र होमविधिः॥ मर्दनेन हनुं कृत्वा पूर्वलक्षणलक्षितम्।
वर्तितं चैव लाङ्गूलं कारयेत्साधकेश्वर॥१॥ परचक्रस्य ये मुख्या लांगूलस्यानुकारिणः। गजाश्वरथयाना-
-नि बहिःस्थानि तु कारयेत् ॥२॥ पूर्वमन्त्राक्षरैर्भेद्यं लांगूलेन तु वेष्टयेत्। वेष्टयेत्प्रतिमां सर्वाभावाद
तलमूर्धजाम् ॥३॥ स्थापयेत् पूर्व विधिना परचक्रस्य संमुखम्। दर्शनात् परचक्रस्य भङ्गमायाति
तत्क्षणात् ॥४॥ अथवा होमयेत्तत्र लाङ्गूली लवणं विषम्। राजिका तुषि केशास्थि त्रूषणं निम्बमेव
च ॥५॥ षट्कोणकुण्ड मध्ये तु निम्बाम्र चित्रकोद्भवाः। समिधो ज्वालयेत्तत्र नैर्ऋत्याभिमुखे स्थितः॥
६॥ होमयेद्धनुमन्त्रेण सहस्रैकं दिने दिने। दिन सप्तक मध्ये तु प्रात्रौ पीडा ततो भवेत् ॥७॥ अङ्गदाहा
महापीडा विस्फोटो गन्धलूतिका। म्रियते नात्र सन्देहः संग्रामं कुरुते यदि ॥८॥ इति होमविधिः॥
अथ मण्डूक यन्त्र विधिः॥ मालामन्त्रं पठेद्यस्तु हनूमतो रणाङ्गणे। तस्याङ्गं वज्रव-
युद्धे हरतुल्य पराक्रमम् ॥१॥ "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः" इति माला मन्त्रः॥ पुनरन्यत्प्रवक्ष्यामि वेध्यं
परमदुर्लभम्। माण्डूकं नाम विख्यातं सर्वशास्त्रेषु गोपितम् ॥१॥ आनयेन्निर्व्रणं शुद्धं भूर्जपत्रं शुभो-
-भनम्। तस्मिंस्तु खररक्तेन वामकर्णोद्भवेन तु ॥२॥ चिताङ्गारविशैर्युक्तं कृष्णोन्मत्तरसेन च। कुलिके
विलिखेद्यन्त्रं नैर्ऋत्याभिमुखस्थितः ॥३॥ प्रेतवच्चिन्तयेत् साध्यं मुक्तकेशं विवस्त्रकम्। पुटापुटैः
कृतं यन्त्रं कृत्वा मध्येऽरिनामकम् ॥४॥ तन्नाम रेखया भिन्द्यात्कोपाविष्टस्तु साधकः। पीडयित्वा
तु यन्त्रं तु शाल्मूरस्य मुखे क्षिपेत् ॥५॥ कीलयेत् पुष्टलोहेन शल्यकाण्डमयेन वा। आतपे दारनालं च
सप्तगेहोद्भवं ततः ॥६॥ तन्मध्ये दर्दुरं क्षिप्त्वा तद्भाण्डं मुद्रयेत्ततः। तापयेच्छुद्ध कालेऽपि चिताङ्गारान-
लोपरि ॥७॥ गात्रस्तम्भो मनःस्तम्भो वायुपीडा तथोदरे। म्रियतेऽरिर्न सन्देहो यदि शक्रसमो रणे
॥८॥ इति [illegible] विधिः॥

मं० सं० ८२८०

भा० टी०

अथ स्तम्भन यन्त्र विधिः ॥ शिला ताल हरिद्राभिरर्कपत्रेयुगे लिखेत् । कोकिलाक्ष-
स्य लेखिन्या स्तम्भान्तं रिपुनामकम् ॥१॥ त्रिठकारैः समावेष्ट्य तद्बाह्ये पार्थिवं पुरम् । वज्राष्टक
समोपेतं रेखा षोडश दीपितम् ॥२॥ माया बीजेन संवेष्ट्य त्रिधाङ्कुशनिरोधितम् । तद्यन्त्रं योजयि-
त्वा तु कण्टकैः कीलयेत्ततः ॥३॥ क्षिपेद्वल्मीक मध्ये तु पाषाणैस्तत्र पूरयेत् । पश्चात्समारभेद्युद्धं
विवादं साध्य साधकः ॥४॥ गात्रस्तम्भो भवेदेवं मनःस्तम्भस्तथैव च । जिह्वास्तम्भो विवादे च
साध्यो ऽसौ जायते ध्रुवम् ॥५॥ इति स्तम्भन यन्त्र विधिः ॥ अथ शत्रुभङ्ग विधिः ॥ अर्कपत्र युगे
नाम चिताङ्गारेण वेष्टयेत् । पूर्ववत्कीलयेत् पश्चाच्छिलयाच्छादयेद् दृढम् ॥१॥ एत यन्त्र प्रभावेण
मनोभङ्गो भवेत् पुनः । अथ प्रविश्य संग्रामे म्रियतेऽरिर्न संशयः ॥२॥ इति शत्रुभङ्ग विधिः ॥

अथ कलिकुण्डल यन्त्र विधिः ॥ रेफयुक्तं हकारं च वषट्स्वर विभूषितम् । आत-
नामोदरे कृत्वा ह्रीङ्कारं रेफ संपुटम् ॥ नादबिन्दु समायुक्तमोङ्कारं सम्पुटे स्थितम् ॥१॥ दिक्षु वज्राष्ट
सम्भिन्नं षोडशास्वर वेष्टितम् । वज्राग्रेषु च सर्वेषु मूलमन्त्रं प्रयोक्षितम् ॥२॥ आदि बीजोदरे
नाम दत्त्वा तस्य परिस्फुटम् । लिखित्वा वेष्टितं सर्वं मायया वेष्टितं त्रिधा ॥३॥ कलिमण्डलदण्डाख्यं
यन्त्रं विघ्न विनाशनम् । श्वेताम्बरधरो मन्त्री शुभध्यान परायणः ॥४॥ उत्तराभिमुखो भूत्वा लिखेद्यन्त्रं
शुभोदये । कांस्य भाजन मध्ये तु चन्दनेन सुगन्धिना ॥५॥ लिखेद्दर्भस्य लेखिन्या मुष्टि मध्य प्रमाणतः
सुगन्धि कुसुमैः श्वेतैरष्टोत्तर शतेन च ॥६॥ अर्चयेद्विधिवद्यन्त्रं फलं यावद्दिने दिने । लिखितं
पूजितं चैव प्रक्षालयेज्जलेन तम् ॥७॥ तज्जलं पीतमात्रं तु परविद्याविनाशनम् । शाकिनी भूत वेतालाः
पिशाचोरग राक्षसाः ॥८॥ भवन्ति निष्प्रभाः सर्वे यन्त्रस्यास्य प्रभावतः । शूलं विष्टम्भिकाजीर्णं
लूता विस्फोटकादयः ॥९॥ अभिचार कृता दोषा विषं स्थावर जङ्गमम् । गर्भे च वेदना यस्या मूढ

गर्भस्तु यो भवेत् ।। १०।। एवं रोगैस्तु दुःखार्ता स्वस्थाः स्युः सर्वजन्तवः । वन्ध्यापि लभते पुत्रं मृतवत्सा च जीवसूः ।।११।। दुर्भगा सुभगा चैव यन्त्रस्यास्य प्रभावतः । कृत्याः प्रशमनं यान्ति मारुतश्लेष्म पैत्तिकाः ।। १२।। जीर्णज्वराश्च विषमाः शीतदाहज्वरात्मकाः । एवमभ्यासितं यन्त्रं करोति विपुलां श्रियम् ।। १३।। इति कलिकुण्डल यन्त्र विधिः ।।

अथ मृत्युञ्जय नाम यन्त्र विधिः ।। शान्त्यर्थं निजनाथस्य जयार्थं रणकांक्षिणाम् । यन्त्रं मृत्युञ्जयं नाम प्रवक्ष्यामि समासतः ।।१।। हंसमध्यगतं नाम मृत्युञ्जय पुटीकृतम् । रक्षरक्ष समायुक्तं बाह्यरेखात्रया वृतम् ।।२।। चवर्गस्य तृतीयो यो बिन्दु षट्स्वर भूषितः । हाद्यन्तः सविसर्गश्च मन्त्रोऽयं प्रणवादिकः ।।३।। पद्ममष्टदलं बाह्ये जम्भाद्या दिग्दले स्थिताः । विदिक्षु प्रणवं न्यस्य पत्रं षोडशकं बहिः ।। ४।। स्वराः षोडश दातव्याः प्रत्येकं सर्वतो दिशि । द्वात्रिंशत्पत्रकं पद्मं तद्बाह्ये विनिवेशयेत् ।। ५।। कादि युक्तौ हसौ वर्णौ स्थापयेत्क्रमशस्ततः । चतुष्षष्टि दलं बाह्ये भैरवांस्ततो लिखेत् ।।६।। भैरवी भैरवा सिद्धिगुहा नागा दिशाधिपाः । पीठोपपीठ संयुक्तं क्षेत्रपालादि रष्टकम् ।। ७।। आनयेन्निर्गुणं भूर्ज ग्रन्थिहीनं सुशोभनम् । वर्णभेदेन संगृह्य ब्राह्मणादि क्रमेण च ।।८।। ककारादि त्रिद्रवेण गोङ्कारस्य त्रयेण च । षड्द्रवैर्यन्त्रमालिख्य साध्यनाम समन्वितम् ।। ९।। सुवर्णमयलेखिन्या उत्तराभिमुखं निशि । चन्द्रवारे लिखेद्यन्त्रं मृत्युञ्जयविधानकम् ।।१०।। अनेन मदनस्थेन कृत्वा लिङ्गं सुशोभनम् । पञ्चामृतेन दिव्येन स्नापयेत् सप्तवासरान् ।। ११।। पश्चाच्च भक्तकं देयं लक्षैकमयुतं ततः । साध्यनामयुतं मन्त्रं रक्षार्थमुद्धरेत्ततः ।। १२।। पूजयेच्छ्वेतपुष्पैश्च कर्पूरागरुचन्दनैः । छादयेत्पट्टवस्त्रेण सप्ताहाच्छान्तिकं भवेत् ।। १३।। मध्वाज्यं गुग्गुलं तालश्रीपर्णैः सप्तसर्षपैः । पद्माकारेण कुण्डेन होमं कुर्याद् दशांशतः ।। १४।। शमी दूर्वासमिद्भिश्च रुद्राशाभिमुखस्थितः । मुद्रां च खेचरीं बद्ध्वा स्वाहान्तं होमयेत्ततः ।। १५।। मुच्यन्ते

रोगिणो रोगगत पापात्मा विवर्जितः। त्यक्त्वा पीडां ग्रहाः क्रूराः सौम्यतां याति नान्यथा ॥१६॥ शाकिनी भूत वेताला: पिशाचोरग राक्षसा:। ज्वरास्तस्य प्रणश्यन्ति त्र्याहिकैकान्तरादिका: ॥१७॥ विषं नाक्रमते देहे स्थावरं चाप्य जङ्गमम्। उपविषाणि सर्वाणि निर्विषाणि भवन्ति च ॥१८॥ अभिचार कृता दोषा ये केचिद्यत्र भूतले। ते सर्वेऽपि क्षयं यान्ति काष्ठं वह्निगतं यथा॥ १९॥ वैरिणो मित्रता यान्ति प्रसादं कुरुते प्रभुः। अवश्यं वश्यतां यान्ति राजस्त्री क्षुद्र जन्तवः ॥२०॥ राज्याद् भ्रष्टो लभेद्राज्यं षण्मासस्य प्रयोगतः। अपुत्रो लभते पुत्रं दुर्भगः सुभगो भवेत् ॥२१॥ युद्धकाले कृतं यन्त्रं विधिनाऽनेन भूपतिः। अर्चयित्वा विशेषयुद्धे त्रिदशैरपि दुर्जयः ॥२२॥ ग्रीवा बाहुशिरः कण्ठां धारयन्ति च ये नराः। कृत्वा रक्षामिदं यन्त्रं मृत्युस्तेषां न विद्यते ॥२३॥ इदं मृत्युञ्जयं यन्त्रं विघ्नमृत्युविनाशनम्। अप्रकाश्यं मया ख्यातं लोकानां हितकाम्यया ॥२४॥ किं पुनर्बहुनोक्तेन प्रभावेण प्रयोजनम्। एतद्यन्त्र कृत्वा रक्षा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥२५॥ उद्याने च नदी तीरे शुभदेशे शुभे दिने। कृते शान्त्युत्तरे काले तल्लिङ्गं निक्षिपेद् भुवि ॥२६॥ सर्वकामिक यन्त्रेषु सिद्धिर्भवति नान्यथा ॥२७॥ इति मृत्युञ्जय यन्त्रविधि समाप्तः॥

अथार्घकाण्डम्॥ अर्घकाण्डं प्रवक्ष्यामि अन्नैः षट्कैः रसैः क्रमात्। मासाक्षरं कालाक्षरं प्रश्ने सर्वं विमिश्रयेत् ॥१॥ हरेद् द्वादशभिर्भागं जानीयाच्च न संशयः। चैत्राद्यं गणयेद्विद्वान् विषमं हि समं तथा ॥२॥ विषमे अर्घवृद्धिः स्यात्समर्घं च समे भवेत्। अ ए क च ट त प य शाश्वियिटाक्षरा। शालिगोधूमसुगन्धरा कला सञ्जायन्ते ॥३॥ आ ऐ ख छ ठ थ फ र षाः अधराः। मुद्गा माषास्तिलाश्चैव अतसी बहु जायेत ॥४॥ इ ओ ग ज ड द ब ल सः उत्तराः। मसूरास्तिलका ज्ञेया यवधान्यादयः ॥५॥ ई औ घ झ ढ ध व हाः वर्तुलाः। आढकी लङ्कारवीलकम्प्र बल्लरी ॥६॥ उ ऊ अं ङ ञ ण न मा दग्धाः। दुर्भिक्षं जायते शीघ्रन्नास्ति सन्देहकारकम्॥ इत्यर्घकाण्डम्॥

अथ द्वितीयार्घ काण्डम्॥ अथार्घं सम्प्रवक्ष्यामि वर्षमासादि सम्भवम्। येनविज्ञान मात्रेण वणिजां सिद्धि रुत्तमा ॥१॥ आश्लेषा स्वाति ज्येष्ठार्द्रा शत तारार्य मात्स्यम्। दश पञ्च मुहूर्तानि षट् पञ्च भानि कीर्तयेत् ॥२॥ प्राजापत्योत्तरास्तिस्रो विशाखा च पुनर्वसुः। पञ्चार्द्धानि मुहूर्तानि त्रिंशत्संख्या पराणि च ॥३॥ ऋक्ष भुक्ति प्रमाणेन मुहूर्तैः स्वरसंख्यया। संक्रमो वर्तते यत्र क्षेपश्चन्द्रांशकास्तथा ॥४॥ त्र्येक रूपाग्नि सप्तैक नवैक तिथयस्तथा। वह्नि बाहू ग्रहेन्दू च तत्त्वं वस्विन्दवः स्वराः ॥५॥ दश वेदैक संख्याश्च स्वर द्वादशके क्रमात्। सर्वदा ते च विज्ञेया दग्धाः शन्यर्क राहुभिः ॥६॥ तत्त्वं त्रिंशद् ग्रहाश्चैव प्रकृतिः स्यात्कवर्गजा। संख्या चैवं त्रिधा प्रोक्ता शन्यारौ दहतः सदा ॥७॥ ऋक्षाण्यष्टयुगं वह्नि पञ्चेन्दु भुवनानि च। चादि संख्या समाख्याता दग्धा जीवार्क भूसुतैः ॥८॥ धृतिः पञ्चाग्नि वह्नीन्दू भास्करं सप्तरूपकम्। टादि संख्या विजानीयाद्दग्धा जीवार्क राहुभिः ॥९॥ तथा विश्वे शरास्त्रीणि वसुपक्षौ गजेन्दवः। तादि संख्या भवेदेवं शुक्रराहू च दाहकौ ॥१०॥ षट्त्रिंशद्भानि वस्वग्निदृशः सप्तेन्दवो मताः। यश संख्या पवर्गजा चेयं कुजार्कौ दाहकौ सदा ॥११॥ भानु रुद्रा ग्रहास्त्रिंशत् तत्त्वाशास्त्रिंश भास्कराः। यश संख्या पवर्गजा चेयं कुजार्कौ दाहकौ सदा ॥११॥ ततस्तु योजयेत्तत्र यण्यक्षेपं पुरोदितम्। त्रिभिर्भक्ता-वर्गगता संख्या दग्धा सा ऽत्र शनौ गते ॥१२॥ ततस्तु योजयेत्तत्र यण्यक्षेपं पुरोदितम्। त्रिभिर्भक्ता- वर्गगता संख्या दग्धा सा ऽत्र शनौ गते ॥१२॥ (see note) हानिः साम्यं तथा वशेषेण ज्ञेयः पण्यार्घ निर्णयः ॥१३॥ श्रेष्ठमध्याधमार्घाः स्यु क्रमादेकादितो वदेत्। हानिः साम्यं तथा वृद्धिर्दुर्व्यार्घे ऽपि प्रजायते ॥१४॥ लब्धं लब्धं पुनर्भाज्यं त्रिभिरेव त्रिसंख्यया। हानिवृद्ध्यंशकास्ते च वर्तमानार्घ नाशकाः ॥१५॥ गुरु संक्रान्तितो वर्षे मासे भास्कर संक्रमात्। दिने वारोदया देवं त्रिधा द्रव्यस्य निर्णयः ॥१६॥ देशद्रव्याक्षरा ये च विद्धाः खेटैः शुभाशुभैः। सर्वतोभद्र चक्रेण विशेषाच्च शुभाशुभम् ॥१७॥ तत्संख्या प्रमाणेन हानिवृद्ध्यंशकास्ततः। क्रूर सौम्य विभागेन कर्तव्यः सर्वदा बुधैः ॥१८॥

इति द्वितीयार्घ काण्डम्॥

मु० सं० १२८७

भा० टी०

अथ शान्त्यध्यायः ॥ अथातः सम्प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मयामले । सप्ताङ्गराज्यलोकानां
वृद्ध्यर्थं ग्रहशान्तिकम् ॥१॥ ग्रहपीडा गृहे यस्य युद्धकाले विशेषतः । न युद्धं तेन कर्तव्यमित्युक्तं ब्रह्मयामले
॥२॥ देशदुर्गे ग्रहाक्रान्ते समापाते ऽरिसङ्कटे । अवश्यं येन योद्धव्यं तदर्थं शान्तिकं वदेत् ॥३॥ क्रूरग्रहे
समापाते छत्रसिंहासनादिषु । देशाश्वकुञ्जरादीनां कर्तव्यं ग्रहशान्तिकम् ॥४॥ ग्रहाः पुण्यं ग्रहाः पापं ग्रहाः
मृत्युपराजयौ । हानिर्मृत्युः सुखं दुःखं व्याधिरारोग्यमेव च ॥५॥ नरा अरातिरोगैश्च तथा शस्त्रप्रहारकैः ।
शाकिनी भूतवेतालैः पीड्यन्ते ग्रहपीडया ॥६॥ वातपातादि दोषाश्च विकारा दिव्यसम्भवाः । राजमित्रप्रको-
-पाश्च जायन्ते ग्रहपीडया ॥७॥ गण्डान्तमूलजातानां लग्नादौ रिष्टयोगके । दुष्टदेशादि पीडायां गोचरे गो-
-चरे वधे ॥८॥ दुष्टे रिष्टे समापाते कर्तव्यं ग्रहशान्तिकम् । ग्रहपूजा तथा होमं स्नानद्रव्याणि कल्पयेत् ॥
॥९॥ रव्यारौ ताम्रजौ कुर्याज्जीवज्ञौ स्वर्णसन्निभौ । सौम्यौ चन्द्रसितौ कार्यौ शेषा लोहमया ग्रहाः ॥१०॥ अथ
-वा स्वस्ववर्णाभैः पिष्टद्रव्यैश्च कारयेत् । यज्ञोपवीतवस्त्रैश्च स्वग्रहाः परियाजयेत् ॥११॥ नवमृत्युरू-
-पां वेदीं कृत्वा हस्तप्रमाणिकाम् । तत्र रव्यादयः स्थाप्याः स्वस्वाकृत्या यथोक्तया ॥१२॥ मण्डलं भास्क-
-रं मध्ये शशिनं पूर्वदक्षिणे । त्रिकोणं दक्षिणे भौमे रुद्रे हं धनुराकृतिम् ॥१३॥ पद्माकारं गुरुं सौम्ये
चतुरस्रं भृगुं न्यसेत् । पूर्वस्यां पश्चिमे सौरिं दण्डवत्परिकल्पयेत् ॥१४॥ वायव्ये खड्गवत्केतुं राहुं च
मकराकृतिम् । एवं विचार्य विलिखेत्पूजयेद्विधिना ततः ॥१५॥ स्वर्णफलपुष्पाणि नैवेद्यं विविधानि
च । नवधा बलिमालाश्च वासांसि नवधा पुनः ॥१६॥ रञ्जितानि स्ववर्णैश्च गन्धधूपादिभिस्तथा ।
दीपाक्षतादिभिः सम्यक् पश्चादावाहयेद् ग्रहान् ॥१७॥

अथ स्तोत्रम् ॥ बन्धूकपुष्पसंकाश रक्तोत्पलसमप्रभो । लोकनाथ जगदीश
शान्तिं यच्छ प्रभाकर ॥१८॥ शंखकुंदमृणालाभ काशपुष्पसमद्युते । शशाङ्क रोहिणीभर्तः सदा शान्तिं

प्रयच्छ मे ॥ १९॥ पृथिवीगर्भसम्भूत बन्धुजीवसम प्रभो । शान्तिं ददातु मे नित्यं कुमाराङ्गारक प्रभो ॥२०॥ शिरीषपुष्प संकाशः पिपिलाङ्गोऽथवा पुनः । सोमपुत्रो बुधश्चैव सदा शान्तिं प्रयच्छतु ॥२१॥ सिम्बलीकलिकाकारो भोगप्रकार कारकः । केवलः काञ्चनाभास आरोग्यायुःप्रदो बुधः । देवमन्त्री महातेजा गुरुः शान्तिं प्रयच्छतुः ॥२२॥ सितकुन्देन्दु सङ्काशः शुक्लवस्त्र विभूषितः शान्तिं ददातु वो नित्यं दैत्यमन्त्री स भार्गवः ॥२३॥ नीलोत्पल दलप्रख्यः कृष्णाञ्जननिभोपमः । शनैश्चर ग्रहः पुंसां सदा शान्तिं प्रयच्छतु ॥२४॥ अतसीपुष्प सङ्काशो नीलाञ्जन सम द्युतिः । शान्तिं ददातु वो नित्यं राहुश्चन्द्रार्क मर्दनः ॥२५॥ सिन्दूर रुधिराकारो रक्त पद्मनिभोऽपि वा । केतुरारक्तवर्णाङ्गः सदा शान्तिं प्रयच्छतु ॥२६॥ इति स्तोत्रम् ॥

अर्कः पलाशः खदिरो ह्यपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः क्रमात् ॥२७॥ मधुवाज्य गुग्गुलं राले तिलाश्च सितसर्षपाः । यवांश्च तैल संयुक्तान् रक्तपुष्पाणि होमयेत् ॥२८॥ कृत्वा चाष्टदलं कुण्डं मेखलात्रय संयुतम् । होमयेत्तत्र द्रव्याणि मिश्रितानि ग्रहं प्रति ॥२९॥ सूर्यादिभिश्च मन्त्रैश्च सम्यग् ध्यान समन्वितः । शतान्यथ सहस्राणि लक्षाणि नव होमयेत् ॥३०॥ तत्र मन्त्राः ॥ ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय स्वाहा । ॐ स्रौं स्रीं स्रौं सः सोमाय स्वाहा । ॐ क्रौं क्रीं क्रौं सः कुजाय स्वाहा । ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रौं सः बुधाय स्वाहा । ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रौं सः बृहस्पतये स्वाहा । ॐ ह्रौं ह्रीं ह्रौं सः शुक्राय स्वाहा । ॐ षौं षीं षौं सः शनिश्चराय स्वाहा । ॐ छ्रौं छ्रीं छ्रौं सः राहवे स्वाहा । ॐ फौं फीं फौं सः केतुभ्यः स्वाहा ॥ इति ग्रहमन्त्रेण होमः ॥

ग्रहार्चं मण्डलं कुर्याच्छोभाढ्यं चक्रमादिकम् । सर्वलक्षण सम्पूर्णं सर्वाभरण संयुतम् ॥३१॥ सुसमे भूप्रदेशे च गोमयेनोपलेपिते । पुष्प प्रकर शोभाढ्ये कर्पूरागरु वासिते ॥३२॥ हस्तहस्तार्ध

मुष्टीनां प्रधानं नवसंख्यया। ग्रहवर्णाश्रितैर्लेख्यं शान्त्यर्थं ग्रहमण्डलम् ॥३३॥ चतुरस्रं चतुर्द्वारं नवपद्मस-
-मन्वितम्। नवपद्मान्विते मध्ये कर्त्तव्यं ग्रहमण्डलम् ॥३४॥ दिगधीशाष्टकं बाह्ये तथा चैव ध्वजाष्टकम्।
मध्यमादिषु विन्यस्य दिनेशादि क्रमेण च ॥३५॥ पद्म मध्ये स्थितं कुम्भं पूरितं तीर्थवारिणा। एलामनःशि-
-लादारुपद्मकोशीर कुङ्कुमम् ॥३६॥ यष्टी मधु शताह्वा च स्नानं भास्कर शान्तये। कुमुदं कुञ्जरोन्मादं पञ्च-
गव्य समन्वितम् ॥३७॥ शुक्ति स्फटिक संयुक्तं स्नानं चन्द्रस्य शान्तये। फलिनी चन्दनं बिल्वमेला
चन्दन हिङ्गुलैः ॥३८॥ मांसी रक्तानि पुष्पाणि स्नानं भौमार्तिशान्तिकृत। हेम शुक्ति भवं मूलं गोमयं
मधुरोचना ॥३९॥ फलाक्षत समायुक्तं स्नानं बुधविकारनुत। मदयत्पल्लवा जाती पुष्पाणि सितसर्ष-
-पाः ॥ मध्वाज्य मिश्रितं स्नानं जीवस्य मुनि भाषितम् ॥ ४०॥ इति ॥

॥ इतिश्री भृगु संहिता महाशास्त्रे नरपतिजयचर्या खण्डस्समाप्तः ॥


ॐ
इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
त्रयोदश खण्डः समाप्तः


ॐ
अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
चतुर्दश खण्डः भाषा टीका सहितम्
सन्तानोपाय एवं ग्रहपीड़ा निवारणोपायः

ॐ

॥ अथ श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम् चतुर्दश खण्ड प्रारम्भः ॥

पृथ्वी स्थित सभी प्राणी तथा चर-अचर पदार्थ ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होते हैं, परन्तु सभी प्राणियों पर ग्रहों का एक जैसा प्रभाव नहीं पड़ता। एक ग्रह किसी एक व्यक्ति के लिए शुभ फलदायक तथा दूसरे के लिए अशुभ फलकारक हो सकता है, इसका प्रमुख कारण विभिन्न प्राणियों के जन्म समय में अन्तर होना है। कौन सा ग्रह किस व्यक्ति के लिए शुभ अथवा अशुभ फलदायक रहेगा, इसका ज्ञान उस व्यक्ति की जन्म कुण्डली को देख कर ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

किस प्राणी के जन्म के समय आकाशमण्डल के राशि-पथ पर, कौन सा ग्रह किन राशियों में तथा कितने अंशों पर भ्रमण कर रहा था, इसकी जानकारी पञ्चाङ्ग द्वारा प्राप्त की जा सकती है तथा उसी के आधार पर 'जन्म कुण्डली' का निर्माण किया जाता है। जन्म कुण्डली को किसी प्राणी, देश अथवा पदार्थ के जन्म के समय आकाश-मण्डल में ग्रहस्थिति का परिचायक नक्शा भी कहा जा सकता है।

ज्योतिष-भाषा में जन्म लेने वाले प्राणी को 'जातक' कहा जाता है। जातक के जन्म के समय [illegible]

को जन्म लग्न माना जाता है। उस जन्म लग्न के अङ्क को ही जन्म कुण्डली के प्रथम भाव में अर्थात् पहले खाने में लिखा जाता है तथा अन्य राशियों के अङ्क क्रमशः अन्य खानों में लिख कर, उस समय की आकाशीय ग्रह स्थिति को विभिन्न भावों (खानों) में लिख दिया जाता है। यह आवश्यक नहीं है कि किसी जातक के जन्म के समय सभी ग्रह भिन्न-भिन्न राशियों में ही संचरण कर रहे हों। कभी-कभी एक से अधिक ग्रह भी एक ही राशि पर संचरण कर रहे होते हैं तो कभी किसी राशि पर एक भी ग्रह नहीं होता। विभिन्न राशियों पर ग्रह विभिन्न अंशों में भी संचरण करते हैं तो कभी-कभी कुछ ग्रह समान अंशों पर भी संचरण कर रहे होते हैं। अस्तु, जातक के जन्म के समय आकाश मण्डल में जो ग्रह, जिस राशि में तथा जितने अंशों पर भ्रमण कर रहा होता है, उन सबका यथावत् उल्लेख किया जाता है। ग्रहों की स्थिति-भिन्नता के कारण ही प्रत्येक जन्म कुण्डली के फलादेश में भी अन्तर आ जाता है और इसी कारण प्रत्येक मनुष्य का स्वरूप भी एक दूसरे से भिन्न दिखाई देता है।

जन्म कुण्डली तथा उनमें स्थित ग्रहों की विभिन्न स्थितियों के फलादेश-ज्ञान की विधि का विस्तृत वर्णन इस ग्रंथ के पूर्ववर्ती खण्डों में किया जा चुका है। प्रस्तुत खण्ड में कौनसा ग्रह किन जातकों के लिए पीड़ाकारक सिद्ध होता है तथा उस ग्रह की पीड़ा को शान्त करने के लिए किन उपायों — मन्त्र-जप, दान, रत्न-धारण आदि का प्रयोग करना हितकर सिद्ध होगा, इस विषय का उल्लेख किया जा रहा है। चूंकि यह विषय व्यावहारिक है, अतः इसमें व्यवहारोपयोगी सरल हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया जा रहा है।

नवग्रहों का सामान्य परिचय, उनके गोचर-फल, राशिगत प्रभाव, दोष पूर्ण प्रभाव
तथा पीड़ा निवारण के उपाय आदि के विषय में क्रमशः निम्नानुसार समझना चाहिए।

सूर्य- श्रीमद्भागवत के अनुसार पृथ्वी तथा स्वर्ग के मध्य जो स्थान ब्रह्माण्ड का
केन्द्र है, वहीं सूर्य की स्थिति है। सूर्य तथा ब्रह्माण्ड मण्डल के मध्य सब ओर २५ करोड़ योज-
-न का अन्तर है। अर्थात् सूर्य से सब ओर २५ करोड़ योजन की दूरी तक ब्रह्माण्ड गोलक की सीमा है।
इस अचेतन अण्डमें सूर्य 'वैराज' रूप में प्रतिष्ठित है, इसलिए सूर्य को 'मार्तण्ड' नाम से भी
सम्बोधित किया जाता है। सूर्य के द्वारा ही आकाश, दिशा, अन्तरिक्षलोक, भूलोक, स्वर्गलोक,
नरक, रसातल तथा अन्य लोक एक दूसरे से विभाजित होते हैं।

सूर्य की माता का नाम अदिति है, इसी कारण सूर्य को 'आदित्य' भी कहा जाता है। अदि-
-ति दक्ष प्रजापति की पुत्री तथा महर्षि कश्यप की पत्नी थीं। सूर्य की दो पत्नियां — (१) 'संज्ञा' तथा
(२) 'छाया' हैं। 'छाया' नामक पत्नी के गर्भ से 'शनैश्चर' का जन्म हुआ। इस प्रकार सूर्य शनैश्च-
-र के पिता हैं। 'शनैश्चर' भी एक ग्रह के रूप में अवस्थित हैं तथा अपने पिता सूर्य की
भाँति ही अत्यन्त शक्तिशाली हैं।

सूर्य अपने मार्ग पर चलते हुए दिन-रात को छोटा-बड़ा करते रहते हैं। सूर्य जब मेष
अथवा तुला राशि में भ्रमण करते हैं, तब दिन-रात बराबर के होते हैं। जब वृष, मिथुन, कर्क, सिंह
तथा कन्या राशि में संक्रमण करते हैं, तब प्रति मास की रात्रि में एक-एक घड़ी अर्थात् छत्
[illegible] प्रत्येक दो-दो पल कम होती चली जाती है। सूर्य जब वृश्चिक

धनु, मकर, कुम्भ तथा मीन राशियों में भ्रमण करते हैं तब प्रतिमास एक-एक घड़ी दिन घटता चला जाता है।

सूर्य पृथ्वी से लगभग सवा करोड़ मील की दूरी पर स्थित है। यह पृथ्वी से लगभग तेरह लाख गुना अधिक बड़ा है। इसका व्यास पृथ्वी से १०८.५ गुना अधिक है तथा भार ३,३०,००० गुना अधिक है। इसका तापमान १,००,००० अंश फार्नहाइट माना जाता है। इसे द्वादश राशियों में अर्थात् सम्पूर्ण सौरमण्डल के परिभ्रमण में ३६५ दिन ६ घण्टे का समय लगता है। सौरमण्डलस्थ अन्य सभी ग्रह तथा ज्योतिष्पिण्डों को इसी सूर्य के द्वारा प्रकाश प्राप्त होता है। दिन के समय हमारी पृथ्वी इसी के प्रकाश से प्रकाशित होती है तथा रात्रि के समय चन्द्रमा की चाँदनी के रूप में प्रकारान्तर से सूर्य का प्रकाश ही प्राप्त होता है।

सूर्य सदैव मार्गी तथा उदित रहने वाला ग्रह है। क्षितिज के कारण अथवा पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमते रहने के कारण ही यह कहीं उदित तथा कहीं अस्त ज्ञात होता है। यथार्थ में यह कभी अस्त नहीं होता है। किसी स्थान पर इसके दृष्टि से ओझल हो जाने को ही 'अस्त होना' मान लिया जाता है। वैसे, यदि एक स्थान पर यह सन्ध्या के समय अस्त होता हुआ प्रतीत होता है तो ठीक उसी समय अन्यत्र कहीं इसके उदय होने का दृश्य दिखाई पड़ता है।

सूर्य के एक राशि पर संचरण करने की अवधि को 'संक्रान्ति' कहा जाता है। वैसे एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करने के समय को भी 'संक्रान्ति' कहते हैं। सूर्य

की एक संक्रान्ति की अवधि लगभग 30 दिन की होती है अर्थात् यह एक राशि में एक महीने तक संचरण करता है। इस प्रकार एक वर्ष में 12 संक्रान्तियाँ होती हैं। सूर्य प्रत्येक राशि के प्रारम्भिक भाग में अपना फल देना आरंभ कर देता है। यहाँ तक कि राशि-संक्रमण के पाँच दिन पूर्व से ही अपना प्रभाव प्रकट करने लगता है। जन्म राशि से विभिन्न स्थानों पर गोचर-सूर्य का फल इस प्रकार होता है- जन्म राशि में होने पर स्थान-नाश, द्वितीय स्थान में हो तो भय, तृतीय में धन-लाभ, चतुर्थ में मान-हानि, पंचम में निर्धनता, षष्ठ में शत्रु-क्षय, सप्तम में लाभ-हानि, अष्टम में पीड़ा, नवम में कान्ति क्षय, दशम में कार्य-सिद्धि, एकादश में धन-लाभ तथा द्वादश में हो तो धन-नाश अथवा महाविपत्ति।

सूर्य जिस भाव में स्थित हो, उससे छठे भाव में किसी ग्रह का न होना उचित है। यदि सूर्य से छठे भाव में कोई ग्रह हो तो उस स्थिति में सूर्य को वेध प्राप्त होता है। वेध प्राप्त शुभ सूर्य भी अशुभ फल देता है। परन्तु सूर्य तथा शनैश्चर में परस्पर वेध नहीं होता। यदि सूर्य विद्ध स्थान पर हो तथा कोई अन्य ग्रह सूर्य के शुभ स्थान पर हो तो उसे 'विलोम वेध' कहा जाता है। 'विलोम वेध' भी अशुभ फल देता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित सूर्य अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है-

(1) यदि सूर्य जन्म नक्षत्र का स्वामी हो तो वह जातक के लिए हानिकारक होता है। (2) यदि सूर्य अपने नक्षत्र - कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो भी हानिकारक होता है। (3) यदि सूर्य अपने भाव से अष्टम स्थान में स्थित हो तो

हानिकारक होता है।(४) यदि सूर्य लग्न में बैठा हो तो स्त्री तथा सन्तान को कष्ट कारक, अल्पसन्तति दायक, एवं जातक को क्रोधी, अल्पकेशी, कृश-शरीर तथा पित्त-वात रोगी बनाने वाला होता है। (५) यदि सूर्य द्वितीय भावस्थ हो तो जातक के नेत्रों के लिए हानि कारक, धन-प्राप्ति में बाधक तथा नौकरी में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न करने वाला होता है। वह जातक को मुख-रोगी, नेत्र-रोगी, कर्ण-रोगी तथा दन्त-रोगी भी बनाता है।(६) यदि सूर्य चतुर्थ भाव में हो तो राजभृत्य, योग कारक तथा जीविकोपार्जन में विघ्न उपस्थित करने वाला एवं चिन्ताग्रस्त बनाये रखने वाला होता है।(७) यदि तृतीय भाव में हो तो भाइयों, विशेषकर, बड़े भाई के लिए हानिकारक होता है।(८) यदि पंचम भाव में हो तो जातक रोगी तथा शीघ्र क्रोधी, दुःखी, वंचक एवं अल्प सन्ततिवान् होता है।(९) यदि षष्ठ भाव में हो तो जातक के मामा को कष्ट होता है।(१०) यदि सप्तम भाव में हो तो जातक चिन्तित, राज्य द्वारा अपमानित, कठोर स्वभाववाला, स्त्री के लिए क्लेश कारक तथा स्वयं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।(११) यदि अष्टमभाव में हो तो जातक पित्त-रोगी, चिन्तातुर एवं निर्बुद्धि होता है।(१२) यदि सूर्य एकादश भाव में हो तो जातक उदर-रोगी, अल्प सन्ततिवान् एवं सन्तान के सम्बन्ध में चिन्तित बनाए रहनेवाला होता है।(१३) यदि द्वादश भाव में हो तो जातक के बाँये नेत्र में कष्ट होता है और वह कृश-शरीर तथा आलसी होता है।(१४) यदि सूर्य षष्ठेश अथवा द्वादशेश होकर पंचम अथवा नवमभाव में बैठा हो तो वह जातक की आमदनी, लाभ, राज्य, पिता, व्यवसाय, आयु तथा शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।(१५) यदि सूर्य एकादशेश, अष्टमेश अथवा दशमेश होकर 'त्रिक स्थान' में बैठा हो तो जातक की आय, लाभ, राज्य,

पिता, व्यवसाय, आयु तथा शारीरिक-स्वास्थ्य के लिए हानिकर रहता है तथा रोग, दुर्घटना आदि कष्ट भी देता है। सूर्य जातक के जीवन पर प्रायः २२ से २४ वर्ष की आयु में अपना शुभ अथवा अशुभ फल प्रदर्शित करता है। सूर्य का गुरु के साथ सात्विक, चन्द्रमा के साथ राजस एवं मंगल के साथ तामस मैत्री सम्बन्ध है तथा शनि, शुक्र, राहु एवं केतु के साथ शत्रुता है। बुध के साथ सम सम्बन्ध रहता है।

जन्म कुण्डली में सूर्य की अशुभ-स्थिति हो तो सूर्यकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय करने चाहिए—

(१) औषध-स्नान — मनःशिला अर्थात् मैनसिल, इलायची, देवदारु, केसर, खस, मुलहठी तथा लाल रंग के पुष्प मिश्रित जल द्वारा स्नान करते रहने से सूर्यकृत पीड़ा का निवारण होता है।

(२) माणिक्य-दान — सूर्यकृत पीड़ा एवं रोगों के निवारणार्थ माणिक्य-दान हितकर रहता है। रविवार के दिन प्रातः १० बजे किसी सुयोग्य ब्राह्मण को अपने घर में सादर आमन्त्रित कर, उसे सूर्य-रत्न माणिक्य का दान करना चाहिए। माणिक्य-दान करते समय 'ॐ आकृष्णेन रजसा०' इत्यादि सूर्य-मन्त्र का (जिसे आगे लिखा गया है) ७००० की संख्या में जप करना चाहिए। यदि यजमान मन्त्र-जप करने में सक्षम न हो तो दान ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को उक्त मन्त्र का उक्त संख्या में जप करना चाहिए। माणिक्य के साथ ही इन वस्तुओं का दान करना भी आवश्यक है — (१) गेहूँ, (२) गुड़, (३) तांबा, (४) केसर, (५) खस, (६) मैनसिल, (७) स्वर्ण, (८) घृत, (९) लाल अथवा कुसुम्बी रंग का वस्त्र, (१०) बछड़ा सहित लाल रंग की गाय, (११) लाल रंग के पुष्प, (१२) लाल रंग का कमल, (१३) लाल चन्दन, (१४) साठी चावल, (१५) स्वर्णपत्र पर अंकित सूर्य की मूर्ति, (१६) मूंगा तथा (१७) दक्षिणा।

(३) माणिक्य-धारण - सूर्यकृत पीड़ा के निवारणार्थ स्वर्ण अथवा ताँबे की अँगूठी में लाल रंग की कान्ति से युक्त ३ रत्ती वजनी माणिक्य को जड़वाकर धारण करना भी शुभदायक रहता है। माणिक्य ३ रत्ती से कम वज़नी नहीं होना चाहिए, अधिक वज़नी हो तो अधिक अच्छा रहेगा। अँगूठी में प्रयुक्त होने वाले स्वर्ण का वज़न कम-से-कम ५ रत्ती होना चाहिए। अँगूठी में रत्न (माणिक्य) को इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि अंगूठी के रत्न का निम्न भाग अँगुली की त्वचा का स्पर्श करता रहे। रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब प्रातः ६ से १२ बजे के मध्य माणिक्य जटित अँगूठी का निर्माण कार्य प्रारंभ करना चाहिए। पुष्य नक्षत्र के अभाव में उत्तराषाढा अथवा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र वाले रविवार को भी अँगूठी बनवाई जा सकती है। स्वर्ण के अभाव में ताँबे की अँगूठी में भी माणिक्य जड़वाया जा सकता है। माणिक्य के अभाव में लालड़ी, सङ्‌ माणिक, माणिक सिंगली, संग सिन्दूरिया, संग टोपाज़, संग आतशी, कटकिस अथवा तामड़ा को भी जड़वाया जा सकता है। ये उपरत्न माणिक्य से क्रमशः कम प्रभाव वाले होते हैं। माणिक्य अथवा किसी अन्य उपरत्न को अँगूठी में जड़वाने से पूर्व उसके निर्दोष होने की परीक्षा कर अथवा करा लेना आवश्यक है, क्योंकि दोषी रत्न लाभ के स्थान पर हानि पहुँचाने वाला सिद्ध होता है।

अंगूठी के तय्यार हो जाने पर, उसके रत्न को "ॐ ह्रीं हंसः सूर्याय नमः" - इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करना चाहिए। फिर पूजन तथा हवन करना चाहिए। पूजन तथा हवन के लिए प्रातः १० बजे का समय सर्वश्रेष्ठ माना गया है। सवा पाँच तोले चाँदी का सूर्यासन बनवाकर, उस पर दो माशा वजनी सूर्य की स्वर्ण-मूर्ति प्रतिष्ठित करे, फिर रत्न-जटित अँगूठी को भी उसी सूर्यासन पर रखकर अंगूठी तथा सूर्य-मूर्ति का षोडशोपचार पूजन करे तथा पूर्वोक्त मन्त्र द्वारा

अँगूठी को अभिमन्त्रित करे। कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मण को उचित है कि वह सर्व प्रथम 'ॐ ह्रीं हंसः सूर्याय नमः'— इस मन्त्र से अँगूठी तथा यजमान को अभिमन्त्रित कर, अँगूठी के रत्न में सूर्य की प्राण-प्रतिष्ठा करे, तदुपरान्त हवन-पूजन आदि कृत्य कराये। (सूर्य यन्त्र का स्वरूप अन्तिम पृष्ठ पर देखें)।

उक्त कर्मों की समाप्ति के बाद यजमान को उचित है कि वह सूर्यासन, सूर्य-मूर्ति तथा सूर्य के दान की वस्तुओं को एक डोरे से माणिक्य के साथ, कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मण को दान करदे तथा स्वयं माणिक्य अथवा उपरत्न जटित अँगूठी को अपने दाँये हाथ की अनामिका अँगुली में धारण करे। इस प्रकार विधि पूर्वक धारण की गई अँगूठी सूर्यकृत दोषों का परिहार करके मनोवांछित फल प्रदान करती है। माणिक्य अथवा उपरत्नों के अभाव में चाँदी के सूर्य अथवा बिल्वपत्र की जड़ को धारण करना भी हितकर रहता है।

माणिक्य अथवा सूर्य के पूर्वोक्त अन्य उपरत्नों का प्रभाव अँगूठी में जड़वाने के दिन से 4 वर्ष तक बना रहता है, तत्पश्चात उसका प्रभाव क्षीण होजाता है। अतः प्रति 4 वर्ष बाद नये रत्नवाली नई अँगूठी बनवाकर पूर्वोक्त विधि से धारण करनी चाहिए तथा पुराने रत्न और अँगूठी को बेच अथवा दान कर देना चाहिए। अन्य व्यक्ति के पास पहुँच कर पुराना रत्न पुनः 4 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है। इसी प्रकार हर 4 वर्ष बाद नये व्यक्ति के पास पहुँचते रहने से वह निरन्तर प्रभावकारी बना रहता है।

(4) मन्त्रोपचार— यदि दान अथवा माणिक्य धारण करना संभव न हो तो आगे लिखे किसी भी मन्त्र को निश्चित संख्या में स्वयं जप करते रहने से भी सूर्यकृत अनिष्ट दूर होते हैं। यदि स्वयं मन्त्र जप कर पाना संभव न हो तो किसी सुयोग्य ब्राह्मण से मन्त्र-जप कराना चाहिए।

(१) "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेनसविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । सूर्याय नमः" — इस मन्त्र की जप-संख्या ७००० है । (२) 'ॐ रं रवये नमः' — यह सूर्य का लघु-मन्त्र है । इसकी जप-संख्या ७००० है । (३) 'जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोऽरिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्' — इस मन्त्र का यथाशक्ति संख्या में नित्य जप करना चाहिए । स्नान तथा दान के समय भी इस मन्त्र का उच्चारण शुभ फलदायक रहता है । (४) 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" — इस मन्त्र की जप-संख्या भी ७००० है ।

(५) अन्य उपाय – (१) यदि सूर्य सन्तान-पक्ष के लिए बाधा कारक हो तो 'हरिवंश पुराण' सुनना हितकर रहता है । (२) सूर्यकृत दोष के शमनार्थ रविवार का व्रत करना भी शुभ रहता है । (३) साम्ब पुराण में वर्णित 'सूर्य स्तोत्र' का नित्य पाठ करने से मनुष्य समस्त पाप तथा बन्धनों से छूट कर आरोग्य एवं मुक्ति प्राप्त करता है । (४) 'सूर्य प्रातः स्मरण स्तोत्र', सूर्याष्टक', सूर्यमण्डलाष्टक, तथा 'त्रैलोक्य मङ्गल सूर्य कवच' का तीनों संध्या काल में पाठ करने वाला व्यक्ति रोग, दोष एवं भूत-प्रेतादि की बाधाओं से मुक्त होकर अभीप्सित फल प्राप्त करता है । 'त्रैलोक्य मङ्गल सूर्य कवच' को गोरोचन, कुंकुम तथा अगर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखकर, संक्रान्ति अथवा सप्तमी तिथि वाले रविवार को त्रिलोह के ताबीज में भर कर, दाँई भुजा (स्त्री के लिए बाँई भुजा) अथवा कण्ठ में धारण करने वाला व्यक्ति त्रैलोक्य-विजयी होता है । (५) रोग-विनाश के लिए 'ह्रां ह्रीं सः सूर्याय नमः' — इस मन्त्र का नित्य १०८ बार जप करते रहने से रोग दूर होने में सहायता मिलती है तथा रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है । (६) नित्य प्रातःकाल सूर्य को अर्घ्य देने तथा प्रणाम करने से भी मनोभिलाषाएं पूर्ण होती हैं ।। इति ।।

चन्द्र- 'पद्म पुराण' के अनुसार ब्रह्मा के पुत्र महर्षि अत्रि ने एक बार 'अनुत्तर' नामक घोर तप किया। तप की समाप्ति पर उनके नेत्रों से जल की बूँदें गिरीं, जिन्हें दिशाओं ने स्त्रीरूप में उपस्थित हो कर पुत्र-प्राप्ति के उद्देश्य से ग्रहण कर लिया, परन्तु वे उस गर्भ रूप जल को धारण करने में असमर्थ रहीं, तब उनके द्वारा परित्यक्त उस जल को ब्रह्मा ने एक युवा पुरुष के रूप में परिवर्तित कर दिया और ब्रह्मलोक में ले जाकर उसका नाम 'चन्द्रमा' रक्खा। वहाँ देव, गन्धर्व, अप्सरा एवं ऋषि-मुनियों द्वारा स्तुति किए गए चन्द्रमा के तेज में अत्यधिक वृद्धि हुई। फिर दक्ष प्रजापति ने अपनी २७ कन्याओं का विवाह चन्द्रमा के साथ कर दिया। तदुपरान्त चन्द्रमा ने इन्द्र लोक में राजसूय यज्ञ करके महान् ऐश्वर्य तथा यश को प्राप्त किया।

पौराणिक मतानुसार चन्द्रमा की स्थिति सूर्य-रश्मियों से १ लाख योजन की ऊँचाई पर है। इसकी गति अत्यन्त तीव्र है, अतः यह सूर्य संचरण के एक वर्ष के मार्ग को एक मास में तथा एक नक्षत्र-राशि को २½ दिन में पार कर लेता है। सूर्य तथा चन्द्रमा जब परस्पर ६ राशि के अन्तर पर आते हैं, उस समय पूर्णिमा होती है। सूर्य की परिक्रमा करते रहने के साथ ही चन्द्रमा पृथ्वी की भी परिक्रमा करता रहता है। यह २१८० मील प्रति घण्टे की गति से चलकर २७ दिन, ७ घण्टा, ४३ मिनट तथा ११ सैकिण्ड अर्थात् लगभग २७½ दिन में सौर मण्डल की परिक्रमा कर लेता है। गोचर में चन्द्रमा प्रत्येक राशि-संक्रमण की अन्तिम ३ घटी (१ घंटा १२ मिनट पहले) में अपना विशिष्ट फल देने लगता है जन्मराशि से विभिन्न स्थानों पर चन्द्रमा का गोचर-फल इस प्रकार कहा गया है- (१) जन्म राशि में होने पर जातक को धन अथवा अन्न का लाभ कराता है। द्वितीय में धन-नाश, तृतीय में द्रव्य-लाभ, चतुर्थ में कुक्षि-रोग

अथवा नेत्र-पीड़ा, पंचम में कार्य-नाश, षष्ठ में धन-लाभ, सप्तम में द्रव्य तथा स्त्री-लाभ, अष्टम में मृत्युतुल्य कष्ट, नवम में राज-भय, दशम में सुख-लाभ एकादश में धन लाभ तथा द्वादश में हो तो रोग एवं धन-क्षय करता है। मतान्तर से - प्रथम चन्द्र कल्याणकारी, द्वितीय में मनस्तोष कारक, तृतीय में धन दायक, चतुर्थ में कलहकारक, पंचम में ज्ञान-वृद्धि, षष्ठ में श्रेष्ठ सम्पत्तिदायक, सप्तम में मान-वृद्धि, अष्टम में मृत्यु-भय, नवम में अर्थ-लाभ, दशम में सम्मान-प्राप्ति, एकादश में सर्वलाभ तथा द्वादश में हानिकारक होता है।

पूर्णचन्द्र को सौम्य तथा क्षीण चन्द्र को पापग्रह माना गया है। चन्द्रमा से प्रथम, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, दशम तथा एकादश भाव में स्थित ग्रह शुभ होते हैं। पंचम, नवम, द्वादश, चतुर्थ तथा अष्टम एवं द्वितीय विद्ध स्थान है। विद्ध स्थानों में बुध-रहित कोई ग्रह नहीं होना चाहिए, अन्यथा विद्ध चन्द्रमा शुभ स्थान पर होते हुए भी अशुभ फल देता है। सूर्य की भाँति चन्द्रमा भी सदा मार्गी तथा उदित रहता है। कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तथा चतुर्दशी को चन्द्रमा 'वृद्ध', अमावास्या को 'मृत' तथा शुक्ल-प्रतिपदा को 'बाल' माना ...... है, अतः ये चार तिथियाँ शुभ कर्मों के लिए त्याज्य मानी गई हैं। चन्द्रमा की स्वराशि कर्क है। यह वृषराशि में उच्चस्थ एवं मूल त्रिकोणस्थ तथा वृश्चिक में नीचस्थ माना जाता है। सूर्य तथा बुध चन्द्रमा के नैसर्गिक मित्र, राहु तथा केतु शत्रु एवं मंगल, शुक्र तथा शनि सम माने गये हैं।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित चन्द्रमा अपने दोषी-प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है

(१) केन्द्र स्थित चन्द्रमा क्षीण प्रभाव वाला होता है, अतः वह पूर्ण शुभ फल नहीं देता। (२)
सूर्य से युक्त चन्द्रमा क्षीण प्रभाव वाला होने के कारण शुभ फल नहीं दे पाता। (३) सूर्य जिस राशि
में स्थित हो, उससे अगली पाँच राशियों में से किसी भी राशि में स्थित चन्द्रमा भी क्षीण
माना जाता है। (४) यदि चन्द्रमा द्वितीयेश होकर मिथुन लग्न में बैठा हो तो अशुभ फल
देता है। (५) यदि चन्द्रमा अपनी राशि से छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो भी अशुभ
फल देता है। (६) यदि चन्द्रमा छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में स्थित हो तो अशुभ फलकार-
-क होता है। (७) यदि चन्द्रमा राहु, केतु अथवा शनि में से किसी भी एक अथवा अधिक ग्रहों
के साथ हो तो भी अशुभ फल देता है। (८) यदि चन्द्रमा पर राहु, केतु, शनि अथवा मंगल में
से किसी एक अथवा अधिक ग्रहों की दृष्टि हो तो भी अशुभ फल देता है। (९) यदि चन्द्रमा
किसी भी भाव में वृश्चिक राशि पर स्थित हो तो अशुभ फल देता है। (१०) यदि चन्द्रमा नीच,
वक्री अथवा अस्तंगत हो तो अशुभ फल देगा। (११) यदि चन्द्रमा के साथ बैठा हुआ राहु
ग्रहण योग बना रहा हो तो चन्द्रमा अशुभ फल देता है। (१२) यदि चन्द्रमा तृतीयभाव में
हो तो जातक को कफ-रोगी बनाता है। (१३) यदि चन्द्रमा षष्ठभाव में हो, तो जातक कफ-
रोगी, अल्पायु तथा नेत्र-रोगी होता है। (१४) यदि चन्द्रमा अष्टमभाव में बैठा हो तो जातक
प्रमेह रोगी होता है तथा बन्धन के कारण दुःखी होता है। (१५) यदि चन्द्रमा द्वादशभाव में
हो तो जातक कफ-रोगी, नेत्र-रोगी तथा चिन्तन-शील होता है। (१६) यदि चन्द्रमा (क)
पंचमेश होकर द्वितीय भाव में, (ख) सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में, (ग) द्वितीयेश होकर सप्तमभाव में,
(घ) पञ्चमेश होकर नवम भाव में, (ङ) एकादशेश होकर षष्ठभाव में, अथवा (च) सप्तमेश

होकर द्वादश भाव में, (छ) नवमेश होकर चतुर्थ भाव में, (ज) चतुर्थेश होकर नवमभाव में, (झ) नवमेश होकर द्वितीय भाव में, (ञ) एकादशेश होकर चतुर्थ भाव में अथवा (ट) दशमेश होकर तृतीय भाव में बैठा हो तो अशुभ फलकारक होता है।

चन्द्रमा जातक के जीवन पर प्रायः २४, २५ वर्ष की आयु में अपना शुभ अथवा अशुभ फल प्रदर्शित करता है। मेष, तुला, वृश्चिक तथा मीन लग्न में चन्द्रमा योग कारक होता है। रोहिणी, श्रवण, पुनर्वसु, विशाखा तथा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में स्थित चन्द्रमा शुभ फल प्रदान करता है तथा कृत्तिका, उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा एवं रेवती नक्षत्रों पर स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देता है।

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा की अशुभ स्थिति होने पर चन्द्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय हितकर सिद्ध होते हैं:-

(१) औषध-स्नान - गाय का दूध, दही, घृत, गोबर तथा मूत्र एवं हाथी का मद, सीप, शंख, स्फटिक एवं श्वेत चन्दन से युक्त जल द्वारा स्नान करने से चन्द्रकृत पीड़ा का निवारण होता है।

(२) मुक्ता-दान - जिन लोगों के लिए चन्द्रमा अरिष्ट अथवा अनिष्टकारक हो, उन्हें मोती का दान करना शुभ कहा गया है। सोमवार के दिन पांच तोला वज़नी चाँदी के पत्र पर चन्द्रमा का यन्त्र खुदवा कर, उसके मध्यभाग में एक मोती (अभाव में श्वेत पुखराज) जड़वा कर, उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके ३ अथवा ६ दिनोंतक यन्त्र का षोडशोपचार पूजन करना चाहिए तथा हवन करना चाहिए। यदि चन्द्रमा का अरिष्ट प्रबल हो तो ६० दिनोंतक

नित्य नियमित रूप से पूजन तथा हवन करना चाहिए। पूजावधि समाप्त होने पर उक्त मुक्ता युक्त यन्त्र को आगे लिखी वस्तुओं के साथ किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर देना चाहिए

४० ३९ २४ ३८ २३
४१ ६ ५३ ९ ८ २२
१५ ३७ १६ ४५ १
५ ४४ ४६ २५
१४ ४३
३६ २७ ५२ १८ २८
२६ १३ ४ ५९ २ २७
७ २० २९
३४ ३३ ३०
६० ३५ ३२ ३ ५९ ११
४२ १२ २१ ३१ ४९
५१ ५४ ५० १० ४७
५७ ५५ ५८ ५६ ४८

(१) श्वेत बैल अथवा दो गायें, (२) चावल, (३) बाँस का पात्र (टोकरी आदि), (४) शंख, (५) कपूर, (६) घृत, (७) दही, (८) चीनी अथवा मिश्री, (९) श्वेतवस्त्र एवं (१०) श्वेत पुष्प। इनके अतिरिक्त जल पूर्ण कुम्भ (घड़ा) तथा दक्षिणा।

चन्द्र-यन्त्र के स्वरूप को बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है। इस विधि से मुक्ता-दान करने पर चन्द्रकृत रोग-दोष की शान्ति होती है तथा घर में लक्ष्मी का स्थायी निवास बना रहता है।

(३) रत्न-धारण- चन्द्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ चन्द्रमा के रत्न मोती अथवा उसके उप-रत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभ फलदायक सिद्ध होता है। रत्न (मोती) धारण की विधि निम्नलिखित है—

कान्ति युक्त, तल-रहित (लुढ़कने वाले अर्थात् गोल) लाल, पीले, श्वेत अथवा श्याम वर्ण के गोल तथा मोटे मोती को शरीर पर धारण करना चाहिए। इनमें

श्वेत रंग का मोती सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मोती को बिना बिंधवाये, श्वेत रंग के वस्त्र में लपेट कर
धारण करना चाहिए। यदि बिंधवा कर ही पहिनना हो तो उसे धारण करते समय ही बिंधवाना चाहिए।
पुरुष को अपनी दाँईं भुजा अथवा कण्ठ में एवं स्त्री को अपनी बाँईं भुजा अथवा कण्ठ में मोती को
धारण करना चाहिए।

मोती के अभाव में चाँदी, वंशलोचन, दुद्दी की जड़ अथवा पिण्ड खजूर को भी धारण
किया जा सकता है और वह शुभ फलदायक होता है।

यदि मोती को अँगूठी में जड़वा कर धारण करना अभीष्ट हो तो गुरुवार अथवा
रविवार के दिन जब पुष्य नक्षत्र हो, तब प्रातः काल सूर्योदय से १० बजे के मध्य ४ रत्ती अथवा
इससे अधिक वज़नी मोती को चाँदी की अँगूठी में जड़वायें। मोती को इस प्रकार जड़वाना चाहिए
कि उसका तल भाग अँगुली की त्वचा को स्पर्श करता रहे। अँगूठी के तय्यार हो जाने पर, किसी
सोमवार को जब पुष्य, रोहिणी, हस्त अथवा श्रवण नक्षत्र हो, तब प्रातः १० बजे बाद सर्वप्रथम
५ तोला ८ रत्ती वज़नी चाँदी के सिंहासन (चन्द्रासन) पर मुक्तायुक्त अँगूठी को रख कर, उसका
षोडशोपचार पूजन करें तथा 'ॐ सों सोमाय नमः' — इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए
हवन करें तथा अग्नि में घृत, प्रियंगु, गुग्गुल एवं तिल की ८०० आहुतियाँ दें। फिर मोती में
प्राण प्रतिष्ठा करके पूर्णाहुति के पश्चात अँगूठी को बाँये हाथ की तर्जनी में अथवा कनिष्ठा
अँगुली में पहिन लें एवं पूर्वोक्त चन्द्र-दान की वस्तुओं को एक छोटे से मोती तथा दक्षिणा
सहित किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। मोती के अभाव में श्वेत पुखराज अर्थात
चन्द्रमणि अथवा निमरु, शंखजोड़, सफेद संग, नीलासंग अथवा सङ्ग गौरी — इन उपरत्नों

को भी अँगूठी में जड़वा कर पहिना जा सकता है। अँगूठी में जड़वाने के दिन से आरंभ करके २ वर्ष, १ मास तथा २७ दिन तक मोती प्रभावकारी बना रहता है, तदुपरान्त दूसरा मोती जड़वाना चाहिए।

(३) मन्त्रोपचार- चन्द्रकृत पीड़ा-निवारण में आगे लिखे मन्त्र भी सहायक सिद्ध होते हैं— (१) 'ॐ इमं देवा ऽअसपत्नᳪ सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश ऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाᳪ राजा। चन्द्राय नमः।'— इस मन्त्र की जप-संख्या ११००० है। (२) 'ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः'— इस मन्त्र की जप-संख्या भी ११००० है। (३) 'ॐ सौं सोमाय नमः'—यह चन्द्रमा का लघु मन्त्र है। इसकी जप संख्या भी ११००० है। (४) 'दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुट भूषणम्'— इस मन्त्र का स्नान अथवा दान के समय उच्चारण करते रहना चाहिए। ये सभी मन्त्र चन्द्रकृत अरिष्ट-दोष-निवारक तथा अभीप्सित फल दायक सिद्ध होते हैं।

(४) अन्य-(१) चन्द्र के दोषी-प्रभाव को शान्त करने के लिए सोमवार को व्रत रखना शुभ माना गया है। (२) यदि चन्द्रमा सन्तान-पक्ष के लिए निर्बल अथवा अनिष्टकर हो तो शिवजी की आराधना करना शुभ रहता है।

मङ्गल— पुराणों के अनुसार सौरमण्डल में मंगल की स्थिति बुध से २ लाख योजन ऊपर मानी गई है। यह भी कहा गया है कि यह ग्रह यदि वक्र गति से न चले तो ४५ दिन में एक राशि पर [illegible]ण करता हुआ कुल १½ वर्ष में सम्पूर्ण राशि चक्र को पार कर लेता है।

इसे पृथ्वी का पुत्र माना गया है, अतः इसके भूमिपुत्र, भौम, कुज आदि नाम भी हैं। यह अनेक कल्पित-कथाओं का पुंज भी है। नवग्रह मण्डल में इसे सेनापति का पद प्राप्त है तथा इसे युद्ध अथवा रोमांस का देवता भी माना जाता है। पृथ्वी से मंगल की दूरी ६,२२,००,००० मील मानी जाती है, परन्तु यह हर पन्द्रहवें वर्ष पृथ्वी के बहुत पास आ जाता है। उस समय पृथ्वी से इसकी दूरी केवल ३,९६,००,००० मील ही रह जाती है। इसका व्यास ४२२५ मील का है। सूर्य की परिक्रमा करने में इसे ६८७ दिन लगते हैं। इसकी गति में परिवर्तन होता रहता है। जब यह सूर्य के समीप पहुँचने को होता है, उस समय इसकी गति अत्यन्त तीव्र हो जाती है।

गोचर फल — मंगल किसी भी राशि पर पहुँचने के ८ दिन पूर्व से ही फल देना आरंभ कर देता है। राशि-भ्रमण के प्रथम ८ दिन ही इसके गोचर-फल के माने गये हैं। झगड़ा-मुकद्दमा आदि में भौम-बल को ही प्रधान माना जाता है। जन्म राशि से विभिन्न स्थानों में स्थित मंगल का गोचर-फल इस प्रकार माना गया है — जन्म राशि में हो तो शत्रु-भय, द्वितीय भाव में हो तो धन-नाश, तृतीय में अर्थ-लाभ, चतुर्थ में शत्रु-क्षय (मतान्तर से-शत्रु-पीड़ा), पंचम भाव में हो तो धन-क्षय (मतान्तर से-प्राण-हानि), षष्ठ भाव में हो तो द्रव्य-लाभ, सप्तम में हो तो शोक-व्याधि, अष्टम में हो तो शत्रु-भय (मतान्तर से-अस्त्राघात), नवम में हो तो कार्य-नाश, दशम भाव में हो तो शोक-व्याधि (मतान्तर से-शुभ), एकादश में हो तो वस्त्र-भूमि लाभ एवं द्वादश में हो तो रोग एवं धन-लाभ।

मंगल के शुभ स्थान तृतीय, षष्ठ और एकादश तथा विद्ध स्थान द्वादश, नवम और पंचम हैं। विद्ध स्थानों पर किसी ग्रह की स्थिति हो तो मंगल अशुभ फल देता है, भले ही वह

शुभ क्यों न हो। सूर्य की भाँति ही इसके भी नामवेध का विचार करना चाहिए। यह सूर्य-चन्द्र की भाँति सदैव मार्गी न रह कर समय-समय पर अस्त, मार्गी तथा वक्री होता रहता है।

मङ्गल मुख्यतः जातक के जीवन में २८ से ३२ वर्ष की आयु तक अपना शुभ अथवा अशुभ प्रभाव प्रकट करता है। जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित मंगल अपने दोषी प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है—

(१) यदि मंगल जन्मकुण्डली में वक्री अथवा अस्त हो तो अशुभ फल देता है। (२) यदि षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में बैठा हो, तो अशुभ होता है। (३) यदि अष्टमेश अथवा षष्ठेश के साथ युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध हो तो अशुभ होता है। (४) यदि शत्रु ग्रहों के बीच बैठा हो तो अशुभ होता है। (५) यदि किसी भाव में बैठ कर लग्न, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम, अथवा एकादश भाव को देख रहा हो तो अशुभ फल कारक होता है। (६) यदि चन्द्रमा, राहु अथवा शनि के साथ हो, तो अशुभ होता है। (७) यदि शुभ भावों का स्वामी होकर शत्रु राशि में बैठा हो तो अशुभ फल देता है। (८) यदि (क) लग्नेश होकर षष्ठ भाव में, (ख) द्वितीयेश होकर सप्तम अथवा नवम भाव में, (ग) तृतीयेश होकर दशम भाव में, (घ) चतुर्थेश होकर नवम अथवा एकादश भाव में (ङ) पंचमेश होकर दशम अथवा द्वादश भाव में, (च) सप्तमेश होकर द्वादश भाव में, (छ) नवमेश होकर द्वितीय अथवा चतुर्थ भाव में तथा (ज) एकादशेश हो कर चतुर्थ अथवा षष्ठ भाव में बैठा हो तो अशुभ फल कारक होता है। इसके अतिरिक्त (१) लग्नस्थ मंगल जातक को क्रूर तथा गुप्त रोगी बनाता है। ऐसा व्यक्ति लौह आदि धातु के शस्त्रादि के अथवा व्रणजन्य कष्ट को भोगता है। (२) द्वितीयभावस्थ मंगल जातक को धन-हीन, नेत्ररोगी

चर्मरोगी तथा कौटुम्बिक-क्लेश से युक्त बनाता है। (३) तृतीय भावस्थ मंगल भाइयों से विरोध कराने वाला अथवा भ्रातृकष्टकारक होता है। (४) चतुर्थभावस्थ मंगल जातक की पत्नी को रुग्ण बनाता है एवं मातृ-सुख हीन करता है। साथ ही जातक को अग्निभय, अपमृत्यु-भय तथा अल्प-मृत्यु भय भी देता है। ऐसा जातक बन्धु-विरोधी भी होता है। (५) पंचमभावस्थ मंगल जातक को कृश-शरीर, उदर-रोगी, गुप्ताङ्ग रोगी, व्यसनी तथा संतति-क्लेश युक्त बनाता है। (६) षष्ठभावस्थ मंगल जातक को ऋणी, क्रोधी, चर्मरोगी, रक्तविकारी तथा व्रण आदि व्याधियों से दुःखी बनाता है। (७) सप्तम भावस्थ मंगल जातक को स्त्री-दुःखी, कटु-भाषी, निर्धन, घातकी तथा धन-नाशक बनाता है और उसकी पत्नी के जीवन के लिए भी अशुभ होता है। (८) अष्टम भावस्थ मंगल जातक को व्याधिग्रस्त, व्यसनी, मद्यपी, उन्मत्त तथा धन के लिए चिन्तित बनाता है। ऐसा व्यक्ति नेत्र-रोगी, रक्तविकार युक्त एवं अग्नि, शस्त्र तथा चोर से भय पाने वाला होता है। (९) नवम भावस्थ मंगल जातक को द्वेषी, क्रोधी, अहंकारी, भ्रातृ-विरोधी तथा ईर्ष्यालु बनाता है। (१०) दशम भावस्थ मंगल जातक को सन्तान-कष्ट देता है। (११) एकादश भावस्थ मंगल जातक को क्रोधी, दम्भी तथा झगड़ालू प्रकृति का बनाता है एवं (१२) द्वादश भावस्थ मंगल जातक की स्त्री का नाशक होता है एवं जातक को नेत्र-रोगी, मूर्ख, पापी, झगड़ालू, उग्र स्वभावी तथा ऋणी बनाता है।

जन्म कुण्डली में मंगल की अशुभ-स्थिति हो तो मंगलकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपायों को करना पीड़ा-शामक, हितकर तथा मनोभिलाषा की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध होता है।

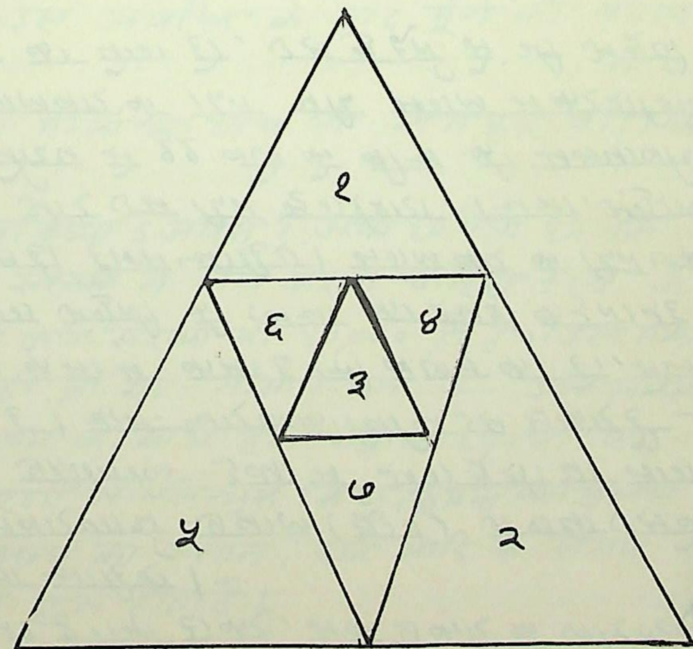
मु० सं० ११०३

भा० टी०

(१) औषध-स्नान - लाल-चन्दन, लाल पुष्प, बेल की छाल, जटामांसी, मौलश्री, खिरैंटी, हींग, गोंदनी, मालकांगुनी तथा सिंगरफ मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से मंगलकृत् पीड़ा शान्त होती है।

(२) प्रवाल-दान - जिनके लिए मंगल अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो, उन्हें प्रवाल अर्थात् मूँगा दान करना शुभ तथा हितकर रहता है। प्रवाल-दान करने की विधि इस प्रकार है -

मंगल वार के दिन ताम्रपत्र के ऊपर मंगल-यन्त्र को अंकित करवा (खुदवा) कर, उसके मध्य में एक छोटा सा मूँगा जड़वायें। 'मंगल यन्त्र' का स्वरूप दाँई ओर प्रदर्शित है। फिर, सात दिन तक उस यन्त्र का षोडशोपचार पूजन करें तथा 'ॐ भूमि सुताय नमः' इस मन्त्र का २८००० की संख्या में जप करें अथवा किसी विद्वान् ब्राह्मण से करायें। तदुपरान्त, आठवें दिन उक्त यन्त्र को मंगलवार के ही दिन आगे लिखी वस्तुओं के साथ किसी ब्राह्मण को दान करदें। ब्राह्मण सुपात्र तथा विद्वान् होना चाहिए। वस्तुओं के नाम यह हैं - (१) पीले रंग की गाय अथवा लाल रंग का बैल, (२) स्वर्ण, (३) लाल वस्त्र, (४) मसूर, (५) गुड़, (६) लाल चन्दन, (७) घृत, (८) केसर, (९) कस्तूरी, (१०) गेहूँ, (११) लाल कनेर, अथवा [illegible]



उक्त विधि से प्रवाल (मूंगा) दान करने से मंगलकृत बाधा शान्त होकर, सब प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं। मंगल के यन्त्र को तिकोने ताम्रपत्र पर खुदवाना चाहिए।

(३) रत्न-धारण - मंगलकृत पीड़ा के निवारणार्थ प्रवाल (मूंगा) अथवा उसके प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभ रहता है। मूंगे के प्रतिनिधि-द्रव्यों में संगमूसी या नाग जिह्वा अथवा गोजिह्वा जड़ी को धारण किया जा सकता है। रत्न-धारण की विधि इस प्रकार है -

पीलापन लिए हुए लाल रंग का मूँगा, जो कम-से-कम ६ रत्ती वज़न का हो, सोने की अँगूठी में इस प्रकार से जड़वाये कि उसका तल भाग अंगुली की त्वचा का स्पर्श करता रहे। अँगूठी के लिए सोने (स्वर्ण) का वज़न ८ रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। मंगलवार के दिन जब चन्द्रमा अथवा मंगल मेष अथवा वृश्चिक राशि पर हो और उस दिन मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा अथवा धनिष्ठा नक्षत्र भी हो, उस दिन प्रातः काल सूर्योदय से ११ बजे के बीच की समयावधि में सोने की अँगूठी बनवा कर, उसमें मूंगा जड़वाये। मंगलवार के दिन यदि मंगल मकरराशि में हो अथवा जिस दिन सूर्य-मंगल अथवा चन्द्र-मंगल का योग हो, उस मुहूर्त में भी अँगूठी का निर्माण कराना शुभ रहता है।

अँगूठी के तय्यार हो जाने पर अगले किसी मंगलवार को ही प्रातः ११ बजे बाद ताँबे के त्रिकोण पत्र पर पूर्वोक्त मंगल-यन्त्र खुदवा कर, उस यन्त्र के ऊपर मूँगा-जटित अँगूठी को रख कर षोडशोपचार पूजन करें तथा आगे लिखे 'ॐ अग्निर्मूर्द्धा०' इत्यादि मन्त्र का जप करें। अन्त में कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मण से 'ॐ भौं भौमाय नमः' इस लघु-मन्त्र का उच्चारण कराते हुए ८०० आहुतियाँ देकर, हवन करें। फिर, पूर्णाहुति के बाद अँगूठी के

रत्न में मंगल की प्राण-प्रतिष्ठा करवा कर, उसे अपने बाँये हाथ की मध्यमा अँगुली में धारण करें तथा कर्मकाण्ड कराने वाले ब्राह्मण को पूर्वोक्त वस्तुओं (मंगल के लिए दान की वस्तुऐं) का दान करते हुए, यथाशक्ति दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करें तथा भौम-यन्त्र भी उसी को दान करदें।

यदि मूंगे को अँगूठी में न जड़वाना चाहें तो उसे लाल रंग के वस्त्र में लपेट कर कंठ अथवा भुजा में भी धारण किया जासकता है। मूँगे के अभाव में उसके प्रतिनिधि रत्नों को भी उक्त विधि से ही धारण करना चाहिए। धारण करने अथवा अँगूठी में जड़वाने के दिन से ३ वर्ष तक मूँगा प्रभावकारी बना रहता है। इस अवधि के बाद मूँगे को बदल देना चाहिए।

(४) मन्त्रोपचार – मंगल के निम्नलिखित मन्त्रों का जप भी भौमकृत पीड़ा के निवारण में सहायक होता है –

(१) 'ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या ऽ अयम्। अपा ँ० रेता ँ० सि जिन्वति। भौमाय नमः।" – इस मन्त्र का १०,००० की संख्या में जप करना चाहिए। (२) 'ॐ भौं भौमाय नमः' – यह मंगल का लघु-मन्त्र है। इसकी जप-संख्या भी १०,००० ही है। इस मन्त्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है। (३) 'ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः' – इस मन्त्र का भी १०,००० की संख्या में जप करना चाहिए। मन्त्र-जप के साथ ही 'रुद्राष्टाध्यायी' का पारायण करना विशेष फलदायक रहता है। (४) 'धरणी गर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्ति हस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्' – उक्त मन्त्र का स्नान, दान आदि के समय अथवा किसी भी अन्य समय जप अथवा उच्चारण करना शुभ होता है।

(ख) अन्य - (१) मंगलवार को व्रत रखने से भी मंगलकृत_ अरिष्ट के प्रभाव की शान्ति होती है। दिन में व्रत रख कर, सूर्यास्त के बाद भोजन करना चाहिए। यदि संभव हो तो प्रत्येक मंगलवार को प्रातः स्नान करने के बाद लाल रंग की गाय का लाल चंदन तथा लाल पुष्प से पूजन करके, उसे मसूर की दाल तथा गुड़ का नैवेद्य दिखाने के बाद खिलाना चाहिए तथा उस दिन स्वयं बिना नमक का भोजन करना चाहिए। मुख्यतः आटा एवं गुड़ खाने से अधिक लाभ होता है।

(२) यदि मंगल सन्तान के लिए बाधक हो तो 'रुद्राभिषेक' करना चाहिए।

(३) ऋणग्रस्तता से छुटकारा पाने के लिए 'ऋणमोचक मंगलस्तोत्र' का पाठ करना हितकर रहता है। इस से ऋण से मुक्ति मिल कर, धन की वृद्धि होती है। 'ऋणमोचकमंगल स्तोत्र' निम्नानुसार है —

"मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः। स्थिरासनो महाकायो सर्वकर्माविरोधकः ॥१॥ लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः। धरात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः ॥२॥ अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः। वृष्टे कर्ताऽपहर्ता च सर्वकाम फलप्रदः ॥३॥ एतानि कुज नामानि नित्यं यः श्रद्धया पठेत्। ऋणं न जायते तस्य धनं शीघ्रमुवाप्नुयात् ॥४॥ एकविंशति नामानि पठित्वा तु तदन्तिके। रूपवान् धनवांश्चैव जायते नात्र संशयः ॥५॥ एक कालं द्विकालं च यः पठेत्सुसमाहितः। एवं कृते न संदेहो ऋणं हत्वा सुखी भवेत् ॥६॥ धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति सम प्रभम्। कुमारं शक्ति हस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम् ॥७॥" इति ॥

भौमारिष्ट निवारण के उपायों को यथासंभव मंगलवार को दो घड़ी दिन चढ़े

करना विशेष फलदायक रहता है।

बुध- पुराणों के अनुसार बुध चन्द्रमा की पत्नी रोहिणी के पुत्र हैं। आद्य देव वैवस्वत मनु की पुत्री इला बुध की पत्नी हैं। इला के गर्भ से उत्पन्न तथा 'पुरुरवा' के नाम से विख्यात बुध के धर्मात्मा पुत्र ने १०० से भी अधिक अश्वमेध यज्ञ किए थे।

आकाश मण्डल में शुक्र से दो लाख योजन ऊपर बुध की स्थिति बताई गई है। इसकी गति शुक्र के अनुसार ही रहती है। जिस समय यह सूर्य की गति का उल्लंघन करता हुआ राशि-संचरण करता है, उस समय पृथ्वी पर आँधी, बादल अथवा सूखे का भय उपस्थित होता है। नवग्रह मण्डल में बुध को 'राजकुमार' का पद प्राप्त है। पृथ्वी से बुध की दूरी ३ ६८,४१,४६० मील आँकी गई है। इसका व्यास ३१४० मील का है। यह सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। इसकी औसत चाल ३० मील प्रति सैकिण्ड मानी गई है। यह स्थूलरूप से लगभग २५ दिन में, एक राशि में संचरण पूरा करता है। सूर्य की प्रदक्षिणा करने में इसे लगभग २८ दिन लगते हैं। यह ज्यों-ज्यों सूर्य से दूर तथा पृथ्वी के निकट होता जाता है, त्यों-त्यों इसका ताप क्रम घटता चला जाता है।

गोचर-फल-- बुध किसी भी राशि पर पहुँचने से ७ दिन पूर्व से ही अपना फल देना आरंभ कर देता है तथा सम्पूर्ण राशि के भोग-काल तक एक जैसा ही प्रभावशाली अर्थात फलदायक बना रहता है। जन्म राशि से विभिन्न स्थानों पर गोचर-बुध का प्रभाव इस प्रकार होता है - जन्म राशि में भय अथवा बन्धन, द्वितीय स्थान में, धन-लाभ, तृतीय में क्लेश अथवा शत्रु-वध, चतुर्थ में अर्थ-लाभ, पंचम में शत्रु-भय अथवा दुःख, षष्ठ

में स्थान-प्राप्ति, सप्तम में शरीर-पीड़ा, अष्टम में धन-लाभ, नवम में पीड़ा, दशम में सौख्य अथवा शुभ, एकादश में द्रव्य-लाभ तथा द्वादश में वित्त-नाश।

बुध के शुभ स्थान २, ४, ६, ८, १० तथा ११ हैं एवं विद्ध-स्थान ५, ३, ९, १, ८ तथा १२ हैं। बुध यदि किसी शुभ स्थान पर हो, परन्तु विद्ध-स्थानों पर कोई चन्द्र-रहित ग्रह हो तो बुध का शुभ फल भी अशुभता में परिवर्तित हो जाता है। सूर्य, शुक्र, राहु तथा केतु-ये चारों ग्रह बुध के नैसर्गिक मित्र हैं। चन्द्रमा शत्रु है अर्थात् बुध अपने पिता चन्द्रमा से शत्रुभाव रखता है, जबकि चन्द्रमा अपने पुत्र बुध से मित्रभाव रखता है। मंगल, गुरु तथा शनि से बुध समभाव रखता है। बुध यदि शुभ ग्रह से युक्त हो तो शुभ तथा पापग्रह से युक्त हो तो अशुभ माना जाता है। अकेले बुध की गणना शुभग्रह के रूप में की जाती है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित बुध अपने दोषी-प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है-

(१) यदि जातक की जन्म लग्न मिथुन अथवा कन्या हो तो बुध शुभ फलकारक नहीं होता, (२) यदि बुध शत्रुग्रहों से दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है; (३) यदि बुध मीन राशि में बैठा हो तो अशुभ फल देता है, (४) यदि बुध छठे, आठवें अथवा बारहवें भाव में बैठा हो तो भी अशुभ फलदायक होता है, (५) यदि बुध किसी अच्छे भाव का स्वामी होकर, अपने भाव से अष्टम स्थान में बैठा हो तो अशुभ फल देता है (६) यदि बुध के साथ मंगल, शनि, राहु अथवा केतु की युति हो तो अशुभ फल होता है। (७) यदि बुध लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम अथवा एकादश भाव का स्वामी होकर अपने से छठे स्थान में पड़ा हो तो

अशुभ फल दायक होता है, (८) षष्ठ भावस्थ बुध जातक को रोगी, आलसी तथा कलह-प्रिय; अष्टम भावस्थ बुध मानसिक रूप से दुःखी तथा द्वादशभावस्थ बुध आलसी बनाता है, (९) यदि बुध द्वितीयेश होकर नवम भाव में, तृतीयेश होकर दशम भाव में, चतुर्थेश होकर एकादश भाव में, सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में, नवमेश होकर चतुर्थ भाव में अथवा एकादशेश होकर षष्ठ भाव में बैठा हो तो जातक को अशुभ-फल देता है, (१०) अशुभ बुध अपनी दशा तथा अन्तर्दशा में विशेष अशुभ फल देता है।

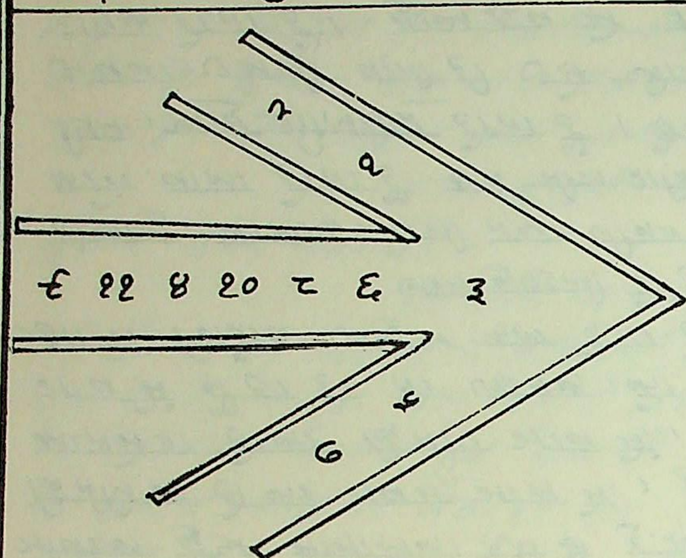
जन्म कुण्डली में बुध यदि वृश्चिक राशि में हो तो जातक अविश्वासी, स्वार्थी, शंकालु, चालाक, रोगी तथा जीवन में अनेक बार धोखा खाने वाला एवं कठिनाइयों का सामना करने वाला होता है एवं मीन राशि में हो तो उग्र-स्वभावी, विवदी, गप्पी, मन्द-बुद्धि, यात्रा-प्रिय, परन्तु शीलवान होता है। ऐसा व्यक्ति कभी या तो स्वयं अपनी पत्नी को धोखा देता है अथवा उसकी पत्नी ही उसे धोखा देती है। धनु, मकर तथा कुंभ राशि में स्थित बुध शुभफल दायक होता है। मुख्य रूप से बुध जातक के ऊपर अपना प्रभाव प्रायः ३२ से ३५ वर्ष की आयु में प्रकट करता है।

गुरु तथा चन्द्रमा के साथ बैठा हुआ बुध शुभ फल कारक, शुक्र के साथ मिश्रित फल देने वाला; राहु, केतु, शनि तथा मंगल के साथ अशुभ फल दायक एवं सूर्य के साथ होने पर अस्त माना जाता है। चतुर्थ स्थान में बुध निष्फल रहता है। बुध के शुक्र के साथ राजसी तथा चन्द्रमा के साथ शत्रुवत सम्बन्ध माने गए हैं।

बुध कृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्न लिखित उपाय हितकर माने गये हैं:-

(१) औषध-स्नान - मोती, गोरोचन, अक्षत, स्वर्ण, शहद, जायफल, पीपरामूल तथा गाय के गोबर मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से बुधकृत पीड़ा का शमन होता है।

(२) पन्ना-दान - जिनकी जन्म कुण्डली में बुध अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो, उन्हें दोष-परिहारार्थ पन्ना दान करना चाहिए। पन्ना-दान की विधि इस प्रकार है - बुधवार को ६ तोला वज़नी चाँदी के पत्र पर बुध का यन्त्र अंकित करवाकर, उसके मध्य में एक पन्ना जड़वाये। (बुध-यन्त्र का स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित है।) फिर नित्य ६ दिनों तक उस यन्त्र का



षोडशोपचार पूजन करें तथा 'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०' इत्यादि मन्त्र के द्वारा (पूरा मन्त्र आगे लिखा जाएगा) ८००० की संख्या में जप करें अथवा करावें, तदुपरान्त बुधवार के ही दिन आगे लिखी वस्तुओं के साथ उक्त यन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। वस्तुओं की सूची इस प्रकार है - (१) स्वर्ण, (२) मूंगा, (३) कांस्य, (४) हाथी दांत, (५) हरा वस्त्र, (६) शस्त्र, (७) घृत, (८) शक्कर, (९) कपूर, (१०) पीले रंग के पुष्प, (११) पन्ना, (१२) फल तथा दक्षिणा।

उक्त विधि से पन्ना-दान करने पर बुध की बाधा शान्त होकर, दानकर्त्ता की मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

(३) रत्न-धारण - बुधकृत पीड़ा के निवारणार्थ बुध के रत्न पन्ना अथवा उसके प्रतिनिधि-द्रव्यों को धार-

ण करना शुभ फलप्रद रहता है। बुधवार को मिथुन अथवा कन्या राशि में आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र हो तथा बुध अथवा सूर्य के नवमांश में बुध हो, उस दिन सूर्योदय से प्रातः १० बजे तक की समयावधि में कम-से-कम ६ रत्ती वज़न के सोने की अँगूठी बनवा कर, उसमें कम-से-कम ३ रत्ती वज़न का पन्ना इस प्रकार जड़वायें कि वह अँगुली की त्वचा का स्पर्श करता रहे। ६ रत्ती अथवा इससे अधिक वज़नी पन्ना विशेष प्रभावकारी रहता है।

अँगूठी तय्यार हो जाने पर उसी दिन ११ बजे बाद सर्वतोभद्र चक्र बना कर, उसके ऊपर चाँदी का कलश स्थापित कर, कलश का पूजन करें तथा उसके ऊपर पन्ना-जटित अँगूठी को रख कर 'ॐ ह्रां क्रौं डं ग्रहनाथाय बुधाय स्वाहा' अथवा 'ॐ ह्रां ह्रीं बुं ग्रहनाथाय बुधाय नमः' — इनमें से किसी भी एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए अँगूठी को अभिसिंचित करें। फिर पूर्वोक्त बुध-यन्त्र का (जिसे पहले से ही बनवा कर तय्यार रखना चाहिए) पूजन करें। तदुपरान्त 'ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने०' इत्यादि मन्त्र (पूरा मन्त्र आगे लिखा जाएगा) के द्वारा ४००० आहुतियाँ देकर हवन करें। तत्पश्चात् बुध-यन्त्र को बुध-स्थंडिल पर स्थापित करें एवं रत्नजटित अँगूठी को कलश में से निकाल कर स्थंडिल पर स्थापित करें तथा कलश के जल द्वारा अभिषेक देकर, उस रत्न में बुध की प्राण-प्रतिष्ठा करें। इस विधान की समाप्ति के बाद अँगूठी को पुनः बुध-मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अपने दाँये हाथ की कनिष्ठिका अथवा अना-मिका अँगुली में पहिन लें। फिर पूर्णाहुति देकर एक पन्ना के साथ बुध की दान-वस्तुओं तथा बुध-यन्त्र को ब्राह्मण को भेंट कर दें।

यदि बुध जन्म कुण्डली के चतुर्थ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में हो अथवा

अशुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो उक्त विधि से पन्ना-जटित अँगूठी को उत्तरा फाल्गुनी, आश्लेषा, ज्येष्ठा अथवा रेवती नक्षत्र वाले बुधवार को धारण करना चाहिए। यदि पन्ना को अँगूठी में न जड़वाना चाहें तो उसे हरे रंग के वस्त्र में लपेट कर कण्ठ अथवा भुजा में धारण किया जा सकता है। पन्ना के अभाव में टोड़ा, बेरुज, संगपन्नी, संग मरगज़ अथवा संग पितमनि-यों को भी धारण कर सकते हैं, परन्तु ये उपरत्न कम प्रभावशाली होते हैं।

अँगूठी में जड़वाने अथवा धारण करने के दिन से 3 वर्ष तक पन्ना प्रभावकारी रहता है। इस अवधि के बाद पुराने रत्न को बदल कर अँगूठी में नया रत्न जड़वा लेना चाहिए। पुराना रत्न नये व्यक्ति के पास पहुँच कर पुनः 3 वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है।

(4) मन्त्रोपचार - निम्नलिखित मन्त्र बुधकृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होते हैं -

'ॐ उद् बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्वमिष्टापूर्ते स ᳪ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे ऽअध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत। बुधाय नमः।" — यह बुध का मुख्य मन्त्र है, इसका 8000 की संख्या में जप करना चाहिए। (2) 'ॐ बं बुधाय नमः' — यह बुध का लघु-मन्त्र है, इसकी जप-संख्या 4000 है। (3) 'ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः' — इस मन्त्र की जप-संख्या 8000 है। (4) 'प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्" — इस मन्त्र का स्नान, दान के समय अथवा अन्य किसी भी समय जप अथ-वा उच्चारण करना शुभ रहता है।

(5) अन्य - बुधवार का व्रत भी बुधकृत अनिष्ट-निवारक माना जाता है।

(२) बुध के सन्तान-पक्ष में बाधक होने पर विधान सहित सम्पुट 'चण्डीपाठ' करना अथवा कराना भी श्रेयस्कर सिद्ध होता है।

बृहस्पति- पुराणों के अनुसार कर्दम ऋषि की तीसरी पुत्री श्रद्धा का विवाह अङ्गिरा ऋषि के साथ हुआ था। उन्हीं के गर्भ से बृहस्पति अर्थात् गुरु का जन्म हुआ। बृहस्पति देवताओं के गुरु पद पर अभिषिक्त हैं, इसी कारण इन्हें 'गुरु' कहा जाता है। नवग्रह मण्डल में बृहस्पति को 'मन्त्री' का पद प्राप्त है। बृहस्पति की स्थिति आकाश में मंगल ग्रह से ऊपर दो लाख योजन की दूरी पर मानी गई है। यदि बृहस्पति वक्रगति से न चलें तो ये एक राशि को एक वर्ष में पार करलेते हैं।

आधुनिक विद्वानों के अनुसार बृहस्पति ग्रह पृथ्वी से लगभग ३६,७०,००,००० मील की दूरी तक आजाता है। इस ग्रह का व्यास ९,८६,७२० मील, (मतान्तर से -२,७५,००० मील) माना गया है। यह सौर मण्डल का बृहदाकार, महाकाय तथा सबसे अधिक भारी ग्रह है। अन्य सभी ग्रहों के सम्मिलित आकार की तुलना में भी बृहस्पति बड़ा है, संभवतः इसी कारण ज्योतिष शास्त्र में इसे गुरु (भारी अथवा सबसे बड़ा) कहा गया है। इसकी गति ८ मील प्रति सैकिण्ड है। यह लगभग १२ वर्ष में सूर्य की एक प्रदक्षिणा पूरी करता है। सूर्य से बृहस्पति की दूरी लगभग ४८,३२,००,००० मील मानी जाती है। स्थूल रूप से एक राशि में एक वर्ष तक संचरण करता है।

गोचर-फल — गुरु किसी भी राशि में पहुँचने के मध्यकाल में अपना पूर्ण शुभ अथवा अशुभ फल प्रकट करता है। राशिचार से दो मास पूर्व ही इसका गोचर-

फल मिलना आरंभ हो जाता है। राशिचार के मध्य में दो मास तक इसका पूर्ण फल प्राप्त होता है। जन्म राशि के विभिन्न स्थानों में गोचर-गुरु का प्रभाव इस प्रकार मिलता है— जन्मराशि में भय, द्वितीय स्थान में धन-लाभ, तृतीय में रोग या अशुभ, चतुर्थ में धन-नाश, पंचम में सुख या शुभ, षष्ठ में शोक (या अशुभ), सप्तम में राजभय (अथवा राज्य-पूज्यता), अष्टम में मृत्यु (या धन-नाश), नवम में सुख (या धन-वृद्धि), दशम में दरिद्रता (अथवा प्रण-भङ्ग) एकादश में धन-प्राप्ति एवं द्वादश में पीड़ा अथवा मानसिक-व्यथा।

गुरु के शुभस्थान हैं— २, ५, ७, ९ तथा ११ एवं बिद्ध-स्थान हैं— १२, ४, ३, १० और ८। शुभ स्थान-स्थित गुरु तभी पूर्ण शुभ फल देता है, जब उसके बिद्धस्थान में कोई ग्रह न हो, अन्यथा उसके शुभ फल में कमी आजाती है अथवा उसका शुभ फल नष्ट होजाता है अथवा वह अशुभ-फल देता है। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल - ये तीनों गुरु के नैसर्गिक मित्र हैं। बुध तथा शुक्र शत्रु हैं एवं शनि, राहु तथा केतु से सम भाव रखता है। सूर्य के साथ सात्विक, चन्द्रमा के साथ राजस तथा मंगल के साथ तामस मैत्री-संबंध माना गया है। गुरु मुख्यतः १६, २२ एवं ४० वर्ष की आयु में जातक के जीवन पर अपना शुभ अथवा अशुभ प्रभाव प्रकट करता है। वक्री, अस्त अथवा अति-चारी गुरु कभी अभीष्ट फल नहीं देता। उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, पुनर्वसु, पूर्वाभाद्रपदा तथा विशाखा नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक तथा आर्द्रा, स्वाति एवं शतभिषा नक्षत्रों में अशुभ फल दायक होता है। लग्न-स्थ बृहस्पति को एक लाख दोष दूर करने वाला कहा गया है। यही बात केन्द्रस्थ बृहस्पति के विषय में भी कही गई है। परन्तु केन्द्रस्थ बृहस्पति को केन्द्राधिपत्य का दोषी भी कहा

गया है। जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित गुरु अपने दोषी-प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है-

(१) यदि जन्म कुण्डली में गुरु मेष, वृष, सिंह, वृश्चिक, तुला, मकर अथवा कुंभ राशि पर स्थित हो तो अशुभ प्रभाव करता है। (२) यदि गुरु किसी अच्छे भाव का स्वामी होकर अपने भाव से छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देता है। (३) यदि जातक का जन्म दिन गुरुवार हो और उसी दिन पुष्य नक्षत्र भी हो तो गुरु अशुभ फलदायक होता है, (४) यदि जातक का जन्म पुनर्वसु, विशाखा अथवा पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र में हुआ हो अथवा जन्म कुण्डली में गुरु इन्हीं नक्षत्रों में से किसी में हो तो अशुभ फल देता है। (५) यदि गुरु के साथ बुध, चन्द्र, मंगल अथवा सूर्य में से किसी की युति हो तो वह दोषी प्रभाववाला हो जाता है। (६) यदि गुरु पंचम, षष्ठ, सप्तम अथवा अष्टम भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देता है, (७) यदि गुरु द्वितीय, पंचम, सप्तम अथवा एकादश भाव में अकेला बैठा हो तो हानिकारक सिद्ध होता है, (८) यदि गुरु द्वितीयेश होकर नवम भाव में, अथवा चतुर्थेश होकर एकादश भाव में, अथवा सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में, अथवा नवमेश होकर चतुर्थ भाव में अथवा दशमेश होकर पंचम भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देता है। (९) चतुर्थ भावस्थ गुरु सन्तान-रोधक होता है। (१०) षष्ठ भावस्थ गुरु जातक को दुर्बल बनाता है, (११) अष्टम भावस्थ गुरु जातक को गुप्त-रोगी बनाता है, (१२) द्वादश भावस्थ गुरु जातक को आलसी तथा दुष्ट-चित्त वाला बनाता है।

जन्मकुण्डली में गुरु की अशुभ स्थिति हो तो पीड़ा निवारणार्थ निम्नलिखित उपाय करने चाहिए

भू० सं० ९३२०

भा० टी०

(१) औषध-स्नान- श्वेत सरसों, मूलर, मदयन्ती, मुलहठी, शहद, चमेली के फूल तथा नवीन पत्तों के मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से गुरुकृत पीड़ा का शमन होता है।

(२) पुखराज-दान- जिन लोगों के लिए गुरु अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो, उन्हें दोष-परिहारार्थ पुखराज का दान करना चाहिए। गुरुवार के दिन सोने अथवा चाँदी के पत्र पर गुरु का यन्त्र (जिसका स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है) अंकित करवा कर, उसके मध्य में पीला पुखराज जड़वायें।

१५	२८	२९	३०	३२	३१	
१४	६	१३	१०	१६	१७	२७
११	२२	१	९	२१	८	
२३	५	४	१२	२	७	२०
२६	२४	२५	३	१८	१९	

फिर यन्त्र का विधिवत् पूजन करके इस मन्त्र द्वारा अभिमन्त्रित करें— 'ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः।' उक्त कार्य का प्रारंभ जब गुरु उच्च के, कर्क राशि के ४ अंश पर हों, तब करना चाहिए। इसके अभाव में शुभ राशि, नक्षत्र, तथा गुरु का शुभ योग देख कर, गुरुवार के दिन प्रारंभ करना चाहिए। ३४ दिन तक यन्त्र का नित्य पूजन करके, मन्त्र-जप तथा हवन करते रह कर, गुरुवार के दिन ही सायंकाल में यन्त्र का षोडशोपचार पूजन करके निम्नलिखित मन्त्र का १९००० की संख्या में जप करना चाहिए—

"ॐ बृहस्पते ऽ अतियदर्यो ऽ अर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऽ ऋत प्रजातदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। बृहस्पतये नमः।"

मन्त्र-जप के पश्चात् आगे लिखी वस्तुओं के

साथ उक्त यन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान करदे। वस्तुओं के नाम इस प्रकार हैं—(१) स्वर्ण, (२) कांस्य (३) पीत वस्त्र, (४) घृत, (५) शक्कर, (६) घोड़ा, (७) चने की दाल, (८) हल्दी, (९) पीतपुष्प, (१०) फल, (११) लवण, (१२) पुखराज तथा दक्षिणा। इस विधि से पुखराज दान करने पर बृहस्पति कृत् बाधा शान्त होती है।

(३) रत्न-धारण- गुरु कृत् पीड़ा के निवारणार्थ पीले पुखराज अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभ फलदायक होता है। रत्न-धारण की विधि इस प्रकार है—

गुरुवार को जब पुष्य नक्षत्र हो, तब प्रातःकाल सूर्योदय के समय से ११ बजे के बीच स्वर्ण की अँगूठी बनवा कर, उसमें कम-से-कम ४ रत्ती वज़न का पुखराज जड़वायें। अँगूठी में सोने का वज़न ७ रत्ती अथवा इससे अधिक होना चाहिए। इसके साथ ही ९ तोला वज़नी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त गुरु-यन्त्र अंकित करवा कर, उसके मध्य में एक पुखराज जड़वा कर रखलें। यन्त्र तथा अँगूठी तय्यार हो जाने पर, उसी दिन गुरु का पद्माकार स्थंडल बना कर, उस पर गुरु यन्त्र को स्थापित करें तथा चने की दाल से अष्टमण्डल का निर्माण कर, उसके ऊपर जलपूर्ण कलश की स्थापना कर, अभिषेक करें तथा पूर्वोक्त गुरु मन्त्र का जप करें। फिर "ॐ ऐं श्रीं बृहस्पतये नमः" इस मन्त्र से ४५०० आहुतियाँ देकर हवन करें। तदुपरान्त अँगूठी के रत्न में बृहस्पति की प्राणप्रतिष्ठा कर, संध्या से पूर्व ही, शुभ प्रहर में अँगूठी को दाँये हाथ की तर्जनी अथवा अनामिका अँगुली में धारण करें तथा गुरु के दान की पूर्वोक्त वस्तुओं सहित गुरु-यन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान करदें। इस विधि से पुखराज-जटित अँगूठी धारण करने से गुरु कृत् अनिष्ट दूर होकर, मनोभिलाषाओं की पूर्ति होती है। अँगूठी में जड़वाने के दिन से पुखराज ४ वर्ष, ३ मास तथा १८ दिन तक प्रभावकारी बना रहता है, तदुपरान्त पुराने नग को बदल कर नवीन नग जड़वाना चाहिए।

जो लोग पुखराज को अँगूठी में न जड़वाना चाहें, वे पूर्वोक्त विधि से रत्न का पूजन आदि करके उसे पीले वस्त्र में बाँध कर, कण्ठ अथवा भुजा में भी धारण कर सकते हैं। पुखराज के अभाव में उसके उप-रत्न संग सोनेला, संग घिया, कथ्थूर, संग सोनामक्खी अथवा संग कहरुवा को भी धारण किया जा सकता है। इसके अति मोती अथवा भारंगी (भांगरे) की जड़ को भी धारण करना शुभदायक रहता है।

(4) मन्त्रोपचार - निम्न लिखित मन्त्रों का जप करने से भी गुरु कृत अरिष्ट एवं अनिष्ट के निवारण में सहायता मिलती है -

"ॐ बृहस्पते ऽ अति यदर्यो ऽ अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ्वस ऽ ऋत प्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्। बृहस्पतये नमः।" — यह बृहस्पति का मुख्य मन्त्र है। इसका 19000 की संख्या में जप करना चाहिए। (2) "ॐ गुं गुरुवे नमः" — यह बृहस्पति का लघु मन्त्र है। इसकी जपसंख्या भी 19000 है। इस मन्त्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है। (3) "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः" — इस मन्त्र का जप भी 1900 की संख्या में करना चाहिए। (4) "देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन सन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं गुरुं प्रणमाम्यहम्।" — इस मन्त्र का उच्चारण स्नान, दान के समय अथवा किसी भी समय करना शुभ फलदायक रहता है।

(5) अन्य उपचार - यदि गुरु सन्तान-पक्ष के लिए अहितकर हो तो गुरु की प्रसन्नता के लिए पितृश्वरों की तिथियों में श्राद्ध, दान आदि पुण्य-कर्म करने से गुरु का कुप्रभाव दूर होकर वांछित फल की प्राप्ति होती है। (2) अनिष्टकर गुरु के प्रभाव का शमन करने हेतु गुरुवार को व्रत रखना भी हितकर कहा गया है। गुरुवार के व्रत में सायंकाल पीली वस्तुओं, बेसन के पदार्थों का लवण-रहित भोजन

करना चाहिए। भोजन में मीठी वस्तुऐं खाई जासकती हैं।

शुक्र – पुराणानुसार शुक्र महर्षि भृगु के पुत्र हैं। ये एक नेत्र से विहीन तथा दैत्यों के गुरु हैं। श्रीमद्भागवत के अनुसार चन्द्रमा से तीन लाख योजन की दूरी पर (ऊँचाई पर) अभिजित आदि २८ नक्षत्रों की स्थिति है। उनसे भी दो लाख योजन की अधिक ऊँचाई पर शुक्र अवस्थित हैं। नवग्रह-मण्डल में शुक्र को भी 'मन्त्री' का पद प्राप्त है। वर्तमान ज्योतिषियों के मतानुसार शुक्र पृथ्वी से ३,४३,००,००० मील तथा सूर्य से ६,७०,००,००० मील की दूरी पर स्थित है। यह ग्रह वर्ष में एक बार पृथ्वी के अत्यन्त निकट आजाता है, तब पृथ्वी से इसकी दूरी केवल २०,००,००० मील ही रह जाती है। इसका व्यास लगभग ७७०० मील माना जाता है। यह २२ मील प्रति सैकेण्ड की गति से चलता हुआ लगभग २२४ दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। यह ग्रह सामान्यतः एक राशि में १ मास तक संचरण करता है।

गोचर-फल – शुक्र अपनी राशि के मध्य में विशेष फल देता है। सामान्यतः यह राशि-संक्रमण से एक सप्ताह पूर्व ही फल देना आरंभ कर देता है। जन्म राशि से विभिन्न स्थानों पर गोचर-शुक्र का प्रभाव इस प्रकार बताया गया है – जन्म राशि पर हो तो शत्रु-क्षय, द्वितीय स्थान में हो तो धन-लाभ, तृतीय में हो तो शुभ, चतुर्थ में हो तो धन-लाभ, पंचम में हो तो पुत्र-लाभ, षष्ठ में हो तो शत्रु-भय, सप्तम में हो तो शोक, अष्टम में हो तो अन्न अथवा अर्थ-लाभ, नवम में हो तो वस्त्र-लाभ, दशम में हो तो अशुभ, एकादश में हो तो वित्त-लाभ तथा द्वादश में हो तो द्रव्याप्ति। शुक्र के शुभस्थान १, २, ३, ४, ५, ८, ९, ११ तथा १२ हैं तथा विद्ध-स्थान ८, ७, १, १०, ९, ५, ११, ३ तथा ६ हैं। शुभ-स्थानों पर शुक्र अथवा विद्ध स्थानों पर कोई अन्यग्रह हो तो शुक्र अशुभ फल देते हैं। विद्ध स्थानों पर यदि स्वयं शुक्र ही हो तो भी अशुभ-फल देता है। ये शुक्र

के अनुलोम तथा प्रतिलोम वेध कहे जाते हैं।

शुक्र समय-समय पर वक्री, मार्गी तथा अस्त होता रहता है। बुध, शनि, राहु तथा केतु —ये चारों शुक्र के नैसर्गिक मित्र ग्रह हैं। सूर्य तथा चन्द्रमा शत्रु हैं तथा मंगल एवं गुरु से इसका समभाव रहता है। शुक्र की गणना शुभग्रहों में की जाती है। इसका बुध के साथ सात्विक, शनि तथा राहु के साथ तामस मैत्री सम्बन्ध माना गया है। शुक्र मुख्यरूप से २५ से २८ वर्ष की अवस्था में जातक के जीवन पर अपना शुभ अथवा अशुभ प्रभाव प्रदर्शित करता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शुक्र अपने दोषी-प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है—

(१) यदि जन्म कुण्डली में शुक्र वक्री, नीच, अस्तंगत अथवा पापग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल देता है। (२) यदि शुक्र छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो अशुभ फल देगा। यदि शुक्र शुभ भावों का स्वामी होकर, अपने भाव से अष्टम अथवा षष्ठ स्थान में बैठा हो तो अशुभ फल देगा। तृतीय भावस्थ शुक्र जातक को आलसी बनाता है। षष्ठभावस्थ शुक्र जातक को दुराचारी, गुप्त-रोगी, मूत्र-रोगी तथा स्त्री-सुख से हीन बनाता है। सप्तम भावस्थ शुक्र जातक को कामी तथा अल्प व्यभिचारी बनाता है। अष्टम भावस्थ शुक्र जातक को गुप्त-रोगी, दुःखी, क्रोधी, रोगी, निर्दय तथा पर-स्त्रीगामी बनाता है। दशम भावस्थ शुक्र जातक को विलासी तथा लोभी बनाता है एवं द्वादश भावस्थ शुक्र जातक को पर-स्त्री गामी, पतित, धातु-रोगी, आलसी तथा स्थूल-शरीर बनाता है।

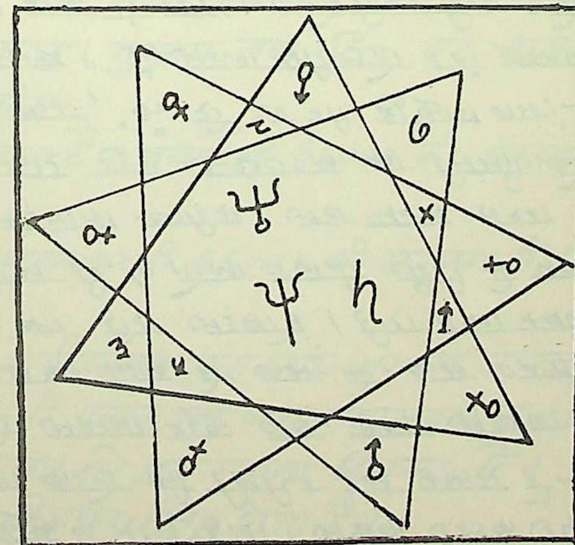
शुक्र भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, मृगशिरा, चित्रा एवं धनिष्ठा नक्षत्रों पर अशुभ फल देता है, जबकि आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती, कृत्तिका स्वाति तथा आर्द्रा नक्षत्रों पर शुभफल देता

है। शुक्र की अशुभ-स्थिति होने पर शुक्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्नलिखित उपायों को करना हितकर सिद्ध होता है—

(१) औषध-स्नान – जायफल, मैनसिल, पीपरामूल, केसर, इलायची तथा मूली के बीज-इन से मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से शुक्रकृत पीड़ा शान्त होती है।

(२) हीरा-दान – शुक्र के अरिष्ट तथा अनिष्टकर प्रभाव को दूर करने के लिए हीरे का दान शुभ तथा हितकर कहा गया है। हीरा-दान करने की विधि निम्नलिखित है—

शुक्रवार के दिन चाँदी के पत्र पर शुक्र के यन्त्र (जिसका स्वरूप दाँई ओर प्रदर्शित है) को अंकित करवायें तथा उसके मध्य में एक हीरा जड़वायें। फिर उस यन्त्र का विधिवत् पूजन करके प्राण प्रतिष्ठा करें या करायें। "ॐ ऐं जं गौं शुक्राय नमः"—इस मन्त्र द्वारा शुक्रवार को हीरा अभिमन्त्रित करें तथा ४९ दिनों तक इस मन्त्र का विधि पूर्वक पूजन सहित जप करते रहें। अन्त में, आगे लिखी वस्तुओं के साथ उस यन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान कर दें। दान की वस्तुएँ इस प्रकार हैं—(१) स्वर्ण, (२) चाँदी, (३) रंग-बिरंगा वस्त्र (चित्राम्बर), (४) श्वेत चन्दन, (५) दूध, (६) दही, (७) चावल, (८) मिश्री, (९) श्वेत माला, (१०) सुगन्धित द्रव्य, (११) श्वेत पुष्प, (१२) श्वेत अश्व तथा दक्षिणा। इस दान से शुक्रकृत पीड़ा का शमन होता है।



(३) रत्न-धारण- शुक्रकृत पीड़ा के निवारणार्थ शुक्र के रत्न 'हीरा' अथवा उसके उप-रत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना चाहिए। रत्न-धारण करने की विधि इस प्रकार है—
शुक्रवार के दिन जब भरणी, पूर्वा फाल्गुनी अथवा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो अथवा शुक्र वृष, तुला अथवा मीन राशि पर हो, उस दिन प्रातः काल सूर्योदय से ११ बजे तक के मध्य काल में कम-से-कम ७ रत्ती स्वर्ण की एक अँगूठी बनवा कर, उसमें कम-से-कम १ रत्ती वज़न का हीरा जड़वायें। हीरा तथा स्वर्ण का वज़न यदि समान हो तो और भी उत्तम रहेगा। अँगूठी के साथ ही ७ तोला वज़नी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त शुक्र-यन्त्र खुदवा कर, उसमें भी एक छोटा सा हीरा जड़वाना चाहिए। जब यन्त्र तथा अँगूठी तय्यार हो जाँय, तब यज्ञ-मण्डप बनाकर उसमें पंचकोणाकार शुक्र-स्थण्डल का निर्माण करें तथा शुक्र-यन्त्र को रत्नजटित अँगूठी सहित उस पर स्थापित कर, "ॐ ऐं जं गीं शुक्राय नमः"— — इस मन्त्र को ४००० की संख्या में जप कर. शुक्र के मुख्य मन्त्र "ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्र मंधस ऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।"— का १६००० की संख्या में जप करें अथवा किसी ब्राह्मण से करायें। तत्पश्चात् रत्न में शुक्र की प्राण प्रतिष्ठा करके अँगूठी को अपनी तर्जनी अथवा मध्यमा अँगुली में पहनलें तथा पूर्वोक्त दान की वस्तुओं सहित शुक्र-यन्त्र किसी सुपात्र ब्राह्मण को दान करदें। यदि शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तो उस दिन अँगूठी को धारण करना विशेष शुभ रहेगा। अँगूठी में जड़वाने के ७ वर्ष तक हीरा प्रभावशाली बना रहता है। तदुपरान्त उस पुराने हीरे को बदल कर नया हीरा जड़वाना चाहिए। पुराना रत्न नये व्यक्ति के पास पहुँच कर, पुनः ७ वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है।

जो लोग हीरे को अँगूठी में न जड़वाना चाहें, वे चित्र-विचित्र रंग के वस्त्र में उसे बाँध कर, पूर्वोक्त विधि के अनुसार पूजनादि करके कण्ठ अथवा भुजा में धारण कर सकते हैं। हीरे के अभाव में उसके उपरत्न संग कांसला, संग दतला, संग कुरंज अथवा संग तुरमुली को भी धारण किया जा सकता है। परन्तु उपरत्न कम प्रभावकारी सिद्ध होते हैं। इनके अतिरिक्त चाँदी अथवा 'सिंह पुच्छी' की जड़ को धारण करना भी शुभदायक रहता है।

(४) मन्त्रोपचार - निम्न लिखित मन्त्रों का जप भी शुक्रकृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होता है -

(१) ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मंधस ऽ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयो ऽमृतं मधु। शुक्राय नमः।" — यह शुक्र का मुख्य मन्त्र है। इसका १६००० की संख्या में जप करना चाहिए।

(२) "ॐ शुं शुक्राय नमः" — यह शुक्र का लघु-मन्त्र है। इसका भी १६००० की संख्या में जप करना चाहिए।

(३) "ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" —, इस मन्त्र का भी १६००० की संख्या में ही जप किया जाता है।

(४) "हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।" — इस मन्त्र का स्नान-दानादि के समय अथवा कभी भी उच्चारण करना शुभकर रहता है।

(५) अन्य - अनिष्टकर शुक्र के प्रभाव शमनार्थ शुक्रवार को व्रत रखना हितकर है।

(२) यदि शुक्र संतान-पक्ष के लिए अहितकर हो तो गाय को पालना हितकर सिद्ध होता है।

मु० सं० ८३२८

भा० टी०

शनि- पुराणानुसार शनि का जन्म सूर्य की द्वितीय पत्नी छाया के गर्भ से हुआ है। इसकी स्थिति बृहस्पति से दो लाख योजन ऊपर है। यह एक राशि पर भ्रमण करने में लगभग तीस महीने का समय लेता है। समस्त राशियों का परिभ्रमण यह तीस वर्ष में पूरा करता है। नवग्रह-मण्डल में इसे सेवक' का पद प्राप्त है।

आधुनिक ज्योतिर्विदों के अनुसार शनि सूर्य से ८८,००,००,००० मील तथा पृथ्वी से ७९,१०,००,००० मील (मतान्तर से - ८९,००,००,००० मील) की दूरी पर स्थित है। इस का व्यास ७१५०० मील माना गया है। यह अत्यन्त मन्दगति से चलने वाला ग्रह है. इसी कारण इसके 'शनैश्चर' तथा 'मन्द' नाम रखे गए हैं। सूर्य के समीप पहुँचने पर इसकी गति लगभग ६० मील प्रतिघण्टा हो जाती है। सामान्यत: एक राशि मे भ्रमण करने पर इसे २½ वर्ष का समय लगता है तथा सूर्य की एक परिक्रमा करने में इसे ३० वर्ष लग जाते हैं। यह आकाश-मण्डल का सबसे सुन्दर ग्रह है। इसके चारों ओर तीन वलय-कंकण जैसे चक्र एक दूसरे से अलग रहते हुए घूमा करते हैं। शनि इन वलयों के साथ ही आकाश-मण्डल में संचरण करता रहता है। अन्य किसी भी ग्रह में ऐसे वलय नहीं हैं। यह एक राशि पर ३० मास तक रहता है तथा राशि के अन्तिम भाग में पूर्ण फल देता है। यों, यह राशि-संचरण से ६ मास पूर्व ही अपना चमत्कार प्रदर्शित करना आरंभ कर देता है।

गोचर-प्रभाव-जन्म राशि से विभिन्न स्थानों पर गोचर-शनि का प्रभाव निम्नानुसार होता है-

जन्मराशि में हो तो रोग तथा धन-क्षय, द्वितीय स्थान में हो तो क्लेश, धन-हरण

एवं चिन्ता, तृतीय में हो तो धनागम (मतान्तर से - शत्रु-नाश), चतुर्थ में हो तो शत्रु-वृद्धि, पंचम में हो तो भृत्य, पुत्र, धन का नाश, षष्ठ में हो तो अर्थ, अन्न का लाभ सप्तम में हो तो दोष-संग्रह, अनिष्ट, अष्टम में हो तो शरीर-पीड़ा, नवम में हो तो धन-क्षय, दशम में हो तो मानसिक-संताप, एकादश में हो तो वित्तलाभ एवं द्वादश स्थान में हो तो अनर्थ।

शनि के शुभ स्थान ३, ६ तथा ११ एवं विद्ध-स्थान १२, ९ तथा ५ हैं। शनि का वेध मंगल की भाँति ही समझना चाहिए। शनि के बुध, शुक्र, राहु तथा केतु नैसर्गिक मित्र हैं। सूर्य, चन्द्र तथा मंगल शत्रु हैं तथा गुरु से सम भाव है। इसकी गणना पापग्रहों में की जाती है, यह बुध के साथ सात्विक व शुक्र के साथ राजस मैत्री सम्बन्ध रखता है। इसे सब ग्रहों से अधिक बलशाली माना जाता है। जातक के जीवन पर शनि मुख्यरूप से ३६ से ४२ वर्ष की अवस्था में अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है। शनि की साढ़े साती तथा ढैया भी विशेष प्रभाव करती है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित शनि अपने दोषपूर्ण प्रभाव को निम्नानुसा-र प्रकट करता है—

(१) यदि जातक का जन्म मेष, वृष, तुला अथवा वृश्चिक लग्न में हुआ हो तो शनि अशुभ फल देता है। (२) यदि शनि मेष राशि पर स्थित हो तो अशुभ फल देता है। (३) यदि शनि सूर्य के साथ बैठा हो तो अशुभ फल देता है। (४) यदि शनि जन्म कुण्डली में वक्री, दुर्बल अथवा अस्तंगत हो तथा शुभ भावों का प्रतिनिधित्व कर रहा हो तो अशुभ फल देता है। यदि शनि षष्ठेश अथवा अष्टमेश के साथ बैठा हो तो अशुभ होता है। (६) यदि शनि अपने भाव [illegible]

मुं० सं० ९३३०

पंचम, दशम अथवा एकादश भाव में बैठा हो तो कष्टकारक होता है। (८) यदि शनि सूर्य की राशि पर बैठा हो अथवा सूर्य से दृष्ट हो तो अशुभ होता है; (९) मकर तथा तुला के अतिरिक्त अन्य किसी भी राशि का लग्नस्थ शनि जातक को दरिद्र बनाता है, (१०) शनि अपनी साढ़े साती की अवधि में प्रायः अशुभ फल ही देता है, (११) द्वितीय भावस्थ शनि जातक को मुख-रोगी बनाता है। (१२) चतुर्थ भावस्थ शनि जातक को कृश-शरीर, बलहीन, अपयशी, कपटी, धूर्त, उदासीन तथा वात-पित्त-विकारी बनाता है, (१३) पंचम भावस्थ शनि जातक को आलसी, उदासीन तथा वातरोगी बनाता है, (१४) षष्ठभावस्थ शनि जातक को कण्ठ-रोगी, श्वास-रोगी, क्षय-रोगी, आचार-हीन, भोगी तथा जाति-विरोधी बनाता है, (१५) सप्तम भावस्थ शनि जातक को नीच-कर्म करने वाला, आलसी, विलासी, कामी, क्रोधी, धनहीन, सुख-हीन तथा आचार-हीन बनाता है; (१६) अष्टम भावस्थ शनि जातक को कपटी, वाचाल, धूर्त, डरपोक, गुप्तरोगी तथा कुष्ठ-रोगी बनाता है, (१७) नवमभावस्थ शनि जातक को कृश-शरीर, भीरु, वातरोगी तथा अन्य रोगों का रोगी बनाता है, (१८) दशम भावस्थ शनि उदर-विकार देता है, (१९) एकादश भावस्थ शनि जातक को क्रोधी तथा पुत्र-हीन बनाता है एवं (२०) द्वादश भावस्थ शनि जातक को दुष्ट, व्यसनी, कटुभाषी, अविश्वासी, आलसी, अपव्ययी, उन्मादी तथा अपस्मार-रोगी बनाता है।

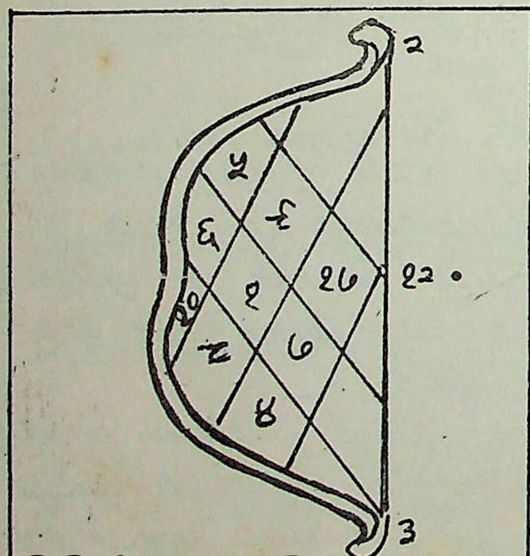
जन्मकुण्डली में शनि की अशुभ-स्थिति होने पर शनिकृत पीड़ा के निवारणार्थ निम्न लिखित उपायों को करना हितकर तथा पीड़ा-शामक सिद्ध होता है।

<u>(१) औषध-स्नान</u>- सौंफ, खिरैटी, लोध, खस, लोबान, सुरमा, धमनी, काले तिल, गोंद, शतकुसुम तथा खिल्ला मिश्रित जल द्वारा स्नान करने से शनिकृत पीड़ा का शमन होता है।

भा० टी०

(२) नीलम-दान - जिन के लिए शनि अरिष्ट अथवा अनिष्ट कारक हो, उन्हें दोष-परिहारार्थ नीलम का दान करना शुभ तथा हितकर रहता है। नीलम-दान की विधि निम्नलिखित है-

शनिवार के दिन लोहा, सीसा अथवा रांगे के पत्र पर शनि यन्त्र को खुदवाये (शनि यन्त्र का स्वरूप नीचे बाँई ओर प्रदर्शित है) तथा उसके मध्य में एक नीलम जड़वायें। फिर उस यन्त्र का विधिवत् पूजन करके प्राणप्रतिष्ठा करें। 'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः' - इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करना चाहिए। मन्त्रजप तथा यन्त्र-पूजन के बाद प्राणप्रतिष्ठा करके मध्याह्न काल में दीप-बलि दें। अन्त में, निम्न लिखित वस्तुओं के साथ उक्त यन्त्र को किसी ज्योषी (जोशी) को दान कर दें। दान की वस्तुएं इस प्रकार हैं - (१) लोहा, (२) सरसों का तैल, (३) उपानह अर्थात् जूते, (४) भैंस, (५) काला वस्त्र, (६) काली गाय, (७) उड़द, (८) काले पुष्प, (९) स्वर्ण, (१०) कुलथी, (११) कस्तूरी और दक्षिणा। इस दान से शनिकृत् बाधा शान्त होती है।



(३) रत्न-धारण - शनिकृत् पीड़ा के निवारणार्थ शनि का रत्न नीलम अथवा उसके उपरत्न अथवा उसके प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभ फलप्रद रहता है। रत्न-धारण की विधि इस प्रकार है -

शनिवार के दिन जब उत्तराषाढा, श्रवण, धनि-ष्ठा, शतभिषा, पूर्वा भाद्रपदा, चित्रा, स्वाति अथवा विशाखा नक्षत्र

हो, तब अथवा जब शनि मकर अथवा कुंभ राशि में हो, अथवा तुला राशि के उच्चस्थान में हो
तब नीलम खरीद कर, उसे लोहा, सीसा, रांगा, पंचधातु अथवा स्वर्ण की अँगूठी में जड़वायें।
नीलम का वज़न कम-से-कम ४ रत्ती तथा स्वर्ण आदि धातुओं का वज़न ९ रत्ती से कम नहीं
होना चाहिए। अँगूठी के साथ ही पूर्वोक्त शनि-यन्त्र का निर्माण भी करा लेना चाहिए।

अँगूठी तथा यन्त्र के तय्यार हो जाने पर शनिस्थण्डल का निर्माण करें। चतुष्का-
-कार शनि-स्थण्डल बना कर, उस पर शनि यन्त्र को स्थापित कर, यन्त्र के ऊपर नीलम-जटित
अँगूठी को रख कर, विधि पूर्वक षोडशोपचार पूजन करें तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें। इसके बाद
"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः" - इस मन्त्र द्वारा ६००० आहुतियाँ देकर हवन करें। फिर निम्न
लिखित शनि के मुख्य मन्त्र का २३००० की संख्या में जप करें—

"ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।"

मन्त्र-जप के बाद अँगूठी को दाँये हाथ की मध्यमा अँगुली में धारण कर,
पूर्णाहुति दें तथा शनि-यन्त्र को दान की अन्य वस्तुओं सहित जोशी को दान करदें। सायंकाल
दीप-बलि, भैरव-पूजन, दीप-दान आदि कृत्य करने चाहिए। इस प्रकार से नीलम-जटित अंगूठी
धारण करने से शनिकृत पीड़ा शान्त होती है तथा धारणकर्त्ता की मनोभिलाषायें पूर्ण होती हैं।
अँगूठी में जड़वाने के दिन से ५ वर्ष तक नीलम प्रभावकारी बना रहता है, तत्पश्चात् उसमें नया
नग जड़वाना चाहिए। पुराना नग नये व्यक्ति के पास पहुँच कर पुनः ५ वर्ष के लिए प्रभाव-
-कारी हो जाता है।

जो लोग नीलम की अँगूठी न पहिनना चाहें, वे नीलम को काले रंग के वस्त्र

में बाँध कर, पूर्वोक्त विधि से पूजनादि करके उसे कण्ठ अथवा भुजा में धारण कर सकते हैं। नीलम के अभाव में उसके उपरत्न संगलीली तथा संग जमुनिया को अथवा बिछली (बिच्छोल) की जड़ को भी धारण किया जा सकता है, परन्तु ये द्रव्य नीलम की अपेक्षा कम प्रभावकारी सिद्ध होंगे।

(४) मन्त्रोपचार - निम्न लिखित मन्त्रों का निश्चित संख्या में जप करने से शनि कृत पीड़ा दूर करने में सहायता मिलती है।

(१) "ॐ शन्नो देवी रभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः।" — यह शनि का मुख्य मन्त्र है। इसका २३००० की संख्या में जप करना चाहिए।

(२) "ॐ शं शनैश्चराय नमः" — यह शनि का लघु-मन्त्र है। इसका भी २३००० की संख्या में ही जप किया जाता है।

(३) "ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।" — इस मन्त्र का भी २३००० की संख्या में जप करना चाहिए।

(४) "नीलाञ्जन समाभासं रविपुत्र यमाग्रजम्। छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।" — इस मन्त्र का स्नान-दान के समय अथवा कभी भी जप करना शुभ रहता है।

(५) अन्य - (क) शनि दोष-शान्ति के लिए शनिवार के दिन व्रत रखना हितकर रहता है। सूर्यास्त के समय व्रत भंग करने से पूर्व हनुमान् जी का सिन्दूर, तिली के तैल तथा लाल रंग के पुष्पों से पूजन करना चाहिए एवं तिली के तैल का दीपक जला कर रखना चाहिए।

(ख) यदि शनि सन्तान-पक्ष के लिए अनिष्टकर हो तो महामृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ एवं मृत्युंजय की आरा-

धारण करना शुभ तथा अभीष्ट फल दायक सिद्ध होता है। (ग) शनि-दोष शमनार्थ 'शनि स्तोत्र' का पाठ करना भी हितकर रहता है।

राहु- पुराणानुसार हिरण्यकशिपु की 'सिंहिका' नामक पुत्री का विवाह 'विप्रचित्ति' नामक दानव के साथ हुआ था। उसी के गर्भ से राहु ने जन्म लिया। समुद्र-मंथन के समय जब श्रीविष्णु मोहिनी रूप धारण कर देवताओं को अमृत बाँट रहे थे, उस समय राहु भी देवता का स्वरूप धारण कर देवताओं की पंक्ति में जा बैठा था तथा उसने भी अमृत-पान कर लिया था। राहु के इस छल को सूर्य तथा चन्द्रमा ने ताड़ लिया। उन्होंने विष्णु को संकेत से वास्तविकता बतलाई तो विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से राहु के मस्तक पर प्रहार किया। चक्र के प्रभाव से राहु का सिर कट कर धड़ से अलग हो गया, परन्तु अमृत-पान किए होने के कारण वह मरा नहीं तथा सिर और धड़ -दोनों ही अलग अलग जीवित बने रहे। सिर का नाम 'राहु' तथा धड़ का 'केतु' हुआ। उसी समय से ये दोनों सूर्य तथा चन्द्रमा से शत्रुता मानते हैं तथा उन्हें ग्रहण लगाते हैं। पुराणानुसार राहु सूर्य से १०००० योजन की नीचाई पर रहते हुए अन्य ग्रहों की भाँति आकाश-मण्डल में भ्रमण करता है।

ज्योतिर्विज्ञानियों के मतानुसार अन्य ग्रहों की भाँति सौरमण्डल में राहु तथा केतु के कोई ज्योतिष्पिण्ड नहीं हैं। इन्हें पृथ्वी के उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव की छाया मात्र माना गया है। प्राचीन भारतीय ज्योतिष में मुख्य ग्रह केवल ७ ही माने जाते थे, परन्तु बाद के ज्योतिषियों ने इन्हें छाया-ग्रह के रूप में स्वीकार करके ग्रह-मण्डल में स्थान दिया तथा इस प्रकार ग्रहों की कुल संख्या ९ मान ली गई। अध्ययन, अनुसन्धान तथा अनुभव से यह सिद्ध हो

चुका है कि राहु-केतु का भी चराचर-जगत् पर ग्रहों की भाँति ही विशिष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। कुछ विद्वान् राहु का व्यास ३०,०००० मील तथा पृथ्वी से इसकी दूरी ६०,००,००० मील मानते हैं। राहु तथा केतु आपस में ६ राशि अर्थात् १८० अंश के अन्तर से वक्र-गति से अर्थात् अन्य ग्रहों की अपेक्षा उल्टी गति से घूमते हैं। एक राशि पर भ्रमण करने में इन्हें प्रायः १८ मास तथा द्वादश राशियों का संक्रमण करने में लगभग १८ वर्ष का समय लगता है।

नवग्रह मण्डल में राहु-केतु को कोई स्थान प्राप्त नहीं है, इनकी अपनी कोई राशि भी नहीं है, परन्तु कुछ विद्वान् कन्या राशि पर राहु का आधिपत्य मानते हैं तथा कुछ विद्वान् इसे वृष राशि पर तथा कुछ मिथुन राशि के १५ अंश तक उच्चस्थ मानते हैं। इसी प्रकार कुछ विद्वान् इसे वृश्चिक राशि तथा कुछ धनु राशि के १५ अंश तक नीचस्थ मानते हैं। कुछ के मतानुसार यह कर्क तथा कुंभ राशि में मूल त्रिकोणस्थ होता है। राहु को मेष, वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, वृश्चिक तथा कुंभ राशि एवं दशम भाव में बलवान माना जाता है। बुध, शुक्र तथा शनि इसके नैसर्गिक मित्र हैं; सूर्य, चन्द्र तथा मंगल शत्रु हैं एवं गुरु से इसका समभाव है। इसकी गणना क्रूर ग्रहों में की जाती है तथा इसे अत्यन्त बलवान माना जाता है। वृष तथा तुला लग्न में यह योगकारक माना गया है। आर्द्रा, स्वाति तथा शतभिषा नक्षत्रों पर यह शुभ फल देता है। मुख्य रूप से ४२ से ४८ वर्ष की आयु में यह जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है।

जन्म कुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित राहु अपने दोषी-प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है

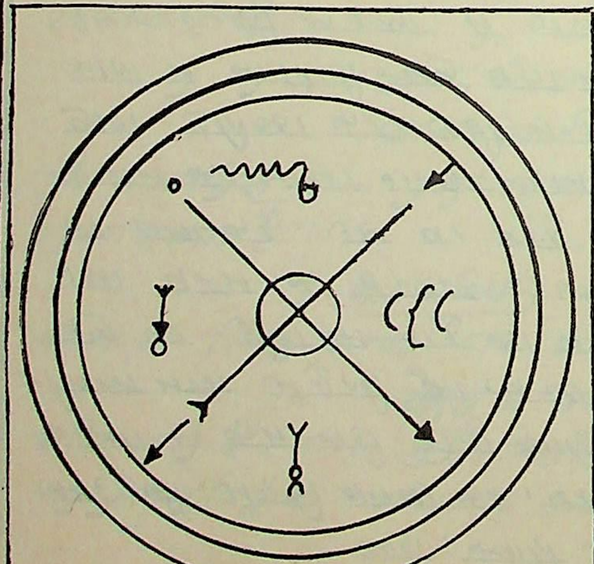
(१) प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, सप्तम, नवम, दशम तथा एकादश भाव में राहु की स्थिति शुभ नहीं मानी जाती। परन्तु कुछ विद्वान् तीसरे, छठे तथा ग्यारहवें भाव में राहु की स्थिति को शुभ भी मानते हैं; (२) नीच अर्थात् धनु राशि का राहु अशुभ फल देता है, (३) यदि राहु शुभ भावों का स्वामी होकर अपने भाव से छठे अथवा आठवें स्थान में बैठा हो तो अशुभ-फल करता है, (४) यदि राहु श्रेष्ठ भाव का स्वामी होकर सूर्य के साथ बैठा हो अथवा शुक्र या बुध के साथ बैठा हो तो अशुभ फल देता है, (५) सिंह राशिस्थ अथवा सूर्य के द्वारा दृष्ट राहु अशुभ होता है, (६) लग्नस्थ राहु जातक को मस्तक रोगी, दुर्बल, नीचकर्म-रत, कामी तथा अल्प-सन्तातिवान् बनाता है, (७) द्वितीय स्थ राहु जातक को कठोरभाषी तथा मात्सर्य युक्त बनाता है, (८) चतुर्थस्थ राहु जातक को क्रूर, कपटी, असन्तोषी, दुःखी, मिथ्या-चारी तथा उदर-रोगी बनाता है, (९) पंचमस्थ राहु उदर-रोग देता है, (१०) षष्ठस्थ राहु कमर-दर्द देता है, (११) सप्तमस्थ राहु व्यवसाय में हानि, स्त्री-विनाश, दुराचरण एवं वातरोग कारक होता है, (१२) अष्टमस्थ राहु जातक को क्रोधी, उदर-रोगी, गुप्त-रोगी तथा कामी बनाता है, (१३) नवमस्थ राहु वातरोगकारक होता है, (१४) एकादशस्थ राहु अल्प-सन्तति देता है, (१५) द्वादशस्थ राहु जातक को कामी, अविवेकी, चिन्तातुर तथा खर्चीला बनाता है।

जन्म कुण्डली में राहु की अशुभ-स्थिति हो तो राहुकृत-पीड़ा के निवारणार्थ निम्न लिखित उपाय हितकर सिद्ध होते हैं -

(१) औषध-स्नान - कस्तूरी, गजदन्त, लोबान, मुत्थरा तथा तारपीन मिश्रित जल से स्नान करने पर राहुकृत पीड़ा का शमन होता है।

(२) गोमेद-दान - अनिष्ट कारक राहु की शान्ति के लिए गोमेद का दान शुभकारक

सिद्ध होता है। गोमेद-दान की विधि इस प्रकार है - स्वर्ण पत्र के ऊपर राहु का यन्त्र (जिसका स्वरूप बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है) अंकित करवा कर, उसके मध्यभाग में एक गोमेद जड़वावें, फिर — "ॐ क्रों क्रीं हुं हुं टं टंकधारिणे राहवे रं ह्रीं श्रीं मैं स्वाहा" - इस मन्त्र द्वारा उसे अभिमन्त्रितकर, ७२ दिन तक यन्त्र का विधिपूर्वक पूजन तथा उक्त मन्त्र का प्रतिदिन 1000 की संख्या में जप करते रहें। जब ७2000 की संख्या में मन्त्र-जप पूरा हो जाय, तब शुक्रवार अथवा बुधवार की रात्रि में आगे लिखी दान-सामग्री सहित उक्त यन्त्र को छायादान तथा काल-पुरुष के दान सहित



किसी जोशी को दान करदें। दान की वस्तुऐं इस प्रकार हैं — (१) सीसा, (२) सरसों का तैल, (३) तिल, (४) कम्बल, (५) मछली, (६) तलवार, (७) घोड़ा, (८) नीले रंग का वस्त्र, (९) स्वर्ण, (१०) गोमेद, (११) काले रंग का पुष्प, (१२) सूप, (१३) अभ्रक और दक्षिणा।

उक्त विधि से गोमेद दान करने से राहुकृत बाधा शान्त होकर सब प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं तथा मनोभिलाषा की पूर्ति होती है।

(३) रत्न-धारण - राहुकृत पीड़ा के निवारणार्थ राहु के रत्न गोमेद, अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना भी शुभफलदायक होता है। रत्न-धारण करने की विधि आगे लिखे अनुसार समझनी चाहिए। रत्न-धारण

आर्द्रा, स्वाति अथवा शतभिषा नक्षत्र वाले दिन प्रात: १० बजे से पूर्व पंचधातु अथवा लोहे की अँगूठी बनवा कर, उसमें एक ८ रत्ती वज़न का गोमेद जड़वायें। अँगूठी की धातु का वज़न ८ रत्ती से कम नहीं होना चाहिए। गोमेद को अँगूठी में इस प्रकार जड़वाना चाहिए कि उसका निम्न भाग अँगुली की त्वचा का स्पर्श करता रहे। अँगूठी के साथ ही ११ तोला वजनी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त 'राहु का यन्त्र' खुदवा कर, उसमें एक गोमेद भी जड़वा लेना चाहिए। अँगूठी तथा यन्त्र के तैयार हो जाने पर, उसी दिन प्रातःकाल ११ बजे के बाद सर्वप्रथम राहु का स्थंडि-ल बना कर, उस पर राहु-यन्त्र को रखें तथा यन्त्र के ऊपर अँगूठी को रख कर षोडशोपचार पूजन करें तथा गोमेद-दान की विधि में वर्णित राहु के मन्त्र का उच्चारण करते हुए, रत्न में प्राण-प्रतिष्ठा कर, उसी मन्त्र के द्वारा राहु-यज्ञ आरंभ करके १००० आहुतियाँ दें। फिर, मध्याह्न काल में योगिनी चक्र बना कर दीप-दान करें। तदुपरान्त राहु के निम्नलिखित मुख्य मन्त्र का १८००० की संख्या में जप करें

"ॐ कयानश्चित्र ऽआभुवदूती सदा वृधः सखा कया शचिष्ठया वृता। राहवे नमः।"

उक्त विधि से गोमेद-जटित अँगूठी धारण करने से राहुकृत अनिष्ट का प्रभाव शमन होकर, धारणकर्ता की मनोभिलाषायें पूर्ण होती हैं। अँगूठी में जड़वाने के दिन से गोमेद ३ वर्ष तक प्रभावकारी बना रहता है, तदुपरान्त नया रत्न जड़वाना चाहिए। पुराना रत्न नये व्यक्ति के पास पहुँच कर पुन: ३ वर्ष के लिए प्रभावकारी हो जाता है।

जो लोग गोमेद को अँगूठी में न जड़वाना चाहें, वे उसे नीले रंग के वस्त्र

में बाँध कर पूर्वोक्त विधि से पूजनादि करके भुजा अथवा कण्ठ में भी धारण कर सकते हैं। गोमेद के अभाव में उसके उपरत्न संग तुरसावा अथवा संग साफी अथवा प्रतिनिधि द्रव्य चन्दन को भी धारण किया जा सकता है, परन्तु ये सब कम प्रभावकारी रहते हैं।

(४) मन्त्रोपचार - निम्न लिखित मन्त्रों का जप भी राहुकृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होता है—

(क) "ॐ कयानश्चित्र ऽ आभुव दूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। राहवे नमः"— इस मन्त्र का १८००० की संख्या में जप करना चाहिए। यह राहु का मुख्य मन्त्र है।

(ख) 'ॐ रां राहवे नमः'— यह राहु का लघु-मन्त्र है। इसकी जप संख्या भी १८००० ही है।

(ग) "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः"— इस मन्त्र की जप-संख्या भी १८००० है।

(घ) "अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिका गर्भ सम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्॥"— इस मन्त्र का स्नान-दानादि अथवा अन्य किसी भी समय उच्चारण करना शुभ रहता है।

(५) अन्य - यदि राहु संतान-पक्ष के लिए बाधक हो तो उस बाधा को दूर करने के लिए कन्या-दान करना चाहिए अर्थात् अपनी ओर से किसी कन्या का विवाह कर देना चाहिए।

केतु— इसका पौराणिक-परिचय राहु के वर्णन में देखलें। इसकी अपनी कोई राशि नहीं है, परन्तु कुछ विद्वान् मीन राशि पर इसका भी आधिपत्य मानते हैं। इसे धनु (मतान्तर से वृश्चिक) राशि पर उच्चस्थ तथा मिथुन (मतान्तर से-वृष) राशि पर नीचस्थ माना जाता

जाता है। कुछ विद्वान् इसे सिंह राशि पर मूलत्रिकोणस्थ मानते हैं। वृष, धनु एवं मीन राशि में यह बलवान् होता है। मिथुन, कन्या, धनु, मकर तथा मीन इसकी मित्र एवं कर्क तथा सिंह शत्रुराशियाँ हैं। अश्विनी, मघा तथा मूल इसके स्वनक्षत्र माने गये हैं। यह गुरु के साथ सात्विक एवं सूर्य-चन्द्र एवं मंगल के साथ शत्रुवत् व्यवहार रखता है। बुध, शुक्र तथा शनि इसके नैसर्गिक मित्र हैं। जन्म कुण्डली में यह सदैव राहु से सप्तम स्थान पर ही रहता है। केतु को अशुभ तथा पापग्रह माना गया है, परन्तु अत्यन्त बली एवं मोक्षदायक होने से इसे शुभ फलदायक भी कहा गया है। कुछ विद्वान् इसे राहु का अर्धांश होने के कारण सब प्रकार से राहु के समान ही मानते हैं। शुभस्थिति में होने पर यह अन्य शुभग्रहों से अधिक शुभ फल देता है, अतः कुछ विद्वान् इसे शुभग्रह भी मानते हैं। यह मुख्य रूप से ४८-५४ वर्ष की आयु में जातक के जीवन पर अपना विशेष प्रभाव प्रकट करता है।

जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में स्थित केतु अपने दोषी-प्रभाव को निम्नानुसार प्रकट करता है-

(१) यदि केतु मंगल, गुरु अथवा शुक्र के साथ बैठा हो तो अशुभ होता है, (२) यदि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम अथवा दशम भाव में स्थित हो तो अशुभ माना जाता है, (३) यदि केतु सूर्य से युत अथवा दृष्ट हो तो अशुभ फल देता है; (४) यदि किसी शुभ भाव का स्वामी होकर, उस भाव से छठे अथवा आठवें भाव में बैठा हो तो अशुभ होता है, (५) यदि सौम्य तथा शुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ होता है (इस संबंध में मतभेद भी है), (६) यदि पंचमेश अथवा नवमेश के साथ बैठा हो तो अशुभ फल देता है (७) यदि द्वितीयेश, नवमेश, दशमेश, एकादशेश

अथवा चतुर्थेश के साथ युति अथवा दृष्टि सम्बन्ध रखता हो तो अशुभ फल देता है, (८) यदि मीन, मेष, सिंह तथा धनु राशि तथा अश्विनी, मघा एवं मूल नक्षत्र वालों के लिए केतु शुभ नहीं होता, (९) लग्नस्थ केतु जातक को भीरु तथा दुराचारी बनाता है, (१०) द्वितीयस्थ केतु मुख-रोग देता है, (११) तृतीयस्थ केतु वात रोग देता है, (१२) पंचमस्थ केतु जातक को वातरोगी एवं दुर्बुद्धि बनाता है, (१३) षष्ठभावस्थ केतु भूत-बाधा जनित रोग तथा वात-विकारों को देता है, (१४) सप्तमस्थ केतु मतिमन्दता एवं सुख-हानि देता है, (१५) अष्टमस्थ केतु दुर्बुद्धि दायक होता है, (१६) नवमस्थ केतु अपयश देता है, (१७) दशमस्थ केतु जातक को पितृ-द्वेषी बनाता है, (१८) एकादशस्थ केतु बुद्धिहीनता एवं वात-रोग देता है तथा (१९) द्वादशस्थ केतु जातक को ठग एवं धूर्त बनाता है।

जन्म कुण्डली में केतु की अशुभ स्थिति होने पर केतुकृत पीड़ा के शमनार्थ निम्नलिखित उपायों को करना हितकर सिद्ध होता है-

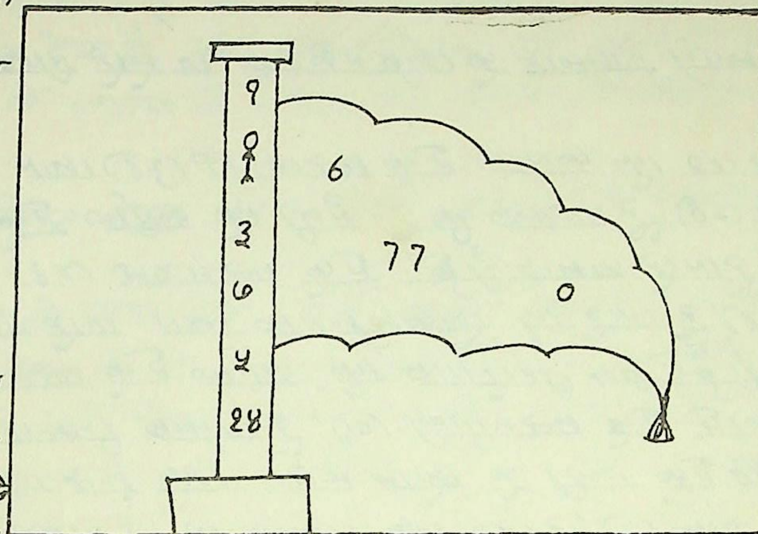
(१) औषध-स्नान - लाल चन्दन तथा छाग-मूत्र मिश्रित जल से स्नान करने पर केतु कृत पीड़ा का शमन होता है।

(२) वैदूर्य-दान - जिन लोगों के लिए केतु अनिष्ट, अरिष्ट अथवा अशुभ कारक हो, उन्हें केतु कृत पीड़ा के निवारणार्थ 'वैदूर्य' अर्थात् 'लहसुनियां' नामक रत्न का दान करना हितकर कहा गया है। वैदूर्य-दान की विधि निम्नानुसार है-

रांगे के पत्र के ऊपर केतु का यन्त्र अंकित करायें (केतु यन्त्र का स्वरूप अगले पृष्ठ पर बाँई ओर प्रदर्शित किया गया है), फिर उसके मध्य भाग में एक लहसुनियां

जड़वायें। फिर, यन्त्र का षोडशोपचार पूजन एवं प्राण-प्रतिष्ठा करके "ॐ ह्रीं क्रूं क्रूररूपिण्ये केतवे ऐं सौः स्वाहा"— इस मन्त्र का २८००० की संख्या में जप करते हुए हवन करें। हवन तथा मन्त्र-जप आदि कार्य रात्रि में ही करने चाहिए। जब मन्त्र-जप पूरा हो जाय, तब रात्रि में ही आगे लिखी सामग्री सहित उक्त यन्त्र किसी सत्पात्र को दान कर दें। दान की वस्तुऐं इस प्रकार हैं— (१) लोहा, (२) सप्तधान्य, (३) शस्त्र, (४) कम्बल, (५) धूम्रवस्त्र, (६) तिल, (७) तैल, (८) कृष्णपुष्प, (९) कस्तूरी, (१०) स्वर्ण, (११) नारियल, (१२) बकरा तथा दक्षिणा। इस प्रकार वैडूर्य (लहसुनियां) दान करने से केतुकृत अरिष्ट-दोष शान्त होकर, मनोभिलाषा पूर्ण होती है।

(३) रत्न-धारण— केतुकृत पीड़ा के शमनार्थ केतु के रत्न वैडूर्य (लहसुनिया) अथवा उसके उपरत्न अथवा प्रतिनिधि द्रव्यों को धारण करना शुभफल दायक एवं हितकर रहता है। रत्न-धारण करने की विधि निम्न लिखित है—



जब बुधवार अथवा शुक्रवार को अश्विनी, मघा अथवा मूल नक्षत्र हो अथवा चन्द्रमा मीन, मेष अथवा धनु राशि का हो, तब सायंकाल ५ से ८ बजे के बीच लोहे अथवा पंचधातु की अँगूठी में लहसुनियां जड़वाना चाहिए। लहसुनिया का वज़न कम-से कम चार रत्ती तथा धातु का वज़न कम-से-कम

सात रत्ती होना चाहिए। यदि वज़न और अधिक हो तो अधिक शुभ रहेगा। अँगूठी के साथ ही ७ तोला वज़नी चाँदी के पत्र पर पूर्वोक्त केतु का यन्त्र भी अंकित करवा लेना चाहिए। जब अँगूठी तथा यन्त्र दोनों तय्यार हो जाँय, तब दूसरे दिन प्रातः काल ९ बजे के लगभग केतु का मण्डप बना कर, उसमें केतु-स्थंडिल का निर्माण करें तथा उस पर यन्त्र तथा यन्त्र के ऊपर रत्न-जटित अँगूठी रख कर विधि पूर्वक षोडशोपचार पूजन करें तथा "ॐ ह्रीं क्रीं क्रूं क्रूर रूपिण्ये केतवे स्वाहा:"— इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए १७०० आहुतियाँ देकर हवन करें, फिर केतु के मुख्य मन्त्र "ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्या ऽ अपेशसे। समुषद्भिरजायथा:। केतवे नम:।"— इस मन्त्र का १७०० की संख्या में जप करें। जप की समाप्ति पर पूर्णाहुति देकर, मध्यमा अँगुली में अँगूठी को धारण करलें तथा दान सामग्री सहित यन्त्र किसी सत्पात्र को दान करदें। बुधवार अथवा शुक्रवार को सूर्यास्त के बाद ४ घड़ी के भीतर ही वैडूर्य को धारण करना शुभ रहता है। इस विधि से अँगूठी धारण करने से केतुकृत अनिष्ट प्रभाव का शमन होता है तथा धारणकर्त्ता की मनोभिलाषायें पूर्ण होती हैं। अँगूठी में जड़वाने के दिन से ३ वर्ष तक वैडूर्य (लहसुनिया) प्रभावकारी रहता है, तत्पश्चात् उसकी जगह नये रत्न को जड़वा लेना चाहिए। पुराना रत्न नवीन व्यक्ति के पास पहुँच कर पुन: ३ वर्ष के लिए प्रभाव-कारी हो जाता है।

जो लोग वैडूर्य को अँगूठी में न जड़वाना चाहें, वे उसे धूम्रवर्ण के वस्त्र में बाँध कर पूर्वोक्त विधि से पूजनादि करके कण्ठ अथवा भुजा में भी धारण कर सकते हैं। वैडूर्य के अभाव में उसके उपरत्न फिरोजा, संग लहसनवी, संगगोदन्ती अथवा गोदन्ता अथवा प्रतिनिधि

के रूप में असगंध की जड़ को भी पूर्वोक्त विधि से धारण किया जा सकता है। परन्तु ये सब वैदूर्य की तुलना में कम प्रभावकारी रहते हैं।

(४) मन्त्रोपचार - निम्न लिखित मन्त्र केतु कृत पीड़ा के निवारण में सहायक सिद्ध होते हैं। इनका निश्चित संख्या में जप करना आवश्यक है -

(क) "ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या ऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः। केतवे नमः" — यह केतु का मुख्य मन्त्र है, इसका १७००० की संख्या में जप करना चाहिए।

(ख) 'ॐ कें केतवे नमः' — यह केतु का लघु मन्त्र है। इसकी जप-संख्या भी १७००० ही है।

(ग) "ॐ स्रां स्रीं स्रौं स्रः केतवे नमः" — इस मन्त्र की जप संख्या १७००० है।

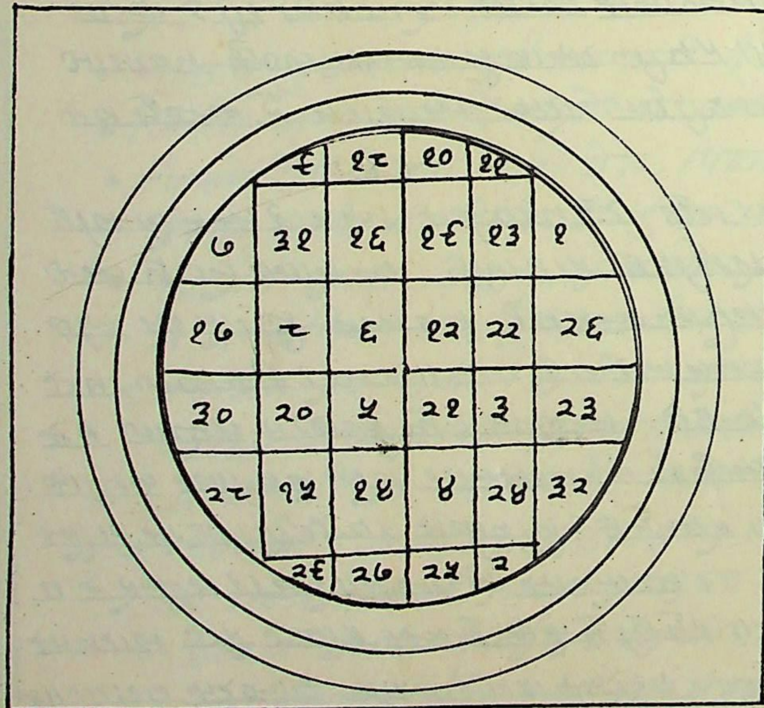
(घ) "पलाशपुष्प संकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्" — इस मन्त्र का स्नान-दान अथवा अन्य किसी भी समय जप अथवा उच्चारण करना शुभफलदायक सिद्ध होता है।

(५) अन्य - यदि केतु संतान-पक्ष में बाधक हो तो उस बाधा के शमनार्थ कपिला गाय का दान करना हितकर रहता है।

सन्तानोपाय - जिस ग्रह की बाधा हो, उसका पूर्वोक्त विधियों से निवारण करते तथा 'सन्तानगोपाल स्तोत्र' का नियमित पाठ करते रहने से सन्तान-लाभ होता है।

॥ समाप्तोऽयं ग्रंथः ॥

श्री सूर्य यन्त्र का स्वरूप



अथ श्री सूर्य स्तोत्रम्

वशिष्ठ उवाच—

सुवस्तत्र ततः साम्ब कृशोधमनिसन्तात: ।
राजन्नाम सहस्रेण सहस्रांशुन्दिवाकरान् ॥
विद्यमानं तु तन्दृष्ट्वा सूर्यः कृष्णात्मजन्तदा ।
स्वप्नेषु दर्शनन्दत्वा पुनर्व्वचनमब्रवीत् ॥

श्री सूर्य उवाच—

साम्ब साम्ब महाबाहो शृणु जाम्बवती सुत ।
अलन्नाम सहस्रेण पठस्वेयं स्तवं शुभम् ॥
यानि नामानि गुह्यानि पवित्राणि शुभानि च ।
तानि ते कीर्तयिष्यामि श्रुत्वावत्सावधारय ॥
विकर्तनो विवस्वांश्च मार्तण्डो भास्करो रविः ।
लोकप्रकाशकः श्रीमाल्लोकचक्षुर्ग्रहेश्वरः ॥
लोकसाक्षी त्रिलोकेशः कर्त्ता हर्त्ता तमिस्रहा ।
तपनस्तापनश्चैव शुचिः सप्ताश्ववाहनः ॥
गभस्तिहस्तो ब्रह्मा च सर्व्वदेव नमस्कृतः ।
एकविंशतिरित्येष स्तवइष्ट सदा मम ॥

श्रीरारोग्य करश्चैव धनवृद्धि यशस्कर:।
स्तवराज इति ख्यात स्त्रिषु लोकेषु विश्रुत:॥
य एतेन महाबाहो द्वे सन्ध्ये स्तवनोदये।
स्तौति मां प्रणतो भूत्वा सर्वपापै: प्रमुच्यते॥
कायिकं वाचिकं चैव मानसं यच्च दुष्कृतम्।
एव जाप्येन तत्सर्व्वं प्रणश्यति न संशय:॥
एष जप्यश्च होमश्च सन्ध्योपासनमेव च।
बलि मन्त्रोऽर्घ्य मन्त्रश्च धूपमन्त्र स्तथैव च॥
अन्न प्रदाने स्नाने च प्रणिपाते प्रदक्षिणे।
पूजितो यम्महामन्त्र सर्वपापहर: शुभ:॥

एवमुक्त्वा तु भगवान्भास्करो जगदीश्वर:।
आमन्त्र्य कृष्णतनयन्तत्रैवान्तरधीयत॥
साम्बोऽपि स्तवराजेन स्तुत्वा सप्ताश्ववाहनम्।
पूतात्मानी रुज: श्रीमांस्तस्माद्रोगाद्विमुक्तवान्॥

॥ इति श्री साम्बपुराणे सूर्य स्तोत्रम् समाप्तम्॥

अथ ऋणमोचक मङ्गल स्तोत्रम्

मङ्गलो भूमि पुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रद:।
स्थिरासनो महाकायो सर्व कर्मावरोधक:॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकर:।
धरात्मज: कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दन:॥
अङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारक:।
वृष्टे: कर्ताऽपहर्ता च सर्व काम फलप्रद:॥
एतानि कुज नामानि नित्यं य: श्रद्धया पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य धन श्रीयुमवाप्नुयात्॥
एक विंशति नामानि पठित्वा तु तदन्तिके।
रूपवान् धनवांश्चैव जायते नात्र संशय:॥
एक कालं द्विकालं च य: पठेत्सुसमाहित:।
एवं कृते न सन्देहो ऋणं हत्वा सुखी भवेत्॥
धरणी गर्भ सम्भूतं विद्युत्कान्ति समप्रभम्।
कुमारं शक्ति हस्तं च मङ्गलं प्रणमाम्यहम्॥
॥ इति श्रीऋण मोचक मङ्गल स्तोत्रम् समाप्तम्॥

भा० टी०

असली, प्राचीन, दुर्लभ, चमत्कारिक, शास्त्रीय ग्रंथों का अपूर्व संकलन
यह दुर्लभ ग्रंथ सीमित संख्या में ही छपा है, अतः अपनी प्रति आज ही मँगवालें, ताकि पछताना न पड़े

बृहद् मन्त्र महार्णव

- जो ग्रंथ कुछ समय पूर्व तक कहीं ढूँढे भी नहीं मिलता था • जो मन्त्रों का महासागर है।
- जिसमें सभी देवी-देवताओं के मन्त्र, स्तोत्र, कवच, हृदय, न्यास, सूक्त आदि का साङ्गोपाङ्ग वर्णन है।
- जिसमें देवी-देवता, भूत, प्रेत, पिशाच, यक्षिणी, नागिनी, भैरवी, भैरव, कूष्माण्ड, डाकिनी, शाकिनी, वैताल आदि की सिद्धि के गुप्त प्रयोगों का विस्तृत वर्णन किया गया है।
- जिसमें मारण, मोहन, आकर्षण, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण एवं शान्तिकरण आदि अष्टकर्मों से सम्बन्धित सहस्रों शास्त्रीय प्रयोग भरे पड़े हैं।
- जिसमें हर प्रकार के रोग, शोक, दुःख, पीड़ा, कष्ट आदि के निवारण, मुकद्दमे में विजय, परीक्षा में सफलता, इच्छित पति, पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका एवं पुत्र-पुत्री का लाभ आदि विषयों से सम्बन्धित चमत्कारी मन्त्रों, टोनो-टटकों, झाड़-फूंक आदि का विस्मयकारी वर्णन है।
- जिसमें संस्कृत, प्राकृत तथा लोकभाषाओं के अतिरिक्त फारसी, अरबी तथा अन्य भाषाओं के मन्त्र, साबरी मन्त्र आदि का अत्यन्त सरल भाषा में सविधि उल्लेख किया गया है।
- प्रत्यक्ष प्रभाव प्रदर्शित करने वाला, लोक परलोक का साधक यह चमत्कारी ग्रंथ वर्षों के परिश्रम तथा खोजबीन के बाद मूलसंस्कृत तथा हिन्दी भाष्य सहित प्रकाशित किया गया है।

बड़ी साइज के पच्चाकार हस्तलिखित खुले पृष्ठ, शुद्ध पाठ युक्त इस ग्रंथ की न्यौछावर मात्र १३१) रु० है।

तान्त्रिकों के लिए संग्रहणीय तथा सर्व साधारण के लिए अवश्य पठनीय एवं मननीय
भारतीय तन्त्र साहित्य के दो अनुपम एवं उपयोगी ग्रंथ-रत्न

वृहद तन्त्र महार्णव

बड़े खुले पत्राकार साइज़ में मूल्य १११) रु. मात्र

- प्रेम-सम्बन्ध, विवाह, कलह, शत्रुता, मुकद्दमा, झगड़ा-झंझट, मैत्री, यात्रा, व्यवसाय, नौकरी, पद, पदोन्नति, निर्वाचन, नेतृत्व, यात्रा, धर्म आदि सभी क्षेत्रों में सफलता दिलाने वाले
- धन-सम्पत्ति, वाहन, सेवक, गृह, पत्नी, सन्तान आदि की रक्षा करने वाले और इनका लाभ दिलाने वाले
- चिन्ता, कष्ट, पीड़ा, दुःख, रोग आदि से छुटकारा दिलाने वाले
- न्यायालय, तीर्थ-क्षेत्र, समाज, राज्य तथा लोक में सम्मान तथा प्रतिष्ठा दिलाने वाले
- आश्चर्य जनक करतब दिखाकर दर्शकों को चकित करदेने वाले

सैकड़ों तांत्रिक चमत्कारों का विशद वर्णन, अभूतपूर्व

वृहद यन्त्र महार्णव

बड़े खुले पत्राकार साइज़ में मूल्य ६९) रु.

- षट्कर्मों अर्थात् मारण, मोहन, वशीकरण, आकर्षण, उच्चाटन तथा शान्तिकरण सम्बन्धी प्राचीन, प्रामाणिक एवं शास्त्रीय यन्त्रों का विशाल संकलन
- यन्त्र लेखन, पूजन, साधन एवं धारण सम्बन्धी शास्त्रीय नियमों के विस्तृत विवेचन से युक्त।
- रोग-नाशक, भूत-प्रेतादि की बाधा नाशक, शत्रु पर विजय दिलाने वाले, परीक्षा में सफलता, मुकद्दमे में विजय, व्यवसाय में लाभ, नौकरी तथा पदोन्नति दिलाने वाले अचूक यन्त्र
- अद्भुत चमत्कारी, शास्त्रीय तथा लोक प्रचलित देशी तथा विदेशी सहस्रों यन्त्रों का सचित्र, सरल, शास्त्रीय तथा महत्वपूर्ण संकलन।
- अपने विषय का सबसे बड़ा तथा महान् ग्रंथ।

हजारों यन्त्रों का अभूतपूर्व परिचयात्मक वर्णन

आज के भौतिकतावादी वैज्ञानिक युग में तान्त्रिक प्रयोगों की महत्ता को सिद्ध करने वाला
दुर्लभ, प्राचीन, चमत्कारिक, शास्त्रीय प्रयोगों का अपूर्व सङ्कलन

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शिरोमणि

• इस ग्रंथ में मन्त्र महार्णव, तन्त्र महार्णव तथा यन्त्र महार्णव - ये तीनों एकत्र संकलित हैं, अत: इसे तन्त्र-विज्ञान का महासमुद्र कहना ही अधिक उपयुक्त रहेगा। यन्त्र, मन्त्र तथा तन्त्र से सम्बन्धित कोई भी विषय ऐसा नहीं है, जिसका उल्लेख इस महान् ग्रंथ में न किया गया हो। यह ग्रंथ क्या है तन्त्र-विज्ञान की एक चलती-फिरती लाइब्रेरी ही है, जिसमें उपलब्ध तथा अनुपलब्ध हजारों तन्त्र ग्रंथों के सारांश को कूट-कूट कर भर दिया गया है। हिन्दी-जगत् में तन्त्र-विद्या पर इतना बड़ा, प्रामाणिक, उपादेय तथा महत्वपूर्ण ग्रंथ दूसरा नहीं है।

• इस ग्रंथ के सम्पादकों को बीसियों वर्षों का समय इसे तय्यार करने में लगा है। हजारों पुस्तकों का अध्ययन करना पड़ा है, सैकड़ों दुर्लभ ग्रंथों को खोज कर लाया गया है तथा अनेक दुष्प्राप्य ग्रंथों को बड़ी कठिनाई से हस्तगत कर, उसमें से उपयोगी सामग्री के चुनाव का गुरुतर भार निष्पादित करना पड़ा है। वनों, पर्वतों, कन्दराओं की खाक छानते हुए अनेक तपस्वियों, सन्यासियों, सिद्धों तथा तान्त्रिकों से मार्ग-दर्शन तथा उनके अनुभूत प्रयोगों को उपलब्ध कर, सर्वसाधारण के लाभार्थ उन्हें ज्यों का त्यों प्रकाशित कर दिया गया है। इस ग्रंथ की तय्यारी में लाखों रुपये व्यय हुए हैं तथा अत्यन्त सीमित संख्या में ही इसकी प्रतियां तय्यार कराई गई हैं। अत: इसे आज ही मँगवा लें अन्यथा समाप्त हो जाने पर बाद में पछताना पड़ेगा। बड़ी साइज के खुले पत्राकार हस्तलिखित पृष्ठ। न्यौछावर ३११) रु० मात्र

ज्योतिष-विज्ञान के दो अनुपलब्ध महा ग्रंथ, जिनका आपने केवल नाम ही सुना होगा
वर्षों के कठिन परिश्रम के बाद अब छप कर तय्यार होगए हैं

बृहद् रावण संहिता

लंकाधिपति महापण्डित रावण ने ज्योतिष-विज्ञान के जिस महान ग्रंथ की रचना की थी और जिसकी सहायता से प्रत्येक व्यक्ति अपने तीनों जन्मों का वृत्तान्त हस्तामलकवत् ज्ञातकर सकता है, अबतक अनुपलब्ध रहा है।

प्रस्तुत ग्रंथ प्राचीन संहिता के आधार पर वर्षों के परिश्रम, अनुसंधान तथा लाखों रुपये व्यय करने के उपरान्त तय्यार किया गया है। आज ही मंगाइए और इस ग्रंथ का चमत्कार देखिए
खुले पत्राकार हस्तलिखित पृष्ठ मूल्य १०१) रु.

बृहद् संहिता

फलित ज्योतिष का यह प्राचीन तथा विशाल ग्रंथ है, जिसमें सभी विषयों का अत्यन्त विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ भी बहुत दिनों से दुष्प्राप्य था। हमने लाखों रुपये खर्च करके, बीसियों वर्षों तक अनेक विद्वानों द्वारा किए गए परिश्रम के माध्यम से इसे हस्तलिखित खुले बड़ी साइज़ के पत्राकार पृष्ठों वाले ग्रंथ के रूप में प्रकाशित किया है। बहुत थोड़ी ही प्रतियाँ उपलब्ध हैं, आज ही अपनी प्रति मँगा लीजिए मूल्य १२१)

शिव संहिता - शिव उपासकों के लिए सर्वाङ्ग पूर्ण हस्तलिखित विशाल ग्रंथ मूल्य २०१) रु.

पता - देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली ६ (भारत)





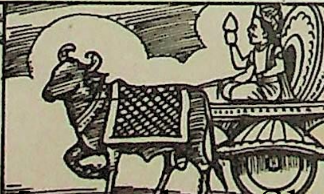


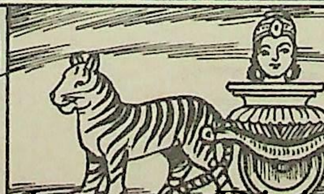


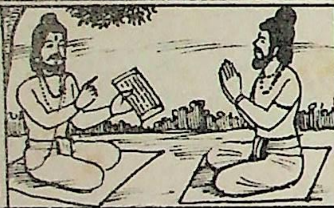
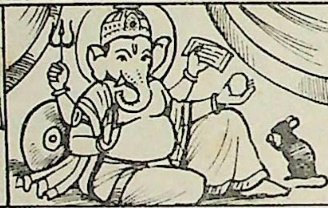
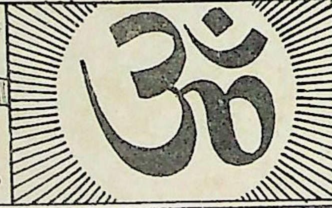


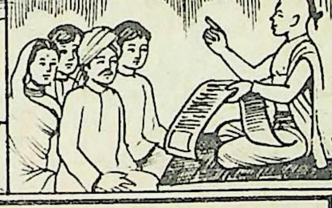
इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्

चतुर्दश खण्डः समाप्तः



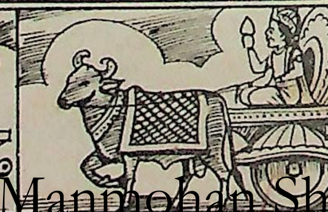


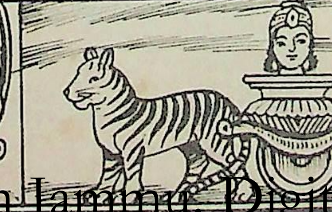
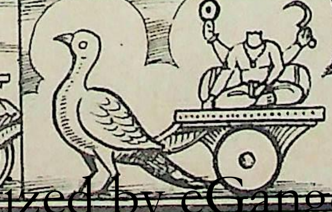

इति श्री भृगुसंहिता महाशास्त्रम्

समाप्तोऽयं ग्रन्थः









ॐ
इति श्री भृगु संहिता महाशास्त्रम्
एकादश खण्डः समाप्तः